

यह अनुवाद हरमैन शरीफ़ैन सेबक
किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद
की ओर से अल्लाह के वास्ते वरफ़ है।
और उस का बेचना उचित नहीं है।
मुफ़्त में बांटा जाता है।



अनुवाद और व्याख्या मौलाना मजीदुल हक़ ज़मरी

الحمد لله الذي جعلنا من عباده



इस क़ुरआन मजीद और उस के भर्त्ता का अनुवाद तथा व्याख्या के छापने का आदेश
 (सकदी बरख के बादशाह)
 हमें शरीफ़ीन बीकनर किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज़ आन सकद ने दिया।

الحمد لله الذي جعلنا من عباده
 الحمد لله الذي جعلنا من عباده
 الحمد لله الذي جعلنا من عباده

وَقَفَّيْهُ سَالِي مَنْ حَادَمَ الْحَرَمَيْنِ الشَّرِيفَيْنِ
الْمَلِكِ عَبْدَ اللَّهِ وَعَبْدَ الْعَزِيزِ آلِ سُعُودٍ
وَلَا يَجُوزُ بَعْدَهُ

بِسُورَةِ مَكَّةَ



مَجْمَعُ الْمَلِكِ فَيْدِ طَائِعَةِ الْمُصْحَفِ الشَّرِيفِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مقدمة

بقلم معالي الشيخ: صالح بن عبدالعزيز بن محمد آل الشيخ
وزير الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد
المشرف العام على المجمع

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:
﴿... قَدْ جَاءَكُمْ مِنْ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ﴾.

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلم القرآن وعلمه».

أما بعد:

فلإنفاذاً لتوجيهات خدام الحرمين الشريفين، الملك عبد الله بن عبد العزيز آل سعود، -حفظه الله-، بالعناية بكتاب الله، والعمل على تيسير نشره، وتوزيعه بين المسلمين، في مشارق الأرض ومغاربها، وتفسيره، وترجمة معانيه إلى مختلف لغات العالم.

وإيماناً من وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد بالمملكة العربية السعودية بأهمية ترجمة معاني القرآن الكريم إلى جميع لغات العالم المهمة تسهلاً لتفهيمه على المسلمين الناطقين بغير العربية، وتحقيقاً للبلاغ الصامور به في قوله ﷺ: «يُلْغَوْا عَنِّي وَلَوْ آيَةً».

وخدمة لإخواننا الناطقين باللغة الهندية بطيب لمجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة المنورة أن يقدم للقارئ الكريم هذه الترجمة إلى اللغة الهندية التي أعدها الشيخ عزيز الحق عسري، وقام بالإشراف عليها

ومراجعتها من قبل المجمع الأستاذ الدكتور محمد الأعظمي، وقام بالتدقيق والمراجعة النهائية الدكتور سعيد أحمد حياة المشرقي.

ونحمد الله سبحانه وتعالى أن وفق لإنجاز هذا العمل العظيم الذي نرجو أن يكون خالصاً لوجهه الكريم، وأن ينفع به الناس.

إننا لنفدرك أن ترجمة معاني القرآن الكريم - مهما بلغت دقتها - ستكون قاصرة عن أداء المعاني العظيمة التي يدل عليها النص القرآني المعجز، وأن المعاني التي تؤدّيها الترجمة إنما هي حصيلة ما بلغه علم المترجم في فهم كتاب الله الكريم، وأنه يعثر بها ما يعثري عمل البشر كله من خطأ ونقص.

ومن ثم نرجو من كل قارئ لهذه الترجمة أن يوافي مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة النبوية بما قد يجده فيها من خطأ أو نقص أو زيادة للإفادة من الاستدراكات في الطباعات القادمة إن شاء الله.

والله الموفق، وهو الهادي إلى سواء السبيل، اللهم تقبل منا إنك أنت السميع العليم.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

प्राक्कथन

लेख: आदर्णीय शीख साहिह बिन अब्दुल अजीज
बिन मुहम्मद आले शीख, इस्लामी कर्म, वक्फ
तथा दावत व इरशाद मंत्री, एवं प्रधान निरीक्षक शाह फहद
कुआन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरहा।

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:

﴿... قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ﴾

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلم القرآن وعلمه».

अनुवाद: सारी प्रशंसायें अल्लाह के लिये है जो सारे संसारों का पालनहार है। जिस का अपनी किताब में कथन है: (तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली किताब आ गई है।)

और रहमत तथा सन्नाम हों उस नबी पर जो सब नबियों में श्रेष्ठ और उत्तम है। अर्थात् हमारे नबी आदर्णीय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। जिन का कथन है: „तुम में सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो कुआन सीखता और सिखाता है।“

अल्लाह की प्रशंसा और रहमत तथा सन्नाम के पश्चात्:

हरमैन शरीफैन सेवक शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज आल सऊद (अल्लाह उन की रखा करे) का आदेश है कि अल्लाह की पुस्तक (कुआन मजीद) के प्रचार, प्रसार तथा विश्व के मुसलमानों के बीच उस के वितरण तथा विभिन्न भाषाओं में उस के अनुवाद एवं व्याख्या की व्यवस्था की जाये।

हरमैन शरीफैन सेवक की आज्ञापालन करते हुये इस्लामी कर्म एवं वक्फ तथा प्रचार प्रसार मंत्रालय विश्व की सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में कुआन के अर्थों के अनुवाद और व्याख्या करने का प्रयत्न कर रहा है। इन्हीं भाषाओं में हिन्दी भाषा भी है। ताकि हिन्दी भाषक कुआन के भावार्थ को सरलता से समझ सकें। ताकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कथन: „मेरी बात लोगों तक पहुँचाओ, चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो।“ के आदेश की पूर्ति हो सके।

इसलिये हमें इस बात से अपार हर्ष हो रहा है कि हम -शाह फहद कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरा- की ओर से पूरे कुर्आन के अर्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा उस की संक्षेप व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह अनुवाद और व्याख्या डॉक्टर प्रो॰ मुहम्मद जियाउर्रहमान आजमी के संरक्षण में, मौलाना अजीजुल हक उमरी ने तैयार किया है। और कुर्आन प्रकाशन साहित्य की ओर से इस का संशोधन डॉक्टर सईद अहमद हयात मुशर्रफी ने किया है।

हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं कि उस ने हमें यह कार्य करने का साहस दिया। और हम आशा करते हैं कि यह कार्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिये होगा। और लोग इस से लाभान्वित होंगे।

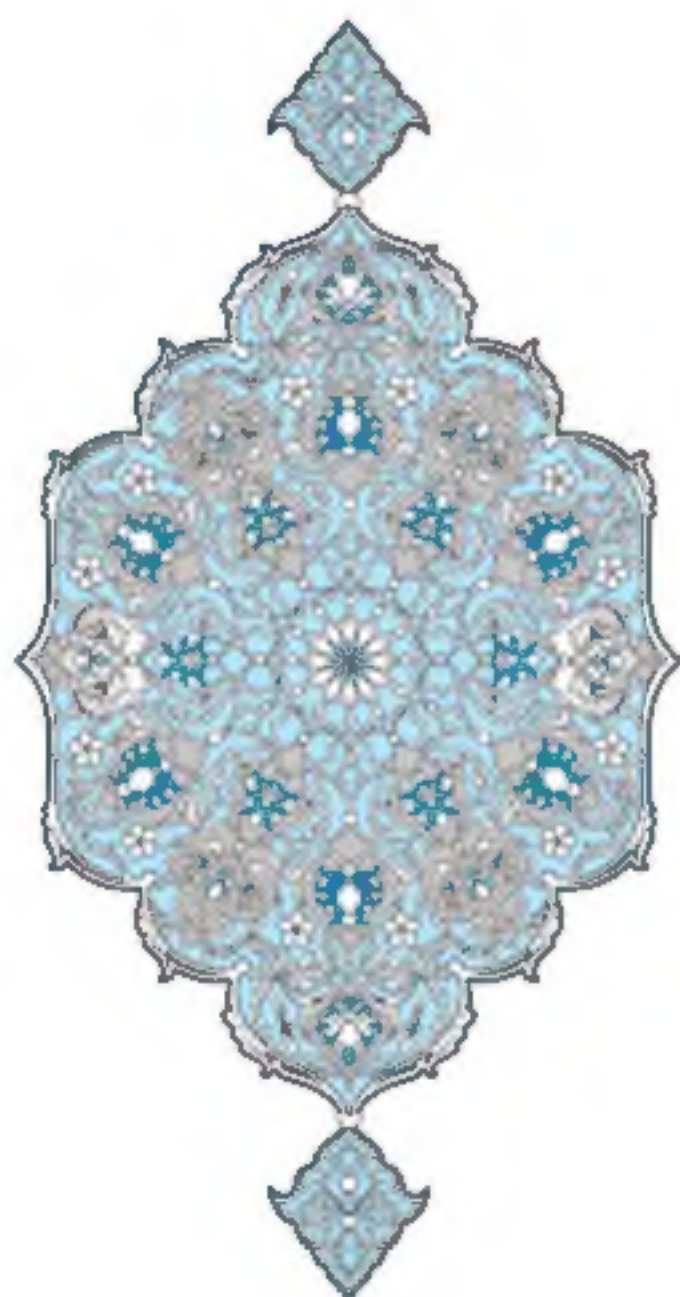
हम मानते हैं कि कुर्आन के अर्थों का कितनी ही गंभीरता से अनुवाद किया जाये पर वह उस के महान् अर्थों को वर्णित नहीं कर सकता। क्योंकि कुर्आन अपनी वर्णन शैली में भी चमत्कार है। अतः अनुवाद के द्वारा जो अर्थ दिखाई देता है वह उस का भावार्थ होता है जो अनुवादक ने कुर्आन से समझा है। जिस में हर प्रकार की त्रुटि संभव है। इसलिये प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि इस में वह जो भी त्रुटि पाये उस से -शाह फहद कुर्आन प्रकाशन साहित्य-

King Fahd Qur'an printing Complex,
Madina Munawarah, K. S. A.

को अवगत कराये ताकि आगामी प्रकाशन में उस का सुधार कर लिया जाये।

अल्लाह ही हम सब का सहायक तथा मार्गदर्शक है।

رَبَّنَا تَقْضِلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ



सूरह फातिहा - 1

سُورَةُ الْفَاتِحَةِ

सूरह फातिहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- यह सूरह आरंभिक युग में मक्का में उतरी, जो कुर्आन की भूमिका के समान है। इसी कारण इस का नाम "सूरह फातिहा" अर्थात: "आरंभिक सूरह" है। इस का चमत्कार यह है कि इस की सात आयतों में पूरे कुर्आन का सारांश रख दिया गया है। और इस में कुर्आन के मौलिक संदेश: तौहीद, परलोक तथा रिसालत के विषय को संक्षेप में समो दिया गया है। इस में अल्लाह की दया, उस के पालक तथा पूज्य होने के गुणों को वर्णित किया गया है।
- इस सूरह के अर्थों पर विचार करने से बहुत से तथ्य उजागर हो जाते हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि सागर को गागर में बंद कर दिया गया है।
- इस सूरह में अल्लाह के गुण-गान तथा उस से प्रार्थना करने की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह की सराहना और प्रशंसा किन शब्दों से की जाये। इसी प्रकार इस में बंदों को न केवल बंदना की शिक्षा दी गई है बल्कि उन्हें जीवन यापन के गुण भी बताये गये हैं।
- अल्लाह ने इस से पहले बहुत से समुदायों को सुपथ दिखाया किन्तु उन्होंने ने कुपथ को अपना लिया, और इस में उसी कुपथ के अंधेरे से निकलने की दुआ है। बंदा अल्लाह से मार्ग-दर्शन के लिये दुआ करता है तो अल्लाह उस के आगे पूरा कुर्आन रख देता है कि यह सीधी राह है जिसे तू खोज रहा है। अब मेरा नाम लेकर इस राह पर चल पड़।

1. अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

2. सब प्रशंसायें अल्लाह⁽¹⁾ के लिये हैं.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

1 "अल्लाह" का अर्थ "हकीमी पूज्य" है। जो विश्व के रचयिता विधाता के लिये विशेष है।

जो सारे संसारों का पालनहार⁽¹⁾ है।

3. जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान्⁽²⁾ है।

الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ

4. जो प्रतिकार⁽³⁾ (बदले) के दिन का मालिक है।

مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ

5. (हे अल्लाह!) हम केवल तुझी को पूजते हैं, और केवल तुझी से सहायता मांगते⁽⁴⁾ हैं।

إِلَهِكَ نَعْبُدُ وَإِلَيْكَ نَسْتَعِينُ

1 "पालनहार होने" का अर्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की रचना कर के उस के प्रतिपालन की ऐसी विचित्र व्यवस्था की है कि सभी को अपनी आवश्यकता तथा स्थिति के अनुसार सब कुछ मिल रहा है। और विश्व का यह पूरा कार्य, सूर्य, वायु, जल, धरती सब जीवन की रक्षा एवं जीवन की प्रत्येक योग्यता की रखवाली में लगे हुए हैं, इस से सत्य पूज्य का परिचय और ज्ञान होता है।

2 अर्थात् वह विश्व की व्यवस्था एवं रक्षा अपनी अपार दया से कर रहा है, अतः प्रशंसा और पूजा के योग्य भी मात्र वही है।

3 प्रतिकार (बदले) के दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है। आयत का भावार्थ यह है कि सत्य धर्म प्रतिकार के नियम पर आधारित है। अर्थात् जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। जैसे कोई जौ बोकर गेहूँ की, तथा आग में कूद कर शीतल होने की आशा नहीं कर सकता, ऐसे ही भले, बुरे कर्मों का भी अपना स्वभाविक गुण और प्रभाव होता है। फिर संसार में भी कुकर्मों का दुष्परिणाम कभी कभी देखा जाता है। परन्तु यह भी देखा जाता है कि दुराचारी, और अत्यचारी सुखी जीवन निर्वाह कर लेता है, और उसकी पकड़ इस संसार में नहीं होती, इस लिये न्याय के लिये एक दिन अवश्य होना चाहिये। और उसी का नाम "क्यामत" (प्रलय का दिन) है।

"प्रतिकार के दिन का मालिक" होने का अर्थ यह है कि संसार में उस ने इन्सानों को भी अधिकार और राज्य दिये हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब अधिकार उसी का रहेगा। और वही न्याय पूर्वक सब को उन के कर्मों का प्रतिफल देगा।

4 इन आयतों में प्रार्थना के रूप में मात्र अल्लाह ही की पूजा और उसी को सहायतार्थ गुहारने की शिक्षा दी गई है। इस्लाम की परिभाषा में इसी का नाम "तौहीद" (एकेश्वरवाद) है। जो सत्य धर्म का आधार है। और अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी अन्य देवी देवता आदि को पुकारना, उस की पूजा करना, किसी प्रत्यक्ष साधन के बिना किसी को सहायता के लिये गुहारना, क्षत्रवम अथवा किसी व्यक्ति और वस्तु में अल्लाह का कोई विशेष गुण मानना आदि एकेश्वरवाद (तौहीद) के विरुद्ध है जो अक्षम्य पाप है। जिस के साथ कोई पुण्य का कार्य मान्य नहीं।

6. हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा।

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

7. उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया ¹ उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप ² हुआ, और न ही उन का जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

1 इस आयत में सुपथ (सीधी राह) का चिन्ह यह बताया गया है कि यह उन की राह है जिन पर अल्लाह का पुरस्कार हुआ। उन की नहीं जो प्रकोपित हुये और न उन की जो सत्य मार्ग से बहक गये।

2 "प्रकोपित" से अभिप्राय वह है जो सत्य धर्म को जानते हुये मात्र अभिमान अथवा अपने पूर्वजों की परम्परागत प्रथा के मोह में अथवा अपनी बड़ाई के जाने के भय से नहीं मानते।

"कुपथ" (गुमराह) से अभिप्रेत वह है जो सत्य धर्म के हाने हुये उस से दूर हो गये और देवी देवताओं आदि में अल्लाह के विशेष गुण मान कर उन को रोग निवारण दुख दूर करने और सुख सन्तान आदि देने के लिये गुहारने लगा।

सूरह फातिहा का महत्व:

इस सूरह के अर्थों पर विचार किया जाये तो इस में और क़र्आन के शेष भागों में संक्षेप तथा विस्तार जैसा संबंध है। अर्थात् क़र्आन की सभी सूरतों में क़र्आन के जो लक्ष्य विस्तार के साथ बताये गये हैं सूरह फातिहा में उन्हीं को संक्षिप्त रूप में बताया गया है। यदि काइ मात्र इसी सूरह के अर्थों को समझ ले तो भी वह सत्य धर्म तथा अल्लाह की इबादन (पूजा) के मूल नश्यों को जान सकता है और यही पूरे क़र्आन के विवरण का निचाड़ है।

सत्य धर्म का निचोड़:

यदि सत्य धर्म पर विचार किया जाये तो उस में इन चार बानों का पाया जाना आवश्यक है:

- 1 अल्लाह के विशेष गुणों की शब्द कल्पना।
- 2 प्रतिफल के नियम का विश्वास। अर्थात् जिस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु का एक स्वभाविक प्रभाव होता है इसी प्रकार कर्मों के भी प्रभाव और प्रतिफल होने हैं। अर्थात् सुकर्म का शुभ और कुकर्म का अशुभ फल।
- 3 मरने के पश्चान् आखिरत में जीवन का विश्वास। कि मनुष्य का जीवन इसी संसार में समाप्त नहीं हो जाता बल्कि इस के पश्चान् भी एक जीवन है।
- 4 कर्मों के प्रतिकार (बदले) का विश्वास।

सूरह फातिहा की शिक्षा:

सूरह फातिहा एक प्रार्थना है। यदि किसी के दिल तथा मुख से रात दिन यही दुआ निकलती हो तो ऐसी दशा में उस के विचार तथा अक़ीद (आस्था) की क्या

स्थिति हो सकती है। वह अल्लाह की मराहना करता है परन्तु उस की नहीं जो वर्णों जानियों तथा धार्मिक दलों का पूज्य है। बल्कि उस की जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है। इस लिये वह पूरी मानव जाति का समान रूप से प्रतिपालक तथा सब के लिये दयालु है।

फिर उस के गुणों में से दया और न्याय के गुणों ही को याद करता है मानो अल्लाह उस के लिये सर्वथा दया और न्याय है फिर वह उसके सामने अपना सिर झुका देता है और अपने भक्त होने का इक़रार करता है। वह कहता है: (हे अल्लाह!) मात्र तेरे ही आगे भक्ति और विनय के लिये सिर झुक सकता है। और मात्र तू ही हमारी विवशता और आवश्यकता में महायत्ना का सहारा है। वह अपनी पूजा तथा प्रार्थना दोनों को एक के साथ जोड़ देता है। और इस प्रकार सभी संसारिक शक्तियों और मानवी आदेशों से निश्चिन्त हो जाता है। अब किसी के द्वार पर उस का सिर नहीं झुक सकता। अब वह सब से निर्भय है। किसी के आगे अपनी विनय का हाथ नहीं फैला सकता। फिर वह अल्लाह से सीधी राह पर चलने की प्रार्थना करता है। इसी प्रकार वह बचना और गुमगही से शरण (बचाव) की माँग करता है। मानव की विश्व व्यापी बुराई में वर्ग तथा देश और धार्मिक दलों के भेद भाव से ताकि विभेद का कोई प्रख्या भी उसके दिल में न रहे।

यही वह इन्सान है जिस के निर्माण के लिये कुर्आन आया है।

(देखिये: "उम्मुल किताब" - मौलाना अबुल कलाम आजाद)

इस सूरह की प्रधानता:

इब्ने अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि जिब्रील फरिश्ता (अलैहिस्सलाम) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आकाश से एक कड़ी आवाज सुनाई दी। जिब्रील ने सिर ऊपर उठाया और कहा यह आकाश का द्वार आज ही खोला गया है। आज से पहले यह कभी नहीं खुला। फिर उस से एक फरिश्ता उतरा और कहा कि यह फरिश्ता धरती पर पहनी बार उतरा है फिर उस फरिश्ते ने सलाम किया और कहा आप दो "ज्याती" से प्रसन्न हो जाइये जो आप से पहले किसी नबी को नहीं दी गई: "फातिहतुल किताब" (अर्थात् सूरह फातिहा) और सूरह "बकर" की अन्तिम आयतों। आप इन दोनों का कोई भी शब्द पढ़ेंगे तो उस में जो भी है वह आप को प्रदान किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम 806) और सहीह हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अल्हम्दु लिब्रहि रब्बिल आलमीन" "सब्अ मसानी" (अर्थात् सूरह फातिहा) और महा कुर्आन है। जो विशेष रूप से मुझे प्रदान की गई है। (सहीह बुखारी 4474)। इसी कारण हदीस में आया है कि जो सूरह फातिहा न पढ़े उस की नमाज नहीं होती। (बुखारी- 756 मुस्लिम 394)।

सूरह बकरह - 2

سورة البقرة

सूरह बकरह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है इस में 286 आयतें हैं।

- यह सूरह कुर्आन की सब से बड़ी सूरह है। इस के एक स्थान पर "बकरह" (अर्थात् गाय) की चर्चा आई है जिस के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस की आयत 1 से 21 तक में इस पुस्तक का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि किस प्रकार के लोग इस मार्गदर्शन को स्वीकार करेंगे, और किस प्रकार के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे।
- आयत 22 से 29 तक में सर्व साधारण लोगों को अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करने के निर्देश दिये गये हैं। और जो इस से विमुख हों उन के दुराचारी जीवन और उस के दुष्परिणाम को, और जो स्वीकार कर लें उन के सदाचारी जीवन और शुभपरिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 39 तक के अन्दर प्रथम मनुष्य आदम (अलैहिस्सलाम) की उत्पत्ति, और शैतान के विरोध की चर्चा करते हुये यह बताया गया है कि मनुष्य की रचना कैसे हुई, उसे क्यों पैदा किया गया, और उस की सफलता की राह क्या है?
- आयत 40 से 123 तक, बनी इस्राईल को सम्बोधित किया गया है कि यह अन्तिम पुस्तक और अन्तिम नबी वही है जिन की भविष्यवाणी और उन पर इमान लाने का वचन तुम से तुम्हारी पुस्तक तौरात में लिया गया है। इस लिये उन पर इमान लाओ। और इस आधार पर उन का विरोध न करो कि वह तुम्हारे वंश से नहीं हैं। वह अरबों में पैदा हुये हैं। इसी के साथ उन के दुराचारों और अपराधों का वर्णन भी किया गया है।
- आयत 124 से 167 तक आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के काबा का निर्माण करने तथा उन के धर्म को बताया गया है जो बनी इस्राईल तथा बनी इसमाईल (अरबों) दोनों ही के परम पिता थे कि वह यहूदी, ईसाई या किसी अन्य धर्म के अनुयायी नहीं थे। उन का धर्म यही इस्लाम था। और उन्होंने ने ही काबा बनाने के समय मक्का में एक नबी भेजने की

प्रार्थना की थी जिसे अल्लाह ने पूरी किया। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धर्म पुस्तक कुर्आन के साथ भेजा।

- आयत 168 से 242 तक बहुत से धार्मिक, सामाजिक तथा परिवारिक विधान और नियम बताये गये हैं जो इस्लामी जीवन से संबन्धित हैं और कुछ मूल आस्थाओं का भी वर्णन किया गया है जिन के कारण मनुष्य मार्गदर्शन पर स्थित रह सकता है।
- आयत 243 से 283 तक के अन्दर मार्गदर्शन केन्द्र कावा को मुशरिकों के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिये जिहाद की प्रेरणा दी गई है, तथा व्याज को अवैध घोषित कर के आपस के व्यवहार को उचित रखने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 284 से 286 तक अन्तिम आयतों में उन लोगों के इमान लाने की चर्चा की गई है जो किसी भेद-भाव के बिना अल्लाह के रसूलों पर इमान लाये। इस लिये अल्लाह ने उन पर सीधी राह खोल दी। और उन्होंने ने ऐसी दुआयें की जो उन के इमान को उजागर करती हैं।
- हदीस में है कि जिस घर में सूरह बकरह पढ़ी जाये उस से शैतान भाग जाता है। (सहीह मुस्लिम- 780)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, मीम।
2. यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं उन को सीधी डगर दिखाने के लिये है जो (अल्लाह से) डरते हैं।
3. जो गैब (परोक्ष) ¹¹ पर इमान (विश्वास) रखने हैं, तथा नमाज की

لَقَدْ

وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ

الَّذِينَ يُؤْتُونَ بِالْقَيْمِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ

1. इस्लाम की परिभाषा में, अल्लाह, उस के फरिश्तों, उस की पुस्तकों उस के रसूलों तथा अन्तर्दिवस (प्रलय) और अच्छे बुरे भाग्य पर इमान (विश्वास) को (इमान बिल गैब) कहा गया है। (इब्ने कसीर)

स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं।

وَمِمَّا فَتَمَّ اللَّهُ لَهُمْ يَتُوبُونَ

4. तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक क़र्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों¹) पर इमान रखने हैं। तथा आखिरत (परलोक)² पर भी विश्वास रखने हैं।

وَالَّذِينَ يُتُوبُونَ بِمَا آتَاهُمُ الْبَلَاءُ وَمَا تَزِيلُ عَنْ قَبْلِكَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا بِمَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ

5. वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर है, तथा वही सफल होंगे।

أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ٥

6. वास्तव³ में जो काफिर (विश्वामहीन) हो गये (हे नबी!) उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह इमान नहीं लायेंगे।

إِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ذَكَرْتَهُمُ
أَمْرُهُمْ شُئْرُهُمْ أَلَّا يُؤْمِنُوا

7. अब्राह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है। और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं। तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।

خَتَمَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ وَعَبَثَ
بِأَبْصَارِهِمْ يَوْمَ يُنْفَخُ الصُّورُ

8. और⁴ कुछ लोग कहते हैं कि हम अब्राह तथा आखिरत (परलोक) पर

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

1 अर्थात् तौरात, इजील तथा अन्य आकाशीय पुस्तकों पर।

2 आखिरत पर इमान का अर्थ है प्रलय तथा उस के पश्चात् फिर जीवित किये जाने तथा कर्मों के हिसाब एवं स्वर्ग तथा नरक पर विश्वास करना।

3 इस से अभिप्राय वह लोग हैं जो सत्य को जानते हुए उसे अभिमान के कारण नकार देते हैं।

4 प्रथम आयतों में अब्राह ने इमान वालों की स्थिति की चर्चा करने के पश्चात् दो आयतों में काफिरों की दशा का वर्णन किया है। और अब उन मुनाफिकों (दुविधावादियों) की दशा बना रहा है जो मुख से तो इमान की बात कहते हैं लेकिन दिल से अविश्वास रखते हैं।

ईमान ले आये। जब कि वह ईमान नहीं रखते।

الْكَافِرُ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ٤

9. वह अब्राह को तथा जो ईमान लाये, उन्हें धोखा देते हैं। जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देने हैं, परन्तु वह इसे समझने नहीं।

يُحِبُّونَ اللَّهَ وَالْيَوْمَينِ مَتَوًّا وَمَا يَخْدَعُونَ
إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ٥

10. उन के दिलों में रोग (दुविधा) है, जिसे अब्राह ने और अधिक कर दिया। और उन के लिये झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है।

فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَارَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا، وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ٦

11. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं।

قَدْ قِيلَ لَهُمْ لَا تَتَّبِعُوا آلَ الْأَرْضِ
كَانُوا أَعْيُنًا مُبْصِرِينَ ٧

12. सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उन्हें इस का बोध नहीं।

إِلَّا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَاسِقُونَ ٨ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ٩

13. और^१ जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाये तुम भी ईमान लाओ तो कहते हैं कि क्या मुखों के समान हम भी विश्वास कर लें? सावधान! वही मूर्ख हैं, परन्तु वह जानते नहीं।

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ امْكُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِمْو
الْوُضُوءَ لِمَا مِّنَ السَّعَةِ ١٠ فَتَعْتَهُمُ
السَّعَةُ وَلَكِنْ لَا يَعْلَمُونَ ١١

14. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं।

وَإِذْ لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا
خَلَوْا إِلَىٰ شُيُطَانِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ
إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَؤُونَ ١٢

1 यह दशा उन मुनाफिकों की है जो अपने स्वार्थ के लिये मुसलमान हो गये परन्तु दिल से इन्कार करते रहे।

15. अब्राह उन से परिहास कर रहा है।
तथा उन्हें उन के कुकर्मों में बहकने
का अवसर दे रहा है।

إِنَّهُ سَتَرْتُ عَنْهُمْ وَبَدَأْتُ لَهُمْ فِي طَعْنِهِمْ
يَمْعُونَ ⑤

16. यह वे लोग हैं जिन्होंने सीधी डगर
(सुपथ) के बदले गुमराही (कूपथ)
खरीद ली। परन्तु उन के व्यापार में
लाभ नहीं हुआ। और न उन्होंने सीधी
डगर पाई।

أُولَئِكَ الَّذِينَ شَرَوْا الْضَلَّةَ بِالْهُدَى فَمَتَرْتَهُمْ
بِحُجَارِهِمْ وَمَا كَانُوا مُنْتَبِهِينَ ⑥

17. उन¹ की दशा उन के जैसी है, जिन्होंने
अग्नि सुलगाई, और जब उन के
आस पास उजाला हो गया, तो अब्राह
ने उन का उजाला छीन लिया, तथा
उन्हें ऐसे अधेरो में छोड़ दिया जिन में
उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।

مَثَلُهُمْ لَمَثَلِ آلِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ قَدْ أَصَابَتْ
مَنْ حَوْلَهُ ذَهَبُ اللَّهِ يُورِيهِمْ وَيُرْكَهُمُ فِي
كَلْبَةٍ لَا يَنصُرُونَ ⑦

18. वह गूँगे, बहरे, अंधे हैं। अन-अब वह
लौटने वाले नहीं।

ضُفُوفُهُمْ مُنْقَرِعَةٌ وَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ⑧

19. अथवा¹ (उन की दशा) आकाश की
बर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और
कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के
कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में
उंगलियाँ डाल लेते हैं। और अब्राह,
काफिरों को अपने नियंत्रण में लिये
हुये हैं।

أَوْ كَصَيْفٍ مِنَ السَّمَاءِ يُمْرِطُ ظِلْمًا وَيُرِي
يَجْمَعُونَ نَصَائِفَهُمْ ⑨ ذَانِهِمْ مِنَ الْقَوَائِمِ
حَذَرُ السَّوْبِ وَاللَّهُ يُخَيِّطُ بِالْعِزِّ ⑩

20. विद्युत उन की आँखों को उचक लेने
के समीप हो जाती है, जब उन के
लिये चमकती है तो उस के उजाले
में चलने लगते हैं, और जब अंधेरा
हो जाता है तो खड़े हो जाते हैं। और

يَكَاذِبُونَ يَخُطُّونَ أَنْصَابَهُمْ كَلْبًا أَضَاءَ لَهُمْ
مَنْوَاهُ إِذْ رَأَوُا ظِلْمَهُ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَذَهَبَ بِسُجُنَافِهِمْ وَأَنْصَابِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑪

1 यह दशा उन की है जो संदेह तथा दुर्विश्वास में पड़े रह गये। कुछ मृत्यु को उन्होंने
स्वीकार भी किया फिर भी अविश्वास के अधेरो ही में रह गये।

2 यह दूसरी उपमा भी दूसरे प्रकार के मुनाफिकों की दशा की है।

यदि अल्लाह चाहे तो उन के कानों को बहरा, और उन की आँखों को अंधा कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

21. हे लोगो! केवल अपने उस पालनहार की इबादत (बंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव¹ है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا إِلَهَكُمْ الْوَاحِدَ الَّذِي خَلَقَكُمْ
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بَعَثَ فِيكُمْ نُفُوسًا

22. जिस ने धरती को तुम्हारे लिये बिछौना तथा गगन को छत बनाया। और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिये प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाये, अतः जानते हुये² भी उस के साझी न बनाओ।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ رِيشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِيشًا
لَكُمْ ۚ وَلَا تَجْعَلُوا لَهُ سَائِدًا ۚ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

23. और यदि तुम्हें उस में कुछ संदेह हो जो (अथवा कुरआन) हम ने अपने भक्त पर उतारा है तो उस के समान कोई सूरह ले आओ? और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे³ हो।

فَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا مِنْ كِتَابٍ فَإِنَّ
يُسُورَ فَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنْهُ فَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ
مِّنْ دُونِ الْإِنِّ ۚ كُنْتُمْ ضَالِّينَ ۝

24. और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि

فَإِنْ كُنْتُمْ لَا تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي

1 अर्थात् संसार में कुकर्मों तथा परलोक की यातना में।

2 अर्थात् जब यह जानते हो कि तुम्हारा उत्पत्तिकार तथा पालनहार अल्लाह के सिवा कोई नहीं तो बंदना भी उसी एक की करो, जो उत्पत्तिकार तथा पूरे विश्व का व्यवस्थापक है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी के सत्य होने का प्रमाण आप पर उतारा गया कुरआन है यह उन की अपनी बनाई बात नहीं है। कुरआन ने ऐसी चुनौती अन्य आयतों में भी दी है। (देखिये सूरह कसस, आयत: 49, इसा, आयत: 88 हूद आयत: 13 और यूनस, आयत: 38)

(नरक) से बची, जिम का ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे।

25. हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दो, जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये कि उन के लिये ऐसे स्वर्ग है, जिन में नहरें बह रही होंगी। जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जायेगा तो कहेंगे: यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया। और उन्हें समरूप फल दिये जायेंगे। तथा उन के लिये उन में निर्मल पत्नियां होंगी, और वह उन में सदावासी होंगी।

26. अब्राह, ¹ मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज से उपमा देने से नही लज्जाना। जो ईमान लाये वह जानते है कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है। और जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये वह कहते है कि अब्राह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है? अब्राह इस से बहुतों को गुमराह (कुपध) करता है, और बहुतों को मार्गदर्शन देता है। तथा जो अवैज्ञाकारी है, उन्ही को कुपध करता है।

27. जो अब्राह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते है तथा जिसे अब्राह ने जोड़ने का आदेश दिया, उसे तोड़ते है, और धरती में उपद्रव करते है, यही लोग क्षति में पड़ेंगे।

وَنُفُوسَ النَّاسِ وَخِجَارَةً أَصْدَدَ يُكْفَرُونَ ﴿٢٥﴾

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَعِزُّ أَنْ يُفْزَعَ بِمِثْلِ مَا يَصْرِفُهُ قُلُوبُهُمْ قُلُوبًا فَالِقًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي قَوْمًا لَّيْسَ بِهِ كَيْدٌ وَلَا يَهْدِي بِهِ كَثِيرٌ مِّنَ الْمَظْلُومِينَ ﴿٢٧﴾

الَّذِينَ يَبْقُصُونَ عَهْدَ ظُفُرِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَهُ بِهِ أَنْ يُوْصَلَ وَلَئِيسَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَوْلَا أَنَّهُمْ الْخَاسِرُونَ ﴿٢٨﴾

- 1 जब अब्राह ने मुनाफिकों की दो उपमा दी तो उन्होंने कहा कि अब्राह ऐसी तुच्छ उपमा कैसे दे सकता है? इसी पर यह आयत उतरी। (देखिये: तफ्सीर इब्न कमीर)।

28. तुम अल्लाह का इन्कार कैसे करते हो? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया फिर तुम को मौत देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाये¹ जाओगे?
29. वही है, जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिये उत्पन्न किया। फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर मात आकाश बना दिया। और वह प्रत्येक चीज का जानकार है।
30. और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फरिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक खलीफा² बनाने जा रहा हूँ। वह बोले क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करने हैं? (अल्लाह) ने कहा: जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।
31. और उस ने आदम³ को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन को फरिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहा: मूझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो?
32. सब ने कहा तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِمَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ شَيْئًا
فَأَحْيَا لَهُمْ لِقَاءَ رَبِّهِمْ فَمَا يَكْفُرُونَ
إِنِّي لَرَّحِيمٌ

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ جُفْيًا ثُمَّ
لَسَوَيُّ إِلَى السَّمَاءِ فَتُوحِشُكُمْ سُبُحَاتٍ وَفَوْ
رَاجِلٌ شَرٌّ عَلَيْهِمْ

وَأَنذَرَهُمْ وَأَخْلَصَ إِلَيْهِمْ وَفَقَدِمْ لَهُمْ
الْأَمْرَ وَأَخْلَصَ إِلَيْهِمْ وَفَقَدِمْ لَهُمْ
الْأَمْرَ وَالْأَمْلَ وَفَقَدِمْ لَهُمْ

وَعَلَّمَ دَمْرَ الْأَسْمَاءِ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ
فَقَالَ أُنَبِّئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا بِأَسْمَائِهِمْ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ

1 अर्थात् परलोक में अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 खलीफा का अर्थ है: स्थानापन्न, अर्थात् ऐसा जीव जिस का वंश हो और एक दूसरे का स्थान ग्रहण करे। (तफ्सीर इब्ने कमीर)

3 आदम प्रथम मनु का नाम।

मिखाया है। वास्तव में तू अनि ज्ञानी तत्वज्ञ¹ है।

الْعَبِيدُ يُخَيَّرُونَ

33. (अब्राह ने) कहा: हे आदम! इन्हें इन के नाम बताओ, और आदम न जब उन के नाम बता दिये तो (अब्राह ने) कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ।

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَكَفِيرٌ أَطْلَعْتُكَ عَلَى سَمَوَاتٍ وَالدُّرِّ وَأَنْتُمْ لَا تَشْكُرُونَ ۝

34. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया, उस ने इन्कार तथा अभिमान किया, और काफ़िरो में से हो गया।

وَرَدَّ قَلِيلًا لِّنَبِيِّكُمْ سَاجِدٌ وَالْإِذَامُ فَجَدُّ وَالْأَدَامُ لِيَسْجُدَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝

35. और हम ने कहा: हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इस में से जिस स्थान से चाहो मनमानी खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अन्याचारियों में से हो जाओगे।

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

36. तो शैतान ने दोनों को उस से भटका दिया, और जिस (मुख) में थे उस से उन को निकाल दिया, और हम ने कहा: तुम सब उस से उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो और तुम्हारे लिये धरती में रहना, तथा एक निश्चित अवधि² तक उपभोग्य है।

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَاخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۚ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝

1 तत्वज्ञ अर्थात् जो भेद तथा रहस्य को जानता हो।

2 अर्थात् अपनी निश्चित आयु तक सामारिक जीवन के समाधान से लाभान्वित होना है।

37. फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उस ने उसे क्षमा कर दिया, वह बड़ा क्षमी दयावान्¹ है।
38. हम ने कहा इस से सब उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उन के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।
39. तथा जो अस्वीकार करेंगे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे तो वही नारकी है, और वही उस में सदावासी होंगे।
40. हे बनी इसराईल² ! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया तथा मझ में किया गया बचन पूरा करो, मैं तुम को अपना दिया बचन पूरा करूँगा, तथा मुझी से डरो³।

فَتَلَقَّى آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ إِنَّهُ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا فَإِنَّمَا يَتَّبِعُونَ هُدًى
مَنْ تَرِيبَهُ هَدَاهَى فَلَاحُوتٌ عَلَيْهِمْ وَلَا فِئْرٌ
يُحْزَنُونَ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

يَا بَنِي إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا عَهْدِي الَّذِي آتَيْتُكُمْ
عَلَيْكُمْ وَآذَنُوا بِعَهْدِي أَوْفُوا بِعَهْدِكُمْ وَرَأَوْا
بِأَعْيُنِي

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि आदम ने कुछ शब्द सीखे और उन के द्वारा क्षमा याचना की, तो अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। आदम के उन शब्दों की व्याख्या भाष्यकारों ने इन शब्दों से की है: "आदम तथा हब्बा दोनों ने कहा हे हमारे पालनहार! हम ने अपने प्राणों पर अन्याचार कर लिया और यदि तू ने हमें क्षमा और हम पर दया नहीं की तो हम क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे"। (सूरह आराफ, आयत 23)
- 2 इसराईल आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पौत्र याकूब अलैहिस्सलाम की उपाधि है। इस लिये उन की सन्तान को बनी इसराईल कहा गया है यहाँ उन्हें यह प्रेरणा दी जा रही है कि कुर्आन तथा अन्तिम नबी को मान लें जिस का बचन उन की पुस्तक "तौरान" में लिया गया है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्रों इसमाईल तथा इसहाक हैं। इसहाक की सन्तान से बहुत से नबी आये परन्तु इसमाईल अलैहिस्सलाम के गोत्र से केवल अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आया।
- 3 अर्थात् बचन भंग करने से।

41. तथा उस (कुरआन) पर ईमान लाओ जो मैं ने उतारा है, वह उस का प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास¹ है, और तुम सब से पहले इस के निवर्ती न बन जाओ, तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो, और केवल मुझी से डरो।

42. तथा सत्य को असत्य में न मिलाओ, और न सत्य को जानत हुये छुपाओ।²

43. तथा नमाज की स्थापना करो, और जकात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रुकू करो)।

44. क्या तुम, लोगों को सदाचार का आदेश देने हो और अपने आप को भूल जाने हो, जब कि तुम पुस्तक (तौरात) का अध्ययन करते हो, क्या तुम समझ नहीं रखते?³

45. तथा धैर्य और नमाज का सहारा लो, निश्चय नमाज भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं)⁴

وَابْتَلُوا بِمَا أَنزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَلَكَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ
وَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا هٰذَا
الْبَاطِلَ وَتَتَّبِعُوا الْحَقَّ

وَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىَٰ فَيُضِلَّكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتَتَّبِعُوا الْحَقَّ
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنسَوْنَ أَنفُسَكُمْ
وَأَنْتُمْ تُلْقُونَ الْقِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

وَأَنِصْبُوا لِالصَّيْرِ وَالصَّلَاةِ وَذٰلِكَ الْيَمِينَةُ الْاَعْلٰى
الْمُحْسِنِينَ

1 अर्थात् धर्मपुस्तक तौरात।

2 अर्थात् अन्तिम नबी के गुणों को, जो तुम्हारी पुस्तकों में वर्णित किये गये हैं।

3 नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस (कथन) में इस का दुष्परिणाम यह बताया गया है कि: प्रलय के दिन एक व्यक्ति को लाया जायेगा, और नरक में फेंक दिया जायेगा। उस की अंतर्दृष्टियाँ निकल जायेंगी, और वह उन को लेकर नरक में ऐसे फिरेगा जैसे गधा चक्की के साथ फिरता है। तो नारकी उस के पास जायेंगे तथा कहेंगे कि: तुम पर यह क्या आपदा आ पड़ी है? तुम तो हमें सदाचार का आदेश देने, तथा दुराचार से रोकने थे। वह कहेगा कि मैं तुम्हें सदाचार का आदेश देता था, परन्तु स्वयं नहीं करता था। तथा दुराचार से रोकता था और स्वयं नहीं रुकता था। (महीह बूखारी, हदीस नं०: 3267)

4 भावार्थ यह है कि धैर्य तथा नमाज से अब्राह की आज्ञा के अनुपालन तथा

46. जो समझते हैं कि: उन्हें अपने पालनहार से मिलना है, और उन्हें फिर उसी की ओर (अपने कर्मों का फल भोगने के लिये) जाना है।

47. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया और यह कि: तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी।

48. तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस की कोई अनुशंसा (सिफारिश) मानी जायेगी, और न उस से कोई अर्धदण्ड लिया जायेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।

49. तथा (वह समय याद करो) जब हमने तुम्हें फिरऔनियों¹ से मुक्ति दिलाई। वह तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थे: वह तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देने थे, इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी।

50. तथा (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिये सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया और तुम्हारे देखते देखते फिरऔनियों को डुबो दिया।

51. तथा (याद करो) जब हम न मूसा को (नौरात प्रदान करने के लिये) चालीस

الَّذِينَ يَنْظُرُونَ إِلَهُهُمْ مَلْفُوفًا زِيَاهًا وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾

يَا بَنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ مَا لَكُم مِّنَ الْفَضْلِ إِنِّي نَحْنُ الْمُتَنَصِّرُونَ ﴿٤٧﴾

وَأَنْتُمْ يَوْمَئِذٍ مُّسْمَرُونَ عَنْ أَنْفُسِكُمْ لَا يُفْقَدُ الْبِغَاءُ وَلَا يَخَفُ الْوَيْلُ ﴿٤٨﴾

وَلَا تَحْزَنْكُمْ فِرْعَوْنُ إِلَىٰ مَرْغُومٍ يُسُومُكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ بِدَيَّانٍ أَسَاءَ لَكُمْ وَيَسْتَعِزُّونَ بِسَاءَ لَكُمْ وَلَوْلَا لَوْلَاةٌ مِنِّي لَأَمِيتَكُمُ الْعَظِيمَ ﴿٤٩﴾

وَلَا تَحْزَنْكُمْ أَلَمْ تَرَ أَنَّا جَعَلْنَا الْفُجَّارَ سَوَاءً لَّكُم مِّنَ الْفُجَّارِ يَوْمَئِذٍ فَاصْتَبَقْتُمْ وَأُنْقِذُوا مَن يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخْرِجَ مِنْكُمْ ذُرِّيَّتَهُ لِيُزَيِّنَ لَكُمْ بَيْنَ الْمَرْءِ وَالْمَرْثَىٰ وَأَوْفَىٰ بِوَعْدِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ ذِكْرًا ﴿٥٠﴾

وَلَا زَعَدَنَّا مُوسَىٰ أَن يُبَدِّلَ بَيْنَهُمَا أَلْهَاهُ رَبُّهُ فَفَارَغَ شَرِّ الْفِرْعَوْنِ إِنَّهُ كَانُفُورًا ﴿٥١﴾

सदाचार की भावना उत्पन्न होती है।

1 फिरऔन मिस्र के शामको की उपाधि होती थी।

रात्री का वचन दिया, फिर उन के पीछे तुम ने बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और तुम अत्याचारी थे।

52. फिर हम ने इस के पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

53. तथा (याद करो) जब हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) तथा फुर्कान¹ प्रदान किया ताकि तुम सीधी डगर पा सको।

54. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: तुम ने बछड़े को पूज्य बना कर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वह यह कि आपस में एक दूसरे² को बध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है।

55. तथा (याद करो) जब तुम न मूसा से कहा: हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अब्राहम को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखने देखने तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिस से सब निर्जीव होकर गिर गये)।

56. फिर (निर्जीव होने के पश्चात्) हम ने

الْيَحْيَىٰ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥٢﴾

لَمْ نَغْفِرْ لَكَ مِنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّكَ لَكَاظِمٌ مُّشْكِرُونَ ﴿٥٣﴾

وَإِذْ أَنْتَبَهْنَا مُوسَىٰ الْكُتُبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٤﴾

وَلَمَّا قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُعْبُدُونَ الْبَقَرَةَ فَقَالَ مُوسَىٰ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعُتِلُوا ۚ فَاذْكُوا زَكَاةَ أَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ مِنْ عِبَادَةِ الْبَقَرَةِ ۚ فَمَنْ كَفَرَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٥٥﴾

فَذُكِّلْتُمْ يُسُوسَىٰ أَنْ تَأْمُرَ بِكَ بِشَيْءٍ تَنْهَىٰ عَنْهُ فَاجْتَرِبْهُ ۚ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٦﴾

لَمْ يَعْصُوا مِنْ بَعْدِهِ مَوْعِدَهُ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٧﴾

1 फुर्कान का अर्थ विवेककारी है, अर्थात् जिस के द्वारा मन्व्योमन्त्य में अन्तर और विवेक किया जाये।

2 अर्थात् जिस ने बछड़े की पूजा की है, उसे, जो निर्दोष हो वह हत करे यही दोषी के लिये क्षमा है। (इब्ने कसीर)

तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम
हमारा उपकार मानो।

- 57 और हम ने तुम पर बादलों की
छाँव¹ की, तथा तुम पर "मन्न"²
और "सलवा" उतारा, तो उन स्वच्छ
चीजों में से जो हम ने तुम को प्रदान
की है खाओ और उन्होंने ने हम पर
अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं
अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे।

58. और (याद करो) जब हम ने कहा
कि इस बस्ती³ में प्रवेश करो, फिर
उस में से जहाँ से चाहो मनमानी
खाओ और उस के द्वार में सजदा
करते (सिर झुकाये) हुये प्रवेश करो,
और क्षमा-क्षमा कहते जाओ, हम
तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे, तथा
सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे।

- 59 फिर इन अत्याचारियों ने जो बात
उन से कही गई थी, उसे दूसरी
बात से बदल दिया। तो हम ने इन
अत्याचारियों पर आकाश से उन की
अबैजा के कारण प्रकोप उतार दिया।

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी
जाति के लिये जल की प्रार्थना की तो

وَقَلْبًا عَلَيْكُمُ الْعِمَامُ وَأَسْرَلْنَا عَلَيْكُمُ
الْمَنَىٰ وَلَتَجِدُنَّ كُلَّؤَامِنٍ فِئْتٍ مِّمَّا يَدْفَعُ لَكُمُ
وَمَا خَلَقْنَاهُ إِلَّا لِحِكْمٍ كَالْوَأْتِ فَتَكُونُ
بِظُلْمٍ مِّنْ

وَلَدَقُلْنَا دُخْلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ كُلُّؤَامِنٍ فِئْتٍ
مِّمَّا يَدْفَعُ لَكُمُ الْبَابُ سَجْدًا تَلْزَمُونَ
حَقَّةً لَّعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ وَتَسْمِعُونَ
الْمَغْرُوبِينَ

قَبْلَ الَّذِي كَسَمُوا أَنَّهُ لَئِنْ قِيلَ لَهُمْ
لَا تَزِلْنَا حُلَّ الْبَيْتِ لَنَكُونَنَّ كَالْوَأْتِ فَتَكُونُ
بِظُلْمٍ مِّنْ

وَأِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَايَ رَبِّهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ

1 अधिकांश भाष्यकारों ने इसे "नीह" के क्षेत्र से संबंधित माना है (देखिये तफ्सीरे कुर्तुबी)।

2 भाष्यकारों ने लिखा है कि "मन्न" एक प्रकार का अति मीठा स्वादिष्ट गोद था जो ओस के समान रात्री के समय आकाश से गिरता था। तथा "सलवा" एक प्रकार के पक्षी थे जो संध्या के समय सेना के पास हजारों की संख्या में एकत्र हो जाते जिन्हें बनी इस्राईल पकड़ कर खाते थे।

3 साधारण भाष्यकारों ने इस बस्ती को "बैतुल मुकद्दस्" माना है।

हम ने कहा अपनी लाठी को पत्थर पर मारो। तो उस से बारह¹ सोने फूट पड़े। और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पहचान लिया। अल्लाह का दिया खाओ और पीओ, और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

61. तथा (याद करो) जब तुम ने कहा: हे मूसा! हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे, तम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिये धरती की उपज, साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज, दाल आदि निकाले, (मूसा ने) कहा: क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ माँगते हो? तो किसी नगर में उतर पड़ो जो तुम ने माँगा है वही वह मिलेगा। और उन पर अपमान तथा दरिद्रता थोप दी गई और वह अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरो। यह इस लिये कि वह अल्लाह की आयनों के साथ कुफ़र कर रहे थे, और तर्जियों की अकारण हत्या कर रहे थे, यह इस लिये कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया।

62. वस्तुतः जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर इमान लायेगा, और सत्कर्म करेगा, उन का प्रतिफल उन के पालनहार के पास है। और उन्हें

الْحَجَرُ فَاصْبِرْ لَهُ اشْنَأْ عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوا وَشَرِبُوا مِنْ نَزْلِ اللّٰهِ وَلَا تَقْنَطُوا اِلَى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝

وَرَدَّ قُلُوبُ يَسُوْسَى لَنْ تُصْبِرَ عَلٰى طَعْمِهِ وَاِذَا قَدْ عَلِمْتَ اَنَّكَ يُخْرِجُ لَكَ اَمْثًا ثَغِيْرًا مِّنَ الْاَرْضِ مِنْ بَقِيْعَةٍ وَتَثْبِيْهَا وَفُؤُوسَهَا وَعَدُوْسَهَا وَبَصِيْلَهَا ۝ قَالَ اَتَسْتَبْدِيْ لَوْ اَنَّكَ هُوَ اَدْنٰى بِالْكُفْرِ هُوَ خَيْرٌ اِمَّا يَبْطُوْا وَهُمْ اَوَّلٰى اَنْ تَكُوْنُ اَسَاسًا سُوْرًا وَفُضِيْتُمْ عَلَيْهِ الْاِيْدُ الْاَلْمَسْنُوْنَةُ وَبَاۗءَ وَبَغَضِيْهِ مِّنَ اللّٰهِ اِلَيْكَ يَا اَهْلَهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ يُقْسِلُوْنَ اَلَيْسَ بِالْحَقِّ ذِكْرُكَ بِمَا عَصَوْا وَاَوْكَتُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصْرٰى وَالضَّمِيْمِيْنَ مِّنْ اَمْرِ يَوْمٍ اٰخِرٍ وَّالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصْرٰى وَالضَّمِيْمِيْنَ مِّنْ اَمْرِ يَوْمٍ اٰخِرٍ وَّالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصْرٰى وَالضَّمِيْمِيْنَ مِّنْ اَمْرِ يَوْمٍ اٰخِرٍ وَّالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصْرٰى وَالضَّمِيْمِيْنَ مِّنْ اَمْرِ يَوْمٍ اٰخِرٍ ۝

1 इसराईली वंश के बारह कबीले थे। अल्लाह ने प्रत्येक कबीले के लिये अलग अलग सोने निकाल दिये ताकि उन के बीच पानी के लिये झगड़ा न हो (दिखिये-तफ्सीरे कुर्तुबी)

कोई डर नहीं होगा, और न ही वे उदासीन होंगे।¹

63. और (याद करो) जब हम ने तुर (पर्वत) का तुम्हारे ऊपर करके तुम से वचन लिया, कि जो हम ने तुम को दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो, और उस में (जो आदेश-निर्देश है) उन्हें याद रखो, ताकि तुम (यातना से) बच सको।

64. फिर उस के बाद तुम मुकर गये तो यदि तुम पर अस्त्राह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते।

65. और तुम उन्हें जानते ही हो जिन्होंने शनिवार के द्वारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हम ने कहा कि तुम निरिस्कृत बंदर² हो जाओ।

66. फिर हम ने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिये चेतावनी, और (अस्त्राह से) डरने वालों के लिये शिक्षा बना दिया।

67. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा अस्त्राह तुम्हें एक गाय

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاتَّقُوا يَوْمَ تُرْفَعُ السُّورَةُ ۚ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ عَنِ الْيَقِينِ ۝

لَقَدْ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَتَوَلَّيْنَاكُمْ عَلَىٰ كُفْرِكُمْ وَلَئِنَّكُمْ لَفِي عَذَابٍ ۝

وَلَقَدْ عَهِدْنَا لَكُمُ الْيَوْمَ الْآخِرَ أَنْ تَكُونَ لَنَا عِبَادًا حَقًّا ۖ وَأَنْتُمْ كَاذِبُونَ ۝

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّلْمَاجِدِ ۖ وَذَرْنَاهَا وَمَا حَلَفْنَا ۝ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝

وَرَدُّ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ

1 इस आयत में यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि मुक्ति केवल उन्हीं के गिराह के लिये है। आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी धर्मों के अनुयायी अपने समय में सत्य आस्था तथा सन्कर्म के कारण मुक्ति के योग्य थे परन्तु अब नबी मस्रहाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप की शिक्षाओं को मानना मुक्ति के लिये अनिवार्य है।

2 यहूदियों के लिये यह नियम है कि वे शनिवार का आदर करें और इस दिन कोई ससारिक कार्य न करें, तथा उपासना करें। परन्तु उन्होंने ने इस का उल्लंघन किया और उन पर यह प्रकोप आया।

वध करने का आदेश देता है। उन्होंने ने कहा: क्या तुम हम से उपहास कर रहे हो? (मूसा ने) कहा मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में हो जाऊँ।

تَذِيحُوا بَقَرَةً مَّا لَكُمْ أَنْ تَكُونُوا تَاهُرُونَ قَالَ
أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝

68. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बना दे कि वह गाय कैसी हो? (मूसा ने) कहा वह (अर्थात: अल्लाह) कहना है कि वह न बूढ़ी हो, और न बछिया हो इस के बीच आयु की हो। अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है उसे पूरा करो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا فِي آيَةِ
يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ظَائِرُ فِيهَا وَلَا يَضَعُ
بَيْنَ ذَئْبٍ فَأَفْعَلُوا مَا تَأْمُرُونَ ۝

- 69 वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें उस का रंग बना दे। (मूसा ने) कहा वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो। जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا قَالَ
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَوْرَ آدَمَ فَتَوَسَّعْ لَوْنُهَا
كَلِمَ الْمَظْهُرِينَ ۝

70. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो? वास्तव में हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं। और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पना लगा लेंगे।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا فِي آيَةِ الْقُرْ
أَشْبَهَ عَلَيْكَ وَأَنْتَ شَاءَ اللَّهُ تَهْتَدُونَ ۝

71. मूसा बोले वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो सेवा कार्य न करती हो, न खेत (भूमि) जोतती हो, और न खेत सींचती हो वह स्वस्थ हो, और उस में कोई धब्बा न हो। वह बोले अब तुम ने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे वध कर दिया। जब कि वह समीप थे कि इस काम को न करें।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولَ تُبِذَرُ لِأَرْضِ
وَلَا تُسْقَى مَعَرَةً مُسَمَّاةً لِأَرْضِيَّةٍ فِيهَا قَالُوا أَتَشْرِ
جُمْتُ بِالْحَقِّ فَنَذَرُهَا دَمًا كَاذِبًا يَفْعَلُونَ ۝

72. और (याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, तथा एक दूसरे पर (दोष) धोपने लगे, और अब्राह को उसे व्यक्त करना था जिसे तुम छुपा रहे थे।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَرَأْتُمُوهَا وَأَلِيقَا بِهَا وَاللَّهُ مُخْرِجُ مَا لَكُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾

73. अतः हम ने कहा कि उस (निहत व्यक्ति के शव) को उस (गाय) के किसी भाग से मारो¹, इसी प्रकार अब्राह मुर्दों को जीवित करेगा। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِغُضْفٍ يُدْعَى بِهَا وَاللَّهُ لَمَوْلٍ وَإِنَّا لَنَظِيرُكُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧٣﴾

74. फिर यह (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उन से भी अधिक कठोर हो गये। क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होने हैं, जिन से नहरें फूट पड़ती हैं और कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकल आता है और कुछ अब्राह के डर से गिर पड़ते हैं और अब्राह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَتَّقِفُ فَيَقْرَبُ مِنْهُ الْمَاءُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَاللَّهُ يُفَاطِلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾

75. क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जब कि उन में एक गिरोह ऐसा था जो अब्राह की बाणी (तौरात) को सुनता था, और समझ जाने के बाद जान बूझ कर उस में परिवर्तन कर देता था?

أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ لَنَحْوُهُمْ يُفَوِّنُونَ نَبِّ مَا عَقَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि इस प्रकार निहत व्यक्ति जीवित हो गया। और उस ने अपने हत्यारे को बताया, और फिर मर गया। इस हत्या के कारण ही बनी इसराईल को गाय की बलि देने का आदेश दिया गया था। अगर वह चाहते तो किसी भी गाय की बलि दे देते परन्तु उन्होंने ने टाल मटोल से काम लिया इस लिये अब्राह ने उस गाय के विषय में कठोर आदेश दिया।

76. तथा जब वह इमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी इमान¹ लाये, और जब एकान्त में आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वह बातें क्यों बनाते हो जो अल्लाह ने तुम पर खाली² है? इस लिये कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण बनाये, क्या तुम समझते नहीं हो?

77. क्या वह नहीं जानते कि वह जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, उस सब को अल्लाह जानता है?

78. तथा उन में कुछ अनपढ़ है वह पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते, परन्तु निराधार कामनाये करते, तथा केवल अनुमान लगाने हैं।

79. तो विनाश है उन के लिये³ जो अपने हाथों से पुस्तक लिखने हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है ताकि उस के द्वारा तानिक मूल्य खरीदें। तो विनाश है उन के अपने हाथों के लेख के कारण। और विनाश है उन की कमाई के कारण।

80. तथा उन्होंने ने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी। (हे नबी!) उन से कहो कि क्या तुम ने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है, कि अल्लाह अपना

وَإِذَا الْغَوَّاتُ دُخِنَ مَنُوعًا قَالُوا مَا الْقَوَّاتُ إِذَا خَلَا
بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُوهَا أَمْ تُفْتَنُونَ
اللَّهُ عَلَىٰ كَرِّ الْحَاكِمِ إِيَّاهُ يُعَذِّبُكُمْ بِمَا أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ۝

أُولَٰئِكَ يَفْتَنُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُرْسِدُونَ وَمَا
يُفْتَنُونَ ۝

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَتْلُونَ الْكِتَابَ إِلَّا تَمَانٍ
فَبُذِّلُوا لَهُمْ لَا يَتْلُونَ ۝

قَوْلِهِمْ كَذِبٌ يُكْسِبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ يُفَرِّقُونَ
يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ يُشْرِكُونَ بِهِ لَمَّا
قِيلَ لِقَوْلِهِمْ لَهُمْ مِمَّا كُتِبَ إِلَيْهِمْ يُفَرِّقُونَ
لَهُمْ وَمَا يَكْتَسِبُونَ ۝

وَقَالُوا لَنْ نَسْمَعَ النَّارَ إِلَّا آيَاتًا مَّعْدُودَةً قُلْ
لَنَحْذَرُ اللَّهَ عِندَ اللَّهِ وَعَهْدًا فَلَنْ نُخْلِفَ اللَّهُ
عَهْدًا أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

2 अर्थात् अन्तिम नबी के विषय में तौरात में बनाई है

3 इस में यहूदी विद्वानों के कुकर्मों का बताया गया है।

वचन भंग नहीं करेगा? बल्कि तुम अब्राह के द्वारे में ऐसी बातें करने हो, जिन का तुम्हें ज्ञान नहीं।

81. क्यों नहीं, जो भी बुराई कमायेगा तथा उस का पाप उसे घेर लेगा तो वही नारकीय है। और वही उस में सदावासी होगा।

82. तथा जो ईमान लाये और सत्कर्म करें, वही स्वर्गीय है। और वह उस में सदावासी होगा।

83. और (याद करो) जब हम ने वनी इस्राईल से दूढ़ वचन लिया कि अब्राह के सिवा किसी की इबादत (बंदना) नहीं करोगे, तथा माता-पिता के साथ उपकार करोगे, और समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों, दीन-दुखियों के साथ, और लोगों से भली बात बोलोगे, तथा नमाज की स्थापना करोगे, और जकान दोगे, फिर तुम में से थोड़े के सिवा सब ने मुंह फेर लिया, और तुम (अभी भी) मुंह फेरे हुए हो।

84. तथा (याद करो) जब हमने तुम से दूढ़ वचन लिया कि आपस में रक्तपात नहीं करोगे, और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे! फिर तुम ने स्वीकार किया, और तुम उस के साक्षी हो।

بَلْ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ غَيِّبَتُهُ
قَالَ لَهُمْ آصْحَابُ مَثَرُ هُمْ فِيهَا حِيدُونَ ٨١

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا حِيدُونَ ٨٢

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا
تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ سُبْحَٰنَ الْمَوْلَىٰ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسُّكَّانِ
وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَقُيِمُوا الصَّلَاةَ
وَأَتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا
مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ مُّعْرِضُونَ ٨٣

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَآءَكُمْ وَلَا
تَحْرِبُونَ أَمْوَالَكُمْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ تَحْرِبُهُمْ
وَأَنتُمْ مُّشَاهِدُونَ ٨٤

- 1 यहाँ यहूदियों के दावे का खण्डन तथा नरक और स्वर्ग में प्रवेश के नियम का वर्णन है।

85. फिर¹ तुम वहीं हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो तथा अपनों में से एक गिरोह को उन के घरों से निकाल रहे हो, और पाप तथा अत्याचार के साथ उन के विरुद्ध सहायता करते हो, और यदि वे बढ़ी होकर तुम्हारे पास आयें तो उन का अर्धदण्ड चुकाते हो, जब कि उन को निकालना ही तुम पर हाराम (अवैध) था, तो क्या तुम पुस्तक के कुछ भाग पर इमान रखते हो, और कुछ का इन्कार करते हो? फिर तुम में से जो ऐसा करते हों, तो उन का दण्ड क्या है? इस के सिवा कि सांसारिक जीवन में अपमान तथा प्रलय के दिन अति कड़ी यातना की ओर फेंके जायें, और अल्लाह तुम्हारे कर्नूलों से निश्चय नहीं है।

86. उन्होंने ने ही आखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन खरीद लिया, अतः उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन की सहायता की जायेगी।

87. तथा हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की, और उस के पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे, और हम ने मर्यम के पुत्र ईसा को खुनी

ثُمَّ سَأَلْتُمْ هَؤُلَاءَ بِقَتْلِهِمْ أَنْعَمُوا عَلَيْكُمْ وَعَجَبُونَ
فَرِيقًا تَنْصَرِفُونَ عَنْ طَعْنِهِمْ قُلْ مَنْ يُؤْمِرُكُمْ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ عَلَىٰ مَنْ لَا يَأْتِيكُمْ بِبَيِّنَاتٍ
فَقُولُوا مَن يُؤْمِرُكُمْ عَلَيْهِمْ فَزَيَّلُوا قُلْ لَا يَأْتِيكُمْ بِهِ لَٰئِلَآءُ الْغَيْبِ
وَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ يَسْتَوُونَ قُلْ لَا يَمْلِكُ لَكُمْ شَيْءٌ شِرَآءًا وَلَا يَتَّقُونَ
بِشَيْءٍ قُلْ لَا يَمْلِكُ لَكُمْ شَيْءٌ شِرَآءًا وَلَا يَتَّقُونَ بَشِيرًا وَلَا نَذِيرًا
قُلْ لَا يَمْلِكُ لَكُمْ شَيْءٌ شِرَآءًا وَلَا يَتَّقُونَ بَشِيرًا وَلَا نَذِيرًا
قُلْ لَا يَمْلِكُ لَكُمْ شَيْءٌ شِرَآءًا وَلَا يَتَّقُونَ بَشِيرًا وَلَا نَذِيرًا

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ
فَلَا يَحْتَفِلُ فِيهِمُ الْعَذَابُ لَٰكِنَّهُمْ
يَنْصَرِفُونَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَفَعَّلْنَا مِنْ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ آيَاتٍ بَاطِلَاتٍ لِّيُضِلَّ
أَبْصَارَهُمْ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيهِمْ
رُسُلًا فَكُفَرُوا بِهِمْ ثُمَّ
أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَالسَّلْطَانَ
فَسَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝

1 मदीने में यहूदियों के तीन कबीलों में बनी कैनुकाअ और बनी नजीर मदीने के अरब कबीले खजरज के सहयोगी थे। और बनी कुरैजा और कबीले के सहयोगी थे। जब इन दोनों कबीलों में युद्ध होना तो यहूदी कबीले अपने पक्ष के साथ दूसरे पक्ष के साथी यहूदी की हत्या करते। और उसे वे घर कर देने थे। और युद्ध विराम के बाद पराजित पक्ष के बंदी यहूदी का अर्धदण्ड दे कर यह कहने हुये मुक्त करा देने कि हमारी पुस्तक तौरात का यही आदेश है। इसी का वर्णन अल्लाह ने इस आयत में किया है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

निशानियों दी, और रूहुल कुदुस¹⁾ द्वारा उसे समर्थन दिया, तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरुद्ध कोई बात तुम्हारे पास लेकर आया तो तुम अकड़ गये, अतः कुछ नवियों को झुठला दिया, और कुछ की हन्या करने लगे?

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْفُسَكُمْ اسْتَغِيْثُوْا بِمَقَرِّبِنَا
كَذٰبْتُمْ وَّمَقَرِّبِنَا تَقْتُلُوْنَ ۝

88. तथा उन्हो ने कहा कि हमारे दिल तो बंद² हैं। क्योंकि उन के कुफ़र (इन्कार) के कारण अब्राह ने उन्हें धिक्कार दिया है। इसी लिये उन में से बहुत थोड़े ही इमान लाते हैं।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلُوْبٌ لِّمَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ
يَكْفُرُوْنَ فَكَيْفَ يُؤْمِنُوْنَ ۝

89. और जब उन के पास अब्राह की ओर से एक पुस्तक (कुरआन) आ गई, जो उन के साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है जब कि इस से पूर्व वह स्वयं काफ़िरो पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, तो जब उन के पास वह चीज आ गई जिसे वह पहचान भी गये, फिर भी उस का इन्कार कर³ दिया, तो

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِندِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانَ مِنْ قَبْلُ يَسْتَفِئُوْنَ عَلَى
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا
بِهٖ فَكَفَعَتِ اللّٰهُ عَنْ الْكَافِرِيْنَ ۝

1 रूहुल कुदुस से अभिप्रेत फरिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम है।

2 अर्थात् नबी की बातों का हमारे दिलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

3 आयत का भावार्थ यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस पुस्तक (कुरआन) के साथ आने से पहले वह काफ़िरो से युद्ध करने थे तो उन पर विजय की प्रार्थना करते और बड़ी व्याकुलता के साथ आप के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। जिस की भाविष्यवाणी उन के नवियों ने की थी और प्रार्थनायें किया करते थे कि आप शीघ्र आयें, ताकि काफ़िरो का प्रभुत्व समाप्त हो और हमारे उत्थान के युग का शुभारंभ हो। परन्तु जब आप आ गये तो उन्होंने आप के नबी होने का इन्कार कर दिया, क्यों कि आप बनी इस्राइल में नहीं पैदा हुये जो यहाँदियों का गोत्र है। फिर भी आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही के पुत्र

काफिरों पर अल्लाह की धिक्कार है।

90. अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक)¹ का इन्कार कर के घुरे बदले पर इन्होंने अपने प्राणों को बेच दिया, इस द्वेष के कारण कि अल्लाह ने अपना प्रदान (प्रकाशना) अपने जिस भक्त² पर चाहा उतार दिया। अतः वह प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये, और ऐसे काफिरों के लिये अपमानकारी यातना है।

91. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा³ है, उस पर ईमान लाओ तो कहने हैं हम तो उसी पर ईमान रखते हैं जो हम पर उतरा है और इस के सिवा जो कुछ है उस का इन्कार करते हैं। जब कि वह सत्य है और उस का प्रमाणकारी है जो उन के पास है। कहो कि फिर इस से पूर्व अल्लाह के नवियों की हत्या क्यों करने थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो?

92. तथा मूसा तुम्हारे पास खली निशानियों ले कर आये। फिर तुम ने अत्याचार करते हुए बछड़े को पूज्य बना लिया।

93. फिर उस दृढ़ वचन को याद करो, जो हम ने तुम्हारे ऊपर तूर (पर्वत)

يَسْتَمِئْهُمْ آيَاتُ اللَّهِ فَكُفُّوا عَنْهَا
أَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَ
مِن قِبَلِهِ وَمَا يُنذِرُكَ
عَنِ الْمُنَافِقِينَ ۚ

وَأَذَانًا لِّمَن يَخَافُ
أَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَ
مِن قِبَلِهِ وَمَا يُنذِرُكَ
عَنِ الْمُنَافِقِينَ ۚ

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ
ظَالِمُونَ ۚ

وَأَذَانًا لِّمَن يَخَافُ
أَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَ
مِن قِبَلِهِ وَمَا يُنذِرُكَ
عَنِ الْمُنَافِقِينَ ۚ

इसमाइल अलैहिस्सलाम के वंश से है, जैसे बनी इस्राइल उन के पुत्र इस्राईल की संतान है।

1 अर्थात् कुर्आन।

2 भक्त अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी बना दिया।

3 अर्थात् कुर्आन पर।

सूरह नास⁽¹⁾ - 114

سُوْرَةُ النَّاسِ

सूरह नास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 6 आयत है।

- इस में पाँच बार ((नास)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है जिस का अर्थ इन्सान है।⁽²⁾
- इस की आयत 1 से 3 तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं
- आयत 4 में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होने से सावधान किया गया है।
- आयत 5 में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत 6 में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिब तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हर रात जब विस्तर पर जाने तो सूरह इख्नास और यह और इस के पहल्वे की सूरह (अर्थात्: फलक) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूंकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। मिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुजारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुखारी: 6319, 5748)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानो के पालनहार की शरण में आता हूँ।
- 2 जो सारे इन्सानो का स्वामी है।
- 3 जो सारे इन्सानो का पूज्य है।⁽³⁾

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ

مَلِكِ النَّاسِ

رَبِّ النَّاسِ

1 यह सूरह मक्का में अवतरित हुई।

2 (1 3) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण

97. (हे नबी!)¹ कह दो कि जो व्यक्ति जिवरील का शत्रु है (तो रहे)। उस ने तो अब्राह की अनुमति से इस सदेश (कुर्आन) को आप के दिल पर उतारा है, जो इस से पूर्व की सभी पुस्तकों का प्रमाणकारी तथा ईमान वालों के लिये मार्गदर्शन एवं (सफलता) का शुभ समाचार है।
98. जो अब्राह तथा उस के फरिश्तों और उस के रसूलों और जिवरील तथा मीकाइल का शत्रु हो, तो अब्राह काफ़िरो का शत्रु है।²
99. और (हे नबी!) हम ने आप पर खुली आयतें उतारी है, और इस का इन्कार केवल वही लोग³ करेंगे जो कुकर्म हैं।
100. क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्होंने ने कोई वचन दिया तो उन के एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया? बल्कि इन में बहुतरे ऐसे हैं जो ईमान नहीं रखते।

عَلِّمْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ
عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ
وَهَدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ
وَمِيكَائِيلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ۝

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ تَبَيَّنَتْ وَمَا
يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ۝

أَوَلَمْ نَكُنْ عَهْدًا وَعَهْدًا بَيْنَهُمْ بَيْنَ يَدَيْنَا
أَلَمْ نَكُنْ لَكُمْ آيَةً ۝

- 1 यहूदी, केवल रसूलुअब्राह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों ही को बुरा नहीं कहते थे, वह अब्राह के फरिश्ते जिवरील को भी गालियाँ देने थे कि वह दया का नहीं प्रकोप का फरिश्ता है। और कहते थे कि हमारा मित्र मीकाइल है।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने अब्राह के किसी रसूल चाहे वह फरिश्ता हो या इन्सान से बैर रखा तो वह सभी रसूलों का शत्रु तथा कुकर्म है। (इब्ने कसीर)
- 3 इब्ने अब्बास रजियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि यहूदियों के विद्वान इब्ने सूरिया ने कहा है मुहम्मदा! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप हमारे पास कोई ऐसी चीज नहीं लाये जिसे हम पहचानते हों। और न आप पर कोई खुली आयत उतारी गई कि हम आप का अनुसरण करें। इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

101. तथा जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक रसूल उस पुस्तक का समर्थन करने हुये जो उन के पास है आ गया¹ तो उन के एक समुदाय ने जिन को पुस्तक दी गई अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया जैसे वह कुछ जानते ही न हों।

102. तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे उस का अनुसरण करने लगे। जब कि सुलैमान ने कभी कुफ्र (जादू) नहीं किया परन्तु कुफ्र तो शैतानों ने किया जो लोगों को जादू सिखा रहे थे तथा उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो धाविल (नगर) के दो फरिश्तों हारुत और मारुत पर उतारी गई, और वह दोनों किसी को (जादू) नहीं सिखाते जब तक यह न कह देते कि हम केवल एक परीक्षा है अतः तू कुफ्र में न पड़। फिर भी वह उन दोनों से वह चीज सीखते जिस के द्वारा वह पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें। और वह अल्लाह की अनूमति बिना इस के द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे जो उन के लिये हानिकारक हों, और लाभकारी न हों। और वह भली भाँति जानते थे कि जो इस का स्वरीदार बना परलोक में उस का कोई भाग नहीं, तथा कितना बुरा उपभाग्य है जिस

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْنُونَ ۝

وَالشَّيْطَانُ مَا تَشْكُرُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مَلَكُوتِ سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَٰكِنَّ الشَّيْطَانِ كَفَرٌ ۖ وَيُعَلِّمُونَ النَّاسَ النَّجْرَ ۚ وَمَا تُعَلِّمُونَ لَشَيْئًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ هَٰذَا ذِكْرُ وَلَدَيْنَا مَعَ الْيَعْقُوبَ ۚ مِن لَّدُنَّا حَتَّىٰ يَقُولَ إِنَّكَ بَدِئْتَ فَلَا تَكْفُرُ ۚ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ لَحْمِهِ وَذَرِّيَّتِهِ ۚ وَمَا لَهُمْ بَشَائِرٍ بِهِ ۚ مِن لَّدُنَّا إِلَّا يَٰأَيُّهَا الْمَلُوءُ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلَّمُوا لَدُنَّا أُشْرَهُ ۚ مَا لَهُ لِي الْأَهْرَةِ ۚ مِن خَلْقِي ۚ وَلَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुर्आन के साथ आ गये।

के बदले वह अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं¹, यदि वह जानते होते।

103. और यदि वह ईमान लाने, और अब्बाह से डरने, तो अब्बाह के पास इस का जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उन के लिये उत्तम होना, यदि वह जानते होना।

104. हे ईमान वालो! तुम "राइना"² न कहो "उन्जुरना" कहो और ध्यान से बात सुनो, तथा काफ़िरो के लिये दुखदायी यानना है।

105. अहले किताब में से जो काफ़िर हो गये, तथा जो मिश्रणवादी हो गये, यह नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर कोई भलाई उतारी जाये, और

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَتَقَوُا أَمْرَ اللَّهِ لَأَعْتَمِدُوا عَلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَذَرُوكَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعَيْنَا
وَقُولُوا اتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
عَذَابِ الْيَاسِينَ

مَا يَتُودُّ الْيَاسِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا
الْمُشْرِكِينَ ۚ إِنَّ يَتُودُّ عَنْ يَمِينِهِمْ خَيْرٌ مِنْ
رَبِّكَوَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

1. इस आयत का दूसरा अर्थ यह भी किया गया है कि सुलेमान ने कुफ़र नहीं किया, परन्तु शैतानों ने कुफ़र किया वह मानव को जादू सिखाने थे और न दो फ़रिश्तों पर जादू उतारा गया, उन शैतानों या मानव में से हारूत तथा मारूत जादू सिखाने थे। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)। जिस ने प्रथम अनुवाद किया है उस का यह विचार है कि मानव के रूप में दो फ़रिश्तों को उन की परीक्षा के लिये भेजा गया था।

सुलेमान अलैहिस्सलाम एक नबी और राजा हुये हैं। आप दावूद अलैहिस्सलाम के पुत्र थे।

2. इब्ने अब्बास रजियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभा में यहूदी भी आ जाते थे। और मुसलमानों को आप से कोई बात समझनी होती तो "राइना" कहना अर्थात् हम पर ध्यान दीजिये, या हमारी बात सुनिये। इब्रानी भाषा में इस का बुरा अर्थ भी निकलता था, जिस से यहूदी प्रसन्न होते थे, इस लिये मुसलमानों को आदेश दिया गया कि इस के स्थान पर तुम "उन्जुरना" कहा करो। अर्थात् हमारी ओर देखिये। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

अल्लाह जिस पर चाहे अपनी विशेष दया करता है, और अल्लाह बड़ा दानशील है।

106. हम अपनी कोई आयत निरस्त कर देने अथवा भुला देते हैं तो उस से उत्तम अथवा उस के समान लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे¹ कर सकता है?

107. क्या तुम यह नहीं जानते कि अकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह ही के लिये है और उस के सिवा तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक नहीं है?

108. क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे मूसा से प्रश्न किये जाते रहे? और जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ्र से बदल लेगा तो वह सीधी डगर से विचलित हो गया।

109. अहले किलाब में से बहुत से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात् अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ्र की ओर फेर दें जब कि सत्य उन के लिये उजागर हो गया, फिर भी तुम क्षमा से काम लो और जाने दो। यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

مَا تَسْأَلُونَ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنزِلُهَا نَأْتِي بِهَا مِثْلُهَا أَوْ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَكَأَنَّ كَذِبَ يُرَىٰ

أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

أَمْ يُرِيدُونَ أَن يُتَنَبَّؤَ رَسُولُهُمْ مِّثْلَ مُوسَىٰ
مِمَّنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَتَّبِعِ ٱلْأَفْكَارَ
يَٱلْأَيْسَافِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ ٱلْجَبِيلِ ۝

وَذَكِّرْهُمْ مِّنْ قَبْلِ أَن يَكْتُمِبَ لُوَٓٔىٰهُم مِّنْ
بَعْدِ ٱلْإِيمَٰنِ ۚ فَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ مِنْهُمْ
يَعْلَمُونَ مَا سَبَقَ لَهُمُ ٱلْحَقُّ ۖ فَاغْلُظُواْ
وَاصْبِرُواْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بِأَمْرِهِٗٓ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

1 इस आयत में यहूदियों के तौरान के आदेशों के निरस्त किये जाने तथा ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूव्वत के इन्कार का खण्डन किया गया है।

110. तथा तुम नमाज की स्थापना करो, और जकात दो। और जो भी भलाई अपने लिये किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا تُقَدِّمُوا وَلَا تُؤَخِّرُوا إِنَّا نَعْلَمُ غُيُوبَهُمْ
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا تُقَدِّمُوا وَلَا تُؤَخِّرُوا إِنَّا نَعْلَمُ غُيُوبَهُمْ

111. तथा उन्होंने ने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा जब तक यहूदी अथवा नसारा¹ (ईसाई) न हो। यह उन की कामनायें हैं। उन से कहो कि यदि तुम सत्यवादी हो तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो।

وَقَالُوا لَنَبْذُلَنَّكَ الْإِنْفُسَ الَّتِي عَلَيْكَ إِلَّا نَحْنُ مُؤَمَّدُونَ
وَقَالُوا لَنَبْذُلَنَّكَ الْإِنْفُسَ الَّتِي عَلَيْكَ إِلَّا نَحْنُ مُؤَمَّدُونَ

112. क्यों नहीं? जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा पालन के समर्पित कर देगा तथा सदाचारी होगा तो उस के पालनहार के पास उस का प्रतिफल है। और उन पर कोई भय नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

وَقَالُوا لَنَبْذُلَنَّكَ الْإِنْفُسَ الَّتِي عَلَيْكَ إِلَّا نَحْنُ مُؤَمَّدُونَ
وَقَالُوا لَنَبْذُلَنَّكَ الْإِنْفُسَ الَّتِي عَلَيْكَ إِلَّا نَحْنُ مُؤَمَّدُونَ

113. तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं। और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जब कि वह धर्म पुस्तक³ पढ़ते हैं। इसी जैसी बात उन्होंने ने भी कही, जिन के पास धर्मपुस्तक का कोई ज्ञान⁴ नहीं,

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَنَبْذُلَنَّكَ الْإِنْفُسَ الَّتِي عَلَيْكَ إِلَّا نَحْنُ مُؤَمَّدُونَ
وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَنَبْذُلَنَّكَ الْإِنْفُسَ الَّتِي عَلَيْكَ إِلَّا نَحْنُ مُؤَمَّدُونَ

1 अर्थात् यहूदियों ने कहा कि केवल यहूदी जायेंगे, और ईसाईयों ने कहा कि केवल ईसाई जायेंगे।

2 स्वर्ग में प्रवेश का साधारण नियम अर्थात् मुक्ति एकेश्वरवाद तथा सदाचार पर आधारित है, किसी जाति अथवा गिरोह पर नहीं।

3 अर्थात् नौरात तथा इजील जिस में सब नवियों पर इमान लाने का आदेश दिया गया है।

4 धर्म पुस्तक से अज्ञान अरब थे। जो यह कहते थे कि (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ नहीं है।

यह जिस विषय में विभेद कर रहे हैं।
उस का निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन
उन के बीच कर देगा।

114. और उस से बड़ा अन्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों में उस के नाम का वर्णन करने से रोके। और उन्हें उजाड़ने का प्रयत्न करे¹, उन्हीं के लिये योग्य है कि उस में डरते हुये प्रवेश करें, उन्हीं के लिये मस्जिद में अपमान है, और उन्हीं के लिये आखिरत (परलोक) में घोर यातना है।

115. तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। तुम जिधर भी मुख करो², उधर ही अल्लाह का मुख है। और अल्लाह विशाल अति जानी है।

116. तथा उन्होंने ने कहा³ कि अल्लाह ने कोई सन्तान बना ली। वह इस से पवित्र है। आकाशों तथा धरती में जो भी है, वह उसी का है, और सब उसी के आज्ञाकारी है।

117. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये बस यह आदेश देता है कि "हो

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذَكَّرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسُئِلَ فِي خُرُوبِهَا أُولَئِكَ مَا كَانُوا لَعْنَةً أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِبِينَ ۝ وَلَقَدْ كَفَرَ لُقْمَانُ وَالْقَوْمُ بِهِ وَنَحْنُ بِهِ عَصِيَّةٌ ۝

وَاللَّهُ الشَّرِيفُ الْكَرِيمُ ۝ لَا يَمْلِكُ شَيْءٌ عِنْدَهُ إِلَّا أَنْ يَقُولَ كُنْ فَيَكُونُ ۝ وَجَهَ النُّجُومِ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عِلْمُهُ ۝

وَقَالُوا لَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ نِعْمَةَ بَلَىٰ لَا تَمْلِكُ لَهُمْ أَرْضٌ وَلَا سَمَاءٌ ۝

بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِذْ قَضَىٰ أَمْرًا ۝ وَأَنَّهُ يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

1 जैसे मक्का वासियों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को मिन 6 हिजरी में काबा में आने से रोक दिया। या इसाइयों ने बैतुल मुकद्दस् को दाने में बुल्लत नस्सर (राजा) की सहायता की।

2 अर्थात् अल्लाह के आदेशानुसार जिधर भी रुख करोगे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

3 अर्थात् यहूद और नसारा तथा मिश्रणवादियों ने

जा" और बह हो जाती है।

118. तथा उन्होंने ने कहा जो ज्ञान¹ नही रखने कि अल्लाह हम से बान क्यों नही करता, या हमारे पास कोई आयत क्यों नही आती। इसी प्रकार की बात इन से पूर्व के लोगों ने कही थी। इन के दिल एक समान हो गये। हम ने उन के लिये निशानियाँ उजागर कर दी है जो विश्वास रखने है।

119. (हे नबी!) हम ने आप को सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान² करने वाला बना कर भेजा है और आप से नारकियों के विषय में प्रश्न नही किया जायेगा।

120. हे नबी! आप से यहूदी तथा ईसाई सहमत (प्रसन्न) नही होंगे, जब तक आप उन की रीति पर न चलें। कह दो कि सीधी डगर बही है जो अल्लाह ने बताई है। और यदि आप ने उन की आकाक्षाओं का अनुसरण किया इस के पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह (की पकड़) से आप का कोई रक्षक और सहायक नही होगा।

121. और हम ने जिन को पुस्तक प्रदान की है, और उसे वैसे पढ़ते है, जैसे

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ نَزَّلَ إِلَيْنَا الْكِتَابَ
أَوْ تَأْتِينَا بِهِ لَعْنَتُكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَاءُ ثُمَّ تُلَوِّحُ بِقَدَمِكَ
الْأَيْ بِقَوْلِهِمْ يُؤْتَوْنَ ۝

إِنَّمَا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا
لَّا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجُنُودِ ۝

وَلَنْ تَرْضَى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَى حَتَّى تَبْهَمَ
مِلَّتَهُمْ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۚ وَاللَّهُ
يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَأَهْلُ الْأَيْدِي جَاءَكَ مِنَ الْمَعِينِ
مَالِكٌ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَةٍ

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादियों ने।

2 अर्थात् सत्य ज्ञान के अनुपालन पर स्वर्ग की शुभ सूचना देने तथा इन्कार पर नरक से सावधान करने के लिये। इस के पश्चात् भी कोई न माने तो आप उस के उत्तरदायी नही है।

पहुँचना चाहिये, वही उस पर इमान रखते हैं। और जो उसे नकारते हैं वही क्षतिग्रस्तों में से हैं।

أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْخَاسِرُونَ ﴿١٢١﴾

122. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो जो तुम पर किया। और यह कि तुम्हें (अपने युग के) संसार वामियों पर प्रधानता दी थी।

يَعْنِي إِسْرَآءِيلَ أَذْكُرُوا تَصَدَّقَ عَلَيْكُمْ
وَأَنِّي لَفَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٢٢﴾

123. तथा उस दिन से डरो जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस से कोई अर्धदण्ड स्वीकार किया जायेगा, और न उसे कोई अनुशंसा (मिफारिश) लाभ पहुँचायेगी, और न उन की कोई सहायता की जायेगी।

وَأَنفَعُ يَوْمَئِذٍ لِّغَيْرِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْءٌ وَلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا
هُمُ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾

124. और (याद करो) जब इब्राहीम की उस के पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली। और वह उस में पूरा उतरा, तो उस ने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्मानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहा: तथा मेरी सन्तान से भी। (अब्राहम ने कहा:) मेरा वचन उन के लिये नहीं जो अत्याचारी¹ हैं।

فَإِذْ ابْتَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ فَأَتَمَّهُنَّ قَالَ إِنِّي
جَاعِلُكَ لِلْعَالَمِينَ إِمَامًا قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي قَالَ لَا
يَتَّبِعُكَ مِنَ الْمَشْرُوقِينَ ﴿١٢٤﴾

- 125 और (याद करो) जब हम ने इस घर (अर्थात: काबा) को लोगों के लिये बार बार आने का केन्द्र तथा शान्ति स्थल निर्धारित कर दिया। तथा यह आदेश दे दिया कि "मकामे इब्राहीम" को नमाज का

وَأَذْجَعْنَا الْبَيْتَ مَسْجِدًا لِلْعَالَمِينَ وَمَحَابَّةً لِّلَّذِينَ
آمَنُوا لِيُذَكِّرُوا فِيهِ لَبَّاسًا أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
وَلَا سَیْلَ إِلَّا لِيُخْذَرُوا أَنَّهُمْ إِلَىٰ خُرْبَةٍ
يَبْتَغُونَ ﴿١٢٥﴾

1 आयत में अत्याचार से अभिप्रेत केवल मानव पर अत्याचार नहीं, बल्कि सत्य को नकारना तथा शिर्क करना भी अत्याचार में सम्मिलित है।

स्थान¹ बना लो। तथा इब्राहीम और इस्माईल को आदेश दिया कि मेरे घर को तवाफ (परिक्रमा) तथा एतिकाफ² करने वालों और सजदा तथा रुक करने वालों के लिये पवित्र रखो।

126. और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस क्षेत्र को शान्ति का नगर बना दे तथा इस के वासियों को जो उन में से अब्राह और अर्न्लिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे, विभिन्न प्रकार की उपज (फलों) से आजीविका प्रदान कर। (अब्राह ने) कहा: तथा जो काफिर है उन्हें भी मैं थोड़ा लाभ दूँगा, फिर उसे नरक की यातना की ओर बाध्य कर दूँगा। और वह बहुत बुरा स्थान है।

- 127 और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल इस घर की नींव ऊँची कर रहे थे। तथा प्रार्थना कर रहे थे: हे हमारे पालनहार! हम में यह सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

128. हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना। तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना।

وَوَدَّ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّي اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْحُ
أَهْلَهُ مِنَ الشَّرِّ مَنْ آمَنَ مِنْهُمْ يُارْحَمُوا وَلِيَوْمَ يُدْعَى
قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ
النَّارِ وَيُخْلَسُ السَّعِيرُ ﴿١٢٦﴾

وَوَدَّ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَائِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَالْحُسَيْنُ رَبَّنَا
تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً
مُسْلِمَةً لَكَ وَأَيُّهَا مَنَّاوَلَكُ وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ

1 "मकामे इब्राहीम" से तात्पर्य वह पत्थर है जिस पर खड़े हो कर उन्होंने ने काबा का निर्माण किया। जिस पर उन के पदचिन्ह आज भी सुरक्षित हैं। तथा तवाफ के पश्चान् वहाँ दो रकअत नमाज पढ़नी सुन्नत है।

2 "एतिकाफ" का अर्थ किसी मस्जिद में एकान्त में हो कर अब्राह की इबादत करना है।

दे जो तेरा आज्ञाकारी हो। और हमें
हमारे (हज्ज) की विधियाँ बता दे।
तथा हमें क्षमा कर। वास्तव में तू
अतिक्षमी दयावान् है।

أَنْتَ الْكَرِيمُ الرَّحِيمُ

129. हे हमारे पालनहार। उन के बीच
इन्हीं में से एक रसूल भेज, जो उन्हें
तेरी आयतें सुनाये और उन्हें पुस्तक
(क़ुर्आन) तथा हिक्मत (मुन्नत)
की शिक्षा दे। और उन्हें शुद्ध तथा
आज्ञाकारी बना दे। वास्तव में तू ही
प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

رَبِّنا وَأَبْعَثْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا
عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُؤْتِيهِمُ الْحَقَّ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

130. तथा कौन होगा, जो इब्राहीम के
धर्म से विमुख हो जाये परन्तु वही
जो स्वयं को मूर्ख बना ले। जब कि
हम ने उसे संसार में चुन¹ लिया,
तथा अखिरत (परलोक) में उस की
गणना सदाचारियों में होगी।

وَمَنْ يَرْفُضْ عَنْ قَوْلِ إِبْرَاهِيمَ الْأَمْنِ سَوَاءٌ
نَفْسُهُ وَلَقَدْ فَضَّلْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَرَبَّنَا فِي
الْآخِرَةِ إِنَّنَا الْغَنِيُّ الْغَنِيُّ

- 131 तथा (याद करो) जब उस के
पालनहार ने उस से कहा: मेरा
आज्ञाकारी हो जा। तो उस ने तुरन्त
कहा मैं विम्व के पालनहार का
आज्ञाकारी हो गया।

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْمِعْ قَالَ أَسْمِعْتُ لِرَبِّ
الْعَالَمِينَ

1 यह इब्राहीम तथा इस्माइल अलैहिमस्सलाम की प्रार्थना का अन्त है। एक रसूल से अभिप्रेत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। क्योंकि इस्माइल अलैहिस्सलाम की संतान में आप के सिवा कोई दूसरा रसूल नहीं हुआ। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं अपने पिता इब्राहीम की प्रार्थना ईसा की शुभ सूचना, तथा अपनी माता का स्वप्न हूँ। आप की माता अमिना ने गर्भ अवस्था में एक स्वप्न देखा कि मूँझ से एक प्रकाश निकला जिस से शाम (देश) के भवन प्रकाशमान हो गये। (देखिये हाकिम 2600)। इस को उन्होंने ने सहीह कहा है। और इमाम जह्शी ने इस की पुष्टि की है।

2 अर्थात् मार्गदर्शन देने तथा नबी बनाने के लिये निर्वाचित कर लिया।

132. तथा इब्राहीम ने अपने पुत्रों को तथा याकूब ने इसी बात पर बल दिया कि: हे मेरे पुत्रों! अल्लाह ने तुम्हारे लिये यह धर्म (इस्लाम) निर्वाचित कर दिया है। अतः मरने समय तक तुम इसी पर स्थिर रहना।

133. क्या तुम याकूब के मरने के समय उपस्थित थे, जब याकूब ने अपने पुत्रों से कहा: मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किस की इबादत (वन्दना) करोगे? उन्होंने ने कहा: हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इस्माइल तथा इसहाक के एक पूज्य की इबादत (वन्दना) करेंगे और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे।

134. यह एक समुदाय था जो जा चुका। उन्होंने ने जो कर्म किये वे उन के लिये हैं। तथा जो तुम ने किये वह तुम्हारे लिये। और उन के किये का प्रश्न तुम से नहीं किया जायेगा।

135. और वह कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा। आप कह दें: नहीं! हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

136. (हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर इमान लाये, तथा उस पर जो (क़र्आन) हमारी ओर उतारा गया। और उस पर जो इब्राहीम, इस्माइल, इसहाक याकूब, तथा उन की संतान की

وَوَضَّيْنا بِعَآلِئِهِم مِّنْهُ وَيَقُولُ يٰٓيٰٓسَٓٔ
اِنَّهُ اَضْحٰى لِكُلِّ الدِّينِ وَلَا تَمُوتُنَّ اِلَّا وَكُنْتُمْ
مُسْلِمِيْنَ ۝

اَمْ كُنْتُمْ شٰهِدَآءَ مَّا دَحَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتَ اِذْ
قَالَ يٰٓبَنِيَّ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ قَالُوْا نَعْبُدُ
اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَائِنَا اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَيٰٓسَٓٔ
اِلٰهًا وَّاحِدًا ۝ۙ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝

وَلٰكِنَّ اُمَّةً قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَرِكْمًا
كَثِيْرًا وَلَا تَسْأَلُوْنَ عَنْهَا شَيْئًا ۝

وَقَالُوْا كُذِّبُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَوْ تَصٰرُوْا نَعْتًا ۝ۙ قُلْ بَلْ
وَلٰٓئِهٖم مَّجِيْمٌ مِّمَّا كَانُ مِنَ الشَّٰكِكِيْنَ ۝

قُلُوْا اٰمَنَّا بِاللهِ وَنَاْتِلٰٓيْنٰ وَمَا اُنزِلَ
بِزُهْمٍ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيٰٓعْقُوْبَ وَاِلٰسَٓٔ
وَمَا اُوْنٰى مُوسٰى وَهٰرُونَ وَمَا اُوْنٰى اِسْحٰٓٔ
وَيٰٓسَٓٔ لَا تَقْرُبْ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَتَعْنُ لَهٗ
مُسْلِمُوْنَ ۝

और उतारा गया। और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया, तथा जो दूसरे नवियों को उन के पालनहार की ओर से दिया गया। हम इन में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

137. तो यदि वह तुम्हारे ही समान ईमान ले आये, तो वह मार्गदर्शन पा लेंगे। और यदि विमुख हों तो वह विरोध में लीन हैं। उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये अल्लाह बस है। और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है।

138. तुम सब अल्लाह के रंग¹¹ (स्वभाविक धर्म) को ग्रहण कर लो। और अल्लाह के रंग से अच्छा किस का रंग होगा? हम तो उसी की इवाजत (बंदना) करते हैं।

139. (हे नबी!) कह दो कि: क्या तुम हम से अल्लाह के (एकत्व) होने के विषय में झगड़ते हो? जब कि वही हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है।¹² फिर हमारे लिये हमारा कर्म है, और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। और हम तो बस उसी की इवाजत (बंदना) करने वाले हैं।

140. हे अहले किताब! क्या तुम कहते हो

فَإِنْ آمَنُوا بِمَا آمَنُوا بِهِ فَلَيْسَ بَدْعًا
وَأَنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هِيَ زُنَادٌ مِّنْ مَّيْمَنَتِكُمْ
إِلَٰهُهُمُ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً
وَنَحْنُ لَهُ عَابِدُونَ

فَلِأَنَّا نَحْنُ إِلَٰهُهُمُ وَهُمْ أَوَّلُكُمْ وَلَٰكِنَّا
أَعْمَلْنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُ لَكُمْ دِينُ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ

أَمْ يَقُولُونَ إِذْ بُرِّهَ وَاسْتَعِيزَ وَاسْتَعِزَّ

1 इस में इसाई धर्म की (वैदिक) की परम्परा का खण्डन है। इसाईयों ने पीले रंग का जल बना रखा था। और जब कोई इसाई होता या उन के यहाँ कोई शिशु जन्म लेता तो उस में स्नान करा के इसाई बनाने थे। अल्लाह के रंग से अभिप्राय एकेश्वरवाद पर आधारित स्वभाविक धर्म इस्लाम है। (तफ्सीर कुर्तुबी)

2 अर्थात् फिर बंदनीय भी केवल वही है।

कि इब्राहीम, इम्माईल, इम्हाक, याकूब तथा उन की संतान यहूदी या ईसाई थी? उन से कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अब्राह? और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जिस के पाम अब्राह का साक्ष्य हो और उसे छुपा दो और अब्राह तुम्हारे कर्तूतों से अचेत तो नहीं है¹।

141. यह एक समुदाय था, जो जा चुका। उन के लिये उन का कर्म है, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। तुम से उन के कर्मों के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा²।

142. शीघ्र ही मुख लोग कहेंगे कि उन को जिस कियले³ पर वह थे, उस से किस बात ने फेर दिया? (हे नबी!) उन्हें बना दो कि पूर्व और पश्चिम सब अब्राह के हैं। वह जिसे चाहे सीधी राह पर लगा देता है।

143. और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया, ताकि तुम सब पर साक्षी⁴

وَيَعْقُوبَ وَالْإِسْحَاقَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى قُلْ
ءَأَنتُمْ أَعْلَمُ أَمْرًا اللَّهُ يُدْعَى إِلَهُ الْغَيْبِ
وَمَا لَهُ يُعَاقِبَ عَمَّا تَعْمَلُونَ

بَذَلَتْ لَهُمْ مَا قُتِلَتْ فِيهَا مَا لَمْ يَكُنْ لَكُمْ
لَكُمْ تَوَلَّوْا لَشِقْوَتِهِمْ عَمَّا كَانُوا
يَعْمَلُونَ

سَيَقُولُ الشُّعْبَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ
عَنْ يَكْلَبِهِمْ الْيَهُودَ كَانُوا عَلَيْهِمْ قُلْ يَتَّبِعُ الشُّعْبَاءُ
وَالْمَعْرُوفَ يَتَّبِعُونَ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِمْ

وَلَقَدْ لَكُمُ الْحُكْمُ أَنَّمَا وَسَّطُوا بَيْنَهُمْ عَلَى النَّاسِ
وَيَتْلُونَ الْوَسْطَى عَلَيْهِمْ شَيْئًا مِمَّا جَعَلْتُمُ الْفِتْنَةَ الْيَهُودَ

1 इस में यहूदियों तथा ईसाइयों के इस दावे का खण्डन किया गया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम आदि नबी यहूदी अथवा ईसाई थे

2 अर्थात् तुम्हारे पूर्वजों के सदाचारों से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा और न उन के पापों के विषय में तुम से प्रश्न किया जायेगा, अन्त अपने कर्मों पर ध्यान दो।

3 नमाज में मुख करने की दिशा।

4 साक्षी होने का अर्थ जैसा कि हदीस में आया है यह है कि प्रलय के दिन नूह अलैहिस्सलाम को बुलाया जायेगा और उन से प्रश्न किया जायेगा कि क्या तुम ने अपनी जाति को सदेश पहुँचाया? वह कहेंगे हाँ। फिर उन की जाति से प्रश्न किया जायेगा, तो वह कहेंगे कि हमारे पास सावधान करने के लिये कोई नहीं

वनो, और रसूल तुम पर साक्षी हों, और हम ने वह किवला जिस पर तुम थे, इसी लिये बनाया था ताकि यह बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म में) फिर जाता है। और यह बान बड़ी भारी थी, परन्तु उन के लिये नहीं जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे इमान (अर्थात् बैतुलमक़दिस की दिशा में नमाज पढ़ने) को व्यर्थ कर दे । वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अत्यन्त करुणामय तथा दयावान् है।

144. (हे नबी!) हम आप के मुख को बार बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आप को उस किवले (काबा) की ओर फेर देंगे जिस से आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपना मुख मस्जिद हुराम की ओर फेर लो¹, तथा (हे मुसलमानो!) तुम भी जहाँ रहो उसी की ओर मुख किया करो। और निश्चय अहले किताब जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से

كُنْتُ عَبْدِيهَا إِنَّمَا نَعْلَمُ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَيْهِ قَبِيلُهُ وَلَئِنْ كُنْتُ لَلْيَمِينِ الْوَاعِدِ الْوَصِيُّ وَالَّذِينَ هُمْ يَكْفُرُونَ وَالَّذِينَ هُمْ يَكْفُرُونَ وَالَّذِينَ هُمْ يَكْفُرُونَ

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنْ نُعِيدَ إِلَيْكَ فَتَةً تَرُصُّهَا قَوْمٌ لَّيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ شَيْءٌ سِوَا نَهْيِهِمْ فَاحْذَرُوا الْكَيْدَ وَأَعْلَمُ مَا لَمْ يَكُنْ لَكُمْ فَوَاقٍ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ وَالَّذِينَ هُمْ يَكْفُرُونَ وَالَّذِينَ هُمْ يَكْفُرُونَ وَالَّذِينَ هُمْ يَكْفُرُونَ

आया, तो अल्लाह नआला नूह अलैहिस्सलाम से कहेगा कि तुम्हारा साक्षी कौन है? वह कहेंगे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उन की उम्मत। फिर आप की उम्मत साक्ष्य देगी कि नूह ने अल्लाह का सन्देश पहुंचाया है। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम पर अर्थात् मुसलमानों पर साक्षी होंगे (सहीह बुखारी 4486)

- 1 अर्थात् उस का फल प्रदान करेगा।
- 2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से मदीना प्रस्थान करने के पश्चात्, बैतुलमक़दिस की ओर मुख कर के नमाज पढ़ते रहे। फिर आप को काबा की ओर मुख कर के नमाज पढ़ने का आदेश दिया गया।

सत्य है¹, और अल्लाह उन के कर्मों से असूचित नहीं है।

145. और यदि आप अहले किताब के पास प्रत्येक प्रकार की निशानी ला दें तब भी वह आप के किवले का अनुसरण नहीं करेंगे। और न आप उन के किवले का अनुसरण करेंगे, और न उन में से कोई दूसरे के किवले का अनुसरण करेगा। और यदि ज्ञान आने के पश्चात् आप ने उन की अकाक्षाओं का अनुसरण किया तो आप अत्याचारियों में से हो जायेंगे।

146. और जिन्हें हम ने पुस्तक दी है वह आप को ऐसे ही² पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं। और उन का एक समुदाय जानते हुये भी सत्य को छुपा रहा है।

- 147 सत्य वही है जो आप के पालनहार की ओर से उतारा गया। अतः आप कदापि सन्देह करने वालों में न हों।

148. प्रत्येक के लिये एक दिशा है जिस की ओर वह मुख कर रहा है। अतः तुम भलाईयों में अग्रसर बनो। तुम जहाँ भी रहोगे अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَلَيْسَ آيَاتِ الْمُرْسَلِينَ كَالْآيَاتِ الَّتِي يُتْلَىٰ عَلَيْكَ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكَ وَ مَا آتَىٰ بِرَبِّكَ قُلُوبَهُمْ قَلِيلًا يُفْقَهُ ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْبَيِّنَاتِ لَذَرْكَ أَهْلَ الْغُلُوبِ ۚ

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَفْقَهُونَ كَثِيرًا مِّمَّا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكَ قُلُوبُهُمْ لَئِنِ اتَّبَعُوا الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۚ

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۚ

وَلِكُلِّ دِينٍ وَجْهَةٌ ۚ فَاسْتَبِقُوا الْحَيَاتِ ۚ إِنَّ مَآ تَكُونُوا يَأْتِي كُرْسِيَّ اللَّهِ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ كُلِّ صَّادِقٍ ۚ

- 1 क्योंकि अंतिम नबी के गुणों में उन की पुस्तकों में बनाया गया है कि वह किवला बदल देंगे।
2 आप के उन गुणों के कारण जो उन की पुस्तकों में अंतिम नबी के विषय में वर्णित किये गये हैं।

149. और आप जहाँ भी निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें। निःसन्देह यह आप के पालनहार की ओर से सत्य (आदेश) है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से अस्मिन्त नहीं है।

150. और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेंकें, और (हे मुसलमानों!) तुम जहाँ भी रहो अपने मुखों को उसी की ओर फेंको, ताकि उन को तुम्हारे विरुद्ध किसी विवाद का अवसर न मिले। मगर उन लोगों के अतिरिक्त जो अत्याचार करें। अतः उन से न डरो। मुझी से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपना पुरस्कार (धर्मविधान) पूरा कर दूँ। और ताकि तुम सीधी डगर पा जाओ।

151. जिस प्रकार हम ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम को शुद्ध आज्ञाकारी बनाता है, और तुम्हें पुस्तक (क़र्आन) तथा हिक़्मत (सुन्नत) सिखाता है तथा तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे।

152. अतः मुझे याद करो, ¹ मैं तुम्हें याद करूँगा। ² और मेरे आभारी रहो। और मेरे कलघ्न न बनो।

153. हैं ईमान वालों! धैर्य तथा नमाज़ का सहारा लो निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتَ فَاذْكُرْهُ يَاقَانِي ۖ

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ قَوَّلٍ وَنَحْنُ نَقُصُّكَ الْقَصَصَ الْقَصِيَّةَ
وَحَيْثُ تَأْتِيكَ قَوْمٌ أَوْ حَوْمَةٌ تَقُصُّهُ فَإِنَّهُ يُكُونُ
لِلنَّاسِ عَلَيْكَ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا
تُخْشَوُهُمْ وَخُشِئْتَ لَهُمْ وَلَئِنَّكَ فِي عَيْنِنَا وَأَعْلَمُ
بِغَيْبِهِمْ

كَمَا أَوْفَدْنَاهُم مِّن قَبْلِكَ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا
وَيُرْسِلْنَاهُمْ فِرْعَانَ الْكُتُبِ وَالْجِلَّةِ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكَلَامَ
الْعَلِيمَ ۝۱۸

قَالَ كُفُّوا أَعْيُنَكُمْ عَنْ أَدْعِيَائِهِمْ وَاسْتَغْزِوا عَنْهُمْ رُءُوسَكُمْ وَأَبْصُرُوا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالْعُشْرِ إِنَّ اللَّهَ
مَعَ الصَّابِرِينَ

1 अर्थात् मेरी आज्ञा का अनुपालन और मेरी अराधना करो।

2 अर्थात् अपनी क्षमा और पुरस्कार द्वारा ।

154. तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जीवित है, परन्तु तुम (उन के जीवन की दशा) नहीं समझते।

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَمْوَاتٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ

155. तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे और धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दो।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالشَّرَىٰ وَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ

156. जिन पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी के पास फिर कर जाना है।

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِلَىٰهِ رَاجِعُونَ

157 इन्हीं पर उन के पालनहार की कृपायें तथा दया है, और यही सीधी राह पाने वाले हैं।

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ

158. बेशक सफा तथा मरवा पहाड़ी¹ अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से है। अतः जो अल्लाह के घर का हज्ज या उमरह करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेर लगाये और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःसन्देह अल्लाह उस का गुणग्राही अति जानी है।

إِنَّ الْقَعْنَاقَ وَالْمُرَّةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَهُمَا مَعْنًى وَأَنْ يَتَوَفَّيَهُمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرٌ فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ

159. तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को इस के पश्चात् कि:

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ مَا آتَانَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ يَنَالِينَ فِي الْأَكْتَابِ أُولَٰئِكَ

1 यह दो पर्वत हैं जो काबा की पूर्वी दिशा में स्थित हैं। जिन के बीच मान फेरे लगाना हज्ज तथा उमरे का अनिवार्य कर्म है। जिस का आरम्भ सफा पर्वत से करना सुन्नत है।

हम ने पुस्तक¹ में उसे लोगों के लिये उजागर कर दिया है, छुपाते हैं उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है² तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं।

يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ النَّاسُ

160. और जिन लोगों ने तौबा (क्षमा याचना) कर ली, और सुधार कर लिया, और उजागर कर दिया, तो मैं उन की तौबा स्वीकार कर लूँगा, तथा मैं अत्यन्त क्षमाशील दयावान् हूँ।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

161. वास्तव में जो काफिर (अविश्वासी) हो गये, और इसी दशा में मरे तो वही है जिन पर अल्लाह तथा फरिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है।

رَبِّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَآمَنُوا وَهَرُفُوا أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمُ اللَّعْنَةُ وَالْمَلَكَةُ الرَّابِعَةُ تَجْعَلُهُنَّ

162. वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उन में यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन को अवकाश दिया जायेगा।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَخَفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُقَرَّرُونَ

163. और तुम्हारा पूज्य एक ही³ पूज्य है, उस अत्यन्त दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं।

فَاللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

164. बेशक आकाशों तथा धरती की रचना में, रात तथा दिन के एक दूसरे के पीछे निरन्तर आने जाने में, उन नावों में जो मानव के लाभ के साधनों को लिये सागरों में चलती फिरती है, और वर्षा के उस पानी में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاجْتِلَابِ الْبَحْرِ وَالنَّجَارِ وَالْغُلُوبِ الْبَيْنَ لَعَلَّ النَّاسَ يَرْجِعُونَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَيْنَ يَدَيْهَا مِنْ كُلِّ دَاكَّةٍ وَنَجْرٍ رَيْبَ الْيَرْبِيعِ وَالْعَاقِبُ الْخَيْرُ مِنَ الْبَحْرِ رَيْبِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُعْقِلُونَ

1 अर्थात् तौरात, इजील आदि पुस्तकों में।

2 अल्लाह के धिक्कारने का अर्थ अपनी दया से दूर करना है।

3 अर्थात् जो अपने स्तित्व तथा नामों और गुणों तथा कर्मों में अकेला है।

है, फिर धरती को उस के द्वारा उस के मरण (मखने) के पश्चात् जीवित करता है, और उस में प्रत्येक जीवों को फैलाता है, तथा वायुओं को फेरने में, और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच उस की आज्ञा¹ के अधीन रहते हैं, (इन सब चीजों में) अगणित निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ बूझ रखते हैं।

165. कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अब्राहम के सिवा दूसरों को उस का साझी बनाने हैं, और उन से, अब्राहम से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं, तथा जो ईमान लाये वह अब्राहम से सर्वाधिक प्रेम करते हैं, और क्या ही अच्छा होता यदि यह अत्याचारी यातना देखने के समय² जो बात जानेंगे इसी समय³ जानने कि सब शक्ति तथा अधिकार अब्राहम ही को है। और अब्राहम का दण्ड भी बहुत कड़ा है (तो अब्राहम के सिवा दूसरे की पूजा अराधना नहीं करते।)

166. जब यह दशा⁴ होगी कि जिस का अनुसरण किया गया⁵ वह

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّبِعُ مِثْلَ دُونِ اللَّهِ إِن تَدْرَأُ
يُخَوِّفُهُمْ لَحَبَّ السُّيُوفِ أَمَّا أَشَدَّ حَرًّا لَّهُمْ وَلَوْ
بَرَى الَّذِينَ كَفَرُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا وَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

إِذْ تَرَ الَّذِينَ الْيَاسِينَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَرَأَوْا

1 अर्थात् इस विश्व की पूरी व्यवस्था इस ज्ञान का तर्क और प्रमाण है कि इस का व्यवस्थापक अब्राहम ही एकमात्र पूज्य तथा अपने गुण कर्मों में एकता है। अतः पूजा अर्चना भी उसी एक की होनी चाहिये। यही समझ बूझ का निर्णय है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 अर्थात् संसार ही में।

4 अर्थात् प्रलय के दिन।

5 अर्थात् संसार में जिन प्रमुखों का अनुसरण किया गया।

अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे और उन के आपस के सभी सम्बन्ध¹ टूट जायेंगे।

167. तथा जो अनुयायी होंगे वह यह कामना करेंगे कि एक बार और हम समार में जाने, तो इन से ऐसे ही विरक्त हो जाने जैसे यह हम से विरक्त हो गये। ऐसे ही अब्ब्राह उन के कर्मों को उन के लिये मंताप बना कर दिखाएगा, और वह अग्नि से निकल नहीं सकेंगे।

168. हे लोगो! धरती में जो अनुसरण किया गया हलाल (वैध) स्वच्छ चीजें हैं उन्हें खाओ। और शैतान की बताई राहों पर न चलो², वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

169. वह तुम को बुराई तथा निर्लज्जा का आदेश देता है, और यह कि अब्ब्राह पर उम चीज का आरोप³ धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो।

170. और जब उन⁴ से कहा जाता है कि जो (कुर्आन) अब्ब्राह ने उनारा है, उस पर चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है ۞ यदि उन के पूर्वज कुछ न समझते रहे, तथा कुपथ पर रहे हों (तब भी वह

العذاب وتغلقت بهم الأبواب

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّا كُنَّا نَدْرَأُ عَنْهُمْ كَمَا نَدْرَأُ عَنْكَ يَرْيَبُهُمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ خَسِرَتْ عَلَيْهِمْ زُنَاهُمْ يَجْرِي مِنَ الْكَارِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِن ثَمَارِ الْأَرْضِ حِينَ ظَنُّوا أَنَّهُمْ سَيُخْرِجُهُمُ الشَّيْطَانُ مِنْهَا إِنَّهُ لَكُم مِّنْ دُونِهِمْ

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِشَيْءٍ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى الْبُطُحِ لَا تَعْلَمُونَ

وَلَاذِ قِيلَ لَهُمْ شَيْءٌ مَّا نَزَّلَ اللَّهُ قَالُوا أَتِلَ سَيَبْعُهُمُ الْعَيْنَا عَلَيْهِ ۖ بَاءَ أَوْلُوا كَانَ ۖ وَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ

1 अर्थात् सामीप्य, अनुसरण तथा धर्म आदि का।

2 अर्थात् उस की बताई बातों को न मानो।

3 अर्थात् वैध को अवैध करने आदि का।

4 अर्थात् अहले किताब तथा मिश्रणवादियों से।

उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?)

171. उन की दशा जो काफिर हो गये उस के समान है जो उस (पशु) को पुकारता है, जो हाँक पुकार के सिवा कुछ¹ नहीं सुनता, यह (काफिर) बहरे, गुंगे तथा अंधे हैं। इस लिए कुछ नहीं समझते।

وَمَثَلُ الْيَزِينِ لَمَثَلِ الْيَهُودِ يَنْعِقُونَ بِمَا لَا يَسْمَعُونَ إِلَّا دُعَاءَ وَهْدًا صُمًّا وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

172. हे ईमान वाले! उन स्वच्छ चीजों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं। तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो। यदि तुम केवल उसी की इबादत (बंदना) करते हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ رِبَّانَةً تَعْبُدُونَ

173. (अल्लाह) ने तुम पर मुर्दार² तथा (बहना) रक्त और सुअर का मांस, तथा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो उन को हाराम (निषेध) कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाये जब कि वह नियम न तोड़ रहा हो, और आवश्यकता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो तो उस पर कोई दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।³

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخُزْغِيرِ وَمَا أُهْلِيَ بِهِ مِنْ أَغْطَرٍ ذَلِكَ فَصْلَ الْفُلْجَانِ وَالْأَعْيَانِ وَلَا تُحْسِنُوا الصَّلَاةَ وَالزَّكَاةَ وَالصَّوْمَ وَلَا تُخَالِفُوا مَنَاسِكَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ رَحِيمٌ

174. वास्तव में जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ

- 1 अर्थात् ध्वनि सुनता है परन्तु बात का अर्थ नहीं समझता।
- 2 जिसे धर्म विधान के अनुसार बध न किया गया हो अधिक विवरण सूरह माइदह में आ रहा है।
- 3 अर्थात् ऐसा विवश व्यक्ति जो हलाल जीविका न पा सके उस के लिये निषेध नहीं कि वह अपनी आवश्यकतानुसार हाराम चीजें खा लें। परन्तु उस पर अनिवार्य है कि वह उस की सीमा का उल्लंघन न करे और जहाँ उसे हलाल जीविका मिल जाये वहाँ हाराम खाने से रुक जाये।

रहे हैं, और उस के बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते हैं, वही अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं। तथा अब्राह उन से बात नहीं करेगा, और न उन को विशुद्ध करेगा और उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

175. यही वह लोग हैं जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ खरीद लिया है। तथा क्षमा के बदले यातना। तो नरक की अग्नि पर वह किनने सहनशील हैं?

176. इस यातना के अधिकारी वह इस लिये हुये कि अब्राह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा। और जो पुस्तक में विभेद कर बैठे। वह वास्तव में विरोध में बहुत दूर निकल गये।

- 177 भलाई यह नहीं है कि तुम अपने मुख को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो। भला कर्म तो उस का है। जो अब्राह तथा अतिस दिन (प्रलय) पर ईमान लाया। तथा फारिश्तों और सब पुस्तकों तथा नबियों पर, तथा धन का मोह रखने हुये, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (फकीरों) को और दाम मुक्ति के लिये दिया, और नमाज की स्थापना की तथा जकात दी और अपने वचन को जब भी बचन दिया पूरा करते रहे। और निर्धनता और रोग तथा युद्ध की

يَسْتَرْفُونَ بِهِ شَيْئًا قَلِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَكَانَ كَيْلُ هُمْ إِلَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَا يَرْجِيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلٰةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابُ أَشَدَّ مِنْ أَجْرِهِمْ عَلَى النَّارِ

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ سَرَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۚ وَكَانَ الْكَافِرِينَ يَخْتَلِفُونَ فِي الْكِتَابِ لِيُنْشَأُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُولُوا وَتُؤْمِرُوا بِقُلِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْأَخْيَارِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَأَمَّا الْقَالَ عَلَىٰ حَيْثُ ذَوَى الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَأَمَّا السُّؤْمِيَّةُ فِي الزَّكَاةِ وَأَمَّا الصَّلَاةُ وَالْزَّكَاةُ وَالزُّكُوفُ وَالْمُؤْتُونَ بِهَا إِذَا لَحِقُوا وَالْمُؤْتُونَ فِي الْمَسَاكِينِ وَالْقُرْبَىٰ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝

स्थिति में धैर्यवान रहें। यही लोग सच्चे हैं तथा यही (अल्लाह से) डरते⁽¹⁾ हैं।

178. हे इमान वाले! तुम पर निहत व्यक्तियों के बारे में किसान (बरावरी का बदला) अनिवार्य² कर दिया गया है। स्वतंत्र का बदला स्वतंत्र से लिया जायेगा, तथा दाम का दाम से, और नारी का नारी से, और जिस अपराधी के लिये उस के भाई की ओर से कुछ क्षमा कर³ दिया जाये तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण (अनुगमन) करना चाहिये। निहत व्यक्ति के वारिस को भलाई के साथ दियत (अर्धदण्ड) चुका देना चाहिये। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से सुविधा तथा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقَتْلُ بِالْقَتْلِ وَالْأُنْثَىٰ بِالْأُنْثَىٰ فَمَنْ عُثِرَ لَهُ مِنْ غَيْرِهِ فَلْيَنْكِحْهُ فَإِنْ كَانَ مِنَ الْغَنِيِّ فَفِي ذَلِكَ حَرَامٌ وَإِنْ كَانَ مِنَ الْفُقَرَاءِ فَلْيُتْرَكْ لَهُ فَإِنْ كَانَ مِنَ الْغَنِيِّ فَلْيُتْرَكْ لَهُ فَإِنْ كَانَ مِنَ الْفُقَرَاءِ فَلْيُتْرَكْ لَهُ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقَتْلُ بِالْقَتْلِ وَالْأُنْثَىٰ بِالْأُنْثَىٰ فَمَنْ عُثِرَ لَهُ مِنْ غَيْرِهِ فَلْيَنْكِحْهُ فَإِنْ كَانَ مِنَ الْغَنِيِّ فَفِي ذَلِكَ حَرَامٌ وَإِنْ كَانَ مِنَ الْفُقَرَاءِ فَلْيُتْرَكْ لَهُ فَإِنْ كَانَ مِنَ الْغَنِيِّ فَلْيُتْرَكْ لَهُ فَإِنْ كَانَ مِنَ الْفُقَرَاءِ فَلْيُتْرَكْ لَهُ

- 1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नमाज़ में किये की ओर मुख करना अनिवार्य है फिर भी सन्धर्म इतना ही नहीं कि धर्म की किसी एक बात को अपना लिया जाये। सन्धर्म तो सत्य आस्था सन्कर्म और पूरे जीवन को अल्लाह की आज्ञा के अधीन कर देने का नाम है।
- 2 अर्थात् यह नहीं हो सकता कि निहत की प्रधानता अथवा उच्च वंश का होने के कारण कड़ व्यक्ति मार दिये जाये जैसा कि इस्लाम से पूर्व जाहिलियत की रीति थी कि एक के बदले कड़ को ही नहीं यदि निर्बल कबीला हो तो पूरे कबीले ही को मार दिया जाता था। इस्लाम ने यह नियम बना दिया कि स्वतंत्र तथा दाम और नर नारी सब मानवता में बराबर हैं। अतः बदले में केवल उसी को मारा जाये जो अपराधी है। वह स्वतंत्र हो या दाम नर हो या नारी (संक्षिप्त इन्ने कमीर)
- 3 क्षमा दो प्रकार से हो सकता है: एक तो यह कि निहत के लोग अपराधी को क्षमा कर दें दूसरा यह कि किसान को क्षमा कर के दियत (अर्धदण्ड) लेना स्वीकार कर लें। इसी स्थिति में कहा गया है कि नियमानुसार दियत (अर्धदण्ड) चुका दो।

दया है। इस पर भी जो अत्याचार¹
करे तो उस के लिये दुःखदायी
यातना है।

179. और हे समझ वालो! तुम्हारे लिये
किसास (के नियम में) जीवन है,
ताकि तुम रक्तपात से बचो।²

وَالَّذِينَ الْقَتَلُوا حَيَاتَهُمْ فِي الْأَنْبَاءِ لَعَنُوا
تَتُوبُونَ ۝

180. और जब तुम में से किसी के निधन
का समय हो, और वह धन छोड़
रहा हो तो उस पर माता पिता
और समीपवर्तियों के लिये साधारण
नियमानुसार वसियत (उत्तरदान)
करना अनिवार्य कर दिया गया
है। यह आज्ञाकारियों के लिये
सुनिश्चित³ है।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا أَحْضَرَكُمْ الْمَوْتُ مِنْ تَرَكْتُمْ خَيْرًا
الْوَصِيَّةَ الَّتِي فِي الْبَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا
عَلَى الْمَتِّعِينَ ۝

181. फिर जिस ने वसियत सुनने के
पश्चात् उसे बदल दिया तो उस का
पाप उन पर है जो उसे बदलेंगे। और
अब्राहम सब कुछ सुनता जानता है।

كَلَّا بَدَّلَ لَهُ يَحَدُّ مَا أَتَمَّعَهُ فَأَسْبَغَ إِلَهُ عَلَى
الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ لَوْلَا إِنَّ اللَّهَ لَكَنَ لَئِيمًا عَذِيبًا ۝

- 1 अर्थात् क्षमा कर देने या दियत लेने के पश्चात् भी अपराधी को मार डालने तो उसे किमास में हन किया जायेगा।
- 2 क्योंकि इस नियम के कारण कोड़ किसी को हन करने का साहस नहीं करेगा। इस लिये इस के कारण समाज शान्तिमय हो जायेगा। अर्थात् एक किमास से लोगों के जीवन की रक्षा होगी। जैसा कि उन देशों में जहाँ किमास का नियम है देखा जा सकता है। कर्आन इसी ओर संकेत करने हुये कहता है कि किमास नियम के अन्दर वास्तव में जीवन है।
- 3 यह वसियत (मीरास) की आयत उतरने से पहले अनिवार्य थी, जिसे (मीरास) की आयत से निरस्त कर दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि अब्राहम ने प्रत्येक अधिकारी को उस का अधिकार दे दिया है अतः अब वारिस के लिये कोड़ वसियत नहीं है। फिर जो वारिस न हो तो उसे भी निहाइ धन से अधिक की वसियत उचित नहीं है। (सहीह बुखारी-4577 सुनन अबू दावूद 2870, इब्ने माजा 2210)

182. फिर जिसे डर हो कि वमिष्यत करने वाले ने पक्षपात या अन्याचार किया है, फिर उस ने उन के बीच सुधार करा दिया तो उस पर कांड पाप नहीं। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

فَمَنْ خَافَ مِنْ نُوْصٍ جَمْعًا اَوْ اِنْسًا فَاَصْلَحَ
بَيْنَهُمْ فَلَا تُعَذِّبُوْهُنَّ اِنَّهُ عَفُوٌّ رَّحِيْمٌ

183. हे ईमान वाले! तुम पर रोजे¹ उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا
كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

184. वह गिनती के कुछ दिन हैं। फिर यदि तुम में से कोई रोगी, अथवा यात्रा पर हो तो यह गिनती दूसरे दिनों में पूरी करो। और जो उस (रोजे) को सहन न कर सके², वह फिदया (प्रायश्चित) दे। जो एक निर्धन को खाना खिलाना है। और जो स्वेच्छा भलाई करे वह उस के लिये अच्छी बात है। और यदि तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोजा रखना ही अच्छा है।

أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ عَلَى
سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ
يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ فَمَنْ تَطَوَّعَ
خَيْرًا لَّهُوَ خَيْرٌ لَهُ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

185. रमजान का महीना वह है जिस में कुरआन उतारा गया जो सब मानव के लिये मार्गदर्शन है। तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى
لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ فَمَنْ
شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا

1 रोजे को अरबी भाषा में "सौम" कहा जाता है, जिस का अर्थ रुकना तथा त्याग देना है। इस्लाम में रोजा सन् दो हिजरी में अनिवार्य किया गया। जिस का अर्थ है प्रत्युष (भोर) से सूर्यास्त तक रोजे की नीति से खाने पीने तथा सभोग आदी चीजों से रुक जाना।

2 अर्थात् अधिक बुढ़ापे अथवा ऐसे रोग के कारण जिस से आरोग्य होने की आशा न हो तो प्रत्येक रोजे के बदले एक निर्धन को खाना खिला दिया करो।

अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है। अतः जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित¹ हो तो वह उस का रोजा रखे, फिर यदि तुम में से कोई रोगी² अथवा यात्रा³ पर हो, तो उसे दूसरे दिनों से गिनती पूरी करनी चाहिये। अल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता। और चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो, तथा इस बात पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उस ने तुम्हें मार्गदर्शन दिया। इस प्रकार तुम उस के कृतज्ञ⁴ बन सको।

186. (हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें ताकि वह सीधी राह पायें।

- 187 तुम्हारे लिये रोजे की रात में अपनी स्त्रियों से सहवास हलाल (उचित) कर दिया गया है। वह तुम्हारा वस्त्र⁵ है, तथा तुम उन का वस्त्र हो अल्लाह को ज्ञान हो गया कि

أَوْ عَلَّ سَمِعَ قَعْدًا فَمِنْ آيَاتِ الْقُرْآنِ يُرِيدُ اللَّهُ يَكُونَ
الْيَوْمَ وَلَا يُرِيدُ يَكُونَ الْقَوْمَ وَيَتَكَلَّمُوا فَمِنْ آيَاتِ
يَتَكَلَّمُوا اللَّهُ عَنْ مَا هَدَى كُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

وَلَا تَأْتِ عِبَادِي عَنِّي قَوْمٌ قَرِيبٌ لِيُحِبُّ
وَعَنِّي الدَّاعِ إِلَى الدَّعَاءِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا
بِأَعْلَانِهِمْ يَرْضَوْنَ ۝

أَحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الْهِجَارِ الرَّفْعُ إِلَى
نِسَائِكُمْ هُنَّ لَكُمْ وَأَنْتُمْ رِبَاةٌ
لَهُنَّ عِلْمٌ اللَّهُ أَعْلَمُ لَكُمْ لَكُمْ عَمَّا تَوْنُ أَنْفُسِكُمْ
فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ قَالَتِ بَابُ رُفْعٍ

1 अर्थात् अपने नगर में उपस्थित हो।

2 अर्थात् रोग के कारण रोजे न रख सकता हो।

3 अर्थात् इतनी दूर की यात्रा पर हो जिस में रोजा न रखने की अनुमति हो।

4 इस आयत में रोजे की दशा तथा गिनती पूरी करने पर प्रार्थना करने की प्रेरणा दी गयी है।

5 इस से पति पत्नी के जीवन साथी, तथा एक की दूसरे के लिये आवश्यकता को दर्शाया गया है।

तुम अपना उपभोग¹ कर रहे थे।
उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना)
स्वीकार कर ली, तथा तुम्हें क्षमा
कर दिया। अब उन से (रात्रि में)
सहवास करो, और अम्नाह के (अपने
भाग्य में) लिखे की खोज करो,
और (रात्रि में) खाओ तथा पीओ,
यहाँ तक कि भोर की सफेद धारी,
रात की काली धारी से उजागर हो²
जाये फिर रोजे को रात्रि (सूर्यास्त)
तक पूरा करो, और उन से सहवास
न करो, जब मस्जिदों में ऐतिकाफ
(एकान्तवाम) में रहो। यह अम्नाह
की सीमायें हैं, इन के समीप भी
न जाओ। इसी प्रकार अम्नाह लोगों
के लिये अपनी आयतों को उजागर
करना है ताकि वह (उन के
उल्लंघन) से बचें।

188. तथा आपस में एक दूसरे का धन
अवैध रूप से न खाओ, और न
अधिकारियों के पास उसे इस धेय से
ले जाओ कि लोगों के धन का कोड़
भाग जान बूझ कर पाप³ द्वारा खा
जाओ।

189. (हे नबी!) लोग आप से चन्द्रमा के
(घटने बढ़ने) के विषय में प्रश्न

وَأَسْتَفْهَمَا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى
يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخُطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخُطُ الْأَسْوَدِ
مِنَ اللَّيْلِ ثُمَّ أَتَى الضَّيْأَ إِلَى الْمَلِيلِ
وَلَا تَبْأَشِرُوا مِنْهُ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسْجِدِ
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرُبُوهَا كَذَلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ
وَتَذْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ وَأَكَلُوا فَرِيقًا
مِنْ أَمْوَالِ الْمَآئِينَ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ

1 अर्थात् पत्नी से सहवास कर रहे थे।

2 इस्लाम के आरंभिक युग में रात्री में सो जाने के पश्चात् रमजान में खाने पीने
तथा स्त्री से सहवास की अनुमति नहीं थी। इस आयत में इन सब की अनुमति
दी गयी है।

3 इस आयत में यह सकेत है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों के स्वत्व और धन से तथा
अवैध धन उपार्जन से स्वयं को रोक न सकना हो इबादन का कोई लाभ नहीं।

करते हैं? कह दें: इस से लागो को तिथियों के निर्धारण तथा हज्ज के समय का ज्ञान होता है। और यह कोई भलाई नहीं है कि घरों में उन के पीछे से प्रवेश करो, परन्तु भलाई तो अब्राह की अवैज्ञा से बचना है। और घरों में उन के द्वारों से आओ, तथा अब्राह से डरते रहो, ताकि तुम¹ सफल हो जाओ।

190. तथा तुम अब्राह की राह में, उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हों और अत्याचार न करो, अब्राह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

191. और उन को हत करो, जहाँ पाओ, और उन्हें निकालो, जहाँ से उन्होंने तुम को निकाला है, इस लिये कि फितना² (उपद्रव) हत करने से भी बुरा है। और उन से मस्जिदे हराम के पास युद्ध न करो, जब तक वह तुम से वहाँ युद्ध न³ करे। परन्तु यदि वह तुम से युद्ध करे तो उन की हत्या करो, यही काफिरों का बदला है।

192. फिर यदि वह (आक्रमण करने से) रुक जायें तो अब्राह अति क्षमी, दयावान् है।

يَسْأَلِينَ وَالْحَقَّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا
الْمَسْجِدَ مِنْ هَاهُنَا وَالْكَوْنِ الْيَمِينِ
الْأَيْ وَأَنْتُمْ الْمَسْجِدَ مِنْ يَمِينِهَا
وَأَقْبُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَعْلَيْتَ
يُقَاتِلُوا لَكُمْ وَلَا تُعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝

وَأَقْتُلُواهُمْ حَيْثُ نَجَسْتَهُمْ وَالْخُرُوجُ مِنْ
حَيْثُ أَخْرَجْتُمْ وَأَنْتُمْ أَشَدُّ مِنْ أَكْثَرِ
وَلَا تَقْلُوا لَهُمْ رِعْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى
يُقَاتِلُواكُمْ فِيهِ ۖ فَإِنْ قَاتَلُواكُمْ
فَأَقْتُلُواهُمْ كَمَا لَكُمْ بَشَرَاءُ الْكَافِرِينَ ۝

فَإِنْ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

1. इस्लाम से पूर्व अरब में यह प्रथा थी कि जब हज्ज का एहराम बांध लेते तो अपने घरों में द्वार से प्रवेश न कर के पीछे से प्रवेश करने थे। इस अंधविश्वास के खण्डन के लिये यह आयत उतरी कि भलाई इन रीतियों में नहीं बल्कि अब्राह से डरने और उस के आदेशों के उल्लंघन से बचने में है।

2. अर्थात् अधर्म, मिश्रणवाद और सन्धर्म इस्लाम से रोकना।

3. अर्थात् स्वयं युद्ध का आरंभ न करो।

193. तथा उन में युद्ध करो, यहाँ तक कि फितना न रह जाये, और धर्म केवल अब्राह के लिये रह जाये, फिर यदि वह रुक जाये, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिये।

194. सम्मानित¹ माम, सम्मानित माम के बदले है और सम्मानित विषयों में बराबरी है, अतः जो तुम पर अतिक्रमण (अत्याचार) करें तो तुम भी उन पर उसी के समान (अतिक्रमण) करो। तथा अब्राह के आज्ञाकारी रहो और जान लो कि अब्राह आज्ञाकारियों के साथ है।

195. तथा अब्राह की राह (जिहाद) में धन खर्च करो, और अपने आप को विनाश में न डालो, तथा उपकार करो, निश्चय अब्राह उपकारियों से प्रेम करता है।

196. तथा हज्ज और उमरा अब्राह के लिये पूरा करो, और यदि रोक दिये जाओ² तो जो कुर्वानी सुलभ हो (कर दो) और अपने सिर न मुँडाओ जब तक कि कुर्वानी अपने स्थान पर न पहुँच³ जाये, यदि तुम

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ
الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنْ أُنتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا
عَلَى الظَّالِمِينَ ۝

الشَّهْرَ الْحَرَامَ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتِ
يَصَاحِقَ مَنْ تَغْتَابِي عَلَىكَ فَاِغْتَابُوا عَلَىكَ
يُؤْتِي مَا تَعْتَدِي عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ
إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

وَاتِمُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ فَإِنْ أُخْصِرْتُمْ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى
يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِهِ
آذًى مِنْ رَأْسِهِ فَعِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٌ
أَوْ لِسَيْنٍ فَإِذَا دُمِمْتُ فَمَنْ تَمَحَّرَ بِالْعُمَةِ إِلَى

1 सम्मानित मामों से अभिप्रेत चार अर्बी महीने: जूलकादह जूल्हिज्जह मुहर्रम तथा रजब है इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग में इन मामों का आदर सम्मान होना आ रहा है। आयत का अर्थ यह है कि कोई सम्मानित स्थान अथवा युग में अतिक्रमण करे तो उसे बराबरी का बदला दिया जाये।

2 अर्थात् शत्रु अथवा रोग के कारण।

3 अर्थात् कुरबानी न कर लो।

में कोई व्यक्ति रोगी हो, या उस के सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुंडा ले) तो उस के बदले में रोजा रखना या दान¹ देना अथवा कुर्बानी देना है और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो तो जो उमरे से हज्ज तक लाभान्वित² हो वह जो कुर्बानी मुलभ हो उसे करो। और जिसे उपलब्ध न हो तो वह तीन रोजे हज्ज के दिनों में रखे, और सात जब रखे जब तुम (घर) वापस आओ। यह पूरे दस हुये। यह उस के लिये है जो मस्जिदे हराम का निवासी न हो। और अब्राह से डरो तथा जान लो कि अब्राह की यातना बहुत कड़ी है।

197. हज्ज के महीने प्रसिद्ध है, तो जो व्यक्ति इन में हज्ज का निश्चय कर ले तो (हज्ज के बीच) काम वासना तथा अवैजा और झगड़े की बातें न करे तथा तुम जो भी अच्छे कर्म करोगे तो उस का ज्ञान अब्राह को हो जायेगा, और अपने लिये पाधेय बना लो उत्तम पाधेय अब्राह की आज्ञाकारिता है, तथा हे समझ वालो! मुझी से डरो।

الْحَجُّ مِمَّا اسْتَمَرَّ مِنْ أَهْمِيٍّ قَمَنْ لَهْ يَجِي
فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ آتَوْا فِي الْحَجِّ وَبَعَثُوا ذَارِحَةً
وَلَكَّ عَشْرَةً كَرَامَةً ذَلِكَ يَمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلَهُ
حَاجِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْقَوَا لِلَّهِ وَأَعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ

الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَةٌ لَمَنْ قَرَضَ فَيُؤْتَى عَمْرٍ
فَلَا ذَنْبَ وَلَا مَسْئُومٍ وَلَا حِجَابَ فِي الْحَجِّ وَبَعَثُوا
مِنْ خَيْرِ لَيْسَهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ
الْقُتُوبَ وَالنُّفُوسَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ

- 1 जो तीन रोजे अथवा तीन निर्घनों को खिलाना या एक बकरे की कुरबानी देना है (तफ्सीर कुर्तुबी)
- 2 लाभान्वित होने का अर्थ यह है कि उमरे का एहराम बाँधे और उस के कार्यक्रम पूरे कर के एहराम खोल दे, और जो चीजें एहराम की स्थिति में अवैध थीं, उन से लाभान्वित हों। फिर हज्ज के समय उस का एहराम बाँधे इसे (हज्ज तमत्तुअ) कहा जाता है। (तफ्सीर कुर्तुबी)

198. तथा तुम पर कोई दोष¹¹ नहीं कि अपने पालनहार के अनुग्रह की खोज करो, तो फिर जब तुम अरफात¹² से चलो, तो मशअरे हराम (मुजर्दलिफह) के पास अब्राह का स्मरण करो जिस प्रकार अब्राह ने तुम्हें बताया है। यद्यपि इस से पहले तुम कुपथों में थे।

199. फिर तुम³ भी वहीं से फिरो जहाँ से लोग फिरते हैं। तथा अब्राह से क्षमा माँगो। निश्चय अब्राह अति क्षमाशील, दयावान है।

2040. और जब तुम अपने (हज्ज के) मनासिक (कर्म) पूरे कर लो तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों की चर्चा करते रहे, उसी प्रकार बल्कि उस से भी अधिक अल्लाह का स्मरण करो। उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हे हमारे पालनहार! (हमें जो देना है) संसार ही में दे दे। अतः ऐसे व्यक्ति के लिये परलोक में कोई भाग नहीं है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَتَذَقُّوا فُضْلًا مِنْ
رَبِّكُمْ. فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِنْ عَزْوَفِهِ فَاذْكُرُوا
اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوا كَمَا
هَدَاكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَيْسَ
بِالضَّالِّينَ ۝

ثُمَّ أَيْتُكُمْ وَمِنَ حَيْثُ أَفَاقَ النَّاسُ
وَأَسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٥٠﴾

فَإِذَا قُضِيَتْهُم مِّنْ أَمْرِكُمْ فَأَذْكُرُوا
الْعَمَلُ كَيْدَ لَكُمْ أَبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدُّكُمْ أَمْرًا
أَشَدُّكُمْ مِّنْ يَقُولُ رَبَّنَا إِنَّا فِي أَسْمَاءِ
وَمَنْ لَهُ فِي الْأَرْضِ مِنْ خَلْقٍ ۝

1 अर्थात् व्यापार करने में कोई दोष नहीं है।

2 अरफात उस स्थान का नाम है जिस में हाजी 9 जिल्हिल्लह को विराम करते तथा सूर्यास्त के पश्चात वहाँ से वापिस होते हैं।

3 यह आदेश कुरैश के उन लोगों को दिया गया है जो मज्दानिफह ही से वापिस चले आते थे, और अरफात नहीं जाते थे। (तफसीर कुर्तबी)

4. जाहिलिय्यत में अरबों की यह रीति थी कि हज्ज पूरा करने के पश्चात् अपने पूर्वजों के कर्मों की चर्चा कर के उन पर गर्व किया करते थे। तथा इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु ने इस का अर्थ यह किया है कि जिस प्रकार शिशु अपने माता पिता को गुहारना पुकारता है उसी प्रकार तुम अब्बाह को गुहारो और पुकारो (तफ्सीरे कुर्तबी)

201. तथा उन में से कुछ ऐसे है जो यह कहते हैं कि हमारे पालनहार! हमें संसार की भलाई दे, तथा परलोक में भी भलाई दे, और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا الدُّنْيَا حَسَنَةً وَآلِ الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

202. इन्हीं को इन की कमाई के कारण भाग मिलेगा, और अल्लाह शीघ्र हिसाब चुकाने वाला है।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

203. तथा इन गिनती¹ के कुछ दिनों में अल्लाह को स्मरण (याद) करो, फिर जो कोई व्यक्ति शीघ्रता से दो ही दिन में (मिना से) चल² दे, तो उस पर कोई दोष नहीं और जो विलम्ब³ करे, तो उस पर भी कोई दोष नहीं, उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह से डरा, तथा तुम अल्लाह से डरते रहो और यह समझ लो कि तुम उसी के पास प्रलय के दिन एकत्र किये जाओगे।

وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِلَهَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِلَهَ عَلَيْهِ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ وَآلِ الْوَالِدَةِ وَأَعْتَدُوا لَكُمْ آيَاتٍ تَعْرِفُونَ ﴿٢٠٣﴾

204. हे नबी! लोगों⁴ में ऐसा व्यक्ति भी है जिस की बात आप को संसारिक विषय में भान्ती है तथा जो कुछ उस के दिल में है, वह उस पर अल्लाह को साक्षी बनाना है, जब कि वह बड़ा झगड़ालू है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَىٰ مَا فِي قُلُوبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْإِغْسَارِ ﴿٢٠٤﴾

1 गिनती के कुछ दिनों से आभयन जुलहिज्जह मास की 11, 12, और 13 तारीखें हैं जिन को (अध्यामे तशरीक) कहते हैं।

2 अर्थात् 12 जुलहिज्जह को ही सूर्यास्त के पहले कंकरी मारने के पश्चात् चल दे।

3 विलम्ब करे अर्थात् मिना में रात बिताये। और तेरह जुलहिज्जह को कंकरी मारे, फिर मिना से निकल जाये।

4 अर्थात् मुनाफिकों (दुविधा बार्दियों) में।

205. तथा जब वह आप के पास में जाता है तो धरती में उपद्रव मचाने का प्रयाम करना है और खेती तथा पशुओं का विनाश करता है। और अल्लाह उपद्रव से प्रेम नहीं करता।

وَرَادَّا تَوْنِي سَفِي فِي الْأَرْضِ لِيُقْسِدَ فَمَا وَرَنِيكَ
الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسَادَّ ۝

206. तथा जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अभिमान उसे पाप पर उभार देता है। अतः उस के (दण्ड) के लिये नरक काफी है। और वह बहुत बुरा बिछोना है।

وَمَا ذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ
بِالْإِثْمِ فَحَسِبْهُ جَهَنَّمَ وَلَيْسَ بِالْهَدَّ ۝

207. तथा लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच¹ देता है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ
مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝

208. हे ईमान वालो! तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश² कर जाओ, और शैतान की राहों पर मत चलो, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي
السَّلَامِ كُلَّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ
الشَّيْطَانِ إِنَّهُ يَكْفُرُ عَنكُمْ وَيُؤْمِنُ ۝

209. फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलो)³ के आने के पश्चात् विचलित हो गये, तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्त्वज्ञ⁴ है।

وَإِنْ رَأَيْتُمْ أَنَّ كُفْرَكُمْ يَكُونُ
الْهَيْبَتِ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

210. क्या (इन खुले तर्कों के आ जाने के पश्चात्) वह इस की प्रतिष्ठा कर रहे हैं कि उन के समक्ष अल्लाह

مَلُ يُظْهِرُونَ إِلَّا الْآنَ وَيَتَّبِعُهُمُ اللَّهُ فِي
ظُلُمٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَالْمَلَكُ وَتُحْيِي

1 अर्थात् उस की राह में और उस की आज्ञा के अनुपालन द्वारा

2 अर्थात् इस्लाम के पूरे सिद्धान्त का अनुपालन करो।

3 खुले तर्कों से अभिप्राय कुरआन और सुन्नत है।

4 अर्थात् तथ्य को जानना और प्रत्येक वस्तु को उस के उचित स्थान पर रखना है।

वादलों के छत्र में आ जाये, तथा फरिश्ते भी, और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेंके^[1] जायेंगे।

الْأَمْرُ وَالْإِلَهُ شَرْحَهُ الْأَمْرُ

211. बनी इस्राईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दी? इस पर भी जिस ने अल्लाह की अनुकम्पा को उस के अपने पास आ जाने के पश्चात् बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है।

سَلِّ بِنِي إِسْرَآءِيلَ كَمْ أَنشَأْنَاهُمْ نَبِيًّا
بَيِّنَاتٍ وَمَنْ يُبَدِّلْ بَعْدَ مَا جَاءَتْهُ
مَآجِدُنَا فَنُكَلِّبْهُ الْفُتُورَ ۝

212. काफिरों के लिये संसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है। तथा जो इंसान लाये यह उन का उपहाम² करने है, और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उन से उच्च स्थान³ पर रहेंगे। तथा अल्लाह जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

رَبِّمَنِ الْمَوْتِ وَالْحَيَاةِ وَالْزُّلُمِ ۝
الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَفَرُوا
بِالْغَيْبِ ۚ وَاللَّهُ يَتَذَكَّرُ أَمَّا يَشَاءُ ۚ

213. (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सन्धर्म पर थे। (फिर विभेद हुआ)। तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,⁴ और

كُلَّ النَّاسِ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ فَبَعَثَ اللَّهُ
النَّبِيِّنَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَأَنزَلَ مَعَهُمُ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الْبَيِّنَاتِ ۚ

1 अर्थात् सब निर्णय परलोक में वही करेगा।

2 अर्थात् उन की निर्धनता तथा दरिद्रता के कारण।

3 आयत का भावार्थ यह है कि काफिर संसारिक धन धान्य ही को महत्व देते हैं, जब कि परलोक की सफलता जो सन्धर्म और सत्कर्म पर आधारित है वही सब से बड़ी सफलता है।

4 आयत 213 का सारांश यह है कि सभी मानव आरंभिक युग में स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे थे। फिर आपस में विभेद हुआ तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। तब अल्लाह की ओर से नबी आने लगे ताकि सब को एक सन्धर्म पर कर दें। और आकाशीय पुस्तक भी इसी लिये अवतरित हुई कि विभेद में निर्णय

(अवैजा) से सचेत करने के लिये भेजा, और उन पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वह जिन बातों पर विभेद कर रहे हैं, उन का निर्णय कर दें, और आप की दुराग्रह से उन्होंने ने ही विभेद किया, जिन को (विभेद निवारण के लिये) यह पुस्तक दी गयी, तो जो ईमान लाये अब्राह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्पथ दर्शा दिया। और अब्राह जिसे चाहे सत्पथ दर्शा देता है।

214. क्या तुम ने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे हालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई जो तुम से पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तंगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया, और वह झँझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रमूल और जो उस पर ईमान लाये गुहारने लगे कि अब्राह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गया) सुन लो! अब्राह की सहायता समीप ॥ है।

215. हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (खर्च) करें? उन से कहो

اٰخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَمَا اٰخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ اِلَّا الدِّيْنَ
اَوْ نَوْهٖ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَعِيًّا
نَبِيْنَهُمْ يَهْدِيْ لِلّٰهِ الدِّيْنَ اَمْثَلًا اٰخْتَلَفُوْا
فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاٰذِنِ اللّٰهِ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوْا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمُ
مَّثَلُ الْكَافِرِيْنَ عُذُوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَّا تُنْفِكُمُ
الْبَاسُ وَالظُّلُمُ اَوْ زُلْزُلًا وَّاحِدًا يَقُوْلُ
الرَّسُوْلُ وَلَٰكِيْنَ مَّرْمَرٌ مَّا تَكْفُرُ
اللّٰهُ اَلَّذِيْ تَصْرَفُوْنَ فِيْهِ ۝

يَسْأَلُوْنَكَ مَا دِيْنُهُمْ قُلْ مَا نَعْبُدُ مِنْ

कर के सब को एक मूल सन्धर्म पर लायें। परन्तु लोगों की दुराग्रह और आपसी द्वेष विभेद का कारण बने रहे। अन्यथा सन्धर्म (इस्लाम) जो एकता का आधार है वह अब भी सुरक्षित है। और जो व्यक्ति चाहेगा तो अब्राह उस के लिये यह सत्य दर्शा देगा परन्तु यह स्वयं उस की इच्छा पर आधारित है।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि ईमान के लिये इतना ही बस नहीं कि ईमान को स्वीकार कर लिया तथा स्वर्गीय हो गया। इस के लिये यह भी आवश्यक है कि उन सभी परीक्षाओं में स्थिर रहो जो तुम से पूर्व सत्य के अनुयायियों के सामने आयी, और तुम पर भी आयेगी।

कि जो भी धन तुम खर्च करो, अपने माता पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भली भाँति जानना है।

خَيْرٌ قِيلُوا بِمَتَىٰ وَأَلْفَ بَيْنٍ وَأَلْفَ بَيْنٍ
وَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ الْبَيْنُ وَمَا تَقَعَلُوا مِنْ خَيْرٍ
فَرَأَى اللَّهُ فِيهِ عِلْمًا ۝

216. हे इमान वालो! तुम पर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, और वह तुम्हें अप्रिय हो सकता है कि कोई चीज तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज तुम्हें प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बुरी हो। अल्लाह जानना है और तुम नहीं¹ जानते।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَلَىٰ أَنْ
تُقَاتِلُوا شَيْئًا وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَلَىٰ أَنْ تَحْبُوا
شَيْئًا وَهُوَ سُكْرُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ۝

217. हे नबी! वह² आप से प्रश्न करने है कि सम्मानित माम में युद्ध करना कैसा है? तो आप उन से कह दें कि उस में युद्ध करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना और उस का इन्कार करना, तथा मस्जिदे हुराम से रोकना, और उस के निवासियों को उस से निकालना, अल्लाह के समीप उस से भी घोर पाप है। तथा फितना (सन्धर्म) से विचलाना हत्या से भी भारी है। और वह तो तुम से युद्ध करने ही जायेंगे, यहाँ तक कि उन के बस

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشُّعْبِ الْعَرَبِ قِتَالٍ بَيْنَهُ قُلْ
يَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَنْ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالسُّبْحِ الْحَرَامِ وَالْحَرَامِ مِنْ أَهْلِهِ مِنْهُ الْكُفْرُ عَنِ
الْبُؤْسِ وَالْأَهْلِ الْكَبِيرِ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تَرَىٰ لَوْنٍ
يُقَاتِلُونَكُمْ عَلَىٰ يَدَيْهِمْ وَأَنْتُمْ عَنْهُمْ كَارِهِينَ
اسْتَطَعُوا وَمَنْ يَزِيدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ
فَيَمُوتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि युद्ध ऐसी चीज नहीं जो तुम्हें प्रिय हो। परन्तु जब ऐसी स्थिति आ जाये कि शत्रु इस लिये आक्रमण और अत्याचार करने लगे कि लोगों ने अपने पूर्वजों की आस्था परम्परा त्याग कर सत्य को अपना लिया है जैसा कि इस्लाम के आरम्भिक युग में हुआ, तो सन्धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

- 2 अर्थात् मिश्रणवादी।

में हो तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दे, और तुम में से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर क़ुफ़्र पर ही उस की मौत होगी, तो ऐसों का किया कराया संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा। तथा वही नारकी है और वह उम में सदावासी होगी।

218. (इस के विपरीत) जो लोग इमान लाये, और उन्होंने हिज्रत¹ की, तथा अब्राह की राह में जिहाद किया तो वास्नव में वही अब्राह की दया की आशा रखने है। तथा अब्राह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है।

219. हे नबी! वह आप से मदिरा और जूआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है। तथा लोगों का कुछ लाभ भी है। परन्तु उन का पाप उन के लाभ से अधिक² बड़ा है। तथा वह आप से प्रश्न करते हैं कि अब्राह की राह में क्या खर्च करें? उन से कह दो कि जो अपनी आवश्यकता से अधिक हो। इसी प्रकार अब्राह तुम्हारे लिये आयतों (धर्मदिशों) को उजागर करता है। ताकि तुम सोच विचार करो।

رَبِّ الْغَايِبِ اٰمَنُوْا وَالْمُؤْمِنِیْنَ هَاجِرُوْا وَاٰجِهَتْوْا
فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَوْ لِحَیْثُ یُخْرِجُوْنَ رَحْمَتِ اللّٰهِ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ

یَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَیْمَرِ قُلْ فِیْهِمَا
اِلٰهٌ کَبِیْرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۚ وَاِلٰهُمَا اَکْبَرُ
مِنْ نَّفْعِهِمَا ۚ وَیَسْأَلُوْنَكَ مَا ذَآ اٰیُتُوْنَ
قُلْ اَلْعُلُوْ کَذٰلِکَ یَسْئَلُ لَکُمُ الْاٰیٰتِ
لَعَلَّکُمْ تَتَّقُوْنَ

1 हिज्रत का अर्थ है: अब्राह के लिये स्वदेश त्याग देना।

2 अर्थात् अपने लोक परलोक के लाभ के विषय में विचार करो और जिस में अधिक हानि हो उसे त्याग दो। यद्यपि उस में थोड़ा लाभ ही क्यों न हो यह मदिरा और जूआ से सम्बन्धित प्रथम आदेश है। आगामी सूरह निसा आयत 43 तथा सूरह माइदह आयत 90 में इन के विषय में अन्तिम आदेश आ रहा है।

220. और वह आप से अनाथों के विषय में प्रश्न करते हैं। तो उन से कह दो कि जिस बात में उन का सुधार हो वही सब स अच्छी है। यदि तुम उन से मिल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई ही हैं, और अब्राह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है। और यदि अब्राह चाहता तो तुम पर मख्ती¹ कर देता। वास्तव में अब्राह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है।

221. तथा मुशिरक² स्त्रियों से तुम विवाह न करो जब तक वह ईमान न लायें, और ईमान वाली दासी मुशिरक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो, और अपनी स्त्रियों का विवाह मुशिरकों से न करो जब तक वह ईमान न लायें। और ईमान वाला दास मुशिरक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो वह तुम्हें अग्नि की ओर बुलाने है तथा अब्राह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और सभी मानव के लिये अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

222. तथा वह आप से मासिक धर्म के

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَيْتَةِ قُلْ
إِصْلَاحٌ لَهُمْ خَيْرٌ لِّمَنْ خَالِطُوهُمْ وَأَخَوَانَهُمْ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَتَسْأَلُونَ اللَّهَ
لَا تَعْلَمُونَ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّى يُؤْمِنَ وَلَكُم مَّا يُؤْمِنُ
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكِهِمْ وَهُمْ أَطْعَمُوا وَلَا تَنْكِحُوا
الْمُشْرِكِينَ حَتَّى يُؤْمِنُوا وَلَعَنَ الْمُؤْمِنِينَ خَيْرٌ
مِّنْ مُّشْرِكِيهِمْ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُولَئِكَ يَدْعُونَ إِلَى
التَّائِبَةِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْإِيمَانِ وَالْمَعْفَرَةِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنِّي جَاءْتُكُمْ بِالْحَقِّ
فَتَذَكَّرُونَ ۝

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ ذِكْرٌ

1 उन का खाना पीना अलग करने का आदेश दे कर।

2 इस्लाम के विरोधियों से युद्ध ने यह प्रश्न उभार दिया कि उन से विवाह उचित है या नहीं? उस पर कहा जा रहा है कि उन से विवाह सम्बन्ध अवैध है, और इस का कारण भी बता दिया गया है कि वह तुम्हें सत्य से फेरना चाहते हैं उन के साथ तुम्हारा विवाहिक सम्बन्ध कभी सफलता का कारण नहीं हो सकता।

विषय में प्रश्न करने हैं, तो कह दे कि वह मलीनता है। और उन के समीप भी न¹ जाओ जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वह भली भौति स्वच्छ² हो जायें तो उन के पास उमी प्रकार जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें आदेश³ दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।

223. तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे लिये खेनियां⁴ हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेनियों में जाओ। परन्तु भविष्य के लिये भी सत्कर्म करो। तथा अल्लाह से डरते रहो। और विश्वास रखो कि तुम्हें उस में मिलना है। और इमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।

224. तथा अल्लाह के नाम पर अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिये रोक⁵ न बनाओ। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

225. अल्लाह तुम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा। परन्तु जो शपथ

قَالَتُوا لَوِ الشَّاءُ فِي الْغَيْظِ وَلَا تَفْرَقُوا عَنْ حَقِّ يَطْفَرُونَ فَأَذَانُكُمْ فَأَتَوْهُمْ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمْ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ

بَنَاءُكُمْ خَرَّبَ لَكُمْ فَأَتَوْكُمْ لَكُمْ يَسْتَفْ وَتَقِيُوا لَكُمْ وَيَسْتَفْ وَتَقِيُوا لَكُمْ وَتَقِيُوا لَكُمْ وَتَقِيُوا لَكُمْ

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْصَةً لِّأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ الْبَيْنِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

لَأَنِّي إِذْ يَدْعُوكُمُ اللَّهُ يَالْتَفُونَ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ

1 अर्थात् संभोग करने के लिये।

2 मासिक धर्म बन्द होने के पश्चात् स्नान कर के स्वच्छ हो जायें

3 अर्थात् जिस स्थान को अल्लाह ने उचित किया है वही संभोग करो।

4 अर्थात् संतान उत्पन्न करने का स्थान और इस में यह संकेत भी है कि भग के सिवा अन्य स्थान में संभोग हराम (अनुचित) है।

5 अर्थात् सदाचार और पुण्य न करने की शपथ लेना अनुचित है।

अपने दिलों के संकल्प से लोंगे,
उन पर पकड़ेगा, और अल्लाह अति
क्षमाशील सहनशील है।

يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فَعَلْتُمْ وَاللَّهُ عَفُورٌ
رَّحِيمٌ

226. तथा जो लोग अपनी पत्नियों से
संभोग न करने की शपथ लेते हों,
वह चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर¹
यदि अपनी शपथ से इस (बीच)
फिर जाये तो अल्लाह अति क्षमाशील
दयावान् है।

لِّمَنْ يَنْتَهِىٰ عَنْ زِينَتِهِ فَرَسَ اَرْبَعَةً
اَشْهُرًا ۚ فَاِنْ قَامَ وَفَاِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ

227. और यदि उन्होंने तलाक का संकल्प
ले लिया हो तो निःसन्देह अल्लाह सब
कुछ सुनता और जानता है।

وَإِذَا عَزَمُوا التَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

228. तथा जिन स्त्रियों को तलाक दी गयी
हो वह तीन बार रजवनी होने तक
अपने आप को विवाह से रोकी रखें।
उन के लिये हलाल (वैध) नहीं है
कि अल्लाह ने जो उन के गर्भाशयों
में पैदा किया² है उसे छुपाये। यदि
वह अल्लाह तथा आखिरत (परलोक)
पर ईमान रखती हों। तथा उन के
पति इस अवधि में अपनी पत्नियों
को लौटा लेने के अधिकारी³ है
यदि वह मिलाप⁴ चाहते हों। तथा

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَكْنَ بِأَفْئُوهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ وَلَا
يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ
إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُ بِإِلَهِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَبَعُولَتُهُنَّ
أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ
وَلَا يَجْرِي جُلٌّ عَلَيْهِنَّ فِي دَرَجَةٍ ۚ وَاللَّهُ غَيْرُ
حَكِيمٍ

1 यदि पत्नी से संबंध न रखने की शपथ ली जाये जिसे अरबी में 'ईला' के नाम से जाना जाता है तो उस का यह नियम है कि चार महीने प्रतीक्षा की जायेगी। यदि इस बीच पति ने फिर संबंध स्थापित कर लिया तो उसे शपथ का कफ़ारह (प्रायश्चित्त) देना होगा। अन्यथा चार महीने पूरे हो जाने पर न्यायालय उसे शपथ से फिरने या तलाक देने के लिये बाध्य करेगा।

2 अर्थात् मासिक धर्म अथवा गर्भ को।

3 यह बताया गया है कि पति तलाक के पश्चात् पत्नी को लौटाना चाहे तो उसे इस का अधिकार है। क्योंकि विवाह का मूल लक्ष्य मिलाप है, अलगाव नहीं।

4 हानि पहुँचाने अथवा दुःख देने के लिये नहीं।

सामान्य नियमानुसार स्त्रियों¹¹ के लिये वैसे ही अधिकार है जैसे पुरुषों का उन के ऊपर है। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है। और अब्बाह अति प्रभुत्वशील तत्वज्ञ है।

229. तलाक़ दो बार है। फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली

الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ وَإِن سَأَلْتُمُوهُنَّ آذُنَ

1 यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जब इस्लाम आया तो संसार यह जानता ही न था कि स्त्रियों के भी कुछ अधिकार हो सकते हैं। स्त्री को संतान उत्पन्न करने का एक साधन समझा जाता था और उन की मुक्ति इसी में थी कि वह पुरुषों की सेवा करें। प्राचीन धर्मानुसार स्त्री को पुरुष की सम्पत्ति समझा जाता था। पुरुष तथा स्त्री समान नहीं थे। स्त्री में मानव आत्मा के स्थान पर एक दूसरी आत्मा होती थी, हूमी विधान में भी स्त्री का स्थान पुरुष से बहुत नीचा था। जब कभी मानव शब्द बोला जाता तो उस से सर्वोच्च पुरुष होता था। स्त्री पुरुष के साथ खड़ी नहीं हो सकती थी।

कुछ अमानवीय विचारों में जन्म से पाप का मारा बोझ स्त्री पर डाल दिया जाता। आदम के पाप का कारण हवा हुई इस लिये पाप का पहला बीज स्त्री के हाथों पड़ा। और वही शैतान का साधन बनी। अब सदा स्त्री में पाप की प्रेरणा उभरती रहेगी। धार्मिक विषय में भी स्त्री पुरुष के समान न हो सकी।

परन्तु इस्लाम ने केवल स्त्रियों के अधिकार का विचार ही नहीं दिया बल्कि खुन्ना एलान कर दिया कि जैसे पुरुषों के अधिकार हैं उसी प्रकार स्त्रियों के भी पुरुषों पर अधिकार हैं।

कुर्आन ने इन चार शब्दों में स्त्री को वह सब कुछ दे दिया है जो उस का अधिकार था। और जो उसे कभी नहीं मिला था। इन शब्दों द्वारा उस के सम्मान और समता की घोषणा कर दी। दाम्पत्य जीवन तथा सामाजिकता की कोई ऐसी बात नहीं जो इन चार शब्दों में न आ गई हो। यद्यपि आगे यह भी कहा गया है कि पुरुषों के लिये स्त्रियों पर एक विशेष प्रधानता है। ऐसा क्यों है? इस का कारण हमें अगामी सूरह 'निसा' में मिल जाता है कि यह इस लिये है कि पुरुष अपना धन स्त्रियों पर खर्च करते हैं। अर्थात् पारिवारिक जीवन की व्यवस्था के लिये कोई व्यवस्थापक अवश्य होना चाहिये। और इस का भार पुरुषों पर रखा गया है। यही उन की प्रधानता तथा विशिष्टता है। जो केवल एक भार है इस से पुरुष की जन्म से कोई प्रधानता सिद्ध नहीं होती। यह केवल एक पारिवारिक व्यवस्था के कारण हुआ है।

भाँति विदा कर दिया जाये। और तुम्हारे लिये यह हलाल (वैध) नहीं है कि उन्हें जो कुछ तुम ने दिया है उस में से कुछ वापिस लो। फिर यदि तुम्हें यह भय¹ हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नी अपने पति को कुछ देकर मुक्ति² करा ले। यह अल्लाह की सीमायें हैं इन का उल्लंघन न करो। और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे वही अत्याचारी है।

230. फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक दे दी तो वह स्त्री उस के लिये हलाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर ले। अब यदि दूसरा पति (सम्भोग के पश्चात्) उसे तलाक दे दे तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी कर के) फिर विवाह कर सकती है यदि वह दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख³ सकेंगे। और यह

تَسْرِعَ بِإِحْسَانٍ وَلَا يَجِدْ لَكُمْ أَنْ
تَأْخُذُوا مِنْهَا شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَ
أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ
بِهَا تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا وَمَنْ
يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ وَلَهُنَّ فُتُورٌ عَظِيمٌ

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى
تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرًا فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ وَلَوْ تَوَزَّعَا فَمَا يُشِيرُ إِلَيْهَا
يَوْمَ يُعْلَمُونَ

1 अर्थात् पति के संरक्षकों का।

2 पत्नी के अपने पति को कुछ दे कर विवाह बंधन से मुक्त करा लेने को इस्लाम की परिभाषा में 'खुलअ' कहा जाता है। इस्लाम ने जैसे पुरुषों को तलाक का अधिकार दिया है उसी प्रकार स्त्रियों को भी 'खुलअ' ले लेने का अधिकार दिया है अर्थात् वह अपने पति से तलाक माँग सकती है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि प्रथम पति ने तीन तलाक दे दी हों तो निर्धारित अवधि में भी उसे पत्नी को लौटाने का अवसर नहीं दिया जायेगा। तथा पत्नी को यह अधिकार होगा कि निर्धारित अवधि पूरी कर के किसी दूसरे पति से धर्मविधान के अनुसार सहीह विवाह कर ले फिर यदि दूसरा पति उसे सम्भोग

अब्राह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिये उजागर कर रहा है जो ज्ञान रखते हों।

231. और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक दे दो और उन की निर्धारित अर्वाधि (इद्दन) पूरी होने लगे तो नियमानुसार उसे रोक लो, अथवा नियमानुसार बिदा कर दो। उन्हें हानि पहुँचाने के लिये न रोको, ताकि उन पर अत्याचार करो, और जो कोई ऐसा करेगा तो वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करेगा। तथा अब्राह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ। और अपने ऊपर अब्राह के उपकार तथा उस पुस्तक (कुरआन) तथा हिक्मत (सुन्नत) को याद करो जिसे उस ने तुम पर उतारा है। और उस के द्वारा तुम को शिक्षा दे रहा है। तथा अब्राह से डरो और विश्वास रखो कि अब्राह सब कुछ जानता है।¹

232. और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक दो, और वह अपनी निश्चित अर्वाधि (इद्दन) पूरी

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَّغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأُمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ مُسَرًّا ۖ لَقَدْ تَعْتَدُوا ۚ وَمَنْ يَعْمَلْ دِلًّا فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزًا ۚ وَإِذْ كُنَّا لَكُمْ دِينًا اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ إِلَّا حِكْمَةً يُعْطِيكُمْ بِهَا ۚ وَالْقَوْلُ لِلَّهِ وَالْعِلْمُ أَنَّهُ اللَّهُ يُحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِهِ ۚ

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَّغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَقْضُوا لَهُنَّ أَنْ يَتَّيَسَّرَ لَكُمْ إِذَا

के पश्चात् तलाक दे, या उस का देहान्त हो जाये तो प्रथम पति से निर्धारित अर्वाधि पूरी करने के पश्चात् नये महर के साथ नया विवाह कर सकती है, लेकिन यह उस समय है जब दोनों यह समझते हों कि वे अब्राह के आदेशों का पालन कर सकेंगे।

- 1 आयत का अर्थ यह है कि पत्नी को पत्नी के रूप में रखो और उन के अधिकार दो। अन्यथा तलाक दे कर उन की राह खाल दो। जर्हालिय्यत के युग के समान अंधेरे में न रखो। इस विषय में भी नैतिकता एवं समय के आदर्श बनो और कुरआन तथा सुन्नत के आदेशों का अनुपालन करा।

कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षकों!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि सामान्य नियमानुसार वह आपस में विवाह करने पर सहमत हों, यह तुम में से उसे निर्देश दिया जा रहा है जो अज्ञाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिये अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है। और अज्ञाह जानता है, तुम नहीं जानते।

233. और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, और पिता को नियमानुसार उन्हें खाना कपडा देना है, किसी पर उस की मकत से अधिक भार नहीं डाला जायेगा, न माता को उस के बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये, और न पिता को उस के बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपडा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा परामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई दोष नहीं। और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो तो इस में भी तुम पर कोई दोष नहीं जब कि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है उस को चुका दिया हो, तथा अज्ञाह से डरते रहो। और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो उसे

تَرَاضُوا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُؤْخَذُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ أَزْكَلُ لَكُمْ وَأَظْهَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٢

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ إِنْ أَرَادَ أَنْ يُنْفِقَ الرِّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ يَدْفَعُ وَكِفَاةً بِالْمَعْرُوفِ لَا تَحْلِفُ لَكُمْ إِلَّا وَاسْعَاهُ بِالنَّفْسِ الْوَالِدِ الْيُولِيهَا وَلَا مَوْلُودَ لَهُ يُولِيهَا وَعَلَى الْوَالِدَيْنِ مِنْ ذَلِكَ قَوْلٌ إِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا إِنْ أَدْلُمَا تَرْضِعُوهَا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ذَا سَلْتُمُوهُنَّ فَأَنْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

अल्लाह देख रहा⁽¹⁾ है।

234. और तुम में से जो मर जाये और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाये तो वह स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखे।⁽²⁾ फिर जब उन की अवधि पूरी हो जाये तो वह सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करे उस में तुम पर कोई दोष⁽³⁾ नहीं। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों में सूचित है।

235. इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का सकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उन का विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु उन्हें गुप्त रूप से विवाह का बचन न दो। परन्तु यह कि नियमानुसार⁽⁴⁾ कोई बात कहो। तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो जब तक

وَالَّذِينَ يَتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا لَا يَرْجُونَ
بِالْفَيْتُونِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ إِذَا ابْتَلَعْنَ
أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَعْلَوْنَ فِي أَفْئِدِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَاللَّهُ يَتَعَلَّمُونَ خَيْرًا ۚ

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم بِهِ مِنْ خُطْبِكُمْ
النِّسَاءَ أَوْ آتَيْتُمُوهُنَّ أَنْفُسَكُمْ ۚ عَنِ نَفْسِكُمْ
سَعْدَ كُرْهُنَّ وَلَكِنْ لَا تُؤْخَذُوهُنَّ يَسْرًا ۚ إِن كَانَ
تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا وَلَا تَعْرُضُوا عَنْهُ ۚ إِن كَانَ
عَلَى سَبِيلِكُمُ الْكَيْدُ فَلَكُمْ ۚ وَعَلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ
يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ ۚ فَاخْذَرُوا ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۚ

- 1 तलाक की स्थिति में यदि माँ की गोद में बच्चा हो तो यह आदेश दिया गया है कि माँ ही बच्चे को दूध पिलाये और दूध पिलाने तक उस का खर्च पिता पर है और दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है। साथ ही दो मूल नियम भी बनाये गये हैं कि न तो माँ को बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये और न पिता को। और किसी पर उस की शक्ति से अधिक खर्च का भार न डाला जाये।
- 2 उस की निश्चित अवधि चार महीने दस दिन है। वह तुरन्त दूसरा विवाह नहीं कर सकती, और न इस से अधिक पति का सोग मनाया। जैसा कि जाहिलियत में होता था कि पत्नी को एक वर्ष तक पति का सोग मनाना पड़ता था।
- 3 यदि स्त्री निश्चित अवधि के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे तो उसे रोकाना नहीं।
- 4 विवाह के विषय में जो बात की जाये वह खुनी तथा नियमानुसार हो गुप्त नहीं।

निर्धारित अर्वाधि पूरी न हो जाये¹,
तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे
मन में है उसे अल्लाह जानता है।
अतः उस से डरते रहो और जान लो
कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है।

236. और तुम पर कोई दोष नहीं यदि
तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा
महर (विवाह उपहार) निर्धारित
करने से पहले तलाक दे दो।
(इस स्थिति में) उन्हें कुछ दो।
नियमानुसार धनी पर अपनी शक्ति
के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी
शक्ति के अनुसार देना है। यह
उपकारियों पर आवश्यक है।

- 237 और यदि तुम उन को उन से संभोग
करने से पहले तलाक दो इस स्थिति
में कि तुम ने उन के लिये महर
(विवाह उपहार) निर्धारित किया
है तो निर्धारित महर का आधा
देना अनिवार्य है। यह और बात है
कि वह क्षमा कर दें। अथवा वह
क्षमा कर दें जिन के हाथ में विवाह
का बंधन² है। और क्षमा कर देना
संयम से अधिक समीप है। और

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَكُمْ
كُتُبٌ مِنْهُنَّ أَوْ تَعْتَمِدُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً أَوْ مَتَعُوهُنَّ
عَلَى التَّوْبَةِ كَذَرَّةٍ عَلَى الْفَقِيرِ قَدَرًا مَتَاعًا
بِالتَّعَرُّوبِ عَقْلًا عَلَى الْمُعْتَمِدِينَ ۝

وَمَنْ طَلَقَتُّهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَّخِذُوا مِنْهُنَّ
فَرِيضَةً لَهُنَّ فَرِيضَةٌ مِمَّا قَرَضْتُمْ إِلَّا
أَنْ يُعْطُوا أَوْ يَتَّخِذُوا الَّذِي بَيْنَهُمَا عَقْدًا
الْيَكْفَارَ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَلَا تَنْسُوا
الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَعِيرٌ ۝

1 जब तक अर्वाधि पूरी न हो विवाह की बात तथा वचन नहीं होना चाहिये।

2 अर्थात् पति अपनी ओर से अधिक अर्थात् पूरा महर दे तो यह प्रधानता की बात होगी। इन दो आयतों में यह नियम बनाया गया है कि यदि विवाह के पश्चात् पति और पत्नी में कोई सम्बंध स्थापित हुआ हो तो इस स्थिति में यदि महर निर्धारित न किया गया हो तो पति अपनी शक्ति अनुसार जो भी दे सकता हो उसे अवश्य दे। और यदि महर निर्धारित हो तो इस स्थिति में आधा महर पत्नी को देना अनिवार्य है। और यदि पुरुष इस से अधिक दे सके तो संयम तथा प्रधानता की बात होगी।

242. इसी प्रकार अब्राह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर कर देना है ताकि तुम समझो।

كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٤٢﴾

243. क्या आप ने उन की दशा पर विचार नहीं किया जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये¹, जब कि उन की संख्या हजारों में थी, तो अब्राह ने उन से कहा कि मर जाओ फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में अब्राह लोगों के लिये बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञता नहीं करते।²

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرُّوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُوْتُوا حَدِيثًا نُبَوَّاهُ لَكُمْ ثُمَّ مَاتُوا ثُمَّ أَخَذْتَهُمْ أَفَإِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَر النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾

244. और तुम अब्राह (के धर्म के समर्थन) के लिये युद्ध करो, और जान लो कि अब्राह सब कुछ सुनना जानता है।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَعِلِّمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾

245. कौन है, जो अब्राह को अच्छा उधार³ देता है ताकि अब्राह उसे उस के लिये कई गुना अधिक कर दे? और अब्राह ही थोड़ा और अधिक करता है और उसी की ओर तुम सब फेरे जावोगे।

مَنْ ذَا الَّذِي يقرضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرًا وَالَّذِي يَقْرِضُ وَيَضَاعَفُ إِلَيْهِ رُجُوعٌ ﴿٢٤٥﴾

246. हे नबी! क्या आप ने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया जो मूसा के बाद सामने आया? जब उस ने अपने नबी से कहा हमारे लिये एक राजा बना दो।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْكَاذِبِينَ إِذْ قَالَ لَهُمُ ابْنُ مَرْيَمَ يُلْقُوا إِلَيَّ الْحِجَابَ فَقَالُوا لَا يَنْفَعُكَ لَنَا أَمَلٌ وَلَا نَفْعٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا لِلْآلِهَةِ بَنِينَ فَقَالُوا بَلَىٰ وَإِنَّا لَآتِقَاتِلُ فِي

1 इस में बनी इस्राइल के एक गिरोह की ओर संकेत किया गया है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जो लोग मौत से डरते हों वह जीवन में सफल नहीं हो सकते तथा जीवन और मौत अब्राह के हाथ में है।

3 अर्थात् जिहाद के लिये धन खर्च करना अब्राह को उधार देना है।

हम अब्राह की राह में युद्ध करेंगे, (नबी ने) कहा: ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युद्ध का आदेश दे दिया जाये तो अवैज्ञा कर जाओ? उन्होंने ने कहा: ऐसा नहीं हो सकता कि हम अब्राह की राह में युद्ध न करें। जब कि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु जब उन्हें युद्ध का आदेश दे दिया गया तो उन में से थोड़े के सिवा सब फिर गये और अब्राह अन्याचारियों को भली भाँति जानता है।

247 तथा उन के नबी ने कहा: अब्राह ने "तालूत" को तुम्हारा राजा बना दिया है। वह कहने लगे "तालूत" हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उस से अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहा: अब्राह ने उसे तुम पर निर्वाचित किया है और उसे अधिक ज्ञान तथा शारिरिक बल प्रदान किया है। और अब्राह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अब्राह ही विशाल, अति ज्ञानी¹ है।

248. तथा उन के नबी ने उन से कहा: उस के राज्य का लक्षण यह है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिस में तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिये संतोष तथा मसा और हारून के घराने के छोड़े हुये

سَيَسِيْرُ اللّٰهُ وَقَدْ اَخْرَجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاٰتَيْنَا
فَلَمَّا كَلِمَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلّٰوْا اِلٰى قَدِيْلٍ مِّنْهُمْ
وَاٰتَيْنَا عَلَيْهِمُ الْغُلَبَۃَ ۝

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اِلٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ
مِنْكُمْ قَالُوْا اَلَيْسَ لَهٗ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ
اَسْقٰى يٰۤاٰلِهَيْدُ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتِ سَعَةً مِنَ الْمَالِ
قَالَ اِنَّ اِلٰهَ اَصْلَفُ عَلَيكُمْ وَاَرَادَۃًۭ بِسَطْحَةِ
الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللّٰهُ يُؤْتِيْ مَلِكًا مِّنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اِلٰهَ مُنْكِبَ اَنْ يَّاتِيَكُمْ
الْبَيْتُ مِنْكُمْ مَّيْكِبَةً فَمِنْ تَحْتِهَا وَاَقْبَابُهَا وَمِنْ تَحْتِهَا
اَلْ مُّوسٰى وَالْ هٰرُونَ تَحِيْلًا الْمَلِكَةَ اِنْ فِيْ
ذٰلِكَ لَآيَةٌ لِّكُلِّ اُمَّةٍ لِّمَنْ هُوَ مُؤْمِنٌ ۝

1 अर्थात् उसी के अधिकार में सब कुछ है। और कौन राज्य की क्षमता रखता है? उसे भी वही जानता है।

अवशेष है, उसे फरिश्ते उठाये हुये होंगे। निश्चय यदि तुम इमान वाले हो तो इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी¹ (लक्षण) है।

249. फिर जब तालूत सेना ले कर चला, तो उस ने कहा: निश्चय अल्लाह एक नहर द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। तो जो उस में से पीयेगा वह मेरा साथ नहीं देगा, और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा परन्तु जो अपने हाथ से चूझ भर पी ले (तो कोई दोष नहीं। तो थोड़े के सिवा सब ने उस में से पी लिया। फिर जब उस (तालूत) ने और जो उस के साथ इमान लाये उस (नहर) को पार किया, तो कहा आज हम में (शत्रु) जालूत और उस की सेना से युद्ध करने की शक्ति नहीं। (परन्तु) जो समझ रहे थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है उन्होंने कहा: बहुत से छोटे दल अल्लाह की अनुमति से भारी दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।

250. और जब वह जालूत और उस की सेना के सम्मुख हुये तो प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार! हम को धैर्य प्रदान कर तथा हमारे चरणों को (रणक्षेत्र में) स्थिर कर दे। और काफिरों पर हमारी सहायता कर।

251. तो उन्होंने ने अल्लाह की अनुमति से

فَلَمَّا قَسَمَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْهِ قَالُوا الْكَافَّةُ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُطْعَمُونَ كَلِمَةً شُفُّوا لِمَوْلَاهُمْ مِنْ فَتْنَةٍ فَمَضَتْ يَدَاكَ وَمَا كَانَ اللَّهُ بِذِي الشُّبُهِينَ ۝

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذِهِ نَاجِيْنَ ۚ فَنُصَلِّ عَلَيْكَ نَاصِرًا وَنُقَاتِلُكَ نَاصِرًا وَاتَّصَرْنَا بِكَ الْقَوْمُ الْكَافِرِينَ ۝

فَكَرَّمُوهُم بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَانْتَصَرَهُ

1 अर्थात् अल्लाह की ओर से तालूत को निर्वाचित किये जाने की।

उन्हें पराजित कर दिया, और दावूद ने जालूत को वध कर दिया। तथा अब्राह ने उस (दावूद)¹ को राज्य और हिकमत (नूबूत) प्रदान की, तथा उस जो ज्ञान चाहा दिया, और यदि अब्राह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, परन्तु संसार वासियों पर अब्राह बड़ा दयाशील है।

252. (हे नबी!) यह अब्राह की आयतें हैं जो हम आप को सुना रहे हैं, तथा वास्तव में आप रसूलों में से हैं।

253. वह रसूल है। उन को हम ने एक दूसरे पर प्रधानता दी है। उन में से कुछ ने अब्राह से बात की और कुछ को कइ श्रेणियों उंचा किया। तथा मरयम के पुत्र ईसा को खुली निशानियों दी। और रूहुलकुदूस² द्वारा उसे समर्थन दिया। और यदि अब्राह चाहता तो इन रसूलों के पश्चात् खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्होंने ने विभेद किया तो उन में से कोई ईमान लाया, और किसी ने कुफ्र किया। और यदि अब्राह चाहता तो

اللَّهُ الْمَلِكُ وَالْمَلِكَةُ وَعَلَيْهِ مَنَاسِكُ الَّذِينَ يُؤَدُّونَ
اللَّهُ النَّاسُ بَعْضُهُمْ يَفْقَهُونَ لِقَدَرِ الْأَرْضِ
وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ يُسْمِعُكَ عَلَىٰ عِلْمِكَ يَا عِزُّ
وَأُولَٰئِكَ لَئِنْ التَّوْبَتَيْنِ ۝

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ
وَمِنْهُمْ مَن كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ ذَرْبُهُ
وَأَنبَأَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ
الْقُدُسِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْلَحَ الْبَنَاتِ مِنْ بَعْدِهِمْ
فَمِنْ بَعْدِهِ مَا جَاءَهُمْ الْبَنَاتِ وَلَكِنْ لَنُفَعِّلَنَّ بَعْضَهُمْ
مِنْ وَصْنِهِمْ مَن لَّكَرُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْلَحُوا
وَلَكِنَّ اللَّهَ يُفَعِّلُ مَا يُرِيدُ ۝

1 दावूद अलैहिस्सलाम जालूत की सेना में एक सैनिक थे जिन को अब्राह ने राज्य देने के साथ नबी भी बनाया। उन्हीं के पुत्र सुनैमान अलैहिस्सलाम थे। दावूद अलैहिस्सलाम को अब्राह ने धर्मपुस्तक जबूर प्रदान की। सूरह माद में उन की कथा आ रही है।

2 "रूहुलकुदूस" का शाब्दिक अर्थ पवित्रात्मा है और इस से अभिप्रेत एक फरिश्ता है जिस का नाम "जिब्रिल" अलैहिस्सलाम है।

वह नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।

254. हे इमान वालो! हम ने तुम्हें जो कुछ दिया है उस में से दान करो, उस दिन (अर्थात् प्रलय) के आने से पहले, जिस में कोई सौदा नहीं होगा, और न कोई मैत्री, तथा न कोई अनुशंसा (सिफारिश) काम आयेगी, तथा काफिर लोग¹ ही अत्याचारी² है।

255. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित³ तथा नित्य स्थाई है, उसे ऊँच तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का⁴ है। कौन है जो उस के पास उस की अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफारिश) कर सके? जो कुछ उन के समक्ष और जो कुछ उन से ओझल है सब को जानता है। वह उस के ज्ञान में से वही जान सकते हैं जिसे वह चाहे। उस की कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुये है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं धकाती। वही सर्वोच्च⁵ महान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَمَا رَزَقْنَاهُمْ
قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُمْ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ
شَفَاعَةُ الْكَافِرِينَ هُوَ الْعَلِيمُ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ
سُوءَةُ النَّوْمِ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ يَشْفَعُ عِبْدُهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ
مَا بَيْنَ يَدَيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ
بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ
عَلِيُّ الْعَرْشِ

- 1 अर्थात् जो इस तथ्य को नहीं मानते वही स्वयं को हानि पहुँचा रहे हैं।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि परलोक की मुक्ति इमान और सदाचार पर निर्भर है न वहाँ मुक्ति का सौदा होगा न मैत्री और सिफारिश काम आयेगी।
- 3 अर्थात् स्वयंभू, अनन्त है।
- 4 अर्थात् जो स्वयं स्थित तथा सब उस की सहायता से स्थित है।
- 5 यह कुर्आन की सर्वमहान् आयत है। और इस का नाम "आयतुलकुर्सी" है हदीस में इस की बड़ी प्रधानता बताई गई है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

256. धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ कुपथ से अलग हो चुका है। अतः अब जो तागूत (अर्थात् अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे, तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता। तथा अल्लाह सब कुछ सुनता जानता¹ है।

257. अल्लाह उन का महायक है जो ईमान लाये। वह उन को अंधेरी से निकालता है। और प्रकाश में लाता है। और जो काफिर (विश्वासहीन) है। उन के महायक तागूत (उन के मिथ्या पूज्य) है। जो उन्हें प्रकाश से अंधेरी की ओर ले जाते हैं। यही नारकी है, जो उस में सदावामी होगी।

258. हे नबी! क्या आप ने उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया, जिस ने इब्राहीम से उस के पालनहार के विषय में विवाद किया। इसलिये कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था? जब इब्राहीम ने कहा: मेरा पालनहार वह है जो जीवन करता तथा मारता है तो उस ने कहा: मैं भी जीवन² करता

الْأَلْوَانِ فِي رَيْبٍ مِّنْ قُنَاتَيْنِ الثَّقَلَيْنِ الَّذِي
فَعَسَىٰ يَكْفُرُ بِالْكَافُوتِ وَيُؤْمِنُ بِاللَّهِ فَقَدِ
اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِكَ مِمَّنَ الظُّلُمَاتِ
يُخْرِجُهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ
الْكَافِرِ يَغْوِيهِمْ يَخْلَدُونَ

أَلَمْ نَرِ إِلَى الْيَتَامَىٰ مَا جَاءَ بِرَبِّهِمْ أَذْنُ
أُنْثَىٰ إِنَّهُ أَكْمَلُ لَدُنَّا إِذْ قَالُوا نَرْهَمُكُمْ بِالْأَدْنَىٰ
يَجْحَدُ وَيُؤْتِي قَالَ أَأَنَا أُخْبَرُ وَأَمِيَّتٌ قَالِ
إِبْرَاهِيمَ قَوْلَ اللَّهِ يَأْتِي بِالشَّمْسِينَ مِنَ الْمَشْرِقِ
قَائِمَتَا بِمَا مِنَ الْمَغْرِبِ قَبِيَّتُ الْيَتَامَىٰ كَفَرُوا وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि धर्म तथा आस्था के विषय में बल प्रयोग की अनुमति नहीं, धर्म दिल की आस्था और विश्वास की चीज है। जो शिक्षा दिक्षा से पैदा हो सकता है न कि बल प्रयोग और दबाव से। इस में यह संकेत भी है कि इस्लाम में जिहाद अन्याचार को रोकने तथा सन्धर्म की रक्षा के लिये है न कि धर्म के प्रसार के लिये। धर्म के प्रसार का साधन एक ही है, और वह प्रचार है सत्य प्रकाश है। यदि अंधकार हो तो केवल प्रकाश की आवश्यकता है फिर प्रकाश जिस ओर फिरेगा तो अंधकार स्वयं दूर हो जायेगा।

2 अर्थात् जिसे चाहूँ मार दूँ और जिसे चाहूँ क्षमा कर दूँ। इस आयत में अल्लाह

तथा मारता है। इब्राहीम ने कहा-
अब्राह्म सूर्य को पूर्व से लाता है तू
उसे पश्चिम से ला दे। (यह सुन कर)
कार्फिर चकित रह गया। और अब्राह्म
अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

259. अथवा उस व्यक्ति के प्रकार जो
एक ऐसी नगरी से गुजरा जो अपनी
छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उस ने
कहा- अब्राह्म इस के ध्वस्त हो जाने
के पश्चात् इसे कैसे जीवित (आबाद)
करेगा? फिर अब्राह्म ने उसे सौ वर्ष
तक मौन दे दी। फिर उसे जीवित
किया। और कहा- तुम कितनी अवाधि
तक मुर्दे पड़े रहे? उस ने कहा-
एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण।
(अब्राह्म ने) कहा- बल्कि तुम सौ
वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने पीने
को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं
हुआ है। तथा अपने गधे की ओर
देखो- ताकि हम तुम्हें लोगों के लिये
एक निशानी (चिन्ह) बना दें। तथा
(गधे की) स्थियों को देखो कि हम
उसे कैसे खड़ा करते हैं। और उन
पर कैसे मांस चढ़ाते हैं। इस प्रकार
जब उस के समक्ष बातें उजागर हो
गयीं, तो वह¹ पुकार उठा कि मुझे
ज्ञान (प्रत्यक्ष) हो गया कि अब्राह्म
जो चाहे कर सकता है।

أَوَكُلِّدَىٰ مَوْعِدَ قَرِينٍ وَهُوَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ
عُرْوَتِهَا قَالَ آلُ بَنِي هَبِيلَ اللَّهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا قَامَتْهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ
كَمْ لَيْسَتْ قَالَ لَيْسَتْ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ
قَالَ بَلْ لَيْسَتْ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَىٰ
طَعَامِكَ وَشَرِبِكَ كَمْ يَكْسَنُهُ وَانْظُرْ إِلَىٰ
جَمَادِيكَ كَمْ يَجْمَعُكَ إِلَيْهِ الْبَنَاتُ وَانْظُرْ
إِلَىٰ الْوَعْدِ كَيْفَ نُنْزِلُهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهَا
فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

के विषय व्यवस्थापक होने का प्रमाणिकरण है। और इस के पश्चात् की आयत में
उस के मुर्दे को जीवित करने की शक्ति का प्रमाणिकरण है।

- 1 इस व्यक्ति के विषय में भाष्यकारों ने विभक्त किया है। परन्तु सम्भवतः वह
व्यक्ति (उजैर) थे। और नगरी (बैतुल मक्दिस) थी। जिसे बुल्लत नस्सर राजा ने
आक्रमण कर के उजाड़ दिया था। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

260. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा हे मेरे पालनहार। मुझे दिखा दे कि तू मुझे को कैसे जीवित कर देता है? कहा क्या तुम ईमान नहीं लाये? उस ने कहा क्यों नहीं? परन्तु तार्क मेरे दिल को संतोष हो जाये। अल्लाह ने कहा: चार पक्षी ले आओ। और उन को अपने से परचा लो। (फिर उन को बध कर के) उन का एक एक अंश (भाग) पर्वत पर रख दो। फिर उन को पुकारो। वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेगा। और यह जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

261. जो अल्लाह की राह में अपने धनों को दान करते है उस की दशा, उस एक दाने जैसी है जिस ने सात बालियों उगाई हो। (उस की) प्रत्येक बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है। तथा अल्लाह विशाल¹ ज्ञानी है।

262. जो अपना धन अल्लाह की राह में दान करते है, फिर दान करने के पश्चात् उपकार नहीं जताने और न (जिसे दिया हो) दुख देने है उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिकार (बदला) है और उन पर कोई डर नहीं होगा, और न ही वह उदासीन² होंगे।

263. भली बात बोलना तथा क्षमा, उस दान से उत्तम है जिस के पश्चात्

وَلَاذَقَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى قَالَ أَرَأَيْتَ إِنْ قَالَ نَبِيٌّ وَلَكِنْ لَيَطْلُبُنَّ فَلْيَنْ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَى كُلِّ جَبَلٍ مِنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِيَنَّكَ سَعْيًا وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

مَثَلُ الْبَائِنِ يُؤْتُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَمْ يَلْ حَبَّةَ أَهْلَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سَبِيلٍ وَمِثْلَهُ حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُضِيقُ رِزْقَ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ

الْبَائِنِ يُؤْتُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَمْ يَلْ يَتْمَعُونَ تَأْتِيَهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَذَى لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

كُلٌّ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا

1 अर्थात् उस का प्रदान विशाल है, और उस के योग्य को जानता है

2 अर्थात् संसार में दान न करने पर कोई संताप होगा।

दुख दिया जाये। तथा अब्राह निस्पृह सहनशील है

أَذَىٰ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَلِيمٌ ٥

264. हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जता कर तथा दुख दे कर अपने दानों को व्यर्थ न करो जो लोगों को दिखाने के लिये दान करता है, और अब्राह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान नहीं रखता। उस का उदाहरण उस चटेल पत्थर जैसा है जिस पर मिट्टी पड़ी हो, और उस पर घोर वर्षा हो जाये और उस (पत्थर) को चटेल छोड़ दे वह अपनी कम्पाई का कुछ भी न पा सकेंगे, और अब्राह काफ़िरो को सीधी डगर नहीं दिखाता।

يَأْتِيهَا الْيَمِينُ أَمْثَلُ الَّذِي يُبْعَثُ مَالَهُ زَرْعًا لِّثَابِتٍ وَلَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَابٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَكَرِهَ صَدُّ الْوَيْثَانُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ٥

265. तथा उन की उपमा जो अपना धन अब्राह की प्रसन्नता की इच्छा में अपने मन की स्थिरता के साथ दान करने है उस बाग (उद्यान) जैसी है, जो पृथ्वी तल के किमी ऊँचे भाग पर हो उस पर घोर वर्षा हुई तो दुगना फल लाया, और यदि घोर वर्षा नहीं हुई, तो (उस के लिये) फुहार ही बस¹ हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अब्राह देख रहा है।

وَمَثَلُ الْيَمِينِ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَيُطِيعَتَانِ أَلْفِيهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ أُكُوفًا مُّضْفًى فَإِنَّ لَّهُ مِنْهُنَّ يُغْنِيهَا وَابِلٌ فَطَلَّ وَاللَّهُ يَمَّا تَعْمَلُونَ يَوْمَئِذٍ ٥

266. क्या तुम में से कोई चाहेगा कि उस के खजूर तथा अंगूरों के बाग हों,

أَيُّوَادٍ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ نَّجِيلٍ

- 1 यहाँ से अब्राह की प्रसन्नता के लिये जिहाद तथा दीन, दुखियों की सहायता के लिये धन दान करने की विभिन्न रूप से प्रेरणा दी जा रही है। भावार्थ यह है कि यदि नि स्वार्थता से थोड़ा दान भी किया जाये, तो शुभ होता है, जैसे वर्षा की फुहारें भी एक बाग (उद्यान) को हरा भरा कर देनी हैं।

जिन में नहरें बह रही हों, उन में उस के लिये प्रत्येक प्रकार के फल हों तथा वह बूढ़ा हो गया हो, और उस के निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आघात से जिस में आग हो झुलस जाये।¹ इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम सोच विचार करो।

- 267 हे इमान वाले! उन स्वच्छ चीजों में से जो तुम ने कमाई है, तथा उन चीजों में से जो हम ने तुम्हारे लिये धरती से उपजाई है, दान करो। तथा उस में से उस चीज को दान करने का निश्चय न करो जिसे तुम स्वयं न ले सको, परन्तु यह कि अदेखी कर जाओ। तथा जान लो कि अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

268. शैतान तुम्हें निर्धनता में डराता है, तथा निर्लेज्जा की प्रेरणा देता है, तथा अल्लाह तुम को अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है, तथा अल्लाह विशाल जानी है।

269. वह जिसे चाहे प्रबोध (धर्म की समझ) प्रदान करता है, और जिसे प्रबोध प्रदान कर दिया गया, उसे

وَأَعْيَابَ نَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَتَّبِعُوا الْحَيَاةِ مِنْهُ تَتَّبِعُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيذٍ بِهِ إِلَّا أَنْ تُغْلِبُوا فِيهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ حَمِيدٌ

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمُ بِالْعَفْوَ وَاللَّهُ يَعِدُكُمُ الْغِنَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُنَاصِرُ

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا

1 अर्थात् यही दशा प्रलय के दिन क़ाफ़िर की होगी। उस के पास फल पाने के लिये कोई कर्म नहीं होगा। और न कर्म का अवसर होगा तथा जैसे उस के निर्बल बच्चे उस के काम नहीं आ सके, उसी प्रकार उस श का दिखावे का दान भी काम नहीं आयेगा वह अपनी आवश्यकता के समय अपने कर्म के फल से वंचित कर दिया जायेगा। जैसे इस व्यक्ति ने अपने बूढ़ापे तथा बच्चों की निर्बलता के समय अपना बाग खो दिया।

बड़ा कल्याण मिल गया, और समझ वाले ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

270. तथा तुम जो भी दान करो, अथवा मनौनी¹ मानो, अल्लाह उसे जानता है, तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

271. यदि तुम खुले दान करो, तो वह भी अच्छा है तथा यदि छुपा कर करो और कंगालों को दो तो वह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा² है। यह तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा। तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उस से अल्लाह सूचित है।

272. उन को सीधी डगर पर लगा देना आप का दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहे सीधी डगर पर लगा देता है। तथा तुम जो भी दान देने हो तो अपने लाभ के लिये देते हो, तथा तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही देते हो, तथा तुम जो भी दान दोगे, तुम्हें उस का भरपूर प्रतिफल (बढ़ला) दिया जायेगा, और तुम पर अत्याचार³ नहीं किया जायेगा।

273. दान उन निर्धनों (कंगालों) के लिये है जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर

يَذْكُرُ إِلَّا لِلَّهِ الْبَابُ ۝

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ
سَدَقَةٍ أَوْ مَعْتَصَمَةٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
مِنْ أَمْرِهِ ۝

إِنْ تَبَدُّوا لِلضَّرَفَةِ فَبِعَمَلِهِمْ
تُحْفَوْنَ وَتُؤْتَوْنَ الْفَقْرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ
لَكُمْ وَيَكْفُرُ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئَاتِهِمْ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا كُنْتُمْ
فَعَلْتُمْ وَلَكِنْ الْإِثْمُ الَّذِي كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ وَمَا تَنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ اللَّهِ وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُؤْتِ
إِلَيْكُمْ ۝

لِلْفَقْرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ

- 1 अर्थात् अल्लाह की विशेष रूप से इबादत (वन्दना) करने का संकल्प ले (तफ्सीरे कुर्तुबी)
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि दिखावे के दान से रोकने का यह अर्थ नहीं है कि छुपा कर ही दान दिया जाये बल्कि उस का अर्थ केवल यह है कि निःस्वार्थ दान जैसे भी दिया जाये, उस का प्रतिफल मिलेगा।
- 3 अर्थात् उस के प्रतिफल में कोई कमी न की जायेगी।

गये हों कि धरती में दौड़ भाग न कर¹⁾ सकते हों, उन्हें अज्ञान लोग न माँगने के कारण धनी समझते हैं, वह लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते। तुम उन्हें उन के लक्षणों से पहचान लोगे। तथा जो भी धन तुम दान करोगे, निम्मन्देह अल्लाह उसे भली भाँति जानने वाला है।

لَا يَسْتَفِيدُونَ فَرْدًا فِي الْأَرْضِ بِحَسَبِهِمُ
الْجَاهِلُ أَغْيَاءٌ مِنَ الْعَذَابِ تَعْرِثُهُمْ
بِهِمْ هُمْ لَا يَسْلُونَ النَّاسَ لِحَاكٍ وَمَا
تُنْفِقُ مِنْ حَيْثُ قَاتَ اللَّهُ بِهِ عَدُوَّهُ

274. जो लोग अपना धन रात दिन, खुले छुपे दान करते हैं तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास, उन का प्रतिफल (बदला) है। और उन को कोई डर नहीं होगा। और न वह उदासीन होंगे।

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِالْإِيمَانِ
وَالْإِحْسَانِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَنُفَعُهُمْ أَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا يَخُوفُ عَلَيْهِمْ زِلْزَالُ
السَّعِيرَاتِ ۝

273. जो लोग व्याज खाते हैं ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है जिसे शैतान ने छू कर उन्मत्त कर दिया हो। उन की यह दशा इस कारण होगी कि उन्होंने ने कहा कि व्यापार भी तो व्याज ही जैसा है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध), तथा व्याज को हराम (अवैध) कर दिया²¹ है। अथ

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقْوَمُونَ إِلَّا كَمَا
يَقُومُ كَذِبٌ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْبَيْنِ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ
اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْجِعَةٌ
مِّنْ رِّبَاٍ فَاسْتَأْذِنْ فَمَن تَسَوَّغَ لَهَا نَفْسًا فَافْتَرِ
وَسْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿٥٩﴾

1 इस से सांकेतिक वह मुहाजिर है जो मक्का से मदीना हिज्रत कर गये। जिस के कारण उन का सारा सामान मक्का में छूट गया। और अब उन के पास कुछ भी नहीं बचा। परन्तु वह लोगों के सामने हाथ फैला कर भीख नहीं माँगते।

2. इस्लाम मानव में परस्पर प्रेम तथा सहानुभूति उत्पन्न करना चाहता है, इसी कारण उस ने दान करने का निर्देश दिया है कि एक मानव दूसरे की आवश्यकता पूर्ण करे। तथा उस की आवश्यकता को अपनी आवश्यकता समझे। परन्तु व्याज खाने की मामिकता सर्वथा इस के विपरीत है। व्याज धनी किसी की आवश्यकता को देखता है तो उस के भीतर उस की महायता की भावना उत्पन्न नहीं होती। वह उस की विवशता से अपना स्वार्थ पूरा करता तथा उस की आवश्यकता को अपने धनी होने का साधन बनाता है। और क्रमशः एक निर्दयी हिंसक पशु बन

जिस के पास उस के पालनहार की ओर से निर्देश आ गया, और इस कारण उस से रुक गया, तो जो कुछ पहले लिया वह उसी का हो गया। तथा उस का मुआमला अब्राह के हवाले है, और जो फिर वही करें तो वही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।

276. अब्राह व्याज को मिटाता है और दानों को बढ़ाता है। और अब्राह किसी कृतघ्न घोर पापी से प्रेम नहीं करता।

يَنْحَقُّ إِلَهُ الْيَتِيمِ وَيُزِيهِ الْيَتِيمَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

277. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तथा नमाज की स्थापना करते रहे, और जकात देते रहे तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिफल है, और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न उदासीन होंगे।

إِنَّ الْيَتِيمَ إِذَا امْتَنَّا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَاتَّقُوا اللَّهَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُجْرِمُونَ ۝

278. हे ईमान वालों! अब्राह से डरो, और जो व्याज शेष रह गया है उसे छोड़ दो यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

279. और यदि तुम ने ऐसा नहीं किया, तो अब्राह तथा उस के रसूल से युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। और यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो तुम्हारे लिये तुम्हारा मूल धन है।

إِن لَّمْ تَقْعُدُوا فَأَذَلُّوْا يَحْرِبُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّ تُبْمَدُّكُمْ زُرُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَطْلُبُونَ وَلَا تُنظَّمُونَ ۝

कर रह जाना है, इस के सिवा व्याज की रीति धन को सीमित करती है जब कि इस्लाम धन को फैलाना चाहता है इस के लिये व्याज को मिटाना तथा दान की भावना का उत्थान चाहता है। यदि दान की भावना का पूर्णतः उत्थान हो जाये तो कोई व्यक्ति दीन तथा निर्धन रह ही नहीं सकता।

न तुम अत्याचार करो¹, न तुम पर अत्याचार किया जाये।

280. और यदि तुम्हारा ऋणी असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो। और अगर क्षमा कर दो (अर्थात् दान कर दो) तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है, यदि तुम समझो तो।

281. तथा उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की ओर फेरे जाओगे, फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार दिया जायेगा, तथा किसी पर अन्याचार न होगा।

282. हे ईमान वाले! जब तुम आपस में किसी निश्चयन अवधि तक के लिये उधार लेन देन करो, तो उसे लिख लिया करो, तुम्हारे बीच न्याय के साथ कोई लेखक लिखे जिसे अल्लाह ने लिखने की योग्यता दी है। वह लिखने से इन्कार न करो। तथा वह लिखवाये जिस पर उधार है। और अपने पालनहार अल्लाह से डरो। और उस में से कुछ कम न करो। यदि जिस पर उधार है वह निर्बोध अथवा निर्बल हो, अथवा लिखवा न सकना हो तो उस का सरक्षक न्याय के साथ लिखवाये। तथा अपने में से दो पुरुषों को साक्षी (गवाह) बना लो। यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष तथा दो स्त्रियों को उन साक्षियों में से जिन को साक्षी बनाना पसन्द करो। ताकि दोनों

فَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنُظِرْهُ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ وَأَنْ يَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

وَالْقَوَا يُومَنَ تَرْجِعُونَ ۚ وَإِلَٰهَكُمْ تَوَّابٌ ۖ
كُلٌّ لِّفِي السَّبَبِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَيَّنْتُمْ بَيْنَ يَدَيْهِ إِلَىٰ أَجَلٍ
مَّسْئُومٍ فَالْتَبِذُوا وَلْيَكُنْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْقَدْرِ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَلِمَةً اللَّهُ تَعَالَىٰ
وَالْيَمِينُ إِلَهِي صَبِيحَ الْحَقِّ وَلَيْكُنِ اللَّهُ رَحْمَةً وَلَا
يَبْخَسُ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ إِلَهِي عَلَيْهِ الْحَقُّ
سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ
فَالْيَمِينُ وَلِيَّهُ بِالْقَدْرِ ۖ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ
مِنْ رِّجَالِكُمْ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ
وَأَمْرَانِ ۖ وَمَنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهُدَاءِ أَنْ
تُقْبَلَ رِجْلُهُ فُتَدْرِكْ رِجْلُهُ الْآخَرَىٰ وَلَا
يَأْبَ الشُّهُدَاءُ أَنْ يَسَازِلُوا وَلَا تَسْمَعُوا أَنْ
تَكْتُمُوا صَغِيرَةً أَوْ كَبِيرَةً إِلَىٰ أَجَلٍ ۚ قَسْطٌ
عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِشَهَادَةٍ وَأَذَلُّ لَكُمْ تَرْتَابًا
إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا
بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا
تَكْتُبُوهَا ۚ وَاسْتَشْهِدُوا زَوَاجًا بَيْنَكُمْ وَلَا

1 अर्थात् मूल धन से अधिक लो।

(स्त्रियों) में से एक भूल जाय तो दूसरी याद दिला दे। तथा जब साक्षी बलाये जायें तो इन्कार न करें। तथा विषय छोटा हो या बड़ा उस की अर्वाध सहित लिखवाने में आलस्य न करो, यह अल्लाह के समीप अधिक न्याय है। तथा साक्ष्य के लिये अधिक सहायक और इस से अधिक समीप है कि सदेह न करो। परन्तु यदि तुम व्यापारिक लेन देन हाथों हाथ (नगद करते हो) तो तुम पर कोई दोष नहीं कि उसे न लिखो। तथा जब आपस में लेन देन करो तो साक्षी बना लो। और लेखक तथा साक्षी को हानि न पहुँचाई जाये और यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारी अवैजा ही होगी, तथा अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है। और निमन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।

283. और यदि तुम यात्रा में रहो, तथा लिखने के लिये किसी को न पाओ तो धरोहर रख दो। और यदि तुम में परस्पर एक दूसरे पर भरोसा हो (तो धरोहर की भी आवश्यकता नहीं) जिस पर अमानत (उधार) है, वह उसे चुका दो। तथा अल्लाह (अपने पालनहार) से डरे, और साक्ष्य को न छुपाओ, और जो उसे छुपायेगा तो उस का दिल पापी है, तथा तुम जो करते हो अल्लाह सब जानता है।

284. आकाशों तथा धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है। और जो तुम्हारे मन में है उसे बोलो अथवा मन

يُضَارُّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَعَلَّوْا فَإِنَّهُ
شُرُوءٌ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ وَاعِدٌ لَكُمْ
وَاللَّهُ يَحْكُمُ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنَ
مِمَّا بَوَضِعْنَ لَكُمْ مِنْ أَمْوَالِكُمْ بِعَضُدٍ مُؤَيَّدٍ
أَوْ ثَمَرٍ أَمَانَةٍ وَتَمْتَقِنَنَّ اللَّهُ رِيقَهُ وَلَا تَتْلُوا
الشَّهَادَةَ أَوْ مَن تَكْتُمُهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَبِيلٌ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

بِاللَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَنْ شِئْنَا وَمَا
فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تَخْفَوْا بِهَا بِسْمِكُمْ بِهِ اللَّهُ

ही में रखो अन्नाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जिसे चाहे दण्ड देगा। और अन्नाह जो चाहे कर सकता है।

فَيَغْفِرُ مِمَّنْ يَشَاءُ وَلَعَذَابُ مَنْ يَشَاءُ أَلْوَدَّ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

285. रसूल उस चीज पर ईमान लाया जो उस के लिये अन्नाह की ओर से उतारी गई। तथा सब ईमान वाले उस पर ईमान लाये। वह सब अन्नाह तथा उस के फरिश्तों और उस की सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाये। (वह कहते हैं:) हम उस के रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हम ने सुना, और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे, और हमें तेरे ही पास¹ आना है।

أَمَّا رَسُولُهَا فَمَا أَسْرَفَ مِنْ دُونِهِ
وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَكِهِ وَكُتُبِهِ
وَأَنَّهُ لَا تَفْرُقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا
سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ
الْمَصِيرُ

286. अन्नाह किसी प्राणी पर उस की सकल से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता। जो सदाचार करेगा उस का लाभ उसी को मिलेगा, और जो दुराचार करेगा उस की हानि भी उसी को होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जायें तो हमें न पकड़ा हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल जितना हम से पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, और हमें क्षमा कर दे, तथा हम पर दया कर, तू ही हमारा स्वामी है, तथा काफ़िरो के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

لَا يَكُلِفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَعَلَيْهَا مَا كَسَبَتْ رَبًّا لَا تُؤَاجِدُنَّ إِنْ
يَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْهِمْ
ثِقَلًا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْنَا مَا لَا كِفَّةَ لَنَا بِهِ دَاعِبِينَ
وَاغْفِرْ لَنَا سَوْآتِنَا أُمِّتَ مَوْلَانَا فَاصْفُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

1 इस आयत में सन्धर्म इस्लाम की आस्था तथा कर्म का सारांश बताया गया है।

सूरह आले इमरान - 3

سورة ايمران

सूरह आले इमरान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है इस में 200 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 33 में आले इमरान (इमरान की संतान) का वर्णन हुआ है जो ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मरयम (अलैहिस्सलाम) के पिता का नाम है, इस लिये इस का नाम ((आले इमरान)) रखा गया है।
- इस की आरंभिक आयत 9 तक तौहीद (अद्वैतवाद) को प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि कुर्आन अल्लाह की बाणी है इस लिये सभी धार्मिक विवाद में यही निर्णायकरी है।
- आयत 10 से 32 तक अहले किताब तथा दूसरों को चेतावनी दी गई है कि यदि उन्होंने ने कुर्आन के मार्गदर्शन को जिस का नाम इस्लाम है नहीं माना तो यह अल्लाह से कूफ़ होगा जिस का दण्ड सदैव के लिये भरक होगा। और उन्होंने ने धर्म का जो वस्त्र धारण कर रखा है प्रलय के दिन उस की वास्तविकता खुल जायेगी और वह अपमानित हो कर रह जायेगा।
- आयत 33 से 63 तक में मरयम (अलैहिस्सलाम) तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) से संबंधित तथ्यों को उजागर किया गया जो उन निर्मूल विचारों का खण्डन करने हैं जिन्हें ईसाईयों ने धर्म में मिला लिया है और इस संदर्भ में जकरिया (अलैहिस्सलाम) तथा यहया (अलैहिस्सलाम) का भी वर्णन हुआ है।
- आयत 64 से 101 तक अहले किताब ईसाईयों के कुपथ और उन के नैतिक तथा धार्मिक पतन का वर्णन करने हुये मुसलमानों को उन से बचने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 102 से 120 तक मुसलमानों को इस्लाम पर स्थित रहने तथा कुर्आन पाक को दृढ़ता से थामे रहने और अपने भीतर एक ऐसा गिरोह बनाने के निर्देश दिये गये हैं जो धार्मिक सुधार तथा सत्य का प्रचार करे और इसी के साथ अहले किताब के उपद्रव से सावधान रहने पर बल दिया गया है।
- आयत 121 से 189 तक उहुद के युद्ध की स्थितियों की समीक्षा की गई है। तथा उन कमजोरियों की ओर संकेत किया गया है जो उस समय उजागर हुईं।
- आयत 190 से अन्त तक इस का वर्णन है कि इंसान कोई अन्ध विश्वास

नहीं, यह समझ बूझ तथा स्वभाव की आवाज है। और जब मनुष्य इसे दिल से स्वीकार कर लेता है तो उस का संबन्ध अल्लाह से हो जाता और उस की यह प्रार्थना होती है कि उस का अन्त शुभ हो। उस समय उस का पालनहार उसे शुभपरिणाम की शुभसूचना सुनाता है कि उस ने सत्धर्म का पालन करने में जो योगदान दिये हैं वह उसे उन का भरपूर सुफल प्रदान करेगा। फिर अन्त में सत्य की राह में संघर्ष करने और सत्य तथा असत्य के संघर्ष में स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अलिफ, लाम मीम।
- 2 अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित नित्य स्थायी है।
- 3 उसी ने आप पर सत्य के साथ पुस्तक (कुर्आन) उतारी है, जो इस से पहले की पुस्तकों के लिये प्रमाणकारी है, और उसी ने तौरात तथा इजील उतारी है।
- 4 इस से पूर्व लोगों के मार्गदर्शन के लिये, और फुर्कान उतारा है¹, तथा जिन्होंने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया उन्हीं के लिये कड़ी यातना है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।
- 5 निस्सन्देह अल्लाह से आकाशों तथा धरती की कोई चीज छुपी नहीं है।

الْحَمْدُ

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

تَنْزِيلُ مَلَكٍ كَتَبَ بِحَقِّ مُصَدِّقٍ لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَرَنَّا الْحَقَّ وَالْإِيمَانِ

وَمَنْ قَبْلُ هُمَا لِيَلْزَمَ وَتَنْزِيلُ نَفْسٍ مُّزَكَّاتٍ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ
وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو نِقَامٍ

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ

- 1 अर्थात् तौरात और इजील अपने समय में लोगों के लिये मार्गदर्शन थीं। परन्तु फुर्कान (कुर्आन) उतरने के पश्चात् अब वह मार्गदर्शन केवल कुर्आन पाक में है।

6. वही तुम्हारा रूप आकार गर्भाणियों में जैसे चाहता है, बनाता है, कोई पूज्य नहीं, परन्तु वही प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

7. उसी ने आप पर⁽¹⁾ यह पुस्तक (कुर्आन) उतारी है जिस में कुछ आयतें मुहकम² (सुदृढ़) हैं जो पुस्तक का मूल आधार हैं, तथा कुछ दूसरी मुनशाबिह³ (संदिग्ध) हैं। तो जिन के दिलों में कुटिलता है वह उपद्रव की खोज तथा मनमानी अर्थ करने के लिये संदिग्ध के पीछे पड़ जाते हैं। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। तथा जो ज्ञान में पकड़े हैं वह कहते हैं कि सब हमारे पालनहार के पास से है, और बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

8. (तथा कहते हैं): हे हमारे पालनहार।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي أَرْحَامٍ كَيْفَ يَشَاءُ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

هُوَ الَّذِي أُنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ
لِّتُحْكَمَ مِنْهُ بِالْكِتَابِ وَأُخْرَى مُتَشَبِهَاتٌ لِّتُحْكَمَ
بِهَا فِي الْأُمُورِ الَّتِي فِيهَا يَخْتَلِفُ
رَأْيُ النَّاسِ ۚ وَمَا تَشَابَهَ مِنْهُ
بِشَوَاحِدِ الْوَيْسُوفِ وَتُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ۚ وَمَا تَشَابَهَ إِلَّا لِقَوْمٍ
يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا
وَمَا يَذْكُرُ إِلَّا أَهْلُ الْبَيْتِ

رَبَّنَا آتِنَا لَنَا مِنْكَ دَلِيلًا وَهُوَ لَنَا

1. आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने मानव का रूप आकार बनाने और उसकी आर्थिक आवश्यकता की व्यवस्था करने के समान, उस की आत्मिक आवश्यकता के लिये कुर्आन उतारा है जो अल्लाह की प्रकाशना तथा मार्गदर्शन और फुर्कान है। जिस के द्वारा सत्यासत्य में विवेक (अन्तर) कर के सत्य को स्वीकार करें।

2. मुहकम (सुदृढ़) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन के अर्थ स्थिर खुले हुये हैं। जैसे एकधरवाद रिस्मालत तथा आदेशों और निषेधों एवं हलाल (वैध) और हराम (अवैध) से सम्बन्धित आयतें यही पुस्तक का मूल आधार हैं।

3. मुनशाबिह (संदिग्ध) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन में उन तथ्यों की ओर संकेत किया गया है जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों में नहीं आ सकते जैसे मौत के पश्चात् जीवन तथा परलोक की बातें इन आयतों के विषय में अल्लाह ने हमें जो जानकारी दी है हम उन पर विश्वास करते हैं क्योंकि इनका विस्तार विवरण हमारी बुद्धि से बाहर है, परन्तु जिन के श दिलों में खोटा है वह इन की वास्तविकता जानने के पीछे पड़ जाते हैं जो उन की शक्ति से बाहर है।

हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर। वास्तव में तू बहुत बड़ा दाता है।

9. हे हमारे पालनहार! तू उस दिन सब को एकत्र करने वाला है जिस में कोई सदिह नहीं, निस्सदिह अल्लाह अपने निर्धारित समय का विरुद्ध नहीं करता।

10. निश्चय जो काफिर हो गये उन के धन तथा उन की संतान अल्लाह (की यातना) से (बचाने में) उन के कुछ काम नहीं आयेगी, तथा वही अग्नि के ईंधन बनेंगे।

11. जैसे फिरऔनियों तथा उन के पहले के लोगों की दशा हुई, उन्होंने हमारी निशानियों को मिथ्या कहा, तो अल्लाह ने उन के पापों के कारण उन को धर लिया। तथा अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है।

12. हे नबी! काफिरों से कह दो कि तुम शीघ्र ही परास्त कर दिये जाओगे, तथा नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे, और वह बहुत घुरा ठिकाना¹ है।

13. वास्तव में तुम्हारे लिये उन दो दलों में जो (बद्र में) सम्मुख हो गये एक निशानी थी। एक अल्लाह की राह में युद्ध कर रहा था, तथा दूसरा काफिर था, वह अपनी आँखों से देख रहे थे कि यह (मुसलमान) तो दुगने लग

كُنْتُكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْكَافِرُ ①

تَسْمِعُكَ جَامِعُ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخَيِّفُ الْيَقِينُ ②

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُفَعِّلَهُمْ مَوْتَهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنْ بَيْنِ يَدَيْنَا وَأُولَئِكَ هُمُ قُودُ النَّارِ ③

كَذَّابٌ إِلَىٰ قُرْعُونٍ وَأَنبِيَاءٍ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَاحْذَرُوا اللَّهَ يَذَّابِلَهُمُ اللَّهُ شَدِيدَ الْعِقَابِ ④

قُلْ يَلْبِسَ كُفْرُكُمْ سَعْيَكُمْ وَخَسِرْتُمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَمِنْ أَمْرِ الْيَوْمِ ⑤

فَمَا كَانَ تَكْمُلُهُ فِي يَمِينِ الْقَمَّةِ يَمِينَهُ تَقَابُلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَمْرٌ كَافِرٌ يَرَوْنَهُمْ يَتْلُوهُمْ تَأْتِي الْعَيْنُ وَتَقُولُ يَتَصَرَّحُ مَنْ يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ⑥

1 इस में काफिरों की मुसलमानों के हाथों पराजय की भविष्यवाणी है

रहे हैं। तथा अब्राह अपनी महायत्ना द्वारा जिसे चाहे समर्थन देता है। निःसंदेह इस में समझ बूझ वालों के लिये बड़ी शिक्षा¹ है।

14. लोगों के लिये उन के मन को मोहने वाली चीजें, जैसे स्त्रियाँ, संतान, सोने चाँदी के ढेर, निशान लगे घोड़े पशुओं तथा खेती, शोभनीय बना दी गई है। यह सब समारिक जीवन के उपभोग्य है। और उत्तम आवास अब्राह के पास है।

15. (हे नबी!) कह दो क्या मैं तुम्हें इस से उत्तम चीज बना दूँ? उन के लिये जो डरें। उन के पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग है। जिन में नहरें बह रही हैं। वह उन में सदावामी होंगे। और निर्मल पत्नियाँ होंगी, तथा अब्राह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अब्राह अपने भक्तों को देख रहा है।

16. जो (यह) प्रार्थना करते हैं कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे, और हमें नरक की यातना से बचा।

17. जो सहनशील है सत्यवादी है, आज्ञाकारी है, दानशील तथा भोरों में अब्राह से क्षमा याचना करने वाले हैं।

18. अब्राह साक्षी है जो न्याय के साथ कायम है, कि उस के सिवा कोई

رَبِّينَ لِيُنَاسِ حُبَّ الشَّعَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ
وَالْحَمِيمِ وَالْقَدِيرِ الْمُقْطَرَةِ مِنْ مَحَبِّ
وَالْفَصْوَةِ وَنَحْبِ الْمَسْكُونَةِ وَالْعَالِمِ وَالْمُحَرِّثِ
ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يَجْعَلُ
الْبَابِ ۝

لَنْ أُوَفِّيَنَّكُمْ خَيْرًا مِنْ ذَلِكَ بَلَيِّنَ لِقَوَائِعِنَا
لَهُمْ جَنَّاتُ خَزَائِرٍ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِجْسٌ مِّنْ لَّدُنَّا وَاللَّهُ
بِعَسْوَرٍ لَّيِّنٍ ۝

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا كَاغِبِرْنَا
ذُنُوبَنَا وَفَنَآعَذَابَ النَّارِ ۝

الْظَّالِمِينَ وَالْمُذْهَبِينَ وَالْعَمِينَ
وَالْمُسْتَعِيرِينَ وَالْمُسْتَعِيرِينَ بِالْإِسْكَارِ ۝

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو

1 अर्थात् इस बात की कि विजय अब्राह के समर्थन से प्राप्त होती है, सेना की संख्या से नहीं।

पूज्य नहीं है, इसी प्रकार फरिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी हैं) कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

19. निस्संदेह (वास्तविक) धर्म अब्राह के पास इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो विभेद किया तो अपने पास ज्ञान आने के पश्चात् आपस में द्वेष के कारण किया। तथा जो अब्राह की आयतों के साथ कुफ्र (अस्वीकार) करेगा, तो निश्चय अब्राह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

20. फिर यदि वह आप से विवाद करें तो कह दें कि मैं स्वयं तथा जिस ने मेरा अनुसरण किया अब्राह के आज्ञाकारी हो गये तथा अहले किताब, और उम्मीयों (अर्थात् जिन के पास किताब नहीं आई) से कहो कि क्या तुम भी आज्ञाकारी हो गये? यदि वह आज्ञाकारी हो गये तो मार्गदर्शन पा गये। और यदि विमुख हो गये तो आप का दायित्व (संदेश) पहुँचा¹ देना है। तथा अब्राह भक्तों को देख रहा है।

21. जो लोग अब्राह की आयतों के साथ कुफ्र करते हों, तथा नबियों को अवैध बध करते हों तथा उन लोगों का बध करते हों जो न्याय का आदेश देते हैं तो उन्हें दुखदायी यातना² की शुभ सूचना सुना दो।

أَعْلَمُوا قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّهُ أَوَّاهٌ مُّغْتَرِبٌ
الْحَكِيمُ ۝

إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمْ
الْعِلْمُ بَعِيًّا ۚ يَتَّبِعُهُمُ الْغَوْ ۚ إِنَّ أَوَّلَ
بَيْتٍ أَعْزَمَ اللَّهُ تَسْوِيفَهُ ۚ يُخَسِّبُ

وَأَنْ مَّا جَاءَهُمْ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ
مُسْلِمًا ۚ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ أَسْلَمْتُ قُلُوبَنَا
أَفْتَدُوا ۚ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ
يَبْغُوا ۚ وَاللَّهُ

رَبُّ الدِّينِ ۚ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ
النَّبِيَّاتِ ۚ يَتَّبِعُهُمُ الْغَوْ ۚ إِنَّ أَوَّلَ
بَيْتٍ أَعْزَمَ اللَّهُ تَسْوِيفَهُ ۚ يُخَسِّبُ
بَعْدَ آيَاتِهِ ۚ

1 अर्थात् उन से बाद विवाद करना व्यर्थ है।

2 इस में यहूद की आर्थिक तथा कर्मिक कुपथा की ओर संकेत है।

22. यही है जिन के कर्म सभार तथा परलोक में अकारथ गये, और उन का कोई सहायक नहीं होगा।

أُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَالَّذِينَ كَانُوا لِآلِهِمْ لَحْزَنًا ۖ

23. हे नबी! क्या आप ने उन की¹ दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाये जा रहे हैं, ताकि उन के बीच निर्णय² करे तो उन का एक गिरोह मुंह फेर रहा है। और वह है ही मुंह फेरने वाले।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا بُكْيَيْنًا مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ فَقَالُوا لَوْلَا نُفِصَلُ بِهِمْ بَيْنَهُمْ فَيَسْأَلُوا مَنْ يَكُنْ لَكُمْ بَيْنَهُمْ فَيَقُولُوا شَيْءٌ فَهُمْ يُعْزَبُونَ ۚ

24. उन की यह दशा इस लिये है कि उन्होंने ने कहा कि नरक की आग्न हमें गिनती के कुछ दिन ही छूएगी तथा उन को अपने धर्म में उन की मिथ्या बनाई हुई बातों ने धोखे में डाल रखा है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَوْلَا نُفِصَلُ بِهِمْ بَيْنَهُمْ فَيَسْأَلُوا مَنْ يَكُنْ لَكُمْ بَيْنَهُمْ فَيَقُولُوا شَيْءٌ فَهُمْ يُعْزَبُونَ ۚ

25. तो उन की क्या दशा होगी, जब हम उन को उस दिन एकत्र करेंगे जिस (के आने) में कोई संदेह नहीं, तथा प्रत्येक प्राणी को उस के किये का भरपर प्रतिफल दिया जायेगा और किसी के साथ कोई अत्याचार नहीं किया जायेगा।

كَلِّفَ إِذَا جُمِعْتُمْ يَوْمَئِذٍ لَرَبِّهِمْ يُقَالُ لَكُمُ الْيَوْمَ الَّذِي كُنْتُمْ تُكَذِّبُونَ ۚ

26. हे (नबी)! कहो: हे अल्लाह! राज्य के³ अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य

قُلْ لِلَّهِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ وَالْأَمْسَ وَاللَّهُ يَتَوَلَّى الَّذِينَ يَشَاءُ ۚ

1 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान है।

2 अर्थात् विभेद का निर्णय कर दो। इस आयत में अल्लाह की पुस्तक से अभिप्राय तौरात और इंजील है। और अर्थ यह है कि जब उन्हें उन की पुस्तकों की ओर बुलाया जाता है कि अपनी पुस्तकों ही को निर्णायक मान लो तथा बताओ कि उन में अंतिम नबी पर इंसान लाने का आदेश दिया गया है या नहीं? तो वह कतरा जाते हैं जैसे कि उन्हें कोई ज्ञान ही न हो।

3 अल्लाह की अपार शक्ति का वर्णन।

दे, और जिम से चाहे राज्य छीन ले, तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहे अपमान दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निःसंदेह तू जो चाहे कर सकता है।

وَيَنْزِعُ لِمَنْ يَشَاءُ أَمْوَالَهُمْ مِنْ دُونِهَا وَيُنْزِلُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِثْرًا ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ هَادٍ ۚ

27. तू रात को दिन में प्रविष्ट कर देता है तथा दिन को रात में प्रविष्ट कर¹ देता है। और जीव को निर्जीव से निकालता है। तथा निर्जीव को जीव से निकालता है, और जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है,

يُؤْتِي الْأَنْثَىٰ بِوَحْشٍ مِّمَّنْ تَلْبَسُ عَلَيْهِ الْإِنثَىٰ ۚ وَيُؤْتِي الْأُنثَىٰ بِوَحْشٍ مِّمَّنْ تَلْبَسُ عَلَيْهِ الْإِنثَىٰ ۚ وَيُؤْتِي الْأُنثَىٰ بِوَحْشٍ مِّمَّنْ تَلْبَسُ عَلَيْهِ الْإِنثَىٰ ۚ

28. मुमिनो को चाहिये कि वह ईमान वालों के विरुद्ध काफ़िरो को अपना सहायक मित्र न बनाये। और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से कांड संबंध नहीं। परन्तु उन से बचने के लिये।² और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डरा रहा है और अल्लाह ही की ओर जाना है।

لَا يَجِدُوا لِلْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُسْلِمِينَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأِنَّ اللَّهَ فَعَلْ بِهِ شَيْئًا ۚ وَلَٰكِنْ يَكْفُرُونَ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۚ

29. हे नबी! कह दो कि जो तुम्हारे मन में है उसे मन ही में रखो या व्यक्त करो अल्लाह उसे जानता है। तथा जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह सब को जानता है। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُوا أَمْرِي ۖ وَذُرُّوا مَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ ذَوِي الْحِكْمَةِ ۚ

30. जिस दिन प्रत्येक प्राणी ने जो सुकर्म किया है, उसे उपास्थित पायेगा, तथा जिस ने कुकर्म किया है वह कामना करेगा कि उस के तथा उस के कुकर्मों के बीच बड़ी दूरी होती।

يَوْمَ يُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ مِنْ خَيْرٍ مِّمَّا كَسَبَتْ ۚ وَلَا يَخْلُفُ فِيهَا أَكْثَرُ ۚ وَيُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ مِنْ شَرٍّ مِّمَّا كَسَبَتْ ۚ وَلَا يَخْلُفُ فِيهَا أَكْثَرُ ۚ

1 इस में रात्रि दिवस के परिवर्तन की ओर संकेत है।

2 अर्थात् संधि मित्र बना सकने हो।

तथा अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता¹
है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये
अति करुणामय है।

31. हे नबी! कह दो यदि तुम अल्लाह
से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण
करो। अल्लाह तुम से प्रेम² करेगा।
तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा। और
अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

32. हे नबी! कह दो अल्लाह और रसूल
की आज्ञा का अनुपालन करो। फिर
भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह
अल्लाह क़ाफ़िरी से प्रेम नहीं करता।

33. वस्तुतः अल्लाह ने आदम, नूह,
इब्राहीम की संतान तथा इमरान की
संतान को संसार वासियों में चुन
लिया था।

34. यह एक दूसरे की संतान है, और
अल्लाह सब सुनता और जानता है।

35. जब इमरान की पत्नी³ ने कहा: हे
मेरे पालनहार! जो मेरे गर्भ में है,
मैं ने तेरे⁴ लिये उसे मुक्त करने की
मनौती मान ली है। तू इसे मुझ से
स्वीकार कर ले। वास्तव में तू ही सब
कुछ सुनता और जानता है।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُوا يُحِبُّكُمْ اللَّهُ وَيَغْفِرْ
لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ
وَآلَ إِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

وَقَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّي إِنِّي كُنْتُ لَكَ مَآ
فِي بَطْنٍ فَخُذْهُ فَقَبَّلَ مِنْ رَبِّكَ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ

1 अर्थात् अपनी अवैज्ञा से।

2 इस में यह संकेत है कि जो अल्लाह से प्रेम का दावा करता हो, और मुहम्मद
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अनुसरण न करता हो तो वह अल्लाह का
प्रेमी नहीं हो सकता।

3 अर्थात् मर्यम की माँ।

4 अर्थात् बैतुल मकदिस की सेवा के लिये।

36. फिर जब उस ने बालिका जनी तो (संताप से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे तो बालिका हो गई, हालाँकि जो उस ने जना उस का अल्लाह को भली भाँति ज्ञान था और नर, नारी के समान नहीं होता, और मैं ने उस का नाम मरयम रखा है। और मैं उसे तथा उस की सनान को धिक्कारे हुये शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।⁽¹⁾

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّدِيْ وَيْضَعُهَا اُنْثٰى وَاَللهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ۚ وَلَيْسَ الذَّكَرُ اِلَّا لِّاُنْثٰى وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ ۚ وَاِنِّىْ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

37. तो तेरे पालनहार ने उसे भली भाँति स्वीकार कर लिया। तथा उस का अच्छा प्रतिपालन किया। और जकरिय्या को उस का संरक्षक बनाया। जकरिय्या जब भी उस के मेहराब (उपासना कोष्ठ) में जाता तो उस के पास कुछ खाद्य पदार्थ पाता वह कहना कि हे मरयम! यह कहाँ से (आया) है? वह कहती: यह अल्लाह के पास से (आया) है। वास्तव में अल्लाह जिसे चाहता है अगणित जीविका प्रदान करता है।

فَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ ۚ وَاُنْتَهَبَهَا نَسِيْمًا ۚ وَكَلَّمَهَا رُكُوْبًا ۚ كَلَّمَهَا اَنْحَلَّ عَلَيْهَا رُكُوْبُ الْيَمْرِ ۚ وَجَبَّ عَنْهَا قَدْرٌ ۚ قَالَتْ اَنْحَلَّ عَلَيْهَا رُكُوْبُ الْيَمْرِ ۚ كَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ اِنَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِقُدْرٍ ۝

38. तब जकरिय्या ने अपने पालनहार से प्रार्थना की हे मेरे पालनहार! मुझे अपनी ओर से सदाचारी सनान प्रदान कर। निस्सदिह तू प्रार्थना सुनने वाला है।

هٰذَا لَكَ دُعَاؤُكَ رَبَّكَ ۚ قَالَتْ رَبِّ هَبْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَا ۝

39. तो फरिश्तों ने उसे पुकारा- जब वह मेहराब में खड़ा नमाज पढ़ रहा था कि: अल्लाह तुझे "यहया" की शुभ:

فَاَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي ۚ فَاَنْصَبَ عَلَيْهِ السَّلَامُ ۚ وَنَادَتْهُ اَنَّ اللّٰهَ يَخْتَارُ لَكَ بِمُحَمَّدٍ ۚ وَنَادَتْهُ اَنَّ اللّٰهَ يَخْتَارُ لَكَ بِمُحَمَّدٍ ۚ وَنَادَتْهُ اَنَّ اللّٰهَ يَخْتَارُ لَكَ بِمُحَمَّدٍ ۚ

1 हदीस में है कि जब कोई शिशु जन्म लेता है तो शैतान उसे स्पर्श करता है जिस के कारण वह चीख कर रोता है, परन्तु मरयम और उस के पुत्र को स्पर्श नहीं किया है (मही बुखारी अ 4548)

सूचना दे रहा है जो अल्लाह के शब्द (इमा) का पुष्टि करने वाला प्रमुख तथा संघर्षी और सदाचारियों में से एक नबी होगा।

وَسَيِّدٌ وَحَصُورٌ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الظُّهُورِ ﴿٢٠﴾

40. उस ने कहा मेरे पालनहार! मेरे कोई पुत्र कहां से होगा, जब कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझ¹ है? उस ने कहा अल्लाह इसी प्रकार जो चाहता है कर देता है।

قَالَ رَبِّ لِي يَكُنْ لِي غُلَامٌ وَاقْدِرْ عَلَيَّ الْكِبَرَ
وَأَمْرًا عَاقِرًا قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ
مَا يَشَاءُ ﴿٢١﴾

41. उस ने कहा मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण बना दे। उस ने कहा तेरा लक्षण यह होगा कि तीन दिन तक लोगों से बात नहीं कर सकेगा। परन्तु संकेत में। तथा अपने पालनहार का बहुत स्मरण करता रहा। और संध्या, प्रातः उस की पवित्रता का वर्णन कर।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً قَالَ آيَتُكَ الْأَخْطَرُ
الْبَاسُ كُلُّهُ أَيَّامُ الْآزْمَةِ وَالْأَكْثَرُ نَفْسُكَ كَثِيرًا
وَسَيِّدُهُ بِالْعَشِيِّ وَالْإِجْمَارِ ﴿٢٢﴾

42. और (याद करो) जब फरिश्तों ने मरयम से कहा: हे मरयम! तुझे अल्लाह ने चुन लिया, तथा पवित्रता प्रदान की, और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَكُوتُ مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ
اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَى نِسَاءِ
الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾

43. हे मरयम! अपने पालनहार की अज्ञाकारी रहो। और सज्दा करो तथा रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करती रहो।

يَرْيَا أَقْبَلْتِي لِرَبِّكِ وَتُحْمِي وَأَرْكَبِي مَعَ
الرَّاكِبِينَ ﴿٢٤﴾

44. यह गैब (परोक्ष) की सूचनायें हैं। जिन्हें हम आप की ओर प्रकाशना कर रहे हैं और आप उन के पास उपस्थित न थे जब वह अपनी

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ ذَاتَ عِلْمٍ أَتْلَاهُمْ إِلَهُهُمْ يُفَعِّلُ مَرْيَمَ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ ذَاتَ عِلْمٍ يُخَوِّسُونَ ﴿٢٥﴾

1 यह प्रश्न जर्कारय्या ने प्रमत्त हो कर आश्चर्य से किया।

लेखनियाँ¹ फेंक रहे थे कि कौन मरयम का अभिरक्षण करेगा! और न उन के पास उपस्थित थे जब वह झगड़ रहे थे।

45. जब फरिश्तों ने कहा: हे मरयम! अल्लाह तुझे अपने एक शब्द² की शुभ सूचना दे रहा है। जिस का नाम मसीह ईसा पुत्र मरयम होगा। वह लोक-परलोक में प्रमुख, तथा (मेरे) समीपवर्तियों में होगा।

46. वह लोगों से गोद में तथा अधेड़ आयु में बातें करेगा, और सदाचारियों में होगा।

47. मरयम ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहीं से होगा, मुझे तो किसी पुरुष ने हाथ भी नहीं लगाया है? उस ने³ कहा इसी प्रकार अल्लाह जो चाहना है उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये कहता है कि: "हो जा" तो वह हो जाता है।

48. और अल्लाह उस को पुस्तक तथा प्रबोध और तौरात तथा इजील की शिक्षा देगा।

49. और फिर वह बनी इस्राईल का एक रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पालनहार

إِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكِتَابٍ مُّطَهَّرٍ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ سَمَوَاتِهِ مِائِدًا وَجِئَ بِهَا
الْبُحْرَىٰ وَالْأَمْرُ وَالْمَقْرَبِينَ ۝

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ سَمَوَاتِهِ مِائِدًا وَجِئَ بِهَا
الْبُحْرَىٰ وَالْأَمْرُ وَالْمَقْرَبِينَ ۝

قَالَتْ رَبِّ أَلَيْسَ لِي بِذَكَرٍ وَأَنَا كَذَّبْتُ بِكُفْرًا
قَالَ كَذَّبْتَ اللَّهَ عَنَّا بِكَأْرٍ إِذَا قُضِيَ أَمْرًا
وَأَنَّا يَقُولُ لَهُ لَنْ قَتُلُوهُ ۝

وَتُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالْتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۝

وَسَوَّلَ إِلَىٰ نَبِيِّ إِسْرَآءِيلَ أَنِّي قَدْ جَعَلْتُكَ بَآئِنًا

1 अर्थात् यह निर्णय करने के लिये कि मरयम का संरक्षक कौन हो?

2 अर्थात् वह अल्लाह के शब्द "क़ुन" से पैदा होगा। जिस का अर्थ है "हो जा"।

3 अर्थात् फरिश्ते ने।

की ओर से निशानी लाया है। मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से पक्षी के आकार के ममान बनाऊँगा, फिर उस में फूँक दूँगा तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जायेगा। और अल्लाह की अनुमति से जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को स्वस्थ कर दूँगा। और मूर्खों को जीवित कर दूँगा। तथा जो कुछ तुम खाते तथा अपने घरों में संचित करते हो उसे तुम्हें बता दूँगा। निस्सदेह इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानियाँ हैं, यदि तुम इमान वाले हो।

50. तथा मैं उम की सिद्धि करने वाला हूँ जो मुझ से पहले की है "तौरात"। तुम्हारे लिये कुछ चीजों को हलाल (वैध) करने वाला हूँ जो तुम पर हराम (अवैध) की गयी है। तथा मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी ले कर आया हूँ। अतः तुम अल्लाह से डरो, और मेरे अज्ञाकारी हो जाओ।

51. वास्तव में अल्लाह मेरा और तुम सब का पालनहार है, अतः उसी की इबादत (बंदना) करो। यही सीधी डगर है।

52. तथा जब ईसा ने उन से क़फ़ का संवेदन किया तो कहा अल्लाह के धर्म की सहायता में कौन मेरा साथ देगा? तो हवारियों (सहचरों) ने कहा हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाये, तुम इस के साक्षी रहो कि हम मुस्लिम (अज्ञाकारी) हैं।

مِنْ رَبِّكَ الَّذِي أَخْلَقَ كُفًّزًا مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ
الْفَصِيرِ فَنَفَخْنَا فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ وَنُفِثَ
الرُّكُومَةُ وَالْأَرْصَافُ وَأُنْزِلَ السُّحُوفُ بِإِذْنِ اللَّهِ وَ
يَبْسُطُ السُّحُوفَ بِمَا تَكُونُ وَمَا تَكُونُ فِي سُبُوحِ اللَّهِ
فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّلَّذِينَ كَانُوا مُتَفَكِّرِينَ ۝

وَمُصَدِّقًا لِّمَا تَتْلُو مِنْ التَّوْرَةِ وَلَا أُخِلَّ
لَكُمْ نَقْصُ الَّذِي فِي حُزْمٍ عَلَيْكُمْ وَجَعَلَكُمْ بَآيَةً
مِّنْ رَبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ ۝

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوا لَهُ هَذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيمٌ ۝

فَلَمَّا أَحْسَسَ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي
إِلَ اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ عَنْ أَنْصَارَانِ
أَمَّا يَهُودُوعُ وَاشْهَدُ بِأَنَّا مُسِيحُونَ ۝

53. हे हमारे पालनहार! जो कुछ तू ने उतारा है, हम उस पर ईमान लाये, तथा तेरे रसूल का अनुसरण किया, अतः हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।

54. तथा उन्होंने ने षड्यंत्र¹ रचा, और हम ने भी षड्यंत्र रचा। तथा अल्लाह षड्यंत्र रचने वालों में सब से अच्छा है।

55. जब अल्लाह ने कहा हे ईसा! मैं तुझे पूर्णतः लेने वाला तथा अपनी ओर उठाने वाला हूँ। तथा तुझे काफ़िरो से पवित्र (मुक्त) करने वाला हूँ। तथा तेरे अनुयायियों को प्रलय के दिन तक काफ़िरो के ऊपर² करने वाला हूँ। फिर तुम्हारा लौटना मेरी ही ओर है। तो मैं तुम्हारे बीच उस विषय में निर्णय कर दूँगा जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

56. फिर जो काफ़िर हो गये, उन्हें लोक परलोक में कड़ी यातना दूँगा, तथा उन का कोई सहायक न होगा।

57. तथा जो ईमान लाये, और सदाचार किये तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल दूँगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

58. हे नबी! यह हमारी आयतें और

رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَرْسَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاثْبِتْنَا
مَعَنَا شَهِيدِينَ ۝

وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝

رَدَقِلَ اللَّهُ يَاسِينَ إِلَىٰ مَتْوَيْتَ وَرَافِعَتَ الْإِلَ
وَمُطَهَّرَ الْبَيْنِ الْبَيْنِ كَفَرُوا وَحَاجِبُ الْبَيْنِ
الْبَعُولُ كَوَقِ نَبِيٍّ تَعْرِفُوا الْبَيْنَ الْبَيْنَ
لَقَدْ إِنْ مَرَجَعَكُمْ فَاحْلُو بَيْنَكُمْ بَيْنَكُمْ لَسْتُمْ مِنْ
تَحْتِلُونَ ۝

وَأَمَّا الْبَيْنِ كَفَرُوا وَأَمَّا بَيْنَهُمْ عَدَابٌ شَدِيدٌ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

وَأَمَّا الْبَيْنِ أَمَّا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَبِمَوَاقِفِهِمْ
أَجْرُهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

ذَلِكَ مَتْوَيْتُ عَلَيْكَ مِنْ لَآيَتِ الْبَيْنِ الْبَيْنِ ۝

1 अर्थात् ईसा (अलैहस्सलाम) को हन् करने का। तो अल्लाह ने उन्हें विफल कर दिया। (देखिये सूरह निमा, आयत 157)।

2 अर्थात् यहूदियों तथा मुशिरको के ऊपर।

तत्त्वज्ञयता की शिक्षा है जो हम तुम्हें सुना रहे हैं।

59. वस्तुतः अल्लाह के पास ईसा की मिसाल ऐसी ही है, ¹ जैसे आदम की। उसे (अर्थात् आदम को) मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर उस से कहा "हो जा" तो वह हो गया।

60. यह आप के पालनहार की ओर से सत्य ² है, अतः आप संदेह करने वालों में न हों।

61. फिर आप के पास ज्ञान आ जाने के पश्चात् कोई आप से ईसा के विषय में विवाद करे तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रों तथा तुम्हारे पुत्रों, और अपनी स्त्रियों तथा तुम्हारी स्त्रियों को बुलाते हैं और स्वयं को भी फिर अल्लाह से सविनय प्रार्थना करें कि अल्लाह की धिक्कार मिथ्यावादियों पर ³ हो।

62. वास्तव में यही सत्य वर्णन है, तथा अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय अल्लाह ही प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

إِنْ مَثَلٌ مِّثْلِي عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

لَقَدْ خَلَقْنَا مِنْ رِبِّكَ فَجَلَّتْ عَنْ الْمُتَذَكِّرِينَ ۝

فَمَنْ حَاجَّتْ بَيْنَهُ مِنْ بَعْدِ مَا آتَى مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَذْكُرْ آبَاءَنَا وَآبَاءَكُمْ فَآبَاءُنَا وَآبَاءُكُمْ وَآلِهَتُنَا وَآلِهَتُكُمْ ثُمَّ نَعْبُدُهُمْ فَإِنِ كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهٌ وَإِنَّ لِلَّهِ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

- 1 अर्थात् जैसे प्रथम पुरुष आदम (अलैहिस्सलाम) को बिना माता पिता के उत्पन्न किया, उसी प्रकार ईसा (अलैहिस्सलाम) को बिना पिता के उत्पन्न कर दिया अतः वह भी मानव पुरुष है।
- 2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम का मानव पुरुष होना। अतः आप उन के विषय में किसी संदेह में न पड़ें।
- 3 अल्लाह से यह प्रार्थना करें कि वह हम में से मिथ्यावादियों को अपनी दया से दूर कर दे।

63. फिर भी यदि वह मुंह¹ फेरे, तो निम्नदिह अल्लाह उपद्रवियों को भली भाँति जानता है।

64. हे नबी! कहो कि हे अहले किताब! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करें, और किसी को उस का साझी न बनायें तथा हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा पालनहार न बनाये। फिर यदि वह विमुख हो तो आप कह दें कि तुम साक्षी रहो कि हम (अल्लाह के)² अज्ञाकारी हैं।

65. हे अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में विवाद³ क्यों करते हो जब कि तौरात तथा इंजील इब्राहीम के पश्चात् उतारी गई है? क्या तुम समझ नहीं रखते?

66. और फिर तुम्हीं ने उस विषय में विवाद किया जिस का तुम को कुछ ज्ञान⁴ था तो उस विषय में क्यों विवाद कर रहे हो जिस का तुम्हें

قُلْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَيِّمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۝

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَحْجُمُونَ فِي دِينِ إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَيْنِهِ؟ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

هَاسِتُمْ فِرَاقَهُ حَاجِبَتُمْ مِنْهُ وَمِنَ الْعَمَلِ بِهِ حِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْقِلُونَ ۝

1 अर्थात् सत्य को जानने की इस विधि को स्वीकार न करें,

2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम से संबंधित विवाद के निवारण के लिये एक दूसरी विधि बताई गई है।

3 अर्थात् यह क्यों कहते हो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम हमारे धर्म पर थे। तौरात और इंजील तो उन के सहस्रों वर्ष के पश्चात् अवतरित हुई तो वह इन धर्मों पर कैसे हो सकते हैं।

4 अर्थात् अपने धर्म के विषय में।

कोई ज्ञान¹ नहीं? तथा अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।

67. इब्राहीम न यहूदी था, न नसरानी (इसाई) परन्तु वह एकेश्वरवादी, मस्लिम "आजाकारी" था। तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

68. वास्तव में इब्राहीम से सब से अधिक समीप तो वह लोग है जिन्होंने उस का अनुसरण किया, तथा यह नबी², और जो इमान लाये। और अल्लाह इमान वालों का संरक्षक भी मित्र है।

69. अहले किताब में से एक गिरोह की कामना है कि तुम्हें कुपथ कर दें। जब कि वह स्वयं को कुपथ कर रहा है, परन्तु वह समझने नहीं है।

70. हे अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों³ के साथ कुफ़ क्यों कर रहे हो, जब कि तुम साक्षी⁴ हो? के विषय में।

71. हे अहले किताब! क्यों सत्य को असत्य के साथ मिलाकर मंदिग्ध कर देते हो, और सत्य को छुपाते हो, जब कि तुम जानते हो।

72. अहले किताब के एक समुदाय ने कहा कि दिन के आरंभ में उस पर इमान ले आओ जो इमान वालों पर

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

إِنَّ أَوَّلَ بَنَاسٍ يَبْرِئُهُمُ لَكَوْنُهُمْ اتَّبَعُوا وَهَذَا صِبْغٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَبِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ عَمَلَ وَّمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَقْبَلُونَ لَعْنًا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ يَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ فِي الْآخِرَةِ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِجْرُهُمْ

1 अर्थात् इब्राहीम अलैहस्सलाम के धर्म के बारे में।

2 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायी।

3 जो तुम्हारी किताब में अंतिम नबी से संबंधित है।

4 अर्थात् उन अयतों के सत्य होने के साक्षी हो।

उतारा गया है, और उम के अन्त (अर्थात् सध्या समय) कुफ़र कर दो, सभवतः वह फिर¹ जायें।

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾

73. और केवल उसी की मानो जो तुम्हारे (धर्म) का अनुसरण करे। (हे नबी!) कह दो कि मार्गदर्शन तो वही है जो अब्राह का मार्गदर्शन है (और यह भी न मानो कि) जो (धर्म) तुम को दिया गया है वैसा किसी और को दिया जायेगा, अथवा वह तुम से तुम्हारे पालनहार के पास बिवाद कर सकेंगे। आप कह दें कि प्रदान अब्राह के हाथ में है, वह जिसे चाहे देता है। और अब्राह विशाल जानी है।

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا بِمَا نُنَازِلُكُمْ مِنْ رَبِّ الْهُدَى
هُدَى الْوَحْيِ نَزَّلْنَا قُرْآنًا مِثْلَ مَا أَنْزَلْنَا
إِلَىٰ خُذْكُمْ مِنْكُمْ قُلْ إِنَّ الْغُفْلَانَ
يُؤْتِيهِمْ مِنْ رَبِّ آوَاهٍ وَاسِعٌ عَلَيْهِمْ

74. वह जिसे चाहे अपनी दया के साथ विशेष कर देता है, तथा अब्राह बड़ा दानशील है।

يَخْتَصُ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿٦٨﴾

75. तथा अहले किताब में वह भी है जिस के पास चाँदी-सोने का ढेर धरोहर रख दो तो उसे तुम्हें चुका देगा, तथा उन में वह भी है कि जिस के पास एक दीनार² भी धरोहर रख दो, तो वह तुम्हें नहीं चुकायेगा, परन्तु जब सदा उस के सिर पर सवार रहो। यह (बात) इस लिये है कि उन्होंने ने कहा कि उम्मियों के बारे में हम पर कोई

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ رُتِبَتْ عَلَيْهِ الْيُودِيَّةُ
إِلَيْهِمْ وَمِنْهُمْ مَنْ رُتِبَتْ عَلَيْهِ الْيَهُودِيَّةُ
إِلَيْهِمْ إِلَّا مَا ذُكِّرُوا عَلَيْهِمْ وَأُولَٰئِكَ
قَالُوا لَنْ نَعْتِمِدَ عَلَىٰ نَجَسٍ وَيَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ الْكِبَرُ وَهُمْ يَعْتَمُونَ ﴿٦٩﴾

1 अर्थात् मुसलमान इस्लाम से फिर जायें।

2 दीनार सोने के सिक्के को कहा जाता है।

दोष¹ नहीं। तथा अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

76. क्यों नहीं, जिस ने अपना वचन पूरा किया और (अल्लाह से) डरा तो वास्तव में अल्लाह डरने वालों से प्रेम करता है।

77. निस्संदेह जो अल्लाह के² वचन तथा अपनी शपथों के बदले तनिक मूल्य खरीदते हैं, उन्हीं का अखिरत (परलोक) में कोई भाग नहीं। न प्रलय के दिन अल्लाह उन से बान करेगा, और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें पवित्र करेगा। तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

78. और वैशक उन में से एक गिरोह³ ऐसा है जो अपनी जुवानों को किताब पढ़ते समय मरोड़ने है ताकि तम उसे पुस्तक में से समझो जब कि वह पुस्तक में से नहीं है। और कहते हैं कि वह अल्लाह के पास में है जब कि वह अल्लाह के पास में नहीं है। और अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

79. किसी पुरुष जिस के लिये अल्लाह ने पुस्तक, निर्णयशक्ति और नुबुव्वन दी हो उस के लिये योग्य नहीं कि लोगो

مَنْ مِّنْ أَوَّلَىٰ بِغُفِيرَةٍ وَاتَّقَىٰ فِئْتَنَ اللَّهِ عَمَّا
الْعَفِيفِينَ

رَبِّ الدِّينِ يَشْتَرُونَ بِغُفِيرَتِهِمْ وَأَنبَاءَهُمْ ثَمَنًا
كَثِيرًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي آخِرَةٍ وَلَا
يَكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا
يَرْحَمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سُبُلَ الْإِيمَانِ

وَدَنٍّ مِنْهُمْ لَقَرَىٰ يَقْتُلُونَ لِسَمْعِهِمْ بِالْكِتَابِ
لِيُخَصِّمُوهُ مِنْ الْكِتَابِ وَمَا هُمْ مِنْ كَاتِبِينَ
وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عَشِيرَتِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ شَيْءٍ
اللَّهُ وَبِقَوْلِهِمْ عَلَى اللَّهِ الْكِتَابُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

مَا كَانَ لِمَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ أَنْ يَقُولَ إِنَّمَا نَحْنُ رُسُلُ اللَّهِ

1 अर्थात् उन के धन का अपभोग करने पर कोई पाप नहीं। क्यों कि यहूदियों ने अपने अतिरिक्त सब का धन हलाल समझ रखा था। और दूसरों को वह "उम्मी" कहा करते थे। अर्थात् वह लोग जिन के पास कोई आमानी किताब नहीं है।

2 अल्लाह के वचन से अभिप्राय वह वचन है, जो उन से धर्म पुस्तकों द्वारा लिया गया है।

3 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं। और पुस्तक से अभिप्राय तौरान है।

से कहे कि अब्राह को छोड़ कर मेरे दास बन जाओ।¹ अपितु (वह तो यही कहेगा कि) तुम अब्राह वाले बन जाओ। इस कारण कि तुम पुस्तक की शिक्षा देते हो। तथा इस कारण कि उस का अध्ययन स्वयं भी करते रहते हो।

80. तथा वह तुम्हें कभी आदेश नहीं देगा कि फरिश्तों तथा नवियों को अपना पालनहार² (पूज्य) बना लो, क्या तुम को कुफ्र करने का आदेश देगा, जब कि तुम अब्राह के अज्ञाकारी हो?

81. तथा (याद करो) जब अब्राह ने नवियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तन्वदर्शिता) दूँ फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करने हुये आये जो तुम्हारे पास है, तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाना। और उस का समर्थन करना। (अब्राह) ने कहा: क्या तुम ने स्वीकार किया, तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया? तो सब ने कहा हम ने स्वीकार कर लिया। अल्लाह ने कहा तुम साक्षी रहो। और मैं भी तुम्हारे³ साथ साक्षियों में हूँ।

لِيَمْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُنُوا ذُرِّيَّتَيْنِ يَمْكُمُ
تَعْلَمُونَ لِكُتُبٍ وَبِمَا كُنْتُمْ تَذَرُسُونَ

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُعْبُدُوا السَّمَكَةَ
وَالشَّجَرِ أَوْ الْأَنْبَاءَ يَأْمُرُكُمْ بِعَدَا
أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُمْ
مِنْ كِتَابٍ وَجَعَلْتُ لَكُمْ رَسُولًا خُصِمْتُمْ
لَمْ تَعْلَمُوا وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فِتْنَةً
فَمَا لَهُ دُونَهُ قَالَ مَنَّا مِمَّنْ لَوْلَا قُرْآنًا
قَالَ فَاشْهَدُوا وَإِنَّا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ

- 1 भावार्थ यह है कि जब नबी के लिये योग्य नहीं कि लोगों से कहे कि मेरी इवादात करो तो किसी अन्य के लिये कैसे योग्य हो सकता है?
- 2 जैसे अपने पालनहार के आगे झुकने हो, उसी प्रकार उन के आगे भी झुको।
- 3 भावार्थ यह है कि जब आगामी नवियों को ईमान लाना आवश्यक है तो उन के अनुयायियों को भी ईमान लाना आवश्यक होगा। अतः अनिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाना सभी के लिये अनिवार्य है।

82. फिर जिस ने इस के¹ पश्चात् मुंह फेर लिया, तो वही अवैज्ञाकारी है।

83. तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खाज रहे है? जब कि जो आकाशों तथा धरती में है, स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी² है, तथा सब उसी की ओर फेरे³ जायेंगे।

84. (हे नबी!) आप कहें कि हम अल्लाह पर तथा जो हम पर उतारा गया, और जो इब्ब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक और याकूब एवं (उन की) संतानों पर उतारा गया, तथा जो मूसा ईसा, तथा अन्य नबीयों को उन के पालनहार की ओर से प्रदान किया गया है (उन पर) इमान लाये। हम उन (नबीयों) में किसी के बीच कोई अंतर नहीं⁴ करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी है।

85. और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

فَمَنْ تَوَلَّى بَعْدَ ذَلِكَ وَلَيْتَ لَهُمْ أَنْفُسُونَ ﴿٨٢﴾

أَفَتَعْبُدُونَ دُونَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ إِنَّهُمْ لَسَاءُ مَا رَزَقْنَاهُمْ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّهُمْ وَسَيَكُونُونَ خُسِرًا ﴿٨٣﴾

كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْهِ وَمَا تَرَى عَلَىٰ أَلْسِنِهِمْ إِلَّا تَسْبِيحًا وَتُسْمِيَةً ۚ وَأَنفُسُكَ أَفَ أَعْيَتْ بِمَا كُنْتُمْ لَبَّاسِينَ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ إِنَّهُمْ لَا كِبَارًا فِي عِزِّ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۚ مُبِينٌ لِّمَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٨٤﴾

وَمَنْ يُضِلَّهُمْ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٥﴾

1 अर्थात् इस वचन और प्रण के पश्चात्।

2 अर्थात् उसी की आज्ञा तथा व्यवस्था के अधीन है। फिर तुम्हें इस स्वभाविक धर्म से इन्कार क्यों है?

3 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों के प्रतिफल के लिये।

4 अर्थात् मूल धर्म अल्लाह की आज्ञाकारिता है, और अल्लाह की पुस्तकों तथा उस के नबीयों के बीच अंतर करना, किसी को मानना और किसी को न मानना अल्लाह पर इमान और उस की आज्ञाकारिता के विपरीत है।

86. अब्राह ऐसी जाति का कैसे मार्गदर्शन देगा जो अपने इमान के पश्चात् काफिर हो गये और साक्षी रहे कि यह रसूल सत्य है, तथा उन के पास खुलने तर्क आ गये?? और अब्राह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

87. इन्हीं का प्रतिकार (बदला) यह है कि उन पर अब्राह तथा फारिशतों और सब लोगों की धिक्कार होगी।

88. वह उस में सदावासी होंगे, उन से यातना कम नहीं की जायेगी, और न उन्हें अवकाश दिया जायेगा।

89. परन्तु जिन्होंने ने इस के पश्चात् तौब: (क्षमा याचना) कर ली, तथा सुधार कर लिया, तो निश्चय अब्राह अति क्षमाशील दयावान् है।

90. वास्तव में जो अपने इमान लाने के पश्चात् काफिर हो गये, फिर कुफ्र में बढ़ने लगे तो उन की तौब: (क्षमा याचना) कदापि¹ स्वीकार नहीं की जायेगी, तथा वही कुपथ है।

91. निश्चय जो काफिर हो गये, तथा काफिर रहते हुये मर गये तो उन से धरती भर सोना भी स्वीकार नहीं किया जायेगा, यद्यपि उस के द्वारा अर्धदण्ड दे। उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है। और उन का कोई सहायक न होगा।

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ
وَشَهِدُوا أَنَّ لِرَسُولٍ حَقًّا وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

أُولَٰئِكَ جِزَاءُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَصْلَحُ لَهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُغْفَرُونَ ۝

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا—
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا
كُفْرًا أَلَمْ نَقُصَّبْ لَهُمُ اثْنَيْنِ فَكَفَرُوا بِهِمَا ۖ ثُمَّ
قَتَلُوا النَّبِيَّ الَّذِي بَعَثْنَا فِيهِمُ الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَوْمَنُوا هُمْ أَكْثَرُ فَلَا يُفْعَلُ
بِهِمْ شَيْءٌ يُقْبَلُ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
ذُكِيمٌ ۝
وَلَوْ فَتَدَىٰ بِهِ أُولَٰئِكَ لَهُنَّ صَدَقَاتُ
الْيَوْمِ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ۝

1 अर्थात् यदि मौत के समय क्षमा याचना करो।

92. तुम पुण्य¹ नहीं पा सकागे, जब तक उस में से दान न करो जिस से मोह रखते हो, तथा तुम जो भी दान करोगे, वास्तव में अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ
وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ

93. प्रत्येक खाद्य पदार्थ वनी इस्राईल के लिये हलाल (वैध) थे, परन्तु जिसे इस्राईल² ने अपने ऊपर हराम (अवैध) कर लिया, इस से पहले कि तौरात उतारी जाये। (हे नबी!) कहो कि तौरात लाओ तथा उसे पढ़ो, यदि तुम सत्यवादी हो।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا مِمَّا بَشَّرْنَا ابْنَ إِسْرَآءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَآءِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ فَمَنْ قَاتَلَ بِالْتَّوْرَةِ فَهُوَ شَهِيدٌ
كَمَا صَدَّقَ

94. फिर इस के पश्चात् जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगायें, तो वही वास्तव में अन्याचारी है।

مَنْ أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ
قَدْ لَبِثَ هُمُ الْكَافِرُونَ

95. उन से कह दो, अल्लाह सच्चा है, अतः तुम एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर चलो तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ فَإِيقُوا رَبَّكُمْ حَيْثُ مَا
كَانَ مِنَ الْأَشْيَاءِ

96. निस्सदेह पहला घर जो मानव के

إِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا يَسَّخِرْ لَكُمُ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ

1 अर्थात् पुण्य का फल स्वर्ग

2 जब कुआन ने यह कहा कि यहूद पर बहुत से स्वच्छ खाद्य पदार्थ उन के अन्याचार के कारण अवैध कर दिये गये। (देखिये सूरह निमा आयत 160 सूरह अन्आम आयत 146)। अन्यथा यह सभी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग में वैध थे। तो यहूद ने इसे झुठलाया तथा कहने लगे कि यह सब तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग ही में अवैध चले आ रहे हैं। इसी पर यह आयतें श उतरी कि तौरात से इस का प्रमाण प्रस्तुत करो कि यह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग ही में अवैध है। यह और बात है कि इस्राईल ने कुछ चीजों जैसे ऊँट का मांस रोग अधवा मनौनी के कारण अपने लिये स्वयं अवैध कर लिया था यहाँ यह याद रखें कि इस्लाम में किसी उचित चीज को अनुचित करने की अनुमति किसी को नहीं है (देखिये शौकानी)।

وَهُنَالِ الْمَعْبُورِينَ ﴿٩٦﴾

लिये (अब्राह की वन्दना का केन्द्र) बनाया गया, वह वही है जो मक्का में है जो शम् तथा संसार वासियों के लिये मार्गदर्शन है।

97. उस में खुली निशानियाँ हैं (जिन में) मकामे¹ इब्राहीम है, तथा जो कोई उस (की सीमा) में प्रवेश कर गया तो वह शान्त (सुरक्षित) हो गया। तथा अब्राह के लिये लोगों पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो उस तक राह पा सकता हो। तथा जो कुफ़ करेगा, तो अब्राह संसार वासियों से निस्पृह है।

فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مِّمَّا يُرِيدُونَ وَمِنْ ذِكْرِهِ كَانَ أَنْ مَّا وَدَّعُوا عَلَى النَّارِ مِنْ أَتْبَعَاتِ الْبَيْتِ مِنْ اسْتِطَاعَ إِلَى سَبِيلِكَ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٩٧﴾

98. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब। यह क्या है कि तुम अब्राह की आयतों के साथ कुफ़ कर रहे हो, जब कि अब्राह तुम्हारे कर्मों का माक्षी है?

قُلْ يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَلْفِهِ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾

99. हे अहले किताब! किस लिये लोगों को जो ईमान लाना चाहें, अब्राह की राह से रोक रहे हो, उसे उलझाना चाहते हो जब कि तुम माक्षी² हो, और अब्राह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है।

قُلْ يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْلُغُونَهَا بِحُبِّ وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَنِ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾

100. हे ईमान वालो! यदि तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बात मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान के पश्चात् फिर तुम्हें काफिर बना देंगे।

يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَطِيعُوا فِرْقَانًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كَافِرِينَ ﴿١٠٠﴾

101. तथा तुम कुफ़ कैसे करोगे जब कि

وَلَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُنْفِلُ عَنْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ

1 अर्थात् वह पन्थर जिस पर खड़े हो कर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने काबा का निर्माण किया जिस पर उन के पैरों के निशान आज तक है।

2 अर्थात् इस्लाम के सन्धर्म होने को जानते हो।

तुम्हारे सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जा रही हैं, और तुम में उस के रसूल¹ मौजूद हैं और जिस ने अल्लाह को²¹ थाम लिया तो उसे सुपथ दिखा दिया गया।

وَقَدْ كَرَّمْتُمُوهُ فَذُنُوبَهُ تَتَكَبَّرُ عَلَيْهِ أَفَأَنْتُمْ تُؤْمِنُونَ

102. हे ईमान वालों! अज़ाह से ऐसे डरो जो वास्तव में उस से डरना हो, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुये ही आनी चाहिये।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقْوَاهُ
وَلَا تَمُوتُوا وَأَنتُمْ قَسِيْمُونَ

103. तथा अब्राह की रस्मी ' को सब मिल कर दृढ़ता से पकड़ लो, और विभेद में न पड़ो। तथा अपने ऊपर अब्राह के पुरस्कार को याद करो जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे, तो तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और तुम उस के पुरस्कार के कारण भाई भाई हो गये। तथा तुम अग्नि के गडहों के किनारे पर थे, तो तुम्हें उस से निकाल दिया, इसी प्रकार अब्राह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।

وَعَسَىٰ جُزْءٌ مِّنْهُم لَّيْسَ لَهُمْ شَيْءٌ مِّنْهُ وَهُمْ يُحِبُّونَ
يَعْتَصِمُونَ عَلَيْهِمْ وَكُنْتُمْ لَهُمْ آيَةً فَذَكِّرْهُنَّ
لِلْيَوْمِ الَّذِي هُنَّ فِيهِ يَخْرُجْنَ أَخَوَّاتٌ وَأَكْثَرُهُنَّ عَلَىٰ شَا
خَرٍ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ يَفْتَدُونَ لَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَدَىٰ يَمِينٍ
لَّهُ لَكُمْ أَنَّهُ يُعَلِّمُكُمُ التَّحْقِيقَ ۝

104. तथा तुम में एक समुदाय ऐसा
अवश्य होना चाहिये जो भली
बातों की ओर बुलाये, तथा
भलाई का आदेश देता रहे, और

وَسَلَّمَ مِنْكُمْ مُمْسِكًا بِكَفَّيْهِمَا إِلَى الْحَبِيبِ وَكَرِهَ
بِالْمَعْرُوفِ وَكَرِهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ

१ अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्धान अस्त्राह का आज्ञाकारी हो गया।

3 अल्लाह की रस्मी से अभिप्राय कर्आन और नबी (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सन्त है। यही दोनों मुसलमानों की एकता और परस्पर प्रेम का सूत्र हैं।

4 अर्थात् धर्मानुसार बातों का

बुराई¹ से रोकना रहे, और वही सफल होंगे।

105. तथा उन² के समान न हो जाओ, जो खुली निशानियाँ आने के पश्चात् विभेद तथा आपसी विरोध में पड़ गये, और उन्हीं के लिये घोर यातना है।

106. जिस दिन बहुत से मुख उजले, तथा बहुत से मुख काले होंगे। फिर जिन के मुख काले होंगे (उन से कहा जायेगा): क्या तुम ने अपने इमान के पश्चात् कुफ़ कर लिया था? तो अपने कुफ़ करने का दण्ड चखो।

107. तथा जिन के मुख उजले होंगे वह अब्राह की दया (स्वर्ग) में रहेंगे। वह उस में सदावामी होंगे।

108. यह अब्राह की आयतें हैं, जो हम आप को हक्क के साथ सुना रहे हैं तथा अब्राह संसार वासियों पर अत्याचार नहीं करना चाहता।

109. तथा अब्राह ही का है जो आकाशों में और जो धरती में है। तथा अब्राह ही की ओर सब विषय फेंरे जायेंगे।

110. तुम सब से अच्छी उम्मत हो जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो तथा बुराई से रोकते हो, और अब्राह पर इमान (विश्वास)

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وُخْتَفُوا مِنْ بَيْنِ مَا جَاءَهُمْ بِبَيِّنَاتٍ وَأُوتِيَتْ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَالْكُفْرُ ثُمَّ نَعَدْنَاكَ مَنَافِكُمْ فَانْتَبَهْتُمْ فَأَنْتُمْ أَنْتُمُ الْكَافِرُونَ

وَأَمَّا الَّذِينَ تَبْيَضُّ وُجُوهُهُمْ فَبِإِذْنِ رَبِّكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُدْخِلُهُمْ فِيهَا جَنَّاتٍ

يَدْخُلُكَ إِيَّاهُ اللَّهُ سَلَامُهُ مَتَى يَأْتِ الْخَقُّ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَنِ الْغَافِلِينَ

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْسِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَئِكَ هُمُ الرَّاسِدُونَ يَذْكُرُوا وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ يُكْتَبُ لَكُمُ الْخَيْرُ خَيْرًا لَّهُمْ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُونَ وَالَّذِينَ الصَّالِحُونَ

1 अर्थात् धर्म विरोधी वानों से।

2 अर्थात् अहले किताब (यहूदी व ईसाई)।

रखते¹ हों। और यदि अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिये अच्छा होता। उन में कुछ इमान वाले हैं, और अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

111. वह तुम को सताने के सिवा कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि तुम से युद्ध करोगे तो वह तुम को पीठ दिखा देंगे। फिर सहायता नहीं दिये जायेंगे।

112. इन (यहूदियों) पर जहाँ भी रहें, अपमान थोप दिया गया, (यह और बात है कि) अल्लाह की शरण² अथवा लोगों की शरण में हो³। यह अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी हो गये तथा उन पर दारद्वता थोप दी गयी। यह इस कारण हुआ कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़ कर रहे थे और नबीयों का अवैध बध्न कर रहे थे, यह इस कारण कि उन्होंने ने अवैज्ञा की और (धर्म की) सीमा का उल्लंघन कर रहे थे।

113. वह सभी समान नहीं है, अहले

لَنْ يَفُوزُوا إِلَّا أَدْنَىٰ ذَاكَ يُفْلِتُونَ ۝

عَرَبَتْ عَلَيْهِمُ لَوْلَا أَيْنَ مَا لَفَعُوا إِنْ تَبَلَ
مِنَ اللَّهِ وَخِيبَ مِنَ النَّاسِ وَبَاءَ وَيَقْضَىٰ مِنَ
اللَّهِ وَخِيبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذَلَتْ بِأَنَّهُمْ
كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الرُّسُلَ
بَعِيرَ حَقٍّ ذَلَّتْ بِهِم مَّعْصُواؤُهُمْ ۝

لَيْسُوا سَوَاءً مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ

- 1 इस आयत में मुसलमानों को संबोधित किया गया है, तथा उन्हें उम्मत कहा गया है किमी जाति अथवा वर्ग और वर्ण के नाम से संबोधित नहीं किया गया है और इस में यह संकेत है कि मुसलमान उन का नाम है जो सन्धर्म के अनुयायी हों तथा उन के अस्तित्व का लक्ष्य यह बताया गया है कि वह सम्पूर्ण मानव विश्व को सन्धर्म इस्लाम की ओर बुलायें जो सर्व मानव जाति का धर्म है किमी विशेष जाति और क्षेत्र अथवा देश का धर्म नहीं है।

- 2 दूसरा बचाव का तरीका यह है कि किमी गैर मुस्लिम शक्ति की उन्हें सहायता प्राप्त हो जाये।

- 3 अल्लाह की शरण से अभिप्राय इस्लाम धर्म है।

किताब में एक (सत्य पर) स्थित उम्मत¹ भी है, जो अल्लाह की आयतों रातों में पढ़ते हैं, तथा सज्दा करने रहते हैं।

يَسْلَوْنَ بِلِلَّهِ إِنَّهُ تَوَكَّلُونَ
يَسْجُدُونَ ۝

114. अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हैं, तथा भलाई का अदेश देते, और बुराई से रोकते हैं, तथा भलाईयों में अग्रसर रहते हैं, और यही सदाचारियों में हैं।

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَهُمْ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ أُولَئِكَ
أَتَتْهُمُ الرِّضْوَانُ مِنَ اللَّهِ ۝

115. वह जो भी भलाई करेंगे, उस की उपेक्षा (अनादर) नहीं किया जायेगा और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँति जानता है।

وَمَا يَنْفَعُكَ مِنْ ذَلِكَ طَوْلُكَ
وَاللَّهُ عَزِيزٌ عَلِيمٌ ۝

116. (परन्तु) जो काफिर² हो गये, उन के धन और उन की संतान अल्लाह (की यातना) से उन्हें तनिक भी बचा नहीं सकेगी, तथा वही नारकी है, वही उस में सदावासी होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِي عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَيُصْلَوْنَ أُولَئِكَ
أَعَصَبُ النَّاسِ ۝

117. जो दान वह इस संसारिक जीवन में करते हैं वह उस वायु के समान है जिस में पाला हो, जो किसी कौम की खेती को लग जाये जिन्होंने ने अपने ऊपर अत्याचार³ किया हो, और उस का नाश कर दो तथा अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वह

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ يَبْرِجُهُ
مِنْ صَاعِقَةٍ وَهِيَ خَالِطَةٌ
السَّحَابَ فَأَرْسَلَتْ مِنْهُ
مَاءً طَلَّهُمْ إِنَّهُمْ
يَنْظُرُونَ ۝

1 अर्थात् जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर इमान लाये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम (रजयल्लाहु अन्हु) आदि।

2 अर्थात् अल्लाह की आयतों (कुरआन) को नकार दिया।

3 अवैज्ञा तथा अस्वीकार करते रहे थे। इस में यह संकेत है कि अल्लाह पर ईमान के बिना दान का प्रतिफल परलोक में नहीं मिलेगा।

स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

118. हे ईमान वालों! अपनों के सिवा किसी को अपना भेदी न बनाओ, वह तुम्हारा बिगाड़ने में तानिक भी नहीं चूकेंगे, उन को वही बात भाती है जिस से तुम्हें दुख हो। उन के मुखों से शत्रुता खुल चुकी है तथा जो उन के दिल छुपा रहे हैं वह इस से बढ़कर है, हम ने तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन कर दिया है, यदि तुम समझो।

119. सावधान! तुम ही वह हो कि उन से प्रेम करने हो, तथा वह तुम से प्रेम नहीं करने। और तुम सभी पुस्तकों पर ईमान रखते हो, तथा वह जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये। और जब अकेले होते हैं तो क्रोध से तुम पर उँगलियों की पोरें चवाने हैं। कह दो कि अपने क्रोध से मर जाओ, निस्सदिह अल्लाह सीनों की बातें जानता है।

120. यदि तुम्हारा कुछ भला हो तो उन्हें बुरा लगता है। और यदि तुम्हारा कुछ बुरा हो जाये तो उस से प्रसन्न हो जाते हैं। तथा यदि तुम सहन करते रहे, और आजकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا ذُؤُبَيْنًا يُؤُتِيانَ الْإِثْمَ وَلَا يَتْلُوا صَدَقَةً وَقَدْ حَبَسَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَنْ تَكُونُوا مِنْهُمْ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَعِمْتُمْ مِنْهُمْ فَبِمَا كَفَتْ لِقَافَتُهُمْ لَا يَسْأَلُونَ عَنْكُمْ عَنْ دِينِكُمْ وَأَنْتُمْ مُؤْمِنُونَ ۚ

هَٰؤُلَاءِ أُولَٰئِكَ يُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَهُمْ وَهُمْ مُوْمِنُونَ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكْتُمُوا لَهُمْ مَا دَخَلَا فِي أَيْمَانِكُمْ إِذَا خَلَا عَصَمُوا عَلَيْكُمْ إِلَّا بِمَا مِنْ عَمَلٍ أَوْ يُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَبِغُيْكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَيْمَانَكُمْ ۚ

إِنْ تَسْتَكْفِرُوا سُنَّةَ أَهْلِهِمْ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ۚ سُبْحَٰنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ وَلَا يَصْرُكُكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۚ

- 1 अर्थात् वह गैर मुस्लिम जिन पर तुम को विश्वास नहीं की वह तुम्हारे लिये किसी प्रकार की अच्छी भावना रखते हों।

121. तथा (हे नबी!) वह समय याद करो जब आप प्रातः अपने घर से निकले, ईमान वालों को युद्ध¹⁾ के स्थानों पर नियुक्त कर रहे थे, तथा अब्राह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَرَفَعَهُ وَتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

122. तथा (याद करो) जब तुम में से दो गिरोहों²⁾ ने कायरता दिखाने का विचार किया, और अब्राह उन का रक्षक था। तथा ईमान वालों को अब्राह ही पर भरोसा करना चाहिये।

إِذْ هَمَّتْ طَرَفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْتَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

123. अब्राह बद्र में तुम्हारी महायना कर चुका है, जब कि तुम निर्वल थे।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللَّهَ

1 साधारण भाष्यकारों ने इसे उहुद के युद्ध से संबंधित माना है। जो बद्र के युद्ध के पश्चात् मन् 3 हिजरी में हुआ। जिस में कुरैश ने बद्र की पराजय का बदला लेने के लिये तीन हजार की सेना के साथ उहुद पर्वत के समीप पड़ाव डाल दिया। जब आप को इस की सूचना मिली तो मुसलमानों से परामर्श किया। अधिकांश की राय हुई कि मदीना नगर से बाहर निकल कर युद्ध किया जाये। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हजार मुसलमानों को लेकर निकले। जिस में से अब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफिकों का मुख्या अपने तीन सौ साथियों के साथ वापिस हो गया। आप ने रणक्षेत्र में अपने पीछे से शत्रु के आक्रमण से बचाव के लिये 70 धनुर्धरों को नियुक्त कर दिया। और उन का सेनापति अब्दुल्लाह बिन जूवैर को बना दिया। तथा यह आदेश दिया कि कदापि इस स्थान को न छोड़ना। युद्ध आरंभ होते ही कुरैश पराजित हो कर भाग खड़े हुये। यह देख कर धनुर्धरों में से अधिकांश ने अपना स्थान छोड़ दिया। कुरैश के सेनापति खालिद पुत्र बलीद ने अपने सवारों के साथ फिर कर धनुर्धरों के स्थान पर आक्रमण कर दिया। फिर अकस्मात् मुसलमानों पर पीछे से आक्रमण कर के उन की विजय को पराजय में बदल दिया। जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी आघात पहुँचा। (तफ्सीर इब्ने कसीर।)

2 अर्थात् दो कबीले बनू सलमा तथा बनू हारिसा ने भी अब्दुल्लाह बिन उबय्य के साथ वापिस हो जाना चाहा। (सहीह बुखारी हदीस 4558)

अतः अब्राह से डरते रहो, ताकि
उस के कृतज्ञ रहों।

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ؕ

124. (हे नबी! वह समय भी याद करें)
जब आप ईमान वालों से कह रहे
थे क्या तुम्हारे लिये यह बस नहीं
है कि अब्राह तुम्हें (आकाश से)
उतारे हुये तीन हजार फरिश्तों द्वारा
समर्थन दे?

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَيْسَ لَكُمْ بُرْهَانٌ
رَّبُّكُمْ بِشَيْءٍ أَلَدٍّ مِنَ الْمَلَكُوتِ سَمْعًا ۖ

125. क्यों¹ नहीं? यदि तुम सहन करोगे,
तथा आज्ञाकारी रहोगे, और वह
(शत्रु) तुम्हारे पास अपनी इसी
उत्तेजना के साथ आ गये, तो
तुम्हारा पालनहार तुम्हें (तीन नहीं)
पाँच हजार चिन्ह² लगे फरिश्तों
द्वारा समर्थन देगा।

بَلْ لَّيْسَ بِشَيْءٍ مُّشْكُوتٍ ۚ وَإِن تَوَلَّوْاْ
فَعَسَىٰ أَمْرٌ أَتَىٰ لِّلَّذِينَ هُمْ عَنْ
الْمَلَكُوتِ مُصْرِفُونَ ۖ

126. और अब्राह ने इस को तुम्हारे लिये
केवल शुभ सूचना बनाया है। और
ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो
जाये और समर्थन तो केवल अब्राह
ही के पास से है, जो प्रभुत्वशाली
तत्त्वज्ञ है।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُرْهَانًا لِّكُمْ
وَلَا تَطْفِئُ مِنْهُ قُلُوبُكُمْ ۚ بِهِ
يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ أَعْيُنُهُمْ

127. ताकि³ वह काफिरों का एक भाग
काट दे, अथवा उन को अपमानित
कर दे। फिर वह असफल वापिस हो
जायें।

لَيَقْطَعَنَّ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُواْ
وَيُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ أَعْيُنُهُمْ

1 अर्थात् इतना समर्थन बहुत है।

2 अर्थात् उन पर तथा उन के घोड़ों पर चिन्ह लगे होंगे।

3 अर्थात् अब्राह तुम्हें फरिश्तों द्वारा समर्थन इस लिये देगा ताकि काफिरों का कुछ
बल तोड़ दे और उन्हें निष्फल वापिस कर दे।

128. हे नबी! इस¹ विषय में आप को कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन की क्षमा याचना स्वीकार² करे या दण्ड³ दे, क्योंकि वह अत्याचारी है।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ۝

129. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह जिसे चाहे क्षमा करे और जिसे चाहे दण्ड दे तथा अल्लाह अनि क्षमाशील दयावान् है।

فَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

130. हे ईमान वाले! कई कई गुणा कर के व्याज⁴ न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि सफल हो जाओ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُلُوا الْبَرِّئَ
أَمْثَلًا مَّا طَعَفْتُمْ شَاءَ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ۝

131. तथा उस अग्नि से बचो जो क़ाफ़िरी के लिये तैयार की गयी है।

وَالْكُوفَةُ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝

132. तथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

133. और अपने पालनहार की क्षमा और उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ,

وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ مُّرضٍيَا

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फज्र की नमाज में रुकूअ के पश्चात् यह प्रार्थना करते थे कि हे अल्लाह! अमुक को अपनी दया से दूर कर दे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4559)

2 अर्थात् उन्हें मार्गदर्शन दे।

3 यदि क़ाफ़िर ही रह जायें।

4 उहुद की पराजय का कारण धन का लोभ बना था। इस लिये यहाँ व्याज से सावधान किया जा रहा है जो धन के लोभ का अनि भयावह साधन है। तथा आज्ञाकारिता की प्रेरणा दी जा रही है। कई कई गुणा व्याज न खाने का अर्थ यह नहीं कि इस प्रकार व्याज न खाओ बल्कि व्याज अधिक हो या थोड़ी सर्वथा हराम (वर्जित) है। यहाँ जाहिलिय्यत के युग में व्याज की जो रीति थी, उस का वर्णन किया गया है। जैसा कि आधुनिक युग में व्याज पर व्याज लेने की रीति है।

जिस की चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, आज्ञाकारियों के लिये तैयार की गयी है।

الْشَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَمَدَاتٍ يُنْفِقِينَ ﴿١٣٣﴾

134. जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करने रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं। और अब्राहम सदाचारियों से प्रेम करना है।

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي سِرٍّ وَنَجْوَى وَالْقَرَّاءِ وَالْكَظِيمِينَ
الْعَظِيمِ وَالْعَاقِبِينَ عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٤﴾

135. और जब कभी वह कोई बड़ा पाप कर जायें अथवा अपने ऊपर अत्याचार कर लें, तो अब्राहम को याद करने हैं फिर अपने पापों के लिये क्षमा मांगते हैं। तथा अब्राहम के सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा करे? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते।

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرِ
اللَّهُ تُوْبَّرْ إِلَيْهِ إِنَّهُ يَغْفِرُ مَا وَعَدَ
مَنْ تَعْلَمُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣٥﴾

136. इन्हीं का प्रतिफल (बदला) उनके पालनहार की क्षमा तथा ऐसी स्वर्ग है जिन में नहरें प्रवाहित हैं जिन में वह सदावासी होंगे तो क्या ही अच्छा है सत्कर्मियों का यह प्रतिफल?

أُولَئِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ هُمْ مُغْفَرُونَ ﴿١٣٦﴾
وَجَنَّاتٌ جَرْدَتْ مِنَ الْغَيْثِ الْأَنْهَارِ خَالِدِينَ
فِيهَا ذَوُو الْأَرْسَالِ فِيهَا

137. तुम से पहले भी इसी प्रकार हो चुका है। तुम धरती में फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा रहा?

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكْذِبِينَ ﴿١٣٧﴾

138. यह (कुरआन) लोगों के लिये एक वर्णन तथा मार्ग दर्शन, और एक शिक्षा है (अब्राहम से) डरने वालों के लिये।

هَذَا بَيِّنَاتٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَنُورٌ
لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾

- 1 उहद की पराजय पर मुसलमानों को दिलासा दी जा रही है जिस में उन के 70 व्यक्ति मारे गये (तफ्सीर इब्ने कमीर)

139. (इस पराजय से) तुम निर्बल तथा उदासीन न बनो। और तुम ही सर्वोच्च रहोगे यदि तुम ईमान वाले हो।

وَلَا تَهْوَؤُوا لِزَعَمِكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ إِنَّ كُنُتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

140. यदि तुम्हें कोई घाव लगा है, तो कौम (शत्रु) ¹ को भी इसी के समान घाव लग चुका है। तथा उन दिनों को हम लोगों के बीच फेरते रहते ² हैं। और ताकि अब्बाह उन को जान ले ³ जो ईमान लाये, और तुम में से साक्षी बनाये। और अब्बाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

إِنْ يَسْتَسْخِمُ قَوْمٌ مِّنَ الْقَوْمِ قَرْصًا يَّمْلَأُ بِمِثْلِهِ ۖ وَبِذَلِكَ الْآيَاتِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لِكَافِرِينَ شَيْعَةَ اللَّهِ الَّذِينَ آمَنُوا وَبَيَّنَّا مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝

141. तथा ताकि अब्बाह उन्हें शुद्ध कर दे, जो ईमान लाये हैं, और काफ़िरो का नाश कर दे।

فَلْيَسَخِصْ اللَّهُ الْكُفْرَ آمَنُوا وَبَيَّنَّا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

142. क्या तुम ने समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे? जब कि अब्बाह ने (परीक्षा कर के) उन्हें नहीं जाना है जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है, और न सहनशीलों को जाना है?

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَتَنْتَابِعُوا اللَّهَ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمُ الظَّالِمِينَ ۝

143. तथा तुम मौत की कामना कर ⁴ रहे थे इस से पूर्व कि उस का सामना करो तो अब तुम ने उसे आँखों से देख लिया है, और देख रहे हो।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝

1 इस में कुरैश की वद में पराजय और उन के 70 व्यक्तियों के मारे जाने की ओर संकेत है।

2 अर्थात् कभी किसी की जीत होती है, कभी किसी की।

3 अर्थात् अच्छे बुरे में विवेक (अन्तर) कर दे।

4 अर्थात् अब्बाह की राह में शहीद हो जाने की।

144. मुहम्मद केवल एक रसूल है, इस से पहले बहुत से रसूल हो चुके हैं, तो क्या यदि वह मर गये अथवा मार दिये गये, तो तुम अपनी एड़ियों के बल¹ फिर जाओगे? तथा जो अपनी एड़ियों के बल फिर जायेगा, तो वह अल्लाह को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेगा, और अल्लाह शीघ्र ही कृतज्ञों को प्रतिफल प्रदान करेगा।

145. कोई प्राणी ऐसा नहीं जो अल्लाह की अनुमति के बिना मर जाये, उस का अंकित निर्धारित समय है, और जो संसारिक प्रतिफल चाहेगा, हम उसे उस में से कुछ देंगे, तथा जो परलोक का प्रतिफल चाहेगा हम उसे उस में से देंगे। और हम कृतज्ञों को शीघ्र ही प्रतिफल देंगे।

146. कितने ही नबी थे जिन के साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने युद्ध किया, तो वह अल्लाह की राह में आई आपदा पर न आलसी हुये, न निर्वल बने और न (शत्रु से) दबे तथा अल्लाह धैर्यवानों से प्रेम करता है।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ
الرُّسُلُ قَالِمٌ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى
أَعْقَابِكُمْ وَسَوْفَ يُنْقَلِبُ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَنْ
يُضُرَّ اللَّهُ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝

وَمَا كَانَ لِلنَّاسِ أَنْ سُوِّتَ الْأَيُّ ذِي السُّبُلَا
لَهُمْ وَلَا مَنْ يُرِيدُ ثَوَابَ الْآخِرَةِ تَوْبَةً بَيْنَهُمَا
وَمَنْ يُرِيدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ تَوْبَةً بَيْنَهُمَا
وَسَيَجْزِي الشَّاكِرِينَ ۝

وَكَايُنْ مِنْ شَيْءٍ فَتَلَّ مَعَهُ رَيْثِيُونَ
كَثِيرٌ قَمَا وَهَمُوا بِمَا آصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ
الْقَاسِمِينَ ۝

1 अर्थात् इस्लाम से फिर जावंगे भावार्थ यह है कि सन्धर्म इस्लाम स्थायी है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के न रहन से समाप्त नहीं हो जायेगा। उहुद में जब किसी विरोधी ने यह बात उड़ाई कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मार दिये गये तो यह सुन कर बहुत से मुसलमान हताश हो गये कुछ ने कहा कि अब लड़ने से क्या लाभ? तथा मुनार्फकों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी होते तो मार नहीं खाते। इस आयन में यह संकेत है कि दूसरे नबियों के समान आप को भी एक दिन संसार से जाना है। तो क्या तुम उन्हीं के लिये इस्लाम को मानते हो, और आप नहीं रहेंगे तो इस्लाम नहीं रहेगा?

147. तथा उन का कथन बस यही था कि उन्होंने ने कहा हे हमारे पालनहार। हमारे लिये हमारे पापों को क्षमा कर दे, तथा हमारे विषय में हमारी अति को और हमारे पैरों को दृढ़ कर दे, और काफिर जानि के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

148. तो अब्राह ने उन को संसारिक प्रतिफल तथा आखिरत (परलोक) का अच्छा प्रतिफल प्रदान कर दिया, तथा अब्राह सुकर्मियों से प्रेम करना है।

149. हे ईमान वाले! यदि तुम काफिरो की बात मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल फेर देंगे, और तुम फिर से क्षति में पड़ जाओगे।

150. बलिक अब्राह तुम्हारा रक्षक है तथा वह सब से अच्छा सहायक है।

151. शीघ्र ही हम काफिरो के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे, इस कारण कि उन्होंने ने अब्राह का साझी उमे बना लिया है, जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अब्राह ने नहीं उतारा है, और इन का आवास नरक है, और वह क्या ही बुरा आवास है।

152. तथा अब्राह ने तुम से अपना वचन सच कर दिखाया है, जब तुम उस की अनुमति से उन को काट¹ रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ने

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

فَاتَّخَذَهُمُ اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَخَسَنَ ثَوَابَ الْآخِرَةِ ۖ وَأِنَّهُ بِحُجَّتِ الْمُحْسِنِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تُلَظِّقُوا الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَرُدُّوكُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَرُوا حُجْرِينَ ۝

بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ۝

سَتَلْقَىٰ فِي ثَوَابِ الَّذِينَ كَفَرُوا تَرْغَبُ بِمَا اشْرَكُوا بِأَلْفَمَةٍ لَّمْ يُنْزَلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۖ وَمَا لَهُمُ الشَّارُ وَهُمْ مَتَوَىٰ تَلْقِيَنِ ۝

وَلَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُمْ بِرِذْيِهِ خَلَّىٰ إِذَا فُشِلْتُمْ وَتَنَزَّعْتُمْ فِي الْأُمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِمَّن بَعْدَكُمْ مَا أَرَكُم مَّا

1 अर्थात् उहद के आरंभिक क्षणों में।

कायरता दिखायी, तथा (रसूल के) आदेश¹ में विभेद कर लिया और अवैज्ञा की, इस के पश्चान् कि तुम्हें वह (विजय) दिखा दी, जिसे तुम चाहते थे, तुम में से कुछ संसार चाहते हैं, तथा कुछ लोग परलोक चाहते हैं। फिर तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ले, और तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा अल्लाह ईमान वालों के लिये दानशील है।

153. (और याद करो) जब तुम चढ़े (भागें) जा रहे थे, और किस्मी की ओर मुड़ कर नहीं देख रहे थे, और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार² रहे थे, तो (अल्लाह ने) तुम्हें शोक के बदले शोक दे दिया, ताकि जो तुम में खो गया और जो तुम्हें पहुँचा उस पर उदासीन न हो, तथा अल्लाह उस से सूचित है, जो तुम कर रहे हो।

154. फिर तुम पर शोक के पश्चान् शान्ति (ऊँघ) उतार दी जो तुम्हारे एक गिरोह³ को आने लगी, और

فَجِيئُوكُمْ مِنْكُمْ مِنْ قُرَيْبٍ لِّذُنَّآ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الْجَنَّةَ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝

إِذْ تَضَرَّعُونَ وَلَا تَلْقَوْنَ عَلَى أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي خُرُوجِكُمْ فَأَثَابَكُمْ عَنَاءًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

ثُمَّ أُنْزِلَ عَلَيْهِ مِنَ رَبِّهِ الْقُرْآنُ مَآثًا تَنْفُسِي طَائِفَةٌ مِنْكُمْ وَطَائِفَةٌ مِّنْ آخَرَتِهِمْ أَنْظَرَهُمْ

- 1 अर्थात् कुछ धनुर्धरों ने आप के आदेश का पालन नहीं किया, और परिहार का धन संचित करने के लिये अपना स्थान त्याग दिया, जो पराजय का कारण बन गया। और शत्रु का उस दिशा से आक्रमण करने का अवसर मिल गया।
- 2 बराअ बिन आज़िब कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहूद के दिन अब्दुल्लाह बिन जुवैर को पैदल सेना पर रखा। और वह पराजित हो कर आ गये, इसी के बारे में यह आयत है। उस समय नबी के साथ बारह व्यक्ति ही रह गये। (सहीह बुखारी 4561)
- 3 अबु तलहा रजियल्लाह अन्हु ने कहा हम उहूद में ऊँघने लगे। मेरी तलवार मेरे हाथ से गिरने लगनी और मैं पकड़ लेता फिर गिरने लगनी और पकड़ लेता

एक गिरोह को अपनी¹ पड़ी हुई थी। वह अब्राह के बारे में असन्ध जाहिलियत की सोच सोच रहे थे। वह कह रहे थे कि क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? (हे नबी!) कह दें कि सब अधिकार अब्राह को है। वह अपने मनो में जो छुपा रहे थे आप को नहीं बता रहे थे। वह कह रहे थे कि यदि हमारा कुछ भी अधिकार होता, तो यहाँ मारे नहीं जाते, आप कह दें यदि तुम अपने घरों में रहते, तब भी जिन के (भाग्य में) भारा जाना लिखा है, वह अपने निहत होने के स्थानों की ओर निक्कल आते। और ताकि अब्राह, जो तुम्हारे दिलों में है उस की परीक्षा ले। तथा जो तुम्हारे दिलों में है उसे शुद्ध कर दो। और अब्राह दिलों के भेदों से अवगत है।

155. वस्तुतः तुम में से जिनहों ने दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन मुँह फेर दिया, शैतान ने उन को उन के कुछ कुकर्मों के कारण फिसला दिया। तथा अब्राह ने उन को क्षमा कर दिया है। वास्तव में अब्राह अति क्षमाशील सहनशील है।

156. हे ईमान वाले! उन के समान न हो जाओ जो काफिर हो गये, तथा अपने भाईयों से जब यात्रा में हो, अथवा युद्ध में- कहा कि यदि वह हमारे पास होते तो न मरते और

يَلْمِزُونَ بِاللَّهِ مِثْرَ الْعَرِيِّ كُلَّ أَحِبَالِهِمْ يَقُولُونَ هَذَا لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ نَأْتِيَنَّاهُمْ بِمَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بَيْتِهِمْ لَبَدَّ الْأَيْدِينَ كَيْفَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ لِي مَضَاجِعُهُمْ وَالْجَنَّةُ مَأْوَىٰ صَادِقِيهِمْ وَلَيْسَ يَخْصُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ وَأَمَّا عَنْهُمْ فَيَسِّرْ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدًا

لَكَ لِيْلَيْنِ تَوَلَّوْا مَسْلُومَةً فَغَضِبْنَا إِنَّمَا اسْتَرْكَبُوا الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا كَاثِبِينَ كَرِهُوا وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ إِذَا ضَرَبُوا إِلَى الْأَرْضِ أَؤَلَاؤُنَا عَلَىٰ لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ مَا تَأْتَوْنَ وَمَا قُتِلُوا لَيَجْعَلَنَّ اللَّهُ ذَلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ

(सहीह बुखारी -4562)

- 1 यह मुनाफिक लोग थे।

न मारे जाते, ताकि अल्लाह उन के दिलों में इसे मताप बना दे। और अल्लाह ही जीवित करता तथा मौत देता है और अल्लाह जो तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

وَيُؤَيِّتُ ٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

157. यदि तुम अल्लाह की राह में मार दिये जाओ अथवा मर जाओ, तो अल्लाह की क्षमा उस से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

وَأُوْلَئِكَ فُتِنَتْ فِىٓ سَبِيلِ ٱللَّهِ وَهُمْ لَمَغْفِرَةٌ ۝
ٱللَّهُ وَرَحْمَةُ خَيْرٌ مِّنْ يَّجْمَعُونَ ۝

158. तथा यदि तुम मर गये अथवा मार दिये गये, तो अल्लाह ही के पास एकत्र किये जाओगे।

وَأُوْلَئِكَ هُمُ ٱلَّذِينَ هُمْ لِآلِ ٱللَّهِ تُخَشَرُونَ ۝

159. अल्लाह की दया के कारण ही आप उन के¹ लिये कोमल (मुशील) हो गये, और यदि आप अक्खड़ तथा कड़े दिल के होते तो वह आप के पास से बिखर जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो और उन के लिये क्षमा की प्रार्थना करो, तथा उन से भी मुआमले में परामर्श करो, फिर जब कोई दृढ़ संकल्प ले लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है।

هُمُ ٱلرَّحِمَةُ مِنَ ٱللَّهِ يَتْلُوهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًا
عَظِيمًا لَّفُتِنْتَ لَآ تَقْضُواْ مِنْ حَوْبِكَ مَأْسُفٌ
عَنْهُمْ وَٱسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى ٱلْأَمْرِ فِىٓ ذَا
عُرْمَتٍ فَمَنْ كُنْ مِنْ ٱللَّهِ إِنَّ مِلَّةَ يُحْيَى
ٱلْمُتَوَكِّلِينَ ۝

160. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता। तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे तो फिर कौन है जो उस के पश्चात् तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह

إِنَّ يَضْرِبَكُمْ ٱللَّهُ فَلَآ تَٱلْبَسَ لَكُمْ ذُلٌّ لَّأَنَّهُ يُخَدِّتُكُمْ مِّنْ
ذِ ٱلْأَيْمَىٰ بِضَرْبِكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ ۚ وَعَلَىٰ ٱللَّهِ
فَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ۝

1 अर्थात् अपने माधियों के लिये, जो उहद में रणक्षेत्र से भाग गये।

ही पर भरोसा करना चाहिये।

161. किसी नबी के लिये योग्य नहीं कि अपभोग¹ करे। और जो अपभोग करेगा, प्रलय के दिन उसे लायेगा फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार (बदला) दिया जायेगा तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
162. तो क्या जिस ने अब्राह की प्रसन्नता का अनुसरण किया हो उस के समान हो जायेगा जो अब्राह का क्रोध² लेकर फिरा, और उस का आवास नरक है?
163. अब्राह के पास उन की श्रेणियाँ हैं, तथा अब्राह उसे देख³ रहा है जो वह कर रहे हैं।
164. अब्राह ने ईमान वालों पर उपकार किया है कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन के सामने उस (अब्राह) की आयतें सुनाता है, और उन्हें शुद्ध करना है तथा उन्हें पुस्तक (कुरआन) और हिकमत (सुन्नत) की शिक्षा देता है, यद्यपि

وَمَا كَانَ نَبِيٍّ أَنْ يَغُلُّ وَمَنْ يَفْعَلْ يَأْتِ بِهَا
غُلًّا يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَوَوُّكُنْ نَفْسٌ تَاكْبِتُ
وَقَوْمٌ لَا يَظُنُّونَ

أَفَمِنْ أَشْأَعٍ يَصْطَوْنَ اللَّهُ كَيْفَ يَخْجَعُ مِنْ
اللَّهِ وَمَا لَهُ بِهِمْ وَبَشِ الْمَصْرُورِ

هُوَ قَرِيبٌ يَفْعَلُ اللَّهُ بِهِ مَا يَشَاءُ
يَقُولُونَ

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ
قَبْلُ لَكِنْ قَسِيبِ فَبِئْسَ

1 उहूद के दिन जो अपना स्थान छोड़ कर इस विचार से आ गये कि यदि हम न पहुँचे तो दूसरे लोग गनीमत का सब धन ले जायेंगे उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है कि तुम ने कैसे सोच लिया कि इस धन में से तुम्हारा भाग नहीं मिलेगा क्या तुम्हें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अमानत पर भरोसा नहीं है? सुन लो! नबी से किसी प्रकार का अपभोग असम्भव है। यह घोर पाप है जो कोई नबी कभी नहीं कर सकता।

2 अर्थात् पापों में लीन रहा।

3 अर्थात् लोगों के कर्मों के अनुसार उन की अलग अलग श्रेणियाँ हैं।

वह इस में पहले खुले कुपथ में था।

165. तथा जब तुम को एक दुख पहुँचा¹ जब कि इस के दुगना तुम ने पहुँचाया², तो तुम ने कह दिया कि यह कहाँ से आ गया? (हे नबी!) कह दो: यह तुम्हारे पास से³ आया। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

166. तथा जो भी आपदा दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन तुम पर आई तो वह अल्लाह की अनुमति से, और ताकि वह इमान वालों को जान ले।

- 167 और ताकि उन को जान ले, जो मुनाफिक हैं। और उन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में युद्ध करो, अथवा रक्षा करो, तो उन्होंने ने कहा कि यदि हम युद्ध होना जानते तो अवश्य तुम्हारा साथ देते। वह उस दिन इमान से अधिक कुफ्र के समीप थे, वह अपने मुखों से ऐसी बात बोल रहे थे जो उन के दिलों में नहीं थी। तथा अल्लाह जिसे वह छुपा रहे थे, अधिक जानता था।

168. इन्होंने ने ही अपने भाईयों से कहा, और (स्वयं घरों में) आमीन रह गये: यदि वह हमारी बात मानते, तो मारे नहीं जाते! (हे नबी!) कह

أَوَلَمْ أَصَابَكُم مِّصْرَةٌ قَدْ أَصَابَكُمْ مِثْلُهَا
فَقُلْ أَتَىٰ هَذَا قُلٌّ هُوَ مِنْ غَدَاةٍ نَّفْسُكُمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَيْنِ فَمِنْ أَمْرٍ
وَلَيْفَ كُنَّا الْمُسْلِمِينَ ۝

وَلَيَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثِقَلَ الْأَمْرِ إِذْ يَقُولُ
بِهِمْ أَشِدُّ أَوْ أَدْعَاؤُهُمْ ۚ قَالَ الْوَلِيُّ لَهُمْ مَا لَا
لَا يَتَّبِعُكُمْ ۚ فَمَنْ لَكُمْ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ
لِلْإِنْسَانِ يَقُولُونَ بِأَمْرِهِمْ ۚ أَلَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ
وَلَهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ۝

أَلَيْسَ الْوَلِيُّ بِأَمْرِهِمْ وَقَعْدًا ۚ وَالْوَلِيُّ أَقْرَبُ
مِنْهُمْ ۚ قُلْ قَدْ دُرُّوا عَنْ نَفْسِكُمُ الْمَوْتِ ۚ إِنَّكُمْ
صَادِقِينَ ۝

1 अर्थात् उहुद के दिन।

2 अर्थात् बद्र के दिन।

3 अर्थात् तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश का विरोध करने के कारण आया जो धनुर्धरों को दिया गया था।

दो फिर तो मौन में¹ अपनी रक्षा
कर लो, यदि तुम सच्चे हो।

169. जो अब्राह की राह में मार दिये
गये तो तुम उन को मरा हुआ न
समझो, बल्कि वह जीवित है,²
अपने पालनहार के पास जीविका
दिये जा रहे है।

وَالَّذِينَ أُكِّلُوا مِنْ شَجَرٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَنَّهُ أَمْوَاتٌ
أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُزَكُّونَ ۚ

170. तथा उस से प्रसन्न है जो अब्राह ने
उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है,
और उन के लिये प्रसन्न (हर्षित) हो
रहे है जो उन से मिले नहीं, उन के
पीछे³ रह गये है कि उन्हें कोई डर
नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

فَرِحْنَا بِمَا أَنفَعَهُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ
بِأَلْوَيْنَ لَهُمْ يَتَقَوَّيْهِمْ مِنْ خَلْفِهِمُ الْآخُونَ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۚ

171. वह अब्राह के पुरस्कार और प्रदान
के कारण प्रसन्न हो रहे है। तथा
इस पर कि अब्राह ईमान वालों का
प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ اللَّهِ عَلَيْهِمْ وَلِأَنَّ اللَّهَ
لَا يُؤْتِيهِ الْخَيْرَ الْيَوْمَ ۚ

172. जिन्होंने अब्राह और रमूल की
पुकार को स्वीकार⁴ किया, इस के

أَلْيَيْنَ اسْتَجَابُوا لَهُ وَرَسُولٌ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ

1 अर्थात् अपने उपाय से सदाजीवी हो जाओ।

2 शहीदों का जीवन कैसा होना है? हदीस में है कि उन की आत्मायें हरे पक्षियों
के भीतर रख दी जाती है और वह स्वर्ग में चुगते तथा आनन्द लेते फिरने है
(सहीह मुस्लिम- हदीस -1887)

3 अर्थात् उन मुजाहिदीन के लिये जो अभी संसार में जीवित रह गये है।

4 जब काफिर उहुद से मक्का वापिस हुये तो मदीने से 30 मील दूर "रौहाअ" से
फिर मदीने वापिस आने का निश्चय किया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
को सूचना मिली तो सेना लेकर "हमराउन असद" तक पहुँचे जिसे सुन कर
वह भाग गया। इधर मुसलमान सफल वापिस आये। इस आयत में रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों की सराहना की गई है जिन्होंने उहुद में
घाव खाने के पश्चात् भी नवी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ दिया।
यह आयत इसी से संबंधित है।

पश्चात् कि उन्हें आघात पहुँचा, उन में से उन के लिये जिन्होंने सुकर्म किया तथा (अब्राहम से) डरे, महा प्रतिफल है।

173. यह वह लोग है, जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे लिये लोगों (शत्रु) ने (वापिस आने का) संकल्प¹ लिया है। अतः उन से डरो, तो इस ने उन के ईमान को और अधिक कर दिया, और उन्होंने ने कहा हमें अब्राहम बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है।

174. तथा अब्राहम के अनुग्रह एवं दया के साथ² वापिस हुये। उन्हें कोई दुख नहीं पहुँचा। तथा अब्राहम की प्रसन्नता पर चले, और अब्राहम बड़ा दयाशील है।

175. वह शैतान है, जो तुम्हें अपने सहयोगियों से डरा रहा है, तो उन³ से न डरो तथा मझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो।

176. हे नबी! आप को वह काफिर उदासीन न करें, जो क़फ़ में अग्रसर है, वह अब्राहम को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। अब्राहम चाहता है कि आखिरत (परलोक) में

أَصَابَهُمُ الْفُرْقَانُ الَّذِينَ أَحْسَنُوا لَهُمْ دَأْوُ الْجَنَّةِ
عَظِيمٌ

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا
لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا
اللَّهُ وَنِعْمَ الْيَكِينُ

فَالْقُرْآنُ يَنْفَعُ الْبَارِئِينَ اللَّهُ وَفَضِّلَ لَوَيْسَ لَهُمْ
سُورَةُ وَالتَّوْحِيدُ وَنُورٌ لِلَّهِ وَفَضِّلَ عَظِيمٌ

إِنَّمَا ذِكْرُ الشَّيْطَانِ يُخَوِّفُ الْبَاطِلَ فَلَا
خَافَ لَهُمْ وَخَافُوا بِإِنْ كُنْهُ مُؤْمِنِينَ

وَلَا يَخْشَوْنَكَ الْبَاطِلَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ
يُبْرُوا اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ لَهُمْ خَطَأً
الْإِيمَانِ وَلَهُمْ جَنَّةٌ عَظِيمٌ

1 अर्थात् शत्रु ने मक्का जाने हुये राह में सोचा कि मुसलमानों के परास्त हो जाने पर यह अच्छा अवसर था कि मदीने पर आक्रमण कर के उन का उन्मूलन कर दिया जाये, तथा वापिस आने का निश्चय किया। (तफ्सीर कुर्तुबी)।

2 अर्थात् "हमराउल असद" से मदीना वापिस हुये।

3 अर्थात् मिश्रणवादियों से।

उन का कोई भाग न बनाये, तथा
उन्हीं के लिये घोर यातना है।

177. वस्तुतः जिन्होंने ने इमान के बदले
कुफ़ खरीद लिया, वह अल्लाह को
कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, तथा
उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُوا اللَّهَ
شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

178. जो काफिर हो गये, वह कदापि
यह न समझे कि हमारा उन को
अवसर¹ देना उन के लिये अच्छा
है, वास्तव में हम उन्हें इस लिये
अवसर दे रहे हैं कि उन के पाप²
अधिक हो जायें, तथा उन्हीं के लिये
अपमानकारी यातना है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ كَفَرُوا وَالَّذِينَ آمَنُوا لَمْ يَكُنْ
لَهُمْ يَوْمَئِذٍ دُونُنَا وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ

179. अल्लाह ऐसा नहीं है कि इमान वालों
को उमी (दशा) पर छोड़ दे, जिस
पर तुम हो जब तक बुरे को अच्छे
से अलग न कर दे, और अल्लाह ऐसा
(भी) नहीं है कि तुम्हें गैब (परोक्ष)
से³ सूचित कर दे, और परन्तु
अल्लाह अपने रसूलों में से (परोक्ष पर
अवगत करने के लिये) जिसे चाहे
चुन लेता है। तथा यदि तुम इमान
लाओ, और अल्लाह से डरते रहो, तो
तुम्हारे लिये बड़ा प्रतिफल है।

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَىٰ
حَتَّىٰ يَنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ فَيَكُونَ اللَّهُ
رَاضِيًا بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَخْتَصِي بِمَنْ
يُشَاءُ ۚ مَنْ يَشَاءُ فَإِنَّهُ يَكُونُ أَدْنَىٰ
مِنْكُمْ وَأَنْ تَتَّقُوا اللَّهَ أَكْبَرُ عِندَهُ

- 1 अर्थात् उन्हें संसारिक सुख सुविधा देना। भावार्थ यह है कि इस संसार में अल्लाह सत्योक्त्य, न्याय तथा अत्याचार सब के लिये अवसर देता है। परन्तु इस से धोखा नहीं खाना चाहिये, यह देखना चाहिये कि परलोक की सफलता किस में है सत्य ही स्थायी है तथा असत्य को ध्वस्त हो जाना है।
- 2 यह स्वभाविक नियम है कि पाप करने से पापाचारी में पाप करने की भावना अधिक हो जाती है।
- 3 अर्थात् तुम्हें बता दे कि कौन इमान वाला और कौन दुविधावादी है।

180. वह लोग कदापि यह न समझें जो उस में कृपण (कंजूसी) करते हैं, जो अब्राह ने उन को अपनी दया से प्रदान किया¹ है कि वह उन के लिये अच्छा है, वल्कि वह उन के लिये बुरा है, जिस में उन्होंने ने कृपण किया है। प्रलय के दिन उसे उन के गले का हार² बना दिया जायेगा। और आकाशों तथा धरती की मीराम (उत्तराधिकार) अब्राह के³ लिये है। तथा अब्राह जो कुछ तुम करते हो उस से सूचित है।

181. अब्राह ने उन की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अब्राह निर्धन और हम धनी⁴ हैं, उन्हों ने जो कुछ कहा है हम उसे लिख लेंगे, और उन के नवियों की अवैध हत्या करने को भी, तथा कहेंगे कि दहन की यातना चखो।

182. यह तुम्हारे? कर्तूतों का दुष्परिणाम है, तथा वास्तव में अब्राह बंदों के लिये तनिक भी अत्याचारी नहीं है।

183. जिन्हों ने कहा अब्राह ने हम से वचन लिया है कि किसी रमूल का

وَلَا يَحْسَبَنَّ الْكَافِرِينَ أَنَّهُمْ يُفْلِتُونَ بِمَا أَنَّهُمْ
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ مُوَحِّدٌ لَهُمْ نَبٌ هُوَ تَزَكَّاهُمْ
سَيُطَوَّقُونَ مَا يَخْلُقُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَاللَّهُ وَبِذَاتِ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ذِي الْعَرْشِ الْمَعْلُومِ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الْفِرْعَوْنِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ
فُتُوْرٌ وَهُنَّ عُيَاةٌ اسْتَلْبَسَتْ مَا قَالُوا وَفُتِلَهُمْ
الْأَنْبِيَاءُ يَغْيِرُ حَيْثُ يُرْتَدُّونَ ذُوقُوا عَذَابَ
الْخَيْرِ يُقِي ۝

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ إِلَى اللَّهِ وَإِنَّ لَهُ لَنَاسٌ
بِظُلُمٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَجَدَ إِلَيْنَا الْآلُونَ

1 अर्थात् धन धान्य की जकात नहीं देने।

2 सहीह बुखारी में अबू हुरैरह रजयब्राह अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा जिसे अब्राह ने धन दिया है, और वह उस की जकात नहीं देता तो प्रलय के दिन उस का धन गंजा सर्प बना दिया जायेगा, जो उस के गले का हार बन जायेगा। और उसे अपने जबड़ों से पकड़ लेगा तथा कहेगा कि मैं तुम्हारा कोय हूँ, मैं तुम्हारा धन हूँ। (सहीह बुखारी: 4565)

3 अर्थात् प्रलय के दिन वही अकेला सब का स्वामी होगा।

4 यह बात यहूदियों ने कही थी। (देखिये सूरह बकरह आयत्त 254)

विश्वास न करें, जब तक हमारे समक्ष ऐसी बलि न दे जिसे अग्नि खा¹ जाये (हे नबी!) आप कह दें कि मुझ से पूर्व बहुत से रसूल खुली निशानियाँ और वह चीज लाये जो तुम ने कही। तो तुम ने उन की हत्या क्यों कर दी, यदि तुम सच्चे हो तो?

184. फिर यदि इन्होंने ने² आप को झूठला दिया तो आप से पहले भी बहुत से रसूल झूठलाये गये हैं, जो खुली निशानियाँ तथा (आकाशीय) ग्रंथ और प्रकाशक पुस्तकें लाये।³

185. प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है। और तुम्हें तुम्हारे (कर्मों का) प्रलय के दिन भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा तो (उस दिन) जो व्यक्ति नरक से बचा लिया गया तथा स्वर्ग में प्रवेश पा गया⁴, तो वह सफल हो गया। तथा संसारिक जीवन धोखे की पूजी के सिवा कुछ नहीं है।

186. (हे ईमान वाले!) तुम्हारे धनो तथा प्राणों में तुम्हारी परीक्षा अवश्य ली जायेगी। और तुम उन से अवश्य बहुत सी दुःखद बातें सुनोगे जो तुम

لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَٰ بِبُرْهَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ
فَلَمَّا جَاءَ لَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ قَبْلِ يَأْتِيَتِ وَيَأْتِي
فَلَمَّا قَبْلُ قُلْتُمْ قُلْتُمْ قُلْتُمْ قُلْتُمْ قُلْتُمْ

لَإِنْ كَذَّبْتُمْ فَلَمَّا كَذَّبَ رَسُولٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ
جَاءَ وَيَأْتِيَتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ

كُلٌّ لِّكُلِّ دَافِقَةٍ النَّوْبِ وَإِنَّمَا تَقُولُونَ
أَجُورُ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ زُحِرَ عَنْ
النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ قَازَىٰ وَمَا
لِحَيَوَاءِ الدُّنْيَا الْإِمْتَاءُ الْمُرُورِ

تَسْمَعُونَ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ
وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أَتَوْا لِيَكْتَبَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذَىٰ كَثِيرًا

1 अर्थात् आकाश से अग्नि आकर जला दे जो उस के स्वीकार्य होने का लक्षण है।

2 अर्थात् यहूद आदि ने।

3 प्रकाशक जो सत्य को उजागर कर दे।

4 अर्थात् सत्य आस्था और सत्कर्मों के द्वारा इस्लाम के नियमों का पालन कर के।

से पूर्व पुस्तक दिये गये। तथा उन से जो मिश्रणवादी¹ हैं। तथा यदि तुम ने सहन किया, और (अब्राहम से) डरते रहे तो यह बड़े साहस की बात होगी।

187. तथा (हे नबी!) याद करो जब अब्राहम ने उन से दृढ़ वचन लिया था जो पुस्तक² दिये गये कि तुम अवश्य इसे लोगों के लिये उजागर करने रहोगे और उसे छुपावोगे नहीं। तो उन्होंने ने इस (वचन) को अपने पीछे डाल दिया (भंग कर दिया) और उस के बदले तनिक मूल्य खरीद³ लिया। तो वह कितनी बुरी चीज खरीद रहे हैं।

188. (हे नबी!) जो⁴ अपने कर्तूतों पर प्रसन्न हो रहे हैं और चाहते हैं कि उन कर्मों के लिये सराहे जायें जो उन्हो ने नहीं किये। आप उन्हें कदापि न समझें कि यातना से बचे रहेंगे। तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

وَأَن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ

وَرَدَّ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الْبَنِي إِسْرَءِيلَ أَنِّي مَعَكُمْ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىَٰ مِن دُونِ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ أَخَذَ مِنْهُمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَهُمْ عَصَوْا وَكَانُوا مُصِيفِينَ

لَا تَحِبُّوا الدِّينَ بِمَا يُفْرَحُونَ بِهِ النَّاسُ وَلَا تَحِبُّوا الدِّينَ بِمَا يُفْرَحُونَ بِهِ النَّاسُ وَلَا تَحِبُّوا الدِّينَ بِمَا يُفْرَحُونَ بِهِ النَّاسُ وَلَا تَحِبُّوا الدِّينَ بِمَا يُفْرَحُونَ بِهِ النَّاسُ

1 मिश्रणवादी अर्थात् मूर्तियों के पूजारी जो पूजा अर्चना तथा अब्राहम के विशेष गुणों में अन्य को उस का साझी बनाने हैं।

2 जो पुस्तक दिये गये, अर्थात् यहूद और नसारा (इसाइ) जिन को तौरात तथा इंजील दी गयी।

3 अर्थात् तुच्छ संसारिक लाभ के लिये सत्य का सौदा करने लगे।

4 अबू सईद रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि कुछ द्विधावादी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में आप युद्ध के लिये निकलते तो आप का साथ नहीं देते थे। और इस पर प्रसन्न होने थे और जब आप बापिस आने तो बहाने बनाते और शपथ लेते थे। और जो नहीं किया है उस की सराहना चाहते थे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी 4567)

189. तथा आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالدَّرَجِیْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ قَدِیْرٌ ۝

190. वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना, और रात्री तथा दिवस के एक के पश्चात् एक आते जाने रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) ¹ हैं।

وَإِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاٰخِلَیِّ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ لَآیٰتٍ لِّلَّذِیْنَ هُمْ عَلٰی

191. जो खड़े बैठे तथा सोये (प्रत्येक स्थिति में) अल्लाह की याद करते, तथा आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते हैं। (कहते हैं) हे हमारे पालनहार! तू ने इसे ² व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्नि के दण्ड से बचा ले।

اَلَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ ۚ اِنَّ اِلٰهَهُمْ اَحَدٌ ۚ وَفَعُوْا ۚ اَوْ عَلٰی جُٔوْهُمْ ۚ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ مُّبِیْحًا ۚ فَبِمَا عَذَابُ الْكَافِرِ ۝

192. हे हमारे पालनहार! तू ने जिसे नरक में झोंक दिया, तो उसे अपमानित कर दिया, और अन्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

رَبَّنَا اِنَّكَ مَن تَدْعِیْنَ النَّارَ فَقَدْ اَخْرَجْتَهُ ۚ وَتَلَظِّیْمِیْنَ ۚ مِنْ اَنْصَارِهِ ۝

193. हे हमारे पालनहार! हम ने एक ³ पुकारने वाले को ईमान के लिये पुकारते हुये सुना, कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये, हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे, तथा हमारी बुराईयों को अन देखी

رَبَّنَا اِنَّمَا سَمِعْتُمْ مُتَحَدِّیْنَ یَدْعُوْنَ اِلَیْمَانِ ۚ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ ۚ وَمَا رَبُّنَا ۚ فَاعْتَصِرْنَا ۚ اَدْمُؤُنَا ۚ وَكُفِّرْ عَنْ سَیِّئَاتِنَا ۚ وَتَوَقَّنَا ۚ مَعَ الْاٰمِنِیْنَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह के राज्य, स्वामित्व तथा एकमात्र पूज्य होने के

2 अर्थात् यह विचित्र रचना तथा व्यवस्था अकारण नहीं तथा आवश्यक है कि इस जीवन के पश्चात् भी कोई जीवन हो। जिस में इस जीवन के कर्मों के परिणाम सामने आये।

3 अर्थात् अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का।

कर दे, तथा हमारी मौन पुनीतों
(सदाचारियों) के साथ हो।

194. हे हमारे पालनहार! हम को, तू ने
अपने रसूलों द्वारा जो वचन दिया
है हमें वह प्रदान कर, तथा प्रलय
के दिन हमें अपमानित न कर,
वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।

195. तो उन के पालनहार ने उन की
(प्रार्थना) सुन ली, (तथा कहा कि):
निस्संदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य
को व्यर्थ नहीं करता¹। नर हो
अथवा नारी। तो जिन्होंने हिजरत
(प्रस्थान) की तथा अपने घरों से
निकाले गये, और मेरी राह में सताये
गये और युद्ध किया, तथा मारे गये,
तो हम अवश्य उन के दोषों को
क्षमा कर देंगे। तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों
में प्रवेश देंगे जिन में नहरें बह रही
हैं। यह अल्लाह के पास से उन का
प्रतिफल होगा। और अल्लाह ही के
पास अच्छा प्रतिफल है।

196. हे नबी! नगरों में काफिरों का
(सुख सुविधा के साथ) फिरना आप
को धोखे में न डाल दे।

197. यह तनिक लाभ² है, फिर उन का
स्थान नरक है। और वह क्या ही
बुरा आवास है।

رَبَّنَا وَإِنَّمَا وَعْدٌ مِّنْكَ وَعَلَىٰ نُسُوتٍ وَلَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ
الْقِيَمَةُ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ ۝

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِ لَا يُؤْتِيَ عَمَلٌ غَائِبٌ
مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَأَنِّي بَعْضُكُمْ مِنْ نَفْسٍ
كَافٍ يَسْ هَاجَرُوا وَالْخِرَاجُ مِمَّنْ دِيَارِهِمْ وَأُودُوا
فِي سَبِيلِنَا وَقَاتِلُوا لَأَكْفِرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ تَوَافًا يَمْنَحُ اللَّهُ وَاللَّهُ يَخْتَارُ ۝
حَسْبُ الْتَوَابِ ۝

لَا يَغُرُّكَ تَقَلُّبُ الْفَاسِقِينَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ

مِمَّا لَّاقُوا فِي شَأْنِ مَا أَوْفَدَهُمْ جَهَنَّمَ ۚ وَهُمْ فِيهَا
يُفَوِّقُونَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह का यह नियम है कि वह सत्कर्म अकारण नहीं करता उस का प्रतिफल अवश्य देता है।

2 अर्थात् सामयिक संसारिक आनन्द है।

198. परन्तु जो अपने पालनहार से डरे तो उन के लिये ऐसे स्वर्ग है जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे। यह अब्राह के पास से अर्पित सत्कार होगा। तथा जो अब्राह के पास है पुनीतों के लिये उत्तम है।

199. और निःसंदेह अहले किताब (अर्थात् यहूद और ईसाई) में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर इमान रखते हैं। और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उस पर भी। अल्लाह से डरे रहते हैं। और उस की आयतों को थोड़ी थोड़ी कीमतों पर बेचते भी नहीं।¹¹ उन का बदला उन के रब के पास है। निःसंदेह अल्लाह जल्दी ही हिमाय लेने वाला है।

200. हे इमान वाले! तुम धैर्य रखो।¹² और एक दूसरे को धामे रखो। और जिहाद के लिये तैयार रहो। और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम अपने उद्देश्य को पहुँचो।

لَكُمْ فِيهَا نَقُورٌ مَّا تَشَاءُونَ فِيهَا مِنْ غَيْرِ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ مِّنْ ثَمَرٍ وَلَا لَكُمْ فِيهَا مَكْرَهٌ وَلَا يَكُونُ لَكُمْ فِيهَا حَسْرَةٌ ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْآبِرِينَ ۝

وَمِنْ مَّنْ هَٰذَا الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ فِيهِ وَلَهُ حُجَّتٌ مِّنَ رَبِّهِ لَا يَشْرِكُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ شَيْئًا قَلِيلًا ۚ وَلَهُمْ فِي السَّمْعِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِّنْ حَسْرَةٍ ۚ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِعُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

- 1 अर्थात् यह यहूदियों और ईसाइयों का दूसरा समुदाय है जो अल्लाह पर और उस की किताबों पर सही प्रकार से इमान रखता था। और सत्य को स्वीकार करता था। तथा इस्लाम और रसूल तथा मुसलमानों के विपरीत साजिशें नहीं करता था। और चन्द टुकों के कारण अल्लाह के आदेशों में हेर फेर नहीं करता था।
- 2 अर्थात् अल्लाह और उस के रसूल की फरमां बरदारी कर के और अपनी मनमानी छाँड़ कर धैर्य करो। और यदि शत्रु से लड़ाई हो जाये तो उस में सामने आने वाली परेशानियों पर डटे रहना बहुत बड़ा धैर्य है। इसी प्रकार शत्रु के धारे में सदेव चोक्न्ना रहना भी बहुत बड़ा साहस का काम है। इसी लिये हदीस में आया है कि अल्लाह के रास्ते में एक दिन मोरचे बन्द रहना इस दुनिया और उस की तमाम चीजों से उत्तम है। (सहीह बुखारी)

सूरह निसा - 4

سُورَةُ النِّسَاءِ

यह सूरह मदनी है इस में 176 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे मनुष्यों! अपने¹ उस पालनहार से डरो, जिस ने तुम को एक जीव (आदम) से उत्पन्न किया, तथा उसी से उस की पत्नी (हव्वा) को उत्पन्न किया, और उन दोनों से बहुत से नर नारी फैला दिये। उस अल्लाह से डरो जिस के द्वारा तुम एक दूसरे से (अधिकार) माँगते हो, तथा रक्त संबंधों को तोड़ने से डरो निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالرِّجَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝

2. तथा (हे संरक्षको!) अनाथों को उन

وَأُولَ الَّذِينَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا تَشْبَدُوا لَهَا فَحَبِطَتْ

- 1 यहाँ से सामाजिक व्यवस्था का नियम बनाया गया है कि विश्व के सभी नर नारी एक ही माता पिता से उत्पन्न किये गये हैं। इस लिये सब समान हैं और सब के साथ अच्छा व्यवहार तथा भाई चारे की भावना रखनी चाहिये। और सब के अधिकार की रक्षा करनी चाहिये। यह उस अल्लाह का आदेश है जो तुम्हारे मूल का उत्पत्तिकार है। और जिस के नाम से तुम एक दूसरे से अपना अधिकार माँगते हो कि अल्लाह के लिये मेरी सहायता करो फिर इस साधारण संबंध के सिवा गर्भाशायिक अर्थात् समीपवर्ती परिवारिक संबंध भी है जिसे जोड़ने पर अधिक वन दिया गया है। एक हदीस में है कि संबंध भंगी स्वर्ग में नहीं जायगा। (महीह बुखारी 5984, मुस्लिम 2555) इस आयत के पश्चात् कई आयतों में इन्हीं अल्लाह के निर्धारित किये मानव अधिकारों का वर्णन किया जा रहा है।

कें धन चुका दो, और (उन की) अच्छी चीज से (अपनी) बुरी चीज न बदलो, और उन के धन अपने धनों में मिला कर न खाओ, निस्संदेह वह बहुत बड़ा पाप है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ الَّتِي هِيَ
إِنَّهُ كَانَ خَوَافًا كَثِيرًا ۝

3. और यदि तुम डरो कि अनाथ (बालिकाओं) के विषय¹ में न्याय नहीं कर सकोगे तो नारियों में से जो भी तुम्हें भायें, दो से, तीन से चार तक से विवाह कर लो। और यदि डरो कि न्याय नहीं करोगे तो एक ही से करो, अथवा जो तुम्हारे स्वामित्व² में हो उसी पर बस करो। यह अधिक समीप है कि अन्याय न करो।

فَإِنْ جِئْتُمْ بِأَلْفٍ مِّنَ النِّسَاءِ
فَأَكْثَرُوا مَا كُنْتُمْ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ
مَثْرَىٰ وَثَلَاثَ وَرُبْعَ ۚ وَإِنْ جِئْتُمْ بِأَلْفٍ مِّنَ
النِّسَاءِ فَأَكْثَرُوا مَا كُنْتُمْ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ
أَلَّا تَعْلَمُونَ ۝

4. तथा स्त्रियों को उन के महर (विवाह उपहार) सप्रसन्नता से चुका दो। फिर यदि वह उस में से कुछ तुम्हें अपनी इच्छा से दे दें तो प्रसन्न हो कर खाओ।

وَالَّذِينَ آمَنُوا صَدَّقُوا نِسَاءَهُنَّ بِمَا كُنَّ
لَهُنَّ مِمَّا كُنَّ يَتَرَبَّصْنَ بِهِ ۚ فَإِنْ أَخَذْنَ
بِهِ ۖ فَكُلُوا مِنْهُ فَاكْرَهُهُ قَرِيبًا ۝

5. तथा अपने धन जिसे अज्ञाह ने तुम्हारे लिये जीवन स्थापन का साधन बनाया है अज्ञानों को न³ दो। हाँ उस में से

وَالَّذِينَ آمَنُوا صَدَّقُوا نِسَاءَهُنَّ بِمَا كُنَّ
لَهُنَّ مِمَّا كُنَّ يَتَرَبَّصْنَ بِهِ ۚ فَإِنْ أَخَذْنَ
بِهِ ۖ فَكُلُوا مِنْهُ فَاكْرَهُهُ قَرِيبًا ۝

1 अरब में इस्लाम से पूर्व अनाथ बालिका का संरक्षक यदि उस के खजूर का बाग हो तो उस पर अधिकार रखने के लिये उस से विवाह कर लेता था। और उस में उसे कोई रुचि नहीं होती थी। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी हदीस नं० 4573)

2 अर्थात् युद्ध में बंदी बनाई गई दासी।

3 अर्थात् धन जीवन स्थापन का साधन है। इस लिये जब तक अनाथ चतुर तथा व्यस्क न हो जायें और अपने लाभ की रक्षा न कर सकें उस समय तक उन का धन उन के नियंत्रण में न दो।

समीपवर्ती¹, तथा अनाथ और निर्धन उपस्थित हों तो उन्हें भी थोड़ा बहुत दे दो, तथा उन से भली बात बोलो।

9. और उन लोगों को डरना चाहिये, जो यदि अपने पीछे निर्बल संतान छोड़ जायें, और उन के नाश होने का भय हो, अतः उन्हें चाहिये कि अल्लाह से डरें, और सीधी बात बोलें।

10. जो लोग अनाथों का धन अत्याचार से खाते हैं वह अपने पेटों में आग भरते हैं, और शीघ्र ही नरक की अग्नि में प्रवेश करेंगे।

11. अल्लाह तुम्हारी संतान के संबंध में तुम्हें आदेश देता है कि पुत्र का भाग दो पुत्रियों के बराबर है। और यदि पुत्रियाँ दो² से अधिक हों तो उन के लिये छोड़े हुये धन का दो तिहाई (भाग) है। और यदि एक ही हो तो उस के लिये आधा है। और उस के माता पिता के लिये, दोनों में से प्रत्येक के लिये उस में से छठा भाग है जो छोड़ा हो, यदि उस के कोई संतान³ हो। और यदि उस के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो और उस का वारिस उस का पिता हो

وَلْيَتَّقِ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ قَارَرُوا قَوْلَهُمْ
وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ
ذُرِّيَّةً ضِعَفًا خَافُوا عَلَيْهِمْ
فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ
فُلُكًا إِنَّهُمْ يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ ثَارًا
وَسَيُصْرَبُونَ سَعِيرًا ۝

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلَّذِي لَهُ الْحَقُّ
الْبُشَيْرِ نَافِلًا لِّمَا تَرَكَ مِنْ ثَلَاثًا
مَا تَرَكَ وَلِلَّتِي كَانَتْ وَحِدًا فَلَهَا النِّصْفُ وَلِلَّتِي
كَانَتْ وَبِغَيْرِهَا الشُّدُشُ وَمَا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ
وَلَدٌ ذَرٌّ لِّمَنْ يَكُلُ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَةُ أَبَوَيْهِ
الطَّبْعُ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِلْأَخَوَةِ الشُّدُشُ مِنْ
بَعِيٍّ وَبَعِيَّةٍ يُوَصِّينَ بِهِمَا وَذَرٍّ أَبَا ذَكْرٍ وَابْنًا ذَكْرًا
لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا فَرِيضَةٌ مِنْ
الْأُولَىٰ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

1 इन से अभिप्राय वह समीपवर्ती है जिन का मीरास में निर्धारित भाग न हो। जैसे अनाथ, पौत्र तथा पौत्री आदि। (सहीह बुखारी 4576)

2 अर्थात् केवल पुत्रियाँ हों तो दो हों अथवा दो से अधिक हों।

3 अर्थात् न पुत्र हो और न पुत्री।

तो उस की माता का तिहाई (भाग)¹ है, (और शेष पिता का)। फिर यदि (माता पिता के सिवा) उस के एक से अधिक भाई अथवा बहनें हों तो उस की माता के लिये छठा भाग है जो वसियत² तथा कर्ज चुकाने के पश्चात् होगा। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिताओं और पुत्रों में से कौन तुम्हारे लिये अधिक लाभदायक है वास्तव में अल्लाह अति बड़ा तथा गुणी, ज्ञानी तत्वज्ञ है।

12. और तुम्हारे लिये उस का आधा है जो तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ जायें, यदि उन के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि उन की कोई संतान हो तो तुम्हारे लिये उस का चौथाई है जो वह छोड़ गई हों, वसियत (उत्तरदान) या ऋण चुकाने के पश्चात् और (पत्नियों) के लिये उस का चौथाई है जो (माल आदि) तुम ने छोड़ा हो यदि तुम्हारे कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि तुम्हारे कोई संतान हो तो उन के लिये उस का आठवा³ (भाग)

وَلَكُمْ بِصُفِّ مَآثِرِكُمْ أَوْ أَكْلِكُمْ لَوْ كَانَ لَكُمْ
وَلَدٌ لَّكَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَتَكُونُ زَوْجَةً مِّمَّا
مِنْ بَعْدِهِمْ وَتُعْتِقُ أَوْلَادَهُمْ بِهَا وَذِيَّ وَلَدٍ
مِّمَّا تَرَكَتُمْ لَكُمْ لَكُمْ وَلَدٌ فَكَانَ لَكُمْ
وَلَدٌ فَهِيَ الشُّشُ وَمَا تَرَكَتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِ
فَوَصُونَ بِهَا أَوْ ذِيَّ وَلَدٍ فَكَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَكَانَ
أَوْ امْرَأَةً وَلَهُ آخِرُ أَوْ أَخِيَّتُ فَيُطْلَقُ وَاجِبٌ مِنْهَا
الشُّشُ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي
الشُّشِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِ يَوْضَى بِهَا أَوْ ذِيَّ غَيْرِ
مُضَآةً وَصِيَّتِهِ مِنَ الشُّشِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ١٢

- 1 और शेष पिता का होगा। भाई बहनों को कुछ नहीं मिलेगा।
2 वसियत का अर्थ उत्तरदान है जो एक तिहाई या उस से कम होना चाहिये परन्तु वारिस के लिये उत्तरदान नहीं है। (देखिये त्रिमजी 975) पहले ऋण चुकाया जायेगा, फिर वसियत पूरी की जायेगी, फिर माँ का छठा भाग दिया जायेगा।
3 यहाँ यह बात विचारणीय है कि जब इस्लाम में पुत्र पुत्री तथा नर नारी बराबर है तो फिर पुत्री को पुत्र के आधा तथा पत्नी को पति के आधा भाग क्यों

है, जो तुम ने छोड़ा है वसियत (उत्तरदान) जो तुम ने किया हो पूरा करने अथवा ऋण चुकाने के पश्चात् और यदि किसी ऐसे पुरुष या स्त्री का वारिस होने की बात हो जो (कलाला)¹ हो, तथा (दूसरी माता से) उस का भाई अथवा बहन हो तो उन में से प्रत्येक के लिये छठा (भाग) है। फिर यदि (माँ जाये) (भाई या बहनें) इस से अधिक हों तो वह सब तिहाई (भाग) में (बराबर के) साझी होंगे। यह सब वसियत (उत्तरदान) तथा ऋण चुकाने के पश्चात् होगा। और किसी को हानि नहीं पहुँचाई जायेगी। यह अल्लाह की ओर से वसियत है। और अल्लाह ज्ञानी तथा हिक्मत वाला है।

दिया गया है? इस का कारण यह है कि पुत्री जब युवती और विवाहित हो जानी है तो उसे अपने पति से महर (विवाह उपहार) मिलता है और उस के तथा उस की संतान के यदि हो, तो भरण पोषण का भार उस के पति पर होता है। इस के विपरीत पुत्र युवक होता है तो विवाह करने पर अपनी पत्नी को महर (विवाह उपहार) देने के साथ ही उस का तथा अपनी संतान के भरण पोषण का भार भी उसी पर होता है। इसी लिये पुत्र को पुत्री के भाग का दुगना दिया जाता है जो न्यायोचित है।

1 कलाल: वह पुरुष अथवा स्त्री है जिस के न पिता हो और न पुत्र-पुत्री। अब इस के वारिस तीन प्रकार के हो सकते हैं-

1 सगे भाई बहन।

2 पिता एक तथा मानाएँ अलग हों।

3 माना एक तथा पिता अलग हों। यहाँ इसी प्रकार का आदेश वर्णित किया गया है। ऋण चुकाने के पश्चात् बिना कोई हानि पहुँचाये, यह अल्लाह की ओर से आदेश है, तथा अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील है।

13. यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमाये है, और जो अल्लाह तथा उस के रसूल का आज्ञाकारी रहेगा तो उसे ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। जिन में वह सदावामी होंगे। तथा यही बड़ी सफलता है।

14. और जो अल्लाह तथा उस के रसूल की अवज्ञा तथा उस की सीमाओं का उल्लंघन करेगा तो उस को नरक में प्रवेश देगा जिस में वह सदावामी होगा। और उसी के लिये अपमानकारी यातना है।

15. तथा तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्याभिचार कर जायें तो उन पर अपनों में से चार साक्षी लाओ। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दे तो उन्हें घरों में बन्द कर दो यहाँ तक कि उन को मौत आ जाये अथवा अल्लाह उन के लिये कोई अन्य 'राह बना दे।

16. और तुम में से जो दो व्यक्ति ऐसा करें तो दोनों को दुख पहुँचाओ। यहाँ तक कि वह तौबा (क्षमा याचना) कर लें और अपना सुधार कर लें। तो उन को छोड़ दो। निश्चय अल्लाह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

يَذَرُ حُدُودَ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يَدْخُلْهُ حُجُجٌ كَثِيرَةٌ مِّنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

وَمَنْ يُفْسِدْ لِّلَّهِ وَرَسُولِهِ وَيَعُدْ حُدُودَ
يَدْخُلْهُ نَارٌ خَالِدٌ فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ
مُّهِينٌ

وَالَّذِي يَأْتِيَنَّ الدَّاهِيَةَ مِنْ نِّسَائِهِ
فَأَسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةٌ مِّنْكُمْ أَوْ
شَاهِدٌ فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى
يُتَوَقَّعَ نُسُوتُ أَوْ يُخْلَلَّ لَهُنَّ بَيِّنَاتٌ

وَالَّذِي يَأْتِيَنَّهَا مِنكُم مَّا ذُوهُنَّ قَانًا
وَأَصْلَحَ فَاغْلُظْوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا
مُّجِيبًا

1 यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग व्याभिचार का साम्यिक दण्ड था इस का स्थायी दण्ड सूरह नूर आयत 2 में आ रहा है। जिस के उतरने पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: अल्लाह ने जो वचन दिया था उसे पूरा कर दिया। उसे मुझ से सीख लो।

17. अब्राह के पास उन्हीं की तौब (क्षमा याचना) स्वीकार है, जो अन जाने में बुराई कर जाते हैं, फिर शीघ्र ही क्षमा याचना कर लेते हैं, तो अब्राह उन की तौब (क्षमायाचना) स्वीकार कर लेता है तथा अब्राह बड़ा शानी गुणी है

18. और उन की तौब: (क्षमा याचना) स्वीकार्य नहीं, जो बुराईयाँ करने रहते हैं, यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत का समय आ जाता है तो कहना है, अब मैं ने तौब कर ली, और न ही उन की जो काफिर रहने हुये मर जाते हैं इन्हीं के लिये हम ने दुखदायी यातना तैयार कर रखी है।

19. हे ईमान वालो! तुम्हारे लिये हलाल (वैध) नहीं है कि बलपूर्वक स्त्रियों के वारिस बन जाओ।¹ तथा उन्हें इस लिये न रोको कि उन्हें जो दिया हो उस में से कुछ मार लो। परन्तु यह कि खुली बुराई कर जायें। तथा उन के साथ उचित² व्यवहार से रहो। फिर यदि वह तुम्हें अप्रिय लगे तो संभव है कि तुम किसी चीज को अप्रिय समझो, और अब्राह ने उस में

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِهَا قَلِيلًا لَّعَلَّهُمْ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ
فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا

وَلَيْسَ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السُّوءَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ إِنِّي تَابْتُ لِلَّهِ وَلَا لِلَّذِينَ يَمُوتُونَ
وَهُمْ كُفَّارًا أُولَٰئِكَ نَعْتَدُ لَهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ
كُلُهُنَّ وَلَا تَعْطِلُوهُنَّ بِمَا فَرَغْنَ مِنْ
أَنْتُمْ مَوْلَاهُنَّ ۚ إِنَّ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْ يَأْتِيَنَّكُمْ
فِيهِمْ فَرَسٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْكُمْ فَمَنْ
أَنْ تَكُونُوا شَيْئًا وَيَحْسَبَنَّ لَهُنَّ جُنَاحٌ عَلَيْهِمْ

1 हदीस में है कि जब काइ मर जाता तो उस के वारिस उस की पत्नी पर भी अधिकार कर लेने थे इसी को रोकने के लिये यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4579)

2 हदीस में है कि पूरा ईमान उस में है जो सुशील हो। और भला वह है जो अपनी पत्नियों के लिये भला हो। (त्रिमजी 1162)

गई है तुम्हारी मातायें, तथा तुम्हारी पुत्रियाँ, और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियाँ, और तुम्हारी मौसियाँ और भतीजियाँ, और भौजियाँ, तथा तुम्हारी वह मातायें जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो, तथा दूध पीने से सर्वाधिक बहनें, और तुम्हारी पत्नियों की मातायें, तथा तुम्हारी पत्नियों की पुत्रियाँ जिन का पालन पोषण तुम्हारी गोद में हुआ हो, जिन पत्नियों से तुम ने संभोग किया हो और यदि उन से संभोग न किया हो तो तुम पर कोई दोष नहीं। तथा तुम्हारे सगे पुत्रों की पत्नियाँ, और यह¹ कि तुम दो बहनों को एकत्र करो, परन्तु जो हो चुका। वास्तव में अज़ाह अर्थात् क्षमाशील दयावान् है।

24. तथा उन स्त्रियों से (विवाह वर्जित है) जो दूसरों के निकाह में हों।

وَمَلَائِكُهُمْ وَبَنَاتُهُمْ وَأَخَوَتُهُمْ الْأَخْفِيَّاتُ وَمَهْجَرُهُنَّ
أَصْفَقَتُهُمْ وَأَخَوَتُهُمْ مِنَ الرِّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ
بَنَاتِهِمْ وَأَبْنَاؤُهُنَّ الْأَخْفِيَّاتُ فِي حُجُورِهِمْ مِنْ بَنَاتِهِمْ
الَّذِينَ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ
أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَتَّخِذُوا مِنَ الْأَخْفِيَّاتِ إِلَّا مَا قَدْ
سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ

फूफियों से पिता तथा दादाओं की बहनें, और मौसियों में माताओं तथा लानियों की बहनें तथा भतीजी और भौजी में उन की संतान भी आती है। हदीस में है कि दूध से वह सभी रिश्ते हराम हो जाते हैं जो गोत्र से हराम होते हैं। (सहीह बुखारी 5099 मुस्लिम 1444)।

पत्नी की पुत्री जो दूसरे पति से हो उसी समय हराम (वर्जित) होगी जब उस की माता से संभोग किया हो केवल विवाह कर लेने से हराम नहीं होगी। जैसे दो बहनों को निकाह में एकत्र करना वर्जित है उसी प्रकार किसी स्त्री के साथ उस की फूफी अथवा मौसी को भी एकत्र करना हदीस से वर्जित है। (देखिये: सहीह बुखारी 5109 सहीह मुस्लिम 1408)

1 अर्थात् जाहिलिय्यत के युग में।

परन्तु तुम्हारी दासियों¹ जो (युद्ध में) तुम्हारे हाथ आई हों। (यह) तुम पर अल्लाह ने लिख दिया² है। और इन के सिवा (स्त्रियों) तुम्हारे लिये हलाल (उचित) कर दी गयी है। (प्रतिबन्ध यह है कि) अपने धनों द्वारा व्यभिचार से सुरक्षित रहने के लिये विवाह करो। फिर उन में से जिस से लाभ उठाओ उन्हें उन का महर (विवाह उपहार) अवश्य चुका दो तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने के पश्चात् (यदि) आपस की सहमति से (कोई कमी या अधिकता कर लो) तो तुम पर कोई दोष नहीं। निःसन्देह अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

25. और जो व्यक्ति तुम में से स्वतन्त्र ईमान वालियों से विवाह करने की सक्त न रखे तो वह अपने हाथों में आई हुई अपनी ईमान वाली दासियों से (विवाह कर ले)। तथा अल्लाह तुम्हारे ईमान को अधिक जानता है। तुम आपस में एक ही हो।³ अतः

إِنَّمَا تَحِلُّ لَكُم مَّا كُنْتُمْ تَحِلُّونَ وَأَمَّا مَا نُهَىٰ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ إِنَّمَا يَحِلُّ لَكَ

وَمَنْ لَّمْ يَجِدْ عَلَيْهَا ذِكْرًا فَلْيَنْكِحْهَا لِيَبْلِغَ إِلَيْهَا ذِكْرُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ
الْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ
بَعْضُ لَكُمْ مِنْ بَعْضٍ بِرِزْقٍ مِنْ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَبِيرٌ
الْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ
مُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنَاتُ

1 दासी वह स्त्री जो युद्ध में बन्दी बनाई गई हो। उस से एक बार मासिक धर्म आने के पश्चात् सम्भोग करना उचित है, और उसे मुक्त कर के उस से विवाह कर लेने का बड़ा पुण्य है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् तुम्हारे लिये नियम बना दिया है।

3 तुम आपस में एक ही हो, अर्थात् मानवता में बराबर हो। ज्ञातव्य है कि इस्लाम से पहले दासिता की परम्परा पूरे विश्व में फैली हुई थी। बलवान जानियाँ निर्बलों को दास बना कर उन के साथ हिंसक व्यवहार करती थीं। कुरआन ने दासिता को केवल युद्ध के अंदियों में सीमित कर दिया। और उन्हें भी अर्धदण्ड ले कर अथवा उपकार कर के मुक्त करने की प्रेरणा दी। फिर उन के साथ अच्छे व्यवहार पर बल दिया। तथा ऐसे आदेश और नियम बना दिए कि दासिता,

तुम उन के स्वामियों की अनुमति से उन (दासियों) से विवाह कर लो, और उन्हें नियमानुसार उन के महर (विवाह उपहार) चुका दो, वह सती हों, व्याभिचारिणी न हों न गुप्त प्रेमी बना रखी हों। फिर जब वह विवाहित हो जायें तो यदि व्याभिचार कर जायें, तो उन पर उस का आधा¹ दण्ड है, जो स्वतंत्र स्त्रियों पर है। यह (दासी से विवाह) उस के लिये है, जो तुम में से व्याभिचार से डरता हो। और सहन करो तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

26. अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिये उजागर कर दे, तथा तुम को भी उन की नितियों की राह दर्शा दे जो तुम से पहले थे। और तुम्हारी क्षमा याचना स्वीकार करे। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

27. और अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करे तथा जो लोग आकाशों के पीछे पड़े हुये हैं वह चाहते हैं कि तुम बहुत अधिक झुक² जाओ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَزَوَّجْتُمْ مِنْ
الْعَدَبِ ذَلِكَ لَيْسَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَلَئِنْ تَصِروا
حُرًّا لَّكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ الَّذِي
فِيكُمْ وَيُطَهِّرَ كَلِمَتَكُمْ وَاللَّهُ يَسْمَعُ كَلِمَتِكُمْ

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ
يُذْهِبَ الرِّجْسَ الَّذِي فِيكُمْ وَأَنْ يَتُوبُوا إِلَيْكُمْ

दासिता नहीं रह गई। यहाँ इसी वान पर बल दिया गया है कि दासियों से विवाह कर लेने में कोई दोष नहीं। इसलिये मानवता में सब बराबर है, और प्रधानता का मापदण्ड ईमान तथा सत्कर्म है।

1 अर्थात् पचास कोड़ा।

2 अर्थात् सत्यार्थ से कनरा जाओ।

23. अब्राहम तुम्हारा (बोझ) हल्का करना चाहता है। तथा मानव निर्बल पैदा किया गया है।

19. हे ईमान वालों! आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ परन्तु यह किः लेन देन तुम्हारी आपस की स्वीकृति से (धर्मविधानानुसार) हो। और आत्महत्या² न करो, वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

30. और जो अतिक्रमण तथा अन्याचार से ऐसा करेगा, समीप है कि हम उसे अग्नि में झोंक देंगे, और यह अज्ञात के लिये सरल है।

31. तथा यदि तुम उन महा पापों से बचते रहे, जिन से तुम्हें रोका जा रहा है तो हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे। और तुम्हें सम्मानित स्थान में प्रवेश देंगे।

32. तथा उस की कामना न करो, जिस के द्वारा अश्वत्थ ने तुम को एक दूसरे पर श्रेष्ठता दी है। पुरुषों के लिये उस का भाग है जो उन्होंने कमाया।³⁵

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَوِّفَ عَنْكُمْ وَحَقَّ الْإِيمَانُ
فَرِحْنَا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَغْيِ ۖ إِنَّمَا تَتْلُونَ حِكْمَةً مِّنْ تَرَاوَى
وَسَلَكُوا ۚ وَتَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي لَدَى اللَّهِ ۖ كَذَٰبًا
تُفْعَلُونَ ﴿٥٩﴾

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عَدْوًا أَزْطَبَ فَسُوفَ نُصْلِيهِ
نَارًا وَكَانَ ذِكْرُكَ عَلَى اللَّهِ بِسْمًا ۝

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَكُلُّ شَيْءٍ يَخِرُّ سَاجِدًا لِلْإِسْلَامِ إِلَّا مَنْ كَفَرُ ۚ فَسَ جَزَاءُ مَنْ كَفَرَ ۖ أَن يُعَذَّبَ اللَّهُ بِهِ وَلَا يَكُونُ لَهُمْ فِيهِ عَافِيَةٌ ۚ

وَلَا تَسْتَوُوا قُلُوبُكُمْ بِهِ يَعْزَمُ عَلَى بَيْنٍ
بِهِ حَالٌ نَوَيبٌ جَمًّا أَكْثَرُ إِلَى الْبَيْتِ يَصِيبُهُ
مِمَّا أَكْثَرُ وَسَمِعُوا اللَّهَ مِنْ قَوْلِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ

१ अर्थान् अपने धर्मविधान द्वारा।

2. इस का अर्थ यह भी किया गया है कि: अवैध कर्मों द्वारा अपना विनाश न करो तथा यह भी कि: आपस में रक्त्तपात न करो, और यह तीनों ही अर्थ सहीह हैं (तफ्सीरे कर्नवी)

3 कुरआन उतरने से पहले संसार का यह साधारण विद्वध्यापी विचार था कि नारी का कोई स्थायी अस्तित्व नहीं है। उसे केवल पुरुषों की सेवा और काम वासना की पूर्ति के लिये बनाया गया है। कुरआन इस विचार के विरुद्ध यह कहता है कि अल्लाह ने मानव को नर तथा नारी दो लिंगों में विभाजित कर दिया है, और

يُكَلِّفُ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمًا

और स्त्रियों के लिए उस का भाग है जो उन्होंने कमाया है। तथा अल्लाह से उस के अधिक की प्रार्थना करते रहो निस्सदेह अल्लाह सब कुछ जानता है।

33. और हम ने प्रत्येक के लिये वारिस (उत्तराधिकारी) बना दिये है उस में से जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो। तथा जिन से तुम ने समझौता¹ किया हो उन्हें उन का भाग दो। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज से सूचित है।

34. पुरुष स्त्रियों के व्यवस्थापक² है, इस कारण कि अल्लाह ने उन में से एक को दूसरे पर प्रधानता दी है। तथा इस कारण कि उन्होंने ने अपने धनों में से (उन पर) खर्च किया है। अन्तः सदाचारी स्त्रियाँ वह हैं जो आज्ञाकारी तथा उनकी अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा में उन के अधिकारों की रक्षा

وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوْرَثَةً لِلْوَٰلِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ
وَالَّذِينَ عَقَبْتَ أَيْمَانُكُمْ فَإِنَّمَا أَنْتُمْ نَسِيئُهُمْ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَٰهِدًا

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ
بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِأَن تَصْلَحُوا مِنْ مَّا بَيْنَهُمْ
فَمَا لَطَفْتُ فِيهَا حِفْظًا لِلنِّسَاءِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ
وَالَّذِينَ عَقَبْتَ أَيْمَانُكُمْ فَوَلَّوْهُمْ فَوَلَّوْهُمْ
فِي الْمَصَاحِبِ وَظَرُّوهُمْ إِنِّي لَأَعْلَمُكُمْ فَلَا
تَتَّبِعُوا عَدُوَّكُمْ سُبْحَانَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا
حَكِيمًا

दोनों ही समान रूप से अपना अपना अस्मिन्त्व, अपने अपने कर्तव्य तथा कर्म रखते हैं और जैसे आर्थिक कार्यालय के लिये एक लिंग की आवश्यकता है वैसे ही दूसरे की भी है। मानव के सामाजिक जीवन के लिये यह दोनों एक दूसरे के सहायक हैं,

- 1 यह संधिभ मीराम इस्लाम के आरंभिक युग में थी, जिसे (मबारीस की आयत) से निरस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि परिवारिक जीवन के प्रबंध के लिये एक प्रबंधक होना आवश्यक है। और इस प्रबंध तथा व्यवस्था का भार पुरुष पर रखा गया है। जो कोई विशेषता नहीं, बल्कि एक भार है। इस का यह अर्थ नहीं कि जन्म से पुरुष की स्त्री पर कोई विशेषता है। प्रथम आयत में यह आदेश दिया गया है कि यदि पत्नी पति की अनुगामी न हो तो वह उसे समझायो परन्तु यदि दोष पुरुष का हो तो दोनों के बीच मध्यस्थता द्वारा संधि कराने की प्रेरणा दी गयी है।

करती हों और तुम्हें जिन की अवज्ञा का डर हो तो उन्हें समझाओ और शयनागारों (सोने के स्थानों) में उन से अलग हो जाओ। तथा उनको मारो। फिर यदि वह तुम्हारी धान मानें तो उन पर अत्याचार का बहाना न खोजो। और अन्नाह सब से ऊपर, सब से बड़ा है।

35. और यदि तुम¹ को दोनों के बीच वियोग का डर हो तो एक मध्यस्थ उस (पति) के घराने से तथा एक मध्यस्थ उस (पत्नी) के घराने से नियुक्त करो, यदि वह दोनों संधि कराना चाहेंगे तो अन्नाह उन दोनों² के बीच संधि करा देगा। वास्तव में अन्नाह अति ज्ञानी सर्वसूचित है।

36. तथा अन्नाह की इबादत (वन्दना) करो और किसी चीज को उस का साझी न बनाओ। तथा माता पिता, समीपवर्तियों और अनाथों एवं निर्धनों तथा समीप और दूर के पड़ोसी, यात्रा के साथी तथा यात्री और अपने दाम दासियों के साथ उपकार करो। निःसंदेह अन्नाह उस से प्रेम नहीं करता जो अभिमानी अहंकारी³ हो।

37. और जो स्वयं कृपण (कंजूसी) करते हैं, तथा दूसरों को भी कृपण (कंजूसी) का आदेश देते हैं, और उसे

وَمَنْ جَفَرَ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَأَبْعَثْهُمَا
مَنْ أَهْلِهِ وَحَكْمًا مِنْ أَهْلِهِمَا إِنَّ تَرْتِيًا
إِصْلَاحًا يُؤْتِيهِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
خَبِيرًا

وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا
وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُرْبَى الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى
وَالْمَسْكِينِ وَالْحُدَايَا الْقُرْبَى وَالْحَبِيبِ الْحَبِيبِ
وَالْمُحَاجِبِ بِالْحَبِيبِ وَالْمُسْتَجِيرِ وَمَا مَنَعَتْ
أَيْمَانَ الْكُفْرَانِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَارًا
فَخُورًا

لَا يَمْنَعُ يَجْعَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْمَعْلَى
وَيَكْتُمُونَ مَا أَنشَأَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ

1 इस में पति पत्नी के संरक्षकों को संबंधित किया गया है।

2 अर्थात् पति पत्नी में।

3 अर्थात् डींगें मारना तथा इतराना हो।

छुपाने हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है। और हम ने कनधनों के लिये अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है।

وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا

38. तथा जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए दान करते हैं, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर इमान नहीं रखते। तथा शैतान जिम् का साथी हो, तो वह बहुत बुरा साथी⁽¹⁾ है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهُ قَرِينًا فَهُوَ قَرِينٌ

39. और उन का क्या विगड़ जाता, यदि वह अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर इमान (विश्वास) रखने, और अल्लाह ने जो उन्हें दिया है उस में से दान करते? और अल्लाह उन्हें भली भाँति जानता है।

وَمَنْ ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنفَعُوا مَتَارِقَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَكَانَ اللَّهُ بِعِبَادِهِۦ خَبِيرًا

40. अल्लाह कण भर भी किसी पर अत्याचार नहीं करना यदि कुछ भलाई (किसी ने) की हो, तो (अल्लाह) उसे अधिक कर देता है, तथा अपने पास से बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظۡهِرُ مَغۡفَالَ ذَرًّا وَآٓءَانُكَ حَسۡبُكَ يَضۡمُومُهَا وَيُؤۡتِيكَ مِنْ ثَمَّهِ أَجۡرَ عَظِيمًا

41. तो क्या दशा होगी जब हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) से एक साक्षी लायेंगे और (हे नबी!) आप को

فَلَنُفۡتِنَ إِذۡ يَخۡشَوْنَ كُلَّٓ أَمۡرٍ مُّشۡوِيٍّ وَنُفۡتِيكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ سَوِيًّا

1 आयत 36 से 38 तक साधारण सहानुभूति और उपकार का आदेश दिया गया है कि अल्लाह ने जो धन धान्य तुम को दिया उस से मानव की सहायता और सेवा करो। जो व्यक्ति अल्लाह पर इमान रखता हो उस का हाथ अल्लाह की राह में दान करने से कभी नहीं रुक सकता। फिर भी दान करो तो अल्लाह के लिये करो, दिखावे और नाम के लिये न करो। जो नाम के लिये दान करता है वह अल्लाह तथा आखिरत पर सच्चा इमान (विश्वास) नहीं रखता।

उन पर साक्षी लायेंगे।¹

42. उस दिन जो काफिर तथा रमूल के अवैज्ञाकारी हो गये यह कामना करेंगे कि उन के सहित भूमि बराबर² कर दी जाये। और वे अल्लाह से कोई बात छुपा नहीं सकेंगे।

43. हे ईमान वाले! तुम जब नशे³ में रहो तो नमाज के समीप न जाओ। जब तक जो कुछ बोलो उसे न समझो और न जनायत⁴ की स्थिति में (मस्जिदों के समीप जाओ) परन्तु रास्ता पार करते हुये। और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा में रहो, या स्त्रियों से सहवास कर लो, फिर जल न पाओ, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मूम⁵ कर लो। उसे अपने मुखों तथा हाथों पर फेर लो। वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त (सहिष्णु) क्षमाशील है।

44. क्या आप ने उनकी दशा नहीं देखी

يَوْمَئِذٍ يَوْمَ الدِّينِ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ
لَوْ تَسَوَّى بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ
حَدِيثًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنتُمْ
سُكَرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا
إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِن كُنتُمْ
مَرَضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُم مِّنَ
الْمَاءِ فَلْيَسْتَأْذِنُوا ۚ فَلَئِمَّا فَغُصِّتُمْ
فَلْيَمْسِكُوا بِأَيْدِيكُمْ فَإِن كَانَ غُصُوًّا غَفِيرًا

لَقَدْ رَأَىٰ الْإِنسَانُ أَكْبَارَ شَيْءٍ إِذْ أُنْزِلَ إِلَيْهِ رُسُلُهُ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि प्रलय के दिन अल्लाह प्रत्येक समुदाय के रसूल को उन के कर्म का साक्षी बनायेगा। इस प्रकार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी अपने समुदाय पर साक्षी बनायेगा। तथा सब रमूलों पर कि उन्होंने ने अपने पालनहार का मदेश पहुंचाया है। (इब्ने कसीर)

- 2 अर्थात् भूमि में धंस जायें और उन के ऊपर से भूमि बराबर हो जायें। या वह भी मिट्टी हो जायें।

- 3 यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग का है जब मदिरा को वर्जित नहीं किया गया था। (इब्ने कसीर)

- 4 जनायत का अर्थ वीर्यपात के कारण मलिन तथा अपवित्र होना है।

- 5 अर्थात् यदि जल का अभाव हो अथवा रोग के कारण जल प्रयोग हानिकारक हो तो वुजू तथा स्नान के स्थान पर तयम्मूम कर लो।

अथवा उन्हें ऐसे ही धिक्कार⁽¹⁾ दे जैसे शनिवार वालों को धिक्कार दिया। और अब्राह का आदेश पूरा हो कर रहा।

48. निम्नलिखित अब्राह यह नहीं क्षमा करेगा कि उस का साझी बनाया जाये⁽²⁾, और उस के सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जो अब्राह का साझी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ يَلْقَ أَثْمًا ۖ

49. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपने आप पवित्र बन रहे हैं? बल्कि अब्राह जिसे चाहे पवित्र करना है। और (लोगों पर) कण बराबर अन्याचार नहीं किया जायेगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ صَالِحُونَ ۖ يُؤْتُونَ مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ يُؤْتُونَ مِمَّنْ يَشَاءُ وَلَا يُلْقُونَ قِتْلًا ۖ

50. देखो यह लोग कैसे अब्राह पर मिथ्या आरोप लगा रहे³ हैं! उन के खुले पाप के लिये यही बहुत है।

أَنْظُرْ كَيْفَ يَتَّخِذُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَيْفَ بِهِ إِسْمَاعِيلُ ۖ

- 1 मदीने के यहूदियों का यह दुर्भाग्य था कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलते तो द्विअर्धक तथा मादग्ध शब्द बोल कर दिल की भड़ाम निकालते उसी पर उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है। शनिवार वाले अर्थात् जिन को शनिवार के दिन शिकार में रोका गया था। और जब वे नहीं माने तो उन्हें बन्दर बना दिया गया।
- 2 अर्थात् पूजा अराधना तथा अब्राह के विशेष गुण कर्मों में किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को साझी बनाना धोर अक्षम्य पाप है, जो सन्धर्म के मूलधार एकस्वरवाद के विरुद्ध और अब्राह पर मिथ्या आरोप है। यहूदियों ने अपने धर्माचार्यों तथा पादरियों के विषय में यह अर्धाविज्ञान बना लिया कि उन की बात को धर्म समझ कर उन्हीं का अनुपालन कर रहे थे। और मूल पुस्तकों को त्याग दिया था। कुर्आन इसी को शिर्क कहता है वह कहता है कि सभी पाप क्षमा किये जा सकते हैं परन्तु शिर्क के लिये क्षमा नहीं, क्योंकि इस से मूलधर्म की नींव ही हिल जाती है। और मार्गदर्शन का केन्द्र ही बदल जाता है।
- 3 अर्थात् अब्राह का नियम तो यह है कि पवित्रता इंसान तथा सत्कर्म पर निर्भर है और यह कहते हैं कि यहूदियन पर है।

51. हे नबी! क्या आप ने उन की दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह मूर्तियों तथा शैतानों की इबादन (बंदना) करते हैं और काफिरों¹ के बारे में कहते हैं कि यह ईमान वालों से अधिक सीधी डगर पर है।

52. और जिसे अल्लाह धिक्कार दे तो आप उस का कदापि कोई सहायक नहीं पायेंगे।

53. क्या उन के पाम राज्य का कोई भाग है, इस लिए लोगों को (उस में से) तनिक भी नहीं देंगे?

54. बल्कि वह लोगों² से उस अनुग्रह पर विद्वेष कर रहे हैं जो अल्लाह ने उन को प्रदान किया है। तो हम ने (पहले भी) इब्राहीम के घराने को पुस्तक तथा हिकमत (तत्त्वदर्शिता) दी है।

55. फिर उन में से कोई ईमान लाया, और कोई उस से विमुख हो गया। (तो उस के लिए) नरक की भड़कती अग्नि बहुत है।

56. वास्तव में जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ्र (अविश्वास) किया, हम उन्हें नरक में झोंक देंगे।

أَمْ تَدْعُو الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَالظَّالُّونَ
يَكْفُرُونَ لَهُمْ هَؤُلَاءِ أَعْدَى مِنَ
الدِّينِ الْمُتَوَاسِعِينَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ
وَمَنْ يُضِلَّهُ اللَّهُ
فَلَنْ يَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ۝

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِنَ
النَّاسِ يَفْبَرُونَ ۝

أَمْ يَحْسَدُونَ
النَّاسَ عَلَى مَا
أَتَاهُمُ اللَّهُ
مِنْ فَضْلِهِ
لَقَدْ آتَيْنَا آلَ
إِبْرَاهِيمَ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَآتَيْنَاهُمْ مُدًا
عَظِيمًا ۝

فَبِمَنْهُمْ مَنْ
آمَنَ بِهِ
وَبِمَنْهُمْ مَنْ
صَدَّ عَنْهُ
وَكُلٌّ فِيهِمُ
مُشْرِكُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ
نَارَ كَلْبًا
لَقَدْ جَاءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ
فَكَفَرُوا ۝

1 अर्थात् मक्का के मूर्ति के पूजारियों के बारे में मदीना के यहूदियों की यह दशा थी कि वह सदैव मूर्ति पूजा के विरोधी रहे। और उस का अपमान करने रहे। परन्तु अब मुसलमानों के विरोध में उन की प्रशंसा करने तथा कहते कि मूर्ति पूजकों का आचरण स्वभाव अधिक अच्छा है।

2 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों पर कि अल्लाह ने आप को नबी बना दिया तथा मुसलमानों को ईमान दे दिया।

जब जब उन की खालें पकेंगी हम
उन की खालें दूसरी बदल देंगे, ताकि
वह यातना चख निःसंदेह अल्लाह
प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

الْعَذَابَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا

57. और जो लोग ईमान लाये तथा
सदाचार किये तो हम उन्हें ऐसे स्वर्गों
में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित हैं।
जिन में वह सदावासी होंगे, उन के
लिए उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी और
हम उन को घनी छाओं में रखेंगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَهُمْ
فِيهَا زَوْجَاتٌ مُطَهَّرَاتٌ وَهُمْ فِيهَا كَاذِبُونَ

58. अल्लाह¹ तुम्हें आदेश देता है कि
धरोहर उन के स्वामियों को चका
दो, और जब लोगों के बीच निर्णय
करो तो न्याय के साथ निर्णय करो।
अल्लाह तुम्हें अच्छी बात का निर्देश
दे रहा है निःसंदेह अल्लाह सब कुछ
सुनने, देखने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَوَدُّوا الْأَقْدِبَ إِلَى أَهْلِهَا وَإِذَا
حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ
نِعِمَّا يَعْلَمُكُمْ بِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا

59. हे ईमान वालों! आज्ञा की आज्ञा
का अनुपालन करो, और रसूल की
आज्ञा का अनुपालन करो, तथा
अपने शासकों की आज्ञापालन करो,
फिर यदि किसी बात में तुम आपस
में विवाद (विभेद) कर लो, तो उसे
अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो,
यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन
(प्रलय) पर ईमान रखने हो। यह
(तुम्हारे लिये) अच्छा² और इस का

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا
الرَّسُولَ وَأَطِيعُوا الْأَرْشَادَ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ
مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ إِلَهُكُمْ فَإِنَّكُمْ كَانْتُمْ
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ
تَأْوِيلًا

1 यहाँ से ईमान वालों को संवाधित किया जा रहा है कि सामाजिक जीवन की व्यवस्था के लिए मूल नियम यह है कि जिस का जो भी अधिकार हो उसे स्वीकार किया जाये और दिया जाये। इसी प्रकार कोई भी निर्णय बिना पक्षपात के न्याय के साथ किया जाये, किसी प्रकार कोई अन्याय नहीं होना चाहिये।

2 अर्थात् किसी के विचार और राय को मानने में क्यों कि कुर्आन और नबी

परिणाम अच्छा है।

60. (हे नबी!) क्या आप ने उन (द्विधावादियों) को नहीं जाना, जिन का यह दावा है कि वह जो कुछ आप पर अवतरित हुआ है तथा जो कुछ आप से पूर्व अवतरित हुआ है उस पर ईमान रखते हैं, तथा चाहते हैं कि अपने विवाद का निर्णय विद्रोही के पाम ले जायें जब कि उन्हें आदेश दिया गया है कि उसे अस्वीकार कर दें? और शैतान चाहता है कि उन्हें सत्यम से बहुत दूर¹ कर दे।

61. तथा जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो (कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है तथा रसूल की (सूचन की) ओर तो आप मूर्नाफिकों (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मुंह फेर रहे हैं।

62. फिर यदि उन के अपने ही कर्तूतों के कारण उन पर कोई आपदा आ पड़े, तो फिर आप के पास आकर शपथ लेते हैं कि हम ने² तो केवल भलाई

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا
أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ
يَتَّخِذُوا آلَ شُعَيْبٍ مَغَافِرِينَ وَقَدْ أَمَرُوا أَنْ
يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ
ضَلَالًا بَعِيدًا

فَلَمَّا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى
الرَّسُولِ رَأَيْتَ لَئِيفِينَ يُضَادُّونَ عَنْتَ
صُدُّوا

فَلَيْفٌ إِذَا آصَابَهُمْ مُصِيبَةٌ يَنَاقِذُ مَتَّ
أَيْدِيَهُمْ لِنَفْسِهِمْ إِنَّكَ يَحْطِلُونَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सूचन ही धमदिशों की शिलाधार है।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि जो धर्म विधान कुर्आन तथा सूचन के सिवा किसी अन्य विधान से अपना निर्णय चाहते हों उन का ईमान का दावा मिथ्या है
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि मूर्नाफिक ईमान का दावा तो करते थे परन्तु अपने विवाद चुकाने के लिये इस्लाम के विरोधियों के पास जाते फिर जब कभी उन की दा रंगी पकड़ी जाती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर मिथ्या शपथ लेते और यह कहते कि हम केवल विवाद सुलझाने के लिये उन के पास चले गये थे। (इब्ने कसीर)

तथा (दोनों पक्ष में) मेल कराना
चाहा था।

63. यही वह लोग है जिन के दिलों के
भीतर की बातें अज्ञात जानना है।
अतः आप उन को क्षमा कर दें, तथा
उन्हें उपदेश दें और उन से ऐसी
प्रभावी बात बोलें जो उन के दिलों में
उतर जाये।

64. और हम ने जो भी रसूल भेजा वह
इस लिये ताकि अज्ञात की अनुमति से
उस की आज्ञा का पालन किया जाये।
और जब उन लोगों ने अपने ऊपर
अत्याचार किया तो यदि वह आप
के पास आते, फिर अज्ञात से क्षमा
याचना करते, तथा उन के लिये रसूल
क्षमा की प्रार्थना करते तो अज्ञात का
अनि क्षमाशील दयावान् पाने।

65. तो आप के पालनहार की शपथ! वह
कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब
तक अपने आपस के विवाद में आप
को निर्णायक न बनायें¹, फिर आप
जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में
तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव
न करें और पूर्णतः स्वीकार कर लें।

66. और यदि हम उन्हें² आदेश देते कि
स्वयं को बंध करो, तथा अपने घरों
से निकल जाओ तो इन में से थोड़े
के सिवा कोई ऐसा नहीं करता। और

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ
فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ
قَوْلًا بَيِّنًا

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ
اللَّهِ وَلَوْ كُنْتُمْ إِذْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْفَعَكُمْ حَيَاةُ
ذَاكَ فَاسْتَعَفَرُوا مِنَ اللَّهِ وَاسْتَغْفَرَهُمُ الرَّسُولُ
لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِي مَا
بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ فِي قُلُوبِهِمْ عَرَضًا
وَمَا قَضَيْتُ وَلِيًّا لَكُمْ شَيْئًا

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْتَ عَلَيْهِمْ رَبِّ قَتُلُوا نَفْسَكُمْ أَوْ
أَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ فَاقْعَوْهُ إِلَّا قَلِيلٌ
مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ لَكَانَ

1 यह आदेश आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में था। तथा आप के निधन
के पश्चात अब आप की सुन्नत से निर्णय लेना है।

2 अर्थात् जो दूसरों से निर्णय कराते हैं।

यदि उन्हें जो निर्देश दिया जाता है वह उस का पालन करते तो उन के लिये अच्छा और अधिक स्थिरता का कारण होता।

حَبْرُ نَهْمٍ وَأَنْتُمْ تَنْبِئُونَ

67. और हम उन को अपने पास से बहुत बड़ा प्रतिफल देते।

وَبِذَلِكَ نَجْزِي الْمُؤْمِنِينَ

68. तथा हम उन्हें सीधी डगर दर्शा देते।

وَلَهْدِيهِمْ سَبِيلًا مُسْتَقِيمًا

69. तथा जो अब्राह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करेंगे तो वही (स्वर्ग में) उन के साथ होंगे जिन पर अब्राह ने पुरस्कार किया है, अर्थात् नवियों तथा सत्यवादियों, शहीदों और सदाचारियों के साथ। और वह क्या ही अच्छे साथी हैं।

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَئِكَ رَفِيقًا

70. यह प्रदान अब्राह की ओर से है, और अब्राह का ज्ञान बहुत¹ है।

ذَلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ عَلِيمًا

71. हे ईमान वालों! अपने (शत्रु से) बचाव के साधन तय्यार रखो, फिर गिरोहों में अथवा एक साथ निकल पड़ो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا حُذُّوا أَوْلِيَاءَ الَّذِينَ كَفَرُوا فَإِنَّهُمْ أَوْلَىٰ بِالْكُفْرِ مِنْكُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

72. और तुम में कोई ऐसा व्यक्ति² भी है जो तुम से अवश्य पीछे रह जायेगा, और यदि तुम पर (युद्ध में) कोई आपदा आ पड़े तो कहेगा: अब्राह ने मुझ पर उपकार किया कि मैं उनके साथ उपस्थित न था।

وَأَنْ يَسْتَكْبِرُوا وَلَيَكُنَّ لِغِيظِكُمْ آيَاتٌ أَنْ يَقُولُوا هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أَدْبَارُكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ

73. और यदि तुम पर अब्राह की दया हो

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقُولُوا هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أَدْبَارُكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ

1 अर्थात् अपनी दया तथा प्रदान के योग्य को जानने के लिये।

2 यहाँ युद्ध से संबंधित अब्दुल्लाह बिन उबय्य जैसे मुनाफिकों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है। (इन्हे कमीर)

जाये, तो वह अवश्य यह कामना करेगा कि काशा मैं भी उन के साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त कर लेता मानो उस के और तुम्हारे मध्य कोई मित्रता ही न थी।

تَكُنْ مَعَهُمْ وَيَبِيْهَ مَوْدَّةً يَلْتَمِسْنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ
فَأَفُوْرَ قَوْرًا عَظِيْمًا

74. तो चाहिये कि अल्लाह की राह¹ में वह लोग युद्ध करें जो आखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन बेच चुके हैं। और जो अल्लाह की राह में युद्ध करेगा, तो वह मारा जाये अथवा विजयी हो जाये तो हम उसे बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

فَلْيَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَيُقْتَلْ أَوْ يَمُوتْ نَرْوِيْهِ لَئِيْرًا عَظِيْمًا

75. और तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में युद्ध नहीं करते, जब कि किलने ही निर्बल पुरुष तथा स्त्रियाँ और बच्चे हैं जो गुहार रहे हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें इस नगर² से निकाल दे, जिस के निवासी अत्याचारी हैं। और हमारे लिये अपनी ओर से कोई रक्षक बना दे, और हमारे लिये अपनी ओर से कोई सहायक बना दे।

وَمَا لَكُمْ لَا تَقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْ هٰذَا الْقَرْيَةِ الظَّالِمُوْنَ هٰذَا وَاجْعَلْ
لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا أَوْ اجْعَلْ لَّنَا مِنْ
لَّدُنْكَ نَصِيْرًا

76. जो लोग इमान लाये वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं। और जो काफिर है वह उपद्रव के लिये युद्ध करते हैं। तो

الَّذِيْنَ آمَنُوْا يَقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الظَّالِمِيْنَ

1 अल्लाह के धर्म को उँचा करने, और उस की रक्षा के लिये। किसी स्वार्थ अथवा किसी देश और संसारिक धन धान्य की प्राप्ति के लिये नहीं।

2 अर्थात् मक्का नगर से। यहाँ इस तथ्य को उजागर कर दिया गया है कि कुर्आन ने युद्ध का आदेश इस लिये नहीं दिया है कि दूसरों पर अत्याचार किया जाये बल्कि नृशंसियों तथा निर्बलों की सहायता के लिये दिया है। इसी लिये वह बार बार कहता है कि "अल्लाह की राह में युद्ध करो" अपने स्वार्थ और मनोकांक्षाओं के लिये नहीं न्याय तथा सत्य की स्थापना और सुरक्षा के लिये युद्ध करो।

शैतान के साथियों से युद्ध करो। निस्संदेह
शैतान की चाल निर्बल होती है।

فَقَاتِلُوا ذِيَّ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ
كَانَ ضَعِيفًا

- 77 (हे नबी!) क्या आप ने उन की नहीं
देखी जिस से कहा गया कि अपने
हार्थों को (युद्ध से) रोके रखो, तथा
नमाज की स्थापना करो और जकात
दो? और जब उन पर युद्ध करना
लिख दिया गया तो उन में से एक
गिरोह लोगों से ऐसे डर रहा है जैसे
अब्राह से डर रहा हो। या उस से
भी अधिक। तथा वह कहते हैं कि
हे हमारे पालनहार! हम को युद्ध
करने का आदेश क्यों दे दिया, क्यों
न हमें थोड़े दिनों का और अवसर
दिया? आप कह दें कि संसारिक सुख
बहुत थोड़ा है, तथा परलोक उस
के लिये अधिक अच्छा है जो अब्राह¹
से डरा, और उन पर कण भर भी
अत्याचार नहीं किया जायेगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ
عَنِ السَّيْئَةِ وَأَتُوا الزَّكَاةَ فَكَلِمَتٌ مِنْهُمُ
الْقِتَالُ رَدًّا فَمِنْهُمْ شَحُورٌ كَثِيرٌ
كَحْشِيَةِ اللَّهِ فَأُشِدَّ حَشِيَّةً وَقَالُوا رَبَّنَا
كُتِبَ عَلَيْنَا الْقِتَالُ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ
قَرِيبٍ قُلْ مَتَىٰ الدَّيُّ أَقْبَرُ مِنَ الْآخِرَةِ حَتَّىٰ تُنْفِ
النَّاسَ وَلَا تَصْلَحُوهُمْ فَيَسِيلُ

78. तुम जहाँ भी रहो, तुम्हें मौत आ
पकड़ेगी यद्यपि दृढ़ दुर्गों में क्यों न
रहो। तथा उन को यदि कोई सुख
पहुँचना है तो कहते हैं कि यह अब्राह
की ओर से है। और यदि कोई आपदा
आ पड़े तो कहते हैं कि यह आपके
कारण है। (हे नबी!) उन से कह दो
कि सब अब्राह की ओर से है। इन
लोगों को क्या हो गया कि कोई बात
समझने के समीप भी नहीं² होत?

أَيُّنَ مَا تَكُونُوا يَدُ الرَّحْمَنِ عَلَيْكُمْ
فَإِنْ تَرَوْهُ فَقَاتِلُوا إِنَّ نَجَاتَكُمْ فِيهِ
هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ نَصَبْتُمْ حِجَابًا
يَقُولُوا هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
فَمَنْ هَؤُلَاءِ الْقَوْمُ لَا يَفْقَهُونَ حَدِيثًا

1 अर्थात् परलोक का सुख उस के लिये है जिस ने अब्राह के आदेशों का पालन किया।

2 भावार्थ यह है कि जब मुसलमानों को कोई हानि हो जाती तो मुनाफिक

79. (वास्तविकता तो यह है कि) तुम को जो सुख पहुँचता है वह अल्लाह की ओर से होता है। तथा जो हानि पहुँचती है वह स्वयं (तुम्हारे कुकर्मों के) कारण होती है। और हम ने आप को सब मानव का रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा¹ है। और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य बहुत है।

80. जिस ने रसूल की आज्ञा का अनुपालन किया (वास्तव में) उस ने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया है। तथा जिस ने मुँह फेर लिया तो (हे नबी!) हम ने आप को उन का प्रहरी (रक्षक) बना कर नहीं भेजा² है।

81. तथा वह (आपके सामने कहने है कि) हम आज्ञाकारी हैं और जब आप के पास से जाते हैं तो इन में से कुछ लोग रात में आप की बात के

مَا أَصَابَكُمْ مِنْ حَسْرَةٍ فَمِنْ نَحْوِهَا أَصَابَكُمْ مِنْ
نِعْمَةٍ فَمِنْ تَلَفٍ وَأَوْسَدَ لِلظَّالِمِينَ رَسُولًا وَلَكِنْ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

مَنْ يُؤْمِرِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ تَوَلَّى
فَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ خِطَفًا ۝

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَأُوا مِنْ غُيُوبِكُمْ
ظَلَمُوا ۚ وَنَفِثُوا فِي آذَانِ مَنْ خَلْفَهُمْ وَأَنْتَ
يَكْتُبُ مَا يُبَيِّنُونَ لَكَ غُرُوضَ غُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ عَلَى اللَّهِ
وَكْفٍ

(द्विधावादी) तथा यहूदी कहते यह सब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कारण हुआ। कुर्आन कहता है कि सब कुछ अल्लाह की ओर से होता है अर्थात् उस ने प्रत्येक दशा तथा परिणाम के लिए कुछ नियम बना दिये हैं। और जो कुछ भी होता है वह उन्हीं दशाओं का परिणाम होता है। अतः तुम्हारी यह बातें जो कह रहे हो बड़ी अज्ञानता की बात हैं।

1 इस का भावार्थ यह है कि तुम्हें जो कुछ हानि होती है तो वह तुम्हारे कुकर्मों का दुष्परिणाम होता है। इस का आरोप दूसरे पर न धरो। इस्लाम के नबी तो अल्लाह के रसूल हैं। और रसूल का काम यही है कि संदेश पहुँचा दें, और तुम्हारा कर्तव्य है कि उन के सभी आदेशों का अनुपालन करो, फिर यदि तम अवैज्ञा करो, और उस का दुष्परिणाम सामने आये तो दोष तुम्हारा है न कि इस्लाम के नबी का।

2 अर्थात् आप का कर्तव्य अल्लाह का संदेश पहुँचाना है, उन के कर्मों तथा उन्हें सीधी डगर पर लगा देने का दायित्व आप पर नहीं।

بِأَنفُسِهِمْ

विरुद्ध परामर्श करते हैं। और वह जो परामर्श कर रहे हैं उसे अल्लाह लिख रहा है। अतः आप उन पर ध्यान न दें और अल्लाह पर भरोसा करें, तथा अल्लाह पर भरोसा काफी है।

82. तो क्या वह कुर्आन (के अर्थों) पर सोच विचार नहीं करते? यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल (वै) मेल) बातें पाते।¹

فَلَا يَجِدُ عِرْضَ الْقُرْآنِ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ غَيْرَ لَقَاءٍ كَثِيرٍ

83. और जब उन के पास शान्ति या भय की कोई सूचना आती है तो उसे फैला देते हैं। और यदि वह उसे अल्लाह के रसूल तथा अपने अधिकारियों की ओर फेर देते तो जो बात की तह तक पहुँचने है वे उस की वास्तविकता जान लेते। और यदि तुम पर अल्लाह की अनुकम्पा तथा दया न होती तो तुम में थोड़े के सिवा सब शैतान के पीछे लग जाते।²

وَرَدَّ أَعْيَادَهُمْ أَفْرَقَ مِنَ الْأَمْنِ أَوْ غَوِيٍّ أَوْ غَوِيٍّ
وَلَوْ رُدُّوا إِلَى الرَّسُولِ وَلِلَّيْلِ الْأَمْرِ مِنْهُمْ
لَعَسَتْ أَلْسِنَهُمْ لِيَكْفُرُوا عَنْهُمْ وَلَوْ رَدُّوا عَنْهُمْ
عَلَيْكُمْ وَنَحْنُ لَهُ رَبُّهُمْ الشَّقِيُّ لَا يُفْلِحُ

84. तो (हे नबी!) आप अल्लाह की राह में युद्ध करें। केवल आप पर यह भार डाला जा रहा है, तथा ईमान वालों को (इस की) प्रेरणा दें। संभव है कि अल्लाह काफिरों का बल (तोड़ दे)। और अल्लाह का बल और उस का दण्ड सब से कड़ा है।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلِّفُ إِلَّا نَفْسَكَ
وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى اللَّهِ أَنْ يُلْقِيَ بَأْسَ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا

- 1 अर्थात् जो व्यक्ति कुर्आन में विचार करेगा, उस पर यह तथ्य खून जायेगा कि कुर्आन अल्लाह की वाणी है।
2 इस आयत द्वारा यह निर्देश दिया जा रहा है कि जब भी साधारण शान्ति या भय की कोई सूचना मिले तो उसे अधिकारियों तथा शासकों तक पहुँचा दिया जाये।

85. जो अच्छी अनुशामा (सिफारिश) करेगा उसे उस का भाग (प्रतिफल) मिलेगा। तथा जो बुरी अनुशामा (सिफारिश) करेगा तो उसे भी उस का भाग (कृफल)¹ मिलेगा। और अल्लाह प्रत्येक चीज का निरीक्षक है।

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا
وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ يَنْفُسٌ مِنْهَا ۗ وَكَانَ
اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا ۝

86. और जब तुम से सलाम किया जाये, तो उस से अच्छा उत्तर दो, अथवा उसी को दुहरा दो। निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक विषय का हिमाय लेने वाला है।

وَلَا أُخَيِّرُكُمْ بَيْنَ خَيْرٍ فَخَيْرًا بِأَخْسَنِ مِنْهَا
أَوْ رَدًّا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ۝

87. अल्लाह के सिवा कोई बदनीय (पूज्य) नहीं वह अवश्य तुम्हें प्रलय के दिन एकत्र करेगा, इस में कोई सन्देह नहीं। तथा बान कहने में अल्लाह से अधिक सच्चा कौन हो सकता है?

إِنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ يُجَمِّعُكُمْ إِلَى يَوْمِ الْوَعْدِ
لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَمَنْ أَضَدُّ مِنْ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ۚ

88. तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफिकों (द्विधावादियों) के बारे में दो पक्ष² खन गये हो जब कि अल्लाह ने उन के कुकर्मों के कारण उन्हें औंधा कर दिया है। क्या तुम उसे सुपथ दर्शा देना चाहते हो जिसे अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और जिसे अल्लाह कुपथ

كَمَا لَكُمْ فِي الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ زَكِيمٌ
بِمَا تَسْمِعُونَ ۚ تَرِيدُونَ أَنْ تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ
اللَّهُ وَمَنْ يُضِلِّ اللَّهُ فَمَا لَهُ سَبِيلًا ۚ

1 आयत का भावार्थ यह है कि अच्छाई तथा बुराई में किसी की सहायता करने का भी पुण्य और पाप मिलता है।

2 मक्का वामियों में कुछ अपने स्वार्थ के लिये मौखिक मुसलमान हो गये थे और जब युद्ध आरंभ हुआ तो उन के बारे में मुसलमानों में दो विचार हो गये कुछ उन्हें अपना मित्र और कुछ उन्हें अपना शत्रु समझ रहे थे। अल्लाह ने यहाँ बता दिया कि वह लोग मुनाफिक (द्विधावादी) हैं। जब तक मक्का से हिजरत कर के मदीना में न आ जायें, और शत्रु ही के साथ रह जायें तो उन्हें भी शत्रु समझा जायेगा। यह वह मुनाफिक नहीं है जिन की चर्चा पहले की गयी है। यह मक्का के विशेष मुनाफिक हैं, जिन से युद्ध की स्थिति में कोई मित्रता की जा सकती थी और न ही उन से कोई संबंध रखा जा सकता था।

कर दे तो तुम उस के लिये कोई राह नहीं पा सकते।

89. (हे इमान वालो!) वे तो यह कामना करते हैं कि उन्हीं के समान तुम भी काफिर हो जाओ, तथा उन के बराबर हो जाओ। अतः उन में से किसी को मित्र न बनाओ, जब तक अल्लाह की राह में हिजरत न करें। और यदि वह इस से विमुख हो तो उन्हें जहाँ पाओ बध करो और उन में से किसी को मित्र न बनाओ, और न सहायक बनाओ।

90. परन्तु इन में से जो किसी ऐसी कौम से जा मिलें जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, अथवा ऐसे लोग हों जो तुम्हारे पास इस स्थिति में आयें कि उन के दिल इस से संकुचित हो रहे हों कि वह तुम से युद्ध करें, अथवा (तुम्हारे साथ) अपनी जानि से युद्ध करें। और यदि अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर मामर्थ्य दे देता, फिर वह तुम से युद्ध करते, तो यदि वह तुम से विलग रह गये और तुम से युद्ध नहीं किया, और तुम से संधि कर ली तो उन के विरुद्ध अल्लाह ने तुम्हारे लिये कोई (युद्ध करने की) राह नहीं बनाई है।

- 91 तथा तुम को कुछ ऐसे दूसरे लोग भी

وَذُو الْوَلْتَرُونَ كَمَا كَفَرُوا وَاتَّكَلَوْا عَلَىٰ سَوَاءٍ
فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيَاءَ يَتَخَفَتُمْ بِأَعْيُنِكُمْ
سَيِّئِينَ اتَّكَلُوا فَإِنْ نَافَكُوا عَنْكُمْ فَأَتُوا أَعْيُنَكُمْ
حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَلَا تَسْمِعُوا مِنْهُمْ شَيْئًا
وَلَا تُصَلِّوْا

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمِ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
وَبَيْنَا أَوْ جَاءُوكُمْ فَخَرَجَتْ مِنْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ
يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يَقَاتِلُوكُمْ قَوْمُهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَسَطَّوهُمْ عَلَيْهِمْ فَلَاقُوا كَلْبًا أَوْ اقْتُلُوكُمْ فَمَا جَعَلَ
يُقَاتِلُوكُمْ وَالْقَوْلَ الْيَمِينُ السَّلَامَ فَمَا جَعَلَ
اللَّهُ بَيْنَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا

سَوَّجِدُونَ الْحَرَامَ يُرِيدُونَ أَنْ يَصَلُّوا

- 1 अर्थात् इस्लाम में युद्ध का आदेश उन के विरुद्ध दिया गया है जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध कर रहे हों। अन्यथा उन से युद्ध करने का कोई कारण नहीं रह जाता क्योंकि मूल चीज शान्ति तथा संधि है युद्ध और हत्या नहीं।

मिलेंगे जो तुम्हारी ओर से भी शान्त रहना चाहते हैं, और अपनी जाति की ओर से भी शान्त रहना (चाहते हैं) फिर जब भी उपद्रव की ओर फेर दिये जायें, तो उस में औंधे हो कर गिर जाते हैं। तो यदि वह तुम से बिलग न रहें और तुम से संधि न करें तथा अपना हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और जहाँ पाओ बध करो। हम ने उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये खुला तर्क बना दिया है।

92. किसी इमान वाले के लिये वैध नहीं है कि वह किसी इमान वाले की हत्या कर दे, परन्तु चूक¹ से। तथा जो किसी इमान वाले की चूक से हत्या कर दे तो उसे एक इमान वाला दास मुक्त करना है और उस के घर वालों को दियत (अर्धदण्ड)² दे परन्तु यह कि वह दान (क्षमा) कर दे। फिर यदि वह (निहत) उस जाति में से हो जो तुम्हारी शत्रु है,

وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ كَمَا قُوا إِلَى الْوَيْسَةِ أَرْسَلْنَا
بَيْنَهُمْ قُلُوبًا لَّا تَفْقَهُ لُغَتَكُمْ وَلَا يَلْقَاوُا إِلَيْكُمْ
السَّلَامَ وَيَلْقَاوُا الْيَدِ الْيَمِينِ فَعَضُّهُمْ
وَقَتْلُهُمْ حَيْثُ يَتَفَتَحُونَ لَهُمْ وَأُولَئِكَ جَعَلْنَا
لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا قَلِيلًا ۝

وَمَا كَانَ يُؤْمِنُ أَنْ يُفْتَنَ مُؤْمِنٌ الْإِعْطَاءُ وَمَنْ قَتَلَ
مُؤْمِنًا عَطَا فَعَلِيَ بِنَفْسِهِ فَؤُومِيَّةٌ ذُوِيَّةٌ فَسَكَنَتْ فِي
أَفْئِدِهِ إِلَّا أَنْ يُقَاتِلُوا فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ مَدَانِيكُمْ
وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَغْيِيرُ رَأْيِهِ مُؤْمِنٌ فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ
يَبْتَغُونَ دِينَكُمْ يَدِينُوا فَبِإِيْنِهِ فَسَكَنَتْ فِي أَفْئِدِهِمْ وَتَحْمِيَّةٌ
بِقَبُولِ مُؤْمِنٍ قَتْلَ لَمْ يَجِدْ قَوْمًا مُشْرِكِينَ
مُتَّصِلِينَ نُوْبَةٍ مِنَ الْمَوْتِ وَكَانَ أَتَقَرُّبَةً حَقِيْقَةً ۝

1 अर्थात् निशाना चूक कर उसे लग जाये।

- 2 यह अर्धदण्ड सौ ऊँट अथवा उन का मूल्य है। आयत का भावार्थ यह है कि जिन की हत्या करने का आदेश दिया गया है वह केवल इस लिये दिया गया है कि उन्होंने ने इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध आरंभ कर दिया है अन्यथा यदि युद्ध की स्थिति न हो तो हत्या एक महापाप है। और किसी मुसलमान के लिये कदापि यह वैध नहीं कि किसी मुसलमान की, या जिस से समझौता हो उस की जान बूझ कर हत्या कर दो संधि मित्र से अघिप्राय वह सभी गैर मुस्लिम हैं जिन से मुसलमानों का युद्ध न हो संधि तथा संबिदा हो। फिर यदि चूक से किसी ने किसी की हत्या कर दी तो उस का यह आदेश है जो इस आयत में बताया गया है। यह जानव्य है कि कुर्आन ने केवल दो ही स्थिति में हत्या को उचित किया है: युद्ध की स्थिति में, अथवा नियमानुसार किसी अपराधी की हत्या की जाये। जैसे हत्यारे को हत्या के बदले हन किया जाये।

और वह (निहत) ईमान वाला है तो एक ईमान वाला दास मुक्त करना है। और यदि ऐसी कौम से हो जिस के और तुम्हारे बीच संधि है तो उस के घर वालों को अर्धदण्ड देना, तथा एक ईमान वाला दास (भी) मुक्त करना है, और जो दास न पाये तो उसे निरंतर दो महीने रोजा रखना है। अल्लाह की ओर से (उस के पाप की) यही क्षमा है। और अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

93. और जो किसी ईमान वाले की हत्या जान बूझ कर कर दे तो उस का कुफल (बदला) नरक है। जिस में वह सदाबामी होगा, और उस पर अल्लाह का प्रकोप तथा धिक्कार है। और उस ने उस के लिये घोर यातना तैयार कर रखी है

94. हे ईमान वाले! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिये) निकलो तो भली भाँति परख¹ लो, और कोई तुम को सलाम² करे तो यह न कहो कि तुम ईमान वाले नहीं हो। क्या तुम संसारिक जीवन का उपकरण चाहते हो? और अल्लाह के पास बहुत से परिहार (शत्रुधन) हैं। तुम भी पहले ऐसे³ ही थे, तो अल्लाह ने तुम

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ جَائِدًا بِهِ
وَيُقِطَّبُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا خَرَجْتُمْ مِنْ بَيْتِكُمْ
فَتَحِيَّاتُكُمْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ فَتَحِيَّاتُكُمْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ
فَتَحِيَّاتُكُمْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ فَتَحِيَّاتُكُمْ لِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ فَتَحِيَّاتُكُمْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ فَتَحِيَّاتُكُمْ
لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ فَتَحِيَّاتُكُمْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ

1 अर्थात् यह कि वह शत्रु है या मित्र है।

2 सलाम करना मुसलमान होने का एक लक्षण है।

3 अर्थात् इस्लाम के शब्द के सिवा तुम्हारे पास इस्लाम का कोई चिन्ह नहीं था। इब्ने अब्बास रजियल्लाह अन्हु कहते हैं कि रात के समय एक व्यक्ति यात्रा कर रहा था। जब उस से कुछ मुसलमान मिले तो उस ने अस्मलामु अलैकुम कहा।

पर उपकार किया। अतः भली भाँति परख लिया करो, निःसंदेह अब्बाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

95. ईमान वालों में जो अकारण अपने घरों में रह जाते हैं, और जो अब्बाह की राह में अपने धनों और प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, दोनों बराबर नहीं हो सकते। अब्बाह ने उन को जो अपने धनों तथा प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं उन पर जो घरों में रह जाते हैं पद में प्रधानता दी है। और प्रत्येक को अब्बाह ने भलाई का वचन दिया है। और अब्बाह ने जिहाद करने वालों को उन पर जो घरों में बैठे रह जाने वाले हैं बड़े प्रतिफल में भी प्रधानता दी है।

96. अब्बाह की ओर से कई (उच्च) श्रेणियाँ हैं। तथा क्षमा और दया है। और अब्बाह अति क्षमाशील दयावान् है।

97. निःसंदेह वह लोग जिन के प्राण फरिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वह अपने ऊपर (कुफ्र के देश में रह कर) अत्याचार करने वाले हों, तो उन से कहते हैं: तुम किस चीज में थे? वह कहते हैं कि हम धरती में विवश थे। तब फरिश्ते कहते हैं: क्या अब्बाह की धरती विस्तृत नहीं थी कि

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الْقُوَّةِ
وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فُتِلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى
الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً وَلَوْلَا وَعْدُ اللَّهِ يُخْشَى وَيُضَلَّ
اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَكْرَهًا لِمَا جَاءَ

دَرَجَاتٍ فِيهِ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً، وَكَانَ
اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا

رَبِّ الدُّنْيَا تَوَلَّاهُمْ الْمَلَائِكَةُ قَدَّيْنِ
تَقِيَهُمْ قُلُوبُهُمْ كُنُفًا لَوْ كُنَّا
مُسْتَمْعِينَ فِي الْأَرْضِ لَأَلَّاهُمُ الْكُلَّ
أَرْضَ اللَّهِ وَاسِعَةٌ يُخَيِّدُ فِيهَا مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ
مَعُودُهُمْ جَعَلَهُمْ وَتَأْتَتْ مَعِينُهُ

फिर भी एक मुसलमान ने उस अठा समझ कर मार दिया। इसी पर यह आयत उतरी। जब नबी सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम को इस का पता चला तो आप बहुत नाराज हुये। (इब्न कसीर)

उम में हिज्रत कर¹ जाते तो इन्हीं का आवास नरक है और वह क्या ही बुरा स्थान है।

98. परन्तु जो पुरुष और स्त्रियाँ तथा बच्चे ऐसे विवश हों कि कोई उपाय न रख सकें, और न (हिज्रत की) कोई राह पाते हों।

إِلَّا الْمُسْتَضْعِمِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِينَهُ وَلَا
يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۝

99. तो आशा है कि अब्राह उन को क्षमा कर देगा। निःसंदेह अब्राह अति ज्ञान्त क्षमाशील है।

قَالُوا لَيْتَ عَلَى اللَّهِ أَنْ يَغْفِرَ عَنْهُمْ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

100. तथा जो कोई अब्राह की राह में हिज्रत करेगा तो वह धरती में बहुत से निवास स्थान तथा विस्तार पायेगा। और जो अपने घर से अब्राह और उम के रमूल की ओर निकल गया, फिर उसे (राह में ही) मौत ने पकड़ लिया तो उस का प्रतिफल अब्राह के पास निश्चित हो

وَمَنْ يَهَاجِرْ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ
الْأَرْضِ مِنْ مَرْغَبٍ كَثِيرٍ أَوْ سَعَةٍ وَمَنْ
يَهَاجِرْ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ
لَمْ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى
اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

- 1 जब सत्य के विरोधियों के अत्याचार से विवश हो कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने हिज्रत (प्रस्थान) कर गये तो अरब में दो प्रकार के देश हो गये। मदीना दारुल हिज्रत (प्रवास गृह) था। जिस में मुसलमान हिज्रत कर के एकत्र हो गये। तथा दारुल हर्ब। अर्थात् वह क्षेत्र जो शत्रुओं के नियंत्रण में था और जिस का केन्द्र मक्का था। यहाँ जो मुसलमान थे वह अपनी आस्था तथा धार्मिक कर्म से वंचित थे। उन्हें शत्रु का अत्याचार सहना पड़ना था। इस लिये उन्हें यह आदेश दिया गया था कि मदीने हिज्रत कर जायें और यदि वह शक्ति रखते हुये हिज्रत नहीं करेंगे तो अपने इस आलम्य के लिए उत्तर दायी होंगे। इस के पश्चात् आगामी आयत में उन की चर्चा की जा रही है जो हिज्रत करने से विवश थे। मक्का से मदीना हिज्रत करने का यह आदेश मक्का की विजय सन् 8 हिजरी के पश्चात् निरस्त कर दिया गया। इन्हे अब्बास रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में कुछ मुसलमान काफिरों की संख्या बढ़ाने के लिये उन के साथ हो जाते थे और तीर या तलवार लगाने से मारे जाते थे, उन्हीं के बारे में यह आयत उतरती। (सहीह बुखारी 4596)

गया। और अल्लाह अति समाशील दयावान् है।

101. और जब तुम धरती में यात्रा करो तो नमाज¹ कस्र (संक्षिप्त) करने में तुम पर कोई दोष नहीं, यदि तुम्हें डर हो कि काफिर तुम्हें सतायेंगे। वास्तव में काफिर तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

102. तथा (हे नबी!) जब आप (रणक्षेत्र में) उपस्थित हों, और उन के लिये नमाज की स्थापना करें तो उन का एक गिरोह आप के साथ खड़ा हो जाये, और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहें। और जब वह सजदा कर लें तो तुम्हारे पीछे हों जायें, तथा दूसरा गिरोह आये जिस ने नमाज नहीं पढ़ी है, और आप के साथ नमाज पढ़ें। और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहें। काफिर चाहते हैं कि तुम अपने शस्त्रों से निश्चैन हो जाओ तो तुम पर यकायक धावा बोल दें। और तुम पर कोई दोष नहीं, यदि वर्षा के कारण तुम्हें दुख हो अथवा तुम रोगी रहो कि अपने शस्त्र² उतार दो। तथा अपने बचाव का

وَإِذَا عَزَمْتَ فِي الْغَزَا فَتَيْنِ عَلَى كَفَرٍ
جَمَاعَةٍ أَنْ تَقُصُّوهُ مِنَ الصَّلَاةِ إِنَّ جَعَلْنَا
لَكَ الْكُفْرَ الْكَبِيرَ لِكَيْفَ يَكُونُوا
لَكُمْ عَدَاوًا مُبِينًا ۝

وَإِذَا كُنْتَ فَتْحًا وَقَامَتْ لَهُمُ الصَّلَاةُ فَلْتَقُمْ
طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا بَأْسَهُمْ
فَإِنْ سَأَلْتَهُمْ لِمَ يَصَلُّونَ مِنْكُمْ قَالُوا لَمْ
يَأْخُذُوا بِأَمْرٍ لَكَ بِأَنْ يَصَلُّوا مَعَكَ
وَلْيَأْخُذُوا بِأَمْرِهِمْ وَأَسْبَحَتَهُمْ وَدَّ
الْكَافِرِينَ كُفْرًا وَأَلَوْ يَعْلَمُونَ عَنْ أَسْبَحَتِهِمْ
وَأَمْرِهِمْ قِيَمَتُهُمْ عَلَيْهِمْ قِيَمَةً وَاحِدَةً
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَكُونَ أَدْمَى مِنْ مَغِيرٍ
أَوْ كُنْتُمْ مُرْضَى أَنْ تَصُومُوا أَسْبَحَتَكُمْ وَخُذُوا
حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَهْلًا بِكَيْفَرِ عِدَّةٍ مِنْهُنَّ

- 1 कस्र का अर्थ चार रकअत वाली नमाज को दो रकअत पढ़ना है। यह अनुमति प्रत्येक यात्रा के लिये है शत्रु का भय हो या न हो।
2 इस का नाम (सलानुल खौफ) अर्थात् भय के समय की नमाज है जब रणक्षेत्र में प्रत्येक समय भय लगा रहे, तो उस की विधि यह है कि सेना के दो भाग कर लें एक भाग को नमाज पढ़ायें, तथा दूसरा शत्रु के सम्मुख खड़ा रहे, फिर दूसरा आये और नमाज पढ़े। इस प्रकार प्रत्येक गिरोह की एक रकअत और इमाम की दो रकअत होगी। हदीसों में इस की और भी विधियाँ आइ हैं और यह युद्ध की स्थितियों पर निर्भर है।

ध्यान रखो। निम्नदेह अल्लाह ने काफिरों के लिये अपमान कारी यातना तय्यार कर रखी है।

103. फिर जब तुम नमाज पूरी कर लो, तो खड़े, बैठे, लेटे प्रत्येक स्थिति में अल्लाह का स्मरण करो। और जब तुम शान्त हो जाओ तो पूरी नमाज पढ़ो। निम्नदेह नमाज ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है।

104. तथा तुम (शत्रु) जानि का पीछा करने में शिथिल न बनो, यदि तुम्हें दुख पहुँचा है तो तुम्हारे समान उन्हें भी दुख पहुँचा है। तथा तुम अल्लाह से जो आशा¹ रखने हो, वह आशा वह नहीं रखने। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

105. (हे नबी!) हम ने आप की ओर इस पुस्तक (कुर्आन) को सत्य के साथ उतारा है ताकि आप लोगों के बीच उस के अनुसार निर्णय करें, जो अल्लाह ने आप को बताया है, और विश्वासघातियों के पक्षधर न² बनें।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا
وَقُعُودًا أَوْ عَلَاجُؤَيْكُمْ تَبَادُرًا طَعَامًا
فَإَقِيمُوا الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا

وَلَا يَهْمُؤُا إِلَى ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ إِنَّ تَذَكُّرًا
وَلَا نَوْمًا فِي هُمْ وَمَا كَانَ لَكُمْ
وَتَرْجُؤَ مِنْ اللَّهِ وَمَا لَكُمْ مِنْ حُجَّةٍ وَكَانَ اللَّهُ
بِشَيْءٍ عَاقِلًا

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ يُصَدِّقُ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَا كَانَتْ اللَّهُ وَلَا تَكُنْ لِلظَّالِمِينَ حَصِيفًا

1 अर्थात् प्रतिफल तथा सहायता और समर्थन की।

2 यहाँ से अर्थात् आयत 105 से 113 तक के विषय में भाष्यकारों ने लिखा है कि एक व्यक्ति ने एक अन्मारी की कवच (जिरह) चुरा ली। और जब देखा कि उस का भेद खुल जायेगा तो उस का आरोप एक यहूदी पर लगा दिया। और उस के कबीले के लोग भी उस के पक्षधर हो गये। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और कहा कि आप इसे निर्दोष घोषित कर दें। और उन की बातों के कारण समीप था कि आप उसे निर्दोष घोषित कर के यहूदी को अपराधी बना देने कि आप को सावधान करने के लिये यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर) इन आयतों का साधारण भावार्थ यह है कि मुसलमान न्यायधीश को चाहिये कि किसी पक्ष

106. तथा अल्लाह से क्षमा याचना करते रहें, निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

107. और उन का पक्ष न लें, जो स्वयं अपने साथ विश्वासघात करते हों, निःसंदेह अल्लाह विश्वासघाती, पापी से प्रेम नहीं करता।¹

108. वह (अपने करतूत) लोगों से छुपा सकते हैं। तथा अल्लाह से नहीं छुपा सकते। और वह उन के साथ होता है, जब वह रात में उस बात का परामर्श करते हैं, जिस से वह प्रसन्न नहीं² होता। तथा अल्लाह उसे घेरे हुये है जो वह कर रहे है।

109. सुनो! तुम्ही वह हो कि समारिक जीवन में उन की ओर से झगड़ लियो तो प्रलय के दिन उन की ओर से कौन अल्लाह से झगड़ेगा, और कौन उन का अभिभाषक (प्रतिनिधि) होगा?

110. जो व्यक्ति कोई कुकर्म करेगा, अथवा अपने ऊपर अन्याचार करेगा, और फिर अल्लाह से क्षमा याचना करेगा, तो वह उसे अति क्षमी दयावान् पाएगा।

وَسْتَغْفِرُ اللَّهُ عَنْكَ اللَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا

وَلَا يَجِدُ عَيْنُ اللَّهِ بَيْنَ يَمِينٍ وَبَيْنَ شِمَائِلٍ أُنْفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُجِيبُ مَنْ كَانَ حَاقًا زِيمًا

يَسْتَكْفِرُونَ مِنَ الذَّنْبِ وَلَا يَسْتَظْهِرُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَى مِنَ الْقَوْلِ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَفْعَلُونَ مُجِيبًا

هَٰذَا كُمْ هَٰؤُلَاءِ مَا دَلَّتْهُمْ عَنْهُمُ شَيْئًا الَّذِي نَبَأَ قَسَمَ لِي كَلُوفُ اللَّهِ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَمْرًا يَلُوفُونَ حُلِيِّمْ ذِكْرًا

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْهَرْ عُصْيَانًا لِمَنْ يَسْتَغْفِرُ اللَّهُ يَجْعَلِ اللَّهُ غُفُورًا رَحِيمًا

का इस लिये पक्षपात न करे कि वह मुसलमान है। और दूसरा मुसलमान नहीं है, बल्कि उसे हर हाल में निष्पक्ष हो कर न्याय करना चाहिए।

1 आयत का भावार्थ यह है कि न्यायधीश को ऐसी बात नहीं करनी चाहिये, जिस में किसी का पक्षपात हो।

2 आयत का भावार्थ यह है कि मुसलमानों को अपना सहधर्मी अथवा अपनी जाति या परिवार का होने के कारण किसी अपराधी का पक्षपात नहीं करना चाहिये। क्योंकि संसार न जाने परन्तु अल्लाह तां जानना है कि कौन अपराधी है कौन नहीं।

111 और जो व्यक्ति कोई पाप करता है तो अपने ऊपर करता¹ है। तथा अब्राह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُ عَلَى نَفْسِهِ
وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

112. और जो व्यक्ति कोई चूक अथवा पाप स्वयं करे, और फिर किमी निर्दोष पर उस का आरोप लगा दे तो उस ने मिथ्या दोषारोपण तथा खुले पाप का² बोझ अपने ऊपर लाद लिया।

وَمَنْ يَكْسِبْ غُيُوبًا فَإِنَّمَا تَحْمِلُهَا بَرِيئًا
فَقَدْ أَحْصَىٰ بُهْتًا ۚ وَإِنَّمَا بُهْتٌ كَذِبٌ ۝

113. और (हे नबी!) यदि आप पर अब्राह की दया तथा कृपा न होती तो उन के एक गिरोह ने संकल्प ले लिया था कि आप को कुपय कर दें और वह स्वयं को ही कुपय कर³ रहे थे। तथा वह आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। क्यों कि अब्राह ने आप पर पुस्तक (कुरआन) तथा हिक्मत (सुन्नत) उतारी है। और आप को उस का ज्ञान दे दिया है जिसे आप नहीं जानते थे। तथा यह आप पर अब्राह की बड़ी दया है।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ أَهَمَّتْ
طَائِفَةً مِنْهُمْ أَنِ يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا
أَنفُسَهُمْ وَمَا يَصُدُّوكَ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَأَنزَلَ اللَّهُ
عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ
كَانَ تَعْلَمُ ۚ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝

114. उन के अधिकांश सरगोशी में कोई भलाई नहीं होती, परन्तु जो दान अथवा सदाचार या लोगों में सुधार कराने का आदेश दे। और जो कोई ऐसे कर्म अब्राह की प्रमन्नता के

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَسْرَأَ
بَصَدَاقَهُ أَوْ مَعْرُوبٍ أَوْ إصْلَاحَ بَيْنِ الثَّانِي
وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ
فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

1 भावार्थ यह है कि जो अपराध करना है उस के अपराध का दुष्परिणाम उसी के ऊपर है। अतः तुम यह न सोचो कि अपराधी के अपने सहधर्मी अथवा संबंधी होने के कारण, उस का अपराध सिद्ध हो गया तो हम पर भी धब्बा लग जायेगा।

2 अर्थात् स्वयं पाप कर के दूसरे पर आरोप लगाना दुहरा पाप है।

3 कि आप निर्दोष को अपराधी समझ लें।

लिये करेगा तो हम उसे बहुत भारी प्रतिफल प्रदान करेंगे।

115. तथा जो व्यक्ति अपने ऊपर मार्गदर्शन उजागर हो जाने के¹ पश्चात् रसूल का विरोध करे, और ईमान वालों की राह के सिवा (दूसरी राह) का अनुसरण करे तो हम उसे वहीं फेर⁽²⁾ देंगे जिधर फिरा है। और उसे नरक में झोंक देंगे तथा वह बुरा निवास स्थान है।

116. निःसदेह अब्राह इसे क्षमा³ नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा। तथा जो अब्राह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

117. वह (मिश्रणवादी) अब्राह के सिवा देवियों को ही पुकारते हैं। और धिक्कारे हुये शैतान को पुकारते हैं।

118. अब्राह ने जिसे धिक्कार दिया है। और उस (शैतान) ने कहा था कि मैं तेरे भक्तों से एक निश्चित भाग ले कर रहूँगा।

119. और उन्हें अवश्य बहकाऊंगा, तथा

وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصِّبْهُ جَهَنَّمَ ۚ وَكَانَ مَصِيرًا

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنثًا وَلَنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ۝

كَذَّبَهُ اللَّهُ ۖ وَقَالَ لَا تَتَّبِعُنِي مِنْ قَبْلِكَ نَصِيبًا مِمَّا تَفْرُشُونَ ۝

وَالْأَسْمَاءُ هُنَّ الْأَمِّيَّاتُ ۚ وَلَا مَرْتَبَ لَهُنَّ

- 1 ईमान वालों से अभिप्राय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा (साथी) हैं।
- 2 बिद्वानों ने लिखा है कि यह आयत भी उसी मुनाफिक से संबंधित है क्योंकि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के विरुद्ध दण्ड का निर्णय कर दिया तो वह भाग कर मक्का के मिश्रणवादियों से मिल गया। (तफ्सीरे कुर्तुबी)। फिर भी इस आयत का आदेश साधारण है।
- 3 अर्थात् शिर्क (मिश्रणवाद) अक्षम्य पाप है।

कामनाये दिलाऊंगा, और आदेश दूंगा कि वह पशुओं के कान चीर दें तथा उन्हें आदेश दूंगा, तो वे अवश्य अब्राह की संरचना में परिवर्तन¹ कर देंगे। तथा जो शैतान को अब्राह के सिवा सहायक बनायेगा तो वह खुली क्षति में पड़ गया।

120. वह उन को वचन देता, तथा कामनाओं में उलझाना है। और उन को जो वचन देता है वह धोखे के सिवा कुछ नहीं है।

121. उन्हीं का निवास स्थान नरक है। और वह उस से भागने की कोई राह नहीं पायेंगे।

122. तथा जो लोग इमान लाये, और सत्कर्म किये, हम उन को ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वे उस में सदावामी होंगे यह अब्राह का सत्य वचन है। और अब्राह से अधिक सत्य कथन किस का हो सकता है?

123. (यह प्रतिफल) तुम्हारी कामनाओं तथा अहले किताब की कामनाओं पर निर्भर नहीं। जो कोई भी दुष्कर्म करेगा तो वह उस का कुफल पायेगा, तथा अब्राह के सिवा अपना कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेगा।

فَيَذَرُكَ أَذَنَ لَأَعْلَمَنَّوَلَا مَرْتَبَهُ
فَلْيَعْبُدُوا خَلْقَ اللَّهِ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ
وَعِيَا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرًا مُبِينًا

يَعْبُدُهُمْ وَلِيْمَرِيحُهُمْ وَمَا يَعْبُدُهُمُ الشَّيْطَانُ
إِلَّا لِيُضِلَّهُمْ

أُولَئِكَ مَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا
مَجِيصًا

وَلِكَبِيرِينَ امْنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَمَنْ
أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا

لَيْسَ بِأَمْرٍ بِتَكْفُرٍ وَلَا آمَانَةٍ أَهْلِ الْكِتَابِ
مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزِيهِ وَلَا يَعْمَلْ لَهُ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَبَيًّا وَلَا تَصِيرُ

1 इस के बहुत से अर्थ हो सकते हैं, जैसे गोदना गुदवाना, स्त्री का पुरुष का आचरण और स्वभाव बनाना, इसी प्रकार पुरुष का स्त्री का आचरण तथा रूप धारण करना आदि।

124. तथा जो सत्कर्म करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान भी¹ रखता होगा, तो वही लोग स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे, और तनिक भी अत्याचार नहीं किये जायेंगे।

125. तथा उस व्यक्ति से अच्छा किम का धर्म हो सकता है जिस ने स्वयं को अब्राहम के लिये झुका दिया, और वह एकेश्वरवादी भी हो। और एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण कर रहा हो? और अब्राहम ने इब्राहीम को अपना विशुद्ध मित्र बना लिया।

126. तथा अब्राहम ही का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और अब्राहम प्रत्येक चीज को अपने नियंत्रण में लिये हुये है।

127 (हे नबी!) वह स्त्रियों के बारे में आप से धर्मदिश पूछ रहे हैं। आप कह दें कि अब्राहम उन के बारे में तुम्हें आदेश देता है और वह आदेश भी है जो इस से पूर्व पुस्तक (कुरआन) में तुम्हें उन अनाथ स्त्रियों के बारे में सुनाये गये हैं, जिन के निर्धारित अधिकार तुम नहीं देते,

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أُولَٰئِكَ
وَهُمْ مُؤْمِنُونَ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا
يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۝

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ
وَهُوَ مُخْلِصٌ دَاثِرَةً بِرَبِّهِمْ حَنِيفًا
وَتَحَدَّثَ اللَّهُ بِهِمْ حَقِيلًا ۝

وَاللَّهُ بِمَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَانَ
اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّخِطًا ۝

وَيَسْأَلُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يَفْتَنُكُم
بِهِنَّ وَمَا يُثَلَّ عَلَيْكُمْ فِي الْكَثْبِ فِي نَيْثِي
لِالنِّسَاءِ السَّيِّئَاتِ لَا تُوْتُوهُنَّ مَّا كُتِبَ لَهُنَّ
وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَالْمُتَضَمِّنِينَ
مِنَ الْوَلَدَانِ وَأَنْ تَقْرَبُوا الْيَتَامَىٰ بِالْقِسْطِ
وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ۝

1 अर्थात् सत्कर्म का प्रतिफल सत्य आस्था और इमान पर आधारित है कि अब्राहम तथा उस के सब नवियों पर इमान लाया जाय। तथा हदीसों से विद्वित होता है कि एक बार मुसलमानों और अहले किताब के बीच विवाद हो गया। यहूदियों ने कहा कि हमारा धर्म सब से अच्छा है। मुक्ति केवल हमारे ही धर्म में है। मुसलमानों ने कहा हमारा धर्म सब से अच्छा तथा अंतिम धर्म है। उसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

और उन से विवाह करने की रुचि रखते हो, तथा उन बच्चों के बारे में भी जो निर्वल है। तथा (यह भी आदेश देता है कि) अनाथों के लिये न्याय पर स्थित रहो।¹ तथा तुम जो भी भलाई करते हो अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

128. और यदि किसी स्त्री को अपने पति से दुर्व्यवहार अथवा विमुख होने की शंका हो, तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि आपस में कोई संधि कर लें, और संधि कर लेना ही अच्छा² है। और लोभ तो सभी में होता है और यदि तुम एक दूसरे के साथ उपकार करो और (अल्लाह से) डरते रहो तो निश्चिन्त तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उस से सूचित है।

129. और यदि तुम अपनी पत्नियों के बीच न्याय करना चाहो, तो भी ऐसा कदापि नहीं कर³ सकोगे! अतः एक ही की ओर पूर्णतः झुक⁴।

وَأِنْ مَرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعِيْهِمَا فُتُوْرًا أَوْ
إِعْرَاضًا فَلَا جُنَآءَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا
صُلْحًا وَأَسْلَحُوا خَوْفًا وَنَهْرًا وَالْأَنْفُسُ
الشَّعْرَاءُ وَأَنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ
حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ فَتَدْرِكُوا
كَالْمُتَلَقِّهِ ۚ وَلَنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ

1 इस्लाम से पहले यदि अनाथ स्त्री सुन्दर होती तो उस का संरक्षक यदि उस का विवाह उस से हो सकता हो, तो उस से विवाह कर लेता परन्तु उसे महर (विवाह उपहार) नहीं देता। और यदि सुन्दर न हो तो दूसरे से उसे विवाह नहीं करने देता था। ताकि उस का धन उसी के पास रह जाये। इसी प्रकार अनाथ बच्चों के साथ भी अन्याचार और अन्याय किया जाता था जिन से रोकने के लिये यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

2 अर्थ यह है कि स्त्री, पुरुष की इच्छा और रुचि पर ध्यान दे। तो यह संधि की रीति अलगव से अच्छी है।

3 क्यों कि यह स्वभाविक है कि मन का आकर्षण किसी एक की ओर होगा।

4 अर्थात् जिस में उसके पति की रुचि न हो, और न व्यवहारिक रूप से बिना

عَفْوٌ رَّحِيمٌ

न जाओ, और (शेष को) बीच में लटकी हुई न छोड़ दो। और यदि (अपने व्यवहार में) सुधार¹ रखो और अल्लाह से डरते रहो तो निःसन्देह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

130. और यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह प्रत्येक को अपनी दया से (दूसरे से) निश्चित² कर देगा। और अल्लाह बड़ा उदार तन्वज है।

131. तथा अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है, और हम ने तुम से पूर्व अहले किताब को तथा तुम को आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो। और यदि तुम कुफ्र (अवैजा) करोगे तो निस्सन्देह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह निस्पृह³ प्रशंसित है।

132. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है। और अल्लाह काम बनाने के लिये बस है।

133. और वह चाहे तो, हे लोगो! तुम्हें ले जाये⁴ और तुम्हारे स्थान पर

وَلَنْ يَتَذَكَّرَ أَقْبَىٰ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَلِيمٌ فَهِيمٌ ۖ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا

وَاللَّهُ مَالِكُ السَّمَوَاتِ وَمَالِكُ الْأَرْضِ ۖ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِآيَاتِهِ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ تَكْفُرًا لَّيَ بِلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا جَمِيلًا

وَاللَّهُ مَالِكُ السَّمَوَاتِ وَمَالِكُ الْأَرْضِ ۖ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِآيَاتِهِ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ تَكْفُرًا لَّيَ بِلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا جَمِيلًا

رَبِّ يُشَاءُ يَذَّكَّرُ إِلَيْهَا إِنِّي أَخَذْتُ الْعَهْدَ مِنْهُمْ وَلَئِنْ رَأَوْهُ لَيَكْفُرُنَّ بِهِ كُفْرًا كَثِيرًا ۚ وَلَئِنْ رَأَوْهُ لَيَكْفُرُنَّ بِهِ كُفْرًا كَثِيرًا ۚ وَلَئِنْ رَأَوْهُ لَيَكْفُرُنَّ بِهِ كُفْرًا كَثِيرًا ۚ وَلَئِنْ رَأَوْهُ لَيَكْفُرُنَّ بِهِ كُفْرًا كَثِيرًا ۚ

पति के हो।

1 अर्थात् सब के साथ व्यवहार तथा सहवास संबंध में बराबरी करो।

2 अर्थात् यदि निभाव न हो सके तो विवाह बंधन में रहना आवश्यक नहीं दोनों अलग हो जायें अल्लाह दोनों के लिये पति तथा पत्नी की व्यवस्था बना देगा।

3 अर्थात् उस की अवैजा से तुम्हारा ही धिगड़ेगा।

4 अर्थात् तुम्हारी अवैजा के कारण तुम्हें ध्वस्त कर दे। और दूसरे आज्ञाकारियों

दूसरों को ला दे। तथा अल्लाह ऐसा कर सकता है।

134. जो संसारिक प्रतिकार (बदला) चाहता हो तो अल्लाह के पाम संसार तथा परलोक दोनों का प्रतिकार (बदला) है। तथा अल्लाह सब की बात सुनता और सब के कर्म देख रहा है।

135. हे ईमान वाले! न्याय के साथ खड़े रह कर अल्लाह के लिये साक्षी (गवाह) बन जाओ। यद्यपि साक्ष्य (गवाही) तुम्हारे अपने अथवा माना पिता और समीपवर्तियों के विरुद्ध हो, यदि कोई धनी अथवा निर्धन हो तो अल्लाह तुम से अधिक उन दोनों का हितैषी है। अतः अपनी मनोकाक्षा के लिये न्याय से न फिरो। और यदि तुम बात घुमा फिरा कर करोगे, अथवा साक्ष्य देने में कतराओगे, तो निःसन्देह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम करते हो।

136. हे ईमान वाले! अल्लाह तथा उस के रसूल, और उस पुस्तक (कुर्आन) पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है, तथा उन पुस्तकों पर जो इस से पहले उतारी हैं, इमान लाओ। और जो अल्लाह तथा उस के फरिश्तों, उस की पुस्तकों और अन्त दिवस (प्रलय) को अस्वीकार करेगा, तो वह कुपथ में बहुत दूर जा पड़ा।

137. निःसन्देह जो ईमान लाये, फिर को पैदा कर दे

يَا حَيُّوْنَ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰٓ ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝

مَنْ كَانَ يُرِيْدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآٰخِرَةِ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا
بَصِيْرًا ۝

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ تَوَدُّوْنَ اَنْ تَكُوْنُوْا
شُهَدَآءَ اٰدِيْكُمْ وَلَوْ عَلٰٓى نَفْسِكُمْ اَوْ اٰوِيْدِيْنَ
وَالْاَقْرَبِيْنَ اِنْ يَكُنْ غِيْبًا اَوْ يُغَيِّرْ فَعَلَهُ اَوَّلُ
بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوْا الْهَوٰى اَنْ تَعْبُوْا وَلَنْ تُنۡوَا
اَوْ تُعۡرِضُوْا اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعۡمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ
وَالَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰٓى رَسُوْلِهِ وَالْكِتٰبَ الَّذِيْ نَزَّلَ مِنْ
قَبْلُ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَآ يَكُنِّهٖ وَكُتِبَ
وَلَيُّوْمِ الْاٰخِرَةِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ۝

رَبِّ الْاٰلَمِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ لَعَنُوْا اَنْفُسَكُمْ لَعَنُوْا ثُمَّ

काफिर हो गये, फिर इमान लाये,
फिर काफिर हो गये, फिर कुफ्र में
बढ़ते ही चले गये तो अल्लाह उन्हें
कदापि क्षमा नहीं करेगा और न
उन्हें सीधी डगर दिखायेगा।

أَزِدُّكَ ذُكْرًا ثُمَّ لَا يَنفَعُكَ اللَّهُ يَغْفِرَ لَكَ وَلِأَخِيكَ
سَبِيلًا ۝

138. (हे नबी!) आप मुनाफ़िकों
(द्विधावादियों) को शुभ सूचना सुना दें
कि उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

يُخَيِّرُ الْمُؤْمِنِينَ يَأْتِي لَهُمْ عَذَابٌ بَاطِلٌ ۝

139. जो इमान वालों को छोड़ कर,
काफ़िरो को अपना सहायक मित्र
बनाने हैं, क्या वह उन के पास मान
सम्मान चाहते हैं तो निःसन्देह सब
मान सम्मान अल्लाह ही के लिये¹ है।

وَالَّذِينَ يَتَّبِعُوكُم مِّنَ الْكُفْرَاءِ أَقْبِيَاءٌ مِّنْ ذُرِّيَةِ
الْمُؤْمِنِينَ أَتَتَّبِعُونَ عِندَهُمْ لُزُومَةً يَوْمَ الْحِسَابِ
يَوْمَ حَبِيبًا ۝

140. और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए
अपनी पुस्तक (क़र्आन) में यह
आदेश उतारा² दिया है कि जब
तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को
अस्वीकार किया जा रहा है, तथा
उन का उपहास किया जा रहा है
तो उन के साथ न बैठो, यहाँ तक
कि वह दूसरी बात में लग जायें।
निःसन्देह तुम उस समय उन्हीं के
समान हो जाओगे। निश्चय अल्लाह
मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) तथा
काफ़िरो सब को नरक में एकत्र
करने वाला है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكَ فِي الْكِتَابِ أَن تَرُدَّ آيَاتِهِ
الَّتِي كُفِرَ بِهَا وَيَسْتَهْزِئَ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ
حَتَّى تَخْرُجُوا فِي حَدِيثِ غَيْرِهِ إِنَّكُمْ إِذًا
بِشُلُوبِهِمْ إِنَّ اللَّهَ جَاهِلٌ الْغُفُورِينَ
وَالْكُفْرَاءِ فِي جَهَنَّمَ حَبِيبًا ۝

141. जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रहा करते
हैं यदि तुम्हें अल्लाह की सहायता से
विजय प्राप्त हो, तो कहते हैं क्या

وَالَّذِينَ يَتَّبِعُوكُم بَكْرَةً فَإِن كَانَ لَكُمْ قُوَّةٌ
الَّتِي قَالُوا أَن تَتَّبِعُوا مَعَكُمْ وَلَئِن كَانَ لِلْكُفْرَاءِ

1 अर्थात् अल्लाह के अधिकार में है, काफ़िरो के नहीं।

2 अर्थात् सूरह अनआम आयत नम्बर 68 में।

हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि उन (काफ़िरो) का पल्ला भारी रहे, तो कहते हैं कि क्या हम तुम पर छा नहीं गये थे, और तुम्हें इमान वालों से बचा रहे थे? तो अल्लाह ही प्रलय के दिन तुम्हारे बीच निर्णय करेगा। और अल्लाह काफ़िरो के लिये ईमान वालों पर कदापि काइ राह नहीं बनायेगा।^[1]

نَصِيبًا قَالُوا لَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ وَذَعَّيْتُمْ وَلَسْتُمْ مَعَكُمْ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ قَالُوا عَجَّلُوا بِكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يَوْمَ
يُجْعَلُ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا

142. वास्तव में मुनाफ़िक (द्विधावादी) अल्लाह को धोखा दे रहे हैं, जब कि वही उन्हें धोखे में डाल रहा¹ है, और जब वह नमाज़ के लिये खड़े होते हैं, तो आलसी होकर खड़े होते हैं, वह लोगो को दिखाने है, और अल्लाह का स्मरण थोड़ा ही करते हैं।

رَبِّ السَّادِقِينَ يُضِلُّهُمُ اللَّهُ وَهُوَ غَافٍ عَمَّهُمْ
وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا اللَّهَ فَأَمَّا أُولَئِكَ فَلَا يُتَّقَى
وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا

143. वह इस के बीच द्विधा में पड़े हुये है, न इधर न उधर। तथा जिसे अल्लाह कुपय कर दे तो आप उस के लिये कोइ राह नहीं पा सकेंगे।

لَمَّا بَدَأْنَا مِن دِينِكُمْ آلِ آلَافًا مِّن قَبْلِكَ
فَمَوْلَاهُ وَمَنْ يُضِلُّ اللَّهُ فَمَا لَهُ سَبِيلًا

144. हे ईमान वालो! ईमान वालों को

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَشْهَدُوا الْكَافِرِينَ

- 1 अर्थात् द्विधावादी काफ़िरो की कितनी ही सहायता करे, उन की ईमान वालों पर स्थायी विजय नहीं होगी। यहाँ से द्विधावादियों के आचरण और स्वभाव की चर्चा की जा रही है।

- 2 अर्थात् उन्हें अवसर दे रहा है जिसे वह अपनी सफलता समझते हैं। आयत 139 से यहाँ तक मुनाफ़िकों के कर्म और आचरण से संबंधित जो बातें बताई गई हैं वह चार हैं:

1 वह मुसलमानों की सफलता पर विश्वास नहीं रखते।

2 मुसलमानों की सफलता मिले तो उनके साथ हो जाते हैं, और काफ़िरो को मिले तो उन के साथ।

3 नमाज़ मन से नहीं बल्कि केवल दिखाने के लिये पढ़ते हैं।

4 वह ईमान और कुफ़्र के बीच द्विधा में रहते हैं।

छोड़ कर काफिरों को सहायक मित्र न बनाओ। क्या तुम अपन विरुद्ध अब्राह के लिये खुला तर्क बनाना चाहते हो?

أَوَلَيْسَ مِنَ الْقَوْمِ الشُّرَكَاءُ الَّذِينَ هُمْ يَدْعُونَ أَنْ
تَجْعَلُوا بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ حُجُورًا ۖ

145. निश्चय मुनाफिक (द्विधावादी) नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे। और आप उन का कोई सहायक नहीं पायेंगे।

إِنَّ السُّفَهَاءَ فِي الدَّرَجَاتِ ذَاتِ السُّفُلِ مِنَ النَّارِ
وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُمْ نَصِيرًا ۖ

146. परन्तु जिन्होंने ने क्षमा याचना कर ली, तथा अपना सुधार कर लिया, और अब्राह को मुद्दत पकड़ लिया, तथा अपने धर्म को विशुद्ध कर लिया, तो वह लोग इमान वालों के साथ होंगे। और अब्राह इमान वालों को बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِآيَاتِهِ
وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ وَلَهُتْ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ
وَسَوْفَ يُؤْتِيهِمُ اللَّهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ

147. अब्राह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दें, यदि तुम कृतज्ञ रहो, तथा इमान रखो, और अब्राह¹ बड़ा गुणग्राही अति जानी है।

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِكُمْ إِذَا شَكَرْتُمْ
وَالْمَشْكُورُ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۖ

148. अब्राह को अपशब्द (बुरी बात) की चर्चा नहीं भाती परन्तु जिस पर अत्याचार किया गया² हो। और अब्राह सब सुनता और जानता है।

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوَةِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا
مَنْ ظَلَمَ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ۖ

149. यदि तुम कोई भली बात खुल कर

إِنْ شِدَّ وَأَخْخِرَ الْأَعْفُوَّةَ أَوْ عَقَّبُوا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ

1 इस आयत में यह संकेत है कि अब्राह कुफल और सुफल मानव कर्म के परिणाम स्वरूप देता है। जो उसके निर्धारित किये हुए नियम का परिणाम होता है जिस प्रकार संसार की प्रत्येक चीज का एक प्रभाव होता है ऐसे ही मानव के प्रत्येक कर्म का भी एक प्रभाव होता है।

2 आयत में कहा गया है कि किसी व्यक्ति में कोई बुराई हो तो उस की चर्चा न करते फिरो। परन्तु उत्पीड़ित व्यक्ति अत्याचारी के अत्याचार की चर्चा कर सकता है।

करो अथवा उसे गुप्त करो या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो निःसंदेह अब्राह अति क्षमी सर्व शक्तिशाली है।

اَللّٰهُ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

150. जो लोग अब्राह और उस के रसूलों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) करते हैं, और चाहते हैं कि अब्राह तथा उस के रसूलों के बीच अन्तर करें, तथा कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान रखते हैं, तथा कुछ के साथ कुफ़्र करते हैं और इस के बीच राह¹ बनाना चाहते हैं।

اِنَّ الْاِيْمَانَ يَلْفُظُ يَاسُوْهُ وَرُسُلِهِ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّلْفُظُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُوْلُوْنَ نُوْمِنُ بِبَعْضٍ وَنُكْفِرُ بِبَعْضٍ وَنُرِيْدُوْنَ اَنْ يُخَوِّدُوْا بَيْنَ دِيْنِكَ سُبْحَانَ

151. वही शुद्ध काफिर है, और हम ने काफिरों के लिये अपमानकारी यातना तय्यार कर रखी है।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا وَلَعَنَدْنَا الْيٰكْفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا

152. तथा जो लोग अब्राह और उस के रसूलों पर ईमान लाये, और उन में से किसी के बीच अंतर नहीं किया, तो उन्हीं को हम उन का प्रतिफल प्रदान करेंगे, तथा अब्राह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ وَنُفِرُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اَوْ لَيْتَ سَوْفَرُؤُهُمْ اَجْرًا وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

153. हे नबी! आप से अहले किताब माँग करते हैं कि आप उन पर आकाश से कोई पुस्तक उतार दें, तो इन्होंने मसा से इस से भी बड़ी माँग की थी। उन्हीं ने कहा कि हमें अब्राह को प्रत्यक्ष² दिखा दो, तो इन के

يَسْئَلُكَ هٰٓؤُلَآءِ الْكِتٰبُ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِنْ سَمٰوٰتِنَا فَقَدْ سَآءَ الْاَوَّلُ مَوْسٰى اَلَّذِيْنَ ذٰلِكَ فَقَدُوْا اَرٰيْنَا اللّٰهَ جَهْرَةً وَاحِدًا نُّهَمُّ شَحِيْحَةً يَّظُنُّهُمْ اَنَّكُم مِّنْ اَعْيُنِنَا جَهْدًا نُّهَمُّ الْيَتِيْمٰتِ فَعَقُوْا اَنْفُسَكُمْ وَذٰلِكَ وَاسِيْنَا مَوْسٰى

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस है कि सब नबी भाई हैं उन के बाप एक और मायें अलग अलग हैं। सब का धर्म एक है, और हमारे बीच कोई नबी नहीं है। (सहीह बुखारी 3443)

2 अर्थात् आँखों से दिखा दो।

سَلَامًا يُرِيدُ

अत्याचारों के कारण इन्हें विजली ने धर लिया, फिर इन्होंने खुली निशानियाँ आने के पश्चात् बछड़े को पुज्य बना लिया, फिर हम ने इसे भी क्षमा कर दिया, और हम ने मूसा को खुला प्रभुत्व प्रदान किया।

154. और हम ने (उन से वचन लेने के लिये) उन के ऊपर तूर (पर्वत) उठा दिया, तथा हम ने उन से कहा द्वार में सज्दा करने हुये प्रवेश करो, तथा हम ने उन से कहा कि 'शनिवार'¹ के विषय में अति न करो। और हम ने उन से दृढ़ वचन लिया।

155. तो उन के अपना वचन भंग करने, तथा उन के अब्राह की आयतों के साथ कुफ्र करने, और उन के नबीयों को अवैध बध करने, तथा उन के यह कहने के कारण कि हमारे दिल बद हैं। (ऐसी बात नहीं है) बल्कि अब्राह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है। अतः इन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

156. तथा उन के कुफ्र और मरयम पर घोर आरोप लगाने के कारण।

157. तथा उन के (गर्व से) कहने के कारण कि हम ने अब्राह के रसूल मरयम के पुत्र: इसा मसीह को बध कर दिया, जब कि (वास्तव में) उसे बध नहीं किया। और न सलीब (फाँसी) दी, परन्तु उन के

وَرَفَعْنَا قُورَيْشَهُمُ الْفُتُورَ بَيْنَهُمْ وَقَبَّلَهُمْ
اُدْحُوا الْبَابَ حَقْدًا اَوْ قُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْبُدُوا
السَّبْتَ وَاحِدًا مِنْهُمْ وَمِنَّا فَعَلُوا لِيُحْكَمُوا

فَبِمَا نَفَعْنَاهُمْ مَبِيتًا قَوْمَهُمْ وَلَقَدْ هَمُّوا بِابْنِ
وَقَتْلِهِمُ الرَّاكِبَ اَيُّهَا الَّذِي وَقَوْلُهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا
بَنِي طَيْمَةَ نَبِيٍّ عَلَيْهِمُ الْكُفْرُ وَهُمْ قَدْ كَانُوا
اِلَّا قَلِيلًا

وَلَقَدْ هَمُّوا وَقَوْلُهُمْ عَلَى مَرْيَمَ نِسَاءً عَظِيمًا

وَقَوْلُهُمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ
اللّٰهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَقَالَ
الَّذِينَ اَخْتَلَفُوا فِيهِ لَوْلِيَ كَانَ لَهُمْ رِي
مِنْ عَلَيْهِمُ الْاِسْبَاقُ الظَّنُّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِيْنًا

लिये (इसे) सदिग्ध कर दिया गया। और निःसंदेह जिन लोगों ने इस में विभेद किया वह भी शंका में पड़े हुये हैं। और उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं केवल अनुमान के पीछे पड़े हुये हैं। और निश्चय उसे उन्होंने बध नहीं किया है।

158. बल्कि अब्राह ने उसे अपनी ओर (आकाश) में उठा लिया है, तथा अब्राह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

بَنَ رَافِعَهُ اللَّهُ تَرْكِيوً وَكَانَ اللَّهُ تَرَبُّدًا حَكِيمًا ۝

159. और सभी अहले किताब उस (ईसा) के मरण से पहले उस पर अवश्य ईमान¹ लायेंगे, और प्रलय के दिन वह उन के विरुद्ध साक्षी² होगा।

فَلَنْ يَكُونَ مِنَ الْكُفَّينَ إِلَّا الَّذِينَ سَنَّوْا فِي قُلُوبِهِمْ مَوَدَّةَ
وَمَوَدَّةً يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝

160. यहूदियों के (इन्हीं) अत्याचार के कारण हम ने उन पर स्वच्छ खाद्य पदार्थों को हराम (वर्जित) कर दिया जो उन के लिये हलाल (वैध) थे। तथा उन के बहुधा अब्राह की राह से रोकने के कारण।

فَيُطْلَبُ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَا دُونَ مَا عَلَيْهِمْ عَلَيْهِ
أُجِّلَتْ لَهُمْ وَيَصْلَحُ مِنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۝

161. तथा उन के व्याज लेने के कारण जब कि उन्हें उस से रोका गया था, और उन के लोगों का धन अवैध रूप से खाने के कारण, तथा

وَأَحْبَبُهُمْ إِلَهُهُمُ الرِّبَا وَوَقَدْ نُفَسُوا عَنْهُ وَأَطَاعُوا أَمْرًا
لِلنَّاسِ يَأْتِي بَطِينًا وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ۝

1 अर्थात् प्रलय के समीप इसा अलैहिस्सलाम के आकाश से उतरने पर उस समय के सभी अहले किताब उन पर ईमान लायेंगे और वह उस समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी होंगे। मलीक ताड़ देंगे और सूअरों को मार डालेंगे, तथा इस्लाम के नियमानुसार निर्णय और शासन करेंगे (सहीह बुखारी 2222 3449 मुस्लिम 155 156)

2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम प्रलय के दिन ईसाइयों के बारे में साक्षी होंगे। (देखिये-सूरह माइदा, आयत 117)

हम ने उन में से काफिरों के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।

162. परन्तु जो उन में से ज्ञान में पक्के हैं, तथा वह इमान वाले जो आप की ओर उतारी गयी (पुस्तक कुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गयी (पुस्तक) पर इमान रखते हैं, और जो नमाज की स्थापना करने वाले, तथा जकात देने वाले, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर इमान रखने वाले हैं, उन्हीं को हम बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

لَكِن لِّلَّذِينَ هُمْ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْتُونَ سِرًّا قَلِيلًا مِّنْ قَبْلِكَ
وَالْمُؤْمِنِينَ اسْمُهُمُ الْمُؤْمِنُونَ الْأُولَىٰ وَمِنْهُمُ الْكُفْرَاءُ وَالْمُؤْمِنُونَ
بِآلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُعْطِيهِم مَّا يَنْتَظِرُونَ ۝١٦٢

163. (हे नबी!) हम ने आप की ओर वैसे ही वही भेजी है, जैसे नूह और उस के पश्चान्त के भविष्यों के पास भेजी, और इब्राहीम तथा इस्माईल और इस्हाक तथा याकूब और उस की संतान तथा ईसा और अय्यूब, तथा यूनस और हारून तथा सुलैमान के पास वही भेजी, और हम ने दावूद को जबूर प्रदान ¹ की थी।

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ وَآلِهِ وَمِنْ قَبْلِكَ
وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَإِسَىٰ
وَيُوسُفَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ وَآتَيْنَا
دَاوُدَ زَبُورًا ۝١٦٣

164. कुछ रसूल तो ऐसे हैं जिन की चर्चा हम इस से पहले आप से कर चुके हैं। और कुछ की चर्चा आप से नहीं की है, और अल्लाह ने मूसा से वास्तव में बात की।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ قَدْ قَصَصْنَا
عَلَيْكَ قَصُّهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ
تَحْتِ الْبُورِ ۝١٦٤

1 वही का अर्थ: संकेत करना, दिल में कोई बात हाल देना गुप्त रूप से कोई बात कहना तथा संदेश भेजना है। हारिस रजयल्लाहु अन्हु ने प्रश्न किया: अल्लाह के रसूल आप पर वही कैसे आती है? आप ने कहा: कभी निरन्तर घंटी की ध्वनि जैसे आती है जो मेरे लिये बहुत भारी होती है। और यह दशा दूर होने पर मुझे सब बात याद रहती है। और कभी फरिश्ता मनुष्य के रूप में आकर मुझ से बात करना है तो मैं उसे याद कर लेता हूँ। (सहीह बुखारी 2 मुस्लिम 2333)

165. यह सभी रसूल शुभ सूचना मूनाने वाले और डराने वाले थे, ताकि इन रसूलों के (आगमन के) पश्चात् लोगों के लिये अल्लाह पर कोई तर्क न रह जाये। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

رُسُلًا مُّخْبِرِينَ وَمُنْذِرِينَ وَلَا يَكُونُ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ غَفِيرًا
حَكِيمًا ۝

166. (हे नबी!) (आप को यहूदी आदि नबी न मानें) परन्तु अल्लाह उस (क़र्बान) के द्वारा जिसे आप पर उतारा है, साक्ष्य (गवाही) देता है कि (आप नबी हैं)। उस ने इसे अपने ज्ञान के साथ उतारा है, तथा फरिश्ते साक्ष्य देते हैं और अल्लाह का साक्ष्य ही बहुत है।

لَكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ أَمْرًا يُبَيِّنُ
وَالْمَلَكُ يُشْهَدُونَ وَلِكُلِّ يَأْتِيهِ شَهِيدًا ۝

167. वास्तव में जिन्होंने ने क़ुफ़्र किया और अल्लाह की राह¹ से रोका वह सुपथ से बहुत दूर जा पड़े।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْطَلَوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ۝

168. निःसंदेह जो काफिर हो गये, और अत्याचार करते रह गये, तो अल्लाह ऐसा नहीं है कि उन्हें क्षमा कर दे, तथा न उन्हें कोई राह दिखायेगा।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَلَّمُوا الْقُرْآنَ لِیَغْفِرَ
لَهُمْ وَلَا يَجِدُوا لَهُمْ حَرِيقًا ۝

169. परन्तु नरक की राह, जिस में वह सदावामी होंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।

إِلَّا طَرِيقٌ يَجْعَلُ لَظَلَمِ الْبَاطِلِ فِيهَا أَسَدًا وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

170. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से रसूल सत्य

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرُّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ

1 अर्थात् कोई अल्लाह के सामने यह न कह सके कि हमें मार्गदर्शन देने के लिये कोई नहीं आया।

2 अर्थात् इस्लाम से रोका।

ले कर^१ आ गये हैं। अतः उन पर ईमान लाओ। यही तुम्हारे लिये अच्छा है, तथा यदि कुफ्र करोगे, तो अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

- 171 हे अहले किताब (ईसाइयो!) अपने धर्म में अधिकता न^२ करो, और अल्लाह पर केवल सत्य ही बोलो। मसीह मर्यम का पुत्र केवल अल्लाह का रसूल और उस का शब्द है, जिसे मर्यम की ओर डाल दिया, तथा उस की ओर से एक आत्मा^३ है। अतः अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि (अल्लाह) तीन है। इस से रुक जाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, इस के सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है, वह इस से पवित्र है कि उस का कोई पुत्र हो,

رَبُّكُمْ فَأَمْنُوا بِغَيْرِ كُفْرٍ وَسُتَقَرُّوا قِيَّانَ إِلَهِ
مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا
عَلَى اللَّهِ لَعْنًا إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ
مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلَّمَ اللَّهُ الْمَرْيَمَ وَرُوِّدَتْ
بِهِ فَامْنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا
ثَلَاثَةٌ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهُ وَاحِدٌ
سُبْحَانَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

- 1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्लाम धर्म लेकर आ गये। यहाँ पर यह बात विचारणीय है कि कुरआन ने किसी जानि अधवा देशवासी को संबोधित नहीं किया है वह कहता है कि आप पूरे मानव विश्व के नबी हैं तथा इस्लाम और कुरआन पूरे मानव विश्व के लिये सत्धर्म है जो उस अल्लाह का भेजा हुआ सत्धर्म है जिस की आज्ञा के आधीन यह पूरा विश्व है। अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ।
- 2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम को रसूल से पूज्य न बनाओ, और यह न कहो कि वह अल्लाह का पुत्र है, और अल्लाह तीन है पिता और पुत्र तथा पवित्रात्मा।
- 3 अर्थात् ईसा अल्लाह का एक भक्त है, जिसे अपने शब्द (कन्) अर्थात् "हो जा" से उत्पन्न किया है। इस शब्द के साथ उस ने फरिश्ते जिवरील का मर्यम के पास भेजा और उस ने उस में अल्लाह की अनुमति से यह शब्द फूँक दिया और ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुये। (इब्ने कसीर)

आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है और अल्लाह काम बनाने के¹ लिये बहून है।

172. मसीह कदापि अल्लाह का दास होने को अपमान नहीं समझना, और न (अल्लाह के) समीपवर्ती फरिश्ते, तथा जो व्यक्ति उस की (बंदना को) अपमान समझेगा, तथा अभिमान करेगा तो उन सभी को वह अपने पास एकत्र करेगा।

173. फिर जो लोग ईमान लाये तथा सत्यकर्म किये, तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल देगा, और उन्हें अपनी दया से अधिक भी देगा।² परन्तु जिन्होंने (बंदना को) अपमान समझा, और अभिमान किया, तो उन्हें दुखदायी यातना देगा। तथा अल्लाह के सिवा वह कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

174. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण³ आ गया है। और हम ने तुम्हारी ओर खुली बह्नी⁴ उतार दी है।

175. तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये, तथा इस (क़ुर्आन को) दृढ़ता से

لَنْ يَسْتَكْبِفَ السَّيِّئُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا
الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ وَمَنْ يَسْتَكْبِفْ عَنْ
حِبَادَتِهِ يَسْتَكْبِرْ تَكْبِيرُهُمْ لَيْسَ جُوعًا ۝

فَإِنَّا الْإِنْسَانَ أَسْنُوْا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فُتُوْا بِهِمْ
الْخُورْهُمْ وَتَزِيْزُهُمْ فِيْهِ وَأَمَّا الْبَرِّ
اسْتَكْبَرُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَهَٰذَا لَهُمْ عَذَابُ
الْأَلِيمِ ۝ وَلَا تَحْسَبُوْا أَنْ لَّهُمْ قَوْلًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ
وَلَا تَحْسَبُوْا ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَبِّكُمْ
وَأَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ۝

فَآمَنَ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِهِ وَخَصَّصُوا لَهَا

1 अर्थात् उसे क्या आवश्यकता है कि किसी को संसार में अपना पुत्र बना कर भेजे।

2 यहाँ (अधिक) से अभिप्राय: स्वर्ग में अल्लाह का दर्शन है। (मसीह मुस्लिम: 181 त्रिमिजी: 2552)

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमा।

4 अर्थात् क़ुर्आन शरीफ। (इब्ने जरीर)

पकड़ लिया वह उन्हीं को अपनी दया तथा अनुग्रह से (स्वर्ग) में प्रवेश देगा। और उन्हें अपनी ओर सीधी राह दिखा देगा।

فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةِ رَبِّهِمْ وَتُصَلَّى
وَهُمْ فِي يَوْمٍ إِلَیْهِ يَرْتَأَوْنَ ۝

176. (हे नबी!) वह आप से कलाला के विषय में आदेश चाहते हैं। तो आप कह दें कि वह कलाला के विषय में तुम्हें आदेश दे रहा है कि यदि कोई ऐसा पुरुष मर जाये जिस के संतान न हो, (और न पिता और दादा) और उस के एक बहन हो, तो उस के लिये उस के छोड़े हुये धन का आधा है। और वह (पुरुष) उस के पूरे (धन का) वारिस होगा यदि उस (बहन) के कोई संतान न हो, (और न पिता और दादा हों)। और यदि उस की दो बहनें हों (अथवा अधिक) तो उन्हें छोड़े हुये धन का दो तिहाई मिलेगा। और यदि भाई बहन दोनों हों तो नर (भाई) को दो नारियों (बहनों) के बराबर¹। भाग मिलेगा। अल्लाह तुम्हारे लिये (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि तुम कुपथ न हो जाओ, तथा अल्लाह सब कुछ जानता है।

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلِمَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لِسِرِّهِ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِيهَا إِنْ كُنَّ نِسَاءً وَلَا يَرِيهَا فَلَئِنْ لَكَ مِنْ تَرَكِهِ وَرَافٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُم مِّنْ أُخْتٍ فَلَهَا النِّصْفُ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذِينَ كَانُوا إِخْوَةً حَقٌّ مِّنْ الْأَمْوَالِ الَّتِي بَرَكَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ إِن تَصِلُوا إِلَى اللَّهِ فَبِإِلَهِكُمْ ۚ

1 कलाला की मीरास का नियम आयत नं० 12 में आ चुका। जो उस के तीन प्रकार में से एक के लिये था। अब यहाँ शेष दो प्रकारों का आदेश बनाया जा रहा है। अर्थात् यदि कलाला के सगे भाई बहन हों अथवा अल्लाती (जो एक पिता तथा कई माता से हों) तो उन के लिये यह आदेश है।

सूरह माइदा - 5

سورة المائدة

सूरह माइदा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है इस में 120 आयत है

- इस सूरह में शरीअत (धर्म विधान) के पूरे होने की घोषणा के साथ इस के आदेशों तथा नियमों के पालन और धार्मिक नियमों को लागू करने पर बल दिया गया है। यह चूँकि धार्मिक विधान के पूरे होने का समय था इस लिये व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में संबंधित धार्मिक आदेशों को बताने के साथ मुसलमानों को अल्लाह की प्रतिज्ञा पर अस्थित रहने पर बल दिया गया है। और इस संदर्भ में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि वह यहूदियों तथा ईसाइयों की नीति न अपनायें जिन्होंने वचन भंग कर दिया और धर्म विधान को नाश कर दिया और उस की सीमा से निकल भागे और धर्म में नड़-नड़ बाने पैदा कर ली। चूँकि कुर्आन की शैली मार्ग दर्शन तथा प्रशिक्षण की है इस लिये इन सभी बानों को मिला जुला कर वर्णित किया गया है ताकि मनो में धार्मिक नियमों के पालन की भावना पैदा हो जाये। इस में यहूदियों तथा ईसाइयों को अन्तिम सीमा तक झंझोड़ा गया है और मुसलमानों का मार्ग उजागर किया गया है।
- इस में प्रतिबंधों तथा अल्लाह से किये वचन के पालन और न्याय की नीति अपनाने पर बल दिया गया है।
- इस में धर्म के वह आदेश बताये गये हैं जो वैध तथा अवैध से संबंधित हैं।
- इस में प्रलय के दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गवाही देने की बात कही गई है। और ईसा (अलैहस्सलाम) का उदाहरण दिया गया है।
- इस में यहूदियों तथा ईसाइयों आदि को अरबी नबी पर ईमान लाने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो! प्रतिबंधों का पूर्ण रूप¹ से पालन करो तुम्हारे लिये सब पशु हलाल (वैध) कर दिये गये, परन्तु जिन का आदेश तुम्हें सुनाया जायेगा, सिवाये इस के कि तुम एहराम² की स्थिति में अपने लिये शिकार को हलाल (वैध) न कर लो, ब्रह्महत्या जो आदेश चाहता है, देता है।
2. हे ईमान वाले! अल्लाह की निशानियों³ (चिन्हों) का अनादर न करो, और न सम्मानित मासों⁴ का, और न (हज्ज की) क़र्बानी का, न उन में से जिन के गले में पट्टे पड़े हों, और न उन का जो अपने पालनहार की अनुग्रह और उस की प्रसन्नता की खोज में सम्मानित घर (काबा) की ओर जा रहे हों और जब एहराम खोल दो, तो शिकार कर सकते हो, तथा तुम्हें किसी गिराह की शक्नुता इस बात पर न उभार दे कि अन्याचार करने लगो, क्योंकि उन्होंने ने मस्जिदे हराम से तुम्हें रोक दिया था, सदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَتُوقُونَ بِالْعَفْوَةِ إِذْ أُخِلَّتْ
لَكُمْ بَهِيمَةُ الْأَعْيَادِ الْأَمْ تَلْبِغُونَ عَنْكُمْ غَيْرُ عَمَلِ
الصُّبْحِ وَأَنْتُمْ حُرْمَتُ اللَّهِ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ۚ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا
الشُّهُرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آيَاتِ
الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَتَفَوَّنَ قَصْدُكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَرِضْوَانًا
وَلَا تَحْلُوا سَطَاوُا وَلَا تَحْرِمُوا شَيْئًا مِنْ قَوْمٍ
أَنْ يَصَدُّوا وَلَكُمْ عَنِ السُّجُودِ الْحُرْمِ أَنْ تُغْتَدُوا
وَتَقْدُوا عَلَى الْبَيْتِ تَتَفَوَّنَ وَلَا تَحْلُوا وَلَا تَحْلُوا
إِلَّا لِلَّهِ وَالْعُدْوَانِ وَالْقَوْلِ اللَّهُ إِنْ أَرَادَ
شَيْئًا يُدْ لِحَقَابِ ۚ

- 1 यह प्रतिबंध धार्मिक आदेशों से संबंधित हों अथवा आपस के हों।
- 2 अर्थात् जब हज्ज अथवा उमरे का एहराम बांधे रहो।
- 3 अल्लाह की बंदना के लिये निर्धारित चिन्हों का।
- 4 अर्थात् जुलकादा जुलहिन्जा, मुहर्रम तथा रजब के मासों में युद्ध न करो।

करो तथा पाप और अन्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो। और अल्लाह से डरने रहो। निस्सन्देह अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

3. तुम पर मुर्दार¹ हराम (अवैध) कर दिया गया है, तथा (बहता हुआ) रक्त और सूअर का मांस, तथा जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो, तथा जो श्वास रोध और आघात के कारण, तथा गिर कर और दूसरे के सींग मारने से मरा हो, तथा जिसे हिंसक पशु ने खा लिया हो, परन्तु इन में² से जिसे तुम बध (जिह्द) कर लो, और जिसे धान पर बध किया गया हो, और यह कि पासे द्वारा अपना भाग्य निकालो, यह सब आदिश उल्लंघन के कार्य है। आज काफ़िर तुम्हारे धर्म से निराश³ हो गये हैं। अतः उन से न डरो, मुझी से डरो। आज⁴ मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है। तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالذَّمْرُ وَالْحَمْرُ وَمَا أَكَلَ السَّبْعُ إِلَّا
أُولُو عَيْبِهِ وَالشَّيْطَانُ وَالْمَوْقُذَةُ
وَالْبَازِيَّةُ وَالنَّطِيطَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبْعُ إِلَّا
مَا ذَكَّبْتُمْ وَلَا يَكُونُ عَلَى السَّيْبِ وَأَنْ تَشْفَعُوا
بِالْأَرْكَامِ وَالْيَوْمِ يَمُوتُ الْيَوْمَ يَمُوتُ الْيَوْمَ الْكَافِرُ
مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَحْسَبُوهُمْ وَاحْتَسِبُوا الْيَوْمَ الْكَافِرُ
لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَأَنْتُمْ عَلَى يَمِينٍ وَرَمَيْتُمْ لَكُمْ
لِإِسْلَامِ دِيْنِكُمْ فَمَنْ اضْطُرَّ فِي عَمَلِهِ فَيُغَيِّرَ
مَنْهَا يَبْغِ لِيَوْمِهِ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

- 1 मुर्दार से अभिप्राय वह पशु है जिसे धर्म के नियमानुसार बध (जिह्द) न किया गया हो
- 2 अर्थात् जीवित मिल जाये और उसे नियमानुसार बध (जिह्द) कर दो
- 3 अर्थात् इम से कि तुम फिर मे मूर्तियों के पुजारी हो जाओगे।
- 4 सूरह बकरह आयत न० 28 में कहा गया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह प्रार्थना की थी कि "इन में से एक आज्ञाकारी समुदाय बना दे"। फिर आयत 150 में अल्लाह ने कहा कि "अल्लाह चाहता है कि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे" और यहाँ कहा कि आज अपना पुरस्कार पूरा कर दिया। यह आयत हज्जतुल बदाअ में अरफा के दिन अरफान में उतरी। (सहीह बुखारी 4606) जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अंतिम हज्ज था, जिस के लगभग तीन महीने बाद आप संसार से चले गये।

कर दिया, और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया। फिर जो भूक से आतुर हो जाये जब कि उस का झुकाव पाप के लिये न हो, (प्राण रक्षा के लिये खा ले) तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

4. वे आप से प्रश्न करते हैं कि उन के लिये क्या हलाल (वैध) किया गया? आप कह दें कि सभी स्वच्छ पवित्र चीजें तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दी गयी हैं। और उन शिकारी जानवरों का शिकार जिन को तुम ने उस ज्ञान द्वारा जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से कुछ मिखा कर सधाया हो। तो जो (शिकार) वह तुम पर रोक दें उस में से खाओ, और उस पर अल्लाह का नाम¹ लो। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसन्देह अल्लाह शीघ्र हिमाय लेने वाला है।

5. आज सब स्वच्छ खाद्य तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दिये गये हैं। और ईमान वाली सतवती स्त्रियाँ, तथा उन में से सतवती स्त्रियाँ जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं। जब कि उन को उन का महर (विवाह

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَهُمُ كُلُّ شَيْءٍ مَّا رَزَقْنَاهُمْ إِلَّا مَا سَمَوْا عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۖ وَطَعَامُ الذِّئَابِ ۖ وَأَوْتُوا الْكِتَابَ ۖ لَكُمُ الْكُتُبُ ۖ وَطَعَامُ كُلِّ ذِي نَبَاتٍ ۚ وَالْحَصَىٰ مِنَ الشَّوَابِ ۚ وَأَوْتُوا الْكِتَابَ ۚ مِنْ قَبْلِكُمْ ۚ إِذْ آتَيْنَاهُمُ الْغُرُفَ ۚ ثُمَّ نَبَّيْنَاهُمْ عَلَىٰ أَسْفَافِهِمْ ۚ وَأَلَمْ يَجِدُوا أَهْلَهَا ۚ وَكُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

- 1 अर्थात् सधाये हुये कृत्ते और बाज शिकारे आदि का शिकार, उस के शिकार के उचित होने के लिये निम्नलिखित दो बानें आवश्यक हैं:

1 उसे बिस्मिल्लाह कह कर छाड़ा गया हो। इसी प्रकार शिकार जीवित हो तो बिस्मिल्लाह कर के वध किया जाये।

2 उस ने शिकार में से कुछ खाया न हो। (बुखारी: 5478 मु-1930)

उपहार) चुका दिया हो, विवाह में लाने के लिये, व्याभिचार के लिये नहीं और न प्रेमिका बनाने के लिये। और जो ईमान को नकार देगा उस का सत्कर्म व्यर्थ हो जायेगा, तथा परलोक में वह विनाशों में होगा।

6. हे ईमान वालो! जब नमाज के लिये खड़े हो तो (पहले) अपने मुँह तथा हाथों को कुहनियों तक धो लो, और अपने सिरों का मसह¹ कर लो, तथा अपने पावों टखनों तक (धो लो) और यदि जनावत² की स्थिति में हो तो (स्नान कर के) पवित्र हो जाओ। तथा यदि रोगी अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आये, अथवा तुम ने स्त्रियों को स्पर्श किया हो और तुम जल न पाओ तो शुद्ध धूल से तयम्मूम कर लो, और उस से अपने मुखों तथा हाथों का मसह³ कर लो। अल्लाह तुम्हारे लिये कोई संकीर्णता (तंगी) नहीं चाहता। परन्तु तुम्हें पवित्र करना चाहता है, और ताकि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे, और ताकि तुम कृन्ज बनो।

7. तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ
أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُم مِّنَ الْمَاءِ
فَضَحَّضُوا ۚ وَإِنْ لَمْ يَجِدْ مَاءً فَتَيَمَّمُوا
صَوْبًا نَّظِيرًا ۚ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ
مِمَّا يَرِيدُ ۚ إِنَّهُ يَجْعَلُ لِكُلِّ شَيْءٍ مِّنْ حَرَمٍ
وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُخَفِّرَكُمْ ۚ وَهُوَ بِمَا تَعْمَلُونَ
عَلِيمٌ ۚ

وَذَكِّرُوا أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ ۚ

- 1 मसह का अर्थ है दोनों हाथ भिगो कर सिर पर फेरना।
- 2 जनावत से अभिप्राय वह मलिनता है जो स्वप्न दोष तथा स्त्री संभोग से होती है। यही आदेश मार्मिक धर्म तथा प्रसव का भी है।
- 3 हदीस में है कि एक यात्रा में आडशा रजियल्लाहु अन्हा का हार खी गया जिस के लिये बैदा के स्थान पर रुकना पड़ा। और की नमाज के वुजू के लिये पानी नहीं मिल सका और यह आयत उन्नी। (देखिये: महीह बुखारी 4607) मसह का अर्थ हाथ फेरना है। तयम्मूम के लिये देखिये सूरह निसा, आयत 43)

और उस दृढ़ वचन को याद करो जो तुम से लिया है। जब तुम ने कहा: हम ने सुन लिया और आज्ञाकारी हो गये। तथा अल्लाह से डरने रहो। निःसंदेह अल्लाह दिलों के भेदों को भली भाँति जानने वाला है।

وَتَقَرَّبْكُمْ إِلَيْهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

8. हे ईमान वाले! अल्लाह के लिये खड़े रहने वाले, न्याय के साथ साक्ष्य देने वाले रहो, तथा किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस पर न उभार दे कि न्याय न करो। वह (अर्थात् सब के साथ न्याय) अल्लाह से डरने के अधिक समीप¹ है। निःसंदेह तुम जो कुछ करने हो अल्लाह उस में भली भाँति सूचित है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ
شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَا
ئُكُمْ عَلَى كَرِهٍ لَكُمْ بِإِذْنِ الْغَافِلِينَ
يَتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا
تَعْمَلُونَ

9. जो लोग ईमान लाये तथा सन्कर्म किये तो उन से अल्लाह का वचन है कि उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

وَيَذَرُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ تَغْفِيرٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ

10. तथा जो काफिर रहे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहा, तो वही लोग नारकी है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ

11. हे ईमान वाले! उस समय को याद करो जब एक गिरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाना² चाहा तो अल्लाह ने

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ذُكِّرُوا بِمَا فَعَلَتِ
عَلَيْكُمْ رُذُلُهُمْ قَوْمٌ لَا يَنْبَغُونَ لَكُمْ

1 हदीस में वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो न्याय करते हैं वह अल्लाह के पास नूर (प्रकाश) के मंच पर उस के दायें ओर रहेंगे और उस के दोनों हाथ दायें हैं- जो अपने आदेश तथा अपने परिजनों और जो उन के अधिकार में हो, में न्याय करते हैं। (सहीह मुस्लिम 1827)

2 अर्थात् तुम पर आक्रमण करने का निश्चय किया तो अल्लाह ने उन के आक्रमण से तुम्हारी रक्षा की। इस आयत से सम्बन्धित बृखारी में सहीह हदीस आती है कि

उन के हाथों को तुम से रोक दिया,
तथा अब्ब्राह से डरते रहो, और
ईमान वालों को अब्ब्राह ही पर निर्भर
करना चाहिये।

أَيُّدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا
اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ قَيْدُ كُلِّ الْمُؤْمِنِينَ

12. तथा अब्ब्राह ने बनी इस्राईल से
(भी) दृढ़ वचन लिया था, और उन
में बारह प्रमुख नियुक्त कर दिये थे,
तथा अब्ब्राह ने कहा था कि मैं तुम्हारे
साथ हूँ, यदि तुम नमाज की स्थापना
करते, और जकात देते रहे, तथा मेरे
रसूलों पर ईमान (विश्वास) रखते,
और उन को समर्थन देते रहे, तथा
अब्ब्राह को उत्तम ऋण देते रहे, तो
मैं अवश्य तुम को तुम्हारे पाप क्षमा
कर दूँगा, और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में
प्रवेश दूँगा जिन में नहरें प्रवाहित
होंगी। और तुम में से जो इस कें
पश्चात् भी कुफ़र (अविश्वास) करेगा
वह सुपथ¹ से विचलित हो गया।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَبِيًّا وَقَالَ اللَّهُ
رَبُّكُمْ لَئِنْ قُمْتُمْ تَصَلُّوا وَمَاتُمْ تَصَدَّقُوا
وَأَقْرَضُوا وَمَسَّكُمُ الرَّسُولُ وَحَرُّ يَوْمِئِذٍ
وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ

13. तो उन के अपना वचन भंग करने के
कारण हम ने उन को धिक्कार दिया,
और उन के दिलों को कड़ा कर
दिया वह अब्ब्राह की वानों को उन

فَبِمَا نَقُصُّهُمْ عَلَيْكَ أَنَّهُمْ كَفَرُوا بَعْدَ مَا
وَعَدْنَا لَهُمْ وَنَجَّيْنَاهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ
فَلَمَّا كَفَرُوا بَعْدَ مَا كُنَّا نَعِدُهُمْ
وَعَدًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ
وَلَأُعَذِّبَنَّهُمْ عَذَابًا قَسِيًّا الَّذِي كَانُوا
يَعْتَدُونَ

एक युद्ध में नबी मल्लल्लाहु अलैहि व मल्लम एकान्त में एक पेड़ के नीचे विश्राम
कर रहे थे कि एक व्यक्ति आया और आप की तलवार खींच कर कहा तुम को
अब मुझ से कौन बचायेगा? आप ने कहा: अब्ब्राह! यह सुनते ही तलवार उस के
हाथ से गिर गई। और आप ने उसे क्षमा कर दिया। (सहीह बुखारी 4139)

- 1 अब्ब्राह को ऋण देने का अर्थ उस के लिये दान करना है। इस आयत में ईमान
वालों को सावधान किया गया है कि तुम अहले किताब यहूद और नमारा जैसे
न हो जाना जो अब्ब्राह के वचन को भंग कर के उस की धिक्कार के अधिकारी
बन गये। (इब्ने कसीर)

कें वास्तविक स्थानों से फेर देते¹ है, तथा जिस बात का उन को निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, और (अब) आप बराबर उन के किसी न किसी विश्वासघात से सूचित होते रहेंगे परन्तु उन में बहुत थोड़े के सिवा जो ऐसा नहीं करते, अतः आप उन्हें क्षमा कर दें, और उन को जाने दें निस्संदेह अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

وَلَا تَزَالُ تَطْغِي عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَأَعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْخَيْرِينَ

14. तथा जिन्हों ने कहा कि हम नसारा (इसाई) हैं हम ने उन से (भी) दृढ़ वचन लिया था, तो उन्हें जिस बात का निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया तो प्रलय के दिन तक के लिये हम ने उन के बीच शत्रुता तथा पारस्परिक (आपसी) विद्वेष भड़का दिया, और शीघ्र ही अल्लाह जो कुछ वह करते रहे हैं, उन्हें¹ बना देगा।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ نُقِيمُوا وَتُؤْتَىٰ يَتِيمَتُهُم مِّنْهُنَّ مَا كَانُوا يَصْعَقُونَ

- 1 सहीह हदीस में आया है कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक नर और नारी को लाये जिन्हों ने व्यभिचार किया था, आप ने कहा तुम तौरात में क्या पाते हो? उन्होंने कहा उन का अपमान करें और कांडे मारें। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा तुम झूठे हो। बल्कि उस में (रज्म) करने का आदेश है। तौरान लाओ। वह तौरान लाये तो एक ने रज्म की आयत पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे पढ़ दिया। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा हाथ उठाओ। उस ने हाथ उठाया तो उस में रज्म की आयत थी। (सहीह बुखारी 3559, सहीह मुस्लिम - 1699)
- 2 आयत का अर्थ यह है कि जब ईसाइयों ने वचन भंग कर दिया तो उन में कई परस्पर विरोधी सम्प्रदाय हो गये, जैसे याकूबिय्य नसतरिय्य आर्यमिय्य और सभी एक दूसरे के शत्रु हो गये। तथा इस समय आर्थिक और राजनितिक सम्प्रदायों में विभाजित हो कर आपस में रक्तपात कर रहे हैं। इस में भी मुसलमानों को सावधान किया गया है कि कुर्आन के अर्थों में परिवर्तन कर के ईसाइयों के समान सम्प्रदायों में विभाजित न होना।

15. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं¹, जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहे हैं जिन्हें तुम छुपा रहे थे, और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं, अब तुम्हारे पास अब्राह की ओर से प्रकाश तथा खुली पुस्तक (कुर्आन) आ गई है।

16. जिम के द्वारा अब्राह उन्हें शान्ति का मार्ग दिखा रहा है, जो उस की प्रसन्नता पर चलते हों, उन्हें अपनी अनुमति से अंधेरो से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है और उन्हें सुपथ दिखाना है।

17. निश्चय वह काफिर² हो गये, जिन्होंने कहा कि मर्यम का पुत्र मसीह ही अब्राह है। (हे नबी!) उन में कह दो कि यदि अब्राह मर्यम के पुत्र और उस की माता तथा जो भी धरती में है सब का विनाश कर देना चाहे, तो किसी में शक्ति है कि वह उसे रोक दे? तथा आकाशों और धरती और जो भी इन के बीच है, सब अब्राह ही का राज्य है, वह जो चाहे उत्पन्न करता है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

18. तथा यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अब्राह के पुत्र तथा प्रियवर हैं। आप पूछें कि फिर वह तुम्हें

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا
بَيِّنَاتٌ لَكُمْ كَثِيرَاتٌ مِنْهُنَّ أَسْمَاءُ لَكُمْ تَخْفُونَ مِنْ
لَحْيَتِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ قَدْ
جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ
مُبِينٌ

يَهْدِي بِوَالِهِ مِنَ السَّبْعِ بِرُضْوَانِهِ
سَبِيلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيَهُمْ إِلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ
السَّيِّئَةَ ابْنُ مَرْيَمَ لَمَّا قَامَ يُصَلِّي
اللَّهُ يَشِيقُ رَادَّ أَنْ يُقْرِفَ تَسْبِيحَ
مَرْيَمَ وَآمَنَ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَلِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى عَنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ
وَأَجَابُوا قُلُوبَهُمْ بُعْدًا بِمَا يُدْعَوْنَ لِيَكُونَ مِنْهُمْ

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लमा तथा प्रकाश से अभिप्राय कुर्आन पाक है।

2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम के अब्राह होने की मिथ्या आस्था का खण्डन किया जा रहा है।

तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुम भी वैसे ही मानव पुरुष हो जैसे दूसरे हैं, जिन की उत्पत्ति उस ने की है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा आकाशों और धरती तथा जो उन दोनों के बीच है, अल्लाह ही का राज्य (अधिपत्य) ¹ है, और उसी की ओर सब को जाना है।

19. हे अहले किताब! तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बद होने के पश्चात् हमारे रसूल आ गये ² हैं, वह तुम्हारे लिये (सन्ध को) उजागर कर रहे हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

20. तथा याद करो, जब मूसा ने अपनी जाति से कहा हे मेरी जाति! अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो कि उस ने तुम में नबी और शासक बनाये तथा तुम्हें वह कुछ दिया जो संसार बासियों में किसी को नहीं दिया।

يَسْتَفْتِنُ خَلْقَ يَعْرِفُ مَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَعْلَمُ مُنْذُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى قُرْآنٍ مِّنَ الْوَحْيِ لَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ قَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَرَدَّ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَقُولُوا إِذْ زُيِّنَ لَهُمْ أَنَّهُ عَلَيْهِمْ دَجُنَّ فِئْتَكُمُ الْكِبَايَا وَجَعَلَكُمْ مَقَاقِلًا ۚ وَاتَّخَذُوا السُّلُوكَ أَخَذًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ۝

- 1 इस आयत में इसाइयों तथा यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया जा रहा है कि वह अल्लाह के प्रियवर हैं, इस लिये जो भी करें, उन के लिये मुक्ति ही मुक्ति है।
2 अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसा अलैहिस्सलाम के छः सौ वर्ष पश्चात् 610 ई. में नबी हुये। आप के और इसा अलैहिस्सलाम के बीच कोई नबी नहीं आया।

21. हे मेरी जानि! उस पवित्र धरती (बैतुल मक़दिस) में प्रवेश कर जाओ, जिसे अब्बाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है, और पीछे न फिरो, अन्यथा असफल हो जाओगे।

22. उन्होंने ने कहा: हे मूसा! उस में बड़े बलवान लोग हैं, और हम उस में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक वह उस से निकल न जायें, तभी हम उस में प्रवेश कर सकते हैं।

23. उन में से दो व्यक्तियों ने जो (अब्राह से) डरते थे, जिन पर अब्राह ने पुरस्कार किया, कहा कि: उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ, तुम जब उस में प्रवेश कर जाओगे, तो निश्चय तुम प्रभुत्वशाली होगे। तथा अब्राह ही पर भरोसा करो यदि तुम ईमान वाले हो।

24. वह बोले: हे मूसा! हम उस में कदापि प्रवेश न करेंगे, जब तक वह उस में (उपस्थित) रहेंगे, अतः तुम और तुम्हारा पालनहार जाये, फिर तुम दोनों युद्ध करो, हम यही बैठे रहेंगे।

25. (यह दशा देख कर) मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर कोई अधिकार नहीं रखता। अतः तू हमारे तथा अवैज्ञाकारी जानि के बीच निर्णय कर दे।

26. अब्राह ने कहा: वह (धरती) उन पर चालीस वर्ष के लिये हराम (वर्जित)

يَقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ
اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقُضُوا
وَعْدَكُمْ ۚ

قَالُوا يَٰمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَالِيَّتَ ۖ قَالُوا
لَنْ نَدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا ۚ قَالُوا يَخْرُجُوا مِنْهَا
فَإِنَّا نَدْخُلُونَّ ۚ

قَالَ رَحُلِي مِنَ الدِّينِ يَخْلِفُونَ نَعْمَ اللَّهُ
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ
فَأَنْتُمْ عَلَيْهِمُ هَٰ وَ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلُوا إِن
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

قَالُوا يَٰمُوسَىٰ إِنَّ لَنَا دَخَلَهَا أَبَدًا مَا هِيَ
فَدَاغِبْنَاكَ وَرَبُّكَ نَقَاتِلَ آثَاهُمَا
فَعِيدُونَ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي
فَافْرُقْ بَيْنَ وَبَيْنَ قَوْمِ الْمَظْهُورِينَ ۝

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً

कर दी गई। वह धरती में फिरते रहेंगे अतः तुम अवैज्ञाकारी जाति पर तरस न खाओ।¹

يَنْهَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ۝

27. तथा उन को आदम के दो पुत्रों का सहीह समाचार² सुना दो, जब दोनों ने एक उपायन (कुर्बानी) प्रस्तुत की, तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से स्वीकार नहीं की गई। उस (दूसरे) ने कहा: मैं अवश्य तेरी हत्या कर दूंगा। उस (प्रथम) ने कहा: अब्राह आजाकारियों ही से स्वीकार करता है।

وَأَنذِرْ عَلَيْهِم بَنِي إِدْرَى الْحَقَّ إِذْ قَرَّبَا
قُرْبَانًا فَتُقْبَلُ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ
الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ
الْمُتَّقِينَ ۝

28. यदि तुम मेरी हत्या करने के लिये मेरी ओर हाथ बढ़ाओगे³, तो भी मैं तुम्हारी ओर तुम्हारी हत्या करने के लिये हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ। मैं विश्व के पालनहार अब्राह से डरता हूँ।

لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسٍ
بِئْسَ إِلَهٌ إِذْ تَقْتُلُنِي أَنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ۝

29. मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी (हत्या के) पाप और अपने पाप के साथ फिरो, तो नारकी हो जाओगे, और यही अन्याचारियों का प्रतिकार (बदला) है।

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبْوَأَ بِإِثْمِي وَإِثْمُكَ فَفَكُونْ
مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब मुम्मा अनैहिस्सलाम बनी इसराइल को ले कर मिस्र से निकले तो अब्राह ने उन्हें बैबुल मर्कदस में प्रवेश कर जाने का आदेश दिया जिस पर अमालिका जाति का अधिकार था। और वही उस के शासक थे परन्तु बनी इसराइल ने जो कायर हो गये थे, अमालिका से युद्ध करने का साहस नहीं किया। और इस आदेश का विरोध किया, जिस के परिणाम स्वरूप उसी क्षेत्र में 40 वर्ष तक फिरते रहे। और जब 40 वर्ष बीत गये, और एक नया वंश जो साहसी था पैदा हो गया तो उस ने उस धरती पर अधिकार कर लिया। (इब्ने कसीर)

2 भाष्यकारों ने इन दोनों के नाम काबील और हावील बनाये हैं।

3 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा जो भी प्राणी अन्याचार से मारा जाये तो आदम के प्रथम पुत्र पर उन के खून का भाग होता है क्योंकि उसी ने प्रथम हत्या की रीति बनाई है। (सहीह बुखारी: 6867, मुस्लिम: 1677)

30. अतः उस ने स्वयं को अपने भाई की हत्या पर तय्यार कर लिया, और बिनाशों में हो गया।

قَطَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَفَتَنَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

31. फिर अब्राह ने एक कौआ भेजा, जो भूमि कुरंद रहा था, ताकि उसे दिखाये कि अपने भाई के शव को कैसे छुपाये उस ने कहा: मझ पर खेद है। क्या मैं इस कौआ जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छुपा सकूँ फिर बड़ा लज्जन हुआ।

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحِثُ فِي الْأَرْضِ يَأْتِيهِ كَيْفَ يُوْرِي سُوْدَةً أَحْيَا قَالَ يُوْنِثَى أَخْبَرْتُكُمْ أَنَّ الْكَوْنِ مِثْلَ هَذِهِ الْغُرَابِ فَأُوْرِي سُوْدَةً أَتَى فَأَصْبَحَ مِنَ الشَّادِيْنَ ۝

32. इसी कारण हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया¹ कि जिस ने भी किसी प्राणी की हत्या की किसी प्राणी का खून करने अथवा धरती में विद्रोह के बिना तो ममझो उस ने पूरे मनुष्यों की हत्या² कर दी। और जिस ने जीवित रखा एक प्राणी को तो वास्तव में उस ने जीवित रखा सभी मनुष्यों को। तथा उन के पास हमारे रसूल खुली निशानियाँ लाये, फिर भी उन में से अधिकांश धरती में विद्रोह करने वाले हैं।

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ تَبِيِّ إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ لَعَنَ كَثِيرٌ مِنْهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَئِيْلُونَ ۝

33. जो लोग³ अब्राह और उस के रसूल से युद्ध करने हों, तथा धरती में उपद्रव करते फिर रहे हों, उन का दण्ड यह है कि उन की हत्या

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُضَادُّونَ اللَّهَ وَرُسُلَهُ وَيَقْتُلُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأرجُلُهُمْ مِّنْ

1 अर्थात् नियम बना दिया इस्लाम में भी यही नियम और आदेश है।

2 क्यों कि सभी प्राण प्राण होने में बराबर हैं।

3 इस आयन में देश द्रोहियों तथा तस्करों को दण्ड देने का नियम तथा आदेश बताया जा रहा है। तथा अब्राह और उस के रसूल के आदेशों के उल्लंघन को उन के विरुद्ध युद्ध कहा गया है। (अधिक विवरण के लिये देखिये सहीह बुखारी हदीस - 4610)

की जाये, तथा उन्हें फाँसी दी जाये, अथवा उन के हाथ पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिये जायें, अथवा उन्हें देश निकाला दे दिया जाये। यह उन के लिये संसार में अपमान है, तथा परलोक में उन के लिये इस से बड़ा दण्ड है।

جَلَابٍ أَوْ يُشَفُّوْا مِنْ أَرْضٍ دَلِيْلُكُمْ
جَزَآءٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ

34. परन्तु जो तौबा (क्षमा याचना) कर लें, इस से पहले कि तुम उन्हें अपने नियंत्रण में लाओ, तो तुम जान लो कि अब्राह अति क्षमाशील दयावान् है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْبَلَوْا
عَلَيْهِمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُوْرٌ رَحِيْمٌ

35. हे ईमान वालो! अब्राह (की अवैजा) से डरते रहो, और उस की ओर वसीला¹ खोजो तथा उस की राह में जिहाद करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا
إِلَيْهِ لَوْ سِيْرَةً وَاعْبُدُوْهُ فِي سَبِيْلِهِ
لَعَلَّكُمْ تَقْبَلُوْنَ

36. जो लोग काफिर है यद्यपि धरती के सभी (धन धान्य) उन के अधिकार (स्वामित्व) में आ जायें और उसी के समान और भी हो, ताकि वे, यह सब प्रलय के दिन की यातना से अर्ध दण्ड स्वरूप देकर मुक्त हो जायें, तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जायेगा, और उन्हें दुखदायी यातना होगी।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَتَرًا
الْأَرْضِ جَمِيْعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ يَفْتَدُوْا بِهِ مِنْ
عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ وَهُمْ
عَذَابٌ بَیِّنٌ

37. वह चाहेंगे कि नरक से निकल जायें, जब कि वह उस से निकल नहीं

يُرِيدُوْنَ أَنْ يُخْرَجُوْا مِنَ النَّارِ وَمِنْهُمْ

1 (वसीला) का अर्थ है अब्राह की आज्ञा का पालन करने और उस की अवैजा से बचने तथा ऐसे कर्मों के करने का जिन से वह प्रसन्न हो वसीला हदीस में स्वर्ग के उस सर्वोच्च स्थान को भी कहा गया है जो स्वर्ग में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को मिलेगा जिस का नाम ((मकामे महमूद)) है इसी लिये आप ने कहा आ आज्ञान क पश्चान् मरे लिये वसीला की दुआ करेगा वह मेरी सिफारिश के योग्य होगा। (बुखारी- 4719) पीरो और फकीरों आदि की समाधियों को वसीला समझना निर्मूल और शिर्क है

सकेंगे, और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

يُحْرَجُونَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٠﴾

38. चोर, पुरुष और स्त्री दोनों के हाथ काट दो, उन के करतून के बदले, जो अब्राह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड है।¹ और अब्राह प्रभावशाली गुणी है।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ قُطِّعُوا أَيْدِيَهُمَا حِرَاقًا ۚ وَكُتِبَ عَلَيْكُمُ الذُّكْرُ ۖ وَلِلَّهِ غَيْرُكُمْ مَكْرُومٌ ﴿٥١﴾

39. फिर जो अपने अत्याचार (चोरी) के पश्चात् तौब (क्षमा याचना) कर ले, और अपने को सुधार ले, तो अब्राह उस की तौब स्वीकार कर लेगा², निःसन्देह अब्राह अनि क्षमाशील दयावान् है।

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ ۖ وَأَصْلَحَ ۖ فُورَ اللَّهُ بِتُوبِهِ ۖ عَلَيْهِ رِزْقٌ مِّنْ اللَّهِ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٢﴾

1 यहाँ पर चोरी के विषय में इस्लाम का धर्म विधान वर्णित किया जा रहा है कि यदि चौथाई दीनार अथवा उस के मूल्य के सामान की चोरी की जाये, तो चोर का सीधा हाथ कलाइ से काट दो। इस के लिये स्थान तथा समय के और भी प्रतिबंध हैं। शिक्षाप्रद दण्ड होने का अर्थ यह है कि दूसरे इस से शिक्षा ग्रहण करें, ताकि पूरा देश और समाज चोरी के अपराध से स्वच्छ और पवित्र हो जाये। तथा यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस घोर दण्ड के कारण, इस्लाम के चौदह सौ वर्षों में जिन्हें यह दण्ड दिया गया है वह बहुत कम हैं। क्योंकि यह सजा ही ऐसी है कि जहाँ भी इस को लागू किया जायेगा वहाँ चोर और डाकू बहुत कुछ सोच समझ कर ही आगे कदम बढ़ावेंगे। जिस के फलस्वरूप पूरा समाज अमन और चैन का गह्वारा बन जायेगा। इस के विपरीत संसार के आधुनिक विधानों ने अपराधियों को सुधारने तथा उन्हें सभ्य बनाने का जो नियम बनाया है उस ने अपराधियों में अपराध का साहस बढ़ा दिया है। अतः यह मानना पड़ेगा कि इस्लाम का यह दण्ड चोरी जैसे अपराध को रोकने में अब तक सब से अधिक सफल सिद्ध हुआ है। और यह दण्ड मानवता के मान और उस के अधिकार के विपरीत नहीं है। क्योंकि जिस व्यक्ति ने अपना माल अपने खून पसीना, परिश्रम तथा अपने हाथों की शक्ति से कमाया है तो यदि कोई चोर आ कर उस का उचकना चाहे तो उस की सजा यही होनी चाहिये कि उस का वह हाथ ही काट दिया जाये जिस से वह अन्य का माल हड़प करना चाह रहा है।

2 अर्थात् उसे परलोक में दण्ड नहीं देगा, परन्तु न्यायालय चोरी सिद्ध होने पर उसे चोरी का दण्ड देगा। (तफ्सीर कर्तुन्नी)

40. क्या तुम जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

لَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَعْفُو لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

41. हे नबी! वह आप को उदासीन न करें, जो कफ़्र में तीव्रगामी है, उन में से जिन्होंने कहा कि हम इमान लाये जब कि उन के दिल इमान नहीं लाये और उन में से जो यहूदी हैं, जिन की दशा यह है कि मिथ्या बातें सुनने के लिये कान लगाये रहते हैं, तथा दूसरों के लिये जो आप के पास नहीं आये कान लगाये रहते हैं, वह शब्दों को उन के निश्चित स्थानों के पश्चात् वास्तविक अर्थों से फेर देते हैं वह कहते हैं कि यदि तुम को यही आदेश दिया जाये (जो हम ने बताया है) तो मान लो, और यदि वह न दिये जाओ, तो उस से बचो। (हे नबी!) जिसे अल्लाह अपनी परीक्षा में डालना चाहे, आप उसे अल्लाह से बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते। यही वह है जिन के दिलों को अल्लाह ने पवित्र करना नहीं चाहा। उन्हीं के लिये संसार में अपमान है और उन्हीं के लिये परलोक में घोर¹ यातना है।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزَنْكَ الَّذِينَ يُسَاءِلُونَ
كَ الْكُفْرَ مِنْ كُفْرِهِمْ قَالُوا امْكُتْ فَأَوْهِهِمْ
وَلَمْ يُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ وَأَمَّا الَّذِينَ هَادُوا
فَسَمِعُوا بِالْكَذِبِ سَمْعًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ
لَهُمْ يَأْتُوهُمْ يُخْبِرُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ
مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخُذُوا
وَلَوْ لَمْ تَأْتُوا فَاخْذُوا وَمَنْ يَرُدَّ اللَّهُ
فَتَنَّتْهُ لَكُنْ شَيْئًا مِنْ أَمْرِ شَيْئًا
أُولَئِكَ كُفْرًا لِمَنْ يَرُدُّ اللَّهُ أَنْ يُظَاهِرَ
قُلُوبَهُمْ لَعْنَةُ اللَّهِ فِي الدُّنْيَا خُرُوجًا وَلَعْنَةُ اللَّهِ
فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

1 मदीना के यहूदी विद्वान मुनाफिकों (द्विधावादियों) को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भजते कि आप की बातें सुनो और उन को सूचित करो। तथा अपने विवाद आपके पास ले जायें। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई निर्णय करें तो हमारे आदशानुसार हो तो स्वीकार करें अन्यथा स्वीकार न करें जब कि तौरात की आयतों में इन के आदेश थे, फिर भी वे उन में परिवर्तन कर के उन का अर्थ कुछ का कुछ बना देने थे। (देखिये व्याख्या आयत 13)

42. वह मिथ्या धातें मुनने वाले अवैध भक्षी है अतः यदि वह आप के पास आयें तो आप उन के बीच निर्णय कर दें, अथवा उन से मुँह फेर लें (आप को अधिकार है)। और यदि आप उन से मुँह फेर लें, तो वे आप को कांड हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि निर्णय करें, तो न्याय के साथ निर्णय करें। निस्संदेह अग्राह न्यायकारियों से प्रेम करता है।

43. और वह आप को निर्णयकारी कैसे बना सकते हैं, जब कि उन के पास तौरान (पुस्तक) मौजूद है जिस में अल्लाह का आदेश है। फिर इस के पश्चात् उस से मुंह फेर रहे हैं। वास्तव में वह ईमान वाले हैं ही। नहीं।

44. निःसंदेह हम ने ही तौरात उतारी जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है, जिस के अनुसार वह नवी निर्णय करते रहे जो आज्ञाकारी थे, ⁽¹⁾ उन के लिये जो यहूदी थे। तथा धर्माचारी और विद्वान लाग। क्योंकि वह अब्राह की पुस्तक के रक्षक बनाये गये थे, और उस के (सत्य होने के) साक्षी थे। अतः तुम (भी) लोगों से न डरो, मुझी से डरो और मेरी आयनों के बदले तनिक मूल्य न खरीदो और जो अब्राह की उतारी (पुस्तक

سَتَجْعَلُونَ يَكُونُ أَكْلُهُمْ يَلْجَأُونَ
جَاءُوا فَاحْكُم بَيْنَهُم أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ قَدْ
تُعْرِضُ عَنْهُمْ قَدْ يَصْرُوهَا لَكُنْ أَتَى
فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ

وَكَيْفَ يُحْيِيكَوْنَكَ وَعِندَهُمُ النُّورُ فِي
حُكْمِ اللَّهِ لَيُحْيِيَنَّكَ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا
أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَعْلَمُونَ
بِهَا الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الذِّكْرَ سَلَامًا لِلَّذِينَ
هَدَاهُ اللَّهُ وَذَوُو الرِّبَاطِ وَالْأَعْيُنُ
اسْتَحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ
شُهَدَاءَ فَلَا تَحْمِلُوا النَّاسَ وَاحْتِرَابَ وَلَا
تُكْسِرُوا بِأَيْدِيكُمْ ثَمَنًا بَيْعًا وَلَا وَرْءَ يَحْكُمُ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ۝

1. क्यों कि वह न तो आप को नञी मानते, और न आप का निर्णय मानते तथा न तौरात का आदेश मानते हैं।

2. इस्लाम में भी यही नियम है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दांत तोड़ने पर यही निर्णय दिया था। (सहीह बखारी: 4611)

कें) अनुमार निर्णय न करें, तो वही काफिर है।

45. और हम ने उन (यहूदियों) पर उस (तौरात) में लिख दिया कि प्राण के बदले प्राण है, तथा आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, तथा कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत, तथा सभी आघातों में बराबरी का बदला है। फिर जो कोई बदला लेने को दान (क्षमा) कर दे तो वह उस के लिये (उस के पापों का) प्रार्थश्चन हो जायेगा, तथा जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुमार निर्णय न करें तो वही अत्याचारी है।

46. फिर हम ने उन (नबियों) के पश्चात् मर्यम के पुत्र ईसा को भेजा, उसे सच बताने वाला जो उस के सामने तौरात थी। तथा उसे इजील प्रदान की जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है। उसे सच बताने वाली जो उस के आगे तौरात थी तथा अल्लाह से डरने वालों के लिये सर्वथा मार्गदर्शन तथा शिक्षा थी।

47. और इजील के अनुयायी भी उसी से निर्णय करें, जो अल्लाह ने उस में उतारा है, और जो उस से निर्णय न करें जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो वही अधर्मी है।

48. और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (कुर्आन)

وَكُتِبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنْ نَقُتِلَ بِالنَّفْسِ
وَالْعَيْنِ وَالْأُذُنِ وَالْأَنْفِ وَالْأَعْيُنِ
وَالْأُذُنِ وَيَتَنَ يَابِينَ وَنُجْزَى قِصَاصُ
فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ وَمَنْ
لَمْ يَحْكَمْ بِهَا أَتَى اللَّهَ فَأُولَئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ١٥

وَقُلْنَا عِزِّي الْأَرَامُ يُوحَىٰ بِهَا مِنْ مَّوَصِّدَا
لَهَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَنَبِيَّهُ الْإِسْمِيلُ
فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقَاتُ بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ
التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ١٦

وَلِيَعْلَمَ أَهْلُ الْإِسْلَامِ بِمَا أَرْسَلَ اللَّهُ فِيهِ وَمَنْ
كَفَرَ عَنَّا بِمَا أَرْسَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ١٧

وَأَرْسَلْنَا بِكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ

उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक⁽¹⁾ है, अतः आप लोगों का निर्णय उसी से करें जो अल्लाह ने उतारा है, तथा उन की मन मानी पर उस सत्य से विमुख हो कर न चले, जो आप के पास आया है। हम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया⁽²⁾ था, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता, परन्तु उस ने जो कुछ दिया है, उस में तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है। अतः भलाईयों में एक दूसरे से अग्रसर होने का प्रयास करो⁽³⁾, अल्लाह ही की ओर तुम सब को लोट कर जाना है। फिर वह तुम्हें बना देगा, जिन बातों में तुम विभेद करते रहे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلِرَبِّكُمْ أَهْوَاءَكُمْ مِمَّا جَاءَ مِنْ الْحَقِّ إِلَيْكُمْ وَقَدْ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا حَرَامًا وَهَٰذَا حَرَامٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا وَمَا لَكُم مِّنْ اللَّهِ بِشَيْءٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَقِيمُوا الصِّرَاطَ إِلَى اللَّهِ فَمُخْرَجُهُمْ
فِي مَا آتَاكُمْ مِنْهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ آيَاتِهِ وَيُخْلِقَ مَا يَشَاءُ لِيُخْبِرَ بِلَكُمْ أَعْيُنُهُمْ أَفْبَاهُ

- 1 संरक्षक हाने का अर्थ यह है कि कुर्आन अपने पूर्व की धर्म पुस्तकों का केवल पुष्टिकर ही नहीं, कर्माट (परख) भी है। अतः आदि पुस्तकों में जो भी बात कुर्आन के विरुद्ध होगी वह सत्य नहीं परिवर्तित होगी सत्य वही होगी जो अल्लाह की अन्तिम किताब कुर्आन पाक के अनुकूल हो।
- 2 यही यह प्रश्न उठता है कि जब तौरात तथा इजील और कुर्आन सब एक ही सत्य लाये हैं, तो फिर इन के धर्म विधानों तथा कार्य प्रणाली में अन्तर क्यों है? कुर्आन उस का उत्तर देता है कि एक चीज मूल धर्म है, अर्थात् एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म का नियम, और दूसरी चीज धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली है, जिस के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाये, तो मूल धर्म तो एक ही है, परन्तु समय और स्थितियों के अनुसार कार्य प्रणाली में अन्तर होता रहा है, क्यों कि प्रत्येक युग की स्थितियाँ एक समान नहीं थीं और यह मूल धर्म का अन्तर नहीं कार्य प्रणाली का अन्तर हुआ। अतः अब समय तथा स्थितियाँ बदल जाने के पश्चात् कुर्आन जो धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली प्रस्तुत कर रहा है वही सन्धर्म है।
- 3 अर्थात् कुर्आन के आदेशों का पालन करने में।

49. तथा (हे नबी!) आप उन का निर्णय उसी से करें, जो अब्राह ने उतारा है, और उन की मन मानी पर न चले तथा उन से सावधान रहे कि आप को जो अब्राह ने आप की ओर उतारा है, उस में से कुछ से फेर न दें। फिर यदि वह मुँह फेरें, तो जान लें कि अब्राह चाहता है कि उन के कुछ पापों के कारण उन्हें दण्ड दे। वास्तव में बहुत से लोग उल्लंघनकारी हैं।

50. तो क्या वह ज़ाहलिय्यत (अंधकार युग) का निर्णय चाहते हैं? और अब्राह से अच्छा निर्णय किम का हो सकना है, उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

51. हे ईमान वाले! तुम यहूदी तथा ईसाइयों को अपना मित्र न बनाओ, वह एक दूसरे के मित्र हैं, और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में होगा। तथा अब्राह अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

52. फिर (हे नबी!) आप देखेंगे कि जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है, वह उन्हीं में दौड़े जा रहे हैं, वह कहते हैं कि हम डरते हैं कि हम किसी आपदा के कचक्र में न आ जायें, तो दूर नहीं कि अब्राह तुम्हें विजय प्रदान करेगा, अथवा उस के पास से कोई धात हो जायेगी, तो वह लोग उस बात पर जो उन्होंने ने अपने मनों में छुपा रखी है, लज्जित होंगे।

53. तथा (उस समय) ईमान वाले कहेंगे।

وَأَنِ احْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَأَخْذَرَهُمْ أَنْ يَقُولُوا قَدْ أَعْلَمَ اللَّهُ الْكُفْرَ الْبَاطِلَ
أَنزَلَ إِلَهُكَ الْكِتَابَ قُلْ تَوَلَّوْا قَاعِلْمَ الْكُفْرِ الْبَاطِلِ
لَنْ يُصْلِحَهُمْ رَبِّي يَصْطَفِ اللَّهُ مَن يَشَاءُ لَكُمْ مَثَلٌ هَلْ أَتَى
النَّاسَ لِكَيْفَ قِيلَ لَهُمْ

أَحْكُمُ الْبَيْنَهُمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَأَخْذَرَهُمْ أَنْ يَقُولُوا قَدْ أَعْلَمَ اللَّهُ الْكُفْرَ الْبَاطِلَ
أَنزَلَ إِلَهُكَ الْكِتَابَ قُلْ تَوَلَّوْا قَاعِلْمَ الْكُفْرِ الْبَاطِلِ
لَنْ يُصْلِحَهُمْ رَبِّي يَصْطَفِ اللَّهُ مَن يَشَاءُ لَكُمْ مَثَلٌ هَلْ أَتَى
النَّاسَ لِكَيْفَ قِيلَ لَهُمْ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَالْيَهُودَ
وَالنَّصَارَى الَّذِينَ يَعْتَصِمُونَ بِآيَاتِهِمْ
يَتَوَلَّوْا قَاعِلْمَ الْكُفْرِ الْبَاطِلِ
لَنْ يُصْلِحَهُمْ رَبِّي يَصْطَفِ اللَّهُ مَن يَشَاءُ لَكُمْ مَثَلٌ هَلْ أَتَى
النَّاسَ لِكَيْفَ قِيلَ لَهُمْ

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَالْيَهُودَ
وَالنَّصَارَى الَّذِينَ يَعْتَصِمُونَ بِآيَاتِهِمْ
يَتَوَلَّوْا قَاعِلْمَ الْكُفْرِ الْبَاطِلِ
لَنْ يُصْلِحَهُمْ رَبِّي يَصْطَفِ اللَّهُ مَن يَشَاءُ لَكُمْ مَثَلٌ هَلْ أَتَى
النَّاسَ لِكَيْفَ قِيلَ لَهُمْ

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ

क्या यही वह है, जो अल्लाह की बड़ी गंभीर शपथ ले कर कहा करते थे कि वह तुम्हारे साथ है? इन के कर्म अकारथ गये और अंततः वह असफल हो गये।

يَعْتَدِ الْإِنَّمَاءُ لَهُمْ لَعْنَهُمْ لَمَكُونُ خَطِئَتٍ أَعْلَىٰ لَهُمْ
فَأَصْبَحُوا حَيْرِينَ ۝

54. हे ईमान वाले! तुम में से जो अपने धर्म से फिर जायेगा, तो अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा जिन से वह प्रेम करेगा, और वह उस में प्रेम करेंगे। वह ईमान वालों के लिये कोमल तथा काफिरों के लिये कड़े¹ होंगे। अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की दया है जिसे चाहे प्रदान करता है, और अल्लाह (की दया) विशाल है और वह अनि जानी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ
فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٌ
 عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى ٱلْكُفَرِينَ يُجَاهِدُونَ
 فِى سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَنَافِقُ ٱلْفُلُونُ لَوْمَةُ ٱلرَّيْبِ ذَٰلِكَ
 قَطْعُ ٱللَّهِ يَوْمَئِذٍ مِّن يَّسَٰرٍ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

55. तुम्हारे सहायक केवल अल्लाह और उस के रसूल तथा वह है, जो ईमान लाये जो समाज की स्थापना करने तथा जकात देते हैं और अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं।

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ
يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ
رَاكِعُونَ ۝

56. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल तथा ईमान वालों को सहायक बनायेगा, तो निश्चय अल्लाह का दल ही छा कर रहेगा।

وَمَن يَتَّبِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَٱلَّذِينَ آمَنُوا ۖ
فَإِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْعَزِيزُ ۝

57. हे ईमान वाले! उन को जिन्होंने तुम्हारे धर्म को उपहास तथा खेल

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْتَحِيدُوا ٱلْكُفَرَةَ ۚ تَحَنُّونَ

1 कड़े होने का अर्थ यह है कि वह युद्ध तथा अपने धर्म की रक्षा के समय उन के दबाव में नहीं आयेंगे, न जिहाद की निन्दा उन्हें अपने धर्म की रक्षा से रोक सकेगी।

बना रखा है उन में से जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं, तथा काफ़िरो को सहायक (मित्र) न बनाओ, और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

58. और जब तुम नमाज के लिये पुकारते हो, तो वे उस का उपहास करने तथा खेल बनाते हैं, इस लिये कि वह समझ नहीं रखते।

59. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! इस के सिवा हमारा दोष क्या है जिस का तुम बदला लेना चाहते हो कि हम अल्लाह पर तथा जो हमारी ओर उतारा गया और जो हम से पूर्व उतारा गया उस पर ईमान लाये हैं, और इस लिये कि तुम में अधिकतर उल्लंघनकारी हैं।

60. आप उन से कह दें कि क्या मैं तुम्हें बता दूँ, जिन का प्रतिफल (बदला) अल्लाह के पाम इस में भी बुरा है? वह हैं जिन को अल्लाह ने धिक्कार दिया और उन पर उस का प्रकोप हुआ, तथा उन में से बंदर और सूअर बना दिये गये, तथा तागून (असुर- धर्म विरोधी शक्तियों) को पूजने लगे इन्हीं का स्थान सब से बुरा है तथा सर्वाधि कुप्य है।

61 जब वह¹ तुम्हारे पाम आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, जब

يُكَلِّمُهُمْ يُكَلِّمُهُمْ وَأُولَئِكَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أُولَئِكَ لَأَضَعُ اللَّهُ إِنَّ كُفْرَهُمْ مُبِينٌ ۝

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوا عَافُوا وَلَئِبَّا دِيكَ يَأْتُهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْتَوْنُ مِنِّي إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ ۝

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِمِمَّنْ دَلِكُ مَثُومَةٌ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ لَعْنَةِ اللَّهِ وَغَضَبِ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْفِرْدَ وَأَخْتَارَ يَرْوَعِدَ الطَّغُوتِ أُولَئِكَ نَزَّلْنَا وَأَضَلَّ عَنْ سَوَاءِ النَّبِيِّ ۝

وَلَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِكُمْ

1 इस में द्विविधावादियों का दूराचार बताया गया है।

कि वह कुफ़ लिये हुये आय और उसी के साथ वापिस हुये, तथा अब्राह उमे भली भाँति जानता है, जिस को वह छुपा रहे है।

62. तथा आप उन में से बहुतों को देखेंगे कि पाप तथा अत्याचार और अपने अवैध खाने में दौड़ रहे है वह बड़ा कुकर्म कर रहे है।

63. उन को उन के धर्माचारी तथा विद्वान पाप की बात करने तथा अवैध खाने से क्यों नहीं रोकते? वह बहुत बुरी रीति बना रहे है।

64. तथा यहूदियों ने कहा कि अब्राह के हाथ बंधे¹ हुये है, उन्ही के हाथ बंधे हुये है। और वह अपने इस कथन के कारण धिक्कार दिये गये है, बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हुये है, वह जैसे चाहे व्यय (खर्च) करता है, और इन में से अधिकतर को जो (कुआन) आप के पालनहार की ओर से आप पर उतारा गया है, उल्लंघन तथा कुफ़ (अविश्वास) में अधिक कर देगा, और हम ने उन के बीच प्रलय के दिन तक के लिये शत्रुता तथा वैर डाल दिया है। जब कभी वह युद्ध की अग्नि मुलगाते है तो अब्राह उसे बुझा² देता है वह धरती में उपद्रव

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَالْمَلَأْنَا بَيْنَهُمَا كَلْحًا
يَكْتُمُونَ ﴿٦٢﴾

وَقَدْ كَثُرُوا مَتْلَهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِكْرَامِ
وَالْعُدْوَالِ وَأَكْلِهِمُ الشَّعْطَ بِئْسَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٦٣﴾

لَوْلَا يَنْهَاهُمْ لِرَبِّهِمْ وَالْأَحْبَارُ عَنْ
قَوْلِهِمْ لِأَنَّهُمْ أَكْلِهِمُ الشَّعْطَ بِئْسَ مَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ ﴿٦٤﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَفْلُوظَةٌ عَلَى يَدَيْهِمْ
وَالْعِبْرَانِ قَالَ الْوَائِينَ يَدُ اللَّهِ مَفْلُوظَةٌ يَبْقَى كَيْفَ
يَشَاءُ وَلَكِنْ يَدَيْهِمْ كَثُرُوا مِنْهُمْ مَا أَتَى إِلَيْكَ مِنْ
رَبِّكَ غَضَبًا نَارًا وَقَرَأَ الْقَيْمَاتُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبَغْضَاءُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كُلُّهَا أَوْ قَدْ وَاثَرَا
لِلْحَرْبِ أَطْلَعَهَا اللَّهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ
كَسَادًا وَرُشَّةٍ لَا يَحِثُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٥﴾

1 अरबी मुहावरे में हाथ बंधे का अर्थ है कंजूम होना और दान दक्षिणा से हाथ रोकना (देखिये सूरह आले इमरान आयत- 181)

2 अर्थात् उन के षडयंत्र को सफल नहीं होने देना बल्कि उस का कुफल उन्ही को भोगना पड़ता है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय में विभिन्न दशाओं में हुआ।

का प्रयास करते हैं, और अल्लाह विद्रोहियों से प्रेम नहीं करता।

65. और यदि अहले किताब ईमान लाते, तथा अल्लाह से डरत, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देते, और उन्हें सुख के स्वर्गों में प्रवेश देते।

66. तथा यदि वह स्थापित¹ रखने तौरत और इंजील को, और जो भी उन की ओर उतारा गया है, उन के पालनहार की ओर से, तो अवश्य उन को अपने ऊपर (आकाश) से तथा पैरों के नीचे (धरती) से² जीविका मिलती, उन में एक संतुलित समुदाय भी है। और उन में से बहुत से कुकर्म कर रहे हैं।

67. हे रसूल! ³ जो कुछ आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है उसे (सब को) पहुंचा दें, और यदि ऐसा नहीं किया, तो आप ने उस का उपदेश नहीं पहुंचाया। और अल्लाह (विरोधियों से) आप की रक्षा करेगा ⁴, निश्चय अल्लाह,

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِوَعْدِ الْكَافِرِينَ عَنْهُمْ
مِثْلَ مَا آمَنُوا بِوَعْدِ الْكَافِرِينَ

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِوَعْدِ الْكَافِرِينَ
وَالْإِنْجِيلِ وَمَا أُنزِلَ
إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْثَرُوا مِنْ
فَوَقِهِمْ دَمِينٌ نَحْبُ
أَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ
وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ
إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ
بِذِكْرِ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ
وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُخْرِجْهُ مِنْ ظُلُمَاتٍ إِلَى
نُورٍ وَمَنْ يُكَفِّرْ بَعْدَ ذَلِكَ
سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ

- 1 अर्थात् उन के आदेशों का पालन करने और उसे अपना जीवन विधान बनाते।
- 2 अर्थात् आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज में अधिकता होती।
- 3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।
- 4 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने के पश्चात् आप पर विरोधियों ने कई बार प्राण घातक आक्रमण का प्रयास किया। जब आप ने मक्का में सफा पर्वत से एकेश्वरवाद का उपदेश दिया तो आप के चचा अबू लहब ने आप पर पत्थर चलाये। फिर उसी युग में आप काबा के पास नमाज पढ़ रहे थे कि अबू जहल ने आप की गरदन रौंदने का प्रयास किया, किन्तु आप के रक्षक फरिश्तों को देख कर भागा। और जब कुरैश ने यह योजना बनाई कि

काफ़िरो को मार्गदर्शन नहीं देना।

68. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहल किताब! तुम किसी धर्म पर नहीं हो, जब तक तौरात तथा इंजील और उस (कुर्आन) की स्थापना¹ न करो, जो तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है, तथा उन में से अधिकतर को जो (कुर्आन) आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है, अवश्य उग्रघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक

قُلْ يَٰٓأَهْلَ الْكِتَٰبِ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِتَقِيْمٍ
الْثَوْرَةِ وَلَا اِلَٰهَ مِثْلُ مَا اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ
وَلَا يَرْيَدُ اَنْ يَّكْفَرَ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَبِّكَ
طَغْيًا ۚ لَا تُلْزَمُوهُنَّ فَاَلَا اُنْزِلَ عَلَيْكُمْ الْكِتَابُ

आप को बंध कर दिया जाये और प्रत्येक कबीले का एक युवक आप के द्वार पर तलवार लेकर खड़ा रहे और आप निकलने तो सब एक साथ प्रहार कर दें तब भी आप उन के बीच में निकल गया और किसी ने देखा भी नहीं। फिर आप ने अपने साथी अबू बक्र के साथ हिजरत के समय सौर पर्वत की गुफा में शरण ली और काफ़िर गुफा के मुंह तक आप की खोज में आ पहुँचे। उन्हें आप के साथी ने देखा किन्तु वे आप को नहीं देख सके। और जब वहाँ से मदीना चले तो मुराका नामी एक व्यक्ति ने कुरैश के पुरस्कार के लाभ में आ कर आप का पीछा किया किन्तु उस के घोड़े के अगले पैर भूमी में धँस गया। उस ने आप को गुहारा आप ने दुआ कर दी, और उस का घोड़ा निकल गया। उस ने ऐसा प्रयास तीन बार किया फिर भी असफल रहा। आप ने उस को क्षमा कर दिया। और यह देख कर वह मुसलमान हो गया। आप ने फरमाया कि एक दिन तुम अपने हाथ में ईरान के राजा के कंगन पहनोगे। और उमर बिन खत्ताब के युग में यह बात सच साबित हुई। मदीने में भी यहूदियों के कबीले वनू नजीर ने छत के ऊपर से आप पर भारी पत्थर गिराने का प्रयास किया जिस से अब्राह ने आप को सूचित कर दिया। खैबर की एक यहूदी स्त्री ने आप को बिप मिला के बकरी का माँस खिलाया। परन्तु आप पर उस का कोड़ बड़ा प्रभाव नहीं हुआ। जब कि आप का एक साथी उसे खा कर मर गया। एक युद्ध यात्रा में आप अकेले एक वृक्ष के नीचे सो गये, एक व्यक्ति आया और आप की तलवार लेकर कहा मुझ से आप को कौन बचायेगा? आप ने कहा अब्राह। यह सुन कर वह कांपने लगा और उस के हाथ से तलवार गिर गई और आप ने उसे क्षमा कर दिया। इन सब घटनाओं से यह सिद्ध हो जाता है कि अब्राह ने आप की रक्षा करने का जो वचन आप को दिया उस को पूरा कर दिया।

1 अर्थात् उन के आदेशों का पालन न करो।

कर देगा अतः आप काफिरों (के अविश्वास) पर दुखी न हों।

69. वास्तव में जो इमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और सावी, तथा ईसाई, जो भी अब्राह तया अन्तिम दिन (प्रलय) पर इमान लायेगा, तथा सत्कर्म करेगा, तो उन्हीं के लिये कोई डर नहीं और न वह उदामीन¹ होंगे।

70. हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया तथा उन के पास बहुत से रसूल भेजे, (परन्तु) जब कभी कोई रसूल उन की अपनी आकांक्षाओं के विरुद्ध कुछ लाया, तो एक गिरोह को उन्हीं ने झुठला दिया, तथा एक गिरोह को बध करते रहे।

71. तथा वह समझे कि कोई परीक्षा न होगी इस लिये अंधे बहरे हो गये, फिर अब्राह ने उन को क्षमा कर दिया, फिर भी उन में से अधिक्तर अंधे और बहरे हो गये, तथा वह जो कुछ कर रहे है अब्राह उसे देख रहा है।

72. निश्चय वह काफिर हो गये जिन्हो

إِنَّ الْيَهُودَ اصْبَوْا وَلِلَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ
وَالنَّصَارَىٰ مِنَ امْنٍ يَوْمَ الْيَوْمِ الْأَخِيرِ وَعَلَىٰ
صَدْرِكَ أَفْلاَحٌ وَعَلَيْهِمْ وَأَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَن سُبْحَنَ إِلَهِهِمْ
سُلاٰكًا مَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُهُمْ
فَرَضُوا كَذِبًا وَفَوَقًا يُضِلُّونَ ۝

وَحَسِبُوا أَنَّ أَفْكَارَهُمْ وَقَوْلَهُمْ شَأْنٌ ثَابِتٌ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ وَصَلَّىٰ عَلَيْهِمْ اللَّهُ
بِأَسْمَائِهِمْ يَوْمَ قُنُوزٍ ۝

لَقَدْ كَفَرَ الْيَهُودُ قَالُوا لَئِنْ لَمْ يَنْزِلْ بِهِ الْكِتَابُ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम से पहले यहूदी ईसाई तथा सावी जिन्हों ने अपने धर्म को पकड़ रखा है और उस में किसी प्रकार का हेर फेर नहीं किया, अब्राह तथा आखिरत पर इमान रखा और सदाचार किये उन को कोई भय और चिन्ता नहीं होनी चाहिये। इसी प्रकार की आयत सूरह बकरह (62) में भी आई है जिस के विषय में आता है कि कुछ लोगों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया कि उन लोगों का क्या होगा जो अपने धर्म पर स्थित थे और मर गये? इसी पर यह आयत उतरती। परन्तु अब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के लाये धर्म पर इमान लाना अनिवार्य है इस के बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।

ने कहा कि अल्लाह, ¹ मरयम का पुत्र मसीह ही है। जब कि मसीह ने कहा था: हे बनी इसराईल! उस अल्लाह की इबादत (बदना) करो जो मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया। और उस का निवास स्थान नरक है। तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

وَقَالَ الْمَسِيحُ بَنِي إِسْرَءِيلَ ااعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَزَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ لُجْمَةً وَّعَاقِبَةً مُلْحَقَةً وَإِلَّا تَتُوبَ عَلَيْهِمْ يُنَزِّلِ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ حِجَابًا

73. निश्चय वह भी काफिर हो गये, जिन्होंने ने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है, जब कि कोई पूज्य नहीं है परन्तु वही अकेला पूज्य है और यदि वह जो कुछ कहने है, उस से नहीं रुके, तो उन में से काफिरों को दुखदायी यातना होगी।

لَقَدْ كَفَرَ الْكَاذِبُ إِذْ قَالَ لِلَّهِ ثَلَاثٌ ثَلَاثُونَ مِنَ الْإِلَهِ إِنَّهُ وَاحِدٌ قُلْ كَفَرُوا بِمَا يَقُولُونَ يُعَذِّبُ اللَّهُ الْمُكْفِرِينَ بِمَا يَكْفُرُونَ وَيَعَذِّبُ اللَّهُ الْكَافِرِينَ

74. वह अल्लाह से तौब तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जब कि अल्लाह अनि क्षमाशील दयावान् है?

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

75. मरयम का पुत्र मसीह इस के सिवा कुछे नहीं कि वह एक रमूल है, उस से पहले भी बहुत से रमूल हो चुके हैं उस की माँ सच्ची थी, दोनों भोजन करते थे, आप देखें कि हम कैसे उन के लिये निशानियाँ (एकेश्वरवाद के लक्षण) उजागर

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأِنَّ صِدْقَ كَلَامِ الْكَاذِبِينَ الطَّعَامُ أَنْظَرُ كَيْفَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لُزُومَاتِ الْكَلَامِ لِيُؤْمِنُوا ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि इंसानों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी। परन्तु वह भी उस से फिर गये तथा ईसा को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

कर रहे हैं, फिर देखिये कि वह कहाँ
बहके¹ जा रहे हैं।

76. आप उन से कह दें कि क्या तुम
अब्राह के सिवा उस की इबादत
(बंदना) कर रहे हो, जो तुम्हें कोई
हानि और लाभ नहीं पहुँचा सकता?
तथा अब्राह सब कुछ सुनने जानने
वाला है।

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَكُم صَرًّا
وَلَا نَفْعًا ۖ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

77. (हे नबी!) कह दो कि हे अहले
किताब! अपने धर्म में अवैध अति न
करो², तथा उन की अभिलाषाओं पर
न चलो जो तुम से पहले कुपथ हो³
चुके, और बहुतों को कुपथ कर गये,
और संमार्ग से विचलित हो गये।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْتَوُوا ذُرِّيَّتَكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ
وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ
وَأَصْلُوا كَثِيرًا مِّن سَوَاءٍ لَّيْسَ لَهُمْ

78. बनी इस्राईल में से जो काफिर हो
गये, वह दावूद तथा मरयम के पुत्र
ईसा की जुबान पर धिक्कार दिये⁴
गये, यह इस कारण कि उन्होंने ने
अवैज्ञा की, तथा (धर्म की सीमा का)
उल्लंघन कर रहे थे।

لَيْسَ الْبِرُّ بِكَفْرٍ وَأَسَٰءَ بِهِمْ يَرْآهُ رَبُّكَ
عَلَىٰ سُلَيْمٍ دَاوُدَ وَيُوسَىٰ ۚ إِنَّهُمْ رَبِّكَ لَا يُبَالِغُونَ
وَكَاذِبُونَ ۝

79. वह एक दूसरे को किसी बुराई से,
जो वे करते, रोकते नहीं थे, निश्चय

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि इमाइयो को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) को स्वयं अब्राह अथवा अब्राह का अंश बना दिया और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

2 (अति न करो): अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम को प्रभु अथवा प्रभु का पुत्र न बनाओ

3 इन से अभिप्राय वह हो सकने है, जो नबियों को स्वयं प्रभु अथवा प्रभु का अंश मानते हैं।

4 अर्थात् धर्म पुस्तक जबूर तथा इजील में इन के धिक्कृत होने की सूचना दी गयी है (इब्ने कसीर)

वह बड़ी बुराई कर रहे थे।¹

مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

80. आप उन में से अधिकतर को देखेंगे कि काफ़िरो को अपना मित्र बना रहे हैं। जो कर्म उन्हों ने अपने लिये आगे भेजा है बहुत बुरा है कि अल्लाह उन पर क्रुद्ध हो गया तथा यातना में वही सदावामी होंगे।

تَرَى كَثِيرًا مِّنْ أَهْلِ الْيَمِينِ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا يَتَّبِعُونَ
مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

81. और यदि वह अल्लाह पर, तथा नबी पर और जो उन पर उतारा गया, उस पर ईमान लाने, तो उन को मित्र न बनाते² परन्तु उन में अधिकतर उल्लंघनकारी है।

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِمَا نُنَزِّلُ مِنَ الْكِتَابِ وَرَأَوْا
السَّيِّئَاتِ مَا تُنَادُوا بِهَا لَأُتِيَ بِهِمْ ۚ وَمَا يَكْفُرُونَ ۝

82. (हे नबी!) आप उन का जो ईमान लाये है सब से कड़ा शत्रु यहूदियों तथा मिश्रणवादियों को पायेंगे। और जो ईमान लाये है उन के सब से अधिक समीप आप उन्हें पायेंगे, जो अपने को ईसाई कहते हैं। यह बात इस लिये है कि उन में उपासक तथा सन्यासी है, और वह अभिमान³ नहीं करते।

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا
الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم
شُورًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا
نُصْرَىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَاتِلُوا النَّبِيَّ
وَرَبَّهُ ۚ إِنَّا لَأَعْلَمُ مَا لَا يَشْعُرُونَ ۝

83. तथा जब वह (ईसाई) उस (कुर्आन) को सुनते हैं जो रसूल पर उतरा है तो आप देखते हैं कि उन की आंखें

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ
أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّنْ عَمِلُوا

1 इस आयत में उन पर धिक्कार का कारण बताया गया है।

2 भावार्थ यह है कि यदि यहूदी मुसा अलैहिस्सलाम को अपना नबी और तौरात को अल्लाह की किताब मानने हैं जैसा कि उन का दावा है तो वे मुसलमानों के शत्रु और काफ़िरो को मित्र नहीं बनाते। कुर्आन का यह सच आज भी देखा जा सकता है।

3 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि यह आयत हब्शा के राजा नजाशी और उस के साधियों के बारे में उतरी, जो कुर्आन सुन कर रोने लगे और मुसलमान हो गये (इब्न जरीर)

आंसू से उबल रही है, उस मृत्यु के कारण जिसे उन्होंने पहचान लिया है। वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हम ईमान ले आये, अतः हमें (मृत्यु) के माक्षियों में लिख¹ ले।

الْحَقُّ يَقُولُونَ رَبَّنَا فَانْتَظِرْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝

84. (तथा कहते हैं): क्या कारण है कि हम अल्लाह पर तथा इस मृत्यु (क़र्आन) पर ईमान (विश्वास) न करें? और हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।

وَمَا لَنَا أَلَّا نُؤْمِنَ بِمَا نُنَادِي بِهِ جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الطَّيِّبِينَ ۝

85. तो अल्लाह ने उन के यह कहने के कारण उन्हें ऐसे स्वर्ग प्रदान कर दिये जिन में नहरें प्रवाहित हैं वह उन में सदावासी होंगे। तथा यही सत्कर्मियों का प्रतिफल (वदला) है।

وَلَا تَعْجَبْ لَآ يَأْتِيكَ بِهِمْ إِلَّا الْوَجْدُ غَيْرُكَ مِنْ نَحْنُهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝

86. तथा जो काफिर हो गये, और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَلَكُوا لَا يَبْتَغُونَ آثَارَ
أَصْحَابِ الْإِيمَانِ ۝

87. हे ईमान बलों! उन स्वच्छ पवित्र चीजों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल (वैध) की है, हराम (अवैध)² न करो और सीमा का उल्लंघन न करो। निस्संदेह अल्लाह उल्लंघनकारियों³

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ۝

1 जब जाफर (रजियल्लाहु अन्हु) ने हवशा के राजा नजाशी को सूरह मर्यम की आरंभिक आयतें सुनाई तो वह और उस के पादरी रोने लगे। (सीरत इब्ने हिशाम 1:359)

2 अर्थात् किसी भी खाद्य अथवा वस्तु को वैध अथवा अवैध करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

3 यहाँ से वर्णन क्रम, फिर आदेशों तथा निषेधों की ओर फिर रहा है। अन्य धर्मों के अनुयायियों ने सन्यास को अल्लाह के सामिप्य का साधन समझ लिया

से प्रेम नहीं करता।

88. तथा उस में से खाओ जो हलाल (वैध) स्वच्छ चीज अल्लाह ने तुम्हें प्रदान की है। तथा अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, यदि तुम उसी पर ईमान (विश्वास) रखते हो।

89. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी व्यर्थ शपथों¹ पर नहीं पकड़ता, परन्तु जो शपथ जान बूझ कर ली हो, उस पर पकड़ता है, तो उस का² प्रायश्चित्त दस निर्धनों को भोजन कराना है, उस माध्यमिक भोजन में से जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो, अथवा उन्हें वस्त्र दो, अथवा एक दाम मुक्त करो और जिसे यह सब उपलब्ध न हो, तो तीन दिन रोजा रखना है। यह तुम्हारी शपथों का प्रायश्चित्त है जब तुम शपथ लो। तथा अपनी शपथों की रक्षा करो, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) का वर्णन करता है, ताकि तुम उस का उपकार मानो।

90. हे ईमान वालो! निस्मदेह³ मदिरा,

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ
الَّذِي اسْمُوهُ مُؤْمِنُونَ

لَا يُؤْجِدُكُمْ اللَّهُ بِالْعُقُوبِ أَيْدِيكُمْ وَنَكْرٍ
يُؤْجِدُكُمْ بِمَعْقِدَتِهِ الْإِيمَانُ فَكَلِّمُوا
إِطْعَامَ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تَلْعَمُونَ
أَيْدِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَخْرِيجُهُمْ مِنَ
بَيْعِهِمْ فَوَسَّامُ تِلْكَ آيَاتُ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ
إِلَهُكُمْ لَكُمْ وَأَعْلَمُ الْإِيمَانُ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ
إِلَهُكُمْ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْمِرُ وَالْأَنْصَابُ

था और इमाइयो ने मन्यास की रीति बना ली थी और अपने ऊपर समारिक उचित स्वाद तथा मुख को अवैध कर लिया था। इस लिये यहाँ सावधान किया जा रहा है कि यह कोई अच्छाई नहीं बल्कि धर्म सीमा का उल्लंघन है।

1 व्यर्थ अर्थात् बिना निश्चय के जैसे कोई बात बात पर बोलता है (नहीं अल्लाह की शपथ!) अथवा: (हाँ अल्लाह की शपथ!) (बुखारी 4613)

2 अर्थात् यदि शपथ तोड़ दे, तो यह प्रायश्चित्त है।

3 शराब के निषेध के विषय में पहले सूरह बकरा आयत 219, और सूरह निमा आयत 43 में दो आदेश आ चुके हैं और यह अन्तिम आदेश है जिस में शराब

जुआ तथा देवस्थान¹ और पॉसे² शैतानी मलिन कर्म हैं, अतः इन से दूर रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

وَالَّذِينَ يَخْتَفُونَ بَيْنَ يَدَيْهِمْ إِذَا دُعِيَ إِلَى اللَّهِ فَيَدْعُونَ
لَا يَسْمَعُونَ ۚ

91. शैतान तो यही चाहता है कि शराब (मदिरा) तथा जूए द्वारा तुम्हारे बीच बैर तथा द्वेष डाल दे, और तुम्हें अल्लाह की याद तथा नमाज से रोक दे तो क्या तुम रुकोगे या नहीं?

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبَغْضَاءَ فِي أَنْفُسِكُمْ وَالشَّيْطَانُ يَصْنَعُ مَا يَشَاءُ
وَلَهُ صُورَةٌ كَمَا يَشَاءُ لَمْ يَلْحَظْ

92. तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, तथा (उन की अवज्ञा से) सावधान रहो और यदि तुम विमुख हुये, तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल खुला उपदेश पहुँचा देना है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاعْبُدُوا اللَّهَ
فِي خُفْوٍ أَوْ فِي سُرُورٍ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

93. उन पर जो ईमान लाये तथा सदाचार करते रहे, उस में कोई दोष नहीं, जो (निषेधाज्ञा से पहले) खा लिया, जब वह अल्लाह से डरने रहे, तथा ईमान पर स्थिर रह गये, और सत्कर्म करते रहे, फिर डरते और सत्कर्म करते रहे, फिर (रोके गये तो) अल्लाह से डरे और सदाचार करते रहे, तो अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता³ है।

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَاءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ فَيَاكُفُّونَ أَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيُكْفَرُونَ
وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُكْفَرُونَ

को सदैव के लिये वर्जित कर दिया गया है।

1. देव स्थान: अर्थात् वह वेदियाँ जिन पर देवी देवताओं के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती है। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य के नाम से बलि दिया हुआ पशु अथवा प्रसाद अवैध है।
2. पॉसे यह तीन तीर होते थे, जिन में वह कोई काम करने के समय यह निर्णय लेते थे कि उसे करें या न करें। उन में एक पर "करो" और दूसरे पर "मत करो" और तीसरे पर "शून्य" लिखा होता था। जूवे में लाठी और रेश इत्यादि भी शामिल हैं।
3. आयत का भावार्थ यह है कि जिन्होंने ने वर्जित चीजों का निषेधाज्ञा से पहले प्रयोग

94. हे ईमान वालो! अल्लाह कुछ शिकार द्वारा जिन तक तुम्हारे हाथ तथा भाले पहुँचेंगे, अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेगा ताकि यह जान ले कि तुम में से कौन उस से बिन देखे डरता है? फिर इस (आदेश) के पश्चात् जिस ने (इस का) उल्लंघन किया, तो उसी के लिये दुखदायी यातना है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا مَالَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ حَتَّىٰ تَبْلُغُوا أَجَلَ اللَّهِ فِيهِ تَتَذَكَّرُونَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا مَالَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ حَتَّىٰ تَبْلُغُوا أَجَلَ اللَّهِ فِيهِ تَتَذَكَّرُونَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا مَالَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ حَتَّىٰ تَبْلُغُوا أَجَلَ اللَّهِ فِيهِ تَتَذَكَّرُونَ

95. हे ईमान वालो! शिकार न करो^१। जब तुम एहराम की स्थिति में रहो, तथा तुम में से जो कोई जान बूझ कर ऐसा कर जाये, तो पालनू पशु से शिकार किये पशु जैसा बदला (प्रतिकार) है, जिस का निर्णय तुम में से दो न्यायकारी व्यक्ति करेंगे, जो काबा तक हृद्य (उपहार स्वरूप) भेजा जाये अथवा^२ प्रायश्चित्त है, जो कुछ निर्धनों का खाना है, अथवा उस के बराबर रोजे रखना है। ताकि अपने किये का दुष्परिणाम चखे। इस आदेश से पूर्व जो हुआ अब्राह ने उसे क्षमा कर दिया, और जो फिर करेगा, अब्राह उस से बदला लेगा, और अब्राह

يَذِيقُ الْيَاسُ أَمْوَالَهُمْ الْقَيْدَ لَكُمْ خَيْرٌ مِنْ
قَتْلِهِمْ بِمَا كَفَرُوا قَدْ أَفْجَرُ وَمِثْلَ مَا قُتِلَ مِنَ الْقَوْمِ
يَكْفُرُ بِهِ دَأْوُ عَدُوِّكُمْ هَذَا يُلْقِيَهُ اللَّهُ
كَمَا رَأَيْتُمْ مُصِيبِينَ أَوْ عَدُلَ ذَلِكَ جِئْنَا
بِهَا وَنُوبِ وَبِالْأَمْرِ عَدْلٌ لَكُمْ تَكْسِفُ وَمِنْ عَذَابِ
لَهُمْ فِي النَّارِ مِنْهُ وَنَارُ جَهَنَّمَ أَكْبَرُ

किया, फिर जब भी उन को अवैध किया गया तो उन से रुक गये उन पर कोई दाँष नहीं महीह हदीस में है कि जब शराब बर्जित की गयी तो कुछ लोगों ने कहा कि कुछ लोग इस स्थिति में मारे गये कि वह शराब पिये हुये थे उसी पर यह आयत उतरी। (बुखारी 4620)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा जो भी नशा लाये वह मदिरा और अवैध है। (महीह बुखारी-2003) और इस्लाम में उस का दण्ड अम्मी काटे है। (बुखारी 6779)

प्रभुत्वशाली बदला लेन वाला है।

96. तथा तुम्हारे लिये जल का शिकार और उस का खाद्य¹ हलाल (वैध) कर दिया गया है, तुम्हारे तथा यात्रियों के लाभ के लिये, तथा तुम पर धल का शिकार जब तक एहराम की स्थिति में रहो, हराम (अवैध) कर दिया गया है, और अब्राह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, जिस की ओर तुम सभी एकत्र किये जाओगे।

أَجِلَ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ
وَالْتَّيَارَ وَخُزْمَةٍ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَرْتَوْنَ مِنْهُ خَشْيَةً ۚ

97. अब्राह ने आदरणीय घर कावा को लोगों के लिये (शान्ति तथा एकता की) स्थापना का साधन बना दिया है, तथा आदरणीय मासों² और (हज्ज) की कुर्वानी तथा कुर्वानी के पशुओं को जिन्हें पट्टे पहनाये गये हों, यह इस लिये किया गया ताकि तुम्हें ज्ञान हो जाये कि अब्राह जो कुछ आकाशों और जो कुछ धरती में है सब को जानता है। तथा निस्सन्देह अब्राह प्रत्येक विषय का ज्ञानी है।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَافَّةَ آيَةً لِّلَّذِينَ
وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي سَمَوَاتٍ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

98. तुम जान लो कि अब्राह कड़ा दण्ड देने वाला है, और यह कि अब्राह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

99. अब्राह के रसूल का दायित्व इस के सिवा कुछ नहीं कि उपदेश पहुंचा दे। और अब्राह जो तुम बोलते और जो

مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَعْلَمُونَ
وَمَا تَكْتُمُونَ ۝

1 अर्थात् जो बिना शिकार किये हाथ आये, जैसे मरी हुई मछली। अर्थात् जल का शिकार एहराम की स्थिति में तथा साधारण अवस्था में उचित है।

2 आदरणीय मासों से अभिप्रेत जुलकादा जुलहिज्जा तथा मुहर्रम और रजब के महीने हैं।

मन में रखते हो, मब जानता है।

100. (हे नबी!) कह दो कि मलिन तथा पवित्र समान नहीं हो सकते। यद्यपि मलिन की अधिकता तुम्हें भा रही हो। तो हे मतिमानों! अब्बाह (की अवैज्ञा) से डरो, ताकि तुम सफल हो जाओ।¹

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ
كَثْرَةُ خَبِيثَاتٍ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

101. हे ईमान वाले! ऐसी बहुत सी चीजों के विषय में प्रश्न न करो, जो यदि तुम्हें बता दी जायें तो तुम्हें बुरा लग जाये। तथा यदि तुम उन के विषय में जब कि कुरआन उतर रहा है, प्रश्न करोगे, तो वह तुम्हारे लिये खोल दी जायेगी, अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया और अब्बाह अति क्षमाशील सहनशील² है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ
تُبَدَّلْ لَكُمْ تَدَبَّرْنَا إِنَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ
لَقَدْ أُنزِلَ عَلَيْكَ الْقُرْآنُ مِنْ قَبْلِهِ وَأَنْزَلَ اللَّهُ
مِنْ قَبْلِهِ مَا تَدَبَّرُونَ

102. ऐसे ही प्रश्न एक समुदाय ने तुम से पहले³ किये, फिर इस के कारण वह काफिर हो गये।

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِنْ قَبْلِكَ ثُمَّ كَذَّبُوا
بِهَا كَذِبًا

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि अब्बाह ने जिसे रोक दिया है वही मलिन और जिस की अनुमति दी है वही पवित्र है। अतः मलिन में रुची न रखो और किसी चीज की कमी और अधिकता को न देखो, उस के लाभ और हानि को देखो।
- 2 इब्ने अब्बास (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि कुछ लोग नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उपहाम के लिये प्रश्न किया करते थे। कोइ प्रश्न करता कि मेरा पिता कौन है? किसी की ऊँटनी खो गयी हो तो आप से प्रश्न करता कि मेरी ऊँटनी कहाँ है? इसी पर यह आयत उतरी (सहीह बुखारी 4622)
- 3 अर्थात् अपने रसूलों से। आयत का भावार्थ यह है कि धर्म के विषय में कुरेद न करो। जो करना है, अल्लाह ने बना दिया है और जो नहीं बनाया है, उसे क्षमा कर दिया है, अतः अपने मन से प्रश्न न करो। अन्यथा धर्म में सुविधा की जगह असुविधा पैदा होगी, और प्रतिवध अधिक हो जायेंगे, तो फिर तुम उन का पालन न कर सकोगे।

103. अल्लाह ने बहीरा और साइबा तथा बमीला और हाम कुछ नहीं बनाया है, परन्तु जो काफिर हो गये, वह अल्लाह पर झूठ घड़ रहे हैं, और उन में अधिकतर निर्बोध हैं।

104. और जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो अल्लाह ने उतारा है, तथा रसूल की ओर (आओ) तो कहने हैं हम को वही बस है, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है, क्या उन के पूर्वज कुछ न जानते रहे हों और न संमार्ग पर रहे हों।

105. हे ईमान वाले! तुम अपनी चिन्ता करो, तुम्हें बे हानि नहीं पहुँचा सकेंगे जो कुपथ हो गये, जब तुम सुपथ पर रहो। अल्लाह की ओर तुम सब को (परलोक में) फिर कर

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَيْمَةٍ وَلَا فِئَةٍ وَلَا حَمَةٍ لَكُمُ التَّيْمِينَ لَكُمْ تَكْوَنُ يُفْتَرَفُ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَالْأَكْثَرُ لَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ٥

وَلَا يُقِيلُ لَهُمْ تَعَالَوْ إِلَى مَا نَزَّلَ اللَّهُ وَآلِ الرُّسُولِ فَإِنَّهُمْ حَبِيبٌ مَا أُوجِدُوا عَلَيْهِمْ مَا تَكُونُ الْآلُ كَانُوا لَهُمْ يَنْعَمُونَ وَيُعَذِّبُونَ ٦

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَنَيْتُكَ النَّفْسُ لَكَ يَصْرُكُم مِّنْ ضَلٍّ إِذَا هَمَّ بِكُمُ إِلَى اللَّهِ فَجَعَلَهُ مُبِينًا يُبَيِّنُ لَكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ٧

1 अरब के मिश्रणवादी देवी देवता के नाम पर कुछ पशुओं को छोड़ देते थे और उन्हें पवित्र समझते थे यहाँ उन्हीं की चर्चा की गयी है।

बहीरा- वह ऊँटनी जिस को उस का कान चीर कर देवताओं के लिये मुक्त कर दिया जाता था और उस का दूध कोड़ नहीं दूह सकता था।

साइबा- वह पशु जिसे देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे जिस पर न कोड़ बोझ लाद सकता था, न सवार हो सकता था।

बमीला- वह ऊँटनी जिस का पहला तथा दूसरा बच्चा मादा हो, ऐसी ऊँटनी को भी देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे।

हाम- नर जिस के वीर्य से दस बच्चे हो जायें, उन्हें भी देवताओं के नाम पर साँड़ बना कर मुक्त कर दिया जाता था।

भावार्थ यह है कि यह अनर्गल चीजें हैं। अल्लाह ने इन का आदेश नहीं दिया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा मैं ने नरक को देखा कि उस की ज्वाला एक दूसरे को तोड़ रही है। और अमर बिन लुहय्य को देखा कि वह अपनी आँत खींच रहा है। उसी ने सब से पहले साइबा बनाया था। (दखारी 4624)

(निस्सदेह) हम अत्याचारी हैं।

108. इस प्रकार अधिक आशा है कि वह सही गवाही देंगे, अथवा इस बात से डरेंगे कि उन की शपथों को दूसरी शपथों के पश्चान् न माना जाये तथा अब्बाह से डरते रहो, और (उस का आदेश) सुनो, और अब्बाह उल्लंघनकारियों को सीधी राह नहीं¹ दिखाता।

109. जिस दिन अब्बाह सब रसूलों को एकत्र करेगा, फिर उन से कहेगा कि तुम्हें (तुम्हारी जानियों की ओर से) क्या उत्तर दिया गया? वह कहेंगे कि हमें इस का कोई ज्ञान² नहीं। निस्सदेह तू ही सब छुपे तथ्यों का ज्ञानी है।

110. तथा याद करो, जब अब्बाह ने कहा है मरयम के पुत्र ईसा! अपने ऊपर तथा अपनी माता पर मेरे पुरस्कार को याद कर जब मैं ने पवित्रान्मा (जिबरील) द्वारा तुझे समर्थन दिया, तू गहवारे (गोद) में तथा बड़ी आयु में लोगों से बातें कर रहा था तथा तुझे पुस्तक और प्रबोध तथा नौरान

دَلِيلَكَ أَذِنَ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَى وَجْهِهَا
وَيَحْفَظُوا أَلْسِنَتَهُمْ بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَأَسْمِعُوا وَلَهُ لَا يُفِيدُ الْقَوْمَ الْعِصْيِينَ ۝

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا يُجْعَلُونَ
لَأَعْلَمَ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَالِمِينَ ۝

إِذْ قَالَ اللَّهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ دُرِّبْنِي عَلَى
وَعَلَى وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدْنَاكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ
لِكَلِمَةٍ النَّاسِ فِي سُكُوتٍ وَكَلَامِكَ الْكَوْثِ
وَالْحِكْمَةِ وَالنُّورِ وَالْإِنجِيلَ إِذْ دَعَاكَ مِنَ
الْظُّلُمِ تَهْتِةً لَطِيفٌ بِإِذْنِ قَسَمْنَا مِنْهَا مَقَاطِعَ
طَيْرٍ بِإِذْنِ وَتَنْزِيلُ الْكِتَابِ وَالْإِنشَاءَ بِإِذْنِ

- 1 आयत 106 से 108 तक में ब्रमिख्यत तथा उस के साक्ष्य का नियम बनाया जा रहा है कि दो विश्वस्त व्यक्तियों को साक्षी बनाया जाये और यदि मुसलमान न मिलें तो गैर मुस्लिम भी साक्षी हो सकने हैं।
साक्षियों को शपथ के साथ साक्ष्य देना चाहिये।
विवाद की दशा में दोनों पक्ष अपने अपने साक्षी लायें।
जो इन्कार करे उस पर शपथ है।

- 2 अर्थात् हम नहीं जानते कि उन के मन में क्या था, और हमारे बाद उन का कर्म क्या रहा?

और इजील की शिक्षा दी, जब तू मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी का रूप बनाता और उस में फूंकता, तो वह मेरी अनुमति से वास्तव में पक्षी बन जाता था। और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था, और जब तू मुर्दा को मेरी अनुमति से जीवित कर देता था, और मैं ने बनी इस्राईल से तुझे बचाया था, जब तू उन के पास खुली निशानियाँ लाया, तो उन में से काफ़िरो ने कहा कि यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं है।

111. तथा याद कर, जब मैं ने तेरे हवारीयों के दिलों में यह वान डाल दी कि मुझ पर तथा मेरे रसूल (ईसा) पर इमान लाओ, तो सब ने कहा कि हम इमान लाये और तू साक्षी रह कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।

112. जब हवारीयों ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तेरा पालनहार यह कर सकता है कि हम पर आकाश से धाल (दस्तर खान) उतार दे। उस (ईसा) ने कहा तुम अक्काह से डरो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

113. उन्होंने ने कहा हम चाहते हैं कि उस में से खाये, और हमारे दिलों को संतोष हो जाये, तथा हमें विश्वास हो जाये कि तू ने हमें जो कुछ बताया है सच है, और हम उस के साक्षियों में से हो जायें।

فَلَا تُخَيِّرُ الْجِنَّةَ يَاقُوتَ وَيَذْكُرَتُ بَنِي
إِسْرَآءِيلَ عَنْكَ إِذْ جَعَلَهُمْ آيَاتٍ فَقَالَ
الْكَاذِبِينَ كَفَرُوا فَهُمْ عَنْ هَذَا إِذَا يُخْرِجُهُمُ ۝

وَإِذْ أُوحِيَتْ لَكَ الْحَوَارِيُّونَ أَنَّ امْنُوا بِي
وَبِرَّسُولِي قَالُوا مَكَارِهُنَّ أَشَدُّ بَرَاءَةً
مُسْلِمِينَ ۝

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يُعِصِي بَنُ مَرْيَمَ هَلْ
يَسْتَطِيعُ رُحُّكَ أَنْ يَنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً
فَمِنْ أَسْمَاءَ قَالِ اسْفُوفَةُ إِنَّكُمْ
مُؤْمِنُونَ ۝

قَالُوا امْنُوا بِمَا نَأْكُلُ مِنْهَا وَنَطْمِئِنُّ قُلُوبَنَا
وَنَقُولُ إِنَّ قَدْ صَدَّقْنَا وَنَكُونُ عَلَىهَا مِنَ
الشَّاهِدِينَ ۝

114. मर्यम के पुत्र ईसा ने प्रार्थना की:
हे अब्राहम हमारे पालनहार! हम पर
आकाश से एक धाल उतार दे, जो
हमारे तथा हमारे पश्चान्त् के लोगों
के लिये उत्सव (का दिन) बन
जाये तथा तेरी ओर से एक चिन्ह
(निशानी)। तथा हमें जीविका प्रदान
कर तू उत्तम जीविका प्रदाता है।

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ ارْزُقْنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً
مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً
مِّنكَ وَآرِزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٩٠﴾

115. अब्राह ने कहा मैं तुम पर उसे उतारने वाला हूँ, फिर उस के पश्चात् भी जो कुफ्र (अविश्वास) करेगा, तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा ऐसा दण्ड " कि संसार बानियो में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूँगा।

قَالَ اللَّهُ فِي سِتْرٍ لَهَا عَلَيْهِمْ سُبْحٌ يُكْفَرُ بِهِ مِنْكُمْ
فَوَاقٍ أَعْيَدُ بِهِ عَدُوِّي الْأَعْيُنِ بِأَفْئِدَةٍ
الْعَلَمِينَ ﴿٦٠﴾

116. तथा जब अब्राह (प्रलय के दिन) कहेगा: हे मरयम के पुत्र ईसा! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अब्राह को छोड़ कर मुझे तथा मेरी माता को पूज्य (अराध्य) बना लो? वह कहेगा: तू पवित्र है, मुझ से यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कोई अधिकार नहीं? यदि मैं ने कहा होगा तो तुझे अवश्य उस का ज्ञान हुआ होगा। तू मेरे मन की बात जानता है, और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तू ही परोक्ष (गैब) का अति ज्ञानी है।

وَلَمَّا قَالَ اللَّهُ لِمُعِيصِي بْنِ قُرَيْبٍ كُنْتَ قُلْتُ لِلنَّاسِ
الْحَمْدُ وَلِلَّهِ الْعَمَلُ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا
يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقِّ قَوْلِكَ كُنْتَ
تَقْدِرُ عَلَيْهِمْ أَنْ تَعْلَمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي
قُلُوبِكَ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١٠٠﴾

- 117 मैं ने तो उन से केवल वही कहा था, जिस का तू ने आदेश दिया था

قَالَتْ لَهُمْ أَلَمْ أَخَذُ مِنْ يَدِكُمْ يَه أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي

कि अल्लाह की इवाजत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उन की दशा जानता था जब तक उन में था और जब तू ने मेरा समय पूरा कर दिया¹⁾, तो तू ही उन को जानता था। और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है।

118. यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वह तेरे दास (बन्दे) है और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभावशाली गुणी है।

119. अल्लाह कहेगा: यह वह दिन है, जिस में सच्चों को उन का सच्च ही लाभ देगा। उन्हीं के लिये ऐसे स्वर्ग है जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उन में नित्य सदावासी होंगे, अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया तथा वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये और यही सब से बड़ी सफलता है।

120. आकाशों तथा धरती और उन में जो कुछ है, सब का राज्य अल्लाह ही का²⁾ है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

وَرَبُّكُمْ وَلَكُمْ عَلَيْهِمْ سَيِّدٌ تَأْتِيكُمْ بِهِ مَن مِّنكُمْ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُمْ أَنتَ الْغَافِلِينَ وَأَمَّا عَلَىٰ
نَحْنُ شَهِيدٌ ۝

إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا نَحْنُ بِمُحَاسِنٍ ۚ وَلَكِنْ لَّعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ وَأَمَّا
أَمَّا الْغُيُوبُ الْأَعْيُنُ ۝

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ فِيهِمْ وَنُفَعَالَهُمْ
جَنَّاتُ عِلِّيِّينَ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُجْرِي فِيهَا كَيْدَ الْأَنْهَارِ
اللَّهُ حَكِيمٌ ۝ وَبِضَآئِهِ ذِيكَ الْقَوَرِ الْعَظِيمِ ۝

يَلْعَلْ لَكُمْ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

- 1 और मुझे आकाश पर उठा लिया, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा जब प्रलय के दिन कुछ लोग बायें से धर लिये जायेंगे तो मैं भी यही कहूंगा (बुखारी 4626)
- 2 आयत 116 से अब तक की आयतों का माराश यह है कि अल्लाह ने पहले अपने वह पुरस्कार याद दिलाये जो ईसा अलैहिस्सलाम पर किये फिर कहा कि सत्य की शिक्षाओं के होते तेरे अनुयायियों ने क्यों तुझे तथा तेरी माता को पूज्य बना लिया? इस पर ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे कि मैं इस से निर्दोष हूँ। अभिप्राय यह है कि सभी नवियों ने एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म की शिक्षा दी परन्तु उन के अनुयायियों ने उन्हीं को पूज्य बना लिया। इसलिये इस का भार अनुयायियों और वं जिस की पूजा कर रहे हैं उन पर है। वह स्वयं इस से निर्दोष हैं।

सूरह अन्आम - 6

سُورَةُ الْأَنْعَامِ

सूरह अन्आम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 165 आयतें हैं

- अन्आम का अर्थ चौपाये होता है। इस सूरह में कुछ चौपायों के वैध तथा अवैध होने के संबंध में अरब वासियों के भ्रम का खण्डन किया गया है। और इसी लिये इस सूरह का नाम (अन्आम) रखा गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन किया गया है। और एकेश्वर का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में आखिरत (परलोक) के प्रति आस्था का प्रचार है तथा इस कुबिचार का खण्डन है कि जो कुछ है यही समारिक जीवन है।
- इस में उन नैतिक नियमों को बताया गया है जिन पर इस्लामी समाज की स्थापना होती है और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरुद्ध आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।
- आकाशों तथा धरती और स्वयं मनुष्य में अल्लाह के एक होने की निशानियों पर ध्यान दिलाया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मुसलमानों को दिलासा दी गई है।
- इस्लाम के विरोधियों को उन की अचेतना पर सावधान किया गया है।
- अन्त में कहा गया है कि लोगो ने अलग अलग धर्म बना लिये हैं जिन का मत्तर्धर्म से कोई संबंध नहीं। और प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिम् ने आकाशों तथा धरती को बनाया तथा अंधेरे और उजाला

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ نُورًا ثُمَّ يُرِيدُ كُفْرًا

बनाया फिर भी जो काफिर हो गये, वह (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर समझने¹ है।

يَوْمَ يُعَذِّبُ اللَّهُ النَّاسَ

2. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से उत्पन्न² किया फिर (तुम्हारे जीवन की) अवधि निर्धारित कर दी और एक निर्धारित अवधि (प्रलय का समय) उस के पास³ है, फिर भी तुम सदेह करते हो।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلَ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى يُمْسِكُكُمْ فِيهِ أَنْتُمْ تَشْتَرُونَ ۝

3. वही आब्राह पूज्य है आकाशों तथा धरती में वह तुम्हारे भेदों तथा खुली बातों को जानता है। तथा तुम जो भी करते हो उस को जानता है।

وَهُوَ فِي السَّمُوتِ وَفِي الْأَرْضِ عَلِيمٌ بِزُكُومِ الْغُيُوبِ ۝

4. और उन के पास उन के पालनहार की आयतों (निशानियों) में से कोई आयत (निशानी) नहीं आई, जिस से उन्होंने ने मुँह फेर न⁴ लिये हों।

وَمَا تَكُنْ لَهُمْ آيَاتٌ أَنْ يَسُبُّوا رَبَّهُمْ إِنْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

5. उन्होंने ने सत्य को झुठला दिया है, जब भी उन के पास आया। तो शीघ्र ही उन के पास उस के समाचार आ जायेंगे⁵ जिस का उपहास कर रहे हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

6. क्या वह नहीं जानते कि उन से पहले हम ने कितनी जातियों का नाश कर

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ نَحْنُ رَبُّ الْمُنْكَرِ ۝

- 1 अर्थात् वह अधेरो और प्रकाश में विवेक (अन्तर) नहीं करते और रचित को रचयिता का स्थान देते हैं।

- 2 अर्थात् तुम्हारे पिता आदम अलैहिस्सलाम को।

- 3 दो अवधि एक जीवन और कर्म के लिये तथा दूसरी कर्मों के फल के लिये।

- 4 अर्थात् मिश्रणवादियों के पास।

- 5 अर्थात् उस के तथ्य का ज्ञान हो जायगा। यह आयत मक्का में उस समय उतरी जब मुसलमान विवश थे, परन्तु बद्र के युद्ध के बाद यह भविष्य वाणी पूरी होने लगी और अन्ततः मिश्रणवादी परास्त हो गया।

दिया जिन्हें हम ने धरती में ऐसी शक्ति और अधिकार दिया था जो अधिकार और शक्ति तुम्हें नहीं दिये हैं। और हम ने उन पर धारा प्रवाह वर्षा की, और उन की धरती में नहरें प्रवाहित कर दी फिर हम ने उन के पापों के कारण उन्हें नाश कर दिया,¹ और उन के पश्चात् दूसरी जानियों को पैदा कर दिया।

لِاَلْاَرْضِ مَا تَكُنْ لَكُمْ وَرَبُّ السَّمَاوَاتِ عَلَيْهِمْ
يَنْزِلُ الرِّسَالُ وَكَتَبْنَا الْاَنْهَارَ خُرُوجِي مِنْ عَيْنِهِمْ
فَاَهْلَكَهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَاَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا
اٰخَرٰتٍ ۚ

7 (हे नबी!) यदि हम आप पर कागज में लिखी हुई कोई पुस्तक उतार² दें, फिर वह उसे अपने हाथों से छुये, तब भी जो काफिर है, कह देंगे कि यह तो केवल खुला हुआ जादू है।

وَلَوْ رَزَيْنَا عَنْكَ كِتٰبًا فِى قُرْطَابٍ مُّقْتَوٰةٍ
يَاۡدُوۡهُمْ لَقَالُۤا الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنْ هٰذَا اِلَّا
سِحْرٌ مُّجْتَمِعٌ ۚ

8. तथा उन्होंने ने कहा³ इस (नबी) पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा⁴ गया? और यदि हम कोई फरिश्ता उतार देते तो निर्णय ही कर दिया जाता, फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जाता।⁵

وَقَالُوۡا لَوْلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَیْهِ مِثۡرٌ مِّنَ السَّمَآءِ
لَقُوۡۤیۡ لَکُمۡ رِیۡسٌ لَّا یُنۡظَرُوۡنَ ۚ

9. और यदि हम किसी फरिश्ते को नबी बनाते, तो उसे किसी पुरुष ही के में बनाते⁶ और उन को उसी मद्दे में

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَکًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا مِّنۡ بَنٰی
عٰلَمِیۡنَ ۚ

1 अर्थात् अल्लाह का यह नियम है कि पापियों को कुछ अवसर देता है, और अन्ततः उन का विनाश कर देता है।

2 इस में इन काफिरों के दुराग्रह की दशा का वर्णन है।

3 जैसा कि वह माँग करते हैं। (देखिये सूरह बनी इस्राईल आयत 93)

4 अर्थात् अपने वास्तविक रूप में जब कि जिव्रील (अल्लैहिम्मलाम) मनुष्य के रूप में आया करते थे।

5 अर्थात् मानने या न मानने का।

6 क्योंकि फरिश्ते को आँखों से उस के स्वभाविक रूप में देखना मानव के बस में नहीं है। और यदि फरिश्ते को रसूल बना कर मनुष्य के रूप में भेजा जाना

डाल देने जो संदेह (अब) कर रहे हैं।

10. हे नबी! आप से पहले भी रसूलों के साथ उपहास किया गया तो जिन्होंने उन से उपहास किया, उन को उन के उपहास के (दुष्परिणाम ने) घेर लिया।

وَلَقَدْ اسْتَهْزَؤْا بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَآتَى
بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِؤْنَ ۝

- 11 (हे नबी!) उन से कहो कि धरती में फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का दुष्परिणाम क्या¹ हुआ?

قُلْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝

12. (हे नबी!) उन से पूछिये कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है वह किस का है? कहो अल्लाह का है, उस ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर² लिया है, वह तुम्हें अवश्य प्रलय के दिन एकत्र³ करेगा जिस में कोई संदेह नहीं, जिन्होंने ने अपने आप को क्षति में डाल लिया वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

قُلْ لِّمَن مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ قُلْ يَلٰهُ
كُتِبَ عَلَىٰ نَفْسِي الرَّحْمَةُ لَجِئْتُكُمُ الْيَوْمَ
بِالْبَيِّنَةِ ۚ لَا إِلٰهَ إِلَّا الْبَيْتُ عِزُّوْا نَفْسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

तब भी यह कहते यह तो मनुष्य है। यह रसूल कैसे हो सकता है?

- 1 अर्थात् मक्का से शाम तक आद समुद्र तथा लून (अलैहिस्मनाम) की वस्तियों के अवशेष पड़े हुये हैं वहाँ जाओ और उन के दुष्परिणामों से शिक्षा लो।
- 2 अर्थात् पूरे विश्व की व्यवस्था उस की दया का प्रमाण है। तथा अपनी दया के कारण ही विश्व में दण्ड नहीं दे रहा है। हदीस में है कि जब अल्लाह ने उत्पत्ति कर ली तो एक लेख लिखा जो उस के पास उस के अर्श (सिंहासन) के ऊपर है ((निश्चय मेरी दया मेरे क्रोध से बढ़ कर है।)) (सहीह बुखारी 3194 मुस्लिम 2751) दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के पास सौ दया है, उस में से एक को जिनो इन्सानों तथा पशुओं और कीड़ों मकोड़ों के लिये उतारा है जिस से वह आपस में प्रेम तथा दया करते हैं तथा निन्नावे दया अपने पास रख नी है। जिन से प्रलय के दिन अपने बंदों (भक्तों) पर दया करेगा। (सहीह बुखारी 6000, सहीह मुस्लिम-2752)
- 3 अर्थात् कर्मों का फल देने के लिये।

13. तथा उसी का¹ है, जो कुछ रात और दिन में बस रहा है, और वह सब कुछ सुनता जानता है।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الْغَيْبِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

14. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवा (किमी) को सहायक बना लूँ, जो आकाशों तथा धरती का बनाने वाला है, वह सब को खिलाना है और उसे कोई नहीं खिलाना? आप कहिये कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ तथा कदापि मुश्रिकों में से न बनूँ।

مَنْ أَعْوَزَالَهُ أَجْدًا مِّنَّا فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا يُلْقِعُهُ غُلًّا إِلَّا بِإِذْنِ مَنْ أَوْلَىٰ أَنْ يَكُونَ أَقْلٌ مِّنْ أَسْمَاءٍ وَلَا يَكُونُ مِنْ لَّغْوٍ لَّكُمْ ۝

15. आप कह दें कि मैं डरता हूँ यदि अपने पालनहार की अवज्ञा करूँ तो एक घोर दिन² की यातना से।

مَنْ فِي الْغَافِلِينَ خَشِيتُ رِقَّ عَذَابِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

16. तथा जिस से उस (यातना) को उस दिन फेर दिया गया, तो अल्लाह ने उस पर दया कर दी, और यही खुली सफलता है।

مَنْ يُصِرَّ عَنْهُ يَوْمَهُمْ فَتَدَّ تَجَمَّةٌ وَلَئِكَ الْفُورُ الْهَيْلِيُّ ۝

17. यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर दे और यदि तुम्हें कोई लाभ पहुँचाये, तो वही जो चाहे कर सकता है।

فَمَنْ يَسْتَسْكِنُ بِهِمْ يَصْرِفْ وَلَا يَكْتُم لَهُ الْإِثْمَ ۝ وَلَنْ يَسْتَسْكِنَ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ كُنَّ ۝

18. तथा वही है जो अपने सेवकों पर

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝

1 अर्थात् उसी के अधिकार में तथा उसी के आधीन है।

2 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ही ने इस विश्व की उत्पत्ति की है वही अपनी दया से इस की व्यवस्था कर रहा है और सब को जीविका प्रदान कर रहा है, तो फिर तुम्हारा स्वभाविक कर्म भी यही होना चाहिये कि उसी एक की वंदना करो। यह तो बड़े कुपथ की बात होगी कि उस से मुँह फेर कर दूसरों की पूजा अराधना करो और उन के आगे झुको।

पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचित है।

19. हे नबी! इन (मुश्रिकों) से पूछो कि किस की गवाही सब से बढ कर है? आप कह दें कि अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच गवाह¹ है। तथा मेरी ओर यह कुर्आन वही (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हें सावधान करूँ² तथा उसे जिस तक यह पहुँचा क्या वास्तव में तुम यह साक्ष्य (गवाही) दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी है? आप कह दें कि मैं तो इस की गवाही नहीं दे सकता आप कह दें कि वह तो केवल एक ही पूज्य है, तथा वास्तव में मैं तुम्हारे शिर्क से विरक्त हूँ।

20. जिन लोगों को हम ने पुस्तक³ प्रदान की है, वह आप को उसी प्रकार पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते⁴ है, परन्तु जिन्होंने स्वयं को क्षति में डाल रखा है, वही इमान नहीं ला रहे हैं।

21. तथा उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये⁵ अथवा उस की आयतों को

قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقُرْآنِ شَهِدْتُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ أَتَشْكُرُ أَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ قُلْ لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ وَرَبِّيَ بَرَأَ مِنَّمُ الشِّرْكَاءَ

الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكِتَابَ يَحْفَرُونَ كَمَا يَحْفَرُونَ أَبْنَاءَهُمْ أَلَيْسَ خَيْرُ الْفِتْنَةِ لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الظُّلُمُونَ

1 अर्थात् मेरे नबी होने का साक्षी अल्लाह तथा उस का मुझ पर उतारा हुआ कुर्आन है।

2 अर्थात् अल्लाह की अवैजा के दुष्परिणाम से।

3 अर्थात् तौरात तथा इजील आदि।

4 अर्थात् आप के उन गुणों द्वारा जो उन की पुस्तकों में वर्णित हैं।

5 अर्थात् अल्लाह का साझी बनाये।

झूठलाये? निस्संदेह अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

22. जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, तो जिन्हो ने शिर्क किया है, उन से कहेंगे कि तुम्हारे वह साझी कहाँ गये जिन्हें तुम (पूज्य) समझ रहे थे।

وَيَوْمَ نَحْضُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا
أَيْنَ شُرَكَاءُ الَّذِينَ كَفَرُوا مَنْ دُعُوا ۖ

23. फिर नहीं होगा उन का उपद्रव इस के सिवा कि वह कहेंगे कि अब्बाह की शपथ! हम मुशरिक थे ही नहीं।

لَقَدْ لَعُنَ اللَّهُ الَّذِينَ ظَنُّوا أَنَّهُمْ كَانُوا
مُشْرِكِينَ ۖ

24. देखो कि कैसे अपने ऊपर ही झूठ बोल गये और उन से वह (मिथ्या पूज्य) जो बना रहे थे खो गये!

لَنُظْرَكَنَّكَ بِذُنُوبِكَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَنُحْلِلَ عَلَيْهِمْ مَا
كَانُوا يَنْهَوْنَ ۖ

25. और उन (मुशरिकों) में से कुछ आप की बात ध्यान से सुनते है, और (वास्तव में) हम ने उन के दिलों पर पर्दे (आवरण) डाल रखे है कि बात न समझें¹ और उन के कान भारी कर दिये है, यदि वह (सत्य के) प्रत्येक लक्षण देख लें, तब भी उस पर इमान नहीं लायेंगे यहाँ तक कि जब वह आप के पास आ कर झगड़ते है, जो काफिर है तो वह कहते है कि यह तो पूर्वजों की कथाये है।

وَمِنْهُمْ مَن يَسْتَمِعُ الْآيَاتِ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ
أَكْمَةً أَلَّا يَفْقَهُوهُ رَبُّكَ ۚ وَآلِهِمْ قُرْآنٌ تَرْتُلُّ
أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا جَاءَ قَوْلُنَا مُجْدٍ ۖ لَّوْنَك
يَعْلَمُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ۖ

26. वह उसे² (सुनने से) दूसरों को रोकते है, तथा स्वयं भी दूर रहते है। और वह अपना ही विनाश कर रहे है। परन्तु समझते नहीं है।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْهَوْنَ عَنْهُ وَلَهُمْ آيَاتٌ
لَّا يُفْقَهُوهُ وَيَتْلُوهُمْ ۖ

1 न समझने तथा न सुनने का अर्थ यह है कि उस से प्रभावित नहीं होते क्यों कि कुफ़र तथा निफाक के कारण सत्य से प्रभावित होने की क्षमता खो जाती है

2 अर्थात् कुरआन सुनने से।

27. तथा (हे नबी!) यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे, जब वह नरक के समीप खड़े किये जायेंगे तो वह कामना कर रहे होंगे कि ऐसा होता कि हम संसार की ओर फेर दिये जाते और अपने पालनहार की आयतों को नहीं झुठलाते, और हम ईमान वालों में हो जाते।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذُ دُقُّقُوا عَلَى النَّارِ فَأَلْوَاسَتُمْ أَنْ تَقُولُوا لَا تَكُونُوا بَرَأًتَ رَبِّيًّا وَلَوْ كُنْتُمْ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ٥

28. बल्कि उन के लिये वह बात खुल जायेगी जिसे वह इस से पहले छुपा रहे थे¹, और यदि संसार में फेर दिये जायें, तो फिर वही करेंगे जिस से रोके गये थे। वास्तव में वह है ही झूठे।

بَلْ يَدَّبَعُوا اللَّهَ مُكَافِرِينَ ٦
لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَاللَّهُ لَكِيدٌ يُؤْتِنُ ٥

29. तथा उन्होंने ने कहा कि: जीवन बस हमारा ससारिक जीवन है और हमें फिर जीवित होना² नहीं है।

وَقَالُوا إِنَّا مِنَ اللَّهِ لَنَائِبُونَ ٧
بِمَقْعَدِمْ ٥

30. तथा यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे जब वह (प्रलय के दिन) अपने पालनहार के समक्ष खड़े किये जायेंगे, उस समय अब्राह उन से कहेगा क्या यह (जीवन) सत्य नहीं? वह कहेगा: क्यों नहीं, हमारे पालनहार की शपथ! इस पर अब्राह कहेगा: तो अब अपने कुफ्र करने की यातना चखो।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذُ دُقُّقُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ٨

31. निश्चय वह क्षति में पड़ गये, जिन्हो

فَذُوقُوا خَيْرَ النَّارِ مِنْ كَذِّ بُرَيْدَتِهِ ٩

1 अर्थात् जिस तथ्य को वह शपथ लेकर छुपा रहे थे कि हम मिश्रणवादी नहीं थे उस समय खुल जायेगा। अथवा आप (सबअब्राह अर्नैहि व सल्लम) को पहचानते हुये भी यह बात जो छुपा रहे थे, वह खुल जायेगी। अथवा द्विधावादियों के दिल का वह रोग खुल जायेगा जिसे वह संसार में छुपा रहे थे। (तफसीर इब्ने कसीर)

2 अर्थात् हम मरने के पश्चात् परलोक में कर्मों का फल भोगने के लिये जीवित नहीं किये जायेंगे।

ने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, यहाँ तक कि जब प्रलय अचानक उन पर आ जायेगी तो कहेंगे हाय! इस विषय में हम से बड़ी चूक हुई। और वह अपने पापों का बोझ अपनी पीठों पर उठाये होंगे। तो कैसा बुरा बोझ है जिसे वह उठा रहे हैं।

32. तथा संसारिक जीवन एक खेल और मनोरंजन¹ है। तथा परलोक का घर ही उत्तम² है, उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों, तो क्या तुम समझत³ नहीं हो?

33. (हे नबी!) हम जानते हैं कि उन की बातें आप को उदासीन कर देती हैं, तो वास्तव में वह आप को नहीं झुठलाते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

34. और आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये। तो इसे उन्हों ने सहन किया और उन्हें दुःख दिया गया यहाँ तक कि हमारी सहायता आ गयी। तथा अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं⁴ सकता, और आप के

جَاءَتْهُمْ لِسَاعَةُ بُعْتِهِ قَالُوا يَصْرَتْنَا عَلَى مَا
كُنَّا بِهَا بِرَاءً وَهُمْ يَعْبَهُونَ أَوْ رَهْمٌ عَلَى ظُهُورِهِمْ
الْأَسَاءُ مَا يَرِيضُونَ

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لُحُوبٌ وَمَهُمْ وَعِنْدَ آرَائِهِمْ
خَيْرٌ لِّلْآخِرَةِ يَتَّقُونَ فَلَا تَعْقِلُونَ

قَدْ عَلِمْنَا نَهَ لَيْسَ لَكَ الْبَدِئُ يَقُولُونَ قَوْمَهُمْ
لَا يَكِيدُونَكَ وَلَٰكِنَّ الْظَالِمِينَ يَأْتِيَهُمْ
بِعَبْدُونَ

وَلَقَدْ كَذَّبْتَ رَسُولًا مِّن قَبْلِكَ فَصَبْرًا عَلَىٰ مَا
كُذِّبُوا وَآوَاؤُهُمْ حَتَّىٰ آتَاهُم نَصْرُنَا
وَلَا مُدْبِلَ لِكَلِمَاتِنَا ثُمَّ لَقَدْ جَاءَكَ مِنَ
شِبَائِ الْمُرْسَلِينَ

1 अर्थात् साम्यिक और आस्थायी है।

2 अर्थात् स्थायी है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यदि कर्मों के फल के लिये कोई दूसरा जीवन न हो तो, संसारिक जीवन एक मनोरंजन और खेल से अधिक कुछ नहीं रह जायेगा। तो क्या यह संसारिक व्यवस्था इसी लिये की गयी है कि कुछ दिनों खेलो और फिर समाप्त हो जाये? यह ध्यान तो समझ बूझ का निर्णय नहीं हो सकती। अतः एक दूसरे जीवन का होना ही समझ बूझ का निर्णय है।

4 अर्थात् अल्लाह के निर्धारित नियम को कि पहले वह परीक्षा में डालता है फिर

पास रसूलों के समाचार आ चुके हैं।

35. और यदि आप को उन की विमुखता भारी लग रही है, तो यदि आप से हो सके तो धरती में कोई सुरंग खोज लें, अथवा आकाश में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई निशानी (चमत्कार) ला दें, और यदि अल्लाह चाहे तो इन्हें मार्गदर्शन पर एकत्र कर दे। अतः आप कदापि अज्ञानों में न हों।

36. आप की बात वही स्वीकार करेंगे, जो सुनते हों, परन्तु जो मुर्दे हैं उन्हें तो अल्लाह ही जीवन करेगा, फिर उमी की ओर फेरे जायेंगे।

37. तथा उन्होंने ने कहा कि: नबी पर उस के पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है परन्तु अधिकतर लोग अज्ञान हैं।

38. धरती में विचरते जीव तथा अपने दो पंखों से उड़ने पक्षी तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं, हम ने पुस्तक²¹ में कुछ

सहायता करता है।

- 1 अर्थात् प्रलय के दिन उन की समाधियों में। आयत का भावार्थ यह है कि आप के सदुपदेश को वही स्वीकार करेंगे जिन की अन्तरात्मा जीवित हो। परन्तु जिन के दिव्य निर्जीव है तो यदि आप धरती अथवा आकाश से लाकर उन्हें कोई चमत्कार भी दिखा दें तब भी वह उन के लिये व्यर्थ होगा। यह सत्य का स्वीकार करने की योग्यता ही खो चुके हैं।

- 2 पुस्तक का अर्थ ((लौहे महफूज)) है जिस में सारे संसार का भाग्य लिखा हुआ है।

فَلَنْ يَكُونَ كِبَرُ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ
أَنْ تَنْزِلَ عَلَى مَقَالِي الْأَرْضِ، وَتَسْلُقَ إِلَى السَّمَاءِ
فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهَدْيِ
وَلَا تَلَوْنَهُ مِنَ الْيَهُودِينَ ۝

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الْيَاقِينِ يَسْتَعُونَ، وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ
لَفَعَّلَ الْيَهُودَ بِرَحْمَتِهِ ۝

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ
قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ بِهِ وَكَذَلِكَ كُتِبَ لَهُمُ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا ظَيْرٍ يُطِيرُ
بِحَاجَتِهِ إِلَّا أَمْرًا أَمَّا نَحْنُ مَا قَرَأْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ

कमी नहीं की¹ है, फिर वह अपने पालनहार की ओर ही एकत्र किये² जायेंगे

ثُمَّ لَنُرَدَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ حَشْرًا ۝

39. तथा जिन्हों ने हमारी निशानियों को झूठला दिया, वह गूँगे, बहरें, अंधरों में है। जिसे अल्लाह चाहता है कुपथ करता है, और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا هُمْ وَكَانُوا الطَّاغُوتِ ۝
يَسْأَلُهُ بَعْضُهُمْ أَمْرًا يُحِبُّهُ عَلَيْهِ خِطَابٌ
مِّنْ بَيْنِهِمْ ۝

40. (हे नबी!) उन से कहो कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप आ जाये अथवा तुम पर प्रलय आ जाये, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?

ثُمَّ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَتَمَّكُمْ عَلَىٰ آبَاءِهِمْ أَوْ أَسْلَمُوا
السَّاعَةَ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

41. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, तो वह दूर करता है उस को जिस के लिये तुम पुकारते हो, यदि वह चाहें, और तुम उसे भूल जाते हो, जिसे साझी³ बनाते हो।

بَلَدِيًّا ۚ وَتَدْعُونَهُ فَيَسْتَفِئُ عَنْكُمْ الْإِلَهِ ۚ
يُنَادِي تَدْعُونَ وَنَحْنُ لَا نَسْمَعُ ۝

42. और आप से पहले भी समुदायों की

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِنْ شَاءَ رَبِّي مِّن قَبْلُ مَا يُدْعَوْنَ بِهِ السَّاعَةَ

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि यदि तुम निशानियों और चमत्कार की माँग करने हो तो यह पूरे विश्व में जो जीव और पक्षी है जिन के जीवन साधनों की व्यवस्था अल्लाह ने की है, और सब के भाग्य में जो लिख दिया है वह पूरा हो रहा है। क्या तुम्हारे लिये अल्लाह के अस्तित्व और गुणों के प्रतीक नहीं हैं? यदि तुम ज्ञान तथा समझ में काम लो, तो यह विश्व की व्यवस्था ही ऐसा लक्षण और प्रमाण है कि जिस के पश्चात् किसी अन्य चमत्कार की आवश्यकता नहीं रह जाती।

2 अर्थ यह है सब जीवों के प्राण मरने के पश्चात् उसी के पास एकत्रित हो जाने हैं क्यों कि वही सब का उत्पत्तिकार है।

3 इस आयत का भावार्थ यह है कि किसी घोर आपदा के समय तुम्हारा अल्लाह ही को गुहारना स्वयं तुम्हारी ओर से उस के अकेले पूज्य होने का प्रमाण और स्वीकार है।

और हम ने रसूल भेजे, तो हम ने उन्हें आपदाओं और दुखों में डाला¹, ताकि वह विनय करें।

وَالْقَارِءُ لَعَلَّهُمْ يَنْفَرُونَ ﴿٥﴾

43. तो जब उन पर हमारी यातना आई, तो वह हमारे समक्ष झुक क्यों नहीं गये? परन्तु उन के दिल और भी कड़े हो गये, तथा शैतान ने उन के लिये उन के कुकर्मों को सुन्दर बना² दिया।

قُلْ لَّا إِدْرَاكُمْ بِأَسَاسَتَعْرِفُوهُ وَلَكِنْ نَسْتَ
فَتَوَلَّوْهُمْ وَنَحْنُ نَعْلَمُ الشَّيْطَانَ مَا كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

44. तो जब उन्होंने ने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक (सुख सुविधा) के द्वार खोल दिये। यहाँ तक कि जब जो कुछ वह दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वह निराश हो कर रह गये।

لَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ
كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا
أَخَذْنَاهُمْ بِغْتَةٍ فَرَاذًا هُمْ عُتُوبُونَ ﴿٥﴾

45. तो उन की जड़ काट दी गई जिन्होंने अत्याचार किया और सब प्रशंसा अब्राह ही के लिये है। जो पूरे विश्व का पालनहार है।

لَقَدْ جَاءَهُ ذِكْرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ هُمْ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥﴾

46. (हे नबी!) आप कहें कि क्या तुम ने इस पर भी विचार किया कि यदि अब्राह तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति छीन ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अब्राह के सिवा कौन है जो तुम्हें इसे वापस दिला सके? देखो, हम कैसे बार बार आयतें³ प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَبَصَارَكُمْ
وَحَنَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ أَنْظَرُ
كَيْفَ تُصَدِّقُونَ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْذَبُونَ ﴿٥﴾

1 अर्थात् ताकि अब्राह से विनय करें और उस के सामने झुक जायें,

2 आयत का अर्थ यह है कि जब कुकर्मों के कारण दिल कड़े हो जाते हैं तो कोई भी बात उन्हें सुधार के लिये तय्यार नहीं कर सकती।

3 अर्थात् इस बात की निशानियाँ की अब्राह ही पूज्य है और दूसरे सभी पूज्य

वह मुँह¹ फेर रहे हैं।

47. आप कहें कि कभी तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना अचानक या खुल कर आ जाये, तो अत्याचारियों (मुश्रिकों) के सिवा किम का विनाश होगा?

48. और हम रसूलों को इसी लिये भेजने हैं कि वह (आज्ञाकारियों को) शुभ सुचना दें तथा (अवैज्ञाकारियों को) डरायें। तो जो इमान लाये तथा अपने कर्म सुधार लिये, उन के लिये कोई भय नहीं, और न वह उदामीन होंगे।

49. और जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें अपनी अवैज्ञा के कारण यातना अवश्य मिलेगी।

50. (हे नबी।) आप कह दें कि मेरे पास अल्लाह का कोप नहीं है, और न मैं परीक्ष का ज्ञान रखना हूँ तथा न मैं यह कहना कि मैं कोई फरिश्ता हूँ। मैं तो केवल उमी पर चल रहा हूँ जो मेरी ओर बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है। आप कहें कि क्या अन्धा² तथा आँख वाला बराबर हो जायेंगे? क्या तुम सोच विचार नहीं करते?

51. और इस (बह्नी द्वारा) उन को सचेत करो, जो इस बात से डरते हों कि

मिथ्या है (इन्हे कमीर)

1 अर्थात् सत्य से

2 अन्धा से अभिप्राय सत्य से विचलित है। इस आयत में कहा गया है कि नबी मानव पुरुष से अधिक और कुछ नहीं होना। वह सत्य का अनुयायी तथा उमी का प्रचारक होना है।

قُلْ إِنْ يَتَكْفُرُونَ أَتَكْفُرُونَ بِاللهِ بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

وَأَرْسَلْنَا الرُّسُلَ فِي الْأُمِّيِّينَ وَمُنذِرِينَ لِقَوْمٍ أَهْلًا مِنْهُمْ وَنَذِيرِينَ لِقَوْمٍ أَهْلًا مِنْهُمْ وَنَذِيرِينَ لِقَوْمٍ أَهْلًا مِنْهُمْ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا إِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ۝

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللهِ وَلَا أَفْلَحُ الْعِيبُ ۚ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ مَتَدْرِكُنَ الْيَمِّ الْأَمْرُ ۚ إِنِّي أَنَا نَذِيرٌ ۝

وَأَسْمِرُ بِهِ الَّذِينَ يُكْفُرُونَ إِنَّهُمْ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمُ

वे अपने पालनहार के पास (प्रलय के दिन) एकत्र किये जायेंगे, इस दशा में कि अल्लाह के सिवा कोई सहायक तथा अनुशंसक (सिफारशी) न होगा, संभवतः वह आज्ञाकारी हो जाये।

رَبُّهُمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا
شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

52. (हे नवी!) आप उन्हें अपने से दूर न करें जो अपने पालनहार की बदनामि प्रातः संध्या करने उस की प्रसन्नता की चाह में लगे रहते हैं। उन के हिमाव का कोई भार आप पर नहीं है और न आप के हिमाव का कोई भार उन पर¹⁴ है अतः यदि आप उन्हें दूर करेंगे, तो अन्याचारियों में हो जायेंगे।

وَلَا تَقْرُؤُا آيَاتِ يَدِّكَ حَتَّىٰ يَنْقَضَ إِلَيْكَ الْوَعْدُ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُنْكَرِينَ
وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا مُّبِينًا
وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا ذُنُوبَنَا رَبَّنَا وَاجْعَل لَّنَا مِن دُونِهَا آلَةً مَّحْسُومَةً
أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ
إِنَّ أَوْلَىٰ لِلسُّعَادَةِ الَّتِي فِي جَنَّاتٍ مُّدْخَلُونَ فِيهَا مِنَ الْأَعْدَادِ
الَّذِينَ كَانُوا يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ أَسْمَاءً لَّا يَسْمَعُونَ
وَالَّذِينَ يُسَلِّطُونَ عَلَيْهِمُ الْغُلَامَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ
مُجَارَاةً لَهُمْ فِي الْغُلَامِ وَلَا يَسْتَكْبِرُونَ
وَالَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُونَ
وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ زَكَاةً وَسَخِيحًا لِّفِيءٍ
وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ زَكَاةً وَسَخِيحًا لِّفِيءٍ
وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ زَكَاةً وَسَخِيحًا لِّفِيءٍ

53. और इसी प्रकार² हम ने कुछ लोगों की परीक्षा कुछ लोगों द्वारा की है, ताकि वह कहें कि क्या यही है जिन पर हमारे बीच से अब्राह ने उपकार किया³ है? तो क्या अब्राह कृतज्ञों को भली भाँति जानता नहीं है?

وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ بَعْضَ مَا يَرْجِعُونَ لِمَقُولِ أَهْلِكَ
فَإِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُمْ مِنْ يَمِينِهِ أَلَيْسَ إِلَهُهُ بِالْعَلِيمِ
بِالشَّكِيِّ ۝

54. तथा (हे नदी!) जब आप के पास वह लोग आयें, जो हमारी आयतों (कुर्बान) पर ईमान लाये हैं तो आप कहें कि तुम ⁴¹ पर सलाम (शान्ति)

لَا إِجْرَاءَ لَكَ الْيَوْمَ بِأَيِّدِ الْقَتْلِ سَلَامٌ
عَلَيْكَ كَتَبَ رَبُّكَ عَنْ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ إِنَّهُ مَنْ
حَسَلَ مِنْكُمْ شَوْهٌ بِجَهَائِهِ تَرْتَابُ مِنْ بَعْدِهِ

1 अर्थात् न आप उन के कर्मों के उत्तरदायी हैं न वे आप के कर्मों के। रिवायतों से विदित होता है कि मक्का के कुछ धनी मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि हम आप की बातें सुनना चाहते हैं किन्तु आप के पास नीच लोग रहते हैं जिन के साथ हम नहीं बैठ सकते। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)। हदीस में है कि अल्लाह तुम्हारे रूप और वस्त्र नहीं देखता किन्तु तुम्हारे दिलों और कर्मों को देखता है। (सहीह मुस्लिम 2564)

2 अर्थात् धनी और निर्धन बना कर।

3 अर्थात् मार्ग दर्शन प्रदान किया।

4 अर्थात् उन के सलाम का उत्तर दें और उन का आदर सम्मान करें।

है। अल्लाह ने अपने ऊपर दया अनिवार्य कर ली है कि तुम में से जो भी अज्ञानता के कारण कोई कुकर्म कर लेगा, फिर उस के पश्चात् तौबा (क्षमा याचना) कर लेगा, और अपना सुधार कर लेगा तो निःसन्देह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

55. और इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन करते हैं, और इस के लिये ताकि अपराधियों का पथ उजागर हो जाये (और सत्यवादियों का पथ सदिग्ध न हो।)

56. (हे नबी!) आप (मुशर्रकों से) कह दें कि मुझे रोक दिया गया है कि मैं उन की बंदना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। उन से कह दो कि मैं तुम्हारी आकांक्षाओं पर नहीं चल सकता। मैं ने ऐसा किया तो मैं सत्य से कुपथ हो गया, और मैं सुपथों में से नहीं रह जाऊँगा।

57. आप कह दें कि मैं अपने पालनहार के खुले तर्क पर स्थित¹ हूँ और तुम ने उसे झुठला दिया है। जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता करते हो, वह मेरे पास नहीं। निर्णय तो केवल अल्लाह के अधिकार में है। वह सत्य को वर्णित कर रहा है। और वह सर्वोत्तम निर्णयकारी है।

وَأَصْلَحَ دِينَهُ غُفُورًا رَحِيمًا

وَلَدَيْكَ الْفَيْضُ الْإِلَهِيُّ وَلَتَجِدَنَّ سَبِيلَ
الْعَاصِمِينَ ۝

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
قُلْ إِنِّي لَمُهَيْمٌ عَلَىٰ إِلَٰهَيْكُمْ قَدْ صَبَّحْتَ

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا
يُعَذِّبُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَظَلِيمٌ ۝
يَقْضُ الْحَقُّ وَهُوَ غَيْرُ لَظِيمٍ ۝

1 अर्थात् सत्यधर्म पर जो बह्यी द्वारा मुझ पर उतारा गया है। आयत का भावार्थ यह है कि बह्यी (प्रकाशना) की राह ही सत्य और विश्वास तथा ज्ञान की राह है और जो उसे नहीं मानते उन के पास शंका और अनुमान के सिवा कुछ नहीं।

58. आप कह दें कि जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता कर रहे हो, मेरे अधिकार में होता तो हमारे और तुम्हारे बीच निर्णय हो गया होता। तथा अब्राह अन्त्यचारियों¹ को भाल भोंति जानता है।

59. और उसी (अब्राह) के पास गैब (परोक्ष) की कुजियाँ² हैं। उन्हें केवल वही जानता है। तथा जो कुछ थल और जल में है वह सब का ज्ञान रखता है। और कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु उसे वह जानता है। और न कोई अन्न जो धरती के अंधेरो में हो, और न कोई आर्द्र (भीगा) और शुष्क (सखा) है परन्तु वह एक खुली पुस्तक में है।

60. वही है जो रात्रि में तुम्हारी आत्माओं को ग्रहण कर लेता है तथा दिन में जो कुछ किया है उसे जानता है। फिर तुम्हें उस (दिन) में जगा देता है, ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो जाये।³ फिर तुम्हें उसी की ओर प्रत्यागत (वापस) होना है। फिर वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों से सूचित कर देगा।

61. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर पूरा अधिकार रखता है, और तुम पर

قُلْ لَّوْ أَن يَدْعُوا مِن تَحْتِهَا سَاقِدُونَ لَمَّا تَضَعُوا بِهَا الْأَرْسَالَ ۖ وَإِنَّهُ عَلَىٰ غَلَبَةٍ قَاهِلِينَ ۝

وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنَ السَّمَاءِ إِلَّا غَيْثٌ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَنُجُومٍ وَلَا شَمْسٍ وَلَا قَمَرٍ لَّطِيفٌ ۝

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ۚ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ إِلَيْهِ أَجْرُ كُلِّ شَيْءٍ ثُمَّ يَرِيضُكُمْ ثُمَّ يَجْعَلُكُمْ فِي طَائِفَةٍ ۚ ثُمَّ يَجْعَلُكُمْ فِي طَائِفَةٍ ۚ ثُمَّ يَجْعَلُكُمْ فِي طَائِفَةٍ ۚ ثُمَّ يَجْعَلُكُمْ فِي طَائِفَةٍ ۚ

وَهُوَ الْقَاهِرُ الْغَلِيظُ ۚ وَهُوَ الَّذِي يَرْزُقُكُمْ فِيمَا تَرْضَوْنَ ۚ وَهُوَ الَّذِي يَمُنُّكُمْ فِي حَقِّكُمْ ۚ وَهُوَ الَّذِي يَمُنُّكُمْ فِي حَقِّكُمْ ۚ وَهُوَ الَّذِي يَمُنُّكُمْ فِي حَقِّكُمْ ۚ

1 अर्थात् निर्णय का अधिकार अब्राह को है जो उस के निर्धारित समय पर हो जायेगा।

2 सहीह हदीस में है कि गैब की कुजियाँ पाँच हैं अब्राह ही के पास प्रलय का ज्ञान है और वही वर्षा करता है। और जो गर्भाशयों में है उस को वही जानता है। तथा कोई जीव नहीं जानता कि वह कल क्या कमायेगा। और न ही यह जानता है कि वह किस भूमि में मरेगा। (सहीह बुखारी- 4627)

3 अर्थात् संसारिक जीवन की निर्धारित अवधि।

रक्षकों' को भेजना है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी के मरण का समय आ जाता है तो हमारे फरिश्ते उस का प्राण ग्रहण कर लेते हैं और वह तनिक भी आलस्य नहीं करता।

حَقُّ إِذَا جَاءَ أَحَدُكُمُ الْمَوْتُ تَوَضَّعَ رِعْلَتَهُ وَهُوَ
أَكْبَرُ طَوْنٍ ۝

62. फिर सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर वापिस लाये जाते हैं। सावधान! उसी को निर्णय करने का अधिकार है। और वह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

لَقَدْ رَدُّوا إِلَىٰ مُلْكِهِمْ لَمَّا هَمَّوْا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ ۖ فَلَمَّا ذُكِّرُوا بِهِ عَاذُوا آلَ هَارُونَ فَهَبُوا لَهُمْ هَوْنًا ۖ ثُمَّ كَفَرُوا بِهِ ۖ وَلَقَدْ ذُكِّرُوا بِهِ عَظِيمًا ۚ

६३. हे नबी! उन से पूछिये कि धूल तथा जल के अंधेरों में तुम्हें कौन बचाता है, जिसे तुम विनय पूर्वक और धीरे धीरे पुकारते हो कि यदि उस ने हमें बचा दिया, तो हम अवश्य कृतज्ञों में हो जायेंगे?

قُلْ مَنْ يُنْفِقْ مِنْكُمْ مِمَّا رَزَقْنَاهُ أَوْعَىٰ يَافَىٰ ۖ
تَصَدَّقًا وَأَوْفَىٰ ۚ لَيْسَ الْأَعْدَىٰ مِنْ هِيَ ۖ لَكُنْزٌ مِّنَ
الْفُكْرِ ۝ ٦٩

64. आप कह दें कि अब्राहम ही उस से तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाना है। फिर भी नम उस का साझी बनाने हों।

قُلِ اللَّهُ يَتَّبِعُكُمْ مِنْ حَيْثُ كُنْتُمْ وَيَخَبْرُكُمْ أَفَإِنَّكُمْ لَسَمِعْتُمْ وَفَإِنَّكُمْ لَعَمْرُؤُا أَنْتُمْ كَاذِبُونَ

६९ आप उन से कह दें कि वह इस का
सामर्थ्य रखता है कि वह कोई यातना
तुम्हारे ऊपर (आकाश) से भेज दे।
अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे (धरती)
से, या तुम्हें सम्प्रदायों में कर के एक
को दूसरे के आक्रमण^२ का स्वाद
चखा दे देखिये कि हम किस प्रकार

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَعَكُمْ فِي سَبِيلِكُمْ إِنَّ يَتَّبِعْتُمْ عَنْتُمْ عَنْ يَمِينِكُمْ
فَقَدْ أَذَوْتُمْ عَنْتِ أَرْجُلِكُمْ وَلَيْسَ كُنتُمْ بِشُعَبًا
تُكْرَبُونَ يَعْصُوكُمْ يَأْتِيَنَّكُمْ نَاقَتٌ مَدْرُوءَةٌ
أَلَا بِئْسَ لِلْعَكَمَةِ يُقْفَلُونَ ٥

1 अर्थात् परिश्रमों का तुम्हारे कर्म लिखने के लिये।

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी उम्मत के लिये तीन दुआएँ की: मेरी उम्मत का बिनाश हुब कर न हो। साधारण आकाल से न हो और आपस के सघर्ष से न हो। तो पहली दो दुआ स्वीकार हुईं और तीसरी से आप को रोक दिया गया। (बखारी 2216)

आयतों का वर्णन कर रहे हैं कि
संभवतः वह समझ जायें।

66. और (हे नबी!) आप की जाति ने इस (कुर्आन) को झुठला दिया, जब कि वह सत्य है। और आप कह दें कि मैं तुम पर अधिकारी नहीं¹ हूँ।

وَكَذَّبَ بِتُورٍ مِّنَ الْكِتَابِ وَلَقَدْ جَاءَهُ ذِكْرُهُ فَنَسَىٰ آلَ يَوْمِهِ ۖ فَتُورُكَ يُطَعْنَ ۚ

67. प्रत्येक सुचना के पूरे होने का एक निश्चित समय है, और शीघ्र ही तुम जान लोगे।

لِيُحِلَّ لَنَا زِينَتَنَا ۖ إِنَّكَ عَلِيمٌ بِمَا نَعْمَدُ ﴿٥٦﴾

6१. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में दोष निकालते हो तो उन से विमुख हो जायें, यहाँ तक कि वह किसी दूसरी बात में लग जायें। और यदि आप को शैतान भुला दे तो याद आ जाने के पश्चान् अत्याचारी लोगों के साथ न बैठें।

وَذَارِئَتِ الْيَدَيْنِ يَخُوضُونَ فِي الْيَدَيْنِ فَانْخَرِصْ
عَنْهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ وَإِنَّمَا
يُفْسِدُكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تُفْعَلْ بَعْدَ الْيَوْمِ مَعَ
الْقَوْمِ الْمُنْكَرِ ۝

69. तथा उन¹² के हिमाय में से कुछ का भार उन पर नहीं है जो अल्लाह से डरते हों परन्तु याद दिला¹³ देना उन का कर्तव्य है, तार्किक वह भी डरने लगें।

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مِنْ حَتَّىٰ يَمُوتُوا
وَلَكِنْ ذُكِّرُوا بِمِثْلِهِ

70. तथा आप उन्हें छोड़ें जिन्होंने अपने धर्म को क्रीड़ा और खेल बना लिया है। और संसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस (कुरआन) द्वारा उन्हें शिक्षा दें। ताकि कोई प्राणी अपने कर्नतों के कारण बंधक

وَقَدْ أَلَيْسَ عَذَابُ ذِيئِهِمْ لَهَا وَلَهُمْ عَذَابُهُمُ
الْعَبِيدَةُ الدَّائِمَةُ وَذِكْرِي أَنْ يُنْصَلَ نَفْسِي بِهَا
كَمَنْتُ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا سَعِيَةٌ
وَأَنْ تَعْدِلَ كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ بِهَا وَلَوْ كُنْتُ
أَلَيْسَ أَيْسَرُ لَهَا كَتَبْتُ الْهَرَمَ رَأْسَ مِنْ حَيْمَرٍ

1 कि तुम्हें बलपूर्वक मतवाड़ों में राक्षसों केवल तुम को अज्ञात का आदेश पहुंचा देना है।

2 अर्थात् जो अल्लाह की आयतों में दोष निकालते हैं।

३ अर्थात् सम्पत्ति देना।

न बन जाये, जिस का अल्लाह के सिवा कोई सहायक और अभिस्तावक (सिफारशी) न होगा। और यदि वह सब कुछ बदले में दें तो भी उन से नहीं लिया जायेगा।¹ यही लोग अपने कर्तुओं के कारण बंधक होंगे। उन के लिये उन के कुफ्र (अविश्वास) के कारण खौलना पेय तथा दुःखदायी पानना होगी

وَعَذَابٌ يُعَذِّبُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ

- 71 हे नबी! उन से कहिये कि क्या हम अल्लाह के सिवा उन की बंदना करें जो हमें कोई लाभ और हानि नहीं पहुँचा सकते? और हम एडियों के बन फिर जायें, इस के पश्चात जब हमें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है, उस के समान जिसे शैतानों ने धरती में बहका दिया हो, वह आश्चर्य चाँकन हो उस के साथी उस को पुकार रहे हों कि सीधी राह की ओर हमारे पास आ जाओ?⁽²⁾ आप कह दें कि मार्गदर्शन तो वास्तव में वही है जो अल्लाह का मार्ग दर्शन है। और हमें तो यही आदेश दिया गया कि हम विश्व के पालनहार के आज्ञाकारी हो जायें।

قُلْ أَنتُمْ خُلَافَةُ ذُوْنِ الْمَوَالِ لَا يَنْفَعُكُمْ وَلَا يَضُرُّكُمْ شَيْءٌ مِّنْ عَقَابِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ هَدَيْتُمُوهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانًا لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُوْنَ إِلَى الْهُدَىٰ اثْنًا قُلْ لِّكَ هُدًى الْمَوْلَى الْهُدَىٰ وَأَمْرًا لِّلنَّبِيِّ رَبِّ الْعَالَمِينَ

- 72 और नमाज की स्थापना करें, और उस से डरने रहें तथा वही है जिस के पास तुम एकाग्रित किये जाओगे।

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَكُونُوا يَذْكُرُونَ

- 1 संसारिक दण्ड से बचाव के लिये तीन साधनों से काम लिया जाता है: मैत्री सिफारिश और अर्थदण्ड। परन्तु अल्लाह के हाँ ऐसे साधन किसी काम नहीं आयेंगे। वहाँ केवल ईमान और सत्कर्म ही काम आयेंगे।
2 इस में कुफ्र और ईमान का उदाहरण दिया गया है कि ईमान की राह निश्चित है और अविश्वास की राह अनिश्चित तथा अनेक है।

73. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के माध की¹ है। और जिस दिन वह कहेगा कि "हो जा" तो वह (प्रलय) हो जायेगी। उस का कथन सत्य है। और जिस दिन नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा उस दिन उसी का राज्य होगा। वह परोक्ष तथा² प्रत्यक्ष का ज्ञानी है। और वही गुणी सर्वमूचित है।

74. तथा जब इब्राहीम ने अपने पिता आजर से कहा: क्या आप मूर्तियों को पूज्य बनाते हैं? मैं आप को तथा आप की जाति को खुले कुपध में देख रहा हूँ।

75. और इब्राहीम को इसी प्रकार हम आकाशों तथा धरती के राज्य की व्यवस्था दिखाते रहे, और नाफि वह विश्वासियों में हो जाये।

76. तो जब उस पर रात छा गयी, तो उस ने एक तारा देखा। कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहा मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।

77. फिर जब उस ने चाँद को चमकने देखा तो कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहा: यदि मुझे मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया तो मैं अवश्य कुपधों में से हो जाऊँगा।

78. फिर जब (प्रातः) सूर्य को चमकने

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ
وَيَوْمَ يُقْرَأُ كُنْ فَيَكُونُ أَقْوَمُ الْحَقِّ وَهُوَ
الْمَلِكُ يَوْمَ تَنْفَعُ فِي الصُّورِ خَيْرُ الْعَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَمِيدُ

وَلَمَّا قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ إِذْ أَتَاهُ أَصْنَامًا
الْعَبَاةُ إِنِّي أَرَىٰ أَرْكَكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَمَّا كُنَ مِنَ السَّالِفِينَ

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا قَالَ هَذَا رَبِّي
فَلَمَّا قَلَّ قَالَ لَا أُحِبُّ الْإِلَهِينَ

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي فَمَنَّا قُلْ قَالَ
لَيْسَ لَهُ مُعَدِّدٌ رَبِّي لَا تَزُولُ مِنِّي الْقُورُ
الضَّالِّينَ

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا الْكُوفُورُ

1 अर्थात् विश्व की व्यवस्था यह बता रही है कि इस का कोई रचयिता है।

2 जिन चीजों को हम अपनी पाँच ज्ञान इन्द्रियों से जान लेते हैं वह हमारे लिये प्रत्यक्ष है और जिन का ज्ञान नहीं कर सकें वह परोक्ष है।

देखा तो कहा यह मेरा पालनहार है। यह सब से बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया तो उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! निश्चिंदह मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम (अब्राह का) साझी बनाते हो।

أَفَلَمْ يَأْتِ بِدَلٍّ قَالِ يَقُولُ رَبِّي وَمَا تُشْرِكُونَ ۝

79. मैं ने तो अपना मुख एकाग्र हो कर उस की ओर कर लिया है जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना की है। और मैं मुशिरकों में से नहीं। हूँ।

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

80. और जब उस की जाति ने उस से वाद झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम अब्राह के विषय में मुझ से झगड़ रहे हो, जब कि उस ने मुझे सुपथ दिखा दिया है। तथा मैं उस से नहीं डरता हूँ जिसे तुम साझी बनाते हो। परन्तु मेरा पालनहार कुछ चाहे (तभी वह मुझे हानि पहुंचा सकता है।) मेरा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है। तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?

وَمَا كُنْهِ قَوْمُهُ قَالَ أَتُوعَدُونَ فِي الْمَوْتِ قَدْ هَدَيْتُمْ وَالْعَافُ مَا تُشْرِكُونَ يَا آلَ إِبْرَاهِيمَ إِنِّي جَعَلْتُكَ مُبَشِّرًا بِبَرٍّ ۝ وَسِعَرْتُ فِي كُلِّ مَثَلٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝

81. और मैं उन से कैसे डरूँ जिन को तुम ने उस का साझी बना लिया है जब तुम उस चीज को उस का साझी बनाने से नहीं डरते जिस का अब्राह

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخْلَوْنَ إِلَهُكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَهُ يَمِينٌ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانٌ فَاقْبَلُوا الْعَذَابَ إِنِّي أَخَذْتُ بِالْأَمْرِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

1 इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस युग में नबी हुये जब बाबिल तथा नैनबा के निवासी आकाशीय ग्रहों की पूजा कर रहे थे। परन्तु इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर अब्राह ने सत्य की राह खोल दी। उन्होंने इन आकाशीय ग्रहों पर विचार किया तथा उन को निकलने और फिर डूबने देख कर यह निर्णय लिया कि यह किसी की रचना तथा उस के अधीन है। और इन का रचयिता कोई और है अतः रचित तथा रचना कभी पूज्य नहीं हो सकती, पूज्य वही हो सकता है जो इन सब का रचयिता तथा व्यवस्थापक है।

ने तुम पर कोई तर्क (प्रमाण) नहीं
उतारा है? तो दोनों पक्षों में कौन
अधिक शान्त रहने का अधिकारी है,
यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो?

82. जो लोग ईमान लाये, और अपने
ईमान को अत्याचार (शिरक) से लिप्त
नहीं¹ किया, उन्हीं के लिये शान्ति
है, तथा वही मार्ग दर्शन पर है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ
لَهُمْ لَازِمٌ وَهُمْ فِي شَرَفٍ

83. यह हमारा तर्क था, जो हम ने
इब्राहीम को उस की जानि के विरुद्ध
प्रदान किया, हम जिस के पदों² को
चाहते हैं ऊँचा कर देते हैं। वास्तव में
आप का पालनहार गुणी तथा ज्ञानी है।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا إِبْرَاهِيمَ عَلٰى قَوْمِهِ تَرْتِيبًا
وَرَجَبْنَا عَنْ أَهْلِ بَيْتِهِ رُتْبًا لَّعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

84. और हम ने इब्राहीम को (पुत्र)
इसहाक तथा (पौत्र) याकूब प्रदान किये।
प्रत्येक को हम ने मार्गदर्शन दिया। और
उस से पहले हम ने नूह को मार्गदर्शन
दिया और इब्राहीम की संतान में से
दावूद तथा सुलैमान और अय्यूब तथा
यूसुफ और मूसा तथा हारून को।
और इसी प्रकार हम सदाचारियों को
प्रतिफल प्रदान करते हैं।

وَوَهَبْنَا لَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ كُلًّا مَّا يَآءٍ
وَلُوطًا مَّا يَمُرُّ بَيْتًا مِنْ بَيْتِنَا وَلَقَدْ
جَعَلْنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيُوسُفَ أَهْلَ
بَيْتٍ لِّكَ فِي التَّحِيَّاتِ

85. तथा जकरिया और यहया तथा
ईसा और इल्यास को। यह सभी

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ

1 हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के
साथियों ने कहा: हम में कौन है जिस ने अत्याचार न किया हो? उस समय यह
आयत उतरी। जिस का अर्थ यह है कि निश्चय शिरक (मिश्रणवाद) ही सब से
बड़ा अत्याचार है। (सहीह बुखारी 4629)

2 एक व्यक्ति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हे
सर्वोत्तम पुरुष! आप ने कहा: वह (सर्वोत्तम पुरुष) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं।
(सहीह मुस्लिम 2369)

सदाचारियों में से थे।

86. तथा इस्माईल और यमम तथा यूनस और लूत को। प्रत्येक को हम ने समार वासियों पर प्रधानता दी।
87. तथा उन के पूर्वजों और उन की संतति तथा उन के भाइयों को और हम ने इन सब को निर्वाचन कर लिया और उन्हें सुपथ दिखा दिया था।
88. यही अब्राह का मार्गदर्शन है जिस के द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहे सुपथ दर्शा देता है। और यदि वह शिर्क करने, तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।¹
89. (हे नबी!) यही वह लोग है जिन्हें हम ने पुस्तक तथा निर्णय शक्ति एवं नुबूवन प्रदान की। फिर यदि यह (मुश्रिक) इन बातों को नहीं मानते तो हम ने इसे कुछ ऐसे लोगों को सौंप दिया है जो इसका इन्कार नहीं करते।
90. (हे नबी!) यही वह लोग है जिन को अब्राह ने सुपथ दर्शा दिया, तो आप भी उन्हीं के मार्गदर्शन पर चले तथा कह दें कि मैं इस (कार्य)² पर तुम से कोई प्रतिदान नहीं माँगता! यह सब संसार वासियों के लिये एक शिक्षा के सिवा कुछ नहीं है।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلًّا فَضَّلْنَا
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝

وَمِنْ اٰبَائِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ وَاَخْوَانِهِمْ وَاَحْبَتِهِمْ
وَهَدَيْنَاهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ ۝

ذٰلِكَ هُدٰى رَبُّهُ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَخِطَّ عَنْهُمْ سَخِرَآءُ
يَحْمِلُوْنَ ۝

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ تَتْلُوْهُ الْكِتٰبَ وَاُعَلِّمُ
وَالْحِكْمَةَ اِنَّا نَكْتُمُ بِهَا مَوْلٰٓءَہٗمْ فَقَدْ وُكِّلْنَا
بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكَرِيْمِيْنَ ۝

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰى رَبُّهُ يَهْدِيْهُمْ
اِنَّ سَعٰدَةً فُضِّلَ لَا تَسْأَلُوْهُمْ عَلَيْهِمْ اَجْرًا وَاِنَّا
مَوْلٰٓٓءُكُمْ لِلْعٰلَمِيْنَ ۝

1 इन आयतों में 18 नबीयों की चर्चा करने के पश्चात् यह कहा है कि यदि यह सब भी मिश्रण करने तो इन के सत्कर्म व्यर्थ हो जाते। जिस से अभिप्राय शिर्क (मिश्रणवाद) की गंभीरता से सावधान करना है।

2 अर्थात् इस्लाम का उपदेश देने पर

91. तथा उन्होंने ने अल्लाह का सम्मान जैसे करना चाहिये नहीं किया। जब उन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने किसी पुरुष पर कुछ नहीं उतारा, उन से पूछिये कि वह पुस्तक जिसे मूसा लाये, जो लोगों के लिये प्रकाश तथा मार्गदर्शन है, किम ने उतारी है जिसे तुम पन्नों में कर के रखते हो? जिस में से तुम कुछ को लोगों के लिये बयान करते हो और बहुत कुछ छुपा रहे हो। तथा तुम को उस का ज्ञान दिया गया जिस का तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को ज्ञान न था? आप कह दें कि अल्लाह ने। फिर उन्हें उन के विवादों में खेलने हुये छोड़ दें।

92. तथा यह (कुरआन) एक पुस्तक है जिसे हम ने (तौरात के समान) उतारा है। जो शुभ, अपने से पूर्व (की पुस्तकों) को सच्च बताने वाली है, तथा ताकि आप «उम्मूल कुरा» (मक्का नगर) तथा उस के चतुर्दिक के निवासियों को सचेत¹ करें। तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही इस पर ईमान लाते हैं। और वही अपनी नमाजों का पालन करते² हैं।

93. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और कहे

وَقَدْ رَأَى اللَّهَ فَهُوَ قَدِيرٌ إِذْ يَقُولُ مَا تَأْكُرُ اللَّهُ
عَلَىٰ يَمِينٍ مِّنْ قَوْلٍ مِّنْ أُولَٰئِكَ الْكِتَابِ الَّذِي
جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّبَنَائِمِ يَعْلَمُونَ
قَوَائِمَ مِمَّا دُونَهَا وَتُفَوِّنُ كَثِيرٌ وَيَعْلَمُونَهُ الْوَالِدُ
لَعَلَّهُمُ اتَّقُوا اللَّهَ وَلَا يُفَاكِرُوا إِلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ قَدَرُ مَا تُحْكُمُ
فِيهِمْ يَوْمَئِذٍ يُفَصِّلُونَ ﴿٩١﴾

وَهَذَا الْكِتَابُ أَنزَلْنَاهُ فِي يَوْمٍ مُّصَدِّقٍ لِّلَّذِي بَيْنَ
يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ
كَانِطُونَ ﴿٩٢﴾

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كُفْرًا بِمَا قَالِ

1 अर्थात् पूरे मानव संसार को अल्लाह की अवैजा के दुष्परिणाम से सावधान करें। इस में यह संकेत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव संसार के पथ प्रदर्शक तथा कुरआन सब के लिये मार्गदर्शन है। और आप केवल किसी एक जाति या क्षेत्र अथवा देश के नहीं हैं।

2 अर्थात् नमाज उस के निर्धारित समय पर बराबर पढ़ते हैं।

कि मेरी ओर प्रकाशना (बढ़ी) की गई है, जब कि उस की ओर बट्ठी (प्रकाशना) नहीं की गयी? तथा जो यह कहे कि अब्राह ने जो उतारा है उस के समान मैं भी उतार दूंगा? और (हे नबी!) आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते जब की फरिश्ते उन की ओर हाथ बढ़ाये (कहते हैं): अपने प्राण निकालो! आज तुम्हें इस कारण अपमानकारी याचना दी जायेगी जो अब्राह पर झूठ बोलते और उस की आयतों (को मानने) से अभिमान कर रहे थे।

94. तथा (अब्राह) कहेगा: तुम मेरे मामने उसी प्रकार अकेले आ गये जैसे तुम्हें प्रथम बार हम ने पैदा किया था। तथा हम ने जो कुछ दिया था, अपने पीछे (संसार ही में) छोड़ आये। और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे अभिस्तावकों (सिफारिशियों) को नहीं देख रहे हैं? जिन के बारे में तुम्हारा भ्रम था कि तुम्हारे कामों में वह (अब्राह के) साझी है। निश्चय तुम्हारे बीच के संबंध भंग हो गये हैं और तुम्हारा सब भ्रम खो गया है।

95. वास्तव में अब्राह ही अब तथा गुठली को (धरती के भीतर) फाड़ने वाला है। वह निर्जीव से जीवित को निकालता है, तथा जीवित से निर्जीव को निकालने वाला। वही अब्राह (सत्य पूज्य) है। फिर तुम कहाँ बहकें जा रहे हो?

أَوَيْتُ الْإِنسَانَ إِذْ أَنشَأْنَاهُ مِنْ نَسْلٍ سَائِرٍ
مِثْلَ مَا أَنشَأْنَاهُ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ خِرَاجًا أَنفُسَهُمْ
الْيَوْمَ يَخْرُجُونَ خَذَابُ الْمَوْتِ يَوْمَ كُنتُمْ تَفْقَهُونَ عَلَى
الْأَعْيُنِ عَمَىٰ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٤﴾

وَلَقَدْ جَعَلْنَا مِنْ قُرَادَىٰ كَمَا جَعَلْنَا مِنْ مَرَّةٍ
وَمَرَّةً لَّكُمْ مَا خُلِقْتُمْ وَآدَامُ الْقَوْمِ وَمَا تَرَىٰ مِنْكُمْ
شَفَعَاءَ لَكُمْ الْيَوْمَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ لَقَدْ
تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَا كُنتُمْ
تَزْعُمُونَ ﴿٩٥﴾

إِنَّ اللَّهَ فَعَلُ الْغَيْبِ وَالْمَوْتِ يُخْرِجُ الْخَلْقَ مِنَ
الْغَيْبِ وَيُخْرِجُ الْغَيْبِ مِنَ الْخَلْقِ فَالْإِنْسَانُ فَالْإِنْسَانُ
تُؤْتَلُونَ ﴿٩٥﴾

96. वह प्रभात का तड़काने वाला, और उमी ने मुख के लिये रात्रि बनाई तथा सूर्य और चाँद हिमाव के लिये बनाया। यह प्रभावी गुणी का निर्धारित किया हुआ अंकन (माप) ¹ है।

97. उमी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये हैं, ताकि उन की सहायता से धल तथा जल के अधिकारों में रास्ता पाओ। हम ने (अपनी दया के) लक्षणों का उन के लिये विवरण दे दिया है जो लोग जान रखते हैं।

98. वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया फिर तुम्हारे लिये (संसार में) रहने का स्थान है। और एक समर्पण (मरण) का स्थान है। हम ने उन्हें अपनी आयतों (लक्षणों) का विवरण दे दिया जो समझ बूझ रखते हैं।

99. वही है जिस ने आकाश से जल की वर्षा की फिर हम ने उस से प्रत्येक प्रकार की उपज निकाल दी। फिर उस से हरियाली निकाल दी। फिर उस से तह पर तह दाने निकालते हैं तथा खजूर के गांभ से गुच्छे झुके हुये। और अँगूरी तथा जैतून और अनार के बाग समरूप तथा स्वाद में अलग अलग। उस के फल को देखो जब फल लाता है, तथा उस के पकने को। निःसदेह इन में उन लोगों के लिये बड़ी निशानियाँ

فَالْقَارِعَةُ إِذَا جَاءَ النَّاسَ سَكْبًا وَتَشْمَسُ
وَالْقَمَرُ حُسْبَانًا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ٩٦

وَمَا يَكْنُوزُ يَكْنُوزُ لَكُمْ لِنُبَيِّنَ لَكُمْ وَابْتَهِمَ فِي
قُلُوبِهِمُ الْبُرْهَانَ لِقَوْمٍ يُفْقَهُونَ ٩٧

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُم مِّنْ نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرًّا
وَمُسْتَوْدَعًا قَدْ قَضَىٰ إِلَيْكُمْ رُيُوتَكُمْ يُفْقَهُونَ ٩٨

وَهُوَ الَّذِي تَنَزَّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ
بَهَائًا كُلًّا مِّنْ ثَمَرٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نَّخِيلًا
وَأَعْنَابًا وَفِي السَّيِّدَاتِ لُحُوبٌ وَأَنشَأْنَا مِنْهَا
شَجَرًا وَعِظًا مِّمَّنْ يَنْظُرُونَ إِلَىٰ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ
وَيَعْبَهُ إِنِّي ذَلِكُمْ زَايِدٌ لِّقَوْمٍ يُفْقَهُونَ ٩٩

1 जिस में एक पल की भी कमी अथवा अधिकता नहीं होती।

(लक्षण) ¹ हैं जो ईमान लाते हैं।

100. और उन्होंने ने जिसों को अब्राह का भाझी बना दिया। जब कि अब्राह ही ने उन की उत्पत्ति की है। और बिना ज्ञान के उस के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं। वह पवित्र तथा उच्च है उन वानों में जो वह लोग कह रहे हैं।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُمْ سُلُوكًا إِلَى الْجَنَّةِ وَخَرَقُوا لَهُ
بَيْنَ وَبَيْنَ بَيْنَ بَيْنَ عَلَيْهِ تَحْتَهُ وَقُلْ لِّكَ عَمَلُونَ

101. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है उस के संतान कहाँ से हो सकती है, जब कि उस की पत्नी ही नहीं है? तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है। और वह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानता है।

يَوْمَ يَكُونُ لَهُ الْأَرْضُ وَالْأَرْضُ كُلُّ شَيْءٍ
وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَزِيزٌ ۝

102. वही अब्राह तुम्हारा पालनहार है, उस के अर्तिरक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का उत्पत्तिकार है। अतः उस की इबादन (वंदना) करो। तथा वही प्रत्येक चीज का अभिरक्षक है।

ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكَ الرَّحْمَنُ الْكَرِيمُ
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَزِيزٌ ۝

103. उस का आँख इद्राक नहीं कर सकती ² जब कि वह सब कुछ देख रहा है। वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीजों से अवगत है।

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ
وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝

- 1 अर्थात् अब्राह के पालनहार होने की निशानियाँ।

आयत का भावार्थ यह है कि जब अब्राह ने तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये हैं तो फिर तुम्हारे आन्मिक जीवन के सुधार के लिये भी प्रकाशना और पुस्तक द्वारा तुम्हारे मार्गदर्शन की व्यवस्था की है तो तुम्हें उस पर आश्चर्य क्यों है तथा इसे अस्वीकार क्यों करते हो?

- 2 अर्थात् इस संसार में उसे कोई नहीं देख सकता।

104. तुम्हारे पास निशानियाँ आ चुकी हैं। तो जिस ने समझ बझ से काम लिया उस का लाभ उसी के लिये है। और जो अन्धा हो गया तो उस की हानि उसी पर है। और मैं तुम पर संरक्षक¹ नहीं हूँ।

فَدَّ جَاءَ كُورِصَةً يُمِرُّ مِنْ رَبِّكَ مَنْ ابْتِغَى
فَلْيَغْصِبْهُ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَا لَنَا عَلَيْكَ
بِعَاقِلٍ ۝

105. और इसी प्रकार हम अनेक शैलियों में आयतों का वर्णन कर रहे हैं। और तार्किक वह (काफिर) कहें कि आप ने पढ़² लिया है। और तार्किक हम उन लोगों के लिये (तर्कों को) उजागर कर दें जो ज्ञान रखते हैं।

وَكَذَلِكَ نَقُصُّكَ الْآيَاتِ وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ
وَلِيُتَبَيَّنَ الْقَوْمَ لِيَظْلَمُوا ۝

106. आप उस पर चलें जो आप पर आप के पालनहार की ओर से वही (प्रकाशना) की जा रही है। उस के सिवा कोई सत्य पज्य नहीं है। और मुश्रिकों की बातों पर ध्यान न दें।

إِنَّمَا أَتَىكَ الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّكَ فَاتَّبِعْنَهَا
وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝

107. और यदि अल्लाह चाहता तो वह लोग साझी न बनाने। और हम ने आप को उन पर निरीक्षक नहीं बनाया है। तथा न आप उन पर³ अधिकारी हैं।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا وَمَا جَعَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝ وَمَا آتَاكَ عَلَيْهِمْ بِوَكَيلٍ ۝

108. और (हे ईमान वालों!) उन्हें बुरा न कहो जिन (मूर्तियों) को वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं। अन्यथा वह लोग अज्ञानता के कारण अनि

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا
اللَّهَ عَدَاوَةً بَعْدَ إِيمَانِهِمْ كَذَلِكَ رَدَّوْا عَنْكُمْ
عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا

1 अर्थात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सन्धर्म के प्रचारक हैं।

2 अर्थात् काफिर यह कहें कि आप ने यह अहले किताब से सीख लिया है और इसे अस्वीकार कर दें। (इब्ने कसीर)

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी का यह कर्तव्य नहीं कि वह सब को सीधी राह दिखा दें। उस का कर्तव्य कबल अल्लाह का संदेश पहुँचा देना है।

कर के अल्लाह को बुरा कहेंगे। इसी प्रकार हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये उन के कर्म को सुशोभित बना दिया है। फिर उन के पालनहार की ओर ही उन्हें जाना है। तो उन्हें बता देगा जो वे करते रहे।

كَانُوا يَعْتَمِلُونَ ٦

109. और उन (मुश्रिकों) ने बल पूर्वक शपथें ली कि यदि हमारे पास कोई आयत (निशानी) आ जाये तो उस पर वह अवश्य ईमान लायेंगे। आप कह दें आयतें (निशानियाँ) तो अल्लाह ही के पास है। और (हे ईमान वालों!) तुम्हें क्या पता कि वह निशानियाँ जब आ जायेंगी तो वह ईमान¹ नहीं लायेंगे।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا
يُشْعُرُ كُفْرًا إِلَيْهَا إِذْ جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ١٠٩

110. और हम उन के दिलों और आँखों को ऐसे ही फेर² देंगे जैसे वह पहली बार इस (कुरआन) पर ईमान नहीं लाये और हम उन्हें उन के

وَنُفِثَ لِقَلْبِهِمْ وَنُفِثَ لِقُلُوبِهِمْ
يَوْمَ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنُفِثَ لِقُلُوبِهِمْ
يَوْمَ أَوَّلَ مَرَّةٍ ١١٠

1. मक्का के मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि यदि सफा (पर्वत) मोने का हो जाये तो वह ईमान लायेंगे। कुछ मुसलमानों ने भी सोचा कि यदि ऐसा हो जाये तो संभव है कि वह ईमान ले आये। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)
2. अर्थात् कोई चमत्कार आ जाने के पश्चात् भी ईमान नहीं लायेंगे, क्यों कि अल्लाह जिसे सुपथ दर्शाना चाहता है वह सत्य को सुनने ही उसे स्वीकार कर लेता है किन्तु जिस ने सत्य के विरोध ही को अपना आचरण-स्वभाव बना लिया हो तो वह चमत्कार देख कर भी कोई बहाना बना लेता है। और ईमान नहीं लाता। जैसे इस से पहले नबीयों के साथ हो चुका है और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी निशानियाँ दिखाईं फिर भी ये मुश्रिक ईमान नहीं लाये। जैसे आप ने मक्का बार्मियाँ की मांग पर चौद क दो भाग कर दिये। जिन दोनों के बीच लोगों ने हिरा (पर्वत) को देखा। (परन्तु वे फिर भी ईमान नहीं लाये।) (सहीह बुखारी 3637 मुस्लिम 2802)

कुकर्मों में बहकने छोड़ देंगे।

111. और यदि हम इन की ओर (आकाश से) फरिश्ते उतार देते और इन से मुद्दे बात करने और इन के ममक्ष प्रत्येक वस्तु एकत्र कर देते, तब भी यह ईमान नहीं लाते परन्तु जिसे अल्लाह (मार्गदर्शन देना) चाहता। और इन में से अधिकतर (तथ्य से) अज्ञान हैं।

112. और (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने मनुष्यों तथा जिनों में से प्रत्येक नबी का शत्रु बना दिया जो धोका देने के लिये एक दूसरे को शोभनीय बात सुझाने रहते हैं। और यदि आप का पालनहार चाहता तो ऐसा नहीं करता। तो आप उन्हें छोड़ दें, और उन की घड़ी हुई बातों को।

113. (वह ऐसा इस लिये करते हैं) ताकि उस की ओर उन लोगों के दिल झुक जायें जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और ताकि वह उस से प्रसन्न हो जायें और ताकि वह भी वही कुकर्म करने लगे जो कुकर्म वह लोग कर रहे हैं।

114. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूँ, जब कि उसी ने तुम्हारी ओर यह खूबी पुस्तक (क़र्आन) उतारी¹ है? तथा जिन को हम ने पुस्तक² प्रदान की है वह जानते हैं

وَلَوْ أَنَّا نَزَّلْنَاهُ الْبُكْيَةَ وَكَلَّمَهُمُ
السَّمَوِيُّ وَخَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قَبْلَ أَنْ
يَأْتِيَهُمْ إِلَّا لَآتَيْنَهُمْ مِنْهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
يُخْفَلُونَ ﴿١١١﴾

وَلَوْ أَنَّكَ جَعَلْنَا الْكَلِمَ بَيْنَ عَدُوِّ الشَّيْطَانِ
الْإِنْسِ وَالْإِنِيسِ يُوعَى بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ
وَحُفِرَ الْقَوْلُ غُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ
فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾

وَلَا تَصْغُرْ عَلَيْهِمُ آيَاتُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَلَا يَفْقَهُونَ فَلْيَعْلَمُوا مَا هُمْ
مُفْتَرُونَ ﴿١١٣﴾

أَفَقَرَّ إِلَى اللَّهِ الْبَشَرُ حَكْمًا وَقَوْلًا فِي الْآرِ
الَّتِي كُتِبَ مُقَدِّمًا وَالَّذِينَ آمَنُوا الْكِتَابَ
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا
يُخْلِفُونَ مِنَ الْمُنْذَرِينَ ﴿١١٤﴾

1 अर्थात् इस में निर्णय के नियमों का विवरण है।

2 अर्थात् जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जिव्हील प्रथम बह्यी लाये और

कि यह (कुर्आन) आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ उतारा है। अतः आप सदिह करने वालों में न हों।

115. आप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है, कोई उस की बात (नियम) बदल नहीं सकता और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَقَعَتْ لَكُمُ الْكَيْدُ بِأَفْئِدَتِكُمْ ۚ وَالْأَعْيُنُ عَنْ رِئَاسَتِهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ

116. और (हे नबी!) यदि आप संसार के अधिकतर लोगों की बात मानेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे। वह केवल अनुमान पर चलता¹ है, और आँकलन करते है।

وَلَا تُطِيعُوا أَكْثَرَهُمْ فِي الْأَرْضِ يُسْوَأُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ إِلَّا الْفَلْسَ ۚ وَلَهُمْ إِلَّا الْخَيْرُ صَوْنٌ ۚ

117. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है कि कौन उस की राह से बहकता है। तथा वही उन्हें भी जानता है जो सुपथ पर है।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُنْتَفِرِينَ ۚ

118. तो उन पशुओं में से जिस पर बध करने समय अल्लाह का नाम लिया गया हो खाओ, ² यदि तुम उस

فَكُلُوا مِنَّا ذِكْرًا مِّنْ أَمْرِ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن تَتَّبِعُونَ ۚ

आप ने मक्का के इमाद विद्वान बर्की बिन नौफल को बताया तो उस ने कहा कि यह वही फरिश्ता है जिसे अल्लाह ने मुसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। (बुखारी 3, मुस्लिम 160) इसी प्रकार मदीना के यहूदी विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम ने भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को माना और इस्लाम लाये।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि सत्योसत्य का निर्णय उस के अनुयायियों की संख्या से नहीं। सत्य के मूल नियमों से ही किया जा सकता है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा मेरी उम्मत के 72 सम्प्रदाय नरक में जायेंगे और एक स्वर्ग में जायेगा। और वह, वह होगा जो मेरे और मेरे साथियों के पथ पर होगा। (तिर्मिजी 263)

- 2 इस का अर्थ यह है कि बध करते समय जिस जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो बल्कि देवी-देवता तथा पीर-फकीर के नाम पर बलि दिया गया

की आयतों (आदेशों) पर इमान
(विश्वास) रखते हो।

119. और तुम्हारे उस में से न खाने का क्या कारण है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया¹ हो, जब कि उस ने तुम्हारे लिये स्पष्ट कर दिया है जिसे तुम पर हराम (अवैध) किया है? परन्तु जिस (वर्जित) के (खाने के लिये) बिबश कर दिये जाओ², और वास्तव में बहुत से लोग अपनी मनमानी के लिये लोगों को अपनी अज्ञानता के कारण बहकाने हैं। निश्चय आप का पालनहार उल्लघनकारियों को भली भाँति जानता है।

120. (हे लोगो!) खुले तथा धुपे पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं वे अपने कुकर्मों का प्रतिकार (बदला) दिये जायेंगे।

121. तथा उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। वास्तव में उसे खाना (अल्लाह की) अवैज्ञा है। निःसंदेह शैतान अपने सहायकों के मनो में संशय डालते रहते हैं ताकि वह तुम से विवाद

وَمَا لَكُمْ لَأَن تَكُونُوا مِمَّنْ ذَكَرَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَذَكَرَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ مَا حَزَمْتُمْ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ لَهُمْ وَأَنَّ كَيْدَ الْفَاسِقِينَ هَٰؤُلَاءِ هُمْ يَصِيرُونَ ۝

وَذَرُوا ظُلُمَ الْأَثَرِ وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ يَكْتُمُونَ إِلَهُكُمْ سَيُجْرُونَ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ۝

وَذَكَرَ اللَّهُ مِمَّا الْوَيْدُ ذَكَرَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَلَئِنَّ لَفِ شَفِئِ شَرِّ الشَّيْطَانِ لَيَوْحُونَ إِلَىٰ أُولَٰئِكَ لِيُجَادِلُواكُمْ وَلَئِنَّ الْكَاذِبَ لَيُفْضَرُونَ ۝

हो तो वह तुम्हारे लिये वर्जित है। (इब्ने कसीर)

- 1 अर्थात् उन पशुओं को खाने में कोई हरज नहीं जो मुसलमानों की दुकानों पर मिलने है क्योंकि कोई मुसलमान अल्लाह का नाम लिये बिना बध नहीं करता और यदि शंका हो तो खाने समय ((बिस्मिल्लाह)) कह लो जैसा कि हदीस शरीफ में आया है (देखिये बुखारी- 5507)
- 2 अर्थात् उस वर्जित को प्राण रक्षा के लिये खाना उचित है।

करें।¹ और यदि तुम ने उन की बात मान ली तो निश्चय तुम मुश्रिक हो।

122. तो क्या जो निर्जीव रहा हो फिर हम ने उसे जीवन प्रदान किया हो तथा उस के लिये प्रकाश बना दिया हो जिस के उजाले में वह लोंगों के बीच चल रहा हो, उस जैसा हो सकता है जो अंधेरे में हो उस से निकल न रहा हो? ² इसी प्रकार काफिरों के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं।

123. और इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती में उस के बड़े अपराधियों को लगा दिया ताकि उस में पड़्यंत्र रचें। तथा वह अपने ही विरुद्ध पड़्यंत्र रचते ³ हैं परन्तु समझते नहीं हैं।

124. और जब उन के पास कोई निशानी आती है तो कहते हैं कि हम उसे कदापि नहीं मानेंगे, जब तक उसी के समान हमें भी प्रदान न किया जाये जो अल्लाह के रसूलों को प्रदान किया गया है। अल्लाह ही अधिक जानता है कि अपना

أَوْ مَن كَانَ مَيِّتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا
يَمْشِي فِيهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّتَلَعُ فِي الظُّلُمَاتِ
لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مِّنْهَا
يَمْكُرُونَ بِهَا وَمَا يَكُونُونَ إِلَّا لِنُفِيسِهِمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

قَدْ أَجَاءَهُمْ بُرْهَانٌ إِلَىٰ قُلُوبِهِمْ عَلَىٰ نُورٍ
وَمِثْلَ مَا أَنزَلْنَا رُسُلًا إِلَىٰ أَهْلِ الْأَرْضِ
فَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ أَكْبَرُ كُلِّ شَيْءٍ عِندَ
بِسْمِ اللَّهِ لِيُفَصِّلَ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ أَفْرَمُوا أَصْفَارًا
بَلْ وَهَبَ اللَّهُ لِمَن يَشَاءُ مِمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٤﴾

- 1 अर्थात् यह कहें कि जिसे अल्लाह ने मारा हो उसे नहीं खाते और जिसे तुम ने बध किया हो उसे खाते हो? (इल्ने कसीर)
- 2 इस आयत में इमान की उपमा जीवन से तथा ज्ञान की प्रकाश से और अविश्वास की मरण तथा अज्ञानता की उपमा अंधकार से दी गयी है।
- 3 भावार्थ यह है कि जब किसी नगर में कोई मत्स्य का प्रचारक खड़ा होता है तो वहाँ के प्रमुखों को यह भय होता है कि हमारा अधिकार समाप्त हो जायेगा। इस लिये वह मत्स्य के विरोधी बन जाते हैं और उस के विरुद्ध पड़्यंत्र रचने लगते हैं। मक्का के प्रमुखों ने भी यही नीति अपना रखी थी।

मदेश पहुँचाने का काम किम
से ले। जो अपराधी है शीघ्र ही
अल्लाह के पास उन्हें अपमान तथा
कड़ी यातना उस पड़यत्र के बदले
मिलेगी जो वे कर रहे हैं।

125. तो जिसे अल्लाह मार्ग दिखाना
चाहता है, उस का सीना (वक्ष)
इस्लाम के लिये खोल देता है
और जिसे कुपथ करना चाहता है
उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर
देता है। जैसे वह बड़ी कठिनाई
से आकाश पर चढ़ रहा¹ हो।
इसी प्रकार अल्लाह उन पर
यातना भेज देता है जो ईमान
नहीं लाते।

126. और यही (इस्लाम) आप के
पालनहार की सीधी राह है। हम
ने उन लोगों के लिये आयनों को
खोल दिया है जो शिक्षा ग्रहण
करते हों।

127. उन्हीं के लिये आप के पालनहार के
पास शान्ति का घर (स्वर्ग) है। और
वही उन के सुकर्मों के कारण उन
का सहायक होगा।

128. तथा (हे नबी।) याद करो जब वह
सब को एकत्र कर के (कहेगा): हे
जिन्नो के गिरोह! तुम ने बहुत से
मनुष्यों को कुपथ कर दिया और
मानव में से उन के मित्र कहेंगे कि

فَمَنْ يُرِدْ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ
لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ
ضَيِّقًا ضَرَبًا ۚ كَذَلِكَ
يَجْعَلُ اللَّهُ الْإِيمَانَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَهَذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۚ قَدْ فَصَّلْنَا
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

لَهُمْ فِي السَّلَامِ عِندَ رَبِّهِمْ وَهُمْ فِيهَا مُقِيمُونَ ۝
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَيَوْمَ يُخْطَرُ هُمْ جَمِيعًا لِيُقْضَىٰ لَهُمْ قَدِ
اسْتَكْبَرُوا مِنَّا ۚ قَالُوا لَيْسَ مِنَّا ۚ قَالُوا لَيْسَ
لَنَا شَيْءٌ مِمَّا تَعْبُدُونَ ۚ قَالُوا لَيْسَ
بِالْإِيمَانِ أَجَلٌ لَنَا ۚ قَالُوا لَيْسَ بِإِيمَانِكُمْ

1 अर्थात् उसे इस्लाम का मार्ग एक कठिन चढ़ाई लगाना है जिस के विचार ही से
उस का सीना तंग हो जाता है और श्वास रोध होने लगाना है।

हैं हमारे पालनहार। हम एक दूसरे से लाभान्वित होते रहे,¹¹ और वह समय आ पहुँचा जो तू ने हमारे लिये निर्धारित किया था। (अब्राह) कहेगा: तुम सब का आवास नरक है जिस में सदावासी रहोगे। परन्तु जिसे अब्राह (बचाना) चाहे। वास्तव में आप का पालनहार गुणी सर्व ज्ञानी है।

- 129 और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उन के कुकर्मों के कारण एक दूसरे का महायक बना देने हैं।

130. (तथा कहेगा:) हे जिन्हों तथा मनुष्यों के (मुशरिक) समुदाय। क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रमूल नहीं आये¹² जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन (के आने) से सावधान करते? वह कहेंगे हम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाह हैं। तथा उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में रखा था। और अपने ही विरुद्ध गवाह हो गये

خَوِيلِدْنَ فِيهَا لَأَمْشَاةً أَوْ شَاةً أَسْفَلَ مِنْهَا خَلِفَتْ أَيْمُهُنَّ
وَكُدِّرَتْ لَهُنَّ الْأُمَمَ ۚ وَلَهُنَّ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَضَاجِرُ ۚ وَهُنَّ فِيهَا
مُتَوَكِّلَاتٌ ۚ

وَكُدِّرَتْ لَهُنَّ الْأُمَمَ ۚ وَلَهُنَّ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَضَاجِرُ ۚ وَهُنَّ فِيهَا
مُتَوَكِّلَاتٌ ۚ

يَمَقُشِّرَوْنَ عَنْكُمْ رُءُوسَكُمْ وَيَتَذَكَّرُونَ ۚ وَكُلُّكُمْ أَعِندَ رَبِّهِ
يَوْمَئِذٍ مَّكْتُومٌ ۚ وَلَهُنَّ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَضَاجِرُ ۚ وَهُنَّ فِيهَا
مُتَوَكِّلَاتٌ ۚ

1 इस का भावार्थ यह है कि जिन्हीं ने लोगों को संशय और धोखे में रख कर कुपथ किया, और लोगों ने उन्हें अब्राह का साझी बनाया और उन के नाम पर बलि देते और चढ़ावे चढ़ाते रहे और ओझाड़ तथा जादू तंत्र द्वारा लोगों को धोखा दे कर अपना उल्लू सीधा करते रहे।

2 कुर्आन की अनेक आयतों से यह विद्वित होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन्हीं के भी नबी थे जैसा कि सूरह जिन्न आयत 1 2 में उन के कुर्आन सुनने और इमान लाने का वर्णन है। ऐसे ही सूरह अह्काफ में है कि जिन्हीं ने कहा: हम ने ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चान् उतरी है। इसी प्रकार वह सुलैमान के आधीन थे। परन्तु कुर्आन और हदीस में जिन्हीं में नबी होने का कोई सबूत नहीं मिलता। एक विचार यह भी है कि जिन्न आदम (अलैहिस्सलाम) से पहले के हैं इसलिये हो सकना है पहले उन में भी नबी आये हों।

कि वास्तव में वही काफ़िर थे।

131. (हे नबी!) यह (नबियों को भेजना) इस लिये हुआ कि आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि अत्याचार से बस्नियों का विनाश कर दे,¹ जब कि उस के निवासी (सत्य से) अचेत रहे हों।

ذَٰلِكَ أَنْ لَّهٗ يَكُنْ رَبُّكَ مُهَيِّتٌ مِّمَّنْ يَنْفِرُ بَيْنَهُمْ
وَأَهْلُهُمْ يَعْمَلُونَ ۝

132. प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार पद हैं। और आप का पालनहार लोगों के कर्मों में अचेत नहीं है।

وَلِكُلِّ دَرَجَةٌ مِمَّا عَمِلُوا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝

133. तथा आप का पालनहार निम्नह दयाशील है। वह चाहे तो तुम्हें ले जाये और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आये जैसे तुम लोगों को दूसरे लोगों की सन्तति से पैदा किया है।

وَرَبُّكَ لَغَفُورٌ ذُو رَحْمَةٍ مِّنْ يَّبْتَغِي وَفَسْلًا
وَيَسْتَخْلِفُ مِنْ بَعْدِ كُلِّ قَوْمٍ لَّكُمُ الْمَثَلُ
مِّنْ ذُنُوبِهِ قَوْمٌ خَيْرٌ مِّنْ ۝

134. तुम्हें जिस (प्रलय) का वचन दिया जा रहा है उसे अवश्य आना है। और तुम (अल्लाह को) विवश नहीं कर सकते।

رَبُّ مَا تَوَعَّدُونَ لَا يَلِيكُمْ أَنُتُمْ
بِمُفْجِرِينَ ۝

135. आप कह दें हे मेरी जाति के लोगो! (यदि तुम नहीं मानते) तो अपनी दशा पर कर्म करते रहो। मैं भी कर्म कर रहा हूँ। शीघ्र ही तुम्हें यह ज्ञान हो जायेगा कि किस का अन्त (परिणाम)² अच्छा है। निःसन्देह

قُلْ يَقَوْمِ غَمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمِمَّنْ
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ
إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝

1 अर्थात् संसार की कोई बस्ती ऐसी नहीं है जिस में समार्ग दशानि के लिये नबी न आये हों। अल्लाह का यह नियम नहीं है कि किसी जाति को बह्यी द्वारा मार्गदर्शन से बाचित रखे और फिर उस का नाश कर दे यह अल्लाह के न्याय के बिल्कुल प्रतिकूल है।

2 इस आयत में काफ़िरो को सचेत किया गया है कि यदि सत्य को नहीं मानते तो

अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

136. तथा उन लोगों ने उस खेती और पशुओं में जिन्हें अब्राह ने पैदा किया है। उस का एक भाग निश्चय कर दिया, फिर अपने विचार से कहते हैं: यह अब्राह का है और यह उन (देवताओं) का है जिन को उन्होंने (अब्राह का) साझी बनाया है। फिर जो उन के बनाये हुये साझियों का है वह तो अब्राह का नहीं पहुँचता परन्तु जो अब्राह का है वह उन के साझियों¹ को पहुँचता है। वह क्या ही बुरा निर्णय करने है।

137. और इसी प्रकार बहुत से मुशरिकों के लिये अपनी संतान के बध करने को उन के बनाये हुये साझियों ने सुशोभित बना दिया है ताकि उन का विनाश कर दें। और ताकि उन के धर्म को उन पर मंदिर कर दें। और यदि अब्राह चाहता तो वह यह (कर्म) नहीं करते अतः आप उन्हें छोड़² दें तथा उन की बनाई हुई बातों को।

138. तथा वे कहते हैं कि यह पशु और

وَجَعَلُوا بَيْنَهُمْ مِثْقَافَ ذُرِّأَسٍ
وَالْأَنْعَامَ نَصِيبًا فَقَالُوا هَذَا لِلَّهِ
يَرْغَبُهُمْ هَذَا لِلشُّرَكَائِ ثُمَّ كَانَ
بِشُرَكَائِهِمْ قُلُوبًا يَصُورُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ
لِلَّهِ قُلُوبًا يَصُولُ إِلَى شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا
يَحْكُمُونَ ٥

وَكَذَلِكَ رَأَيْنَا كَثِيرًا مِنَ الشُّرِكِيِّينَ
مَتَلَّ وَلاَ دِهِمَ شُرَكَاءُهُمْ لِيَرْدُؤَهُمْ
وَلِيُكَلِّمُوا عَلَيْهِمْ وَيَتَفَعَّلُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
مَا فَعَلُوا قَدْ رَفَعَهُمْ وَمَا يَفْعَلُونَ ٥

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ

जा कर रहे हो वही करो तुम्हें जल्द ही इस के परिणाम का पता चल जायेगा।

- 1 इस आयत में अरब के मुशरिकों की कुछ धार्मिक परम्पराओं का खण्डन किया गया है कि सब कुछ तो अब्राह पैदा करता है और यह उस मर्म से अपन देवताओं का भाग बनाने है। फिर अब्राह का जो भाग है उसे देवताओं को दे देने है। परन्तु देवताओं के भाग में से अब्राह के लिये व्यय करने को तैयार नहीं होते।
- 2 अरब के कुछ मुशरिक अपनी पुत्रियों को जन्म लेने ही जीवित गाड़ दिया करते थे।

खेत वर्जित है, इसे वही खा सकता है, जिसे हम अपने विचार से खिलाना चाहें। फिर कुछ पशु है, जिन की पीठ हरगम¹ (वर्जित) है और कुछ पशु है, जिन पर (बध करते समय) अज्वाह का नाम नहीं लेते, अज्वाह पर आरोप लगाने के कारण, अज्वाह उन्हें उन के आरोप लगाने का बदला अवश्य देगा।

139. तथा उन्होंने ने कहा कि जो इस पशुओं के गर्भों में है वह हमारे पुरुषों के लिये विशंग है, और हमारी पत्नियों के लिये वर्जित है। और यदि मुर्दा हो तो सभी उस में साझी हो सकते² हैं। अज्वाह उन के विशेष करने का कफल उन्हें अवश्य देगा वास्तव में वह तत्त्वज्ञ अति ज्ञानी है।

140. वास्तव में वह धर्म में पड़ गये जिन्होंने ने मूर्खता से किसी ज्ञान के बिना अपनी संतान को बध किया और उस जीविका को जो अज्वाह ने उन्हें प्रदान कि अज्वाह पर आरोप लगा कर, अवैध बना लिया, वह वहक गये और सीधी राह पर नहीं आ सके।

يُطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِذْ يُذَلَّلُونَ وَيَحْنُونَ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ

وَذَلَّلُوا مَا يَلِيهِ بَعَثَ فِيهِمُ الرُّسُلَ بَاطِلًا بَاطِلًا يَكْفُرُ لِيُذَكِّرَ فِيهِمْ ثُمَّ كَانَ سَعِيرُهُمْ وَأَضَلَّ رُسُلَهُمُ عَلَيْهِمْ

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ

- 1 अर्थात् उन पर सवारी करना तथा बोझ लादना अवैध है। (देखिये सूरह माइदा 103)।
2 अर्थात् वर्धित पशु के गर्भ से बच्चा निकल जाता और जीवित होता तो उसे केवल पुरुष खा सकते थे और मुर्दा होता तो सभी (स्त्री-पुरुष) खा सकते थे। (देखिये सूरह नहल 16: 58 59)। सूरह अन्माम 151, तथा सूरह इस्रा 31)। जैसा कि आधुनिक सभ्य समाज में «सुखी परिवार» के लिये अनेक प्रकार से किया जा रहा है।

141. अन्नाह वही है जिस ने बेलों वाले तथा बिना बेलों वाले बाग पैदा किये। तथा खजूर और खेत जिन से विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है और जैतून तथा अनार समरूप तथा स्वाद में विभिन्न, इस का फल खाओ जब फले, और फल तोड़ने के समय कुछ दान करो, तथा अपव्यय¹ (बेजा खर्च) न करो। निमदेह अन्नाह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

142. तथा चौपायों में कुछ सवारी और बोल्ल लादने योग्य² है। और कुछ धरती से लगे³ हुये, तुम उन में से खाओ जो अन्नाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है। और शैतान के पर्देचिन्हों पर न चलो। वास्नव में वह तुम्हारा खुला शत्रु⁴ है।

143. आठ पशु आपस में जोड़े हैं भेड़ में से दो तथा बकरी में से दो। आप उन से पूछिये कि क्या अन्नाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ حَشَىٰ مَعْرُوشَتِ وَيَعْبَرُ مَعْرُوشَتِ وَالشَّعْلَ وَالرُّزْمَةَ مُخْتَلِفًا أَلْوَنًا وَالرَّيْحَانُ وَالزُّمَانُ مُمْتَلِئًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ كُلُّوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولُهُ وَفَرَسٌ كَلُومًا رَزَقَكُمْ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكَاوِدٌ وَغِيْبٌ ۝

ثَمَرِيَّةً أَرْوَاحُهُمِ الْغَنَاتِ ثَمَرِيَّةً وَفَرَسٌ مَعْرُوشَتَيْنِ قُلْ مَا ذُكِّرْتُمْ حَرَّمَ لَكُمْ الْإِنْتِهِيَيْنِ أَمَا اسْتَمَعْتُمْ عَلَىٰ وَرَحَامٍ

1 अर्थात् इस प्रकार उन्होंने पशुओं में विभिन्न रूप बना लिये थे। जिन को चाहते अन्नाह के लिये विशेष कर देने और जिसे चाहते अपने देवी देवता के लिये विशेष कर देने। यहाँ इन्हीं अन्ध विश्वासियों का खण्डन किया जा रहा है। दान करो अथवा खाओ परन्तु अपव्यय न करो। क्योंकि यह शैतान का काम है, सब में संतुलन होना चाहिये।

2 जैसे ऊँट और बैल आदि।

3 जैसे बकरी और भेड़ आदि।

4 अन्नाह ने चौपायों को केवल सवारी और खाने के लिये बनाया है। देवी देवताओं के नाम चढ़ाने के लिये नहीं। अब यदि कोई ऐसा करता है तो वह शैतान का वन्दा है और शैतान के बनाये मार्ग पर चलता है जिस से यहाँ मना किया जा रहा है।

है, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? मुझे ज्ञान के साध बताओ, यदि तुम सच्चे हो।

144. और ऊँट में से दो, तथा गाय में से दो। आप पूछिये कि क्या अब्राह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? क्या तुम उपस्थित थे जब अब्राह ने तुम्हें इस का आदेश दिया था, तो बताओ? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो बिना ज्ञान के अब्राह पर झूठ घड़े? निश्चय अब्राह अत्याचारियों को समार्ग नहीं दिखाता।

145. (हे नबी!) आप कह दें कि उस में जो मेरी ओर बध्नी (प्रकाशना) की गयी है इन¹ में से खाने वालों पर कोई चीज वर्जित नहीं है, सिवाये उस के जो मरा हुआ हो² अथवा बहा हुआ रक्त हो या मूअर का मांस हो। क्योंकि वह अशुद्ध है, अथवा अवैध हो जिसे अब्राह के सिवा दूसरे के नाम पर बध किया गया हो। परन्तु जो विवश हो जाये (तो वह खा सकता है) यदि वह द्रोही तथा सीमा लाँघने वाला न हो। तो वास्तव में आप का पालनहार

الْأَنْعَامِ يُسْئَلُونَ يَوْمَئِذٍ كُنْتُمْ ضَالِّينَ ۖ

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ
الَّذِينَ كَفَرُوا هَرَمَ أَمْرَ الْأَنْعَامِ أَمْ اسْتَمَلَتْ
حَنَانَهُ الْأَرْحَامُ الْأَنْعَامِ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ
وَضَعُوا اللَّهُ يُهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقَ أَفْأَنْتُمْ أَهْلُ
الْبُكْرَةِ يُرْسِلُ إِلَيْكُمْ يَوْمَ الْبُرْجِ لَا إِلَهَ إِلَّا
يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى
طَائِفَةٍ لَّيْطَعُمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا
مُسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خنزيرٍ فَإِنَّهُ يَجُسَّ أَوْ
يُسْقَى أَهْلًا يَعْبُدُ اللَّهَ بِهِ فَمَنْ اضْطَرَّ غَيْرَ ذَلِكَ
وَلَا هَادٍ فَلَنْ رُبَّمَا تَغْفُرَ لَكُمْ ۝

1 जो तुम ने वर्जित किया है।

2 अर्थात् धर्म विधान अनुसार बध न किया गया हो।

अति क्षमी दयावान्¹¹ है।

146. तथा हम ने यहूदियों पर नखधारी¹² जीव हराम कर दिये थे और गाय तथा बकरी में से उन पर दोनों की चर्बियाँ हराम (वर्जित) कर दी¹³ थी। परन्तु जो दोनों की पीठों या आंतों से लगी हों, अथवा जो किसी हड्डी से मिली हुई हों। यह हम ने उन की अवज्ञा के कारण उन्हें¹⁴ प्रतिकार (बदला) दिया था। तथा निश्चय हम सच्चे हैं।

147. फिर (हे नबी!) यदि यह लोग आप को झुठलायें तो कह दें कि तुम्हारा पालनहार विशाल दयाकारी है तथा उस की यातना को अपराधियों से फेरा नहीं जा सकेगा।

148. मिश्रणवादी अवश्य कहेंगे: यदि अब्राह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज (अब्राह का) साझी न बनाते, और न कुछ हराम (वर्जित) करते। इसी प्रकार इन से पूर्व के लोगों ने (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَزَمًا كُلِّ ذِي ظُلْمٍ
وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَزَمًا عَلَيْهِمْ حُكْمُ اللَّهِ
مَا حَمَلَتْ لَهَا مَوْرُهَا أَوْ الْخَوَابِ أَوْ مَا
الْخَلَطَ بِعَظْمٍ ذَرِيَّةَ حَرْبٍ لَهُمْ يَنْفَعُهُمْ
وَرَدَّ الصَّدُوقِ ۝

لَئِنْ كَذَّبُوا فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُرِّيَّتُهُ وَابْنَعُو
وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْلَا نُوحِي إِلَهُ مَا أَشْرَكْنَا
وَلَا آتَانَا وَلَا حَزَمَتْ مِنِّي شَيْءٌ كَذَلِكَ كَذَّبَ
الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ عَلَىٰ ذَاقُوا بِأَسْفَلِ
هَلْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُخْرِجُونَنَا إِن
تَكْفُرُونَ إِلَّا الْفُلْ قُلْ أَشْرَكُوا الْأَشْرَافُونَ ۝

- अर्थात् कोई भूक से विवश हो जाये तो अपनी प्राण रक्षा के लिये इन प्रतिबंधों के साथ हराम खा ले तो अब्राह उसे क्षमा कर देगा।
- अर्थात् जिन की उंगलियाँ फटी हुई न हों जैसे ऊँट, शूतुरमूर्ग तथा बत्तख इत्यादि। (इब्ने कसीर)
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: यहूदियों पर अब्राह की धिक्कार हो। जब चर्बियाँ वर्जित की गईं तो उन्हें पिघला कर उन का मुल्य खा गये। (बुखारी - 2236)
- देखिये सूरह आले इमरान आयत 93 तथा सूरह निसा आयत 160।

कि हमारी यातना का स्वाद चख लिया। (हे नबी!) उन से पूछिय कि क्या तुम्हारे पास (इस विषय में) कोई ज्ञान है, जिसे तुम हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सका? तुम तो केवल अनुमान पर चलते हो, और केवल आंकलन कर रहे हो।

149. (हे नबी!) आप कह दें कि पूर्ण तर्क अब्राह ही का है। तो यदि वह चाहता तो तुम सब को सुपथ दिखा देता¹।

قُلْ قِيلُوا لِحُجَّتِ الْبَالِغَةِ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

150. आप कहिये कि अपने साक्षियों (गवाहों) को लाओ², जो साक्ष्य दें कि अब्राह ने इसे हराम (अवैध) कर दिया है। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तब भी आप उन के साथ हो कर इसे न माने, तथा उन की मनमानी पर न चले, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया, और परलोक पर ईमान (विश्वास) नहीं रखने, तथा दूसरों को अपने पालनहार के बराबर करने हैं।

قُلْ هَلْ سَأَلْتُمْ شُهَدَاءَ كُتُبِ الْبَيْنِ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا وَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَكُنْ لَهُمْ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ يَرَوْنَهُمْ يَهْدِي اللَّهُ لِقَوْمٍ يَكْفُرُونَ ۝

151. आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतों) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّيَ عَلَيْهِ أَنْ يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا

1 परन्तु उस ने इसे लोगों को समझ बूझ दे कर प्रत्येक दशा का एक परिणाम निर्धारित कर दिया है और सन्त्योसन्त्य दोनों की राहें खोल दी है। अब जो व्यक्ति जो राह चाहे अपना ले। और अब यह कहना अज्ञानता की बात है कि यदि अब्राह चाहता तो हम समार्ग पर होते।

2 हदीस में है कि सब से बड़ा पाप अब्राह का साझी बनाना तथा माना पिता के साथ घुरा व्यवहार और झूठी शपथ लेना है। (निर्मिजी 3020, यह हदीस हमन है।)

(अवैध) किया है? वह यह है कि किसी चीज को उस का साझी न बनाओ। और माता-पिता के साथ उपकार करो। और अपनी संतानों को निर्धनता के भय से वध न करा। हम तुम्हें जीविका देते हैं और उन्हें भी देंगे और निर्लज्जा की धातों के समीप भी न जाओ, खुली हों अथवा छुपी, और जिस प्राण को अल्लाह ने हaram (अवैध) कर दिया है उसे वध न करो परन्तु उचित कारण¹ से। अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया है ताकि इसे समझो।

152. और अनाथ के धन के समीप न जाओ परन्तु ऐसे ढंग से जो उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये। तथा नाप तौल न्याय के साथ पूरा करो। हम किसी प्राण पर उस की सक्त से अधिक भार नहीं रखते और जब ओलो तो न्याय करो, यद्यपि समीपवर्ती ही क्यों न हो। और अल्लाह का वचन पूरा करो, उस ने तुम्हें इस का आदेश दिया है, संभवतः तुम शिक्षा ग्रहण करो।

153. तथा (उस ने बताया है कि) यह

تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ ذَلِكُمْ فَإِنَّ لَكُمْ مِنْهُ لَعْنَةً وَمَنْ هَلَكَ مِنْكُمْ
وَأَيُّهَا هُمْ وَلَا تَقْرَبُوا نَفَايِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا
بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَضَعَتْهُ لَعْنَةً تَقْتُلُونَ ٥

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالْحَقِّ
أَحْسَنَ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأُولُو الْأَرْحَامِ
وَالْيَتِيمَ وَالْأَكْفَلَ تَحَرَّوْا وَلَا تَنْسَوْا
وَلَا تَقْرَبُوا نَفَايِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَا
بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَضَعَتْهُ لَعْنَةً تَقْتُلُونَ ٥

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوا وَلَا تَتَّبِعُوا

- 1 सहीह हदीस में है कि किसी मुसलमान का खून तीन कारणों के सिवा अवैध है
1 किसी ने विवाहित हो कर व्यभिचार किया हो।
2 किसी मुसलमान को जान बूझ कर अवैध मार डाला हो।
3 इस्लाम से फिर गया हो और अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध करने लगे (सहीह मुस्लिम, हदीस-1676)

(इस्लाम ही) अल्लाह की सीधी राह¹ है। अतः इसी पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उस की राह से दूर कर के तित्तर बित्तर कर देंगे। यही है जिस का आदेश उस ने तुम्हें दिया है, ताकि तुम उस के आज्ञाकारी रहो।

154. फिर हम ने मूसा को पुस्तक (तौरान) प्रदान की थी उस पर पुरस्कार पूरा करने के लिये जो सदाचारी हो, तथा प्रत्येक वस्तु के विवरण के लिये, तथा यह मार्गदर्शन और दया थी, ताकि वह अपने पालनहार से मिलने पर ईमान लायें।

155. तथा (इसी प्रकार) यह पुस्तक (कुर्आन) हम ने अवतरित की है, यह बड़ा शुभकारी है। अतः इस पर चलो² और अल्लाह से डरने रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

156. ताकि (हे अरब वासियों!) तुम यह न कहो कि हम से पूर्व दो सुमदाय (यहूद तथा ईसाई) पर पुस्तक उतारी गयी और हम उन के पढ़ने पढ़ाने से अनजान रह गये।

157. या यह न कहो कि यदि हम पर

النَّاسُ تَمَرَّقُونَ يَكُونُ مِنْكُمْ حِزْبٌ لَّكُمْ تَقْتُلُونَ ۝

لَمَّا آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَوْفِيقًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَفَدَىٰ وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكًا فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنزِلَ الْكِتَابُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دُرُسَيْهِمْ لَغَافِلِينَ ۝

أَوْ تَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक लकीर बनाई और कहा यह अल्लाह की राह है। फिर दाये बाये कई लकीरें खींची और कहा इन पर शौतान है जो इन की ओर बुलाता है और यही आयत पढ़ी। (मुसन्द अहमद 431)

2 अर्थात् अब अहले किताब सहित पूरे ससार वासियों के लिये प्रलय तक इसी कुर्आन का अनुसरण ही अल्लाह की दया का साधन है।

पुस्तक उतारी जाती तो निश्चय हम उन से अधिक सीधी राह पर होते तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक खुला तर्क आ गया। मार्ग दर्शन तथा दया आ गई। फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को मिथ्या कह दे, और उन से कतरा जाये? और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उन के कतराने के बदले उन्हें कड़ी यातना देंगे।

158. क्या वह लोग इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फरिश्ते आ जायें, या स्वयं उन का पालनहार आ जाये या आप के पालनहार की कोई आयत (निशानी) आ जाये? ¹ जिस दिन आप के पालनहार की कोई निशानी आ जायेगी तो किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या अपने ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो। आप कह

وَمِنْهُمْ قَوْمٌ جَاءَكُم بَيِّنَاتٌ مِنْ رَبِّكُمْ
وَفُتِنُوا بِرَحْمَةٍ مِّنْ أَعْيُنِنَا وَمِن كَذِّبِ
رِآيَاتِ الْآلِهَةِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَجِرَى الثَّيِّبِينَ
يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ التَّحَايِبِ بِمَا كَانُوا
يَصْدِفُونَ ﴿٥٨﴾

فَمَنْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ جُنُودٌ مِّنْ رَبِّكَ
أَوْ يَأْتِيَنَّ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ
رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِن قَبْلُ
وَلَمْ تَكُنْ فِي يَمَانٍ خَيْرٍ قُلْ مَنْظُورًا
مَّنْظُورُونَ ﴿٥٩﴾

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी तर्कों के प्रस्तुत किये जाने पर भी यदि यह ईमान नहीं लाते तो क्या उस समय ईमान लायेंगे जब फरिश्ते उन के प्राण निकालने आयेंगे? या प्रलय के दिन जब अल्लाह इन का निर्णय करने आयेगा? या जब प्रलय की कुछ निशानियाँ आ जायेंगी? जैसे सूर्य का पश्चिम से निकल आना सहीह बुखारी की हदीस है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि प्रलय उस समय तक नहीं आयेंगी जब तक कि सूर्य पश्चिम से नहीं निकलेगा। और जब निकलेगा तो जो देखेंगे सभी ईमान लें आयेंगे। और यह वह समय होगा कि किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी हदीस 4636)

दे कि तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

159. जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद किया और कई समुदाय हो गये, (हे नबी!) आप का उन से कोई सम्बन्ध नहीं उन का निर्णय अल्लाह को करना है, फिर वह उन्हें बतायेगा कि वह क्या कर रहे थे।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ وَقَالُوا أُشْرِكُ بِرَبِّنَا
أَشْيَاءَ مِثْلَ مَا كُفِّرُوا بِهِ ثُمَّ يُرْسِلُ اللَّهُ
مَنْ يَشَاءُ مِنْ أَنْبِيَائِهِ إِلَى الْبَنَاتِ وَأُولَئِكَ
يُفَعِّلُونَ ﴿١٥٩﴾

160. जो (प्रलय के दिन) एक सत्कर्म ले कर (अल्लाह से) मिलेगा, उसे उस के दस गुना प्रतिफल मिलेगा। और जो कुकर्म लायेगा तो उस को उसी के बराबर कुफल दिया जायेगा, तथा उन पर अन्याचार नहीं किया जायेगा।

مَنْ جَاءَ بِأَحْسَنِهِ فَلَهُ عَشْرُ مِثَالٍ وَمَنْ جَاءَ
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا تَجْزِيهِ إِلَّا مِثْلُهَا وَمَنْ يَفْضُلْ

161. (हे नबी!) आप कह दे कि मेरे पालनहार ने निश्चय मुझे सीधी राह (सुपथ) दिखा दी है। वही सीधा धर्म जो एकेश्वरवादी इब्राहीम का धर्म था, और वह मुशरिकों में से न था।

كُلُّ إِنْسَانٍ هَدَيْنَا سَبِيلًا ۚ لَوْلَا إِدْرَاقُهُ
وَذِكْرُهُ لَافْتَرًا بِلِقَائِ رَبِّهِ يَوْمَ هُوَ
النَّاظِرُونَ ﴿١٦١﴾

162. आप कह दे कि निश्चय मेरी नमाज और मेरी कर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।

كُلُّ رَكْعَةٍ صَلَاتِي وَمَسْكِيٍّ وَنَحْيَا وَمَعَالِي لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

163. जिस का कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا وَبِإِيتَائِي يُؤْتَى وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ

164. आप उन से कह दे कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी ओर पालनहार की खोज करूँ? जब कि वह (अल्लाह) प्रत्येक चीज का पालनहार है। तथा

كُلُّ شَيْءٍ عِنْدَ اللَّهِ بِأَمْرٍ ۚ وَأُولَئِكَ
كُلٌّ فِئَتٌ ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ
رَبِّكَ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦٤﴾

कोई प्राणी कोई भी कुकर्म करेगा,
तो उस का भार उसी पर होगा।
और कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं
उठायेगा। फिर (अन्ततः) तुम्हें अपने
पालनहार के पास ही जाना है। तो
जिन बातों में तुम विभेद कर रहे हो
वह तुम्हें बता देगा।

165. वही है जिस ने तुम्हें धरती में
अधिकार दिया है और तुम में से कुछ
को (धन शक्ति में) दूसरे से कई
श्रेणियाँ ऊँचा किया है। ताकि उस में
तुम्हारी परीक्षा¹ ले जो तुम्हें दिया
है। वास्तव में आप का पालनहार
शीघ्र ही दण्ड देने वाला² है और
वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

وَقُلُوبُ الَّذِينَ يَخْلُقُونَ الْأَرْضَ وَرَفَعَهُمْ
فَوْقَ بَقِيَّةِ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيهَا أَلَمْ تَكُونُوا مِنْ رَحْمَةِ
رَبِّكُمْ الْعَاقِبَةِ وَأَلَمْ تَكُونُوا مِنْ رَحْمَةِ رَبِّكُمْ

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: कौवा के रज्ज की शपथ! वह क्षति में पड़ गया। अब्दुलजर (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा: कौन? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: (धनी)। परन्तु जो दान करना रहता है। (महीह बुखारी 6638, सही मुस्लिम-990)

2 अर्थात् अवैजाकारियों को।

सूरह आराफ 7

سورة الأعراف

सूरह आराफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 206 आयतें हैं।

इस में «आराफ» की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह आराफ है।

- इस में अल्लाह के भेजे हुये नबी का अनुसरण करने पर बल दिया गया है जिस में डराने तथा सावधान करने की भाषा अपनाई गई है।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) को शैतान के धोखा देने का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य उस से सावधान रहे।
- इस में यह बताया गया है कि अगले नबियों की जातियाँ नबियों के विरोध का दुष्परिणाम देख चुकी है, फिर अहले किताब को संबोधित किया गया है और एक जगह पूरे संसार वासियों को संबोधित किया गया है।
- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की बंदना की और उसी की ओर बुलाया और सब का मूल धर्म एक है।
- इस में यह भी बताया गया है कि ईमान लाने के पश्चात् निफाक (द्विधा) का क्या दुष्परिणाम होता है और वचन तोड़ने का अन्त क्या होता है।
- सूरह के अन्त में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को उपदेश देने के कुछ गुण बताये गये हैं और विरोधियों की बातों को सहन करने तथा उत्तेजित हो कर ऐसा कार्य करने से रोका गया है जो इस्लाम के लिये हानिकारक हो।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, भीम, साद।

اَتَّصَّ

2. यह पुस्तक है जो आप की ओर
उतारी गई है। अतः (हे नबी!) आप
के मन में इस से कोई संकोच न

كِتَابُ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ
مِّنْهُ يَقُولُ رَبِّهِ وَهُوَ تَرَى لِلْمُؤْمِنِينَ

हो, ताकि आप इस क द्वारा सावधान करें¹, और ईमान वालों के लिये उपदेश है।

3. (हे लोगो!) जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर उतारा गया है उस पर चलो, और उस के सिवा दूसरे सहायकों के पीछे न चलो। तुम बहुत थोड़ी शिक्षा लेते हो।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰتٰنَا الْكِتٰبَ لَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِ اٰوْلٰئِكَ قَبِيْلًاۚ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْۚ

4. तथा बहुत सी बानियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया है, उन पर हमारा प्रकोप अकस्मात रात्रि में आया या जब वह दोपहर के समय आराम कर रहे थे।

وَكُوْنُوْا قَرْبٰىۙ اَهْلٰكُمۡۙ اَفْجَاۤءًاۚ تِلْكَ اَيَّامُۤ اِثْمٰكُمۡۚ اَوْفَرُّوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰتٰنَا الْكِتٰبَ

5. और जब उन पर हमारा प्रकोप आ पड़ा तो उन की पुकार यही थी कि वास्तव में हम ही अत्याचारी² थे।

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ اِذْ جَاۤءَهُمۡ اِلٰهًاۙ اِلَّا اَنْ يَّسْتَوْزِعُوْا كُنَّا ضٰلِّیْنَۙ

6. तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा रसूलों से भी अवश्य³ प्रश्न करेंगे।

فَلَنَسْۤأَلَنَّ الَّذِيْنَ اٰتٰنَا الْكِتٰبَ اَنْ يَّسْۤأَلُوْا رُسُلَهُمْۚ فَاَتَسْۤأَلُوْنَ الْمُرْسَلِيْنَۙ

7. फिर हम अपने ज्ञान में उन के समक्ष वास्तविकता का वर्णन कर देंगे। तथा हम अनुपस्थित नहीं थे।

فَلَنَقْصُصَ عَنْهُمْ اٰیٰتِهِمْۚ وَمَا كُنَّا عَابِدِيْنَۙ

8. तथा उस (प्रलय के) दिन (कर्मों

وَلَوْزُلُّوا۟ یَوْمَیۤاِذَا نَقَّۙۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤا۟ۤa

1 अर्थात् अल्लाह के इन्कार तथा उस के दुष्परिणाम में।

2 अर्थात् अपनी हठधर्मी को उस समय स्वीकार किया।

3 अर्थात् प्रलय के दिन उन समुदायों से प्रश्न किया जायेगा कि तुम्हारे पास रसूल आये या नहीं? वह उत्तर देंगे आये थे। परन्तु हम ही अत्याचारी थे। हम ने उन की एक न सुनी। फिर रसूलों से प्रश्न किया जायेगा कि उन्होंने अल्लाह का संदेश पहुँचाया या नहीं? तो वह कहेंगे अवश्य हम ने तेरा संदेश पहुँचा दिया।

की) तौल त्याघ के साथ होगी।
फिर जिस के पलड़े भारी होंगे वही
सफल होंगे।

فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ

9. और जिन के पलड़े हलके होंगे तो
वही स्वयं को क्षान में डाल लिये
होंगे क्यों कि वह हमारी आयतों के
साथ अत्याचार करते ' रहे।

وَمَنْ خَلَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ

10. तथा हम ने तुम्हें धरती में अधिकार
दिया और उस में तुम्हारे लिये जीवन
के संसाधन बनाये। तुम धोड़े ही
कृतज्ञ होते हो।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا
مَعَايِشَ قَوْلًا لَّعَنَّا أَتَشْكُرُونَ

11. और हम ने ही तुम्हें पैदा
किया¹ फिर तुम्हारा रूप बनाया,
फिर हम ने फारिशनों से कहा कि
आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के
मिवा सब ने सज्दा किया। वह सज्दा
करने वालों में से न हुआ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكَ تَرَةً فَكَرَّمْنَاكَ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ
اسْجُدُْوا لِلآدَمِ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُنْ مِنَ
السَّاجِدِينَ

12. अब्राह ने उस से कहा किम बात ने
तुझे सज्दा करने से रोक दिया जब
कि मैं ने तुझे आदेश दिया था? उस
ने कहा: मैं उस में उत्तम हूँ। मेरी
रचना तू ने अग्नि से की, और उस
की मिट्टी से।

قَالَ مَا مَنَعَكَ إِلَّا سَبَّحْتَ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَالُوا لَقَدْ
أَنزَلْنَاهُ خَلْقًا مِّنْ نَّاهٍ وَخَلَقْنَاهُ مِن طِينٍ

13. तो अब्राह ने कहा इस (स्वर्ग) से
उतर जा। तेरे लिये यह योग्य नहीं
कि इस में घमंड करे। तू निकल जा।
वास्तव में तू अपमानितों में है।

قَالَ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ إِنَّا نَنظُرُكَ لَنَّا نَكْفُرُ بِهَا
فَأَخْرَجْنَاكَ مِنَ الْبَيْتِ

1 भावार्थ यह है कि यह अब्राह का नियम है कि प्रत्येक व्यक्ति तथा समुदाय को
उन के कर्मानुसार फल मिलेगा। और कर्मों की तौल के लिये अब्राह ने नाप
निर्धारित कर दी है।

2 अर्थात् मूल पुरुष आदम को अस्तित्व दिया।

14. उस ने कहा मुझे उस दिन तक के लिये अवसर दे दो जब लोग फिर जीवित किये जायेंगे।
15. अब्राह ने कहा तुझे अवसर दिया जा रहा है।
16. उस ने कहा तो जिस प्रकार तू ने मुझे कुपथ किया है मैं भी तेरी सीधी राह पर इन की घात में लगा रहूंगा।
17. फिर उन के पास उन के आगे और पीछे तथा दायें और बायें से आऊंगा।¹ और तू उन में से अधिकतर को (अपना) कृतज्ञ नहीं पायेगा।²
18. अब्राह ने कहा यहाँ से अपमानित धिक्कारा हुआ निकल जा। जो भी उन में से तेरी राह चलेगा तो मैं तुम सभी में नरक को अवश्य भर दूंगा।
19. और हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो और जहाँ से चाहो खाओ। और इस वृक्ष के समीप न जाना अन्यथा अत्याचारियों में हो जाओगे।
20. तो शैतान ने दोनों को संशय में डाल दिया ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों को खोल दे जो उन से छुपाये गये थे। और कहा: तुम्हारे पालनहार ने तुम दोनों को इस वृक्ष से केवल इसलिये रोक दिया है कि तुम दोनों फरिश्ते अथवा सदावासी हो जाओगे।

قَالَ أَنْفَرِدَ لِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿١٥﴾

قَالَ لَيْسَ الْغَوْبِئِينَ أَزْوَاجُكُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٦﴾

فَوَرَّاهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ آلَ إِبْرَاهِيمَ شَاكِرِينَ ﴿١٧﴾

قَالَ سَوْفَ نَسْتَمُتِدُ رَأْسَ الْخُورِ إِنَّهُمْ بِعَفْوِكَ يَلْتَمِسُونَ ﴿١٨﴾

وَلَا تَمْسُكُنَّ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

فَوَسَّوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ بَيْنَ يَدَيْهِمَا لَعَلَّهُمَا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾

1 अर्थात् प्रत्येक दिशा में घेरूंगा और कुपथ करूंगा।

2 शैतान ने अपना विचार सच्च कर दिखाया और अधिकतर लोग उस के जाल में फँस कर शिर्क जैसे महा पाप में पड़ गया। (देखिये सूरह सबा आयत 20)

21. तथा दोनों के लिये शपथ दी कि वास्तव में मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।
22. तो उन दोनों को धोखे से रिझा लिया। फिर जब दोनों ने उस वृक्ष का स्वाद लिया तो उन के लिये उन के गुप्ताग खुल गये और वे उन पर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे। और उन्हें उन के पालनहार ने आवाज दी: क्या मैं ने तुम्हें इस वृक्ष से नहीं रोका था। और तुम दोनों से नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है?
23. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हम ने अपने ऊपर अन्याचार कर लिया और यदि तू हमें क्षमा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य ही नाश हो जायेंगे।
24. उस ने कहा: तुम सब उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो। और तुम्हारे लिये धरती में रहना और एक निर्धारित समय तक जीवन का साधन है।
25. तथा कहा: तुम उसी में जीवित रहोगे और उसी में मरोगे और उसी से (फिर) निकाले जाओगे।
26. हे आदम के पुत्रों! हम ने तुम पर ऐसा वस्त्र उतार दिया है जो तुम्हारे गुप्तागों को छुपाता, तथा शोभा है। और अल्लाह की आज्ञाकारिता का वस्त्र ही सर्वोत्तम है। यह अल्लाह

وَقَسَمْنَا لَكَ يَا آدَمُ الْمَلِئِينَ النَّجِيِّينَ ۝

فَلَمَّا يَفُورُونَ قُلُودًا أَفَّا الشَّجَرَةَ حَبَطَ لَهَا سَوْآتُهَا
وَلَمَّا يَفُورُونَ يَفُورُونَ فِيهَا وَرَقَ الْجَنَّةِ وَادَّخَرْتُمَا
أَلَمْ نَقُلْ عَنْ تَبْكِ الشَّجَرَةِ وَأَفَّا لَمَّا كَانَ الْفَيْضُ
لَهَا عَذَابٌ

وَالْأَرْضِ طَلَمًا أَلَمَّا كَانَ لَمْ تَقُولُوا وَرَحْمَةً
لَكُمْ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝

قَالَ فَيُطَوُّ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوًّا وَاعْلَمُوا فِي
الْأَرْضِ مُسْتَقَرًّا وَمَتًّا إِلَىٰ جَنَّةٍ ۝

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَفِيهَا تُخْرَجُونَ ۝

يَا بَنِي آدَمَ قَدْ أَرْسَلْنَاكَ حَافِيًا فُتُورِي سَوَآتُكَ
وَبِئْسَ قَوْمًا يُسَفِّوْنَ دِلَّهُمْ حَيْثُ دَلَّيْنَاهُمْ لِبَيْتِ
الْمَلِكِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝

- 1 अर्थात् आदम तथा हव्वा ने अपने पाप के लिये अल्लाह से क्षमा माँग ली। शैतान के समान अभिमान नहीं किया।

की आयतों में से एक है, ताकि वह शिक्षा ले।¹

27. हे आदम के पुत्रों! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें वहका दे जैसे तुम्हारे माता पिता को स्वर्ग से निकाल दिया, उन के बस्त्र उतरवा दिये ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखा दे। वास्तव में वह तथा उस की जाति तुम्हें ऐसे स्थान से देखती है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। वास्तव में हम ने शैतानों को उन का सहायक बना दिया है जो इंसान नहीं रखते।

28. तथा जब वह (शुश्रूक) कोई निर्लज्जा का काम करते हैं तो कहते हैं कि इसी (रीति) पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। तथा अब्राह ने हमें इस का आदेश दिया है। (हे नबी!) आप उन से कह दें कि अब्राह कभी निर्लज्जा का आदेश नहीं देता। क्या तुम अब्राह पर ऐसी बात का आरोप धरते हो जिसे तुम नहीं जानते?

29. आप उन से कह दें कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है। (और वह यह है कि) प्रत्येक मस्जिद में नमाज़ के समय अपना ध्यान सीधे उसी की ओर करो² और उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के उसी को पुकारो। जिस

بَيْنَ أَدَمَ وَآدَمَ بْنَكَ شَيْطَانٌ كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكَ
مِنَ الْجَنَّةِ يَمَوعُهُمَا إِلَيْهِمَا لِيُؤْمِنَا إِنَّهُ
يُرِيدُ هُوَ قِيَمَهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَ أَتَى جَمْعًا
الشَّيْطَانِ أُولَئِكَ يَكْفُرُونَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَرَدَّ قَعْلًا وَجَنَّةً وَأَلَا وَجَدْنَا حَبِيبًا يَدْعُو وَآلَهُ
أَمْرًا يَمَوعُهُمَا إِلَيْهِمَا لِيُؤْمِنَا إِنَّهُ
يُرِيدُ هُوَ قِيَمَهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَ أَتَى جَمْعًا
الشَّيْطَانِ أُولَئِكَ يَكْفُرُونَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

قُلْ أَسْرَرْتُ بِالنَّبِيِّ وَأَقِيمُوا وَجْهَكُمْ عِندَ
كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۝
كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ۝

1 तथा उस के आज्ञाकारी एवं कृतज्ञ बनें।

2 इस आयत में सत्य धर्म के निम्नलिखित तीन मूल नियम बताये गये हैं:
कर्म में संतुलन,
बंदना में अब्राह की ओर ध्यान,
तथा धर्म में विशुद्धता तथा एक अब्राह की बंदना करना।

प्रकार उस ने तुम्हें पहल पैदा किया है उसी प्रकार (प्रलय में) फिर जीवित कर दिये जाओगे।

30. एक समुदाय को उस ने सुपथ दिखा दिया और दूसरा समुदाय कुपथ पर स्थित रह गया। वास्तव में इन लोगों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को सहायक बना लिया, फिर भी वह समझने हैं कि वास्तव में वही सुपथ पर हैं।

31. हे आदम के पुत्रों! प्रत्येक मस्जिद के पास (नमाज के समय) अपनी शोभा धारण करो¹, तथा खाओ और पीओ और बेजा खर्च न करो। वस्तुतः वह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

32. (हे नबी!) इन (मिश्रणवादियों) से कहिये कि किस ने अल्लाह की उम शोभा को हराम (वर्जित) किया है² जिसे उम ने अपने सेवकों के लिये निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को? आप कह दें यह संसारिक जीवन में उन के लिये (उचित) है, जो इमान लाये तथा प्रलय के दिन (उन्हीं के लिये) विशेष³ है। इसी प्रकार हम

قَرَّبْنَا هَٰؤُلَاءِ وَقَرَّبْنَاهُمْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمُ الضَّلَالَةَ
إِلَهُهُمْ سَخَذُوا الشَّيَاطِينَ وَلِبَاسَهُمْ مِنْ دُونِ
الْعِلْمِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُفْتَدُونَ

يٰۤأَيُّهَا آدَمُ جَدُّو رَبِّبْنٰكُمْ جَنَّاتٍ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا
وَشَرَبُوا وَلَا تَسْرِقُوا رِيَّةً لَا يُحِبُّ الشَّرِيعَةُ

فَمَنْ مِّنْ أُمَّةٍ مَّرِيتُهُ لَهَا لِيَّ حَرَمٌ يَوْمَئِذٍ وَطَلَبَتْ
مِنَ الْبَرِّ قُلُوبٌ مِّنَ الْبَرِّ مَنُوعٌ فِي الْحَيَاةِ
الَّتِي نَبَايَصَةُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ
أَقْوَامًا يَعْصُونَ

- 1 कुरैश नग्न हाकर काँवा की परिक्रमा करते थे। इसी पर यह आयत उतरी
2 इस आयत में सन्ध्यास का खण्डन किया गया है कि जीवन के सुखों तथा शोभावों से लाभान्वित होना धर्म के विरुद्ध नहीं है। इन सब से लाभान्वित होने में ही अल्लाह की प्रसन्नता है। नग्न रहना तथा संसारिक सुखों से वर्चित हो जाना सन्धर्म नहीं है। धर्म की यह शिक्षा है कि अपनी शोभावों से सुसज्जित हो कर अल्लाह की बंदना और उपासना करो।
3 एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमर (रजियल्लाहु अन्हु) से

अपनी आयतों का मविस्नार वर्णन उन के लिये करते है जो ज्ञान रखते हो।

33. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खले तथा छुपे कुकर्मों और पाप तथा अवैध विद्रोह को ही हराम (वर्जित) किया है तथा इस बात को कि तुम उसे अब्राह का साझी बनाओ जिस का कोई तर्क उस ने नहीं उतारा है तथा अब्राह पर ऐसी बात बोलो जिसे तुम नहीं जानते।

34. प्रत्येक समुदाय का¹ एक निर्धारित समय है, फिर जब वह समय आ जायेगा तो क्षण भर देर या सवेर नहीं होगी।

35. हे आदम के पुत्रो! जब तुम्हारे पास तुम्ही में से रसूल आ जाये जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो डरेगा और अपना सुधार कर लेगा तो उस के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह² उदासीन होंगे।

36. और जो हमारी आयतें झुठलायेंगे और उन से घमंड करेंगे वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावामी होंगे।

37. फिर उस से बड़ा अन्याचारी कौन

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ
وَالْأَشْرَارَ وَأَشْلَىٰ بِمَنَافِعِ النَّاسِ لَئِنْ شِئْتُمْ لَأَنزِلَنَّ
بِهِ سُلْطَانًا ۖ وَلَئِنْ نَقَوُا عَلٰى أَعْنَاقِهِمُ الْوِزْرَ لَأَنزِلَنَّ

وَلَا تَحِلُّ أَتْوَاجُهُمْ وَأَجَلٌ مُّوَدَّعٌ لِّجَمْعِهِمْ لَعْنَتُهُمْ يُفْرَجُونَ
سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْبِلُ الْمُؤْمِنُونَ

بِهِمُ الْآفَةَ إِنَّمَا يَنْتَظِرُكُمْ رَسُولُ اللَّهِ مَلِكًا عَزِيزًا
أَتَيْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَاصْلَحْ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

فَمَنْ ظَلَمَ مِثْلَ مَا ظَلَمُوا لَئِنْ لَمْ يَنْتَظِرُوا لَأَنزِلَنَّ

कहा क्या तुम प्रमत्त नहीं हो कि संसार काफिरों के लिये हो और परलाक हमारे लिये? (बुखारी- 2468 , मुस्लिम- 1479)

- 1 अर्थात् काफिर समुदाय की यातना के लिये।

- 2 इस आयत में मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये समय समय पर रसूलों के आने के बारे में सूचित किया गया है और बताया जा रहा है कि अब इसी नियमानुसार अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये हैं। अतः उन की बात मान लो, अन्यथा इस का परिणाम स्वयं तुम्हारे सामने आ जायेगा।

है जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाये
अथवा उस की आयतों को मिथ्या
कहे? उन को उन के भाग्य में लिखा
भाग मिल जायेगा। यहाँ तक कि जिस
समय हमारे फरिश्ते उन का प्राण
निकालने के लिये आयेंगे तो उन से
कहेंगे कि वह कहाँ है जिन को तुम
अल्लाह के सिवा पुकारने थे? वह
कहेंगे कि वह तो हम से खो गये,
तथा अपने ही विरुद्ध साक्षी (गवाह)
बन जायेंगे कि वस्तुतः वह काफिर थे।

38. अल्लाह का आदेश होगा कि तुम भी
प्रवेश कर जाओ उन समुदायों में जो
तुम से पहले के जिनों और मनुष्यों में
से नरक में है। जब भी कोई समुदाय
(नरक में) प्रवेश करेगा तो अपने
समान दूसरे समुदाय को धिक्कार
करेगा, यहाँ तक कि जब उस में
सब एकत्र हो जायेंगे तो उन का
पिछला अपने पहले के लिये कहेगा-
हे हमारे पालनहार इन्होंने ही हमें
कुपथ किया है। अतः इन्हें दुगनी
यातना दे। वह (अल्लाह) कहेगा तुम
में से प्रत्येक के लिये दुगनी यातना
है परन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं।

39. तथा उन का पहला समुदाय अपने
दूसरे समुदाय से कहेगा (यदि हम
दोषी थे) तो हम पर तुम्हारी कोई
प्रधानता नहीं। हुई, तो तुम अपने

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَقَدْ كُتِبَ
عَلَيْكُمْ إِذَا جَاءَ رُسُلُنَا يَتَوَقَّوهُمْ قَالُوا
أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا
صَلُّوا عَلَيْنَا وَشَهِدُوا بِنُفْسِهِمْ أَنَّكَ
كَافِرٌ ﴿٣٨﴾

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ
الْأُمَمِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ
أُخْرَىٰ ذَٰلِكُمْ وَهُمْ لَا يَتُوبُونَ قَالَتْ لَعْنَةُ
اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٣٩﴾

وَقَالَتْ أُولَٰئِكَ لَئِنْ كُنَّا نَسْمَعُ
مَنْ قَضَىٰ فَعْدُوهُمْ أَفَرَأَيْنَا أَنَّهُ
يَكْفُرُ بِمَا كُنَّا

- 1 और हम और तुम यातना में बराबर हैं। आयत में इस तथ्य की आर मंकेन है
कि कोई समुदाय कुपथ होता है तो वह स्वयं कुपथ नहीं होता, वह दूसरों को भी
अपने कुचरित्र से कुपथ करता है अतः सभी दुगनी यातना के अधिकारी हुयें।

कुकर्मों की यातना का स्वाद लो।

40. वास्तव में जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया और उन से अभिमान किया उन के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, जब तक¹ ऊंट सूई के नाके से पार न हो जायें और हम इसी प्रकार अपराधियों को बदला देते हैं।
41. उन्हीं के लिये नरक का बिछौना और उन के ऊपर से ओढ़ना होगा। और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिकार (बदला²) देते हैं।
42. और जो इमान लाये और सत्कर्म किये, और हम किसी पर उस की सकत में (अधिक) भार नहीं रखते। वही स्वर्गी है और वही उस में सदाबामी होंगे।
43. तथा उन के दिलों में जो ड्रॉप होगा उसे हम निकाल देंगे।³ उन (स्वर्गी में) नहरें बहती होंगी तथा वह कहेंगे कि उस अब्राह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस की राह दिखाई और यदि अब्राह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता। हमारे पालनहार के रमूल मत्थ ले कर आये तथा उन्हें पुकारा जायेगा कि

إِنَّ الْكَاذِبِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا
لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ آبَائِهِمُ السَّمَاءَ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ
حَتَّىٰ يَنْزِيلَ يَجْزَلٌ فِي سِدْرٍ مَّجِيدٍ وَكُلِّبَتْ لَخْمِي
الْمُتَوَصِّلِينَ ۝

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ مِنْ ثَمَرَةٍ تُوَفَّىٰ تَحْوِيلًا
وَكُلُّهُمْ فِيهَا سَاطِعَةٌ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا يَجْعَلُ اللَّهُ
لَهُمْ سَعَةً ۝ وَلَقَدْ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ فِيهَا
خَبِيرٌ ۝

وَتَرَعْنَا مَدْرِي صَلَوَاتِهِمْ مِنْ عَيْنٍ تَخْبِرُ مِنْ
تَحْوِيلِهِمْ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ آبَائِهِمُ السَّمَاءَ
بِهَذَا وَكَانَتْ رَحْمَتُنَا لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ
جَاءَتْ رُسُلًا مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ وَتَوَدُّوْ أَنْ يَلْكَوْ بِجَنَّةِ
أَوْ رَحْمَتِهِمْ ۝ لَقَدْ كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

1 अर्थात् उन का स्वर्ग में प्रवेश असंभव होगा।

2 अर्थात् उन के कुकर्मों तथा अत्याचारों का।

3 स्वर्गीयों को सब प्रकार के सुख सुविधा के साथ यह भी बड़ी नेमत मिलेगी कि उन के दिलों का बैर निकाल दिया जायेगा, तार्कि स्वर्ग में मित्र बन कर रहें क्योंकि आपस के बैर से सब सुख किरकिरा हो जाता है।

इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने
सत्कर्मों के कारण हुये हो।

44. तथा स्वर्गवासी नरकवासियों को
पुकारेंगे कि हम को हमारे पालनहार
ने जो वचन दिया था उसे हम
ने सचच पाया, तो क्या तुम्हारे
पालनहार ने तुम्हें जो वचन दिया
था उसे तुम ने सचच पाया? वह
कहेगे कि हाँ। फिर उन के बीच एक
पुकारने वाला पुकारेगा कि अब्राह
की धिक्कार है उन अत्याचारियों पर

45. जो लोगों को अब्राह की राह
(सत्धर्म) से रोकते तथा उसे टेढ़ा
करना चाहते थे। और वही परलोक
के प्रति अविश्वास नहीं रखते थे।

46. और दोनों (नरक तथा स्वर्ग) के बीच
एक पर्दा होगा और कुछ लोग आराफ¹
(ऊँचाईयों) पर होंगे। जो प्रत्येक को
उन के लक्षणों से पहचानेंगे और स्वर्ग
वासियों को पुकार कर उन्हें सलाम
करेंगे। और उन्होंने उस में प्रवेश नहीं
किया होगा, परन्तु उस की आशा
रखते होंगे।

- 47 और जब उन की आँखें नरक वासियों
की ओर फिरेगी तो कहेंगे हे हमारे
पालनहार! हमें अत्याचारियों में
सम्मिलित न करना।

48. फिर आराफ (ऊँचाईयों) के लोग

وَنَادَى أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنِ قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ
رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعْلَمُ إِنَّهُنَّ أَفْوَانٌ مِّنْ مَّوَدَّنَ
لَهُنَّ اللَّهُ عَلَى الْغَيْبِينَ

الَّذِينَ يَصْنَعُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَتَّبِعُونَ
حُجُوجًا وَهَوًى بِالْغَيْرِ وَكَذِبُونَ

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ
كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَنَادُوا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنِ اسْلُظُنِيكُمْ
لَوْ يَدْعَوْهُمْ فَهُمْ يَكْفُرُونَ

وَلَا تُصِرُّوهُنَّ أَبْصَارُهُمْ يُلْقَاهُنَّ أَصْحَابُ النَّارِ قَالُوا
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مِمَّنْ يَنْقُرُونَ الْقُبُورَ الْغَيْبِينَ

وَنَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَ نُهُم

1 आराफ नरक तथा स्वर्ग के मध्य एक दीवार है जिस पर वह लोग रहेंगे जिन
के सुकर्म और कुकर्म बराबर होंगे और वह अब्राह की दया से स्वर्ग में प्रवेश
की आशा रखने होंगे। (इब्ने कमीर)

कुछ लोगों को उन के लक्षणों से पहचान जायेंगे¹, उन से कहेंगे कि तुम्हारे जत्थे और तुम्हारा घमड़ तुम्हारे किसी काम नहीं आया।

49. (और स्वर्गवासियों की ओर संकेत करेंगे कि) क्या यही वह लोग नहीं है जिन के सम्बन्ध में तुम शपथ ले कर कह रहे थे कि अल्लाह इन्हें अपनी दया में से कुछ नहीं देगा? (आज उन से कहा जा रहा है कि) स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ, न तुम पर किसी प्रकार का भय है और न तुम उदामीन होगे।

50. तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे कि हम पर तानिक पानी डाल दो, अथवा जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से कुछ दे दो। वह कहेंगे कि अल्लाह ने यह दोनों (आज) काफिरों के लिये हराम (वर्जित) कर दिया है।

51. (उस का निर्णय है कि) जिन्होंने अपने धर्म को तमाशा और खेल बना लिया था, तथा जिन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा था, तो आज हम उन्हें ऐसे ही भुला देंगे जिस प्रकार उन्होंने आज के दिन के आने को भुला दिया था² और इस लिये भी कि वह

يَسْمِعُهُ قَالُوا مَا أَخَذَ مِنْكُمْ جُعِدُوا كُفْرًا
تَسْكُرُونَ ۝

هَؤُلَاءِ لَوِيذِينَ اقْسَمُوا لَيَأْتِيَهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ
أَوْ خَوْفٍ عَلَيْهِمْ وَلَا أَتَاهُمْ عَمَلُوتُونَ ۝

وَنَادَى أَتَصِيبُ النَّارَ أَتَصِيبُ الْمَاءَ أَمْ يَسِفُوا
حُلُمًا مِنَ الْمَاءِ أَوْ يَتَذَكَّرُ اللَّهُ قَالُوا بَلَىٰ
حَرَّمَهَا عَلَ الْكَافِرِينَ ۝

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعْنًا فَنُزِّلَهُمْ
الْحَبْرَ الدُّبِّيَّ قَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ لِمَا نُسَوِّدُ بِهِ
هَذَا أَوْ لَوْ أَنَّ الْوَابِئِينَ يَمْسُونَ ۝

1 जिन को संसार में पहचानने थे और याद दिलायेंगे कि जिस पर तुम्हें घमड़ था आज तुम्हारे काम नहीं आया।

2 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा प्रलय के दिन अल्लाह ऐसे बंदों से कहेगा क्या मैं ने तुम्हें बीबी बच्चे नहीं दिये आदर मान नहीं दिया? क्या ऊँट

हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

52. जब कि हम ने उन के लिये एक ऐसी पुस्तक दी जिसे हम ने ज्ञान के आधार पर सर्वास्तार वर्णित कर दिया है जो मार्गदर्शन तथा दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

53. (फिर) क्या वह इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि इस का परिणाम सामने आ जाये? जिस दिन इस का परिणाम आ जायेगा तो वही जो इस से पहले इसे भूलने हुये थे कहेंगे कि हमारे पालनहार के रमूल सञ्च ले कर आये थे, (परन्तु हम ने नहीं माना) तो क्या हमारे लिये कोई अनुशंसक (सिफारशी) है जो हमारी अनुशंसा (सिफारिश) करे? अथवा हम संसार में फेर दिये जायें तो जो कर्म हम करते रहे उन के विपरीत कर्म करेंगे! उन्होंने ने स्वयं को क्षति में डाल दिया, तथा उन से जो मिथ्या बातें बना रहे थे खो गई।

54. तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस ने आकाशों तथा धरती को छ दिनो में बनाया¹, फिर अर्श

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ بَكْتِبٍ قَصِيدَةٍ عَلَىٰ هُدًى
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ
يَقُولُ الْآمِنِينَ سُوءٌ مِنْ قَبْلِ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ قَالُوا لَنْ نَمُنَ بِشَعْفَاءٍ يُشْفَعُونَ لَنَا
أَوْ رَدِّ قَسَمٍ بَعِثْنَاكَ لِنَعْمَلَ كَدَّ حُسْرًا
أَنفُسُهُمْ وَجَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُبْطِنُ إِلَيْهِ

घोड़े तेरे आधीन नहीं किये क्या तू मूल्या बन कर चुंगी नहीं लेता था? वह कहेगा हे अल्लाह सब सहीह है। अल्लाह प्रश्न करेगा क्या मुझ से मिलने की आशा रखता था? वह कहगा नहीं। अल्लाह कहेगा जैसे तू मुझे भूला रहा, आज मैं तुझे भूल जाता हूँ। (सहीह मुस्लिम- 2968)

- 1 यह छ दिन शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार और वृहस्पतिवार है पहले दो दिन में धरती को, फिर आकाश को बनाया, फिर आकाश को दो दिन में बराबर किया, फिर धरती को फैलाया और उस में पर्वत, पानी और

(सिंहासन) पर स्थित हो गया। वह रात्री से दिन को ढक देता है, दिन उस के पीछे दौड़ता हुआ आ जाता है। सूर्य तथा चाँद और तारे उस की आज्ञा के अधीन हैं। सुन लो! वही उत्पत्तिकार है, और वही शामक¹ है। वही अल्लाह अति शुभ, संसार का पालनहार है।

الْمَهَارِطِلِبَةُ حَيْثُ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ
مُسْتَعْرَبُونَ بِأَمْرِ الْإِلَهِ الْعَلِيِّ وَالْأَمْرِ تَرَى اللَّهَ
رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝

55. तुम अपने (उमी) पालनहार को रोने हुये तथा धीरे-धीरे पुकारो। निःसदिह वह सीमा पार करने वालों से प्रेम नहीं करता।

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ۝

56. तथा धरती में उस के सुधार के पश्चान्² उपद्रव न करो, और उमी से डरते हुये, तथा आशा रखते हुये³ प्रार्थना करो। वास्तव में अल्लाह की दया सदाचारियों के समीप है।

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ
خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ
الْمُغْنِينَ ۝

57. और वही है जो अपनी दया (वर्षा) से पहले वायुओं को (वर्षा) की शुभ सूचना देने के लिये भेजता है। और जब वह भारी बादलों को लिये उड़ती है तो हम उसे किसी निर्जीव धरती को (जीवित) करने के लिये पहुँचा देते हैं। फिर उस से जल वर्षा कर के उस के द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल उपजा देते हैं। इसी प्रकार हम

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَّحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقْلَّتْ حُبَالُ الْكَوْكَبِ
لَيْسَ لَهُ قُوَّةٌ فَأَسْرَفْنَا بِهِ السَّيَّاتِ فَأَخْرَجْنَا بِهِ
مِنْ كُلِّ شَجَرٍ كَدِّمَتٍ نُّجُومٍ الْهُنَّ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

उपज की व्यवस्था दो दिन में की। इस प्रकार यह कुल छः दिन हुये (देखिये- सूरह सज्दा, आयत- 9, 10)

- 1 अर्थात् इस विश्व की व्यवस्था का अधिकार उस के सिवा किसी को नहीं है।
- 2 अर्थात् सत्धर्म और रमूलों द्वारा सुधार किये जाने के पश्चान्।
- 3 अर्थात् पापाचार से डरने और उस की दया की आशा रखने हुये।

मुर्दा को जीवित करते हैं, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण कर सको।

58. और स्वच्छ भूमि अपनी उपज अल्लाह की अनुमति से भरपूर देती है। तथा खराब भूमि की उपज थोड़ी ही होती है। इसी प्रकार हम अपनी¹¹ आयतें (निशानियाँ) उन के लिये दुहराने हैं जो शुक अदा करते हैं।

وَالْبَدَنَ الْيَقِينُ يَعْرِضُ بَنَاتِهِ بِإِذْنِ رَبِّهَا
وَالَّذِي خَبَّرَكَ بِالْأَنْبَاءِ الْأُنْكَارِ كَذِبًا
تَصْرِفُ الرِّبَا لِقَوْمٍ يُشْكِرُونَ

59. हम ने नूह¹² को उस की जाति की ओर (अपना सदेश पहुँचाने के लिये) भेजा था, तो उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! (केवल) अल्लाह की इबादत (बंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

لَقَدْ رَأَيْنَا نُوْحًا إِذْ قَامَ فَقَالَ قَوْمِهِ
عَبُدُوا اللَّهَ مَا يَكُونُ لَكُمْ عِبْرَةٌ إِلَىٰ آخَاتٍ
عَبِدُوا رَبَّكُمْ ثَلَاثَ يَوْمٍ فَقَبَلُوا

60. उस की जाति के प्रमुखों ने कहा: हमें

قَالَ الْمَلَأِينَ قَوْمَهُ لَكُم مِّنْ قَبْلِ هَٰذَا

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा मुझे अल्लाह ने जिस मार्ग दर्शन और ज्ञान के साथ भेजा है वह उस वर्षा के समान है जो किसी भूमि में हूड तो उस का कुछ भाग अच्छा था जिस ने पानी लिया और उस से बहुत सी घास और चारा उगाया। और कुछ कड़ा था जिस ने पानी रोक लिया तो लोगों को लाभ हुआ और उस से पिया और सीचा। और कुछ चिकना था, जिस ने न पानी रोका न घास उपजाइ। तो यही उस की दशा है जिस ने अल्लाह के धर्म को समझा और उसे सीखा तथा सिखाया। और उस की जिस ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया और न अल्लाह के मार्गदर्शन को स्वीकार किया जिस के साथ मुझे भेजा गया है (महीह बुखारी 79)

- 2 बनाया जाता है कि नूह (अलैहिस्सलाम) प्रथम मनु आदम (अलैहिस्सलाम) के दसवें वंश में थे। उन से कुछ पहले तक लोग इस्लाम पर चले आ रहे थे। फिर अपने धर्म से फिर गये और अपने पुरातन पूर्वजों की मूर्तियाँ बना कर पूजने लगे। तब अल्लाह ने नूह को भेजा। किन्तु कुछ के सिवा किसी ने उन की बात नहीं मानी। अन्ततः सब डुबो दिये गये। फिर नूह के तीन पुत्रों से मानव वंश चला इसी लिये उन को दूसरा आदम भी कहा जाता है। (देखिये सूरह नूह आयत: 71)

लगता है कि तुम खुले कुपथ में पड़ गये हो।

61. उस ने कहा हे मेरी जाति! मैं किसी कुपथ में नहीं हूँ परन्तु मैं विश्व के पालनहार का रसूल हूँ।

62. तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ। और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और अब्राह की ओर से उन चीजों का ज्ञान रखता हूँ जिन का ज्ञान तुम्हें नहीं है।

63. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है, ताकि वह तुम्हें सावधान करे, और ताकि तुम आज्ञाकारी बनो और अब्राह की दया के योग्य हो जाओ?

64. फिर भी उन्होंने उस को झुठला दिया। तो हम ने उसे और जो नौका में उस के साथ थे उन को बचा लिया। और उन्हें डुबो दिया जो हमारी आयतों को झुठला चुके थे। वास्तव में वह (समझ बूझ के) अंधे थे।

65. (और इसी प्रकार) आद¹ की ओर उन के भाई हूद को (भेजा)। उस ने कहा हे मेरी जाति! अब्राह की इबादत (बंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम (उस की अवैज्ञा से) नहीं डरते?

قَالَ يَقُولُ لَيْسَ بِي صِدْقَةٌ وَبِكَيْ رَسُولٍ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

أَبِيعْتُكُمْ بِسُلَيْبٍ رَبِّي وَأَنْصَحُكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

أَوْجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ لِرَبِّكُمْ رَبُّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَيَسْتَأْذِنَكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَرْحَمُونَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَخْرَجْنَاهُ وَآلِهِ مِنْ مَعِهِ فِي الْفُلِّ وَأَخْرَجْنَا الْباقِينَ الَّذِينَ كَفَرُوا يَوْمَ الْآيَاتِ أَنْ يُهْلَكُوا قَوْمًا عَصِينَ ۝

وَلِلَّهِ عَالِمُ الْغَايَةِ هُوَذَا قَدْ يَقُولُ يُعْدُوا إِلَهُ مَا لَكُمْ مِنَ الْإِلَهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

1 नूह की जाति के पश्चान् अरब में आद जाति का उत्थान हुआ जिस का निवास स्थान अदकाफ का क्षेत्र था। जो हिजाज तथा यमामा के बीच स्थित है। उन की आबादियाँ उमान से हजरमौन और इराक तक फैली हुई थी।

66. (इस पर) उस की जाति में से उन प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये कि हमें ऐसा लग रहा है कि तुम ना समझ हो गये हो। और वास्तव में हम तुम्हें झुठों में समझ रहे हैं।

67. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मुझ में कोंड़ ना समझी की बात नहीं है परन्तु मैं तो संसार के पालनहार का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।

68. मैं तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ और वास्तव में मैं तुम्हारा भरोसा करने योग्य शिक्षक हूँ।

69. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है ताकि वह तुम्हें सावधान करे?। तथा याद करो कि अब्राह ने नुह की जाति के पश्चान् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है, और तुम्हें अधिक शारीरिक बल दिया है। अतः अब्राह के पुरस्कारों को याद¹ करो। संभवतः तुम सफल हो जाओगे।

70. उन्होंने ने कहा: क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि हम केवल एक ही अब्राह की इबादत (बदना) करें और उन्हें छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं? तो वह बात हमारे पास ला दो जिस से हमें डरा रहे हो, यदि तुम सच्चे हो?

71. उस ने कहा: तुम पर तुम्हारे

قَالَ الْمَلَأُ الْيَتِيمَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ نَارًا
لَتَرْبِكُمْ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَمُتَشَتِّينَ ۝

قَالَ يَقُولُ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ
مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝

أَلَمْ يَعْلَمُوا بِسَيِّدِ رَبِّیْ وَآلَانَا لَعَنَ صَعْدَ أُمَمٍ ۝

أَوْعَجِبُوا أَن جَاءَهُمُ الذِّكْرُ مِن رَّبِّكَ عَلَى رَجُلٍ
مِّنكُمْ لِيُذَكِّرَكُمْ وَأَذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ
مِنْ بَعْدِ نُوحٍ وَكَرَّادَكُمْ فِي الْغُلُقِ
بِقَضَاةٍ كَذَّابُوا الْكُذَّابُ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ

قَالُوا إِنَّمَا اتَّبَعْنَا آلِهَةَ وَحْدَانَةٍ وَمَا كَانَ
يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَاتَّبَعْنَا مَا تَتَّبَعُوا أَن كُنْتُمْ
مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ حُجٌّ

1 अर्थात् उस के आज्ञाकारी तथा कृतज्ञ बनो।

पालनहार का प्रकोप और क्रोध आ पड़ा है। क्या तुम मझ से कुछ (मूर्तिधो के) नामों के विषय में विवाद कर रहे हो जिन का तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने (पूज्य) नाम रख दिया है। जिस का कोई नर्क (प्रमाण) अब्राह ने नहीं उतारा है? तो तुम (प्रकोप की) प्रतीक्षा करो और तुम्हारे साथ मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

72. फिर हम ने उसे और उस के साथियों को बचा लिया। तथा उन की जड़ काट दी जिन्हो ने हमारी आयतों (आदेशों) को झुठला दिया था। और वह ईमान लाने वाले नहीं थे।

73. और (इसी प्रकार) समूद¹ (जाति) के पास उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा हे मेरी जाति! अब्राह की (बंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण (चमत्कार) आ गया है। यह अब्राह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार² है। अतः इसे अब्राह की धरती में चरने के लिये छोड़ दो और इसे बुरे विचार से हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें दुःखदायी यातना घेर लेगी।

وَعَصَبْنَا عَصِيَابَهُمْ فِي أَسْمَاءِ مَا يَكْفُرُونَ
أَتُكْفَرُوا بِهِمْ أَمْ لَكُمْ مَا تُكْفِرُونَ اللَّهُ يَعْلَمُ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

فَأَخْرَجْنَاهُ وَلِقَائِهِمْ مَعَهُ رَحْمَتًا مِنَّا
وَقَطَعْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ إِيَّاهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ۝

ذَلِكِ تَمَكُّدُ أَخَاهُ صَالِحًا قَالَ يَقُولُ
أَعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِن إِلَهٍ غَيْرُهُ قَدْ
جَاءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ هَذِهِ نَاقَةُ
اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ قَدْ رُوحَانَا كُلُّ فِي أَرْضٍ
فَلَوْ لَا تَتَّقُونَهَا إِنِّي أَخَذْتُ عَذَابَ
الْيَوْمِ ۝

1 समूद जाति अरब के उस क्षेत्र में रहती थी जो हिजाज तथा शाम के बीच «बादिये कुर» तक चला गया है। जिस को आज ((अल उला)) कहते हैं। इसी को दूसरे स्थान पर «अलहिज्र» भी कहा गया है।

2 समूद जाति ने अपने नबी सालेह अलैहिस्सलाम से यह माँग की थी कि: पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दें और सालेह अलैहिस्सलाम की प्रार्थना से अब्राह ने उन की यह माँग पूरी कर दी। (इब्ने कसीर)

74. तथा याद करो कि अल्लाह ने आद जाति के ध्वस्त किये जाने के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम्हें धरती में बसाया है, तुम उस के मैदानों में भवन बनाते हो और पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो। अतः अल्लाह के उपकारों को याद करो और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

وَإِذْ كُنَّا نُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ بِكُمْ خُلَافَةً مِنَّا بِمَا كُنتُمْ فِي الْأَرْضِ تَنَجِّدُونَ مِنْهُنَّ مَا فَتُورُوا وَتَنَجِّدُونَ لِبَنَائِكُمْ لِيُؤْتُوا قُلُوبُهُمْ قَدْ كُفِّرُوا بِلَآئِنَا وَلَكِنَّا نَعْتَوِي الْأَرْضَ مُفِيدِينَ ﴿٧٤﴾

75. उस की जाति के घमंडी प्रमुखों ने उन निर्बलों से कहा जो उन में से ईमान लाये थे: क्या तुम विश्वास रखते हो कि सालेह अपने पालनहार का भेजा हुआ है? उन्होंने ने कहा: निश्चय जिस (संदेश) के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान (विश्वास) रखते हैं।

قَالَ الْمَلَأُ الْكَافِرِينَ اسْمِعُوا لِمَا يُوقِيهِ الْكَافِرِينَ سَتُغْنِيكُمُ الْيَمِينُ وَهُمْ كَفَتُونَ أَنَّ صَيْحَ مُوسَىٰ مِّن رَّبِّهِ قُدُّوا رُءُوسَكُمْ لِلرَّسُولِ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾

76. (तो इस पर) घमंडियों¹ ने कहा: हम तो जिस का तुम ने विश्वास किया है उसे नहीं मानते।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا زُيَّا بِأُنْوَاقِ الْمُشْكِرِ بِهِ كُفِرُوا ﴿٧٦﴾

77 फिर उन्होंने ने ऊँटनी को बध कर दिया और अपने पालनहार के आदेश का उल्लंघन किया और कहा: हे सालेह! तू हमें जिस (यातना) की धमकी दे रहा था उसे ला दे, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।

فَعَقَرُوا الْوَيْثَ وَقَعَدُوا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُصَدِّقُهُمْ بُتَيْبَةُ ثَقُفَتَانِ صَكَّيْنِ مِنَ ثَمُودِيِّينَ ﴿٧٧﴾

78. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया। फिर जब भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيَّةً ﴿٧٨﴾

79 तो सालेह ने उन से मेह फेर लिया और

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ

1 अर्थात् अपने संसारिक सुखों के कारण अपने बड़े होने का गर्व था।

कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के उपदेश पहुँचा दिये थे और मैं ने तुम्हारा भना चाह। परन्तु तुम उपकारियों से प्रेम नहीं करते।

80. और हम ने लूत¹ को भेजा। जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम ऐसी निर्लज्जा का काम कर रहे हो जो तुम से पहले संसारवासियों में से किसी ने नहीं किया है?

81. तुम स्त्रियों को छोड़ कर कामवासना की पूर्ति के लिये पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि तुम सीमा लांघने वाली जाति² हो।

82. और उस की जाति का उत्तर बस यह था कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो। यह लोग अपने में बड़े पवित्र बन रहे हैं।

83. हम ने उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा बचा लिया, वह पीछे रह जाने वाली थी।

84. और हम ने उन पर (पत्थरों) की वर्षा कर दी। तो देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा रहा?

رِسَالَةً رَبِّي وَتَصَحُّتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ
النَّصِيحَةَ

وَأَوْفَىٰ دُقَانٍ بِقَوْمِهِ تَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ

إِنَّمَا لَكُمْ الْإِنثَاءُ ذُنُوبَ الرِّجَالِ شَهْوَةً مِنْ دُونِ
الْبَسَاءِ إِنِ لَّتَكُونَنَّ قَوْمًا كَاذِبِينَ

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا
أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ
يَتَطَهَّرُونَ

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ فَخَمَلَتْ مِنْ
الْغَيْرِ

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَذَابُهُ الْخَبِيرِ

1 लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। और वह जिस जाति के मार्गदर्शन के लिये भेजे गये थे वह उस क्षेत्र में रहती थी जहाँ अब «मृत सागर» स्थित है। उस का नाम भाष्यकारों ने सदूम बताया है।

2 लूत अलैहिस्सलाम की जाति ने निर्लज्जा और बालमैथुन की कुरीति बनाई थी जो मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध था। आज रिसर्च से पता चला कि यह विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण है जिस में विशेष कर «एड्स» के रोगों का वर्णन करते हैं। परन्तु आज पश्चिम देश द्वारा उस अधिकार युग की ओर जा रहे हैं और इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाम दे रखा है।

85. तथा मद्यन¹ की ओर हम ने उस के भाई शुऐब को रमूल बना कर भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अब्राह की इबादत (बंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार का खुला तर्क (प्रमाण) आ गया है। अन-नाप और तौल पूरी करो और लोगों की चीजों में कमी न करो। तथा धरती में उस के सुधार के पश्चान् उपद्रव न करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ईमान वाले हो।

86. तथा प्रत्येक मार्ग पर लोगों को धमकाने के लिये न बैठो और उन्हें अब्राह की राह से न रोको जो उस पर ईमान लाये² है। और उसे टेढ़ा न बनाओ, तथा उस समय को याद करो जब तुम थोड़े थे, तो तुम्हें अब्राह ने अधिक कर दिया। तथा देखो कि उपद्रवियों का परिणाम क्या हुआ?

87. और यदि तुम्हारा एक समुदाय उस पर ईमान लाया है जिस के साथ मैं

قَالَ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ نَقَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ
جَاءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ذُكِّرُوا أَنْتَكُمُ
وَالْهَادُونَ وَلَا تَتَّبِعُوا النَّاسَ فِي شَيْءٍ هُمْ
وَلَا تَقْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا
ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ

وَلَا تَقْعُدُوا عَلَىٰ حَرْثِهِمْ فَتُبَدِّلُوا
وَتَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَن آمَنَ بِهِ
وَتَتَّبِعُوهُنَّ يَٰعِزَّةُ وَذُكِّرُوا أَنْتُمْ
قَبِيلًا فَكُفِّرْتُمْ وَنُظَرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ

وَمَن كَانَ عَدُوًّا لِّكُمْ فَأَنَا عَدُوٌّ لَهُ

1 मद्यन् एक कबील का नाम था। और उमी के नाम पर एक नगर बस गया जो हिजाज के उत्तर-पश्चिम तथा फलस्तीन के दक्षिण में लाल सागर और अकबा खाड़ी के किनारे पर रहता था। यह लोग व्यापार करने थे प्राचीन व्यापार राजपथ लाल सागर के किनारे यमन से मक्का तथा यंबुअ होते हुये सीरिया तक जाता था।

2 जैसे मक्का वाले मक्का के बाहर से आने वालों को कुआन सुनने से रोका करते थे। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जादुगर कह कर आप के पास जाने से रोकते थे। परन्तु उन की एक न चली और कुआन लोगों के दिलों में उतरता और इस्लाम फैलता गया। इस से पता चलता है कि नबीयों की शिक्षाओं के साथ उन की जातियों ने एक जैसा व्यवहार किया।

भेजा गया हूँ और दूसरा इमान नहीं लाया है तो तुम धैर्य रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे और वह उत्तम न्याय करने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ

३३. उस की जाति के प्रमुखों ने जिन्हें घमंड था कहा कि है शूऐब। हम तुम को तथा जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं अपने नगर से अवश्य निकाल देंगे अथवा तुम सब को हमारे धर्म में अवश्य बापिस आना होगा। (शूऐब) ने कहा क्या यदि हम उसे दिल से न मानें तो?

قَالَ أَجَلًا أَلَمَ يَمُنْ أَتَاكَ بِكُفْرٍ وَإِنْ قُوَّةٌ
لِغَيْرِكَ يَعْصِيكَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ
قُرَيْبٍ أَلَمْ يَعُودْ فِي بَيْتِنَا قَدْ أَوْرَثْنَا كُرْهِينَ ۝

४९. हम ने अब्राहम पर मिथ्या आरोप लगाया है, यदि तुम्हारे धर्म में इस के पश्चात् वापिस आ गये, जब कि हमें अब्राहम ने उस से मुक्त कर दिया है। और हमारे लिये संभव नहीं कि उस में फिर आ जायें, परन्तु यह कि हमारा पालनहार चाहता हो। हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है, अब्राहम ही पर हमारा भरोसा है। हे हमारे पालनहार। हमारे और हमारी जाति के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दे। और तू ही उत्तम निर्णयकारी है।

قُلْ فَأْتُوا عَلَىٰ إِلَٰهِي إِلَٰهِي بَارِئُ خَلْقِي فِي مَلَكُوتِهِ نَعْبُدُ
إِذْ خَلَقَ اللَّهُ مِثْلَهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعْبُدَ فِيهَا إِلَّا
أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَبِعِزَّتِكَ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمٌ
عِنْدَ اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا اقْضِ عَيْنِنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا
بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٥﴾

90. तथा उम्मी की जाति के कार्यपर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम लोग शुद्ध का अनुसरण करोगे तो वस्तुतः तुम लोगों का उम्मी समय नाश हो जायेगा।

وَقَالَ لَمَّا شِئْتُمْ قَهْرًا مِنْ قُوَّةٍ لِي أَجْعَلَهُمْ
شُعَبًا يَلْتَمِسُ دُخْرُوكُمْ ۝

91 तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया फिर
भोर हुई तो वे अपने घरों में औधे
पड़े हये थे।

وَأَحَلَّ اللَّهُ الْوَصْفَةَ وَالْكَفْلَ لِيَزِيدَ مِنْ دُونِهِمْ
جِيهًا ۖ وَآيَاتُ اللَّهِ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ

92. जिन्होंने शुऐब को झुठलाया (उन की यह दशा हुई कि) मानो कभी उस नगर में बसे ही नहीं थे।

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّهُمْ بَيْنَهُم نَهْرٌ
كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّهُمْ بَيْنَهُم نَهْرٌ

93. तो शुऐब उन से विमुख हो गया, तथा कहा हे मेरी जानि! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के संदेश पहुंचा दिये तथा तुम्हारा हितकारी रहा। तो काफिर जानि (के विनाश) पर कैसे शोक करूँ?

فَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَ قَوْمِ لَقَدْ أَبْعَدْتُكُمْ رُسُلِي
رَبِّي وَتَقَوُّتُمْ كَأَن لَّيْفَاسِي عَنِ قَوْمِ كَافِرِينَ

94. तथा हम ने जब किसी नगरी में कोई नबी भेजा तो उस के निवासियों को आपदा, तथा दुःख में ग्रस्त कर दिया कि संभवतः वह विन्ती करें।

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا
بِالْبَاسَاءِ وَالْهَزَاءِ لَعَنَهُمُ يَظْهَرُونَ

95. फिर हम ने आपदा को सुख सुविधा से बदल दिया, यहाँ तक कि जब वह सुखी हो गये और उन्होंने ने कहा कि हमारे पूर्वजों को भी दुःख तथा सुख पहुंचता रहा है, तो अकस्मात् हम ने उन्हें पकड़ लिया, और वह समझ नहीं सके,

لَعَبْدَ لَدُنَّا مَكَانَ الْجَنَّةِ وَنَحْنُ نَحْنُ
وَقَالُوا قَدْ مَسَّ بَادِيَ الْقَرْيَةِ وَالشَّرَّاءُ أَخَذَهُمْ
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

96. और यदि इन नगरों के वासी इमान लाते और कुकर्मों से बचे रहते तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पत्ति के द्वार खोल देते।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا لَأُفْتُخَ الْفُتُوحُ
عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن
كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

1 आयन का भावार्थ यह है कि सभी नबी अपनी जानि में पैदा हुये। सब अकेले धर्म का प्रचार करने के लिये आये। और सब का उपदेश एक था कि अल्लाह की वंदना करो उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। सब ने सत्कर्म की प्रेरणा दी, और कुकर्म के दुष्परिणाम से सावधान किया। सब का साध निर्धनों तथा निर्बलों ने दिया। प्रमुखों और बड़ों ने उन का विरोध किया। नबियों का विरोध भी उन्हें धमकी तथा दुःख दे कर किया गया। और सब का परिणाम भी एक प्रकार हुआ अर्थात् उन को अल्लाह की यातना ने घेर लिया। और यही सदा इस संसार में अल्लाह का नियम रहा है।

परन्तु उन्होंने ने झुठला दिया अतः
हम ने उन के कर्तुओं के कारण उन्हें
(यातना में) धेर लिया।

97. तो क्या नगर वासी इस बात से
निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर
हमारी यातना रातों रात आ जाये,
और वह पड़े सो रहे हों?
98. अथवा नगरवासी निश्चिन्त हो गये
हैं कि हमारी यातना उन पर दिन के
समय आ पड़े, और वह खेल रहे हों?
99. तो क्या वह अब्राह के गुप्त उपाय से
निश्चिन्त हो गये हैं? तो (याद रखो!)
अब्राह के गुप्त उपाय से नाश होने
वाली जाति ही निश्चिन्त होती है।
100. तो क्या उन को शिक्षा नहीं मिली
जो धरती के बारिख होते हैं उस
के अगले वासियों के पश्चात् कि
यदि हम चाहें, तो उन के पापों
के बदले उन्हें आपदा में ग्रस्त कर
दे और उन के दिलों पर मुहर
लगा दें, फिर वह कोई बात ही न
सुन सकें?
101. (हे नबी!) यह वह नगर है जिन
की कथा हम आप को सुना रहे हैं।
इन सब के पास उन के रमूल खुले
तर्क (प्रमाण) लाये, तो वह ऐसे न
थे कि उस (सत्य) पर विश्वास कर
लें जिस को वे इस से पूर्व झुठला
चुके थे, इसी प्रकार अब्राह काफिरो

أَفَأَمِّنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝

أَوَأَمِّنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
نَهَارًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝

أَفَأَمِّنُوا عَصَا إِبْرَاهِيمَ فَأَمِّنُوا مِثْلَ
الْقَوْمِ الْخَاسِرِينَ ۝

أَوَلَمْ يَكُن لِّلَّذِينَ يَرْمُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ
أَهْلِهَا أَن لَّوِ شَاءَ أَصْنَمُهُمْ دُخَانًا
وَقَطِيفَةٌ مِّنْ لُّجُجِهِمْ ذُكِّرُوا لِمَعْمُورٍ ۝

يَذُكُّ الْقُرَىٰ تَفْصِيلًا حَتَّىٰ مِّنْ مَّكَا
بِهِمْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا
كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ كَذِبَتْ
عَنِّي ذُكِّيَتْ لِقَابِ اللَّهِ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ ۝

1. अर्थात् सत्य का प्रमाण आने से पहले झुठला दिया था उस के पश्चात् भी अपनी
हठधर्मी से उसी पर अड़े रहे।

के दिलों पर मुहर लगाता है।

102. और हम ने उन में अधिकतर को वचन पर स्थित नहीं पाया¹ तथा हम ने उन में अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ قِيَمًا وَزَانًا
وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَافِيينَ ۝

103. फिर हम ने इन रसूलों के पश्चान मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ फिरऔन² और उस के प्रमुखों के पास भेजा, तो उन्होंने भी हमारी आयतों के साथ अन्याय किया तो देखो कि उपद्रवियों का क्या परिणाम हुआ?

لَمَّا بَعَثْنَا مِنْ بَيْنِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَصَلَبُوا بِهَا ۖ قَاتِلْهُمْ كَيْفَ كَانِ
صَافِيَةً الْبَعِثِينَ ۝

104. तथा मूसा ने कहा हे फिरऔन! मैं वास्तव में विश्व के पालनहार का रसूल (संदेश वाहक) हूँ।

وَقَالَ مُوسَىٰ يَفِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝

105. मेरे लिये यही योग्य है कि अब्राह के विषय में सत्य के अर्तिरक्त कोई बान न करूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण लाया हूँ इस लिये मेरे साथ बनी इस्राईल³ को जाने दे।

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى الْمَلُوكِ إِلَّا حَقٌّ
يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَتَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنْ رَبِّكَ
رِسَالَةٌ فِي الْهَدَىٰ ۝

1 इस से उस प्रण (वचन) की ओर संकेत है, जो अब्राह ने सब से «आदि काल» में लिया था कि क्या मैं तुम्हारा पालनहार (पूज्य) नहीं हूँ? तो सब ने इसे स्वीकार किया था। (देखिये: सूरह आराफ, आयत, 172)

2 मिस्र के शासकों की उपाधि फिरऔन होती थी। यह ईसा पूर्व डेढ़ हजार वर्ष की बात है। उन का राज्य शाम से लीबिया तथा हब्शा तक था। फिरऔन अपने को सब से बड़ा पूज्य मानता था और लोग भी उस की पूजा करते थे। उस की ओर अब्राह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को एक अब्राह की इबादत का संदेश देकर भेजा कि पूज्य तो केवल अब्राह है उस के अर्तिरक्त कोई पूज्य नहीं।

3 बनी इस्राईल यूसुफ अलैहिस्सलाम के युग में मिस्र आये थे। तथा चार सौ वर्ष का युग बड़े आदर के साथ व्यतीत किया। फिर उन के कुकर्मा के कारण फिरऔन

106. उस ने कहा यदि तुम कोई प्रमाण (चमत्कार) लाये हो तो उसे प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो।
قَالَ إِنْ كُنْتُمْ جَاءْتُمْ بِآيَةٍ فَآتِ بِهَآئِنَ كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝
107. फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी, तो अकस्मात् वह एक अजगर बन गई।
فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝
108. और अपना हाथ (जैब से) निकाला तो वह देखने वालों के लिये चमक रहा था।
وَرَأَيْنَا يَدَ اللَّهِ مُخْسِئَةً بِسَطْرِئِنَ ۝
109. फिरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहा: वास्तव में यह बड़ा दक्ष जादूगर है।
قَالَ الْمَلَائِكَةُ نَومُ فَتَرَعُونَ إِنَّ هَٰذَا السَّحَرُ ۝
110. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकालना चाहता है। तो अब क्या आदेश दे रहे हो?
لِيُرِيدَ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ فَتَدَّ تَأْمُرُونَ ۝
111. सब ने कहा: उस को और उस के भाई (हारून) को अभी छोड़ दो, और नगरों में एकत्र करने के लिये हरकारे भेजो।
قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ خَبِيرِينَ ۝
112. जो प्रत्येक दक्ष जादूगरों को तुम्हारे पास लायें।
بِأَثَرِكُمْ بِحُلِّ شِعْرِهِمْ ۝
113. और जादूगर फिरऔन के पास आ गये। उन्होंने ने कहा: हमें निश्चय पुरस्कार मिलेगा, यदि हम ही बिजयी हो गये तो?
وَعَبَّءَ السَّحَرَةُ يَرْحَمُونَ قَالُوا لَكَ الْآخِرُ إِنْ كُنَّا نَحْسُ الْغَيْبِيِّنَ ۝
114. फिरऔन ने कहा हों। और तुम मेरे समीपवर्तियों में से भी हो जाओगे।
قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُتَرَدِّينَ ۝

और उस की जाति ने उन को अपना दास बना लिया। जिस के कारण मूसा (अलैहिस्सलाम) ने बनी इस्राइल को मुक्त करने की मांग की। (इल्ने कसीर)

115. जादूगरों ने कहा है मूसा! तुम (पहले) फेंकोगे या हमें फेंकना होगा?
116. मूसा ने कहा: तुम्हीं फेंको। तो उन्होंने ने जब (रस्सियाँ) फेंकी, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें भयभीत कर दिया। और बहुत बड़ा जादू कर दिखाया।
117. तो हम ने मूसा को बह्ती की, कि अपनी लाठी फेंको और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी।
118. अतः सत्य सिद्ध हो गया, और उन का बनाया मंत्र-तंत्र व्यर्थ हो कर¹ रह गया।
119. अन्ततः वह पराजित कर दिये गये, और तुच्छ तथा अपमानित हो कर रह गये।
120. तथा सभी जादूगर (मूसा का सत्य) देख कर सज्दे में गिर गये।
121. उन्होंने ने कहा हम विश्व के पालनहार पर इमान लाये।
122. जो मूसा तथा हारून का पालनहार है।
123. फिरऔन ने कहा इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ तुम उस पर इमान ले आये? वास्तव में यह षड्यंत्र है जिसे तुम ने नगर में रचा है, ताकि उस के निवासियों को उस से निकाल दो! तो शीघ्र ही तुम्हें इस

قَالُوا يَمُوسَى إِنَّمَا أَنْتَ مُنْجِي وَآمَنَّا أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُتَكِبِينَ ۝

قَالَ لَقَوْمٌ قُتِبْنَا الْقَوْمَ السَّحَرَةُ أَعْطَيْنَ الْكَافِرِينَ وَأَسْرَقْنَاهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرِ عَزِيزٍ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى أَنْ أَلْقِ عَصَاهُ فَاذْهَبْ تَلْقُفْ مَا يَأْتِي الْكَاذِبُونَ ۝

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

فَكُلُّوا ذُلًّا بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَلَعْنَةُ الْعَالَمِينَ ۝

قَالُوا الْمَلَأَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۝

قَالَ فِرْعَوْنُ اسْتَجِيبْ لِي قُلْ إِنْ أَدْرَىٰ لَكُمْ مِنْ هَذَا إِلَهٌ غَيْرُهُمْ وَأَنْ أُبَدِّلَ فِي السَّيِّئَةِ لِيُتَخَوَّاهُمْ أَهْلُهَا فَاسْتَوْفُوا نِعْمَتَكُمْ ۝

1 कुर्आन ने अब से तेरह सौ वर्ष पहले यह घोषणा कर दी थी कि जादू तथा मंत्र तंत्र निर्मूल है।

(के परिणाम) का ज्ञान हो जायेगा।

124. मैं अवश्य तुम्हारे हाथ तथा पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूंगा, फिर तुम सभी को फाँसी पर लटका दूंगा।

لَأَقْطَعَنَّ يَدَيْكُمْ وَرِجْلَيْكُمْ مِنْ جِلْدَيْنِ مُضْتَرَّاتٍ
لَأَصْلَبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

125. उन्होंने ने कहा हमें अपने पालनहार ही की ओर प्रत्येक दशा में जाना है।

قَالُوا فَإِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۝

126. तू हम से इसी बात का तो बदला ले रहा है कि हमारे पास हमारे पालनहार की आयतें (निशानियाँ) आ गई? तो हम उन पर इमान ला चुके हैं। हे हमारे पालनहार! हम पर धैर्य (की धारा) उँडेल दे। और हमें इस दशा में (संसार से) उठा कि तेरे आज्ञाकारी रहें।

وَمَا تَنْهَوْنَهُمْ فَإِلَىٰ رَبِّنَا يُنْقَلِبُونَ
مَا مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَ رَبِّنَا بِكُتُبٍ مَكْنُونَةٍ
مَّا تَشَاءُونَ ۝

127. और फिरऔन की जाति के प्रमुखों ने (उस से) कहा क्या तुम मूसा और उस की जाति को छोड़ दोगे कि देश में विद्रोह करें, तथा तुम को और तुम्हारे पूज्यों को छोड़ दें? उस ने कहा: हम उन के पुत्रों को बध कर देंगे, और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, हम उन पर दबाव रखते हैं।

وَقَالَ الْمَلَأَمِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ
وَقَوْمَهُ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَيَذَرُكَ
وَأَهْلَكَ قَالَ سَنْقَتِلْهُمْ أَجْمَعِينَ
فَتَسَاءَلُمْ وَلَا تُجِيبُونَ ۝

128. मूसा ने अपनी जाति से कहा: अब्राह से सहायता माँगो, और सहन करो, वास्तव में धरती अब्राह की है वह

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا
إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ بَنِي آدَمَ ۝

- 1 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि मिस्री अनेक देवताओं की पूजा करते थे जिन में सब से बड़ा देवता: सूर्य था। जिसे «रूअ» कहते थे। और राजा को उसी का अवतार मानते थे और उस की पूजा और उस के लिये सज्दा करते थे जिस प्रकार अब्राह के लिये सज्दा किया जाता है।

अपने भक्तों में से जिसे चाहे उस का वारिस (उत्तराधिकारी) बना देता है। और अन्त उन्हीं के लिये है जो आज्ञाकारी हों।

عِبَادِ ۖ وَلَعَلَّكُمْ تَلْمِزُونَ ۝

129. उन्हीं ने कहा: हम तुम्हारे आने से पहले भी सताये गये और तुम्हारे आने के पश्चात् भी (सताय जा रहे हैं)। मूसा ने कहा: समीप है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे शत्रु का विनाश कर दे, और तुम्हें देश में अधिकारी बना दे। फिर देखे कि तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं।

قَالُوا أَأُذِیْبًا مِنْ قَبْلِ أَنْ نَأْتِيَنَا وَنَرْبَحُوا ۚ مَلَكُوتَنَا قَالَ عِسی رَبُّكُمْ أَنْ یُهْبِثَ سُدُوكُمْ ۖ وَیَسْخَفِفَ لَكُمْ فِی الْأَرْضِ فَمَنْ یُظَرِّكُمْ تَعْمَلُونَ ۝

130. और हम ने फिरऔन की जाति को अकालों तथा उपज की कमी में ग्रस्त कर दिया ताकि वह सावधान हो जायें।

وَلَقَدْ أَحَدْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالْحَبِیْنِ وَنَقَمْنَا مِنْ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ یَذَكَّرُونَ ۝

131. तो जब उन पर सम्पत्ति आती तो कहते कि हम इस के योग्य हैं। और जब अकाल पड़ता, तो मूसा और उस के साथियों से बुरा सगुन लेते। सुन लो। उन का बुरा सगुन तो अब्राह के पाम¹ था, परन्तु अधिकतर लोग इस का ज्ञान नहीं रखते।

فَإِذَا جَاءَهُمُ الْحَصَنَةُ قَالُوا هَٰذِهِ ۚ وَذَٰلِکُمْ بُیُوتٌ بَیْنَهُمْ وَبَیْنَهُمْ وَهُمْ لَا یَعْلَمُونَ ۝

132. और उन्हीं ने कहा: तू हम पर जादू करने के लिये कोई भी आयत (चमत्कार) ले आये तो हम तेरा विश्वास करने वाले नहीं हैं।

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ یَدِیْنَا فَسَحَرًا ۖ یُعَٰصِرُكَ ۖ فَتَنْفِرُ ۚ ۝

1 अर्थात् अब्राह ने प्रत्येक दशा के लिये एक नियम बना दिया है जिस के अनुसार कर्मों के परिणाम सामने आते हैं चाहे वह अशुभ हों या न हों सब अब्राह के निर्धारित नियमअनुसार होते हैं।

133. अन्ततः हम ने उन पर तूफान (उग्र वर्षा) तथा टिड्डी दल और जुओं एवं मेंढक और रक्त की वर्षा भेजी।
अलग अलग निशानियाँ, फिर भी उन्होंने ने अभिमान किया, और वह थी ही अपराधी जानि।

134. और जब उन पर यातना आ पड़ी तो उन्होंने ने कहा हे मूसा। तू अपने पालनहार से उस वचन के कारण जो उस ने तुझे दिया है, हमारे लिये प्रार्थना कर। यदि तू ने (अपनी प्रार्थना से) हम से यातना दूर कर दी तो हम अवश्य तेरा विश्वास कर लेंगे, और बनी इस्राईल को तेरे साथ जाने की अनुमति दे देंगे।

135. फिर जब हम ने एक विशेष समय तक के लिये उन से यातना दूर कर दी जिस तक उन्हें पहुँचना था, तो अकस्मात् वह वचन भंग करने लगे।

136. अन्ततः हम ने उन से बदला लिया और उन्हें सागर में डुबो दिया इस कारण कि उन्होंने ने हमारी आयनों (निशानियों) को झुठला दिया और उन से निश्चेत हो गये थे। उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरभौन और उस की जानि कलाकारी कर रही थी और जो बेलै छप्परो पर चढ़ा रही थी।¹¹

137. और हम ने उस जाति (बनी

قَاتِلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجُرَادَ وَالْقُمَّنَ
وَالصَّبَاغَ وَبَدَّمَ آبَاءَهُمْ مُعْصِلَاتٍ فَأَسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجُّ قَالُوا لِمَوْسَى اذْعُنَا
رَبِّكَ بِمَا عَهِدَ عَمْدُنَا لَنْ نَسْتَعْتِبَ عَنَّا
الرِّجَّ وَآلَاءَ مَوْسَى لَكَ وَآلَاءُ رَبِّكَ لَمَعَتْ نَارُ
إِسْرَائِيلَ ۝

فَلَمَّا كَثَفْنَا عَلَيْهِمُ الرِّجَّ مَرَّةً أُخْرَى جَعَلُوا
بِغَيْرِهَا إِذَا هُمْ يَنْكُتُونَ ۝

فَأَسْتَقَمْنَا عَلَيْهِمُ الرِّجَّ غُرُوبَهُمْ فِي الْيَمِّ يَصْعَدُونَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عِيبِينَ ۝

وَوَرَّثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضَعُونَ

1 अर्थात् उन के ऊँच ऊँचे भवन तथा सुन्दर बाग बगीचे।

इस्राईल) को जो निर्वल समझे जा रहे थे धरती (शाम देश) के पश्चिमो तथा पूर्वी का जिस में हम ने बरकत दी थी अधिकारी बना दिया। और (इस प्रकार हे नबी।) आप के पालनहार का शुभ वचन बनी इस्राईल के लिये पूरा हो गया उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरऔन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो वलै छप्परो पर चढ़ा रहे थे।¹

138. और बनी इस्राईल को हम ने सागर पार करा दिया, तो वह एक जाति के पास से हो कर गये जो अपनी मूर्तियों की पूजा कर रही थी उन्होंने ने कहा: हे मूसा! हमारे लिये वैसा ही एक पूज्य बना दीजिये जैसे उन के पूज्य है। मूसा ने कहा: वास्तव में तुम अज्ञान जाति हो।

139. यह लोग जिस गीति में है उसे नाश हो जाना है, और वह जो कुछ कर रहे हैं सर्वथा असत्य है।

140. मूसा ने कहा क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिये कोई दूसरा पूज्य निर्धारित करूँ जब कि उस ने तुम्हें सारे मसारो के वारिसों पर प्रधानता दी है?

141. तथा उस समय को याद करो, जब हम ने तुम्हें फिरऔन की जाति से बचाया वह तुम्हें घोर यातना दे रहे

مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغْرِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا
وَلَقَدْ كَلَّمْتُ رَبِّكَ النُّحَى عَلَى بَيْنِ إِنْشَرَيْنَا
بِمَا صَبَرْتُمْ وَدَقَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ
وَقَوْمَهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ۝

وَجَوْرًا بَيْنَ إِسْرَاهِيلَ يَنْ أَلْهَرَقَانُو عَلَى قَوْمِ
يَعْلَمُونَ عَلَى أَصَابِرِهِمْ قَالُوا يَمُوتَى جَعَلَ
لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ
لَّجَاهِلُونَ ۝

رَ هُوَ آتَاهُ مَتَابَرَكٌ هُمْ فِيهِ وَطِينٌ مَا كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝

قَالَ لَعَلَّكَ اللَّهُ أَعْجَبَكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى
الْعَالَمِينَ ۝

وَرَدَّ أَنْعَمَكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَمْوَنَكُمْ مَوَدَّةَ
الْعِبَادِ يَفْقَهُونَ مَا كَانُوا يَسْتَخْفُونَ

1 अर्थात् उन के ऊँच ऊँचे भवन तथा सुन्दर वाग बगीचों

थे। तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख रहे थे। और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी।

142. और हम ने मूसा को तीस रातों का वचन¹ दिया। और उस की पूर्ति दस रातों से कर दी। तो तेरे पालनहार की निर्धारित अवधि चालीस रात पूरी हो गयी। तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहा: तुम मेरी जाति में मेरा प्रतिनिधि रहना तथा सुधार करने रहना, और उपद्रवकारियों की नीति न अपनाना।

143. और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर आ गया, और उस के पालनहार ने उस से बात की, तो उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरे लिये अपने आप को दिखा दे ताकि मैं तेरा दर्शन कर लूँ। अल्लाह ने कहा: तू मेरा दर्शन नहीं कर सकेगा। परन्तु इस पर्वत की ओर देखा। यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह गया तो तू मेरा दर्शन कर सकेगा। फिर जब उस का पालनहार पर्वत की ओर प्रकाशित हुआ तो उसे चूर-चूर कर दिया। और मूसा निश्चेत हो कर गिर गया। और जब चेतना में आया तो उस ने कहा: तू पवित्र है! मैं तुझ से क्षमा माँगता हूँ। तथा मैं सब

فَسَاءَ كَذَّبُوا فِي ذٰلِكَ بِاٰلِهٰتِهِمْ كَبُوْهُنَّ عَظِيْمًاۙ

وَوَعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَّيْلَةً وَّاَتَمَمْنٰهَا
بِعَشْرِ فَمَتَّحْ وَفِيقَاتُ رَبِّهٖ اَرْبَعِيْنَ لَّيْلَةًۙ
وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنُ اخْلُفْنِيْ فِيْ
قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ
الْمُفْسِدِيْنَۙ

وَلَمَّا جَاءَ مُوْسٰى لِبَيْتِنَا وَاٰتٰهُ رَبُّهٗ قَالَ رَبِّ
اِنِّیْ اَنْظُرُ لَیْلَتٍ قَالَ لَنْ نَرٰی وَّلٰكِنْ اَنْظُرْ
اِلَی الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَفْرَسَكَ فَكَانَ مَوْقِفَ رَبِّیْ
فَلَمَّا جَعَلَ رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعْلَهٗ دُكَّانًاۙ وَخَرَّ
مُوْسٰى سَهِقًاۙ فَلَئِمَّا اَقْبَقٰی قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبٰتُ
اِلَیْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَۙ

1 अर्थात् तुर पर्वत पर आकर अल्लाह की इबादत करने और धर्मविधान प्रदान करने के लिये।

प्रथम¹ ईमान लाने वालों में से हैं।

144. अल्लाह ने कहा हे मुसा! मैं ने तुझे लोगों पर प्रधानता दे कर अपने संदेशों तथा अपने वार्तालाप द्वारा निर्वाचित कर लिया है। अतः जो कुछ तुझे प्रदान किया है उसे ग्रहण कर ले, और कृतज्ञों में हो जा।

145. और हम ने उस के लिये तस्लियों पर (धर्म के) प्रत्येक विषय के लिये निर्देश और प्रत्येक बात का विवरण लिख दिया। (तथा कहा कि) इसे दृढ़ता से पकड़ लो, और अपनी जाति को आदेश दो कि उस के उत्तम निर्देशों का पालन करो। और मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखा दूंगा।

146. मैं उन्हें² अपनी आयतों (निशानियों) से फेर³ दूंगा जो धरती में अवैध अभिमान करने हैं। और यदि वह प्रत्येक आयत (निशानी) देख लें तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे। और यदि वह सुपथ देखेंगे तो उसे नहीं अपनायेंगे। और यदि कुपथ देख लें तो उसे अपना लेंगे। यह इस कारण कि

قَالَ يٰمُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ
بِرِسَالَتِي وَجَعَلَنِي خَلِيفَةً لِّكَ فِي الْبَنِي إِسْرَءِيلَ
فَاخُذْ مَا آتَيْنَاكَ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ۝

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَنْوَاعِ مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّرْعَةً
وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ
قَوْمَكَ بِإِحْسَانٍ وَرَبُّكَ بِذِكْرِ
الْعَاصِينَ ۝

مَا صَرَفْتُ عَنْ أَتَقَى الْعِبَادِينَ يَتَذَكَّرُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَلَئِنْ يُرَوْا كُلُّ آيَةٍ لَا
يُؤْمِنُوا بِهَا وَلَئِنْ تَرَوْهُ سَبِيلَ الرُّسُلِ لَا يَجِدُوا
سَبِيلًا وَلَئِنْ تَرَوْهُ سَبِيلَ الْغَىِّ يَجِدُوا
سَبِيلًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا
عَنَّا غَافِلِينَ ۝

- 1 इस से प्रत्यक्ष हुआ कि कोई व्यक्ति इस संसार में रहने हुये अल्लाह को नहीं देख सकता और जो ऐसा कहने है वह शैतान के बहकावे में है। परन्तु महीह हदीस से सिद्ध होता है कि आखिरत में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे।
- 2 अर्थात् तुम्हें उन पर विजय दूंगा जो अवैज्ञाकारी हैं जैसे उस समय की अमालिका इत्यादि जानियों पर।
- 3 अर्थात् जो जान बूझ कर अवैज्ञा करेगा अल्लाह का नियम यही है कि वह तर्कों तथा प्रकाशों से प्रभावित होने की योग्यता खो देगा। इस का यह अर्थ नहीं कि अल्लाह किसी को अकारण कुपथ पर बाध्य कर देता है।

उन्होंने ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, और उन से निश्चेत रहे।

- 147 और जिन लोगों ने हमारी आयतों, तथा परलोक (में हम से) मिलने को झुठला दिया, उन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये और उन्हें उसी का बदला मिलेगा, जो कुकर्म वह कर रहे थे।

148. और मूसा की जाति ने उस के (पर्वत पर जाने के) पश्चात् अपने आभूषणों से एक बछड़े की मूर्ति बना ली जिस से गाय के डकारने के समान ध्वनि निकलती थी। क्या उन्होंने ने यह नहीं सोचा कि न तो वह उन से बात ' करता है और न किसी प्रकार का मार्गदर्शन देता है? उन्होंने ने उसे बना लिया, तथा वे अत्याचारी थे।

149. और जब वह (अपने किये पर) लज्जित हुये और समझ गये कि वह कुपध हो गये है, तो कहने लगे: यदि हमारे पालनहार ने हम पर दया नहीं की और हमें क्षमा नहीं किया तो हम अवश्य विनाशों में हो जायेंगे।

150. और जब मूसा अपनी जाति की ओर क्रोध तथा दुःख से भरा हुआ वापिस आया तो उस ने कहा: तुम ने मेरे

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ لِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَى مِنْ تَحْتِهِ مِنْ خَلْقِهِمْ
مِجْلًا صَدَّ لَهُمْ هَؤُلَاءِ التَّرِيقَ وَاللَّهُ
يَكْلِمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۚ اتَّخَذُوا
وَكَاةً وَأَوْطِيلِينَ ﴿١٤٨﴾

وَلَمَّا سَقَطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ
ضَلُّوا إِلَى الْوَالِدِينَ لَمَّا رُفِعَتِ الْجَبَالُ وَتَعَوَّلَ
لَنُكَلِّمَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿١٤٩﴾

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَى إِلَى قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا
قَالَ بِئْسَتِ جُفَاةً يُكَذِّبُونَ ۚ مِنْ تَحْتِهِمْ
أَعْمَالُهُمْ أَمْرٌ

- 1 अर्थात् उस से एक ही प्रकार की ध्वनि क्यों निकलती है। बाबिल और मिस्र में भी प्राचीन युग में गाय-बैल की पूजा हो रही थी। और यदि बाबिल की सभ्यता को प्राचीन मान लिया जाये तो यह विचार दूसरे देशों में वही से फैला होगा।

पश्चात् मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया क्या तुम अपने पालनहार की आज्ञा से पहले ही जल्दी कर⁽¹⁾ गये। तथा उस ने लेख तख्तियाँ डाल दी तथा अपने भाई (हारून) का मिर पकड़ के अपनी ओर खींचने लगा। उस ने कहा: हे मेरे माँ जाये भाई। लोगों ने मुझे निर्बल समझ लिया तथा समीप था कि वे मुझे मार डालें। अतः तू शत्रुओं को मुझ पर हमने का अवसर न दे। मुझे अत्याचारियों का साथी न बना।

151. मूसा ने कहा⁽²⁾ हे मेरे पालनहार! मुझे तथा मेरे भाई को क्षमा कर दे और हमें अपनी दया में प्रवेश दे। और तू ही सब दयाकारियों से अधिक दयाशील है।

152. जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया उन पर उन के पालनहार का प्रकोप आयेगा और वे सभारिक जीवन में अपमानित होंगे। और इसी प्रकार हम झूठ घड़ने वालों को दण्ड देते हैं।

153. और जिन लोगों ने दुष्कर्म किया, फिर उस के पश्चान् क्षमा माँग ली, और ईमान लाये, तो वास्तव में तेरा पालनहार अति क्षमाशील दयावान् है।

154. फिर जब मूसा का क्रोध शान्त हो गया तो उस ने लेख तख्तियाँ उठा

رَبِّكَ وَأَنفَى الْإِلَوهَاءَ وَأَحَدَ بِرَأْسٍ لِّجَنَّةٍ مَّجْرَى
إِلَيْهِ قَالَ إِنَّ أَمْرًا إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّوا
وَكَاذِبًا يَفْتُلُونَنِي فَلَا تُفْسِدُنِي الْإِصْدَارُ وَلَا
تَجْعَلْنِي مِمَّنْ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

قَالَ رَبِّ اعْفُوفْ وَلَا تَكِلْ وَأَدْعُنَا فِي رَحْمَتِكَ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْبُحْرَانَ سِيًّا لَهُمْ عَذَابٌ
رَّهِيمٌ وَزُكِّي لِحُيُوتِهِمْ أَتَيْنَا وَكَانَ الْخَبْرُ
الْمُتَقَرِّبِينَ

وَالَّذِينَ عَمِلُوا الشَّيْءَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا
وَأَمَرُوا أَنْ رَبَّنَا مِنْ بَعْدِهَا تَعْفُو رَحِيمٌ

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْإِلَوهَاءَ

1 अर्थात् मेरे आने की प्रतीक्षा नहीं की।

2 अर्थात् जब यह सिद्ध हो गया कि मेरा भाई निर्दोष है।

ली, और उस के लिखे आदेशों में मार्गदर्शन तथा दया थी उन लोगों के लिये जो अपने पालनहार से ही डरते हों।

155. और मूसा ने हमारे निर्धारित¹ समय के लिये अपनी जाति के सत्तर व्यक्तियों को चुन लिया। और जब उन्हें भूकम्प ने घेर² लिया तो मूसा ने कहा हे मेरे पालनहार! यदि तू चाहता तो इन सब का इस से पहले ही विनाश कर देता, और मेरा भी। क्या तू हमारा उस कुकर्म के कारण नाश कर देगा जो हम में से कुछ निर्वोध कर गये? यह³ तेरी ओर से केवल एक परीक्षा थी। तू जिसे चाहे उस के द्वारा कुपथ कर दे और जिसे चाहे सुपथ दर्शा दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे। और हम पर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान् है।

156. और हमारे लिये इस संसार में भलाई लिख दे तथा परलोक में भी, हम तेरी ओर लौट आये। उस (अब्राह) ने कहा: मैं अपनी यातना जिसे चाहता हूँ देता हूँ। और मेरी दया प्रत्येक चीज को समोये हुये

وَلِئَلَّا نَسْخِفَ أَهْلِي وَرَحْمَةً مِنَّا لَهُمْ
يَرْجِعُونَ

وَلَعَلَّارْمُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا يُوقَدُونَ
فَلَمَّا أَحَدَتْهُمْ الرَّجْمَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَفْلَكُمُ
مِّن قَبْلُ مِنِّيَ أَتَهْلِكُنَا بِفَعْلِ الشَّعْيَاءِ وَمَا إِن
عِندَ الْإِسْنَتِكَ تَهْلِكُ بِمَا مَن نَشَاءُ وَتَهْبِئُ مَن
نَشَاءُ إِنَّا فَاعِلُونَ لَنَا وَأَرْحَمَنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الْعَامِلِينَ

وَالْكَتَبَ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي
الْآخِرَةِ إِنَّا هَذَاكَ إِلَهكَ قَالَ عَنَّا إِنِّي أُصِيبُ
بِهِ مَن نَشَاءُ وَذَرِّيَّتِي وَسِعَتْ كُلُّ شَيْءٍ
فَمَا كُنْتُ بِالْغَائِبِينَ يَتَّبِعُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ

- 1 अब्राह ने मूसा अलैहिस्सलाम को आदेश दिया था कि वह तूर पर्वत के पास बछड़े की पूजा से क्षमा याचना के लिये कुछ लोगों को लाये। (इब्ने कसीर)
- 2 जब वह उस स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने यह माँग की कि हम को हमारी आँखों से अब्राह को दिखा दे। अन्यथा हम तेरा विश्वास नहीं करेंगे। उस समय उन पर भूकम्प आया। (इब्ने कसीर)
- 3 अर्थात् बछड़े की पूजा।

है। मैं उसे उन लोगों के लिये लिख दूँगा जो अवैज्ञा से बचेंगे, तथा जकान देंगे, और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे।

157. जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी नबी¹ है, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात तथा इंजील में पाते हैं। जो सदाचार का आदेश देंगे और दुराचार से रोकेंगे। और उन के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल (वैध) तथा मलीन चीजों को हराम (अवैध) करेंगे। और उन से उन के बोझ उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे। अतः जो लोग आप पर ईमान लाये और आप का समर्थन किया और आप की सहायता की, तथा उस प्रकाश (क़ुआन) का अनुसरण किया जो आप के साथ उनारा गया तो वही सफल होंगे।

أَلَمْ يَجْعَلْ لِّلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ
الْكِتَابَ وَحُدُوثَهُ فَلَئِنْ رَأَوْهُ عَنِ التَّوْرَةِ
وَالْإِنْجِيلِ يَكْفُرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَيَتَّبِعُونَ
الْمُنْكَرَ وَيُؤْتُونَ لَهُمُ الْقُلُوبَ وَالْأَعْيُنَ
الْحَصِيصَةَ وَيَصْنَعُونَ لَهُمُ الْأَعْمَالُ
الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمُ الْقَالِبِينَ أَمْ نَبَأُ
وَعَزَّزُوا وَتَصَرُّوهُ وَاتَّبَعُوا التَّوْرَ الْوَحْيَ
الَّذِي نَزَّلَ مَعَهُ الْوَحْيُ فَهُمْ لَا يَتَّبِعُونَ

158. (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ

- 1 अर्थात् बनी इस्राइल से नहीं। इस से अभिप्राय अन्निम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है जिन के आगमन की भाविष्यवाणी तौरात इंजील तथा दूसरे धर्म शास्त्रों में पाई जाती है। यहाँ पर आप की तीन विशेषताओं की चर्चा की गयी है-

- 1 आप सदाचार का आदेश देंगे तथा दुराचार से रोकेंगे।
- 2 स्वच्छ चीजों के प्रयोग को उचित तथा मलीन चीजों के प्रयोग को अनुचित घोषित करेंगे।
- 3 अहले किताब जिन कड़े धार्मिक नियमों के बोझ तले दबे हुये थे उन्हें उन से मुक्त करेंगे और सरल इस्लामी धर्मविधान प्रस्तुत करेंगे और उन के आगमन के पश्चात् लोक-परलोक की सफलता आप ही के धर्मविधान के अनुसरण में सीमित होगी।

हे मानव जाति के लोगों! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ जिस के लिये आकाश तथा धरती का राज्य है। काई बदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ, और उस के उस उम्मी नबी पर जो अल्लाह पर और उस की सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं। और उन का अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग दर्शन पा जाओ।¹

159. और मूसा की जाति में एक गिरोह ऐसा भी है जो सत्य पर स्थित है, और उसी के अनुसार निर्णय (न्याय) करता है।

160. और² हम ने मूसा की जाति के बारह घरानों को बारह समुदायों में विभक्त कर दिया। और हम ने मूसा की ओर बह्यी भेजी, जब उस की जाति ने उस से जल मांगा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो,

جَمِيعًا إِلَيَّ لِمَا لَكَ الشُّعُوبُ
وَالْأَرْضُ لَكَ لِلْأَقْوَاجِ وَبَيِّتٌ قَائِمٌ
بِأَمْرِكَ وَرَسُولُهُ الْبَقِيُّ الرَّاقِي الْغَدِيُّ يُؤْمِنُ
بِأَمْرِهِ وَكَلِمَتِهِ وَالشُّعُوبُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

وَمِنْ قَوْمِ مُوسَى أُمَّةٌ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَيَذْهَبُونَ

وَقَلَّعْنَاهُمْ اثْنَيْ عَشَرَ نَاحِيَةً إِلَى أَمَمَةٍ
وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنْ
يَخْرِجَ لَهُمْ مَاءً لِيَشْرَبَ فَاذْهَبَتْ مِنْهُ اثْنَتَا
عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ
وَوَضَّعْنَاهُ عَلَى هِمِّ مَضَامٍ وَأَنْزَلْنَاهُ عَلَى هِمِّ

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम के नबी किसी विशेष जाति तथा देश के नबी नहीं है प्रलय तक के लिये पूरी मानव जाति के नबी है। यह सब को एक अल्लाह की बंदना कराने के लिये आये है जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं आप का चिन्ह अल्लाह पर तथा सब प्राचीन पुस्तकों और नाबियों पर ईमान है आप का अनुसरण करने का अर्थ यह है कि अब उसी प्रकार अल्लाह की पूजा अराधना करो जैसे आप ने की और बनाई है। और आप के लाये हुये धर्म विधान का पालन करो।

2 इस से अभिप्राय वह लोग है जो मूसा (अल्लैहिस्सलाम) के लाये हुये धर्म पर कायम थे और आने वाले नबी की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब वह आये तो तुरन्त आप पर ईमान लाये, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम इत्यादि।

तो उस से बारह सौन उबल पड़े, तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने पीने का स्थान जान लिया और उन पर वादलों की छाँव की, और उन पर मन्त्र तथा सल्वा उतारा। (हम ने कहा): इन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम्हें प्रदान की है, खाओ। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं (अवैज्ञा कर के) अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे।

161. और जब उन (वनी इस्राईल) से कहा गया कि इस नगर (बैतुल मकदिस) में बस जाओ और उस में से जहाँ इच्छा हो खाओ, और कहो कि हमें क्षमा कर दे, तथा द्वार में सज्दा करने हुये प्रवेश करो, हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे और सत्कर्मियों को और अधिक देंगे।

162. तो उन में से अत्याचारियों ने उस बान को दूसरी बान में¹ बदल दिया जो उन से कही गयी थी। तो हम ने उन पर आकाश से प्रकोप उतार दिया। क्यों कि वह अत्याचार कर रहे थे।

163. तथा (हे नबी।) इन से उस नगरी के सम्बन्ध में प्रश्न करो जो समुद्र (लाल सागर) के समीप थी, जब उस के निवासी सब्त (शनिवार) के

الْمَنِّ وَالسَّلْوَى كُلُّوْا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْا وَلٰكِنْ كَانُوْا اَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

وَاذْقِن لَهُمْ سَكُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ يَشْتُمُوْنَ وَقُولُوْا حِطَّةٌ كَاذِبُوْا الْبَابَ سُبْحٰنَ الْغَفِيْرِ لَكُمْ خَطِيْئَتِكُمْ سَاوِيَةٌ اَلْيَوْمَ لِلْمُحْسِنِيْنَ ۝

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَنَّمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْجًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝

وَسْأَلُهُمْ فِي الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةً الْخَيْرِ اذْ يَخْدُوْنَ فِيْ لَبِيْثٍ اِذْ تَأْتِيْهِمْ وَجِئَتْنَاهُمْ يَوْمَ سَعْيِهِمْ شُرَاقًا

1 और चूतड़ों के बल खिसकते और यह कहते हुये प्रवेश किया कि गेहूँ मिले (सहीह बुखारी 4641)

दिन के विषय में आज्ञा का उल्लंघन¹ कर रहे थे जब उन के पास उन की मछलियाँ उन के सब्ज के दिन पानी के ऊपर तैर कर आ जाती थीं और सब्ज का दिन न हो तो नहीं आती थी। इसी प्रकार उन की अवैज्ञा के कारण हम उन की परीक्षा ले रहे थे।

وَيَوْمَ لَا يَنْصُرُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كُذَّابَةٌ
تَبْلُغُهُمْ يَمَّا كَانُوا يَعْسِفُونَ ٥

164. तथा जब उन में से एक समुदाय ने कहा कि तुम उन्हें क्यों समझा रहे हो जिन्हें अज्ञाह (उन की अवज्ञा के कारण) ध्वस्त करने अथवा कड़ा दण्ड देने वाला है? उन्होंने कहा: तुम्हारे पालनहार के समक्ष क्षम्य होने के लिये, और इस आशा में कि वह आज्ञाकारी हो जाये।²

وَرَدُّ قَالَتْ أَتَمْنَعُهُمْ تَعْظُونَ قَوْمًا يَكْفُرُ
مِنْهُمْ أَوْ مَعْلُومٌ بِهِمْ عَذَابُ اللَّهِ يَمَّا كَانُوا
مَعْبُورَةً إِلَى رَبِّهِمْ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ٥

165. फिर जब उन्होंने जो कुछ उन्हें स्मरण कराया गया, उसे भुला दिया तो हम ने उन लोगों को बचा लिया जो उन को बुराई से रोक रहे थे, और हम ने अत्याचारियों को कड़ी धातना में उन की अवैज्ञा के कारण घेर लिया।

فَلَمَّا نَسُوا مَا آلَوْا بِهِ بَخِيلًا الَّذِينَ رَمَوْهُنَّ
الشُّكْرَ وَلَعَذَابُ الَّذِينَ ظَلَمُوا يُعَذِّبُهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ٥

166. फिर जब उन्होंने ने उस का उल्लंघन किया जिस से वे रोके गये थे, तो हम ने उन से कहा कि तुच्छ बंदर

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قَسَّاهُمْ لَبُؤًا
قَرْدًا وَخَسِفَ ٥

1. क्यों कि उन के लिये यह आदेश था कि शनिवार को मछलियों का शिकार नहीं करेंगे। अधिकांश भाष्यकारों ने उस नगरी का नाम ईला (इलान) बताया है जो कुलजुम सागर के किनारे पर आबाद थी।
2. आयत में यह संकेत है कि बुराई का रोकने में निराश नहीं होना चाहिये क्योंकि हो सकता है कि किसी के दिल में बात लग ही जाये, और यदि न भी लगे तो अपना कर्तव्य पूरा हो जायेगा।

हो जाओ।

167. और याद करो जब आप के पालनहार ने घोषणा कर दी कि वह प्रलय के दिन तक उन (यहूदियों) पर उन्हें प्रभुत्व देता रहेगा जो उन को घोर यातना देने रहेंगे¹ निःसंदेह आप का पालनहार शीघ्र दण्ड देने वाला है, और वह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

168. और हम ने उन्हें धरती में कई सम्प्रदायों में विभक्त कर दिया, उन में कुछ सदाचारी थे और कुछ इस के विपरीत थे। हम ने अच्छाईयों तथा बुराईयों दोनों के द्वारा उन की परीक्षा ली, ताकि वह (कुकर्मों में) रुक जायें।

169. फिर उन के पीछे कुछ ऐसे लोगों ने उन की जगह ली जो पुस्तक के उत्तराधिकारी हो कर भी तुच्छ संसार का लाभ समेटने लगे। और कहने लगे कि हमें क्षमा कर दिया जायेगा, और यदि उमी के समान उन्हें लाभ हाथ आ जाये तो उसे भी ले लेंगे। क्या उन से पुस्तक का दृढ़ बचन नहीं लिया गया है कि अल्लाह पर सच्च ही बोलेंगे, जब कि पुस्तक में जो कुछ है उस का

وَلَا تَأْذَنَ رَبُّكَ لِيَبْعَثَ عَلَيْهِمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ كَسَبَتْ سُوَّةَ الْحَمَىٰ إِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَافْقُورٌ حَرِيصٌ ۝

وَقَفَّعْنَاهُمْ عَلَى الْأَرْضِ سُبُكًا وَهُمْ الْغَالِيُونَ ۖ وَمِنْهُمْ ذُرِّيَّةٌ ذَلِيلٌ وَيَسْتَفْتِيهِمْ الْكَهَنُوتُ وَالنَّبِيَّاتُ لَأَعْلَمُ مَا فِي جُحُورِهِمْ ۝

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَذُوا الْكِتَابِ يَتَحَدَّوْنَ عَرَضَ هَٰذَا الْأَلْهَىٰ وَيَقُولُونَ سَتُغْفِرَ لَنَا ذُنُوبَنَا ۖ وَإِنَّا لَنَكْفُرُ بِعَرَضِ بَيِّنَاتٍ لَمَّا يَخُدُّوهُ ۖ إِنَّهُمْ لَخُذَلٌ عَلَىٰ الْعَرْشِ ۖ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ مَا فِي جُحُورِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ مَا فِي جُحُورِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ مَا فِي جُحُورِهِمْ ۖ

1 यह चेतावनी बनी इस्राइल को बहुत पहले से दी जा रही थी। इसा (अलैहिस्सलाम) से पूर्व आने वाले नबियों ने बनी इस्राइल को डराया कि अल्लाह की अवैज्ञा से बचो और स्वयं इसा ने भी उन को डराया परन्तु वह अपनी अवैज्ञा पर धाकी रहे जिस के कारण अल्लाह की यातना ने उन्हें घेर लिया और कई बार बैतुल मक़दिस को उजाड़ा गया और तौरान जलाइ गई।

अध्ययन कर चुके हैं और परलाक का घर (स्वर्ग) उत्तम है उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों तो क्या वह इतना भी नहीं¹ समझते?

170. और जो लोग पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ते, और नमाज की स्थापना करते हैं तो वास्तव में हम सत्कर्मियों का प्रतिफल अकारन् नहीं करते।

171. और जब हम ने उन के ऊपर पर्वत को इस प्रकार छा दिया जैसे वह कोई छनरी हो, और उन्हें विश्वास हो गया कि वह उन पर गिर पड़ेगा, (तथा यह आदेश दिया कि) जो (पुस्तक) हम ने तुम्हें प्रदान की है उसे दृढ़ता से धाम लो, तथा उस में जो कुछ है उसे याद रखो, ताकि तुम आज्ञाकारी हो जाओ।

172. तथा (वह समय याद करो) जब आप के पालनहार ने आदम के पुत्रों की पीठों से उन की संतति को निकाला, और उन को स्वयं उन पर साक्षी (गवाह) बनाया: क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सब ने कहा: क्यों नहीं? हम (इस के) साक्षी² हैं। ताकि प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इस से असूचित थे।

وَالَّذِينَ يُتْلُونَ الْكِتَابَ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّمَا لَا تُؤْمِنُ بِهِمْ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۖ

وَلَوْ تَقَوَّا الْكِتَابَ لَوَقَّفُوا كَأَنَّهُ عُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَادْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْكَ بَينَ يَدَيْنِ أَدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ أَلَمْ نَقُولْ يَوْمَ الْوَعْدِ إِنَّكَ أَمَّا عَدُوٌّ لِّلْعَالَمِينَ ۝

1 इस आयत में यहूदी विद्वानों की दुर्दशा बनाई गयी है कि वह तुच्छ संसारिक लाभ के लिये धर्म में परिवर्तन कर दंत थे और अवैध को वैध बना लेते थे। फिर भी उन्हें यह गर्व था कि अल्लाह उन्हें अवश्य क्षमा कर देगा।

2 यह उस समय की बात है जब आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के पश्चात् उन की सभी सतान को जो प्रलय तक होगी, उन की आत्माओं से अल्लाह ने अपने पालनहार होने की गवाही ली थी। (इब्ने कसीर)

173. अथवा यह कहो कि हम से पूर्व हमारे पूर्वजों ने शिर्क (मिश्रण) किया और हम उन के पश्चात् उन की मंता न थी तो क्या तू गुमराहों के कर्म के कारण हमारा विनाश¹¹ करेगा?

أَوْ قُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً
مِنْ بَيْنِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ۝

174. और इसी प्रकार हम आयतों को खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि लोग (सत्य की ओर) लौट जायें।

وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْآيَاتِ وَأَعْلَمُ لَمْ تَرْجِعُونَ ۝

175. और उन्हें उस की दशा पढ़ कर सुनायें जिसे हम ने अपनी आयतों (का ज्ञान) दिया, तो वह उस (के खोल से) निकल गया। फिर शैतान उस के पीछे लग गया और वह कुपथों में हो गया।

وَنُفِّلْ عَلَيْهِمْ صِيَائِهِمْ أَلَيْسَ إِنَّهُمْ بِمَنْكُحٍ
مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَايِبِينَ ۝

176. और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) द्वारा उस का पद ऊँचा कर देने परन्तु वह माया मोह में पड़ गया, और अपनी मनमानी करने लगा। तो उस की दशा उस कुत्ते के समान हो गयी जिसे हॉको तब भी जीभ निकाले हॉपता रहे और छोड़ दो तब भी जीभ निकाले हॉपता है। यही उपमा है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाने हैं। तो आप यह कथायें उन को सुना दें, संभवतः वह सोच विचार करें।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهَا وَلَكِنَّ أَخَذْنَاهُ
بِالْأُفْئَةِ وَاتَّبَعُونَاهُ فَهُمْ لَا يُمَسِّكُونَ
لَهُمْ مَتَاعٌ يَمْشُونَ أَوْ تَنْزِيلُهُ يَنْهَشُ ذَلِكَ
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا آيَاتِنَا
فَاتَّخَذُوا لِقَائِهِمْ أَعْلَمُ يَتَكَلَّمُونَ ۝

177. उन की उपमा कितनी बुरी है

سَاءَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا آيَاتِنَا

1. आयत का भावार्थ यह है कि अब्राह के अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद की आस्था सभी मानव का स्वभाविक धर्म है। कोई यह नहीं कह सकता की मैं अपने पूर्वजों की गुमराही से गुमराह हो गया। यह स्वभाविक आन्तरिक आवाज है जो कभी दब नहीं सकती।

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया। और वे अपने ही ऊपर अत्याचार¹ कर रहे थे।

وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا بِظُلْمٍ ۝

178. जिसे अल्लाह सुपथ कर दे वही सीधी राह पा सकता है। और जिसे कुपथ कर दे² तो वही लोग असफल है।

مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَبِهِدَىٰ لَهُ وَيَضِلُّ فَبِأُضْلَلٍ ۝

179. और बहुत से जिन् और मानव को हम ने नरक के लिये पैदा किया है। उन के पास दिल है जिन से सोच विचार नहीं करते, तथा उन की आंखें है जिन से³ देखते नहीं, और कान है जिन से सुनते नहीं। वे पशुओं के समान है बल्कि उन से भी अधिक कुपथ है, यही लोग अचेतना में पड़े हुये है।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا بِحَمَلِهِمُ الْبَرَارِ ۖ ذُرِّيَّتًا لَّهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ أُذُنٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ سَوَّيْتُمُ كَالْأَعْمَىٰ ۚ لَهُمْ أَصْوَاطٌ وَلَا يَسْمَعُونَ ۝

180. और अल्लाह ही के शुभ नाम है, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो। और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों

وَاللَّهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَذُكِّرُوا بِهَا ۖ فَرِحُوا ۖ يُلْحِقُونَ فِي الْأَسْمَاءِ تَتَجَرَّرُونَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

1 भाष्यकारों ने नबी मल्लस्राहु अलैहि व सल्लम के युग और प्राचीन युग के कई ऐसे व्यक्तियों का नाम लिया है जिन का यह उदाहरण हो सकता है। परन्तु आयत का भावार्थ बस इतना है कि प्रत्येक व्यक्ति जिस में यह अवगुण पाये जाते हों उस की दशा यही होनी है, जिस की जीभ से माया मोह के कारण राल टपकती रहती है, और उस की लोभाग्नि कभी नहीं बुझती।

2 कुरआन ने बार बार इस तथ्य को दुहराया है कि मार्गदर्शन के लिये सोच विचार की आवश्यकता है। और जो लोग अल्लाह की दी हुई विचार शक्ति से काम नहीं लेते वही सीधी राह नहीं पाते। यही अल्लाह के सुपथ और कुपथ करने का अर्थ है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि सत्य को प्राप्त करने के दो ही साधन हैं: ध्यान और ज्ञान। ध्यान यह है कि अल्लाह की दी हुयी विचार शक्ति से काम लिया जाये। और ज्ञान यह है कि इस विश्व की व्यवस्था को देखा जाये और नबियों द्वारा प्रस्तुत किये हुये सत्य को सुना जाये, और जो इन दोनों से वंचित हो वह अन्धा बहरा है।

में परिवर्तन¹ करत है, उन्हें शीघ्र ही उन के कुकर्मों का कुफल दे दिया जायेगा।

181. और उन में से जिन्हें हम ने पैदा किया है, एक समुदाय ऐसा (भी) है जो सत्य का मार्ग दर्शाता तथा उसी के अनुसार (लोगों के बीच) न्याय करता है।

وَمِنْ خَلْقِنَا أَنتَ بَعْدُ زَنْ يَأْتِي وَبِهِ
يَعْبُولُونَ ﴿١٨١﴾

182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया, हम उन्हें क्रमशः (विनाश तक) ऐसे पहुंचावेंगे कि उन्हें इस का ज्ञान नहीं होगा।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ
حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨٢﴾

183. और उन्हें अवसर देंगे, निश्चय मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है।

وَأَمَّا إِلْ عَمْرَأَن كَيْفَ مَتَّيْنَ ﴿١٨٣﴾

184. और क्या उन्होंने यह नहीं सोचा कि उन का साथी² तनिक भी पागल नहीं है? वह तो केवल खुले रूप से सचेत करने वाला है।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا أَنَّا صَاحِبُونَ مِنْ جَنَّاتٍ هَٰؤُلَاءِ
نُؤْتِيهِمْ مِّمَّا فِيهَا ﴿١٨٤﴾

185. क्या उन्होंने ने आकाशों तथा धरती के राज्य को और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है उसे नहीं देखा?³ और (यह भी नहीं सोचा कि) हो सकता है कि उन का (निर्धारित) समय समीप आ गया हो? तो फिर

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا أَنَّا صَاحِبُونَ مَكُونَتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَأَن عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ
اقْتَرَبَ إِلَهُهُمْ فَمَا يَأْتِي حَيْثُ يَبْعَدُهُ الْيَوْمُونَ ﴿١٨٥﴾

- 1 अर्थात् उस के गौणिक नामों से अपनी मर्नियों को पुकारने हैं। जैसे अजीज से «उज्जा» और इलाह से «लात» इत्यादि।
- 2 साथी से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, जिन को नबी होने से पहले वही लोग «अमीन» कहते थे।
- 3 अर्थात् यदि यह विचार करें, तो इस पूरे विश्व की व्यवस्था और उस का एक एक कण अल्लाह के अस्तित्व और उस के गुणों का प्रमाण है। और उसी ने मानव जीवन की व्यवस्था के लिये नवियों को भेजा है।

इस (कुर्आन) के पश्चात् वह किस बात पर ईमान लायेंगे?

186. जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उस का कोई पथदर्शक नहीं और उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये छोड़ देता है।

مَنْ يُضِلِلْ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَيَذَرْنَا
طُغْيَانَهُمْ يَصْهَوْنَ ۝

187. (हे नबी!) वे आप से प्रलय के विषय में प्रश्न करते हैं कि वह कब आयेगी? कह दो कि उस का ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है, उसे उस के समय पर बही प्रकाशित कर देगा। वह आकाशों तथा धरती में भारी होगी, तुम पर अकस्मात आ जायेगी। वह आप से ऐसे प्रश्न कर रहे हैं जैसे कि आप उसी की खोज में लगे हुये हों। आप कह दें कि उस का ज्ञान अल्लाह ही को है। परन्तु¹ अधिकांश लोग इस (तथ्य) को नहीं जानते।

يَسْتَوُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِمًا قُلْ إِنَّمَا
بِهِمْ وَعِنْدَ رَبِّكَ لَا يُخْبِرُهُمْ إِلَّا الْغُفْلَتَانِ
الْمُتَوَاتِرَتَانِ وَالْأَرْضُ لِلَّهِ أَكْبَرُ الْأَمْنَةِ يَنْتَلُونَكَ
كَأَنَّكَ حَيٌّ عَلَيْهَا قُلْ إِنَّمَا عَلَّمْتُهَا وَمَنْدَلُو وَلَكِنْ
الْقَوْلُ النَّاسِ لَا يَهْتَمُونَ ۝

188. आप कह दें कि मझे तो अपने लाभ और हानि का अधिकार नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहे (वही होता है)। और यदि मैं गैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता तो मैं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने तथा शुभसूचना देने वाला हूँ जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

قُلْ لَا مَبِيتَ لِي نَفْسٍ نَفَعًا وَلَا ضَرًّا لِمَا شَاءَ
اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَا سْتَكْبَرْتُ مِنَ
الْحَيَاةِ وَمَا مَسَّيْتُ لَشَاؤُنْكَ أَنَا لَا أُنْذِرُ
بِشَيْءٍ الْقَوْمَ لَوْ كُنْتُ نَذِيرًا ۝

189. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारी उत्पत्ति एक जीव² से की, और

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ

1 मक्का के मिश्रणवादी आप से उपहास स्वरूप प्रश्न करते थे, कि यदि प्रलय होना सत्य है तो बताओ वह कब होगी?

2 अर्थात् आदम अलैहिस्सलाम से।

उसी से उस का जोड़ा बनाया ताकि उस से उसे सन्तोष मिले। फिर जब किसी¹ ने उस (अपनी स्त्री) से सहवास किया तो उस (स्त्री) को हल्का सा गर्भ हो गया। जिस के साथ वह चलनी फिरनी रही, फिर जब बोझल हो गयी तो दोनों (पति पत्नी) ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: यदि तू हमें एक अच्छा बच्चा प्रदान करेगा तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ (आभारी) होंगे।

190. और जब उन दोनों को (अब्राह ने) एक स्वस्थ बच्चा प्रदान कर दिया तो अब्राह ने जो प्रदान किया उस में दूसरों को उस का साझी बनाने लगे तो अब्राह इन की शिर्क² की बातों से बहुत ऊंचा है।

191. क्या वह अब्राह का साझी उन्हें बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते, और वह स्वयं पैदा किये हुये हैं?

192. तथा न उन की सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं?

193. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं चल सकते। तुम्हारे लिये बराबर है चाहे

مِنْهَا رَوْحًا يَكْنُ إِلَٰهًا فَمَنْ أَتَقْبَلُهَا حَلَّتْ
حَالًا حَبِيبًا فَمَزَتْ بِهِ نَبَاً نَفَسَتْ دَعْوَاهُ
رَبِّهَا لَيْسَ أَهْلًا صَالِحًا تَلَوْنَ مِنْ شَكَايَةٍ

فَتَقَاتِلَهُمَا صَالِحًا جَعَلَهُ شُرَكَاءَ يَمْنَانِهِمَا
فَتَعْلَمُ إِلَٰهُ حَسْبَ الْيَتَامَىٰ

أَبْلَوْكُم مَّا لَكُمْ لَقَدْ نَبَأْنَا أَنَّهُمْ خَالِفُونَ

وَلَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا نَفْعًا
يَنْصُرُونَ

وَأَنْ تَذْعُرُوهُمْ قَدْ لَبِئْتَ لَتْفَنًا لَّعِينًا
عَلَيْكُمْ دَعْوَتُكُمْ أَنْ تَقُولُوا سَامِعُونَ

1 अर्थात् जब मानव जाति के किसी पुरुष ने स्त्री के साथ सहवास किया।

2 इन आयतों में यह बनाया गया है कि मिश्रणवादी स्वस्थ बच्चे अथवा किसी भी आवश्यकता या आपदा निवारण के लिये अब्राह ही से प्रार्थना करने हैं। और जब स्वस्थ सुन्दर बच्चा पैदा हो जाता है तो देवी देवताओं, और पीरों के नाम चढ़ावे चढ़ाने लगते हैं। और इसे उन्हीं की दया समझते हैं।

उन्हें पुकारो अथवा तुम चुप रहो।

194. वास्तव में अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे ही (अल्लाह के) दाम हैं। अतः तुम उन से प्रार्थना करो फिर वह तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दे, यदि उन के बारे में तुम्हारे विचार सत्य हैं।

195. क्या इन (पत्थर की मूर्तियों) के पांव हैं जिन से चलती हों? अथवा उन के हाथ हैं जिन से पकड़ती हों? या उन के आंखें हैं जिन से देखती हों? अथवा कान हैं जिन से सुनती हों? आप कह दें कि अपने माझियों को पुकार लो, फिर मेरे विरुद्ध उपाय कर लो, और मुझे कोई अवसर न दो।

196. वास्तव में मेरा संरक्षक अल्लाह है जिस ने यह पुस्तक (कुरआन) उतारी है। और वही सदाचारियों की रक्षा करता है।

197. और जिन को अल्लाह के सिवा तुम पुकारते हो वह न तो तुम्हारी सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं।

198. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वह सुन नहीं सकते। और (हे नबी!) आप उन्हें देखेंगे कि वे आप की ओर देख रहे हैं जब कि वास्तव में वह कुछ नहीं देखते।

199. (हे नबी!) आप क्षमा से काम लें, और सदाचार का आदेश दें तथा

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ
أُمّتٌ لَهُمْ قَدْ دَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ
كُفّرُوا بِهِ ۖ

أَلَمْ يَأْرَاجِلْ يَمْشُونَ بِمَا مَرَّاهُمْ يَمْشُونَ
بِمَا أَمَرَهُمْ آخِلِينَ يَمْشُونَ بِمَا أَمَرَهُمْ ذَانِ
يَسْتَعِينُونَ بِهِ قُلْ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ
يَكِيدُوا فَلَا تُنْظَرُونَ ۖ

إِنَّ لِلَّهِ إِلَهَ الْكَافِرِينَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَكُولُ
الضَّالِّينَ ۖ

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُونَ
لَهُمْ شَيْئًا وَلَا يَقْضِيهِمْ شَيْئًا ۖ

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْمَعُوا وَتَرَاهُمْ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۖ

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ۖ

अज्ञानियों की ओर ध्यान¹ न दें।

200. और यदि शैतान आप को उकसाये तो अल्लाह से शरण माँगिये। निअदिह वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

201. वास्तव में जो आज्ञाकारी होते हैं यदि शैतान की ओर से उन्हें कोई बुरा विचार आ भी जाये तो तत्काल चौंक पड़ते हैं और फिर अकस्मात् उन को सूझ आ जाती है।

202. और जो शैतानों के भाई हैं वे उन को कुपथ में खींचते जाते हैं, फिर (उन्हें कुपथ करने में) तनिक भी कमी (आलस्य) नहीं करते।

203. और जब आप इन (मिश्रणवादियों) के पास कोई निशानी न लायेंगे तो कहेंगे कि क्यों (अपनी ओर से) नहीं बना ली? आप कह दें कि मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पालनहार के पास से मेरी ओर वहयी की जाती है। यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे पालनहार की ओर से (प्रमाण) है, तथा मार्गदर्शन और दया है, उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

204. और जब कुर्आन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो, तथा मौन साध लो। शायद कि तुम पर दया² की जाये।

وَمَا يَسْرِعُ عَنْكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْرٌ ۖ فَاسْتَوِ
بِالَّذِينَ لَهُ سُلَيْمٌ عَلَيْهِمْ

إِنَّ اللَّهَ يُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَيَكْنُفُ مِنْ
الشَّيْطَانِ تَذَكُّرًا ۚ فَادَّاهُمُ النَّجْمُ ۚ

وَأَخْوَاهُمْ يَهْدُوا فِي الْغَيِّ ۚ لَوْلَا يُقْبِرُونَ ۚ

وَإِذْ لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا جُتِبَتْهَا قُلُوبُ
النَّاسِ أَتَمِيعُ مَا يُؤْتَىٰ إِلَىٰ مِنْ رَبِّكَ ۚ هَذَا بَصَائِرُ
مِنْ رَبِّكَ ۚ وَهَدَىٰ ذُرِّيَّةَ إِبْرَاهِيمَ يُقِيمُوا الصَّلَاةَ ۚ

وَإِذْ قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَكُنُوا
لَهُ خَاشِعِينَ ۚ

1 हदीस में है कि अल्लाह ने इसे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने के बारे में उतारा है (देखिये- सहीह बुखारी- 4643)

2 यह कुर्आन की एक विशेषता है कि जब भी उसे पढ़ा जाये तो मुसलमान पर

205. और (हे नबी!) अपने पालनहार का स्मरण विनय पूर्वक तथा डरते हुये और धीमे स्वर में प्रातः तथा संध्या करते रहो। और उन में न हो जाओ जो अचेत रहते हैं।

وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً
وَدَوًّا مِّنَ الْقَوْلِ يَاسُّو
وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ

206. वास्तव में जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के समीप है वह उस की इबादत (बंदना) से अभिमान नहीं करते। और उस की पवित्रता वर्णन करते रहते हैं और उसी को सज्दा¹¹ करते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ يُعْبُدُونَ رَبَّكَ
عِبَادَتًا وَتَسْبِيحًا وَلَهُ يَسْجُدُونَ

अनिवार्य है कि वह ध्यान लगा कर अल्लाह का कलाम सुने। हो सकता है कि उस पर अल्लाह की दया हो जाये। काफ़िर कहते थे कि जब क़ुर्बान पढ़ा जाये तो सुना नहीं, बल्कि शोर मचा दो। (देखिये: सूरह हा मीम सज्दा 26)

1 इस आयत के पढ़ने तथा सुनने वाले को चाहिये कि सज्दा तिलावत करें।

सूरह अन्फाल 8

سُورَةُ الْأَنْفَالِ

सूरह अन्फाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदीनी है इस में 75 आयते हैं।

- यह सूरह सन् 2 हिजरी में बद्र के युद्ध के पश्चान् उतरी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जब काफिरों ने मारने की योजना बनाई और आप मदीना हिजरत कर गये तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबय्य को पत्र लिखा और यह धमकी दी कि आप उन को मदीना से निकाल दें अन्यथा वह मदीना पर आक्रमण कर देंगे। अब मुसलमानों के लिये यही उपाय था कि शाम के व्यापारिक मार्ग से अपने विरोधियों को रोक दिया जाये। सन् 2 हिजरी में मक्के का एक बड़ा काफिला शाम से मक्का वापस हो रहा था। जब वह मदीना के पास पहुँचा तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ उस की ताक में निकले। मुसलमानों के भय से काफिले का मुख्या अबू सुफयान ने एक व्यक्ति को मक्का भेज दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ तुम्हारे काफिले की ताक में हैं। यह सुनते ही एक हजार की सेना निकल पड़ी अबू सुफयान दूसरी राह से वच निकला। परन्तु मक्का की सेना ने यह सोचा कि मुसलमानों को सदा के लिये कुचल दिया जाये। और इस प्रकार मुसलमानों से बद्र के क्षेत्र में सामना हुआ तथा दोनों के बीच यह प्रथम ऐतिहासिक संघर्ष हुआ जिस में मक्का के काफिरों के बड़े बड़े 70 व्यक्ति मारे गये और इनने ही बंदी बना लिये गये।
- यह इस्लाम का प्रथम ऐतिहासिक युद्ध था जिस में सत्य की विजय हुई इस लिये इस में युद्ध से संबंधित कई नैतिक शिक्षायें दी गई हैं। जैसे यह की जिहाद धर्म की रक्षा के लिये होना चाहिये, धन के लोभ, तथा किसी पर अत्याचार के लिये नहीं।
- विजय होने पर अल्लाह का आभारी होना चाहिये। क्यों कि विजय उसी की सहायता से होती है। अपनी वीरता पर गर्व नहीं होना चाहिये।
- जो गैर मुस्लिम अत्याचार न करें उन पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। और जिन से संधि हो उन पर धोखा दे कर नहीं आक्रमण करना चाहिये और न ही उन के विरुद्ध किसी की सहायता करनी चाहिये।

- शत्रु से जो सामान (गनीमत) मिले उसे अल्लाह का माल समझना चाहिये और उस के नियमानुसार उस का पाँचवाँ भाग निर्धनों और अनाथों की सहायता के लिये खर्च करना चाहिये जो अनिवार्य है।
- इस में युद्ध के बंदियों को भी शिक्षा प्रद शैली में संबोधित किया गया है।
- इस सूरह से इस्लामी जिहाद की वास्तविकता की जानकारी होती है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! आप से (आप के साथी) युद्ध में प्राप्त धन के विषय में प्रश्न कर रहे हैं कह दें कि युद्ध में प्राप्त धन अल्लाह और रसूल के है। अतः अल्लाह से डरो और आपस में सुधार रखो, तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो। यदि तुम ईमान वाले हो।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ فَأَتُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرَ اللَّهِ وَأَطِيعُوا رَسُولَهُ إِنَّكُمْ مُؤْمِنُونَ

2. वास्तव में ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये तो उन के दिल कांप उठते हैं। और जब उन के समक्ष उस की आयतें पढ़ी जायें तो उन का ईमान अधिक हो जाता है। और वह अपने पालनहार

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَّتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُ اللَّهِ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

- 1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरह वर्ष तक मक्का के मिश्रणवादियों के अन्याचार सहन किये। फिर मदीना हिजरत कर गये। परन्तु वहाँ भी मक्का वार्मियों ने आप को चैन नहीं लेने दिया। और निरन्तर आक्रमण आरंभ कर दिये। ऐसी दशा में आप भी अपनी रक्षा के लिये वीरता के साथ अपने 313 साथियों को लेकर बद्र के रणक्षेत्र में पहुँचे। जिस में मिश्रणवादियों की पराजय हुई और कुछ सामान भी मुसलमानों के हाथ आया। जिस इस्लामी परिभाषा में "माले गनीमत" कहा जाता है। और उसी के विषय में प्रश्न का उत्तर इस आयत में दिया गया है। यह प्रथम युद्ध हिजरत के दूसरे वर्ष हुआ।

पर ही भरौसा रखने हों।

3. जो नमाज की स्थापना करते हैं, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।
4. वही सच्चे इमान वाले हैं। उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास श्रेणियाँ तथा क्षमा और उत्तम जीविका है।
5. जिस प्रकार¹ आप को आप के पालनहार ने आप के घर (मदीना) से (मिश्रणवादियों से युद्ध के लिये सन्त्य के साथ) निकाला। जब कि इमान वालों का एक समुदाय इस से अप्रसन्न था।
6. वह आप से सच्च (युद्ध) के बारे में झगड़ रहे थे जब कि वह उजागर हो गया था (कि युद्ध होना है) जैसे वह मौत की ओर हाँके जा रहे हों, और वे उसे देख रहे हों।
7. तथा (वह समय याद करो) जब अब्राह तुम्हें वचन दे रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आयेगा और तुम चाहते थे कि निर्वल गिरोह तुम्हारे हाथ लगे।² परन्तु अब्राह चाहता था कि अपने वचन द्वारा सन्त्य को सिद्ध कर दे,

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ

أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْ ذُنُوبِهِمْ

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَكَانَ
فِرْقَانًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ الْكَافِرُونَ

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَانُوا كَاذِبِينَ
إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ

وَلَا يَعْهَدُ لَهُمْ شَيْءٌ مِنَ النَّبِيِّينَ أَنَّهُمْ
لَهُمْ ذَوُودٌ أَنْ مَهَّدَ ذَاتِ الشُّوْكَاءِ تَلُونَ
لَهُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَيِّطَ لَكُمْ بِحِلَّتِهِ وَيَقْطَعَ
دَابِرَ الْكَافِرِينَ

- 1 अर्थात् यह युद्ध के माल का विषय भी उसी प्रकार है कि अब्राह ने उसे अपना और अपने रसूल का भाग बना दिया। जिस प्रकार अपने आदेश से आप को युद्ध के लिये निकाला।
- 2 इस में निर्वल गिरोह व्यापारिक कार्फले को कहा गया है। अर्थात् कुरैश मक्का का व्यापारिक कार्फला जो सीरिया की ओर से आ रहा था, या उन की सेना जो मक्का से आ रही थी।

और काफिरों की जड़ काट दे।

8. इस प्रकार सत्य को सत्य, और असत्य को असत्य कर दो। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।
9. जब तुम अपने पालनहार को (बढ़ के युद्ध के समय) गृहार रहे थे। तो उस ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। (और कहा) मैं तुम्हारी सहायता के लिये लगानार एक हजार फरिश्ते भेज रहा¹ हूँ।
10. और अब्राह ने यह इस लिये बना दिया ताकि (तुम्हारे लिये) शुभ सूचना हो और ताकि तुम्हारे दिलों को मनाप हो जाये। अन्यथा सहायता तो अब्राह ही की ओर से होती है। वास्तव में अब्राह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
11. और वह समय याद करो जब अब्राह अपनी ओर से शान्ति के लिये तुम पर ऊँघ डाल रहा था। और तुम पर आकाश से जल बरसा रहा था, ताकि तुम्हें स्वच्छ कर दे। और तुम से शैतान की मलीनता दूर कर दे। और तुम्हारे दिलों को साहस दे, और

لِيُجِزَ كُفْرَ السَّاجِدِينَ وَلِيُكَفِّرَ الْخَائِبِينَ

إِذْ تَسْتَعِينُونَ رَبَّكُمْ فَلَسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِالْقِبْ وَالْمَلَائِكَةُ مُرْسِلَةٌ ۝

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُرْهَانًا وَإِلَّا قُلُوبُكُمْ وَمَا الضُّلُومُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

إِذْ يُغِيثُكُمُ الْغَدَاةَ أَمَّةً وَسَاءَ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً يُصْهِرُكُمْ فِيهِ وَيُذْهِبُ عَنْكُمْ رِيحٌ عَزِيزٌ الشَّيْطَانِ فَاصْبِرْ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُكَيِّدْ بِهِ الْأَقْدَامَ

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बढ़ के दिन कहा यह घोंडे की लगाम धामे और हथियार लगाये जिवरील (अलैहम्मसलाम) आये हुये हैं। (देखिये: सहीह बुखारी- 3995)

इसी प्रकार एक मुसलमान एक मुशरिक का पीछा कर रहा था कि अपने ऊपर से घुड़मवार की आवाज सुनी। हैजूम (घोंडे का नाम) आगे बढ़ फिर देखा कि मुशरिक उस के सामने चित गिरा हुआ है। उस की नाक और चेहरे पर कोड़े की मार का निशान है। फिर उस ने यह बात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बतायी। तो आप ने कहा सचच है। यह नीमरे आकाश की सहायता है। (देखिये: सहीह मुस्लिम 1763)

(तुम्हारे) पाँव जमा¹ दे।

12. (हे नबी!) यह वह समय था जब आप का पालनहार फरिश्तों को संकेत कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम ईमान वालों को स्थिर रखो, मैं काफिरों के दिलों में भय डाल दूँगा। तो (हे मुसलमानों!) तुम उन की गरदनो पर तथा पोर पोर पर आघात पहुँचाओ।
13. यह इस लिये कि उन्होंने अब्राह और उस के रसूल का विरोध किया। तथा जो अब्राह और उस के रसूल का विरोध करेगा तो निश्चय अब्राह उसे कड़ी यातना देने वाला है।
14. यह है (तुम्हारी यातना), तो इस का स्वाद चखो। और (जान लो कि) काफिरों के लिये नरक की यातना (भी) है।
15. हे ईमान वाले! जब काफिरों की सेना से भिड़ो तो उन्हें पीठ न दिखाओ।
16. और जो कोई उस दिन अपनी पीठ दिखायेगा, परन्तु फिर कर आक्रमण करने अथवा (अपने) किसी गिरोह से मिलने के लिये, तो वह अब्राह के

وَيَوْمَ يُنْفَخُ الرُّبُوبُ إِلَى الْمَلَأَةِ لِيَسْأَلَهُمْ فُسَيْخَتُهُ
الَّذِينَ آمَنُوا سَأَلَنِي فِي ثُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ قَامُوا فَوَلَّوْا الرُّعْبَ وَضَمُّوا
وَمِنْهُمْ كُلُّ بَنِي آدَمَ

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ
يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ

ذَلِكَ فَذُوقُوا وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَ الْفِتْنَةَ الْبُيُوتَ كَفَرُوا
رُحْمًا فَلَا تُلَوْا لَهُمُ الرُّكُوبَ

وَمَنْ يُؤْمَرْ بِتُوبَةٍ مِنْ دُبُرِهِ إِلَّا مَتَعِزًّا لِقَاتِ
أَوْ مَتَحَنَّنًا لِمَنْ بَيْنَ يَدَيْهِ فَتَقَدَّرَ بَاءٌ بِفَضْلٍ وَمَنْ
الْمَوِّ وَمَا وَهُدَى جَهَنَّمَ وَيُفْسِدُ الْمَسِيرَ

- 1 बद्र के युद्ध के समय मुसलमानों की संख्या मात्र 313 थी। और सिवाये एक व्यक्ति के किसी के पास घोड़ा न था। मुसलमान डरे सहमे थे जल के स्थान पर पहले ही शत्रु ने अधिकार कर लिया था। भूमि रेतीली थी जिस में पाँव धँस जाते थे। और शत्रु सवार थे। और उन की संख्या भी तीन गुणा थी। ऐसी दशा में अब्राह ने मुसलमानों पर निद्रा उतार कर उन्हें निश्चिन्त कर दिया और वर्षा करके पानी की व्यवस्था कर दी। जिस से भूमि भी कड़ी हो गई। और अपनी असफलता का भय जो शैतानी संशय था वह भी दूर हो गया।

प्रकोप में धिर जायेगा। और उस का स्थान नरक है। और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

17. अतः (रणक्षेत्र में) उन्हें बध तुम ने नहीं किया परन्तु अल्लाह ने उन को बध किया और हे नबी! आप ने नहीं फेंका जब फेंका, परन्तु अल्लाह ने फेंका। और (यह इस लिये हुआ) ताकि अल्लाह इस के द्वारा इमान वालों की एक उत्तम परीक्षा ले। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने और जानने^[1] वाला है।

18. यह सब तुम्हारे लिये हो गया। और अल्लाह क़ाफ़रों की चालों को निर्यल करने वाला है।

19. यदि तुम¹ निर्णय चाहने हो तो तुम्हारे सामने निर्णय आ गया है। और यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि फिर पहले जैसा करोगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। और तुम्हारा जन्धा तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगा, यद्यपि अधिक हो। और निश्चय अल्लाह ईमान वालों के साथ है।

20. हे इमान वाले! अल्लाह के आजाकारी

فَلَوْ تَشَاءُونَ لَبُذِلَتْ لَكُمُ الْاَرْضُ وَمَا عَلَيْهَا اِذْ رَمَيْتُمْ وَلَكِنَّ الْاِلهَ رَكَّ اَعْيُنَ الْمُؤْمِنِينَ وَمِنَ بَلَاءِ حَسْبَاءِ الْاِلهِ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

لَا يَكْفُرُ وَالْاِلهُ مُؤْمِنٌ كَرِيمٌ

اِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْقُرْآنُ فَاتَّقُوا اَنْ تَكْفُرُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاِنْ تَعُوذُوا فَاَعِدُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ دِيْنُكُمْ شَيْئًا وَاَنْ تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ

1 आयत का भावार्थ यह है कि शत्रु पर विजय तुम्हारी शक्ति से नहीं हुई। इसी प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रण क्षेत्र में कंकरियाँ लेकर शत्रु की सेना की ओर फेंकी जो प्रत्येक शत्रु की आँख में पड़ गई और वहीं से उन की पराजय का आरंभ हुआ तो उस धूल को शत्रु की आँखों तक अल्लाह ही ने पहुँचाया था। (इब्ने कसीर)

2 आयत में मक्का के क़ाफ़रों को संबोधित किया गया है जो कहते थे कि यदि तुम सच्चे हो तो इस का निर्णय कब होगा? (देखिये: सूरह सज्दा आयत 28)

रहो तथा उस के रसूल को और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।

وَلَا تَكُونُوا مِثْلَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ

21. तथा उन के समान¹ न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हम ने सुन लिया जब कि वास्तव में वह सुनते नहीं थे।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

22. वास्तव में अब्राह के हाँ सब से बुरे पशु वह (मानव) है जो बहरे गुँगे हों, जो कुछ समझते न हों।

رَبُّ الشُّرَكَاءِ إِنَّ رَبَّ عِندَ اللَّهِ الضُّمُّ الْبُحْرُ
الْبُحْرُ لَا يَعْقِلُونَ

23. और यदि अब्राह उन में कुछ भी भलाई जानता तो उन्हें सुना देता। और यदि उन्हें सुना भी दे तो भी वह मुँह फेर लेंगे और वह विमुख है ही।

وَلَوْ عِندَ اللَّهِ مِنْهُمْ خَيْرٌ أَكُنْتُمْ بِهِمْ
أَسْمِعْتُمْ لَهُمْ قَوْلًا وَهُمْ لَمْ يَرْفَعُوا

24. हे ईमान वालों! अब्राह और उस के रसूल की पुकार को सुनो, जब तुम्हें उसे की ओर बुलाये जा तुम्हारी² (आत्मा) को जीवन प्रदान करा और जान लो कि अब्राह मानव और उस के दिल के बीच आड़े³ आ जाता है। और निश्चिन्त तुम उसी के पास (अपने कर्मफल के लिये) एकत्र किये जाओगे।

وَأَنبِئُوا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ
وَلِرَسُولِهِ إِذَا دُعِيَ لِلْمَلَأِ بِحُجَّتِهِمْ
وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَبَيْنَهُ
وَأَنَّهُ إِلَهٌُ مُخْتَارٌ

25. तथा उस आपदा से डरो जो तुम में से अन्याचारियों पर ही विशेष रूप से नहीं आयेगी। और विस्वास रखो⁴ कि अब्राह कड़ी यातना देने वाला है।

وَاتَّقُوا يَوْمَ تُفْصَلُ الَّذِينَ ظَلَمُوا
مِنْكُمْ حَافَّةً تَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ

1 इस में संकेत अहले किताब की ओर है।

2 इस से अभिप्रेत कुर्आन तथा इस्लाम है। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् जो अब्राह, और उस के रसूल की बात नहीं मानता तो अब्राह उसे मार्गदर्शन भी नहीं देता।

4 इस आयत का भावार्थ यह है कि अपने समाज में बुराईयों को न घनघन दो अन्यथा जो आपदा आयेंगी वह सर्वसाधारण पर आयेंगी। (इब्ने कसीर)

26. तथा वह समय याद करो, जब तुम (मक्का में) बहुत थोड़े निर्वल समझे जाते थे। तुम डर रहे थे कि लोग तुम्हें उचक न लें। तो अल्लाह ने तुम्हें (मदीना में) शरण दी। और अपनी सहायता द्वारा तुम्हें समर्थन दिया। और तुम्हें स्वच्छ जीविका प्रदान की ताकि तुम कृतज्ञ रहो।

27. हे ईमान वाले! अल्लाह तथा उस के रसूल के साथ विश्वासघात न करो। और न अपनी अमानतों (कर्तव्य) के साथ विश्वासघात¹ करो, जानते हुये।

28. तथा जान लो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी संतान एक परीक्षा है। तथा यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।

29. हे ईमान वाले! यदि तुम अल्लाह से डरोगे तो तुम्हारे लिये बिबेक² बना देगा। तथा तुम से तुम्हारी बुराईयाँ दूर कर देगा। और तुम्हें क्षमा कर देगा, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।

30. तथा (हे नबी! वह समय याद करो) जब (मक्का में) काफिर आप के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे, ताकि आप को कैद कर लें। अथवा आप को वध कर दें अथवा देश निकाला दे दें तथा वे षड्यंत्र रच रहे थे,

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قِلَّةٌ مُتَضَاعِفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَفَكَ شَارِكُكَ وَأَنْتُمْ
وَأَيْدِيكُمْ بِمَعْرُورَةٍ وَرَزَقَكُمُوهَا غَيْبَتٍ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ
وَتَخُونُوا أَمْنَكُمْ وَآمَنَكُمْ تَعْتَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَعَمَلُكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ بَوْنَةً
وَأَنَّ اللَّهَ بَعْدَ الْبَرِّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ
فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ
يَسْتَرْفِعُوا أَوْ يَخْرُجُوكَ وَيَكْذِبُونَ وَيُمَكِّرُ اللَّهُ
وَلَهُ عِلْمُ الْغُيُوبِ ﴿٣٠﴾

1 अर्थात् अल्लाह तथा उस के रसूल के लिये जो तुम्हारा दायित्व और कर्तव्य है उसे पूरा करो। (इब्ने कसीर)

2 बिबेक का अर्थ है सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने की शक्ति कुछ ने फुर्कान का अर्थ निर्णय लिया है अर्थात् अल्लाह तुम्हारे और तुम्हारे विरोधियों के बीच निर्णय कर देगा।

और अल्लाह अपनी उपाय कर रहा था। और अल्लाह का उपाय¹ सब से उत्तम है।

31. और जब उन को हमारी आयने सुनाई जाती है तो कहते हैं हम ने (इसे) सुन लिया है। यदि हम चाहे तो इसी (क़ुर्आन) जैसी बातें कह दें। यह तो वही प्राचीन लोगों की कथायें हैं।

وَرَدَّ امْتَلَعَتْ عَلَيْهِمْ اَيْتَانِى الْوَقْدَ سَمِعْنَا لَوْ
نَشَاءُ نَقُصُّ عَلَيْكَ هَذَا اِنْ هَذَا اِلَّا
اَسْطُوْرَةٌ لِّلْاَوَّلِيْنَ ۝

32. तथा (याद करो) जब उन्होंने ने कहा हे अल्लाह! यदि यह² तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर दे, अथवा हम पर दुःखदायी यातना ला दे।

وَرَدَّ قَالُوْا اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ
عِنْدِكَ فَامْطُرْ عَلَيْنَا مِجْرَارًا مِنَ السَّمَاءِ
اَوْ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِِدَةً ۝

33. और अल्लाह उन्हें यातना नहीं दे सकता था जब तक आप उन के बीच थे, और न उन्हें यातना देने वाला है जब तक कि वह क्षमा याचना कर रहे हों।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ لَسْتَ تَعْلَمُوْنَ ۝

34. और (अब) उन पर क्यों न यातना उतारे जब कि वह सम्मानित मस्जिद (का'बा) से रोक रहे हैं, जब कि वह उस के संरक्षक नहीं हैं। उस के संरक्षक तो केवल अल्लाह के आजकारी है, परन्तु अधिकांश लोग (इसे) नहीं जानते।

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنْ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْا اَوْلِيَاءَ رَنُّ
اَوْ يَبْاْؤُهُ اِلَّا الْمُنٰفِقُوْنَ وَلٰكِنْ اَعْلَمُوْنَ ۝

35. और अल्लाह के घर (का'बा) के पास

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَاَدً

1 अर्थात् उन की सभी योजनाओं को असफल कर के आप को सुरक्षित मदीना पहुंचा दिया।

2 अर्थात् क़ुर्आन। यह बात कुरैश के मुख्या अबू जहल ने कही थी जिस पर आगे की आयत उतरती। (सहीह बुखारी 4648)

इन की नमाज इस के मिवा क्या थी कि सीटियाँ और तालियाँ बजायें? तो अब¹ अपने कुफ़ (अस्वीकार) के बदले में यातना का स्वाद चखो।

وَتَصْلِيَةٍ تَذَوُّوهُ الْعَذَابَ يَذَكَّرُ
تَلْفَؤْنَ ۝

36. जो काफिर हो गये वह अपना धन इस लिये खर्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोक दें। तो वे अपना धन खर्च करने रहेंगे फिर (वह समय आयेगा कि) वह उन के लिये पछतावे का कारण हो जायेगा। फिर पराजित होंगे तथा जो काफिर हो गये वे नरक की ओर हाँक दिये जायेंगे।

إِنَّ الْكَافِرِينَ كَفَرُوا يُؤْمِنُونَ أَمْوَالَهُمْ
يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَهُمْ يَفْعَلُونَ بِهَا
شُئْرًا تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً كَمَا يَفْعَلُونَ ۝
وَالَّذِينَ كَفَرُوا فِي جَهَنَّمَ يَحْسَرُونَ ۝

37. ताकि अल्लाह, मलीन को पवित्र से अलग कर दे। तथा मलीनों को एक दूसरे से मिला दे। फिर सब का ढेर बना दे, और उन्हें नरक में फेंक दे, यही क्षतिग्रस्त है।

يُمَيِّزُ اللَّهُ الْغَيِّبَ مِنَ الظَّاهِرِ وَيَجْعَلُ
الْغَيْبَ بَعْضُهُ عَلَى بَعْضٍ فَيَرْكَبُ جَهَنَّمَ
لِيُجْعَلَ فِي جَهَنَّمَ أُولَئِكَ لَهُمْ حَسْرَتٌ ۝

38. (हे नबी!) इन काफिरों से कह दो: यदि वह रुक² गये तो जो कुछ हो गया है वह उन से क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि पहले जैसा ही करेंगे तो अगली जानियों की दुर्गत हो चुकी है।

قُلْ الْكَاذِبِينَ كَفَرُوا وَإِنْ يَتُوبُوا يُفْعَرْ لَهُمْ مَا قَدْ
سَبَقَ وَإِنْ يَعُودُوا لَفَتَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ
الْأَوَّلِينَ ۝

39. हे ईमान वाले! उन से उस समय तक युद्ध करो कि³ फित्ना

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ

1 अर्थात् बदल में पराजय की यातना।

2 अर्थात् ईमान लाये।

3 इब्ने उमर (रजियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुशरिकों से उस समय युद्ध कर रहे थे जब मुसलमान कम थे। और उन्हें अपने धर्म के कारण मताया मारा और बंदी बना लिया जाता था। (सहीह बुखारी - 4650, 4651)

(अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाये, और धर्म पूरा अल्लाह के लिये हो जाये। तो यदि वह (अत्याचार में) रुक जायें तो अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

الَّذِينَ ظَلَمُوا بِأَنفُسِهِمْ فَوَاقٍ لِّمَنَّهُمْ
يَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

40. और यदि वह मुँह फेरें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है। और वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है।

وَمَنْ يَتُوبْ إِلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ مَوْلَاهُ
يَعْمَلُ الْمَوْلَى وَبِعَمِّ الْمَوْلَى ۝

41. और जान लो कि तुम्हें जो कुछ गनीमत में मिला है तो उस का पाँचवाँ भाग अल्लाह तथा रसूल और (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। यदि तुम अल्लाह पर तथा उस (सहायता) पर ईमान रखते हो जो हम ने अपने भक्त पर निर्णय¹ के दिन उतारी जिस दिन

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ رِزْقَهُ
خَبْرَهُ وَلِرِزْقِهِ وَلِلْيَوْمِ الَّذِي يَوْمُومُ
وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِن كُنْتُمْ أَرْضُوا
بِأَنفُسِكُمْ وَأَنَّكُمْ تُؤْتُونَ الْفَرَقَ فَإِنَّ
الْيَوْمَ الَّذِي يَوْمُومُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

1 इस में गनीमत (युद्ध में मिल सामान) के वितरण का नियम बनाया गया है कि उस के पाँच भाग करके चार भाग मुजाहिदों को दिये जायें। पैदल को एक भाग तथा सवार को तीन भाग। फिर पाँचवाँ भाग अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये था जिसे आप अपने परिवार और समीप वर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों की सहायता के लिये खर्च करते थे। इस प्रकार इस्लाम ने अनाथों तथा निर्धनों की सहायता पर सदा ध्यान दिया है। और गनीमत में उन्हें भी भाग दिया है यह इस्लाम की वह विशेषता है जो किसी धर्म में नहीं मिलेगी।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। निर्णय के दिन से अभिप्राय बद्र के युद्ध का दिन है जो सत्य और असत्य के बीच निर्णय का दिन था। जिस में काफिरों के बड़े बड़े प्रमुख और धवीर मारे गये जिन के शव बद्र के एक कुबे में फेंक दिये गये। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कुबे के किनारे खड़े हुये और उन्हें उन के नामों से पुकारने लगे कि क्या तुम प्रसन्न होने कि अल्लाह और उस के रसूल का मानते? हम ने अपने पालनहार का वचन सच पाया तो क्या तुम ने भी सच पाया? उमर (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा- क्या आप ऐसे शरीरों से बात कर रहे हैं जिन में प्राण नहीं? आप ने कहा- मेरी बात

दो सेनाएँ भिड़ गईं और अब्राह जो
चाहे कर सकता है।

42. तथा उस समय को याद करो जब
तुम (रणक्षेत्र में) इधर के किनारे
तथा वह (शत्रु) उधर के किनारे पर
थे, और काफ़िला तुम से नीचे था।
और यदि तुम आपस में (युद्ध का)
निश्चय करते तो निश्चित समय से
अवश्य कतरा जाते। परन्तु अब्राह
ने (दोनों को भिड़ा दिया) ताकि जो
होना था उस का निर्णय कर दे।
ताकि जो मरे तो वह खुले प्रमाण के
पश्चात् मरे। और जो जीवित रहे तो
वह खुले प्रमाण के साथ जीवित रहे।
और वस्तुतः अब्राह सब कुछ सुनने
जानने वाला है।

43. तथा (हे नबी! वह समय याद करें)
जब आप को (अब्राह) आप के सपने
में उन्हें (शत्रु को) धोड़ा दिखा रहा
था, और यदि उन्हें आप को अधिक
दिखा देता तो तुम साहस खो देते।
और इस (युद्ध के) विषय में आपस
में झगड़ने लगते। परन्तु अब्राह ने
तुम्हें बचा दिया। वास्तव में वह भीनों
(अन्तरात्मा) की बातों से भली भाँती
अवगत है।

44. तथा (याद करो उस समय को)
जब अल्लाह उन (शत्रु) को

إِذْ أَسْلَمَ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُوَ بِالْعُدْوَةِ
الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ اسْتَقْلَ مِنْكُمْ وَتَوَلَّوْا
تَوَاعِدْتُمْ أَنْ تَلْقَوْهُ فِي الْمَيْمَةِ وَلَكِنْ
لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُورًا فَيَهْطَ مَنْ
هَظَّ عَنْ بَيْتِهِ وَيُخَيِّمَ مَنْ خَيَّ عَنْ بَيْتِهِ
وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَدِيمٌ

إِذْ يُرِيكُمْ اللَّهُ مِنْ مَتَابِعِكُمْ قَلِيلًا وَلَوْ
أَرَاكُمْ كَثِيرًا لَفُتِلْتُمْ وَلَسَا زَعَمْتُمْ فِي
الْأَمْرِ وَلَعَلَّ اللَّهَ سَكْرَانًا يُغَيِّرُ مَا يَشَاءُ
الْمُتَذَكِّرِينَ

وَإِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ إِفْرَادَ الْقَبَائِلِ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا

तुम उन से अधिक नहीं सुन रहे हो। (सहीह बुखारी 3976)

- 1 इस में उस स्वप्न की ओर संकेत है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को युद्ध
से पहले दिखाया गया था।

लड़ाई के समय तुम्हारी आँखों में तुम्हारे लिये थोड़ा कर के दिखा रहा था, और उन की आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखा रहा था, ताकि जो होना था अल्लाह उस का निर्णय कर दे। और सभी कर्म अल्लाह ही की ओर फेरे¹ जाते हैं।

وَيَقْبَلُ لَكُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ نَفَقَاتِ اللَّهِ أَمْراً كَانَ مَفْعُولاً وَرَبِّ اللَّهِ تَرْجَعُ الْأُمُورُ

45. हे ईमान वाले! जब (आक्रमण कारियों) के किसी गिराह से भिड़ो तो जम जाओ। तथा अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम सफल रहो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاغْلِبُوا وَذَكِّرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

46. तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, और आपस में विवाद न करो, अन्यथा तुम कमजोर हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी। तथा धैर्य से काम लो, वास्तव में अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

وَأطيعوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَارَكُوا مَقَاتِلَكُمْ وَقَاتِلُوا أَلَيْسَ بِاللَّهِ عِزٌّ كَثِيرٌ

47. और उन² के समान न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुये तथा लोगों को दिखाते हुये निकलें। और वह अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं। और अल्लाह उन के कर्मों को (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ هَرَبُوا مِنْ دِيَارِهِمْ يَنْهَرُ وَهُمْ لَا عِزٌّ لَهُمْ وَيَقْتُلُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ يَهْدِي الْقَوْمَ الْهَادِينَ

48. जब शैतान³ ने उन के लिये उन के कर्मों को शोभनीय बना दिया था। और उस (शैतान) ने कहा: आज तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, और

وَأَذَرْنَا لَهُمْ لُتْفَ غَمٍّ لَهُمْ وَقَالَ لَا خَالِئَ لَكُمْ يَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنْ جَاءَكُمْ فَتَنَّا تَرَأَوْتِ الْفِتْنَى تَكْصُ عَلَى عَيْنَيْهِ وَقَالَ

1 अर्थात् सब का निर्णय वही करता है।

2 इस से अभिप्राय मक्का की सेना है जिसको अबू जहल लाया था।

3 बद्र के युद्ध में शैतान भी अपनी सेना के साथ सुराका बिन मारिक के रूप में आया था, परन्तु जब फरिश्तों को देखा तो भाग गया। (इब्ने कसीर)

मैं तुम्हारा महायक हूँ। फिर जब दोनों सेनायें सम्मुख हो गई, तो अपनी एड़ियों के बल फिर गया। और कह दिया कि मैं तुम से अलग हूँ। मैं जो देख रहा हूँ तुम नहीं देखते। वास्तव में मैं अब्राह से डर रहा हूँ। और अब्राह कड़ी यातना देने वाला है।

لِيَبْرِيَنَّكُمْ فِي آرِي مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ
اللَّهَ وَهُوَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

49. तथा (वह समय भी याद करो), जब मुनाफिक तथा जिन के दिलों में रोग है वे कह रहे थे कि इन (मुसलमानों) को इन के धर्म ने धोखा दिया है। तथा जो अब्राह पर निर्भर करे तो वास्तव में अब्राह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

رَدَّ يَمُوتُ لِنُفُوسِهِمْ وَأَشِدُّهُمْ فِي قُلُوبِهِمْ
مَرَمٌ غَرَّهُمْ وَبَيْنَهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ
فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

50. और क्या ही अच्छा होता यदि आप उस दशा को देखते जब फरिशने (बधित) काफिरों के प्राण निकाल रहे थे तो उन के मुखों और उन की पीठों पर मार रहे थे। तथा (कह रहे थे कि) दहन की यातना! चखो।

وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَكَّلُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَالِجَهُ
يَصْرُهُمْ وَهُمْ لَمَّا وَادَّ بَارَهُمْ وَذُوقُوا
عَذَابَ الْعَرِيقِ ۝

51. यही तुम्हारे कर्तूतों का प्रतिफल है। और अब्राह अपने भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं है।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ إِلَى اللَّهِ وَإِنَّ بِهِ لَحِسٌ
بِقُلُوبِ الْعَالَمِينَ ۝

52. इन की दशा भी फिरऔनियों तथा उन के जैसी हुई जिन्होंने इन से

كَذَّابٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَأَتَابِ مِنْ قَبْلِهِمْ كَفَرُوا

1. बद्र के युद्ध में काफिरों के कई प्रमुख मारे गये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध में पहले बता दिया कि अमुक इस स्थान पर मारा जायेगा तथा अमुक इस स्थान पर। और युद्ध समाप्त होने पर उन का शव उन्हीं स्थानों पर मिला तबिक भी इधर उधर नहीं हुआ। (बुखारी 4480)

ऐसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के समय कहा कि सारे जत्थे पराजित हो जायेंगे और पीठ दिखा देंगे। और उसी समय शत्रु पराजित होने लगे। (बुखारी 4875)

पहले अल्लाह की आयतों को नकार दिया, तो अल्लाह ने उन के पापों के बदले उन्हें पकड़ लिया। वास्तव में अल्लाह बड़ा शक्तिशाली कड़ी यातना देने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ يَذَرِبْهُمُ يُغْوِيهِمْ يَنْزِلُ اللَّهُ
قَوِيًّا شَدِيدًا الْعِقَابِ

53. अल्लाह का यह नियम है कि वह उस पुरस्कार में परिवर्तन करने वाला नहीं है जो किसी जाति पर किया हो, जब तक वह स्वयं अपनी दशा में परिवर्तन न कर ले। और वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرَ الْاٰیْمَةِ سَعْبًا عَلَى
قَوْمٍ كَذٰلِكَ يَجْتَبِيْهِمْ وَيَخْتَارُ اِنَّ اللَّهَ سَمِیْعٌ
عَلِیْمٌ

54. इन की दशा फिरऔनियों तथा उन लोगों जैसी हुई जो इन से पहले थे, उन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया, तो हम ने उन्हें उन के पापों के कारण ध्वस्त कर दिया। तथा फिरऔनियों को डूबो दिया। और वह सभी अत्याचारी¹ थे।

كَذٰلِكَ اِيَّاكَ يَزِيدُ وَكَذٰلِكَ اِيَّاكَ يَزِيدُ
وَالْعَرَفٰ اِلٰلَ فِرْعَوْنَ وَكُلَّ كٰفِرٍ اَوْ ظٰلِمٍ

55. वास्तव में सब से दूरे जीव अल्लाह के पास वह है जो काफिर हो गये, और ईमान नहीं लाते।

اِنَّ شَرَّ الدِّیْنِ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ
لَا یُؤْمِنُوْنَ

56. यह वे² लोग हैं जिन से आप ने संधि की। फिर वह प्रत्येक अवसर पर अपना वचन भंग कर देते हैं। और (अल्लाह से) नहीं डरते।

الَّذِیْنَ عٰهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ
فِیْ كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا یَتَّقُوْنَ

1 इस आयत में तथा आयत नं० 52 में व्यक्तियों तथा जातियों के उत्थान और पतन का विधान बताया गया है कि वह स्वयं अपने कर्मों से अपना जीवन बनाती या अपना विनाश करती हैं।

2 इस में मदीना के यहूदियों की ओर संकेत है। जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संधि थी। फिर भी वे मुसलमानों के विरोध में गतिशील थे और बद्र के तुरन्त बाद ही कुरैश को बदले के लिये भड़काने लगे थे।

57. तो यदि ऐसे (वचनभर्गी) आप को रणक्षेत्र में मिल जायें तो उन को शिक्षाप्रद दण्ड दें, ताकि जो उन के पीछे हैं वह शिक्षा ग्रहण करें।

فَإِنَّمَا تُحَنِّتُهُمْ فِي الْحَرْبِ مَكْرًا بِإِذْنِ مَنْ خَلَقَهُمْ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

58. और यदि आप को किसी जानि से विश्वासघात (संधि भंग करने) का भय हो तो बराबरी के आधार पर संधि तोड़ दें। क्यों कि अल्लाह विश्वासघातियों से प्रेम नहीं करता।

وَإِنَّمَا عَاقِبَتُ مِنَ قَوْمٍ هِيَ آتِيَةٌ فَا يَعْلَمُونَ
عَلَّ سَوَاءٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُنْكَرِينَ ۝

59. जो काफिर हो गये वे कदापि यह न समझें कि हम से आगे हो जायेंगे। निश्चय वह (हमें) विवश नहीं कर सकेंगे।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا آلَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

60. तथा तुम से जितनी हो सके उन के लिये 'शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिये' घोड़े तय्यार रखो। जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को और इन के सिवा दूसरों को डराओ।¹ जिन को तुम नहीं जानते, उन्हें अल्लाह ही जानता है। और अल्लाह की राह में तुम जो भी व्यय (खर्च) करोगे तो तुम्हें पूरा मिलेगा। और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَهِيَ
رِبَاطٌ لَّيْلِيٍّ تَرْهَبُونَ بِهِ عَدُوَّكُمْ وَعَدُوَّكُمْ
وَالْغِيْبِيْنَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ
يَعْلَمُهُمْ وَيَبْشُرُوا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي سُبُلِ اللَّهِ
يَوْمَ الْيَوْمِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

61. और यदि वह (शत्रु) संधि की ओर झुकें तो आप भी उस के लिये झुक जायें। और अल्लाह पर भरोसा करें। निश्चय वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

فَسُجِنُوا لِلشَّامِرِ فَأَجْنَعُوا لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

1 अर्थात् उन्हें पहले सूचित कर दो कि अब हमारे तुम्हारे बीच संधि नहीं है।

2 ताकि वह तुम पर आक्रमण करने का साहस न करे, और आक्रमण करे तो अपनी रक्षा करो।

62. और यदि वह (संघ कर के) आप को धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह आप के लिये काफी है। वही है जिस ने अपनी सहायता तथा ईमान वालों के द्वारा आप को समर्थन दिया है।

وَأَنْ تَرْيَدُوا أَنْ تُخْجَلُوا عَوَاجِلَ رَبِّكَ لَتَكُنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। और अब्राहम सहनशीलों के साथ है।¹

67. किसी नबी के लिये यह उचित न था कि उस के पास बंदी हों, जब तक कि धरती (रण क्षेत्र) में अच्छी प्रकार रक्तपात न कर दे। तुम संसारिक लाभ चाहते हो और अब्राहम (तुम्हारे लिये) आखिरत (परलोक) चाहता है। और अब्राहम प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

68. यदि इस के बारे में पहले से अब्राहम का लेख (निर्णय) न होता, तो जो (अर्ध दण्ड) तुम ने लिया² है, उस के लेने में तुम्हें बड़ी यातना दी जाती।

69. तो उस गनीमत में से³ खाओ, वह हलाल (उचित) स्वच्छ है। तथा अब्राहम के आज्ञाकारी रहो। वास्तव में अब्राहम अति क्षमा करने वाला दयावान् है।

70. हे नबी! जो तुम्हारे हाथों में बंदी है, उन से कह दो कि यदि अब्राहम ने तुम्हारे दिलों में कोई भलाई देखी तो तुम को उस से उत्तम चीज (इमान) प्रदान करेगा जो (अर्धदण्ड) तुम से लिया गया है और तुम्हें क्षमा कर देगा।

مَا كَانَ لِإِبْرَاهِيمَ أَنْ يَكُونَ لَهُ أُسْرَىٰ حَتَّىٰ يَشْجُو
فِي الْأَرْضِ يُرِيدُ أَنْ يَرْفُضَ الدُّمُومَ لَوْلَا أَنَّهُ يُرِيدُ
الْآخِرَةَ ۚ وَلَوْلَا عَنْهُ رِجْزٌ كَبِيرٌ ۝

لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا
أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَلَوْ أَنَّهُ لَافْتَرَا
أَنَّهُ غَنَمُوا رَجِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي آيِنِ يَأْتِيهِ مِنَ الْأَسْرَىٰ
يُغْنِيهِ اللَّهُ فِي فُتُوخِهِ خَيْرًا أَوْ يَزِيدُهُ خَيْرًا مِمَّا جَدَّ
مِنْكُمْ وَيُغْفِرُ لَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

1 अर्थात् उन का सहायक है जो दुख तथा सुख प्रत्येक दशा में उस के नियमों का पालन करते हैं।

2 यह आयत बद्र के बंदियों के बारे में उतरी। जब अब्राहम के किसी आदेश के बिना आपस के परामर्श से उन से अर्धदण्ड ले लिया गया। (इब्ने कसीर)

3 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा मेरी एक विशेषता यह भी है कि मेरे लिये गनीमत उचित कर दी गई जो मुझ से पहले किसी नबी के लिये उचित नहीं थी। (बुखारी 335 मुस्लिम 521)

और अब्राह अति क्षमाशील दयावान् है।

71. और यदि वह आप के साथ विश्वासघान करना चाहेंगे तो इस से पूर्व वे अब्राह के साथ विश्वासघान कर चुके हैं। इसी लिये अब्राह ने उन को (आप के) वश में किया है। तथा अब्राह अति ज्ञानी उपाय जानने वाला है।

72. निःसंदेह जो ईमान लाये, तथा हिजरत (प्रस्थान) कर गये, और अब्राह की राह में अपने धनो और प्राणों से जिहाद किया, तथा जिन लोगों ने उन को शरण दिया तथा सहायता की, वही एक दूसरे के सहायक हैं। और जो ईमान नहीं लाये और न हिजरत (प्रस्थान) की, उन से तुम्हारी सहायता का कोई संबंध नहीं, यहाँ तक कि हिजरत करके आ जायें। और यदि वह धर्म के बारे में तुम से सहायता माँगें, तो तुम पर उन की सहायता करना आवश्यक है। परन्तु किसी ऐसी जाति के विरुद्ध नहीं जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अब्राह देख रहा है।

73. और काफिर एक दूसरे के समर्थक हैं। और यदि तुम ऐसा न करोगे तो धरती में उपद्रव तथा बड़ा बिगाड़ उत्पन्न हो जायेगा।

74. तथा जो ईमान लाये, और हिजरत कर गये, और अब्राह की राह में संघर्ष किया, और जिन लोगों ने

وَلَنْ يَرْيَدُوا لِيُؤْتِيَهُكَ اللَّهُ فَتُدَارِيَهُمْ لَمَّةً مِنْ قَبْلُ
فَأَمَلْنَا مِنْهُمْ وَلَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَجَرُوا وَجْهَهُمْ إِلَىٰ آلِهِمْ
وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَمُوتُوا
أُولَٰئِكَ بِمَعْزُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ وَآلِهِمْ
وَأُولَٰئِكَ يَجْزُوا مَا كُتِبَ لَهُمْ وَلَٰكِنَّ بَعْضَهُمْ مِنْ شَرِّ
حَالٍ يُفَاجِرُ قَوْمَهُ يَلَٰكِنَ فَتَوَلَّوْا وَالَّذِينَ
لَعَلَّكُمْ الْفَتْحُ الْأَعْلَىٰ قَوْمٌ يَنْكُرُونَ بَيْنَهُمْ
وَبَيْنَاقٍ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَأَنفُسُهُمْ أَشَدُّ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
تَوَلَّوْا وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَجَرُوا وَجْهَهُمْ إِلَىٰ
سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَمُوتُوا
أُولَٰئِكَ بِمَعْزُهُمْ

(उन को) शरण दी, और (उन की) सहायता की, वही सच्चे इमान वाले हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा उन्हीं के लिये उत्तम जीविका है।

الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَفُزْنٌ كَرِيمٌ

75. तथा जो लोग इन के पश्चात् इमान लाये और हिजरत कर गये, और तुम्हारे साथ मिल कर संघर्ष किया, वही तुम्हारे अपने हैं। और वही परिवारिक समीपवर्ती अब्राह के लेख (आदेश) में अधिक समीप¹ हैं। वास्तव में अब्राह प्रत्येक चीज का अति ज्ञानी है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجْهَهُمْ
مَعَكُمْ فَأُولَئِكَ مِنكُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ
أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

1 अर्थात् मीरास में उन को प्राथमिकता प्राप्त है।

सूरह तौबा 9

سورة التوبة

सूरह तौबा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदीनी है इस में 129 आयत हैं।

इस सूरह में तौबा की शुभ सूचना तथा वचन भगी काफिरों से विरक्त होने की घोषणा है। इसलिये इस का नाम सूरह तौबा और बराआ (विरक्ति) दोनों हैं।

- यह सन् (8-9) हिजरी के बीच मक्का की विजय के पश्चात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर समय-समय से उतरी। और सन् (9) हिजरी में जब आप ने अबू बक्र (रजियल्लाहु अन्हु) को हज्ज का अमीर बना कर भेजा तो इस की आरंभक आयतें उतरी। और यह एलान किया गया कि काफिरों से संधि तोड़ दी गई और अहले किताब से संबंधित इस्लामी शासन की नीति बताते हुये उन्हें मावधान किया गया।
- इस में इस्लामी वर्ष और महीने का पालन करने का निर्देश दिया गया।
- तबूक के युद्ध के लिये मुसलमानों को उभारा गया तथा मुनाफिकों की निन्दा की गई जो जिहाद से जी चुराने थे।
- यह बताया गया कि जकात किन को दी जाये। और ईमान वालों को सफल होने की शुभ सूचना दी गई।
- मुनाफिकों के साथ जिहाद करने का आदेश दिया गया। और उन्हें सुधर जाने और अब्राह तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा का पालन करने को कहा गया अन्यथा वह अपने ईमान के दावे में झूठे हैं।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सच्चे साथियों को शुभ सूचना देने के साथ ग्रामीण वासियों को उन के निफाक पर धमकी दी गई।
- जिहाद से जी चुराने वालों के झूठ को उजागर किया गया और ईमान वालों के दोष क्षमा करने का एलान किया गया।
- मुनाफिकों के मस्जिद बना कर षड्यंत्र रचने का भंडा फोड़ने के साथ मुशरिकों के लिये क्षमा की प्रार्थना करने से रोक दिया गया। और मदीना के आस-पास के ग्रामिणों को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान दे देने तथा धर्म के समझने के निर्देश दिये गये।

- ईमान वालों को जिहाद का निर्देश और मुनाफिकों को अन्तिम चेतावनी दी गई
- अन्त में कहा गया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारी केवल भलाई चाहते हैं। इसलिये यदि तुम उन का आदर करोगे तो तुम्हारा ही भला होगा।

1 अब्राह तथा उस के रसूल की ओर से संधि मुक्त होने की घोषणा है उन मिश्रणवादियों के लिये जिन से तुम ने संधि (समझौता) किया¹ था।

بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمُ
الْمُشْرِكِينَ

2 तो (हे काफ़िरो!) तुम धरती में चार महीने (स्वतंत्र हो कर) फ़िरो। तथा जान लो कि तुम अब्राह को विवश नहीं कर सकोगे। और निश्चय अब्राह, काफ़िरो को अपमानित करने वाला है।

فَيُخَوِّذُ فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَلَيْكُمُ الْكُفْرُ
مُنْجَرٍ لِلَّهِ وَإِنَّ اللَّهَ مُغْنِي الْكَافِرِينَ

3. तथा अब्राह और उस के रसूल की ओर से सार्वजनिक सूचना है. महा हज्ज² के दिन कि अब्राह मिश्रणवादियों से अलग है। तथा उस का रसूल भी। फिर यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो वह तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि तुम ने मुंह फेरा तो जान लो कि

وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ
الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ
لَئِنْ تَابْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَوَيْبْتُمْ فَاعْتَبِرُوا
أَلَمْ تَكُنْ تُخَوِّدُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَكُمْ عَذَابٌ
بِمَا كُنْتُمْ تَفْعَلُونَ

1 यह सूरह मन् 9 हिजरी में उतरी। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुँचे तो आप ने अनेक जातियों से समझौता किया था। परन्तु सभी ने समय समय से समझौते का उल्लंघन किया। लेकिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर उस का पालन करने रहे। और अब यह घोषणा कर दी गई कि मिश्रणवादियों से कोई समझौता नहीं रहेगा।

2 यह एलान ज़िल हिज्जा मन् (10) हिजरी को मीना में किया गया कि अब काफ़िरो से कोई संधि नहीं रहेगी। इस वर्ष के बाद कोई मुशरिक हज्ज नहीं करेगा और न कोई कौबा का नंगा तवाफ करेगा। (बखारी 4655)

तुम अल्लाह को विवश करने वाले नहीं हो। और आप उन्हें जो काफिर हो गये दुखदायी यातना का शुभ समाचार सुना दे।

4. सिवाय उन मुशरिकों के जिन से तुम ने संधि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता की तो उन से उन की संधि उन की अवधि तक पूरी करो। निश्चय अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।

5. अतः जब सम्मानित महीने बीत जायें तो मिश्रणवादियों का बंध करो उन्हें जहाँ पाओ और उन्हें पकड़ो, और घेरो।¹ और उन की घात में रहो। फिर यदि वह तौबा कर ले और नमाज की स्थापना करे तथा जकात दें तो उन्हें छोड़ दो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

6. और यदि मुशरिकों में से कोई तुम से शरण माँगे तो उसे शरण दो यहाँ तक कि अल्लाह की बातें सुन ले। फिर उसे पहुँचा दो उस के शान्ति के स्थान तक। यह इसलिये कि वह ज्ञान नहीं रखे।

7. इन मुशरिकों (मिश्रणवादियों) की कोई संधि अल्लाह और उस के रसूल के पास कैसे हो सकती है? उन के सिवाय जिन से तुम ने सम्मानित मस्जिद (काबा) के पास संधि

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَمْنُوا بَعْدَ ذَلِكَ وَأُولَئِكَ يُطَاهَرُونَ عَنْكُمُ حَتَّىٰ تَأْتُوا بِلَهُمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

فَإِذَا تَسَلَّخْنَا عَنْهُمْ وَفَاسَتْهُمُ الشُّرُكُوتُ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُواهُمْ وَأَغْلُظْهُمْ وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ لَّيْسَ لَهُ تَوَّابٌ أَلَمْ يَأْمُرْنَا بِالزَّكَاةِ فَخَلَوْا بِهَا وَيَمْنَعُونَ اللَّهَ عَقُّورًا جَبِينًا ۝

وَأَنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَإِنَّهُ إِلَىٰ يَدَيْكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْكَافِرِينَ ۝

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدُوا عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ قَبْلَ اسْتِغْثَاؤِ الْكُفْرِ فَاسْتَقْبِلُوهُمْ لَهُمْ زَكَاةٌ يَتَّقُونَ ۝

- 1 यह आदेश मक्का के मुशरिकों के बारे में दिया गया है, जो इस्लाम के विरोधी थे और मुसलमानों पर आक्रमण कर रहे थे।

की।¹ धी। तो जब तक वह तुम्हारे लिये सीधे रहे तो तुम भी उन के लिये सीधे रहो। वास्तव में अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करना है।

8. और उन की संधि कैसे रह सकती है जब कि वह यदि तुम पर अधिकार पा जायें तो किसी संधि और किसी वचन का पालन नहीं करेंगे। वे तुम्हें अपने मुखों से प्रसन्न करते हैं, जब कि उन के दिल इन्कार करते हैं। और उन में अधिकांश वचनभंगी हैं।

9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तनिक मूल्य खरीद लिया², और (लोगों को) अल्लाह की राह (इस्लाम) से रोक दिया। वास्तव में वे बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।

10. वह किसी इमान वाले के बारे में किसी संधि और वचन का पालन नहीं करते। और वही उल्लंघनकारी हैं।

11. तो यदि वह (शिरक से) तौबा कर लें और नमाज की स्थापना करें, और जकात दें तो तुम्हारे धर्म-बंधु हैं। और हम उन लोगों के लिये आयतों का वर्णन कर रहे हैं जो जान रखने हों।

12. तो यदि वह अपनी शपथें अपना वचन देने के पश्चात् तोड़ दें और तुम्हारे धर्म की निन्दा करें तो कुफ़

كَيْفَ دُونَ يَظْهَرُ وَأَعْلَى لَكُمْ لَا يَرْفَعُونَ يَدَهُمْ إِلَى
وَلَا دُونَ يَرْفَعُونَ يَدَهُمْ وَلَا يَرْفَعُونَ يَدَهُمْ وَلَا
فَلَوْ نَهَمُوا وَاحْتَرَفُوا فَيَقُولُونَ ۝

يَشْتَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا لَّيْلًا فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

لَا يَرْفَعُونَ فِي مَوَاقِفِ الْأُولَى وَالْأُولَى
هُمْ الْمُتَعَدُّونَ ۝

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
فَإِنَّهُمْ لَكَوْفِي الدِّينِ وَلَكِنَّ لَكُمُ الْأَمْرَ
لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۝

وَدُونَ تَكُونُوا أَتَمَّانَ مُعْرِضِينَ عَنْ
عَهْدِهِمْ وَطَعْنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا ۝

1 इस से अभिप्रेत हूदैबिया की संधि है जो सन् (6) हिजरी में हुई। जिसे काफिरों ने तोड़ दिया। और यही सन् (8) हिजरी में मक्का की विजय का कारण बना।

2 अर्थात् संसारिक स्वार्थ के लिये मत्तधर्म इस्लाम को नहीं माना।

कें प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उन की शपथों का कोई विश्वास नहीं ताकि वह (अन्याचार से) रुक जायें।

آيَةُ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا آيَةَ الْإِيمَانِ لَهُمْ
لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ﴿٩﴾

13. तुम उन लोगों से युद्ध क्यों नहीं करते जिन्होंने अपने वचन भंग कर दिये? तथा रमूल को निकालने का निश्चय किया? और उन्होंने ही युद्ध का आरंभ किया है। क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह अधिक योग्य है कि तुम उस से डरो, यदि तुम ईमान वाले हो।

الْأَثْقَاتِ لَوْ قَوْمًا كَفَرُوا بِالْمَآثِمِ
وَقَسَمُوا بِالْحَوَارِ لِرَسُولٍ وَهُوَ بِذُرِّيَّتِهِ
أَوَّلَ مَرَّةٍ تَحْشُرُهُمْ قَالَهُ أَحْسَنُ أَنْ تَحْشُرُوا
رَبَّنَا كُنْتُمْ مُؤْمِرِينَ ﴿١٠﴾

14. उन से युद्ध करो, उन्हें अल्लाह तुम्हारे हाथों दण्ड देगा। और उन्हें अपमानित करेगा, और उन के विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा और ईमान वालों के दिलों का सब दुख दूर कर देगा।

قَالُوا لَهُمْ نَعْبُدُ إِلَهَ رَبِّكَ رَبُّكَ يُكَفِّرُ عَنْهُمْ
وَيُصَرِّفُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ وَيُصِيبُ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴿١١﴾

15. और उन के दिलों की जलन दूर कर देगा, और जिस पर चाहेगा दया कर देगा और अल्लाह अति जानी नीतिज्ञ है।

وَيُذِيبُ عَنْهُمْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيُتُوبُ اللَّهُ عَلَیْ مَنْ
يَشَاءُ إِنَّهُ سَلِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢﴾

16. क्या तुम ने समझा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे, जब कि (परीक्षा लेकर) अल्लाह ने उन्हें नहीं जाना है जिस ने तुम में से जिहाद किया? तथा अल्लाह और उस के रमूल और ईमान वालों के सिवाय किसी को भेदी मित्र नहीं बनाया। और अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الْغَائِبِينَ
جَهْدًا وَمِنْكُمْ وَلَمْ يَخْشَ الْإِيمَانُ دُونَ اللَّهِ وَلَا
رُسُلَهُ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلَئِنَّ اللَّهَ لَخَبِيرٌ بِمَا
تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾

17. मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ

- 1 आयत नं० 7 से लेकर 13 तक यह बनाया गया है कि शत्रु ने निरन्तर संधि को तोड़ा है। और तुम्हें युद्ध के लिये बाध्य कर दिया है। अब उन के अन्याचार और आक्रमण को रोकने का यही उपाय रह गया है कि उन से युद्ध किया जाये।

योग्य नहीं है कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करे, जब कि वह स्वयं अपने विरुद्ध कुफ्र (अधर्म) के साक्षी है। इन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और नरक में वही सदावासी होंगे।

18. वास्तव में अल्लाह की मस्जिदों को वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (प्रलय) पर इमान लाया, तथा नमाज की स्थापना की, और जकात दी, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा! तो आशा है कि वही सीधी राह चलेंगे।

19. क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और सम्मानित मस्जिद (काबा) की सेवा को उस के (इमान के) बराबर समझते हो जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर इमान लाया तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया? अल्लाह के समीप दोनों बराबर नहीं हैं। तथा अल्लाह अन्याचारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

20. जो लोग इमान लाये तथा हिजरत कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धन और प्राणों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उन का बहुत बड़ा पद है। और वही सफल होने वाले हैं।

21. उन को उन का पालनहार शुभ सूचना देता है अपनी दया और प्रसन्नता की तथा ऐसे स्वर्गों की जिन में स्थायी सुख के साधन हैं।

22. जिन में वह सदावासी होंगे। वास्तव में अल्लाह के यहाँ (सत्कर्मियों के

شَهِيدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكَفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ ۖ وَكُفُوا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنَ اسَّ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَغْشُ إِلَّا اللَّهَ
فَقُلَىٰ لَوْلَٰكَ لَأَنُكَلِّمَنَّاهُ مِنَ السَّمَاءِ ۝

لَجَعَلْنَاهُمْ سَفَافَةً ۖ وَيَعْمُرُونَ الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ كَمَا كُنَّ اسَّ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَعَلْنَا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَآئِنَ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ عِنْدَ اللَّهِ لَا
يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

أَلَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَكْظَمُ دَرَجَةً
عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

يُنَبِّئُهُم بِرَحْمَتِهِ مِنْهُمْ وَرِضْوَانٍ ۖ وَجَنَّتِ
لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ۝

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَمْرٌ عَظِيمٌ ۝

लिये) बड़ा प्रतिफल है।

23. हे ईमान वालो! अपने बापों और भाईयों को अपना सहायक न बनाओ, यदि वह ईमान की अपेक्षा कुफ्र से प्रेम करें। और तुम में से जो उन को सहायक बनायेंगे तो वही अत्याचारी होंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَجِدُوا آبَاءَكُمْ
وَأَزْوَاجَكُمْ أَوْلِيَاءَ الَّذِينَ مَتَّعْتُمُ الْكُفْرَ عَلَى
الْإِسْلَامِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَوَيْلٌ لَهُ مِنَ
الْعَذَابِ ۝

24. हे नबी! कह दो कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे पुत्र तथा तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ तथा तुम्हारा परिवार और तुम्हारा धन जो तुम ने कमाया है, और जिस व्यापार के मंद हो जाने का तुम्हें भय है, तथा वह घर जिन में मोह रखते हो, तुम्हें अल्लाह तथा उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद करने से अधिक प्रिय है तो प्रतीक्षा करो यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ जाये। और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सुपथ नहीं दिखाना।

مَثَلُ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ
وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَسُقُوتُكُمْ
وَبَيْعُكُمْ تَخْشَوْنَ كَيْدَهُمْ أَوْ مُسْكِنُكُمْ
تَرْضَوْنَ أَوْ حَبَبُ الْبَيْعِ مِنْ الْمَالِ وَرَسُولُكُمْ
وَجِهَادُكُمْ فِي سَبِيلِهِ فَتَرْتَضُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ
بِأَمْرٍ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

25. अल्लाह बहुत से स्थानों पर तथा हुनैन¹ के दिन तुम्हारी सहायता कर चुका है जब तुम को तुम्हारी अधिकता पर गर्व था तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, तथा तुम पर

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي تَرَاتُفٍ كَثِيرٍ ۖ
وَفِيَوْمِ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كُرُوفُكُمْ فَلَمْ
تَكُنْ مَعَكُمْ سَبِيحًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ
بِمَا رَحَبَتْ لَكُمْ وَلَكِنَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

- 1 «हुनैन» मक्का तथा नाइफ के बीच एक वादी है। वही पर यह युद्ध मन् 8 हिजरी में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। आप को मक्का में यह सूचना मिली कि हवाजिन और मकीफ कबीले मक्का पर आक्रमण करने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। जिस पर आप बारह हजार की सेना लेकर निकले। जब कि शत्रु की संख्या केवल चार हजार थी। फिर भी उन्होंने ने अपने तीरों से मुसलमानों का मुँह फेर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के कुछ साथी रणक्षेत्र में रह गये अन्ततः फिर इस्लामी सेना ने व्यवस्थित हो कर विजय प्राप्त की (इब्ने कमीर)

धरती अपने विस्तार के हाते मकीर्ण (तंग) हो गई, फिर तुम पीठ दिखा कर भागो।

26. फिर अब्राह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर शान्ति उतारी। तथा ऐसी सेनायें उतारी जिन्हें तुम ने नहीं देखा¹। और काफिरों को यातना दी। और यही काफिरों का प्रतिकार (बदला) है।

27. फिर अब्राह इस के पश्चात् जिसे चाहे क्षमा कर दे² और अब्राह अति क्षमाशील दयावान् है।

28. हे ईमान वाले! मुशरिक (मिश्रणवादी) मलीन है। अतः इस वर्ष³ के पश्चात् वह सम्मानित मस्जिद (काँया) के समीप भी न आये। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय⁴ हो तो अब्राह तुम्हें अपनी दया से धनी कर देगा, यदि वह चाहे। वास्तव में अब्राह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

29. (हे ईमान वाले!) उन से युद्ध करो जो न तो अब्राह पर (सत्य) ईमान लाते और न अन्तिम दिन (प्रलय) पर। और न जिसे अब्राह और उस के

لَمْ أَنْزِلْ اللَّهُ سِكِّينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزِلْ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذِّبْ الْكَافِرِينَ كَمَا دَاوَدُكَ حِزْرًا الْكَافِرِينَ

لَمْ يَتُوبَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نجسٌ فَلَا يَمَسُّوا التَّسْبِيحَ الْحَرَامَ بَعْدَ طَهْرِهِمْ هَذَا آتٍ إِنْ جَعَلْتُمْ عِيْلَةً فَتُوفَّ بِعَمَلِكُمْ وَاللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِن شَاءَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

فَاذِلُّوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا يَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَبُذِلُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ

1 अर्थात् फरिश्ते भी उतारे गये जो मुसलमानों के साथ मिल कर काफिरों से जिहाद कर रहे थे। जिन के कारण मुसलमान विजयी हुये और काफिरों को बंदी बना लिया गया जिन को बाद में मुक्त कर दिया गया।

2 अर्थात् उस के सन्धर्म इस्लाम को स्वीकार कर लेने के कारण

3 अर्थात् सन् 9 हिजरी के पश्चात्

4 अर्थात् उन से व्यापार न करने के कारण। अपवित्र होने का अर्थ शिर्क के कारण मन की मलीनता है। (इब्ने कसीर)

रसूल ने हराम (वर्जित) किया है उसे हराम (वर्जित) समझते हैं, न सन्धर्म को अपना धर्म बनाते, उन में से जो पुस्तक दिये गये हैं यहाँ तक कि वह अपने हाथ से जिज्या¹ दे और वह अपमानित हो कर रहें।

الْمُؤْمِنِينَ أَوْنُوا الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا
الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ مُسْتَبْرُونَ ٨

30. तथा यहूद ने कहा कि उजैर अब्राह का पुत्र है। और नसारा (ईसाईयों) ने कहा कि मसीह अब्राह का पुत्र है। यह उन के अपने मुंह की बातें हैं। वह उन के जैसी बातें कर रहे हैं जो इन से पहले काफिर हो गये। उन पर अब्राह की मार! वह कहाँ बहके जा रहे हैं।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ
النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهَوْنَ قَوْلَ الْبَنِينَ
كَفَرُوا فَمِنْ قَسَلٍ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ أَنْ
يُؤْتَلَكُونَ ٩

31. उन्होंने ने अपने विद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को अब्राह के सिवा पूज्य² बना लिया। तथा मरयम के पुत्र मसीह को, जब कि उन्हें जो आदेश दिया गया था, इस के सिवा कुछ न था कि एक अब्राह की इबादत (वन्दना) करें। कोई पूज्य नहीं है परन्तु वही। वह उस में पवित्र है जिसे उस का साझी बना रहे हैं।

تَتَّخِذُوا أَحِبَّاءَهُمْ وَرُفَبَاءَهُمْ أَرْبَابًا
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ
وَمَا أَمْرُهُ إِلَّا بَعْدُ وَإِلَهُ الْوَاحِدُ لَا
إِلَهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ١٠

32. वे चाहते हैं कि अब्राह के प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा³ दें और अब्राह

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ آيَاتِهِمْ فَاعْلَمُوا

1 जिज्या अर्थात् रक्षा कर। जो उस रक्षा का बदला है जो इस्लामी देश में बसे हुये अहले किताब से इसलिये लिया जाता है ताकि वह यह सोचें कि अब्राह के लिये जकात न देने और गुमराही पर अड़े रहने का मूल्य चुकाना कितना बड़ा दुर्भाग्य है जिस में वह फँसे हुये हैं।

2 हदीस में है कि उन के बनाये हुये वैध तथा अवैध को मानना ही उन को पूज्य बनाना है। (निर्मिजी 2471- यह सहीह हदीस है।)

3 आयत का अर्थ यह है कि यहूदी ईसाई तथा काफिर स्वयं तो कुपध है ही वह

अपने प्रकाश को पूरा किये बिना नहीं रहेगा यद्यपि काफ़िरो को बुरा लगे।

33. उसी ने अपने रसूल¹ को मार्गदर्शन तथा सन्धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है ताकी उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे² यद्यपि मिश्रणवादियों को बुरा लगे।

34. हे ईमान वालों! बहुत से (अहले किताब के) विद्वान तथा धर्माचारी (संत) लोगों का धन अवैध खाने है। और (उन्हें) अस्त्राह की राह से रोकते हैं तथा जो सोना-चाँदी एकत्र कर के रखने है और उसे अस्त्राह की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुखदायी यातना की शुभसूचना सुना दें।

35. जिस (प्रलय के) दिन उसे नरक की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथों तथा पाश्वों (पहलू) और पीठों को दागा जायेगा (और कहा जायेगा) यही है, जिसे तुम एकत्र कर रहे थे तो (अब) अपने संचित किये धनो का स्वाद चखो।

36. वास्तव में महीनों की संख्या बारह महीने है अस्त्राह के लेख में जिस दिन से उसने आकाशों तथा धरती

وَيَأْتِي اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُخَيَّرَ نُورُهُ وَلَوْ كَرِهَ
الْكُفَرَاءُ ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ
الشَّيْكَوُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَعْيَانِ
وَالزُّهْمَانِ لَمَّا كُنْتُمْ أَقْوَامًا
يَا لِبَاسٍ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ يَكْتُمُونَ الذَّهَبَ وَالنَّعْصَةَ وَلَا
يُفْضِلُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ
أَلِيمٍ ۝

يَوْمَ يُحْمَى عَلَيْكَ فِي نَارٍ جَهَنَّمَ تَتَكَلَّى بِمَا
كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ وَيَوْمَ يُقْرَءُ عَذَابُكُمْ
أَمَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ
شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

सन्धर्म इस्लाम से रोकने के लिये भी धोखा-धड़ी से काम लेते हैं जिस में वह कदापि सफल नहीं होंगे।

1 रसूल से अभिप्रेत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

2 इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि इस समय पूरे संसार में मुसलमानों की संख्या लगभग दो अरब है। और अब भी इस्लाम पूरी दुनिया में तेजी से फैलता जा रहा है।

की रचना की है। उन में स चार हरा म (सम्मानित) ¹ महीने हैं। यही सीधा धर्म है। अतः अपन प्राणों पर अत्याचार ² न करो तथा मिश्रणवादियों से सब मिलकर युद्ध करो। जैसे वह तुम से मिल कर युद्ध करते हैं और विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

37. नमी ³ (महीनों को आगे पीछे करना) कुफ़र (अधर्म) में अधिकता है। इस से काफिर कुपथ किये जाते हैं। एक ही महीने को एक वर्ष हलाल (वैध) कर देते हैं, तथा उम्मी को दूसरे वर्ष हरा म (अवैध) कर देते हैं। तार्किक अल्लाह ने सम्मानित महीनों की जो गिनती निश्चित कर दी है उसे अपनी गिनती के अनुसार करके अवैध महीनों को वैध कर लें। उन के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं। और अल्लाह काफिरों को सुपथ नहीं दर्शाता।

38. हे ईमान वाले! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाये कि अल्लाह की राह में निकलो तो धरती के बोझ बन जाते हो, क्या तुम आखिरत

وَلَا رُخْصَ مِنْهَا أَرْبَعَةَ حُرُمَاتٍ ذَٰلِكَ
الْقِيَاسُ الْقَيُّومُ فَلَا تَغْلِبُوا فِيهِمْ
أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً
كَمَا يَقَاتِلُونََكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٨﴾

إِنَّهَا الْقِيَمَةُ بِإِذْنِ الْكَافِرِ يُصَلُّ بِه
الْقِيَمَةُ كَقَرُّوا بِهْمُونَ عَامًا وَبِهْمُونَ عَامًا
لِيُؤْخَذُوا بِهَذَا مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُجَنَّبُوا مَا حَرَّمَ
اللَّهُ رَبِّ لَكُمْ سُبُوهُ أَعْمَالُكُمْ وَأَنَّكُمْ
لَقَوْمٌ كَارِهِينَ ﴿٣٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا تَكْفُرُوا قِيلَ لَكُمْ تَفُورُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ قُلْتُمْ لَا رُخْصَ لَكُمْ فِي رُخْصِ اللَّهِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَعْلَمُونَ

1 जिन में युद्ध निषेध है। और वह जुलकादा, जुल हिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के अर्बी महीने हैं। (बुखारी 4662)

2 अर्थात् इन में युद्ध तथा रक्तपात न करो, इन का आदर करो।

3 इस्लाम से पहले मक्का के मिश्रणवादी अपने स्वार्थ के लिये सम्मानित महीनों साधारणतः मुहर्रम के महीने को सफर के महीने से बदल कर युद्ध कर लेते थे। इसी प्रकार प्रत्येक तीन वर्ष पर एक महीना अधिक कर लिया जाता था ताकि चाँद का वर्ष सूर्य के वर्ष के अनुसार रहे। क़र्आन ने इस क़ुरीअत का खण्डन किया है और इसे अधर्म कहा है। (इब्ने कसीर)

(परलोक) की अपेक्षा ससारिक जीवन से प्रसन्न हो गये हों जब कि परलोक की अपेक्षा संसारिक जीवन के लाभ बहुत थोड़े हैं।^[1]

في الآخرة لا يقين

1 यह आयतें तबूक के युद्ध से सर्वान्वित हैं। तबूक मदीने और शाम के बीच एक स्थान का नाम है। जो मदीने से 610 कि-मी- दूर है।

सन 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना मिली कि रोम के राजा कैसर ने मदीने पर आक्रमण करने का आदेश दिया है। यह मुसलमानों के लिये अरब से बाहर एक बड़ी शक्ति से युद्ध करने का प्रथम अवसर था। अतः आप ने तय्यारी और कूच का एलान कर दिया। यह बड़ा भीषण समय था। इस लिये मुसलमानों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस युद्ध के लिये निकलें।

तबूक का युद्ध मक्का की विजय के पश्चात् ऐसे समाचार मिलने लगे कि रोम का राजा कैसर मुसलमानों पर आक्रमण करने की तय्यारी कर रहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह सुना तो आप ने भी मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उस समय स्थिति बड़ी गंभीर थी। मदीना में अकाल था। कड़ी धूप तथा खजूरों के पकने का समय था। सवारी तथा यात्रा के संसाधन की कमी थी। मदीना के मुनाफिक अबू आमीर राहिब के द्वारा गम्मान के इन्साइ राजा और कैसर से मिलने हुये थे। उन्होंने मदीना के पास अपने षड्यंत्र के लिये एक मस्जिद भी बना ली थी। और चाहते थे कि मुसलमान पराजित हो जायें वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का उपहास करते थे और तबूक की यात्रा के बीच आप पर प्राण घातक आक्रमण भी किया। और बहुत से द्विधावादियों ने आप का साथ भी नहीं दिया और झूठे बहाने बना लिये। रजब सन 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस हजार मुसलमानों के साथ निकले। इन में दस हजार सवार थे। तबूक पहुँच कर पता लगा कि कैसर और उस के सहयोगियों ने माहूम खो दिया है। क्योंकि इस से पहले मूता के रण में तीन हजार मुसलमानों ने एक लाख इन्साइयों का मुकाबला किया था। इसलिये कैसर तीस हजार की सेना से भिड़ने का साहस न कर सका। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबूक में बीस दिन रह कर रोमियों के आधीन इस क्षेत्र के राज्यों को अपने आधीन बनाया। जिस से इस्लामी राज्य की सीमायें रोमी राज्य की सीमा तक पहुँच गई। जब आप मदीना पहुँचे तो द्विधावादियों ने झूठे बहाने बना कर क्षमा माँग ली। तीन मुसलमान जो आप के साथ आलस्य के कारण नहीं जा सके थे और अपना दोष स्वीकार कर लिया था आप ने उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। किन्तु अल्लाह ने उन तीनों को भी उन के सत्य के कारण क्षमा कर दिया। आप ने उस मस्जिद को भी गिराने का आदेश दिया जिसे मुनाफिकों ने अपने षड्यंत्र का केन्द्र बनाया था।

39. यदि तुम नहीं निकलोगे, तो तुम्हें अल्लाह दुःखदायी यातना देगा, तथा तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा। और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

40. यदि तुम उस (नबी) की सहायता नहीं करोगे तो अल्लाह ने उस की सहायता उस समय¹ की है जब क़ाफ़िरो ने उसे (मक्का से) निकाल दिया। वह दो में दूसरे धो। जब दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहे थे: उदासीन न हो, निश्चय अल्लाह हमारे साथ है।² तो अल्लाह ने अपनी ओर से शान्ति उतार दी, और आप को ऐसी सेना से समर्थन दिया जिसे तुम ने नहीं देखा। और क़ाफ़िरो की बात नीची कर दी। और अल्लाह की बात ही ऊँची रही। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

41. हल्के³ होकर और बोझल (जैसे हो)

إِلَّا تَتَذَكَّرُوا يُعَذِّبْكُمْ مَتَاعًا طَوِيلًا وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ عَلَيْهِمْ أَن يَضْحَكُوا شَرًّا ۚ

إِلَّا تَتَذَكَّرُوا فَقَدْ ضَلَّ السَّبِيلَ ۚ وَلَئِنْ لَمْ يَأْتِ الْفَارُوقَ يُقُولُ لِمَ أَجِئْتُهُ لَوْلَا أَنِّي كُنْتُ مِنَ الْكَافِرِينَ ۚ وَلَئِنْ لَمْ يَأْتِ الْفَارُوقَ يُقُولُ لِمَ أَجِئْتُهُ لَوْلَا أَنِّي كُنْتُ مِنَ الْكَافِرِينَ ۚ وَلَئِنْ لَمْ يَأْتِ الْفَارُوقَ يُقُولُ لِمَ أَجِئْتُهُ لَوْلَا أَنِّي كُنْتُ مِنَ الْكَافِرِينَ ۚ

يُفِرُّوْا جُنْدًا فَأَتَوْا عَلَىٰ آلِهِمْ يُلَاحِظُهُمْ

1 यह उस अवसर की चर्चा है जब मक्का के मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बध कर देने का निर्णय किया। उसी रात आप मक्का से निकल कर सौर पर्वत नामक गुफा में तीन दिन तक छुपे रहे। फिर मदीना पहुँचे। उस समय गुफा में केवल आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक रजियल्लाहु अन्हु आप के साथ थे।

2 हदीस में है कि अबू बक्र (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि मैं गुफा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था। और मैं ने मुश्रिकों के पैर देख लिये। और आप ने कहा यदि इन में से कोई अपना पैर उठा दे तो हमें देख लेगा। आप ने कहा उन दो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है। (सहीह बुखारी 4663)

3 संमाधन हो या न हो।

निकल पड़ो। और अपने धनो तथा प्राणों से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो।

42. (हे नबी!) यदि लाभ समीप और यात्रा सरल होती तो यह (मुनाफिक) अवश्य आप के साथ हो जाते। परन्तु उन को मार्ग दूर लगा, और (अब) अल्लाह की शपथ लेंगे कि यदि हम निकल सकते, तो अवश्य तुम्हारे साथ निकल पड़ते, वह अपना विनाश स्वयं कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि वे वास्तव में झूठे हैं।

43. (हे नबी!) अल्लाह आप को क्षमा करे। आप ने उन्हें अनुमति क्यों दे दी? यहाँ तक कि आप के लिये जो सन्धे है उजागर हो जाते, और झूठों को जान लेते।

44. आप से (पीछे रह जाने की) अनुमति वह नहीं माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखने हों कि अपने धनो तथा प्राणों से जिहाद करेंगे। और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भौली जानता है।

45. आप से अनुमति वही माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (परलोक) पर ईमान नहीं रखते और अपने संदेह में पड़े हुये हैं।

46. यदि वे निकलना चाहते तो अवश्य उस के लिये कुछ तय्यारी करते। परन्तु अल्लाह को उन का जाना

وَأَقْسَمُوا فِي سُبْحَانَ اللَّهِ بِذَلِكَ كَمَا أَنْتُمْ كَاذِبُونَ ۝

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا
لَاجْتَمَعُوا وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْهِمُ السَّعَةِ
وَيَعْرِضُونَ بِاللَّهِ لَوْ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا
مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتَّى
يَسْتَأْذِنَ لَكَ الْبَائِسَ صَافِي السَّلَٰمِ
الْكَاذِبِينَ ۝

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الْبَائِسَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَآزَوَاتُهُمْ قُلُوبُهُمْ قَاهُونَ
رَبُّهُمْ يَرْفَعُ دُونَهُ ۝

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً
وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انشِعَارَهُمْ فَتَبَطَّلَهُمُ

अप्रिय था, अन- उन्हें आलसी बना दिया। तथा कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो।

47. और यदि वह तुम में निकलते तो तुम में बिगाड़ ही अधिक करना और तुम्हारे बीच उपद्रव के लिये दौड़ धूप करना और तुम में वह भी है जो उन की बानों पर ध्यान देने है। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँती जानता है।

48. (हे नबी!) वह इस में पहले भी उपद्रव का प्रयास कर चुके हैं, तथा आप के लिये बानों में हेर फेर कर चुके हैं। यहाँ तक कि मृत्यु आ गया, और अल्लाह का आदेश प्रभुत्वशाली हो गया, और यह बान उन्हें अप्रिय है।

49. उन में से कोई ऐसा भी है जो कहता है: आप मुझे अनुमति दे दें। और परीक्षा में न डालें। मुन लो। परीक्षा में तो यह पहले ही में पड़े हुए है। और वास्तव में नरक काफिरों को घेरी हुयी है।

50. (हे नबी!) यदि आप का कुछ भना होता है तो उन (द्विविधावादियों) को बुरा लगता है। और यदि आप पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं: हम ने पहले ही अपनी सावधानी बरत ली थी। और प्रसन्न होकर फिर जाते हैं।

51. आप कह दें हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है। वही हमारा सहायक है। और अल्लाह ही पर

وَقَلِيلٌ اِتَّعَدُوْهُ لِقَوْمٍ مُّذِيْبِيْنَ ۝

لَوْ خَرَجُوْا مِنْكُمْ تَارَةً اَوْ كُمْ اِلَّا خَبَسًا اَوْ لَا اَوْضَعُوْا اِلَيْكُمْ يَبْغُوْنَكُمْ الْوَيْثُكَةَ وَفِيْكُمْ سَمْعُوْنَ لَهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْغٰلِبِيْنَ ۝

لَقَدْ اِسْتَفْعُوْا الْاَيْثُمَّ مِنْ قَبْلِ وَلَقَدْ اَلَكِ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَسْرَافُهُمْ ۝

وَمِنْهُمْ مَنْ يَّقُوْلُ سُدْنِيْٓ اِلٰى الْاَيْثُمَّ سَقَطُوْا اَمْرًا مِنْ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٍ بِالْكَافِرِيْنَ ۝

اِنْ لَّيْسَ لَكَ حَسَنَةٌ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِ مُصِيْبَةٍ يَقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَا اَمْرًا مِنْ قَبْلِ وَيَقُوْلُوْا هُمْ لَيَرْمُوْنَ ۝

قُلْ لَنْ يُصِيْبَكُمْ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْتُمْ مِّنْ اٰمِلِيْنَ ۝

ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये।

52. आप उन से कह दें कि तुम हमारे बारे में जिस की प्रतीक्षा कर रहे हो वह यही है कि हमें दो¹ भलाइयों में से एक मिल जाये। और हम तुम्हारे बारे में इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से यातना देता है या हमारे हाथों से। तो तुम प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

53. आप (मुनाफिकों से) कह दें कि तुम स्वेच्छा दान करो अथवा अनिच्छा, तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा। क्यों कि तुम अवजाकारी हो।

54. और उन के दानों के स्वीकार न किये जाने का कारण इस के सिवाय कुछ नहीं है कि उन्होंने ने अल्लाह और उसके रमूल के साथ कुफ्र किया है। और वह नमाज के लिये आलसी होकर आते हैं तथा दान भी करने हैं तो अनिच्छा करने हैं।

55. अतः आप को उन के धन तथा उनकी संतान चकित न करो। अल्लाह तो यह चाहता है कि उन्हें इन के द्वारा ससारिक जीवन में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफिर हों।

56. वह (मुनाफिक) अल्लाह की शपथ लेकर कहते हैं कि वह तुम में से है,

قُلْ مَنِ الرَّاغِبُونَ إِلَىٰ الْحَسَنَاتِ وَيَخْتَفُونَ بَيْنَ يَدَيْ يَوْمَ يُصِيبُكُمُ اللَّهُ يَغْدِلْ هَٰ مِنْ غَدَاةٍ أَوْ يُنذِرْ يَأْتِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا سَعَدْنَا مِنْ عَمَلِكُمْ ۝

قُلْ أُوذِيَ وَأُطْعِمًا وَلَا تُقْبَلُ مِنْكُمْ ۝

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُعَلِّقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهِونَ ۝

لَا تَحْزَنْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا رِزْقُ اللَّهِ يُغْفَرُ لَهُمْ فِي الْحَيَاةِ وَالْآخِرَةِ ۝

وَيَجْعَلُونَ بِاللَّهِ لَهْمًا لِّسَعْيِهِمْ وَمَا هُمْ بِمَعْمُورِينَ

1 दो भलाइयों में अभिप्रायः विजय या अल्लाह की राह में शहीद होना है। (इब्ने कसीर)

जब कि वह तुम में से नहीं है, परन्तु भयभीन लोग है

وَلِكُلِّهِمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ۝

57. यदि वह कोई शरणगार अथवा गुफा या प्रवेश स्थान पा जायें तो उस की ओर भागते हुये फिर जायेंगे।

لَوْ يَدُونَ مَسْجِدًا مَّغْرُوبًا أَوْ مَدَنًا مَّأْوًى لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَعُونَ ۝

58. (हे नबी!) उन (मुनाफ़िकों) में से कुछ जकात के वितरण में आप पर आक्षेप करते हैं। फिर यदि उन्हें उस में से कुछ दे दिया जाये तो प्रसन्न हो जाते हैं और यदि न दिया जाये तो तुरन्त अप्रसन्न हो जाते हैं।

وَمِنْهُمْ مَن يَسْتَمِرُّكَ فِي إِسْدَاقٍ قَدْ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ وَإِنَّ لَأَكْثَرَهُمْ يَفْقَهُونَ ۝

59. और क्या ही अच्छा होता यदि वह उस से प्रसन्न हो जाते जो उन्हें आवाह और उस के रसूल ने दिया है। तथा कहते कि हमारे लिये अल्लाह काफी है। हमें अपने अनुग्रह से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा, तथा उस के रसूल भी हम तो उसी की ओर रुचि रखते हैं।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ۝

60. जकात (देय, दान) केवल फकीरों¹, मिस्कीनों और कार्य-कर्ताओं² के लिये, तथा उन के लिये जिन के दिलों को जोड़ा जा रहा है।³ और दाम मुक्ति तथा ऋणियों (की सहायता) के लिये, और अल्लाह की

إِنَّمَا الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالسَّكِينِ وَالْمُعَلِّمِينَ عَلَيْهِمُ وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَرَامِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَبَيْنَ يَدَيْهِمْ رِزْقًا مِنَ اللَّهِ وَرَحْمَةً عَمِيرًا حَكِيمًا ۝

1 कुर्आन ने यहाँ फकीर और मिस्कीन के शब्दों का प्रयोग किया है। फकीर का अर्थ है जिस के पास कुछ न हो। परन्तु मिस्कीन वह है जिस के पास कुछ धन हो मगर उस की आवश्यकता की पूर्ति न होती हो।

2 जो जकात के काम में लगे हों।

3 इस से अभिप्राय वह हैं जो नये नये इस्लाम लाये हों। तो उन के लिये भी जकात है या जो इस्लाम में रुचि रखते हों और इस्लाम के सहायक हों।

राह में तथा यात्रियों के लिये है।
अन्नाह की ओर से अनिवार्य (दिय) है।¹
और अन्नाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

- 61 तथा उन(मुनाफिकों) में से कुछ नबी को दुख देते हैं, और कहते हैं कि वह धड़े सुनवा² है। आप कह दें कि वह तुम्हारी भलाई के लिये ऐसे है। वह अन्नाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों की बात का विश्वास करते हैं, और उन के लिये दया है जो नुम में से ईमान लाये हैं। और जो अन्नाह के रसूल को दुख देते हैं उन के लिये दुखदायी यातना है।

- 62 वह तुम्हारे समक्ष अन्नाह की शपथ

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ
هُوَ آذُنٌ قُلْ أَذُنٌ غَيْرُكَ لَكُمْ يُؤْمِنُ يَلْمُزُ
وَيُؤْمِنُ يَلْمُزُ يَسْتَسْتَفِئُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ بَيْنَ
أَيْمَانِكُمْ وَاللَّيْلِ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٥

يَعْبِثُونَ يَلْمُزُكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ وَيُلْغُوا

- 1 संसार में कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस ने दीन दुःखियों की सहायता और सेवा की प्रेरणा न दी हो। और उसे इबादत (बंदना) का अनिवार्य अंश न कहा हो परन्तु इस्लाम की यह विशेषता है कि उस ने प्रत्येक धनी मुसलमान पर एक विशेष कर-निर्धारित कर दिया है जो उस पर अपनी पूरी आय का हिसाब करके प्रत्येक वर्ष देना अनिवार्य है। फिर उसे इतना महत्त्व दिया है कि कर्मों में नमाज के पश्चात् उसी का स्थान है। और कर्भान में दोनों कर्मों की चर्चा एक साथ करके यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किसी समुदाय में इस्लामी जीवन के सब से पहले यही दो लक्षण हैं। नमाज तथा जकात, यदि इस्लाम में जकात के नियम का पालन किया जाये तो समाज में कोई गरीब नहीं रह जायेगा और धनवानों तथा निर्धनों के बीच प्रेम की ऐसी भावना पैदा हो जायेगी कि पूरा समाज सुखी और शान्तिमय बन जायेगा। ब्याज का भी निवारण हो जायेगा तथा धन कुछ हाथों में सीमित नहीं रह कर उस का लाभ पूरे समाज को मिलेगा। फिर इस्लाम ने इस का नियम निर्धारित किया है जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा और यह भी निश्चित कर दिया कि जकात का धन किन को दिया जायेगा, और इस आयत में उन्हीं की चर्चा की गई है जो यह हैं: 1. फकीर, 2. मस्कीन 3. जकात के कार्यकर्ता, 4. नये मुसलमान 5. दास-दासी 6. कृषी 7. धर्म के रक्षक 8. और यात्री। अन्नाह की राह से अभिप्राय वह लोग हैं जो धर्म की रक्षा के लिये काम कर रहे हैं।

- 2 अर्थात् जो कही मान लेते हैं।

लेते हैं, ताकि तुम्हें प्रसन्न कर लें। जब कि अल्लाह और उस के रसूल इस के अधिक योग्य हैं कि उन्हें प्रसन्न करें, यदि वह वास्तव में ईमान वाले हैं।

وَرَسُولُهُ أَتَىٰ لَكَ بِبُرْهَانٍ وَإِنْ كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ۝

63. क्या वह नहीं जानते कि जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिये नरक की अग्नि है? जिस में वह सदावासी होंगे? और यह बहुत बड़ा अपमान है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
كَانَ لَهُ نَارُ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَٰلِكَ
الْجَزَاءُ الْعَظِيمُ ۝

64. मुनाफिक (द्विधावादी) इस में डरते हैं कि उन¹ पर कोई ऐसी सूरह न उतार दी जाये जो उन्हें इन के दिलों की दशा बता दे। आप कह दें कि हंसी उड़ा लो निश्चय अल्लाह उसे खोल कर रहेगा जिस में तुम डर रहे हो।

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُكْرَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ
تَأْتِيهِمْ فِي قُلُوبِهِمْ تَلِي الشَّهَادَةِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ مُخَوِّدٌ مَّا عَدَّوْنَ ۝

65. और यदि आप² उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रहे थे। आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?

وَلَيْسَ مَا كُنْتُمْ لَيَقُولُونَ إِنَّا كُنَّا نَعُوضُ
وَنُلْعَبُ ۚ قُلْ أَبَاغِدُ وَإِنِّي وَرَسُولُهُ كُنْتُمْ
كُنْتُمْ تَزِيدُونَ ۝

66. तुम बहाने न बनाओ, तुम ने अपने ईमान के पश्चान् कुफ्र किया है। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें तो भी एक गिरोह को अवश्य यातना देंगे। क्योंकि वही अपराधी है।

لَا تَعْتَبِرُوا ۚ قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ تَعْفُ
عَنْ طَائِفَةٍ مِّنْكُمْ تَعَذِّبُ طَائِفَةً
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَانُوا مَجْرِمِينَ ۝

67. मुनाफिक पुरुष तथा स्त्रियों सब

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ

1 ईमान वालों पर।

2 तबूक की यात्रा के बीच मुनाफिक लोग, नबी तथा इस्लाम के विरुद्ध बहुत सी दुःखदायी बात कर रहे थे।

एक दूसरे जैसे हैं। वह बुराई का आदेश देते तथा भलाई से रोकते हैं और अपने हाथ बंद किये रहते¹ हैं। वे अल्लाह को भूल गये, तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला² दिया। वास्तव में मुनाफिक ही भ्रष्टाचारी हैं।

68. अल्लाह ने मुनाफिक पुरुषों तथा स्त्रियों और काफिरों को नरक की अग्नि का वचन दिया है। जिस में वे सदावामी होंगे। वही उन को प्रयाप्त है। और अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

69. इन की दशा वही हुई जो इन से पहले के लोगों की हुई। वह बल में इन से कड़े और धन तथा संतान में इन से अधिक थे। तो उन्होंने ने अपने (संसारिक) भाग का आनन्द लिया, अतः तुम भी अपने भाग का आनन्द लो जैसे तुम से पूर्व के लोगों ने आनन्द लिया। और तुम भी उलझने हो जैसे वह उलझते रहे, उन्हीं के कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ गये, और वही क्षति में हैं।

70. क्या इन को उन के समाचार नहीं पहुँचे जो इन से पहले थे: नूह की जानि तथा आद और समूद तथा इब्राहीम की जानि के और मद्यन³ के वासियों

يَا مَرْزُوقَ يَا مُتَكَرِّوِينَ عَنْ الْمَعْرُوفِ
وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ تَسْأَلُهُمْ فَمِمَّ يَوْمَئِذٍ
الْمُتَّقِينَ هُمْ السَّيْقُوفُونَ

وَسَدَّ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُفْسِقِينَ وَالْكَافِرَ تَارَ
جَهَنَّمَ غُرُوبًا يَنْسِفُ اللَّهُ عَنْهُمْ وُجُوهَهُمْ
اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ

كَانَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا تَشْدًا يَنْكُرُونَ قُوَّةَ
وَأَكْثَرُ مَوَالِدًا وَأَوَّلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِحُلَا قِيَمِهِمْ
فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِحُلَا قِيَمِهِمْ كَبِ اسْتَمْتَعْتُمُ الْبَارِئِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِحُلَا قِيَمِهِمْ وَخُصِمْتُمْ كَانُوا
خَاصُّوا أَوْلِيَاءَ تَحِيَّطُ أَفْعَدُ لِقَامِهِمْ الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةَ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِرُونَ

أَنَّهُ يَا أَيُّهَا رَبِّ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمُ نُوحٍ
وَعَادٌ وَثَمُودٌ وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابُ
مَدْيَنَ وَالنُّؤَيْمِ كَيْتَ أَتَمَّهُمْ نُسْلُهُمْ يَا بَلِيَّةَ

1 अर्थात् दान नहीं करने।

2 अल्लाह के भुला देने का अर्थ है उन पर दया न करना।

3 मद्यन् के वासी शुऐब अनैहिम्मलाम की जानि थे।

के, और उन वस्तियों के जो पलट दी¹ गई। उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ लाये, और ऐसा नहीं हो सकता था कि अब्राह उन पर अत्याचार करता, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार² कर रहे थे।

71. तथा ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ एक-दूसरे के सहायक हैं। वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं, और नमाज की स्थापना करते तथा जकात देने हैं। और अब्राह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। इन्हीं पर अब्राह दया करेगा, वास्तव में अब्राह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

72. अब्राह ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों का वचन दिया है जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह उस में सदावासी होंगे, और स्थाई स्वर्गों में पवित्र आवासों का। और अब्राह की प्रसन्नता इन सब से बड़ा प्रदान होगी वही बहुत बड़ी सफलता है।

73. हे नबी! काफिरों और मुनाफिकों से जिहाद करो, और उन पर सख्ती करो, उन का आवास नरक है। और वह बहुत बुरा स्थान है।

74. वह अब्राह की शपथ लेते हैं कि उन्हों

قَبَّ كَانَ لَهُ يَطْرُقُهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَ رُحُومِهِ ۝

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ حَبِيدِينَ فِيهَا وَمَسْكِنٌ فَخِيمٌ فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا مِنَ الْغَايَةِ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَا أُوْلَئِكَ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ

1 इस से अभिप्राय लूत अलैहिस्सलाम की जाति है। (इब्ने कसीर)

2 अपने रसूलों को अस्वीकार कर के।

ने यह¹ बात नहीं कही। जब कि वास्तव में उन्होंने कफ़ की बात कही⁽²⁾ है। और इस्लाम ले आने के पश्चात् काफ़िर हो गए हैं। और उन्होंने ऐसी बात का निश्चय किया था जो वे कर नहीं सके। और उन को यही बात बुरी लगी कि अब्राह और उस के रसूल ने उन को अपने अनुग्रह में धनी³ कर दिया। अब यदि वह क्षमायाचना कर लें तो उन के लिये उत्तम है। और यदि विमुख हों तो अब्राह उन्हें दुखदायी यातना लोक तथा प्रलोक में देगा। और उन का धरती में कोई भरक्षक और सहायक न होगा।

75. उन में से कुछ ने अब्राह को वचन दिया था कि यदि वह अपनी दया से हमें (धन-धान्य) प्रदान करेगा तो हम अवश्य दान करेंगे और मुकर्मियों में हो जायेंगे।

76. फिर जब अब्राह ने अपनी दया से उन्हें प्रदान कर दिया तो उस से कजूसी कर गये और वचन से विमुख हो कर फिर गये।

77. तो इस का परिणाम यह हुआ कि उन

وَلَقَدْ رَوَّعْتُمْ بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَأَقْبَلُوا إِلَيْنَا
وَمَا تَقْصِرُونَ إِلَّا أَنْ أَعْسَهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ
قَضِيهِ قَالُوا يَتَّبِعُونَكَ خَيْرٌ أَلَهُمْ وَرَأَى
يَسْتَوُوا لَوْ يَعْلَمُ اللَّهُ عَذَابَ الْيَمِينِ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ أَوْ أَلَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ قُلُوبٍ وَلَا
تُؤْمِنُونَ

وَوَعَدْتُمْ مَنْ حَمَدَ اللَّهَ لَكُمْ إِنَّمَا مِنْ قَصِيرٍ
لَتَصَدَّقُنَّ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُسْلِمِينَ

فَلَمَّا آتَوْهُم مِّنْ قَضِيهِ يَحْمِلُوهُ بِهِ وَيَكُونُوا مِنْهُمْ
مُعْرِضُونَ

فَأَعْقَبَهُمْ نَارٌ فِي كُلِّ يَوْمٍ يَلْقَوْنَ فِيهَا قُلُوبَهُمْ
يَوْمَ يَلْقَوْنَ فِيهَا قُلُوبَهُمْ

1 अर्थात् ऐसी बात जो रसूल और मुसलमानों को बुरी लगे

2 यह उन बातों की ओर संकेत है जो द्विधावादियों ने नबूक की महीम के समय की थी। उन की ऐसी बातों के विवरण के लिये (देखिये: सूरह मुनाफिकून आयत: 7-8)

3 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने से पहले मदीने का कोई महत्व न था। आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं थी। जो कुछ था यहूदियों के अधिकार में था वह व्याज भक्षी थे शराब का व्यापार करने थे और अस्त्र-शस्त्र बनाते थे। आप के आगमन के पश्चात् आर्थिक दशा सुधर गई और व्यवसायिक उन्नति हुई।

के दिलों में द्विधा का रोग उस दिन तक के लिये हो गया कि यह अब्राह से मिले। क्यों कि उन्होंने ने उस वचन को भंग कर दिया जो अब्राह से किया था, और इस लिये कि वे झूठ बोलते रहे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا زِيْنَتَكُمْۙ وَكُلُوْا وَشَرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْاۚ وَمَا يُسْرِفُوْنَ هُمۡ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۲۰

78. क्या उन्हें इस का ज्ञान नहीं हुआ कि अब्राह उन के भेद की बातें तथा सुनगुन को भी जानता है? और वह सभी भेदों का अति ज्ञानी है।

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْۙ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلٰمُ الْغُیُوْبِ ۝۲۱

79. जिन की दशा यह है कि वह ईमान वालों में से स्वेच्छा दान करने वालों पर दानों के विषय में आक्षेप करते हैं तथा उन को जो अपने परिश्रम ही से कुछ पाते (और दान करते हैं) यह (मुनाफिक) उन से उपहास करने है, अब्राह उन से उपहास करता है। और उन्हीं के लिये दुःखदशयी जानना है।

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّهَّرِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْۙ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۲۲

80. (हे नबी!) आप उन के लिये क्षमा याचना करें अथवा न करें, यदि आप उन के लिये सत्तर बार भी क्षमायाचना करें तो भी अब्राह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, इस कारण कि उन्होंने ने अब्राह और उस के रसूल के साथ कुफ्र कर दिया। और अब्राह अवैज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

اَسْتَغْفِرُ لَهُمْۙ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرُ لَهُمْۙ فَاِنَّ تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْۙ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِۦۙ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الضّٰلِّيْنَ ۝۲۳

- 1 अर्थात् उन के उपहास का कुफल दे रहा है। अबू मसूऊद (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब हमें दान देने का आदेश दिया गया तो हम कमान के लिये बौझ लादने लगे ताकि हम दान कर सकें और अबू अकील (रजियल्लाहु अन्हु) आधा साअ (सबा किल्लो) लाया और एक व्यक्ति उन से अधिक लेकर आया तो मुनाफिकों ने कहा: अब्राह को उस के (थोड़े से) दान की जरूरत नहीं और यह दिखावे के लिये (अधिक) लाया है। इसी पर यह आयत उतरी। (महीह बुखारी: 4668)

81. वे प्रसन्न¹ हुये जो पीछे कर दिये गये, अपने बैठे रहने के कारण अल्लाह के रसूल के पीछे। और उन्हें बुरा लगा कि जिहाद करे अपने धनो तथा प्राणों से अल्लाह की राह में, और उन्होंने ने कहा कि गर्मी में न निकलो। आप कह दें कि नरक की अग्नि गर्मी में इस से भीषण है, यदि वह समझने (तो ऐसी बात न करते)।

82. तो उन्हें चाहिये कि हमें कम, और रोयें अधिक। जो कुछ वे कर रहे है उस का बदला यही है।

83. तो (हे नबी!) यदि आप को अल्लाह इन (द्विधावादियों) के किसी गिराह के पास (तबूक से) वापस लाये और वह आप से (किसी दूसरे युद्ध में) निकलने की अनुमति मागें तो आप कह दें कि तुम मेरे साथ कभी न निकलोगे, और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध कर सकोगे। तुम प्रथम द्वार बैठे रहने पर प्रसन्न थे तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।

84. (हे नबी!) आप उन में से कोई मर जाये तो उस के जनाजे की नमाज कभी न पढ़ें और न उस की मर्माधि (कब्र) पर खड़े हों। क्योंकि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ्र किया है और अवजाकारी रहते हुये मरे² है।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعِدِهِمْ جِلْفَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

لِيُخْذَ حُكْمُ فَلْيَأْزِكُوا وَكَيْدَ كِبَرِهِمْ جَزَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

إِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى خَايَفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذِنْهُمْ لِمُخْرُجِهِمْ فَقُلْ إِنْ ظَنَنْتُمْ أَنِّي عَنْ عَهْدٍ عَبْدًا وَإِنْ يُفَالِحُوا مِنْكُمْ فَإِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقَعْرِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاعْبُدُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۝

وَلَا تَصِلْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ ثَلَاثَ أَهْدٍ وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهَا إِذْ هُمْ يُكْفَرُونَ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

1 अर्थात् मुनाफिक जो मदीना में रह गये और तबूक की यात्रा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गये।

2 सहीह हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुनाफिकों

85. आप को उन के धन तथा उन की संतान चिकित्त न करे, अल्लाह तो चाहता है कि इन के द्वारा उन्हें संसार में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकले कि वह काफिर हों

وَلَا تُصِيبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَ النَّاسَ بِمَا فِي الدُّنْيَا وَيُزَكِّقَ أَنْفُسَهُمْ فَمَوْكِرُونَ ﴿٨٥﴾

86. तथा जब कोई मूरह उतारी गई कि अल्लाह पर ईमान लाओ, तथा उस के रसूल के साथ जिहाद करो तो आप से उन (मुनाफिकों) में से समाई वालों ने अनुमति ली। और कहा कि आप हमें छोड़ दें। हम बैठने वालों के साथ रहेंगे।

وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنُوا وَلَوْ أَكْثَرُ الظُّلُمِ وَهُمْ يَوَدُّ أَنْ يُوَلَّوُنَا نَحْنُ الْمَغْلُوبُونَ ﴿٨٦﴾

87. तथा प्रमथ हो गये कि म्त्रियों के साथ रहें और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई। अतः वह नहीं समझते।

وَشُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْغَوَّيِّ وَطَبَعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾

88. परन्तु रसूल ने और जो आप के साथ ईमान लाये, अपने धनो और प्राणों से जिहाद किया, और उन्ही के लिये भलाईयाँ है, और वही सफल होने वाले हैं।

لَكِنَّ الرُّسُولَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾

89. अल्लाह ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार कर दिये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावामी होंगे, और यही बड़ी सफलता है।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾

90. और देहातियों में से कुछ बहाना करने वाले आये ताकि आप उन्हें अनुमति दें। तथा वह बैठे रह गये जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾

के मुख्या अब्दुल्लाह बिन उबय्य का जनाजा पड़ा तो यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4672)

झूठ बोला तो इन में से काफ़िरो को दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

91. निर्बलों तथा रोगियों और उन पर जो इतना नहीं पाने कि (तय्यारी के लिये) व्यय कर सकें कोई दोष नहीं, जब अब्राह और उस के रसूल के भक्त हों, तो उन पर (दोषारोपण) की कोई राह नहीं।

لَيْسَ عَلَى الضَّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يُمْسِكُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذْ انْصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُغْضِيِّينَ وَمَنْ يَجِدْ فَإِلَى اللَّهِ عَفْوٌ رَحِيمٌ ۝

92. और उन पर जो आप के पास जब आयें कि आप उन के लिये सवारी की व्यवस्था कर दें, और आप कहें कि, मेरे पास इतना नहीं कि तुम्हारे लिये सवारी की व्यवस्था करूँ, तो वह इस दशा में वापिस हुये कि शोक के कारण उन की आँखे आँसू बहा रही थीं।

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا اتَّوَكَّلُوا لَمْ يُغْنِ عَنْهُمْ كَيْدُكُمْ وَلَا يَضُرُّكُمْ لَئِيْلٌ مِّنَ الدَّاهِيَةِ حَزْبًا ۚ أَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ يَوْمَئِذٍ يُنْفِقُونَ ۝

93. दोष केवल उन पर है जो आप से अनुमति माँगते हैं जब कि वह धनी हैं। और वे इस से प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रह जायेंगे। और अब्राह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, इस लिये वह कुछ नहीं जानते।

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

94. वह तुम से बहाने बनायेंगे, जब तुम उन के पास (तबूक से) वापिस आओगे आप कह दें कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। अब्राह ने हमें तुम्हारी दशा बता दी है। तथा भविष्य में भी अब्राह

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذْ رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ فَبَلَّ لَا تَقْبَلُوا لَهُمْ تَوْفِيقًا تَكْفُرًا قَدْ بَيَّنَّا اللَّهُ مِنْ لَدُنْكُمْ وَاسْتَوَى إِلَهُكُمْ اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تَزِيدُونَ إِلَىٰ طَيْفٍ الْعَمَىٰ وَالْهَدَىٰ فَبَيَّنَّا لَكُمْ لَكُمْ تَعْمَلُونَ ۝

- 1 यह विभिन्न कबीलों के लोग थे जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुये कि आप हमारे लिये सवारी का प्रबंध कर दें। हम भी आप के साथ तबूक के जिहाद में जायेंगे। परन्तु आप सवारी का कोई प्रबंध न कर सके और वह रोते हुये वापिस हो गये। (इब्ने कसीर)

और उस के रमूल तुम्हारा कर्म देखेंगे फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के ज्ञानी (अब्राह) की ओर फेंरे जाओगे फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कर रहे थे।

95. वह तुम से अब्राह की शपथ खायेंगे, जब तुम उन की ओर वापिस आओगे ताकि तुम उन से विमुख हो जाओ। तो तुम उन से विमुख हो जाओ। वास्तव में वह मलीन है। और उन का आवास नरक है उस के बदले जो वह करते रहे।

96. वह तुम्हारे लिये शपथ खायेंगे, ताकि तुम उन से प्रसन्न हो जाओ, तो यदि तुम उन से प्रसन्न हो गये, तब भी अब्राह उग्रघनकारी लोगों में प्रसन्न नहीं होगा।

97. देहाती¹ अविश्वास तथा द्विवधा में अधिक कड़े और अधिक योग्य है कि उस (धर्म) की सीमाओं को न जानें, जिसे अब्राह ने उतारा है। और अब्राह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

98. देहातियों में कुछ ऐसे भी है जो अपने दिये हुए दान को अर्धदण्ड समझते हैं और तुम पर काल चक्र की प्रतीक्षा करते हैं। उन्हीं पर काल कुचक्र आ पड़ा है। और अब्राह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

99. और देहातियों में कुछ ऐसे भी है जो

يَسْتَعْجِلُونَ بِاللَّهِ لَكُمُ إِذْ أَتَاكُمْ إِلَهُكُمْ لِتَعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ وَهُمْ رِجْسٌ وَمَا أَوْفَوْهُمُ جَهَنَّمَ خَيْرًا مِنْهَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

يَسْتَعْجِلُونَ لَكُمْ لَتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنْ لِقَوْمٍ الْفَاسِقِينَ ۝

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَنْ يَعْزَلُوا عَنْهُ وَمَا أَسْرَفْنَا اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولٍ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّبِعُ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ مَا تَعْلَمُ وَلَا يَكُونُ يَكُونُ الدَّوَابُّ عَلَيْهِمْ ذِكْرًا ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

1 इस से अभिप्राय मदीना के आस पास के कबीले हैं।

अब्राह तधा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखते है, और अपने दिये हुये दान को अब्राह की समीप्ता तथा रसूल के आशीर्वादों का साधन समझते है। सुन लो! यह वास्तव में उन के लिये समीप्य का साधन है। शीघ्र ही अब्राह उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा, वास्तव में अब्राह अति क्षमाशील दयावान् है।

100. तथा प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन¹ और अनुसारी, और जिन लोगों ने मुकर्म के साध उन का अनुसरण किया अब्राह उन से प्रसन्न हो गया और वे उस से प्रसन्न हो गये। तथा उस ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार किये है जिन में नहरें प्रवाहित है वह उस में सदावामी होंगे वही बड़ी सफलता है।

101. और जो तुम्हारे आस पास ग्रामीण है उन में से कुछ मुनाफिक (द्विधावादी) है। और कुछ मदीना में है। जो (अपने) निफाक में अभ्यस्त (निपुण) है। आप उन्हें नहीं जानते, उन्हें हम जानते है। हम उन्हें दो बार² यातना देंगे। फिर घोर यातना की ओर फेर दिये जायेंगे।

الْأَجْرُ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتُ الرَّسُولِ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ
سَيَجْزِي اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنْ اللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝

وَالشَّيْطَانُ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ
وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
وَوَضَّاعِنَهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

وَمِنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ وَمِنْ
أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَنَافِقَةٌ وَاحِلٌ لِّلصَّالِقِينَ
لَا تُغْنِي عَنْهُمْ كَثْرَتُهُمْ وَلَوْ كَانُوا
أَعْيُنًا مُّحْسِنِينَ قَلِيلٌ مَّا يَذْكُرُونَ
إِلَىٰ عَذَابٍ مُّطَهَّرٍ ۝

1 प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन उन को कहा गया है जो मक्का से हिज्रत करके हुदैबिया की संधि सन् 6 से पहले मदीना आ गये थे। और प्रथम अग्रसर अनुसार मदीना के वह मुसलमान है जो मुहाजिरीन के सहायक बने और हुदैबिया में उपस्थित थे। (इब्ने कसीर)

2 संसार में तथा कब्र में फिर परलोक की घोर यातना होगी। (इब्ने कसीर)

102. और कुछ दूसरे भी है जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कुछ सुकर्म और कुछ दूसरे कुकर्म का मोश्न कर लिया है। आशा है कि: अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَيْهِمْ مِنَ الذِّكْرِ وَأَصْلَحُوا مِنْهُمْ
وَأَعْتَبُوا عَسَىٰ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

103. हे नबी! आप उन के धनो से दान लें, और उस के द्वारा उन (के धनो) को पवित्र और उन (के मनो) को शुद्ध करें। और उन्हें आशीर्वाद दें। वास्तव में आप का आशीर्वाद उन के लये संतोष का कारण है। और अल्लाह सब सुनने जानने वाला है।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا
وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ

104. क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता तथा (उन के) दानों को अंगीकार करता है? और वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَبْعَثُ النَّبِيَّاتَ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيمُ

105. और (हे नबी!) उन से कहो कि कर्म करते जाओ। अल्लाह तथा उस के रसूल और इमान वाले तुम्हारा कर्म देखेंगे। (फिर) उस (अल्लाह) की ओर फेंरे जाओगे जो परोक्ष तथा प्रत्यक्ष (छुपे तथा खुले) का ज्ञानी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे।

وَقُلْ اْعْمَلُوا فَسَيَرَىٰ اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَيُسَوِّدُهُ
وَالْمُؤْمِنُونَ وَهُمْ ذَوَاتُ رُلٍ خَلِيلٌ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ وَكَيْفَ تَعْلَمُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

106. और (इन के सिवाय) कुछ दूसरे भी है जो अल्लाह के आदेश के लिये विलायत¹ है। वह उन्हें दण्ड दे,

وَالْمَعْرُوفُ مَرْحُومٌ إِلَّا مَن لَّا يَتُوبْ لَهُمْ رَدًّا مَّا
يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

1 अर्थात् अपने विषय में अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह तीन व्यक्ति

अथवा उन को क्षमा कर दे तो
अब्राह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

107. तथा (द्विधावादियों में) वह भी है
जिन्होंने एक मस्जिद¹ बनाई,
इस लिये कि (इस्लाम को) हानि
पहुँचायें तथा कुफ्र करें, और
ईमान वालों में विभेद उत्पन्न करें,
तथा उस का घात-स्थल बनाने के
लिये जो इस से पूर्व अब्राह और
उस के रसूल से युद्ध कर² चुका
है। और वह अवश्य शपथ लेंगे कि
हमारा संकल्प भलाई के सिवा और
कुछ न था। तथा अब्राह साक्ष्य देता
है कि वह निश्चय मिथ्यावादी है।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضَرَارًا وَلَفْسًا
وَتَفْسِيرًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَمُضَادًّا لِّمَنْ
حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ
أَرَادْنَا إِلَّا لِطَغْيٍ وَإِنَّهُمْ لَمِنْ أَكْثَرِ
الْكَاذِبِينَ ۝

108. (हे नबी!) आप उस में कभी खड़े

لَا تَقْرَأُ فِيهِ أَبَدًا لِّلْمَسْجِدِ آتِينَ عَلَى الشَّعْرِ مِنْ

थे, जिन्होंने आप मल्लअब्राह अलैहि व सल्लम के तबूक से वापिस आने पर यह
कहा कि वह अपने आलम्य के कारण आप का साथ नहीं दे सकें। आप ने उन
से कहा कि अब्राह के आदेश की प्रतीक्षा करो। और आगामी आयत 117 में उन
के बारे में आदेश आ रहा है।

- 1 इस्लामी इतिहास में यह «मस्जिद जिरार» के नाम से याद की जाती है।
जब नबी मल्लअब्राह अलैहि व सल्लम मदीना आये तो आप के आदेश से "कुबा"
नाम के स्थान में एक मस्जिद बनाई गई। जो इस्लामी युग की प्रथम मस्जिद है।
कुछ मुनाफिकों ने उसी के पास एक नई मस्जिद का शनिर्माण किया। और जब
आप तबूक के लिये निकल रहे थे तो आप से कहा कि आप एक दिन उस में
नमाज पढ़ा दें। आप ने कहा कि यात्रा से वापसी पर देखा जायेगा और जब
वापिस मदीना के समीप पहुँचे तो यह आयत उतरी और आप के आदेश से
उसे ध्वस्त कर दिया गया। (इब्न कसीर)
- 2 इस से अभिप्रेत अबू आमिर राहिब है। जिस ने कुछ लोगों से कहा कि एक
मस्जिद बनाओ और जितनी शक्ति और अस्त्र शस्त्र हो सकें तैयार कर लो मैं
रोम के राजा कैसर के पास जा रहा हूँ। रोमियों की सेना लाऊँगा और मुहम्मद
तथा उस के साथियों को मदीना से निकाल दूँगा। (इब्न कसीर)

न हों। वास्तव में वह मस्जिद¹ जिस का शिलान्यास प्रथम दिन से अल्लाह के भय पर किया गया है वह अधिक योग्य है कि आप उस में (नमाज के लिये) खड़े हों। उस में ऐसे लोग हैं जो स्वच्छता से प्रेम² करते हैं और अल्लाह स्वच्छ रहने वालों से प्रेम करता है।

109. तो क्या जिस ने अपने निर्माण का शिलान्यास अल्लाह के भय और प्रसन्नता के आधार पर किया हो, वह उत्तम है अथवा जिस ने उस का शिलान्यास एक खाई के गिरने हुये किनारे पर किया हो, जो उस के साथ नरक की अग्नि में गिर पड़ा? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

110. यह निर्माण जो उन्होंने किया बराबर उन के दिलों में एक संदेह बना रहेगा। परन्तु यह कि उन के दिलों को खण्ड खण्ड कर दिया जाये, और अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

111. निःसन्देह अल्लाह ने इमान वालों के प्राणों तथा उन के धनो को इस के बदले खरीद लिया है कि उन के लिये स्वर्ग है वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं, वह मारते तथा मरते हैं। यह अल्लाह पर सत्य वचन

أُولَئِكَ يَوْمَئِذٍ كَانُوا تُقَوِّمُهُمْ وَيَوْمَئِذٍ
يُجْزَوْنَ أَنْ يَنْتَقِطُوا وَالْوَالِدَةُ يُؤْتِ الْمَكْفُورِينَ ۝

أَفَمَنْ أَشَسَّ بُنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَشَسَّ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شِقَا
خَوْبٍ مُّهِينٍ فَاتُفَارِقُهُ فِي نَارٍ حَمِيمٍ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الْهَيْبَةُ بِمَوَارِبِهِ فِي
قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقُتْلَهُمْ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَزِيزٌ عَلِيمٌ ۝

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ يُقَاتِلُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ سَوْعَدًا
عَلَيْهِمْ عَقَابُ النَّوْرِ وَلَئِنْ جُمِلَ الْغُرَابُ
وَمَنْ أَوْلَىٰ بِعَقَابِهِ مِنَ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوا

1 इस मस्जिद से अभिप्राय कुवा की मस्जिद है। तथा मस्जिद नववी शरीफ भी इसी में आती है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् शुद्धता के लिये जल का प्रयोग करते हैं।

है तौरात तथा इंजील और कूर्आन में। और अब्राह से बढ़ कर अपना वचन पूरा करने वाला कौन हो सकता है? अतः अपने इस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने किया। और यही बड़ी सफलता है।

112. जो क्षमा याचना करने, वंदना करने तथा अब्राह की स्तुति करने वाले, रोजा रखने तथा हकुअ और सजदा करने वाले भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने वाले, तथा अब्राह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं। और (हे नबी!) आप ऐसे ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दें।

113. किसी नबी तथा¹ उन के लिये जो ईमान लाये हों योग्य नहीं है कि मुशरिकों (मिश्रणवादियों) के लिये क्षमा की प्रार्थना करें। यद्यपि वह उन के समीपवर्ती हों, जब यह उजागर हो गया कि वास्तव में वह नारकी² हैं।

114. और इब्राहीम का अपने बाप के लिये क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिये हुआ कि उस ने

بَيْنَكُمْ كَيْفَ بَاتِعْتُوهُ وَذَلِكَ هُوَ الْقَوْرُ الْعَظِيمُ ①

كَثَابُيُونَ الْعِيدُونَ لِحِمْدِیْهِمْ
الْوَكُفُونَ لِلْحِدَادِ الْأَمْرِ وَالْمَعْرُوفِ
وَالثَّائِفُونَ عَلَى الْكَفْرِ وَهُمْ يُحِيطُونَ بِمَا هُمْ
وَبِئْسَ لِّلْمُؤْمِنِينَ ②

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَىٰ قَرْبَىٰ مِنْ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أُصْحَابُ الْجَحِيمِ ③

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ
مُوعَدٍ وَعْدَ مَا إِنَاءَ فَلَمَّ تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ

1 हदीस में है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अबू तालिब के निधन का समय आया तो आप उस के पास गये। और कहा चाचा। «ला इलाहा इल्लाह» पढ़ लो। मैं अब्राह के पास तुम्हारे लिये इस को प्रमाण बना लूंगा। उस समय अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबू उमय्या ने कहा क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से फिर जाओगे? (अतः वह काफिर ही मरा।) तब आप ने कहा मैं तुम्हारे लिये क्षमा की प्रार्थना करता रहूंगा जब तक उस से रोक न दिया जाऊँ और इसी पर यह आयत उतरती। (सहीह बुखारी- 4675)

2 देखिये सूरह माइदा, आयत 72 तथा सूरह निमा आयत 48, 116।

उस को इस का वचन दिया ¹ था। और जब उस के लिये उजागर हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उस से विरक्त हो गया। वास्तव में इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय सहनशील था।

عَذْرًا لِّمَا تَجْرَأُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝

115. अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी जाति को मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुपथ कर दे, जब तक उन के लिये जिस से बचना चाहिये उसे उजागर न कर दे। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानने वाला है।

وَمَا كَانَ لِلَّهِ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّى يُسْأَلَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ فِي شَيْءٍ عَزِيمٌ ۝

116. वास्तव में अल्लाह ही है, जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है। वही जीवन देता तथा मारता है। और तुम्हारे लिये उस के सिवा कोई संरक्षक और सहायक नहीं है।

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَمَا أَلْفَظُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ دَلِيلٍ وَلَا نُصِيرُ ۝

117. अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अन्सार पर दया की, जिन्होंने ने तंगी के समय आप का साथ दिया। इस के पश्चात् कि उन में से कुछ लोगों के दिल कुटिल होने लगे थे। फिर उन पर दया की। निश्चय वह उन के लिये अति करुणामय दयावान् है।

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ فُلُوبُ قُرَيْشٍ وَهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ يَهْدِي لِمَنْ يَشَاءُ رُحِيمٌ ۝

118. तथा उन तीनों² पर जिन का मामला विलंबित कर दिया गया था,

وَعَلِ الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَافَتْ

1 देखिये सूरह मुम्नहिना, आयत 4।

2 यह वही तीन हैं जिन की चर्चा आयत नं- 106 में आ चुकी है इन के नाम थे 1-काब बिन मालिक 2- हिलाल बिन उमय्या, 3- मुरारह बिन रबीअ (सहीह बुखारी - 4677)

जब उन पर धरती अपने विस्तार के होते सिकुड़ गई, और उन पर उन के प्राण संकीर्ण¹ हो गये, और उन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सिवा उन के लिये कोई शरणागार नहीं परन्तु उसी की ओर। फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

119. हे ईमान वाले! अल्लाह से डरो तथा सच्चाई के साथ हो जाओ।

120. मदीना के वासियों तथा उन के आस पास के देहातियों के लिये उचित नहीं था कि अल्लाह के रसूल से पीछे रह जायें, और अपने प्राणों को आप के प्राण से प्रिय समझें। यह इस लिये कि उन्हें अल्लाह की राह में कोई प्यास और धकान तथा भूक नहीं पहुँचती है, और न वह किसी ऐसे स्थान को रोदने है जो क़ाफ़िरों को अप्रिय हो, या किसी शत्रु से वह कोई सफलता प्राप्त नहीं करते हैं परन्तु उन के लिये एक सत्कर्म लिख दिया जाता है। वास्तव में अल्लाह सत्कर्मियों का फल व्यर्थ नहीं करता।

121. और वह (अल्लाह की राह में) थोड़ा या अधिक जो भी व्यय करते हैं, और कोई घाटी पार करते हैं तो उस को उन के लिये लिख दिया जाता है,

عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَصَالَتْ عَلَيْهِمْ
أَنفُسُهُمْ وَظَنُوا أَنَّ لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ
فَكَرَّابَ عَلَيْهِمْ لِيُتَوْتُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيمُ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَتَوَكَّلُوا
عَلَيْهِ

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ
الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا
يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ مِنْهُ ذِيكَ بِأَنَّهُمْ
لَا يُحِبُّهُمْ فَلَمَّا أَتَوْا لَمْ تُصَبِّ وَلَا تَخْشَعُ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَتَمَتَّعُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ
وَلَا يَمَآلُونَ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ إِلَّا كِتَابَ لَّهُمْ بِهِ
عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِلُّ أُمَّةً مُّسْلِمَةً

وَلَا يُضِلُّونَ نَفْسًا صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
وَلَا يَقْطَعُونَ وَادًى إِلَّا كِتَابَ لَّهُمْ لِيَجْزِيََّهُمْ
اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

1. क्योंकि उन का सामाजिक वर्तमान कर दिया गया था।

ताकि वह उन्हें उस से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे जो वह कर रहे थे।

122. ईमान वालों के लिये उचित नहीं कि सब एक साथ निकल पड़ें। तो क्यों नहीं प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह निकलता, ताकि धर्म में बोध ग्रहण करे। और ताकि अपनी जानि को सावधान करे, जब उन की ओर वापिस आये, संभवतः वह (कुकर्मा से) बचें।¹

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ بِمَعْرِفَةِ كَافَّةٍ فَلَوْلَا تَفَرُّ
مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِيَتَعَقَّبُوا فِي
الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ①

123. हे ईमान वालों! अपने आस-पास के काफिरों से युद्ध करो।² और चाहिये कि वह तुम में कटिलता पायें, तथा विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ
يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَيُجِدُوا فِيكُمْ
مُكَلَّفَةً وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ②

124. और जब (कुर्आन की) कोई आयत उतारी जाती है तो इन (द्विधावादियों में) से कुछ कहने हैं कि तुम में से किस का ईमान (विश्वास) इस ने अधिक किया? ³ तो वास्तव में जो ईमान रखते हैं उन का विश्वास अवश्य अधिक कर दिया, और वह इस पर प्रसन्न हो रहे हैं।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَن يَقُولُ
يَا عِظَمَ رَادَّةِ هَذِهِ آيَاتِ الْكِتَابِ
آمَنُوا قَرَأْنَاهُمْ يُنَادُّونَ ③

1 इस आयत में यह संकेत है कि धार्मिक शिक्षा की एक साधारण व्यवस्था होनी चाहिये और यह नहीं हो सकता कि सब धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये निकल पड़ें। इस के लिये प्रत्येक समुदाय से कुछ लोग जा कर धर्म की शिक्षा ग्रहण करें। फिर दूसरों को धर्म की बातें बतायें।

कुर्आन के इसी संकेत ने मुसलमानों में शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी भावना उत्पन्न कर दी कि एक शताब्दी के भीतर उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी व्यवस्था बना दी जिस का उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिलता।

2 जो शत्रु इस्लामी केन्द्र के समीप के क्षेत्रों में हों पहले उन से अपनी रक्षा करो।

3 अर्थात् उपहास करते हैं।

125. परन्तु जिन के दिलों में (द्विधा) का रोग है तो उस ने उन की गन्दगी और अधिक बढ़ा दी। और वह काफिर रहते हुये ही मर गये।

وَمِنَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
فَرَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا
وَهُمْ كَافِرُونَ ۝

126. क्या वह नहीं देखते कि उन की परीक्षा प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार ली जाती¹ है? फिर भी वह तौबा (क्षमा याचना) नहीं करते, और न शिक्षा ग्रहण करते हैं।

أَوَلَا يَسْرُونَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ
مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ
يَذْكُرُونَ ۝

127. और जब कोई सूरह उतारी जाये, तो वह एक दूसरे की ओर देखने हैं कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है? फिर मुँह फेर कर चल देने हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को (ईमान से) ² फेर दिया है। इस कारण कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

وَلَمَّا أُنزِلَتْ سُورَةٌ لَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
مِّنْ يَّرْكَبُونَ أَحَدًا ثُمَّ انْصَرَفُوا صَرَفَ
اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۖ بَأْسًا قَدْرُوا لَا يَفْقَهُونَ ۝

128. (हे ईमान वालों!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है। उस को वह वान भारी लगती है जिस से तुम्हें दुःख हो। वह तुम्हारी सफलता को लालसा रखते हैं। और ईमान वालों के लिये करुणामय दयावान् है।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ
عَلَيْهِ مَا عَصَيْتُمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ يَتُوبُ بَيْنَ
رُءُوفٍ وَبَیِّنٍ ۝

129. (हे नबी!) फिर भी यदि वह आप से मुँह फेरते हों तो उन से कह दो कि मेरे लिये अल्लाह (का सहारा) बस है। उस के अतिरिक्त कोई हकीकी पूज्य नहीं। और वही महा सिंहासन का मालिक (स्वामी) है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ خَرَّبَ اللَّهُ ذِلَّةَ الْإِلَهِ
عَلَيْكُمْ وَتَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ ۝

1 अर्थात् उन पर आपदा आती है तथा अपमानित किये जाने हैं (इब्ने कमीर)

2 इस से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

सूरह यूनुस 10

سُورَةُ يُونُسَ

यह सूरह मक्की है इस में 109 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ लाम, रा। यह तत्वज्ञता से परिपूर्ण पुस्तक (कुरआन) की आयतें हैं।
2. क्या मानव के लिये आश्चर्य की बात है कि हम ने उन्हीं में से एक पुरुष पर¹ प्रकाशना भेजी है कि आप मानवगण को सावधान कर दें। और जो इमान लायें उन्हें शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास सत्य सम्मान है? तो काफिरों ने कह दिया कि यह खुला जादूगर है।
3. वास्तव में तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस ने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में उत्पन्न किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर स्थिर हो गया। वही विश्व की व्यवस्था कर रहा है। कोई उस के पास अनुशंसा (सिफारिश) नहीं कर सकता, परन्तु उस की अनुमति के पश्चात् वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, अतः

الرَّسُولُ يَأْتِي الْكَلِمَ الْكُبْرَى

كَانَ يَسْأَلُ النَّبِيَّ أَنْ يُخْبِرَهُمْ
أَنْدَرِ النَّاسِ وَفِي الْيَوْمِ امْتَوَانٍ لَهُمْ قَدَرٌ
وَصَدَقَ حَقُّهُمْ قَالِ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا نَجْرٌ
فُتِينٌ

إِنْ رَجَعْتُمْ إِلَيْهِ الْبَدَى خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي
بَعْضِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يَدُ الْإِزْمَرْ
مَائِنٌ شَفِيعُ الْإِلَهِ بَعْدَ إِذْ ذُكِّرَ اللَّهُ رَجُلٌ
فَأَعْبَدُوا أَجْدَادَهُمْ لَقَدْ كُذِّبُوا

- 1 सत्य सम्मान से अभिप्रेत स्वर्ग है। अर्थात् उन के सत्कर्मों का फल उन्हें अल्लाह की ओर से मिलेगा।

उसी की इबादत (बदना)¹ करो।
क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

4. उसी की ओर तुम सब को लौटना है। यह अल्लाह का सत्य वचन है। वही उत्पत्ति का आरंभ करता है। फिर वही पुनः उत्पन्न करेगा ताकि उन्हें न्याय के साथ प्रतिफल प्रदान² करे। जो ईमान लाये और सदाचार किये, और जो काफिर हो गये उन के लिये खोलना पेय तथा दुःखदायी यातना है। उस अविश्वास के बदले जो कर रहे थे।

5. उसी ने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया है। और उस (चाँद) के गतव्य स्थान निर्धारित कर दिये ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा हिसाब का ज्ञान कर लो। इन की उत्पत्ति अल्लाह ने नहीं की है परन्तु सत्य के साथ। वह उन लोगों के लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हों।

6. निसर्देह रात्रि तथा दिवस के एक दूसरे के पीछे आने में, और जो कुछ अल्लाह ने आकाशों तथा धरती में उत्पन्न किया है उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अल्लाह से डरते हों।

7. वास्तव में जो लोग (प्रलय के दिन)

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدَأُ
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ يَجْعَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّهِ
الطَّبِيعَتِ بِالنَّارِ كَمَا كَانُوا يُكْفَرُونَ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ النَّهْرَ ضياءً وَاللَّيْلَ تَوَارًا وَقَدَرَهُ
مَدَدًا لِّتَعْلَمُوا عَدَدَ الْبَيْنِينَ وَأَحْصَابَ مَا خَلَقَ
اللَّهُ ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّاظٍ ۝ إِنَّا وَجَدْنَاهُ غَافِلًا
وَرَضُونَا آيَاتِنَا

1. भावार्थ यह है कि जब विश्व की व्यवस्था वही अकेला कर रहा है तो पूज्य भी वही अकेला होना चाहिये।

2. भावार्थ यह है कि यह दूसरा परलोक का जीवन इस लिये आवश्यक है कि कर्मों के फल का नियम यह चाहता है कि जब एक जीवन कर्म के लिये है तो दूसरा कर्मों के प्रतिफल के लिये होना चाहिये।

हम से मिलने की आशा नहीं रखते और संसारिक जीवन से प्रसन्न है तथा उसी से संतुष्ट है तथा जो हमारी निशानियों से अमावधान है।

8. उन्हीं का आवास नरक है, उस के कारण जो वह करते रहे।
9. वास्तव में जो इमान लाये और सुकर्म किये उन का पालनहार उन के इमान के कारण उन्हें (स्वर्ग की) राह दर्शा देगा, जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह सुख के स्वर्गों में होंगे।
10. उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगी: "हे अब्राह! तू पवित्र है।" और एक दूसरे को उस में उन का आशीर्वाद यह होगा: "तुम पर शान्ति हो" और उन की प्रार्थना का अन्त यह होगा: "सब प्रशंसा अब्राह के लिये है जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है।"
11. और यदि अब्राह लोगों को तुरन्त बुराई का (बदला) दे देता, जैसे वह तुरन्त (संसारिक) भलाई चाहने है तो उन का समय कभी पूरा हो चुका होता अतः जो (मरने के पश्चात्) हम से मिलने की आशा नहीं रखते हम उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये छोड़ देते हैं
12. और जब मानव को कोई दुख पहुँचता

الذُّنُوبِ وَالْظُّلُمِ الْوَاقِعِ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ

أُولَئِكَ مَا لَهُمْ لَكَرِيمًا كَانُوا يَكْسِبُونَ

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَتَذَكَّرُونَ
رَبُّهُمْ بِأَعْمَالِهِمْ خَبِيرٌ إِنَّهُمْ فِي جَنَّاتِ
الْنَّعِيمِ

وَعَوْنُهُمْ فِيهَا سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِمْ
سَلَامٌ وَلَهُمْ فِيهَا زَوْجٌ مِمَّنْ أَمَرُوا بِالنَّارِ
الْعَالِيَةِ

وَلَوْ يَرَوْنَ أَنَّ لَهُمُ لِقَاءَ رَبِّهِمْ لَأَخَّرُوهَا
لَعَنُوا إِلَهُهُمُ أَجْلُهُمْ قَدْ رَأَى الَّذِينَ لَا يُرْجُونَ
بِقَاءَنَا فِي طَعْنِهِمْ يَسْمَعُونَ

وَرَأَى امْرَأَتُ الْفَتَى أَنَّهَا إِذَا دُعِيَ إِلَى الْغَدَاةِ

- 1 आयत का अर्थ यह है कि अब्राह के दुष्कर्मों का दण्ड देने का नियम यह नहीं है कि तुरन्त संसार ही में उस का कुफल दे दिया जाये। परन्तु दुष्कर्मों को यहाँ अवसर दिया जाता है अन्यथा उन का समय कभी का पूरा हो चुका होता।

है, तो हमें लेटे या बैठे या खड़े हो कर पुकारता है। फिर जब हम उस का दुख दूर कर देते हैं तो ऐसे चल देता है जैसे कभी हम को किसी दुख के समय पुकारा ही न हो। इसी प्रकार उल्लंघनकारियों के लिये उन के कर्तूत शोभित बना दिये गये हैं।

13. और तुम से पहले हम कई जानियों को ध्वस्त कर चुके हैं, जब उन्होंने अत्याचार किये, और उन के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, परन्तु वह ऐसे नहीं थे कि इमान लाते, इसी प्रकार हम अपराधियों को बदला देते हैं।

14. फिर हम ने धरती में उन के पश्चात् तुम्हें उन का स्थान दिया, ताकि हम देखें कि तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं।

15. और (हे नबी!) जब हमारी खुली आयतें उन्हें सुनायी जाती हैं तो जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इस के सिवा कोई दूसरा कुर्आन लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। उन से कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इस में परिवर्तन कर दूँ। मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है। मैं यदि अपने पालनहार की अवैज्ञा करूँ तो मैं एक घोर दिन की यातना से डरता हूँ।

16. आप कह दें यदि अल्लाह चाहता तो मैं कुर्आन तुम्हें सुनाता ही नहीं, और

أَوْ قَائِمًا أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَتَمْتَ آيَاتَهُ ضُرُّهُ
مَرَّكَانَ كَرِهَ بَدْعُكَ لِي ضَرُّ قَسَتِهِ كَذَلِكَ
رُؤْيُ الْمُشْرِكِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠﴾

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِكَ لَمَّا ظَنَّمُوا
وَعَهْدَهُمْ رَسُولَهُمْ بِأَلْبَتٍ وَمَا كَانُوا
يَلْمِزُونَا كَذِبًا نَجْرَى لِقَوْمٍ الْعَاجِلِينَ ﴿١١﴾

لَقَدْ جَعَلْنَا خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ مِنْ تَعْدِهِمْ
يَنْظُرُ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

فَلَمَّا أَتَتْهُمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ
لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا نِجَارًا أَوْ يُكْفَرُونَ
بِدَوْلَةٍ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبْدِلَهُ مِنْ تِلْكَ آيٍ
لَقَدْ لَعِنَ الْفَاسِقِينَ إِلَّا مَا يَنْصُرُنِي اللَّهُ
إِنْ خَصِمْتُ رَبِّي عِنْدَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٣﴾

قُلْ إِنْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُمْ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرِكُهُ

न वह तुम्हें इस से सूचित करता! फिर मैं इस से पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ तो क्या तुम समझ बूझ नहीं रखते हो? ¹

17. फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अब्राहम पर मिथ्या आरोप लगाये अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? वास्तव में ऐसे अपराधी सफल नहीं होते।

18. और वह अब्राहम के सिवा उस की इबादत (बंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ और कहते हैं कि यह अब्राहम के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफारशी) है आप कहिये क्या तुम अब्राहम को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो जिस के होने को न वह आकाशों में जानता है और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (मिश्रणवाद) से जो वे कर रहे हैं।

19. लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे, फिर उन्होंने ने विभेद ² किया। और

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا هَذِهِ السُّبُلَ الَّتِي اتَّبَعُوا مِنْ قَبْلِهِ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ

مَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الْمُغْرَمُونَ

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ كُلٌّ أَتَتَقَبَّلُونَ اللَّهُ يَمَا لَا يَأْكُلُ فِي السَّمُوتِ وَلَئِنْ الْأَرْضَ سُبْحَنَهُ وَتَعْلَى عَنَّا يُشِيرُ كُونَ

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً

1 आयत का भावार्थ यह है कि यदि तुम एक इसी बात पर विचार करो कि मैं तुम्हारे लिये कोई अपरिचित अज्ञात नहीं हूँ मैं तुम्हीं में से हूँ यही मक्का में पैदा हुआ और चालीस वर्ष की आयु तुम्हारे बीच व्यतीत की। मेरा पूरा जीवन चरित्र तुम्हारे सामने है इस अवधि में तुम ने सत्य और अमानत के विरुद्ध मुझ में कोई बात नहीं देखी तो अब चालीस वर्ष के पश्चात यह कैसे हो सकता है कि अब्राहम पर यह मिथ्या आरोप लगा दूँ कि उस ने यह कुर्आन मुझ पर उतारा है? मेरा पवित्र जीवन स्वयं इस बात का प्रमाण है कि यह कुर्आन अब्राहम की वाणी है। और मैं उस का नबी हूँ और उसी की अनुमति से यह कुर्आन तुम्हें सुना रहा हूँ।

2 अतः कुछ शिर्क करने और देवी देवताओं को पूजने लगा। (इब्ने कसीर)

यदि आप के पालनहार की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न¹ होती, तो उन के बीच उस का (संसार ही में) निर्णय कर दिया जाता जिम् में वह विभेद कर रहे हैं।

فَاَخْلَكُوا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ
لَفُتِحَ بَيْنَهُمُ يَوْمَئِذٍ عَنِيقٌ ۝

20. और वह यह भी कहते हैं कि आप पर कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया? ² आप कह दें कि परोक्ष की बातें तो अब्राह के अधिकार में हैं। अतः तुम प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ। ³

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ
رَبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْغِيبُ بِيَدِهِ فَأَنْتُمْ تَنْتَظِرُونَ ۝
إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝

21. और जब हम, लोगों को दुख पहुँचने के पश्चात् दया (का स्वाद) चखाते हैं तो तुरन्त हमारी आयतों (निशानियों) के बारे में पड़्यंत्र रचने लगते हैं। आप कह दें कि अब्राह का उपाय अधिक तीव्र है। हमारे फरिश्ते तुम्हारी चालें लिख रहे हैं।

وَإِذَا أَدْرَأْنَا عَنْهُمْ هَاجَةً مِنْ حَيْثُ يَشَاءُونَ
إِذَا لَهُمْ لَكْرٌ فِي آيَاتِنَا قُلْ اللَّهُ أَعَزُّ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ
يُلْقُونَ مَا يَكْفُرُونَ ۝

22. वही है जो जल तथा धूल में नुम्हें फिराता है। फिर जब तुम नौकाओं में होते हो, और उन को ले कर अनुकूल वायु के कारण चलती है, और वह उस से प्रसन्न होने है, तो अकस्मात् प्रचण्ड वायु का झोंका आ जाता है, और प्रत्येक स्थान से उन्हें लहरें मारने लगती हैं, और समझते

هُوَ الَّذِي يُسَبِّحُ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْغُيُوبِ ۚ إِذَا كُنْتُمْ
الْقَائِلِينَ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْكُمْ وَيَرْجُونَ فَتْمَةً مِنْكُمْ
فَتَأْتِيَهُمْ لَمُوتٌ وَهُمْ لَا يَأْتِيَهُمْ لَمُوتٌ مِنْكُمْ
وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ
وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ
وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ وَهُمْ لَا يَرْجُونَ ۚ
الشُّكُورِ ۝

- 1 कि संसार में लोगों को कर्म करने का अवसर दिया जाये।
2 जैसे कि मफा पर्वत सोने का हो जाना। अथवा मक्का के पर्वतों के स्थान पर उद्यान हो जाते। (इब्ने कसीर)
3 अर्थात् अब्राह के आदेश की।

हैं कि उन्हें घेर लिया गया तो अब्राह से उम के लिये धर्म को विशुद्ध कर के प्रार्थना करने हैं कि यदि तू ने हमें बचा लिया तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ बन कर रहेंगे।

23. फिर जब उन्हें बचा लेता है तो अकस्मात् धरती में अवैध विद्रोह करने लगते हैं। हे लोगो! तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रहा है। यह संसारिक जीवन के कुछ लाभ²¹ हैं। फिर तुम्हें हमारी ओर फिर कर आना है। तब हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कर रहे थे।

24. संसारिक जीवन तो ऐसा ही है जैसे हम ने आकाश से जल बरसाया, जिम से धरती की उपज घनी हो गयी, जिस में से लोग और पशु खाने हैं। फिर जब वह समय आया कि धरती ने अपनी शोभा पूरी कर ली और सुसज्जित हो गयी, और उस के स्वामी ने समझा कि वह उस से लाभान्वित होने पर सामर्थ्य रखने है तो अकस्मात् रात या दिन में हमारा आदेश आ गया और हम ने उसे इस प्रकार काट कर रख दिया,

فَلَمَّا أَتَتْهُمْ مُدَّةُ آظْمِهِمْ يَقُولُونَ فِي الْأَرْضِ بِخَيْرٍ لِّمَنَ
يَأْتِيهِمُ النَّاسُ إِنَّمَا بَعِثْنَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ مَّتَنَزِّلًا لِّحَيَاتِهِمْ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَتَيْنَاهُم بِمُحَمَّدٍ مِّنْ لَّدُنَّا سَيِّئًا
تَعْمَلُونَ ٢٣

إِنَّمَا مَثَرُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أُنزِلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ
فَلَنُحْطَبَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ وَمِمَّا يَأْتِي النَّاسُ
وَالْأَنْعَامُ مَرْعًى ۚ أَذَآءٌ لِّلْعَالَمِينَ ۚ وَالْأَرْضُ رُجُوفًا ۚ وَازْدَنَّتْ
وَحُطِرَ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَبِيضٌ عَلَيْهَا ۚ آمُرُهَا
لَيْلًا ۚ وَأُوتِيهَا رَافِعَةً لِّهَا حَصِيدًا ۚ كَانَ لَكُم
لَدُنَّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ لِنُقَدِّسَ الْأَيَّامَ ۚ لِقَوْمٍ
يَتَذَكَّرُونَ ٢٤

- 1 और सब देवी देवताओं को भूल जाते हैं।
- 2 भावार्थ यह है कि जब तक संसारिक जीवन के संसाधन का कोई सहारा होता है तो लोग अब्राह को भूने रहते हैं। और जब यह सहारा नहीं होता तो उन का अन्नजान उभरना है। और वह अब्राह को पुकारने लगते हैं। और जब दुख दूर हो जाता है तो फिर वही दशा हो जाती है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि सदा सुख दुख में उसे याद करते रहो।

जैसे कि कल वहाँ थी¹ ही नहीं।
इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन
खोल खोल कर, करते हैं, ताकि
लोग मनन चिंतन करें।

25. और अब्राह तुम्हें शान्ति के घर (स्वर्ग)
की ओर बुला रहा है। और जिसे
चाहता है सीधी डगर दर्शा देता है।

26. जिन लोगों ने भलाई की, उन के
लिये भलाई ही होगी, और उस से
भी अधिक।²

27. और जिन लोगों ने बुराईयाँ की तो
बुराई का बदला उसी जैसा होगा।
तथा उन पर अपमान छाया होगा।
और उन के लिये अब्राह से बचाने
वाला कोई न होगा। उन के मुखों पर
ऐसे कालिमा छापी होगी जैसे अंधरी
रात के काले पर्दे उन पर पड़े हुये
हों। वही नारकी होंगे। और वही उस
में सदावासी होंगे।

28. जिस दिन हम उन सब को एकत्र
करेंगे फिर उन से कहेंगे जिन्होंने
साझी बनाया है, कि अपने स्थान पर
रुके रहो, और तुम्हारे (बनाये हुये)
साझी भी, फिर हम उन के बीच
अलगाव कर देंगे। और उन के साझी
कहेंगे तुम तो हमारी बंदना ही नहीं
करते थे।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيدُوا ۚ وَلَا يَرْهَقُ
وُجُوهُهُمُ قُرْءَانٌ وَلَا ذُلٌّ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْبَيْتِ ۚ هُمْ
فِيهَا خَالِدُونَ

وَالَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَابُ مِنْ قَبْلِهَا
وَلَمْ يَفْعَلُوا ۚ ذُلٌّ مَّا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ ۚ وَنَحْمُكَ ۚ كَانُوا
أَخْشَيْتُمْ وَجُوهَهُمْ قِطْعَاتِمْ يُثْلِ نَافِثِ ۚ أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ لَقَوْلِ الْكَافِرِ ۚ أَشْرَكُوا
مَكَانَكُمْ أَنَا وَشُرَكَاءُكُمْ ۚ فَتَلَبَّتْ بِغَتُهُمْ وَقَالَ
شَرٌّ ۚ وَهُمْ مَكَانَكُمْ لَا يَنْفَعُونَ

1 अर्थात् समारिक आनंद और मुख वर्ण की उपज के समान सामयिक और
अस्थायी है।

2 अधिकांश भाष्यकारों ने, «अधिक» का भावार्थ «आखिरत में अब्राह का दर्शन»
और «भलाई» का «स्वर्ग» किया है। (इब्ने कसीर)

29. हमारे और तुम्हारे बीच अब्राह का साक्ष्य बस है, कि तुम्हारी बदना से हम असूचित थे।

قُلْ يَا أَيُّهَا الشَّاهِدُونَ إِنِّي لَمِنَ الْمُتَزَكِّينَ
عَبَادُكُمْ تَقْوِينَ ۝

30. वहीं प्रत्येक व्यक्ति उसे परख लेगा जो पहले किया है। और वह (निर्णय के लिये) अपने सत्य स्वामी की ओर फेर दिये जायेंगे। और जो मिथ्या बातें बना रहे थे उन से खो जायेंगी।

هَٰذَا لِكَيْ تَبْلُغُوا إِلَىٰ نَفْسٍ مَّا أَسْلَمْتُمْ وَإِلَىٰ نَفْسٍ
مُّوَسَّعَةٍ لَّيِّنٍ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

31. (हे नबी!) उन से पूछें कि तम्हें कौन आकाश तथा धरती¹ से जीविका प्रदान करना है? मुनने तथा देखने की शक्तियाँ किस के अधिकार में हैं? कौन निर्जीव से जीव को तथा जीव को निर्जीव से निकालना है? वह कौन है जो विश्व की व्यवस्था कर रहा है? वह कह देंगे कि अब्राह।² फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध में) डरते नहीं हो?

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمْ يَسْبِقُ
الْبَصَرَ وَالْأَبْصَارُ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُعْطِي الْأَمْرَ
فَيَقْبُضُونَ اللَّهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

32. तो वही अब्राह तुम्हारा सत्य पालनहार है फिर सत्य के पश्चात कुपथ (असत्य) के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिराये जा रहे हो?

قُلْ لَكُمْ اللَّهُ وَلَكُمْ الْحَيُّ قَمَادًا بَعْدَ الْحَيِّ إِلَّا الضَّلَالَةُ
فَأَنْ تَضُرُّوهُ ۝

33. इस प्रकार आप के पालनहार की बातें अवज्ञाकारियों पर सत्य सिद्ध हो गयीं कि वह ईमान नहीं लायेंगे।

كَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

34. आप उन से कहिये: क्या तुम्हारे माझियों में कोई है, जो उत्पत्ति का

قُلْ فَلِمِ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ
دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُفَازَ بَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝

1 आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज से।

2 जब यह स्वीकार करते हो कि विश्व की व्यवस्था अब्राह ही कर रहा है तो पूजा अराधना भी उसी की होनी चाहिये।

आरंभ करता फिर उसे दुहराता हो?
आप कह दें अल्लाह उत्पत्ति का आरंभ
करता, फिर उसे दुहराता है। फिर
तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

قُلْ اِنَّ اِلَهَیَّ وَ اِلَٰهَکُمْ وَ اِلَٰهَ الْعَالَمِیْنَ ۝۱۰

35. आप कहिये क्या तुम्हारे साक्षियों में
कोई संमार्ग दर्शाता है? तो क्या जो
संमार्ग दर्शाता हो वह अधिक योग्य
है कि उस का अनुपालन किया जाये
अथवा वह जो स्वयं संमार्ग पर न
हो, परन्तु यह कि उसे संमार्ग दर्शा
दिया जाये? तो तुम्हें क्या हो गया है
तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِیْ یُشْرِکُ بِاللّٰهِ ۚ اَشْفَعِیْ عِنْدَ رَبِّیْ اَمْ یَسْتَفِیْذُونَ ۚ اَمْ لَیْسَ لَهُمْ اِلَٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ ۚ اَمْ یَحْسَبُوْنَ اَنَّ اِلَٰهَکُمْ اِلَٰهٌ غَیْرُ اِلَٰهِیَّ ۚ اَمْ یَحْسَبُوْنَ ۚ

36. और उन (मिश्रणवादियों) में
अधिकांश अनुमान का अनुसरण
करते हैं। और सत्य को जानने में
अनुमान कुछ काम नहीं दे सकता।
वास्तव में अल्लाह जो कुछ वे कर रहे
हैं भली भाँति जानता है।

وَمَا یُنْبِغُ اِلَّا اَنْ یَّکُوْنَ مِنَ الْاَشْیَاءِ اِلَٰهٌ ۚ اَمْ لَیْسَ لَهُمْ اِلَٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ ۚ اَمْ یَحْسَبُوْنَ ۚ

37. और यह क़ुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह
के सिवा अपने मन से बना लिया
जाये, परन्तु उन की पट्टि है जो इस
से पहले (पुस्तकों) उतरी है। और यह
पुस्तक (क़ुर्आन) विवरण¹ है। इस में
कोई संदेह नहीं कि यह सम्पूर्ण विश्व के
पालनहार की ओर से है।

وَمَا کَانَ هَٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ یَّخْتَرٰی مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ وَلَٰکِنْ تَصْدِیْقُ الَّذِیْ یَنْزِیْلُ یَنْزِیْلًا وَفَصْلًا ۚ الْکِتَابُ الَّذِیْ یُنْزِلُ مِنْ رَّبِّ الْعَالَمِیْنَ ۚ

38. क्या वह कहते हैं कि इस (क़ुर्आन)
को उस (नबी) ने स्वयं बना लिया
है? आप कह दें: इसी के समान एक
सूरह ला दो। और अल्लाह के सिवा

اَمْ یَقُولُوْنَ اَلْاٰتِیَّةُ ۚ قُلْ فَاَنَیْ سُوْرَةٌ مِّثْلِهٖ ۚ وَاَدْعُوْا مِنْ اَسْتَضَعُّکُمْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ کُنْتُمْ صَادِقِیْنَ ۚ

1 अर्थात् अल्लाह की पुस्तकों में जो शिक्षा दी गयी है उस का क़ुर्आन में सविस्तार वर्णन है।

जिसे (अपनी सहायता के लिये)
बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम
सत्यवादी हो।

39. बल्कि उन्होंने ने उस (कुरआन) को
झुठला दिया जो उन के ज्ञान के
घेरे में नहीं¹ आया, और न उस
का परिणाम उन के सामने आया।
इसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था,
जो इन से पहले थे। तो देखो कि
अन्याचारियों का क्या परिणाम हुआ?

40. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस
(कुरआन) पर ईमान लाते हैं और
कुछ ईमान नहीं लाते। और आप का
पालनहार उपद्रवकारियों को अधिक
जानता है।

41. और यदि वे आप को झुठलायें तो
आप कह दें मेरे लिये मेरा कर्म है
और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म। तुम
उस से निर्दोष हो जो मैं करता हूँ।
तथा मैं उस से निर्दोष हूँ जो तुम
करते हो।

42. इन में से कुछ लोग आप की ओर
कान लगाते हैं। तो क्या आप बहरों²
को सुना सकते हैं, यद्यपि वह कुछ
भी न समझ सकते हों?

43. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो आप
की ओर नकते हैं तो क्या आप अन्धे
को राह दिखा देंगे? यद्यपि उन्हें कुछ

بَن كَذَّبُوا بِمَا لَهُمْ يَدْعُونَ بِهِ وَمَا يَأْتِيهِمْ
تَأْوِيلُ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَانظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝

وَمِنْهُمْ مَّن يَدْعُونَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّن لَّا يُؤْمِنُ بِهِ
وَذَلِكَ أَتْلُوهُ بِالْقُرْآنِ ۝

ذَلِكَ كَذَّبُوا فَقُلْ إِنِّي عَلَيْهِمُ كَرِيمٌ
يَوْمَ يُنْفَخُ سَاقُ الْحَبِلِ وَأَنَا بَرِيءٌ وَمِمَّا
تَعْمَلُونَ ۝

وَمِنْهُمْ مَّن يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَتَأْتِ تَسْمِعُ
الْغَمَمَ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝

وَمِنْهُمْ مَّن يَنْتَرُكَ إِلَيْكَ أَتَأْتِ تَهْدِي الْعَمَى
لَوْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ ۝

1 अर्थात् बिना सोचे समझे इसे झुठलाने के लिये तैयार हो गये।

2 अर्थात् जो दिल और अन्तर्जान के बहरे हैं।

सूझता न हो।

44. वास्तव में अब्राह, लोगों पर अत्याचार नहीं करता, परन्तु लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।¹

إِنَّ إِلَهَهُ لَظَلِيمٌ النَّاسُ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنفُسَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿٤٤﴾

45. और जिस दिन अब्राह उन्हें एकत्र करेगा तो उन्हें लगेगा कि वह (संसार में) दिन के कबल कुछ क्षण रहे। वह आपस में परिचिन होंगे। वास्तव में वह क्षतिग्रस्त हो गये जिन्होंने अब्राह से मिलने को झुठला दिया, और वह सीधी डगर पाने वाले न हुये।

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَانَ تَرِيكُهُمْ إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهْرِ يَتَذَكَّرُونَ يَوْمَهُمْ قَدْ خُيِّرُوا بَيْنَ يَدَايِهِ لَعْنَةُ مَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

46. और यदि हम आप को उस (यातना) में से कुछ दिखा दें जिस का वचन उन्हें दे रहे हैं अथवा (उस से पहले) आप का समय पूरा कर दें तो भी उन्हें हमारे पास ही फिर कर आना है। फिर अब्राह उस पर साक्षी है जो वे कर रहे हैं।

وَمَا يَرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَوَفِّيكَ وَآلِهَامَا مِنْهُمْ نَزَّلَ اللَّهُ شَهِيدًا عَلَى مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

47. और प्रत्येक समुदाय के लिये एक रसूल है फिर जब उन का रसूल आ गया तो (हमारा नियम यह है कि) उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाना है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जाना।

وَيُظِلُّ أَمْرَهُمْ ثُمَّ إِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

48. और वह कहते हैं कि हम पर यातना का वचन कब पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

49. आप कह दें कि मैं स्वयं अपने लाभ

قُلْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ﴿٤٩﴾

1 भावार्थ यह है कि लोग अब्राह की दी हुयी समझ-बूझ से काम न ले कर सत्य और वास्तविकता के ज्ञान की अर्हता खो देते हैं।

तथा हानि का अधिकार नहीं रखता। वही होता है जो अल्लाह चाहता है। प्रत्येक समुदाय का एक समय निर्धारित है। तथा जब उन का समय आ जायेगा तो न एक क्षण पीछे रह सकते हैं, और न आगे बढ़ सकते हैं।

يَكُنْ أَنتَ نَذِيرٌ ۚ إِلَٰهَآ إِلَٰهَهُمْ فَلَا يُنصَرُونَ
سَاعَةً ۚ وَلَا يَنْتَفِعُونَ ۝

50. (हे नबी!) कह दो कि तुम बताओ यदि अल्लाह की यातना तुम पर रात अथवा दिन में आ जाये (तो तुम क्या कर सकते हो?) ऐसी क्या बात है कि अपराधि उस के लिये जल्दी मचा रहे हैं?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَآتًا أَوْ هَرَاتًا
يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُخْرَجُونَ ۝

51. क्या जब वह आ जायेगी उस समय तुम उसे मानोगे? अब जब कि उस के शीघ्र आने की मांग कर रहे थे।

أَلَمْ يَدْعُوا مِمَّا مَنَعَهُمُ الْغَنَى وَقَدْ كُنتُمْ بِهِ
مَسْتَعْجِلِينَ ۝

52. फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि सदा की यातना चखो। तुम्हें उसी का प्रतिकार (बदला) दिया जा रहा है जो तुम (संसार में) कमा रहे थे।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَمَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْمُلُوكِ
هَلْ تَحْقِرُونَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

53. और वह आप से पूछने है कि क्या यह बात वास्तव में सत्य है? आप कह दें कि मेरे पालनहार की शपथ। यह वास्तव में सत्य है। और तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते।

وَسْتَنْبِئْهُمْ لَعَنَ مُوْسَىٰ رِبِّي وَقِيلَ لَهُ لَعْنًا مِّنْكَ
بِغَيْرِ رِبٍّ ۝

54. और यदि प्रत्येक व्यक्ति के पास जिस ने अत्याचार किया है जो कुछ धरती में है सब आ जाये, तो वह अवश्य उसे अर्थदण्ड के रूप में देने को तय्यार हो जायेगा। और जब वह उस यातना को देखे तो दिल ही दिल में पछुतायेगा और उन के बीच न्याय के

وَأَوَّاهٌ ۚ كُلُّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ تَأْتِي الْدَّهْرَ لَمِيتَةً
وَأَسْرُ النَّدَاةِ تَنَادُّوا الْعَذَابَ وَفُضِيَ بَيْنَهُم
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

साथ निर्णय कर दिया जायेगा और
उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

55. सुनो! अल्लाह ही का है वह जो कुछ
आकाशों तथा धरती में है। सुनो!
उस का वचन सत्य है। परन्तु
अधिकतर लोग इसे नहीं जानते।

أَلَا إِنَّ إِلَهَنَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْوَاحِدُ
الَّذِي ذَلِكُنَّ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

56. वही जीवन देता तथा वही मारता है।
और उसी की ओर तुम सब लौटाये
जाओगे ।

هُوَ الْحَيُّ وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

57. हे लोगो! ¹ तुम्हारे पास तुम्हारे
पालनहार की ओर से शिक्षा
(कुर्आन) आ गयी है, जो अन्तरान्मा
के सब रोगों का उपचार (स्वास्थ्य
कर) तथा मार्ग दर्शन और दया है
उन के लिये जो विश्वास रखते हों।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ نُورٌ مُبِينٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبُخْرَةٌ
لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

58. आप कह दें कि यह (कुर्आन) अल्लाह
का अनुग्रह और उम की दया है।
अतः लोगो को इस से प्रसन्न हो जाना
चाहिये। और यह उस (धन-धान्य) से
उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

قُلْ يَقْضِ الْكَافِرُ وَيَرْحَمْنَاهُ فَيَسِّرْ قَبِيحًا
هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

59. (हे नबी!) उन से कहो क्या तुम ने
इस पर विचार किया है कि अल्लाह
ने तुम्हारे लिये जो जीविका उतारी
है, तुम ने उस में से कुछ को हराम
(अवैध) बना दिया है और कुछ को

قُلْ لَّيْسَ بِكُمْ أَنْزَارٌ إِلَهُكُمْ مِّن رَّبِّي فَجَعَلْتُ مَنَّهُ
حَرَامًا وَحَدًّا قُلْ إِلَهُ الْأَوَّلِ كَمَا أَمَرَ عَلَى اللَّهِ
تَقَرُّوْنَ ﴿٥٩﴾

- 1 प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।
- 2 इस में कुर्आन के चार गुणों का वर्णन किया गया है।
 - 1 यह सत्य शिक्षा है।
 - 2 दिवा के सभी रोगों के लिये स्वास्थ्यकर है।
 - 3 समार्थ दर्शाता है।
 - 4 इमान वालों के लिये दया का उपदेश है।

हलाल (वैध)। तो कहो कि क्या अल्लाह ने तुम को इस की अनुमति दी है? अथवा तुम अल्लाह पर आरोप लगा रहे¹ हो?

60. और जो लोग अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं उन्होंने ने प्रलय के दिन को क्या समझ रखा है? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये दयाशील² है। परन्तु उन में अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।

61. (हे नबी!) आप जिस दशा में हों, और कुर्आन में से जो कुछ भी सुनाते हों, तथा तुम लोग भी कोई कर्म नहीं करते हो, परन्तु हम तुम्हें देखते रहते हैं, जब तुम उसे करते हो। और आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज छुपी नहीं रहती और न आकाश में न इस से कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है।

62. सुनो! जो अल्लाह के मित्र है न उन्हें कोई भय होगा, और न वह उदामीन होंगे।

63. जो ईमान लाये तथा अल्लाह से डरते रहे।

64. उन्हीं के लिये संसारिक जीवन में

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْعَلُونَ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا يَوْمَ
الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

وَمَا تَكُونُ فِي شَأٍ وَمَا تَكُونُ مِنْ قُرْبٍ
وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عَلَيْنَا نُهُودُ الرَّادِّ
نُفِضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْتَرِفُ غَيْرُ رَبِّكَ مِنْ
مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ
مِنْ ذَلِكَ وَلَا كَبِيرًا إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि किसी चीज को वर्जित करने का अधिकार केवल अल्लाह को है। अपने विचार से किसी चीज को अवैध करना अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाना है।

2 इसी लिये प्रलय तक का अवसर दिया है।

शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी।
अब्राह की बानों में कोई परिवर्तन
नहीं, यही बड़ी सफलता है।

لَا تَسْتَبِيلُ لِكَيْمَتِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُوَ الْعَزِيزُ
الْعَظِيمُ ۝

65. तथा (हे नबी!) आप को उन
(काफिरों) की बान उदासीन न करे।
वास्तव में सभी प्रभुत्व अब्राह ही के
लिये है। और वह सब कुछ सुनने
जानने वाला है।

وَلَا يَخْزِيكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ لِيْ عِزًّا وَلِلَّهِ جَمِيعُ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

66. सुनो। वास्तव में अब्राह ही के
अधिकार में है जो आकाशों में तथा
धरती में है। और जो अब्राह के सिवा
दूसरे साझियों को पुकारने है वह
केवल अनुमान के पीछे लगे हुये है।
और वे केवल आँकलन कर रहे है।

إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
وَمَا يَشْفَعُ إِلَّا بِنِيعَةِ اللَّهِ مَنْ دُونِ اللَّهِ
شُرَكَاءُ لَهُمْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَهُوَ الظَّنُّ
يَكْفُرُ بِهِ ۝

67. वही है जिस ने तुम्हारे लिये रान
बनाई है ताकि उस में सुख पाओ।
और दिन बनाया ताकि उस के
प्रकाश में देखो। निःसंदेह इस में
(अब्राह के व्यवस्थापक होने की) उन
के लिये बड़ी निशानियाँ है जो (मन्य
को) सुनते हों।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهَا
وَالنَّهَارَ مُبْشِرًا لِّدِينِكُمْ لِأَنَّ
لِلْقَوْمِ يُسْمَعُونَ ۝

68. और उन्होंने ने कह दिया कि अब्राह ने
कोई पुत्र बना लिया है। वह पावित्र है।
वह निस्पृह है। वही स्वामी है उस का
जो आकाशों में तथा धरती में है। क्या
तुम्हारे पास इस का कोई प्रमाण है?
क्या तुम अब्राह पर ऐसी बान कह
रहे हो जिस का तुम ज्ञान नहीं रखते?

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْعَزِيزُ
الَّذِي مَلَأَ السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنَّكُمْ
عِنْدَهُ مِنْ سُلَاسٍ بِهَذَا أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ
مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

69. (हे नबी!) आप कह दें जो अब्राह
पर मिथ्या बानें बनाते है वह सफल
नहीं होंगे।

قُلْ إِنَّ الْكَافِرِينَ يَمُوتُونَ عَلَى اللَّهِ
الْكُذِبَ لَا يَقْبِضُونَ ۝

70. उन के लिये ससार ही का कुछ आनन्द है, फिर हमारी ओर ही आना है। फिर हम उन्हें उन के कुफ़्र (अविश्वास) करते रहने के कारण घोर यातना चखायेंगे।

مَتَاعُ فِي الدُّنْيَا إِنَّمَا مَرَجَعُهُمْ ثُمَّ
يُرْجِعُهُمُ الْعَذَابُ الَّذِي يَدْعُونَ
بِكَفَرِهِمْ ۖ

71. आप उन्हें नूह की कथा सुनायें, जब उस ने अपनी जानि से कहा है मेरी जानि! यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अब्राह की आयनों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अब्राह ही पर मैं ने भरोसा किया है। तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने माझियों (देवी देवताओं) को भी बुला लो। फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाये, फिर जो करना हो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो।

وَنُحٍّ عَلَيْهِمْ سَاءَ تَوَكَّلَ ذُقْ أَفْعَىٰ يَوْمِكُمْ
كَانَ كَبْرًا عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذَكَّرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلِ
اللَّهُ تَوَكَّلْتُ فَأَجِيبُوا أَمْرًا وَاسْرُءِلُوا رَسُولًا ۖ
لَّا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ تَقْضُوا إِلَيْنَ
وَلَا تُشْكِرُونَ ۖ

72. फिर यदि तुम ने मुख फेरा तो मैं ने तुम से किसी पारिश्रमिक की मांग नहीं की है। मेरा पारिश्रमिक तो अब्राह के सिवा किसी के पास नहीं है। और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में रहूँ।

وَإِنْ تَوَكَّلْتُمْ فَلَا تَكُنُوا مِمَّنْ أُخْرِجُوا إِلَىٰ
عَلَى اللَّهِ وَأَمْرٌ أَنْ أَتُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۖ

73. फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हम ने उसे और जो नाव में उस के साथ (सवार) थे बचा लिया और उन्हीं को उन का उत्तराधिकारी बना दिया। और उन्हें जलमग्न कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया। अतः देख लो कि उन का परिणाम क्या हुआ जो सचेत किये गये थे।

فَلَمَّا نَبَا فُتِحَتْ يَدُكَ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلَيْنِ
وَجَعَلْنَاهُمْ حُلَفَاءَ وَأَعْرَفْنَا الْأَيُّمَ كَذِبًا
بِآيَاتِنَا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۖ

74. फिर हम ने उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उन की जाति के पास भेजा, वह उन के पास खुली निशानियाँ (तर्क) लाये तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाने, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर¹ लगा देते हैं

75. फिर हम ने उन के पश्चात मूसा और हारून को फिरऔन और उस के प्रमुखों के पास भेजा तो उन्होंने अभिमान किया। और वह थे ही अपराधीगण।

76. फिर जब उन के पास हमारी ओर से सत्य आ गया तो उन्होंने ने कह दिया कि वास्तव में यह तो खुला जादू है।

77. मूसा ने कहा: क्या तुम सत्य को जब तुम्हारे पास आ गया तो जादू कहने लगे? क्या यह जादू है? जब कि जादूगर (तांत्रिक) सफल नहीं होते।

78. उन्होंने ने कहा: क्या तुम इसलिये हमारे पास आये हो ताकि हमें उस (प्रथा) से फेर दो जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। और देश (मिस्र) में तुम दोनों की महिमा स्थापित हो जाये? हम तुम दोनों का विश्वास करने वाले नहीं हैं।

79. और फिरऔन ने कहा: (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं उन्हें मेरे पास लाओ।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَيْنِهِمْ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَلَمَّا كَانُوا لِلْيَوْمِ مُحْشَرِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِهِمْ قَبْلَ كَذِّبَتْ لِقَابُهُمْ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُتَعَبِينَ ۝

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَيْنِهِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا لَيَلَدٌ مُّحْدَثٌ ۝

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَمْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّشْرِكُونَ ۝

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَكَ عَنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا وَنَنَا وَتَكُونُ لَكُمُ الْدِينِ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ بِمُؤْمِنِينَ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ثَوِّنْ لِّيْ سِحْرَ بَنِي ۝

1 अर्थात् जो बिना सोचे समझे सत्य को नकार देते हैं उन के सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक याग्यता खो जाती है।

80. फिर जब जादूगर आ गये तो मूसा ने कहा जो कुछ तुम्हें फेंकना है उसे फेंक दो।

81. और जब उन्होंने फेंक दिया तो मूसा ने कहा तुम जो कुछ लाये हो वह जादू है निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता।

82. और अल्लाह सत्य को अपने आदेशों के अनुसार सत्य कर दिखायेगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।

83. तो मूसा पर उस की जाति के कुछ नवयुवकों के सिवा कोई इमान नहीं लाया। फिरऔन और अपने प्रमुखों के भय से कि उन्हें किसी यातना में न डाल दे। और वास्तव में फिरऔन का धरती में बड़ा प्रभुत्व था, और वह वस्तुतः उल्लंघनकारियों में था।

84. और मूसा ने (अपनी जाति बनी इस्राईल से) कहा हे मेरी जाति! जब तुम अल्लाह पर इमान लाये हो तो उसी पर निर्भर रहो, यदि तुम आज्ञाकारी हो।

85. तो उन्होंने ने कहा हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों के लिये परीक्षा का साधन न बना।

86. और अपनी दया से हमें काफिरों से बचा ले।

87. और हम ने मूसा तथा उस के भाई

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَاءُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمُ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكُمْ ۝

فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُكُمْ بِشَيْءٍ مِّنْ رَبِّكُمْ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكُمْ ۝

وَلَيَحْكُمَنَّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْغَافِلُونَ ۝

فَمَا آمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّنَ الْكَافِرِينَ وَمَلَائِكَةٌ مِّنْ رَبِّهِمْ قَالَتْ يَأْتُونَكُم بِآيَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۝

وَقَالَ مُوسَى يٰقَوْمِ إِنَّمَا إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكُمْ ۝

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوِّعَا لِقَوْمِكُمَا

(हारून) की ओर प्रकाशना भेजी, कि अपनी जाति के लिये मिस्र में कुछ घर बनाओ। और अपने घरों को किव्ला¹ बना लो। तथा नमाज की स्थापना करो। और ईमान वालों को शुभ सूचना दो।

88. और मूसा ने प्रार्थना की- हे मेरे पालनहार! तू ने फिरऔन और उस के प्रमुखों को ससारिक जीवन में शोभा तथा धन-धान्य प्रदान किया है। तो मेरे पालनहार! क्या इस लिये कि वह तेरी राह में विचलित करते रहें? हे मेरे पालनहार! उन के धनों को निरस्त कर दे और उन के दिल कड़े कर दे कि वह ईमान न लायें जब तक दुखदायी यातना न देख लें।

89. अब्राह ने कहा- तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी। तो तुम दोनों अडिग रहो, और उन की राह का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते।

90. और हम ने बनी इस्राईल को सागर पार करा दिया तो फिरऔन और उस की सेना ने उन का पीछा किया, अत्याचार तथा शत्रुता के ध्येय से। यहाँ तक कि जब वह जलमग्न होने लगा तो बोला- मैं ईमान ले आया, और मान लिया कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये है, और मैं आज्ञाकारियों में हूँ।

يُوحِىْ يُونُسَ وَأَخْلَصُوا يُونُسَ نَفْسَهُ وَأَقْبِسُوا
الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ
وَمَلَائِكَتَهُ ذِكْرًا وَآمَأْنَا فِي حَيَاتِهِ
الَّذِينَ آمَنُوا عَنْ رَبِّكَ رَجَاءَ طَمَسٍ
عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَشَدَّ عَلَى قُلُوبِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوا عَلَىٰ رَوْا الْعَذَابِ الْكَبِيرِ ۝

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكَ فَاسْتَقِيمْ وَلَا
تَتَّبِعْ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَجَوْرًا يَكْفُرُ بِآيَاتِنَا إِنَّ الْفِرْعَوْنَ شَقِيحٌ فِرْعَوْنَ
وَجَوْرًا يَكْفُرُ بِآيَاتِنَا إِنَّ الْفِرْعَوْنَ شَقِيحٌ فِرْعَوْنَ
أَمَلْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا الَّذِي مَلَكَ يَهُيُّ
بِشْرَاهُ بَلْ وَأَكْفُرُ مِنَ الْمُتَكِبِينَ ۝

1 «किव्ला» उस दिशा को कहा जाता है जिस की ओर मुख कर के नमाज पढ़ी जाती है।

91. (अब्राह्म ने कहा) अब? जब कि इस से पूर्व अवैज्ञा करता रहा, और उपद्रवियों में से था?

الْأَنزِلَ وَقَدْ خَلَّيْتُ قَبْلَ وَكُنْتُ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ۝

92. तो आज हम तेरे शव को बचा लेंगे ताकि तू उन के लिये जो तेरे पश्चात होंगे, एक (शिक्षाप्रद) निशानी¹ बने। और वास्तव में बहुत से लोग हमारी निशानियों से अचेत रहने हैं।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقْتَ آيَةً
وَمَا كُنْتَ لِتُؤْمِنَ لِلنَّاسِ عَنْ بَيْنِ يَدَيْهِمْ ۝

93. और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा निवास स्थान² दिया, और स्वच्छ जीविका प्रदान की फिर उन्होंने परस्पर विभेद उस समय किया जब उन के पास ज्ञान आ गया। निश्चय अब्राह्म उन के बीच प्रलय के दिन उस का निर्णय कर देगा जिस में वह विभेद कर रहे थे।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مِن مَّوْضِعٍ
قَدِيمٍ فَهَمَّوْا لَطِيفَتِنَا أَنِ الْخَسْفُ وَحَتَّى
جَاءَهُمُ الْعِلْفُ ۚ لَئِنْ يَفْقَهُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا مِن يَسْتَفْتُونَ ۝

94. फिर यदि आप को उम में कुछ संदेह³ हो, जो हम ने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ने हैं। आप के पास आप के पालनहार की ओर से सत्य आ गया है। अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों।

لَوْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا آتَيْنَاكَ فَسْئَلِ
الَّذِينَ يُقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ
جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَ مِنَ الْمَتَكِبِينَ ۝

95. और आप कदापि उन में से न हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठला

وَلَا تَكُونَ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا

1 बताया जाता है कि 1898 ई- में इस फिरऔन का मम्मी किया हुआ शव मिल गया है जो काहिरा के विचित्रालय में रखा हुआ है।

2 इस से अभिप्राय मिस्र और शाम के नगर हैं।

3 आयत में संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किया गया है। परन्तु वास्तव में उन को संबोधित किया गया है जिन को कुछ संदेह था। यह अरबी की एक भाषा शैली है।

दिया अन्यथा क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।

فَتَكُونُ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٦﴾

96. (हे नबी!) जिन पर आप के पालनहार का आदेश सिद्ध हो गया है, वह इमान नहीं लायेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَيْدَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٧﴾

97. यद्यपि उन के पास सभी निशानियाँ आ जायें, जब तक दुःखदायी यातना नहीं देख लेंगे।

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٨﴾

98. फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि कोई बस्ती इमान¹ लाये फिर उस का इमान उसे लाभ पहुँचाये, यूनस की जाति के सिवा जब वह इमान लाये तो हम ने उन से समारिक जीवन में अपमानकारी यातना दूर कर² दी, और उन्हें एक निश्चिन्त अवधि तक लाभान्वित होने का अवसर दे दिया।

فَمَا لَكُمُ لَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ مَعَ قَوْمِ إِلَهِي الْإِنْسِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَخْشَوْنَ رَبَّ الْيَوْمِ ﴿٩٩﴾

99. और यदि आप का पालनहार चाहता तो जो भी धरती में है सब इमान ले आते तो क्या आप लोगों को बाध्य करेंगे यहाँ तक कि इमान ले आये।³

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمْسَ مِنْ فِي الْأَرْضِ لَكُمُ يَوْمَئِذٍ أَفَاتٌ تَكْفُرُ النَّاسَ حَتَّى يَكُونُوا تَرْغِبِينَ ﴿١٠٠﴾

100. किसी प्राणी के लिये यह संभव नहीं है कि अल्लाह की अनुमति⁴

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُوَفَّى إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَتَحْمِلَ

1 अर्थात् यातना का लक्षण देखने के पश्चात्।

2 यूनस अलैहिस्सलाम का युग ईसा मसीह से आठ सौ वर्ष पहले बनाया जाता है। भाष्यकारों ने लिखा है कि वह यातना की सूचना दे कर अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर नीनवा से निकल गये। इस लिये जब यातना के लक्षण नागरिकों ने देखे और अल्लाह से समायाचना करने लगे तो उन से यातना दूर कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

3 इस आयत में यह बनाया गया है कि सन्धर्म और इमान ऐसा विषय है जिस में बल का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह अनहोनी बात है कि किसी को बलपूर्वक मुसलमान बना लिया जाये। (देखिये: सूरह बकरा, आयत 256)।

4 अर्थात् उस के स्वभाविक नियम के अनुसार जो मोच विचार से काम लेना है

के बिना ईमान लाये, और वह मलीनता उन पर डाल देता है जो बुद्धि का प्रयोग नहीं करते।

101. (हे नबी!) उन से कहो कि उसे देखो जो आकाशों तथा धरती में है। और निशानियाँ तथा चिन्तावनियाँ उन्हें क्या लाभ दे सकती है जो ईमान (विश्वास) न रखते हों?

102. तो क्या वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर वैसे ही (बुरे) दिन आयें जैसे उन से पहले लोगों पर आ चुके हैं? आप कहिये: फिर तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।

103. फिर हम अपने रसूलों को और जो ईमान लाये, बचा लेते हैं। इसी प्रकार हम ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लेने है।

104. आप कह दें हे लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के बारे में किसी संदेह में हो तो मैं उस की इबादत (वन्दना) कभी नहीं करूँगा जिस की इबादत (वन्दना) अल्लाह के सिवा तुम करते हो। परन्तु मैं उस अल्लाह की इबादत (वन्दना) करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है। और मुझे आदेश दिया गया है कि ईमान वालों में रहूँ।

105. और यह कि अपने मुख को धर्म के लिये सीधा रखो एकेस्वरवादी हो कर। और कदापि मिश्रणवादियों में न रहो।

الَّذِينَ عَلَى الْإِيمَانِ لَا يَفْقَهُونَ ۝

فَلْيَنْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُعَلِّمُوا
الْآيَاتِ وَالنُّذُرِ عَنْ قَوْمِهِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

لَهُمْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ آيَاتِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ قُلْ فَأَنظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا رَبًّا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ حَقًّا
عَلَيْكُمْ أَشْهُمًا مُؤْمِنِينَ ۝

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي كُنْتُ نَذِيرًا شَدِيدًا مِنْ رَبِّي
فَلَا أُعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ
أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَأُؤْتِ السَّاعُونَ
مِنْ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۝

वही इमान लाता है।

106. और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारो जो आप को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है। फिर यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

وَلَا تَكُنْ مِمَّنْ دُورٍ لِلَّذِينَ لَا يَفْعَلُونَ
بِغَيْرِكَ شَيْئًا فَعَلَكَ إِذَا مَنَ
الظَّالِمِينَ ﴿١٠٦﴾

107. और यदि अल्लाह आप को कोई दुःख पहुँचाना चाहे तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और यदि आप को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उस की भलाई को रोकने वाला नहीं। वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है, तथा वह क्षमाशील दयावान् है।

وَلَا يَمَسُّكَ اللَّهُ بِضُغَّةٍ وَلَا كَأْسَةٍ لِمَن لَّا هُوَ
ذُو نُدْرٍ فَإِذَا رَأَىٰ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَن
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾

108. (हे नबी!) कह दो कि हे लोगो! तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया¹ है। अब जो सीधी डगर अपनाना हो तो उसी के लिये लाभदायक है। और जो कुपथ हो जाये तो उस का कुपथ उसी के लिये नाशकारी है। और मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ²।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْعَقْلُ مِنْ رَبِّكُمْ
فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَن ضَلَّ
فَأِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِخَفِيٍّ ﴿١٠٨﴾

109. आप उसी का अनुसरण करें जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है। और धैर्य से काम लें, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और वह सर्वोत्तम निर्णयता है।

وَأَسِيعَ مَا يُؤْتَىٰ إِلَيْكَ وَالصَّابِرِينَ يُجْزَىٰ اللَّهُ
وَهُوَ خَيْرُ الْجَازِلِينَ ﴿١٠٩﴾

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुआन ले कर आ गये हैं

2 अर्थात् मेरा कर्तव्य यही है कि तुम्हें जलपूर्वक सीधी डगर पर कर दूँ

सूरह हूद 11

سُورَةُ هُودٍ

यह सूरह मक्की है इस में 123 आयते हैं।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ लाम रा। यह पुस्तक है जिम् की आयते सुदृढ़ की गयी, फिर सर्बिस्तार वर्णित की गयी है उस की ओर से जो तन्वज्ज सर्वसूचिन है।
2. कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादन (बंदना) न करो। वास्तव में, मैं उस की ओर से तुम को सचेत करने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।
3. और यह कि अपने पालनहार से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर ध्यान मग्न हो जाओ। वह तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अच्छा लाभ पहुँचायेगा। और प्रत्येक श्रेष्ठ को उस की श्रेष्ठता प्रदान करेगा। और यदि तुम मुंह फेंरोगे तो मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।
4. अल्लाह ही की ओर तुम सब को पलटना है, और वह जो चाहे कर सकता है।
5. सुनो! यह लोग अपने सीनों को

الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْيَقِينُ
مِنْكُمْ

أَلَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَوْتُكُمْ كُفْرًا

وَالَّذِينَ يَسْتَعِينُونَ رَبَّهُمْ
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ
وَالَّذِينَ يَتَّبِعُونَ
أَمْرًا مِنْ رَبِّهِمْ
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

أَلَا تَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

मोड़ते हैं ताकि उस¹ से छुप जायें सुनो! जिस समय वे अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँपते हैं तब भी वह (अल्लाह) उन के छुप को जानता है। तथा उन के खुले को भी। वास्तव में वह उसे भी भली भाँति जानने वाला² है जो सीनों में (भेद) है।

6. और धरती में कोई चलने वाला नहीं है परन्तु उस की जीविका अल्लाह के ऊपर है तथा वह उस के स्थायी स्थान तथा सौपने के स्थान को जानता है। सब कुछ एक खुली पुस्तक में अंकित है।³

7. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति छः दिनों में की। उस समय उस का सिंहासन जल पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म सब से उत्तम है। और (हे नबी!) यदि आप उन से कहें कि वास्तव में तुम सभी मरण के पश्चात् पुनः जीवित किये जाओगे तो जो काफिर हो गये अवश्य कह देंगे कि यह तो केवल खुला जादू है।

8. और यदि हम उन से यातना में किसी विशेष अवधि तक देर कर दें तो

يَسْتَفْتُونَ شَيْئًا لَّيْسَ لَهُمْ بِهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّونَ
إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ خَدَائِدًا

وَمَنْ ذَا الَّذِي فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ
يَرْزُقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ
فِي كِتَابٍ مُبِينٍ

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ يَبْسُطُكُمْ
أَحْسَنَ عَسَلًا وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ قَاهِئُونَ مِنَ
بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الْكَافِرُونَ كَذَبُوا إِنَّ هَذَا
إِلَّا بَحْرُ مُمْسِكٍ

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَى آتٍ مَعْدُودٍ

1 अर्थात् अल्लाह से।

2 आयत का भावार्थ यह है कि मिश्रणवादी अपने दिलों में कृत्र को यह समझ कर छुपाने हैं कि अल्लाह उसे नहीं जानेगा। जब कि वह उन के खुले छुपे और उन के दिलों के भेदों तक को जानता है।

3 अर्थात् अल्लाह, प्रत्येक व्यक्ति की जीवन मरण आदि की सब दशाओं से अवगत है।

अवश्य कहेंगे कि उसे क्या चीज रोक रही है? सुन लो! वह जिस दिन उन पर आ जायेगी तो उन से फिरेगी नहीं। और उन्हें वह (यानना) घेर लेगी जिस की वह हँसी उड़ा रहे थे।

لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِصُهَا الْيَوْمَ بِأَيِّهِمْ أَمِنْ مَفْرُوقًا
عَنْهُمْ وَخَافَ بِهَمٍّ كَأَنُوبَاهُ يَنْتَهَرُونَهُ ۚ

9. और यदि हम मनुष्य को अपनी कुछ दया चखा दें, फिर उस को उस से छीन लें, तो हताशा कृतघ्न हो जाता है।

وَلَكِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِثْلَ حَمِئَةٍ ثُمَّ رَدَّعْنَاهَا
بِمِثْلِهَا إِنَّهُ لَنُبُوْسٌ لَّكَوْرٍ ۚ

10. और यदि हम उसे सुख चखा दें, दुख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कहेंगा कि मेरा सब दुख दूर हो गया। वास्तव में वह प्रफुल्ल हो कर अकड़ने लगता है।¹

وَلَكِنْ أَذَقْنَا الْعَمَاءَ عَذْرَاءً ثُمَّ لَقُوا لَقُوا
ذَهَبَ الشَّيْءَاتُ عَيْنُ إِنَّهُ لَفُورٌ فَخُورٍ ۚ

11. परन्तु जिन्होंने धैर्य धारण किया और मुकर्म किये तो उन के लिये क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۚ

12. तो (हे नबी!) संभवतः आप उस में कुछ को जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है, त्याग देने वाले है और इस के कारण आप का दिल सिकुड़ रहा है कि वह कहते हैं कि इस पर कोई कोष क्यों नहीं उतारा गया, या उस के साथ कोई फरिश्ता क्यों आया?? आप केवल सचेत करने वाले है और अल्लाह ही प्रत्येक चीज पर रक्षक है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضُ مَا يُوْحَىٰ إِلَيْكَ
وَضَآئِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ
عَلَيْهِ كُتُبٌ وَجِآءَ مَعَهُ مَنَّا أَنْتَ
نَذِيرٌ ۚ وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

13. क्या वह कहते हैं कि उस ने इस (कुर्आन) को स्वयं बना लिया है?

أَمْ يَقُولُونَ قُرْآنٌ عَلَيْنَا لَئِنْ أُنْزِلَ سِوَىٰ مِثْلِهِ

1 इस में मनुष्य की स्वभाविक दशा की ओर संकेत है।

आप कह दें कि इसी के समान दस सूरतें बना लाओ¹ और अल्लाह के सिवा जिसे हो सके बुला लो, यदि तुम लोग सच्चे हो।

مُفَرِّقِينَ وَادْعُوا مَنِ اسْتَعْتَبْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

14. फिर यदि वह उत्तर न दें तो विश्वास कर लो कि उसे (कुरआन को) अल्लाह के ज्ञान के साथ ही उतारा गया है। और यह कि कोई बंदनीय (पूज्य) नहीं है परन्तु वही। तो क्या तुम मुस्लिम होते हो?

فَإِنْ كُنْتُمْ تَحِبُّونَ الْكُفْرَ فَاعْبُدُوا آلِهَتَكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ
وَأَنَّ إِلَهَ الْأَوَّلِينَ الْكُفْرُ سَلِيمٌ ۝

15. जो व्यक्ति संसारिक जीवन तथा उस की शोभा चाहता हो, हम उन के कर्मों का (फल) उसी में चुका देंगे। और उन के लिये (संसार में) कोई कमी नहीं की जायेगी।

مَنْ كَانَ يُرِيدَ لِحَيَاةِ الدُّنْيَا زِينَةً فَإِنَّهَا تُوَفَّرُ لَهُمْ
أَعْمَالُهُمْ بِهَا وَهُمْ فِيهَا لَافِتُونَ ۝

16. यही वह लोग हैं जिन का परलोक में अग्नि के सिवा कोई भाग नहीं होगा। और उन्होंने जो कुछ किया वह व्यर्थ हो जायेगा, और वे जो कुछ कर रहे हैं असत्य सिद्ध होने वाला है।

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ
وَحَبِطَ مَا صَبَّغُوا فِيهَا وَيَبِيلُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

17. तो क्या जो अपने पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण² रखता हो, और

أَكْمَرُ كَانَ عَلَى بَيْتِهِمْ زَيْنُهُ وَتَلَوْنَاهُ شَاهِدٌ

1 अल्लाह का यह चैलन्ज है कि अगर तुम को शंका है कि यह कुरआन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने स्वयं बना लिया है तो तुम इस जैसी दस सूरतें ही बना कर दिखा दो। और यह चैलन्ज प्रलय तक के लिये है। और कोई दस तो क्या इस जैसी एक सूरह भी नहीं ला सकता। (देखिये सूरह यूनस आयत 38 तथा सूरह बकरा, आयत: 23)

2 अर्थात् जो अपने अस्तित्व तथा विश्व की रचना और व्यवस्था पर विचार कर के यह जानता था कि इस का स्वामी तथा शासक केवल अल्लाह ही है उस के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो सकता।

उस के माथ ही एक गवाह (साक्षी) ¹ भी उस की ओर से आ गया हो, और इस के पहले मूसा की पुस्तक मार्ग दर्शक तथा दया बन कर आ चुकी हो, ऐसे लोग तो इस (कुरआन) पर ईमान रखने हैं। और संप्रदायों में से जो इसे अस्वीकार करेगा तो नरक ही उस का वचन स्थान है। अतः आप इस के बारे में किसी संदेह में न पड़ें। वास्तव में यह आप के पालनहार की ओर से सत्य है। परन्तु अधिक्तर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

18. और उस से बड़ा अन्याचारी कौन होगा जो अब्राहम पर मिथ्यारोपण करे। वही लोग अपने पालनहार के समक्ष लाये जायेंगे और साक्षी (फरिश्ते) कहेंगे कि इन्होंने ही अपने पालनहार पर झूठ बोले। मुनो! अन्याचारियों पर अब्राहम की धिक्कार है।

19. वही लोग अब्राहम की राह से रोक रहे हैं और उसे टेढ़ा बनाना चाहते हैं। वही परलोक को न मानने वाले हैं।

20. वह लोग धरती में विवश करने वाले नहीं थे। और न उन का अब्राहम के सिवा कोई सहायक था। उन के लिये दुगनी यातना होगी। वह न सुन सकते थे, न देख सकते थे।

21. उन्होंने ही स्वयं अपना विनाश कर लिया और उन से वह बात खो गयी जो वे बना रहे थे।

مِنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كَيْتَابُ نُوحٍ إِسْمًا وَرَحْمَةً أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِمْ مِنَ الْأَشْرَافِ قَالُوا لِمَوْعِدُهُمْ فَلَا تَكُنْ مِنْ يَدَّيْنِهِ إِنَّهُ سَخِطٌ مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ الْأَكْثَرِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّكَى عَلَى اللَّهِ كِبَرًا وَلَهُتْ يُعْرَضُونَ عَلَى رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْرَافُ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَّبُوا عَلَى رَبِّهِمْ الْأَلْمَنَةَ اللَّهُ قُلْ طَائِفَتٌ

الْبَرِّ يَصُدُّونَ عَنْ شَيْبٍ لِلَّهِ وَيَعْمَلُونَ مَا يَحْتَسِبُونَ ۝

أُولَئِكَ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ مَعِيْرَةٌ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ بُعِثْتَ لَهُمُ الْغَنَابُ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

1 अर्थात् नबी और कुरआन।

22. यह आवश्यक है कि परलाक में यही सर्वाधिक विनाश में होंगे।

لَا يَخْرُجُ فِيهَا وَالْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾

23. वास्तव में जो ईमान लाये, और सदाचार किये तथा अपने पालनहार की ओर आकर्षित हुये वही स्वर्गीय हैं। और वह उस में सदैव रहेंगे।

إِنَّ الْكَافِرِينَ أَمْوَالُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ فِي آتٍ مُّهِينٍ ﴿٢٣﴾

24. दोनों समुदाय की दशा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला हो। तो क्या दोनों की दशा समान हो सकती है? क्या तुम (इस अन्तर को) नहीं समझते?

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَى وَالْبَصِيرِ ﴿٢٤﴾

25. और हम ने नूह को उस की जाति की ओर रमूल बना कर भेजा। उन्होंने कहा वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये खुले रूप से सावधान करने वाला हूँ।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِذْ كَانَ يَكْفُرُونَ ﴿٢٥﴾

26. कि इबादत (वन्दना) केवल आब्राह ही की करो। मैं तुम्हारे ऊपर दुख दायी दिन की यातना से डरता हूँ।

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنَِّّي خَشِيتُ لَكُمْ يَوْمَ الْبَاقِ ﴿٢٦﴾

27. तो उन प्रमुखों ने जो उन की जाति में से काफिर हो गये, कहा हम तो तुझे अपने ही जैसा मानव पुरुष देख रहे हैं और हम देख रहे हैं कि तुम्हारा अनुसरण केवल वही लोग कर रहे हैं जो हम में नीचे हैं। वह भी बिना सोचे समझे। और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई प्रधानता भी नहीं देखने, बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

فَقَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَرْمِيهِمْ إِلَّا آمَنُوا وَتَشْتَكُونَ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَمَا تَسْتَكْثِرُونَ إِلَّا أَنْ يُقَالُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٧﴾

1 कि दोनों का परिणाम एक नहीं हो सकता। एक को नरक में और दूसरे को स्वर्ग में जाना है। (देखिये: सूरह हूद आयत: 20)

28. उस (अथान् नूह) ने कहा हे मेरी जाति के लोगों! तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और मुझे उस ने अपने पास से एक दया¹ प्रदान की हो, फिर वह तुम्हें मुझायी न दे, तो क्या हम उसे तुम से चिपका² दें, जब कि तुम उसे नहीं चाहते?
29. और हे मेरी जाति के लोगों! मैं इस (सत्य के प्रचार) पर तुम से कोई धन नहीं माँगता। मेरा बदला तो अब्राह के ऊपर है। और मैं उन्हें (अपने यहाँ से) धुतकार नहीं सकता जो ईमान लाये हैं निश्चय वे अपने पालनहार से मिलने वाले हैं, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम जाहलों जैसी बातें कर रहे हो।
30. और हे मेरी जाति के लोगों! कौन अब्राह की पकड़ से³ मुझे बचायेगा, यदि मैं उन को अपने पास से धुतकार दूँ? क्या तुम सोचते नहीं हो?
31. और मैं तुम से यह नहीं कहना कि मेरे पास अब्राह के कोषागार (खजाने) हैं। और न मैं गुप्त बातों का ज्ञान रखता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि मैं फरिश्ता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि जिन को तुम्हारी

قَالَ يَقَوْمِ اَرَايْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّيْ
وَسَيِّئٌ رَّحْمَةً مِّنْ عِندِىْ فَعَمِيَّتْ عَلَيْكُمْ
اَنْلِيْ مُكْنُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كِرْهُوْنَ ۝

وَيَقَوْمِ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَكُمۡ اٰخِرٰى اِلَّا عِلًّا
اَللّٰهُ وَمَا اَنْ يَّهْدِيَ الْاَلْبَابَ اِنَّ اَسْأَلُكُمْ لَنْفُسِكُمْ
وَلَكِنِّيۡ اَرْسَلْتُكُمْ قَوْمًا يَّجْهَلُوْنَ ۝

وَيَقَوْمِ مَن يَّصْرِفُ بَيْنَ يَدَيۡنِىْ طَرْدَ اَنۡفُسِكُمْ تَدَّكُرُوْنَ ۝

وَلَا اَقُوْلُ لَكُمْ عِندِيۡ خَزَاۡئِنُ مَطۡوَرٍ وَلَا اَعْلَمُ
الْغَيْۡبَ وَلَا اَقُوْلُ فِيۡ مَاتٍ وَلَا اَقُوْلُ لِكُلِّۢنَّ
رَّوۡدِيۡنِ كُنۡفُۡلُۡمۡ لَّسۡ يُؤَيِّدُكُمۡ اِلٰهُ خَيْرٌۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ
بِمَاۡفِىۡ السُّجُرۡرٰتِ اِذۡ لَيۡسَ اِلَّهَ الْظٰلِمِيۡنَ ۝

1 अर्थात् नयूवन और मार्गदर्शन।

2 अर्थात् मैं बलपूर्वक तुम्हें सत्य नहीं मनवा सकता।

3 अर्थात् अब्राह की पकड़ से जिस के पास ईमान और कर्म की प्रधानता है धन धान्य की नहीं।

आँखें धूणा से देखती है अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह अधिक जानता है जो कुछ उन के दिलों में है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो निश्चय अत्याचारियों में हो जाऊँगा।

32. उन्होंने ने कहा: हे नूह! तू ने हम से झगड़ा किया और बहुत झगड़ लिया, अब वह (यातना) ला दो जिस की धमकी हमें देने हो यदि तुम सच्च बोलने वालों में हो।

قَالُوا يَنْوُذُ فَذَلْتُنَا كَلِمَةً يَحْدُثُ فَلَمَّا
بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ الْفُصْحَىٰ ۖ

33. उस ने कहा उसे तो तुम्हारे पास अल्लाह ही लायेगा, यदि वह चाहेगा। और तुम (उसे) विवश करने वाले नहीं हो।

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ اللَّهُ إِن شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ
بِمُعْجِزِينَ ۖ

34. और मेरी शुभ चिन्ता तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती यदि मैं तुम्हारा हिन चाहूँ जब कि अल्लाह तुम्हें कुपध करना चाहता हो। और तुम उसी की ओर लोटाये जाओगे।

وَلَا يَنْفَعُكُمُ الْفَيْسُ إِنِ ارْتَبْتُمْ ۚ إِن نَّشَاءُ لَسَوْفَ نَحْمَلُكُمْ
إِنَّ اللَّهَ يُرِيدُ أَنْ يُفْجِرَكُمْ هَؤُلَاءِ وَمَا يُبْرِي
رُجُوعُونَ ۖ

35. क्या वह कहते हैं कि उस ने यह बात स्वयं बना ली है? तुम कहो कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है, तो मेरा अपराध मुझी पर है, और मैं निर्दोष हूँ उस अपराध से जो तुम कर रहे हो।

أَمْ يَقُولُونَ كُنْزُهَا فِي الْمَرْجَةِ ۚ فَقُلْ
إِنِّي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْبُرُونَ ۖ

36. और नूह की ओर बह्वी (प्रकाशना) की गयी कि तुम्हारी जाति में से ईमान नहीं लायेंगे, उन के सिवा जो ईमान ला चुके हैं। अतः उस से दुखी न बनो जो वह कर रहे है।

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا
مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَهْشَبْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۖ

37. और हमारी आँखों के सामने हमारी

وَأَصْبَحَ الْفُجَاءَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَوَحِّينَا ۖ وَلَا تَحْزَنْ

वह्नी के अनुसार एक नाव बनाओ,
और मुझ से उन के बारे में कुछ¹ न
कहना जिन्हों ने अत्याचार किये हैं।
वास्तव में वे डूबने वाले हैं।

فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُخْرَجُونَ ﴿٥﴾

38. और वह नाव बनाने लगा, और जब
भी उस की जाति के प्रमुख उस के
पास से गुजरते, तो उस की हंसी
उड़ाते नूह ने कहा यदि तुम हमारी
हंसी उड़ाते हो तो हम भी ऐसे ही
(एक दिन) तुम्हारी हंसी उड़ायेंगा।

وَيَسْمِعُ الْفُلْكَ وَكَلَّمَ مَرْعَاهُ مَلَكًا تَوَّابًا
يَقُولُ إِنَّكَ لَكَاذِبٌ وَمَا نَسْتَعِينُ ﴿٦﴾

39. फिर तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि
किस पर अपमान करी यातना आयेगी।
और स्याई दुख किस पर उतरेगा?

فَتَوَّابٌ عَلِيمٌ ﴿٧﴾

40. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ
गया और तन्नूर उबलने लगा तो
हम ने (नूह से) कहा, उस में प्रत्येक
प्रकार के जीवों के दो जोड़े रख लो।
और अपने परिजनो को, उन के सिवा
जिन के बारे में पहले वता दिया गया
है, और जो ईमान लाये हैं। और उस
के साथ थोड़े ही ईमान लाये थे।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ فَذَلَّلْنَا بِقُوَّةٍ
مِّنَّا زَوْجَيْنِ الْأُنثَىٰ وَأَقْبَلْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْوُجُوهِ
الَّتِي تَقْبَلُ السُّجُودَ ۚ وَنَاخَا بِكُم بِهَا نَارًا ۚ

41. और उस (नूह) ने कहा इस में
सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम ही
से इस का चलना तथा इसे रुकना
है। वास्तव में मेरा पालनहार बड़ा
क्षमाशील दयावान् है।

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ جَمْعًا وَمَوْسِمًا
ۚ إِنَّ رَبِّي لَعَلِيمٌ بِذَاتِ الْغُيُوبِ ﴿٨﴾

42. और वह उन्हें लिये पर्वत जैसी ऊँची
लहरों में चलती रही। और नूह ने अपने
पुत्र को पुकारा, जब कि वह उन से
अलग था हे मेरे पुत्र! मेरे साथ सवार

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَنِي إِسْرَٰءِيلَ يَتْلُوا آيَاتِ
الْكِتَابِ ۚ وَكَانَ فِي مَقَرٍّ مِّنْهُ عِلِّيُّنَ
مُتَّعِينَ ۚ وَلَا تَلْزَمُ الْكُفْرَ ۚ

हो जा, और काफ़िरो के साथ न रहा

43. उस ने कहा मैं किसी पर्वत की ओर शरण ले लूंगा, जो मुझे जल से बचा लेगा। नूह ने कहा: आज अल्लाह के आदेश (यातना) से कोई बचाने वाला नहीं परन्तु जिस पर वह (अल्लाह) दया कर दे। और दोनों के बीच एक लहर आडे आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

44. और कहा गया हे धरती! अपना जल निगल जा। और हे आकाश! तू धम जा। और जल उतर गया, और आदेश पूरा कर दिया गया और नाव "जूदी" ¹ पर ठहर गई। और कहा गया कि अत्याचारियों के लिये (अल्लाह की दया में) दूरी है।

45. तथा नूह ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, और कहा: मेरे पालनहार! मेरा पुत्र मेरे परिजनो में से है। निश्चय तेरा बचन सत्य है तथा तू ही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

46. उस (अल्लाह) ने उत्तर दिया वह तेरा परिजन नहीं। (क्योंकि) वह कुकर्मि है। अतः मुझ से उस चीज का प्रश्न न करो जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं। मैं तुझे बताता हूँ कि अज्ञानों में न हो जा।

47. नूह ने कहा मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं तुझ से

قَالَ سَوْفَ اُبَلِغُكَ الْجَبَلَ فَيَعْمَلُونَ مِنَ الْمَاءِ قَالَ لَخَافَتَهُ الْيَوْمُونَ اَمْ اَمَرْتُ الْاَمْسَ وَجِئَ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ

وَقِيلَ يَا اَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَبَسْمًا اَقْلَعِ وَبَغِيضَ الْمَاءِ وَطَفِيَ الْأَمْوَاسُ وَتَوَتَّ عَلَى الْجُودَى وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

وَنَادَى مُوسَى رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَدَكَ الْغَيُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ

قَالَ يٰمُوسَى إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَتَّبِعْ مَا تَدْعُو لَكَ بِهٖ عِلْمٌ بَیِّنٌ اَعْمَضْتَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰجِثِينَ

قَالَ رَبِّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْتَكْبَرَ اَلَيْسَ لِيْ

1 "जूदी" एक पर्वत का नाम है जो कर्दस्तान में "इब्ने उमर" द्वीप के उत्तर-पूर्व और स्थित है। और आज भी जूदी के नाम से ही प्रसिद्ध है।

ऐसी चीज की माग करूँ जिस (की वास्तविकता) का मुझे कोई ज्ञान नहीं है।¹ और यदि तू ने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया न की तो मैं क्षतिग्रस्तों में हो जाऊँगा।

يٰٓهٰٓيَٰدُوۡلَۤا اَتَقُوۡنُۢلْاِنَّ مِّنۡ عِندِ اللّٰهِ لَشَيْۡءٌ ۙ
الْحَسِرٰتِ ۝

48. कहा गया कि हे नूह! उतर जा हमारी ओर से रक्षा और सम्पन्नता के साथ अपने ऊपर तथा तेरे साथ के समुदायों के ऊपर। और कुछ समुदाय ऐसे हैं जिन को हम संसारिक जीवन सामग्री प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

يَقُلۡ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰتٰوۡا۟كُمُۥمۡ مِّنۡ عِندِ اللّٰهِ مَالًاۙ وَبٰرَكٰتٍ ۚ
وَعَلٰى اٰلِیۡهِمْ سٰوٰۤیةٌ مِّنۡ مَّالِکِ وَاَمۡرٍ مِّمَّۤیۡنُهُۥمۡ ۚ
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰتٰوۡا۟كُمُۥمۡ مِّنۡ عِندِ اللّٰهِ

49. यह गैब की बातें हैं जिन्हें (हे नबी!) हम आप की ओर प्रकाशना (बढ़ी) कर रहे हैं। इस से पूर्व न तो आप इन्हें जानते थे और न आप की जाति। अतः आप सहन करें। वास्तव में अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

ۙ اِنَّكَ مِّنۡ اَنْۢبِیَآءِ الْغٰیۡبِ ۚ لَیۡسَ لَكَ اِلٰهٌ ۙ اِلَّا اللّٰهُ ۚ
تَعَلَّمَهَا ۚ اِنَّكَ لَا تُوۡفِقُۢنَّ فِیۡ شَیۡءٍ ۚ هٰذَا قٰمِیۡرٌ
لِّلۡ عٰقِبَةِ الْعٰلَمِیۡنَ ۝

50. और "आद" (जाति) की ओर उन के भाई हूद को भेजा उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! अब्राह की इबादत (बंदना) करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम इस के सिवा कुछ नहीं हो कि झूठी बातें घड़ने वाले हो।²

وَالۡاِلٰهَ ۙ اِلَّا هُوَ ۚ قَالِ یٰٓقَوْمِ احۡبِدُوۡا۟ اِلٰهَکُمۡ
مَا لَکُمۡ مِنْۢ لِّوٰغِیۡرِهِۦ اِنْ اَنْتُمۡ اِلَّا مُفۡرِقُونَ ۝

51. हे मेरी जाति के लोगो! मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता।

یَقُوۡمِرۡ لَّا اَسۡتَلۡمَکُمۡ عَلَیۡهِۚ اَجۡوَابُۙ اِنْ اَخِیۡرَیۡدَ ۙ اِلَّا عَلٰی

1 अर्थात् जब नूह (अलैहिस्सलाम) को बताया गया कि तुम्हारा पुत्र ईमान वालों में से नहीं है इस लिये वह अब्राह के अजाब से बच नहीं सकता तो नूह तुरन्त अब्राह से क्षमा माँगने लगे।

2 अर्थात् अब्राह के सिवा तुम ने जो पूज्य बना रखे हैं वह तुम्हारे मन घड़त पूज्य हैं।

मेरा पारिश्रमिक बदला उसी (अब्राह) पर है जिस ने मुझे पैदा किया है। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते।⁵¹

الَّذِي فَطَرَنِي فَلَا تَعْقِلُونَ ۝

52. हे मेरी जानि के लोगो! अपने पालनहार से क्षमा मांगो। फिर उस की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वह आकाश से तुम पर धारा प्रवाह वर्षा करेगा। और तुम्हारी शक्ति में अधिक शक्ति प्रदान करेगा। और अपराधी हो कर मुँह न फेरो।

وَيَقُومُ سَمْعِيرُ وَرَبُّكُمْ تَوْتُو الْيَهُودِ
السَّمَاءُ عَلَيْكُمْ مِدْرَارٌ وَنُرَادُكُمْ تَوْتُو
تَوْتُوكُمْ وَلَا تَسْأَلُوا مُجْرِمِينَ ۝

53. उन्होंने ने कहा: हे हूद! तुम हमारे पास कोई स्पष्ट (खुला) प्रमाण नहीं लाये। तथा हम तुम्हारी बात के कारण अपने पूज्यों को त्यागने वाले नहीं है और न हम तुम्हारा विश्वास करने वाले है।

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئَكَ بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ
بِتَائِبِينَ إِلَّا نَسْأَلُكَ تَوْتُو الْيَهُودِ
السَّمَاءُ عَلَيْكُمْ مِدْرَارٌ وَنُرَادُكُمْ تَوْتُو

54. हम तो यही कहेंगे कि तुझे हमारे किसी देवता ने बुराई के साथ पकड़ लिया है। हूद ने कहा मैं अब्राह को (गवाह) बनाता हूँ, और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उस शिर्क (मिश्रणवाद) से विरक्त हूँ जो तुम कर रहे हो।

إِنْ تَقُولُ إِلَّا نَسْأَلُكَ تَوْتُو الْيَهُودِ
السَّمَاءُ عَلَيْكُمْ مِدْرَارٌ وَنُرَادُكُمْ تَوْتُو

55. उस (अब्राह) के सिवा। तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध षडयंत्र रच लो फिर

مِنْ دُونِهِ يُكِيدُونَ جَمِيعًا ثُمَّ تَسْأَلُونَ

1 अर्थात् यदि तुम समझ रखने तो अवश्य सोचने कि एक व्यक्ति अपने किसी संसारिक स्वार्थ के बिना क्यों हमें रातों दिन उपदेश दे रहा है और सारे दुख झेल रहा है। उस के पास कोई ऐसी बात अवश्य होगी जिस के लिये अपनी जान जोखिम में डाल रहा है।

मुझे कुछ भी अवसर न दो।¹

56. वास्तव में मैं ने अब्राह पर जो मेरा पालनहार और तुम्हारा पालनहार है, भरोसा किया है। कोई चलने वाला जीव ऐसा नहीं जो उस के अधिकार में न हो, वास्तव में मेरा पालनहार सीधी राह² पर है।

57. फिर यदि तुम विमुख रह गये तो मैं ने तुम्हें वह उपदेश पहुँचा दिया है जिस के साथ मुझे भेजा गया है, और मेरा पालनहार तुम्हारा स्थान तुम्हारे सिवा किसी³ और जालि को दे देगा। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकोगे, वास्तव में मेरा पालनहार प्रत्येक चीज का रक्षक है।

58. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उन को जो उस के साथ इमान लाये अपनी दया से बचा लिया, और हम ने उन को घोर यातना से बचा लिया।

59. वही (जालि) "आद" है, जिस ने अपने पालनहार की आयनों (निशानियों) का इन्कार किया और उस के रसूलों की बात नहीं मानी, और प्रत्येक सच्च के विरोधी के पीछे चलते रहे।

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِعِصْمَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبَدْنَا لَكُمْ آلَاءَكُمْ إِنَّكُمْ لَعِنٌ ۝
وَسَنُخْلِفَنَّ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّهُمْ شَيْئًا
إِنَّ رَبِّي عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَحْنُ الْهَادُونَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَّا
يُصَوِّغُونَ لَكُمْ بِحُكْمِهِمْ عَذَابَ الْخُلُوفِ ۝

وَذَلِكَ عَلٰى حُكْمٍ وَأُولَئِكَ هُمُ الرَّسُولُ
وَالْتَمِعُوا أَصْحَابَ جِبَا رَبِّكَ ۝

1 अर्थात् तुम और तुम्हारे सब देवी-देवता मिल कर भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। क्योंकि मेरा भरोसा जिस अब्राह पर है पूरा संसार उस के नियंत्रण में है उस के आगे किसी की शक्ति नहीं कि किसी का कुछ बिगाड़ सके।

2 अर्थात् उस की राह अन्याचार की राह नहीं हो सकती कि तुम दुराचारी और कुपथ में रह कर सफल रहो और मैं सदाचारी रह कर हानि में पड़ूँ।

3 अर्थात् तुम्हें ध्वस्त निरस्त कर देगा।

60. और इस समार में धिक्कार उन के साथ लगा दी गई। तथा प्रलय के दिन भी लगी रहेगी। सुनो! आद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुनो! हूद की जाति आद के लिये दूरी¹ हो।

61. और समुद्र² की ओर उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! अब्राह की इबादत (बंदना) करो उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। उसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया, और तुम को उस में बसा दिया, अतः उस में क्षमा माँगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ वास्तव में मेरा पालनहार समीप है (और दुआये) स्वीकार करने वाला है।³

62. उन्होंने ने कहा: हे सालेह! हमारे बीच इस से पहले तुझ से बड़ी आशा थी, क्या तू हमें इस बात से रोक रहा है कि हम उस की पूजा करें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? तू जिस चीज (एकेश्वरवाद) की ओर बुला रहा है, वास्तव में उस के बारे में हमें संदेह है, जिस में हमें द्विधा है।

63. उस (सालेह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम ने विचार किया कि

وَأَشِيعُوا إِلَىٰ هَذِهِ الدِّينَارِ الْعَنَّةِ وَأُولَئِكَ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ هُمْ شَرُّ الْبَرِّ هُمْ أَشَدُّ
كُفْرًا

قَالَ تَسْأَلُونَ عَنِ الْيَوْمِ الْآخِرِ قُلْ إِنِّي لَمَعْلُومٌ إِلَّا الْيَوْمَ الَّذِي
يَأْتِي السَّاعَةَ لَا يَمْلِكُ الْإِنْسَانُ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَرْجُوا
حُجْرَةً يَكُونُ فِيهَا مَكْرَهُهُ خَالِدًا فِيهَا لَا يُخْرِجُهَا
وَهُوَ فِيهَا خَالِدٌ

قَالُوا إِنَّمَا نَسْأَلُكَ عَنِ الْيَوْمِ الْآخِرِ قُلْ إِنِّي لَمَعْلُومٌ إِلَّا الْيَوْمَ الَّذِي
يَأْتِي السَّاعَةَ لَا يَمْلِكُ الْإِنْسَانُ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَرْجُوا
حُجْرَةً يَكُونُ فِيهَا مَكْرَهُهُ خَالِدًا فِيهَا لَا يُخْرِجُهَا
وَهُوَ فِيهَا خَالِدٌ

قَالَ يَوْمَ يَقُومُ رَبِّي بَنِي إِدْرِسَ كُلُّ يَوْمٍ يَخْرُجُ إِلَىٰ
يَوْمِهِ ذَاتُ عِلْمٍ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَائِبُونَ

1 अर्थात् अब्राह की दया से दूरी। इस का प्रयोग धिक्कार और बित्ताश के अर्थ में होता है।

2 यह जाति तबूक और मदीना के बीच "अल हिज्र" में आबाद थी।

3 देखिये सूरह बकरा आयत्त 186।

यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट खुले प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी दया प्रदान की हो तो कौन है जो अब्राह के मुकाबले में मेरी सहायता करेगा, यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ? तुम मुझे घाटे में डालने के सिवा कुछ नहीं दे सकते।

وَأَتَيْنَاهُ مِنْ رَبِّنَا نَارًا مِّنْ لَّهُ يُضَرِّبُ فِي السَّمَوَاتِ
مُخَصِّمَةً لِّمَن يَرِيبُ وَيُخَوِّفُ ۝

64. और हे मेरी जानि के लोगो! यह अब्राह¹ की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तो इसे छोड़ दो, अब्राह की धरती में चरती फिरे। और उसे कोई दुख न पहुँचाओ अन्यथा तुम्हें तुरन्त यातना पकड़ लेगी।

وَيَقُولُ هَذِهِ نَارُ اللَّهِ الَّتِي كَانَتْ تُرْفَعُ عَلَى الْأَرْضِ
وَاللَّهُ لَا يَتَذَكَّرُ فِيهَا مَن يَفْعَلُ مَا يَبْغَىٰ ۝

65. तो उन्होंने उसे मार डाला। तब सालेह ने कहा: तुम अपने नगर में तीन दिन और आनन्द ले लो। यह वचन झूठा नहीं है।

فَعَقَرُوا وَهَاقًّا لِلَّذِينَ عَادُوا آلَ إِبْرَاهِيمَ
وَعَدَ الْغُيُوبِ ۝

66. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने सालेह को और जो लोग उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से और उस दिन के अपमान से बचा लिया। वास्तव में आप का पालनहार ही शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا صِخْرًا وَلِبَاسًا مِّنْ
سُجُودٍ يُسَاجِدُونَ ۝

67. और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया और अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

وَأَعَدَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا الْقَاصِمَةَ ۝

1. उसे अब्राह की ऊँटनी इस लिये कहा गया है कि उसे अब्राह ने उन के लिये एक पर्वत से निकाला था। क्योंकि उन्होंने इस की माँग की थी कि यदि पर्वत से ऊँटनी निकलेगी तो हम ईमान लायेंगे। (तफ्सीर कुर्तुबी)

68. जैसे वह वहाँ कभी बसे ही नहीं थे।
सावधान! समूद ने अपने पालनहार
को अस्वीकार कर दिया। सुन लो,
समूद के लिये दूरी हो।

كَانَ لَوَيْعَةُ ابْنِ نَادٍ كَرِيماً ثَوْدًا لِّقَوْمٍ فَكْفَرُوا
أَلَا بُعِدَ لَشُؤْدَدٍ

69. और हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास
शुभसूचना ले कर आये। उन्होंने
सलाम किया तो उस ने उत्तर में
सलाम किया। फिर देर न हुई कि वह
एक भुना हुआ बछड़ा¹ ले आये।

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا سَلَامًا
قَالَ سَلَامٌ قَدْ آتَيْتُكُمْ إِنِّي جَاءُكُمْ بِخَبَرٍ

70. फिर जब देखा कि उन के हाथ उस
की ओर नहीं बढ़ते तो उन की ओर
से संशय में पड़ गया। और उन
से दिल में भय का अनुभव किया।
उन्होंने कहा: भय न करो। हम लून²
की जानि की ओर भेजे गये हैं।

فَلَمَّا رَأَى أَنَّهُ يُغْوِيهِمْ لَاقَاهُ رَبُّهُمُ وَاسْتَفْتَاهُ
فَهُمْ يَكْتُمُونَ قَالُوا لَا تَنْفِرْ يَا إِبْرَاهِيمُ فَاذْهَبْ
لَوْ طُوبَى

71. और उस (इब्राहीम) की पत्नी खड़ी
हो कर सुन रही थी। तो वह हैम
पड़ी³ तो उसे हम ने इम्हाक (के
जन्म) की शुभ सूचना⁴ दी। और
इम्हाक के पश्चात् याकूब की।

وَأَمْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَصَوَّغَتْ فَبَشَّرْنَا بِإِسْحَاقَ
وَمِنْ قَدْ آتَيْنَاهُ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ

72. वह बोली: हाय मेरा दुर्भाग्य! क्या मेरी
संतान होगी, जब कि मैं बुढ़िया हूँ
और मेरा यह पति भी बूढ़ा है? वास्तव
में यह बड़े आश्चर्य की बात है।

قَالَتْ يَوَيْلَ لِيَ أَبَدٌ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا تَحِيُّلٌ
مِّمَّنْ خَلَقَ هَذَا لَكُنِّي عَجِيبٌ

73. फरिश्तों ने कहा: क्या तू अब्बाह के

قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

1 अर्थात् अनिधि सत्कार के लिये।

2 लून अलैहिस्सलाम को भाष्यकारों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम का भतीजा बताया
है जिन को अल्लाह ने सदूम की ओर नदी बना कर भेजा।

3 कि भय की कोड़ बात नहीं है।

4 फरिश्तों द्वारा।

आदेश से आश्चर्य करती है? हे घर वालों! तुम सब पर अब्राह की दया तथा सम्पन्नता है, निःस्पन्देह वह अति प्रशंसित श्रेष्ठ है।

عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَبِيبٌ مَحْبُوبٌ

74. फिर जब इब्राहीम से भय दूर हो गया और उसे शुभ सूचना मिल गयी तो वह लूत की जाति के बारे में हम से आग्रह करने लगा¹।

فَمَا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ إِذْ دَخَلَتْهُ الْبَنَاتُ
بِحِلَّةِ لُوطٍ قَوْمُ لُوطٍ

75. वास्तव में इब्राहीम बड़ा सहनशील, कोमल हृदय तथा अब्राह की ओर ध्यानमग्न रहने वाला था।

رَبِّ إِبْرَاهِيمَ يُؤْتِيهِمُ الْغَنَى وَالْكَافُورُ

76. (फरिश्तों ने कहा): हे इब्राहीम! इस बात को छोड़ो, वास्तव में तेरे पालनहार का आदेश² आ गया है, तथा उन पर ऐसी यातना आने वाली है जो टलने वाली नहीं है।

يَا إِبْرَاهِيمُ أَخْرِضْ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ
رَبِّكَ وَرَبُّهُمُ اعْتَمَدُ الْعَرْشَ الْعَظِيمَ

77. और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये तो उन का आना उसे बुरा लगा। और उन के कारण व्याकुल हो गया और कहा: यह तो बड़ी विपत्ता का³ दिन है।

وَلَمَّا جَاءَتْ لُوطُ بِاتْنِئِمْ وَصَاقَ بِهِمْ
دُرُوعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ

78. और उस की जाति के लोग दौड़ने हुये उस के पास आ गये। और इस

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا

1 अर्थात् प्रार्थना करने लगा कि लूत की जाति को अभी संभलने का और अवसर दिया जाये हो सकता है वह इंसान लाये।

2 अर्थात् यातना का आदेश।

3 फरिश्ते सुन्दर किशोरी के रूप में आये थे और लूत अलैहिस्सलाम की जाति का आचरण यह था कि वह बालमैथुन में रूचि रखती थी। इसलिये उन्होंने उन को पकड़ने की कोशिश की। इसीलिये इन आनिधियों के आने पर लूत अलैहिस्सलाम व्याकुल हो गये थे।

से पूर्व वह कुकर्म¹ किया करते थे। लूत ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! यह मेरी² पुत्रियाँ हैं, वह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र हैं, अतः अन्नाह से डरो और मेरे अर्तिधियों के बारे में मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में कोई भला मनुष्य नहीं है।

79. उन लोगों ने कहा: तुम तो जानते ही हो कि हमारा तेरी पुत्रियों में कोई अधिकार नहीं³ तथा वास्तव में तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।

80. उस (लूत) ने कहा: काश मेरे पास बल होता। या कोई दृढ़ सहारा होता जिम की शरण लेता।

81. फरिश्तों ने कहा हे लूत। हम तेरे पालनहार के भेजे हुये (फरिश्ते) हैं। वह कदापि तुझ तक नहीं पहुँच सकेंगे, जब कुछ रात रह जाये तो अपने परिवार के साथ निकल जा, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। परन्तु तेरी पत्नी (साथ नहीं जायेगी)। उस पर भी वही बीतने वाला है जो उन पर बीतेगा। उन की यातना का निर्धारित समय प्रातः काल है। क्या प्रातः काल समीप नहीं है?

82. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने उस बस्ती को तहस नहस

يَعْلَمُونَ الشَّيْءَ قَالَ يَقُولُونَ هَؤُلَاءِ مِمَّا فِي هُنَّ
أَطَرُكُمْ فَأَنْقُوهُ وَلَا تَعْرُوبُوا فِي هُنَّ
أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ۝

قَالُوا لَقَدْ جِئْتَنَا بِكُنْهٍ وَمَا نَحْنُ بِمُحْسِنِينَ
وَأَنْتَ تَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۝

قَالَ لَوْ أَنَّ فِي يَدِي قُوَّةٌ أَرْدُنِي إِلَى رَبِّي
سُبْحَانِي ۝

قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ
فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَمِعْ
مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتُكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا
أَصَابَكُمْ إِنْ مَوْجِدُ هُمُ الضُّبَعُ أَلَيْسَ
الضُّبَعُ بِقَرِيبٍ ۝

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَاقِطَةً وَأَمْرُنَا

1 अर्थात् बालमैथुन (तपसीरे कुर्तुबी)

2 अर्थात् बस्ती की स्त्रियाँ। क्यों कि जाति का नबी उन के पिता के समान होता है। (तपसीरे कुर्तुबी)

3 अर्थात् हमें स्त्रियों में कोई रुचि नहीं है।

कर दिया और उन पर पकी हुई
कंकरियों की बारिश कर दी।

عَلَيْهَا حِجَارَةٌ مِّن يَّخِيلٍ مُّنْظُورٍ ۝

83. जो तेरे पालनहार के यहाँ चिन्ह
लगायी हुयी थी। और वह¹ (बस्ती)
अत्याचारियों² से कोई दूर नहीं है।

لِمَوْتِهِمْ عِندَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّاهِرِينَ
بِهِمْ ۝

84. और मद्यन की ओर उन के भाई
शुऐब को भेजा। उस ने कहा हे मेरी
जाति के लोगो! अब्राह की इबादत
(बंदना) करो उम के सिवा कोई
तुम्हारा पूज्य नहीं है। और नाप तौल
में कमी न करो।³ मैं तुम्हें सम्पन्न
देख रहा हूँ। इमलिये मुझे डर है कि
तुम्हें कहीं यातना न घेर ले।

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَنِي إِسْرَءِيلَ يَتْلُوا
الْكِتَابَ وَمَا يُكْفَرُونَ بِهِ ۚ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ
وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مِن بَنِي إِسْرَءِيلَ نَبَايَئُصُّهُمْ ذِكْرَ
النَّبِيِّينَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَنِي إِسْرَءِيلَ
نَبَايَئُصُّهُمْ ذِكْرَ النَّبِيِّينَ ۚ

85. हे मेरी जाति के लोगो! नाप तौल
न्यायपूर्वक पूरा करो, और लोगों को
उन की चीजें कम न दो, तथा धरती
में उपद्रव फैलाने न फिरो।

وَيَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَنِي إِسْرَءِيلَ
نَبَايَئُصُّهُمْ ذِكْرَ النَّبِيِّينَ ۚ

86. अब्राह की दी हुई वचन तुम्हारे लिये
अच्छी है, यदि तुम इमान वाले हो।
और मैं तुम पर कोई रक्षक नहीं हूँ।

يَقِينُكَ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَنِي إِسْرَءِيلَ
نَبَايَئُصُّهُمْ ذِكْرَ النَّبِيِّينَ ۚ

87. उन्होंने ने कहा: हे शुऐब! क्या तेरी
नमाज (इबादत) तुझे आदेश दे रही
है कि हम उसे त्याग दें जिस की
पूजा हमारे बाप दादा करते रहे?
अथवा अपने धनो में जो चाहें करें?

قَالُوا يَسْعَىٰ بَصَوْلَتِكَ نَامِرًا ۚ إِنَّ شَرَّكَ
مِمَّا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّ فِئْتَانًا مِّنْهُمْ
كَفَرُوا ۚ إِنَّكَ لَآتِيهِمُ الْعَذَابُ الرَّحِيمُ ۚ

1 अर्थात् सदूम जो समूद की बस्ती थी।

2 अर्थात् आज भी जो उन की नीति पर चल रहे हैं उन पर ऐसी ही यातना आ सकती है।

3 शुऐब की जाति में शिर्क (मिश्रणवाद) के सिवा नाप तौल में कमी करने का रोग भी था।

वास्तव में तू बड़ा ही सहनशील तथा भला व्यक्ति है।

88. शूऐब ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! तुम बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अच्छी जीविका प्रदान की हो (तो कैसे तुम्हारा साथ दूँ) मैं नहीं चाहता कि उस के विरुद्ध करूँ, जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं जहाँ तक हो सके सुधार ही चाहता हूँ। और यह जो कुछ करना चाहता हूँ, अब्राह के योगदान पर निर्भर करता है। मैं ने उसी पर भरोसा किया है, और उमी की ओर ध्यानमग्न रहना हूँ।

89. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हें मेरा विरोध इस बात पर न उभार दे कि तुम पर वही यातना आ पड़े जो नूह की जाति या हूद की जाति अथवा सालेह की जाति पर आई। और लूत की जाति तुम से कुछ दूर नहीं है।

90. और अपने पालनहार से क्षमा माँगो, फिर उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ, वास्तव में मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा प्रेम करने वाला है।

91. उन्होंने ने कहा: हे शूऐब! तुम्हारी वहुन सी बात हम नहीं समझते। और हम तुम्हें अपने बीच निर्बल देख रहे हैं। और यदि भाई बन्धु न होते तो हम तुम को पथराव कर के मार डालते। और तुम हम पर कोई भारी तो नहीं हो।

قَالَ يَقَوْمِ اَرَأَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَرَفَقْتُ بِنُفْسِي رِفْقًا حَسًّا وَمَا اُرِيدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ فِي مَا تَهْتَكُمُوهُ اِنْ اُرِيدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَلِيٍّ اُتِيْبُ ۝

وَيَقَوْمِ لَا يَحِمْزُ شَيْءٌ عَلَيَّ اَنْ يُمِيزَكُمْ مِثْلَ مَا اَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ اَوْ قَوْمَ هُودٍ اَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمَ لُوطٍ مِنْكُمْ بِبَعِيْبٍ ۝

وَاسْتَعْمِرُوا وَاَرْسَلَكُمْ تَتَوَلَّوْا الْاَيْدِيَّ اِنْ رَبِّي رَحِيْمٌ وَّذُوْدٌ ۝

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَيْفَ اِيْتَاكَ تَقْوَلُ وَرَبِّكَ لَكَرِيْمٌ بَيْنَا وَبَيْنَكَ اَوْ لَوْلَا رَهْمَتُكَ لَكُنْجَمًا وَّوَالِهْتَ عَلَيْنَا بِعَرِيْرٍ ۝

92. शूऐब ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! क्या मेरे भाई बन्धु तुम पर अज्जाह से अधिक भारी है? कि तुम ने उसे पीठ पीछे डाल दिया है? ¹⁾ निश्चय मेरा पालनहार उसे (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है जो तुम कर रहे हो।

93. और हे मेरी जाति के लोगो! तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं (अपने स्थान पर) काम कर रहा हूँ। तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर ऐसी यातना आयेगी जो उसे अपमानित कर दे। तथा कौन झूठा है? तुम प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाला हूँ।

94. और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने शूऐब को, और जो उस के साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया। और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनी ने पकड़ लिया। फिर वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये।

95. जैसे वह कभी उन में वसे ही न रहे हों। सुन लो! मद्यन वाले भी वैसे ही दूर फेंक दिये गये जैसे समूद दूर फेंक दिये गये।

96. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों (चमत्कार), तथा खुले तर्क के साथ भेजा।

قَالَ يَقُولُوا هَيْلًا لِّمَنْ عَلَّمَكُم مِّنَ اللَّهِ
وَأَن تَحْذَرُوا فِتْنَةَ الْمَلَائِكَةِ الَّتِي بِيَمِينِكُمْ
فَعَمَلُوا خُيْلًا

وَيَقُولُوا عَمَلُوا خُيْلًا مَّا كُنْتُمْ فِي عَمَلٍ مُّشْرَفٍ
تَعْمَلُونَ مِمَّنْ قَبْلُكُمْ فَاخْتَارُوا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْ
كَادِبٌ وَارْتَبِبُوا إِلَىٰ مَعَكُمْ يَخِيْبٌ

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَنَ الْكِتَابِ أَصْحَابًا
مَّعَهُ يَرْحُمُ الَّذِينَ فِي الْبَيْتِ لَقَدْ جَاءَهُمْ
الْبَيِّنَاتُ فَأَصْبَحُوا هَادِئِينَ فِي الْأُيُنِ

كَانَ لَكُمْ لِقَاءُ يَوْمِكُمْ هَٰذَا أَلَمَ يَمَسُّكُمْ
فَمَا تَكْفُرُونَ

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ
مُّبِينٍ

1 अर्थात् तुम मेरे भाई बन्धु के भय से मेरे विरुद्ध कुछ करने से रुक गये तो क्या वह तुम्हारे विचार में अज्जाह से अधिक प्रभाव रखने है?

97. फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उन्होंने ने फिरऔन की आज्ञा का अनुसरण (पालन) किया। जब कि फिरऔन की आज्ञा सुधरी हुई न थी।
98. वह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा, और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है?
99. और वे धिक्कार के पीछे लगा दिये गये इस संसार में भी और प्रलय के दिन भी। कैसा बुरा पुरस्कार है जो उन्हें दिया जायेगा?
100. हे नबी! यह उन वस्तियों के समाचार है जिन का वर्णन हम आप से कर रहे हैं। उन में से कुछ निर्जन खड़ी और कुछ उजड़ चुकी हैं।
101. और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया। तो उन के वे पूज्य जिन्हें वह अब्राह के सिवा पुकार रहे थे, उन के कुछ काम नहीं आये, जब आप के पालनहार का आदेश आ गया और उन्होंने ने उन को हानि पहुँचाने के सिवा और कुछ नहीं किया।¹
102. और इसी प्रकार तेरे पालनहार की पकड़ होती है, जब वह किसी अत्याचार करने वालों की, वस्ती को

إِلَٰهَ فِرْعَوْنَ وَصَلَّاهُ فَاتَّبَعُوْا أَمْرَ
فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُهُمْ يُغْنِي عَنْهُمْ

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْدَحَهُمُ النَّارُ
وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَرْجُومُ

وَاتَّبَعُوا فِي هَذِهِ الْأُمَّةِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَبِئْسَ
الْجَزَاءُ الْمَرْجُومِ

ذَٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْهَا قَوْمٌ
وَءَوْحِيدٌ

وَمَا ظَنَنْتَهُمْ وَلَكِنْ طَعَنُوا آلَهُمْ فَمَا أَجَبْتَ
عَهُمْ إِلَهُهُمْ إِنَّهُمْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ لَّا تَنَالُهُ أَسْرَارُهُمْ إِنْ تَبَارَكُ تَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ

وَكَذَٰلِكَ سَخَّرْنَا لِرَبِّكَ إِدْعَاءَ الْقُرَى وَهِيَ
كَلِمَاتُ الْإِنِّ لَخَدِّقًا لِّأَعْيُنٍ شَٰدِيْنَ

1 अर्थात् यह जानियाँ अपने देवी-देवता की पूजा इसलिये करती थी कि वह उन्हें लाभ पहुँचायेंगे। किन्तु उन की पूजा ही उन पर अधिक यातना का कारण बन गई।

पकड़ता है। निश्चय उस की पकड़ दुखदायी और कड़ी होती¹ है।

103. निश्चय इस में एक निशानी है, उस के लिये जो परलोक की यातना से डरे। वह ऐसा दिन होगा जिस के लिये सभी लोग एकत्रित होंगे, तथा उस दिन सब उपस्थित होंगे।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَن كَانَ عَذَابَ الْعَذَابِ
وَذَلِكَ يَوْمُ تَجْمَعُ لَهُ سَائِلٌ وَذَلِكَ يَوْمُ
مُشْهُودٌ ۝

104. और हम उसे केवल एक निर्धारित अवधि के लिये देर कर रहे हैं।

وَمَا تَوْجِهُهُ إِلَّا لِحَدِّ مَعْمُودٍ ۝

105. जब वह दिन आ जायेगा तो अस्त्राह की अनुमति बिना कोई प्राणी बान नहीं करेगा, फिर उन में से कुछ आभागे होंगे और कुछ भाग्यवान होंगे।

يَوْمَ لَا تَنْفَعُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ فَيَسْأَلُهُ
مَتَىٰ وَيُجِيبُهُ ۝

106. फिर जो भाग्यहीन होंगे, वही नरक में होंगे उन्हीं की उस में चीख और पुकार होगी।

فَأَمَّا الَّذِينَ شَفَعُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ فَهُمْ فِي رُفْدٍ
وَشِعْثٍ ۝

107. वे उस में सदावामी होंगे, जब तक आकाश तथा धरती अवस्थित हैं। परन्तु यह कि आप का पालनहार कुछ और चाहे। वास्तव में आप का पालनहार जो चाहे कर देने वाला है।

حَدِيدِينَ فِيهَا مَا مَلَامَتْ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ
إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ قَدِيرٌ ۝

108. और जो भाग्यवान हैं, वह स्वर्ग ही में सदैव रहेंगे, जब तक आकाश तथा धरती स्थित हैं। परन्तु आप का पालनहार कुछ और चाहे, यह प्रदान है अनवरत (निरन्तर)।

وَأَمَّا الَّذِينَ سُجِدُوا لِلَّهِ الْجَنَّةِ حَدِيدِينَ فِيهَا
مَا مَلَامَتْ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ
عَطَاءً غَيْرُ مُجَادَرٍ ۝

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि अस्त्राह अन्याचारी को अवसर देता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो उस से वचना नहीं, और आप ने फिर यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी हदीस नं. 4686)

109. अतः (हे नबी!) आप उम के बारे में किसी संदेह में न हों जिसे वे पूजते हैं। वे उसी प्रकार पूजते हैं जैसे इस से पहले इन के बाप दादा पूजते¹ रहे हैं। वस्तुतः हम उन्हें उन का बिना किसी कमी के पूरा भाग देने वाले हैं।

110. और हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की। तो उस में विभेद किया गया। और यदि आप के पालनहार ने पहले से एक बात² निश्चित न की होती तो उन के बीच निर्णय कर दिया गया होता, और वास्तव में वे³ उम के बारे में संदेह और शंका में हैं।

111. और प्रत्येक को आप का पालनहार अवश्य उन के कर्मों का पूरा बदला देगा। क्योंकि वह उन के कर्मों से सूचित है।

112. अतः (हे नबी!) जैसे आप को आदेश दिया गया है, उस पर सुदृढ़ रहिये और वह भी जो आप के साथ लौटा (क्षमा याचना) कर के हो लिये हैं। और सीमा का उल्लंघन न⁴ करो क्योंकि वह (अल्लाह)

فَلَا تَكُ فِي رَيْبٍ مِّمَّا يَصُدُّ هَؤُلَاءِ
مَّا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ
وَلَا تَكُ لِمَوْثِقِهِمْ نَصِيحَةً غَيْرَ مَقْبُوضَةٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاحْصِيَ بِهِمْ وَلَوْلَا
كَلِمَةُ سَجْمَتٍ مِنْ رَبِّكَ لَفُتِنُوا بِهِمْ وَلَهُمْ
لَهُنَّ شَيْئٌ مِنْهُ مُرِيبٌ ۝

فَأَنْ تَكُنَّا الْوَفِيُّ بِهِمْ رَبِّكَ أَعْمَالُهُمْ إِنَّهُمْ
يَعْمَلُونَ خَيْرًا ۝

فَأَسْتَقِرَّكُمْ أَمْرًا أَمْرًا وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

1 अर्थात् इन की पूजा निर्मूल और बाप-दादा की परम्परा पर आधारित है जिस का सत्य से कोई संबंध नहीं है।

2 अर्थात् यह कि संसार में प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार कर्म करने का अवसर दिया जायेगा।

3 अर्थात् मिश्रणवादी कुरआन के विषय में।

4 अर्थात् धमर्देश की सीमा का।

तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

113. और अत्याचारियों की ओर न झुक पड़ो। अन्यथा तुम्हें भी अग्नि स्पर्श कर लेगी। और अब्राह के सिवा तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम्हारी सहायता नहीं की जायेगी।

وَلَا تَوَكَّلُوا إِلَى الْبَنِي حَامٍ افْتَكَحُوا السَّمَاءَ وَمَا لَكُم مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِن آيَةٍ تُرَىٰ لَكُمْ ۖ

114. तथा आप नमाज की स्थापना करें, दिन के सीरो पर और कुछ रात बीतने¹ पर। वास्तव में सदाचार दुराचारों को दूर कर देने² हैं। यह एक शिक्षा है, शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي الْمَسْجِدِ وَرُكْنَيْهِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبُ بَيْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكِ ذِكْرِي لِلَّذِينَ هُمْ

115. तथा आप धैर्य से काम लें, क्योंकि अब्राह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

وَأَصْبِرْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُجِيبُ الْمُجْرِمِينَ

116. तो तुम से पहले युगों में ऐसे सदाचारी क्यों नहीं हुये जो धरती में उपद्रव करने से रोकते? परन्तु ऐसा बहुत थोड़े युगों में हुआ, जिन्हें हम ने बचा दिया, और अत्याचारी उस स्वाद के पीछे पड़े रहे जो धन धान्य दिये गये थे। और वह अपराधि बन कर रहे।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةَ يَتَنَهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَوْا بِهِمْ ۚ وَكَانُوا مَخْرُومِينَ ۖ

1 नमाज के समय के सर्वास्तर विवरण के लिये देखिये सूरह बनी इस्राईल आयत 78 सूरह ताहा, आयत 130, तथा सूरह रूम, आयत 17-18

2 हदीस में आता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: यदि किसी के द्वार पर एक नहर जारी हो जिस में वह पाँच बार स्नान करता हो तो क्या उस के शरीर पर कुछ मैल रह जायेगा? इसी प्रकार पाँचों नमाजों से अब्राह भूल चुक को दूर (क्षमा) कर देता है। (कुखारी: 528, मुस्लिम: 667) किन्तु बड़े बड़े पाप जैसे शिर्क हत्या इत्यादि बिना तौबा के क्षमा नहीं किये जाते।

117. और आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि बास्तियों को अन्याचार से ध्वस्त कर दे, जब कि उन के वासी सुधारक हों।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١١٧﴾

118. और यदि आप का पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक समुदाय बना देता। और वह सदा विचार विरोधी रहेंगे।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا يَرِ الْأُنَاسُ نَفْعًا ۚ ﴿١١٨﴾

119. परन्तु जिस पर आप का पालनहार दया कर दे, और इसी के लिये उन्हें पैदा किया है।¹ और आप के पालनहार की बात पूरी हो गयी कि मैं नरक को सब जिन्हों तथा मानवों से अवश्य भर दूंगा।²

إِلَّا مَن دَخَلَ مِنكُم مِّنْ أَهْلِ الْبَيْتِ أَوْ كَانَ صِلَاكَ إِلَى الْبَيْتِ ۖ وَكَانَ صِدْقًا ۚ ﴿١١٩﴾

120. और (हे नबी!) यह नबियों की सब कक्षाएँ हम आप को मुना रहे हैं, जिन के द्वारा आप के दिल को सुदृढ़ कर दें, और इस विषय में आप के पास सत्य आ गया। और ईमान वालों के लिये एक शिक्षा और चेतावनी है।

وَلَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَلَا تَعْلَمُ مَا نَزَّلَ بِهِ ۚ وَلَا تَدْرِي لَئِن لَّمْ يَظْهَرْ عَلَيْكَ إِذْ يُدْرَىٰ ۚ ﴿١٢٠﴾

121. और (हे नबी!) आप उन से कह दें, जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो। हम अपने स्थान पर काम करते हैं।

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَغْنُوا عَنْكُمْ كَلَامَنَا ۚ ﴿١٢١﴾

122. तथा तुम प्रतीक्षा³ करो, हम भी

وَأَنظُرُوا إِلَىٰ مَا تُفْعَلُونَ ۚ ﴿١٢٢﴾

1 अर्थात् एक ही सत्धर्म पर सब को कर देता। परन्तु उस ने प्रत्येक को अपने विचार की स्वतंत्रता दी है कि जिस धर्म या विचार को चाहे अपनाये ताकि प्रलय के दिन सत्धर्म को ग्रहण न करने पर उन्हें यातना का स्वाद चखाया जाये।

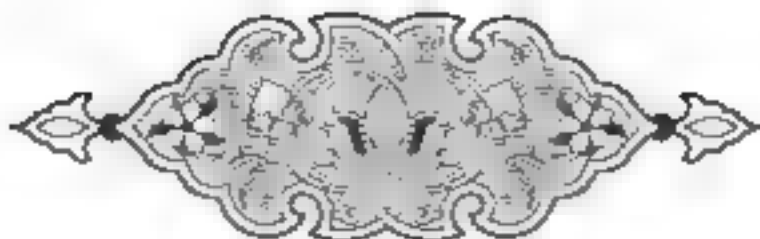
2 क्योंकि इस स्वतंत्रता का गलत प्रयोग कर के अधिकतर लोग सत्धर्म को छोड़ बैठें।

3 अर्थात् अपने परिणाम की।

प्रतीक्षा करने वाले हैं।

123. अल्लाह ही के अधिकार में आकाशों तथा धरती की छिपी हुई चीजों का ज्ञान है, और प्रत्येक विषय उसी की ओर लौटाये जाते हैं। अतः आप उसी की इबादत (बंदना) करें, और उसी पर निर्भर रहें। आप का पालनहार उस से अचेत नहीं है जो तुम कर रहे हो।

وَيَلْوِيهِبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَيُؤْتِيهِمُ الْأَمْثَرُ
كُلُّهُ قَاعَةٌ لَا تُؤْتِيهِ عَيْنٌ وَلَا تُؤْتِيهِ عَمَلٌ
تَعْمَلُونَ ۝



सूरह यूसुफ - 12

سُورَةُ يُوسُفَ

सूरह यूसुफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 111 आयतें हैं।

- इस में नबी यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की पूरी कथा का वर्णन किया गया है। इस के द्वारा यह सकल किया गया है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन को मक्का में कुरैश ने जान से मार देने अथवा देश से निकाल देने की योजना बनायी है वह ऐसे ही निष्फल हो जायेंगे जैसे यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के भाइयों की मारी योजना निष्फल हो गई। और एक दिन ऐसा भी आया कि सब भाई उन के आगे हाथ फैलाये खड़े थे। और कुरआन की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना हिज्रत कर गये। फिर मन् (8) हिजरी में आप ने मक्का को विजय किया तो आप के विरोधि कुरैश आप के आगे उसी प्रकार विवश खड़े थे जैसे यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के भाई उन के आगे हाथ फैलाये कह रहे थे की आप हमें दान कीजिये, अब्राह दानशीलों को अच्छा बदला देता है। और जैसे यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाइयों को क्षमा कर दिया वैसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी कहा जाओ, तुम पर कोई दोष नहीं, अब्राह तुम्हें क्षमा करे वह सर्वोत्तम दयावान् है। आप उन के अन्याचार का बदला ले सकते थे किन्तु जब आप ने उन से पूछा कि तुम्हारा विचार क्या है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूँगा?? तो उन के यह कहने पर कि आप सज्जन भाई तथा सज्जन भाई के पुत्र है, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा मैं तुम से वही कहता हूँ जो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाइयों से कहा था कि आज तुम पर कोई दोष नहीं, जाओ तुम सभी स्वतंत्र हो।

हदीस में है कि सज्जन के सज्जन पुत्र के सज्जन पुत्र, यूसुफ पुत्र याकूब पुत्र इसहाक पुत्र इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (देखिये सहीह बुखारी, हदीस नं: 3382)

एक दूसरी हदीस में आया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि यदि मैं उतने दिन बंदी रहता जितने दिन यूसुफ (अलैहिस्सलाम) बंदी रहे तो जो व्यक्ति उन को बुलाने आया था मैं उस

के साथ चला जाता।

(दिखिये सहीह बुखारी हदीस नं॰ 3372, और सहीह मुस्लिम हदीस नं॰ 2370)

याद रहे कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन से अभिप्राय यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के सहन की सराहना करना है

- इस सूरह में यह शिक्षा है कि जो अज्ञाह चाहे वही होता है विरोधियों के चाहने से कुछ नहीं होता, इस में नव युवकों के लिये अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये भी एक शिक्षा है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अलिफ, लाम, रा। यह खुली पुस्तक की आयतें हैं।

الرَّحْمٰنُ يَلْقٰكَ بِٱلْكِتٰبِ الْمُنِيْنِ ۝

- 2 हम ने इस कुर्आन को अरबी में उतारा है, ताकि तुम समझो।⁽¹⁾

رَاٰۤاۤ اٰتٰنَاۤهُ قُرْۡاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

3. (हे नबी!) हम बहुत अच्छी शैली में आप की ओर इस कुर्आन की वही द्वारा आप से इस कथा का वर्णन कर रहे हैं अन्यथा आप (भी) इस से पूर्व (इस से) असूचित थे।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْفَصٰحِ بِتِۤاَوْحٰنٍۭا
اَلَيْكَ هٰذَا الْقُرْۡاٰنُ نَزَّلْنٰهُ مِنْ قَبْلِهِ
كِتٰبٍ الْعَرَبِيَّةِ ۝

4. जब यूसुफ ने अपने पिता से कहा है मेरे पिता! मैं ने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे, सूर्य तथा चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يَاۤاَبَتِۤىۡ رَبِّۤىۡ اَعَدَدْتَ
عَشَرَ كُوْكُبًا وَّ الشَّمْسَ وَّ الْقَمَرَ لَا يَسْجُدُوْنَ لِىْ
سِوٰىكَ ۝

5. उस ने कहा: हे मेरे पुत्र! अपना स्वप्न

قَالَ يٰۤاَبُنٰى لَا تَقْصُصْ رُۤاٰۤىكَ عَلٰى رَجُلٍۭ

- 1 क्यों कि कुर्आन के प्रथम सर्वोद्धित अरब लोग थे फिर उन के द्वारा दूसरे साधारण मनुष्यों को संबोधित किया गया है तो यदि प्रथम सर्वोद्धित ही कुर्आन नहीं समझ सकते तो दूसरों को कैसे समझा सकते थे?

अपने भाइयों को न बताना¹। अन्यथा वह तेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचेंगा। वास्तव में शैतान मानव का खुला शत्रु है।

فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ
عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝

6. और ऐसा ही होगा, तेरा पालनहार तुझे चुन लेगा, तथा तुझे बातों का अर्थ सिखायेगा और तुझ पर और याकूब के घराने पर अपना पुरस्कार पूरा करेगा² जैसे इस से पहले तेरे पूर्वजों इब्रहीम और इस्हाक पर पूरा किया। वास्तव में तेरा पालनहार बड़ा ज्ञानी तथा गुणी है।

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نَجْمَكَ عَلَىٰ إِلٍ
يَعْتُوبُ كَمَا أَنْتَ عَلَيَّ أَبُو بَرٍّ مِنْ قَبْلُ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ إِنَّكَ رَبُّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

7. वास्तव में यूसुफ और उस के भाइयों (की कथा) में पढ़ने वालों के³ लिये कई निशानियाँ हैं।

لَقَدْ كَانَ لِفِیْ يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّأُولِیِّ الْأَبْصَارِ ۝

8. जब उन (भाइयों) ने कहा 'यूसुफ और उस का भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय है। जब कि हम एक गिरोह हैं। वास्तव में हमारे पिता खुली गुमराही में हैं।

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَخْوَاهُ احْبَبُوا إِلَيَّ إِنِّي أَخَاكُمْ
وَمِنْ غَضْبَةٍ إِنَّ أَتَانَا لَمِنْ قَسْبٍ شَدِيدٍ ۝

9. यूसुफ को बध कर दो, या उसे किसी धरती में फेंक दो। इस से तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी तरफ हो जायेगा। और इस के

إِنَّمَا يُوسُفُ وَهُوَ طَرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهَهُ
أَيُّكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَادِقِينَ ۝

1. यूसुफ अलैहिस्सलाम के दूसरी माँओं से दस भाइयों और एक सगा भाई था। याकूब अलैहिस्सलाम यह जानते थे कि मौनीले भाई यूसुफ से इर्ष्या करते हैं। इसलिये उन को सावधान कर दिया कि अपना स्वप्न उन्हें न बतायें।
2. यहाँ पुरस्कार से अभिप्राय नबी बनाना है। (नफ्सीरे कुर्तुबी)
3. यह प्रश्न यहूदियों ने मक्का वासियों के माध्यम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया था कि वह कौनसे नबी हैं जो शाम में रहते थे और जब उन का पुत्र मिस्र निकल गया तो उस पर रोते-रोते अन्धे हो गये? इस पर यह पूरी सूरह उतरी। (नफ्सीरे कुर्तुबी)

पश्चात् पवित्र बन जाओ।

- उन में से एक ने कहा यूसुफ को बध न करो, उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो, उसे काई काफिला निकाल ले जायेगा यदि कुछ करने वाले हों।

11. उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! क्या बात है कि यूसुफ के विषय में आप हम पर भरोसा नहीं करते? जब कि हम उस के शुभचिन्तक है।
12. उसे कल हमारे साथ (बन में) भेज दें वह खायें पियें और खेले कूदे। और हम उस के रक्षक (प्रहरी) हैं।
13. उस (पिता) ने कहा! मुझे बड़ी चिन्ता इस बान की है कि तुम उसे ले जाओ। और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया न खा जाये। और तुम उस से असावधान रह जाओ।
14. सब (भाईयों) ने कहा: यदि उसे भेड़िया खा गया, जब कि हम एक गिरोह है, तो वास्तव में हम बड़े विनाश में हैं।
15. फिर जब वे उसे ले गये, और निश्चय किया कि उसे अंधे कुएं में डाल दें और हम ने उस (यूसुफ) की ओर बह्नी की कि तुम अवश्य इन को उन का कर्म बताओगे, और वह कुछ जानते न होंगे।
16. और वह संध्या को रोते हुये अपने पिता के पास आये।
17. सब ने कहा हे पिता! हम आपस में

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَوْ كُنَّا يُوسُفَ وَقَوَّيْ
نَحْيَتِ الْجَبِّ يَلْتَوِطُّهُ بَعْضُ الشَّيْطَانِ كُنْتُمْ
فَاعِيَيْنَ ۝

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّهُ
لَاصِحُحُونَ ۝

أَرْسَلَهُ مَعَنَا نَبِيًّا وَيُكَفِّهِمْ وَأَنَّا لَهُ
لَعَوَّضُونَ ۝

قَالَ الَّذِي لِيْهِ زَيْبُ أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَاعْلَمَنَّ
يَا كَلِمَةَ إِلَهِ نَبِّ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ ۝

قَالُوا لَئِنْ أَصْبَحَ إِلَهِ نَبِّ وَنَحْنُ خُضْبَةٌ
إِنَّا زَاغِيْرُونَ ۝

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْتَمَعُوا أَن يُجْعَلُوهُ فِي
غَيْبَتِ الْجَبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَجِّيَنَّهُمْ بِأَمْرِ
هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَجَاءُوا بِأَمْرٍ عَشَاءٍ يَتَنَزَّلُونَ ۝

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبَا هَذَا هَبْنَا لَيْسَ يُوْسُفَ

दौड़ करने लगे। और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया। और उसे भेड़िया खा गया। और आप तो हमारा विश्वास करने वाले नहीं है, यद्यपि हम सच्च ही क्यों न बोल रहे हों।

بَعْدَ مَا جَاءَ فَأَكَلَ الْوَيْثَانَ وَأَنْتَ بِمُؤْمِنِينَ
لَئِنْ لَوْ كُنَّا ضَالِّينَ ۝

18. और वह यूसुफ के कुर्ते पर झूठा रक्त¹ लगा कर लाया। उस ने कहा: बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिये एक सुन्दर बात बना ली है। तो अब धैर्य धारण करना ही उत्तम है। और उस के संबन्ध में जो बात तुम बना रहे हो अल्लाह ही से सहायता मांगनी है।

وَجَاءَ وَعَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ
سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبِرُوا جِهِينَ وَاللَّهُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ۝

19. और एक कारकिला आया। उस ने अपने पानी भरने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल डाला, तो पुकारा- शुभ हो! यह तो एक बालक है। और उसे व्यापारिक मामूली समझ कर छुपा लिया और अल्लाह भली भाँति जानने वाला था जो वे कर रहे थे।

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَةً
قَالَ يَنْفَرِي هَذَا غُلَامٌ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَصْعَلُونَ ۝

20. और उसे तनिक मूल्य कुछ गिनती के दरहमों में बेच दिया। और वे उस के बारे में कुछ अधिक की इच्छा नहीं रखते थे।

وَأَسَرُّوهُ بِتَيْسٍ ذَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا
فِيهِ مِنَ الرَّكَّابِينَ ۝

21. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा, उस ने अपनी पत्नी से कहा- उस को आदर मान से रखो। संभव है यह हमें लाभ पहुँचाये, अथवा हम उसे अपना पुत्र बना लें। इस प्रकार उस को हम ने स्थान दिया। और तार्कि उसे बातों का अर्थ सिखाया।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ
مَثْوًى عَنِّي أَنْ تَيَفِّعَنِيَ أَوْ سَيِّئًا لَدَا
وَكَذَلِكَ تَكَلَّمَ الْيُوسُفُ فِي الْأَرْضِ وَلَمْ يَعْلَمَهُ
مَنْ تَأْوِيلُ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ عَلِيمٌ
وَلَكِنَّ الْغُلَامَ الثَّلَاثِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि वे चकरी के बच्चे का रक्त लगा कर लाये थे।

और अल्लाह अपना आदेश पूरा कर के रहना है। परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।

22. और जब वह जवानी को पहुँचा, तो हम ने उसे निर्णय करने की शक्ति तथा ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल (बदला) देते हैं।

وَلَمَّا سَلَكَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

23. और वह जिस स्त्री¹ के घर में था, उस ने उस के मन को रिझाया, और द्वार बन्द कर लिये, और बोली: "आ जाओ"। उस ने कहा: अल्लाह की शरण! वह मेरा स्वामी है। उस ने मुझे अच्छा स्थान दिया है। वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होते।

وَرَدَّتْهُ امْرَأَتُهُ هَوًىٰ بِبَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَوْلًىٰ إِنَّهُ لَرَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾

24. और उस स्त्री ने उस की इच्छा की। और वह (यूसुफ) भी उस की इच्छा करते यदि अपने पालनहार का प्रमाण न देख लेते² इस प्रकार हम ने (उसे सावधान) किया ताकि उस से बुराई तथा निर्लज्जा को दूर कर दें। वास्तव में वह हमारे शुद्ध भक्तों में था।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ رَأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ الشُّوَّ وَالْفَهْشَةَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾

25. और दोनों द्वार की ओर दौड़े। और उस स्त्री ने उस का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उस के

وَاسْتَفْتَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصُهُ مِنْ دُبُرٍ ۖ ذَاكَ الْيَاسِفَ كَذَلِكَ الْبَابُ فَأَخَذَتْ مِحْرَازًا مِّنْ

1 अभिप्रेत मिस्र के राजा (अजीज) की पत्नी है।

2 यूसुफ (अलैहिस्सलाम) कांड फरिश्ता नहीं एक मनुष्य थे। इस लिये बुराई का डरावा कर सकते थे किन्तु उसी समय उन के दिल में यह बात आई कि मैं पाप कर के अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकूँगा। इस प्रकार अल्लाह ने उन्हें बुराई से बचा लिया, जो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की बहुत बड़ी प्रधानता है।

पति को द्वार के पाम पाया। उस (स्त्री) ने कहा: जिस ने तेरी पत्नी के साथ बुराई का निश्चय किया, उस का दण्ड इस के सिवा क्या है कि उसे बंदी बना दिया जाये अथवा उसे दुःखदायी यातना (दी जाये)?

26. उस ने कहा इसी ने मुझे रिझाना चाहा था। और उस स्त्री के घराने से एक साक्षी ने साक्ष्य दिया कि यदि उस का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो वह सच्ची है, तथा वह झूठा है।

27. और यदि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो वह झूठी और वह (यूसुफ) सच्चा है।

28. फिर जब उस (पति) ने देखा कि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो कहा: वास्तव में यह तुम स्त्रियों की चाल है और तुम्हारी चालें बड़ी घोर होती हैं।

29. हे यूसुफ! तुम इस बात को जाने दो। और (हे स्त्री!) तू अपने पाप की क्षमा मांग, वास्तव में तू पापियों में से है।

30. नगर की कुछ स्त्रियों ने कहा: अजीज (प्रमुख अधिकारी) की पत्नी अपने दाम को रिझा रही है। उसे प्रेम ने मुग्ध कर दिया है। हमारे विचार में वह खुली गुमराही में है।

31. फिर जब उस ने उन स्त्रियों की मक्कारी की बात सुनी तो उन्हें बुना भेजा। और उन के (आतिथ्य) के लिये गाव तर्किये लगवाये और प्रत्येक स्त्री को एक छुरी

أَرَدِيَا مَلِكًا مُّوَدَّدًا إِلَّا أَنْ يُصْحَىٰ أَوْعَدَابُ
الْيَوْمِ ۝

قَالَ هِيَ رَأَوْدَتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِّنْ أَهْلِهَا إِنَّ كَانَ قَدِمْصُهُ قَدْ مِّنْ قَبْلِ
لَصَدَاقَتٍ وَلَمَوْسَىٰ الْكَلْبُورِ ۝

وَلَا كَانَ قَدِمْصُهُ قَدْ مِّنْ دُبُرٍ لَّكَذَّابَةٍ
وَهُوَ مِّنْ الصَّابِقِينَ ۝

فَلَمَّا رَأَىٰ قَدِمْصُهُ قَدْ مِّنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِّنْ
مَّيْكَلٍ إِنَّ كَيْدَ كُنَّ عَظِيمًا ۝

يُوسُفُ أَخْبِرْ عَنْ هَذَا وَاسْتَغْفِرِي
لِي ذُنُوبِكِ إِنَّكِ كُنتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ۝

وَقَالَ لِسُوءَةِ الْبَيِّنَةِ امْرَأَتِ الْعَزِيزِ
لَرَأَوْدَتْنِي عَنْ نَفْسِي قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا
إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ
لَهُنَّ مَتْنًا وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا
وَقَالَتِ الْفِتْنَةُ الْفِتْنَةُ فَتَارَ بِنَةِ الْعِزَّةِ وَتَقَطَّعَ

दे दी।¹ उस ने (यूसुफ़ से) कहा: इन के समक्ष 'निकल आ'। फिर जब उन स्त्रियों ने उसे देखा तो चौंकन (दंग) हो कर अपने हाथ काट बैठी, तथा पुकार उठी: अल्लाह परब्र है! यह मनुष्य नहीं, यह तो कोई सम्मानित फरिश्ता है।

32. उस ने कहा: यही वह है, जिस के बारे में तुम ने मेरी निन्दा की है। वास्तव में मैं ने ही उसे रिझाया था। मगर वह बच निकला। और यदि वह मेरी बात न मानेगा तो अवश्य बंदी बना दिया जायेगा, और अपमानितों में हो जायेगा।

33. यूसुफ़ ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे कैद उस से अधिक प्रिय है जिस की ओर यह औरतें मुझे बुला रही है और यदि तू ने मुझे से इन के छल को दूर नहीं किया तो मैं उन की ओर झुक पड़ूंगा। और अज्ञानों में से हो जाऊंगा।

34. तो उस के पालनहार ने उस की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। और उस से उन के छल को दूर कर दिया। वास्तव में वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

35. फिर उन लोगों² ने उचित समझा, इस के पश्चात् कि निशानियाँ देख³ ली, कि उस (यूसुफ़) को एक अवधि तक के लिये बंदी बना दें।

أَيُّ يُوْسُفَ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَكْرٌ يُرِيدُونَ ۝

قَالَتْ لَقَدْ كَانَ لَكُم بَشَرٌ لِّئَلَّا تُكْفِرُوا بِهِ وَقَدْ خَلَّوْا فِيهِ سَبْعَ سِنِينَ ثُمَّ لَمَّا سَوَّاهُ وَرَأَيْنَا أَنَّ كَيْدَهُمْ أَكْبَرُ فَكَفَّ اللَّهُ بُعْدَهُمْ لِمَكْرِهِمْ ۝

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً وَأَنَا خَوَافِي أَنِّي فَأَنصُرُهُ عَوْنًا كَيْدًا مِّنْ أَهْلِ الْيَمِينِ وَكَأَن مِّنْ لَّهِ بَصِيرَتٌ ۝

فَأَنصَبَ لَهُ سَكَّةَ لَهْجَتِهِ يُفْهِمُهُ لَقَدْ هَمَّتْ أَن يَكُونَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ ۝

فَقَرَّبَ لَهُم مِّنْ قَبْلِ ذَلِكَ الرِّبِّيَّ يَبْجِئُهُ حَتَّىٰ ۝

1 ताकि अतिथि स्त्रियाँ उस से फलों को काट कर खाये जो उन के लिये रखे गये थे।

2 अर्थात् अजीज (मिस्र देश का शासक) और उस के साथियों ने।

3 अर्थात् यूसुफ़ के निर्दोष होने की निशानियाँ।

36. और उस के साथ कैद में दो युवकों ने प्रवेश किया। उन में से एक ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि शराब निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि अपने मिर के उपर रोटी उठाये हुये हूँ, जिस में से पक्षी खा रहे हैं। हमें इस का अर्थ (स्वप्नफल) बता दो। हम देख रहे हैं कि तुम सदाचारियों में से हो।

37. यूसुफ ने कहा: तुम्हारे पास तुम्हारा वह भोजन नहीं आयेगा जो तुम दोनों को दिया जाता है परन्तु मैं तुम दोनों को उस का अर्थ (फल) बता दूँगा। यह उन बातों में से है जो मेरे पालनहार ने मुझे सिखायी है। मैं ने उस जाति का धर्म तज दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती। और वहीं परलोक को नकारने वाले हैं।

38. और अपने पूर्वजों इब्राहीम तथा इस्माक और याकूब के धर्म का अनुसरण किया है। हमारे लिये वैध नहीं कि किसी चीज को अल्लाह का साझी बनायें। यह अल्लाह की दया है हम पर और लोगों पर। परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।¹

39. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम है, या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह?

40. तुम अल्लाह के सिवा जिस की इबादत (बंदना) करते हो वह केवल नाम है,

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّبْرَيْنِ فَتَىٰ قَالَ سَدِّ قَدْ رَأَيْتَنِي أَعْمُرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَخْلِي قَوْمًا إِنَّهُمْ هُمُ السَّارِقُونَ ۖ فَاتَّبَعْتُ أَهْلَ الْبَيْتِ فَأَتَيْنَا الْهَيْكَلَ الْكَافِرَ الَّذِي هُمْ أَعْتَقُوا ۖ فَكُنَّا لَهُمْ حِسَابًا مِّنْ يَّوْمٍ لَّا يَفْصَلُونَ ۖ

قَالَ لَا يَأْتِيكُم مَّطْعَمٌ مِّنْ ثَمَرَةٍ إِلَّا جَاءَكُمْ بِتِلْكَ يَوْمَئِذٍ ۖ فَتَقُولُونَ هَٰذَا جَاءَ مِنَّا فَكُنَّا لَهَا تِلْكَ ۖ إِنِّي أَنَا تِلْكَ الْوَكِيلُ ۖ فَكُنَّا لِيَوْمِئِذٍ حِشَابًا ۖ فَأَلْهَمَ الْكُفْرَ الَّذِينَ هُمْ

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي يَزِيدُونَ بَغْيَهُمْ تُزِيدُ وَيَعْبُودُونَ مَا كَانُوا لَنَاسٍ شُرَكَاءَ مِن دُونِ اللَّهِ مُعْتَبَرِينَ ۚ وَلَكِن مَّا أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ

يَصَاحِبِي الرَّحْمَٰنُ ۚ أَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ خَيْرًا ۖ إِنَّ اللَّهَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۖ

مَنْ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَتَسْمَعُونَ حَسْبُكُمْ

1 अर्थात् लौहीद और नवियों के धर्म को नहीं मानते जो अल्लाह का उपकार है

जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं। अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण नहीं उतारा है। शासन तो केवल अल्लाह का है। उस ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करो। यही सीधा धर्म है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते हैं।

اتَّخَذُوا آلِهَتَهُمْ آلِهَةً مِمَّا آتَوْهُم مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِمْ مِن دُونِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَآتِيهِم بِدَلِيلٍ ۖ وَلَئِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهُ لَنَنصُرَنَّكَ ۖ وَكَانَ عِندَ رَبِّكَ فَتْحٌ مُّبِينٌ ۚ

41. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! रहा तुम में से एक तो वह अपने स्वामी को शराब पिलायेगा। तथा दूसरा, तो उस को फांसी दी जायेगी, और पक्षी उस के मिर में से खायेगा। उस का निर्णय कर दिया गया है जिस के संबन्ध में तुम दोनों प्रश्न कर रहे थे।

يَصَاحِبِيَ الْيَمِينِ مِمَّا آتَوْكَم فَيَقِي رِيَّةَ خَمْرٍ ۚ وَآلِ الْأَخْرِقِ ۚ وَنَبْ قَبْ كُلِّ الْخَلْرِ ۚ مِنْ رَّأْيِهِ قُضِيَ الْأَمْرُ ۚ ثَوْنِي فِيهِ تَسْقُوتِي ۚ

42. और उस से कहा जिसे समझा कि वह उन दोनों में से मुक्त होने वाला है: मेरी चर्चा अपने स्वामी के पास कर देना तो शैतान ने उसे अपने स्वामी के पास उस की चर्चा करने को भुला दिया। अतः वह (यूसुफ) कई वर्ष कैद में रह गया।

وَقَالَ الْيَمِينُ مَنْ رَجَعْتُ إِلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ

43. और (एक दिन) राजा ने कहा मैं सात मोटी गायों को सपने में देखना हूँ जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे प्रमुखो! मुझे मेरे स्वप्न के संबंध में बताओ, यदि तुम स्वप्न फल बता सकते हो?

وَقَالَ الْيَمِينُ فِي أَرْبَعِ سَبْعَةٍ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ

44. सब ने कहा यह तो उलझे स्वप्न की बातें हैं। और हम ऐसे स्वप्नों का अर्थ (फल) नहीं जानते।

قَالُوا أَصَابَتْكُمْ أَحْلَامٌ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ وَكَانَ فِي يَمِينِهِ ۚ

45. और उस ने कहा जो दोनों में से मुक्त हुआ था, और उसे एक अवधि के पश्चात् बात याद आयी: मैं तुम्हें इस का फल (अर्थ) बना दूंगा, तुम मुझे भेज दो।

وَقَالَ الَّذِي نَجَّاهُمَا وَقَدْ رُفِعَ آمَنَهُ إِنِّي لَأَجِدُ آلَافَ فَتْرَةٍ ۝

46. हे यूसुफ! हे सत्यवादी! हमें सात मोटी गायों के बारे में बताओ, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं, और सात सूखी, ताकि लोगों के पास वापिस जाऊँ, और ताकि वह जान लें।

يُوسُفُ إِنِّي الْبَصِيرُ ۝ أَفَتَبَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمًا يَكْفُرْنَ سَبْعَ عَجَافٍ وَسَبْعَ سِمَلَاتٍ ۝ حُمْرٌ مُّزَاوٍ خَرِيصٌ يَّحْمِلُ الْوِجْرَةَ الْثَانِي ۝ لَعَلَّهُمْ يَنْظُرُونَ ۝

47. यूसुफ ने कहा: तुम सात वर्ष निरन्तर खेती करते रहोगे। तो जो कुछ काटो उसे उस की बाली में छोड़ दो परन्तु थोड़ा जिसे खाओगे। (उसे बालों से निकाल लो।)

قَالَ زُرْعُونَ سَبْعَ سِنِينَ فَإِن حَصَدْتُمْ فَذَرُونِي سَبْعًا إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَكْتُمُونَ ۝

48. फिर इस के पश्चात् सात कड़े (आकाल के) वर्ष होंगे। जो उसे खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये पहले से रखा है, परन्तु उस में से थोड़ा जिसे तुम सुरक्षित रखोगे।

لَعَلَّيْنِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعَ سِنِينَ ۝ لَعَلَّيْنِي مِمَّا تَكْتُمُونَ ۝

49. फिर इस के पश्चात् एक ऐसा वर्ष आयेगा जिस में लोगों पर जल बरमाया जायेगा, तथा उसी में (रस) निचोड़ेंगे।

لَعَلَّيْنِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَارِقُ السُّيُوفُ وَيُغَارِقُونَ ۝

50. और राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ। और जब यूसुफ के पास भेजा हुआ आया, तो आप ने उस से कहा कि अपने स्वामी के पास वापिस

وَقَالَ الْمَلِكُ الْتَوَيْتُ بِهِ قَدْ جَاءَهُ الرُّسُولُ ۝ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسَنُفَعِّلُ مَا هَٰذَا الرُّسُولُ يَقُولُ ۝ فَفَعَّلْنَا بَيْنَهُمَا بَٰرَئِينَ ۝

1 अर्थात् कैद खाने में यूसुफ अलैहिसलाम के पास।

2 अर्थात् आप की प्रतिष्ठा और ज्ञान को।

जाओ^[1], और उस में पूछो कि उन स्त्रियों की क्या दशा है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे? वास्तव में मेरा पालनहार उन स्त्रियों के छल से भलि-भांति अवगत है।

51. (राजा) ने उन स्त्रियों से पूछा: तुम्हारा क्या अनुभव है, उस समय का जब तुम ने यूसुफ के मन को रिझाया? सब ने कहा: अल्लाह पवित्र है! उस पर हम ने कोई बुराई का प्रभाव नहीं जाना। तब अजीज की पत्नी बोल उठी: अब सत्य उजागर हो गया वास्तव में मैं ने ही उस के मन को रिझाया था, और निमंदेह वह सत्वादियों में है।²

قَالَ مَا خَطْبُكُمْ ذُرَاؤُكُمْ يُوْسُفُ عَنْ نَفْسِهِ
فَلَمَّا حَاسَ يَدُوًّا عَمِيًّا عَبِيدُ مِنْ شِوَاهِ قَالَتْ
اَفَرَأَيْتُ الْقَوْمَ يَخْتَصِمُونَ لَكَ يَارَاؤُكُمْ عَنْ
نَفْسِهِ قَوْلُهُ يَسَّ الضُّمُورُ

52. यह (यूसुफ) ने इस लिये किया, ताकि उसे (अजीज को) विश्वास हो जाये कि मैं ने गुप्त रूप से उस के साथ विश्वास घात नहीं किया। और वस्तुतः अल्लाह विश्वास घातियों से प्रेम नहीं करता।

لَا يَتَذَكَّرُ فِي قَلْبِ الْغَائِبِينَ ۝

53. और मैं अपने मन को निर्दोष नहीं कहता, मन तो बुराई पर उभारना है। परन्तु जिस पर मेरा पालनहार दया कर दे। मेरा पालनहार अति

وَمَا أَمْرِي بِغَيْبٍ إِنَّ الْغَيْبَ لَكُمُورٌ ۝
يَا شُعْرَةَ الْأُمَمِ رَحِمَهُ رَبِّي فَقُولُوا زَيْنُ

1 यूसुफ (अलैहिससलाम) को बंदी बनाये जाने से अधिक उस का कारण जानने की चिन्ता थी। वह चाहते थे कि कैद से निकलने से पहले यह सिद्ध होना चाहिये कि मैं निर्दोष था।

2 यह कुरआन पाक का बड़ा उपकार है कि उस ने रसूलों तथा नबियों पर लगाये गये बहुत से आरोपों का निवारण (खण्डन) कर दिया है। जिसे अहल किताब (यहूदी तथा ईसाई) ने यूसुफ (अलैहिससलाम) के विषय में बहुत सी निर्मूल बातें घड़ ली थीं जिन को कुरआन ने आकर साफ कर दिया।

क्षमाशील तथा दयावान् है।

54. राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ, उसे मैं अपने लिये विशेष कर लूँ और जब उस (यूसुफ) से बात की, तो कहा: वस्तुतः तू आज हमारे पास आदरणीय भरोसा करने योग्य है।

وَقَالَ لَمِيكَ اسْتَوْفِي بِهِ اسْتَفْصِلْهُ لِنَفْسِي فَتَنَّا
كَلِمَةً قَالَ إِنَّكَ يَوْمَ لَدَيْكَ مَكِينٌ أَمِينٌ

55. उस (यूसुफ) ने कहा: मुझे देश का कोषाधिकारी बना दीजिये। वास्तव में मैं रखवाला बड़ा ज्ञानी हूँ।

قَالَ جَعَلَنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ
عَبِيدٌ

56. और इस प्रकार हम ने यूसुफ को उस धरती (देश) में अधिकार दिया, वह उस में जहाँ चाहे रहे। हम अपनी दया जिसे चाहे प्रदान करते हैं, और सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करते।

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبِعُوا أَمْرَهُ
حَيْثُ يَشَاءُ نُفَصِّلُ الْفُرْقَانَ لِمَنْ هُوَ شَاءُ وَلَا نُضِيقُ
الْأَجْرَ الْغَيْرِ الْغَيْرِينَ

57. और निश्चय परलोक का प्रतिफल उन लोगों के लिये उत्तम है, जो ईमान लाये, और अल्लाह से डरने रहे।

وَلَكُمْ فِي الْأَنْفُسِ الَّتِي تَلِدِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ

58. और यूसुफ के भाई आये¹, तथा उस के पास उपस्थित हुये, और उस ने उन्हें पहचान लिया, तथा वह उस से अपरिचित रह गये।

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ وَاعْتَرَفَهُمْ
وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ

59. और जब उन का सामान तय्यार कर दिया तो कहा: अपने सौतीले भाइयों² को लाना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा माप देता हूँ, तथा उत्तम अतिथि सत्कार करने वाला हूँ?

وَلَمَّا حَقَّرَهُمْ بِهَا رَدَّهُمْ قَالَ انْزِلُوا بِأَمْوَالِكُمْ
إِنِّي كَفَّ الْأَثَمَ عَنْ آلِ الْكَافِرِ وَالْكَافِرُ
الْمُنْفَكِرِينَ

1 अर्थात् अकाल के युग में अन्न लेने के लिये फिलस्तीन से मिस्र आये थे।

2 जो यूसुफ अलैहिस्सलाम का सगा भाई बिन्यामीन था।

60. फिर यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो मेरे यहाँ तुम्हारे लिये कोई माप नहीं और न तुम मेरे समीप होगे।

قَالَ لَمَّا قَامَ إِلَىٰ يَهُودِيٍّ فَلَا كَيْلَ تَكُونُ عِندَ وَلَا تَقْرَبُنِي^١

61. वह बोले हम उस के पिता को इस की प्रेरणा देंगे, और हम अवश्य ऐसा करने वाले हैं।

قَالُوا سَوَدُّ دُعَاؤِ آبَائِهِ لِيُفْعِلُوا^٢

62. और यूसुफ ने अपने सेवकों को आदेश दिया: उन का मूलधन^३ उन की धोरियों में रख दो, संभवतः वह उसे पहचान लें जब अपने परिजनों में जायें और संभवतः वापिस आयें।

وَقَالَ لِلْمَبْتَاعِ أَجْعَلُوا بَيْعَهُمْ فِي يَدَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَقْبَلُونَ^٣

63. फिर जब अपने पिता के पास लौट कर गये तो कहा: हमारे पिता! हम से भविष्य में (अन्न) रोक दिया गया है। अतः हमारे साथ हमारे भाई को भेजें कि हम सब अन्न (गन्ना) लायें, और हम उस के रक्षक हैं।

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنَاتِنَا نَحْمِلَ الْوِزْرَ^٤

64. उस (पिता) ने कहा: क्या मैं उस के लिये तुम पर ऐसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस के पहले उस के भाई (यूसुफ) के बारे में विश्वास कर चुका हूँ? तो अल्लाह ही उत्तम रक्षक और वही सर्वाधिक दयावान् है।

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا يَسْتَكْبِرُ عَلَىٰ أَجْيِدٍ مِنْ قَبْلُ فَلَنُصِيبَهُ خَلْعٌ خِفَّتٍ وَهُوَ آخِزٌ أُنزِلُ بِهِ^٥

65. और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला, तो पाया कि उन का मूलधन उन्हें फेर दिया गया है, उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! हमें और क्या चाहिये? यह हमारा धन हमें फेर दिया गया है? हम अपने घराने के

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِعْثَتَهُمْ رَدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا نَبِئْنَا بِبَيْعَتِهِمْ^٦

1 अर्थात् जिस धन से अब खरीदा है।

लिये गल्ले (अन्न) लायेंगे, और एक ऊँट का बोझ अधिक लायेंगे¹, यह माप (अन्न) बहुत थोड़ा है।

66. उस (पिता) ने कहा: मैं कदापि उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर मुझ दृढ़ वचन दो कि उसे मेरे पास अवश्य लाओगे, परन्तु यह कि तुम को घेर लिया² जाये। और जब उन्होंने अपना दृढ़ वचन दिया तो कहा, अल्लाह ही तुम्हारी बात (वचन) का निरीक्षक है।

67. और (जब वह जाने लगे) तो उस (पिता) ने कहा हे मेरे पुत्रों! तुम एक द्वार से (मिस्र में) प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना। और मैं तुम्हें किसी चीज से नहीं बचा सकता जो अल्लाह की ओर से हो। और आदेश तो अल्लाह का चलता है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, तथा उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिये।

68. और जब उन्होंने (मिस्र में) प्रवेश किया जैसे उन के पिता ने आदेश दिया था तो ऐसा नहीं हुआ कि वह उन्हें अल्लाह से कुछ बचा सके। परन्तु यह याकूब के दिल में एक विचार उत्पन्न हुआ, जिसे उस ने पूरा कर लिया³ और वास्तव में वह उस का

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّى تُؤْتُوا بِمُؤْتَا
وَمِنَ الْكُوفَةِ أَشْتَبَى بِهِ إِلَّا أَنْ يُخَاطَبَكُمْ فَلَمَّا
أَتَوْا مُؤْتَاهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَيَّ الْقَوْلُ وَالْمُؤْتَى

وَقَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَدِ
وَدَخَلُوا مِنْ بَابٍ مُتَّفَقَةٍ وَمَا عَلِمُوا
مَعَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رِبَ لَعَنَهُمْ إِلَّا
بَلَدٌ عَلَيْهِمْ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ قِيَّتُكُمْ
الْمُتَوَكِّلُونَ

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ
لِيُغَيِّرَ عَهْدَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ لَزَّتْ لَهُ فِي
نَفْسٍ يَعْذُوْبُ نَفْسَهُ وَرَأَى لَهُمْ فِي مَنَاجِلِهِمْ
وَلَكِنَّ الْكُوفَةَ مَائِدًا لَا يُعْثَرُونَ

1 अर्थात् अपने भाई बिन्यामीन का जो उन की दूसरी माँ से था।

2 अर्थात् विवश कर दिये जाओ।

3 अर्थात् एक अपना उपाय था।

ज्ञानी था जो ज्ञान हम ने उसे दिया था। परन्तु अधिकांश लोग इस (की वास्तविकता) का ज्ञान नहीं रखते।

69. और जब वे यूसुफ के पास पहुँचे तो उस ने अपने भाई को अपनी शरण में ले लिया। (और उस से) कहा मैं तेरा भाई (यूसुफ) हूँ। अतः उस से उदासीन न हो जो (दुर्व्यवहार) वह करते आ रहे हैं।

70. फिर जब उस (यूसुफ) ने उन का सामान नष्ट कर दिया तो प्याला अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा: हे कार्फिले वालों! तुम लोग तो चोर हो।

71. उन्होंने फिर कर कहा: तुम क्या खो रहे हो?

72. उन (कर्मचारियों) ने कहा: हमें राजा का प्याला नहीं मिल रहा है। और जो उसे ला दे उस के लिये एक ऊँट का बोझ है और मैं उस का प्रतिभू¹ हूँ।

73. उन्होंने ने कहा: तुम जानते हो कि हम इस देश में उपद्रव करने नहीं आये हैं, और न हम चोर ही हैं।

74. उन लोगों ने कहा। तो यदि तुम झूठे निकले तो उस का दण्ड क्या होगा? ²

75. उन्होंने ने कहा: उस का दण्ड वही होगा जिस के सामान में पाया जाये,

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى الْيَسْرِ حَتَّى قَالَ لِيْنِ إِنَّا خَوْفٌ فَلَا تَتَّبِعُنِي بِهِ كَأَنْتُمْ يَعْتَوُونَ ﴿٦٩﴾

فَلَمَّا جَهَر لَهُمْ بِجَهْرِهِمْ جَعَلَ يَسْقَى فِي رَحْلِ بْنِ يَسْرِ ثُمَّ دَنَّ مُؤَذِّنٌ أَتَاهَا الْغَيْرُ الْمَكْرُومُونَ ﴿٧٠﴾

قَالُوا وَالَّذِينَ عَلَيْكُمْ مَا دَنْتُمُوهُمْ ﴿٧١﴾

قَالُوا نَفْقَدُ صُوعَ نَبِيكِ وَمَنْ جَاءَ بِهِ جُعِلَ بَعِيرٌ وَأَتَا بِهِ رَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

قَالُوا يَا لَللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْتُمْ لِتَقْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنْتُمْ سَوَاقِيْنَ ﴿٧٣﴾

قَالُوا فَهَبْ حَرْوَةً لِّكَ كُنْتُمْ كَاذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

قَالُوا جَزَاءُ مَا مِنَّ وَجِدَ فِي رَحِيهِ فَهُوَ جَزَاءُ مَا

1 अर्थात् एक ऊँट के बोझ बराबर पुरस्कार देने का भार मुझ पर है

2 अर्थात् चोर का।

वही उस का दण्ड होगा। इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्ड देने हैं।¹

76. फिर उस ने खोज का आरंभ उस (यूसुफ) के भाई की बोरी से पहले उन की बोरियों से किया। फिर उस को उस (बिन्यामीन) की बारी स निकाल लिया। इस प्रकार हम ने यूसुफ के लिये उपाय² किया। वह राजा के नियमानुसार अपने भाई को नहीं रख सकता था, परन्तु यह कि अल्लाह चाहता। हम जिस का चाहें मान सम्मान ऊँचा कर देते हैं। और वह प्रत्येक ज्ञानी से ऊपर एक बड़ा ज्ञानी³ है।

77. उन भाईयों ने कहा यदि उस ने घोरी की है तो उस का एक भाई भी इस से पहले चोरी कर चुका है। तो यूसुफ ने यह बात अपने दिल में छुपा ली। और उसे उन के लिये प्रकट नहीं किया। (यूसुफ ने) कहा- सब से बुरा स्थान तुम्हारा है। और अल्लाह उसे अधिक जानता है जो तुम कह रहे हो।

78. उन्होंने ने कहा हे अजीज!⁴ उस

كَذَلِكَ نَجْزِي الصَّادِقِينَ ۝

فَبَدَأَ بِأَوْعَيْنُهُمْ قَبْلَ رِجَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ
اسْتَخْرَجَهَا مِنْ رِجَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ
يُلْقِي يَاسُفَ مَتَّ كَانَ لِأَخِيهِ أَفْئِدَةٌ
مُتَّ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ تَرْفَعُ رُجُوتَ مَنْ شَاءَ
وَقَوْفَ كُلِّ دُونٍ عَلَيْهِ سَيِّئُهُ ۝

قَالُوا إِنَّ يَاسُفَ فَقَدْ سَرَقَ خُرُوتَهُ مِنْ قَبْلُ
فَأَسْرَاهُ الْيُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَهُوَ يَهُودِيٌّ لَهُمْ
قَالَ أَتُكْفِرُونَ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّهُ أَبَشَعْتَ كَيْدًا

1 अर्थात् याकूब अलैहस्सलाम के धर्म विधान में चोर को दाम बना लेने का नियम था। (तफ्सीरे कुर्तूबी)

2 अपने भाई बिन्यामीन को रोक लेने की विधि बना दी।

3 अर्थात् अल्लाह से बड़ा कोई ज्ञानी नहीं हो सकता। इसलिये किसी को अपने ज्ञान पर गर्व नहीं होना चाहिये।

4 यहाँ पर «अजीज» का प्रयोग यूसुफ (अलैहस्सलाम) के लिये किया गया है। क्योंकि उन्हीं के पास सरकार के अधिकार अधिकार थे।

का पिता बहुत बूढ़ा है। अतः हम
में से किसी एक को उस के स्थान
पर ले लो। वास्तव में हम आप को
परोपकारी देख रहे हैं।

فَخَذَّ أَحَدُنَا مَكَانَهُ إِنَّا نَشْرِكُ مِنَ
الْمُتَشَبِّهِينَ ۝

79. उस (यूसुफ) ने कहा अब्राह की
शरण कि हम (किसी अन्य को)
पकड़ लें, परन्तु उसी को (पकड़ेंगे)
जिम् के पाम अपना सामान पाया है।
(यदि ऐसा न करें) तो हम वास्तव में
अत्याचारी होंगे।

قَالَ مَعَ مَا كُنْتُمْ يَفْعَلُونَ إِنَّا كُنَّا إِتْرَافًا
مِّنْ عِبَادِ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّطَائِفُونَ ۝

80. फिर जब उस से निराश हो गये तो
एकान्त में हां कर परामर्श करने
लगे उन के बड़े ने कहा: क्या तुम
नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुम
से अब्राह को साक्षी बना कर दृढ़
वचन लिया था? और इस से पहले
जो अपराध तुम ने यूसुफ के बारे में
किया है? तो मैं इस धरती (मिस्र) से
नहीं जाऊँगा जब तक मुझे मेरे पिता
अनुमति न दे दे। अथवा अब्राह मेरे
लिये निर्णय न कर दे। और वही सब
से अच्छा निर्णय करने वाला है।

قُلْنَا اسْتَشِيرُوا مِنَّا خَلَصُوا نَجِيًّا ۝ قَالَ
كَسِبُوا لَهُمْ مَا فَعَلُوا إِنَّا كُنَّا قَدِ احْتَدَ
عَيْنُكُمْ قَوْمٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَمِنْ قَبْلِ مَا تَزْعُمُونَ
إِنِّي يُونُسُ مِّنْ قَوْمِ السَّجُودِ ۝ قَالَ يَٰأَيُّهَا
يُونُسُ أَتَدْعِي إِلَىٰ دِينِ اللَّهِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ لِّعِبَادِكُمْ ۝

81. तुम अपने पिता की ओर लौट जाओ,
और कहो कि हे हमारे पिता! आप
के पुत्र ने चोरी की, और हम ने वही
साक्ष्य दिया जिसे हम ने¹ जाना
और हम गैब के रखवाले नहीं² थे।

رُدِّعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَٰأَبَايُنُسَ إِنَّا
مُسْرِقُونَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا
بِلُغَبٍ حَافِظِينَ ۝

82. आप उस बस्ती वालों से पूछ लें.

وَسَأَلْنَا أَهْلَ الْبَلَدِ لَنُحْيِيَنَّكَ فِيهَا وَلَٰجِئًا لَّنِي ۝

- 1 अर्थात् राजा का प्याला उस के सामान से निकलने देखा।
2 अर्थात् आप को उस के वापिस लाने का वचन देने समय यह नहीं जानते थे
कि वह चोरी करेगा। (तफ्सीर कुर्तुबी)

जिस में हम थे, और उस काफिले से जिस में हम आये हैं, और वास्तव में हम सच्चे हैं

قَبَسًا فِيهَا ذُرِّيَّتُكُمْ وَأَمْسَرَ قَوْمُكُمْ

83. उस (पिता) ने कहा ऐसा नहीं, बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है तो इस लिये अब सहन करना ही उत्तम है, संभव है कि अब्ब्राह उन सब को मेरे पास वापिस ला दे, वास्तव में वही जानने वाला तत्वदर्शी है।

قَالَ لَنْ نَحْمِلَ لَكُمْ ثِقَلَكُمْ أَمْزَرَ قَوْمُكُمْ
جَوَابًا عَلَى قَوْلِهِ لَنْ نَحْمِلَ لَكُمْ ثِقَلَكُمْ
إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

84. और उन में मुंह फेर लिया, और कहा हाय यूसुफ! और उस की दोनों आखें शोक के कारण (रोते-रोते) सफेद हो गयीं, और उस का दिल शोक से भर गया।

وَقَوَّلَ عَمْرُوهُ قَالَ يَا سَعَى عَلَى يُونُسَ
وَبَصُرَتْ بَيْنَهُ مِنْ تَحْتِهَا فَهُوَ كَاطِمٌ

85. उन (पुत्रों) ने कहा अब्ब्राह की शपथ! आप बराबर यूसुफ को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि (शोक से) घुल जायें, या अपना विनाश कर लें।

قَالُوا تَاللَّهِ تَعْمَلُونَ تَكَذُّبًا يُونُسَ
حَرَضًا أَوْ تَكُونُونَ مِنَ الْهَاسِكِينَ

86. उस ने कहा: मैं अपनी आपदा तथा शोक की शिकायत अब्ब्राह के सिवा किसी से नहीं करता। और अब्ब्राह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُو بَيْنِي وَخِزِّي إِلَهِكُمْ
مِنْ إِلَهِكُمْ إِلَّا تَعْجَبُونَ

87. हे मेरे पुत्रों! जाओ, और यूसुफ और उस के भाई का पता लगाओ। और अब्ब्राह की दया से निराश न हो। वास्तव में अब्ब्राह की दया से वही निराश होते हैं जो काफिर हैं।

يَسِّرْ يَاسِّرْ أَفَعَجَبُوا مَتَّعْتُمُوهُمْ يُونُسَ وَأَجِيبُوا
وَلَا تَكْفُرُوا مَنْ تَدْعُونَ إِلَهُكُمْ لَا يَأْتِيَنَّ مِنْ
رُؤُوسِ السَّمَاءِ الْغُورُ الْكَبِيرُ

88. फिर जब उस (यूसुफ) के पास (मिस्र में) गये तो कहा हे अजीज! हम

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ وَأُوتُوا إِلَهُكُمُ الْعَزِيزُ مَسًّا

पर और हमारे घराने पर आपदा (अकाल) आ पड़ी है। और हम थोड़ा धन (मूल्य) लाये हैं अतः हमें (अन्न का) पूरा माप दें, और हम पर दान करें वास्तव में अल्लाह दानशीलों को प्रतिफल प्रदान करता है।

89. उम (यूसुफ) ने कहा क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ तथा उस के भाई के साथ क्या कुछ किया है, जब तुम अज्ञान थे?

90. उन्होंने ने कहा क्या आप यूसुफ हैं? यूसुफ ने कहा: मैं यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई है अल्लाह ने हम पर उपकार किया है। वास्तव में जो (अल्लाह से) डरता तथा सहन करता है तो अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

91. उन्होंने कहा: अल्लाह की शपथ! उम ने आप को हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है। वास्तव में हम दोषी थे।

92. यूसुफ ने कहा: आज तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे। वही सर्वाधिक दयावान् है।

93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ, और मेरे पिता के मुख पर डाल दो, वह देखने लगेंगे। और अपने पूरे घराने को (मिस्र) ले आओ।

94. और जब काफिले ने प्रस्थान किया, तो उन के पिता ने कहा मुझे यूसुफ की सुगन्ध आ रही है यदि तुम मुझे

وَأَهْبَاطُ الشُّرُوحِ يَبْصُرُ مُرْجُو قَارِي
لَمَّا الْكُفْرَ وَتَصَدَّقَ عَيْنَا لِرَبِّكَ تَجْمُرِي
الْمُتَصَدِّقِينَ ۝

قَالَ مَنْ عِندَكُمْ مَا كُنْتُمْ يَوْمَ تَجِدُوا
إِذْ كُنْتُمْ جَاهِلِينَ ۝

قَالُوا لَكَ لَأَنْتَ يُونُسُ قَالَ أَنَا يُونُسُ
وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ
يَشَاءُ يَصْغُرُ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ جَرَ
الْمُغَيِّرِينَ ۝

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْهُ عَلَيْهِ وَإِنْ
كَ لَاعْظِمِينَ ۝

قَالَ لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِ الْيَوْمَ يَكُونُ إِنَّهُ نَحْمُ
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

إِذْ قَبِلُوا بِقَمِيصِي هَذَا فَكَفُّوا عَنْ وَجْهِ
رَبِّي يَأْتِ بِصَيْرٍ أَوْ تَوَفِّي بَدْنِي كُمْ
أَجْمَعِينَ ۝

وَلَمَّا قَصَصْنَا عَلَى الْعِبرِ قَالَ أَبُوهُمْ أِنِّي لَأَكِيدُ
رَبِّي يُونُسُ لَوْلَا أَنْ تَقْتَدِرُ ۝

वहका हुआ बूढ़ा न समझो।

قَالُوا تِلْكَ إِتْرَافَاتُ الْفِتْرِ ۖ

95. उन लोगों¹ ने कहा: अब्राह की शपथ! आप तो अपनी पुरानी सनक में पड़े हुये हैं।

فَقَالُوا جَاءَ الْبَشِيرُ الْفَتْرَةَ عَلَى وَجْهِهِ قَارُونَ
يُصِيرُ قَارُونَ الْفَتْرَةَ الْفَتْرَةَ الْفَتْرَةَ الْفَتْرَةَ
مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ

96. फिर जब शुभ-सूचक आ गया, तो उस ने वह (कुरा) उन के मुख पर डाल दिया। और वह तुरंत देखने लगे। याकूब ने कहा: क्यों मैं ने तुम से नहीं कहा था कि वास्तव में अब्राह की ओर से जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

قَالُوا يَا سَمْعُونُ اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا
خاطبين ۖ

97. सब (भाईयों) ने कहा हे हमारे पिता! हमारे लिये हमारे पापों की क्षमा माँगिये, वास्तव में हम ही दोषी थे।

قَالَ سَمْعُونُ اسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَفُوفُ
الرحيم ۖ

98. याकूब ने कहा: मैं तुम्हारे लिये अपने पालनहार से क्षमा की प्रार्थना करूँगा वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى الْبَنَاتُ أَبَوَيْهِ
وَقَالَ ارْكَبُوا مَعِيَ سَفَرًا لِّيُخْرِجَنِي
مِنْهَا ۖ

99. फिर जब वह यूसुफ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता-पिता को अपनी शरण में ले लिया। और कहा: नगर (मिस्र) में प्रवेश कर जाओ, यदि अब्राह ने चाहा तो शान्ति से रहोगे।

وَرَفَعَ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَاءِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا
وَقَالَ يَبْنَوتُ هَذَا الْبَيْتُ لِيُخْرِجَنِي مِنْهَا
جَمْعًا ۖ

100. तथा अपने माता पिता को उठा कर सिंहासन पर बिठा लिया। और सब उस के सम्मुख सज्दे में गिर गये,² और यूसुफ ने कहा:

1 याकूब अलैहिस्सलाम के परिजनों ने जो फिलस्तीन में उन के पास थे।

2 जब यूसुफ की यह प्रतिष्ठा देखी तो सब भाई तथा माता-पिता उन के सम्मान के लिये सज्द में गिर गये। जो अब इस्लाम में निरस्त कर दिया गया है यही

हे मेरे पिता! यही मेरे स्वप्न का अर्थ है जो मैं ने पहले देखा था। मेरे पालनहार ने उसे सच्च कर दिया है, तथा मेरे साथ उपकार किया, जब उस ने मुझे कारावास से निकाला, और आप लोगों को गाँवों से मेरे पास (नगर में) ले आया, इस के पश्चात कि शैतान ने मेरे तथा मेरे भाईयों के बीच विरोध डाल दिया। वास्तव में मेरा पालनहार जिस के लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है। निश्चय वही अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

- 101 हे मेरे पालनहार। तू ने मुझे राज्य प्रदान किया, तथा मुझे स्वप्नों का अर्थ सिखाया। हे आकाशों तथा धरती के उत्पत्तिकार। तू लोक तथा परलोक में मेरा रक्षक है। तू मेरा अन्त इस्लाम पर कर, और मुझे सदाचारियों में मिला दे।

102. (हे नबी!) यह (कथा) परोक्ष के समाचारों में से है जिस की वही हम आप की ओर कर रहे हैं। और आप उन (भाईयों) के पाम नहीं थे, जब वह आपस की सहमति से षड्यंत्र रचते रहे।

103. और अधिकांश लोग आप कितनी ही लालसा करें, ईमान लाने वाले नहीं हैं।

مِنَ السَّاجِدِينَ وَجَاءَ رِجَالٌ مِنَ الْمَدْيَنَ وَهُمْ يَحْفَظُونَ
أَن تَزْعُمَ الشَّيْءُ سَيِّئٌ وَيَتَنَبَّأُونَ خُفْيَاتِ
رَبِّكَ لَوْ كُنْتَ إِذْ لَرَّكَ كَوْنُ الْعَالَمِينَ حَكِيمًا

رَبِّ قَدْ آتَيْنَاكَ مِنَ الْمَدْيَنَ وَعَلَّمْنَاهُ
تَأْوِيلَ الْأَحَادِيثِ وَطَرَّا مَعْرِفَةَ الْأَرْضِ
أَنْتَ وَهِيَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَكَّلْ عَلَى
رَبِّكَ إِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ اجْتَمَعُوا أَمْرُهُمْ وَأَمْرُكَ يُتَكْرَمُونَ

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ

उस स्वप्न का फल था जिस में यूसुफ अलैहिस्सलाम ने ग्यारह भित्तारों, सूर्य तथा चाँद को अपने लिये सज्दा करने देखा था।

104. और आप इस (धर्मप्रचार) पर उन से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगते। यह (कुरआन) तो विश्ववासियों के लिये (केवल) एक शिक्षा है।

وَمَا نَسْأَلُ الْمَلَائِكَةَ مِنْ ثَمَرٍ لِّمَا هُمْ بِأَعْمَلُونَ
يَلْعَلَّيْنِ ۝

105. तथा आकाशों और धरती में वहन सी निशानियाँ (लक्षण¹) हैं जिन पर से लोग गुजरते रहते हैं, और उन पर ध्यान नहीं देते।²

وَمَا يَكُنُّ فِي سَمَاءٍ مِّنَ السَّمَوَاتِ وَآرْضٍ
يُزَوَّرُونَ عَلَيْهَا وَلَهُمْ عَنَّا مَرْحُومُونَ ۝

106. और उन में से अधिकतर अब्राह को मानते हैं परन्तु (साथ ही) मुश्रिक (मिश्रणवादी)³ भी हैं।

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِشَوَاحِدِ آلِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ هُوَ مُسَرِّضُونَ ۝

107. तो क्या वह निर्भय हो गये हैं कि उन पर अब्राह की यातना छा जाये, अथवा उन पर प्रलय अकस्मात आ जाये और वह अचेत रह जायें?

أَفَلَا يَسْأَلُونَ تَرْثُهُمْ عَائِلَاتُ سُلَيْمَانَ مِمَّا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝

108. (हे नबी!) आप कह दें यही मेरी डगर है मैं अब्राह की ओर बुला रहा हूँ मैं पूरे विश्वास और सत्य पर हूँ और जिस ने मेरा अनुसरण किया। तथा अब्राह पवित्र है, और मैं मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) में से नहीं हूँ।

قُلْ هِيَ سَبِيلُ اللَّهِ عَلَىٰ مَا نَصَرْتُ ۚ أَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

1 अर्थात् सहस्रों वर्ष की यह कथा इस विवरण के साथ वही द्वारा ही संभव है जो आप के अब्राह के नबी होने तथा कुरआन के अब्राह की वाणी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

2 अर्थात् विश्व की प्रत्येक चीज अब्राह के अस्तित्व और उस की शक्ति और सद्गुणों की परिचायक है, मात्र मोच विचार की आवश्यकता है।

3 अर्थात् अब्राह के अस्तित्व और गुणों का विश्वास रखने हैं फिर भी पूजा अर्चना अन्य की करते हैं।

109. और हम ने आप से पहले मानव¹ पुरुषों ही को नबी बनाकर भेजा जिन की ओर प्रकाशना भेजते रहे, नगरवासियों में से, क्या वे धरती में चले फिरे नहीं, ताकि देखते कि उन का परिणाम क्या हुआ जो इन से पहले थे? और निश्चय आखिरत (परलोक) का घर (स्वर्ग) उन के लिये उत्तम है, जो अब्बाह से डरे, तो क्या तुम समझते नहीं हो।

110. (इस से पहले भी रसूलों के साथ यही हुआ)। यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गये और लोगों को विश्वास हो गया कि उन से झूठ बोला गया है, तो उन के लिये हमारी सहायता आ गई, फिर हम जिसे चाहते है बचा लेते है, और हमारी यातना अपराधियों से फेरी नहीं जाती।

- 111 इन कथाओं में बुद्धिमानों के लिये बड़ी शिक्षा है, यह (कुरआन) ऐसी बानों का संग्रह नहीं है, जिसे स्वयं

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ أَنْ قَسُوا الْأَرْضَ قَبَضُوا
كَيْفَ كَانَ حَافِيَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ
الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا يَعْلَمُونَ

حَتَّى إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا
جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُفِثَ مِنْ سُلْطَانِهِمْ وَارْتُفِدُوا مِنْ
عَيْنِ الْغُورِ الْمُجْرِمِينَ

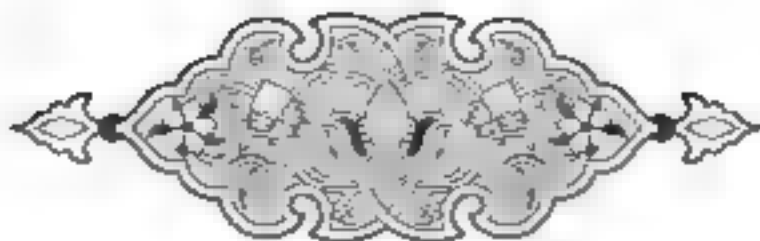
لَقَدْ كَانَ فِي قصصِهِمْ بَرَةٌ لِلَّذِينَ ارْتَابُوا
مَكَانَ حَبِيبٍ تُعَذِّبُ وَلَكِنْ نَصُوْبِي

- 1 कुरआन की अनेक आयतों में आप को यह बात मिलेगी कि रसूलों का अस्वीकार उन की जातियों ने दो ही कारण से किया।

एक तो यह कि उन के एकेश्वरवाद की शिक्षा उन के बाप दादा की परम्परा के विरुद्ध थी, इसीलिये मन्थ को जानने हुये भी उन्होंने उस का विरोध किया। दूसरा यह कि उन के दिल में यह बात नहीं उभरी कि कोई मानव पुरुष अब्बाह का रसूल कैसे हो सकता है? रसूल तो किसी फरिश्ते को होना चाहिये। फिर यदि रसूलों को किसी जाति ने स्वीकार भी किया तो कुछ युगों के पश्चात् उसे ईश्वर अथवा ईश्वर का पुत्र बनाकर एकेश्वरवाद को आघात पहुँचाया और शिर्क (मिश्रणवाद) का द्वार खोल दिया। इसीलिये कुरआन ने इन दोनों कुर्वचारों का बार बार खण्डन किया है।

बना लिया जाता हो, परन्तु इस में पहले की पुस्तकों की सिद्धि और प्रत्येक वस्तु का विवरण (व्योरा) है। तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ آيَاتِنَا وَيُؤْتُونَ زَكَاةً وَيَسْتَكْفِرُونَ ۝



सूरह रअद - 13

سُورَةُ الرَّعْدِ

सूरह रअद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 43 आयत है।

- «रअद» का अर्थ बादल की गरज है। इस सूरह की आयत नं० (13) में बताया गया है कि वह अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का गान करती है इसी से इस का नाम रअद रखा गया है।
- इस सूरह में यह बताया गया है कि इस पुस्तक (कुर्आन पाक) का अल्लाह की ओर से उतरना सच्च है तथा उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन से परलोक का विश्वास होता है तथा विरोधियों को चेतावनी दी गई है।
- तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के विषय तथा मृत्यु और अमृत्यु के अलग अलग परिणाम को बताया गया है। और मृत्यु के अनुयायियों के गुण और परलोक में उन का परिणाम तथा विरोधियों के दुष्परिणाम को प्रस्तुत किया गया है।
- विरोधियों को चेतावनी दी गई, तथा इंसान वालों को शुभ सूचना सुनाई गई है।
- और अन्न में रिसालत (दूतत्व) के विरोधियों को सावधान करने साथ आज्ञाकारियों के अच्छे अन्न को प्रस्तुत किया गया है ताकि विरोधियों को अल्लाह से भय की प्रेरणा मिले।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अलिफ लाम, मीम, रा। यह इस पुस्तक (कुर्आन) की आयतें हैं। और (हे नबी!) जो आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है सर्वथा सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग

الْقُرْآنَ كَذِبًا أَيْ الْكِتَابَ وَأَنْبِئْ بِاللَّيْلِ مِنَ
رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَكِنَّ الْكَافِرَ لَأَنفُسُهُمْ فَاسِقُونَ

ईमान (विश्वास) नहीं रखता।

2. अल्लाह वही है जिस ने आकाशों को ऐसे सहारों के बिना ऊँचा किया है जिन्हें तुम देख सको। फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो गया, तथा सूर्य और चाँद को नियम बद्ध किया। सब एक निर्धारित अवधि के लिये चल रहे हैं। वही इस विश्व की व्यवस्था कर रहा है, वह निशानियों का विवरण (व्योरा) दे रहा है ताकि तुम अपने पालनहार से मिलने का विश्वास करो।

3. तथा वही है जिस ने धरती को फैलाया। और उस में पर्वत तथा नहरें बनायीं, और प्रत्येक फलों के दो प्रकार बनाये। वह रात्रि में दिन को छुपा देता है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोच विचार करते हैं।

4. और धरती में आपस में मिले हुये कई खण्ड हैं, और उद्यान (बाग) हैं अँगूरों के तथा खेती और खजूर के वृक्ष हैं कुछ एकहरे और कुछ दोहरे, सब एक ही जल से सींचे जाते हैं, और हम कुछ को स्वाद में कुछ से अधिक कर देते हैं, वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिये जो मूर्ख बूझ रखते हैं।

5. तथा यदि आप आश्चर्य करते हैं तो आश्चर्य करने योग्य उन का यह¹

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ أَسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَنَحْنُ الْمُسْتَوُونَ وَالْقَمَرَ كُلًّا يَجْرِىٰ رَجْعًا مَّسْكُومًا يَدَبُرُ الْأُمُورَ يُفْصِلُ اللَّيْلَ لَكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُفَوِّتُونَ ﴿١﴾

وَالَّذِي فِي مَدَى الْأَرْضِ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغِثُ الْحَيَاةَ وَاللَّهُ رَئُوفٌ بِالْعَالَمِينَ ﴿٢﴾

وَالَّذِي فِي الْأَرْضِ فَلَّجًا فَتَسْجُدُ لَهَا وَجَعَلَ فِيهَا أَعْنَابًا وَزَيْتُونَ وَنَخْلًا وَهَدَقَاتٍ وَالْأَلْجُفَّاتِ يَنْسِفُ يَمَافٍ وَأَصْنَعًا وَالْقَمَرُ كُلًّا يَجْرِىٰ رَجْعًا مَّسْكُومًا يَدَبُرُ الْأُمُورَ يُفْصِلُ اللَّيْلَ لَكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُفَوِّتُونَ ﴿٣﴾

وَإِنْ تُحِبُّوا فَتُحِبُّوا قَوْلَهُمْ إِذَا لَمْ يَنْصَرِفُوا

1 क्योंकि वह जानते हैं कि बीज धरती में सड़कर मिल जाता है फिर उस से

कथन है कि जब हम मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या वास्तव में हम नई उत्पत्ति में होंगे? उन्होंने ने ही अपने पालनहार के साथ कफ़्र किया है, तथा उन्हीं के गलों में तौक पड़े होंगे, और वही नरक वाले हैं, जिस में वह सदा रहेंगे।

لَيْسَ خَلْقُ جَدِيدَةٍ أَوْلَىٰكَ أَلَمْ يَكْفُرُوا
بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَطْلَاقُ أَفَمَاقِهِمْ وَأُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠﴾

6. और वह आप से बुराई (यातना) की जल्दी मचा रह है भलाई से पहले। जब कि इन से पहले यातनाएँ आ चुकी है, और वास्तव में आप का पालनहार लोगों को उन के अत्याचार पर क्षमा करने वाला है। तथा निश्चय आप का पालनहार कड़ी यातना देने वाला (भी) है।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالتَّيْمَنَةِ قَبْلَ الْحَسَةِ وَقَدْ
خَلَقْتَ مِنْ قَبْلِهِمُ السَّحَابَ وَرَبُّكَ لَمَّا ذُو
مُعِينٍ لِلنَّاسِ عَلَىٰ غُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ رَبَّكَ
لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾

7. तथा जो काफिर हो गये वह कहने हैं कि आप पर आप के पालनहार की ओर से कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा¹ गया। आप केवल सावधान करने वाले तथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ
رَبِّهِ لَمَّا آتَتْ مُبْتَلًى ذُرِّيَّتَهُ لَقُلْ قَوْمِي هَادُونَ ﴿١٢﴾

8. अल्लाह ही जानता है जो प्रत्येक स्त्री के गर्भ में है तथा गर्भाशय जो कम और अधिक² करते हैं, प्रत्येक चीज की

أَلَمْ يَعْلَمُوا مَا نُخَبِّرُ كُلَّ أَنْفٍ وَمَا يَقْبِضُ
الرَّحْمَتِ وَمَا تُرَادُّ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَ بَيْتِنَا ۖ

पौधा उगता है।

- 1 जिस से स्पष्ट हो जाता कि आप अल्लाह के रसूल हैं।
2 इब्ने उमर (रजियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: गैब (परोक्ष) की तालिकायें पाँच हैं। जिन को केवल अल्लाह ही जानता है: कल की आन अल्लाह ही जानता है और गर्भाशय जो कमी करते हैं उसे अल्लाह ही जानता है। वर्षा कब होगी उसे अल्लाह ही जानता है। और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह किस धरती पर मरेगा। और न अल्लाह के सिवा कोई यह जानता

उस के यहाँ एक निश्चित मात्रा है।

9. वह सब छुपे और खुले प्रत्यक्ष को जानने वाला बड़ा महान् सर्वोच्च है।
10. (उस के लिये) बराबर है तुम में से जो बान चुपके बोले, और जो पुकार कर बोले। तथा कोई रात के अंधेरे में छुपा हो या दिन के उजाले में चल रहा हो।
11. उस (अब्राह) के रखवाले (फरिश्ते) हैं उस के आगे तथा पीछे, जो अब्राह के आदेश से उस की रक्षा कर रहे हैं। बालूब में अब्राह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी दशा न बदल ले। तथा जब अब्राह किसी जाति के साथ बुराई का निश्चय कर ले तो उसे फंसा नहीं जा सकता और न उन का उस (अब्राह) के सिवा कोई सहायक है।
12. वही है जो विद्युत को तुम्हें भय तथा आशा¹ बना कर दिखाता है। और भारी बादलों को पैदा करता है।
13. और कड़क अब्राह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करती है, और फरिश्ते उस के भय से काँपने हैं। वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है। तथा वह अब्राह के बारे में विवाद करते हैं, जब कि उस का

عِزُّ الْغَيْبِ وَالْقَهَادُ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۝

سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَسْرَعَ الْقَوْلَ مَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ

لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ إِلَهَ الْأَنْفِ مَا يَقُولُ حَتَّى يُقَيِّرَ أَمْرًا يَأْتِيهِمْ وَلَهُ أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ وَسْوَئًا لَمَّا تَوَلَّوْا وَهُوَ يُدْرِكُ الْإِنْسَانَ مِنْ دُونِهِ ۝

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ سُوءَ مَا تَكْفُرُونَ وَيُنْزِلُ السَّحَابَ الْثِقَالَ ۝

وَيَسْجُدُ الرَّزْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ جُمُعَةٍ ۝ وَيُرْسِلُ سَافِرَاتٍ فَيُخَيِّبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُهَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِجَالِ ۝

है कि प्रलय कब आयेगी। (सहीह बुखारी 4697)

1 अर्थात् वर्षा होने की आशा।

उपाय बड़ा प्रबल है।¹

14. उसी (अब्राह) को पुकारना सत्य है और जो उस के सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वह उन की प्रार्थना कुछ नहीं सुनते। जैसे कोई अपनी दोनों हथेलियाँ जल की ओर फैलाया हुआ हो, ताकि उस के मुँह में पहुँच जाये, जब कि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं और काफिरों की पुकार व्यर्थ (निष्फल) ही है।

15. और अब्राह ही को सज्दा करना है, चाहे या न चाहे, वह जो आकाशों तथा धरती में है, और उन की परछाइयाँ² भी प्रातः और संध्या³

16. उन से पुछो: आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है? कह दो: अब्राह है। कहो कि क्या तुम ने अब्राह के सिवा उन्हें सहायक बना लिया है जो अपने लिये किसी लाभ का अधिकार नहीं रखते, और न किसी हानि का? उन से कहो क्या अन्धा और देखने वाला बराबर होता है, या अंधेरे और प्रकाश बराबर होने हैं? ⁴ अथवा उन्होंने अब्राह का साझी बना लिया

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْمَعُونَ لَهُمْ يَوْمَئِذٍ إِلَّا كَتَابٍ مِّنْ قَبْلِ يَوْمٍ
الْمَاءِ يَمْسِكُهُ ذَاةٌ وَهَاهُوَ بِمَالِيَةٍ وَمَا دَعَا
الْكَاذِبِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ

فَنَسْجُدُ لَهُ فِي السَّمَوَاتِ وَارْتَضَىٰ طَوْعًا
وَكَرْهًا وَبَدَّلْنَاهُم بِالْعَدُوِّ وَالْإِصْلَاحِ

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مَنْ أَنشَأَ
الْأَشْجَارَ ثُمَّ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ لَّيْسَ لَهُ
بِكَفِيلِهِمْ نَعْمَ وَالْإِصْرَ أَفْئِنْ هُنَّ يَسْتَوِي
الرَّأْيَى وَالْبَصِيرَةُ أَمْ هُنَّ يَسْتَوِي الظُّلُمَةُ
وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا بَيْنَهُمَا مِغْشًاءَ خَالِفِينَ
فَلْيَسْأَلِ الْخَلْقُ عَنهُمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

- 1 अर्थात् जैसे कोई प्यासा पानी की ओर हाथ फैला कर प्रार्थना करे कि मेरे मुँह में आ जा तो न पानी में सुनने की शक्ति है न उस के मुँह तक पहुँचने की। ऐसे ही काफिर, अब्राह के सिवा जिन को पुकारते हैं न उन में सुनने की शक्ति है और न वह उन की सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं।

- 2 अर्थात् सब उस के स्वभाविक नियम के आधीन हैं।

- 3 यहाँ सज्दा करना चाहिये।

- 4 अंधेरे से अभिप्राय कुफ्र के अंधेरे तथा प्रकाश से अभिप्राय इमान का प्रकाश है।

है ऐसों को जिन्होंने अल्लाह के उत्पत्ति करने के समान उत्पत्ति की है, अतः उत्पत्ति का विषय उन पर उलझ गया है? आप कह दें कि अल्लाह ही प्रत्येक चीज का उत्पत्ति करने वाला है,⁽¹⁾ और वही अकेला प्रभुत्वशाली है।

17. उस ने आकाश से जल बरमाया, जिस से बादियाँ (उपत्यकाएँ) अपनी समाई के अनुसार वह पड़ी। फिर (जल की) धारा के ऊपर झाग आ गया। और जिस चीज को वे आभूषण अथवा समान बनाने के लिये अग्नि में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही झाग होता है। इसी प्रकार अल्लाह सत्य तथा असत्य का उदाहरण देता है फिर जो झाग है वह भूख कर ध्वस्त हो जाता है और जो चीज लोगों को लाभ पहुंचाती है, वह धरती में रह जाती है। इसी प्रकार अल्लाह उदाहरण देता² है।

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार की बात मान ली, उन्हीं के लिये भलाई है। और जिन्होंने ने नहीं मानी, तो यदि

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتَالَتْ دَوَابُّهُ
يَخْتَلِفُ أَلْوَانُهَا فَآخَنَسَلُ لَسِيلُ رِيْدٍ أَزْيَا
وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلْيَةٍ
أَوْ مَتَاعٍ سَمَدٌ وَثَلَاثَةُ أَكْشَادٍ يَضْرِبُ اللَّهُ
الْعَصْفَ وَالْبَابِلَ وَذِي الْقُلَيْدِ قَيْدَ هَبْ
جُدَّ لَوْ أَنَّ مَا يَنْفَعُ لَنَا مِنْ شَيْءٍ لَمْ يَكُنْ
فِي الْأَرْضِ كَذِبُ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ

الَّذِينَ آمَنُوا بِالرَّبِّ هُمْ وَآلِهِمْ
يَتَّبِعُونَ آيَاتِهِ لَوْ أَنَّ لَهُمْ قُلُوبًا فَهُمْ لَكَا
يَتَّبِعُونَ آيَاتِهِ لَوْ أَنَّ لَهُمْ قُلُوبًا فَهُمْ لَكَا

1. आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की है वही वास्तविक पूज्य है। और जो स्वयं उत्पत्ति हो वह पूज्य नहीं हो सकता। इस तथ्य को कूर्आन पाक की और भी कई आयतों में प्रस्तुत किया गया है।
2. इस उदाहरण में सत्य और असत्य के बीच संघर्ष को दिखाया गया है कि वही द्वारा जो सत्य उतारा गया है वह वर्षा के समान है। और जो उस से लाभ प्राप्त करते हैं वह नालों के समान हैं। और सत्य के विरोधी सैलाब के झाग के समान हैं जो कुछ देर के लिये उभरता है फिर विलय हो जाता है। दूसरे उदाहरण में सत्य को साने और चांदी के समान बनाया गया है जिसे पिघलाने से मैल उभरता है फिर मैल उड़ता है। इसी प्रकार असत्य विलय हो जाता है और केवल सत्य रह जाता है।

जो कुछ धरती में है, सब उन का हो जाये, और उस के साथ उस के समान और भी, तो वह उसे (अब्राह के दण्ड से बचने के लिये) अर्धदण्ड के रूप में दे देंगे। उन्हीं से कड़ा हिसाब लिया जायेगा, तथा उन का स्थान नरक है। और वह बुरा रहने का स्थान है।

مَعَهُ لَاقَتْ دَوَابَهُ أُولَئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ
وَأُولَئِكَ جَهَنَّمُ وَفِيهَا ذُكِّرُوا

19. तो क्या जो जानता है कि आप के पालनहार की ओर से जो (कुर्आन) आप पर उतारा गया है मन्व्य है, उस के समान है, जो अन्धा है? वास्तव में बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

أَفَمَنْ يَعْلَمُ لَمَّا أُتِيَكَ مِنْ رَبِّكَ أَنْعَمَ لَكَ
هُوَ أَغْنَىٰ إِلَهًا يَتَذَكَّرُ أُولَئِكَ أَلْبَابٌ ۝

20. जो अब्राह से किया बचन¹ पूरा करते हैं और बचन भंग नहीं करते।

الَّذِينَ يُؤْتُونَ بِعَهْدِهِمْ فَلَا يُخْصِفُونَ إِلَهَانِ ۝

21. और उन (संबंधों) को जोड़ने हैं जिन के जोड़ने का अब्राह ने आदेश दिया है, और अपने पालनहार से डरने हैं, तथा बुरे हिसाब से डरते हैं।

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرْتُمْ بِهِ أَنْ يُوصَلَ
وَيُخْلَوْنَ لَهُمْ وَيَخْلَقُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝

22. तथा जिन लोगों ने अपने पालनहार की प्रसन्नता के लिये धैर्य से काम लिया, और नमाज की स्थापना की, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से छुपे और खुले तरीके से दान करते रहे तो वही है जिन के लिये परलोक का घर (स्वर्ग) है।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا النَّعَاءَ وَنَجَاءً وَتَجَرُّوا قَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَذَرُونَ
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ أُولَئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝

23. ऐसे स्थायी स्वर्ग जिन में वे और उन के बाप दादा तथा उनकी पत्नियों और संतान में से जो सदाचारी हों प्रवेश करेंगे, तथा फरिश्ते उन के

جَبَّتْ عَنْهُمْ بَدْخُلُوتُهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ بَنِيهِمْ
وَزَوَّاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمُ الْمَلَائِكَةُ يُدْخِلُونَ عَنْهُمْ مَبْنِ
كُلِّ بَابٍ ۝

पास प्रत्येक द्वार से (स्वागत के लिये)
प्रवेश करेंगे।

24. (वे कहेंगे): तुम पर शान्ति हो, उस धैर्य
के कारण जो तुम ने किया, तो क्या ही
अच्छा है, यह परलोक का घर!

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَاِنَّكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ

25. और जो लोग अब्राहम में किये वचन
को उसे मूढ़ करने के पश्चात्
भग कर देते हैं और अब्राहम ने
जिस मन्थ को जोड़ने का आदेश
दिया¹ है उसे तोड़ते हैं, और धरती
में उपद्रव फैलाने हैं। वही हैं जिन के
लिये धिक्कार है, और जिन के लिये
बुरा आवाम है।

وَالَّذِينَ يَقْضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْكُمْ ثُمَّ يَلُتُونَ
وَيَقْطَعُونَ مَا أَتَوْا بِهِ أَنْ تَوْصَلَ وَيَقْطَعُونَ
الْأَرْضَ أُولَئِكَ لَهُمْ الْعَذَابُ وَلَهُمْ سَوْآتُهُمْ

26. और अब्राहम जिसे चाहे उसे जीविका
फैला कर देता है, और जिसे चाहे
नाप कर देता है। और वह (काफिर)
संसारिक जीवन में मग्न है, तथा
संसारिक जीवन परलोक की अपेक्षा
तनिक लाभ के सामान के सिवा कुछ
भी नहीं है।

أَفَمَنْ يَمْسُطُ الزُّنُوفَ يَشَاءُ وَيَقْطَعُ وَيُقْطَعُ
الَّذِينَ يَمْسُطُ الزُّنُوفَ يَشَاءُ وَيَقْطَعُ وَيُقْطَعُ

27. और जो काफिर हो गये, वह कहने
हैं इस पर इस के पालनहार की ओर
से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी
गयी? (हे नबी!) आप कह दें कि
वास्तव में अब्राहम जिसे चाहे कुपथ
करता है और अपनी ओर उमी
को राह दिखाता है जो उस की ओर
ध्यानमग्न हो।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلَىٰ الْأَرْسِلَ عَلَيْهِمْ مِنْ نَارِهِ
قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ
الَّذِينَ كَفَرُوا

1 हदीस में आया है कि जो व्यक्ति यह चाहना हो कि उस की जीविका अधिक
और आयु लम्बी हो तो वह अपने सबधों के जोड़े। (सहीह बुखारी, 2067 सहीह
मुस्लिम, 2557)

28. (अर्थात् वह) लोग जो ईमान लाये, तथा जिन के दिल अब्राह के स्मरण से संतुष्ट होते हैं। सुन लो! अब्राह के स्मरण ही से दिलों को संतोष होता है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ

29. जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, उन के लिये आनन्द¹, और उत्तम ठिकाना है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَى لَهُمْ وَحَسُنَ بَابُهُ

30. इसी प्रकार हम ने आप को एक समुदाय में जिस से पहले बहुत से समुदाय गुजर चुके हैं, रसूल बना कर भेजा है, ताकि आप उन को वह संदेश सुनाये जो हम ने आप की ओर वही द्वारा भेजा है, और वह अत्यंत कृपाशील को अस्वीकार करते हैं? आप कह दें: वही मेरा पालनहार है, कोई पूज्य नहीं परन्तु वही। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर मुझे जाना है।

كَذَلِكَ أَرْسَلْنَا فِي آيَاتِنَا قَدْ خَلَلْنَا مِنْ قَبْلِهِ لِسَمِ الْأَنْبِيَاءِ الَّذِينَ آمَنُوا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَكَمْ يَكْفُرُونَ بِالْوَحْيِ قُلْ هُوَ فِي آيَاتِهِ الْآخِرَةِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِعِي

31. यदि कोई ऐसा कर्त्तान होता जिस से पर्वत खिसका² दिये जाने, या धरती खण्ड खण्ड कर दी जाती या इस के द्वारा मुर्दों से बात की जाती (तो भी वह ईमान नहीं लाते)। बात

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُلِعَتْ بِهِ الشَّجَرُ أَوْ كُفِّرَتْ بِهِ السَّيِّئَاتُ قُلْ الْإِنشَاءُ لِلَّهِ إِنَّهُ يَفْقَهُ مَا تُخْفُونَ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ لَوْ كُنَّا رَبَّهُ لَهَدَيْنَا السَّيِّئَاتِ قُلْ الْإِنشَاءُ لِلَّهِ إِنَّهُ يَفْقَهُ مَا تُخْفُونَ

1 यहाँ "तुब्रा" शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस का शाब्दिक अर्थ: सुख और सम्पन्नता है। कुछ भाष्यकारों ने इसे स्वर्ग का एक वृक्ष बताया है जिस का साया बड़ा आनन्ददायक होता।

2 मक्का के काफिर आप से यह मांग करते थे कि यदि आप नबी है तो हमारे बाप दादा को जीवित कर दें। ताकि हम उन से बात करें। या मक्का के पर्वतों को खिसका दें। कुछ मुसलमानों के दिलों में भी यह इच्छा हुई कि ऐसा हो जाना है तो संभव है कि वह ईमान ले आये। उसी पर यह आयत उतरी। (देखिये फत्हुल बयान, भाष्य सूरह रअद)

यह है कि सब अधिकार अल्लाह ही को है तो क्या जो ईमान लाये हैं, वह निराश नहीं हुये कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधी राह पर कर देता। और काफिरों को उन के कर्तुत के कारण बराबर आपदा पहुँचती रहेगी अथवा उन के घर के समीप उतरती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन¹ आ जाये, और अल्लाह, वचन का विरुद्ध नहीं करता।

أَوْفَىٰ قَوْلُهُمْ قَوْلِ اللَّهِ وَوَعْدُهُمْ لَكَ
لَا تُخِيفُ الْيَاقُونَ

32. और आप से पहले भी बहुत से रसूलों का परिहास किया गया है, तो हम ने काफिरों को अवसर दिया। फिर उन्हें धर लिया, तो मेरी यातना कैसी रही?

وَلَقَدْ نَسَحْنَا لِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَكَانُوا يُهَازِلُونَ
كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا لَكُمْ حُكْمًا فَكُنْتُمْ لَهَا كَافِرِينَ

33. तो क्या जो प्रत्येक प्राणी के कर्तुत से अवगत है, और उन्हों ने (उसे) अल्लाह का साझी बना लिया है, आप कहिये कि उन के नाम बताओ। या तुम उसे उस चीज से मर्चिन कर रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता या ओछी धान² करते हो? बल्कि काफिरों के लिये उन के छल सुशोभित बना दिये गये हैं और सीधी राह से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह कुपय कर दे तो उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं।

أَفَمَن هُوَ قَلِيلٌ مِّنْ كُلِّ نَفْسٍ يَمْلِكُ أَن يَبْسُطَ وَجْهَهُ
لَهُمْ أَوْ يَكْبِتُ وَهُمْ يُكْفَرُونَ أَلَيْسَ لَـهُمُ
عِندَ رَبِّهِمْ آلَاءٌ كَثِيرَةٌ أَمْ يَكْبِرُونَ
عَنِ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَمْ يَكْبِرُونَ
عَنِ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَمْ يَكْبِرُونَ
عَنِ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

34. उन्हीं के लिये यातना है संसारिक जीवन में। और निःसन्देह परलोक की यातना अधिक कड़ी है। और उन को

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ
أَشَدُّ وَأَمَّا لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ

1 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का वचन है।

2 अर्थात् निर्मूल और निराधारा।

अब्राह से कोई बचाने वाला नहीं।

35. उस स्वर्ग का उदाहरण जिस का वचन आज्ञाकारियों का दिया गया है उस में नहरें बहती हैं, उस के फल सतत हैं, और उस की छाया। यह उन का परिणाम है जो अब्राह से डरे, और काफिरों का परिणाम नरक है।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي دُعِيَ الْمُتَّقُونَ لَمَّا قَامُوا مِنْ عَذَابِهَا
الْأَنْهَارُ كُلُّهَا دَائِمٌ وَجِبَالُهَا يُتْرَكُ عَقَبَى الَّذِينَ
اتَّقَوْا وَعَقَبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ

36. (हे नबी!) जिन को हम ने पुस्तक दी है वह उस (कुर्आन) से प्रसन्न हो रहे हैं¹ जो आप की ओर उतारा गया है। और सम्प्रदायों में कुछ ऐसे भी हैं, जो नहीं मानते।² आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि अब्राह की इबादत (बंदना) करूँ, और उस का साझी न बनाऊँ। मैं उमी की ओर बुलाता हूँ और उमी की ओर मुझे जाना है।³

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنزِلَ
إِلَيْكَ وَبِالنَّارِ الَّتِي يُكْرَهُ يُنْفَضُ قُلُوبُهُمْ
أَنَّهُمْ أَنْ أَلْفَهُمُ اللَّهُ وَالْمَلِكُ بِهِ إِلَيْهِ أَدْعَوُ
وَالْيَهُ مَا ب

37. और इसी प्रकार हम ने इस को अर्वा आदेश के रूप में उतारा है⁴ और यदि आप उन की आकांक्षाओं का अनुसरण करेंगे, इसके पश्चात् कि आप के पास जान आ गया, तो अब्राह से आप का कोई सहायक और रक्षक न होगा।

وَلَدَيْكَ رُكْنٌ حَكْمًا عَرَبِيًّا وَلَيْسَ اتَّجَعَتْ
أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَهُ مِنَ الْبُيُوتِ مَا لَكَ مِنَ
اللَّهِ مِنْ دَرَجَةٍ وَلَا وَاقٍ

1 अर्थात् वह यहूदी इसाई और मूर्तिपूजक जो इस्लाम लाये।

2 अर्थात् जो अब तक मुसलमान नहीं हुये।

3 अर्थात् कोई इमान लाये या न लाये, मैं तो कदापि किसी को उस का साझी नहीं बना सकता।

4 ताकि वह बहाना न करे कि हम कुर्आन को समझ नहीं सके इसलिये कि सारे नवियों पर जो पुस्तकें उतरी वह उन्हीं की भाषाओं में थी

38. और हम ने आप से पहले बहुत से रसूलों को भेजा है, और उन की पत्नियाँ तथा बाल बच्चे¹ बनाये। किसी रसूल के वस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति बिना कोई निशानी ला दे और हर वचन के लिये एक निर्धारित समय है।²

39. वह जो (आदेश) चाहे मिटा देता है और जो चाहे शेष (साबित) रखता है। उसी के पास मूल³ पुस्तक है।

40. और (हे नबी!) यदि हम आप को उस में से कुछ दिखा दें जिस की धमकी हम ने उन (काफिरों) को दी है अथवा आप को (पहने ही) मौत दे दें, तो आप का काम उपदेश पहुँचा देना है। और हिमाक लेना हमारा काम है।

41. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से कम करने⁴ जा रहे हैं और अल्लाह ही आदेश देता है कोई उस के आदेश का प्रत्यालोचन करने वाला नहीं, और वह शीघ्र हिमाक लेने वाला है।

42. तथा उस से पहले (भी) लोगों ने रसूलों के साथ षडयंत्र रचा, और षडयंत्र (को निष्फल करने) का सब

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا لِّمَنْ أَنْزَلْنَا الْقُرْآنَ لِيُخَوِّفَهُمْ وَلِيُبَيِّنَ لَهُمْ سَبِيلَ الْإِسْلَامِ وَلِيُخَوِّفَهُمْ وَلِيُبَيِّنَ لَهُمْ سَبِيلَ الْإِسْلَامِ وَلِيُخَوِّفَهُمْ وَلِيُبَيِّنَ لَهُمْ سَبِيلَ الْإِسْلَامِ

يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ وَيَعْلَمُ مَا تُكْتُمُونَ وَيَعْلَمُ مَا تُعْلِنُونَ وَيَعْلَمُ مَا تُكْتُمُونَ وَيَعْلَمُ مَا تُعْلِنُونَ

وَلَنْ نَجْعَلَ لِمَنْ يَكْفُرْ سَبِيلًا يَتَّبِعُ بَعْضُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ سَبِيلَ الْإِسْلَامِ وَلَنْ نَجْعَلَ لِمَنْ يَكْفُرْ سَبِيلًا يَتَّبِعُ بَعْضُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ سَبِيلَ الْإِسْلَامِ

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا وَأَنَّا نَبْنِئُ السَّيْلَانَ بَيْنَ الْمَدِينَتَيْنِ وَمَنْ يُكْفِرْ أَفْوَاجًا وَيَكْفُرْ أَفْوَاجًا وَيَكْفُرْ أَفْوَاجًا

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَبَقِيَ الْكُفْرُ وَبَقِيَ الْكُفْرُ وَبَقِيَ الْكُفْرُ وَبَقِيَ الْكُفْرُ وَبَقِيَ الْكُفْرُ وَبَقِيَ الْكُفْرُ

1 अर्थात् वह मनुष्य थे, नूर या फरिश्ते नहीं।

2 अर्थात् अल्लाह का वादा अपने समय पर पूरा हो कर रहेगा उस में देर सवेर नहीं होगी।

3 अर्थात् (लौहे मस्फूज) जिस में सब कुछ अंकित है।

4 अर्थात् मुसलमानों की विजय द्वारा काफिरों के देश में कमी करने जा रहे हैं।

अधिकार तो अल्लाह को है, वह जो कुछ प्रत्येक प्राणी करता है, उसे जानता है। और काफिरों को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि परलोक का घर किस के लिये है।

الْكَافِرُ لِمَنْ عَشَى الدَّارِ

43. (हे नबी!) जो काफिर हो गये, वे कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुये नहीं हैं। आप कह दें: मेरे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही तथा उन की गवाही जिन्हें किताब का ज्ञान दिया गया काफी है।¹

وَيَقُولُ الْكَافِرُ كَذِبًا أَتَنْتَ رَسُولًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهِدُوا بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ وَعَدَدَهُ يَوْمَ
الْكِتَابِ

1 अर्थात् उन अहले किताब (यहूदी और ईसाई) की जिन को अपनी पुस्तकों से नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आने की शुभसूचना का ज्ञान हुआ तो वह इस्लाम ले आये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम तथा नजाशी (हब्शा देश का राजा) और तमीम दारी इत्यादि। और आप के रसूल होने की गवाही देने हैं।

सूरह इब्राहीम - 14

سورة ابراهيم

सूरह इब्राहीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 52 आयते हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 35 में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ का वर्णन है इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में रसूल तथा कुर्आन के भेजने का कारण बताया गया है और नबियों के कुछ एतिहास प्रस्तुत किये गये हैं। जिन से रसूलों के विरोधियों के दुष्परिणाम सामने आते हैं। और परलोक में भी उस दण्ड की झलक दिखायी गई है जिस से रोये खड़े हो जाते हैं।
- इस में बताया गया है कि ईमान वाले कैसे सफल होंगे तथा काफिरों को अब्राह के उपकार का आभारी न होने पर सावधान करने के साथ ही ईमान वालों को अब्राह का कृतज्ञ होने की नीति बतायी गयी है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कि उस एतिहासिक प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने ने अपनी सन्तति को शिर्क से सुरक्षित रखने के लिये की थी किन्तु आज उन की सन्तान जो कुछ कर रही है वह उन की दुआ के सर्वथा विपरीत है।
- और अन्त में प्रलय और उस की यातना का भ्याव चित्रण किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ लाम, रा। यह (कुर्आन) एक पुस्तक है जिसे हम ने आप की ओर अवतरित किया है, ताकि आप लोगों को अंधेरी से निकाल कर प्रकाश की ओर लाये, उन के पालनहार की अनुमति से, उस की राह की ओर जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है।

الرَّسُوبُ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فِيهِ آيَاتٌ لِلَّذِينَ
الَّذِينَ يَتْلُونَ الْقُرْآنَ يَتَذَكَّرُونَ فِيهَا
الْعِزَّةُ الْكَبِيرَةُ

2. अल्लाह की ओर। जिम के अधिकार में आकाश और धरती का सब कुछ है। तथा काफिरों के लिये कड़ी यातना के कारण विनाश है।

3. जो समारिक जीवन को परलोक पर प्रधानता देते हैं, और अब्राह की डगर (इस्लाम) से रोकने हैं और उसे कुटिल बनाना चाहते हैं, वही कुपथ में दूर निकल गये हैं।

4. और हम ने किसी (भी) रसूल को उस की जाति की भाया ही में भेजा, ताकि वह उन के लिये बात उजागर कर दे। फिर अब्राह जिसे चाहता है कुपथ करता है और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और वही प्रभुत्वशाली और हिकमत वाला है।

5. और हम ने मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ भेजा, ताकि अपनी जाति को अन्धेरो से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें। और उन्हें अल्लाह के दिनों (पुरस्कार और यातना) का स्मरण कराओं। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं, प्रत्येक अति सहनशील कृतज्ञ के लिये।

6. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा अपने ऊपर अब्राह के पुरस्कार को याद करो, जब उस ने तुम को फिराओनियों से मुक्त किया, जो तुम को घोर यातना दे रहे थे। और तुम्हारे पुत्रों को वध कर रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित

الْبَلَاءِ لِيَأْتِيَ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَرَبُّ
الْعَالَمِينَ مِنْ عَذَابِهِ مُبِينٌ

وَالَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ حَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَمَتَوَلَّاهُمْ مِمَّا
أَوْفَيْنَاهُمْ مِنْ مَتْنِ بَعْدِهِ

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رُسُلٍ إِلَّا يَكْتُبُ فِي قُلُوبِهِمْ
لَقَدْ قَبَضْنَا إِلَهَ مَنْ يَشَاءُ وَنَهَيْتُ مَنْ يَشَاءُ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِنَا إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ

وَذَكَرَ مُوسَى بِقَوْمِهِ إِذْ كُفِّرُوا الْبَغْيَ عَنْ اللَّهِ
فَلَمَّا كَفَرُوا بِحُكْمِهِمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ
فَيَسْأَلُونَكَ عَنْهُمْ ائْتَدِ بِوَيْدٍ بِحُكْمٍ
أَيُّهَا الَّذِينَ يُسْتَعْتَبُونَ فَسَاءَ ثَوْرِي ذَلِكَ بَلَاءٌ
مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ

रहने देने¹ थे, और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से एक महान् परीक्षा थी।

7. तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोमणा कर दी कि यदि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूंगा। तथा यदि अकृतज्ञ रहोगे तो वास्तव में मेरी यातना बहुत कड़ी है।

8. और मूसा ने कहा: यदि तुम और सभी लोग जो धरती में है कफ़र करे, तो भी अल्लाह निरीह तथा² सराहा हुआ है।

9. क्या तुम्हारे पास उन का समाचार नहीं आया जो तुम से पहले थे: नूह तथा आद और समूद की जाति का और जो उन के पश्चात् हुये जिन को अल्लाह ही जानता है? उन के पास उन के रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लाये तो उन्होंने अपने हाथ अपने मुखों में दे³ लिये, और कह दिया कि हम उस संदेश को नहीं मानते, जिस के साथ तुम भेजे गये हो। और वास्तव में उस के धारे में संदेह में है जिस की ओर हमें बुला रहे हो (तथा) द्विधा में है।

وَاذْكُرْ كُنْ رَبِّكَ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ
وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي
الْأَرْضِ جَمِيعٌ فَأَنْتَ اللَّهُ لَعَلَّكَ تَحْسِنُ ۝

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُوءُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمُ
نُوحٍ وَإِسْمَاعِيلَ وَالْأَنْبِيَاءُ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَلَا يَعْزُبُ عَنْهُمْ إِلَّا اللَّهُ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ قَوْمًا لَا يَرْجِعُونَ إِلَّا فِي
أَفْهَامِهِمْ وَقَالُوا لَا تَنْفِرْنَا فِي
أَمْرٍ نَأْمُرُ بِالسُّلُوكِ وَالْإِسْلَامِ
بِمَا نَحْنُ بِمُتَّبِعِينَ ۝

1. ताकि उन के पुरुषों की अधिक संख्या से अपने राज्य के लिये भय न हो और उन की स्त्रियों का अपमान करें।
2. हद्दीस में आया है कि अल्लाह तआला फरमाता है: हे मेरे बंदो! यदि तुम्हारे अगले-पिछले तथा सब मनुष्य और जिन ससार के सब से बुरे मनुष्य के बराबर हो जायें तो भी मेरे राज्य में कोई कमी नहीं आयेगी। (सहीह मुस्लिम 2577)
3. यह ऐसी ही भाषा शैली है, जिसे हम अपनी भाषा में बोलते हैं कि कानों पर हाथ रख लिया और दोनों से उंगली दबा ली।

10. उन के रसूलों ने कहा क्या उस अल्लाह के बारे में सदिह है, जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। वह तुम्हें बुला¹ रहा है ताकि तुम्हारे पाप क्षमा कर दे, और तुम्हें एक निर्धारित² अवधि तक अवसर दे उन्होंने ने कहा तुम तो हमारे ही जैसे एक मानव पुरुष हो, तुम चाहते हो कि हमें उस से रोक दो, जिस की पूजा हमारे बाप-दादा कर रहे थे। तुम हमारे पाम कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।

11. उन से उन के रसूलों ने कहा हम तुम्हारे जैसे मानव-पुरुष ही हैं, परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे उपकार करना है, और हमारे बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्रमाण ला दे। और अल्लाह ही पर इमान वालों को भरोसा करना चाहिये।

12. और क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें जब कि उस ने हमें हमारी राहें दर्शा दी हैं और हम अवश्य उस दुख को सहन करेंगे, जो तुम हमें दोगे, और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को निर्भर रहना चाहिये।

13. और काफिरों ने अपने रसूलों से कहा: हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे अथवा तुम्हें हमारे पंथ में आना

قَالَتْ رُسُلُهُمْ إِنِّي إلهٌ شَكَّ فَاطِرُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ لِيُبْعِثَ لَكُمْ مِنْ
ذُرِّيَّتِكُمْ وَيُؤَيِّرَكُمْ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوا
إِنْ أُنْزِلَ إِلَيْنَا مِنْ سَمَاءٍ مِّنْ أَنْ
تَقُصِّدُوا مِنَّا عَذَابًا كَانَ يَعْتَبِدُ آبَاؤُنَا
فَاتَّبَعْنَا سُلْطَانَ مِّمَّنْ ۖ

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنَّا إلهٌ شَكَّ وَلَكِنْ
لِلَّهِ يَمُنُّ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَنَا
أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِهَاطِلٍ إِلَّا بِرِزْقٍ مِّنْ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ
تَقَيُّمُوكُمْ لِمُؤْمِنُونَ ۖ

وَمَا لَنَا إِلَّا تَتَوَكَّلُ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَى سَبِيلًا
وَلَنُصْبِرَنَّ عَلَى مَا آذَيْتُمُونَا وَعَلَى اللَّهِ
تَقَيُّمُوكُمْ الْمُؤْمِنُونَ ۖ

وَقَالَ الْكَافِرُونَ لِمَنْ رُسُلُهُمْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ
أَرْضِينَا وَلِنَعْبُدَنَّ فِي مِلَّةِنَا مَا وَدَّعَ الْيَهُودُ رَبَّهُمْ

1 अपनी आज्ञा पालन की ओर।

2 अर्थात् मरण तक संसारिक यात्रा से सुरक्षित रखे। (कूर्तुबी)

होगा। तो उन के पालनहार ने उन की ओर वही की कि हम अवश्य अत्याचारियों का विनाश कर देंगे।

لَا تَهْدِيكَ الْغَافِلِينَ ۝

14. और तुम्हें उन के पश्चात् धरती में बसा देंगे, यह उस के लिये है, जो मेरे महिमा से खड़े होने से डरा, तथा मेरी चेतावनी से डरा।

وَلَنَسْخُكُنَّ الْأَرْضَ مِن تَحْتِهِمْ ذَٰلِكَ بِمَن خَافَ مَعَافًى وَخَافَ عَذِيبَ ۝

15. और उन (रसूलों) ने विजय की प्रार्थना की, तो सभी उद्दंड विरोधी असफल हो गये।

وَأَسْتَغْفِرُوا عَذَابَ كُلِّ خَبِيرٍ ۝

16. उस के आगे नरक है और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा।

مِن دَرَاءٍ جَهَنَّمَ يَسْقَىٰ مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ ۝

17. वह उसे थोड़ा-थोड़ा गले में उतारेंगा, मगर उतार नहीं पायेगा। और उस के पास प्रत्येक स्थान में मौन आयेगी जब कि वह मरेगा नहीं। और उस के आगे भीषण यातना होगी।

يَجْعَلُهُ وَكَذَٰلِكَ يُبَيِّنُهَا وَيَبَيِّنُهَا لِمَنْ يَشَاءُ مَكَايِدَ وَمَا هُوَ بِمُبَيِّنٍ ۝

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार के साथ कफ़ किया उन के कर्म उस राख के समान हैं, जिसे आंधी के दिन की प्रचण्ड वायु ने उड़ा दिया हो। यह लोग अपने किये में से कुछ भी नहीं पा सकेंगे, यही (सत्य में) दूर का कुपथ है।

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَمْثَلُ الْهَرَمِ كَرْدًا يَشْتَدُّ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَالَمٍ لَا يَقْدِرُونَ وَلَا يَسْتَوُونَ ۝

19. क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाये, और नयी उत्पत्ति ला दे।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۝

20. और वह अल्लाह पर कठिन नहीं है।

وَمَا دَلِيلُكَ عَلَى اللَّهِ بِغَيْرِ ۝

1 अर्थात् संसार में मेरी महिमा का विचार कर के सदाचार किया।

21. और सब अल्लाह के सामने खुल कर¹ आ जायेंगे, तो निर्धन लोग उन से कहेंगे जो बड़े धन रहे थे कि हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातना से बचाने के लिये हमारे कुछ काम आ सकोगे? वे कहेंगे: यदि अल्लाह ने हमें मार्ग दर्शन दिया होता तो हम अवश्य तुम्हें मार्ग दर्शन दिखा देते। अब तो समान है, चाहे हम अधीर हों, या धैर्य से काम ले, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।

22. और शैतान कहेंगा, जब निर्णय कर दिया² जायेगा: वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें सत्य वचन दिया था, और मैं ने तुम्हें वचन दिया तो अपना वचन भंग कर दिया और मेरा तुम पर कोई दबाव नहीं था परन्तु यह कि मैं ने तुम को (अपनी ओर) बुलाया, और तुम ने मेरी बात स्वीकार कर ली। अतः मेरी निन्दा न करो, स्वयं अपनी निन्दा करो, न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ, और न तुम मेरी सहायता कर सकते हो। वास्तव में मैं ने उसे अस्वीकार कर दिया जो इस से पहले³ तुम ने मुझे अल्लाह का साझी बनाया था। निस्सन्देह अत्याचारियों के लिये दुःख दायी यातना है।

23. और जो ईमान लाये, और सदाचार

وَمَنْ لَّدُنَّا جَمِيعٌ فَمَا تَتْلُو مِنْهُ لِيُتَذَكَّرَ
اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَمُتَّبِعِينَ لَقَدْ أَنشَأُوا مِن
عِثَابِنَا غَنَابًا وَنُفْرًا مِّنْ شَرِّ قَوْمٍ لَّوْ هَدَانَا
اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكَ أَمْ يَصْرُوكَ
مَالًا مِّنْ يَّحْيِيهِمْ

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ
وَعْدًا حَقًّا وَعْدتُكُمْ وَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي
عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنِّي دَعَوْتُكُمْ فَأَسْتَجِبْتُمْ
لِي فَلَوْلَا تِلْكَ آيَاتِي وَلَوْلَا تَفْسُؤُكُمْ إِنِّي
مُضْطَرِكُمْ وَيَا آدَمُ قُمْ عَلَى هَٰذِهِ إِنَّكَ أَقْرَبُ
أَشْرَافٍ مِّنْ قَبْلِ إِنَّ الْكَافِرِينَ عَلَيْهِمُ
عَذَابٌ أَلِيمٌ

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी समाधियों से निकल कर।

2 स्वर्ग और नरक के योग्य का निर्णय कर दिया जायेगा।

3 संसार में।

करते रहे, उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दिया जायेगा जिन में नहरें बहती होंगी। वह अपने पालनहार की अनुमति से उस में सदा रहने वाले होंगे, और उस में उन का स्वागत यह होगा तुम पर शान्ति हो।

يَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ يُحِبُّونَ ۝

24. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अब्राह ने कर्निमा तय्येबा¹ (पवित्र शब्द) का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष से दिया है, जिस की जड़ (भूमि में) सुदृढ़ स्थित है और उस की शाखा आकाश में है?

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝

25. वह अपने पालनहार की अनुमति से प्रत्येक समय फल दे रहा है। और अब्राह लोगों को उदाहरण दे रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

ثَوَابُ كُلِّ جَنٍّ بِإِذْنِ رَبِّهَا وَتَضْرِبُ لَهَا الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

26. और बुरी² बात का उदाहरण एक बुरे वृक्ष जैसा है, जिसे धरती के ऊपर से उखाड़ दिया गया हो, जिस के लिये कोई स्थिरता नहीं है।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝

1 (कर्निमा तय्येबा) से अभिप्राय "ला इलाहा इल्लाह" है। जो इस्लाम का धर्म मंत्र है। इस का अर्थ यह है कि अब्राह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है और यही एकेश्वरवाद का मूलधार है। अब्दुल्ला बिन उमर (राजियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आप ने कहा: मुझे ऐसा वृक्ष बताओ जो मुसलमान के समान होता है। जिस का पत्ता नहीं गिरना तथा प्रत्येक समय अपना फल दिया करता है? इब्ने उमर ने कहा: मेरे मन में यह बात आयी कि वह खजूर का वृक्ष है। और अबू बक्र तथा उमर को देखा कि बोल नहीं रहे हैं इसलिये मैं ने भी बोलना अच्छा नहीं समझा जब वे कुछ नहीं बोले तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: वह खजूर का वृक्ष है (संक्षिप्त अनुवाद के साथ, सहीह बुखारी: 4698, सहीह मुस्लिम 2811)

2 अर्थात् शिर्क तथा मिश्रणवाद की बात।

27. अब्राहम ईमान वालों को स्थिर¹ कथन के सहारे लोक तथा परलोक में स्थिरता प्रदान करता है, तथा अत्याचारियों को कुपथ कर देता है और अब्राहम जो चाहता है, करता है।

28. क्या आप ने उन्हें² नहीं देखा जिन्होंने अब्राहम के अनुग्रह को कुफ़्र से बदल दिया, और अपनी जान को विनाश के घर में उतार दिया।

29. (अर्थात्) नरक में, जिस में वह झोंके जायेंगे और वह रहने का घुरा स्थान है।

30. और उन्होंने ने अब्राहम के साझी बना लिये, ताकि उस की राह (मन्थर्म) में कुपथ कर दें। आप कह दें कि तानिक आनन्द ले लो, फिर तुम्हें नरक की ओर ही जाना है।

31. (हे नबी!) मेरे उन भक्तों से कह दो जो ईमान लाये हैं, कि नमाज की स्थापना करें और उस में से जो हम ने प्रदान किया है, छुपे और खुले तरीके से दान करें उस दिन के आने से पहले जिस में न कोई क्रय विक्रय

يُخَيِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مَثْوًى الْقَوْلِ الثَّانِي فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الضَّالِّينَ وَيَعْلَمُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۝

الَّذِينَ آمَنُوا بِهِمْ يُضِلُّوا يَضِلُّوا اللَّهُ وَلَهُمْ دَارُ الْآخِرَةِ ۝

جَهَنَّمَ يَصْنَعُونَ وَيُضِلُّ الْقَرَارِ ۝

وَجَعَلُوا لَهُمْ مَثْوًى دَارِ الْآخِرَةِ عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ تَسْتَغْفِرُونَ لَهُمْ مَعْزِلَةً مِنَ النَّارِ ۝

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيَمْضُوا مِمَّا دَرَسُوا لَهُمْ مَسْرًا وَمَا كَيْفَ يَتَّقُونَ أَنْ يَأْتِيَنَّهُمْ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۝

1 स्थित तथा दृढ़ कथन से अभिप्रेत "ला इलाहा इल्लाह" है। (कूर्तजी)

बराअ बिन आजीब रजिअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप ने कहा मुसलमान से जब कब्र में प्रश्न किया जाता है, तो वह "ला इलाहा इल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" की गवाही देता है। अर्थात् अब्राहम के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब्राहम के रसूल हैं। इसी के बारे में यह आयत है। (सहीह बुखारी: 4699)

2 अर्थात् मक्का के मुशरिक, जिन्होंने ने आप का विरोध किया। (देखिये: सहीह बुखारी: 4700)

होगा, और न कोई मैत्री।

32. और अल्लाह वही है, जिस ने तुम्हारे लिये आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की और आकाश से जल बरसाया फिर उस से तुम्हारी जीविका के लिये अनेक प्रकार के फल निकाले। और नौका को तुम्हारे बश में किया, ताकि सागर में उस के आदेश से चले, और नदियों को तुम्हारे लिये बशवर्ती किया।

33. तथा तुम्हारे लिये सूर्य और चांद को काम में लगाया जो दोनों निरन्तर चल रहे हैं और तुम्हारे लिये रात्रि और दिवस को बश में¹ कर दिया।

34. और तुम्हें उस सब में से कुछ दिया, जो तुम ने माँगा।² और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अन्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है।

35. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने प्रार्थना की हे मेरे पालनहार! इस नगर (मक्का) को शान्ति का नगर बना दे, और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

36. मेरे पालनहार! इन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को कुपथ किया है, अतः जो

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاتَخَرَقَ بِهِ مِنَ
الشَّجَرِ بِرِزْقٍ قَالُوا وَسَخَّرَ اللَّهُ لَكُمْ فِي
الْبَصِيرَةِ يَا أُمَمٌ أَلَسْخَرَكُمْ لِأَتَمُورِكُمْ

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ وَسَخَّرَ
لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

وَأَنزَلْنَا مِنْ كُلِّ مَاءٍ شَجَرًا فَإِنْ تَعَدُّوا نِعْمَتَ
اللَّهِ لَا حُسْبَ لَهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ذَلِيلٌ

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ
أَمِنًا وَاجْعَلْهُ وَبْنِي أَنْ تَعْبُدَ لِمَا صَنَعُوا

رَبِّ إِنَّمَا أَصْلَحَ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ

1 बश में करने का अर्थ यह है कि अल्लाह ने इन के ऐसे नियम बना दिये हैं, जिन के कारण यह मानव के लिये लाभदायक हो सकें।

2 अर्थात् तुम्हारी प्रत्येक प्राकृतिक माँग पूरी की, और तुम्हारे जीवन की आवश्यकता के सभी संसाधनों की व्यवस्था कर दी।

मेरा अनुयायी हो, वही मेरा है। और जो मेरी अवैज्ञा करे, तो वास्तव में तू अति क्षमाशील दयावान् है।

فَمَنْ شِيعَتِي فَإِنَّهُ مِنِّي أَوْ مَنْ وَعَدَكُ فَقَدْ وَاعِدْتُ ۝

37. हमारे पालनहार! मैं ने अपनी कुछ संतान मरुस्थल की एक वादी (उपत्यका) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास बसा दी है, ताकि वह नमाज की स्थापना करे। अन् लोगों के दिलों को उन की ओर आकर्षित कर दे, और उन्हें जीविका प्रदान कर, ताकि वह कृन्तन हों।

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ۝

38. हमारे पालनहार! तू जानता है, जो हम छुपाते और जो व्यक्त करते हैं। और अब्राह से कुछ छुपा नहीं रहना, धरती में और न आकाशों में।

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا يُعْضِرُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝

39. सब प्रशंसा उस अब्राह के लिये है जिस ने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माइल और इस्हाक प्रदान किये। वास्तव में मेरा पालनहार प्रार्थना अवश्य सुनने वाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعٌ لِدُعَائِهِ ۝

40. मेरे पालनहार! मुझे नमाज की स्थापना करने वाला बना दे, तथा मेरी संतान को। हे मेरे पालनहार! और मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝

41. हे हमारे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे, तथा मेरे माना पिता और इमान वालों को जिस दिन हिमाव लिया जायेगा।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝

42. और तुम कदापि अब्राह को उस से अचेत न समझो जो अत्याचारी कर

وَلَا تَحْسَبْهُ اللَّهُ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ

रहे हैं। वह तो उन्हें उस¹ दिन के लिये टाल रहा है, जिस दिन आँखें खुली रह जायेंगी।

الْقَرِيعُونَ وَاسْمُهُمْ يَوْمَ تَشْأَلُ فِيهِمْ رَابِعًا

43. वह दौड़ते हुये अपने सिर ऊपर किये हुये होंगे, उन की आँखें उन की ओर नहीं फिरेगी और उन के दिल गिरे² हुये होंगे

مُضْمِرِينَ مُقْبِرِينَ رُءُوسُهُمْ لَا يَرَوْنَ
لَهُمْ مَطَرُهَامْ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَاتٍ

44. (हे नबी!) आप लोगों को उस दिन से डरा दें, जब उन पर यातना आ जायेगी तो अत्याचारी कहेंगे हमारे पालनहार! हमें कुछ समय तक अवसर दे, हम तेरी बात (आमंत्रण) स्वीकार कर लेंगे, और रसूलों का अनुसरण करेंगे, क्या तुम वही नहीं हो जो इस से पहले शपथ ले रहे थे कि हमारा पतन होना ही नहीं है?

وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ
الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ أَجْلِ قُرْبَةٍ
جُمُعٍ وَغُرُبَتٍ وَنَشِيرِ الرَّسُلِ الْاَوَّلِينَ
فَقَسَمُوا مِن قَبْلِ الْاٰلَمِينَ نَدَالٍ

45. जब कि तुम उन्हीं की वस्तियों में बसे हो, जिन्होंने ने अपने ऊपर अत्याचार किया, और तुम्हारे लिये उजागर हो गया है कि हम ने उन के साथ क्या किया? और हम ने तुम्हें बहुत से उदाहरण भी दिये हैं।

وَمَا كُنْتُمْ فِي مَسْكِنِ الْاٰلَمِينَ ظَلَمُوا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ
لَهُمْ نَبِيٌّ فَلَمَّا جَاءَهُمْ وَفَعَلْنَا لَهُمُ الْاَمْثَالَ

46. और उन्होंने ने अपना षड्यंत्र रच लिया तथा उन का षड्यंत्र अल्लाह के पास³ है और उन का षड्यंत्र ऐसा नहीं था कि उस से पर्वत टल जाये।

وَقَدْ تَكْرَهُوا مَكْرَهُمْ وَعَيْنُهُمْ كَذِبَةٌ فَلَمَّا
تَكْرَهُوا لِمَكْرُومٍ مِنْهُ لِيَحِلَّ

1 अर्थात् प्रलय के दिन के लिये।

2 यहाँ अरबी भाषा का शब्द "हवाअ" प्रयुक्त हुआ है। जिस का एक अर्थ शून्य (खाली), अर्थात् भय के कारण उसे अपनी सुध न होगी।

3 अर्थात् अल्लाह उस को निष्फल करना जानता है।

47. अतः कदापि यह न समझे कि अल्लाह अपने रसूलों से किया वचन भंग करने वाला है, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।

48. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से तथा आकाश बदल दिये जायेंगे, और सब अल्लाह के समक्ष¹ उपस्थित होंगे, जो अकेला प्रभुत्वशाली है।

49. और आप उस दिन अपराधियों को जंजीरों में जकड़े हुये देखेंगे।

50. उन के वस्त्र तारकोल के होंगे, और उन के मुखों पर अग्नि छापी होगी।

51. ताकि अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उस के किये का बदला दे। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिमाय लेने वाला है।

52. यह मनुष्यों के लिये एक संदेश है, और ताकि इस के द्वारा उन को सावधान किया जाये। और ताकि वे जान लें कि वही एक सत्य पूज्य है और ताकि मतिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।

فَلَا تَحْسِبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا تَعْمَلُونَ
ذُو الْبُعْدِ الْأَعْيُنِ

يَوْمَ تَبْدُلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَاءَ
وَتَرَى الْقَوْمَ الْوَاحِدَ الْقَهْلُ

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقْرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ

سَرَابِلُهُمْ خَسِيرٌ
وَتَرَى الْقَوْمَ الْوَاحِدَ الْقَهْلُ

يَوْمَ تَجْزِي اللَّهُ كُلَّ النَّاسِ مَا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ

هَذَا يَذْكُرُ لِلنَّاسِ وَلِيَتَذَكَّرُوا
إِلَهُ الْوَحِيدَ الْقَهْلُ

1 अर्थात् अपनी कब्रों (समाधियों) से निकल कर।

सूरह हिज्र 15

سورة الحجر

सूरह हिज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 99 आयत है।

- इस सूरह की आयत नं० 80-87 में हिज्र के वासी ((समूद जाति)) के अपने रसूलों के झुठलाने के कारण विनाश की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम ((सूरह हिज्र)) है।
- इस की आयत 1 में कुर्आन की विशेषता का वर्णन है। तथा 2-15 में रिसालत के विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है। फिर आयत 16 से 25 तक में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जिन पर विचार करने से वही तथा रिसालत और हथ्र में संबंधित संदेहों का निवारण हो जाता है।
- आयत 26-44 में इब्नीस के कुपथ हो जाने का वर्णन है जो मनुष्य को कुपथ करने के लिये वही तथा रिसालत के बारे में संदेह पैदा कर के उसे सत्य से दूर रखना चाहता है जिस का परिणाम नरक है। तथा आयत 45 से 48 तक उन के अच्छे परिणाम को बनाया गया है जो उस की बात में नहीं आये और अल्लाह से डरने तथा शिर्क और उस की अवैजा से बचने रहे।
- आयत 49-84 में नबियों के इतिहास से यह बनाया गया है कि अल्लाह के सदाचारी भक्तों पर उस की दया होती है और दुराचारियों पर यातना के कोड़े बरसते हैं।
- आयत 85-99 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा सदाचारियों के लिये दिनामा का सामान भी है और यह निर्देश भी है कि जो माया मोह में मग्न है उन के आर्थिक धन की ओर लालसा से न देखें बल्कि उस बड़े धन का आदर करें जो कुर्आन के रूप में उन्हें प्रदान किया गया है।

अल््लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ लाम, रा। वह इस पुस्तक,
तथा खुले कुर्आन की आयतें हैं।
2. (एक समय आयेगा), जब काफिर
यह कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा
होना यदि वे मुसलमान¹ होते?
3. (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें, वह
खाते तथा आनन्द लेते रहें, और
उन्हें आशा निश्चेत किये रहे, फिर
शीघ्र ही वह जान लेंगे।⁽²⁾
4. और हम ने जिस बस्ती को भी ध्वस्त
किया उस के लिये एक निश्चित
अवधि अंत थी।
5. कोई जानि न अपनी निश्चित अवधि
से आगे जा सकती है और न पीछे
रह सकती
6. तथा उन (काफिरों) ने कहा है
वह व्यक्ति जिस पर यह शिक्षा
(कुर्आन) उतारा गया है। वास्तव में
तू पागल है।
7. क्यों हमारे पास फरिशनों को नहीं
लाता यदि तू सच्चों में से है?

الرَّحْمَنُ يُولَىٰ آلَ الْحَقِّ وَالْحَقُّ وَقرآن
مُهِينٌ ۝

رُبَّمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَكَانُوا
مُسْلِمِينَ ۝

ذَرَهُمْ يَآكُلُوا وَيَشْرَبُوا وَيَلْعَبُوا
فَلَا يَفْقَهُونَ ۝

وَمَا أَفْلَحَ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ
مَّعْلُومٌ ۝

مَا تَسْبِيحٌ مِنْ أَهْلِ أَجْمَعٍ وَمَا يَسْتَجِيرُونَ ۝

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ إِنَّكَ
لَمَجْنُونٌ ۝

لَوْ مَا نَأْتِيْنَا بِالْمَلَكِ مِنْ كُنْتِ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

1. ऐसा उस समय होगा जब फरिशते उन की आत्मा निकालने आयेंगे और
उन को उन का नरक का स्थान दिखा देंगे। और क्यामत के दिन तो ऐसी
दुर्दशा होगी कि धूल हो जाने की कामना करेंगे। (देखिये सूरह नवा आयत
40)

2. अपने दुष्परिणाम का।

8. जब कि हम फरिश्तों को सत्य (निर्णय) के साथ ही¹ उतारते हैं, और उन्हें उस समय कोई अवसर नहीं दिया जाता।

مَلَكَيْنِ الْمَلَائِكَةِ الْإِيسَى وَمَا كَانَ إِذَا مُنْظَرِينَ ۝

9. वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (कुर्आन) उतारी है, और हम ही उस के रक्षक² हैं।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝

10. और हम ने आप से पहले भी प्राचीन (विगत) जानियों में रसूल भेजे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شَيْءٍ الْأَوَّلِينَ ۝

11. और उन के पास जो भी रसूल आया, परन्तु वह उस के साथ परिहास करते रहे।

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

1 अर्थात् याननाओं के निर्णय के साथ।

2 यह इतिहासिक सत्य है। इस विश्व के धर्म ग्रंथों में कुर्आन ही एक ऐसा धर्म ग्रंथ है जिस में उस के अवतरित होने के समय से अब तक एक अक्षर तो क्या एक मात्रा का भी परिवर्तन नहीं हुआ। और न हो सकना है। यह विशेषता इस विश्व के किसी भी धर्म ग्रंथ को प्राप्त नहीं है। तौरात हो अथवा इंजील या इस विश्व के अन्य धर्म शास्त्र हों सब में इतने परिवर्तन किये गये हैं कि सत्य मूल धर्म की पहचान असम्भव हो गयी है।

इसी प्रकार इस (कुर्आन) की व्याख्या जिसे हदीस कहा जाता है वह भी सुरक्षित है और उस का पालन किये बिना किसी का जीवन इस्लामी नहीं हो सकता। क्योंकि कुर्आन का आदेश है कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुझे जो दे उस को ले लो और जिस से रोक दे उस से रुक जाओ (देखिये सूरह हश्म आयत नं० 7)

कुर्आन कहता है कि हे नबी! अल्लाह ने आप पर कुर्आन इस लिये उतारा है कि आप लोगों के लिये उस की व्याख्या कर दें। (सूरह नहल आयत नं० 44) जिस व्याख्या से नमाज व्रत आदि इस्लामी अनिवार्य कर्तव्यों की विधि का ज्ञान होता है इसी लिये उस को सुरक्षित किया गया है। और हम हदीस के एक एक राबी के जन्म और मौत का समय और उस की पूरी दशा को जानते हैं और यह भी जानते हैं कि वह विश्वासनीय है या नहीं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि इस ससार में इस्लाम के सिवा कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस की मूल पुस्तकें तथा उस के नबी की सारी बातें सुरक्षित हों।

12. इसी प्रकार हम इसे¹ अपराधियों के दिलों में पुरो देते हैं।
13. वे उस पर इमान नहीं लाते, और प्रथम जानियों से यही रीति चली आ रही है।
14. और यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल देते, फिर वह उस में चढ़ने लगते।
15. तब भी वह यही कहते कि हमारी आंखें धोखा खा रही हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।
16. हम ने आकाश में राशि चक्र बनाये हैं और उसे देखने वालों के लिये सुमिज्जत किया है।
17. और उसे प्रत्येक धिक्कारे हुये शैतान से सुरक्षित किया है।
18. परन्तु जो (शैतान) चोरी से सुनना चाहे तो एक खुली ज्वाला उस का पीछा करती² है।
19. और हम ने धरती को फैलाया और उस में पर्वत बना दिये, और उस में हम ने प्रत्येक उचित चीजें उगायीं।
20. और हम ने उस में तुम्हारे लिये जीवन के समाधान बना दिये, तथा उन के लिये जिन के जीविका दाता तुम नहीं हो।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَوَافِئِهِ

لِلْعَاقِلِينَ بِهِ وَقَدْ خَلَّاتُ سُنَّةُ الْآدَمِ

وَوَقَّعَتْ عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا مِنَ السَّمَاءِ فَظَنُّوا
يَعْرِجُونَ

لَقَالُوا إِنَّمَا سَكَبَ عَلَى فُرُوسِنَا عُقُوبٌ
مُنْمِقُونَ

وَبَعَثْنَا فِي السَّمَاءِ رُجُومًا وَرَّشَّاهُ الْبَصِيرِينَ

وَحَاطَ بِهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيزٍ

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ وَشَهِدَ ثَمُودُ

وَالْأَرْضَ مَدَدُومًا وَالْقَدَارَ بِهَا تَدْبِيرُ
وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ ثَمَرٍ مَرْدُودٍ

وَجَعَلْنَا الْكُوفَ فِيهَا مَعَالٍ وَمِنْ لَكُم مَّا
يَرْزُقُونَ

1 अर्थात् रसूलों के साथ परिहाम को अर्थात् उसे इस का दण्ड देगे।

2 शैतान चोरी से फरिश्तों की बात सुनने का प्रयास करते हैं। तो ज्वलन उल्का उन्हें मारता है। अधिक विवरण के लिये देखिये: (सूरह मुल्क आयत नं. 5)

21. और कोई चीज ऐसी नहीं है, जिस के कोष हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं।
22. और हम ने जलभरी वायुओं को भेजा, फिर आकाश से जल बरसाया, और उसे तुम्हें पिलाया, तथा तुम उस के कार्याधिकारी नहीं हो।
23. तथा हम ही जीवन देते, तथा मारते हैं, और हम ही सब के उत्तराधिकारी हैं।
24. तथा तुम में से विगत लोगों को जानते हैं और भविष्य के लोगों को भी जानते हैं।
25. और वास्तव में आप का पालनहार ही उन्हें एकत्र करेगा¹, निश्चय वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
26. और हम ने मनुष्य को सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से बनाया।
27. और इस से पहले जिनों को हम ने अग्नि की ज्वाला से पैदा किया।
28. और (याद करो) जब आप के पालनहार ने फरिश्तों से कहा: मैं एक मनुष्य उत्पन्न करने वाला हूँ, सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से।
29. तो जब मैं उसे पूरा बना दूँ और उस में अपनी आत्मा फूँक दूँ, तो उस के लिये सज्दे में गिर जाना।²

وَمِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِنَّا جَعَلْنَا خَزَائِنَهُ وَمَا تُؤْتِيهِ
إِلَّا بَقْدَرٍ مَّقْدُورٍ ۝

وَأَرْسَلْنَا رِيحًا لَّوَاتِفَةٍ فَإِنَّا نُمْطَرُ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَاسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَبِيرِينَ ۝

وَإِنَّا لَنَحْنُ مُّی وَبُیْتٌ وَعَنْ أُولَیْهِ ۝

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الْمُسْتَقْبَلِ مِن مِّنْكُمْ وَلَقَدْ
خَبَرْنَا السَّابِقِينَ ۝

فَبِئْسَ رَبِّكَ فَهُوَ يَسْمُرُ إِنَّهُ خَبِيرٌ عَابِدٌ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِن
حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝

وَأَنبَأَكَ خَلْقَهُ مِن قَبْلِ مِن لَّدُنَّا النُّجُومِ ۝

وَلَدَّ قَالَ رَبِّكَ الْمَسْكُونَةَ إِلَى خَالِقٍ بَشَرٍ
مِّن صَلْصَالٍ مِّن حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۝

وَإِذْ أَسَوَيْنَاهُ وَنَعَّمْتَ فِيهِ مِن رُّوحِ قَعْقَرٍ ۝
سُجَّيْنِ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन हिमात्र के लिये।

2 फरिश्तों के लिये आदम का सज्दा अल्लाह के आदेश से उन की परिक्षा के लिये था किन्तु इस्लाम में मनुष्य के लिये किसी मनुष्य या वस्तु को सज्दा करना

30. अतः उन सब फरिश्तों ने सज्दा किया।
31. इब्लीस के सिवा। उस ने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया।
32. अब्राह ने पूछा: हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों का साथ नहीं दिया?
33. उस ने कहा मैं ऐसा नहीं हूँ कि एक मनुष्य को सज्दा करूँ, जिस ने मुझे मड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से पैदा किया है।
34. अब्राह ने कहा: यहाँ से निकल जा, वास्तव में तू धिक्कारा हुआ है।
35. और तुझ पर धिक्कार है प्रतिहार (प्रलय) के दिन तक।
36. (इब्लीस) ने कहा: " मेरे पालनहार! तो फिर मुझे उस दिन तक अवसर दे, जब सभी पुनः जीवित किये जायेंगे।
37. अब्राह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया है।
38. विद्वित समय के दिन तक के लिये।
39. वह बोला मेरे पालनहार! तेरे मूझ को क्षुध कर देने के कारण, मैं अवश्य उन के लिये धरती में (तेरी अवज्ञा को) मनोरम बना दूँगा, और

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

إِلَّا إِبْلِيسَ إِلَىٰ أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ لَا تَسْجُدُ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ ذَلِكُمْ فَخَلَقْتَنِي مِن صَلَافٍ مِن نَّارٍ وَسَأَوْقُونَ ﴿٣٣﴾

قَالَ فَخُذْ مِنْهَا زَاكَاةً رَّجِيمًا ﴿٣٤﴾

فَوَيْلٌ لَّكَ مِنَ الْعَذَابِ ﴿٣٥﴾ يَوْمَ الَّذِي

قَالَ رَبِّ فَأَعِظْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾

قَالَ فَوَاقِكَ مِنَ الْمَخْذُولِينَ ﴿٣٧﴾

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَنِي فِي الْأَرْضِ وَأَلْعَبِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾

शिरक और अक्षम्य पाप है। (सूरह, हा. मीम, सज्दा आयत नं. 37)

- 1 अर्थात् फरिश्ते परिक्षा में सफल हुये और इब्लीस असफल रहा। क्यों कि उस ने आदेश का पालन न कर के अपनी मनमानी की। इसी प्रकार वह भी है जो अब्राह की बात न मान कर मनमानी करते हैं।

उन सभी को कुपथ कर दूँगा।

40. उन में से तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा।

41. अब्राह ने कहा: यही मुझ तक
(पहुँचने की) सीधी राह है।

42. वस्तुतः मेरे भक्तों पर तेरा कोई
अधिकार नहीं¹ चलेगा, सिवाये उस
के जो कुपथों में से तेरा अनुसरण करे।

43. और वास्तव में उन सब के लिये
नरक का बचन है।

44. उस (नरक) के सात द्वार हैं, और
उन में से प्रत्येक द्वार के लिये एक
विभाजित भाग² है।

45. वास्तव में आज्ञाकारी लोग स्वर्गों
तथा स्रोतों में होंगे।

46. (उन से कहा जायेगा) इस में प्रवेश कर
जाओ, शान्ति के साथ निर्भय हो कर।

47. और हम निकाल देंगे उन के दिलों
में जो कुछ बैर होगा। वे भाई भाई
होकर एक दूसरे के सम्मुख तरुणों के
ऊपर रहेंगे।

48. न उस में उन्हें कोई धकान होगी
और न वहाँ से निकाले जायेंगे।

49. (हे नबी!) आप मेरे भक्तों को

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ﴿٤٠﴾

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

إِنَّ عِبَادِي لَأَنسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ
إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ يَكُلُ بِأَبْوَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ
مِّمَّا سَوَّمُوا ﴿٤٤﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ يُدْخِلُونَ ﴿٤٦﴾

وَنُزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ عِلٍّ إِذَا تَوَلَّوْا
سُورَةُ مُتَفَيِّينَ ﴿٤٧﴾

لَا يَسْتَنْهَضُهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا
بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

يَبْقَى عِبَادِيَ إِنِّي أَنَا الْمُقَوِّرُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

1 अर्थात् जो बन्दे कुर्आन तथा हदीस (नबी का तरीका) का ज्ञान रखेंगे उन पर शैतान का प्रभाव नहीं होगा। और जो इन दोनों के ज्ञान से जाहिल होंगे वही उस के झाँसे में आयेंगे। किन्तु जो तौबा कर लें तो उन को क्षमा कर दिया जायेंगा।

2 अर्थात् इबलीस के अनुयायी अपने कुकर्मों के अनुसार नरक के द्वार में प्रवेश करेंगे।

सूचित कर दें कि वास्तव में, मैं बड़ा क्षमाशील दयावान्^[1] हूँ।

50. और मेरी यातना ही दुखदायी यातना है।

51. और आप उन्हें इबराहीम के अतिथियों के बारे में सूचित कर दें।

52. जब वह इबराहीम के पास आये तो सलाम किया। उस ने कहा: वास्तव में हम तुम से डर रहे हैं।

53. उन्होंने ने कहा: डरो नही, हम तुम्हें एक ज्ञानी बालक की शुभसूचना दे रहे हैं।

54. उस ने कहा: क्या तुम ने मुझे इस बुढ़ापे में शुभ सूचना दी है, तुम मुझे यह शुभ सूचना कैसे दे रहे हो?

55. उन्होंने ने कहा: हम ने तुम्हें सत्य शुभ सूचना दी है, अतः तुम निराश न हो।

56. (इबराहीम) ने कहा: अपने पालनहार की दया से निराश केवल कुपय लोग ही हुआ करते हैं।

57. उस ने कहा: हे अब्राह के भेजे हुये फरिश्तो! तुम्हारा अभियान क्या है?

58. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी जाति के पास भेजे गये हैं।

59. लूट के घराने के सिवा, उन सभी को हम बचाने वाले हैं।

وَأَنَّ عَذَابَ الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۝

وَيَذَرُهُمْ فِي ضَيِّفٍ أَرْوَاهُمْ ۝

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۝

قَالُوا لَا تَوْفِئْنَا إِنَّا نَبْتَرُكَ بِحُلْمٍ عَيْنِي ۝

قَالَ أَتَبْتُرُونَنَا عَلَىٰ أَن كُنَّا مِنَ الْيَكْرَفِ فِيهِ ۝

قَالُوا بَشَرٌ مِّثْلُ بَاقِي فَلَا تَتْلُ مِنْ الْقَوَائِمِ ۝

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۝

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ إِلَيْهَا الْمُرْسَلُونَ ۝

قَالُوا إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۝

إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمَجْرُومٌ لِّجَمِيعِهِ ۝

1 हदीस में है कि अब्राह ने सौ दया पैदा की, निबनावे अपने पास रख ली और एक को पूर संसार के लिये भेज दिया। तो यदि काफिर उस की पूरी दया जान जाये तो स्वर्ग से निराश नहीं होगा। और ईमान वाला उस की पूरी यातना जान जाये तो नरक से निर्भय नहीं होगा। (महीह बुखारी: 6469)

60. परन्तु लून की पत्नी के लिये हम ने निर्णय किया है कि वह पीछे रह जाने वाली में होगी।

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَا لَهَا فَخِشًّا ۖ

61. फिर जब लून के घर भेजे हुये (फरिश्ते) आये।

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ ۖ

62. तो लून ने कहा: तुम (मेरे लिये) अपरिचित हो।

قَالَ لَوْلَا نَوْمُ الْمُنَافِقِينَ ۖ

63. उन्होंने ने कहा: डरो नही, बल्कि हम तुम्हारे पास वह (यातना) लाये है, जिस के बारे में वह सदेह कर रहे थे।

قَالُوا بَلْ جِئْتَكُم بِكَافِرَاتٍ كَأَمْوَافِكُمْ لَا تَحْكُمْنَ ۖ

64. हम तुम्हारे पास सत्य लाये है, और वास्तव में हम सत्यवादी है।

وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۖ

65. अतः कुछ रात रह जाये तो अपने घराने को लेकर निकल जाओ, और तुम उन के पीछे रहो और तुम में से कोई फिर कर न देखे। तथा चले जाओ, जहाँ आदेश दिया जा रहा है।

فَأَمْرٌ بِأَهْلِكَ يَقُصِّرُ مِنَ الْيَمِينِ وَشِبَعٌ أَدْبَارَهُمْ
وَلَا يَكْتُمُونَ فَكُلُوا وَامْشَوْا فِيهَا
لَا تُرْجَعُونَ ۖ

66. और हम ने लून को निर्णय सुना दिया कि भोर होने ही इन का उन्मूलन कर दिया जायेगा।

وَقَصَيْنَا إِلَىٰ ذَٰلِكَ الْكُرْآنِ ذِكْرَهُمْ ۖ لَآ مَقْطُوعُ
مُصْهَرِينَ ۖ

67. और नगरवासी प्रसन्न हो कर आ गये।¹⁾

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۖ

68. लून ने कहा: यह मेरे अतिथी है, अतः मेरा अपमान न करो।

قَالَ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ صَائِفٌ فَلَا تَصْغُرُونَ ۖ

69. तथा अल्लाह से डरो, और मेरा अनादर न करो।

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْرِبُوا ۖ

70. उन्होंने ने कहा: क्या हम ने तुम्हें विश्व

قَالُوا أَوَلَمْ نَكُنْ مِنْ الْعَالَمِينَ ۖ

1 अर्थात् जब फरिश्तों को नवयुवकों के रूप में देखा तो लून अलैहिस्सलाम के यहाँ आ गये ताकि उन के साथ अश्लील कर्म करें।

वासियों से नहीं रोका¹ था?

71. लूत ने कहा: यह मेरी पुत्रियाँ हैं यदि तुम कुछ करने वाले² हो।

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي لَكُمْ فَاصْبِرْ ۖ

72. हे नबी! आप की आयु की शपथ! ³ वास्तव में वे अपने उन्माद में बहक रहे थे।

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ فَاصُونَ ۚ

73. अन्ततः सूर्योदय के समय उन्हें एक कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया।

فَأَخَذَتْهُمْ تَضِيعَةُ الْغَيْثِ ۚ

74. फिर हम ने उस बस्ती के ऊपरी भाग को नीचे कर दिया और उन पर कंकरीले पत्थर बरसा दिये।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلًا وَأَمْطَرْنَا مِنْهُ حَبًّا ذَرًّا ۚ

75. वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं प्रतिभाशालियों⁴ के लिये।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمَنْ يَعْقِلُ ۚ

76. और वह (बस्ती) साधारण⁵ मार्ग पर स्थित है।

وَأَنَّهَا بِمَسْجِدٍ مُّبِينٍ ۚ

77. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है, ईमान वालों के लिये।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۚ

78. और वास्तव में (ऐक्या) के⁶ वासी अत्याचारी थे।

وَمَنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَنْكَاظِ الْمُنِيرِينَ ۚ

1 सब के समर्थक न बनो।

2 अर्थात् इन से विवाह कर लो, और अपनी कामवामना पूरी करो और कुकर्म न करो।

3 अल्लाह के सिवा किसी मनुष्य के लिये उचित नहीं है कि वह अल्लाह के सिवा किसी और चीज की शपथ ले।

4 अर्थात् जो लक्षणों से तथ्य को समझ जाते हैं।

5 अर्थात् जो साधारण मार्ग हिजाज (मक्का) से शाम को जाता है। यह शिक्षाप्रद बस्ती उसी मार्ग में आती है जिस से तुम गुजरते हुये शाम जाते हो।

6 इस से अभिप्रेत शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति है, ऐक्या का अर्थ बन तथा झाड़ी है।

79. तो हम ने उन से बदला ले लिया, और वह दोनों¹ ही साधारण मार्ग पर है।
80. और हिज्र के² लोगों ने रसूलों को झुठलाया।
81. और उन्हें हम ने अपनी आयतें (निशानियाँ) दी, तो वह उन से विमुख ही रहे।
82. वे शिलाकारी कर के पर्वतों से घर बनाते, और निर्भय होकर रहते थे।
83. अन्ततः उन्हें कड़ी ध्वनि ने भोर के समय पकड़ लिया।
84. और उन की कमाई उन के कुछ काम न आयी।
85. और हम ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है, सत्य के आधार पर ही उत्पन्न किया है और निश्चय प्रलय आनी है। अन (हे नबी!) आप (उन को) भली भाँति क्षमा कर दें।
86. वास्तव में आप का पालनहार ही सब का स्रष्टा सर्वज्ञ है।
87. तथा (हे नबी!) हम ने आप को मान ऐसी आयतें जो बार बार दुहराई जाती है, और महा कुर्आन³ प्रदान किया है।

فَأَنشَأْنَا مِنْهُمُ الذَّمَّ وَاللَّعْنَةَ لِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْمُدِيبِ ۝

وَاتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

وَصَالُوا فِيهَا بِحُجْرٍ مُنْجَاةٍ وَمِنْ يَمِينٍ مِّنَ الْجِبَالِ يَهِيمُونَ ۝

فَلَمَّا كَانَتْ هُمْ الْقَضِيَّةَ فَهَجَمُوا ۝

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَتَاعُهُمْ ذَاتَ الْيَوْمِ وَلَا الْآخِرِينَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاصْغُرِ الْعَوِيلُ ۝

إِنَّ رَحْمَتَكُمَا الْغُلَقُ الْعَلِيمُ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّن مِّثْقَالٍ وَفُرْقَانِ الْعَظِيمِ ۝

1 अर्थात् मदीयन और ऐयका का क्षेत्र भी हिजाज से फिलस्तीन और सीरिया जाने हुये, राह में पड़ता है।

2 हिज्र समुद्र जानि की बस्ती थी जो मालेह (अलैहिस्सलाम) की जानि थी यह बस्ती मदीना और तबूक के बीच स्थित थी।

3 अबु हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

88. और आप उस की ओर न देखें, जो संसारिक लाभ का संसाधन हम ने उन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है और न उन पर शोक करें, और इमान वालों के लिये सुशील रहें।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَافِضٌ جَنَاحُكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

89 और कह दें कि मैं प्रत्यक्ष (खुली) चेतावनी⁽¹⁾ देने वाला हूँ।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

90. जैसे हम ने खण्डन कारियों² पर (यातना) उतारी।

كَمَا أَرْسَلْنَا عَلَى الْمُتَّبِعِينَ ﴿٩٠﴾

91. जिन्होंने ने कुआँन को खण्ड खण्ड कर दिया।³

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

92. तो शपथ है आप के पालनहार की। हम उन से अवश्य पूछेंगे।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

93. तुम क्या करने रहे?

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

94. अतः आप को जो आदेश दिया जा

فَأَمَّا عِدَّتْكُمْ نَارُ الْأَوْثَانِ وَالْغُرُوضِ عَنْ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

कथन है कि उम्मुल कुआँन (सूरह फातिहा) ही वह मान आयते है जो दुहराई जाती है तथा महा कुआँन है। (सहीह बुखारी- 4704)

एक दूसरी हदीस में है कि नबी मल्लगाह अलैहि व मल्लम ने फरमाया "अल्हम्दु लिब्लाहि रब्बिल आलमीन्" ही वह मान आयते है जो बार बार दुहराई जाती है और महा कुआँन है जो मुझे प्रदान किया गया है। (संक्षिप्त अनुवाद सहीह बुखारी 4702)। यही कारण है कि इस के पढ़े बिना नमाज नहीं होनी। (देखिये सहीह बुखारी: 756, मुस्लिम: 394)

1 अर्थात् अवैजा पर यातना की

2 खण्डन कारियों से अभिप्राय यहूद और ईसाई है। जिन्होंने ने अपनी पुस्तकों तौरान तथा इंजील को खण्ड खण्ड कर दिया। अर्थात् उन के कुछ भाग पर इमान लाये और कुछ को नकार दिया। (सहीह बुखारी- 4705-4706)

3 इसी प्रकार इन्होंने ने भी कुआँन के कुछ भाग को मान लिया और कुछ का अगलों की कहानियाँ बनाकर इन्कार कर दिया। तो ऐसे सभी लोगों से प्रलय के दिन पूछ होगी कि मेरी पुस्तकों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?

रहा है, उसे खोल कर मुना दे। और मुशरिकों (मिश्रणवादियों) की चिन्ता न करे।

95. हम आप के लिये परिहास करने वालों को काफी हैं।

إِنَّا لَكَيْتُكَ الشَّاهِدِينَ ﴿٩٥﴾

96. जो अब्राह के साथ दूसरे पूज्य बना लेते हैं, तो उन्हें शीघ्र जान हो जायेगा।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

97. और हम जानते हैं कि उन की बातों से आप का दिल संकुचन हो रहा है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَصِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

98. अतः आप अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करें तथा सज्दा करने वालों में रहें।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾

99. और अपने पालनहार की इयादन (बंदना) करते रहें यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।¹

وَلَعِبَادَتِكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

1 अर्थात् मरण का समय जिस का विश्वास सभी को है। (कुरुबी)

सूरह नहल 16

سُورَةُ النَّحْلِ

सूरह नहल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 128 आयतें हैं।

- नहल का अर्थ मधु मक्खी है। जिस में अल्लाह के पालनहार होने की निशानी है। इस सूरह की आयत 68 में यह नाम लिया गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन तथा तौहीद के मन्तव्य होने को प्रमाणित किया गया है। और नबी को न मानने पर दुष्परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- विरोधियों के संदेह दूर कर के अल्लाह के उपकारों की चर्चा की गई है और प्रलय के दिन मुश्रिकों तथा काफिरों की दुर दशा को बताया गया है।
- बंदों का अधिकार देने तथा बुराईयों से बचने और पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है।
- शैतान के संशय से शरण मांगने का निर्देश दिया गया है और मक्का वासियों के लिये एक कृन्धन वस्ती का उदाहरण देकर उन्हें कृन्ध होने का निर्देश दिया गया है।
- यह निर्देश दिया गया है कि शिर्क के कारण अल्लाह की वैध की हुई चीजों को वर्जित न करो और इबराहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में बताया गया है कि वह एकेश्वरवादी और कृन्ध थे, और मुश्रिक नहीं थे।
- यह बताया गया है कि सब्त (शनिवार) मनाने का आदेश केवल यहूद को उन के विभेद करने के कारण दिया गया था।
- और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा इमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह का आदेश आ गया है। अतः
(हे काफिरों!) उस के शीघ्र आने की

إِنَّ أَمْرًا لَّهُ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحَنَهُ

मोंग न करो। वह (अब्राह) पवित्र
तथा उस शिर्क (मिश्रणवाद) से
ऊँचा है, जो वह कर रहे हैं।

وَتَقْل عَمَّا يُشْرِكُونَ ①

2. वह फरिश्तों को बह्दी के साथ अपने
आदेश से अपने जिस भक्त पर
चाहता है उतारता है, कि (लोगों को)
सावधान करो, कि मेरे सिवा कोई
पूज्य नहीं है अतः मुझ से ही डरो।

يُزِيلُ لِكُلِّ قَوْمٍ بِأَمْرٍ عَنِ مَنَاشِئِهِ
مِنْ عِبَادَةٍ أَن تَشِيرُوا إِلَيْهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ②

3. उस ने आकाशों तथा धरती की
उत्पत्ति सत्य के साथ की है, वह
उन के शिर्क से बहुत ऊँचा है।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ تَعْل عَمَّا
يُشْرِكُونَ ③

4. उस ने मनुष्य की उत्पत्ति वीर्य से की
फिर वह अकस्मात् खुला झगड़ानू
बन गया।

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ حَصِيمٌ
مُؤْتِمِرٌ ④

5. तथा चौपायों की उत्पत्ति की, जिन में
तुम्हारे लिये गमी¹ और बहून में लाभ
है, और उन में से कुछ को खाते हो।

وَالْأَنْعَامَ خَلَقْنَا لَكُمْ فِيهَا نِفَاعٌ وَمِثَاقٌ
وَمِنْهَا تَكُلُونَ ⑤

6. तथा उन में तुम्हारे लिये एक शोभा है,
जिस समय मध्या को चरा कर लाते हो
और जब प्रातः चराने ले जाते हो।

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرْمَعُونَ وَحِينَ
تَسْرَحُونَ ⑥

7. और वह तुम्हारे बोलों को उन नगरों
तक लाद कर ले जाते हैं जिन तक
तुम बिना कड़े परिश्रम के नहीं पहुँच
सकते। वास्तव में तुम्हारा पालनहार
अति करुणामय दयावान् है।

وَتَحْمِيلُ أَلْفٍ لَّكُمْ إِلَى بَكْبٍ ثُمَّ تَلَوْنَ وَإِلَيْهِ
الْأَشْيُ الْآخِرُونَ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَوْفٌ رَّحِيمٌ ⑦

8. तथा घोड़े और खच्चर तथा गधे
पैदा किये, ताकि उन पर सवारी
करो। और शोभा (वर्ने)। और ऐसी
चीजों की उत्पत्ति करेगा, जिन्हें

وَالْحَيْلُ وَالْبَعَالُ وَالْحَمِيرُ لَكُمْ يَوْمَ
وَرَيْبَةٍ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑧

1 अर्थान् उन की ऊन तथा खाल से गर्म वस्त्र बनाने हो।

(अभी) तुम नहीं जानते हा।¹¹

9. और अल्लाह पर, सीधी राह बताना है और उन में से कुछ¹² टेंढे हैं। तथा यदि अल्लाह चाहता तो तुम सभी को सीधी राह दिखा देता।

10. वही है जिस ने आकाश से जल बरसाया, जिस में से कुछ तुम पीते हो, तथा कुछ से वृक्ष उपजते हैं, जिस में तुम (पशुओं को) चराते हो।

11. और तुम्हारे लिये उस में खेनी उपजाता है, और जैतून तथा खजूर और अंगूर और प्रत्येक प्रकार के फल वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।

12. और उस ने तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिवस को सेवा में लगा रखा है। तथा सूर्य और चांद को, और सितारे उस के आदेश के आधीन हैं। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (लक्षण) हैं उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

13. तथा जो तुम्हारे लिये धरती में विभिन्न रंगों की चीजें उत्पन्न की हैं वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो शिक्षा ग्रहण करते हैं।

وَيُرْسِلُ الْجَارِ الْقَصْدَ السَّيِّئِ وَمِنْهَا جَائِرٌ وَتَوَسَّعَ
لَهُمْ فِيهَا مَخْرَجُونَ ⑩

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِلْكَرْمِ
شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ⑪

يُتَيْتُ الْكَرْمُ وَالزَّيْتُونُ وَالنَّخِيلُ
وَالْأَعْنَابُ وَمِنْ كُلِّ الشَّجَرِ مِنْ لَدُنْهِ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَتَفَكَّرُونَ ⑫

وَنَظَرْنَا إِلَى السَّنِئَةِ وَالْهَارِ وَالشَّيْءِ وَالْقَمَرِ
وَالنَّجْمِ وَمُسْتَحَرَّتْ بِأَمْرِ اللَّهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑬

وَمَا ذَرَأْنَا الْكَرْمَ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَذَكَّرُونَ ⑭

1 अर्थात् सवारी के साधन इत्यादि। और आज हम उन में से बहुत सी चीजों को अपनी आँखों से देख रहे हैं जिन की ओर अल्लाह ने आज से चौदह सौ वर्ष पहले इस आयत के अन्दर संकेत किया था। जैसे: कार, रेल और विमान आदि....।

2 अर्थात् जो इस्लाम के विरुद्ध हैं।

14. और वही है जिस ने सागर को वण में कर रखा है, ताकि तुम उस से ताजा¹ मास खाओ, और उस से अलंकार² निकालो जिसे पहनते हो, तथा तुम नौकाओं को देखने हो कि सागर में (जल को) फाड़ती हुई चलती है और इस लिये ताकि तुम उस (अब्राह) के अनुग्रह³ की खोज करो और ताकि कृतज्ञ बनो।

15. और उस ने धरती में पर्वत गाड़ दिये ताकि तुम को लेकर डोलने न लगे, तथा नदियाँ और राहें, ताकि तुम राह पाओ।

16. तथा बहुत से चिन्ह (बना दिये) और वे सितारों से (भी) राह⁴ पाते हैं।

17. तो क्या जो उत्पत्ति करता है, उस के समान है, जो उत्पत्ति नहीं करता? क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते⁵?

18. और यदि तुम अब्राह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो तो कभी नहीं कर सकते! वास्तव में अब्राह बड़ा क्षमा तथा दया करने वाला है।

19. तथा अब्राह जानता है, जो तुम छुपाते हो, और जो तुम व्यक्त करते हो।

20. और जिन्हें वे अब्राह के सिवा पुकारते

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَيْنَا لَكُمْ آيَةً لِّتَأْكُلَا طَيْرًا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاجِرَهُمْ وَتَعْتَقُونَ مِنْ مُنْتَصِلٍ لِّكُلِّكُمْ تَسْكُرُونَ ۝

وَالَّذِي فِي الْأَرْضِ نَدَايَ أَنْ يَسْتَرْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُوا ۚ فَمِمَّا أَعْلَمُ خُتُبَاتُهُمْ وَأَنْهَرُهُمْ ۝

وَعَلَمَاتٍ وَأَيُّ الْقَوْمِ هُمْ يَفْقَهُونَ ۝

أَلَمْ يَخْلُقْ لَهُمْ لِيَخْلُقْ أَزْوَاجًا لِّرَبِّهِمْ ۚ

وَأَنْ تَعْلَمَ رُبُّكُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَا مِنْهُ لَاحِظُونَ ۝

وَالَّذِينَ يَعْلَمُونَ مَا يُبْرَأُونَ وَمَا يُعْمَلُونَ ۝

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ

1 अर्थात् मछलियाँ।

2 अलंकार अर्थात् मोती और मूँगा निकालो।

3 अर्थात् सागरों में व्यापारिक यात्रा कर के अपनी जीविका की खोज करो।

4 अर्थात् रात्रि में।

5 और उस की उत्पत्ति को उस का साझी और पूज्य बनाते हो।

हैं वे किसी चीज की उत्पत्ति नहीं कर सकते। जब कि वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं।

شَيْئًا وَهُمْ يَخْشَوْنَ ۝

21. वे निर्जीव प्राणहीन हैं, और (यह भी) नहीं जानते कि कब पुनः जीवित किये जायेंगे।

أَمْوَاتٌ غَيْرَ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

22. तुम्हारा पूज्य बस एक है, फिर जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते उन के दिल निवर्ती (विरोधी) हैं, और वे अभिमानी हैं।

إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ مَا تَدْعُونَ لِأَيْمُونٍ ۝
بِالْآخِرَةِ فَلَوْ بِهِمْ مَسْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝

23. जो कुछ वे छुपाने तथा व्यक्त करने हैं निश्चय अल्लाह उसे जानता है। वास्तव में वह अभिमानियों से प्रेम नहीं करता।

لَا جُرْمَ إِنَّ إِلَهَهُ يَعْلَمُ مَا يُبْرُونَ وَيَا يَعْبُونَ ۝
إِلَهُ الْغَيْبِ الْمُسْتَكْبِرِينَ ۝

24. और जब उन से पूछा जाये कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? तो कहते हैं कि पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं,

وَمَا أَقْبَلُ لَهُمْ فَاذًا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا ۝
تِلْكَ آثَارُ آبَائِنَا الَّذِينَ كَانُوا

25. ताकि वे अपने (पापों का) पूरा बोझ प्रलय के दिन उठाये, तथा कुछ उन लोगों का बोझ (भी) जिन्हें बिना ज्ञान के कुपथ कर रहे थे, सावधान! वे कितना बुरा बोझ उठावेंगे।

لِيَعْمَلُوا ۝
وَأَوْزَارُهُمْ كَامِلَةٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝
وَمَنْ أَوْزَارِهِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۝
أَلَمْ يَسَاءَ مَا يَزِيدُهُمْ ۝

26. इन से पहले के लोग भी षड्यंत्र रचते रहे, तो अल्लाह ने उन के षड्यंत्र के भवन का उन्मूलन कर दिया फिर ऊपर से उन पर छत गिर पड़ी, और उन पर ऐसी दिशा

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۝
فَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْهُمُ الْقَوَاعِدَ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ ۝
مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर। तो यह जानने हुये कि अल्लाह ने कुर्आन उतारा है झूठ बोलने है और स्वयं को तथा दूसरों को धोखा देते है।

से यातना आ गई, जिसे वे सोच भी नहीं रहे थे।

27. फिर प्रलय के दिन उन्हें अपमानित करेगा और कहेगा कि मेरे वह साझी कहाँ है, जिन के लिये तुम झगड़ रहे थे? वे कहेंगे: जिन्हें ज्ञान दिया गया है कि वास्तव में आज अपमान तथा बुराई (यातना) काफ़िरो के लिये है।

فَتَقُولُ الْقَوْمُ يَوْمَئِذٍ وَيَقُولُ آتَيْنَ
سُوءًا وَمَا كُنَّا نَعْلَمُ قَالُوا قَالُوا
الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ يَوْمَئِذٍ الْيَوْمَ وَالسَّوَاءَ
عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

28. जिन के प्राण फरिश्ते निकालने हैं, इस दशा में कि वे अपने ऊपर अन्याचार करने वाले हैं, तो वह आज्ञाकारी बन जाते¹ हैं, (कहते हैं कि) हम कोई बुराई (शिक) नहीं कर रहे थे। क्यों नहीं? वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत है।

الَّذِينَ تَتَوَفَّوهُمْ لَقَدْ أَتَيْنَهُمُ
فَالْقَوْلَ السَّامِعَ فَأَتَيْنَهُمُ مِنْ شَرِّ نَزْلٍ ۝
وَعِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

29. तो नरक के द्वारों में प्रवेश कर जाओ उस में सदाबामी रहोगे, अतः क्या ही बुरा है अभिमानियों का निवास स्थान।

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَائِدِينَ فِيهَا
لَكُمْ فِيهَا مَنَازِلٌ مُتَعَدِّاتٌ ۝

30. और उन से पूछा गया जो अपने पालनहार से डरे कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? तो उन्होंने कहा: अच्छी चीज उतारी है। उन के लिये जिन्होंने इस लोक में सदाचार किये बड़ी भलाई है। और वास्तव में परलोक का घर (स्वर्ग) अति उत्तम है। और आज्ञाकारियों का आवास कितना अच्छा है!

فَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا
خَيْرٌ مِمَّا يَدْرِيْنَ أَحْسَنُوا إِلَىٰ عِبَادِهِمُ الْكَيْفَ أَحْسَنُوا
وَلَا رَافِعَةَ حَيْثُ لَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۝

1 अर्थात् मरण के समय अल्लाह को मान लेते हैं।

31. सदा रहने के स्वर्ग जिस में प्रवेश करेंगे, जिन में नहरें बहती होंगी, उन के लिये उस में जो चाहेंगे (मिलेगा)। इसी प्रकार अल्लाह आज्ञाकारियों को प्रतिफल (बदला) देता है।

32. जिन के प्राण फरिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे स्वच्छ पवित्र हैं, तो कहते हैं "तुम पर शान्ति हो।" तुम अपने सुकर्मों के बदले स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।

33. क्या वे इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फरिश्ते¹ आ जायें, अथवा आप के पालनहार का आदेश² आ पहुँचे? ऐसे ही उन से पूर्व के लोगों ने किया और अल्लाह ने उन पर अन्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अन्याचार कर रहे थे।

34. तो उन के कर्मों की बुराइयों³ उन पर आ पड़ी, और उन्हें उमी (यातना) ने घेर लिया जिस का वे परिहास कर रहे थे।

35. और कहा जिन लोगों ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया: यदि अल्लाह चाहता तो हम उस के सिवा किसी चीज की इबादत (बंदना) न करते न हम, और न हमारे बाप दादा और न उस के आदेश के बिना किसी चीज को हराम (वर्जित) करते। ऐसे

جَدَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا يَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ
الْمُتَّقِينَ

الَّذِينَ تَوَلَّوْهُمْ الْمَلَائِكَةُ ظَنِّينَ يَخْتُونُ سَلَامٌ
عَلَيْكُمْ دَخَلُوا الْجَنَّةَ رَبِّ كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

هَلْ يَتُوبُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ
أَمْرٌ مِنْكَ كَذَلِكَ قَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانَ
ظُلْمُهُمْ أَنَّ اللَّهَ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَخَافَ بِهِمْ
مَا كَانُوا يَسْتَهْزِئُونَ

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا خَلَدْنَا
مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا أَمْمَرْنَا
مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ قَعَلَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ قَعَلَ عَلَى مَرْسٍ إِلَّا لِنُكَفُّ نُسَبِينَ

1 अर्थात् प्राण निकालने के लिये।

2 अर्थात् अल्लाह की यातना या प्रलय।

3 अर्थात् दुष्परिणाम।

ही इन में पूर्व वाले लोगों ने किया।
तो रसूलों पर केवल खुले रूप से
उपदेश पहुँचा देना है।

36. और हम ने प्रत्येक समुदाय में
एक रसूल भेजा कि अब्राह की
इबादत (वंदना) करो, और तागून
(अमुर अब्राह के सिवा पूज्यों) से
बचो, तो उन में से कुछ को
अब्राह ने सुपथ दिखा दिया और
कुछ पर कुपथ सिद्ध हो गया। तो
धरती में चलो-फिरो, फिर देखो
कि झुठलाने वालों का अन्त कैसा
रहा?

37. (हे नबी!) आप ऐसे लोगों को सुपथ
दिखाने पर लोलुप हों, तो भी अब्राह
उसे सुपथ नहीं दिखायेगा जिसे कुपथ
कर दे। और न उन का कोई सहायक
होगा।

38. और उन (काफिरों) ने अब्राह की
भरपूर शपथ ली कि अब्राह उसे पुनः
जीवित नहीं करेगा जो मर जाना है।
क्यों नहीं? यह तो अब्राह का अपने
ऊपर सत्य वचन है, परन्तु अधिकतर
लोग नहीं जानते।

39. (ऐसा करना इस लिये आवश्यक है)
ताकि अब्राह उस तथ्य को उजागर
कर दे जिस में वे विभेद कर रहे
थे, और ताकि काफिर जान लें कि
वही झूठे थे।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا
اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ
وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فَمِنْ ذَٰلِكَ
النَّاسُ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَكَبِّرِينَ ۝

إِنْ تَحْرِضْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ
يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ لُصِيصِينَ ۝

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ
يَمُوتُ بَلْ وَعَدَ عَلَيْهِمْ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

لِيُثَبِّتَ لَهُمُ الدِّينَ لِيُخْرِجَهُمْ مِنَ الضَّلَالَةِ وَيُعَلِّمَهُمُ
الدِّينَ فَكَرَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ۝

40. हमारा कथन, जब हम किसी चीज को अस्तित्व प्रदान करने का निश्चय करें तो इस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दें कि "हो जा", और वह हो जाती है।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

41. तथा जो लोग अब्राह के लिये हिजरत (प्रस्थान) कर गये अत्याचार सहने के पश्चात्, तो हम उन्हें संसार में अच्छा निवास-स्थान देंगे, और परलोक का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है, यदि वह⁽¹⁾ जानते।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا مِنَّا فِي الْغَدْرِ مَا حِصْبُؤُنَا لِلْكَافِرِينَ إِلَّا غِيَارُ الْمَآءِ الْغَرِيبِ ﴿٤١﴾

42. जिन लोगों ने धैर्य धारण किया, तथा अपने पालनहार पर ही वे भरोसा करते हैं

الَّذِينَ صَبَرُوا عَلَىٰ مَا هَدَيْنَاهُمْ لَنَا وَسَبَّرُوا عَلَىٰ الْكَافِرِينَ ﴿٤٢﴾

43. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले जो भी रसूल भेजे, वे सभी मानव-पुरुष थे। जिन की ओर हम बहो (प्रकाशना) करते रहे। तो तुम जानियों से पूछ लो, यदि (स्वयं) नहीं⁽²⁾ जानते।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ رَاسُلاً إِلَّا ذَكَرْنَا لَهُ آلِهَتَنَا بِتُورٍ وَإِنَّمَا كُنَّا لَكُمْ فَاكِرِينَ ﴿٤٣﴾

44. प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाणों तथा पुस्तकों के साथ (उन्हें भेजा) और आप की ओर यह शिक्षा (कूर्बान) अवतरित की, ताकि आप उसे सर्वमानव के लिये उजागर कर दें जो कुछ उन

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا كُنَّا لَكُمْ فَاكِرِينَ ﴿٤٤﴾

1 इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी हैं जिन को मक्का के मुशरिकों ने अत्याचार कर के निकाल दिया। और हब्शा और फिर मदीने हिजरत कर गये।

2 मक्का के मुशरिकों ने कहा कि यदि अब्राह को कोई रसूल भेजना होता तो किसी फरिश्ते को भेजता। उसी पर यह आयत उतरी। जानियों से अभिप्राय वह पहले किताब है जिन्हे आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान हो।

की ओर उतारा गया है ताकि वह सोच विचार करे।

45. तो क्या वे निर्भय हो गये हैं, जिन्होंने बुरे षड्यंत्र रचे हैं, कि अल्लाह उन्हें धरती में धसा दे? अथवा उन पर यातना ऐसी दिशा से आ जाये जिसे वह सोचते भी न हों?

أَفَأَمِّنَ الْكَافِرِينَ مَكْرُوءَ النَّبَاتِ أَنْ يُخْصِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَبْسُطَ الْعَذَابَ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

46. या उन्हें चलते फिरते पकड़ ले, तो वह (अल्लाह को) विवश करने वाले नहीं हैं।

أَوْ يَأْخُذُهُمْ فِي تَغْلِبِهِمْ فَيَقْبَضُوا مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٦﴾

47. अथवा उन्हें भय की दशा में पकड़ ले? निश्चय तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।

أَوْ يَخُذُهُمْ عَلَى غَرَبٍ وَإِنْ رَبُّكَ تَرَوْهُوَ ذَوِئِمْ

48. क्या अल्लाह की उत्पन्न की हुयी किसी चीज को उन्होंने नहीं देखा? जिस की छाया दायें तथा बायें झुकती है अल्लाह को सज्दा करते हुये? और वे सर्व विनयशील हैं।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ عَنِ اليمينِ وَالشمالِ سُبُّدًا لِلَّهِ وَهُمْ لَا يَحْكُمُونَ ﴿٤٨﴾

49. तथा अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आकाशों में तथा धरती में चर (जीव) तथा फरिश्ते हैं, और वह अहंकार नहीं करते।

وَالَّذِينَ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ اللَّهِ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مِنْ ذُنُوبِهِ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

50. वे¹ अपने पालनहार से डरते हैं जो उन के ऊपर है, और वही करते हैं जो आदेश दिये जाते हैं।

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ لَوْحٍ رَاقٍ وَتَعْمَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

51 और अल्लाह ने कहा दो पूज्य न बनाओ, वही अकेला पूज्य है। अतः तुम मुझी से डरो।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَهَيْنِ إِلَّا هُوَ لَهُ الْوَلْدُ الْعَظِيمُ ﴿٥١﴾

1 अर्थात् जब कि पहले से उन्हें आपदा का भय हो।

2 अर्थात् फरिश्ते

52. और उसी का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और उसी की बंदना स्थायी है, तो क्या तुम अब्राह के सिवा दूसरे से डरते हो?

وَلَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ يُتَوَكَّلْ
وَصِيًّا أَتَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ

53. तुम्हें जो भी सुख सुविधा प्राप्त है वह अब्राह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें दुख पहुँचता है, तो उसी को पुकारते हो।

وَمَا يَكُمُ مِنْ يَمِينٍ أَوْ شِمَالٍ أَوْ يُضْرَبُ
بِأَيِّ آيَةٍ مِنْ آيَاتِهِ يَقُولُ أَتُدْعُونَ

54. फिर जब तुम से दुख दूर कर देना है तो तुम्हारा एक समुदाय अपने पालनहार का साझी बनाने लगता है।

تَدْعُوا كَثْفًا شَرًّا لَئِنْ لَمْ يَنْزِلْ بِكُمْ
بِرَحْمَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ لَتَكُونُنَّ مِنَ

55. ताकि हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है, उस के प्रति कृतघ्न हो तो आनन्द ले लो, तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।

يَكْفُرُوا بِهِمَا وَيَعْرِفُونَ أَنَّ مَا لَهُمْ
لَا خَالِدٌ لَهُمْ فِيهِمْ

56. और वे जिन को जानते ¹ तक नहीं उन का एक भाग उस में से बनाते हैं जो जीविका हम ने उन्हें दी है। तो अब्राह की शपथ! तुम से अवश्य पूछा जायेगा उस के विषय में जो तुम झूठी बातें बना रहे थे?

وَيَعْلَمُونَ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَلِهَةً أُخْرَى لَئِنْ لَمْ يَنْزِلْ بِكُمْ
بِرَحْمَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ لَتَكُونُنَّ مِنَ

57. और वह अब्राह के लिये पुत्रियाँ बनाने ² हैं वह पवित्र है! और उन के लिये वह ³ है, जो वे स्वयं चाहते हो!?

وَيَعْلَمُونَ إِنَّ اللَّهَ بَرٌّ رَحِيمٌ وَهُوَ
يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ

1 अर्थात् अपने देवी देवताओं की वास्तविकता को नहीं जानते।

2 अरब के मुश्रिकों के पूज्यों में देवताओं से अधिक देवियाँ थीं। जिन के संबन्ध में उन का विचार था कि ये अब्राह की पुत्रियाँ हैं। इसी प्रकार फरिश्तों को भी वे अब्राह की पुत्रियाँ कहते थे, जिस का यहाँ खण्डन किया गया है।

3 अर्थात् पुत्र।

58. और जब उन में से किसी को पुत्री (के जन्म) की शुभसूचना दी जाये, तो उस का मुख काला हो जाता है, और वह शोक पूर्ण हो जाता है।

وَاِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَنَّ وَجْهَهُ سَوْدًا
وَهُوَ كَاشٍ

59. और लोगों से छुपा फिरता है उस दुरी सूचना के कारण जो उसे दी गयी है। (सोचता है कि) क्या¹⁾ उसे अपमान के साथ रोक ले, अथवा भूमि में गाड़ दे? देखो! वह कितना बुरा निर्णय करते हैं।

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ يُخْفِيهِ عَلَىٰ
أَهْلِهِ لَا يَكُونُ فِي الْأَرْسَاءِ مَا يَحْكُمُونَ

60. उन्हीं के लिये जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते अवगुण है, और अल्लाह के लिये सदगुण है, तथा वह प्रभुत्वशाली तत्त्वदर्शी है।

يَلْبِسُونَ الْكُفْرَ مِنَ الْإِيمَانِ بِكُلِّ شَيْءٍ
الْمُتَرَدِّدِ الْأَمَلُ وَهُوَ الْقَوْمُ الْأَخْلَاقُ

61. और यदि अल्लाह, लोगों को उन के अन्याचार²⁾ पर (तत्क्षण) धरने लगे, तो धरती में किसी जीव को न छोड़े। परन्तु वह एक निर्धारित अवधि तक निर्लम्बित करता³⁾ है, और जब उन की अवधि आ जायेगी, तो एक क्षण न पीछे होंगे न पहले।

وَلَوْ يَرَىٰ أَحَدُكُمُ الْآخِرَ بِطُلُوعِهِمْ لَا يَرْكَعَ عَلَيْهِمْ
رَأْيُكَ وَلَكِنَّ الْإِيمَانَ إِلَىٰ أَهْلِ الْأَنْفُسِ يَوْمَ تُجَاذَىٰ
أَعْمَالُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُونَ سَلَامَةً
وَلَا يَسْتَفْتُونَ

62. वह अल्लाह के लिये उसे⁴⁾ बनाते हैं, जिसे स्वयं अप्रिय समझते हैं। तथा उन की जुबानें झूठ बोलती हैं कि उन्हीं के लिये भलाई है। निश्चय

وَيَجْعَلُونَ لَهُ مَا يَرْغَبُونَ وَتَقِفُ الْأَيْمُنُهُمْ بِالْكَذِبِ
أَنَّهُمْ يُخْفُونَ الْبُرْءَ أَنَّهُمْ يُخْفُونَ الْبُرْءَ أَنَّهُمْ
يُخْفُونَ

1 अर्थात् जीवित रहने दे। इस्लाम से पूर्व अरब समाज के कुछ कबीलों में पुत्रियों के जन्म को लज्जा की चीज समझा जाता था। जिस का चित्रण इस आयत में किया गया है।

2 अर्थात् शिर्क और पापाचारों पर।

3 अर्थात् अवसर देता है।

4 अर्थात् पुत्रियाँ।

उन्हीं के लिये नरक है, और वही सब से पहले (नरक में) झोंके जायेंगे।

63. अब्राह की शपथ! (हे नबी!) आप से पहले हम ने बहुत से समुदायों की ओर रसूल भेजे, तो उन के लिये शैतान ने उन के कुकर्मों को सुमिज्जन बना दिया। अतः वही आज उन का सहायक है, और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

نَاثِرُونَ لَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَٰهِيمَ مِنْ قَبْلِكَ قُرْآنًا
لَهُمُ الشَّيْطَانُ عَصَا لَهُمْ قَهْوَةٌ لَهُمُ الْيَوْمَ وَإِلَهُهُمُ الْيَوْمَ وَآلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ٦٣

64. और हम ने आप पर यह पुस्तक (क़ुरआन) इसी लिये उतारी है ताकि आप उन के लिये उसे उजागर कर दें जिस में वह विभेद कर रहे हैं, तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो इमान (बिश्वास) रखते हैं।

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِلْمُذَّبِّحِينَ لَهُمُ
الْبَيِّنَاتُ اخْتَلَفُوا فِيهِ وَهُدًى وَرَحْمَةً
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ٦٤

65. और अब्राह ने ही आकाश से जल बरसाया, फिर उस ने निर्जीव धरती को जीवित कर दिया। निश्चय इस में उन लोगों के लिये एक निशानी है जो सुनते हैं।

وَاللَّهُ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْيَرَ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ٦٥

66. तथा वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उस से जो उस के भीतर है गोबर तथा रक्त के बीच से शुद्ध दूध पिलाने हैं। जो पीने वालों के लिये रुचिकर होता है।

وَمَا كَانَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ لَٰحِظَةٌ تَسْجُدُ لِلَّذِينَ يَمْلِكُونَ
فِي السَّيِّئَاتِ وَمِنْ بَنِي إِسْرَٰءِيلَ إِذْ أَخَذُوا مِنَ اللَّهِ عَهْدَ أَنْ يَمْلِكُوا
فِي السَّيِّئَاتِ ٦٦

67. तथा खजूरों और अंगूरों के फलों से जिस से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका भी वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो समझ बूझ रखते हैं।

وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُمُ
مَدْرَقًا مَّا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ٦٧

68. और हम ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि पर्वतों में घर (छत्ते) बना तथा वृक्षों में, और लोगों की बनायी छतों में।

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ
بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَاسْجُدِي لِلرَّحْمَنِ

69. फिर प्रत्येक फलों का रस चूस, और अपने पालनहार की सरल राहों पर चलती रह। उस के भीतर से एक पेय निकलता है, जो विभिन्न रंगों का होता है, जिस में लोगों के लिये आरोग्य है। वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।

فَتَخَلَّطَ مِنْ كُلِّ شَجَرٍ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلًا
يَخْرُجُ مِنْ بَطُونٍ مُّشْرَبٍ فَاسْكُتِي الْوَحْشَ فِيهِ
يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

70. और अल्लाह ही ने तुम्हारी उत्पत्ति की है फिर तुम्हें मौत देता है। और तुम में से कुछ को अवोध आयु तक पहुँचा दिया जाता है, ताकि जानने के पश्चात् कुछ न जाने। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सर्व सामर्थ्यवान¹ है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَوَدُّكُمْ وَيَسِّرُ لَكُمْ أَسْلَاحَ
الْعَمَلِ لِكَيْ تَعْلَمُوا بَعْدَ عِلْمِ شَيْءٍ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
قَدِيرٌ

71. और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर जीविका में प्रधानता दी है, तो जिन्हें प्रधानता दी गयी है वे अपनी जीविका अपने दामों की ओर फेरने वाले नहीं कि वह उस में बराबर हो जाये तो क्या वह अल्लाह के उपकारों को नहीं मानत है²।

وَاللَّهُ مَقْطَبُ بَعْضِكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْعِلْمِ قَدَرًا
الْعِلْمِ فَاصْلَوْا بَرَاءً لِلَّهِ فِي مَا تَمْلِكُونَ إِنَّ اللَّهَ مُخَبِّرُ
بِهِمْ سَوَاءً أَعْبَدُوا أَوْ لَا يَعْبُدُونَ

72. और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्ही में से पत्नियाँ बनायीं। और तुम्हारे लिये

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِّتَعْلَمُوا

1 अर्थात् वह पुनः जीवित भी कर सकता है।

2 आग्रह का भावार्थ यह है कि जब वह स्वयं अपने दामों को अपने बराबर करने के लिये तय्यार नहीं है तो फिर अल्लाह की उत्पत्ति और उस के दामों को कैसे पूजा-अर्चना में उस के बराबर करते हैं? क्या यह अल्लाह के उपकारों का इन्कार नहीं है?

तुम्हारी पत्नियों से पुत्र तथा पौत्र बनाये। और तुम्हें स्वच्छ चीजों से जीविका प्रदान की। तो क्या वे असत्य पर विश्वास रखते हैं, और अब्राह के पुरस्कारों के प्रति अविश्वास रखते हैं?

لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ نِسَاءٌ وَفِئَاتٌ ذُرِّيَّتُكُمْ
مِنْ بَيْنِ يَدَيْكُمْ يُؤْمِنُونَ بِكُمْ وَيَسْتَفْتُونَ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝

73. और अब्राह के सिवा उन की वंदना करते हैं जो उन के लिये आकाशों तथा धरती से कुछ भी जीविका देने का अधिकार नहीं रखते, और न इस का सामर्थ्य रखते हैं।

وَيَقْبِضُونَ مِنْ دُوبِ اللَّهِ مَا لَا يَمِيتُ لَهُمْ
رِزْقًا مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا
وَلَا يَسْتَجِيبُونَ ۝

74. और अब्राह के लिये उदाहरण न दो। वास्तव में अब्राह जानता है, और तुम नहीं जानते।¹

فَلَا تُصِرُّوا بِاللَّهِ الْأَمْثَالَ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
الْغُفُورِينَ ۝

75. अब्राह ने एक उदाहरण² दिया है: एक पराधीन दास है, जो किसी चीज का अधिकार नहीं रखता, और दूसरा (स्वाधीन) व्यक्ति है, जिसे हम न अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है। और वह उस में से छुपे और खुले व्यय करना है। क्या वह दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अब्राह³ के लिये है बल्कि अधिकतर लोग (यह बात) नहीं जानते।

خَرَّبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى
شَيْءٍ وَمِنْ رِزْقِهِ مُؤَيَّدًا وَسَيَّارًا مَنْعًا
فَهُوَ يَنْفِقُ مِنْهُ يَنْفِقُ أَهْلٌ يَسْتَوُونَ ۝
يَلْبِسُ إِلَٰهَهُمْ لِيُظْهِرُوا لِي لَوْلَا
ذَلِكَ لَفَعَلْتُ لَكُمْ ۝

76. तथा अब्राह ने दो व्यक्तियों का उदाहरण दिया है। दोनों में से एक गूंगा

وَقَرَّبَ اللَّهُ مَثَلًا ثَلَاثِينَ سَوَادًا مِمَّا بَلَغَ

1 क्यों कि उस के समान कोई नहीं।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जैसे पराधीन दास और धनी स्वतंत्र व्यक्ति को तुम बराबर नहीं समझने, ऐसे मुझे और इन मूर्तियों को कैसे बराबर समझ रहे हो जो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकती। और यदि मक्खी उन का चढ़ावा ले भागे तो वह छीन भी नहीं सकती। इस से बड़ा अन्याचार क्या हो सकता है?

3 अर्थात् अब्राह के सिवा तुम्हारे पूज्यों में से कोई प्रशंसा के योग्य नहीं

है। वह किसी चीज का अधिकार नहीं रखता। वह अपने स्वामी पर बोझ है। वह उसे जहाँ भेजता है कोई भलाइ नहीं लाता। तो क्या वह, और जो न्याय का आदेश देता हो, और स्वयं सीधी^१ राह पर हो बराबर हो जायेंगे??

لَا يَقْبِضُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ أَيْمًا
يُوجِبُهُ زِيَارَتُ بَيْتِهِمْ قُلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ
يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ١٦

77. और अब्राह ही को आकाशों तथा धरती के परोक्ष^२ का ज्ञान है। और प्रलय (क्यामत) का विषय तो बस पलक झपकने जैसा^३ होगा, अथवा उस से भी अधिक शीघ्र। वास्तव में अब्राह जो चाहे कर सकता है।

وَاللَّهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ
السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصِيرِ أَوْ هُوَ قَرِيبٌ إِنَّ اللَّهَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١٧

78. और अब्राह ही ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों से निकाला। इस दशा में कि तुम कुछ नहीं जानते थे। और तुम्हारे कान और आँख तथा दिल बनाये, ताकि तुम (उस का) उपकार मानो।

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ
شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ١٨

79. क्या वे पक्षियों को नहीं देखते कि वह अन्तरिक्ष में कैसे बशीभूत है। उन्हें अब्राह ही धामता^४ है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

لَقَدْ يَرَوْنَ الطَّيْرَ مُخْرَجٍ مِنْ قُورَيْشٍ
مَا يَتَّبَعُونَ إِلَّا إِلَهُنَّ إِلَى ذَلِكَ لَّا يَتَّبَعُونَ
لِقَوْمِهِمْ يُؤْمِنُونَ ١٩

80. और अब्राह ही ने तुम्हारे घरों को निवास स्थान बनाया। और पशुओं की खालों से तुम्हारे लिये ऐसे घर^५ बनाये जिन्हें तुम अपनी यात्रा तथा अपने

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّن بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم
مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ
ظُهُورِكُمْ وَيَوْمَ اقَامَتِكُمْ وَمِنْ أَصْوَابِهَا

1 यह दूसरा उदाहरण है जो मुर्तियों का दिया है। जो गूंगी बहरी होनी है।

2 अर्थात् गुप्त तथ्यों का।

3 अर्थात् पलभर में आयेगी।

4 अर्थात् पक्षियों का यह क्षमता अब्राह ही ने दी है।

5 अर्थात् चमड़ों के खेमे।

विराम के दिन हल्का (अल्पभार) पाने हो। और उन की ऊन और रोम तथा बालों से उपकरण और लाभ के समान जीवन की निश्चित अवधि तक के लिये (बनाये)।

وَأَوْبَافَهُ وَأَشْعَرَهُ كَدُّ وَمَتَاعًا
لِّأَلِّ حَيَاتِهِ

81. और अब्राह ही ने तुम्हारे लिये उस चीज में से जो उत्पन्न की है छाया बनायी है। और तुम्हारे लिये पर्वतों में गुफाएँ बनायी हैं। और तुम्हारे लिये ऐसे वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें धूप से बचायें। और ऐसे वस्त्र जो तुम्हें तुम्हारे आक्रमण से बचायें।¹ इसी प्रकार वह तुम पर अपने उपकार पूरा करना है ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

وَلَهُ جَعَلَ لَكُم مِّنَ حَقِّ صَلَاةٍ جَعَلَ لَكُم
مِّنَ الْجِبَالِ كُدًّا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْوَادِئِ
تَفِيكُمُ لِحُرُوفِ الرَّايِلِ تَفِيكُمُ بَأْسِكُمْ كَذَلِكَ
يُنْفِزُ غَمَّتَهُ عَلَيْكُمْ تَعْلَمُكُمْ تُسَمِّوْنَ

82. फिर यदि वे विमुख हों तो आप पर बस प्रत्यक्ष (खुला) उपदेश पहुँचा देना है।

لَئِنْ تَوَلَّوْا وَلَّيْنَا عَلَىٰ كَ لِسَةِ الْمُهَيِّئِينَ

83. वे अब्राह के उपकारों को पहचानते हैं फिर उम का इन्कार करते हैं। और उन में अधिकतर कृण्डन है।

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَنَا ثُمَّ يَنْكُرُونَهَا وَالْكَرْمُ
الْكُفْرُ رَبُّهُ

84. और जिस² दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी (गवाह) खड़ा³ करेंगे, फिर काफिरों को यात करने की अनुमति नहीं दी जायेगी और न उन से क्षमा याचना की माँग की जायेगी।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا
يُؤْذَنُ لِلْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ وَلَا لَهُمْ يَسْتَعْتَبُونَ

85. और जब अत्याचारी यातना देखेंगे उन की यातना कुछ कम नहीं की जायेगी,

فَلَا ذَرَأَ الْكَافِرِينَ تَعْلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ

1 अर्थात् कवच आदि।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 (देखिये मूरह निमा, आयत 41)

और न उन्हें अवकाश दिया¹ जायेगा।

عَذَابُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَرُونَ ۝

86. और जब मुशरिक अपने (बनाये हुये) साक्षियों को देखेंगे तो कहेंगे हे हमारे पालनहार! यही हमारे साक्षी है जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकार रहे थे। तो वह (पुन्य) बोलेंगे कि निश्चय तुम सब मिथ्यावादी (झुठे) हो।

وَيَذَرُ الَّذِينَ آمَنُوا أَشْرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَاءُ الَّذِينَ آمَنُوا قَدْ دَعَوُا مِن دُونِكَ قَالُوا إِلَيْهِمْ الْقَوْلُ إِن كُنتُمْ لَكَابِتُونَ ۝

87. उस दिन वे अब्राह के आगे झुक जायेंगे, और उन से खो जायेंगी जो मिथ्या बातें वह बनाते थे।

وَالْقَوْمُ إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ سَلَّمَ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

88. जो लोग काफिर हो गये और (दूसरों को भी) अब्राह की डगर (इस्लाम) से रोक दिय, उन्हें हम यातना पर यातना देंगे, उस उपद्रव के बदले जो वे कर रहे थे

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ يَذُوبُهُمْ مَدَدُ نَارٍ الْعَذَابِ يَمَّا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝

89. और जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी उन के विरुद्ध उन्हीं में से खड़ा कर देंगे। और (हे नबी!) हम आप को उन पर साक्षी (गवाह) बनायेंगे।² और हम ने आप पर यह पुस्तक (कुरआन) अवतरित की है जो प्रत्येक विषय का खुला विवरण है। तथा मार्ग दर्शन और दया तथा शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَهُمْ فِي أَعْيُنِنَا شَهِيدٌ عَلَى قَوْلِهِمْ وَتَرْكًا عَلَيْكَ الْكِتَابُ وَتَجِبُ لِكُلِّ شَيْءٍ وَأَعْدَى قَوْمَةٍ وَتُشْرَى بِلُغْزٍ ۝

90. वस्तुतः अब्राह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है। और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْعِثَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَعَنَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْعَذَابِ تَذَكَّرُونَ ۝

1 अर्थात् तौबा करने का।

2 (देखिये मूरह बकरा आयत 143)

है। और तुम्हें मिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

91. और जब अल्लाह से कोई वचन करो तो उसे पूरा करो। और अपनी शपथों को सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग न करो जब तुम ने अब्राह को अपने ऊपर गवाह बनाया है। निश्चय अब्राह जो कुछ तुम करने हो उसे जानता है।

92. और तुम्हारी दशा उस स्त्री जैसी न हो जाये जिस ने अपना सून कातने के पश्चात् उधेड़ दिया। तुम अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन बनाते हो नाकि एक समुदाय दूसरे समुदाय से अधिक लाभ प्राप्त करे। अब्राह इस ' (वचन) के द्वारा तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। और प्रलय के दिन तुम्हारे लिये अवश्य उसे उजागर कर देगा जिस में तुम विभेद कर रहे थे।

93. और यदि अब्राह चाहता तो तुम्हें एक समुदाय बना देता। परन्तु वह जिसे चाहता है कुपथ कर देता है और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और तुम से उस के बारे में अवश्य पूछा जायेगा जो तुम कर रहे थे।

94. और अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन न बनाओ, ऐसा न हो कि कोई पग अपने स्थिर

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذْ عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلَهُ اللَّهُ
عَلَيْكُمْ تَوْكِيدًا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَقْتَصِفُ عَزْلَاهَا مِنْ بَعْدِ
تَوَكُّفِهَا فَتَقُولُونَ إِنَّا نَعْلَمُ دَعْوَاهَا لَيْسَ لَنَا
بِشَيْءٍ إِنَّهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّمَا يَتُوكُمُ اللَّهُ فِيهِ
وَلِكَيْتُمْ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ تَعْرِفُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ
لِيُفْتِنَ مِنْ بَيْنِ مَنْ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
وَلِيُكْشِفَنَّ عَنْكُمْ تَابِعَاتِكُمُ الْمُنَافِقِينَ ﴿٩٣﴾

وَلَا تَتَّبِعُوا الْاَيْمَانَ ثُمَّ تَعَدَّلَ بَيْنَكُمْ قَوْلُ
قَدِّمُ بَعْدَ كُتُوبِهَا وَتَدُّوْا الشَّرَّ بَيْنَا

1. अर्थात् किसी समुदाय से समझौता कर के विश्वासघात न किया जाये कि दूसरे समुदाय से अधिक लाभ मिलने पर समझौता तोड़ दिया जाय।

(दृढ़) होने के पश्चात् (इंसान से) फिसल¹ जाये और तुम उस क बदले बुरा परिणाम चखो कि तुम ने अल्लाह की राह से रोका है। और तुम्हारे लिये बड़ी यानना हा।

صَدَّكُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْكُمْ عَنِ الْبَعْثِ عَظِيمٍ ۝

- 95 और अल्लाह से किये हुये वचन को तनिक मूल्य के बदले न बेचो।² वास्तव में जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम जानो

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا إِنَّمَا عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لِّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

- 96 जो तुम्हारे पास है वह व्यय (खर्च) हो जायेगा। और जो अल्लाह के पास है वह शेष रह जाने वाला है। और हम, जो धैर्य धारण करते हैं उन्हें अवश्य उन का पारिश्रमिक (बदला) उन के उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।

مَا عِندَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِندَ اللَّهِ بَاقٍ ۚ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

- 97 जो भी सदाचार करेगा, वह नर हो अथवा नारी और इंसान वाला हो तो हम उसे स्वच्छ जीवन व्यतीत करावेंगे। और उन्हें उन का पारिश्रमिक उन के उत्तम कर्मों के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे।

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أُولَٰئِكَ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

- 98 तो (हे नबी!) जब आप क़ुरआन का अध्ययन करे तो धिक्कारे हुये शैतान से

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝

1 अर्थात् ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति इस्लाम की सत्यता को स्वीकार करने के पश्चात् केवल तुम्हारे दुराचार को देख कर इस्लाम से फिर जाये। और तुम्हारे समुदाय में सम्मिलित होने से रुक जाये। अन्यथा तुम्हारा व्यवहार भी दूसरों से कुछ भिन्न नहीं है।

2 अर्थात् संसारिक लाभ के लिये वचन भग्न न करो। (देखिये: सूरह आराफ आयत: 172)

अब्राह की शरण¹ माँग लिया करें।

الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝

99. वस्तुतः उस का वश उन पर नहीं है जो ईमान लाये हैं, और अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

100. उस का वश तो केवल उन पर चलता है जो उसे अपना संरक्षक बनाते हैं। और जो मिश्रणवादी (मुशर्रिक) हैं।

إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَكَّلُونَ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ۝

101. और जब हम किसी आयत (विधान) के स्थान पर कोई आयत बदल देते हैं, और अब्राह ही अधिक जानता है उसे जिस को वह उतारना है, तो कहते हैं कि आप तो केवल घड़ लेते हैं बल्कि उन में अधिकतर जानने ही नहीं।

وَلَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا ۚ فَكَيْفَ يُعَلِّمُ بَيِّنَاتٍ لِّأُولَٰئِكَ نَفًّٰتٍ مُّغَيَّرَاتٍ ۚ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

102. आप कह दें कि इसे ((रुहुल क़ुदुस))² ने आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ क्रमशः उतारा है ताकि उन्हें सुदृढ़ कर दें जो ईमान लाये हैं। तथा मार्ग दर्शन और शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

فَإِنْ نَزَّلْنَاهُ نُزْلًا مُّقَدَّسًا مِنَ رَبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ لَبِئْسَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هَدًّٰى وَنُصْرًا ۖ بِالْمُسْمِينِ ۝

103. तथा हम जानते हैं कि वे (काफिर) कहते हैं कि उसे (नबी को) कोई मनुष्य सिखा रहा³ है। जब कि उस की भाषा जिस की ओर सकेन करते

وَلَقَدْ عَلِمُوا أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّكَ بَعِثْتَ بَشَرًا ۖ وَتَقُولُ زُفَرًا ۖ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَهَذَا الْبَشَرُ ۖ هَرَبٌ مُّضِيِّ ۝

1 अर्थात ((अर्रुहुल क़ुदुस)) पढ़ लिया करें।

2 इस का अर्थ पवित्रान्ता है। जो जिवरील अनैहिस्सनाम की उपाधि है। यही वह फरिश्ता है जो बह्दी लाता था।

3 इस आयत में मक्का के मिश्रणवादियों के इस आरोप का खण्डन किया गया है कि कुआन आप को एक विदेशी सिखा रहा है।

है विदेशी है और यह¹ स्पष्ट अर्बी भाषा है।

104. वास्तव में जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, उन्हें अल्लाह सुपथ नहीं दर्शाता। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

رَبِّ الدِّينِ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

105. झूठ केवल वही घडते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही मिथ्यावादी (झूठे) हैं।

وَمَا يَتَّبِعُونَ إِلَّا كَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ

106. जिस ने अल्लाह के साथ कुफ़ किया अपने ईमान लाने के पश्चात्, परन्तु जो बाध्य कर दिया गया हो इस दशा में कि उस का दिल ईमान से संतुष्ट हो, (उस के लिये क्षमा है) परन्तु जिस ने कुफ़ के साथ सीना खोल दिया² हो, तो उन्हीं पर अल्लाह का प्रकोप है, और उन्हीं के लिये महा यातना है।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أَكْرَهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَسَدَّ قُلُوبَهُمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

107. यह इसलिये कि उन्होंने ने संसारिक जीवन को परलोक पर प्रार्थमिकता दी है और वास्तव में अल्लाह, क़ाफ़िरो को सुपथ नहीं दिखाना।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا مَلِ الْأَرْضَ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

108. वही लोग हैं जिन के दिलों तथा कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। तथा वही लोग अचेत हैं।

أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَبَصَرِهِمْ وَابْصُرْ لَهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ

1 अर्थात् मक्के वाले जिसे कहते हैं कि वह मुहम्मद को क़र्आन सिखाता है उस की भाषा तो अर्बी है ही नहीं तो वह आप को क़र्आन कैसे सिखा सकता है जो बहुत उत्तम तथा श्रेष्ठ अर्बी भाषा में है। क्या वे इतना भी नहीं समझते?

2 अर्थात् स्वेच्छा कुफ़ किया हो।

109. निश्चय वही लोग परलोक में क्षतिग्रस्त होने वाले हैं।

لَا جُرمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْخَاسِرُونَ ۝

110. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन लोगों¹ के लिये जिन्होंने हिजरत (प्रस्थान) की, और उस के पश्चात् परीक्षा में डाले गये, फिर जिहाद किया और सहन शील रहे, वास्तव में आप का पालनहार इस (परीक्षा) के पश्चात् बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنَّا بَعْدَ مَا لَقِيتُمُ الْمُجْرِمِينَ وَصَلَوْا إِلَى رَبِّكَ مِن بَعْدِهَا لَعَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

111. जिस दिन प्रत्येक प्राणी को अपने बचाव की चिन्ता होगी, और प्रत्येक प्राणी को उस के कर्मों का पूरा बदला दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَلَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

112. अब्राह ने एक बस्ती का उदाहरण दिया है, जो शान्त संनुष्ट थी उस की जीविका प्रत्येक स्थान से प्राचुर्य के साथ पहुँच रही थी, तो उस ने अब्राह के उपकारों के साथ कुफ्र किया। तब अब्राह ने उसे भूख और भय का वस्त्र चखा² दिया उस के बदले जो वह³ कर रहे थे।

وَقَسَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّن كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ وَقَادَّاهُمُ اللَّهُ إِلِيمًا أَسَ الْجُوعِ وَخَوَّفَهُم بِمَأْوَاهُمْ يَتَذَوَّنُونَ ۝

113. और उन के पास एक⁴ रसूल उन्हीं

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ

1 इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी है जो मक्का से मदीना हिजरत कर गये।

2 अर्थात् उन पर भूख और भय की आपदायें छा गई।

3 अर्थात् उस बस्ती के निवासी। और इस बस्ती से अभिप्रेत मक्का है जिन पर उन के कुफ्र के कारण अकाल पड़ा।

4 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के कुरैशी वंश से ही थे फिर भी

में से आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया। अतः उन्हें यातना ने पकड़ लिया और वह अत्याचारी थे।

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝

114. अतः उस में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें हलाल (वैध) स्वच्छ जीविका प्रदान की है। और अल्लाह का उपकार मानो यदि तुम उसी की इबादत (बंदना) करने हो।

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمْ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا
وَأَشْكُرُوا لِعِمَّتِ تِلْكَ لَكُمْ زِينَةٌ
وَتُحْبَبُونَ ۝

115. जो कुछ उस ने तुम पर हराम (अवैध) किया है वह मुर्दार तथा रक्त और सूअर का मांस है, और जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम लिया गया¹ हो, फिर जो भूख से आतुर हो जाये, इस दशा में कि वह नियम न तोड़ रहा² हो, और न आवश्यकता से अधिक खाये, तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَآلِهَةَ
الْمَيْمُونِ وَمَا أَهْلَ بِغَيْرِ اللَّهِ مِنْ
شَيْءٍ ذَلِكَ لَعَذَابِ اللَّهِ الْعَظِيمِ ۝

116. और मत कहो -उस झूठ के कारण जो तुम्हारी जुवानों पर आ जाये- कि यह हलाल (वैध) है, और यह हराम (अवैध) है ताकि अल्लाह पर मिथ्यारोप³ करो। वास्तव में जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोप करने हैं

وَلَا تَقُولُوا لِمَا كُفِّرْنَا عَنْكُمُ
لِلْكِتَابِ مِنْ آيَاتٍ وَمِنْ هَذَا حَرَامٌ
لِمَنْ يَشَاءُ عَلَى اللَّهِ الْكُفْرُ إِنَّ الْيَهُودَ
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُفْرَ لَا يَفْقَهُونَ ۝

उन्होंने ने आप की बात को नहीं माना।

- 1 अर्थात् अल्लाह के सिवा अन्य के नाम से बलि दिया गया पशु। हदीस में है कि जो अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम से बलि दे उस पर अल्लाह की धिक्कार है। (महीह बुखारी 1978)
- 2 देखिये सूरह बकरा आयत 173, सूरह माइदा आयत 3 तथा सूरह अन्धाम आयत-145)
- 3 क्योंकि हलाल और हराम करने का अधिकार केवल अल्लाह को है

वह (कभी) सफल नहीं होते।

117. (इस मिथ्यारोपण का) लाभ तो थोड़ा है और उन्हीं के लिये (परलोक में) दुःखदायी यातना है।

مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

118. और उन पर जो यहूदी हो गये, हम ने उसे हराम (अवैध) कर दिया जिस का वर्णन हम ने इस¹ से पहले आप से कर दिया है। और हम ने उन पर अन्याचार नहीं किया परन्तु वे स्वयं अपने ऊपर अन्याचार कर रहे थे।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمًا قَصَصًا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا عَلَّمْنَاهُمْ وَاكِفًا كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

119. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन्हें जो अज्ञानता के कारण बुराई कर बैठे, फिर उस के पश्चात् क्षमायाचना कर ली, और अपना सुधार कर लिया, वास्तव में आप का पालनहार इस के पश्चात् अति क्षमी दयावान् है।

ثُمَّ نَزَّلْنَاهُ بِالْبَيِّنَاتِ عَلَيْنَا لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝
ثَالِثًا مِنْ بَعْدِهِمْ وَأَصْلَحُوا بِنُورِكَ مِنْ بَعْدِهَا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

120. वास्तव में इब्राहीम एक समुदाय² था, अझाह का आज्ञाकारी एकेश्वरवादी था। और मिश्रणवादियों (मुश्रिकों) में से नहीं था।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَالَتْ بَلْهَؤُنِيَّ اللَّهُ وَلَمْ يَكُنْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

121. उस के उपकारों को मानता था, उस ने उसे चुन लिया, और उसे सीधी राह दिखा दी।

شَكَرُوا لِنِعْمَةِ رَبِّهِمْ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

1 इस से संकेत सूरह अन्घाम, आयत-26 की ओर है।

2 अर्थात् वह अकला सम्पूर्ण समुदाय था। क्यों कि उस के वंश से दो बड़ी उम्मेनें बनीं: एक बनी इस्राईल, और दूसरी बनी इस्माइल जो बाद में अरब कहलाये इस का एक दूसरा अर्थ मुख्या भी होता है।

122. और हम ने उसे समार में भलाई दी, और वास्तव में वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

وَأَنبَتْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَوَعَدْنَاهُ فِي الْآخِرَةِ أَكْثَرَ
الطَّيِّبِينَ ﴿١٢٢﴾

123. फिर हम ने (हे नबी!) आप की ओर वही की, कि एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करो, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

فَهُوَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ آيَاتِهَا وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٢٣﴾
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٤﴾

124. सप्त (शनिवार का दिन) तो उन्हीं पर निर्धारित किया गया जिन्होंने उस में विभेद किया। और वस्तुतः आप का पालनहार उन के बीच उस में निर्णय कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे थे।

إِنَّمَا جَعَلْنَا الشُّبُهَاتَ عَلَى الَّذِينَ يَكْفُرُونَ لِيَكْفُرُوا بِهِ
وَعَلَّامٌ لَّهُمَّ يَوْمَ هُمْ كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٥﴾

125. (हे नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार की राह (इस्लाम) की ओर तत्वदर्शिता तथा सदुपदेश के साथ बुलाये। और उन से ऐसे अन्दाज में शास्त्रार्थ करें जो उत्तम हो। वास्तव में अल्लाह उसे अधिक जानता है जो उस की राह से विचलित हो गया, और वही सुपथों को भी अधिक जानता है।

أَوْحَيْنَا إِلَىٰ سَيِّدِنَا رَبِّكَ بِأَمْرِكَ وَالْوَيْحُ عَلَى
الْحُسْنَةِ وَحَدِّثْ لَهُمْ يَا نَبِيُّ هُوَ خَيْرٌ مِنْ
رَّبِّكَ هُوَ أَعْلَمُ مِنْ صَلِّ عَنْ سَيِّدِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُضِيِّينَ ﴿١٢٦﴾

126. और यदि तुम लोग बदला लो, तो उतना ही लो, जितना तुम्हें सताया गया हो। और यदि सहन कर जाओ

وَلَكِنْ صَبْرُكُمْ خَيْرٌ مِنْ أَعْوَجْتُمْ فِيهِ
وَلَكِنْ صَبْرُكُمْ خَيْرٌ مِنْ أَعْوَجْتُمْ فِيهِ ﴿١٢٧﴾

1 अर्थात् सप्त का सम्मान जैसे इस्लाम में नहीं है इसी प्रकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म में भी नहीं है। यह तो केवल उन के लिये निर्धारित किया गया जिन्होंने विभेद कर के जुम्हा के दिन की जगह सप्त का दिन निर्धारित कर लिया। तो अल्लाह ने उन के लिये उसी का सम्मान अनिवार्य कर दिया कि इस में शिकार न करो। (देखियें: सूरह आराफ, आयत 163)

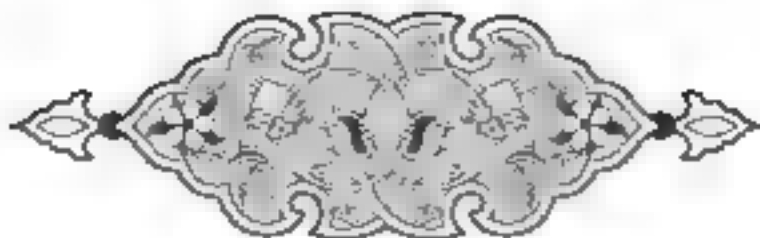
तो सहनशीलों के लिये यही उत्तम है।

127. और (हे नबी!) आप सहन करें, और आप का सहन करना अब्राह ही की सहायता से है। और उन के (दुर्व्यवहार) पर शोक न करें, और न उन के षड्यंत्र से तनिक भी संकुचित हों।

128. वास्तव में अब्राह उन लोगों के साथ है, जो मदाचारी हैं, और जो उपकार करने वाले हैं।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا يَلْلُؤُا ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ
كَائِفُونَ ۝



सूरह बनी इस्राईल 17

سُورَةُ بَنِي إِسْرَائِيلَ

सूरह बनी इस्राईल के सक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 111 आयतें हैं।

- इस की आयत (2-3 में बनी इस्राईल से संबंधित कुछ शिक्षाप्रद बातें सुना कर सावधान किया गया है, इसलिये इस का नाम सूरह (बनी इस्राईल) रखा गया है। और इस की प्रथम आयत में इस्राअ (मेअराज) का वर्णन हुआ है इसलिये इस का दूसरा नाम सूरह (इस्राअ) भी है।
- आयत 9 से 22 तक कूर्आन का आमंत्रण प्रस्तुत किया गया है। और आयत 39 तक उन शिक्षाओं का वर्णन है जो मनुष्य के कर्मों को मजाती हैं और अत्राह से उस का संबंध दृढ़ करती हैं। और आयत 40 से 60 तक विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है।
- आयत 61 से 65 तक में शैतान इब्लीस के आदम (अलैहिस्सलाम) के सज्दे से इन्कार, और मनुष्य से वैर और उस को कुपथ करने के प्रयास का वर्णन किया गया है, जो आज भी लोगों को कूर्आन से रोक रहा है और उस से सावधान किया गया है।
- आयत 66 से 72 तक तौहीद तथा परलोक पर विश्वास की बातें प्रस्तुत करने हुये आयत 77 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध की आंधियों में सत्य पर स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 78 से 82 तक में नमाज की ताकीद, हिज्रत की ओर संकेत, तथा सत्य के प्रभुत्व की सूचना और अन्याचारियों के लिये चेतावनी है।
- आयत 83 से 100 तक में मनुष्य के कुकर्म पर पकड़ की गई है तथा विरोधियों की आपत्तियों के उत्तर दिये गये हैं। फिर आयत 104 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के चमत्कारों की चर्चा और उस पर इमान न लाने के कारण फिरऔन पर यातना के आ जाने का वर्णन है।
- आयत 105 से 111 तक यह निर्देश दिये गये हैं कि अत्राह को कैसे पुकारा जाये, तथा उस की महिमा का वर्णन कैसे किया जाये।

मेअराज की घटना:

- यह अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशेषता है कि

हिज्रत से एक वर्ष पहले अब्राह ने एक रात आप को मस्जिदे हाराम (काबा) से मस्जिदे अक्सा तक, और फिर वहाँ से सातवें आकाश तक अपनी कुछ निशानियाँ दिखाने के लिये यात्रा कराई। फरिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को «धुराक» (एक जानवर का नाम, जिस पर बैठ कर आप ने यह यात्रा की थी) पर सवार किया और पहले मस्जिदे अक्सा (फिलस्तीन) ले गये वहाँ आप ने सब नबियों को नमाज पढ़ाई। फिर आकाश पर ले गये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक आकाश पर नबियों से मिलते हुये सातवें आकाश पर पहुँचे। स्वर्ग और नरक को देखा। इस के पश्चात् आप को ((सिद्रतुल मुत्तहा)) ले जाया गया। फिर ((बैतुल मामूर)) आप के सामने किया गया उस के पश्चात् अब्राह के समीप पहुँचाया गया। और अब्राह ने आप को कुछ उपदेश दिये, और दिन-रात में पाँच समय की नमाज अनिवार्य की। (सहीह बुखारी-3207, मुस्लिम- 164) (और देखिये: सूरह नज्म)

- जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सवेरे अपनी जाति को इस यात्रा की सूचना दी तो उन्होंने ने आप का उपहास किया और आप से कहा कि बैतुल मक़्दिस की स्थिति बताओ। इस पर अब्राह ने उसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने कर दिया, और आप ने आँखों से देख कर उन को उस की सब निशानियाँ बता दी। (देखिये: सहीह बुखारी-3437, मुस्लिम- 172)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जाते और आते हुये राह में उन के एक काफिले से मिलने की भी चर्चा की और उस के मक्का आने का समय और उस ऊँट का चिन्ह भी बता दिया जो सब से आगे था और यह सब वैसे ही हुआ जैसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बताया था। (मीरत इब्ने हिशाम 1:402-403)

अब्राह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. पवित्र है वह जिस ने रात्रि के कुछ
क्षण में अपने भक्त¹ को मस्जिदे

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِصَدِّقِهِ لَيْلَاتِنِ

- 1 अर्थान् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

हराम (मक्का) से मस्जिदे अक्सा तक यात्रा कराई। जिस के चतुर्दिग हम ने सम्पन्नता रखी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियों का दर्शन कराये। वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

2. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की और उसे बनी इस्राइल के लिये मार्गदर्शन का साधन बनाया कि मेरे सिवा किसी को कार्यसाधक¹ न बनाओ।

3. हे उन की संतानि जिन को हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया। वास्तव में वह अनि कृतज्ञ² भक्त था।

4. और हम ने बनी इस्राइल को उन की पुस्तक में सूचित कर दिया था कि तुम इस³ धरती में दो बार उपद्रव

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي
بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ

وَأَنبَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي
إِسْرَآءِيلَ الْآسَافُ وَأَمِينٌ ذُو ذِكْرٍ

ذُرِّيَّةً مِنْ حَتْلَمَ مَعَهُ نُوحٌ إِذْ كَانَ عِنْدَ
سُكُوتٍ

وَوَعَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَآءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتَقْعُدَنَّ فِي
الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا

इस आयत में उस मुर्शिद सत्य की चर्चा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से संबन्धित है। जिसे परभाषिक रूप से "इस्राअ" कहा जाना है जिस का अर्थ है: रात की यात्रा। इस का सविस्तार विवरण हदीसों में किया गया है।

भाष्यकारों के अनुसार हिजरत के कुछ पहले अब्राह ने आप को रात्रि के कुछ भाग में मक्का से मस्जिदे अक्सा तक जो फिलस्तीन में है यात्रा कराई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि जब मक्का के मिश्रणवादियों ने मुझे झुठलाया, तो मैं हिज्र में (जो कांबा का एक भाग है) खड़ा हो गया और अब्राह ने बैतुल मक्दिस को मेरे लिये खोल दिया। और मैं उन्हें उस की निशानियों देख कर बताने लगा। (सहीह बुखारी, हदीस 4710)।

- 1 जिस पर निर्भर रहा जाये।
- 2 अतः हे सर्वमानव तुम भी अब्राह के उपकार के आभारी बनो
- 3 अर्थात् बैतुल मक्दिस में।

करोगे, और बड़ा अत्याचार करोगे।

5. तो जब प्रथम उपद्रव का समय आया तो हम ने तुम पर अपने प्रचल योद्धा भक्तों को भेज दिया, जो नगरों में घुस गये और इस वचन को पूरा होना¹ ही था।

6. फिर हम ने उन पर तुम्हें पुनः प्रभुत्व दिया तथा धनो और पुत्रों द्वारा तुम्हारी सहायता की, और तुम्हारी संख्या बहुत अधिक कर दी।

7. यदि तुम भला करोगे तो अपने लिये, और यदि बुरा करोगे तो अपने लिये। फिर जब दूसरे उपद्रव का समय आया ताकि (शत्रु) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मस्जिद (अक्सा) में वैसे ही प्रवेश कर जायें जैसे प्रथम बार प्रवेश कर गये, और ताकि जो भी उन के हाथ आये उसे पूर्णतः नाश² कर दें।

8. संभव है कि तुम्हारा पालनहार तुम पर दया करे। और यदि तुम प्रथम स्थिति पर आ गये, तो हम भी फिर³ आयेंगे, और हम ने नरक को काफिरों

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَئِكَ بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادَنا أُولَئِكَ تَأْخِذُونَهُمْ فَيَجْعَلُونَهُمْ مِنَ الْغَنَاءِ وَكَانَ وَعْدًا مَفْعُولًا ۝

ثُمَّ بَدَّلْنَا لَكُمُ الْكُرْةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ كَثِيرَةٍ فَنَزَلْنَا بِكُمُ الثَّوْبَ الْأَوَّلَ ۝

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ أَتَوْا بِكُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَإِنْ شَرَّتُمْ شَرَّتُمْ فَجَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسْتَوِيَا وَجُوزُكُمْ وَلِيَُدْخِلُوا السَّيِّئَةَ كَمَا دَخَلُوا أَوَّلَ مَرَّةٍ فِى الْمَقَابِرِ ۚ إِنَّا غُلَّوْا ثَنِيَّتَهُمْ ۝

عَلَى رَبِّكَ أَنْ يَرْجِعَكُمُ وَإِنْ عُدْتُمْ عَلَيْنَا فَنَّ جَهَنَّمُ يَمْلِكُ مِنْكُمْ خَفِيًّا ۝

1. इस से अभिप्रेत बाबिल के राजा बुल्लनस्मर का आक्रमण है जो लग भग छः सौ वर्ष पूर्व मसीह हुआ। इस्राइलियों को बंदी बना कर इराक ले गया और बैतुल मुकद्दस को तहस नहस कर दिया।

2. जब बनी इस्राइल पुनः पापाचारी बन गये तो रोम के राजा कैसर ने लग भग सन् 70 ई० में बैतुल मक्दिस पर आक्रमण कर के उन की दुर्गत बना दी। और उन की पुस्तक तौरात का नाश कर दिया और एक बड़ी संख्या को बंदी बना लिया। यह सब उन के कर्म के कारण हुआ।

3. अर्थात् संसारिक दण्ड देने के लिये।

के लिये कारावास बना दिया है।

- 9 वास्तव में यह कृआन वह डगर दिखाता है जो सब से सीधी है, और उन ईमान वालों को शभसचना देता है जो सदाचार करते हैं, कि उन्हीं के लिये बहुत बड़ा प्रतिफल है।

10. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिये दुखदायी यातना तय्यार कर रखी है।

11. और मनुष्य (क्षुब्ध हो कर) अभिशाप करने लगता ¹ है, जैसे भलाई के लिये प्रार्थना करता है। और मनुष्य बड़ा ही उतावला है।

12. और हम ने रात्रि तथा दिवस को दो प्रतीक बनाया, फिर रात्रि के प्रतीक को हम ने अंधकार बनाया तथा दिवस के प्रतीक को प्रकाशयुक्त, ताकि तुम अपने पालनहार के अनुग्रह (जीविका) की खोज करो। और वर्षों तथा हिमाब की गिनती जानो, तथा हम ने प्रत्येक चीज का सविस्तार वर्णन कर दिया।

13. और प्रत्येक मनुष्य के कर्म पत्र को हम ने उस के गले का हार बना दिया है। और हम उस के लिये प्रलय के दिन एक कर्मलेख निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पायेगा।

14. अपना कर्मलेख पढ़ लो, आज तू स्वयं अपना हिमाब लेने के लिये पर्याप्त है।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّذِينَ هُمْ أَقْوَمُ وَيُغْنِي
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَصْلَوْنَ الصُّلُوبَ لِمَا كُتِبَ لَهُمْ
كِبَرًا

وَأَنَّ الْعَذَابَ لَا يُلَاحِظُونَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
عَذَابُ الْآلِهَاتِ

وَيَذُرُ الْإِنْسَانُ بِالْغُرُوحِ يُدْعَىٰ يَاجُثٌ ۚ
وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتٍ لِّمَن ذَكَرَ آيَةَ الْبَيْتِ
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمُ الْفُجُورَ لِيَمْلِكُوا فَتُؤَخِّرُونَ
رَبَّهُمْ وَلَقَدْ مَكَّنَّا لَهُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَجَعَلْنَا
شَفَىٰ لِقُلُوبِهِمْ قُلُوبًا ۚ

وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَلْفًا فِي غُنْفِهِ وَيَعْرِجُهُ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَكْنُوزًا ۝

إِذَا كُشِفَ عَنْكَ كَتَبُكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَبِيبًا ۝

- 1 अर्थान् स्वयं को और अपने घराने को शापने लगता है।

हो कर प्रवेश करेगा।

19. तथा जो परलोक चाहता हो और उस के लिये प्रयास करता हो, और वह एकेश्वरवादी हो, तो वही है जिन के प्रयास का आदर सम्मान किया जायेगा।

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسعى لَهَا سعىً وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلْيُكَلِّمْ
كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝

20. हम प्रत्येक की सहायता करते हैं, इन की भी और उन की भी, और आप के पालनहार का प्रदान (किमी से) निर्बंधित (रोका हुआ) नहीं¹ है।

كَلَّا إِنَّهُ يَرْزُقُ ذُرِّيَّتَهُ مِنْ غَيْرِ نَازِلٍ ۖ وَقَدْ كَانَ غَنِيًّا
رَبُّكَ غَفُورٌ ۝

21. आप विचार करें कि कैसे हम ने (संसार में) उन में से कुछ को कुछ पर प्रधानता दी है और निश्चय परलोक के पद और प्रधानता और भी अधिक होगी।

أَنظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَلِلَّهِ الْآخِرَةُ
وَالْأُولَىٰ ۚ وَكَانَ تَقْوِيًّا ۝

22. (हे मानव!) अब्राह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना, अन्यथा बुरा और असहाय हो कर रह जायेगा।

لَا تَحْمِلْ مَعَهُ إِلَٰهًا ۚ إِنَّهُمْ قَوْمٌ مُّشْرِكُونَ ۝

23. और (हे मनुष्य!) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करो, तथा माता - पिता के साथ उपकार करो यदि तेरे पास दोनों में से एक वृद्धावस्था को पहुंच जाये अथवा दोनों, तो उन्हें उफ तक न कहो, और न झिड़को और उन से सादर बात बोलो।

وَقَطِصْنَا نَبَأَ الْكَافِرِينَ ۚ وَفَالِ الْيَمِينِ ۖ إِنْ يَأْمُرُ
عِبْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَنفَعُ لَهَا
أُفٌ وَلَا تَنْفَعُهُمَا يُفٌ ۚ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝

24. और उन के लिये विनम्रता का बाजू दया से झुका² दो, और प्रार्थना करो

وَاخْلُصْ لَهُمَا جَنَاحَ الذَّلِيلِ مِنَ الرَّحْمَةِ رَبِّكَ ۚ إِنَّ

1 अर्थात् अब्राह संसार में सभी को जीविका प्रदान करता है।

2 अर्थात् उन के साथ विनम्रता और दया का व्यवहार करा।

हैं मेरे पालनहार। उन दोनों पर दया कर, जैसे उन दोनों ने बाल्यावस्था में मेरा लालन-पालन किया है।

اَرْحَمَ مَا كَانَ لِي فِي صَبِيٍّ

25. तुम्हारा पालनहार अधिक जानता है जो कुछ तुम्हारी अन्तरात्माओं (मन) में है। यदि तुम सदाचारी रहे, तो वह अपनी ओर ध्यानमग्न रहने वालों के लिये अति क्षमावान् है।

وَكَلَّا عَلَمُوا أَنِّي لَأَعْلَمُ لَكُمْ تَكْوِيْنًا صَوِيْرًا
كَانَ لِلْآقَابِيْنَ عَزِيْرًا

26. और समीपवर्तियों को उन का स्वन्व (हिस्सा) दो, तथा दारिद्र और यात्री को, और अपव्यय¹ न करो।

وَأَنِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقُّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَبَيْنَ السَّجَلِ
وَلَا تُبْذِرْهُنَّ رِيًّا

27. वास्तव में अपव्ययी शैतान के भाई है और शैतान अपने पालनहार का अति कृतघ्न है।

بَيْنَ الْمَلَكِيْنَ كَانُوا الْخُسْرَانَ الشَّيْطَانُ وَكَانَ
الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ لَعُوْرًا

28. और यदि आप उन से विमुख हों अपने पालनहार की दया की खोज के लिये जिस की आशा रखते हों तो उन से सरल² बात बोलें।

وَالَّذِيْ تَرْمِضُ مِنْهُمْ أَيْنَ رَّحْمَةٍ مِنْ رَبِّكَ تَرْجُوعًا فَقُلْ
لَهُمْ قَوْلًا مَّسْرُوْرًا

29. और अपना हाथ अपनी गरदन से न बांध³ लो, और न उसे पूरा खोल दो कि निन्दित विवश हो कर रह जाओ।

وَلَا تَجْمَسْ يَدَكَ مَفْلُوْلَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَمْسُطْهَا كُلَّ
الْبُطْحِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُوْرًا

30. वास्तव में आप का पालनहार ही बिस्मृत कर देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है तथा संकीर्ण कर देता है। वास्तव में वही अपने दामो

وَنَ لَّيْسَ يَبْسُطُ الرِّمْقَ لَيْسَ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ
بِعَيْبِهِ وَخَيْرٌ الْبَصِيْرِ

1 अर्थात् अपरार्थित और दुष्कर्म में खर्च न करो।

2 अर्थात् उन्हें सरलता से समझा दे कि अभी कुछ नहीं है। जैसे ही कुछ आया तुम्हें अवश्य दूंगा।

3 हाथ बांधने और खोलने का अर्थ है, कपण तथा अपव्यय करना। इस में व्यय और दान में संतुलन रखने की शिक्षा दी गयी है।

(वंदों) से अनि सूचित¹ देखने वाला है।²

31. और अपनी संतान को निर्धन हो जाने के भय से बध न करो, हम उन्हें तथा तुम्हें जीविका प्रदान करेंगे, वास्तव में उन्हें बध करना महा पाप है।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغُوا الْاِسْمَ ۚ وَبِذَنبِكُمْ قَتَلْتُمُوهُمْ كَانَ جُحُومًا كَثِيرًا ۝

32. और व्यभिचार के समीप भी न जाओ, वास्तव में वह निर्लज्जा तथा बुरी रीति है।

وَلَا تَقْرَبُوا الزَّوْجَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

33. और किसी प्राण को जिसे अल्लाह ने हराम (अवैध) किया है, बध न करो, परन्तु धर्म विधान³ के अनुसार। और जो अत्यचार से बध (निहत) किया गया हो हम ने उस के उत्तराधिकारी को अधिकार⁴ प्रदान किया है। अतः वह बध करने में अतिक्रमण⁵ न करे, वास्तव में उसे सहायता दी गयी है।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَمَن يَفْعَلْ مَطْلُوبًا فَقَدْ جَحَدَ بِوَلِيِّهِ سُنْطًا ۚ وَلَا تَعْلَمُونَ لِي الْقَتْلَ ۚ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۝

34. और अनाथ के धन के समीप भी न जाओ, परन्तु ऐसी रीति से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये, और वचन पूरा करो, वास्तव में वचन के विषय में प्रश्न किया जायेगा।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتَامَىٰ إِلَّا بِأَتَمِّهَا ۚ بَيْنَهُم مَّا بَلَغُوا مِنْهُمُ الْمَتَّ ۚ وَأُولَٰئِكَ الْعَهْدُ ۚ كَانَ مَسْئُورًا ۝

1 अर्थात् वह सब की दशा और कौन किस के योग्य है देखना और जानना है।

2 हदीस में है कि शिर्क के बाद सब से बड़ा पाप अपनी संतान को खिलाने के भय से मार डालना है। (बुखारी, 4477 मुस्लिम 86)

3 अर्थात् प्रतिहन्या में अधवा विवाहित होते हुये व्यभिचार के कारण अधवा इस्लाम से फिर जाने के कारण।

4 अधिकार का अर्थ यह है कि वह इस के आधार पर हन् दण्ड की मांग कर सकता है अधवा बध या अर्थ दण्ड लेने या क्षमा कर देने का अधिकारी है।

5 अर्थात् एक के बदले दो को या दूसरे की हत्या न करे।

35. और पूरा नाप कर दो, जब नापो,
और सही तराजू से तौलो। यह अधिक
अच्छा और इस का परिणाम उत्तम है।
36. और ऐसी बात के पीछे न पड़ो, जिस
का तुम्हें कोई ज्ञान न हो, निश्चय
कान तथा आँख और दिल इन सब
के बारे में (प्रलय के दिन) प्रश्न
किया जायेगा।⁽¹⁾
37. और धरती में अकड़ कर न चनो,
वास्तव में न तुम धरती को फाड़
सकोगे, और न लम्बाई में पर्वतों
तक पहुँच सकोगे।
38. यह सब बातें हैं। इन में बरी बात
आप के पालनहार को अप्रिय है।
39. यह तत्वदर्शिता की वह बातें हैं, जिन
की वही (प्रकाशना) आप की ओर
आप के पालनहार ने की है, और
अब्राह के साथ कोई दूसरा पूज्य न
बना लेना, अन्यथा नरक में निन्दित
तिरस्कृत कर के फेंक दिये जाओगे।
40. क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें पुत्र
प्रदान करने के लिये विशेष कर
लिया है और स्वयं ने फारिशतों को
पुत्रियाँ बना लिया है? वास्तव में तुम
बहुत बड़ी बात कह रहे हो।²

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كُنْتُمْ وَرَاقًا بِالْمَقَاصِ الْاِسْتَقْيَاسِ
ذَلِكَ خَيْرٌ حَسَنًا تَوْفِيلاً

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ
وَالْأَفْئِدَةَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُورًا

وَلَا تَحْسَبِ فِي الْأَرْضِ مَرَدًّا إِنَّكَ تَرْجُو الْأَرْضَ
وَلَنْ تَنْفَعَهَا نِجَالٌ طُولًا

كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا

ذَلِكَ وَمِمَّا أَوْفَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُنْفِلَ فِي جَهَنَّمَ
مَكْرُوهًا مِمَّا دُخِرَ

أَلَمْ نَصْلَمْ رَبَّنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَخَذْنَا مِنَ الْمَلَكَةِ
إِنَّا أَنْكُرُكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا

1 अब्राह प्रलय के दिन इन को बोलने की शक्ति देगा। और वह उस के विरुद्ध साक्ष्य देगे (देखिये सूरह हा, मीम मज्दा, आयत: 20-21)

2 इस आयत में उन अर्वा का खण्डन किया गया है जो फारिशतों को अब्राह की पुत्रियाँ कहने थे। जब कि स्वयं पुत्रियों के जन्म से उदास हो जाने थे और कभी ऐसा भी हुआ कि उन्हें जीवन गाड़ दिया जाता था। तो बनाओ यह कहाँ का

41 और हम ने विविध प्रकार से इस कुरआन में (तथ्यों का) वर्णन कर दिया है ताकि लोग शिक्षा ग्रहण करें परन्तु उस ने उन की घृणा को और अधिक कर दिया।

وَلَقَدْ مَكَّنَّا فِي هَذِهِ الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَيُهْتَفَمَ
الْأَنْفُسَ ۝

42. आप कह दें कि यदि अब्राह के साथ हमारे पूज्य होते, जैसा कि वह (मिश्रणवादी) कहते हैं, तो वह अर्श (सिंहासन) के स्वामी (अब्राह) की ओर अवश्य कोड़ें राह¹ खोजते।

فَلَوْ كَانَتْ مَعَهُ آيَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذْ اسْتَعَاذَ إِلَى
الْعِشِيِّ ۝

43. वह पवित्र और वहन उच्च है, उन बातों से जिन को वे बनाते हैं।

مُجَسَّمَةٌ وَعَلَى كَمَا يَقُولُونَ عَلَوْ كَيْدُهُ ۝

44. उस की पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है। और नहीं है कोई चीज परन्तु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किन्तु तुम उन के पवित्रता गान को समझते नहीं हो। वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है।

لَسْتَ تَعْلَمُ السَّمَوَاتِ السَّبْعَ وَالْأَرْضَ وَمَنْ فِيهِنَّ
وَمَنْ يَنْسُبُ إِلَهُاتٍ مِثْلَهُ يَكْفُرُ ۝ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ
تَسْبِيحَهُ فَتَعْلَمُونَ كَأَن يَبْدُوَ خَفِيًّا ۝

45 और जब आप कुरआन पढ़ते हैं, तो हम आप के बीच और उन के बीच जो आखिरत (परलोक) पर इमान नहीं लाने, एक छुपा हुआ आवरण (पर्दा) बना² देते हैं।

فَلَا تَرَوْنَ الْقُرْآنَ جَسَدًا مِثْلَكَ وَمَنْ أَعْيَنَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فَجَاءَ تَشْوِيرُهُ ۝

न्याय है कि अपने लिये पुत्रियों को अप्रिय समझने हो और अब्राह के लिये पुत्रियाँ बना रखीं हो?

1 ताकि उस से संघर्ष कर के अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें।

2 अर्थात् परलोक पर इमान न लाने का यही स्वभाविक परिणाम है कि कुरआन को समझने की योग्यता खो जाती है।

46. तथा उन के दिलों पर ऐसे खोल चढ़ा देते हैं कि उस (कुर्आन) को न समझें, और उन के कानों में बोझ। और जब आप अपने अकेले पालनहार की चर्चा कुर्आन में करते हैं तो वह घृणा से मुँह फेर लेते हैं।

47. और हम उन के विचारों से भली भौति अवगत हैं, जब वे कान लगा कर आप की बात सुनते हैं, और जब वे आपस में कानाफूसी करते हैं। जब वे अन्याचारी करते हैं कि तुम लोग तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण¹ करते हो।

48. सोचिये कि वह आप के लिये कैसे उदाहरण दे रहे हैं? अन् वे कुपथ हो गये, वह सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

49. और उन्होंने ने कहा: क्या हम जब अस्थियाँ और चूर्ण विचूर्ण हो जायेंगे तो क्या हम वास्तव में नई उत्पत्ति में पुनः जीवित कर दिये² जायेंगे?

50. आप कह दें कि पत्थर बन जाओ, या लोहा।

51. अथवा कोई उत्पत्ति जो तुम्हारे मन में इस से बड़ी हो। फिर वे पूछते हैं कि कौन हमें पुनः जीवित करेगा? आप कह दें: वही जिस ने प्रथम चरण

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوا قَوْلَ آيَاتِهِ
وَتُفَاهَا وَكَرَّرْنا ذِكْرَكَ فِي الْقُرْآنِ مُوحِّدَةً وَلَوْ عَلَي
لُؤْلُؤِهِمْ يَقُولُونَ

لَهُمْ أَكَلُومًا يَسْتَمِعُونَ بِهِ رُسُلَهُمْ مِنْ أَمْرِكَ
وَوَضَّعُوا عُيُودًا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ
وَأَنْزَلْنَا سَحَابًا

أَنْظُرْ كَيْفَ يَخْرُجُونَ لَأَمَّا آلُ لُؤْلُؤٍ لَّا يَسْتَمِعُونَ
نَبِيَّهُمْ

وَقَالُوا لَوْلَا أَلَمَتْ أَيْدِي رَبِّكَ أَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُحْضًى
جَبَدًا

قُلْ لَّؤْلُؤُكُمْ نَارٌ أَوْ حَبِيدَانِ

أَوْ حَقًّا وَمِمَّا كُتِبَ فِي صُورِكُمْ تَقُولُونَ مَنْ
يُعِيدُنَا قُلِ الْيَوْمَ نَطْرُكُمُ أَوَّلَ مَرَّةٍ
فَسَيَحْشُرُونَ لَكُمْ رَبُّكُمْ رُؤُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى

1 मक्का के काफिर छुप छुप कर कुर्आन सुनते। फिर आपस में परामर्श करते कि इस का तोड़ क्या हो? और जब किसी पर संदेह हो जाता कि वह कुर्आन से प्रभावित हो गया है। तो उसे समझाने कि इस के चक्र में क्या पड़े हो इस पर किसी ने जादू कर दिया है इस लिये वहकी वहकी बातें कर रहा है।

2 ऐसी बात वह परिहाम अथवा इन्कार के कारण कहते थे।

में तुम्हारी उत्पत्ति की है। फिर वह आप के आगे सर हिलायेंगे¹, और कहेंगे- ऐसा कब होगा? आप कह दें कि सभवतः वह समीप ही है।

52. जिस दिन वे तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की प्रशंसा करने हुये स्वीकार कर लोगे² और यह सोचोगे कि तुम (संसार में) थोड़े ही समय रहे हो।

53. और आप मेरे भक्तों से कह दें कि वह बात बोलें जो उत्तम हो, वास्तव में शैतान उन के बीच बिगाड़ उत्पन्न करना चाहता³ है। निश्चय शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।

54. तुम्हारा पालनहार तुम से भली भॉति अवगत है, यदि चाहें तो तुम पर दया करे, अथवा यदि चाहे तो तुम्हें यातना दे, और हम ने आप को उन पर निरीक्षक बना कर नही भेजा⁴ है।

55 (हे नबी!) आप का पालनहार भली भॉति अवगत है उस से जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने प्रधानता दी है कुछ नबियों को कुछ पर, और हम ने दावूद को जन्नूर (पुस्तक) प्रदान की।

هُوَ قُلُوبُ مَنْ لَمْ يَكُنْ قَرِيبًا ۝

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَقُولُ
رَبَّنَا إِنَّا أَكُنَّا بِآيَاتِكَ أَكْفَرًا

وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ
يُفْرِقُ بَيْنَكُمْ وَالشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا
مُبِينًا ۝

رَبَّنَا إِنَّا أَعْتَدْنَا لَكَ مِنْ شَيْءِ عَمَلِنَا أَتَيْنَا نَحْنُ
وَبِأَرْسَنَتَ عَلَيْهِمْ وَكَانَ

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ
فَعَلْنَا بَعْضَ الْيُوسُفَ عَلَى بَعْضٍ وَنَسْنَدُ فَذَرْنَاهُمْ

1 अर्थात् परिहास करने हुये आश्चर्य से सर हिलायेंगे।

2 अर्थात् अपनी कब्रों से प्रलय के दिन जीवित हो कर उपस्थित हो जाओगे।

3 अर्थात् कटु शब्दों द्वारा।

4 अर्थात् आप का दायित्व केवल उपदेश पहुँचा देना है, वह तो स्वयं अस्त्राह के समीप होने की आशा लगाये हुये हैं, कि कैसे उस तक पहुँचा जाये तो भला वे पूज्य कैसे हो सकते हैं।

56. आप कह दें कि उन को पुकारो, जिन को उस (अब्लाह) के सिवा (पूज्य) समझने हो। न वे तुम से दुख दूर कर सकते, और न (तुम्हारी दशा) बदल सकते हैं।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَفَعْتُمْ مِنْ دُونِي فَلَا شَافِعِينَ
كُفَّ الصَّوْتُ عَنْكُمْ وَالْإِجْوَادُ

57. वास्तव में जिन को यह लोग¹ पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामिप्य प्राप्त करने का साधन² खोजते हैं, कि कौन अधिक समीप है और उस की दया की आशा रखने हैं। और उस की यातना से डरने हैं। वास्तव में आप के पालनहार की यातना डरने योग्य है।

أَوَشَيْتَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ الْوَسِيَّةِ
أَتَأْتُمُ الْغُثَّ وَتَذَرُونَ الْكَثْفَ وَأَنْتُمْ عُنَادِي
رَبِّ عَدَابِ رَبِّكَ كَانَ مُحَذِّراً

58. और कोई (अन्याचारी) बम्बी नहीं है परन्तु हम उसे प्रलय के दिन से पहले ध्वस्त करने वाले या कड़ी यातना देने वाले हैं। यह (अब्लाह के) लेख में अंकित है,

ذَلِكَ مِنْ قُرْآنِ الرَّأْسِ مَهْلُوكُهُ أَقْبَلَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
أَوْ مَعَهُ يَوْمَ عَذَابٍ شَدِيدٍ كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ
مُسْتُظْهِراً

59. और हमें नहीं रोका इस से कि हम निशानियाँ भेजें किन्तु इस बात ने कि बिगल लोगों ने उन्हें झुठला³ दिया। और हम ने समुद्र को ऊँटनी का खुला चमत्कार दिया, तो उन्होंने ने उस पर अन्याचार किया। और हम चमत्कार डराने के लिये ही भेजते हैं।

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا
الَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهَتِهِمْ كَاذِبُونَ وَتَبَا لَعُودَ الَّذِينَ مَتَّعُوا تَطْلُوعِهَا
وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَعْوِفاً

60. और (हे नबी!) याद करो जब हम

وَرَدَّ قَسَائِدَ الَّذِينَ كَانُوا يُرْسِلُونَ وَأَنْتُمْ كَاذِبُونَ

1 अर्थात् मुशर्रिक जिन नबियों, महापुरुषों और फरिश्तों को पुकारने हैं।

2 साधन से अभिप्रेत सत्कर्म और सदाचार है।

3 अर्थात् चमत्कार की माँग करने पर चमत्कार इस लिये नहीं भेजा जाता कि उस के पश्चात् न मानने पर यातना का आना अनिवार्य हो जाता है, जैसा कि भाष्यकारों ने लिखा है।

ने आप से कह दिया था कि आप के पालनहार ने लोगों को अपने नियंत्रण में ले रखा है, और यह जो कुछ हम ने आप को दिखाया ¹ उस को और उस वृक्ष का जिस पर कूर्आन में धिक्कार की गयी है हम ने लोगों के लिये एक परीक्षा बना दिया ² है, और हम उन्हें चेतावनी पर चेतावनी दे रहे हैं, फिर भी वह उन की अवैज्ञा को ही अधिक करती जा रही है।

لَقَدْ آتَيْنَا الْإِنْسَانَ الْفِطْرَةَ الْكَافَّةَ ۚ وَالنَّجْمُ أَشْجَارٌ مَّسْكُورَةٌ
الْقُرْآنُ وَنُوحُوا حَمَلًا مَّرِيدًا ۚ الْإِنشِيءُ نَارًا كَامِرًا ۚ

61. और (याद करो), जब हम ने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्जदा करो तो इबलीस के सिवा सब ने सज्जदा किया उसे ने कहा क्या मैं उसे सज्जदा करूँ जिसे तू ने गारे से उत्पन्न किया है?

وَمَدَنَّا بِمُوسَى الْكِبْرِيَّا ۚ وَنُوحُوا حَمَلًا مَّرِيدًا ۚ
إِنشِيءُ نَارًا كَامِرًا ۚ

62. (तथा) उस ने कहा: तू बता, क्या यही है जिसे तूने मुझ पर प्रधानता दी है? यदि तू ने मुझे प्रलय के दिन तक अवसर दिया तो मैं उस की संतति को अपने नियंत्रण में कर लूँगा ³ कुछ के सिवा।

قَالَ آتَيْنَاكَ هَذِهِ الْقُرْآنَ عَلَى لَيْلٍ مُّجَرَّبَةٍ
إِنشِيءُ نَارًا كَامِرًا ۚ

63. अब्राह ने कहा: "चले जाओ", जो उन में से तेरा अनुसरण करेगा तो

قَالَ أَذْهَبَ قَسْرُ نَبْعِكَ مِنْهُمْ قَبْلَ جَهَنَّمَ

1 इस से संकेत "मेमराज" की ओर है। और यहाँ "क या" शब्द का अर्थ स्वप्न नहीं बल्कि आँखों से देखना है। और धिक्कारे हुये वृक्ष से अभिप्राय जस्कूम (धोहड) का वृक्ष है। (सहीह बुखारी, हदीस, 4716)

2 अर्थात् कारिफों के लिये जिन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ही रात में बैतुल मुकद्दस पहुँच जायें फिर वहाँ से आकाश की सैर कर के वापस मक्का भी आ जायें।

3 अर्थात् कुपथ कर दूँगा।

निश्चय नरक तुम सब का प्रतिकार
(बदला) है, भरपूर बदला।

جَزَاءُكُمْ جَزَاءُ تَقْوُورٍ ۝

64. तू उन में से जिस को हो सके अपनी
ध्वनि¹ से बहका ले। और उन पर
अपनी सवार और पैदल (सेना) चढ़ा²
ले। और उन का (उन के) धनो और
सन्तान में साझी बन³ जा। तथा उन्हें
(मिथ्या) वचन दे। और शैतान उन्हें
धोखे के सिवा (कोई) वचन नहीं देता।

وَنَسْفَعُكُمْ مِّنْ لَّدُنَّ مَتَّعَتِهِمْ بِصَوْتِكَ
وَجَبَّ عَلَىٰ هُمْ بِحِيلِكَ وَرَجَلَتِ وَشَارَكَهُمُ
الْأَمْوَالُ وَالْأَوْلَادُ وَبَدَّ هُمْ ذُرِّيَّةً هُمُ الشَّيْطَانُ
الْأَعْرَابُ ۝

65. वास्तव में जो मेरे भक्त है उन पर
तेरा कोई बश नहीं चल सकता। और
आप के पालनहार का सहायक होना
यह बहुत है।

إِنَّ جَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ شَيْءٌ وَلَوْ بِرَبِّكَ
وَكَيْلًا ۝

66. तुम्हारा पालनहार तो वह है जो
तुम्हारे लिये सागर में नौका चलाता
है ताकि तुम उस की जीविका की
खोज करो, वास्तव में वह तुम्हारे
लिये अति दयावान् है।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُرِيكُمُ الْغَيْثَ فِي الْبَحْرِ لِيَسْتَعْمِلُوا
مِنْ فَضْلِهِ إِنَّكَ كَانُ بِكُمُ رَحِيمًا ۝

67. और जब सागर में तुम पर कोई
आपदा आ पड़ती है, तो अज्ञाह के
सिवा जिन को तुम पुकारते हो खो
जाते (भूल जाते) हो।⁴ और जब
तुम्हें बचा कर धल तक पहुँचा देता
है तो मुख फेर लेते हो। और मनुष्य
है हि अति कृतघ्न।

وَرَدَّ أَمَتَكُمْ الْفُجْرَىٰ الْبَعْرَىٰ مِّنْ تَدْعُونَ
إِلَّاهًا فَلَمَّا نَجَّكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ
الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝

1 अर्थात् गाने और बाजे द्वारा।

2 अर्थात् अपने जिश्म और मनुष्य सहायको द्वारा उन्हें बहकाने का उपाय कर ले

3 अर्थात् अवैध धन अर्जित करने और व्यभिचार की प्रेरणा दे

4 अर्थात् ऐसी दशा में केवल अज्ञाह याद आता है और उसी से सहायता माँगते
हो किन्तु जब सागर से निकल जाते हो तो फिर उन्हीं देवी देवताओं की बंदना
करने लगते हो।

68. क्या तुम निर्भय हो गये हो कि अल्लाह तुम्हें थल (धरती) ही में धंसा दे? अथवा तुम पर पथरीली ओधी भेज दे? फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ।

أَوَإِذَا هُم مِّنْ تُخَيْفَ يَكُونُ جَانِبَ نَبِّئِ وَيَرْسِلَ عَلَيْهِمْ حَاصِبًا نُّعَزِّجُ لَكُمْ ذُرِّيَّتًا

69. या तुम निर्भय हो गये हो कि फिर उस (सागर) में तुम को दूसरी बार ले जाये, फिर तुम पर वायु का प्रचण्ड झोंका भेज दे, फिर तुम को डूबो दे, उस कुफ़्र के बदले जो तुम ने किया है। फिर तुम अपने लिये उसे नहीं पाओगे जो हम पर इस का दोष¹ धरे।

أَمْ إِنَّمَا هُمْ يُقَيِّدُ كُفْرَهُ تَارَةً أُخْرَى فَيَرْسِلُ عَلَيْهِمْ قَارِصًا مِّنَ الرِّيحِ يَصْفِرُهُمْ فَمَا تَكْفُرُ لَهُ ثُمَّ لَأَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

70. और हम ने बनी आदम (मानव) को प्रधानता दी और उन्हें थल और जल में सवार² किया, और उन्हें स्वच्छ चीजों से जीविका प्रदान की, और हम ने उन्हें बहुत सी उन चीजों पर प्रधानता दी जिन की हम ने उत्पत्ति की है।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَخَلَقْنَاهُم مِّنَ الطِّينِ وَزَوَّجْنَاهُم مِّنَ الظَّهِيرِ وَقَفَّضْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ حَلَقَاتِ الْفَيْصِلِ

71. जिस दिन हम सब लोगों को उन के अग्रणी के साथ बुलायेंगे तो जिन का कर्मलेख उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा तो वही अपना कर्मलेख पढ़ेंगे और उन पर धागे बराबर भी अत्याचार नहीं किया जयेगा।

يَوْمَ نَدْعُو كُلَّ أُنَاسٍ بِإِيمَانِهِمْ فَمَنْ أَكُنَّ يَتَّبِعُهُ فَأُولَئِكَ يُقَرَّرُونَ كَتَبْنَاهُ وَلَا يَظْلُمُونَ فَنُتِلَ

72. और जो इस (संसार) में अन्धा³ रह गया तो वह आखिरत (परलोक) में भी अन्धा और अधिक कुपथ होगा।

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَى فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَى وَأَصْلُ بَيْنِهِ

1 और हम से बदले की मांग कर सके।

2 अर्थात् सवारी के साधन दिये।

3 अर्थात् सत्य से अन्धा।

73. और (हे नबी!) वह (काफिर) समीप था कि आप को उस बह्वी से फेर दें जो हम ने आप की ओर भेजी है ताकि आप हमारे ऊपर अपनी ओर से कोई दूसरी बात घड लें, और उस समय वह आप को अवश्य अपना मित्र बना लेते।

فَلَنْ كَاذِبٌ يَفْعِلُونَكَ مِنَ الدَّاعِيِ اَوْحَيْنَا إِلَيْكَ
يُغْتَرَىٰ عَلَيْكَ أَمْرٌ فَرَدُّوا إِلَيْكَ حَبِيرًا

74. और यदि हम आप को सुदृढ़ न रखते, तो आप उन की ओर कुछ न कुछ झुक जाते।

وَلَوْلَا اَنْ تَشْتَكِ لَفَنَدْنَاكَ لِزُلَّةٍ تُغِيثُنَا
عَلَيْهَا

75. तब हम आप को जीवन की दुगुनी तथा मरण की दोहरी यातना चखाते। फिर आप अपने लिये हमारे ऊपर कोई सहायक न पाते।

اِذَا رَأَوْكَ يَصْغِفُ أَسْمُوكَ وَيَصْغِفُ أَسْمَاكَ ثُمَّ
لَا يُجِدُ لَكَ عَلَيْكَ نَصِيرًا

76. और समीप है कि वह आप को इस धरती (मक्का) से बिचला दे ताकि आप को उस से निकाल दें, तब वह आप के पश्चात् कुछ ही दिन रह सकेंगे।

وَإِنْ كَاذِبٌ يَشْتَرِيكَ مِنَ الْأَرْضِ يَكْفُرُ
بِمَعَارِئِهِ لَا يَسْتَوُونَ حِلْفُكَ الْأَوَّلِينَ

77. यह¹ उस के लिये नियम रहा है जिसे हम ने आप से पहने अपने रसूलों में से भेजा है। और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन नहीं पायेंगे।

سَاءَ مَنْ قَدَّارُونَ قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا نُجِئُ
إِسْمٰئِيلَ أَخْمَرَ

78. आप नमाज की स्थापना करें सूर्यास्त से रात के अन्धेरे² तक, तथा प्रातः (फज्र के समय) कुर्आन पढ़िये वास्तव में प्रातः कुर्आन पढ़ना उपस्थिति का समय³ है।

أَقِمِ الصَّلَاةَ بِدُحُولِ الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ
الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا

1 अर्थात् रसूल को निकालने पर यातना देने का हमारा नियम रहा है।

2 अर्थात् जुहर, अस्त्र और मग़रिब तथा इशा की नमाज।

3 अर्थात् फज्र की नमाज के समय रात और दिन के फरिश्ते एकत्र तथा उपस्थित

79. तथा आप रात के कुछ समय जागिये फिर "तहज्जुद"¹ पढ़िये। यह आप के लिये अधिक (नफल) है। संभव है आप का पालनहार आप को (मकामे महमूद)² प्रदान कर दे।

80. और प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार। मुझे प्रवेश³ दे सत्य के साथ, और निकाल सत्य के साथ। तथा मेरे लिये अपनी ओर से सहायक प्रभुत्व बना दे।

81. तथा कहिये कि सत्य आ गया, और असत्य ध्वस्त-निरस्त हो गया, वास्तव में असत्य को ध्वस्त-निरस्त होना ही है।⁴

82. और हम कुर्आन में वह चीज उतार रहे हैं जो आरोग्य तथा दया है इंसान वालों के लिये। और वह अत्याचारियों की क्षति को ही अधिक करता है।

83. और जब हम मानव पर उपकार करते हैं, तो मुख फेर लेता है और

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ بِأَوَّلِ اللَّيْلِ لَعَلَّكَ تَرْضَاهُ
رَبُّكَ يَقُولُ الْمَعْمُودُ

وَقُلْ رَبِّ اُدْخِلْنِيْ مَدْحَكَ وَاصْرِفْنِيْ عَنْ رَدِّكَ
وَصَدِّقْنِيْ بِوَعْدِكَ مِنْ اَمَانِكَ سُبْحَانَكَ تَعَالَى

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَّقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ
زَهُوًّا

وَسَنَزِيلُ مِنَ الْقُرْآنِ نَارُ سَاطِئَةٍ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ
وَلَا تُرِيدُ الظَّالِمِينَ الْاِفْتَارَ

وَإِذَا أَلْمَعَتْ عَيْنُ الْإِنْسَانِ اعْرَضَ وَهُوَ بَعِيدٌ

रहते हैं। (सहीह बुखारी-359 सहीह मुस्लिम-632)

1 तहज्जुद का अर्थ है: रात के अन्तिम भाग में नमाज पढ़ना

2 (मकामे महमूद) का अर्थ है प्रशंसा योग्य स्थान। और इस से अभिप्राय वह स्थान है जहाँ से आप प्रलय के दिन शफाअत (सिफारिश) करेंगे

3 अर्थात् मदीना में, मक्का से निकाल कर।

4 अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का (की विजय के दिन) उस में प्रवेश किया तो कौबा के आस पास तीन सौ साठ मुर्नियाँ थीं। और आप के हाथ में एक छड़ी थी जिस से उन को मार रहे थे। और आप यही आयत पढ़ते जा रहे थे। (सहीह बुखारी, 4720 मुस्लिम 1781)

दूर हो जाना¹ है। तथा जब उसे दुःख पहुँचता है, तो निराश हो जाना है।

وَاِذَا مَسَّهُ الْغَمُّ نَشِئْنَا

84. आप कह दें कि प्रत्येक अपनी आस्था के अनुसार कर्म कर रहा है, तो आप का पालनहार ही भली भाँति जान रहा है कि कौन अधिक मीठी डगर पर है।

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلِهِ فَنُصَرِّفُ الْوُجُوهَ عَنْ حَيْثُ شَاءَ وَنَحْنُ عَلِيمُونَ
هُوَ اَعْلَمُ بِبَيْنِا

85. (हे नबी!) लोग आप से रूह² के विषय में पूछते हैं, आप कह दें रूह मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया वह बहुत थोड़ा है।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيلًا

86. और यदि हम चाहें तो वह सब कुछ ले जायें जो आप की ओर हम ने वही किया है, फिर आप हम पर अपना कोई सहायक नहीं पायेंगे।

وَلَوْ شِئْنَا لَمَسَّا هَبَّ اِلَيْنَا اَوْ حِصْرًا لَّيْلًا
لَا يَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا

87. किन्तु आप के पालनहार की दया के कारण (यह आप को प्राप्त है)। वास्तव में उस का प्रदान आप पर बहुत बड़ा है।

اِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ
كَبِيرًا

88. आप कह दें: यदि सब मनुष्य तथा जिन्ह इस पर एकत्र हो जायें कि इस कुर्आन के समान ला देंगे, तो इस के समान नहीं ला सकेंगे, चाहे वह एक दूसरे के समर्थक ही क्यों न हो जायें।

قُلْ لَّيْسَ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْاِنْسُ عَلَى اَنْ يَّاتُوا
بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَأْتُوْنَ بِشَيْءٍ وَهُمْ لَا يَخْتَعِنُهُمْ
لِيَعْمِلُوْا

89. और हम ने लोगों के लिये इस कर्आन में प्रत्येक उदाहरण विविध शैली में वर्णित किया है, फिर भी

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا الْاَيَاتِ فِيْ هَذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ
مَنْكِبٍ فَاَلَيْسَ الْاِنْفُورُ

1 अर्थात् अल्लाह की आज्ञा का पालन करने में।

2 «रूह» का अर्थ आत्मा है जो हर प्राणी के जीवन का मूल है किन्तु उस की वास्तविकता क्या है? यह कोई नहीं जानता। क्योंकि मनुष्य के पास जो ज्ञान है वह बहुत कम है।

अधिकतर लोगों ने कफ्र के सिवा
अस्वीकार ही किया है।

90. और उन्होंने ने कहा हम आप पर
कदापि ईमान नहीं लायेंगे, यहाँ तक
कि आप हमारे लिये धरती से एक
चश्मा प्रवाहित कर दें।

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِكَ حَتَّى تُنْجِرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ
يَنْجِيَةً ۝

91. अथवा आप के लिये खजूर अथवा
अँगूर का कोई बाग हो, फिर उस के
बीच आप नहरें प्रवाहित कर दें।

أَوْ تُكُونُ لَكُ جَبَّةٌ مِّنْ لَّيْلِ فَيَنْبَغِي مَخْجَرُ
الْأَنْهَارِ جُلَّةً تَجِيءُ ۝

92. अथवा हम पर आकाश को जैसा
आप का विचार है, खण्ड-खण्ड कर
के गिरा दें, या अल्लाह और फरिश्तों
को साक्षान हमारे सामने ला दें।

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا رَقِيعَتٍ مَّطْنُونَةٍ تَقْطَعُ
وَالْبَلَدُ كُلُّهُ قَيْلٌ ۝

93. अथवा आप के लिये मोने का एक
घर हो जाये, अथवा आकाश में चढ़
जायें और हम आप के चढ़ने का
भी कदापि विश्वास नहीं करेंगे, यहाँ
तक की हम पर एक पुस्तक उतार
लायें जिसे हम पढ़ें। आप कह दें कि
मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो बस
एक रसूल (संदेशवाहक) मनुष्य¹ हूँ।

أَوْ يُكُونُ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ ذُرِّيِّهِ فِي السَّمَاءِ
وَلَنْ نُؤْمِنَ بِقَوْلِكَ حَتَّى تُنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً
مِّنَ السَّمَاءِ ۝

94. और नहीं रोका लोगों को कि वह
ईमान लायें, जब उन के पास

وَمَا مَنَعَهُ النَّاسُ أَنْ يُؤْمِرُوا بِرُؤْسِهِمُ الْهَدَىٰ

1. अर्थात् मैं अपने पालनहार की वही का अनुसरण करता हूँ और यह सब चीजें
अल्लाह के बस में हैं। यदि वह चाहे तो एक क्षण में सब कुछ कर सकता है
किन्तु मैं तो तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ मूझ केवल रसूल बना कर भेजा गया है
ताकि तुम्हें अल्लाह का संदेश सुनाऊँ रहा चमत्कार तो वह अल्लाह के हाथ में
है जिसे चाहे दिखा सकता है। फिर क्या तुम चमत्कार देख कर इमान लाओगे?
यदि ऐसा होता तो तुम कभी के इमान ला चुके होते क्योंकि कुर्आन से बड़ा
क्या चमत्कार हो सकता है।

मार्गदर्शन ' आ गया, परन्तु इस ने कि उन्होंने ने कहा: क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है?

إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا

- 5. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि धरती में फरिश्ते निश्चिन्त हो कर चलते-फिरते होंते, तो हम अवश्य उन पर आकाश से कोई फरिश्ता रसूल बना कर उतारते।

قُلْ لَوْ كَانَ لِی لَارْشٌ مِّنْهُ لَنَسُوْنُ مَطْبِیْعَیْن
لَّنَزِّلُنَا عَلَیْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا

96. आप कह दें कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य¹ बहुत है। वास्तव में वह अपने दासों (बंदों) से सूचित, सब को देखने वाला है।

قُلْ لِّیْ بِأَلْفِ سَهْمٍ مِّنَ الْغَنَىٰ وَیَعْلَمُ لَئِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِیْرًا

97. जिसे अल्लाह सुपथ दिखा दे, वही सुपथगामी है। और जिसे कुपथ कर दे तो आप कदापि नहीं पायेंगे उन के लिये उम के सिवा कोई सहायक। और हम उन्हें एकत्र करेंगे प्रलय के दिन उन के मुखों के बल अंधे तथा गूँगे और बहरे बना कर। और उन का स्थान नरक है जब भी वह बुझने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।

وَمَنْ یُّهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ یُّضِلْ فَلَنْ
یُّهْدِ لَهُمْ آوْیَاتٍ ۖ بَیْنَ ذَٰلِکَ وَتَحْتَ ظِلِّ رِجْمَةٍ
عَلٰی وُجُوْهِهِمْ عِمْیَآءٌ ۖ وَیَلْمَآؤُهُمْ مَّا وَهَمُّوْهُمْ
کَلْبَ خَبَتْ یَدُهُمْ سَوِیْرًا

98. यही उन का प्रतिकार (वदला) है इस लिये कि उन्होंने ने हमारी आयतों के साथ कुफ्र किया, और कहा: क्या जब हम अस्थियाँ और चूर-चूर हो जायेंगे तो नइ उत्पत्ति में पुनः जीवित किये जायेंगे?²

ذَٰلِکَ جَزَاؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ کَفَرُوا بِآیَاتِنَا وَقَالُوا لَآ
کُنَّا مِنْ شَیْءٍ مَّا وَرَقْنَا ۖ إِنَّا تِلْکَ الْمَبْعُوْثُوْنَ ۚ حَقًّا
حَقِیْبًا

1 अर्थात् रसूल तथा पुस्तकें संमार्ग दर्शाने के लिये।

2 अर्थात् मेरे रसूल होने का साक्षी अल्लाह है।

3 अर्थात् ऐसा होना संभव नहीं है कि जब हमारी हड्डियाँ सड़ गल जायें तो हम

99. क्या वह विचार नहीं करते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की है, वह समर्थ है इस बात पर कि उन के जैसी उत्पत्ति कर दे¹ तथा उस ने उन के लिये एक निर्धारित अवधि बनायी है, जिस में कोई संदेह नहीं है। फिर भी अत्याचारियों ने कृप्त के सिवा अस्वीकार ही किया।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
قَادِرٌ عَلَى أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا
لَا يَسْتَوُونَ فِي الْحَيَاةِ إِلَّا الْفُتُورَ ۝

100. आप कह दें कि यदि तुम ही स्वामी होने अपने पालनहार की दया के कोषों के तब तो तुम खर्च हो जाने के भय से (अपने ही पास) रोक रखते, और मनुष्य बड़ा ही कजूम है।

قُلْ لَّوِ انْتُمْ تَسْبِكُونَ خُرَاقًا رَّعِيَهُ رَبِّي رَدًّا
لِّمَا كُنْتُمْ حَفِيَّةَ الْإِيمَانِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ
كُفُورًا ۝

101. और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी², अतः वनी इस्राइल से आप पूछ लें, जब वह (मूसा) उन के पास आया, तो फिरऔन ने उस से कहा हे मूसा। मैं समझता हूँ कि तुझ पर जादू कर दिया गया है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ مُّكَلِّمًا بَيْنَ
يَدَيْهِ وَإِذْ نَادَاهُ نَادَاهُ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ
يَٰمُوسَىٰ مَسْحُورٌ ۝

102. उस (मूसा) ने उत्तर दिया: तूझे विश्वास है कि इन को आकाशों तथा धरती के पालनहार ही ने सोच-विचार करने के लिये उतारा है और हे फिरऔन! मैं तुम्हें निश्चय ध्वस्त समझता हूँ।

قَالَ لَقَدْ خَلَقْنَاكَ مَا آتَيْنَاكَ هَؤُلَاءِ إِلَّا آيَاتِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ يَصَابِرْ وَرَآئِيَ لَأَظُنُّكَ فِى غُرُوبٍ مَّرْجُونٍ ۝

फिर उठाये जायें।

- 1 अर्थात् जिस ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति की उस के लिये मनुष्य को दोबारा उठाना अधिक सरल है, किन्तु वह समझने नहीं है।
- 2 वह नौ निशानियाँ निम्नलिखित थी: हाथ की चमक, लाठी, आकाल, तूफान टिड़ी जूये मेढक, खून और सागर का दो भाग हो जाना।

103. अन्ततः उस ने निश्चय किया कि उन¹ को धरती से² उखाड़ फेंके, तो हम ने उसे और उस के सब साथियों को डुबो दिया।

104. और हम ने उस के पश्चात् बनी इस्राइल से कहा: तुम इस धरती में बस जाओ और जब आखिरत के वचन का समय आयेगा तो हम तुम्हें एकत्र कर लायेंगे।

105. और हम ने सत्य के साथ ही इस (क़ुर्आन) को उतारा है, तथा वह सत्य के साथ ही उतरा है। और हम ने आप को बस शुभ सूचना देने तथा सावधान करने वाला बना कर भेजा है।

106. और इस क़ुर्आन को हम ने थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है, ताकि आप लोगों को इसे रुक रुक कर सुनायें, और हम ने इसे क्रमशः³ उतारा है।

107. आप कह दें कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा ईमान न लाओ, वास्तव में जिन को इस से पहले ज्ञान दिया⁴ गया है, जब उन्हें यह सुनाया जाना है, तो वह मुंह के बल सज्दे में गिर जाते हैं।

108. और कहते हैं: पवित्र है हमारा

فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَفِرَ مِنْهُنَّ الْأَرْضِ فَطَرَقْنَاهُ مِنْ شَمَعِهِ
جَهَنَّمَ

وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِ الْيَمِّ يَنْزِلُ السَّحَابُ الْأَرْضِ
فَأَوَّاهٌ وَمِنَ الْأَجْرَةِ يَنْزِلُ السَّحَابُ

وَالْحَقِّ آتَيْنَاهُ وَالْحَقِّ تَرَىٰ وَمَا كُنْتُمْ إِلَّا مُعْتَرِضِينَ
وَيَذَرُوكَ

وَقَرَأْنَاهُ أَنْزَلَهُ بِاللَّيْلِ عَلَى الْمَلَأَيْنِ مِنَ اللَّيْلِ فَتَرَىٰ
تَنْزِيلَهُ

فَلَنْ أَسْأَلَهُمْ أَوْ لَا تَسْأَلُهُمْ إِنَّ إِلَهُنَّ أَعْلَمُ
مَنْ فِيهِمْ إِنْ يَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِمْ يَجِزُونَ فَلَا تَأْتِي
سُجُودًا

وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كُنَّا إِلَّا مِنَ الْمَقْضُورِينَ

1 अर्थात् बनी इस्राइल को।

2 अर्थात् मिस्र से।

3 अर्थात् तेईस वर्ष की अवधि में।

4 अर्थात् वह विद्वान जिन को क़ुर्आन से पहले की पुस्तकों का ज्ञान है।

पालनहार। निश्चय हमारे पालनहार
का वचन पूरा हो के रहा।

109. और वह मुँह के बल रोते हुये गिर
जाने हैं। और वह उन की विनय को
अधिक कर देता है।

110. हे नबी! आप कह दें कि (अब्राह) कह कर पुकारो, अथवा (रहमान) कह कर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो उस के सभी नाम शुभ हैं। और (हे नबी!) नमाज में स्वर न तो ऊँचा करो, और न उसे नीचा करो और इन दोनों के बीच की राह¹ अपनाओ।

111. तथा कहो कि सब प्रशंसा उस अब्राह के लिये है जिस के कांड संतान नहीं, और न राज्य में उस का कोई साझी है। और न अपमान से बचाने के लिये उस का कोई समर्थक है। और आप उस की महिमा का वर्णन करें।

وَيُخَوِّدُونَ بِلَادَهُ فَإِنْ يَبْتَغُونَ وَيَرْيَدُونَ عَنْهُمْ حُشُوعًا

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَىٰ وَلَا تَجْهَرُوا بِهِنَّ لَكَ وَلَا تَخَافُ بِهِمَا أَنْ تَنفَعَكَ
بَيْنَ ذَلِكَ سُبُطٌ

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ لِنَفْسِهِ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ
كُفْرًا فِي السَّمَوَاتِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الْعَالَمِينَ
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفْرًا شَيْئًا

1 अरब में "अब्राह" शब्द प्रचलित था मगर "रहमान" प्रचलित न था इस लिये वह इस नाम पर आपत्ति करते थे। यह आपत्त इसी का उत्तर है।

2 हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (आरंभिक युग में) मस्जिद में लुप कर रहते थे और जब अपने साथियों को ऊँचे स्वर में नमाज पढ़ाते थे तो मुशरिक उसे सुन कर कुआन को तथा जिस ने कुआन उतारा है और जो उसे लाया है, सब को गालियाँ देते थे। अतः अब्राह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया। (सहीह बुखारी, हदीस नं० 4722)

सूरह कहफ 18

سُورَةُ الْكَافِ

सूरह कहफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 110 आयतें हैं।

- इस में कहफ (गुफा) वालों की कथा का वर्णन है, जिस से दूसरे जीवन का विश्वास दिलाया गया है।
- इस में नसारा (ईसाईयों) को चेतावनी दी गयी है जिन्होंने अब्राहम का पुत्र होने की खान घड़ ली। और शिर्क में उलझ गये, जिस से तौहीद पर आस्था का कोई अर्थ नहीं रह गया।
- इस में दो व्यक्तियों की दशा का वर्णन किया गया है जिन में एक संसारिक सुख में मग्न था और दूसरा परलोक पर विश्वास रखता था। फिर जो संसारिक सुख में मग्न था, उस का दुष्परिणाम दिखाया गया है और संसारिक जीवन का एक उदाहरण दे कर बताया गया है कि परलोक में सदाचार ही काम आयेगा।
- इस में मूसा (अलैहिस्सलाम) की यात्रा का वर्णन करने हुये अब्राहम के ज्ञान के कुछ भेद उजागर किये गये हैं ताकि मनुष्य यह समझे की संसार में जो कुछ होता है उस में कुछ भेद अवश्य होता है जिसे वह नहीं जान सकता।
- इस में (जुल करनैन) की कथा का वर्णन कर के यह दिखाया गया है उस ने कैसे अब्राहम से डरते हुये और परलोक की जवाब देही (उत्तर दायिन्व) का ध्यान रखते हुये अपने अधिकार का प्रयोग किया।
- अन्त में शिर्क और परलोक के इन्कार पर चेतावनी है।

हदीस में है कि जो सूरह कहफ के आरंभ की दस आयतें याद कर ले तो वह दज्जाल के उपद्रव से बचा लिया जायेगा। (महीह मुस्लिम, 809)। दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति रात में सूरह कहफ पढ़ रहा था और उस का घोड़ा उस के पास ही बंधा हुआ था कि एक बादल छा गया और समीप आता गया और घोड़ा बिदकने लगा। जब सवेरा हुआ तो उस ने यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया। आप ने कहा यह शान्ति थी जो कुर्आन के कारण उतरी थी। (दुखारी: 5011, मुस्लिम: 795)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस ने अपने भक्त पर यह पुस्तक उतारी। और उस में कोई टेढ़ी बात नहीं रखी।
2. अति सीधी (पुस्तक), ताकि वह अपने पास की कड़ी यातना से सावधान कर दे, और इमान वालों को जो सदाचार करने हों, शुभ सूचना मुना दे कि उन्हीं के लिये अच्छा बदला है।
3. जिस में वे नित्य सदावासी होंगे।
4. और उन को सावधान करे जिन्होंने कहा कि अल्लाह ने अपने लिये कोई संतान बना ली है।
5. उन्हें इस का कुछ ज्ञान है और न उन के पूर्वजों को। बहुत बड़ी बात है जो उन के मुखों से निकल रही है, वह सरासर झूठ ही बोल रहे हैं।
6. तो संभवतः आप इन के पीछे अपना प्राण खो देंगे मनाप के कारण, यदि वह इस हदीस (कुरआन) पर इमान न लायें।
7. वास्तव में जो कुछ धरती के ऊपर है, उसे हम ने उस के लिये शोभा बनाया है, ताकि उन की परीक्षा लें कि उन में कौन कर्म में सब से अच्छा है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا

فَيَمَّازِي عَنَّا مُمَازِيهِ إِنَّهُ يَهْدِي الْقُلُوبَ الْحَافِيَةَ لَئَلَّامُ الْفُجُورِ أَلَمْ يَجْعَلْ لَكُمْ السَّمْعَ أَنْ تَعْلَمُوا مَا نَتْلُو وَإِنَّمَا يُعَلِّمُهُ الْإِنشَاءُ

شَاقِيقٍ فِيهِ وَأَبْدَانًا

وَرُشْدًا لِلَّذِينَ هَادُوا أَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ سُلْطَانًا

مَا تَعْلَمُونَ مِنْهُ وَمِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ كَذِبَتْ كَلِمَةُ تَعْلَمُونَ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ كَذِبَتْ كَلِمَةُ تَعْلَمُونَ

فَلَعَلَّكَ نَاجِيَةٌ تَعْلَمُ عَلَى أَهْلِ الْبَيْتِ كَذِبَتْ كَلِمَةُ تَعْلَمُونَ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ كَذِبَتْ كَلِمَةُ تَعْلَمُونَ

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ ذِيئَةً لِّمَا اسْتَوْتُمْ إِلَيْكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

8. और निश्चय हम कर देने¹ वाले हैं जो उस (धरती) के ऊपर है उसे (बंजर) धूल।

وَأَنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝

9. (हे नबी!) क्या आप ने समझा है कि गुफा तथा शिला लेख वाले², हमारे अद्भुत लक्षणों (निशानियों) में से थे?³

أَمْ عَرِجْتَ أَنْ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ
كَانُوا مِن آيَاتِنَا عَجَبًا ۝

10. जब नवयुवकों ने गुफा की ओर शरण ली⁴, और प्रार्थना की: हे हमारे पालनहार! हमें अपनी विशेष दया प्रदान कर, और हमारे लिये प्रबंध कर दे हमारे विषय के सुधार का।

إِذْ أَدْوَى الْقَيْثُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا
مِنْ لَدُنْكَ رَحِمَةً وَهَيْئًا لَّنَا مِنْ أَمْرِنَا
رَشْدٌ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि (रकीम) शब्द जिस का अर्थ शिला लेख किया गया है, एक बस्ती का नाम है।

3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति हमारी शक्ति का इस से भी बड़ा लक्षण है।

4 अर्थात् नवयुवकों ने अपने इमान की रक्षा के लिये गुफा में शरण ली। जिस गुफा के ऊपर आगे चलकर उन के नामों का स्मारक शिला लेख लगा दिया गया था।

उल्लेखों से यह विदित होता है कि नवयुवक ईसा अनैहिस्मलाम के अनुयायियों में से थे और रोम के मुशरिक राजा की पूजा थे। जो एकेश्वरवादियों का शत्रु था। और उन्हें मूर्ति पूजा के लिये बाध्य करता था। इस लिये वे अपने इमान की रक्षा के लिये जार्डन की गुफा में चले गये जो नये शाघ्र के अनुसार जार्डन की राजधानी से 8 की० मी० दूर (रजीव) में अवशेषज्ञों को मिली है। जिस गुफा के ऊपर सान स्तंभों की मस्जिद के खंडर और गुफा के भीतर आठ समाधियाँ तथा उत्तरी दीवार पर पुरानी यूनानी लिपी में एक शिला लेख मिला है और उस पर किसी जीव का चित्र भी है। जो कृत्ते का चित्र बताया जाता है और यह (रजीव) ही (रकीम) का बदला हुआ रूप है। (देखिये भाष्य दाबनुल कुर्आन-2/983)

11. तो हमने उन्हें गुफा में सुला दिया कई वर्षों तक।
12. फिर हम ने उन्हें जगा दिया ताकि हम यह जान लें कि दो समुदायों में से किस ने उन के ठहरे रहने की अवधि को अधिक याद रखा है?
13. हम आप को उन की सत्य कथा सुना रहे हैं। वास्तव में वे कुछ नवयुवक थे, जो अपने पालनहार पर ईमान लाये, और हम ने उन्हें मार्गदर्शन में अधिक कर दिया।
14. और हम ने उन के दिलों को सुदृढ़ कर दिया जब वे खड़े हुये, फिर कहा हमारा पालनहार वही है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है। हम उस के सिवा कदापि किसी पूज्य को नहीं पुकारेंगे। (यदि हम ने ऐसा किया) तो (सत्य में) दूर की बात होगी।
15. यह हमारी जाति है जिस ने अब्राह के सिवा बहुत से पूज्य बना लिये। क्यों वे उन पर कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अब्राह पर मिथ्या बात बनाये?
16. और जब तुम उन से विलग हो गये तथा अब्राह के अतिरिक्त उन के पूज्यों से तो अब अमुक गुफा की ओर शरण लो, अब्राह तुम्हारे लिये अपनी दया फैला देगा, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे विषय में जीवन के

قَضَرْنَا عَلَيْهِمْ أَزْوَاجَهُمْ فِي الْكَهْفِ سِتْرَيْنَ
عَدَّةً ۝

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ مِنْهُمُ اثْنَيْنِ أَنْ يَقُولَا هَٰذَا
أَمْرُنَا ۝

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ رَتَّبْنَاهُ
أَمْرًا رَافِعًا ۝

وَنَبِّئُكَ أَنَّ لَهُمُ مُلُوكًا وَفَعَلُوا رَحْمَةً
رَبِّكَ ۝

قَوْلًا قَوْمًا الْمَعْدُونِ دُونَ إِلَٰهِهِمْ
فَعَلُوا بِمُلُوكِهِمْ نَبِيًّا ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ لَمَّا قَامُوا
إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ
وَيُخْرِجَكُم مِّنَ الْأَمْرِ ۝

भोजन है, और उस में से कुछ जीविका (भोजन) लाये, और चाहिये कि सावधानी बरतो। ऐसा न हो कि तुम्हारा किसी को अनुभव हो जाये।

20. क्यों कि यदि वे तुम्हें जान जायेंगे तो तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे, या तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, और तब तुम कदापि सफल नहीं हो सकोगे।

21. इसी प्रकार हम ने उन से अवगन करा दिया, ताकि उन (नागरिकों) को ज्ञान हो जाये कि अल्लाह का वचन सत्य है और यह कि प्रलय (होने) में कोई संदेह¹ नहीं। जब वे² आपस में विवाद करने लगे, तो कुछ ने कहा: उन पर कोई निर्माण करा दो अल्लाह ही उन की दशा को भली भाँति जानता है। परन्तु उन्होंने ने कहा जो अपना प्रभुत्व रखते थे, हम अवश्य उन (की गुफा के स्थान) पर एक मस्जिद बनायेंगे।

22. कुछ³ कहेंगे कि वह तीन है, और चौथा उन का कुत्ता है। और कुछ कहेंगे कि पाँच है, और छठा उन का कुत्ता है यह अन्धरे में तीर चलाते

إِنَّمَعْلَانِ يَقُولُا عَسَلَكُمْ بِرُجُومِكُمْ أَوْ يُؤْتِيَكُمُ اللَّهُ مِن مَّكَتِبِهِمْ وَلَئِنْ تَفْرَحُوا رَبِّا
أَلْبَدِ

وَكَذَلِكَ أَخْرَجْنَا عَنْ بُرُجِهِمْ لِيُعَلِّمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَبَّأُ عِزُّونٌ بَيْنَهُمْ أَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا عَلَيْهِمْ نُبُيَّاكَ رَبُّهُمْ فَاعْبُدْهُمْ قَالِ الَّذِينَ يَخُفُّونَ عَلَىٰ أُمُورِهِمْ لَتُسْجِدَ لَهُمْ عَلَىٰ وَجْهِ تَسْلِيمٍ ۝

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامُهُمْ كَلْبُهُمْ مِّنْ رَّبِّ آخِرُ

1 जिस के आने पर सब को उन के कर्मों का फल दिया जायेगा।

2 अर्थात् जब पुराने सिक्के और भाषा के कारण उन का भेद खल गया और वहाँ के लोगों को उन की कथा का ज्ञान हो गया तो फिर वे अपनी गुफा ही में मर गये। और उन के विषय में यह विवाद उत्पन्न हो गया।

यहाँ यह ज्ञानव्य है कि इस्लाम में ममाधियों पर मस्जिद बनाना, और उस में नमाज पढ़ना तथा उस पर कोई निर्माण करना अवैध है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा। (सहीह बुखारी 435 मुस्लिम, 531, 32)

3 इन से मुराद नबी मल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के अहले किताब है,

हैं। और कहेंगे कि सात है, और आठवाँ उन का कुत्ता है। (हे नबी!) आप कह दें, कि मेरा पालनहार ही उन की संख्या भली भाँति जानता है, जिसे कुछ लोगों के सिवा कोई नहीं जानता ^१ अतः आप उन के संबन्ध में कोई विवाद न करें सिवाये सरसरी बात के और न उन के विषय में किसी से कुछ पूछें, ^२

23. और कदापि किसी विषय में न कहें कि मैं इसे कल करने वाला हूँ।

24. परन्तु यह कि अब्राह ^३ चाहें, तथा अपने पालनहार को याद करें, जब भूल जायें। और कहें संभव है मेरा पालनहार मुझे इस से अधिक समीप सुधार का मार्ग दर्शा दे।

25. और वे गुफा में तीन सौ वर्ष रहे। और नौ वर्ष अधिक ^४ और।

26. आप कह दें कि अब्राह उन के रहने की अवधि से सर्वाधिक अवगत है। आकाशों तथा धरती का परोक्ष वही जानता है। क्या ही खूब है वह देखने

يَعْلَمُ مَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ قَدْ أَتَيْنَاهُم
بِالْأَمْرِ أَكْثَرٍ ۚ وَلَا تَسْأَلْنِي عَنْهُمْ شَيْئًا
أَحَدًا

وَلَا تَقُولَنَّ إِنِّي فَاعٍ ۚ دُونَ خَدَائِعِ

إِلَّا أَنْ يَنْشَأَ اللَّهُ وَادُّعُرْكَ رَادًّا ۚ سَيِّئٌ
وَقُلْ عَسَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِي رَبِّي إِلَىٰ قُرْبٍ مِّنْ
هَدًى مُّشْتَدٍّ ۝

وَكَلِمَتِي كَقَوْلِهِمْ شَيْئًا ۚ وَتَقْرَبِينَ
قَرَابًا ۚ وَاقْبَلِي

قُلْ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسُوا لَهُ حِيبٌ ۚ السَّمَوَاتُ
وَالْأَرْضُ أُنْبِئِيهِ وَأَسْفَعُ مَا لَهُمْ مِّنْ دُونِ
مِّنْ قَلْبٍ ۚ وَلَا يُشِيرُونَ فِي حِكْمَةِ أَحَدٍ ۝

1 भावार्थ यह है कि उन की संख्या का सहीह ज्ञान तो अब्राह ही को है किन्तु वास्तव में ध्यान देने की बात यह है कि इस में हमें क्या शिक्षा मिल रही है।

2 क्योंकि आप को उन के बारे में अब्राह के बनाने के कारण उन लोगों से अधिक ज्ञान है। और उन के पास कोई ज्ञान नहीं। इस लिये किसी से पूछने की आवश्यकता भी नहीं।

3 अर्थात् भविष्य में कुछ करने का निश्चय करें, तो "इन् शा अब्राह" कहें। अर्थात् यदि अब्राह ने चाहा तो।

4 अर्थात् सूर्य के वर्ष से तीन सौ वर्ष, और चाँद के वर्ष से नौ वर्ष अधिक गुफा में सोये रहे।

वाला और सुनने वाला! नहीं है उन का उस के सिवा कोई सहायक, और न वह अपने शासन में किसी को साझी बनाता है।

27. और आप उसे सुना दें जो आप की ओर वही (प्रकाशना) की गयी है आप के पालनहार की पुस्तक में से, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं है और आप कदापि नहीं पायेंगे उस के सिवा कोई शरण स्थान।

28. और आप उन के साथ रहें जो अपने पालनहार की प्रातः-संध्या बंदगी करते हैं वे उस की प्रसन्नता चाहते हैं और आप की आँखें संसारिक जीवन की शोभा के लिये। उन से न फिरने पायें और उस की बात न मानें जिस के दिल को हम ने अपनी याद से निश्चेत कर दिया, और उस ने मनमानी की, और जिस का काम ही उल्लंघन (अवैजा करना) है।

29. आप कह दें कि यह सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से तो जो चाहे ईमान लाये, और जो चाहे कुफ्र करे, निश्चय हम ने अत्याचारियों के लिये ऐसी अग्नि तय्यार कर रखी है जिस की

وَأَنذَرْنَا أَوَّلَ مَا لَوْ أَنَّا لَكُنَّا مِن بَيْنِكَ أَهْلًا
لَّكُنَّا لَكُنَّا لَكُنَّا لَكُنَّا لَكُنَّا لَكُنَّا لَكُنَّا

وَأَصْبِرْ لِفَلَاحِكَ مَعَ الْوَيْلِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ
بِالْعَدَاوَةِ وَالْهَيْبَةِ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَكَتَبُوا
عَلَيْكَ عَنْهُمْ تَرْيَدِيَّةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلَا تُضِلُّهُمْ مِّنْ أَغْمَاقِ قُلُوبِهِمْ عَنْ ذِكْرِ آيَاتِنَا وَأَنْتَبِهْ
هُوَ وَكَانَ أَمْرًا قَرِينًا

وَقُلِ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِرْ
وَمَن شَاءَ فَلْيُكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا
لِظَّالِمِينَ سَارًّا لَّهُمْ سُرُورُهَا وَزُنْ
يَسْتَوِينَّ يُعْطَوْنَ سَاءَ كَالَّذِينَ يَشُورُوا

- 1) भाष्यकारों ने लिखा है कि यह आयत उस समय उतरी जब मुशरिक कुरैश के कुछ प्रमुखों ने नबी सल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह माँग की कि आप अपने निर्धन अनुयायियों के साथ न रहें तो हम आप के पास आ कर आप की बातें सुनंगे। इस लिये अल्लाह ने आप को आदेश दिया कि इन का आदर किया जाये ऐसा नहीं होना चाहिये कि इन की उपेक्षा कर के उन धनवानों की बात मानी जाये जो अल्लाह की याद से निश्चेत हैं।

प्राचीर¹ ने उन को घेर लिया है, और यदि वह (जल के लिये) गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा, वह क्या ही बुरा पेय है! और वह क्या ही बुरा विश्राम स्थान है!

الْوُجُودَ يَلْبَسُ الثَّرَابَ وَسَاءَ مُرْتَقًى ۝

30. निश्चय जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तो हम उन का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करेंगे जो सदाचारी है।

لَنْ أَلْبِسَ الْمُؤْمِنُ خَبِيرًا إِلَّا نَجِيهٖ
أَجْرًا مِّنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝

31. यही है जिन के लिये स्थायी स्वर्ग है, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे।² तथा महीन और गाढ़े रेशम के हरे वस्त्र पहनेंगे उस में सिंहासनों के ऊपर आसीन होंगे। यह क्या ही अच्छा प्रतिफल और क्या ही अच्छा विश्राम स्थान है!

وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتٌ مِّنْ تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ يُجَلِّسُونَ فِيهَا مِنْ أُسُورٍ مِّنْ ذَهَبٍ
وَيَبْسُطُونَ فِيهَا بُيُوتًا مِّنْ خضِرٍ مِّنْ سُندُسٍ وَتَبْرِقُ
مُسْكَيْنٍ فِيهَا عَلَى الْأَرَابِىِّ لَهُمْ ثَوْبٌ
وَحَسْبُهُ مُرْتَقًى ۝

32. और (हे नबी!) आप उन्हें एक उदाहरण दो व्यक्तियों का दें, हम ने जिन में से एक को दो बाग दिये अँगूरो के और घेर दिया दोनों को खजूरो से और दोनों के बीच खेती बना दी।

وَأَصْرِبُ لَهُمْ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا
جَنَّتَيْنِ مِّنْ أَعْنَابٍ وَخَفَضْنَاهُمْ سَحْلًا وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُمَا نَهْرًا ۝

33. दोनों बागों ने अपने पूरे फल दिये, और उस में कुछ कमी नहीं की, और हम ने जारी कर दी दोनों के बीच एक नहर।

كَلَّتِ الْجَنَّتَيْنِ تَتَا يُخَيِّرُهَا وَلَوْ تَضَعُوهُمَا فَتَبَيَّنَّا
وَقَعَّرْنَا بَيْنَهُمَا نَهْرًا ۝

1 कर्आन में «सुरादिक» शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस का अर्थ प्राचीर, अर्थात् वह दीवार है जो नरक के चारों ओर बनाइ गइ है।

2 यह स्वर्ग वासियों का स्वर्ण कंगन है। किन्तु संसार में इस्लाम की शिक्षानुसार पुरुषों के लिये सोने का कंगन पहनना हाराम है।

34. और उसे लाभ प्राप्त हुआ, तो एक दिन उस ने अपने साथी से कहा और वह उस से बात कर रहा था, मैं तुझ से अधिक धनी हूँ, तथा स्वजनों में भी अधिक¹⁾ हूँ।

35. और उस ने अपने बाग में प्रवेश किया अपने ऊपर अत्याचार करते हुये, उस ने कहा मैं नहीं समझता कि इस का विनाश हो जायेगा कभी।

36. और न यह समझता हूँ कि प्रलय होगी। और यदि मुझे अपने पालनहार की ओर पुनः ले जाया गया, तो मैं अवश्य ही इस से उत्तम स्थान पाऊँगा।

37. उस से उस के साथी ने कहा, और वह उस से बात कर रहा था क्या तू ने उस के साथ कुफ़र कर दिया, जिस ने तुझे मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर वीर्य से फिर तुझे बना दिया एक पूरा पुरुष?

38. रहा मैं तो वही अल्लाह मेरा पालनहार है, और मैं साझी नहीं बनाऊँगा अपने पालनहार का किसी को।

39. और क्यों नहीं जब तुम ने अपने बाग में प्रवेश किया तो कहा कि "जो अल्लाह चाहे, अल्लाह की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता।" यदि तू मुझे देखता है कि मैं तुझ से कम हूँ

وَكَانَ لَهُ شَرٌّ فَقَالَ يَصَادِقُهُ وَهُوَ يُحَادِرُهُ إِنَّا كَرُمْنَا مَا لَؤُاْ عَزَّيْنَاهُ

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّدِّتْ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَادِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاهُ رَجُلًا

لَيْكَ أَهْلُؤَ اللَّهِ رَبِّي وَلَا أَشْرَكَ بِرَبِّي أَحَدًا

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا مُقَاوَلَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ إِن تَرَبُّبًا أَقْلَ بَيْنَكَ مَا لَؤُاْ وَلَكُنَّا

1 अर्थात् यदि किसी का धन संतान तथा बाग इत्यादि अच्छा लगे तो ((माशा अल्लाह ला कूच्चता इल्ला बिल्ला)) कहना चाहिये। ऐसा कहने से नजर नहीं लगती। यह इस्लाम धर्म की शिक्षा है, जिस सं आपस में द्वेष नहीं होता।

धन तथा संतान में।^[1]

40. तो आशा है कि मेरा पालनहार मुझे प्रदान कर दे तेरे बाग से अच्छा और इस बाग पर आकाश से कोई आपदा भेज दे, और वह चिकनी भूमि बन जाये।

فَقَسَىٰ رَبِّي أَن يُوَفِّيَنَّ عَبْدًا مِّنْ حَنَنِكَ
وَيُرْسِلَ عَلَيْهِ غَلَبًا مِّنَ السَّمَاءِ فَضِيحَةً صِجْدًا
رَّهَقًا

41. अथवा उस का जल भीतर उतर जाये फिर तू उसे पा न सके।

أَوْ يُصِيبَهُ مَاءٌ ذَرٌّ عَوْرًا فَيَسْخَرُوا لَهُ تَلَكُؤًا

42. (अन्ततः) उस के फलों को घेर² लिया गया, फिर वह अपने दोनों हाथ मलता रह गया उस पर जो उस में खर्च किया था। और वह अपने छप्पगों सहित गिरा हुआ था, और कहने लगा क्या ही अच्छा होता कि मैं किसी को अपने पालनहार का माद्री न बनाता।

وَأَحِيطَ بِشَمِيرٍ ۖ فَاصْبِهِ يَغْلِبُ فَكَيْفَ عَلَىٰ مَا
الْتَفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ
يَكُونُ لَوْ أَشِيرَ لِرَبِّي آخِذًا

43. और नहीं रह गया उस के लिये कोई जन्था जो उस की सहायता करता और न स्वयं अपनी सहायता कर सका।

وَلَوْ تِلْكَ لَمَهْمَةٌ يُتَسَوَّرُونَ مِنَ دُونِ اللَّهِ
وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا

44. यही सिद्ध हो गया कि सब अधिकार सत्य अल्लाह को है वही अच्छा है प्रतिफल प्रदान करने में, तथा अच्छा है परिणाम लाने में।

هَٰذَاكَ لَوْلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا
وَخَيْرٌ عُقْبًا

45. और (हे नबी!) आप उन्हें संसारिक जीवन का उदाहरण दें उस जल से जिसे हम ने आकाश से बरसाया। फिर उस के कारण मिल गई धरती की उपज, फिर चूर हो गई जिसे वायु

وَالْمُهْرِبَ لَهُمْ مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا
أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيُّوحُ
وَكَانَ اللَّهُ عَنِ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا

1 अर्थात् मेरे संबन्ध और सहायक भी तुझ से अधिक है।

2 अर्थात् आपदा ने घेर लिया।

उड़ाये फिरनी¹ है। और अझाह प्रत्येक चीज पर सामर्थ्य रखने वाला है।

46. धन और पुत्र समारिक जीवन की शोभा है। और शेष रह जाने वाले सन्कर्म ही अच्छे है आप के पालनहार के यहाँ प्रतिफल में, तथा अच्छे है आशा रखने के लिये।

الْمَالُ وَالْبَنُونَ بَيْنَهُمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
وَالْبَاقِيَةُ الصَّالِحَةُ خَيْرٌ عَمْدَرَيْتَ ثَوَابًا
وَعَمْرًا مَلَا ۝

47. तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे तथा तुम धरती को खुला चटेल² देखोगे। और हम उन्हें एकत्र कर देंगे, फिर उन में से किसी को नहीं छोड़ेंगे।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَادِيَةً
وَوَحَّشْنَاهُمْ فَلَئِنْ فَدَّرْنَاهُمْ لَأَخَذْنَاهُمْ أَحَدًا ۝

48. और सभी आप के पालनहार के समक्ष पंक्तियों में प्रस्तुत किये जायेंगे, तुम हमारे पास आ गये जैसे हम ने तुम्हारी उत्पत्ति प्रथम बार की थी बल्कि तुम ने समझा था कि हम तुम्हारे लिये कोई वचन का समय निर्धारित ही नहीं करेंगे।

وَهُمْ ضَوْءٌ عَلَى رَبِّكَ صَدَقْنَا عَمَّا تَشْتَكُونَ كَمَا
خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ تَعْتَمِدُونَ لِحُجْمٍ
لَكُمْ مَوَدَّةٍ ۝

49. और कर्म लेख³ (सामने) रख दिये जायेंगे, तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उस में डर रहे है जो कुछ उस में (अंकित) है, तथा कहेंगे कि हाय हमारा विनाश! यह कैसी पुस्तक है जिस ने किसी छोटे और बड़े कर्म को नहीं छोड़ा है, परन्तु उसे अंकित कर रखा है? और जो कर्म उन्हों

وَرُصِدَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ
مُسْفُوفِينَ وَمَذْمُومًا يَقُولُونَ يَوَلَّىٰ سَائِلًا
هَذَا الْكِتَابُ لَا يَغْنَمُ فِيهِ وَلَا كِبِيرًا
إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَحَّدُوا مَا عَمِلُوا حَاصِرًا
وَلَا يَقْلِبُوا رَبِّكَ أَحَدًا ۝

1 अर्थात् संसारिक जीवन और उस का सुख सुविधा सब साम्यिक है।

2 अर्थात् न उस में कोई चिन्ह होगा तथा न छुपने का स्थान

3 अर्थात् प्रत्येक का कर्म पत्र जो उस ने संसारिक जीवन में किया है।

नै किये है उन्हें वह सामने पायेंगे,
और आप का पालनहार किसी पर
अत्याचार नहीं करेगा।

50. तथा (याद करो) जब आप के
पालनहार ने फरिश्तों से कहा: आदम
को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा
किया इब्नीस के सिवा। वह जिन्नों
में से था, अतः उस ने उल्लंघन किया
अपने पालनहार की आज्ञा का
तो क्या तुम उस को और उस कि
सन्तान को सहायक मित्र बनाने हो
मुझे छोड़ कर जब कि वह तुम्हारे
शत्रु है? अत्याचारियों के लिये बुरा
बदला है।

51. मैं ने उन को उपस्थित नहीं किया
आकाशो तथा धरती की उत्पत्ति के
समय और न स्वयं उन की उत्पत्ति
के समय और न मैं कृप्यों को
सहायक बनाने वाला हूँ।

52. जिस दिन वह (अब्राह) कहेगा कि मेरे
साक्षियों को पुकारो जिन्हें समझ रहे थे।
वह उन्हें पुकारेगा तो वह उन का कोई
उत्तर नहीं देगे, और हम बना देंगे उन
के बीच एक विनाशकारी खाड़ी।

53. और अपराधी नरक को देखेंगे तो
उन्हें विश्वास हो जायेगा कि वे उस
में गिरने वाले है और उस से फिरने
का कोई स्थान नहीं पायेंगे।

وَلَقَدْ قُلْنَا لِلْمَلَكِ اسْجُدْ وَاسْجُدْ وَإِدْمَاقَ جِدْوَى
إِلَّا إِبْرِيمَ كَانَ مِنَ السَّاجِدِينَ فَكَفَى عَنْ أَمْرِ
رَبِّهِ أَتَمْتَجِدُونَهُ وَلَوْ رَدُّنَا إِلَيْنَا آيَةً مِنْ دُونِ
وَلَهُ لَكُمُ عَذَابٌ يَشْتَرِي بِظُلْمٍ بَدَلًا ۝

مَا أَشْهَدُ لَهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا خَلْقَ النَّاسِ مِنْ نَفْسٍ وَنُفْسٍ مُتَحِدَةٍ أَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ
عَصْدًا ۝

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ
فَدَعَاؤُهُمْ تَوَجَّهَ سَبِيلُهُمْ وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُمْ تَوْبَعًا ۝

وَاللَّامِئَاتِ مِنَ النَّارِ فَسَوْفَ يَكُونُ لَهُمْ مَرْجِعُهُنَّ
وَلَهُنَّ فِيهَا مَصْرُورٌ ۝

- 1 भावार्थ यह है कि विश्व की उत्पत्ति के समय इन का अस्तित्व न था यह तो
बाद में उत्पन्न किये गये हैं। उन की उत्पत्ति में भी उन से कोई सहायता नहीं
ली गई, तो फिर यह अब्राह के बराबर कैसे हो गये?

54. और हम ने इस कुर्आन में प्रत्यक उदाहरण से लोगों को समझाया है। और मनुष्य बड़ा ही झगडालू है।
55. और नहीं रोका लोगों को कि इमान लायें जब उन के पास मार्ग दर्शन आ गया और अपने पालनहार से क्षमा याचना करें, किन्तु इसी ने कि पिछली ज़ानियों की दशा उन की भी हो जाये, अथवा उन के समक्ष यातना आ जाये।
56. तथा हम रसूलों को नहीं भेजते परन्तु शुभ सूचना देने वाले और सावधान करने वाले बना कर। और जो काफिर है असत्य (अनृत) के सहारे विवाद करते हैं, ताकि उस के द्वारा वह सत्य को नीचा¹ दिखायें। और उन्होंने ने बना लिया हमारी आयतों को तथा जिस बात की उन्हें चेतावनी दी गई परिहास।
57. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुंह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये? वास्तव में हम ने उन के दिलों पर ऐसे आवरण (पर्दे) बना दिये हैं कि उसे² समझ न पाये और उन के कानों में धोझ। और यदि आप उन्हें सीधी राह की ओर बुलायें तब (भी) कभी सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْئًا جَدَلًا

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا بِرُوحِ اللَّهِ الْهَدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ الْأُولَىٰ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا وَمَنْ يُضِلَّ فَإِنَّهُ يَاجِدُ إِلَىٰ ظُلُمٍ أُكْتُمٍ يُدْخِلُونَهُ فِي الْعَقَقِ وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَآثِدَهُمْ زُخْرًا

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَعَرَضَ عَنْهَا وَبَيَّنَّا بآيَاتِنَا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ غَلِيمٌ فَلَوْ يَعْلَمُونَ أَنَّهُمْ يُفْقَهُونَهُ فَلَوْلَا إِذَا نُهُوا عَنْهُ وَفُرُوا وَرَأَوْا تَذَكُّرًا إِلَىٰ الْهَدَىٰ فَلَوْلَا تَذَكُّرًا إِذَا الْهَدَىٰ

1 अर्थात् सत्य को दबा दे।

2 अर्थात् कुर्आन को।

58. और आप का पालनहार अति क्षमी दयावान् है। यदि वह उन को उन के कर्तुतों पर पकड़ता तो तुरन्त यातना दे देता, बल्कि उन के लिये एक निश्चित समय का वचन है। और वे उस के सिवा कोई बचाव का स्थान नहीं पायेंगे।

وَرَبُّكَ الْعَظِيمُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ لَأَمْلَأَ جَهَنَّمَ بَنِينَ لَكُمْ مَوْعِدٌ أَنْ يَخْرِجُكُمْ مِنْ دُونِهِ مُوَسًى ۝

59. तथा यह वस्तियाँ हैं। हम ने उन (के निवासियों) का विनाश कर दिया जब उन्होंने अत्याचार किया। और हम ने उन के विनाश के लिये एक निर्धारित समय बना दिया था।

وَلَا تَلْقَ الْفَرَىٰ أَهْلُكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا مِثْقَلَهُمْ مَوْعِدٌ ۝

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपने सेवक से कहा मैं बराबर चलता रहूँगा, यहाँ तक कि दोनों सागरों के संगम पर पहुँच जाऊँ, अथवा वर्षा चलता रहूँ।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ يَبْنَؤُهُ لَأَمْرٌ عَشَىٰ أَهْلُكُمْ يَجْمَعُ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْطِيَ حُمَلًا ۝

61. तो जब दोनों उन के संगम पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये। और उस ने सागर में अपनी राह बना ली सुरंग के समान।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَبَيًّا أُفِيَٰ لَهُمَا فَاذْكُرَنَّ سَيِّئَاتِهِ فِي الْمَكْرِ تَرِيًّا ۝

62. फिर जब दोनों आगे चले गये तो उस (मूसा) ने अपने सेवक से कहा

فَلَمَّا جَاؤَا قُلُوبَ إِسْرَٰءِيلَ أَنَا قَدْ قُوِيَ مِنْ

1 मूसा अलैहिस्सलाम की यात्रा का कारण यह बना था कि वह एक बार भाषण दे रहे थे। तो किसी ने पूछा कि इस समार में सर्वाधिक ज्ञानी कौन है? मूसा ने कहा मैं हूँ। यह बात अल्लाह को अप्रिय लगी। और मूसा से फरमाया कि दो सागरों के संगम के पास मेरा एक भक्त है जो तुम से अधिक ज्ञानी है। मूसा ने कहा मैं उस से कैसे मिल सकता हूँ? अल्लाह ने फरमाया: एक मछली रख लो और जिस स्थान पर वह खा जाये, तो वही वह मिलेगा। और वह अपने सेवक यूशज्ज बिन नून को लेकर निकल पड़े। (संक्षिप्त अनुवाद सहीह बुखारी: 4725)।

कि हमारा दिन का भाजन लाओ। हम अपनी इस यात्रा से थक गये हैं।

سَمِعْنَا هَذَا نَسِيْلًا ۝

63. उस ने कहा: क्या आप ने देखा? जब हम ने उस शिला खण्ड के पास शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया। और मुझे उसे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उस की चर्चा करूँ और उस ने अपनी राह सागर में अनोखे तरीके से बना ली।

قَالَ اَنْتَ اِذْ اَوَيْتَ اِلَى الصَّخْرَةِ قَالِيْ نَبِيْتُ الْحَوْتِ وَمَا اَنْتَ بِاِلَّا نَذِيْرٌ ۝
وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهُ فِي الْبَحْرِ مَجْمَلًا ۝

64. मूसा ने कहा: वही है जो हम चाहते थे। फिर दोनों अपने पदचिन्हों को देखते हुये वापिस हुये।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْتَغِيْ ۚ قَارَتْ عَلَآ اَنْبَارُهُمَا فَعَصَلَا ۝

65. और दोनों ने पाया, हमारे भक्तों में से एक भक्त¹ को, जिसे हम ने अपनी विशेष दया प्रदान की थी। और उसे अपने पास से कुछ विशेष ज्ञान दिया था।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا اٰتَيْنَاهُ سَعِيْدَةً مِّنْ عَمَلِنَا وَصَلَّيْنَاهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝

66. मूसा ने उस से कहा: क्या मैं आप का अनुसरण करूँ, ताकि मुझे भी उस भलाई में से कुछ मिखा दें, जो आप को सिखायी गई है?

قَالَ لَّهٗ مُوسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰى اَنْ تُعَلِّمَنِيْ ۚ وَمَا اَكْفِيْتُكَ رُشْدًا ۝

67. उस ने कहा: तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे।

قَالَ بَلٰى لَّكَ اِنْ تَصْبِرُ عَلٰى سَعِيْدٍ ۝

68. और कैसे धैर्य करोगे उस बात पर जिस का तुम्हें पूरा ज्ञान नहीं?

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُخِطْ بِهٖ خَبْرًا ۝

69. उस ने कहा: यदि अब्बाह ने चाहा तो आप मुझे सहनशील पायेंगे। और मैं आप की किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।

قَالَ سَتَجِدُنِيْ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَا اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ۝

1 इस से अभिप्रेत आदरणीय खिज्र अलैहिस्सलाम है।

70. उस ने कहा: यदि तुम्हें मेरा अनुसरण करना है तो मुझ से किसी चीज के सबन्ध में प्रश्न न करना जब तक मैं स्वयं तुम से उस की खर्चा न करूँ।

71. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब दोनों नौका में सवार हुये तो उस (खिन्न) ने उस में छेद कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने इस में छेद कर दिया ताकि उस के सवारों को डूबा दें, आप ने अनुचित काम कर दिया।

72. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि तुम मेरे साथ महन नहीं कर सकोगे?

73. कहा: मुझे आप मेरी भूल पर न पकड़ें और मेरी बात के कारण मुझे असुविधा में न डालें।

74. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक से मिले तो उस (खिन्न) ने उसे बध कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने एक निर्दोष प्राण ले लिया, वह भी किसी प्राण के बदले¹ नहीं? आप ने बहुत ही बुरा काम किया।

75. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि वास्तव में तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे?

76. मूसा ने कहा: यदि मैं आप से प्रश्न

قَالَ قِيلَ لِمَ تَسْأَلُنِي فَمَا تَشَاءُ عَنْ شَيْءٍ حَتَّى
أُخْبِتَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ لَمَّا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا قَالَ
أَمْحَرَقْتُهَا لِتَغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا
إِثْرًا ۝

قَالَ الْمَرَأَتُ لِمَ أَتَيْتَ لَنُطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ لَا تَأْخُذْ بَعَابِئِكُمْ وَلَا تَرْهَبُنِي
مِنْ أَمْرِي خُذُوا ۝

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا هُمَا عَلِيمَا مَقْتَلِهِ قَالَ
أَقْتُلْتُ نَفْسًا زَوْجِيَّةً يُسْئِرُ بِكُمْ لَقَدْ
جِئْتَ شَيْئًا ثَكْرًا ۝

قَالَ الْمَرَأَتُ لِمَ أَتَيْتَ لَنُطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَذَا فَلَا تُصِغْنِي

1 अर्थात् उस ने किसी प्राणी को नहीं मारा कि उस के बदले में उसे मारा जाये।

करूँ, किसी विषय में इस के पश्चात्, तो मुझे अपने साथ न रखों निश्चय आप मेरी ओर से याचना को पहुँच¹ चुके।

قَدْ بَلَغْتَ مِنَ لَدُنِّي عُذْرًا ۝

77. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव के वासियों के पास आये तो उन से भोजन माँगा। उन्होंने ने उन का अतिथि सत्कार करने से इन्कार कर दिया। वहाँ उन्होंने एक दीवार पायी जो गिरा चाहनी थी। उस ने उसे सीधी कर दिया। कहा यदि आप चाहते तो इस पर पारिश्रमिक ले लेते।

فَالْمَلَأْنَا حَتَّىٰ إِذَا أَهْلُ قَرْيَةٍ يَسْتَعْجِلُونَهَا
فَآوَوْا إِلَىٰ صِفْوَةٍ مِّنْهُمْ فَوَجَدُوا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ
أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَفُحِّدْتَ
مَعَهُمْ جُرُومًا ۝

78. उस ने कहा: यह मेरे तथा तुम्हारे बीच वियोग है। मैं तुम्हें उस की वास्तविकता बताऊँगा, जिस को तुम सहन नहीं कर सके।

قَالَ هَذَا لِرَأْيِنَا يَنبَغِي وَيَكُنُّ شَأْنُكَ بِتَأْوِيلِ
مَا لَمْ يَنْتَظِرْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

79. रही नाव तो वह कुछ निर्धनों की थी, जो सागर में काम करते थे। तो मैं ने चाहा कि उसे छिद्रित² कर दूँ, और उन के आगे एक राजा था जो प्रत्येक (अच्छी) नाव का अपहरण कर लेता था।

أَمَّا السَّمِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينَ يَعْمَلُونَ فِي
الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَمِيتَهَا ۚ وَكَانَ قَدَرُهَا مِائَتَ
يَوْمٍ ۚ كُلَّ سَمِينَةٍ غَصْبًا ۝

80. और रहा बालक तो उस के माता पिता ईमान वाले थे अतः हम डरे कि उन्हें अपनी अवैज्ञा और अधर्म से दुख न पहुँचाये।

وَأَمَّا الْعُلُوكَ فَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ
رَبُّهُمْ أَنْ يَطْمِئِنَّا وَكَفَرُوا ۝

81. इसलिये हम ने चाहा कि उन दोनों

فَأَرَادْنَا أَنْ يُتِيمَا ۚ إِيَّاهُمَا أَخَذْنَا مِنْهُ كُفْرًا ۝

1 अर्थात् अब कोई प्रश्न करूँ तो आप के पास मुझे अपने साथ न रखने का उचित कारण होगा।

2 अर्थात् उस में छेद कर दूँ।

को उन का पालनहार, इस के बदल उस से अधिक पवित्र और अधिक प्रेमी प्रदान करे।

وَأَقْرَبَ رَحْمَةً

82. और रही दीवार तो वह दो अनाथ बालकों की थी और उस के भीतर उन का कोष था। और उन के माता पिता पुनीत थे तो तेरे पालनहार ने चाहा कि वह दोनों अपनी युवा अवस्था को पहुँचें और अपना कोष निकालें, तेरे पालनहार की दया से। और मैं ने यह अपने विचार तथा अधिकार से नहीं किया ।¹ यह उस की वास्तविकता है जिसे तुम सहन नहीं कर सके।

وَأَمَّا لِحِمَاهُ فَكَانَ ثَلَاثِينَ نَجَارٍ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا لِحِمَاهُ مِنْ رَبِّكَ وَمَا كُنْتُمْ عَنْ كَيْفِهِ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَوْ تَطَبَّعَ عَلَيْهِ صَوْرَتُ

83. और (हे नबी!) वे आप से जुलकरनैन² के विषय में प्रश्न करते हैं। आप कह दें कि मैं उन की कुछ दशा तुम्हें पढ़ कर सुना देता हूँ।

وَيَسْتَنْوِيكَ عَنْ ذِي الْقُرْبَىٰ قُلْ سَأَتْلُوهُنَّ لَكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا

- 1 यह सभी कार्य विशेष रूप से निर्दोष बालक का बंध धार्मिक नियम से उचित न था। इस लिये मूसा (अलैहिस्सलाम) इस को सहन न कर सकें। किन्तु ((खिन्न)) को विशेष ज्ञान दिया गया था जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास नहीं था। इस प्रकार अल्लाह ने जना दिया कि हर ज्ञानी के ऊपर भी कोढ़ ज्ञानी है।
- 2 यह तीसरे प्रश्न का उत्तर है जिसे यहूदियों ने मक्का के मिश्रणवादियों द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कराया था। जुलकरनैन के आगामी आयनों में जो गुण-कर्म बनाये गये हैं उन से विद्वित होता है कि वह एक सदाचारी विजेता राजा था। मौलाना अबुल कलाम आजाद के शोध के अनुसार यह वही राजा है जिसे यूनानी साइरस हिब्रू भाषा में खोरिस तथा अरब में खूसरु के नाम से पुकारा जाना है। जिस का शासन काल 559 ई० पूर्व है वह लिखते हैं कि 1838 ई० में साइरस की एक पत्थर की मूर्ति अस्तखर के खण्डरों में मिली है। जिस में बाज पक्षी के भाँति उस के दो पैर तथा उस के सिर पर भेड़ के समान दो सींग हैं। इस में मीडिया और फारस के दो राज्यों की उपमा दो सींगों से दी गयी है। (देखिये: तर्जमानुल कूर्आन, भाग-3 पृष्ठ 436-438)

84. हम ने उसे धरती में प्रभुत्व प्रदान किया, तथा उसे प्रत्येक प्रकार का साधन दिया।

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا

85. तो वह एक राह के पीछे लगा।

وَاتَّبَعَ سَبِيلًا

86. यहाँ तक कि जब सूर्यास्त के स्थान तक¹ पहुँचा, तो उस ने पाया कि वह एक काली कीचड़ के स्रोत में डूब रहा है। और वहाँ एक जाति को पाया। हम ने कहा हे जुलकर्नैन! तू उन्हें यातना दे अथवा उन में अच्छा व्यवहार बना।

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَرْجُبُ عَلَىٰ ظِلِّهَا ۖ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلُوبُهُمْ مُّخْتَلَفَةً عَلَيْهِمْ وَأَنَّا لَا نَبْصُرُ ۚ

87. उस ने कहा: जो अन्याचार करेगा, हम उसे दण्ड देंगे। फिर वह अपने पालनहार की ओर फेरा² जायेगा, तो वह उसे कड़ी यातना देगा।

قَالَ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ أَخَذْتُ عُثُوبًا مِّثْلَ مَا أَخَذَهَا ۖ لَوْ كُنْتُ عَالِمًا لَّوَدَّعْتُكُمْ ۚ

88. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार करे तो उमी के लिये अच्छा प्रतिफल (बदला) है। और हम उसे अपना सरल आदेश देंगे।

وَأَنَّا مِّنْ أَمَنٍ وَهُمْ عَلَىٰ مَكَالٍ خَبِيرٍ ۚ وَسَقَرُ لَهُمْ فِيهَا يُنْفَخُ ۚ

89. फिर वह एक (अन्य) राह की ओर लगा।

فَتَتَّبَعَ سَبِيلًا

90. यहाँ तक कि सूर्योदय के स्थान तक पहुँचा। उसे पाया कि ऐसी जाति पर उदय हो रहा है जिस से हम ने उन के लिये कोई आड़ नहीं बनायी है।

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَصَدِّقُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَهُمُوهن دُونَهَا يُخْفُونَ ۚ

91. उन की दशा ऐसी ही थी, और उस (जुलकर्नैन) के पास जो कुछ था हम उस से पूर्णतः सूचित हैं।

كَذَٰلِكَ وَفَصَّلَتْ آيَاتُنَا لِقَوْمٍ يُخْفُونَ ۚ

1 अर्थात् पश्चिम की अन्तिम सीमा तक।

2 अर्थान् निधन के पश्चान् प्रलय के दिन।

92. फिर वह एक दूसरी राह की ओर लगा।

فَوَسَّعَ سَبِيلَهُ ۝

93. यहाँ तक कि जब दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के उस ओर एक जाति को पाया, जो नहीं समीप थी कि किमी बात को समझे।¹

حَتَّىٰ إِذَا الْبَتْرَيْنِ السَّدَّانِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۝

94. उन्होंने ने कहा: हे जुल करनैन! वास्तव में याजूज तथा माजूज उपद्रवी हैं इस देश में तो क्या हम निर्धारित कर दें आप के लिये कुछ धन। इर्मालिये कि आप हमारे और उन के बीच कोई रोक (बंध) बना दें।

قَالُوايَا الْقَرَيْنَيْنِ يَا هُوَ وَمَا جُورَ مُلْكِدُونِ فِي الْأَرْضِ قُلْ نَحْنُ لَكَ خَرَجٌ عَلَىٰ أَن يَحْمِلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سِتْرًا ۝

95. उस ने कहा: जो कुछ मुझे मेरे पालनहार ने प्रदान किया है वह उत्तम है। तो तुम मेरी सहायता बल और शक्ति से करो, मैं बना दूँगा तुम्हारे और उन के मध्य एक दृढ़ भीत।

قَالَ مَتِّعْنِي بِمُؤَرَّتِي خَيْرًا فَإِنَّ مُؤَرَّتِي بَيْنَهُمْ وَبَيْنَهُمْ سِتْرٌ ۝

96. मुझे लोहे की चादरे ला दो। और जब दोनों पर्वतों के बीच दीवार तय्यार कर दी तो कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उस दीवार को आग (के समान लाल) कर दिया, तो कहा: मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ तौबा उँडेल दूँ।

أَتُونِي زُرَّاعِي يَبْنَو حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّطَيْنِ قَالِ اتَّخَذُوا حَتَّىٰ بِذَٰلِكَ جَعَلَهُ نَارًا قَالَ اتُّونِي أَلْبَسَ عَلَيْهِمْ لُفَّةً ۝

97. फिर वह उस पर चढ़ नहीं सकते थे और न उस में कोई सेंध लगा सकने थी।

فَمَا اسْتَطَاعُوا أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۝

98. उस (जुलकरनैन) ने कहा: यह मेरे पालनहार की दया है। फिर जब मेरे पालनहार का वचन² अज़ेगा तो

قَالَ هَٰذَا رِجْمَةٌ مِنْ رَبِّي قَوْمًا جَاءَ وَمُذَرِّي جَعَلَهُ دَكًّا وَخَنَازِيرًا وَقَوْمًا مِنْ أَهْلِ الْاٰلِ

1 अर्थात् अपनी भाषा के सिवा कोई भाषा नहीं समझनी थी।

2 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का समय है। जैसा कि सहीह बुखारी हदीस

वह इसे खण्ड खण्ड कर देगा। और मेरे पालनहार का वचन सत्य है।

99. और हम छोड़ देंगे उस¹ दिन लोगों को एक दूसरे में लहरें लेते हुये। तथा नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, और हम सब को एकत्रित कर देंगे।

وَنُرَكِّبُهُمْ فِي سُحُوفٍ مُّطَوَّاتٍ يَوْمَ يُنْفَخُ الْفُؤَادُ عَلَىٰ صُرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۖ

100. और हम सामने कर देंगे उस दिन नरक को काफ़िरो के समक्ष।

وَنُفِثَ فِيهَا كُفْرًا ۖ وَنُفِثَ فِيهَا كُفْرًا ۖ

101. जिन की आंखे मेरी याद से पर्दे में थीं और कोई बान सुन नहीं सकते थे।

ۚ لَّهُمْ فِيهَا آيَاتٌ بِلَا حِصَابٍ ۖ يَوْمَ يُنْفَخُ الْفُؤَادُ عَلَىٰ صُرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۖ

102. तो क्या उन्होंने सोचा है जो काफिर हो गये कि वह बना लेंगे मेरे दामो को मेरे सिवा सहायक? वास्तव में हम ने काफिरों के आतिथ्य के लिये नरक तैयार कर दी है।

أَلَمْ يَتْلُوكَ مَا لَا يَفْقَهُونَ ۚ هَٰذَا نَجْمُ الْقُرْآنِ ۚ هَٰذَا نُفِثَ فِيهَا كُفْرًا ۖ وَنُفِثَ فِيهَا كُفْرًا ۖ

103. आप कह दें कि क्या हम तुम्हें बना दें कि कौन अपने कर्मों में सब से अधिक क्षतिग्रस्त है?

قُلْ مَنْ يُضِلُّهُ فَلَا يَأْتِيهِ هَادٍ ۚ هَٰذَا نَجْمُ الْقُرْآنِ ۚ هَٰذَا نُفِثَ فِيهَا كُفْرًا ۖ وَنُفِثَ فِيهَا كُفْرًا ۖ

104. वह है, जिन के संसारिक जीवन के सभी प्रयास व्यर्थ हो गये, तथा वह समझने रहे कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं।

أَلَمْ يَتْلُوكَ مَا لَا يَفْقَهُونَ ۚ هَٰذَا نَجْمُ الْقُرْآنِ ۚ هَٰذَا نُفِثَ فِيهَا كُفْرًا ۖ وَنُفِثَ فِيهَا كُفْرًا ۖ

105. यही वह लोग है, जिन्होंने नहीं माना अपने पालनहार की आयतों

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاكِبُونَ ۚ

नं. 3346 आदि में आता है कि क्यामत आने के समीप याजूज-माजूज वह दीवार तोड़ कर निकलेंगे और धरती में उपद्रव मचा देंगे।

1. इस आयत में उस प्रलय के आने के समय की दशा का चित्रण किया गया है जिसे जुलकरनैन ने सत्य वचन कहा है।

तथा उस से मिलने को, अतः हम प्रलय के दिन उन का कोई भार निर्धारित नहीं करेंगे।^[1]

فَصَبَّأَتْ أَعْمَالَهُمْ فَبُذِلَتْ لَهُمْ أَعْمَالُهُمْ الَّتِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ

وَرَبَّنَا ۝

106. उन्हीं का बदला नरक है, इस कारण कि उन्हो ने कुर्र किया, और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।

ذَٰلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا لِبَاسَهُمْ

وَدُسُوقًا ۖ

107. निश्चय जो इमान लाये और सदाचार किये उन्हीं के आतिथ्य के लिये फिरदौस² के बाग होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ

لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ ۖ

108. उस में वे सदाबामी होंगे, उसे छोड़ कर जाना नहीं चाहेंगे।

حَدِيثًا ۖ لَا يَبْعَثُونَ عَنْهَا أُخْرًا ۖ

109. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि सागर मेरे पालनहार की धाने लिखने के लिये स्याही बन जायें, तो सागर समाप्त हो जाये, इस से पहले कि मेरे पालनहार की धाने समाप्त हों यद्यपि उतनी ही स्याही और ले आयें।

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَغَابَتْ رَبِّي لَقَوْلُ الْبَحْرِ

قَبْلَ أَنْ تَعْلَمَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جُمِيعَتْ بِهٖ مَدَادًا ۖ

110. आप कह दें मैं तो तुम जैसा एक मनुष्य पुरुष हूँ मेरी ओर प्रकाशना (वह्नी) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। अतः जो अपने पालनहार से मिलने की आशा रखना हो उसे चाहिये कि सदाचार करे और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (बंदना) में किसी को।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ الْمَلَكُوتُ وَجِدْتُ

مَنْ كَانَ يَرْجُوا يَوْمَ الْقِيَامِ فَلْيَسِّرْ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامِ ۖ

يَسِّرْ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامِ ۖ

1 अर्थात् उन का हमारे यहाँ कोई भार न होगा। हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा क्या मृत के दिन एक भारी भरकम व्यक्ति आयेगा मगर अब्राह के सदन में उस का भार मच्छर के पंख के बराबर भी नहीं होगा फिर आप ने इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुखारी: हदीस नं- 4729)

2 फिरदौस स्वर्ग के सर्वोच्च स्थान का नाम है। (सहीह बुखारी: 7423)

सूरह मर्यम 19

سورة مريم

सूरह मर्यम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 98 आयतें हैं।

- इस सूरह में ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्यम (अलैहस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म की कथा का वर्णन किया गया है। इसी से इस का नाम मर्यम है। इस में सर्वप्रथम यइया (अलैहिस्सलाम) के जन्म की चर्चा है उस के पश्चात् ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म का वर्णन है। और ईसाईयों को उन के विभेद पर सावधान किया गया है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के तौहीद के प्रचार और उन के हिजरत करने और ममा (अलैहिस्सलाम) तथा अन्य नबियों की चर्चा की गई है, और उन की शिक्षाओं के विरोधियों के विनाश से सावधान किया गया है। और उन को मानने पर सफलता की शुभसूचना दी गई है तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने और सुदृढ़ रहने का निर्देश दिया गया है। परलोक के इन्कारियों के संदेहों को दूर करते हुये ईमान और विश्वास के लिये कुछ स्थितियों का वर्णन किया गया है।
- जब मक्का से कुछ मुसलमान नबूवन के पाँचवें वर्ष हिजरत कर के हब्शा पहुँचे और मक्का के काफिरों ने कुछ व्यक्तियों को वापिस लाने के लिये भेजा जिन्होंने उन्हें धर्म बदल लेने का दोषी बताया तो वहाँ के ईसाई राजा नजाशी को जअफर (रजियल्लाहु अन्हु) ने इसी सूरह की आरम्भक आयतें सुनाई जिसे सुन कर वह रोने लगा, और कहा यह और जो ईसा (अलैहिस्सलाम) लाये थे एक ही नूर (प्रकाश) की दो किरणें हैं। और भूमी से एक तिनका ले कर कहा इसा (अलैहिस्सलाम) इस से कुछ भी अधिक नहीं थे। फिर काफिरों के प्रतिनिधियों को निष्फल वापिस कर दिया। (सीरत इब्ने हिशाम 1। 334, 338)

हदीस में है कि पुरुषों में बहुत से पूर्ण हुये और स्त्रियों में मर्यम बिनत इमरान और फिरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुयीं। (सहीह बुखारी: 3411, मुस्लिम, 2431)

दूसरी हदीस में है कि प्रत्येक शिशु जब जन्म लेता है तो शैतान उस के बाजू में अपनी दो उंगलियों से कचोके लगाता है, (तो वह चीख कर

रोता है), ईसा (अलैहिस्सलाम) के सिवा। शैतान जब उन्हें कचोके लगाने लगा तो पर्दे ही में कचोका लगा दिया। (सहीह बुखारी, 3286, मुस्लिम 2431)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

كَهْفٌ

1. काफ हा, या, ऐन, माद।
2. यह आप के पालनहार की दया की चर्चा है अपने भक्त जकरिया पर।
3. जब कि उस ने अपने पालनहार से विनय की, गुप्त विनय।
4. उस ने कहा मेरे पालनहार! मेरी अस्थियाँ निर्बल हो गयी और मिर बुढ़ापे से सफेद¹ हो गया है, तथा मेरे पालनहार! कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुझ से प्रार्थना कर के निष्फल हुआ हूँ।
5. और मुझे अपने भाई बंदों से भय² है अपने (मरण) के पश्चात्, तथा मेरी पत्नी बाँझ है अतः मुझे अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर दो।
6. वह मेरा उत्तराधिकारी हो, तथा याकूब के वंश का उत्तराधिकारी³ हो और हे पालनहार! उसे प्रिय बना दो।

ذَكَرَ رَحْمَتَ رَبِّهِ إِذْ ذُكِّرَ

إِذْ دَاوُدُ رَفَعَهُ يَدًا وَخَفِيًّا

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَقَلَ الرَّأْسُ
كَيْبًا وَذُلْتُ إِلَى الْمَلِكِ إِنَّكَ رَبِّي شَفِيعِي

وَلِيَّ جُنَّتِ السُّورُ مِنِّي وَذُكِّرْتُ بِوَكَايَةِ امْرَأَتِي
عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلَدًا

يَرْثِي وَيُخَوِّدْ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ وَجَعَلَهُ رَبِّي مُؤْتِيًا

- 1 अर्थात् पूरे बाल सफेद हो गये।
- 2 अर्थात् दुराचार और बुरे व्यवहार का।
- 3 अर्थात् नबी हो आदरणीय जकरिया (अलैहिस्सलाम) याकूब (अलैहिस्सलाम) के वंश में थे।

7. हे जकरिय्या! हम तुझे एक बालक की शुभ सूचना दे रहे हैं, जिस का नाम यह्या होगा। हम ने नहीं बनाया है इस से पहले उस का कोई सम्नाम।
8. उस ने (आश्चर्य में) कहा: मेरे पालनहार! कहां से मेरे यहाँ कोई बालक होगा, जब कि मेरी पत्नी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की चरम सीमा को जा पहुँचा हूँ।
9. उस ने कहा: ऐसा ही होगा तेरे पालनहार ने कहा है, यह मेरे लिये सरल है, इस से पहले मैं ने तेरी उत्पत्ति की है जब कि तू कुछ नहीं था।
10. उस (जकरिय्या) ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण (चिन्ह) बना दे। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह है कि तू धोल नहीं सकेगा, लोगों से निरंतर तीन रातों।
11. फिर वह सेंहराव (चाप) में निकल कर अपनी जानि के पास आया। और उन्हें संकेत द्वारा आदेश दिया कि उस (अल्लाह) की पवित्रता का वर्णन करो प्रातः तथा संध्या।
12. हे यह्या! ¹ इस पुस्तक (तौरात) को धाम ले और हम ने उसे बचपन ही में ज्ञान (प्रबोध) प्रदान किया।

يُزَكِّيهِمْ إِنَّا نَكْتُبُكَ بِسْمِ اللَّهِ نَعْلَمُ لَوْ يَحْتَسِبُ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَيِّدًا

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَأَكُونُ فِي عِلْمٍ وَكَانَ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلِيمٌ فَذَكَرَ حَقِّكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُنْ شَيْئًا

قَالَ رَبِّ خَلِّ لِي بِهٖ قَالِ إِنَّكَ الْإِلَهِ الْأَكْبَرُ إِنَّكَ تَكُنْ لِي لَيْلًا سَيِّدًا

فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَدَّى إِلَيْهِمْ أَنْ سَبِّحُوا بُرْقَةً وَعَشِيًّا

يَعْنِي خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَأَنْتُمْ أَعْلَمُ صِدِّقًا

- 1 रात से अभिप्राय दिन तथा रात दोनों ही हैं। अर्थात् जब बिना किसी रोग के लोगों से बात न कर सकोगे तो यह शुभ सूचना का लक्षण होगा।
- 2 अर्थात् जब यह्या का जन्म हो गया और कुछ बड़ा हुआ तो अल्लाह ने उसे तौरात का ज्ञान दिया।

13. तथा अपनी ओर से प्रेम भाव तथा पवित्रता और वह बड़ा संयमी (सदाचारी) था।
14. तथा अपनी माता पिता के साथ सुशील था, वह क्रूर तथा अवज्ञाकारी नहीं था।
15. उस पर शान्ति है, जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिन मरेगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जायेगा।
16. तथा आप इस पुस्तक (क़ुर्आन) में मर्यम¹ की चर्चा करें, जब वह अपने परिजनों से अलग हो कर एक पूर्वी स्थान की ओर आयी।
17. फिर उन की ओर से पर्दा कर लिया, तो हम ने उस की ओर अपनी रूह (आत्मा)² को भेजा, तो उस ने उस के लिये एक पूरे मनुष्य का रूप धारण कर लिया।
18. उस ने कहा मैं शरण मांगती हूँ अत्यंत कृपाशील की तुझ से, यदि तुझे अज़्राह का कुछ भी भय हो।
19. उस ने कहा मैं तेरे पालनहार का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक पुनीत बालक प्रदान कर दूँ।
20. वह बोली: यह कैसे हो सकता है कि मेरे बालक हो जब कि किसी पुरुष ने मुझे स्पर्श भी नहीं किया है, और

وَحَسَنَاتٍ مِّنْ لَّدُنَّا وَكَوْنٌ تَّبَيَّنَ

وَرَبُّهَا يَدَّبِرُهُ وَلَهُ كُنْزُ الْعَالَمِينَ

وَسَلَّمَ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا

وَإِذْ كُنَّا فِي الْكِتَابِ مِرْيَمَ إِذَا نَبَّهَتْ مِنْ آهْلِهَا مَكَانٍ شَرْقِيٍّ

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا وَإِذَا يُسَبِّحُ رَبُّهَا وَرُوحًا فَتَحْتَمِلُهَا بَشَرًا سَوِيًّا

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا

قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا

1 मर्यम अदरणीय इम्रान की पुत्री दावूद अलैहिस्सलाम के वंश से थी। उन के जन्म के विषय में सूरह आले इम्रान देखिये।

2 इस से अभिप्रेत फारिशने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं।

न मैं व्यभिचारिणी हूँ।

21. फरिश्ते ने कहा ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार का वचन है कि वह मेरे लिये अति सरल है, और तार्किक हम उसे लोगों के लिये एक लक्षण (निशानी)¹ बनायें तथा अपनी विशेष दया से, और यह एक निश्चित बात है।
22. फिर वह गर्भवती हो गई, तथा उस (गर्भ को ले कर) दूर स्थान पर चली गई।
23. फिर प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने तक लायी, कहने लगी: क्या ही अच्छा होता, मैं इस से पहले ही मर जाती, और भूली बिसरी हो जाती।
24. तो उस के नीचे से पुकारा² कि उदासीन न हो, तेरे पालनहार ने तेरे नीचे³ एक स्रोत बहा दिया है।
25. और हिला दे अपनी ओर खजूर के तने को तुझ पर गिरायेगा वह ताजी पकी खजूरें।⁴
26. अतः खा और पी तथा आँख ठण्डी करा। फिर यदि किसी पुरुष को देखे, तो कह दे वास्तव में, मैं ने मनौती मान रखी है अत्यंत कृपाशील के

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّهُ فَوَعَدَ هَيِّنًا
وَلَمَّا جَعَلَهُ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا وَكَانَ
أَمْرًا مُقْضًيًا ۝

فَحَبَلَتْهُ وَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَوِيًّا ۝

فَاصْبَرَتْهُ الْمَخَاضُ إِلَىٰ جُذُوعِ النَّخْلِ قَالَتْ
يَكْفُرُنِي مِنِّي قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا ۝

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَا تَحْضُرِينَ قَدْ جَعَلَ
رَبُّكَ تَحْتَكَ سَرِيًّا ۝

وَهَمَزْنِي إِلَىٰ يَدِهَا نَهْلَ النَّخْلِ تَلْقُوقًا
عَلَيْكَ رُطْبًا جَمِيًّا ۝

لِكُلٍّ وَاِشْرَافُ وَقَدَرٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا مِنَ
الْمَنَارِ آدَمًا قَوِيًّا نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ
صَوْمًا فَاسْأَلُوكَ الْيَوْمَ آيَئِيَّ ۝

- 1 अर्थात् अपने सामर्थ्य की निशानी कि हम नर-नारि के योग के बिना भी स्त्री के गर्भ से शिशु की उत्पत्ति कर सकते हैं।
- 2 अर्थात् जिव्हील फरिश्ते ने घाटी के नीचे से आवाज दी।
- 3 अर्थात् मर्यम के चरणों के नीचे।
- 4 अल्लाह ने अस्वभाविक रूप से आदरणीय मर्यम के लिये खाने-पीने की व्यवस्था कर दी।

लिये व्रत की। अतः मैं आज किसी मनुष्य से बात नहीं करूंगी।

27. फिर उस (शिशु इंसान) को ले कर अपनी जानि में आयी, सब ने कहा- हे मरयम! तू ने बहुत बुरा किया।

28. हे हारून की बहन! ¹ तेरा पिता कोई बुरा व्यक्ति न था। और न तेरी माँ व्यभिचारिणी थी।

29. मरयम ने उस (शिशु) की ओर संकेत किया। लोगों ने कहा: हम कैसे उस से बात करें जो गोद में पड़ा हुआ एक शिशु है?

30. वह (शिशु) बोल पड़ा: मैं आवाह का भक्त हूँ। उस ने मुझे पुस्तक (इंजील) प्रदान की है, तथा मुझे नबी बनाया है। ²

31. तथा मुझे शुभ बनाया है जहाँ रहूँ और मुझे आदेश दिया है नमाज तथा जकात का जब तक जीवित रहूँ।

32. तथा अपनी माँ का सेवक और उस ने मुझे क्रूर तथा अभागा ³ नहीं बनाया है।

33. तथा शान्ति है मुझ पर, जिस दिन मैं ने जन्म लिया तथा जिस दिन मरूँगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जाऊँगा।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا خُمُلًا قَالُوا لِمَنْ لَقَدْ حَبِطَ
نَسِيلًا ۖ قَالُوا

يَكُنْتَ هَرُونَ مَا كَانَ أَبُوْهَا مَرْمُوزًا وَكَانَتْ
أُمُّكَ بَغِيًّا ۖ

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نَكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي
الْمَهْدِ صَبِيًّا ۖ

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۖ

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالْعَصَاةِ
وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۖ

وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَعَنَ الْعَاقِلِينَ ۖ إِنَّا شَهِدْنَا

وَكُنَّا عَنْ يَوْمِئِذٍ وَرَاقِينَ ۖ وَيَوْمَ مَوْتِهَا وَنَحْنُ
أَنبَئُ حَيًّا ۖ

1 अर्थात् हारून अलैहिस्सलाम के वंशज की पुत्री। अरबों के यहाँ किसी कबीले का भाइ होने का अर्थ उस कबीले और वंशज का व्यक्ति लिया जाता था।

2 अर्थात् मुझे पुस्तक प्रदान करने और नबी बनाने का निर्णय कर दिया है।

3 इस में यह संकेत है कि माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करना क्रूरता तथा दुर्भाग्य है।

34. यह है ईसा मरयम का पुत्र यही सत्य बात है जिस के विषय में लोग सदेह कर रहे हैं।

ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝

35. अल्लाह का यह काम नहीं कि अपने लिये कोई संतान बनाये, वह पवित्र है! जब वह किसी कार्य का निर्णय करना है तो उस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दे कि "हो जा" और वह हो जाता है।

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَانَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

36. और (ईसा ने कहा): वास्तव में अल्लाह मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, अतः उसी की इबादत (बंदना) करो यही सुपथ (मीधी राह) है।

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝

37. फिर सम्प्रदायों¹ ने आपस में विभेद किया, तो विनाश है उन के लिये जो काफिर हो गये एक बड़े दिन के आ जाने के कारण।

فَاخْتَلَفَ الْأَغْرَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ قَوْلًا بَلَدَيْنِ كَفَرُوا ۖ إِنَّ شَهِيدَ يَوْمٍ يُعَذِّبُهُمْ ۝

38. वे भली भाँति सुनेंगे और देखेंगे जिस दिन हमारे पास आयेंगे, परन्तु अत्याचारी आज खुले कुपथ में हैं।

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْهَرْ يَوْمَ تَوَسَّلَ إِلَىٰ الظَّالِمِينَ الْيَوْمِ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

39. और (हे नबी!) आप उन्हें संताप के दिन से सावधान कर दें, जब निर्णय²।

وَالْيَوْمَ يُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ ۖ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ فَهُمْ فِي

1 अर्थात् अहले किताब के सम्प्रदायों ने इसा अलैहिस्सलाम की वास्तविकता जानने के पश्चात् उन के विषय में विभेद किया। यहूदियों ने उसे जादूगर तथा वर्णमंकर कहा। और इसाईयों के एक सम्प्रदाय ने कहा कि वह स्वयं अल्लाह है दूसरे ने कहा: वह अल्लाह का पुत्र है। और उन के तीसरे कैथोलिक सम्प्रदाय ने कहा कि वह तीन में का तीसरा है बड़े दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

2 अर्थात् प्रत्येक के कर्मानुसार उस के लिये नरक अथवा स्वर्ग का निर्णय कर दिया जायेगा। फिर मौत का एक भेड़ के रूप में वध कर दिया जायेगा तथा घोषणा कर दी जायेगी कि हे स्वर्गीयों! तुम्हें सदा रहना है, और अब मौत नहीं है और हे नारकियों! तुम्हें सदा नरक में रहना है अब मौत नहीं है। (सहीह

कर दिया जायेगा जब कि वे अचेत हैं
तथा ईमान नहीं ला रहे हैं।

عَقَلَهُمُ الْيَوْمَ مُوسَىٰ ۖ

40. निश्चय हम ही उत्तराधिकारी होंगे
धरती के तथा जो उस के ऊपर है
और हमारी ही ओर सब प्रत्यागत
किये जायेंगे।

إِنَّا نَحْنُ رَٰثِرُو۟ا۟ ٱلْأَرْضَ وَمَنۢ عَلَيَّهَا وَٱلْجَنَّةَ
بِرَحْمَتِنَا ۚ

41. तथा आप चर्चा कर दें इस पुस्तक
(कुरआन) में इब्राहीम की। वास्तव में
वह एक सत्यावादी नबी था।

وَذِكْرُ ٱلْكِتَٰبِ ٱلْحَنِيفِ دِينَهُۥ ذَٰلِكَ كَانَ وَصِیۡقًا
لِّنَبِیِّهِۥ ۚ

42. जब उस ने कहा अपने पिता से हे
मेरे प्रिय पिता! क्यों आप उसे पूजते
हैं जो न सुनता है और न देखता है,
और न आप के कुछ काम आता?

إِذْ قَالَ لِأَبِیۡهِ یَا أَبَتِیۡ لِمَ تَعْبُدُ ٱلْأَیۡمَةَ
وَلَا تَبۡحُورُ وَلَا تَنۡفَعُكَ شَیۡئًا ۚ

43. हे मेरे पिता! मेरे पास वह ज्ञान आ
गया है जो आप के पास नहीं आया,
अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं
आप को सीधी राह दिखा दूंगा।

یَا حَبِیۡبِیۡ قَدْ جَآءَنِی ٱلْوَیۡلُ مَآ لَیۡسَ بِأَمۡرٍ
فَٱتَّبَعۡنِیۡ أَفَعِدَّ ٱلۡعَرۡضَ سَوِیًّا ۚ

44. हे मेरे प्रिय पिता! शैतान की पूजा
न करें, वास्तव में शैतान अत्यंत
कृपाशील (अब्राह) का अवैज्ञाकारी है।

یَا حَبِیۡبِ ٱلۡأَنۡفٰمِ ٱلۡخَیۡطِ ٱلۡمِیۡطِ ۚ ٱلشَّیۡطَٰنُ كَانَ لِبَرۡحَمٰنٍ
حَمِیۡلًا ۚ

45. हे मेरे पिता! वास्तव में मुझे भय हो
रहा है कि आप को अत्यंत कृपाशील
की कोड़ यातना आ लगे तो आप
शैतान के मित्र हो जायेंगे।¹

یٰۤاَبَا اٰدَمَ ٱلۡخَافَ ۚ اِنَّ یَتَشَكَّیۡ عَنَّا ٱلۡفٰسِقِیۡنَ ۚ ۭ
فَلَنۡكُونَنَّ لِّلشَّیۡطٰنِ وَاٰلِیۡهِ ۚ

46. उस ने कहा: क्या तु हमारे पुज्यों से
विमुख हो रहा है? हे इब्राहीम! यदि
तू (इस से) नहीं रुका तो मैं तुझे

قَالَ ٱلۡنَّبِیُّ ٱلۡنَّعَیۡ عَنْ ٱلۡحَقِیۡقِ یَا ۤاِبۡرَٰهیمُ ۚ ۭ
لَا رَحۡمَۃَ وَٱلۡفَرۡقِ ۚ وَٱلِیۡلَ ۚ

बुखारी, हदीस, नं॰ 4730)

1 अर्थात् अब मैं आप को संबोधित नहीं करूंगा।

पत्थरों से मार दूंगा। और तू मुझ से विलग हो जा सदा के लिये।

47. (इब्राहीम) ने कहा सलाम¹ है आप को। मैं क्षमा की प्रार्थना करता रहूंगा आप के लिये अपने पालनहार से, मेरा पालनहार मेरे प्रति बड़ा करुणामय है।

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُكَ رَبِّي
إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيظًا ۝

48. तथा मैं तुम सभी को छोड़ना हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा। और प्रार्थना करना रहूंगा अपने पालनहार से। मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।

وَأَعْلَمُ لَكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَدْعُوكُمْ
رَبِّيَ عَسَىٰ أَن يَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي تَجِيبًا ۝

49. फिर जब उन्हें छोड़ दिया तथा जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, तो हम ने उसे प्रदान कर दिया इस्हाक तथा याकूब, और हम ने प्रत्येक को नबी बना दिया।

فَمَتَىٰ أَفْعَلْ لَهُمْ مِمَّا يُعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَقَبَّلَ إِلَهُ دُعاءَهُمْ وَيَعْقُوبَ وَكَانَ جَمَلُ آيَاتِهِ ۝

50. तथा हम ने प्रदान की उन सब को अपनी दया में से, और हम ने बना दी उन की शुभ चर्चा सर्वोच्च।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ نِسَانَ
بِذِي عِلِّيَّانَ ۝

51. और आप इस पुस्तक में मूसा की चर्चा करें वास्तव में वह चुना हुआ तथा रसूल एवं नबी था।

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ إِنَّهُ كَانَ خَلِصًا وَكَانَ
رَسُولًا نَبِيًّا ۝

52. और हम ने उसे पकारा तूर पर्वत के दायें किनारे से, तथा उस समीप कर लिया रहस्य की बात करते हुये।

وَمَدَّ يَسَّهُ مِنْ جَانِبِ مُوْطِرِ الْأَيْمَنِ وَفَرَزَبَهُ
جَنَّةً ۝

53. और हम ने प्रदान किया उसे अपनी दया में से, उस के भाई हारून को

وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ۝

1 इस्हाक, इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के पुत्र तथा याकूब के पिता थे इन्हीं के वंश को बनी इस्राइल कहते हैं।

नबी बना कर।

54. तथा इस पुस्तक में इस्माईल¹ की चर्चा करो, वास्तव में वह वचन का पक्का, तथा रसूल -नबी था।

55. और आदेश देता था अपने परिवार को नमाज तथा जकान का और अपने पालनहार के यहाँ प्रिय था।

56. तथा इस पुस्तक में इद्रीस की चर्चा करो, वास्तव में वह सत्यवादी नबी था।

57. तथा हम ने उसे उठाया उच्च स्थान पर।

58. यही वह लोग है, जिन पर अब्राह ने पुरस्कार किया नबियों में से आदम की संतति में से तथा उन में से जिन्हें हम ने (नाव पर) सवार किया नूह के साथ तथा इब्राहीम और इस्माईल के संतति में से, तथा उन में से जिन्हें हम ने मार्ग दर्शन दिया और चुन लिया, जब इन के समक्ष पड़ी जाती थी अत्यंत कृपाशील की आयतें तो वे गिर जाया करते थे सज्दा करते हुये तथा रोते हुये।

59. फिर इन के पश्चान् ऐसे कपूत पैदा हुये, जिन्होंने गँवा दिया नमाज को तथा अनुसरण किया मनोकामनाओं का, तो वह शीघ्र ही कुपय (के

وَأَذِّنْ فِي الْكِتَابِ بِرِسْمِ إِبْرَاهِيمَ كَانَ صَادِقَ
رَسُولًا وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ مِنْ
عِنْدِ رَبِّهِ مَرْضِيًّا

وَأَذِّنْ فِي الْكِتَابِ بِرِسْمِ إِبْرَاهِيمَ كَانَ صَادِقَ نَبِيًّا

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا نَبِيًّا

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ
ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِنْ حَவْلَةَ نُوحٍ وَإِسْمَاعِيلَ
وِإِسْرَافِيلَ وَرُسُلَهُمْ مِنْ قَبْلُ مِنْهُمْ قَدْ جَاءُواكَ
بِالْبَيِّنَاتِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

فَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِبْرَاهِيمَ هَدًى وَنُوحًا وَجَعَلْنَا
وَأَسْمَاءَ التَّاهِيَاتِ صَوْتًا يَلْقَوْنَ غَيًّا

1 आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बड़े पुत्र थे इन्हीं से अरबों का वंश चला और आप ही के वंश से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी बना कर भेजे गये हैं।

परिणाम) का सामना करेंगे।

60. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली, तथा ईमान लाये और सदाचार किये तो वही स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे। और उन पर तनिक अन्याचार नहीं किया जायेगा।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ ذِكْرُ
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُضْمَرُونَ فِيهَا ۝

61. स्थायी बिन देखे स्वर्ग, जिन का परोक्षतः वचन अत्यंत कृपाशील ने अपने भक्तों को दिया है, वास्तव में उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।

حَدَّثَنِي عَنْ أَبِي بَكْرٍ وَعَنْ الرَّحْمَنِ عِبَادًا
يَا لَعَلَّيْنِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدًا نَبِيًّا ۝

62. वे नहीं सुनेंगे उस में कोई बकवास, सलाम के सिवा, तथा उन के लिये उस में जीविका होगी प्रातः और संध्या।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا تَجْلُوفَ السَّاعَةِ وَهُمْ يَرْكَبُونَ
فِيهَا كُنُوزًا وَعُشْبًا ۝

63. यही वह स्वर्ग है जिस का हम उत्तराधिकारी बना देंगे, अपने भक्तों में से उन्हीं जो आज्ञाकारी हों।

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ
تَقِيًّا ۝

64. और हम¹ नहीं उतरते परन्तु आप के पालनहार के आदेश से, उसी का है जो हमारे आगे तथा पीछे है और जो इस के बीच है, और आप का पालनहार भूलने वाला नहीं है।

وَمَا سَنَرْتَنِي إِلَّا بِمِثْرِ نَيْفٍ لَّهُ مَا بَيْنَ أَيْدِي
وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝

65. आकाशों तथा धरती का पालनहार तथा जो उन दोनों के बीच है। अतः उसी की इबादन (बंदना) करें, तथा उस की इबादन पर स्थित रहें। क्या आप उस के सम्मुख किसी को जानते हैं?

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ
وَاصْطَبِرْ لِحُكْمِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝

1 हदीस के अनुसार एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (फरिश्ते) जिबरील से कहा कि क्या चीज आप को रोक रही है कि आप मझ से और अधिक मिला करें, इसी पर यह आयत अवतरित हुई। (सहीह बुखारी हदीस नं० 4731)

66. तथा मनुष्य कहता है कि क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर निकाला जाऊंगा जीवित हो कर?

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا تَمِيتُ لَأُحْيَوْنَهُ ۚ

67. क्या मनुष्य याद नहीं रखता कि हम ही ने उसे इस से पूर्व उत्पन्न किया है जब कि वह कुछ (भी) न था?

أَوَلَمْ يَتْلُ الْإِنْسَانُ إِذَا فَتَقَهُ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمِثْلَ ۙ نَبْتٍ ۚ

68. तो आप के पालनहार की शपथ! हम उन्हें अवश्य एकत्र कर देंगे और शैतानों को, फिर उन्हें अवश्य उपस्थित कर देंगे, नरक के किनारे मुंह के बल गिरे हुये।

فَوَرَبِّكَ لَنَجْجُرَنَّهِنَّ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ نَحْضُرُهُنَّ ۚ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثَا ۚ

69. फिर हम अलग कर लेंगे प्रत्येक समुदाय से उन में से जो अत्यंत कृपाशील का अधिक अवैज्ञाकारी था।

لَنَجْجُرَنَّ عَنْ كُلِّ تَبَعَةٍ أَهْلَهَا ۚ شَدَّ عَلَى الرُّسُلِ يَحْيَا ۚ

70. फिर हम ही भली-भाँति जानते हैं कि कौन अधिक योग्य है उस में झोक दिये जाने के।

لَنَعْلَمَنَّ أَعْمَهُ يَأْتُونَهُمْ أَذًى يَحْيَا ۚ

71. और नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहाँ गुजरने वाला ' है, यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।

وَرَبُّنَا مُلْكُ الْأَوَّلِينَ ۚ كَانَ عَلَى رَبِّكَ حَتْمًا مَقْضِيًّا ۚ

72. फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुंह के बल गिरे हुये।

لَنَرْجِيَنَّ لَكَ الْوَعْدَ وَنَذْرًا ظَاهِرًا ۚ يَحْيَا ۚ

73. तथा जब उन के समक्ष हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफिर

وَلَا تُنْفِ عَنْهُمْ آيَاتِنَا ۚ يَحْيَا ۚ

1 अर्थान् नरक से जिस पर एक पुल बनाया जायेगा। उस पर से सभी ईमान वालों और काफिरों को अवश्य गुजरना होगा। यह और बात है कि ईमान वालों को इस से कोई हानि न पहुँचे। इस की व्याख्या सहीह हदीसों में वर्णित है।

ईमान वालों से कहते हैं कि (बताओ) दोनों सम्प्रदायों में किस की दशा अच्छी है और किस की मजलिस (सभा) अधिक भव्य है?

يَوْمَئِذٍ اَمْوَالُ الْكَافِرِينَ حَيْرَتًا وَاَحْسَنُ
بَيِّنَاتٍ

74. जब कि हम ध्वस्त कर चुके हैं इन से पहले बहुत सी जानियों को जो इन में उत्तम थी समाधन तथा मान सम्मान में।

وَكَمْ هُنَّ اَتَتْهُنَّ مِنْ قَبْلِهِمْ بَلْ لَمْ يَكُنْ لَهَا
كُوفٍ ۝۷

75. (हे नबी!) आप कह दें कि जो कुपथ में ग्रस्त होता है अत्यंत कृपाशील उसे अधिक अवसर देता है। यहाँ तक कि जब उसे देख लें जिस का वचन दिये जाते हैं या नों यातना को अथवा प्रलय को, उस समय उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि किस की दशा धुरी और किस का जन्मा अधिक निर्बल है।

فَمَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْهُ رَحْمَتُ
مَوْلَاهُ حَتَّىٰ يَذَارَ وَمَا يُؤْمِنُونَ مِنَ الْعَذَابِ وَمِنَ
السَّاعَةِ فَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ مِنْكُمْ كَذَّابٌ وَاضْعَفُ
بُذُنًا ۝۸

76. और अस्त्राह उन्हें जो सुपथ हों मार्गदर्शन में अधिक कर देता है। और शेष रह जाने वाले सदाचार ही उत्तम है आप के पालनहार के समीप कर्म फल में, तथा उत्तम है परिणाम के फलस्वरूप।

وَيَرْفَعُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَاقِيَتِ
الضَّالِّينَ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابٌ وَخَيْرٌ مَرَدًّا ۝۹

77. (हे नबी!) क्या आप ने उसे देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कुफ्र (अविश्वास) किया तथा कहा: मैं अवश्य धन तथा संतान दिया जाऊंगा?

اَلَمْ يَرِيتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ
مَالًا لَّو تَرَوُنَّ ۝۱۰

78. क्या वह अवगत हो गया है परोक्ष से अथवा उस ने अत्यंत दयाशील से कोई वचन ले रखा है?

اَقْلَمَ الْعَيْبَ اَمْ اَتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۝۱۱

79. कदापि नहीं, हम लिख लेंगे जो वह कहना है और हम अधिक करते जायेंगे उस की यातना को अत्यधिक।

كَلَّا لَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَعَذِّبُهُ مِنَ الْعَذَابِ
مَلَأْنَاهُ

80. और हम ले लेंगे जिस की वह बात कर रहा है, और वह हमारे पास अकेला¹ आयेगा।

وَنَرْسِلُهُ فَيَقُولُ وَيَرْتَبِتَ الْوَرْدُ ۝

81. तथा उन्होंने ने बना लिये है अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, ताकि वह उन के सहायक हों

وَالْعَادُوِّ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝

82. ऐसा कदापि नहीं होगा, वे सब इन की पूजा (उपासना) का अस्वीकार कर² देंगे और उन के विरोधी हो जायेंगे।

كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِوَسْوَائِهِمْ وَيَبْكَرُونَ عَلَىٰ عَنَائِهِمْ
يَوْمَئِذٍ ۝

83. क्या आप ने नहीं देखा कि हम ने भेज दिया है शैतानों को काफिरों पर जो उन्हें बराबर उकसाते रहते हैं।

أَلَمْ نَرْسِلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَلْمِزُهُمْ أَنَّ

84. अतः शीघ्रता न करें उन पर³, हम तो केवल उन के दिन गिन रहे हैं,

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا عَسَدْنَا لَهُمُ الْعَذَابَ ۝

85. जिस दिन हम एकाग्रित कर देंगे आज्ञाकारियों को अत्यंत कृपाशील

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ۝

1 इन आयतों के अवतरित होने का कारण यह बताया गया है कि खव्बाब बिन अरत का आस बिन वायल (काफिर) पर कुछ श्रृण धा। जिसे मॉगने के लिये गये तो उस ने कहा मैं तुझे उस समय तक नहीं दूंगा जब तक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कुफ्र नहीं करेगा। उन्होंने ने कहा कि यह काम तो तू मर कर पुनः जीवन हो जाये तब भी नहीं करूंगा। उस ने कहा क्या मैं मरने के पश्चात् पुनः जीवन कर दिया जाऊंगा? खव्बाब ने कहा हाँ आस ने कहा वहाँ मुझे धन और संतान मिलेगी तो तुम्हारा श्रृण चुका दूंगा (महीह बुखारी हदीस नं- 4732)

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 अर्थात् यातना के आने का। और इस के लिये केवल उन की आयु पूरी होने की देर है।

की ओर अतिथि बना कर।

86. तथा हाक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।

وَنُفِثَ فِي السَّعِيرِ ۝

87. वह (काफिर) अधिस्तावना का अधिकार नहीं रखेंगे, परन्तु जिस ने बना लिया हो अत्यंत कृपाशील के पास कोई वचन।¹

لَا يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْإِيمَانِ أَتَأْتَدُّ بِرَبِّهِ ۝

88. तथा उन्होंने ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने अपने लिये एक पुत्र।²

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۝

89. वास्तव में तुम एक भारी बात घड लाये हो।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِذًا ۝

90. समीप है कि इस कथन के कारण आकाश फट पड़े तथा धरती चिर जाये और गिर जायें पर्वत कण-कण हो कर।

كَذَٰلِكَ السَّمَوَاتُ يَمُرُّنَ مِنْهُ وَيُنْفِثُ الْأَرْضُ وَتَنَزُّ الْجِبَالُ ۝

91. कि वह सिद्ध करने लगे अत्यंत कृपाशील के लिये सनान।

أَنْ دَعَا إِلَىٰ تَحْمِيلِ الْوَلَدِ ۝

92. तथा नहीं योग्य है अत्यंत कृपाशील के लिये कि वह कोई सनान बनाये।

وَيَسْتَفِیْهُمُ الرَّحْمَنُ يَوْمَئِذٍ ۝

93. प्रत्येक जो आकाशों तथा धरती में है आने वाले है अत्यंत कृपाशील की सेवा में दास बन कर।

يَوْمَئِذٍ ۝

1 अर्थात् अल्लाह की अनुमति से वही सिफारिश करेगा जो ईमान लाया है।

2 अर्थात् ईसाइयों ने जैसा कि इस मूरह के आरंभ में आया है इसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का पुत्र बना लिया। और इस भ्रम में पड़ गये कि उन्होंने मनुष्य के पापों का प्रार्थश्चन चुका दिया। इस आयत में इसी कुपथ का खण्डन किया जा रहा है।

94. उस ने उन का नियंत्रण में ले रखा है तथा उन को पूर्णतः गिन रखा है।
95. और प्रत्येक उस के समक्ष आने वाला है प्रलय के दिन अकेला।¹
96. निश्चय जो ईमान लाये है तथा सदाचार किये है, शीघ्र बना देगा उन के लिये अत्यंत कृपाशील (दिलों में)² प्रेम।
97. अतः (हे नबी!) हम ने सरल बना दिया है इस (कुरआन) को आप की भाषा में ताकि आप इस के द्वारा शुभ सूचना दें संयमियों (आज्ञाकारियों) को, तथा सतर्क कर दें विरोधियों को।
98. तथा हम ने ध्वस्त कर दिया है, इन से पहले बहुत सी जातियों को, तो क्या आप देखते है उन में से किसी को? अथवा सुनते है, उन की कोई ध्वनि?

لَقَدْ أَحْصَيْنَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْيَوْمَةِ فَرْدًا ۝

إِنَّ الْيَوْمَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوْفَ لَكُمْ لَهُمْ الرِّزْقُ وَذٰلِكَ ۝

فَاَلَمْ يَسْأَلْهُمْ يَسَارًا لَّكَ يٰٓأَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝
وَنُنَوِّسُ بِهِ قَوْمًا كَذٰلِكَ ۝

وَلَمْ أَهْلِكْ مَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَوْمٍ فَهَلْ يَخْشَىٰ مِنْهُمْ ۝
مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكَاثًا ۝

1 अर्थात् उस दिन कोई किसी का सहायक न होगा। और न ही किसी को उस का धन-संतान लाभ देगा।

2 अर्थात् उन के ईमान और सदाचार के कारण लोग उस से प्रेम करने लगेंगे।

सूरह ता हा 20

سُورَةُ طه

सूरह ता हा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 135 आयतें हैं

- इस सूरह के आरंभ में यह दोनों अक्षर आये हैं इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में बह्दी और रिमालत का उद्देश्य बताया गया है। और जो नहीं मानते उन्हें चेतावनी दी गई है, और मूसा (अलैहिस्सलाम) को रिमालत देने और उन के विरोधियों का दुष्परिणाम बताया गया है। साथ ही प्रलय की दशा का भी वर्णन किया गया है ताकि नबूवत के विरोधी सावधान हों।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) की कथा का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि जब मनुष्य इस धरती पर आया तभी यह बात उजागर कर दी गई थी कि मनुष्य को सीधी राह दिखाने के लिये बह्दी तथा रिमालत का क्रम भी जारी किया जायेगा फिर जो सीधी राह अपनायेगा वही शैतान के कुपथ में सुरक्षित रहेगा।
- इस में अब्राह की आयतों से विमुख होने का बुरा अन्त बताया गया है तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से ईमान वालों को सहन और दृढ़ रहने के निर्देश दिये गये हैं। और दिलासा दी गई है कि अन्तिम तथा अच्छा परिणाम उन्हीं के लिये है।
- और अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, हा।

2. हम ने नहीं अवतरित किया है आप पर
कुर्आन इस लिये कि आप दुखी हों।

طه

مَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا

1 अर्थात् विरोधियों के ईमान न लाने पर।

3. परन्तु यह उस की शिक्षा के लिये है जो डरता¹ हो।
4. उतारा जाना उस की ओर से है, जिस ने उत्पत्ति की है धरती तथा उच्च आकाशों की।
5. जो अत्यन्त कृपाशील अर्श पर स्थिर है।
6. उसी का² है जो आकाशों तथा जो धरती में और जो दोनों के बीच तथा जो भूमि के नीचे है।
7. यदि तुम उच्च स्वर में बात करो, तो वास्तव में वह जानता है भेद को तथा अत्यधिक धुपे भेद को।
8. वही अल्लाह है नहीं है कोई बंदनीय (पूज्य) परन्तु वही। उसी के उत्तम नाम है।
9. और (हे नबी!) क्या आप को मूसा की बात पहुँची?
10. जब उस ने देखी एक अग्नि, फिर कहा अपने परिवार से रुको, मैं ने एक अग्नि देखी है, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पास उस का कोई अंगार लाऊँ अथवा पा जाऊँ आग पर मार्ग की कोई सूचना।³
11. फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गया: हे मूसा!

إِلَّا أَنْذِرُهُ لِمَنْ يَخْشَى

تُؤْتِي الْأَرْضَ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ

الْأَرْضُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۚ

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا يَشْعُرُ
وَمَا يَحِيطُ لَهُ ۖ

وَإِنْ تَجَاهَرَا بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ الْخِطْرَ ۚ

أَلَيْسَ لِلَّهِ الْإِثْمَانَةُ ۖ

وَأَمَّا نَسَكَ حَبِيبُكَ مُوسَى ۖ

إِذْ رَأَاهُ فَقَالَ لِيهِ أَتَكُونُ مِنَ الَّذِينَ
يَعْلَمُونَ أَيْتَهُمْ مِنْ بَيْنِ أَوْ أَعْدُوهُمْ عَلَى الشَّرِّ
هَدًى ۖ

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَتُوسَى ۖ

- 1 अर्थात् ईमान न लाने तथा कुकर्मी के दुष्परिणाम से।
- 2 अर्थात् उसी के स्वामित्व में तथा उस के आधीन है।
- 3 यह उस समय की बात है, जब मूसा अपने परिवार के साथ मदन नगर से मिस्र आ रहे थे और मार्ग भूल गये थे।

12. वास्तव में मैं ही तेरा पालनहार हूँ, तू उतार दे अपने दोनों जूते, क्योंकि तू पवित्रवादी (उपन्यका) "नुवा" में है।
13. और मैं ने तुझ को चुन¹ लिया है। अतः ध्यान से सुन, जो वही की जा रही है।
14. निःसन्देह मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तो मेरी ही इबादत (वन्दना) कर तथा मेरे स्मरण (याद) के लिये नमाज की स्थापना² कर।
15. निश्चय प्रलय आने वाली है, मैं उसे गुप्त रखना चाहता हूँ, ताकि प्रतिकार (बदला) दिया जाये, प्रत्येक प्राणी को उस के प्रयास के अनुसार।
16. अतः तुम को न रोक दे, उस (के विश्वास) से, जो उस पर ईमान (विश्वास) नहीं रखता, और जिस ने अनुसरण किया हो अपनी इच्छा का। अन्यथा तेरा नाश हो जायेगा।
17. और हे मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?
18. उत्तर दिया: यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ तथा इस से अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ तथा मेरी इस में दूसरी आवश्यकतायें (भी) हैं।
19. कहा: उसे फेंकिये, हे मूसा!

يَا أَيُّهَا رَبُّكَ فَاحْطَمْ تَمَكِّتُكَ إِنَّكَ يَا لَوَا
الْمُقَدَّسِينَ طُوًى ۝

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ ۝

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمْ
الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۝

إِنَّ السَّاعَةَ الْبَيْتَةَ أَكَادُ أَخْفِيهَا لِتُغْرَىٰ لِكُلِّ
نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ۝

فَلَا يَصُدُّكُمْ عَنْهُ مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبِعُوا هُودَ
فَلَوْ كُذِّبُوا ۝

وَبِأَمْرِكَ يُخَوِّدُ الْفِرْعَوْنُ ۝

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَنُوكُو أُعْتِدَ لَهَا وَآهَشُ بِهَا
الْحَيَّ وَبِهَا مَا يَرْبُ الْغُرَىٰ ۝

قَالَ أَلْقِهَا يٰمُوسَىٰ ۝

1 अर्थात् नबी बना दिया।

2 इबादत में नमाज सम्मिलित है, फिर भी उस का महत्व दिखाने के लिये उस का विशेष आदेश दिया गया है।

20. तो उस ने उसे फेंक दिया, और सहमा वह एक सर्प थी, जो दौड़ रहा था।
21. कहा: पकड़ ले इस को, और डर नहीं हम उसे फेर देंगे उस की प्रथम स्थिति की ओर।
22. और अपना हाथ लगा दे अपनी काख (बगल) की ओर वह निकलेगा चमकना हुआ बिना किसी रोग के यह दूसरा चमत्कार है।
23. ताकि हम तुझे दिखायें, अपनी बड़ी निशानियाँ।
24. तुम फिर औन के पास जाओ, वह बिद्रोही हो गया है।
25. मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! खोल दे मेरे लिये मेरा सीना।
26. तथा सरल कर दे, मेरे लिये मेरा काम।
27. और खोल दे, मेरी जुवान की गाँठ।
28. ताकि लोग मेरी बात समझें।
29. तथा बना दे, मेरा एक सहायक मेरे परिवार में से।
30. मेरे भाई हारून को।
31. उस के द्वारा दृढ़ कर दे मेरी शक्ति को।
32. और साझी बना दे, उसे मेरे काम में।
33. ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता का गान अधिक करें।

فَالْقَمَهِ يَأْذَاهُ حَيَّةٌ تَسْفِي ۝

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَحْضُحْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَى ۝

وَالْمُؤَيَّدُ إِلَىٰ جَانِبِكَ غُرْبَةً يَخْضَعُ مِنْ غَيْرِ
سُورَةِ آيَةِ أُخْرَى ۝

لِيُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ۝

إِذْ هَبَّ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رُتَّةٌ ظَلَمَى ۝

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنِّي لَيْسَ مِنِّي ۝

يُلْقِيَهُمُ اقْوَمٌ ۝

وَاجْعَلْ لِي وَكِيلًا مِّنْ أَهْلِي ۝

هَارُونَ أَخِي ۝

اَشْدُدْ يَدِي الْأَمْرِ ۝

وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ۝

لَّكَسْبَعَكَ كَثِيرًا ۝

34. तथा तुझे अधिक स्मरण (याद) करो।

وَذَكِّرْكَ كَذِكْرِكَ ۝

35. निःसन्देह तू हमें भली प्रकार देखने भालने वाला है।

إِنَّكَ كُنْتَ بِمَا تَصِيرُ ۝

36. अल्लाह ने कहा हे मूसा! तेरी सब माँग पूरी कर दी गयी।

قَالَ قَدْ أُتِيتَ سُؤْلَكَ يُسُوفِي ۝

37. और हम उपकार कर चुके हैं तुम पर एक बार और! (भी)।

وَلَعَدَّ مَدَنًا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَى ۝

38. जब हम ने उतार दिया तेरी माँ के दिल में जिम की बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है।

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ۝

39. कि इसे रख दे ताबूत (सन्दूक) में, फिर उसे नदी में डाल दे फिर नदी उसे किनारे लगा देगी, जिसे उठा लेगा मेरा शत्रु तथा उस का शत्रु², और मैं ने डाल दिया तुझ पर अपनी ओर से विशेष³ प्रेम ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी रक्षा में हो।

أَبِ الْقَدْحِ فِي الشَّيْءِ فَتُؤْتِي الْيَوْمَ
فَيُسَوِّدُ الْبَيْتَ بِالسَّيْرِ يَأْخُذُ مَدَوًى وَمَدْرُ
لَهُ الْفَيْتُ عَلَيْكَ غَبَرَةٌ تَفْشَىٰ وَرِثَصَةٌ عَلَىٰ
عَيْنَيْ ۝

40. जब चल रही थी तेरी बहन⁴, फिर कह रही थी: क्या मैं तुम्हें उसे बता दूँ, जो इस का लालन-पालन करे? फिर हम ने पुनः तुम्हें पहुँचा दिया तुम्हारी माँ के पास, ताकि उस की आँख ठण्डी हो, और उदासीन न हो। तथा हे मूसा! तू ने मार दिया एक व्यक्ति को तो हम ने तुझे मुक्त कर

رَدَّ تَشْمِئَ أَشْنُكَ فَمَسْمُولٌ هَلْ أَدْلَمَ عَلَىٰ مَرْ
يَكْفُلُهُ فَرَجَعْتِكَ إِلَىٰ أُمِّكَ تَقَرَّرَ عَيْنُهَا
وَلَا تُحَرَّرُ ۝ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْتَهُ مِنَ الْعَذَابِ
وَقَفَّيْتَهُ كَفُّوهُ ۝ فَجَبَّيْتَهُ إِلَىٰ أَهْلِهِ
مَدِينٍ ۝ لَمْ يَجْعَلْ عَلَىٰ قَدْحِهِ يُسُوفِي ۝

1 यह उस समय की बात है जब मूसा का जन्म हुआ। उस समय फिरऔन का आदेश था कि बनी इस्राइल में जो भी शिशु जन्म ले, उसे बध कर दिया जाये।

2 इस से तात्पर्य मिस्र का राजा फिरऔन है।

3 अर्थात् तुम्हें सब का प्रिय अथवा फिरऔन का भी प्रिय बना दिया।

4 अर्थात् सन्दूक के पीछे नदी के किनारे।

दिया चिन्ता¹ से। और हम ने तेरी भली-भाँति परीक्षा ली। फिर तू रह गया वर्षों मद्यन के लोगों में, फिर तू (मद्यन से) अपने निश्चित समय पर आ गया।

41. और मैं ने बना लिया है तुझे विशेष अपने लिये।

وَصَصَّصْتُكَ لِشَيْءٍ

42. जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियाँ ले कर, और दोनों आलस्य न करना मेरे स्मरण (याद) में।

إِذْ هَبَّ آتَتْ وَالْخَوْلَىٰ يَأْتِيَنَّ وَلَا تَبَيَّنَ لِلْزَّوْجَيْنِ

43. तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, वास्तव में वह उलझन कर गया है।

إِذْ هَبَّ إِلَىٰ مَرْغُوبٍ رَّحِمَةً كَلْفٍ

44. फिर उस से कोमल बोल बोलो, कदाचित वह शिक्षा ग्रहण करे अथवा डरे।

فَقَوْلًا لَهُ قَوْلًا لِّهِنَّ الْقَلَمُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَحْشَىٰ

45. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमें भय है कि वह हम पर अत्याचार अथवा अतिक्रमण कर दे।

فَلَا رَيْبَ أَنَّا مَعَاكَ أَنْ يَغْرَطَ مَكِيدَتُ الْوَلَدِ
يُظَلِّقُ

46. उस (अब्राह) ने कहा तुम भय न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता तथा देखना हूँ।

قَالَ لَا تَحْزَنْ وَأَرْسِلْ فِي مَمْلَكَاتِنَا نَسْمَعُ وَآرِئُ

47. तुम उस के पास जाओ और कहो कि हम तेरे पालनहार के रसूल हैं। अतः हमारे साथ बनी इसाइल को जाने दे, और उन्हें यातना न दे हम तेरे पास तेरे पालनहार की निशानी लाये हैं और शान्ति उस के लिये है।

فَأَنبِئْهُ فَقَوْلًا إِنَّ رَسُولَ رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا
مَنْ يَشَاءُ مِنْ آلِ إِبْرَاهِيمَ وَلَا تَعْبُدُوا قُلُوبَكُمْ بِأَيْدِي
مِنْ رَبِّكَ وَالشُّعْرُ عَلَىٰ مَنْ أَشْبَهَ لَهْدَىٰ

1 अर्थात् एक फिरऔनी को मारा और वह मर गया, तो तुम मद्यन चले गये इस का वर्णन सूरह कमम में आयेगा।

जो मार्ग दर्शन का अनुसरण करे।

48. वास्तव में हमारी ओर बह्यी (प्रकाशना) की गई है कि यातना उसी के लिये है, जो झुठलाये और मुख फेरे।

لَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ آلِ الْعَادِیِّ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ

49. उस ने कहा: हे मूसा! कौन है तुम दोनों का पालनहार?

قَالَ قَسَمَ رَبِّي مَا يَسُؤُنِي

50. मूसा ने कहा: हमारा पालनहार वह है जिस ने प्रत्येक वस्तु को उस का विशेष रूप प्रदान किया है, फिर मार्ग दर्शन¹ दिया।

قَالَ رَبِّيَ أَنَّمَا كُلُّ شَيْءٍ خَلْقُهُ ثُمَّ هَدَىٰ

51. उस ने कहा फिर उन की दशा क्या होनी है जो पूर्व के लोग है?

قَالَ لَهَا بِلَآلِ الْعُرُوبِ الْأُولَىٰ

52. मूसा ने कहा: उस का ज्ञान मेरे पालनहार के पास एक लेख्य में सुरक्षित है मेरा पालनहार न तो चूकना है और न² भूलता है।

قَالَ يَلْبَثُ خَمْسُ فَيَوْمٍ لَا يَمُوتُ رَجُلٌ وَلَا يَمُوتُ

53. जिस ने तुम्हारे लिये धरती को घिसनर बनाया है और तुम्हारे चलने के लिये उस में मार्ग बनाये है, और तुम्हारे लिये आकाश से जल बरसाया, फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की उपज निकाली।

الْبَدَىٰ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَوَسَّكَ لَكُمُ الْوَحْشَ سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَنُخْرِجُ بِهِ أَزْوَاجًا مِّن بَيْنِ يَدَيْكَ

54. तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को चराओ, वस्तुतः इस में बहुत सी निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।

كُلُوا وَارْزُقُوا الْعَاطَشِينَ فِي ذَٰلِكَ لَا يَبْذُلُونَ التَّكْلِفَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने प्रत्येक जीव जन्तु के योग्य उस का रूप बनाया है। और उस के जीवन की आवश्यकता के अनुसार उसे खाने पीने तथा निवास की विधि समझा दी है।

2 अर्थात् उन्होंने ने जैसा किया होगा उन के आगे उन का परिणाम आयेगा।

55. इसी (धरती) से हम ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, और उसी में तुम्हें वापिस ले जायेंगे, और उसी में तुम सब को पुनः⁽¹⁾ निकालेंगे।

وَمِنْ حَقِّكَ ذِكْرُهَا يُبِيدُكُمْ وَيُغَيِّرُكُمْ بِتَوَارِقٍ
اُخْرَى ۝

56. और हम ने उसे दिखा दी अपनी सभी निशानियाँ फिर भी उस ने झुठला दिया और नहीं माना।

وَلَقَدْ آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَى ۝

57. उस ने कहा क्या तू हमारे पास इस लिये आया है कि हमें हमारी धरती (देश) से अपने जादू (के बल) से निकाल दे, हे मूसा?

قَالَ أَجِئْتُكَ بِبُرْهَانٍ مُبِينٍ لِمُوسَى ۝

58. फिर तो हम तेरे पास अवश्य इसी के समान जादू लायेंगे, अतः हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर ले, जिस के विरुद्ध न हम करेंगे और न तुम, एक खुले मैदान में।

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِبُرْهَانٍ مِثْلِهِ فَأَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْجِدًا
لَّا يُغْنِي عَنْكَ وَلَا آتٍ مَكَانًا سُوًى ۝

59. मूसा ने कहा तुम्हारा निर्धारित समय शोभा (उत्सव) का दिन² है तथा यह कि लोग दिन चढ़े एकत्रित हो जायें।

قَالَ مَوْجِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْمَةِ وَإِنَّ تُخْشَوْنَ النَّاسَ
فَضْلًا ۝

60. फिर फिरऔन लोट गया³, और अपने हथकण्डे एकत्र किये, और फिर आया।

فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى ۝

61. मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा: तुम्हारा विनाश हो! अझाह पर मिथ्या आरोप न लगाओ कि वह तुम्हारा किसी यातना द्वारा सर्वनाश कर दे, और वह निष्फल ही रहा है जिस ने मिथ्यारोपण किया।

قَالَ لَهُمُ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَفْعَرُوا أَعْمَالُ الْعَبْدِ كَيْدًا
فَيُسْجَنُكُمْ بِهِمَا آيٌ وَقَدْ خَابَ مِنْ أَفْئِدَى ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन पुनः जीवित निकालेंगे।

2 इस से अभिप्राय उन का कोई वार्षिक उत्सव (मेले) का दिन था।

3 मूसा के सत्य को न मान कर, मुकाबले की तैयारी में व्यस्त हो गया।

62. फिर¹ उन के बीच विवाद हो गया, और वे चुपके-चुपके गुप्त मंत्रणा करने लगे।

فَكَذَّبُوا بَيْنَهُمْ وَأَعْوَجَّ السُّبُورُ ۝

63. कुछ ने कहा: यह दोनों वास्तव में जादूगर है, दोनों चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी धरती से अपने जादू द्वारा निकाल दें, और तुम्हारी आदर्श प्रणाली का अन्त कर दें।

قَالُوا إِنَّ هَذَيْنِ لَشَرٌّ مِنْكَ بَشَرٌ لَّنْ يَكُونُ لَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ بِشَرٍّ مِّمَّا وَرَدَّهَا بِطَرَفِيكَمْ وَقَدْ كَفَرْنَا ۝

64. अतः अपने सब उपाय एकत्र कर लो, फिर एक पंक्ति में हो कर आ जाओ, और आज वही सफल हो गया जो ऊपर रहा।

فَاجْمَعُوا كَيْدَ كُفْرِكُمْ أَصْحَابًا وَقَدْ آخَرُوكُمُ الْيَوْمَ مِّنْ أَمَلِكُمْ ۝

65. उन्होंने ने कहा: हे मूसा! तू फेंकना है या पहले हम फेंके?

قَالُوا يَوْمَئِذٍ إِنَّمَا أَنْتَ تُنْقِلُ فَأَمَّا أَنْ تَكُونَ لَكُم مِّنَ الْفَى ۝

66. मूसा ने कहा: बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उन की रस्मियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थी कि उन के जादू (के बल) से दौड़ रही हैं।

قَالَ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ۝ وَاجْعَلْهُمُ اللَّهُ رَحِيمَةً يَّخْتَلِئَ إِلَيْهِ مِنْ بَنِيهِمْ إِنَّهَا فَتْنٌ ۝

67. इस से मूसा अपने मन में डर गया।²

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّؤَسَّى ۝

68. हम ने कहा: मत डर तू ही ऊपर रहेगा।

فُلْنَا لَأَعْتَفَ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ۝

69. और फेंक दे जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जायेगा जो कुछ उन्होंने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बना कर लाये हैं। तथा जादूगर सफल नहीं होता जहाँ से आये।

وَأَلْقَى مَا فِي يَمِينِهِ تَلْقَفًا مَا عَسَاوُا إِنَّمَا تَصَوُّرًا ۝ كَيْدَ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِكُ إِلَّا السَّارِعِينَ ۝

1 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात सुन कर उन में मतभेद हो गया कुछ ने कहा कि यह नबी की बात लग रही है। और कुछ ने कहा कि यह जादूगर है।

2 मूसा अलैहिस्सलाम को यह भय हुआ कि लोग जादूगरों के धोखे में न आ जायें।

70. अन्ततः जादूगर सज्दे में गिर गये,
उन्होंने कहा कि हम ईमान लाये
हारून तथा मूसा के पालनहार पर।

فَأَلْقَى السَّحَرَةُ سِحْرَهُمْ فَقَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ
وَمُوسَى ۝

71. फिरऔन बोला: क्या तुम ने उस का
विश्वास कर लिया इस से पूर्व कि मैं
तुम्हें आज्ञा दूँ? वास्तव में वह तुम्हारा
बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम्हें जादू
सिखाया है। तो मैं अवश्य कटवा दूँगा
तुम्हारे हाथों तथा पावों को विपरीत
दिशा¹ से, और तुम्हें सूली दे दूँगा
खजूर के तनों पर तथा तुम्हें अवश्य
ज्ञान हो जायेगा कि हम में से किस की
यातना अधिक कड़ी तथा स्थायी है।

قَالَ اسْتَمِعْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَقُولَ لَكَ إِنَّهُ لَكَيْدٌ
الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَا تَقْعَمَنَّ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلُكُمْ
مِنْ غِلَافٍ وَلَا تَصِلَنَّكُمْ جُذُوعُ النَّخْلِ
وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَلْوِي ۝

72. उन्होंने ने कहा हम तुझे कभी उन
खुली निशानियों (तर्कों) पर प्रधानता
नहीं देंगे जो हमारे पास आ गयी है,
और न उस (अब्राह) पर जिस ने हमें
पैदा किया है नू जो करना चाहे कर
ले, नू बस इसी संसारिक जीवन में
आदेश दे सकता है।

قَالُوا لَنْ نؤْثِرَكَ عَلَى مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَهِتِ
وَالَّذِي ظَنَرْنَا عَاطِيَا مَأْسَدًا فَأَوْسُنَا
نُفُوسَ هَذِهِ الْعِيُونَ الدُّنْيَا ۝

73. हम तो अपने पालनहार पर ईमान
लाये हैं, ताकि वह क्षमा कर दे
हमारे लिये हमारे पापों को तथा जिस
जादू पर तु ने हमें बाध्य किया, और
अब्राह सर्वोत्तम तथा अनन्त² है

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِنُغْفِرَ لَكَ خَطِيئَتَا وَمَا أَرْهَمْنَا
عَلَيْنَا مِنَ السِّحْرِ وَاللَّهُ خَبِيرٌ وَبِشٍ ۝

74. वास्तव में जो जायेगा अपने
पालनहार के पास पापी बन कर तो
उसी के लिये नरक है, जिस में न

إِنَّ مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ
لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝

1 अर्थात् दाहिना हाथ और बायों पैर अथवा बायों हाथ और दाहिना पैर।

2 और तेरा राज्य तथा जीवन तो साम्यिक है।

वह मरेगा और न जीवन रहेगा।¹⁾

75. तथा जो उस के पास ईमान ले कर आयेगा, तो उन्हीं के लिये उच्च श्रेणियाँ होंगी।

76. स्थायी स्वर्ग जिन में नहरें बहती होंगी, जिस में सदावासी होंगे, और यही उस का प्रतिफल है जो पवित्र हो गया।

77. और हम ने मूसा की ओर बह्ती की, कि रातों-रात चल पड़ मेरे भक्तों को ले कर, और उन के लिये सागर में सूखा मार्ग बना ले²⁾, तुझे पा लिये जाने का कोई भय नहीं होगा और न डरेगा।

78. फिर उन का पीछा किया फिरऔन ने अपनी सेना के साथ, तो उन पर सागर छा गया जैसा कुछ छा गया।

79. और कुपथ कर दिया फिरऔन ने अपनी जाति को और सुपथ नहीं दिखाया।

80. हे इस्राईल के पुत्रो! हम ने तुम्हें मुक्त कर दिया तुम्हारे शत्रु से, और वचन दिया तुम्हें तूर पर्वत में दाहिनी³⁾ ओर का तथा तुम पर उतारा "मन्न" तथा "सल्वा"⁴⁾

81. खाओ उन स्वच्छ चीजों में से जो

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَلَهُ أَجْرٌ
لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى

جَنَّاتٌ عَدْنٍ يَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ جَزَاءُ مَنْ شَرَّكَ

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنِ اسْبِرْ بِهَذَا
وَأَضْرِبْ لَهُمُ طَرِيقًا إِلَى الْبَحْرِ يَبَسُ لَا تَبْخُلُ
دَرْكًا وَلَا تَنْخَشِي

فَاتَّبَعَهُمْ فَوَقَّعَهُمْ يَوْمَئِذٍ فَمَا أَجْرُهُمْ مِنَ
مَا عَصَوْا

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَى

يَبْنِي إِسْرَءِيلَ قَدْ نَجَّيْنَاهُ مِنْ عَدُوِّهِ
وَوَعَدْنَاهُ يَمِينًا الْقَوَارِ الْأَيْمَنَ وَوَعَدْنَا
عَلَيْكُمْ لَمَسًا وَاسْتَوَى

كُلًّا مِنْ هَؤُلَاءِ مَنَّا لَنْ نَقْتُلَكُمْ وَلَا نَقْتُلَكُمْ فِيهِ

1 अर्थात् उसे जीवन का कोई सुख नहीं मिलेगा।

2 इस का सविस्तार वर्णन सूरह शुअरा 26 में आ रहा है।

3 अर्थात् तुम पर तौरात उतारने के लिये।

4 मन्न तथा सल्वा के भाष्य के लिये देखिये: बकरा आयत: 57।

जीविका हम ने तुम्हें दी है, तथा
उल्लंघन न करो उस में, अन्यथा
उतर जायेगा तुम पर मेरा प्रकोप।
तथा जिस पर उतर जायेगा मेरा
प्रकोप, तो निश्चय वह गिर गया।

82. और मैं निश्चय बड़ा क्षमाशील हूँ
उस के लिये जिस ने क्षमा याचना
की तथा ईमान लाया और सदाचार
किया फिर सुपथ पर रहा।

83. और हे मूसा! क्या चीज तुम्हें ले आई
अपनी जाति से पहले? ¹

84. उस ने कहा वे मेरे पीछे आ ही रहे
हैं, और मैं तेरी सेवा में शीघ्र आ
गया, हे मेरे पालनहार! तार्कि तू
प्रसन्न हो जाये।

85. अब्राह ने कहा हम ने परीक्षा में
डाल दिया तेरी जाति को तेरे (आने
के) पश्चात्, और कुपथ कर दिया है
उन को सामेरी ² ने।

86. तो मूसा वापस आया अपनी जाति
की ओर अति क्रुद्ध शोकानुर हो कर।
उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगो!
क्या तुम्हें वचन नहीं दिया था तुम्हारे
पालनहार ने एक अच्छा वचन? ³ तो
क्या तुम्हें बहुत दिन लग ⁴ गये?

فَبِجَلٍّ عَلَيْنَا مَصِيقٌ وَأَمْرٌ يُخْلِلُ عَلَيْنَا
عَصِيْبٌ فَقَدْ هَوَىٰ ۝

ذَٰلِكَ لَعَنَّا لِسَانَ نَابٍ وَأَمْرٍ وَعَمَلٍ
صَّالِحًا لَّعَنَّا هُنْدَىٰ ۝

وَمَا أَغْنَتْ عَنْكَ آلُكَ يَتُومَىٰ ۝

قَالَ لَهُمُ الْوَلَدُ عَلَىٰ أَشْرَىٰ وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ
رَبِّ لِقَاضَىٰ ۝

قَالَ فَإِنَّكَ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ
وَأَضَلَّهُمُ اسْمَاعِيلُ ۝

فَرَجَعْنَا مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا
قَالَ يَقَوْمِ الْغَيْبُ كُذِّبَتْكُمْ وَمِنَّا حَسَنَاتُ الْكَفَالِ
عَلَيْكُمْ لَعَنَّا أَمْرًا ذَمَّ أَنْ يُجِلَّ عَلَيْكُمْ
غَضَبٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمُ مَوْعِدَ ۝

1 अर्थात् तुम पर्वत की दाहिनी ओर अपनी जाति से पहले क्यों आ गये और उन्हें
पीछे क्यों छोड़ दिया?

2 सामेरी बनी इस्राईल के एक व्यक्ति का नाम है।

3 अर्थात् धर्म पुस्तक तीरात देने का वचन।

4 अर्थात् वचन की अवधि दीर्घ प्रतीत होने लगी।

अथवा तुम ने चाहा कि उतर जाये तुम पर कोई प्रकोप तुम्हारे पालनहार की ओर से? अतः तुम ने मेरे वचन¹ को भंग कर दिया।

87. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम ने नहीं भंग किया है तेरा वचन अपनी इच्छा से, परन्तु हम पर लाद दिया गया था जाति² के आभूषणों का बोझ, तो हम ने उसे फेंक³ दिया, और ऐसे ही फेंक⁴ दिया सामरी ने।

88. फिर वह⁵ निकाल लाया उन के लिये एक बछड़े की मूर्ति जिस की गाय जैसी ध्वनि (आवाज) थी, तो सब ने कहा यह है तुम्हारा पूज्य तथा मूसा का पूज्य (परन्तु) मूसा इसे भूल गया है।

89. तो क्या वे नहीं देखने कि वह न उन की किसी बात का उत्तर देता है, और न अधिकार रखता है उन के लिये किसी हानि का न किसी लाभ का? ⁶

90. और कह दिया था हारून ने इस से पहले ही कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारी परीक्षा की गई है

قَالُوا مَا احْفَظْنَا مَوْعِدَكَ بِبَنِيكَ اُولَئِكَ جِثَلُنَا اَوْ اَكْرَامُ
مِنْ رَبِّنَا الْقَوْمُ فَقَدَفْنَاهُ فَلَمَّا بَكَى السَّامِرِيُّ

فَاَخْرَجَهُ لَهُمْ مِنْهَا جَسَدًا لَهُ خَوَارِقٌ كَتُوبَةٍ
الَّذِي رَدَّ لَهُ مُوسَى اَمْرِي

اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا لَا يَرْجِعُ عَنْهُمْ قَوْلًا وَاَنَّا نَمُوتُ
لَهُمْ قَرَارًا وَنُفَعًا

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِنْ قَبْلِ يَقُومُ اِنَّمَا فَتَنَّ
بِهِ قُلُوبَكُمْ اِنَّكُمْ اَرْحَافٌ فَاسْتَمِعُوا اَمْرِي

- 1 अर्थात् मेरे वापिस आने तक अज़ाह की इबादन पर स्थिर रहने की जो प्रतिज्ञा की थी।
- 2 जाति से अभिप्रेत फिरौन की जाति है जिन के आभूषण उन्होंने ने उधार ले रखे थे।
- 3 अर्थात् अपने पास रखना नहीं चाहा और एक अग्नि कुण्ड में फेंक दिया
- 4 अर्थात् जो कुछ उस के पास था।
- 5 अर्थात् सामरी ने आभूषणों को पिघला कर बछड़ा बना लिया
- 6 फिर वह पूज्य कैसे हो सकना है?

इस के द्वारा, और वास्तव में तुम्हारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है। अतः मेरा अनुसरण करो तथा मेरे आदेश का पालन करो।

91. उन्होंने ने कहा: हम सब उसी के पुजारी रहेंगे जब तक (तूर से) हमारे पास मूसा वापिस न आ जायें।

قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْهِ عٰبِدِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوسٰى ۝

92. मूसा ने कहा: हे हारून! किस बात ने तुझे रोक दिया जब तू ने उन्हें देखा कि कुपथ हो गये?

قَالَ يٰ هٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوْا ۝

93. कि मेरा अनुसरण न करो? क्या तू ने अवैज्ञा कर दी मेरे आदेश की?

اَلَا تَتَّبِعُنِ فَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ۝

94. उस ने कहा: मेरे माँ जाये भाइँ! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर। वास्तव में मुझे भय हुआ कि आप कहेंगे कि तू ने विभेद उत्पन्न कर दिया बनी इस्राईल में, और¹ प्रतीक्षा नहीं की मेरी बात (आदेश) की।

قَالَ يَسُوْرًا لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا جُرْحِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيتُ اَنْ تَقُوْلَ قَوْلًا يِّنْ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ اِنْ لَّمْ تَرْجُبْ قَوْلِيْ ۝

95 (मूसा ने) पूछा: तेरा समाचार क्या है हे सामरी?

قَالَ فَمَا لَطَفْتُكَ يٰ سَامِرِيُّ ۝

96. उस ने कहा: मैं ने वह चीज देखी जिसे उन्होंने ने नहीं देखा, तो मैं ने ले ली एक मुट्ठी रमूल के पर्दाचन्ह से फिर उसे फेंक दिया, और इसी प्रकार सुझा दिया मुझे² मेरे मन ने।

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ نَفَضْتُ كَيْفَٔهٖ مِنْ اَكْرَ الرَّسُوْلِ فَبَدَأْتُهَا فَاَنْتَ سَوَّلْتَ لِيْ تَقْوِيْ ۝

1 (देखियें मूरह आराफ आयत: 142)

2 अधिकांश भाष्यकारों ने रमूल से अभिप्राय जिब्रील (फरिश्ता) लिया है। और अर्थ यह है कि सामरी ने यह ब्रान बनाई कि जब उस ने फिरऔन और उस की सेना के हूबने के समय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को घोड़े पर सवार वहाँ देखा तां उन के घोड़े के पर्दाचन्ह की मिट्टी रख ली। और जब माने का बछड़ा

97. मूमा ने कहा जा तेरे लिये जीवन में यह होना है कि तू कहना रहे मुझे स्पर्श न करना¹ तथा तेरे लिये एक और² वचन है जिस के विरुद्ध कदापि न होगा, और अपने पूज्य को देख जिस का पुजारी बना रहा, हम अवश्य उसे जला देंगे, फिर उसे उड़ा देंगे नदी में चूर-चूर कर के

قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ مَقُولًا لَا
وَسَأَسْأَلُ نَارَكَ لَكَ مُوعِدًا كَثِيرًا وَلَا تُظِرُّ لِي
الْهَذَا الْخَوَافَ قُلْتُ عَلَيْهِ عَذَابٌ أَلِيمٌ فَتَوَلَّى
لَتَتَّبِعَنَّكَ فِي الْيَوْمِ نَسْفًا ۝

98. निःसदेह तुम सभी का पूज्य बस अल्लाह है, कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा। वह समोये हुये है प्रत्येक वस्तु को (अपने) ज्ञान में।

إِنَّمَا إِلَهُ الْكَوْكُوتِ الَّذِي لَدَيْهِ الْأَرْسَالُ
وَسِعَ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

99. इसी प्रकार (हे नबी!) हम आप के समक्ष विगत समाचारों में से कुछ का वर्णन कर रहे हैं, और हम ने आप को प्रदान कर दी है अपने पास से एक शिक्षा (कुरआन)।

كَذَٰبَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ
وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ كُنْهٍ وَكُرْآنًا ۝

100. जो उस से मुँह फरेगा तो वह निश्चय प्रलय के दिन लादे हुये होगा भारी³ बोझ।

مَنْ أَغْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ۝

101. वे सदा रहने वाले होंगे उस में, और प्रलय के दिन उन के लिये बुरा बोझ होगा।

حَبِيرِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ۝

बना कर उस धूल को उस पर फेंक दिया तो उस के प्रभाव से उस में से एक प्रकार की आवाज निकलने लगी जो उन के कुपथ होने का कारण बनी।

1 अर्थात् मेरे समीप न आना और न मुझे छूना, मैं अछूत हूँ।

2 अर्थात् परलोक की यातना का।

3 अर्थात् पापों का बोझ।

102. जिस दिन फूक दिया जायेगा मूर¹⁾
(नरसिंघा) में, और हम एकत्र कर
देगे पापियों को उस दिन इस दशा
में कि उन की आँखें (भय से) नीली
होंगी।

يَوْمَ يَفْعَلُ الْمَوْتُ فِي الْقُبُورِ نَحْشًا مَّا يَكُونُ لَكُمْ يَوْمَئِذٍ
سُفَاهًا

103. वे आपस में चुपके चुपके कहेंगे कि
तुम (संसार में) बस दस दिन रहे हो।

يَتَخَفَتَانِ يَتَخَفَتَانِ يُسْتَفْتَىٰ بِهِمَا الْأَعْمَىٰ

104. हम भली भाँति जानने हैं, जो कुछ
वह कहेंगे, जिस समय कहेगा उन
में से सब से चतुर कि तुम केवल
एक ही दिन रहे²⁾ हो।

كُلٌّ أَفْوَهُمَا يُقُولُونَ ذُنُوبًا أَشَدُّ مُثْقَلَةً
إِنْ يَسْتَفْتِ الْأَعْمَىٰ

105. वे आप से प्रश्न कर रहे हैं पर्वतों
के संबन्ध में? आप कह दें कि उड़ा
देगा उन्हें मेरा पालनहार घूर घूर
कर के।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُ رَبِّي نَهَاةً

106. फिर धरती को छोड़ देगा समतल
मैदान बना कर।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَافٍ مَدِيدًا

107. तुम नहीं देखोगे उस में कोई
टेढ़ापन और न नीच-ऊँच।

لَا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا

108. उस दिन लोग पीछे चलेंगे पुकारने
वाले के, कोई उस से कतरायेगा
नहीं और धीमी हो जायेगी आवाजें
अत्यंत कृपाशील के लिये, फिर तुम
नहीं सुनोगे कानाफूँसी की आवाज
के सिवा।

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ
الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا

1 «मूर» का अर्थ नरसिंघा है, जिस में अल्लाह के आदेश में एक फ़रिश्ता इसाफील
अलैहिस्सलाम फूकेगा, और प्रलय आ जायेगी। (मुस्नद अहमद 2191)
और पुनः फूकेगा ताँ सब जीवित हो कर हथ्र के मैदान में आ जायेंगे।

2 अर्थात् उन्हें संसारिक जीवन क्षण दाँ क्षण प्रतीत होगा।

109. उस दिन लाभ नहीं देगी सिफारिश परन्तु जिसे आज्ञा दे अत्यन्त कृपाशील, और प्रमत्त हो उस के¹ लिये बात करने में।

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَفَعِيَ لَهُ قَوْلًا

110. वह जानता है जो कुछ उन के आगे तथा पीछे है, और वे उस का पूरा ज्ञान नहीं रखते।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا

111. तथा सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी (अल्लाह) के लिये। और निश्चय वह निष्फल हो गया जिस ने अत्याचार लाद² लिया।

وَسَبَّحُوا بُحْبُوحَهُ فِي الْمَقَامِ الْعَظِيمِ وَكُتِبَ لَهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ شَرًّا إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَرٍّ مُذِلًّا

112. तथा जो सदाचार करेगा और वह ईमान वाला भी हो, तो वह नहीं डरेगा अत्याचार से न अधिकार हनन में।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الظُّلُمِ فَإِنَّهُ يَجْعَلُ لَهُ اللَّهُ مخرجًا وَمَنْ يُؤْمَرْ بِالْعَمَلِ فَإِنَّهُ لَعَلَّ اللَّهُ لَهُ فَجْرًا مخرجًا

113. और इसी प्रकार हम ने इस अर्ची कुर्आन को अवतरित किया है तथा विभिन्न प्रकार से वर्णन कर दिया है उस में चेतावनी का, ताकि लोग आज्ञाकारी हो जायें अथवा वह उन के लिये उत्पन्न कर दे एक शिक्षा।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَعَرَفْنَا بِهِ فَجْرًا مخرجًا

114. अतः उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी। और (हे नबी!) आप शीघ्रता³ न करें कुर्आन के साथ इस से पूर्व कि पूरी कर दी

فَسَبَّحْ لِلَّهِ الْمَدِيدَ الْحَقَّ وَلَا تَعْصِ بِالنَّفْسِ الْهَامِ

1 अर्थात् जिस के लिये सिफारिश कर रहा है।

2 संसार में किसी पर अत्याचार, तथा अल्लाह के साथ शिर्क किया हो

3 जब जिवरीन अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बह्वी (प्रकाशना) लाने, तो आप इस भय से कि कुछ भूल न जायें उन के साथ साथ ही पढ़ने लगने अल्लाह ने आप को ऐसा करने से रोक दिया। इस का वर्णन सूरह कियामा आयत 75 में आ रहा है।

जाये आप की ओर इस की वही
(प्रकाशना)। तथा प्रार्थना करें कि
हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान
प्रदान कर।

115. और हम ने आदेश दिया आदम को
इस से पहले, तो वह भूल गया,
और हम ने नहीं पाया उस में कोई
दृढ़ संकल्प।¹

116. तथा जब हम ने कहा फरिश्तों से
कि सज्दा करो आदम को, तो सब
ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा,
उस ने इन्कार कर दिया।

117. तब हम ने कहा हे आदम! वास्तव
में यह शत्रु है तेरा तथा तेरी पत्नी
का तो ऐसा न हो कि तुम दोनों
को निकलवा दे स्वर्ग से और तू
आपदा में पड़ जाये।

118. यहाँ तुझे यह सुविधा है कि न भूखा
रहता है और न नग्न रहता है।

119. और न प्यासा होना है और न तुझे
धूप सताती है।

120. तो फुसलाया उसे शैतान ने, कहा
हे आदम! क्या मैं तुझे न बनाऊँ
शाश्वत जीवन का वृक्ष तथा ऐसा
राज्य जो पतनशील न हो?

121. तो दोनों ने उस (वृक्ष) से खा लिया,
फिर उन के गुप्तांग उन दोनों के
लिये खुल गये और दोनों चिपकाने

وَلَقَدْ جَعَلْنَا لَكَ دَمْعِينَ قَبْلَ قَعَسٍ وَتَوَجَّهْتَ
لَهُ عَرْمًا

وَقَدْ قَالَ الْمَلَائِكَةُ سَجْدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا
إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ وَلَوْ وَجَّهَكَ فَلَا
يُخْرِجُكُمَا مِنْ جَنَّاتِنَا

إِنَّ لَكَ الْآخِرَ عَرْمَةً وَلَا تَعْرَى

وَأَنَّكَ لَا تَطْمَأَنِّنُ فِيهَا وَلَا تَقْصُرُ

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا مَعْزِلُ أَتَدْعُنِي
عَلَى شَجَرَةٍ لَعْنَةٍ وَمِنْكَ لَا يَنْجُو

فَوَكَّلْنَاهُ بَيْنَهُمَا لَعْنَتُهُمَا وَسَوَّيْنَاهُمَا وَطَعْنَاهُ
فَيَقْبِضِينَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصَى آدَمُ

1 अर्थात् वह भूल से शैतान की बात में आ गया, उस ने जानबूझ कर हमारे
आदेश का उल्लंघन नहीं किया।

رَبِّهِ قَعُورِي

लगे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते।
और आदम अवज्ञा कर गया अपने
पालनहार की और कुपथ हो गया।

122. फिर उस (अब्राह) ने उसे चुन
लिया और उसे क्षमा कर दिया और
सुपथ दिखा दिया।

فَرَجَّيْنَاهُ رُبَّكَ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَيْنَاهُ

123. कहा तुम दोनों (आदम तथा
शैतान) यहाँ से उतर जाओ, तुम
एक दूसरे के शत्रु हो। अब यदि आये
तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन
तो जो अनुपालन करेगा मेरे
मार्गदर्शन का वह कुपथ नहीं होगा
और न दुर्भाग्य ग्रस्त होगा।

قَالَ فَبِعَا وَنَهَ جَنَّتَهُمَا بِمَقْصَدِهِمْ لِبَعْضٍ عَذَابٍ
لَّوَّمًا يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هُدًى لِّقَوْمٍ يُشْكِرُ هَذَا
فَلَا يَصِيبُ وَلَا يَفْسُدُ ۝

124. तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण
से, तो उसी का समारिक जीवन
संकीर्ण (तंग) होगा, तथा हम
उसे उठाएंगे प्रलय के दिन अन्धा
कर के।

وَمَنْ أَغْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً
ضَنْكًا وَعُثْرًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝

125. वह कहेगा मेरे पालनहार। मुझे
अन्धा क्यों उठाया, मैं तो (संसार
में) आँखों वाला था।

قَالَ رَبِّ إِنِّي كُنْتُ بَصِيرًا ۝

126. अब्राह कहेगा इसी प्रकार तेरे पास
हमारी आयतें आयीं तो तू ने उन्हें
भुला दिया। अतः इसी प्रकार आज तू
भुला दिया जायेगा।

قَالَ كَذِبٌ أَنتَ ابْتِغَايْتَهَا وَكَذَّبْتَ بِهَا
يَوْمَ ۝

127. तथा इसी प्रकार हम बदला देते हैं
उसे जो सीमा का उल्लंघन करे,
और इमान न लाये अपने पालनहार

وَكُنَّا لَكَ قَبْرِي مِّنْ أَمْرٍ وَلَوْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِ رَبِّهِ
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشدُّ وَأَبْغَى ۝

- 1 अर्थात् वह संसार में धनी हो तब भी उसे सतोष नहीं होगा और सदा चिन्तित
और व्याकुल रहेगा।

की आयनों पर। और निश्चय
आखिरत की यातना अतः कड़ी तथा
अधिक स्थायी है।

128. तो क्या उन्हें मार्ग दर्शन नहीं
दिया इस बात ने कि हम ने ध्वस्त
कर दिया इन से पहले बहुत सी
जातियों को, जो चल फिर रही थीं
अपनी वस्तियों में, निःसंदेह इस में
निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।
129. और यदि एक बात पहले से निश्चित
न होती आप के पालनहार की ओर
से, तो यातना आ चुकी होती और
एक निर्धारित समय न होता।¹
130. अतः आप सहन करें उन की बातों
को तथा अपने पालनहार की
पवित्रता का वर्णन उस की प्रशंसा
के साथ करते रहें सूर्योदय से पहले²
तथा सूर्यास्त से³ पहले, तथा रात्रि
के क्षणों⁴ में और दिन के किनारों⁵
में, ताकि आप प्रसन्न हो जायें।
131. और कदापि न देखिये आप उस
आनन्द की ओर जो हम ने उन⁶ में
से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा

أَفَرَأَيْتُمْ لَكُمْ كُرْهُكُمْ قَبْلَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُتَّقِينَ
يَسْتَوُونَ فِي مَسْكِئَتِهِمْ فِي ذَلِكَ أَلَمْ تَكُنْ أَكْرَمَ الْأَعْيُنِ

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَ أَلَمٌ لَوْلَا أَنْ
يُنْزِلُ

فَأَصْبَحَ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ
الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ الْأَوَّلِينَ مُبْتَدِئِينَ
وَالْآخِرِينَ أَلَمْ تَكُنْ تُرْضَى

وَلَا تَمْلِكُ عَيْنُكَ لِمَا مَتَّعْنَاهُ الْوَلَدِ
وَمَا لَكُمْ زُهْرَةً لِحْيَةٍ مُبْدِيَةٍ وَخَيْرُ مَعْيَةٍ مُرْغَبَةٍ

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह का यह निर्णय है कि वह किसी जाति का उस
के विरुद्ध तर्क तथा उस की निश्चित अवधि पूरी होने पर ही विनाश करता है
यदि यह बात न होती तो इन मक्का के मिश्रणवादियों पर यातना आ चुकी होती

2 अर्थात् फज्र की नमाज में।

3 अर्थात् अस्र की नमाज में।

4 अर्थात् इशा की नमाज में।

5 अर्थात् जुहर तथा मग़रिब की नमाज में।

6 अर्थात् मिश्रणवादियों में से।

है वह संचारिक जीवन की शोभा है, ताकि हम उन की परीक्षा ले और आप के पालनहार का प्रदान⁽¹⁾ ही उत्तम तथा अति स्थायी है।

وَيَسِّرْ لَكَ ذِيْقَ خَيْرٍ وَأَيْقَى

132. और आप अपने परिवार को नमाज का आदेश दें, और स्वयं भी उस पर स्थित रहें, हम आप से कोई जीविका नहीं मांगते हम ही आप को जीविका प्रदान करने हैं। और अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا
لَا تَسْأَلْكَ يَدَاكَ عَنْ تَرْفُقٍ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ

133. तथा उन्होंने कहा क्यों वह हमारे पास कोई निशानी अपने पालनहार की ओर से नहीं लाना? क्या उन के पास उस का प्रत्यक्ष प्रमाण (क़ुर्आन) नहीं आ गया जिस में अगली पुस्तकों की (शिक्षायें) हैं?

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِيهِمْ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ
بَيِّنَةٌ مِمَّا فِي الْقُرْآنِ الْأَوَّلِ

134. और यदि हम ध्वस्त कर दें उनमें किसी यानना से इस से² पहले, तो वे अवश्य कहें कि हे हमारे पालनहार! तू ने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुपालन करते इस से पहले कि हम अपमानित और हीन होते।

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِضُرٍّ مِنْ قَبْلِهِ لَقَالُوا
رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا مِمَّنْ
مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنْزِلَ وَعَذْرَتُنَا

135. आप कह दें कि प्रत्येक, (परिणाम की) प्रतीक्षा में है। अतः तुम भी प्रतीक्षा करो शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन सीधी राह वाले हैं, और किस ने सीधी राह पाई है।

قُلْ كُلٌّ مُتَرَبِّعٌ فَتَرْبُصُوا فَتَسْتَعْلَمُونَ
مَنْ أَضْيَبُ الْقَارِيعِ شَرٌّ وَمَنْ أَغْدَى

1 अर्थात् परलोक का प्रतिफल।

2 अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और क़ुर्आन के आने से पहले।

सूरह अम्बिया 21

سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ

सूरह अम्बिया के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 112 आयतें हैं।

इस सूरह में अनेक नबियों की चर्चा के कारण इस का नाम «अम्बिया» है।

- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने अपनी जातियों को बराबर यह शिक्षा दी कि उन्हें अल्लाह के लिये अपने कर्मों का उत्तर देना है फिर भी वह संभलने के बजाये विरोध ही करते रहे और अल्लाह की सहायता सदा नबियों के साथ रही।
- यह भी बताया गया है कि अल्लाह ने संसार को खेल के लिये नहीं बनाया है बल्कि सत्य और असत्य के बीच संघर्ष के लिये बनाया है।
- इस में नौहीद का वर्णन है जो सभी नबियों का संदेश था। और रिसालत से संबंधित संदेशों का जवाब दिया गया है तथा रसूलों का उपहास करने वालों को चेतावनी दी गई है।
- नबियों की शिक्षाओं और उन पर अल्लाह के अनुग्रह और दया को दिखाया गया है।
- अन्त में विरोधियों को यातना की धमकी तथा ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है और यह बताया गया है कि नबियों को भेजना संसार वासियों के लिये सर्वथा दया है, और उन का अपमान करना स्वयं अपने ही लिये हानिकारक है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 समीप आ गया है लोगों के हिमाच¹⁾
का समय, जब कि वे अचेतना में
मुंह फेरे हुये हैं।

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حَشْرُهُمْ وَهُمْ
غَفُلُونَ غَافِلُونَ

- 1 अर्थात् प्रलय का समय फिर भी लोग उस से अचेत माया मोह में लिप्त हैं।

2. नहीं आती उन के पास उन के पालनहार की ओर से कोई नई शिक्षा¹, परन्तु उसे सुनते हैं और खेलते रह जाते हैं।

مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُجَدِّدٍ إِلَّا صُغُرُوا
وَهُمْ يَنْهَوْنَ^١

3. निश्चेत हैं उन के दिल, और उन्होंने ने चुपके चुपके आपस में बातें की जो अत्याचारी हो गये यह (नबी) तो बस एक पुरुष है तुम्हारे समान, तो क्या तुम जादू के पास जाते हो जब कि तुम देखते हो?²

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَيُرْسِلُ الرِّيحَ شِدْقًا
هَذَا إِلَّا مَنَظَرٌ مِّمَّا تَتْلُونَ الْبَصُرَ وَالْأَنفَ
تُحْجِرُونَ^٢

4. आप कह दें कि मेरा पालनहार जानता है प्रत्येक बात को जो आकाश तथा धरती में है। और वह सब सुनने जानने वाला है।

قَدْ رَزَقَكُمْ لِقَاؤَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ^٣

5. बल्कि उन्होंने ने कह दिया कि यह³ बिखरे स्वप्न है। बल्कि उस (नबी) ने इसे स्वयं बना लिया है। बल्कि वह कवि है। अन्यथा उसे चाहिये कि हमारे पास कोई निशानी ला दे जैसे पूर्व के रसूल (निशानियों के साथ) भेजे गये।

بَلَىٰ لَوْ أَنَّ صَفَاةَ أَحْلَامٍ مِنْ أُمَّةٍ بَلَىٰ هُوَ
سَائِرٌ مِّمَّا يَنْشَأُونَ^٤

6. नहीं ईमान⁴ लायी इन से पहले कोई वस्ती जिस का हम ने विनाश किया, तो क्या यह ईमान लायेंगे?

وَأَمَّا أَتَمَّتْ فَمِنْهُمْ مَنْ قَدْ أَفْلَحَ أَتَمَّتْ يُؤْمِنُونَ^٥

7. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْكَ إِلَّا نَذِيرًا لِلْعَالَمِينَ^٦

1 अर्थात् कुरआन की कोई आयत अवतारित होती है तो उस में चिन्तन और विचार नहीं करते।

2 अर्थात् यह कि वह तुम्हारे जैसा मनुष्य है, अतः इस का जो भी प्रभाव है वह जादू के कारण है।

3 अर्थात् कुरआन की आयतें।

4 अर्थात् निशानियाँ देख कर भी ईमान नहीं लायी।

मनुष्य पुरुषों को ही रसूल बना कर भेजा, जिन की ओर वही भेजते रहे। फिर तुम जानियों¹ से पूछ लो, यदि तुम (स्वयं) नहीं² जानते हो।

فَسْأَلُوا أَهْلَ الْبَيْتِ الَّذِينَ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

8. तथा नहीं बनाये हम ने उन के ऐसे शरीर³ जो भोजन न करते हो। तथा न वे सदावासी थे।

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَداً لَّا يَكُلُونَ لَطْعَامَ
وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ

9. फिर हम ने पूरे कर दिये उन से किये हुये वचन, और हम ने बचा लिया उन्हें, और जिसे हम ने चाहा। और विनाश कर दिया उध्वघनकारियों का।

لَمَّا صَدَقْتُمُ الْوَعْدَ وَتَجَازَوْنَا سِجِّينًا
وَالْمُتَكِبِينَ

10. निःसंदेह हम ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक पुस्तक (क़र्आन) जिस में तुम्हारे लिये शिक्षा है। तो क्या तुम समझते नहीं हो?

لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَتَلَاكُمْ عَلٰى

11. और हम ने तोड़ कर रख दिया बहुत सी वस्तियों को जो अन्याचारी थी, और हम ने पैदा कर दिया उन के पश्चात् दूसरी जाति को।

وَلَقَدْ خَسَفْنَا مِنْ قَومِكَ كَافَّةً وَالنَّاسُ
بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ

12. फिर जब उन्हें संवेदन हो गया हमारे प्रकोप का, तो अकस्मात् वहाँ से भागने लगे।

فَلَمَّا أَحَسُّوا بَأْسَ رَبِّهِمْ مِنْهُ يَتَخَفَتُونَ

13. (कहा गया) भागो नहीं। तथा तुम वापिस जाओ जिस सुख सुविधा में थे तथा अपने घरों की ओर, ताकि

لَا تَرْجِعُوا وَارْجِعُوا إِلَيْهِمْ فَهُمْ فِيهِ وَمَسْكَبُهُمْ
لَعَلَّكُمْ تَسْأَلُونَ

1 अर्थात् आदि आकाशीय पुस्तकों के जानियों से।

2 देखिये सूरह नहल आयत 43।

3 अर्थात् उन में मनुष्य की ही सब विशेषताएँ थीं।

तुम से पूछा⁽¹⁾ जाये।

14. उन्होंने ने कहा: हाय हमारा विनाश!
वास्तव में हम अत्याचारी थे।

قَالُوا يَوَيْلًا لَّآئَاكُمُ ظَالِمِينَ ۝

15. और फिर बराबर यही उन की पुकार
रही यहाँ तक कि हम ने बना दिया
उन्हें कटी खेती के समान बुझे हुये।

فَمَآ رَأَيْتَ لَكَ دَعْوَةً حَتَّىٰ جَعَلَهُمْ حَبِيدًا
خَالِئِينَ ۝

16. और हम ने नहीं पैदा किया है
आकाश और धरती को तथा जो कुछ
दोनों के बीच है खेल के लिये।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَٰعِبِينَ ۝

17. यदि हम कोई खेल बनाना चाहते तो
उसे अपने पास ही से बना² लेते,
यदि हमें यह करना होता।

لَوْ أَرَدْنَا أَن نَّشْجُدَ لَهُمْ لَخَلَقْنَا مِنْ دُونِ
إِن كُنَّا مُوْبِقِينَ ۝

18. बल्कि हम मारते हैं सत्य से असत्य
पर, तो वह उस का सिर कुचल देता
है, और वह अकस्मात् समाप्त हो
जाता है और तुम्हारे लिये विनाश है
उन बातों के कारण जो तुम बनाने हो।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فُودًا
هُوَ ذُو قُوَّةٍ وَنُكَرُ الْوَيْلَ وَمَتَّئِفُونَ ۝

19. और उसी का है जो आकाशों तथा
धरती में है और जो फरिश्ते उस के
पास है वे उस की इबादत (बंदना) में
अभिमान नहीं करते, और न थकते हैं।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهُ
لَا يُفَتَكِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَتَّخِذُونَ

20. वे रात और दिन उस की पवित्रता का
गान करते हैं तथा आलस्य नहीं करते।

يُسَبِّحُونَ أَثْنَآ وَٱلَّيْلَ لَا يَغْفِرُونَ ۝

1 अर्थात् यह कि यातना आने पर तुम्हारी क्या दशा हुयी?

2 अर्थात् इस विशाल विश्व के बनाने की आवश्यकता न थी। इस आयत में यह बताया जा रहा है कि इस विश्व को खेल नहीं बनाया गया है। यहाँ एक साधारण नियम काम कर रहा है। और वह सत्य और असत्य के बीच संघर्ष का नियम है। अर्थात् यहाँ जो कुछ होता है वह सत्य की विजय और असत्य की पराजय के लिये होता है। और सत्य के आगे असत्य समाप्त हो कर रह जाता है।

21. क्या इन के बनाये हुये पार्थिव पूज्य ऐसे हैं जो (निर्जीव) को जीवित कर देते हैं?
22. यदि होते उन दोनों¹ में अन्य पूज्य अल्लाह के सिवा तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़² जाती। अतः पवित्र है अल्लाह अर्श (सिंहासन) का स्वामी उन बातों से जो वे बता रहे हैं।
23. वह उत्तर दायी नहीं है अपने कार्य का और सभी (उस के समक्ष) उत्तर दायी है।
24. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा अनेक पूज्य? (हे नबी!) आप कहें कि अपना प्रमाण लाओ। यह (कुरआन) उन के लिये शिक्षा है जो मेरे साथ हैं और यह मुझ से पूर्व के लोगों की शिक्षा³ है, बल्कि उन में से अधिकतर सत्य का जान नहीं रखते। इसी कारण वह विमुख हैं।
25. और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वही (प्रकाशना) करने रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत (बंदना) करो।

أَمْ أَعْبَدُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ لَهُمْ شُرَكَاءُ ۖ

لَوْ كَانَ مِنْهُمُ آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَرَبُّ الْعَرْشِ عَمَّا يُصِفُونَ ۝

لَا يَسْتَلِ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُنْتَلَوْنَ ۝

أَمْ تَحْذَرُونَ دُؤْيَةَ إِلَهِةٍ قُلْ هَذُوًا نُّزْهًا مَّكْطُومًا ۚ وَكَذَرْتُمْ قَبِيحًا وَكُفَرْتُمْ فَنَسِينَا بَنِي آدَمَ هُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقُّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا أَنِ اعْبُدُونِي ۚ

1 आकाश तथा धरती में।

2 क्योंकि दोनों अपनी अपनी शक्ति का प्रयोग करने और उन के आपस के संघर्ष के कारण इस विश्व की व्यवस्था छिन्न भिन्न हो जाती। अतः इस विश्व की व्यवस्था स्वयं बता रही है कि इस का स्वामी एक ही है। और वही अकेला पूज्य है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यह कुरआन है और यह तौरात तथा इंजील है इन में कोई प्रमाण दिखा दो कि अल्लाह के अन्य साझी और पूज्य हैं। बल्कि यह मिश्रणवादी निर्मूल बातें कर रहे हैं।

26. और उन (मुशरिकों) ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने संतर्ता वह पवित्र है। बल्कि वे (फरिश्ते) ¹ आदरणीय भक्त हैं।

27. वे उस के समक्ष बढ़ कर नहीं बोलते और उस के आदेशानुसार काम करते हैं।

28. वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन से ओझल है। वह किसी की मिफारिश नहीं करेंगे उस के सिवा जिस से वह (अल्लाह) प्रसन्न ² हो तथा वह उस के भय से सहमे रहने हैं।

29. और जो कह दे उन में से कि मैं पूज्य हूँ अल्लाह के सिवा तो वही है जिसे हम दण्ड देंगे नरक का, इसी प्रकार हम दण्ड दिया करते हैं अत्याचारियों को।

30. और क्या उन्होंने विचार नहीं किया जो काफिर हो गये कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुये ³ थे, तो हम ने दोनों को अलग अलग किया। तथा हम ने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज को? फिर क्या वह (इस बात पर) विश्वास नहीं करते?

31. और हम ने बना दिये धरती में पर्वत

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

لَا يَسْأَلُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِ يُعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ ارْتَضَىٰ وَهُوَ فِي كُنْهِنَ مُنْهَوْنٌ ﴿٢٨﴾

وَمَنْ يَكْفُرْ يَفْعَلْ لِّوَالِدَيْهِ ذُرِّيَةً فَلْيَضْحَكُوا هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا أَنَّا جَعَلْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ كَاتِبًا فَتَقَعُّهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تُبِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादी जिन फरिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते हैं वास्तव में वह उस के भक्त तथा दास हैं।

2 अर्थात् जो एकेश्वरवादी होंगे।

3 अर्थात् अपनी उत्पत्ति के आरंभ में।

ताकि झुक न¹ जाये उन के साथ,
और बना दिये उन (पर्वतों) में चोड़े
रास्ते ताकि लोग राह पायें।

يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝

32. और हम ने बना दिया आकाश को
सुरक्षित छत, फिर भी वह उस के
प्रतीकों (निशानियों) से मुंह फेरे
हुये है।

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا
مُعْرِضُونَ ۝

33. तथा वही है जिस ने उत्पत्ति की है
रात्रि तथा दिवस की और सूर्य तथा
चांद की प्रत्येक एक मण्डल में तैर
रहे² है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

34. और (हे नबी!) हम ने नहीं बनायी है
किसी मनुष्य के लिये आप से पहले
नित्यता तो यदि आप मर³ जायें,
तो क्या वह नित्य जीवी है?

وَمَا جَعَلْنَا الْبَشَرِ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ أَفَإِنْ
مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ۝

35. प्रत्येक जीव को मरण का स्वाद
चखना है, और हम तुम्हारी
परीक्षा कर रहे है अच्छी तथा बुरी
परिस्थितियों से, तथा तुम्हें हमारी ही
ओर फिर आना है।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَنَبْلُوكُم
بِالشَّرِّ وَالْإِحْسَانِ ثُمَّ إِيَّاكُمْ تُرْجَعُونَ ۝

1 अर्थात् यह पर्वत न होते तो धरती सदा हिलती रहनी।

2 कुर्आन अपनी शिक्षा में विश्व की व्यवस्था से एक के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत करना है। यहाँ भी आयत 30 से 33 तक एक अल्लाह के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

3 जब मनुष्य किसी का विरोधी बन जाता है तो उस के मरण की कामना करता है। यही दशा मक्का के क़ाफ़िरो की भी थी। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरण की कामना कर रहे थे। फिर यह कहा गया है कि संसार के प्रत्येक जीव को मरना है। यह कोई बड़ी जान नहीं बड़ी जान तो यह है कि अल्लाह इस संसार में सब के कर्मों की परीक्षा कर रहा है। और फिर सब को अपने कर्मों का फल भी परलोक में मिलना है तो कौन इस परीक्षा में सफल होता है?

36. तथा जब देखते हैं आप को जो काफिर हो गये तो वना लेते हैं आप को उपहाम, (वे कहने हैं) क्या यही है जो तुम्हारे पूज्यों की चर्चा किया करता है? जब कि वे स्वयं रहमान (अत्यंत कृपाशील) के स्मरण के¹ निवर्ती हैं।

37. मनुष्य जन्मजान व्यग्र (अधीर) है, मैं शीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दूंगा। अतः तुम जन्दी न करो।

38. तथा वह कहते हैं कि कब पूरी होगी यह² धमकी, यदि तुम लोग सच्चे हो?

39. यदि जान लें जो काफिर हो गये हैं उस समय को जब वह नहीं बचा सकेंगे अपने मुखों को अग्नि में और न अपनी पीठों को, और न उन की कोई सहायता की जायेगी (नो ऐसी बातें नहीं करेंगे)।

40. बल्कि वह समय उन पर आ जायेगा अचानक, और उन्हें आश्चर्य चकित कर देगा जिसे वह फेर नहीं सकेंगे और न उन्हें समय दिया जायेगा।

41. और उपहाम किया गया बहुत से रसूलों का आप से पहले, तो घेर लिया उन को जिन्होंने उपहाम किया उन में से उस चीज ने जिस³

وَرَدَ وَالْأَنبِيَاءَ كَفَرُوا وَإِنْ يَتَّبِعُونَ
إِلَّا هُمُ الْوَهْمَ وَالْأَنبِيَاءَ يَدْعُونَ لَهُمْ
يَوْمَئِذٍ يَوْمَئِذٍ هُمْ كَافِرُونَ ۝

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ فَأَنذَرْتَهُ آيَاتِي
فَلَا تَتَّقُونِ ۝

وَيَقُولُونَ سَتَأْتِيَ الْوَعْدَ مِنْكُمْ أَفَبِئْسَ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۝

لَوْ يَعْلَمُ الْيَوْمِ الَّذِينَ كَفَرُوا جِزَاءَ
كَيْفَتِهِمْ لَأَنذَرْتَهُمْ
وَلَا هُمْ يَنْصَرُونَ ۝

بَلْ أَتَتْهُمْ بَعْثَتُهُمْ فَسَوَتْهُمْ فَلَا يَنْصَرُونَ
رَدًّا وَلَا هُمْ يَنْصَرُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا مِنْ قَبْلِكَ فَقَالَ
رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كُنْتُ دَاعِيًا
إِلَىٰ دِينِكَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह को नहीं मानते।

2 अर्थात् हमारे न मानने पर यातना आने की धमकी।

3 अर्थात् यातना ने।

का उपहास कर रहे थे।

42. आप पूछिये कि कौन तुम्हारी रक्षा करेगा रात तथा दिन में अत्यंत कृपाशील¹ से? बल्कि वह अपने पालनहार की शिक्षा (कुर्आन) से विमुख है।

43. क्या उन के पूज्य है जो उन्हें बचायेंगे हम से? वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे और न हमारी ओर से उन का साथ दिया जायेगा।

44. बल्कि हम ने जीवन का लाभ पहुँचाया है उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि (मुखों में) उन की बड़ी आयु गुजर² गई तो क्या वह नहीं देखते कि हम धरती को कम करने आ रहे हैं उस के किनारों से, फिर क्या वह विजयी हो रहे हैं?

45. (हे नबी!) आप कह दें कि मैं तो बह्यी ही के आधार पर तुम्हें सावधान कर रहा हूँ (परन्तु) वहाँ पुकार नहीं सुनते जब उन्हें सावधान किया जाता है।

46. और यदि छू जाये उन को आप के पालनहार की तनिक भी यातना, तो अवश्य पुकारेंगे कि हाये

قُلْ مَنْ يَكْفُرُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
يَكْفُرْ بِرَبِّهِمْ فَهُمْ كَذِبُونَ

أَمْ لَهُمْ إِلَهَةٌ تَنْصُرُهُمْ مِنْ دُونِنَا
لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ يَتَذَكَّرُونَ

مِنْ مَنَعَتْ هُمُوتَهُمْ وَأَنبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ
عَلَيْهِمُ الْعَمَلُ فَلَا يَرَوْنَ كَذِبَ فِي الْأَرْضِ
تَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَلَهُمُ الْغَيْبُوتُ

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ
إِذَا مَشَاءُ يَبْدَأُ مَا يَشَاءُ

وَلَيْسَ مَشْنَعُهُمْ نَجْعَةً مِنْ عَذَابِ رَبِّكَ
يَقُولُونَ يَوْمَئِذٍ إِنَّكَ أَنتَ ظَالِمٌ

1 अर्थात् उस की यातना से।

2 अर्थ यह है कि वह मक्का के काफिर सुख सुविधा मंद रहने के कारण अल्लाह से विमुख हो गये हैं और सोचने हैं कि उन पर यातना नहीं आयेगी और वही विजयी होंगे। जब कि दशा यह है कि उन के अधिकार का क्षेत्र कम होता जा रहा है और इस्लाम बराबर फैलता जा रहा है। फिर भी वे इस भ्रम में हैं कि वे प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे।

हमारा विनाश। निश्चय ही हम
अत्याचारी¹⁾ थे।

- 47 और हम रख देंगे न्याय का तराजू²⁾
प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार
किया जायेगा किसी पर कुछ भी,
तथा यदि होगा राई के दाने के
बराबर (किसी का कर्म) तो हम
उसे मामने ला देंगे, और हम बस
(काफी) है हिसाब लेने वाले।

- 48 और हम दे चुके हैं मूसा तथा
हारून को विवेक तथा प्रकाश
और शिक्षाप्रद पुस्तक आज्ञाकारियों
के लिये।

49. जो डरते हों अपने पालनहार
से बिन देखे, और वे प्रलय से
भयभीत हों।

50. और यह (कुरआन) एक शुभ शिक्षा है
जिसे हम ने उतारा है, तो क्या तुम
इस के इन्कारी हो?

51. और हम ने प्रदान की थी इब्राहीम
को उस की चेतना इस से पहले,
और हम उस से भली भाँति
अवगत थे।

52. जब उस ने अपने बाप तथा अपनी
जाति से कहा यह प्रतिमाये (मूर्तियों)
कैसी है जिन की पूजा में तुम लगे
हुये हो?

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطِيَّةَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ
نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ
خَرْدٍ تَبَيَّنَ بِهَا وَلَكُمْ فِيهَا حِيبَاتٌ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى وَهَارُونَ
الْحِكْمَةَ وَدَوْرَ الْمُسْتَوِينَ ۝

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِنْ
السَّاجِدِينَ مُشْبِعُونَ ۝

وَهَذَا ذِكْرُ مُشْرِكَيْكَ أَنْزَلْنَاهُ
فِي ذِكْرِكَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا
بِهِ يَمِينِينَ ۝

رَدَّ قَالَ لِيَوْمِهِمْ وَلِقَائِهِمْ أَمْ لَهُمْ
الْحُكْمُ ۝

1 अर्थात् अपने पापों को स्वीकार कर लेंगे।

2 अर्थात् कर्मों को तौलने और हिसाब करने के लिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को
उस के कर्मानुसार बदला दिया जाये।

53. उन्होंने ने कहा: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को इन की पूजा करने हुये।
54. उस (इब्राहीम) ने कहा: निश्चय तुम और तुम्हारे पूर्वज खुले कुपथ में हो।
55. उन्होंने ने कहा: क्या तुम लाये हो हमारे पास सत्य या तुम उपहास कर रहे हो?
56. उस ने कहा: बल्कि तुम्हारा पालनहार आकाशों तथा धरती का पालनहार है जिस ने उन्हें पैदा किया है, और मैं तो इसी का साक्षी हूँ।
57. तथा अज़ाह की शपथ! मैं अवश्य चाल चलूँगा तुम्हारी मूर्तियों के साथ, इस के पश्चात् कि तुम चले जाओ।
58. फिर उस ने कर दिया उन्हें खण्ड-खण्ड उन के बडे के सिवा, ताकि वह उस की ओर फिरें।
59. उन्होंने ने कहा: किम ने यह दशा कर दी है हमारे पूज्यों (देवताओं) की? वास्तव में वह कोड़ अत्याचारी होगा।
60. लोगों ने कहा: हम ने सुना है एक नवयुवक को उन की चर्चा करते जिसे इब्राहीम कहा जाता है।
61. लोगों ने कहा: उसे लाओ लोगों के सामने ताकि लोग देखें।
62. उन्होंने ने पूछा: क्या तू ने ही यह किया है हमारे पूज्यों के साथ, हे इब्राहीम?

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عِبَادِينَ ۝

قَالَ لَعَنَ كُنتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلِيلٍ مُّبِينٍ ۝

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّاطِفِينَ ۝

قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
الَّذِي قَطَعُنَا ۖ وَأَنْتُمْ ذُرِّيَّتُهُ مِنَ
الشَّهِيدِينَ ۝

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصَابَ مَتَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا
مُدْبِرِينَ ۝

فَجَعَلَهُمْ جُودًا إِلَّا كَيْدَ إِبْرَاهِيمَ لَمَّا كَذَبَ
بِرَبِّهِمْ ۝

قَالُوا مَنْ قَسَّ مَذَابَ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِنَّهُ لَمِنَ
الْقَائِمِينَ ۝

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ
إِبْرَاهِيمُ ۝

قَالُوا اقْتُلُوهُ نَتَّبِعْ آلَ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا طَائِفًا
مِنْهُمْ ۝

قَالُوا إِنَّمَا كُنْتُمْ مَلَائِكًا بَارِئِينَ رُبُّكُمْ ۝

63. उस ने कहा: बल्कि इसे इन के इस बड़े ने किया¹ है, तो उन्हीं से पूछ लो यदि वह बोलते हों?

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَاسْأَلُوهُمْ
إِنْ كَانُوا يَظُنُّونَ

64. फिर अपने मन में वे सोच में पड़ गये। और (अपने मन में) कहा: वास्तव में तुम्हीं अत्याचारी हो।

فَرَحِمُوا إِلَىٰ أَنْفُسِهِمْ فَمَا الْوَارِثُ لَكُمْ أَنْتُمْ
الظَّالِمُونَ

65. फिर वह ओढ़े कर दिये गये अपने सिरों के बल² (और बोले): तू जानता है कि यह बोलने नहीं है।

ثُمَّ نَحْنُ لَكُمُ عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ
مَا هَؤُلَاءِ يَظُنُّونَ

66. इब्राहीम ने कहा: तो क्या तुम इबादत (बंदना) अब्राह के सिवा उस की करते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सकते हैं और न तुम्हें हानि पहुँचा सकते हैं?

قَالَ أَتَعْبَدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَكُمْ بِهَذَا مِنْ
عِلْمٍ وَلَا تَضُرُّكُمْ

67. तूफ (धू) है तुम पर और उस पर जिस की तुम इबादत (बंदना) करते हो अब्राह को छोड़ कर। तो क्या तुम समझ नहीं रखते हो?

إِنْ تَكْفُرُوا وَلِمَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ

68. उन्होंने ने कहा: इस को जला दो तथा सहायता करो अपने पूज्यों की, यदि तुम्हें कुछ करना है।

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
فَاعِلِينَ

69. हम ने कहा: हे अग्नि! तू शीतल तथा शान्ति बन जा इब्राहीम पर।

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

70. और उन्होंने ने उस के साथ बुराई चाही तो हम ने उन्हीं को क्षतिग्रस्त कर दिया।

وَأَمْرٌ ذُو آيَةٍ كَبِيرًا فَجَعَلْنَاهُمْ رِجْسًا

1 यह बात इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन्हें उन के पूज्यों की विवशता दिखाने के लिये कही।

2 अर्थात् सत्य को स्वीकार कर के उस से फिर गये

71. और हम उस (इब्राहीम) को बचा कर ले गये तथा लून¹ को उस भूमि² की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता रखी है विश्व वासियों के लिये।

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا مِنَ الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ

72. और हम ने उसे प्रदान किया (पुत्र) इसहाक और (पौत्र) याकूब उस पर अधिक और प्रत्येक को हम ने सत्कर्मी बनाया।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۚ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ

73. और हम ने उन्हें अग्रणी (प्रमुख) बना दिया जो हमारे आदेशानुसार (लोगों को) सुपथ दर्शाते हैं तथा हम ने बहूयी (प्रकाशना) की उन की ओर सत्कर्मी के करने तथा नमाज की स्थापना करने और जकान देने की, तथा वे हमारे ही उपासक थे।

وَجَعَلْنَاهُمْ أِمَّةً يَقْذُوبُونَ بِثَمَرٍ غَيْرٍ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ احْبِسُوا ذُرِّيَّتَكُمْ مِنَ الزُّكُوفِ وَذُكُوفِ النَّاصِيغِ

74. तथा लून को हम ने निर्णय शक्ति और ज्ञान दिया और बचा लिया उस बस्ती से जो दुष्कर्म कर रही थी, वास्तव में वे बुरे अवैज्ञाकारी लोग थे।

وَلُوطًا الَّتِي هَلَكَتْ وَبِلْنَا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَرِيْبِ ۚ إِنَّكَ كَانَتْ تَمَعُنَ خَبِيْثًا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ مُّسَوِّغِينَ

75. और हम ने प्रवेश दिया उसे अपनी दया में, वास्तव में वह सदाचारियों में से था।

وَأَوْحَيْنَا فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ

76. तथा नूह को (याद करो) जब उस ने पुकारा इन (नवियों) से पहले। तो हम ने उस की पुकार सुन ली फिर उसे और उस के घराने को मुक्ति दी महा पीडा से।

وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ

1 लून अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे।

2 इस से अभिप्राय सीरिया देश है। और अर्थ यह है कि अब्राह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अग्नि से रक्षा करने के पश्चात् उन्हें सीरिया देश की ओर प्रस्थान कर जाने का आदेश दिया। और वह सीरिया चले गये।

77 और उस की सहायता की उस जाति के मुकाबले में जिन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, वास्तव में वे बुरे लोग थे। अतः हम ने हुक्म दिया उन सभी को।

وَنَصَرْنَاهُ مِنْ لِقَاؤِ الثَّغِينِ كَذَّبُوا بِالآيَاتِ
الَّتِي كَانُوا قَوْمَ سَوَاءٍ وَاعْرِفَنَّهُمْ لَمْتَعِينٍ

78. तथा दावूद और सुलैमान को (याद करो) जब वह दोनों निर्णय कर रहे थे खेत के विषय में जब रात्रि में चर गईं उसे दूसरों की बकरियाँ, और हम उन का निर्णय देख रहे थे।

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمُونَ فِي الْحَرْثِ إِذْ
نَفَثُوا فِي وَاعٍ لِقَوْمٍ ذُكِّرُوا بِهِنَّ
شَاهِدِينَ

79. तो हम ने उस का उचित निर्णय समझा दिया सुलैमान' को, और प्रत्येक को हम ने प्रदान किया था निर्णय शक्ति तथा ज्ञान और हम ने आधीन कर दिया था दावूद के साथ पर्वतों को जो (अल्लाह की पवित्रता का) वर्णन करने थे तथा पक्षियों को, और हम ही इस कार्य के करने वाले थे।

فَعَقَّمْنَا سُلَيْمَانَ وَكَلَّامَ آدَمَ وَعِلْمًا
وَسَخَّرْنَا مَعَهُ وَدَّ الْجِبَالَ يُسَبِّحُونَ
وَزُفَيْرًا ذُكِّرُوا بِهِ

80. तथा हम ने उस (दावूद) को मिखाया तुम्हारे लिये कवच बनाना ताकि तुम्हें बचाये तुम्हारे आक्रमण से तो क्या तुम कृतज्ञ हो?

وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ نُوَيْسَ لَكُمْ
يُخَوِّصُكُمْ مِنْ بَرَكَتِهِ فَهَلْ أَنْتُمْ
شَاكِرُونَ

81. और सुलैमान के आधीन कर दिया

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِهِ إِلَى

1 हदीस में वर्णन है कि दो नागियों के साथ शिशु थे। भेड़िया आया और एक को ले गया तो एक ने दूसरी से कहा कि तुम्हारे शिशु को ले गया है और निर्णय के लिये दावूद के पास गयी। उन्होंने ने बड़ी कं लिये निर्णय कर दिया फिर वह सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आयी उन्होंने ने कहा छुरी लाओ मैं तुम दोनों के लिये दो भाग कर दूँ। तो छोटी ने कहा ऐसा न करे अल्लाह आप पर दया करे यह उसी का शिशु है। यह सुन कर उन्होंने ने छोटी के पक्ष में निर्णय कर दिया। (बुखारी, 3427 मुस्लिम, 1720)

उग्र वायु को, जो चल रही थी उस के आदेश से¹ उस धरती की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता (विभूतियाँ) रखी है और हम ही सर्वज्ञ हैं।

الْأَرْضِ لَنُفِثَ بِرُكَّتٍ فِيهَا وَلَنُفِثَ لَنُفِثَ
حَبِيبِينَ

82. तथा शैतानों में से उन्हें (उस के आधीन कर दिया) जो उस के लिये दुबकी लगाते² तथा इस के सिवा दूसरे कार्य करते थे, और हम ही उन के निरीक्षक³ थे।

وَمِنَ الشَّيَاطِينِ مَنْ تَغْوِيهِمْ لِيُفْسِدُوا وَلَهُمْ عَمَلٌ
دُونَ ذَلِكَ وَلَكُ لَّهُمْ حَقِيقٌ

83. तथा अय्यूब (की उस स्थिति) को (याद करो) जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि मुझे रोग लग गया है और तू सब से अधिक दयावान् है।

وَأَيُّوبَ إِذْ دَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَشْيِي قَصُورٌ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ

84. तो हम ने उस की गुहार सुन ली⁴ और दूर कर दिया जो दुःख उसे था, और प्रदान कर दिया उसे उस का परिवार तथा उतने ही और उन के साथ अपनी विशेष दया से तथा शिक्षा के लिये उपामकों की।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَفَّ سَابِغَهُ مِنَ الضَّرِّ وَآتَيْنَاهُ
أَهْلَهُ وَبَنَاتَهُ بِمِثْلِ مِمَّا فَتَنَّا وَتَبَوَّأَ فِي بَنَاتِهِ
وَمَنْ لَّا يُجِبِينَ

85. तथा इस्माईल और इद्रीस तथा जुल किफल को (याद करो), सभी सहनशीलों में से थे।

وَأِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِّنَ
الصَّابِرِينَ

1 अर्थात् वायु उन के सिंहासन को उन के राज्य में जहाँ चाहने क्षणों में पहुँचा देती थी।

2 अर्थात् मोतियाँ तथा जवाहिरान निकालने के लिये।

3 ताकि शैतान उन को कोई हानि न पहुँचाये।

4 आदरणीय अय्यूब अलैहिस्सलाम की अल्लाह ने उन के धन धान्य तथा परिवार में परीक्षा ली। वह स्वयं रोगग्रस्त हो गया परन्तु उन के धैर्य के कारण अल्लाह ने उन को फिर स्वस्थ कर दिया और धन-धान्य के साथ ही पहले से दो गुने पुत्र प्रदान किये।

86. और हम ने प्रवेश दिया उन को अपनी दया में, वास्तव में वे सदाचारी थे।

وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُمْ مِنَ الصَّادِقِينَ -

87. तथा जुबून¹ को जब वह चला² गया क्रोधित हो कर और सोचा कि हम उसे पकड़ेंगे नहीं, अन्ततः उस ने पुकारा अधेरीं में कि नहीं है कोई पुज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी³ हूँ।

وَذَا النُّونِ إِذْ ذُهِبَ مُغَاصِبٌ أَنْ يَنْتَقِبَ رَعِيَّتَهُ فَنَادَى فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ -

88. तब हम ने उस की पुकार सुन ली, तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं इंसान वालों को।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَخَرَجْنَاهُ مِنَ الْعَمَىٰ وَكَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمُؤْمِنِينَ -

89. तथा जकरिय्या को (याद करो) जब पुकारा उस ने अपने पालनहार⁴ को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है।

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ -

90. तो हम ने सुन ली उस की पुकार तथा प्रदान कर दिया उसे यह्या, और सुधार दिया उस के लिये उस

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَوَعَدْنَاهُ يَحْيَىٰ وَصَلَّاهُ لَهُ زَوْجَةً إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِخُونَ فِي الْعَذِيبِ

1 जुबून से अभिप्रेत यूनस अलैहिससलाम है। नून का अर्थ अरबी भाषा में मछली है। उन को "साहिबुल हून" भी कहा गया है। अर्थात् मछली वाला। क्योंकि उन को अल्लाह के आदेश से एक मछली ने निगल लिया था। इस का कुछ वर्णन सूरह यूनस में आ चुका है। और कुछ सूरह साफफात में आ रहा है।

2 अर्थात् अपनी जाति से क्रोधित हो कर अल्लाह के आदेश के बिना अपनी बस्ती से चले गये। इसी पर उन्हें पकड़ लिया गया।

3 सहीह हदीस में आता है कि जो भी मुसलमान इस शब्द के साथ किसी विषय में दुआ करेगा तो अल्लाह उस की दुआ को स्वीकार करेगा (निर्मिजी 3505)

4 आदरणीय जकरिय्या ने एक पुत्र के लिये प्रार्थना की, जिस का वर्णन सूरह आले इमरान तथा सूरह ता हा में आ चुका है।

की पत्नी को। वास्तव में वह सभी दौड़ धूप करते थे सत्कर्मों में और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ, और हमारे आगे झुके हुये थे।

وَيَذْخُرُونَ سَارِعَاتٍ وَرَهَبٍ لَّوْكَأُولَئِكَ
عَشِيرَتِينَ

91. तथा जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व¹ की तो फूक दी हम ने उस के भीतर अपनी आत्मा से, और उसे तथा उस के पुत्र को बना दिया एक निशानी संसार बानियों के लिये।

وَالَّتِي أَحْصَيْتُ فَرْجَهَا فَمَحَّضًا بِهَا مِنْ
لُؤْلُؤٍ وَجَعَلْنَا وَبْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ۝

92. वास्तव में तुम्हारा धर्म एक ही धर्म² है और मैं ही तुम सब का पालनहार (पूज्य) हूँ। अतः मेरी ही इबादत (बंदना) करो।

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ۝

93. और खण्ड-खण्ड कर दिया लोगों ने अपने धर्म को (विभेद कर के) आपस में, सब को हमारी ओर ही फिर आना है।

وَنَقُطِعُوا أَمْرَهُم بِبَيْنِهِمْ كُلَّ لَيْسَانٍ جَعَلُونَ ۝

94. फिर जो सदाचार करेगा और वह एकेश्वरवादी हो, तो उस के प्रयास की उपेक्षा नहीं की जायेगी, और हम उसे लिख रहे हैं।

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الظَّالِمَاتِ فَإِنَّ أَكْثَرَ
أَنْ يَسْأَلَهُ لَوْ أَنَّهُ كَتَبُونَ ۝

95. और असंभव है किसी भी बस्ती पर जिस का हम ने विनाश कर³ दिया

وَعَرَّضَ عَلَى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَتَاهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝

1 इस से संकट मर्यम तथा उस के पुत्र ईसा (अलैहिस्सलाम) की ओर है

2 अर्थात् सब नबियों का मूल धर्म एक है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा मैं मर्यम के पुत्र ईसा से अधिक संबंध रखता हूँ। क्योंकि सब नबी भाई भाई हैं उन की मायें अलग अलग हैं, सब का धर्म एक है (सहीह बुखारी 3443)। और दूसरी हदीस में यह अधिक है कि मेरे और उस के बीच कोई और नबी नहीं है (सहीह बुखारी 3442)

3 अर्थात् उस के बानियों के दुराचार के कारण।

है कि वह फिर (समार में) आ जाये।

96. यहाँ तक कि जब खोल दिये जायेंगे याजूज तथा माजूज¹ और वे प्रत्येक ऊँचाई से उतर रहे होंगे।

حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ فِي كُلِّ حَدِيدٍ ۝

- 97 और समीप आ जायेगा सत्य² वचन, तो अकस्मात् खुली रह जायेगी काफ़िरो की आँखें, (वे कहेंगे): "हाय हमारा विनाश"! हम असावधान रह गये इस से, बल्कि हम अत्याचारी थे।

وَاتَّقَبَّ أَلْوَعْدُ الْحَقِّ فَإِذَا فِي شَيْخَةٍ ۝
أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا يَوْنَمًا ۝ قَدْ كُنَّا فِي غَمَلَةٍ مِّنْ هَٰذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

98. निश्चय तुम सब तथा तुम जिन (मूर्तियों) को पूज रहे हो अब्राह के अतिरिक्त नरक के इंधन है, तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنتُمْ لَهَا وَرَدُونَ ۝

99. यदि वे वास्तव में पूज्य होते, तो नरक में प्रवेश नहीं करते, और प्रत्येक उस में सदावासी होंगे।

لَوْ كَانُوا هَادِيًا إِلَىٰ آلِهَةٍ مَا وَرَدُواهَا وَلَا يَفِيئُ فِيهَا غُلَامٌ وَلَا يَفِيئُ فِيهَا ۝

100. उन की उस में चीखें होंगी तथा वे उस में (कुछ) सुन नहीं सकेंगे।

لَهُمْ فِيهَا زُرُورٌ وَلَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝

101. (परन्तु) जिन के लिये पहले ही से हमारी ओर से भनाई का निर्णय हो चुका है वही उस से दूर रखे जायेंगे।

إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّاظٍ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قَبْلَ ۝

102. वे उस (नरक) की सरसर भी नहीं सुनेंगे, और अपनी मन चाही चीजों में सदा (मग्न) रहेंगे।

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَةً ۝ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ ۝

103. उन्हें उदासीन नहीं करेगी (प्रलय के दिन की) बड़ी व्यग्रता, तथा फरिश्ते

لَا يَحْزَنُهُمْ لَقَرًا الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ۝

1 याजूज तथा माजूज के विषय में देखिये सूरह कहफ, आयत 93 से 100 तक का अनुवाद।

2 सत्य वचन से अभिप्राय प्रलय का वचन है।

उन्हें हाथों हाथ ले लेंगे (तथा कहेंगे):
यही तुम्हारा वह दिन है जिस का
तुम्हें वचन दिया जा रहा था।

هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝

104. जिस दिन हम लपेट^१ देंगे आकाश
को पंजिका के पन्नों को लपेट देने
के समान जैसे हम ने आरंभ किया
था प्रथम उत्पत्ति का उसी प्रकार
उसे^२ दुहरायेंगे, इस (वचन) को
पूरा करना हम पर है, और हम
पूरा कर के रहेंगे।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِّينِ لِكُنُوءٍ ۚ
بَدَأْنَا أََوَّلَ خَلْقٍ ثُمَّ نُعِيدُهُ وَنَعِدُ عَذَابًا لِّكَافِرِينَ ۝

105. तथा हम ने लिख दिया है जवूर^३ में
शिक्षा के पश्चान् कि धरती के
उत्तराधिकारी मेरे सदाचारी भक्त होंगे।

وَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ آلِ إِبْرَاهِيمَ
أَنَّ مِن عِبَادِي شَصِيعُونَ ۝

106. वस्तुन-इम (बात) में एक बड़ा
उपदेश है उपासकों के लिये।

إِنَّ فِي هَٰذَا لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

107. और (हे नबी!) हम ने आप को
नहीं भेजा है किन्तु समस्त संसार के
लिये दया बना^४ कर।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝

108. आप कह दें कि मेरी ओर तो बस
यही वही की जा रही है कि तुम सब
का पूज्य वस एक ही पूज्य है, फिर
क्या तुम उस के आज्ञाकारी^५ हो?

قُلْ إِنَّمَا يُؤْتِي الْأَمْثَلُ الْخَلْقَ وَاحِدًا
لَّعَلَّكُمْ تَهْتَكُونَ ۝

1 (देखिये मूरह जुमर आयत 67)

2 नबी मल्लाहाहु अलैहि व मल्लम ने भाषण दिया कि लोग अल्लाह के पास बिना जूते के नग्न तथा बिना खनने के एकत्र किये जायेंगे। फिर इब्राहीम अन्नैहस्सलाम को सर्वप्रथम वस्त्र पहनाये जायेंगे। (सहीह बुखारी 3349)

3 जवूर वह पुस्तक है जो दावूद अलैहस्सलाम को प्रदान की गयी।

4 अर्थात् जो आप पर ईमान लायेगा वही लोक परलोक में अल्लाह की दया का अधिकारी होगा।

5 अर्थात् दया एकेश्वरवाद में है मिश्रणवाद में नहीं।

109. फिर यदि वे विमुख हों, तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें समान रूप से सावधान कर दिया¹, और मैं नहीं जानता कि समीप है अथवा दूर जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।
110. वास्तव में वही जानता है खुली बात को तथा जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो।
111. तथा मुझे यह ज्ञान (भी) नहीं, संभव है यह² तुम्हारे लिये कोई परीक्षा हो तथा लाभ हो एक निर्धारित समय तक?
112. उस (नबी) ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! सत्य के साथ निर्णय कर दे और हमारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है जिस से सहायता मांगी जाये उन बातों पर जो तुम लोग बना रहे हो।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ إِنِّي نَذَرْتُ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ وَإِنِّي أَكْرِمُكُمْ بِمَا تُوعَدُونَ ۝

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۝

وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ بَيِّنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝

قُلْ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً ۚ وَرَبِّ الرَّحْمَنِ السُّعْتَانَ عَلَىٰ مَا تُصِفُونَ ۝

1 अर्थात् ईमान न लाने और मिश्रणवाद के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् यातना में विलम्ब।

सूरह हज्ज 22

سُورَةُ الْحَجِّ

सूरह हज्ज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह में हज्ज की साधारण घोषणा की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह हज्ज है।
- आरंभिक आयतों में प्रलय के कड़े भूकम्प पर सावधान करते हुये इस बात से सूचित किया गया है कि शैतान के उकमाने से कितने ही लोग अल्लाह के वारे में निर्मूल बातों में उलझे रहते हैं जिस के कारण वह नरक की आग में जा गिरेंगे।
- दूसरे जीवन के प्रमाण और गुमराही की बातों के परिणाम बताये गये हैं।
- अल्लाह की अमुद्ध बंदना को व्यर्थ बनाने हुये शिर्क का खण्डन किया गया है।
- यह बताया गया है कि कौवा एक अल्लाह की बंदना के लिये बनाया गया है तथा हज्ज के कर्मों को बताया गया है। और मुसलमानों को अनुमति दी गई है कि जिहाद कर के कौवा को मुक्त कराये।
- यातना की जल्दी मचाने पर अत्याचारी जातियों के विनाश की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की राह में हिजरत करने पर शुभसूचना सुनाई गई है।
- अल्लाह के उपकारों का वर्णन तथा विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये शिर्क को निर्मूल बताया गया है।
- अन्त में मुसलमानों को अपने कर्तव्य का पालन करने और अल्लाह की राह में प्रयास करने और लोगों के सामने उस के धर्म की गवाही देने पर बल दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे मनुष्यो! अपने पालनहार से डरो, वास्तव में क्यामन (प्रलय) का भूकम्प बड़ा ही घोर विषय है।
2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, सध न होगी प्रत्येक दूध पिलाने वाली को अपने दूध पीने शिशु की, और गिरा देगी प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भ, तथा तुम देखोगे लोगों को मतवाले जब कि वे मतवाले नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह की यातना बहुत कड़ी¹ होगी।
3. और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान के, तथा अनुसरण करते हैं प्रत्येक उद्धत शैतान का।
4. जिस के भाग्य में लिख दिया गया है कि जो उसे मित्र बनायेगा वह उसे कुपध कर देगा और उसे राह दिखायेगा नरक की यातना की ओर।
5. हे लोगो! यदि तुम किसी सदेह में हो

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ
شَيْءٌ عَظِيمٌ

يَوْمَ تَرَوْهُم تَدَّهَلُ كُلُّ مُرْسِعَةٍ عَنَّا
أَرْصَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكَرَى وَكَأَنَّهُمْ يُسَكِّرُونَ
وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ

وَمِنْ نَاسٍ مَّنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَيَهْدِيهِمْ كُلُّ شَيْطَانٍ مُّبِينٍ

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَن تَوَلَّاهُ فَتَكِلْهُ
وَيَهْدِيهِ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنْ جَعَلْنَا

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अल्लाह प्रलय के दिन कहेगा हे आदम! वह कहेंगे मैं उपस्थित हूँ फिर पुकारा जायेगा कि अल्लाह आदेश देना है कि अपनी संतान में से नरक में भेजने के लिये निकालो वह कहेंगे कितने? वह कहेगा हजार में से नौ सौ निन्नानवे तो उसी समय गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और शिशु के बाल सफ़द हो जायेंगे। और तुम लोगों को मतवाले समझोगे। जब कि वे मतवाले नहीं होंगे किन्तु अल्लाह की यातना कड़ी होगी। यह बात लोगों को भारी लगी और उनके चेहरे बदल गये। तब आप ने कहा याजूज और माजूज में से नौ सौ निन्नानवे होंगे और तुम में से एका (सक्षिप्त हदीस बुखारी 4741)

पुनः जीवित होने के विषय में, तो (सोचो कि) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर मांस के खण्ड से जो चित्रित तथा चीत्रविहीन होता है¹, ताकि हम उजागर कर² दें तुम्हारे लिये, और स्थिर रखने है गर्भाशयों में जब तक चाहें एक निर्धारित अवधि तक, फिर तुम्हें निकालने हैं शिशु बना कर, फिर ताकि तुम पहुँचो अपने यौवन को, और तुम में से कुछ (पहले ही) मर जाते हैं और तुम में से कुछ जीर्ण आयु की ओर फेर दिये जाते हैं ताकि उसे कुछ ज्ञान न रह जाये ज्ञान के पश्चात्,

خَلَقْنَاهُ مِنْ نَرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُضْغَةٍ مُخَلَّقَةٍ وَغَيْرِهَا
مُخَلَّقَةٍ لَيْسَ بِكُمْ وَنُقُوتٌ الْأَرْحَامِ مَا شَاءَ إِلَىٰ تَحِيٍّ مُّسْمًى ثُمَّ يُخْرَجُ حَلَقًا طِفْلًا
ثُمَّ لَتَمِيقًا شَدِيدًا وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَلَّىٰ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدِّ إِلَىٰ رَدْلٍ الْقَعْرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ تَعْمِيدٍ بَلَدٍ شَبَابًا وَشَرَىٰ الْأَرْضَ
هَامِدَةً فَوَدَّ سَرَّكَ عَنْ يَدِ الْمَاءِ أَهْرَاقَتْ وَرَبَّتْ وَأَبْلَسَتْ مِنْ كَلِّ رَوْحٍ يَهْمُجُ ۝

- 1 अर्थात् यह वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी रक्त बन जाता है। फिर गोश्त का लोथड़ा बन जाता है। फिर उस से सहीह सलामत बच्चा बन जाता है। और ऐसे बच्चे में जान फूँक दी जाती है। और अपने समय पर उस की पैदाइश हो जाती है और -अल्लाह की इच्छा से- कभी कुछ कारणों फलस्वरूप ऐसा भी होता है कि खून का वह लोथड़ा अपना सहीह रूप नहीं धार पाता और उस में रूह भी नहीं फूँकी जाती, और वह अपने पैदाइश के समय से पहले ही गिर जाता है। सहीह हद्दीसों में भी माँ के पेट में बच्चे की पैदाइश की इन अवस्थाओं की चर्चा मिलती है। उदाहरण स्वरूप एक हद्दीस में है कि वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी खून बन जाता है। फिर चालीस दिन के बाद लोथड़ा अथवा गोश्त की बोंटी बन जाता है। फिर अल्लाह की ओर से एक फरिश्ता चार शब्द ले कर आता है: वह समार में क्या काम करेगा उस की आयु कितनी होगी, उस को क्या और कितनी जीविका मिलेगी, और वह शुभ होगा अथवा अशुभ फिर वह उस में जान डालता है। (देखिये: सहीह बुखारी 3332)

अर्थात् चार महीने का बाद उस में जान डाली जाती है। और बच्चा एक सहीह रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार आज जिस को बेजानियों ने बहुत दोड़ धूप के बाद सिद्ध किया है उस को कुर्आन ने चौदह सौ साल पूर्व ही बता दिया था यह इस बात का प्रमाण है कि यह किताब (कुर्आन) किसी मानव की बनाई हुई नहीं है, बल्कि अल्लाह की ओर से है।

- 2 अर्थात् अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य को।

तथा तुम देखने हो धरती को सुखी,
फिर जब हम उस पर जल बर्षा
करते हैं, तो सहमा लहलहाने और
उभरने लगी, तथा उगा दती है
प्रत्येक प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियों।

6. यह इस लिये है कि अल्लाह ही मृत्यु
है तथा वही जीवित करता है मुर्दा
को, तथा वास्तव में वह जो चाहे
कर सकता है

ذَٰلِكَ يَٰأَيُّهَا اللَّهُ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُخَيِّ
الْمُتَوَلَّى وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

7. यह इस कारण है कि क़्यामत
(प्रलय) अवश्य आनी है जिस में कोई
संदेह नहीं, और अल्लाह ही उन्हें पुनः
जीवित करेगा जो समाधियों (कब्रों)
में हैं।

ذَٰلِكَ الشَّعْنُ رَحِيمَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا أَنَّهُ
يَعْمَلُهُمْ فِي الْقُبُورِ

8. तथा लोगों में वह (भी) है जो विवाद
करता है अल्लाह के विषय में बिना
किसी ज्ञान और मार्ग दर्शन एवं बिना
किसी ज्योतिमय पुस्तक के।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّبِينٍ

9. अपना पहलू फेर कर ताकि अल्लाह
की राह ¹ से कृपय कर दे। उसी के
लिये संसार में अपमान है और हम
उसे प्रलय के दिन दहन की यातना
चखायेंगे

ثَٰلِثَ عَشْرَةَ يُجَادِلُ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فِي
الدُّنْيَا حَرْشٌ وَنَذِيرٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَذَابُ
الْعَرِيقِ

10. यह उन कर्मों का परिणाम है जिसे
तेरे हाथों ने आगे भेजा है, और
अल्लाह अत्याचारी नहीं है (अपने)
भक्तों के लिये।

ذَٰلِكَ يَوْمَ تَدْعُ أُمَّتٌ يَدْعُ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَالِمٍ
لِّلْعَالَمِينَ

11. तथा लोगों में वह (भी) है जो इबादत
(बदना) करता है अल्लाह की एक

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْبِدُ اللَّهَ عَلَىٰ حُوفٍ قَرَارٍ

1 अर्थात् अभिमान करते हुये।

किनारे पर हो कर¹, फिर यदि उसे कोई लाभ पहुँचना है तो वह सन्तोष हो जाता है। और यदि उसे कोई परीक्षा आ लगे तो मुँह के बल फिर जाता है। वह क्षति में पड़ गया लोक तथा परलोक की, और यही खुली क्षति है।

12. वह पुकारता है अब्राह के अनिरिक्त उसे जो न हानि पहुँचा सके उसे और न लाभ यही दूर² का कुपथ है।

13. वह उसे पुकारता है जिस की हानि अधिक समीप है उस के लाभ से, वास्तव में वह बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी है।

14. निश्चय अब्राह उन्हें प्रवेश देगा जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वास्तव में अब्राह करता है जो चाहता है।

15. जो मोचता है कि उस³ की सहायता नहीं करेगा अब्राह लोक तथा परलोक में, तो उसे चाहिये कि तान ले कोई रस्मी आकाश की ओर फिर फाँसी दे कर मर जाये। फिर देखे कि क्या दूर कर देती है उस का उपाय उस के रोष (क्रोध)⁴ को?

16. तथा इसी प्रकार हम ने इस (कूर्आन)

أَصَابَهُ خَيْرٌ فَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّهِ أَفْكِرُ
يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ لِيُصْرِفَهُ وَالْآيَةَ
ذِكْرٌ لَهُ الْقَصْدُ لِيُعْطَى

يَدْعُو مَنْ غَرَّبَ قَرَبٌ مِنْ ثَمَرَةٍ يُسْتَفْعَى
الْمَوْتُ وَالْأَمْسُ الْعَوْدُ

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
لَهُ اللَّهُ يَعْمَلُ مَا يَشَاءُ

مَنْ كَانَ يَطْلُبُ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ
ثُمَّ لِيَقْطَعْ فَنِيظُرْ هُنَّ يُدْعَى كَيْدُهُ مَا يَعْبَثُ

وَلَكِنَّكَ أَرْسَلْنَا آيَاتِنَا فَتُحْجِثُ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي

1 आर्थात् संदिग्ध हो कर।

2 अर्थात् कोई दुख होने पर अब्राह के सिवा दूसरों को पुकारना।

3 अर्थात् अपने रसूल की।

4 अर्थ यह है कि अब्राह अपने नबी की सहायता अवश्य करेगा।

को खुली आयतों में अवतरित किया है। और अब्राहम सुपथ दर्शा देता है जिसे चाहता है।

صَبَّحُوا بِرَبِّهِمْ ۖ

17. जो ईमान लाये तथा जो यहूदी हुये, और जो साबइ तथा ईसाई है और जो मजसी है तथा जिन्होंने शिर्क किया है, अब्राहम निर्णय¹ कर देगा उन के बीच प्रलय के दिन। निश्चय अब्राहम प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

إِنَّ الْكَافِرِينَ آمَنُوا وَآتَيْنَ هَهُنَا وَالْقَبِيلِينَ
وَالْقَبِيلِينَ وَالْمَجُوسَ وَالنَّبِيِّينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ
يَفُصِّلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ

18. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अब्राहम ही को सजदा² करते हैं जो आकाशों तथा धरती में है तथा सूर्य और चाँद तथा तारे और पर्वत एवं वृक्ष और पशु तथा बहुत से मनुष्य, और बहुत से वह भी हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है। और जिसे अब्राहम अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं है। निःसन्देह अब्राहम करना है जो चाहता है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ
فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ
وَالشَّجَرُ وَالْأَنْبَاءُ وَكَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ
حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُؤْمِنَ بِاللَّهِ فَعَالَهُ يَوْمٌ
مُكْرَمٌ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَائِثَاتِ رَبِّهِ

19. यह दो पक्ष है जिन्होंने विभेद किया³ अपने पालनहार के विषय में, तो इन में से काफ़िरो के लिये व्योम दिये गये हैं

هَذِهِ خَصْمَتَانِ الْخَصْمَتَانِ رَبِّهِمْ فَالْكَافِرِينَ
كَفَرُوا فَطَعَنَتْ لَهُمْ نَارٌ مِنْ تَحْتِ يَصْبُ مِنْ

1 अर्थात् प्रत्येक को अपने कर्म की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा।

2 इस आयत में यह बताया जा रहा है कि अब्राहम ही अकेला पूज्य है उस का कोई माझी नहीं। क्योंकि इस विश्व की सभी उत्पत्ति उसी के आगे झुक रही है और बहुत से मनुष्य भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी को सजदा कर रहे हैं अतः तुम भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी के आगे झुको। क्योंकि उस की अवज्ञा यातना का अनिवार्य कर देती है। और ऐसे व्यक्ति को अपमान के सिवा कुछ हाथ न आयेगा।

3 अर्थात् संसार में कितने ही धर्म क्यों न हों वास्तव में दो ही पक्ष हैं एक सत्धर्म का विरोधी और दूसरा सत्धर्म का अनुयायी, अर्थात् काफ़िर और मोमिन और प्रत्येक का परिणाम बताया जा रहा है।

- अग्नि के वस्त्र, उन के सिरों पर धारा
बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।
20. जिस से गला दी जायेगी उन के पेटों के
भीतर की वस्तुयें और उन की खालें।
21. और उन्हीं के लिये लोहे के आंकुश
हैं।
22. जब भी उस (अग्नि) से निकलना
चाहेंगे व्याकुल हो कर, तो उसी में
फेर दिये जायेंगे, तथा (कहा जायेगा
कि) दहन की यातना चखो।
23. निश्चय अब्राहम प्रवेश देगा उन्हें जो
ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे
स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित होंगी,
उन में उन्हें सोने के कगन पहनाये
जायेंगे तथा मोती और उन का वस्त्र
उस में रेशम का होगा।
24. तथा उन्हें मार्ग दर्शा दिया गया पवित्र
बात¹ का और उन्हें दर्शा दिया
गया प्रशंसित (अब्राहम) का² मार्ग।
25. जो काफिर हो गये³ और रोकते
हैं अब्राहम की राह से और उस
मस्जिदे हराम से जिसे सब के लिये
हम ने एक जैसा बना दिया है उस
के वासी हों अथवा प्रवासी। तथा
जो उस में अत्याचार से अधर्म का

قَوِي رُدِّيهِمُ الْحَيْثُمْ ۖ

يَضْرِبُ مَائِيَّ طَرَفَهُمُ وَالْجَنُونَ

وَأَنَّهُمْ تَقَالُيُومٍ حَدِيدٍ ۝

كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ
لَّيُعِيدُوا فِيهَا وَقَدْ أُفُتِحَتِ الْبَابُ ۚ

رَبَّنَا اللَّهُ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَحَمِيمُوا
الْجَنَّةِ حَمِيمٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يُحَلَّلُونَ فِيهَا مِنْ ثَوْبٍ مِّنْ ذَهَبٍ
لَّا يَبْلُغُونَ فِيهَا عُتُوبٌ ۖ

وَمَذُوقِ تَلْكَ مِنَ الْقَوْلِ وَهَذَا ذِكْرُ
مَسَارِعِ الْحَيَاتِ ۖ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ بَيْتِ اللَّهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِبَنَاتِ
سَمَاءٍ لِّعَالَمٍ يُعْلَمُونَ وَالْبَاءُ وَمَنْ يُؤْذِ
بِالْعَادِ يُضْلِمُ شِدْقَهُ مِنْ عَذَابِ النَّارِ ۖ

1 अर्थात् स्वर्ग का जहाँ पवित्र बातें ही होगी, वहाँ व्यर्थ पाप की बातें नहीं होगी।

2 अर्थात् संसार में इस्लाम तथा कूर्आन का मार्ग।

3 इस आयत में मक्का के काफिरों का चेनाबनी दी गइ है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इस्लाम के विरोधी थे और उन्होंने आप को तथा मुसलमानों को "हुदैदिया" के वर्ष मस्जिदे हराम से रोक दिया था।

विचार करेगा, हम उसे दुःखदायी यातना चखायेंगे।^[1]

26. तथा वह समय याद करो जब हम ने निश्चित कर दिया इब्राहीम के लिये इस घर (काबा) का स्थान^[2] (इस प्रतिबंध के साथ) कि माझी न बनाना मेरा किसी चीज को, तथा पवित्र रखना मेरे घर को परिक्रमा करने, खड़े होने, रुकूअ (झुकना) और सज्दा करने वालों के लिये।

27. और घोषणा कर दो लोगों में हज्ज की, वे आयेंगे तेरे पास पैदल तथा प्रत्येक दुबली पतली स्वारियों पर, जो प्रत्येक दूरस्थ मार्ग से आयेंगी।

28. ताकि वह उपस्थित हों अपने लाभ प्राप्त करने के लिये, और ताकि अब्राह का नाम^[3] लें निश्चित^[4] दिनों में उस पर जो उन्हें प्रदान किया है पालतू चौपायों में से। फिर उस में से स्वयं खाओ तथा भूखे निर्धन को खिलाओ।

- 29 फिर अपना मैल कुचैल दूर^[5] करे

وَأَذِّنْ لِلْعِبَادِ أَن يُبْرِئُوا مَكَانَ الْبَيْتِ لَنَ لَا تُشْرَكَ بِهِ شَيْئًا وَطَهُرُوا بَيْتِي لِلطَّائِعِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالزَّكَّاءِ الشَّعُورِ

وَأَلِّفْ فِي الْبَاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ وَالْأُؤْ عَلَى كُلِّ صَامِرٍ عَلَائِيٍّ مِنْ كُلِّ مَنَافٍ حَقِي

لِيُشْهَدُوا مَنَافَةٍ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَّعْلُومَاتٍ مَلَّ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا أَمْرَ الْبَاسِ الْقَوِي

ثُمَّ لِيَقْضُوا تَطَهُرَهُمْ وَلِيُؤْتُوا مَنَافَتَهُمْ

1 यह मक्का की मुख्य विशेषताओं में से है कि वहाँ रहने वाला अगर कफ़ और शिर्क या किसी बिद्अत का विचार भी दिल में लाये तो उस के लिये घोर यातना है।

2 अर्थात् उस का निर्माण करने के लिये। क्यों कि नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान के कारण सब बह गया था इस लिये अब्राह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के लिये बैतुल्लाह का वास्तविक स्थान निर्धारित कर दिया। और उन्होंने ने अपने पुत्र इस्माइल (अलैहिस्सलाम) के साथ उस दोबारा स्थापित किया।

3 अर्थात् उसे बध करने समय अब्राह का नाम लें।

4 निश्चित दिनों से अभिप्राय 10 11, 12 तथा 13 जिल हिज्जा के दिन है

5 अर्थात् 10 जिल हिज्जा को बड़े ((जमरे)) को जिस को लोग शैतान कहते हैं

तथा अपनी मनौतियाँ पूरी करें, और परिक्रमा करें प्राचीन घर¹ की।

وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٠﴾

30. यह है (आदेश), और जो अब्राह के निर्धारित किये प्रतिबंधों का आदर करे तो यह उस के लिये अच्छा है उस के पालनहार के पास। और हलाल (वैध) कर दिये गये तुम्हारे लिये चौपाये उन के सिवा जिन का वर्णन तुम्हारे समक्ष कर दिया² गया है अतः मुर्तियों की गन्दगी से बचो, तथा झूठ बोलने से बचो।

فَإِنَّكَ وَمَنْ يُعَظِّمُ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ مِنْكُمْ عِنْدَ رَبِّهِ وَأَجَلْتُ لَكُمْ الْأَعْمَارَ لَا تَمِيتُوا أَمْوَالَكُمْ فِي حُرْمَتِ الْبَيْتِ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ﴿٢١﴾

31. अब्राह के लिये एकेश्वरवादी होते हुये उस का साझी न बनाते हुये। और जो साझी बनाता हो अब्राह का तो मानो वह आकाश से गिर गया फिर उसे पक्षी उचक ले जाये अथवा वायु का झोंका किसी दूर स्थान पर फेंक³ दे।

حَفَاءَ لَكُمْ مَيْمَنَتُكُمْ مِنْ يَدَيْهِ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ السَّيْلُ مِنَ السَّمَاءِ فَمَا يَذَرُ مِنْهَا شَيْئًا

32. यह (अब्राह का आदेश है), और जो आदर करे अब्राह के प्रतीकों (निशानों)⁴ का, तो यह निःसन्देह दिलों के आज्ञाकारी होने की बात है।

ذَٰلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُتُوبِ ﴿٢٢﴾

कंकरियाँ मारने के पश्चात् एहराम उतार दे। और बाल नाखून साफ़ कर के स्नान करें।

1 अर्थात् काँबा का।

2 (देखिये सूरह भाइदा, आयत 3)

3 यह शिर्क के परिणाम का उदाहरण है कि मनुष्य शिर्क के कारण स्वाभाविक ऊँचाई से गिर जाता है। फिर उसे शैतान पक्षियों के समान उचक ले जाते हैं और वह नीच बन जाता है। फिर उस में कभी ऊँचा विचार उत्पन्न नहीं होता और वह मांसिक तथा नैतिक पतन की ओर ही झुका रहता है।

4 अर्थात् भक्ति के लिये उस के निश्चित किये हुये प्रतीकों की।

33. तुम्हारे लिये उन में बहुत से लाभ¹ है एक निर्धारित समय तक, फिर उन के वध करने का स्थान प्राचीन घर के पास है।

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَدَّدٍ ثُمَّ يَرْفَعْنَ
إِلَىٰ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝

34. तथा प्रत्येक समुदाय के लिये हम ने बलि की विधि निर्धारित की है, ताकि वह अब्राहम का नाम लें उस पर जो प्रदान किये है उन को पालतू चौपायों में से। अतः तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उसी के आज्ञाकारी रहो। और (हे नबी!) आप शुभ सूचना मुना दें विनीतों को।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنَاسِكَ لِّدِكُرِّ السَّمِيعِ ۝
عَلَىٰ مَا رَزَقْنَاهُمْ مِنْ بَيْتِنَا لِأَنْعَارِهِمْ وَلَهُمْ
إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَلَا أَسْمَاءَ لِسُمُومٍ أَوْ نَسِيرٍ الْخَبِيرِ ۝

35. जिन की दशा यह है कि जब अब्राहम की चर्चा की जाये तो उन के दिल डर जाते हैं तथा धैर्य रखते हैं उस विपदा पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज की स्थापना करने वाले हैं तथा उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ لَهُمْ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ
وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمُ وَالْمُقِيمِي
الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُعْتَمِدُونَ ۝

36. और ऊँटों को हम ने बनाया है तुम्हारे लिये अब्राहम की निशानियों में, तुम्हारे लिये उन में भलाई है। अतः अब्राहम का नाम लो उन पर (वध करते समय) खड़े कर के। और जब धरती से लग जायें² उन के पहलू तो स्वयं खाओ उन में से और खिलाओ उस में से संतोषी तथा भिक्षु को, इसी प्रकार हम ने उसे वश

وَلِهَذَا جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ
فِيهَا خَيْرٌ ۚ قَدْ ذُكِرُوا اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَاتٍ
فَإِذَا وَجِيتُمْ جُثُوبَهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا
الْقَائِمَ وَالْمُقَرَّبَاتِ ۚ تَعْرِفُهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝

1 अर्थात् कुर्बानी के पशु पर सवारी तथा उन के दूध और उन से लाभ प्राप्त करना उचित है।

2 अर्थात् उस का प्राण पूरी तरह निकल जाये।

में कर दिया है तुम्हारे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

37. नहीं पहुँचते अल्लाह को उन के मांस न उन के रक्त, परन्तु उस को पहुँचता है तुम्हारा आज्ञा पालन। इसी प्रकार उस (अल्लाह) ने उन (पशुओं) को तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह की महिमा का वर्णन करो¹ उस मार्गदर्शन पर जो तुम्हें दिया है। और आप सत्कर्मियों को शुभ सूचना सुना दें।

38. निश्चय ही अल्लाह प्रतिरक्षा करता है उन की ओर से जो ईमान लाये हैं, वास्तव में अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न से प्रेम नहीं करता।

39. उन्हें अनुमति दे दी गई जिन से युद्ध किया जा रहा है क्यों कि उन पर अत्याचार किया गया है, और निश्चय अल्लाह उन की सहायता पर पूर्णतः सामर्थ्यवान है।²

40. जिन को इन के घरों से अकारण निकाल दिया गया केवल इस बात पर कि वह कहते थे कि हमारा पालनहार अल्लाह है, और यदि अल्लाह प्रतिरक्षा न कराना कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा तो ध्वस्त कर दिये

لَنْ يَمَالِ اللَّهُ لِحُومِهَا وَلَا دِمَائِهَا وَلَكِنْ يَمَالُ اللَّهُ لِقَوْلِ مَنْ تَزَكَّى بِكَ سَعَرَهَا لَكُمْ لِيُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ وَيَكْمُرُ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٧﴾

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ لَا يُجِبُ كُلَّ هَوَاءٍ لَقَدْ

أَوْفَى بِالَّذِينَ لَفَعْنَ بِيَاظِهِمْ لَمْ نَأْمُرُوا اللَّهَ عَلَىٰ

وَالَّذِينَ أَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ يَنْصَرِفُونَ ﴿٣٨﴾ إِنَّ

1 वध करते समय (बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर) कहो।

2 यह प्रथम आयत है जिस में जिहाद की अनुमति दी गयी है और कारण यह बताया गया है कि मुसलमान शत्रु के अत्याचार से अपनी रक्षा करें। फिर आगे चल कर सूरह बकरा, आयत 190 से 193 और 216 तथा 226 में युद्ध का आदेश दिया गया है। जो (वध) के युद्ध से कुछ पहले दिया गया।

जाते आश्रम तथा गिरजे और यहूदियों के धर्म स्थल तथा मस्जिदें जिन में अब्राह का नाम अधिक लिया जाता है। और अब्राह अवश्य उस की सहायता करेगा जो उस (के सत्य) की सहायता करेगा, वास्तव में अब्राह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

41. यह¹ वह लोग है कि यदि हम इन्हें धरती में अधिपत्य प्रदान कर दें, तो नमाज की स्थापना करेंगे और जकन देंगे, तथा भलाई का आदेश देंगे, और बुराई से रोकेंगे, और अब्राह के अधिकार में है सब कर्मों का परिणाम।
42. और (हे नबी!) यदि वह आप को झुठलाये तो इन से पूर्व झुठला चुकी है नूह की जाति और (आद) तथा (समूद)।
43. तथा इब्राहीम की जाति और लूत की (जाति)।
44. तथा मद्यन वाले², और मूसा (भी) झुठलाये गये, तो मैं ने अवसर दिया काफिरों को, फिर उन्हें पकड़ लिया, तो मेरा दण्ड कैसा रहा?
45. तो कितनी ही वस्तियाँ है जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया, जो अन्याचारी थी, वह अपनी छनो के समेत गिरी हुई है और बेकार कुरे तथा पक्के ऊँचे भवनों।
46. तो क्या वह धरती में फिरे नहीं? तो उन के ऐसे दिल होते जिन से

الَّذِينَ إِن تَكُنْهُمْ فِي الْأَرْضِ آفَاقُ الْقُرُوفِ
وَأَتُوا الزُّكُوفَ وَأَمْرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ
النُّكْرِ وَكَذَلِكَ عَرِيفَةُ الْأُمُورِ

وَإِنْ يَكُذِّبُوا فَعَسَىٰ أَلَمُكَ يَكُنْ لَهُمْ قَوْمٌ تُبَوِّهُ وَغُلَا
وَتَكُونُونَ

وَقَوْمًا إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمَ لُوطٍ

وَأَصْحَابِ سَيْنَ وَكُذِّبَ مُوسَىٰ فَأَمَلَيْتُ الْيَكْفُرِينَ
لَوْ أَحَدٌ نَّهُمْ فَلَكَفٌ كَانَ يَكْفُرًا

فَتَكُنَّ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَمِنْ ذَلِكُمْ
طَعْنُ رَبِّهِمْ وَبَرُّ مَعْظَمِهِمْ وَتَعْمِيرُ مَشِيدِهِمْ

أَلَمْ يَتَبَرَّ فِي الْأَرْضِ فَتَكُنْ لَهُمْ قُلُوبٌ

1 अर्थात् उत्पीड़ित मुसलमान।

2 अर्थान् शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति।

समझते, अथवा ऐसे कान होते जिन से सुनते, वास्तव में आँखें अन्धी नहीं हो जाती। परन्तु वह दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में^१ है।

47. तथा वे आप से शीघ्र यातना की माँग कर रहे हैं, और अश्राह कदापि अपने वचन को भंग नहीं करेगा। और निश्चय आप के पालनहार के यहाँ एक दिन तुम्हारी गणना से हजार वर्ष के बराबर^२ है।

48. और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने अवसर दिया जब कि वह अत्याचारी थी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया। और मेरी ही ओर (सब को) वापिस आना है।

49. (हे नबी!) आप कह दें कि हे लोगो! मैं तो बस तुम्हें खुला सावधान करने वाला हूँ।

50. तो जो इमान लाये तथा सदाचार किये, उन्हीं के लिये क्षमा और सम्मानित जीविका है।

51. और जिन्होंने प्रयास किया हमारी आयतों में विवश करने का तो वही नारकी है।

52. और (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी रसूल और न किसी नबी

يَعْمَلُونَ بِهَا أَوْ إِذْ أَنْ يَسْمَعُونَ بِهَا أَوْ إِنَّا هَلَّا
تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي
الضُّلُوفِ ۝

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخَفِّفَ اللَّهُ
وَعْدَهُ قُلْ يَوْمَ الْعَذَابِ لَكُمْ كَالْقَبَسِ سَمُومًا
تَعْدُونَ ۝

وَكُلَّ إِنْسَانٍ لَنَا كَرِهٌ أَوْ مُبْتَدِئٌ وَأَنْ كَالِإِمَّةٍ
كُنَّا أَضْدَادًا لَهَا فَتَالِ الْبَصِيرُ ۝

قُلْ إِنِّي الْقَاسِمُ إِنِّي أَنْتُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ
وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

وَالَّذِينَ سَعَوْا عَلَيَّ آيَاتِي أُولَئِكَ
أَكْصَبُ الْبِغْيَةِ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا

1 आयत का भावार्थ यह है कि दिल की सूझ-बूझ चली जाती है तो आँखें भी अन्धी हो जाती हैं और देखने हुये भी सत्य को नहीं देख सकती।

2 अर्थात् वह शीघ्र यातना नहीं देता, पहले अवसर देना है जैसा कि इस के पश्चान् की आयत में बताया जा रहा है।

को किन्तु जब उस ने (पुस्तक) पढ़ी तो संशय डाल दिया शैतान ने उस के पढ़ने में फिर निरस्त कर देता है अब्राहम शैतान के संशय को, फिर सुदृढ़ कर देता है अब्राहम अपनी आयतों को और अब्राहम सर्वज्ञ तन्वज¹ है।

وَأَتَيْنَا آلَ إِبْرَٰهِيمَ إِنَّا أَنشَأْنَاهُمْ قَوْمًا عَادِلِينَ
فَلَمَّا جَاءَ آلَ إِبْرَٰهِيمَ الْمَلَأَةُ قَالُوا هَٰؤُلَاءِ بَنَاتُنَا
وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَفِيًّا

53. यह इस लिये ताकि अब्राहम शैतानी संशय को उन के लिये परीक्षा बना दे जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है और जिन के दिल कड़े हैं। और वास्तव में अन्याचारी विरोध में बहुत दूर चले गये हैं

لِيَجْزِيَ آلَ إِبْرَٰهِيمَ الَّذِي عَصَىٰ أَمْرًا لِلَّهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَفِيًّا

54. और इस लिये (भी) ताकि विश्वास हो जाये उन्हें जो ज्ञान दिये गये हैं कि यह (क़ुरआन) सत्य है आप के पालनहार की ओर से, और इस पर ईमान लायें और इस के लिये झुक जायें उन के दिल, और निःसंदेह अब्राहम ही पथ प्रदर्शक है उन का जो ईमान लायें सुपथ की ओर।

وَلِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْحَقُوا بِهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَفِيًّا

55. तथा जो क़ाफ़िर हो गये तो वह सदा संदेह में रहेंगे इस (क़ुरआन) से, यहाँ तक कि उन के पास सहसा प्रलय आ जाये अथवा उन के पास बाँझ² दिन की यातना आ जाये।

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ
مِّنْهُ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْثَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ
عَذَابٌ يَوْمٍ عَقِيبٍ

56. राज्य उस दिन अब्राहम ही का होगा, वही उन के बीच निर्णय करेगा, तो जो ईमान लायें और सदाचार किये

أَلَمْ تَرَ يَوْمَ هَارٍ وَنَبِيٍّ يُهَيَّجُ بَيْنَهُمْ فَاتَّبَعُوا
أَمْرًا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي حَقِّ الْحَقِّ

1 आयत का अर्थ यह है कि जब नबी धर्मपुस्तक की आयतें सुनाने हैं तो शैतान लोगों को उस के अनुपालन से रोकने के लिये संशय उत्पन्न करता है

2 बाँझ दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है क्योंकि उस की रात नहीं होगी।

तो वह सुख के स्वर्गों में होंगे।

57. और जो क़ाफ़िर हो गये, और हमारी आयतों को झूठलाया, उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।

58. तथा जिन लोगों ने हिज़रत (प्रस्थान) की अल्लाह की राह में, फिर मारे गये अथवा मर गये तो उन्हें अल्लाह अवश्य उत्तम जीविका प्रदान करेगा। और वास्तव में अल्लाह ही सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।

59. वह उन्हें प्रवेश देगा ऐसे स्थान में जिस से वह प्रसन्न हो जायेंगे, और वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सहन्शील है।

60. यह वास्तविकता है, और जिस ने बदला लिया वैसा ही जो उस के साथ किया गया फिर उस के साथ अत्याचार किया जाये, तो अल्लाह उस की अवश्य सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त क्षमाशील है।

61. यह इस लिये कि अल्लाह प्रवेश देता है रात्रि को दिन में, और प्रवेश देता है दिन को रात्रि में। और अल्लाह सब कुछ सुनने देखने वाला¹ है।

62. यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वही असत्य है, और अल्लाह ही सर्वोच्च महान् है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ

وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهَوْنَ
أُولَٰئِكَ يَكْفُرُ لَهُمْ اللَّهُ بِزُرْقٍ حَسَنَةٍ
وَإِنَّ اللَّهَ لَهُ خَيْرٌ مِّنْ مُّزِقِّينَ

لَهُمْ جَنَّاتُ مِّنْ دُونِ جَنَّاتٍ وَلَهُمْ فِيهَا نَضْرَجَاتٌ
مِّنْ ثَمَرَاتٍ مُّتَعَدَّةٌ وَلَهُمْ فِيهَا مَعِينٌ

وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ
لَعَنَّا عَلَيْهِ لَيْسَ صَاحِبُ شِمَةٍ
وَلَهُمْ فِيهَا مَعِينٌ

وَلَهُمْ فِيهَا مَعِينٌ
وَلَهُمْ فِيهَا مَعِينٌ
وَلَهُمْ فِيهَا مَعِينٌ

وَلَهُمْ فِيهَا مَعِينٌ
وَلَهُمْ فِيهَا مَعِينٌ
وَلَهُمْ فِيهَا مَعِينٌ

1 अर्थान् उस का नियम अन्धा नहीं है कि जिस के साथ अत्याचार किया जाये उस की सहायता न की जाये। रात्रि तथा दिन का परिवर्तन बता रहा है कि एक ही स्थिति सदा नहीं रहती।

63. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से जल बरसाता है तो भूमि हरी हो जाती है वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।

64. उसी का है जो आकाशों में तथा जो धरती में है। और वास्तव में अल्लाह ही निस्पृह प्रशंसित है।

65. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने बश में कर दिया¹ है तुम्हारे जो कुछ धरती में है, तथा नाव को (जो) चलती है सागर में उस के आदेश से, और रोकना है आकाश को धरती पर गिरने से परन्तु उस की अनुमति में? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अति करुणामय दयावान् है।

66. तथा वही है जिस ने तुम्हें जीवन किया, फिर तुम्हें मारेंगा, फिर तुम्हें जीवन करेगा वास्तव में मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

67. (हे नबी!) हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये (इबादन की) विधि निर्धारित कर दी थी जिस का वह पालन करने रहे, अतः उन्हें आप से इस (इस्लाम के नियम) के संबंध में विवाद नहीं करना चाहिये। और आप अपने पालनहार की ओर लोगों को बलायें, वास्तव में आप सीधी राह पर हैं²।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَشْرَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَتُصْبِغُ الْأَرْضَ مُخْضَرَّةً إِنَّ اللَّهَ لَوَيْتٌ
حَسِيرٌ

لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَرَبُّكَ اللَّهُ الْعَلِيُّ الْغَمِيذُ

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مِّنَ الرِّيحِ مَائِدَةً
تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ
تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ
لَرْؤُوفٌ رَّحِيمٌ

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُم مِّن مَّوْتِكُمْ ثُمَّ يُمَيِّتُكُمْ
إِنَّ إِلَهَكُمْ لَكَنُورٌ

يُخَيِّرُ أُمَّةً يَسُجُدَ لَكُمْ وَيُخَيِّرُ أُمَّةً لَا يَسُجُدُ
لَكُمْ وَلِيُذْهِبَ رِيبَكَ إِنَّكَ أَنتَ
لَعَلَّ هُدًى مُّسْتَقِيمٌ

1 अर्थात् तुम उन से लाभान्वित हो रहे हो।

2 अर्थात् जिस प्रकार प्रत्येक युग में लोगों के लिये धार्मिक नियम निर्धारित किये गये उसी प्रकार अब कुर्बान धर्म विधान तथा जीवन विधान है। इस लिये अब प्राचीन धर्मों के अनुयायियों को चाहिये कि इस पर इमान लायें न कि इस

68. और यदि वह आप से विवाद करे,
तो कह दें कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों से
भली भाँति अवगत है।

وَلَا تَجَادِلْهُ فَيَغْلِبَكَ إِنَّهُ أَخْلَصُ بِمَا
تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

69. अल्लाह ही तुम्हारे बीच निर्णय करेगा
क्यामत (प्रलय) के दिन जिस में तुम
विभेद कर रहे हो।

إِنَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

70. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि
अल्लाह जानता है जो आकाश तथा
धरती में है यह सब एक किताब में
(अंकित) है। वास्तव में यह अल्लाह के
लिये अति सरल है।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
إِنَّ ذَلِكَ لِي بِكَتَابٍ إِنَّ دِينَكَ عَلَى اللَّهِ قَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

71. और वह इबादत (वन्दना) अल्लाह
के अतिरिक्त उस की कर रहे है
जिस का उस ने कोई प्रमाण नहीं
उतारा है, और न उन्हें उस का कोई
ज्ञान है। और अत्याचारियों का कोई
सहायक नहीं होगा।

وَيَقْبَلُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ
سُلْطَانٌ وَأُولَئِكَ لَهُمْ عِلْمٌ وَمَا بِالظَّالِمِينَ
مِنْ تَوْبِيرٍ ﴿٧١﴾

72. और जब उन को सुनायी जाती है
हमारी खुली आयतें तो आप पहचान
लेते है उन के चेहरों में जो काफिर
हो गये बिगाड़ को। और लगता है
कि वह आक्रमण कर देंगे उन पर
जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते है।
आप कह दें क्या मैं तुम्हें इस से बुरी
चीज बता दूँ वह अग्नि है जिस का
वचन अल्लाह ने काफिरों को दिया है,
और वह बहुत ही बुरा आवास है।

وَهُذَا نَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا يَتَّبِعُونَ فِي
وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُسْكِرُ كَأَنَّهُمْ لَا يَسْطَوْنَ
بِالَّذِينَ يَسْتَلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا قُلْ إِنَّا نَنْتَظِرُ
بَشِيرًا مِّنْ ذَالِكُمْ أَتَاكُمُ الْعَذَابُ وَنُذِرُ الْكَافِرِينَ
كَفَرُوا وَأَوْشَسَ الْمُصِيزُ ﴿٧٢﴾

विषय में आप से विवाद करे। और आप निश्चिन्त हो कर लोगों को इस्लाम
की ओर बुलायें क्यों कि आप सन्धर्म पर हैं। और अब आप के वाद सारे पुराने
धर्म निरस्त कर दिये गये हैं।

73. हे लोगो! एक उदाहरण दिया गया है इसे ध्यान से सुनो, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, वह सब एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि सब इस के लिये मिल जायें। और यदि उन से मक्खी कुछ छीन ले तो उस से वापिस नहीं ले सकते। माँगने वाले निर्बल, और जिन से माँगा जाये वह दोनों ही निर्बल हैं।

74. उन्होंने ने अल्लाह का आदर किया ही नहीं जैसे उस का आदर करना चाहिये। वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

75. अल्लाह ही निर्वाचन करता है फरिश्तों में से तथा मनुष्यों में से रसूलों को। वास्तव में वह सुनने तथा देखने वाला है।

76. वह जानता है जो उन के सामने है और जो कुछ उन से ओझल है, और उसी की ओर सब काम फेरे जाते हैं।

77. हे इंसान वालो! हकूअ करो तथा सजदा करो और अपने पालनहार की इबादत (बंदना) करो, और भलाई करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

78. तथा अल्लाह के लिये जिहाद करो जैसे जिहाद करना¹ चाहिये। उसी

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُوبٌ مِّثْلَ قَاتِلِ الْفَرَسِ
الْبَيْتِ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ
يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ جُمَعُوا لَهُ وَلَنْ
يَسْلُمَهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَفِيدُونَ مِنْهُ
ضَعُفَ الظَّالِمُ وَالْمُطْلُوبُ ۝

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيزٌ ۝

أَنَّهُ يُضِلُّ مَنِ الْمَكِيدِ رُسُلًا وَمَنِ
النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَقَالَ اللَّهُ ثَرْجُهُ لَأُمُورٍ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا
وَاعْبُدُوا رَبَّكُمُ افْعَلُوا الصَّالِحَاتِ لَعَلَّكُمْ
تُكْفَرُونَ ۝

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ

1 अर्थात् वही जानता है कि रसूल (संदेशवाहक) बनाये जाने के योग्य कौन है।

2 एक व्यक्ति ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि कोई धन के लिये लड़ता है कोई नाम के लिये और कोई वीरता दिखाने के लिये। तो कौन अल्लाह के लिये लड़ता है? आप ने फरमाया जो अल्लाह का शब्द ऊँचा करने के लिये लड़ता है। (सहीह बुखारी: 123 2810)

ने तुम्हें निर्वाचित किया है और नहीं बनाई तुम पर धर्म में कोई संकीर्णता (तंगी)। यह तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म है, उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है इस (क़ुरआन) से पहले तथा इस में भी। ताकि रसूल गवाह हो तुम पर, और तुम गवाह^१ बनो सब लोगों पर। अतः नमाज की स्थापना करो तथा जकात दो, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़^२ लो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है।

اجتبتكم وما جعل عليكم في الدين من
عقربا ملة ابراهيم هو مسلم
المسلمين ومن قبل هذا يكون
الرسول شهيدا عليكم وتكونوا شهداء على
الناس فاقسموا بالصلاة والتوا الزكاة
واعتصموا بالدين هو مولىكم فتعصم
المولى واعصم التوسل

1 व्याख्या के लिये देखिये सूरह बकरा आयत: 143।

2 अर्थात् उस की आज्ञा और धर्म विधान का पालन करो।

सूरह मुमिनून - 23

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ

सूरह मुमिनून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मकी है इस में 118 आयत है।

- इस सूरह में ईमान वालों की सफलता तथा उन के गुणों को बताया गया है।
- और जिस आस्था पर सफलता निर्भर है उस के सत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और संदेहों को दूर किया गया है।
- यह बताया गया है कि सब नबियों का धर्म एक था, लोगों ने विभेद कर के अनेक धर्म बना लिये।
- जो लोग अचेत हैं उन्हें सावधान करने के साथ साथ मौत तथा प्रलय के दिन उनकी दुर्दशा को बताया गया है।
- नबी सल्लाह अलैहि व सल्लम के माध्यम से मुसलमानों को अब्राह की क्षमा तथा दया के लिये प्रार्थना की शिक्षा दी गयी है।
- हदीस में है कि जिस में तीन बातें हों उसे ईमान की मिठास मिल जाती है: जिस को अब्राह और उस के रसूल सब से अधिक प्रिय हों। और जो किसी से मात्र अब्राह के लिये प्रेम करे। और जिसे यह अप्रिय हो कि इस के पश्चात् कुफ्र में वापिस जाये जब कि अब्राह ने उसे उस से निकाल दिया। जैसे की उसे यह अप्रिय हो कि उसे नरक में फेंक दिया जाये। (सहीह बुखारी 21, मुस्लिम, 43)

अल्लाह के नाम में जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 सफल हो गये ईमान वाले।
- 2 जो अपनी नमाजों में विनीत रहने वाले हैं

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ عَاهُونَ ۝

3. और जो व्यर्थ¹ से विमुख रहने वाले हैं।
4. तथा जो जकान देने वाले हैं।
5. और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।
6. परन्तु अपनी पत्नियों तथा अपने स्वामित्व में आयी दासियों से, तो वही निन्दित नहीं है।
7. फिर जो इस के अनिश्चित चाहें, तो वही उल्लंघनकारी है।
8. और जो अपनी धरोहरों तथा वचन का पालन करने वाले हैं।
9. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करने वाले हैं।
10. यही उत्तराधिकारी है।
11. जो उत्तराधिकारी होंगे फिर्दौस² के, जिस् में वे सदावासी होंगे।
12. और हम ने उत्पन्न किया है मनुष्य को मिट्टी के सार³ से।
13. फिर हम ने उसे वीर्य बना कर रख दिया एक सुरक्षित स्थान⁴ में।
14. फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुये रक्त में फिर हम ने उसे मांस का

وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ الْغَوْرِ يُغْرَوْنَ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ لِلرَّكْوَةِ يُجَلُونَ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ لِلرُّجُومِ يُحْذَرُونَ ۝

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَوَقَّاتُونَ ۝

فَمَنْ أَشَقَّىٰ رَأَىٰ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ۝

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرَادُوسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ۝

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نَظْمَةً فَنُقَاسًا فَنُفِخَ فِيهِ ۝

ثُمَّ جَعَلْنَا النُّطْمَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعِظْمَةَ مُضْمَةً ۝

1 अर्थात् प्रत्येक व्यर्थ कार्य तथा कथन से। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर इमान रखता हो वह अच्छी बात वाले अन्यथा चुप रहा। (महीह बुखारी 6019 मुस्लिम 48)

2 फिर्दौस: स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान।

3 अर्थात् वीर्य से।

4 अर्थात् गर्भाशय में।

लोथड़ा बना दिया, फिर हम ने लोथड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हम ने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया। तो शुभ है अब्राह जो सब से अच्छी उत्पत्ति करने वाला है।

15. फिर तुम सब इस के पश्चात् अवश्य मरने वाले हो।

16. फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किये जाओगे।

17. और हम ने बना दिये तुम्हारे ऊपर सात आकाश, और हम उत्पत्ति से अचेत नहीं¹ है।

18. और हम ने आकाश से उचित मात्रा में पानी बरसाया, और उसे धरती में रोक दिया तथा हम उसे विलुप्त कर देने पर निश्चय सामर्थ्यवान है।

19. फिर हम ने उपजा दिये तुम्हारे लिये उस (पानी) के द्वारा खजूरों तथा अंगूरों के बाग तुम्हारे लिये उस में बहुत से फल है, और उसी में से तुम खाते हो।

20. तथा वृक्ष जो निकलता है सैना पर्वत से जो तेल लिये उगता है। तथा सालन है खाने वालों के लिये।

21. और वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है, हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेटों में² है।

فَخَلَقْنَا الْمُهَذَّبَةَ عِظْمًا فَكَسَوْنَاهَا لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ تَمِيزُكَ لَهُ الْخَيْرُ الْأَمِينُ ۝

ثُمَّ إِلَيْنَا رُجْعُكُمْ ۝

ثُمَّ إِلَيْنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَجْعَلُونَ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْوُجُوهَ مِنْ دَرَجَاتٍ وَأَنَا غَنِیُّ الْغَنِیِّ ۝

وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهَا الْغُلَّةَ ۝
وَجَعَلْنَا لَهَا مِنْ غَزَاوَاتِهَا رِجًّا ضَلَالًا ۝

فَالْأَنْجَامُ لَهَا رَحِيقٌ ۝
وَالْأَنْجَامُ لَهَا رَحِيقٌ ۝

وَالْجِبَالُ سَوْدَاءُ ۝
وَالْجِبَالُ سَوْدَاءُ ۝

وَالْأَنْجَامُ لَهَا رَحِيقٌ ۝
وَالْأَنْجَامُ لَهَا رَحِيقٌ ۝

1 अर्थात् उत्पत्ति की आवश्यकता तथा जीवन के संसाधन की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

2 अर्थात् दूध।

तथा तुम्हारे लिये उन में अन्य बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को तुम खाते हो।

22. तथा उन पर और नावों पर तुम सवार किये जाते हो।

23. तथा हम ने भेजा नूह¹ को उस की जाति की ओर, उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! इबादत (बंदना) अब्राह की करो, तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरने नहीं हो?

24. तो उन प्रमुखों ने कहा जो क़ाफ़िर हो गये उस की जाति में से, यह तो एक मनुष्य है, तुम्हारे जैसा, यह तुम पर प्रधानता चाहता है। और यदि अब्राह चाहता तो किसी फारिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे² सुना ही नहीं अपने पूर्वजों में।

25. यह बस एक ऐसा पुरुष है जो पागल हो गया है तो तुम उस की प्रतीक्षा करो कुछ समय तक।

26. नूह ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उन के मुझे झुठलाने पर।

27. तो हम ने उस की ओर बह्यी की, कि नाव बना हमारी रक्षा में हमारी बह्यी के अनुसार, और जब हमारा

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلَيْنِ تُخْتَلُونَ ﴿٢٢﴾

فَلَمَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ الْعِبادَةِ إِلَّا أَنَا نَسُوقُكُمُ الْعَذَابَ ﴿٢٣﴾

فَقَالَ الْمَثُورُ الْكَاذِبُ قَوْمِهِ مَاهَذَا إِلَّا أَنَا مِثْلُكُمْ نَرِيدُ أَنْ نَمُنَّ بِمَا نَعْبُدُ آبَاءَنَا وَنَحْمِلُ مَا كَانُوا يَحْمِلُونَ ﴿٢٤﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ يَدْعُوهُمُ إِلَىٰ غَيْرِ مَا هُمْ عَلَىٰ حِينِهِ ﴿٢٥﴾

قَالَ نَحْنُ الْمَثُورُونَ ﴿٢٦﴾

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ صَبِّرِ الْبُغْيَاءَ يَا نَحْيِيئًا وَوَحْيِينَ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ الْقَتُورُ فَاصْبِرْ

1 यहाँ यह बताया जा रहा है कि अब्राह ने जिस प्रकार तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये उसी प्रकार तुम्हारे आत्मिक मार्ग दर्शन की व्यवस्था की और रसूलों को भेजा जिन में नूह अलैहिस्सलाम प्रथम रसूल थे।

2 अर्थात् एकेश्वरवाद की बात अपने पूर्वजों के समय में सुनी ही नहीं।

आदेश आ जाये तथा तन्नूर उबल पड़े, तो रख ले प्रत्येक (जीव) के एक एक जोड़े तथा अपने परिवार को, उस के सिवा जिस पर पहले निर्णय हो चुका है उन में से, और मुझे सर्वोपेक्षित न करना उन के विषय में जिन्होंने अत्याचार किये हैं, निश्चय वे दुबो दिये जायेंगे।

28. और जब स्थिर हो जाये तू और जो तेरे साथी है नाव पर, तो कह मय प्रशंसा उस अब्राह के लिये है जिस ने हमें मुक्त किया अत्याचारी लोगों से।

29. तथा कह हे मेरे पालनहार! मुझे शुभ स्थान में उतार, और तू उत्तम स्थान देने वाला है।

30. निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं, तथा निःसंदेह हम परीक्षा लेने¹ वाले हैं।

31. फिर हम ने पैदा किया उन के पश्चात् दूसरे समुदाय को।

32. फिर हम ने भेजा उन में रसूल उन्ही में से कि तुम इबादत (बंदना) करो अब्राह की, तुम्हाग कोई (मच्चा) पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

33. और उस की जानि के प्रमुखों ने कहा जो क़ाफ़िर हो गये तथा आखिरत (परलोक) का सामना करने को झुठला दिया, तथा हम ने उन्हें सम्पन्न किया था ससारिक जीवन में

فِيهَا مِنْ كُلِّ ذَوْاتٍ شَتَّى وَأَقْنِصُوا مِنْ سَبَقِ عَلَيْهِ الْقَوْلَ مِنْهُمْ دُونَ الْحَاطِطِينَ فِي الدُّنْيَا ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَنُصِرُوا ۝

وَأَدَّ السَّعْيَاتِ سَعًى وَمَنْ مَعَتْ عَلَى تَعْدِيَةٍ صَلَّى الْحَمْدُ لِلَّهِ الْبَرِّ تَحْصَانًا مِنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝

وَقُلْ رَبِّ أَرْسِلْ سُلْطَانًا مِنْكَ عَلَى السَّمْعِينَ ۝

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّعْمَانِ ۝

كُلُّ أُمَّةٍ آتَيْنَا مِنْ بَيْنِهِمْ قُرُونًا آخِرِينَ ۝

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنَ الْوَعْدَةِ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

وَقَالَ الْهَادِسُ قَوْمَهُ الْيَتِيمَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا الْكُفْرَ وَأَوْرَثَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَكُلُ مِمَّا نَكُلُ مِنْهُ وَيَتَرَبَّسُّنَا سَرُوقُونَ ۝

1 अर्थात् रसूलों के द्वारा परीक्षा लेते रहे हैं।

यह तो बस एक मनुष्य है तुम्हारे
जैसा, खाता है जो तुम खाते हो और
पीता है जो तुम पीन हो।

34. और यदि तुम ने मान लिया अपने
जैसे एक मनुज को तो निश्चय तुम
क्षतिग्रस्त हो।

35. क्या वह तुम को वचन देता है कि
जब तुम मर जाओगे और धूल तथा
हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम फिर
जीवित निकाले जाओगे?

36. बहुत दूर की खान है जिस का तुम्हें
वचन दिया जा रहा है।

37. जीवन तो बस संसारिक जीवन है,
हम मरते-जीते हैं, और हम फिर
जीवित नहीं किये जायेंगे।

38. यह तो बस एक व्यक्ति है जिस में
अब्राहम पर एक झूठ घड़ लिया है।
और हम उस का विश्वास करने
वाले नहीं हैं।

39. नबी ने प्रार्थना की मेरे पालनहार!
मेरी सहायता कर उन के झूठलाने
पर मुझे।

40. (अब्राहम ने) कहा: शीघ्र ही वह (अपने
किये पर) पछतायेंगे।

41. अन्ततः पकड़ लिया उन्हें कोलाहल ने
सत्यानुसार, और हम ने उन्हें कचरा
बना दिया, तो दूरी हो अत्याचारियों
के लिये

42. फिर हम ने पैदा किया उन के

وَلَيْسَ آتِغْتُمْ يَشْرَاؤُكُمْ أَنْ تَكُونُوا خَيْرُونَ ﴿٣٤﴾

أَيُّدَاكُمْ تَكْفُرُ إِذْ رَدَّ إِلَهُكُمْ كُفْرًا وَعَظَامَاكُمْ
تُفْرَجُونَ ﴿٣٥﴾

هِيَئَاتَ هِيَئَاتَ بِمَا لَكُمْ وَعَدُونَ ﴿٣٦﴾

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُ الدُّنْيَا تَمُوتُ وَحَيَاتُهَا خَيْرٌ
بِمَعْمُولَيْنِ ﴿٣٧﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ غَرَىٰ عَلَىٰ الْكَافِرِينَ مَا كَانُوا
لَهُ مُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كُنْتُ نَادِيًا ﴿٣٩﴾

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَادِيًا ﴿٤٠﴾

فَأَخَذَ اللَّهُ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ فَعَبَّهٖم مَّهْمَتًا
فَعَبَّاهُمُ الْغُيُوبُ الْفُلُجِيَّةُ ﴿٤١﴾

فَعَرَّسْنَا نَارًا يَحْمِيهِمْ وَقَرْنَا خَيْرِينَ ﴿٤٢﴾

पश्चात् दूसरे युग के लोगों को।

43. नहीं आगे होती है कोई जाति अपने समय से और न पीछे।¹

44. फिर हम ने भेजा अपने रसूलों को निरन्तर, जब जब किसी समुदाय के पास उस का रसूल आया, उन्हों ने उस को झुठला दिया, तो हम ने पीछे लगा² दिया उन के एक को दूसरे के और उन्हें कहानी बना दिया। तो दूरी है उन के लिये जो ईमान नहीं लाते।

45. फिर हम ने भेजा मूसा तथा उस के भाई हारून को अपनी निशानियों तथा खुले तर्क के साथ।

46. फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर तो उन्हों ने गर्व किया, तथा वे थे ही अभिमानी लोग।

47. उन्हों ने कहा: क्या हम ईमान लायें अपने जैसे दो व्यक्तियों पर, जब कि उन दोनों की जाति हमारे आधीन है?

48. तो उन्हों ने दोनों को झुठला दिया, तथा ही गये विनाशों में।

49. और हम ने प्रदान की मूसा को पुस्तक³, ताकि वह मार्ग दर्शन पा जाये।

50. और हम ने बना दिया मर्यम के पुत्र

مَا قَسِيْبٌ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَجِزُّونَ ۝

ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا كُلًّا بِجَاةٍ اَمَةٍ رَسُوْلًا
كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ
اَحَادِيْثًا مِّمَّ بَعْدَ الْقَوْمِ الْاَوَّلِيْنَ ۝

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ بِآيٰتِنَا
وَسُلٰطِيْنٍ مُّبِيْنٍ ۝

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَٲِيْهِ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا
عٰلِيْنَ ۝

فَقَالُوْا اَنْتُمَا اِنْسٰوَيْنِ وَتٰرٰوْنٰ قَوْمَهُمَا اِلٰ
عٰدِيْنَ ۝

فَلَمَّا رَاَهُمَا فَكَانُوْا مِنْ سٰوِيْلِكُمْ ۝

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝

وَجَعَلْنَا اِبْرٰهِيْمَ رَسُوْلًا وَّاٰتَيْنَاهُ الْوَحْيَ اِلٰ

1 अर्थात् किसी जाति के विनाश का समय आ जाता है तो एक क्षण की भी देर-सवेर नहीं होती।

2 अर्थात् विनाश में।

3 अर्थात् तौरात।

तथा उस की माँ को एक निशानी,
तथा दोनों को शरण दी एक उच्च
बसने योग्य तथा प्रवाहित स्रोत के
स्थान की ओर।^[1]

رَبُّوْذَاتِ كُرَارٍ وَمَبِیْثٍ

51. हे रसूलो! खाओ स्वच्छ² चीजों में
से तथा अच्छे कर्म करो, वास्तव में,
मैं उस से जो तुम कर रहे हो भली
भाँति अवगत हूँ।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ كُلُوا مِنِ الطَّيِّبَاتِ وَاتَّقُوا أَصَابِحًا
رَبِّ يَسْتَعْتُونَ مَبِیْثٍ

52. और वास्तव में यह तुम्हारा धर्म एक
ही धर्म है और मैं ही तुम सब का
पालनहार हूँ अतः मुझी से डरो।

وَأَنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ
فَاتَّقُونِ

53. तो उन्होंने ने खण्ड कर लिया अपने
धर्म का आपस में कड़ खण्ड, प्रत्येक
सम्प्रदाय उसी में जो उन के पास³
है मग्न है।

فَتَنَقَّلُوا الْأَمرَ مِنْ بَيْنِهِمْ ذُرِّيَّاتُ كُلِّ جَوْشِبَاءٍ
لِّذَرِيَّتِهِمْ فَرِحُونَ

54. अतः (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें
उन की अचेतना में कुछ समय तक।

فَذَرْنِهِمْ فِي الْأَمْرِ يَتَذَكَّرْنَ إِلَى يَوْمِ لَدُنِّ

55. क्या वे समझते हैं कि हम जो
सहायता कर रहे हैं उन की धन तथा
संतान से।

أَيَسْمَعُونَ أَنَسَايُكُم بِهٖ مِنْ قَالٍ قَعِيْنٍ

56. शीघ्रता कर रहे हैं उन के लिये

فَكَرِهْنَا لَهُمْ أَنْ يَكْتُمُوا إِلَٰهَهُمْ فَلَا يُسْمِعُونَ

1 इस से अभिप्राय बैतुल मक़दस है।

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: अज़्ज़ाह स्वच्छ है और स्वच्छ ही को
स्वीकार करता है। और इमान वालों को वही आदेश दिया है जो रसूलों को दिया
है फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (संक्षिप्त अनुवाद, मुस्लिम 1015)

3 इन आयतों में कहा गया है कि सब रसूलों ने यही शिक्षा दी है कि स्वच्छ पवित्र
चीजें खाओ और सदाचार करो। तुम्हारा पालनहार एक है और तुम सभी का
धर्म एक है। परन्तु लोगों ने धर्म में विभेद कर के बहुत से सम्प्रदाय बना लिये
और अब प्रत्येक सम्प्रदाय अपने विश्वास तथा कर्म में मग्न है भले ही वह सत्य
से दूर हो।

भलाईयों में? बल्कि वह समझने नहीं है।¹

57. वास्तव में जो अपने पालनहार के भय से डरने वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

58. और जो अपने पालनहार की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

59. और जो अपने पालनहार का साझी नहीं बनाते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُكْفِرُونَ ﴿٥٩﴾

60. और जो करते हैं जो कुछ भी करें, और उन के दिल काँपते रहते हैं कि वे अपने पालनहार की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

وَالَّذِينَ يَتُؤُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجَلَةٌ لَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَا يُفْعِلُونَ ﴿٦٠﴾

61. वही शीघ्रता कर रहे हैं भलाईयों में, तथा वही उन के लिये अग्रसर हैं।

أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْحَسَنَاتِ وَهُمْ لَهَا صِبْغُونَ ﴿٦١﴾

62. और हम बोज़ नहीं रखते किसी प्राणी पर परन्तु उस के सामर्थ्य के अनुसार। तथा हमारे पास एक पुस्तक है जो सत्य बोलती है और उन पर अत्याचार नहीं किया² जायेगा।

وَلَا يَحْمِلُ فَرْثَ إِلَّا بِأُحْصَاهَا وَلَنَسْأَلَنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ بِالنَّفْسِ وَهُمْ لَا يُكْفِرُونَ ﴿٦٢﴾

63. बल्कि उन के दिल अचेन हैं इस से, तथा उन के बहुत से कर्म हैं इस के सिवा जिसे वे करने वाले हैं।

بَلْ قُلُوبُهُمْ غَيْرُ قَوِّينَ هَٰذَا أَوْفَرُّ أَعْمَالٍ قِيْنٌ دُونَ ذَٰلِكَ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ لُحُوفٌ ﴿٦٣﴾

64. यहाँ तक कि जब हम पकड़ लेंगे उन के सुखियों को यातना में, तो वे विलाप करने लगेंगे।

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا آلَتَهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْتَرُونَ ﴿٦٤﴾

65. आज विलाप न करो, निश्चदेह तुम हमारी ओर से सहायता नहीं दिये जाओगे।

لَا تَقْنَطُوا يَوْمَ يُنْفَخُ الْأَشْجَارُ ﴿٦٥﴾

1 अर्थात् यह कि हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।

2 अर्थान् प्रत्येक का कर्म लेख है जिस के अनुसार ही उसे बदला दिया जायेगा।

66. मेरी आयने तुम्हें मुनायी जाती रही तो तुम अपनी एंडियों के बल फिरते रहे।
67. अभिमान करते हुये, उसे कथा बना कर बकवास करते रहे।
68. क्या उन्होंने ने इस कथन (कुर्आन) पर विचार नहीं किया, अथवा इन के पास वह¹ आ गया जो उन के पूर्वजों के पास नहीं आया?
69. अथवा वह अपने रसूल से परिचित नहीं हुये इस लिये वह उस का इन्कार कर रहे⁽²⁾ है?
70. अथवा वे कहते हैं कि वह पागलपन है? बल्कि वह तो उन के पास सत्य लाये हैं, और उन में से अधिकतर को सत्य अप्रिय है।
71. और यदि अनुसरण करने लगे सत्य उन की मनमानी का, तो अस्त-व्यस्त हो जाये आकाश तथा धरती और जो उन के बीच है, बल्कि हम ने दे दी है उन को उन की शिक्षा, फिर (भी) वे अपनी शिक्षा से विमुख हो रहे हैं।
72. (हे नबी!) क्या आप उन से कुछ (धन) माँग रहे हैं? आप के लिये तो आप के पालनहार का दिया हुआ ही उत्तम है। और वह सर्वोत्तम जीविका देने वाला है।

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي عَلَيْكُمْ مُتْلِفَةً عَلَىٰ أَعْيُنِكُمْ
مُتَكَيِّفُونَ ﴿٦٦﴾

مُسْتَكْبِرِينَ تَكِبُ بِهِ السُّرُورَ فَخَبَّرُونَ ﴿٦٧﴾

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

أَمْ لَهُمْ قَوْلُ مَوْعِدَةٍ فَلَمَّا أَتَاهُمْ مُّسْكِرُونَ ﴿٦٩﴾

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ وَكَانُوا
مُتَكَيِّفُونَ ﴿٧٠﴾

وَلَوْ أَنَّهُم لَهَادُوا إِلَىٰ سُعْدَاتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَمِنْ مِثْلِ هَٰؤُلَاءِ لَآتَيْنَاهُم مِّنْ لَّدُنَّا عَنْ وَرْءِهِمْ
مُغْرَضُونَ ﴿٧١﴾

أَمْ سَأَلْتَهُم خَرْجًا فَأَعْرِضُوا عَنْهُ عَيُونَُهُمْ وَمُصْرَبُهُمُ
الْأَعْيُنُ ﴿٧٢﴾

- 1 अर्थात् कुर्आन तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये। इस पर तो इन्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना और इसे स्वीकार करना चाहिये।
- 2 इस में चेतावनी है कि वह अपने रसूल की सत्यता - अमानत तथा उन के चरित्र और वंश से भली भाँति अवगत हैं।

73. निश्चय आप तो उन्हें सुपथ की ओर बुला रहे हैं।

وَأَنَّكَ لَتَتَّبَعْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

74. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते वे सुपथ से कतराने वाले हैं।

فَإِنَّ الْكَاذِبِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَلَىٰ الْوَعْدِ
لَكَيْتُونَ ۝

75. और यदि हम उन पर दया कर दें और दूर कर दें जो दुख उन के साथ है¹ तो वह अपने कुकर्मों में और अधिक बहकते जायेंगे।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ظُلُمَاتِهِمْ
طَغَوْا بِمِيعَاتِهِمْ ۝

76. और हम ने उन्हें यातना में ग्रस्त (भी) किया तो अपने पालनहार के समक्ष नहीं झुके और न विनय करते हैं।

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَتُوا لَنَا بِهِمْ
وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ۝

77. यहाँ तक कि जब हम उन पर खोल देंगे कड़ी यातना के² द्वार, तो सहसा वह उस समय निराश हो जायेंगे।³

حَتَّىٰ رَدَّ الْقَضَاءُ عَلَيْهِمْ وَأَنزَلْنَا لَهُمْ
رِزْقَهُمْ مِنْ ظُلُمَاتِهِمْ ۝

78. वही है जिस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये कान तथा आँखें और दिल⁴ (फिर भी) तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ
قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

79. और उसी ने तुम्हें धरती में फैलाया है, और उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ۝

80. तथा वही है जो जीवन देता और मारता है, और उसी के अधिकार में है रात्रि तथा दिन का फेर बदल तो क्या तुम समझ नहीं रखते?

وَهُوَ الَّذِي يُبْرِئُكُم مِّنَ الْيَمِينِ وَكَرَهُ الْخِلَافَ اثْنَلِ
وَالْهَدَرَ أَقَلَّ تَعْمَلُونَ ۝

1 इस से अभिप्राय वह अकाल है जो मक्का के काफिरों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा के कारण आ पड़ा था। (देखिये बुखारी: 4823)

2 कड़ी यातना से अभिप्राय परलोक की यातना है।

3 अर्थात् प्रत्येक भलाई से।

4 सत्य को सुनने देखने और उस पर विचार कर के उसे स्वीकार करने के लिये।

81. बल्कि उन्होंने ने वही बात कही जो अगलो ने कही।

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالِ الْأَوَّلُونَ ۝

82. उन्होंने ने कहा क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी तथा हाडियाँ हो जायेंगे, तो क्या हम फिर अवश्य जीवित किये जायेंगे?

قَالُوا إِنْ أُرْسِلُوا إِلَىٰ مِثْلَ نَارِ الْأَوَّلِ لَيَقُولُنَّ ۝

83. हम को तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले यही वचन दिया जा चुका है यह तो बस अगलों की कल्पित कथायें हैं।

لَقَدْ نَعَّمْنَا عَلَىٰ آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

84. (हे नबी!) उन से कहो किम की है धरती और जो उस में है, यदि तुम जानते हो?

قُلْ لَيْسَ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِلَّا كَمَا تَقُولُونَ ۝

85. वे कहेंगे कि अल्लाह की। आप कहिये: फिर तुम क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करने?

سَيَقُولُونَ فَلَوْ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

86. आप पूछिये कि कौन है सातों आकाशों का स्वामी तथा महा सिंहासन का स्वामी?

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

87. वे कहेंगे अल्लाह ही। आप कहिये फिर तुम उस से डरते क्यों नहीं हो?

سَيَقُولُونَ فَلَوْ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

88. आप उन से कहिये कि किम के हाथ में है प्रत्येक वस्तु का अधिकार? और वह शरण देना है और उसे कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम जान रखते हो?

قُلْ مَنْ يَدْبِرُ الْأُمُورَ كُلَّهَا وَمَنْ يُجِيرُ الْوَالِدِينَ وَالْأَسْفَارَ ۝

89. वे अवश्य कहेंगे कि (यह सब गुण) अल्लाह ही के हैं। आप कहिये फिर तुम पर कहां से जादू¹ हो जाता है?

سَيَقُولُونَ فَلَوْ قُلْ فَأَنَّى تُسْعَفُونَ ۝

1 अर्थान् जब यह मानते हो कि सब अधिकार अल्लाह के हाथ में है और शरण भी

90. बल्कि हम ने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है और निश्चय यही मिथ्यावादी है।

91. अब्राह ने नहीं बनायी है अपनी कोई संतान और न उस के साथ कोई अन्य पूज्य है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य अलग हो जाता अपनी उत्पत्ति को ले कर, और एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ता। पवित्र है अब्राह उन बातों से जो यह लोग बनाते हैं।

92. वह परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्यक्ष (खुले) का ज्ञानी है, तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे करते हैं।

93. (हे नबी!) आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस की उन्हें धमकी दी जा रही है।

94. तो मेरे पालनहार! मुझे इन अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।

95. तथा वास्तव में हम आप को उसे दिखाने पर जिस की उन्हें धमकी दे रहे हैं अवश्य सामर्थ्यवान हैं।

96. (हे नबी!) आप दूर करें उस (व्यवहार) से जो उत्तम हो बुगई को। हम भली भाँति अवगत हैं उन बातों से जो वे बनाते हैं।

97. तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से।

بَلْ أَتَيْنَاهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَكَذِبُونَ ﴿٩٠﴾

مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذْ أَتَاهُ كُلُّ الْإِلَهِ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩١﴾

عَبْدُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَمَلَّعَ يَتَرَكُونَ ﴿٩٢﴾

قُلْ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الْغَافِلِينَ ﴿٩٣﴾

وَمَا عَلَى أَنْ تُبَيِّنَ مَا وَعَدُوهُمْ فَاقْبُرُونِي ﴿٩٤﴾

إِذْ كُنَّا بِالْأَيْمَنِ مِنْ أَوْسَى الثَّيْنَةِ نَكُنُ مَعَهُمْ يَبْصُرُونَ ﴿٩٥﴾

وَقُلْ رَبِّ اعْوِذْ بَكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ﴿٩٦﴾

वही देता है तो फिर उस के साझी कहां से आ गये और उन्हें कहां से अधिकार मिल गया?

98. तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ, मेरे पालनहार! कि वह मेरे पास आये।

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يُخْضِرُونِي

99. यहाँ तक कि जब उन में किसी की मौत आने लगे तो कहना है: मेरे पालनहार! मुझे (संसार में) वापिस कर दो।¹

حَتَّىٰ يَدَاجَأَ لِحَدِّهِمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِي

100. सभवतः मैं अच्छा कर्म करूँगा, उस (संसार में) जिसे छोड़ आया हूँ कदापि ऐसा नहीं होगा। वह कंवल एक कथन है जिसे वह कह रहा² है। और उन के पीछे एक आड़³ है उन के पुनः जीवन किये जाने के दिन तक।

لَعَلَّيْ أَعْمَلُ صَالِحًا دِيمَا تَوَكَّلْتُ عَلَىٰ رَبِّكَ لَا يَكْفِيهِمْ قَوْلُهَا وَلَئِنْ قِيلَ لَهُمْ ارْجِعُوا إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ

101. तो जब नरमिंघा में फूँक दिया जायेगा, तो कोई संबंध नहीं होगा उन के बीच उम⁴ दिन और न वे एक दूसरे को पूछेंगे।

وَإِذَا النُّفُوسُ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَبَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ

102. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होने वाले हैं।

لَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ قَالُوا لَيْسَ لَهُ الْفَعْلُونَ

103. और जिस के पलड़े हल्के होंगे, तो उन्होंने ने ही स्वयं को क्षतिग्रस्त कर लिया जो नरक में मदावासी होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ قَالُوا لِيَ الْفَعْلُ الْخَيْرُ قَالُوا لَيْسَ لَهُمْ الْفَعْلُ الْخَيْرُ خَلِدُوا فِي جَهَنَّمَ خَالِدِينَ

104. झुलस देगी उन के चेहरों को अग्नि तथा उस में उन के जबड़े (झुलस कर) बाहर निकले होंगे।

تَلْفَحُهُمْ وُجُوهُهُمْ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ

1 यहाँ मरण के समय काफिर की दशा को बनाया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् उस के कथन का कोई प्रभाव नहीं होगा।

3 आड़ जिस के लिये वर्जख शब्द आया है, उस अवधि का नाम है जो मृत्यु तथा प्रलय के बीच होगी।

4 अर्थात् प्रलय के दिन उम दिन भय के कारण सब को अपनी चिन्ता होगी।

105. (उन से कहा जायेगा): क्या जब मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती थीं तो तुम उन को झुठलाने नहीं थे?

أَلَمْ تَكُنْ إِتَيْنِ سُبُلٍ عَلَى كُنْزٍ قُلُوبُهُمْ مُّسْكِنٌ ۖ
فَكَذَّبُوهُ ۚ

106. वे कहेंगे: हमारे पालनहार! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया¹¹, और वास्तव में हम कुपथ थे।

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا
ضَالِّينَ ۚ

107. हमारे पालनहार! हमें इस से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करें तो निश्चय हम अन्याचारी होंगे।

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۚ

108. वह (अब्राह) कहेगा: इसी में अपमानित हो कर पड़े रहो, और मुझ से बात न करो।

قَالَ الْمُسْتَضَرِّبُ وَلَا تَكَلُمُونِي ۚ

109. मेरे भक्तों में एक समुदाय था जो कहता था कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये। तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, और तू सब दयावानों से उत्तम है।

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا
أَمَّا مَا لَنَا مِنَ الْقُرْآنِ وَأَرْسِلْنَا آيَاتٍ خَيْرَ
الرَّاسِخِينَ ۚ

110. तो तुम ने उन का उपहास किया, यहाँ तक कि तुम को मेरी याद भुला दी और तुम उन पर हँसते रहे।

فَالْتَحَدُّثُوهُمْ بِخَيْرِ آيَاتِنَا فَتَحَدَّثُوا بِهِ
وَتَسْتَعْجِلُونَ ۚ

111. मैं ने उन को आज बदला (प्रतिफल) दे दिया है उन के धैर्य का, वास्तव में वही सफल हैं।

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا ۚ إِنَّهُمْ
كَانُوا قَوْمًا فَاعِلِينَ ۚ

112. (अब्राह) उन से कहेगा: तुम धरती में कितने वर्ष रहे?

قُلْ كَمْ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدُ سِنِينَ ۚ

113. वे कहेंगे: हम एक दिन या दिन के कुछ भाग रहे। तो गणना करने वालों से पूछ लो।

قَالُوا الْيَوْمَ نَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْأَلُ
الْعَادِينَ ۚ

1 अर्थात् अपने दुर्भाग्य के कारण हम ने नेरी आयतों को अस्वीकार कर दिया।

114. वह कहेगा: तुम नहीं रहे परन्तु बहुत कम! क्या ही अच्छा होना कि तुम ने (पहले ही) जान लिया¹ होता।

قُلْ إِنْ يُهْمُّهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّمَّا تَكْفُرُونَ
تَعْلَمُونَ ۝

115. क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये² जाओगे?

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ۝

116. तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति। नहीं है कोई सच्चा पूज्य परन्तु वही महिमावान अर्श (सिंहासन) का स्वामी।

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝

117. और जो (भी) पुकारेगा अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को जिस के लिये उस के पास कोई प्रमाण नहीं, तो उस का हिसाब केवल उस के पालनहार के पास है, वास्तव में क़ाफिर सफल नहीं³ होंगे।

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الْكَفْرَانُ ۝

118. तथा आप प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! तू क्षमा कर तथा दया कर और तू ही सब दयावानों से उत्तम (दयावान) है।

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

1 आयत का भावार्थ है कि यदि तुम यह जानते कि परलोक का जीवन स्थायी है तथा संसार का आस्थायी तो आज तुम भी इमान वालों के समान अल्लाह की आज्ञा का पालन कर के सफल हो जाते, और अवज्ञा तथा दुराचार न करते।

2 अर्थात् परलोक में।

3 अर्थात् परलोक में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होगी और न मुक्ति ही मिलेगी।

सूरह नूर 24

سُورَةُ النُّورِ

सूरह नूर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदीनी है इस में 64 आयतें हैं।

- इस सूरह में व्यभिचार और उस का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है।
- मुनाफिकों को झूठे कलंक घड़ कर समाज में फैलाने पर चेतावनी दी गयी है।
- मान मर्यादा की रक्षा पर बल दिया गया है।
- अम्नाह की राह में चलने और उस के इन्कार पर लाभ और हानि का वर्णन किया गया है।
- ईमान वालों को अधिकार प्रदान करने की शुभ सूचना दी गयी है।
- धरेलू आदाब बनाये गये हैं।
- और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर करने पर बल दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. यह एक सूरह है जिसे हम ने उतारा तथा अनिवार्य किया है। और उतारी है इस में बहुत सी खुली आयतें (निशानियाँ) ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ لِّتُذَكَّرُوا ۝

2. व्यभिचारिणी तथा¹ व्यभिचारी दोनों

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

1. व्यभिचार से संबंधित आरंभिक आदेश सूरह निमा, आयत 15 में आ चुका है। अब यहाँ निश्चित रूप से उस का दण्ड नियत कर दिया गया है। आयत में वर्णित सौ कांडे दण्ड अविवाहित व्यभिचारी तथा व्यभिचारिणी के लिये हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अविवाहित व्यभिचारी को सौ कोड़े मारने का और एक वर्ष देश से निकाल देने का आदेश देते थे। (सहीह बुखारी, 6831)

में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो, और तुम्हें उन दोनों पर कोई तरस न आये अल्लाह के धर्म के विषय¹ में यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान (विश्वास) रखने हो। और चाहिये कि उन के दण्ड के समय उपस्थित रहे ईमान वालों का एक² गिराह।

3. व्यभिचारी³ नहीं विवाह करना परन्तु व्यभिचारिणी अथवा मिश्रणवादिनी से, और व्यभिचारिणी नहीं विवाह करनी परन्तु व्यभिचारी अथवा मिश्रणवादी से और इसे हुराम (अवैध) कर दिया गया है ईमान वालों पर।

مِائَةِ جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْ بَعِثَرِاقَةٍ فِي ذَيْنِ
الَّذِينَ كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَلَيْسَ هَذَا عَدَابُهُمَا ظِلْفَةً مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ①

الزَّانِي لَا يَنْكِحُ الْأَزْوَاجَ أَوْ شُرَكَاءَ
الزَّانِيَةِ لَا يَنْكِحُهُمُ الْأَزْوَاجُ أَوْ شُرَكَاءُ
وَعُذْرٌ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ②

किन्तु यदि दोनों में से कोई विवाहित है तो उस के लिये रज्म (पत्थरों से मार डालने) का दण्ड है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मुझ से (शिक्षा) ले लो मुझ से (शिक्षा) ले लो अल्लाह ने उन के लिये राह बना दी। अविवाहित के लिये सौ कोड़े और विवाहित के लिये रज्म है। (सहीह मुस्लिम 1690, अबूदाऊद 4418) इत्यादि।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने युग में रज्म का दण्ड दिया जिस के सहीह हदीस में कई उदाहरण हैं। और ख़ुलफ़ाये राशिदीन के युग में भी यही दण्ड दिया गया। और इस पर मुस्लिम समुदाय का इज्मा (मतैक्य) है।

व्यभिचार ऐसा घोर पाप है जिस से परिवारिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है पति पत्नी को एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह जाना। और यदि कोई शिशु जन्म ले तो उस के पालन पोषण की भीषण समस्या सामने आती है। इसी लिये इस्लाम ने इस का घोर दण्ड रखा है ताकि समाज और समाज वालों को शान्त और सुरक्षित रखा जाये।

- 1 अर्थात् दया भाव के कारण दण्ड देने से न रुक जाओ।
- 2 ताकि लोग दण्ड से शिक्षा लें।
- 3 आयत का अर्थ यह है कि साधारणतः कुकर्म विवाह के लिये अपने ही जैसों की ओर आकर्षित होते हैं। अतः व्यभिचारिणी व्यभिचारी से ही विवाह करने में रुचि रखती है। इस में ईमान वालों का सनर्क किया गया है कि जिस प्रकार व्यभिचार महा पाप है उसी प्रकार व्यभिचारियों के साथ विवाह सबन्ध स्थापित करना भी निषेध है। कुछ भाष्यकारों ने यहाँ विवाह का अर्थ व्यभिचार लिया है।

4. तथा जो आरोप¹ लगाये व्यभिचार का सतवती स्त्रियों को, फिर न लाये चार साक्षी तो उन्हें अस्मी कोड़े मारो, और न स्वीकार करो उन का साक्ष्य कभी भी, और वह स्वयं अवैज्ञाकारी है।

وَالَّذِينَ يَزْمُونَ الْبَغْضَاءَ ثُمَّ كُفُّوا رَأْسَهُمْ
بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَمْلِكُوا لَهَا وَالشَّاهِدُونَ
لَمْ يَمْلِكُوا لَهُمْ فَشَاءَ اللَّهُ بِهَا مَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ٤

5. परन्तु जिन्होंने क्षमा मांग ली इस के पश्चान् तथा अपना सुधार कर लिया तो निमदेह अब्बाह अर्थात् क्षमी दयावान्² है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٥

6. और जो व्यभिचार का आरोप लगाये अपनी पत्नियों पर, और उन के साक्षी न हों³ परन्तु वह स्वयं, तो चार साक्ष्य अब्बाह की शपथ लेकर देना है कि वास्तव में वह सच्चा है।⁴

وَالَّذِينَ يَزْمُونَ اَزْوَاجَهُمْ وَكُنَّ لَهُمْ
شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحْسَنُ
فَإِنْ كُنَّ ثَلَاثُ أَهْلٍ مِنَ الشَّاهِدِينَ ٦

7. और पांचवी बार यह कि उस पर अब्बाह की धिक्कार है यदि वह झूठा हो।

وَلَعَلَّامَةٌ أَن لَعَنَتِ الْوُحُوشُ إِنْ كَانُوا مِنَ
الْكَافِرِينَ ٧

1 इस में किसी पवित्र पुरुष या स्त्री पर व्यभिचार का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है कि जो पुरुष अथवा स्त्री किसी पर कलंक लगाये तो वह चार ऐसे साक्षी लाये जिन्होंने उन को व्यभिचार करने अपनी आँखों से देखा हो। और यदि वह प्रमाण स्वरूप चार साक्षी न लाये तो उस के तीन आदेश हैं-

(क) उसे अस्मी कोड़े लगाये जायें।

(ख) उस का साक्ष्य कभी स्वीकार न किया जाये।

(ग) वह अब्बाह तथा लोगों के समक्ष दुराचारी है।

2 सभी विद्वानों का मतैक्य है कि क्षमा याचना से उसे दण्ड (अस्मी कोड़े) से क्षमा नहीं मिलेगी। बल्कि क्षमा के पश्चान् वह भी अवैज्ञाकारी नहीं रह जायेगा, तथा उस का साक्ष्य स्वीकार किया जायेगा। अधिकतर विद्वानों का यही विचार है

3 अर्थात् चार साक्षी

4 अर्थात् आरोप लगाने में।

8. और स्त्री से दण्ड¹ इस प्रकार दूर होगा कि वह चार बार साक्ष्य दे अल्लाह की शपथ ले कर कि निसंदेह वह (पति) मिथ्यावादियों में से है।

وَيَذَرُ عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ
شَهَدَاتٍ بِأَلْفِرَاقِهِ لَيْسَ الْكَافِرِينَ

9. और पौचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार हो यदि वह सच्चा² हो।

وَالْعَامَّةُ أَنْ غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ
الضَّالِّينَ

10. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती, और यह कि अल्लाह अति क्षमी तन्वज़ है (तो समस्या बड़ जाती)।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ تَوَّابٌ
حَكِيمٌ

11. वास्तव³ में जो कलंक घड़ लाये है

رَنَ الْبَيِّنَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ

1 अर्थात् व्यभिचार का दण्ड।

2 शरीअत की परिभाषा में इसे 'लिआन' कहा जाता है। यह लिआन न्यायालय में अथवा न्यायालय के अधिकारी के समक्ष होना चाहिये। लिआन की मांग पुरुष की ओर से भी हो सकती है और स्त्री की ओर से भी। लिआन के पश्चात् दोनों सदा के लिये अलग हो जायेंगे। लिआन का अर्थ होता है धिक्कार। और इस में पति और पत्नी दोनों अपने को मिथ्यावादी होने की अवस्था में धिक्कार का पात्र स्वीकार करते हैं। यदि पति अपनी पत्नी के गर्भ का इन्कार करे तब भी लिआन होता है। (बुखारी: 4746, 4747, 4748)

3 यहाँ से आयत 26 तक उस मिथ्यारोपण का वर्णन किया गया है जो मुनाफिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) पर बनी मुसतलिक के युद्ध से वापसी के समय लगाया था। इस युद्ध से वापसी के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक स्थान पर पड़ाव किया। अभी कुछ रात रह गयी थी कि यात्रा की तय्यारी होने लगी। उस समय आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) उस स्थान से दूर शौच के लिये गई और उन का हार टूट कर गिर गया। वह उस की खोज में रह गयी। सेवकों ने उन की पालकी को सवारी पर यह समझ कर लाद दिया कि वह उस में होंगी। वह आई तो वही लेट गयी कि काँइ अवश्य खोजने आयेगा धोड़ी देर में सफवान पुत्र मोअत्तल (रजियल्लाहु अन्हु) जो यात्रियों के पीछे उन की गिरी पड़ी चीजों को संभालने का काम करते थे वहाँ आ गये और इन्ना लिज्जाहु पड़ी, जिस से आप जाग गयी। और उन को पहचान लिया। क्यों कि उन्होंने पर्दे का आदेश आने से पहले उन्हें देखा था। उन्होंने आप

तुम्हारे ही भीतर का एक गिरोह है, तुम उसे बुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिये अच्छा¹ है। उन में से प्रत्येक के लिये जितना भाग लिया उनना पाप है और जिस ने भार लिया उस के बड़े भाग² का तो उस के लिये बड़ी यातना है।

لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُم بَلْ أَنْتُمْ عَنْهُ مُرْتَدِّينَ
وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلْ لِّوَالِدَيْهِ إِتْقَانًا وَالْأَقْرَبُونَ وَلَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ
يَوْمًا
وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلْ لِّوَالِدَيْهِ إِتْقَانًا وَالْأَقْرَبُونَ وَلَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ
يَوْمًا

12. क्यों जब उसे इमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों ने सुना तो अपने आप में अच्छा विचार नहीं किया तथा कहा कि यह खुला आरोप है।

لَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ يَوْمًا
وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلْ لِّوَالِدَيْهِ إِتْقَانًا وَالْأَقْرَبُونَ وَلَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ
يَوْمًا

13. वे क्यों नहीं लाये इस पर चार साक्षी? (जब साक्षी नहीं लाये) तो निसदेह अब्राह के समीप वही झूठे है।

لَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ يَوْمًا
وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلْ لِّوَالِدَيْهِ إِتْقَانًا وَالْأَقْرَبُونَ وَلَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ
يَوْمًا

14. और यदि तुम पर अब्राह का अनुग्रह और दया न होती लोक तथा परलोक में तो जिन बातों में तुम पड़ गये उन के बदले तुम पर कड़ी यातना आ जाती।

لَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ يَوْمًا
وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلْ لِّوَالِدَيْهِ إِتْقَانًا وَالْأَقْرَبُونَ وَلَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ
يَوْمًا

15. जब कि (बिना सोचे) तुम अपनी जुबानों से इसे लेने लगे, और अपने मुखों से वह बात कहने लगे जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न था, तथा तुम इसे

لَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ يَوْمًا
وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلْ لِّوَالِدَيْهِ إِتْقَانًا وَالْأَقْرَبُونَ وَلَوْلَا إِتْقَانُكَ لَئِيْلًا كُنْتُمْ
يَوْمًا

को अपने ऊँट पर सवार किया और स्वयं पैदल चन कर यात्रियों से जा मिले द्विधावादियों ने इस अवसर का उचित जाना और उन के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा कि यह एकान्त अकारण नहीं था। और आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) को सफवान के साथ कर्त्ताकित कर दिया। और उस के पड़ोश में कुछ सच्चे मुसलमान भी आ गये। इस का पूरा विवरण हदीस में मिलेगा। (देखिये सहीह बुखारी, 4750)

1 अर्थ यह है कि इस दुख पर तुम्हें प्रतिफल मिलेगा।

2 इस से तात्पर्य अब्दुल्लाह बिन उबय्य द्विधावादियों का मुखिया है।

सरल समझ रहे थे, जब कि अब्राह
के समीप वह बहुत बड़ी बात थी।

16. और क्यों नहीं जब तुम ने इसे सुना,
तो कह दिया कि हमारे लिये योग्य नहीं
कि यह बात बोलो हे अब्राह! तू पवित्र
है! यह तो बहुत बड़ा आरोप है।

17. अब्राह तुम्हें शिक्षा देता है कि पुनः
कभी इस जैसी बात न कहना। यदि
तुम ईमान वाले हो।

18. और अब्राह उजागर कर रहा है
तुम्हारे लिये आयतों (आदेशों) को।
तथा अब्राह सर्वज्ञ तन्वज है।

19. जो लोग चाहते हैं कि उन में
अश्लीलता¹ फैले जो ईमान लाये हैं,
तो उन के लिये दुःखदायी यातना है
लोक तथा परलोक में, तथा अब्राह
जानता² है और तुम नहीं जानते।

20. और यदि तुम पर अब्राह का अनुग्रह
तथा उस की दया न होती (तो तुम
पर यातना आ जाती)। और वास्तव
में अब्राह अति करुणामय दयावान् है।

21. हे ईमान वाले! शैतान के पदचिन्हों
पर न चलो, और जो उस के
पदचिन्हों पर चलेगा, तो वह
अश्लील कार्य तथा बुराई का ही
आदेश देगा और यदि तुम पर
अब्राह का अनुग्रह और उस की दया

وَلَوْلَا إِدْرَاسُهُمْ فَلَهُمْ تَالُوتُ لَمَّا كُنْتُمْ
بِهِمْ أَتَيْتُمْ هَٰذَا نَهْرًا عَظِيمًا

يُؤْتِكُمُوهُ إِنَّ تَعَوُّذَ الْوَيْلَةِ الْإِنَّمَا أَنْتُمْ
مُؤْمِنُونَ

يَبْلُوَنَ اللَّهُ لَكُمْ أَلْسِنَتَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَبِيرٌ

لَهُ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ
أَسَاءُوا إِلَيْهِمْ عَنَّا إِلَى اللَّهِ ذُنُوبًا وَإِلَى الْإِنسَانِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ
زَوَّافٌ رَّحِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ وَمَنْ
تَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْعُرْشَاءِ
وَالنَّكَاحِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ
مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ

1 अश्लीलता व्याभिचार और व्याभिचार के निर्मूल आरोप की चर्चा दोनों को
कहा गया है।

2 उन के मिथ्यारोपण को

न होती तो तुम में से कोई पवित्र कभी नहीं होता। परन्तु अब्राह पवित्र करता है जिसे चाहे, और अब्राह सब कुछ मुनने जानने वाला है।

22. और न शपथ लें¹। तुम में से धनी और सुखी कि नहीं देंगे समीपवर्तियों तथा निर्धनों को और जो हिजरत कर गये अब्राह की राह में, और चाहिये कि क्षमा कर दें तथा जाने दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अब्राह तुम्हें क्षमा कर दे, और अब्राह अति क्षमी सहनशील है।

23. जो लोग आरोप लगाते हैं सतवन्ती भोली-भाली ईमान वाली स्त्रियों को, वह धिक्कार दिये गये लोक तथा परलोक में और उन्हीं के लिये बड़ी यातना है।

24. जिस दिन साक्ष्य (गवाही) देगी उन की जीभें तथा उन के हाथ और उन के पैर उन के कर्मों की।

25. उस दिन अब्राह उन को उन का पूरा न्यायपूर्वक बदला देगा, तथा वह जान लेंगे कि अब्राह ही सत्य है,

وَلَا يَأْتِيكَ أَهْلُ الْقُبُورِ مِنْكُمْ وَالشَّعَاقُ يُؤْتُوا
أُولَى الْقُرْبَىٰ وَنَسَبِكُمْ وَالْيَتَامَىٰ فِي سَبِيلِ
الْمَلِكِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَمْ تُحِبُّوا أَنْ يَغْفِرَ
اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْفَاضِلَاتِ
الَّذِينَ لَا يَأْتِيَنَّاهُنَّ وَلَا جُنْحٌ عَلَيْهِنَّ

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَىٰ أَيْدِيَهُمْ وَأَيْدِيَهُمْ وَأَيْدِيَهُمْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

يَوْمَ يَكْفُرُ لَكُمْ اللَّهُ وَمِمَّا كَانُوا يَكْفُرُونَ
إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ۝

- 1 आदरणीय मिस्तह पुत्र उमामा (रजियल्लाहु अन्हु) निर्धन और आदरणीय अबूबक्र (रजियल्लाहु अन्हु) के समीपवर्ती थे। और वह उन की सहायता किया करते थे। वह भी आदरणीय आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) के विरुद्ध आक्षेप में लिप्त हो गये थे। अतः आदरणीय आइशा के निर्दोष होने के बारे में आयने उतरने के पश्चात् आदरणीय अबूबक्र ने शपथ ली कि अब वह मिस्तह की कोई सहायता नहीं करेंगे। उसी पर वह आयत उतरी। और उन्होंने ने कहा निश्चय मैं चाहता हूँ कि अब्राह मुझे क्षमा कर दें और पुनः उन की सहायता करने लगे। (महीह बुखारी 4750)

(सच्च को) उजागर करने वाला।

26. अपवित्र स्त्रियाँ अपवित्र पुरुषों के लिये हैं तथा अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिये, और पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरुषों के लिये हैं, तथा पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के लिये। वही निर्दोष है उन बातों से जो वह कहते हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

الطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ أُولَئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَزُكْرٌ كَرِيمٌ

27. हे ईमान वाले! मत प्रवेश करो किसी घर में अपने घरों के सिवा यहाँ तक कि अनुमति ले लो, और उन के वासियों को सलाम कर लो यह तुम्हारे लिये उत्तम है ताकि तुम याद रखो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْأَلُوا أَهْلَهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ

28. और यदि उन में किसी को न पाओ तो उन में प्रवेश न करो, यहाँ तक कि तुम्हें अनुमति दे दी जाये, और यदि तुम से कहा जाये कि वापिस हो जाओ तो वापिस हो जाओ, यह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र है, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो भली-भाँति जानने वाला है।

إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ فَإِنَّ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ فَلَا تَدْخُلُوا عَلَيْهَا حَتَّى يَخْرُجَ إِلَيْكُمْ وَلَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ فَإِنَّ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ فَلَا تَدْخُلُوا عَلَيْهَا حَتَّى يَخْرُجَ إِلَيْكُمْ وَلَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

29. तुम पर कोई दोष नहीं है कि प्रवेश

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ

1 इस में यह संकेत है कि जिन पुरुषों तथा स्त्रियों ने आदरणीय आदृशा (रजियल्लाहु अन्हा) पर आराप लगाया वह मन के मलीन तथा अपवित्र हैं।

2 मूरह के आरंभ में यह आदेश दिये गये थे कि समाज में कोई बुराई हो जाये तो उस का निवारण कैसे किया जाये? अब वह आदेश दिये जा रहे हैं जिन से समाज में बुराइयों को जन्म लेने ही से रोक दिया जाये।

3 हदीस में इस का नियम यह बताया गया है कि (द्वार पर दायें या बायें खड़े हो कर) सलाम करो। फिर कहो कि क्या भीतर आ जाऊँ? ऐसे तीन बार करो, और अनुमति न मिलने पर वापिस हो जाओ। (बुखारी, 6245, मुस्लिम 2153)

दास दासियों अथवा ऐसे आधीन¹
पुरुषों के लिये जो किसी और प्रकार
का प्रयोजन न रखते हों, अथवा उन
बच्चों के लिये जो स्त्रियों की गुप्त
बातें न जानते हों और अपन पैर
(धरती पर) मारती हुयी न चले कि
उस का ज्ञान हो जाये जो शोभा उन्हों
ने छुपा रखी है। और तुम सब मिल
कर अल्लाह से क्षमा माँगो, हे इंसान
बालो! ताकि तुम सफल हो जाओ।

32. तथा तुम विवाह कर दो² अपनों में
से अविवाहित पुरुषों तथा स्त्रियों का,
और अपने सदाचारी दासों और अपनी
दासियों का, यदि वह निर्धन होंगे तो
अल्लाह उन्हें धनी बना देगा अपने
अनुग्रह से, और अल्लाह उदार सर्वज्ञ है।

33. और उन को पवित्र रहना चाहिये जो
विवाह करने का सामर्थ्य नहीं रखते,
यहाँ तक कि उन को धनी कर दे
अल्लाह अपने अनुग्रह से। तथा जो
स्वाधीनता लेख की माँग करें तुम्हारे
दास-दासियों में से, तो तुम उन
को लिख दो यदि तुम उन में कुछ
भलाई जानो³। और उन्हें अल्लाह के

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْآيَاتِ وَكَانُوا الصَّادِقِينَ مِنَ جِهَادِهِمْ
وَأَسْلَمُوا لِرَبِّهِمْ فَكَانُوا الْمُفْرَاقِينَ مِنْهُمْ مِنْ قَوْلِهِ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

وَلَيْسَتِ الْمَوَدَّةُ لِلَّذِينَ لَا يَهْدُونَ بِمَا جَاءَ عَلَى
يُحْيِيهِمُ اللَّهُ مِنْ قَوْلِهِ وَالَّذِينَ يَبْتِغُونَ الْكَسْبَ
وَمَا لَكُمُ لِمَا تَكْفُرُونَ بِهِمْ لَبَّاسًا عَنْهُمْ
خَيْرٌ لَكُمْ وَأَوْفَرُ مِنْ مَّا لِيَ اللَّهِ الَّذِينَ أَشْكُرُوا لَا
تَكْفُرُوا قَبْلَهُمْ مَلِ الْبَغَاءُ لِمَنْ آتَى مِنْ عَسَاكِرِ الْجَبَرِ
مَوْسَى السِّينَى الَّذِينَ آمَنُوا مِنْ يَكْفُرُهُمْ وَإِنَّ اللَّهَ
مِنْ الْغَنِيِّ الْكَرِيمِ ۝

- 1 अर्थात् जो आधीन होने के कारण घर की महिलाओं के साथ कोड़ अनुचित
इच्छा का साहस न कर सकेंगे। कुछ ने इस का अर्थ नपुंसक लिया है (इब्ने
कसीर) इस में घर के भीतर उन पर शोभा के प्रदर्शन से रोका गया है जिन
से विवाह हो सकना है
- 2 विवाह के विषय में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है: "जो मेरी
सुन्नत से विमुख होगा वह मुझ से नहीं है। (बुखारी 5063 तथा मुस्लिम 1020)
- 3 इस्लाम ने दास-दासियों की स्वाधीनता के जो साधन बनाये हैं उन में यह भी है
कि वह कुछ धनराशि देकर स्वाधीनता लेख की माँग करें तो यदि उन में इस

उस माल में से दो जो उस ने तुम्हें प्रदान किया है, तथा बाध्य न करो अपनी दामियों को व्यभिचार पर जब वे पवित्र रहना चाहती हैं। ताकि तुम संसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करो। और जो उन्हें बाध्य करेगा, तो अल्लाह उन के बाध्य किये जाने के पश्चात्¹ अति क्षमी दयावान् है।

34. तथा हम ने तुम्हारी ओर खुन्ती आयतें उतारी हैं और उन का उदाहरण जो तुम से पहले गुजर गये तथा आज्ञाकारियों के लिये शिक्षा।

35. अल्लाह आकाशों तथा धरती का² प्रकाश है, उस के प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताखा हो जिस में दीप हो, दीप कांच के झाड़ में हो, झाड़ मोती जैसे चमकने तारे के

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ مُّبِينَاتٍ وَمَلَائِكًا
الَّذِينَ خَلَقُوا مِنْ قَبْلِكَ وَمَوْعِظَةً لِّلشَّاكِرِينَ ۝

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مِثْلُ نُورٍ يُوقَدُ
بِشَجَرَةٍ زَيْتُونَةٍ تَحْتَ الْمَرْجَةِ
كَأَنَّمَا لَوَّحَتْ لَيْلٌ يُّوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبَرَكَةٍ
رَّيُّونَ أَلا شَرُّ مِثْلَةٍ وَلَا تُعْزِيهِ يُكَذِّبُهَا فَعِزَّ

धनराशि को चुकाने की योग्यता हो तो आयत में बल दिया गया है कि उन को स्वाधीनता-लेख दे दो।

- 1 अज्ञानकाल में स्वामी, धन अर्जित करने के लिये अपनी दामियों को व्यभिचार के लिये बाध्य करते थे। इस्लाम ने इस व्यवसाय को वर्जित कर दिया। हदीस में आया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुत्ते के मूल्य तथा बैश्या और ज्योतिषी की कमाई से रोक दिया। (बुखारी, 2237 मुस्लिम 1567)
- 2 अर्थात् दामी से बल पूर्वक व्यभिचार कराने का पाप स्वामी पर होगा, दामी पर नहीं।
- 3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की व्यवस्था करना और उन के दामियों को समार्ग दर्शाना है। और अल्लाह की पुस्तक और उस का मार्ग दर्शन उस का प्रकाश है। यदि उस का प्रकाश न होता तो यह विश्व अन्धरा होता। फिर कहा कि उस की ज्योति इमान वालों के दिलों में ऐसे है जैसे किसी ताखा में अति प्रकाशमान दीप रखा हो जो आगामी वर्जित गुणों से युक्त हो। पूर्वी तथा पश्चिमी न होने का अर्थ यह है कि उस पर पूरे दिन धूप पड़ती हो जिस के कारण उस का तेल अति शुद्ध तथा साफ हो।

समान हो, वह ऐसे शुभ जैतून के वृक्ष के तेल से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी, उस का तेल समीप (संभव) है कि स्वयं प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसे आग न लगे। प्रकाश पर प्रकाश है, अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।

36. (यह प्रकाश) उन घरों¹ में है अल्लाह ने जिन्हें ऊँचा करने और उन में अपने नाम की चर्चा करने का आदेश दिया है, उस की महिमा का गान करने है जिन में प्रातः तथा संध्या।

37. ऐसे लोग जिन्हें अचेत नहीं करना व्यापार तथा सौदा अल्लाह के स्मरण तथा नमाज की स्थापना करने और जकात देने से। वह उस दिन² से डरते हैं जिस में दिल तथा आँखें उलट जायेंगी।

38. ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सर्वोत्तम कर्मों का और उन्हें अधिक प्रदान करे अपने अनुग्रह से। और अल्लाह जिसे चाहे अनगिनत जीविका देता है।

39. तथा जो काफिर³ हो गये उन के

وَلَوْلَا فَتْنَةُ نَارِ نُورٍ عَلَى نُورٍ مَعْنَى النُّورِ
مَنْ يَشَاءُ وَيَقْرِبُ إِلَهُ الْأَمْثَالِ يَتْلُو
وَلَقَدْ يَكُنْ شَيْءٌ يَلِيهِ

فِي بُيُوتِ الَّذِينَ أَنْزَلْنَا الْقُرْآنَ وَيَتْلُوهُ
بَيْنَهُمْ يَتْلُوهُ بِالْعَدْوِ وَالصَّلَاةِ

بِهِمْ لَا تَلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِلَى
الضُّمُورِ وَيَتْلُوهُ الرُّكُوعَ يَوْمَ تَتَلَبَّسُ فِيهِ
الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ

يَتَجَرَّبُهُمُ اللَّهُ لِحَسَنَ مَا عَمِلُوا وَبَرِيءٌ مِنْ فَضِيلَةٍ
وَاللَّهُ يَزِلُّ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَالْعَسَاءُ لَهُمْ كَسْرٌ بِبِقِيَّةِ قَضِيَّةٍ

1 इस से तात्पर्य मस्जिदें हैं।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 आयत का अर्थ यह है कि काफिरों के कर्म, अल्लाह पर इमान न होने के कारण अल्लाह के समक्ष व्यर्थ हो जायेंगे।

कर्म उस चमकते मुराब¹ के समान है जो किसी मैदान में हो, जिसे प्यासा पानी समझता हो। परन्तु जब उस के पास आये तो कुछ न पाये, और वहाँ अल्लाह को पाये जो उस का पूरा हिमाव चुका दे, और अल्लाह शीघ्र हिमाव लेने वाला है।

الظُّمْلُ مَا آتَىٰ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ جُنْدَهُ قُوَّةً جَسَدَهُ وَرَقَّةً مَّوَدَّةً يُجَسِّدُ

40. अधवा उन अन्धकारों के समान है जो किसी गहरे सागर में हो और जिस पर तरंग छायी हो जिस के ऊपर तरंग, उस के ऊपर बादल हो, अन्धकार पर अन्धकार हो, जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख सके। और अल्लाह जिसे प्रकाश न दे उस के लिये कोई प्रकाश² नहीं।

أَوْ كُظْلُمٍ فِي بِيْعٍ لِّغِيٍّ يَنْقَعُهُ مَوَدَّةً مِّن قُوَّةٍ مَّوَدَّةً مِّن قُوَّةٍ مَّوَدَّةً مِّن قُوَّةٍ مَّوَدَّةً مِّن قُوَّةٍ مَّوَدَّةً مِّن قُوَّةٍ مَّوَدَّةً مِّن قُوَّةٍ مَّوَدَّةً مِّن قُوَّةٍ

41. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही की पवित्रता का गान कर रहे है जो आकाशों तथा धरती में है तथा पैख फैलाये हुये पक्षी? प्रत्येक ने अपनी बंदगी तथा पवित्रता गान को जान लिया³ है, और अल्लाह भली भौन जानने वाला है जो वे कर रहे है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْمَعُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا يَضِلُّ صِفَتِ كُلِّ قَوْمٍ عِلْمُ صَلَاتِهِمْ وَنَبِيَّتِهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ

42. अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। और अल्लाह ही की

فَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُجِيبُونَ

- 1 कड़ी गर्मी के समय रेगस्तान में जो चमकती हुई रेत पानी जैसी लगती है उसे मुराब कहते हैं
- 2 अर्थात् काफिर, अविश्वास और कुकर्मों के अन्धकार में घिरा रहना है और यह अन्धकार उसे मार्ग दर्शन की ओर नहीं आने देने।
- 3 अर्थात् तुम भी उस की पवित्रता का गान गाओ। और उस की आज्ञा का पालन करो।

और फिर कर^[1] जाना है।

43. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को चलाता है फिर उसे परस्पर मिला देता है, फिर उसे घंघोर मेघ बना देता है, फिर आप देखते हैं बूद को उस के मध्य से निकलती हुयी, और वही पर्वतों जैसे बादल से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहे आपदा उतारता है और जिस से चाहे फेर देता है। उस की बिजली की चमक संभव होता है कि आँखों को उचक ले।

44. अल्लाह ही रात और दिन को बदलता^[2] है। बेशक इस में बड़ी शिक्षा है समझ बूझ वालों के लिये।

45. अल्लाह ही ने प्रत्येक जीव धारी को पानी से पैदा किया है। तो उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं। और कुछ दो पैर पर तथा कुछ चार पैर पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहे पैदा करता है वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

46. हम ने खुली आयतें (क़र्आन) अवतरित कर दी है। और अल्लाह जिसे चाहता है सुपथ दिखा देता है।

- 47 और^[3] वे कहते हैं कि हम अल्लाह

النَّوَّارِ اللَّهُ يُخَفِّضُ الْجِبَالَ يُزِيلُ الْغَمَامَ يُخْرِجُ الْبُيُوتَ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ يَكَادُ سَارِقُونَ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ

يَقْلِبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ
الْأَنْصَارِ

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَاءٍ فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى بَطْنٍ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَى أَرْبَعٍ يَخْتَارُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

لَقَدْ أَرْسَلْنَا آيَاتٍ مُبِينَاتٍ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَنْ يُشَاقِقُ
الَّذِينَ صَرَفُوا عَنْهُ

وَيَقُولُونَ اسْتَأْذِنُوا بِالزَّمَانِ وَأَطَاعُوا

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 अर्थात् रात के पश्चात् दिन और दिन के पश्चात् रात होनी है। इसी प्रकार कभी दिन बड़ा रात छोटी, और कभी रात बड़ी दिन छोटा होता है।

3 यहाँ से मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है तथा

तथा रसूल पर ईमान लाये, और हम आज्ञाकारी हो गये, फिर मुँह फेर लेता है उन में से एक गिराह इस के पश्चान् वास्तव में वे ईमान वाले है ही नहीं।

يَتَوَلَّى قَوْمًا يَتَّبِعُهُمُ الْبَغْيُ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ
بِالْمُؤْمِنِينَ ۝

48. और जब बुलाये जाते है अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर, ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का), तो अकस्मात उन में से एक गिराह मुँह फेर लेता है,

وَأَدْعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ يَتَّبِعُكُمْ بَغْيًا إِذَا
قِيلَ لَهُمْ تَبِعُوا قَوْمَكُمْ

49. और यदि उन्हीं को अधिकार पहुंचना हो, तो आप के पास सिर झुकाये चले आते है।

فَإِنْ يَكُنْ أَمْرًا مِّنْ أَمْرِ النَّاسِ فَلْيُحْكَمْ فِيهِ

50. क्या उन के दिलों में रोग है अथवा द्विधा में पड़े हुये है, अथवा डर रहे है कि अल्लाह अत्याचार कर देगा उन पर और उस के रसूल? बल्कि वही अत्याचारी है।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ وَإِن يَأْتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَذَرْهُمْ
يَتَّبِعُوا مَا يَشَاءُونَ فَإِن كُنُوا فِي شَكٍّ مِّنْ شَيْءٍ

51. ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जायें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें, तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया, और वही सफल होने वाले है।

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ
يَتَّبِعُوا قَوْلَهُمْ أَن يَقُولُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا
رَسُولَهُ ۝

52. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें, और उस की (यातना से) डरें, तो वही सफल होने वाले है।

وَمَنْ يُؤْمَرْ بِالْعَمَلِ فَلْيُحْكَمْ فِيهِ وَلَوْ أَلْهَىٰ الْمُشْرِكُونَ
أَفْئِدَتَهُمْ فَلْيَوْرَثْهُمُ الْإِسْلَامَ ۝

यह बताया जा रहा है कि इमान के लिये अल्लाह के सभी आदेशों तथा नियमों का पालन आवश्यक है। और कूर्आन तथा सुन्नत के निर्णय का पालन करना ही ईमान है।

53. और इन (द्विधावादियों) ने बल पूर्वक शपथ ली कि यदि आप उन्हें आदेश दें तो अवश्य वह (घरों से) निकल पड़ेंगे। उन से कह दें शपथ न लो। तुम्हारे आज्ञापालन की दशा जानी पहचानी है। वास्तव में अब्राह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

54. (हे नबी!) आप कह दें कि अब्राह की आज्ञा का पालन करो तथा रमूल की आज्ञा का पालन करो, और यदि वह विमुख हों, तो आप का कर्तव्य केवल वही है जिस का भार आप पर रखा गया है, और तुम्हारा वह है जिस का भार तुम पर रखा गया है। और रमूल का दायित्व केवल खुला आदेश पहुँचा देना है।

55. अब्राह ने वचन¹ दिया है उन्हें जो तुम में से इमान लायें तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे, तथा अवश्य मद्दुद कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसंद किया है, तथा उन (की दशा) को उन के भय के पश्चात् शान्ति में बदल देगा वह मेरी इबादत (बंदना) करने रहें और किसी चीज को मेरा साझी न बनायें। और जो कुफ्र करें इस के

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ قُلْ لَا تُفْسِدُوا الطَّيِّبَةَ مَعْرُوفَةً ۚ إِنَّ اللَّهَ يَهْدِي بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ أُولَئِكَ تَوْفَاقِي ۚ وَاللَّهُ عَلَيْكُمْ شَاقِصٌ ۚ وَمَلِكُكُمْ تَحْتَلِفُ ۚ وَأُولَئِكَ تُطِيعُونَ تَعْتَدُوا وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الْأَبْرَارَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِلَدُنِّي ۚ وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْسِدُونَ ۝

1 इस आयत में अब्राह ने जो वचन दिया है वह उस समय पूरा हो गया जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों को जो काफिरों से डर रहे थे उन की धरती पर अधिकार दे दिया। और इस्लाम पूरे अरब का धर्म बन गया और यह वचन अब भी है, जो इमान तथा सुकर्म के साथ प्रतिबद्धित है।

पश्चात् तो वही उल्लघनकारी है।

56. तथा नमाज की स्थापना करो और जकान दो, तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम पर दया की जाये।

57. और (हे नबी!) कदापि आप न समझें कि जो काफिर हो गये, वे (अल्लाह को) धरती में बिबश कर देने वाले हैं। और उन का स्थान नरक है और वह बुरा निवास स्थान है।

58. हे ईमान वाले! तुम ' में अनुमति लेना आवश्यक है तुम्हारे स्वामित्व के दास दासियों को और जो तुम में से (अभी) युवा अवस्था को न पहुँचें हो तीन समय: फज्र (भोर) की नमाज से पहले, और जिम समय तुम अपने वस्त्र उतारते हो दोपहर में तथा इशा (रात्रि) की नमाज के पश्चात्। यह तीन (एकान्त) पर्दे के समय है तुम्हारे लिये। (फिर) तुम पर और उन पर कोई दोष नहीं है इन के पश्चात् तुम अधिकतर आने-जाने वाले हो एक दूसरे के पास। अल्लाह तुम्हारे लिये आदेशों का वर्णन कर रहा है। और अल्लाह सर्वज्ञ निपुण है।

59. और जब तुम में से बच्चे युवा अवस्था को पहुँचें तो वह भी वैसे ही अनुमति

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاتَّبِعُوا الرُّسُلَ
لَعَلَّكُمْ تَرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَأُولَئِكَ يَتَرَوْنَ الْكَافِرِينَ يَكُونُونَ

لَا يَتَّبِعُ الْكَافِرِينَ أَمَّا الْيَسْتَأْذِنُ الْكَافِرِينَ مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثٌ
مَرَّاتٍ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَبَيْنَ صَلَاةِ
الْفَجْرِ وَالْعِشَاءِ وَبَيْنَ صَلَاةِ الْعِشَاءِ
ثَلَاثٌ مَرَّاتٍ لَكُمْ أَنْ تُقْبِلُوا عَلَيْكُمْ
حَتَّى تَبْلُغُوا أَهْلَ الْكَلَامِ مِنْكُمْ بَقِيَّةُ كَلَامِكُمْ عَلَى
بَعْضِ كَلِمَاتِكُمْ يَوْمَئِذٍ لَكُمْ الْأَمَانَةُ وَاللَّهُ يُولِيهِ
حَكِيمٌ ﴿٥٧﴾

ثَلَاثَ أَلْفَةِ الْاَطْفَالِ مِنْكُمْ لَعَلَّكُمْ

1 आयत 27 में आदेश दिया गया है कि जब किसी दूसरे के यहाँ जाओ तो अनुमति ले कर घर में प्रवेश कराओ और यहाँ पर आदेश दिया जा रहा है कि स्वयं अपने घर में एक-दूसरे के पास जाने के लिये भी अनुमति लेना तीन समय में आवश्यक है।

ले जैसे उन से पूर्व के (बड़े) अनुमति मांगते हैं इसी प्रकार अब्राह उजागर करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतों को, तथा अब्राह सर्वज्ञ तन्वज है।

60. तथा जो बूढ़ी स्त्रियाँ विवाह की आशा न रखती हों, तो उन पर कोई दोष नहीं कि अपनी (पर्दे की) चादरें उतार कर रख दें, प्रतिबंध यह है कि अपनी शोभा का प्रदर्शन करने वाली न हों, और यदि सुरक्षित रहें¹ तो उन के लिये अच्छा है।

61. अन्धे पर कोई दोष नहीं है और न लंगड़े पर कोई दोष² है, और न रोगी पर कोई दोष है और न स्वयं तुम पर कि खाओ अपने घरों³ से अथवा अपने बापों के घरों से अथवा अपनी माँओं के घरों से अथवा अपने भाइयों के घरों से अथवा अपनी बहनो के घरों से अथवा अपने चाचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा जिस की चाबियों के तुम स्वामी⁴ हो, अथवा अपने मित्रों के घरों से, तुम पर कोई दोष नहीं एक साथ खाओ या अलग अलग, फिर जब तुम प्रवेश

فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الْكَافِرُونَ مِنْ
مَوْلَاهُمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا
فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ
غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ
غَيْرَ لَهْفٍ ۝ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ
حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى
الْفُكْرِ كُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ
بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَلِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتُمْ
يَمِينُكُمْ أَوْ صَدِيقَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا لِعِيَالِكُمْ أَوْ لِسَعَادَاتِكُمْ أَوْ إِذَا
دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا
تَحِيَّةً مِمَّنْ جَاءَ اللَّهُ مَبْرُكَةً عَلَيْهِ
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ۝

1 अर्थात् पर्दे की चादर न उतारे।

2 इस्लाम से पहले विकलांगों के साथ खाने पीने को दोष समझा जाता था जिस का निवारण इस आयत में किया गया है।

3 अपने घरों से अभिप्राय अपने पुत्रों के घर है जो अपने ही होने हैं।

4 अर्थात् जो अपनी अनुपस्थिति में तुम्हें रक्षा के लिये अपने घरों की चाबियाँ दे जायें।

करो घरों में' तो अपनों को सलाम किया करो, एक आशीर्वाद है अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ जो शुभ पवित्र है। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयनों का वर्णन करता है ताकि तुम समझ लो।

62. वास्तव में ईमान वाले वह हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाये और जब आप के साथ किसी सामुहिक कार्य पर होते हैं तो जाने नहीं जब तक आप से अनुमति न लें, वास्तव में जो आप से अनुमति लेते हैं वही अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं तो जब वह आप से अपने किसी कार्य के लिये अनुमति माँगे तो आप उन में से जिसे चाहें अनुमति दें। और उन के लिये अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

63. और तुम मत बनाओ रसूल के पुकारने को परस्पर एक-दूसरे को पुकारने जैसा¹, अल्लाह तुम में से उन को जानता है जो सरक जाते हैं एक-दूसरे की आड़ ले कर। तो उन्हें सावधान रहना चाहिये जो आप के आदेश का विरोध करते हैं कि उन

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَدَّ كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ حَامٍ لَمْ يَذْهَبُوا
حَتَّى يَسْتَأْذِنُوا مِنَ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
أُولَئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِذَا
اسْتَأْذَنُوكَ يَفْعَلُ مَا يُؤْمَرُونَ وَإِنَّ لَكَ لَأَنْتَ
بِهِمْ وَاسْتَعِظْ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ طَعَامٍ
بَعْضُكُمْ يَقُولُ لِلَّذِينَ يَسْتَكُونُونَ بَيْنَكُمْ
يُؤَادًا لِّلْبَاحِثِينَ الَّذِينَ يَحْتَالُونَ عَلَى أَمْرٍ أَنْ
تُؤَيِّدَهُمْ سَوَآءٌ يُؤَيِّدُكُمْ وَعَدَابُ اللَّهِ

1 अर्थात् वह साधारण भोजन जो सब के लिये पकाया गया हो। इस में वह भोजन सम्मिलित नहीं जो किसी विशेष व्यक्ति के लिये तैयार किया गया हो।

2 अर्थात् «हे मुहम्मद!» न कहो बल्कि आप को हे अल्लाह के नबी! हे अल्लाह के रसूल! कह कर पुकारो। इस का यह अर्थ भी किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रार्थना को अपनी प्रार्थना के समान न समझो, क्यों कि आप की प्रार्थना स्वीकार कर ली जाती है।

पर कोई आपदा आ पड़े अथवा उन
पर कोई दुखदायी यातना आ जाये।

64. सावधान! अब्राह ही का है जो
आकाशों तथा धरती में है, वह
जानता है जिस (दशा) पर तुम हो,
और जिस दिन वे उस की ओर फेंरे
जायेंगे तो उन्हें बता¹ देगा जो उन्होंने
ने किया है। और अब्राह प्रत्येक चीज
का अति जानी है।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قَدْ يَعْلَمُونَ
مَا أَسْتُرُ عَنْكُمْ وَتَوْمَهُ يَرْجِعُونَ إِلَيْهِ
فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

1 अर्थान् प्रलय के दिन तुम्हें तुम्हारे कर्मों का फल देगा।

सूरह फुर्कान - 25

سُورَةُ مُرْقَات

सूरह फुर्कान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 77 आयते हैं।

- इस सूरह में उस का परिचय कराते हुए जिस ने फुर्कान उतारा है शिर्क का खण्डन तथा बह्यी और रिमालन से सम्बन्धित सदेहों को चेतावनी की शैली में दूर किया गया है।
- अब्राह के एक होने की निशानियों की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया है।
- अब्राह के भक्तों के गुण और मानव पर कुर्आन की शिक्षा का प्रभाव बताया गया है।
- अन्त में उन्हें चेतावनी दी गयी है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुर्आन के सावधान करने पर भी सत्य को नहीं मानने।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शुभ है वह (अब्राह) जिस ने फुर्कान¹ अवतरित किया अपने भक्त² पर, ताकि पूरे संसार वासियों को सावधान करने वाला हो।
2. जिस के लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा उस ने अपने लिये

تَبَارَكَ الَّذِي مَرَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُعْجِبُ الْوَلَدَ

- 1 फुर्कान का अर्थ वह पुस्तक है जिस के द्वारा मच्च और झूठ में विवेक किया जाये और इस से अभिप्राय कुर्आन है।
- 2 भक्त से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है जो पूरे मानव संसार के लिये नबी बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुझे से पहले नबी अपनी विशेष जानि के लिये भेजे जाते थे और मुझे सर्व साधारण लोगों की ओर नबी बना कर भेजा गया है (सहीह बुखारी 335 सहीह मुस्लिम, 521)

कोई सतान नहीं बनायी। और न उस का कोई साझी है राज्य में तथा उस ने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की फिर उस को एक निर्धारित रूप दिया।

3. और उन्हो ने उस के भीतररक्त अनेक पूज्य बना लिये हैं जो किसी चीज की उत्पत्ति नहीं कर सकते, और वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं और न वह अधिकार रखने हैं अपने लिये किसी हानि का और न अधिकार रखने हैं किसी लाभ का तथा न अधिकार रखने हैं मरण और न जीवन और न पुनः¹ जीवित करने का।

4. तथा काफिरों ने कहा यह² तो बस एक मन घड़त बात है जिसे इस³ ने स्वयं घड़ लिया है, और इस पर अन्य लोगों ने उस की सहायता की है। तो वास्तव में वह (काफिर) बड़ा अत्याचार और झूठ बना लाये हैं।

5. और कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जिसे उस ने स्वयं लिख लिया है और वह पढ़ी जाती है उस के समक्ष प्रातः और संध्या।

6. आप कह दें कि इसे उस ने अवतरित किया है जो आकाशों तथा धरती का भेद जानता है। वास्तव में वह⁴ अति क्षमाशील दयावान् है।

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدْ رُفِعَ عَنَّا ۝

وَأَعَدُّوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْشَوْنَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ صَاعًا وَلَا نَقْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا نُشُورًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا إِفْكٌ مُفْتَرٍ وَمَا لَهُ عَلَيْهِ قُوَّةٌ الْخَرُونَ فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُفْرًا ۝

وَقَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَأُ حِينَ يَكُونُ أَهْمُهُمْ ۝

كُلُّ أَمْرٍ إِلَيْنَا يَعْلَمُ السِّرُّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمٌ ذَكِيمٌ ۝

1 अर्थात् प्रलय के पश्चात्।

2 अर्थात् कुआना।

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

4 इसी लिये क्षमा याचना का अवसर देता है।

7. तथा उन्होंने ने कहा: यह कैसा रसल है जो भोजन करना है तथा बाजारी में चलता है? क्यों नहीं उतार दिया गया उस की ओर कोई फरिश्ता, तो वह उस के साथ मावधान करने वाला होता?

8. अथवा उस की ओर कोई कोष उतार दिया जाना अथवा उस का कोई बाग होता जिस में से वह खाता? तथा अत्याचारियों ने कहा: तुम तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो।

9. देखो! आप के संबंध में यह कैसी कैसी बातें कर रहे हैं? अतः वह कुपय हो गये हैं वह सुपथ पा ही नहीं सकते।

10. शुभकारी है वह (अब्राह) जो यदि चाहे तो बना दे आप के लिये इस⁽¹⁾ से उत्तम बहुत से बाग जिन में नहरें प्रवाहित हों और बना दे आप के लिये बहुत से भवन।

11. वास्तविक बात यह है कि उन्होंने ने झुठला दिया है क्यामत (प्रलय) को, और हम ने तय्यार किया है उस के लिये जो प्रलय को झुठलाये भडकती हुई अग्नि

12. जब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी, तो सुन लेंगे उस के क्रोध तथा आवेग की ध्वनि को।

13. और जब वह फेंक दिये जायेंगे

1 अर्थात् उन के विचार से उत्तम।

وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ
وَيَنْتَشِي فِي الْأَسْوَاقِ نَوَلًا تَمْلِكُ إِلَيْهِ السُّلْطَانَةُ
فَيَكُونُ مَعَهُ تَبَايُرًا

أَوُفِيْلَقٍ إِلَيْهِ كَمَا أَذْكَرُونَ لَهُ حَبَّةٌ يَرْكُلُ مِنْهَا
وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنَّ تَبَايُؤَهُ إِلَّا جَلَا
مَنْحُورًا

الْفُرْقَانُ فَسَرُّوْا لَكَ لَأَمَّا أَنْ تَمْلِكُوا
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيْلًا

تَبَارَكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ
ذَلِكَ حَبْلًا جَدِيدًا يُجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
وَيَجْعَلُ لَكَ فُصُورًا

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا

إِذَا رَأَوْهُ تَسَاقُطًا مِنْ مَكَاثِبٍ يَنْسُو سَوْجُودَهَا تَعَرُّفًا
وَرَبُّرًا

وَإِذَا الْقَوَاوِمُ جَاءَا نَارًا صَبَا مَقْرَمِينَ دَعَوْا

उस के किमी सकीर्ण स्थान में वधे
हुये, (तो) वहाँ विनाश को पुकारेंगे।

هَٰذَا لَكُمْ نَجْوَاۙ

14. (उन से कहा जायेगा): आज एक
विनाश को मत पुकारो, बहुत से
विनाश को पुकारो।¹

لَا تَحْضُرُوا۟ الْيَوْمَ نَجْوَاۙ اٰحَادًا وَّادْعُوا۟ ثُبُورًا
كَثِيْرًا ۝

15. (हे नबी!) आप उन से कहिये कि
क्या यह अच्छा है या स्थायी स्वर्ग
जिस का बचन आज्ञाकारियों को
दिया गया है, जो उन का प्रतिफल
तथा आवास है?

قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌۭ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي رُوِيَتْ
اَللّٰهُ كَانَ تَحْتَهَا جَهَنَّمُ جَرَادًا وَّاصْبِرْ ۝

16. उन्हीं को उस में जो इच्छा वे करेंगे
मिलेगा। वे सदावासी होंगे, आप के
पालनहार पर (यह) बचन (पूरा
करना) अनिवार्य है।

لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ
وَعْدًا مُّثْبُوْتًا ۝

- 17 तथा जिस दिन वह एकत्र करेगा
उन को और जिस की वह इबादत
(बंदना) करने थे अल्लाह के सिवाय,
तो वह (अल्लाह) कहेगा: क्या तुम्ही
ने मेरे इन भक्तों को कुपथ किया है
अथवा वे स्वयं कुपथ हो गये?

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَّمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
يَقُوْلُوْنَ مَا كُنْتُمْ عِبَادُوْا عِندَ رَبِّكُمْ اَمْ
هُوَ قَوْلُ الشَّيْطٰنِ ۝

18. वे कहेंगे: तू पवित्र है। हमारे लिये
यह योग्य नहीं था कि तेरे सिवा कोई
संरक्षक² बनायें परन्तु तू ने सुखी
बना दिया उन को तथा उन के पूर्वजों
को यहाँ तक कि वह शिक्षा को भूल
गये और वह थे ही विनाश क योग्य।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كُنَّا يَسْتَعِيْنُ لَكَ اَنْ تَكُوْنَ
مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَنْبِيَآءٍ وَّلٰكِنْ مَّكْنَعُهُمْ
وَاٰبَآءُهُمْ حَتّٰى كَسَبُوا۟ الدِّيْكَرَ وَاَلَوْ كُنَّا
قَوْمًا
بُوْرًا ۝

1 अर्थात् आज तुम्हारे लिये विनाश ही विनाश है।

2 अर्थात् जब हम स्वयं हमारे को अपना संरक्षक नहीं समझे, तो फिर अपने विषय में यह कैसे कह सकने है कि हमें अपना रक्षक बना लो?

19. उन्होंने¹ ने तो तुम्हें झुठला दिया तुम्हारी बातों में, तो तुम न यातना को फेर सकोगे और न अपनी सहायता कर सकोगे। और जो भी अत्याचार² करेगा तुम में से हम उसे घोर यातना चखायेंगे।

20. और नहीं भेजा हम ने आप से पूर्व किसी रसूल को, परन्तु वे भोजन करते और बाजारों में (भी) चलते³ फिरते थे। तथा हम ने बना दिया तुम में से एक को दूसरे के लिये परीक्षा का साधन तो क्या तुम धैर्य रखांगे? तथा आप का पालनहार सब कुछ देखने⁴ वाला है।

21. तथा उन्होंने ने कहा जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते: हम पर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गये या हम अपने पालनहार को देख लेते? उन्होंने ने अपने में बड़ा अभिमान कर लिया है तथा बड़ी अवैज्ञा⁵ की है।

22. जिस दिन⁶ वे फरिश्तों को देख लेंगे

فَقَدْ كَذَّبُوا بِمَا يَقُولُونَ فَمَا تَتَوَصَّيْنَ صَرَفًا وَلَا نَصْرًا وَمَنْ يَتَّخِذْ مَوْلَاهُ عَدَاةً كَبِيرًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا أَنْهَ لِيَأْكُلُوا مِنَ الطَّعَامِ وَيَشْرَبُوا فِي الْأَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ فِتْنَةً تَتَنَبَّهُونَ وَكَانَ رَبُّكُمْ بَصِيرًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لِقَاءَ رَأْسِهِ اتَّخَذَ عَلَيْنَا مَلَكًا كَذِبًا أَوْتَرَىٰ رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي الْغَيْبِ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ ۝

يَوْمَ تَرَىٰ فِي السَّمَاءِ الْمَلَائِكَةَ لَا تُصَرِّفُونَ يَوْمَ تَرَىٰ الْمَلَائِكَةَ لَا تُصَرِّفُونَ

1 यह अल्लाह का कथन है जिसे वह मिश्रणवादियों से कहेंगा कि तुम्हारे पूज्यों ने स्वयं अपने पूज्य होने को नकार दिया।

2 अत्याचार से तात्पर्य शिक (मिश्रणवाद) है। (मूरह लुकमान, आयत 13)

3 अर्थात् वे मानव पुरुष थे।

4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह चाहता तो पूरा समार रसूलों का साथ देता परन्तु वह लोगों की रसूलों द्वारा तथा रसूलों की लोगों के द्वारा परीक्षा लेना चाहता है कि लोग ईमान लाने हैं या नहीं और रसूल धैर्य रखते हैं या नहीं।

5 अर्थात् ईमान लाने के लिये अपने समक्ष फरिश्तों के उतरने तथा अल्लाह को देखने की माँग कर के।

6 अर्थात् मरने के समय। (देखिये अन्फाल 13) अथवा प्रलय के दिन।

उस दिन कोई शुभ सूचना नहीं होगी
अपराधियों के लिये। तथा वह कहेंगे:¹
बर्चित बर्चित है।

وَيَقُولُونَ حَسْبُنَا اللَّهُ

23. और उनके कर्मों² को हम ले कर
धूल के समान उड़ा देंगे।

وَقَدِمْنَا آلَ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ دُفًّا
مَنْوُورٌ ۝

24. स्वर्ग के अधिकारी उस दिन अच्छे
स्थान तथा सुखद शयनकक्ष में होंगे।

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ
مَبْقَعَاتٍ ۝

25. जिस दिन चिर जायेगा आकाश
बादल के साथ³ और फरिश्ते
निरन्तर उतार दिये जायेंगे।

وَيَوْمَ تَنفَلِقُ الْأَشْجَارُ أَغْنَاءُ الْغَوَامِ وَتُرَى الْمَلَائِكَةُ نَزْرِيلاً ۝

26. उस दिन वास्तविक राज्य अनि
दयावान् का होगा, और काफिरों पर
एक कड़ा दिन होगा।

الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُ الْمُؤْمِنِينَ وَكَانَ يَوْمَ عَلَى
الْكَافِرِينَ عَذَابٌ ۝

27. उस दिन अन्याचारी अपने दोनों हाथ
चबायेगा, वह कहेगा: क्या ही अच्छा
होता कि मैं ने रसूल का साथ दिया
होता।

وَيَوْمَ يَضْرِبُ الضُّرُّ عَلَى يَدَيْهِمْ يَقُولُ بَلَيْتَنِي
الْحَدِيثُ مَعَ الرَّسُولِ سَوَاءً ۝

28. हाये मेरा दुर्भाग्य! काश मैं ने अमुक
को मित्र न बनाया होता।

يَوْمَئِذٍ لَيْسَ لِي وَلِيٌّ وَلَا مُصَلِّ إِلَهُ ۝

29. उस ने मुझे कुपथ कर दिया शिक्षा
(कुर्आन) से इस के पश्चात् कि मेरे
पास आयी और शैतान मनुष्य को
(समय पर) धोखा देने वाला है।

لَقَدْ أَصْلَحْنَا مِنْ آلِ إِبْرَاهِيمَ الْأَخْيَارِ ۝ وَكَانَ
الْقَيْظُ يَلْوِي سَائِلَ عَذَابٍ ۝

1 अर्थात् वह कहेंगे कि हमारे लिये सफलता तथा स्वर्ग निरर्पित है।

2 अर्थात् ईमान न होने के कारण उनके पुण्य के कार्य व्यर्थ कर दिये जायेंगे।

3 अर्थात् आकाश चीरना हुआ बादल छा जायेगा और अल्लाह अपने फरिश्तों के साथ लोगों का हिमायत करने के लिये हथ के मैदान में आ जायेगा (देखिये सूरह बकरा आयत: 210)

30. तथा रसूल ¹ कहेगा हे मेरे पालनहार! मेरी जाति ने इस कुर्आन को त्याग² दिया।

وَقَالَ الرَّسُولُ رَبِّ اِنَّ اِيَّاهُمْ اَعْتَدُوا هَذَا
الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝

31. और इसी प्रकार हम ने बना दिया प्रत्येक का शत्रु कुछ अपराधियों को। और आप का पालनहार मार्गदर्शन देने तथा सहायता कर ने को बहुत है।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ شَيْءٍ عَدُوًّا مِنَ الْمَخْرُومِينَ
وَكُلِّى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝

32. तथा काफ़िरो ने कहा: क्यों नहीं उतार दिया गया आप पर कुर्आन पूरा एक ही बार? ³ इसी प्रकार (इस लिये किया गया) ताकि हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, और हम ने इस का क्रमशः प्रस्तुत किया है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ
جُمْلَةً وَّاحِدَةً كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ لُؤْلَاقَكَ
وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ۝

33. (और इस लिये भी कि) वह आप के पास कोई उदाहरण लाये तो हम आप के पास सन्ध ला दें और उत्तम व्याख्या।

وَلَا يَأْتِيَنَّكَ مِن سَبِيلٍ اِلَّا يَجْعَلْنَا يَوْمًا وَاحِدًا
تَقْصِرُهُ ۝

34. जो अपने मुखों के बल नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे उन्ही का सब से बुरा स्थान है तथा सब से अधिक कुपथ है।

الَّذِينَ يَخْرُجُونَ مِنَ اْلْأَرْضِ اِثْنَيْنِ اَوْ ثَلَاثٍ
ثُمَّ يَكُنُّوا فِيهَا سَبِيلًا ۝

35. तथा हम ने ही मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उस के साथ उस के भाई हारून को सहायक बनाया।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ هَارُونَ
نَصِيرًا ۝

36. फिर हम ने कहा तुम दोनों उस

لَقَدْ اَوْفَيْنَاكَ بِالْعَهْدِ اِنَّكَ كَذِبٌ بَاطِلٌ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वमल्लम। (इब्ने कमीर)

2 अर्थात् इसे मिश्रणवादियों ने नहीं मुना और न माना।

3 अर्थात् तौरात तथा इंजील के समान एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया आगामी आयतों में उस का कारण बताया जा रहा है कि कुर्आन 23 वर्ष में क्रमशः आवश्यकतानुसार क्यों उतारा गया।

जाति की ओर जाओ जिस ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया। अन्ततः हम ने उन को ध्वस्त निरस्त कर दिया।

فَذَرْنَاهُمْ تَدْرِيحًا ۝

37. और नूह की जाति ने जब रसूलों को झुठलाया तो हम ने उन को डुबो दिया और लोगों के लिये उन को शिक्षाप्रद प्रतीक बना दिया तथा हम ने¹ तय्यार की है अत्याचारियों के लिये दुःखदायी यातना।

وَقَوْمُ نُوحٍ إِذْ دُكِّيُوا الرُّسُلَ أَنْزِلْنَاهُمْ فِي دَرَجَاتٍ ۝
أَيُّهَا الْعَالَمِينَ ۝

38. तथा आद और समूद एवं कूबे वालों तथा बहुत से समुदायों को इस के बीचा

وَعَادُ وَثَمُودُ وَأَصْحَابُ الرَّيِّ وَقُرْقَانُ ۝
ذَلِكَ كَثِيرٌ ۝

39. और प्रत्येक को हम ने उदाहरण दिये तथा प्रत्येक को पूर्णतः नाश कर² दिया।

وَكُلًّا ضَرَبْنَاهُ الْأَمْثَالَ ۝ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتَرًا ۝

40. तथा यह³ लोग उस बस्ती⁴ पर आये गये है जिन पर बुरी वर्षा की गई, तो क्या उन्होंने ने उसे नहीं देखा? बल्कि यह लोग पुनः जीवित होने का विश्वास नहीं रखते।

وَلَقَدْ آتَيْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أَسْفَرَتْ مَكْرُسُونَ ۝
أَلَمْ يَكُنُوا يَرْوْنَهَا ۝ بَلْ كَانُوا لَا يَتَنَبَّهُونَ ۝
شُعُورًا ۝

41. और (हे नबी!) जब वह आप को देखने है, तो आप को उपहास बना लेते है कि क्या यही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

وَمَا أَزَالُرِينَ تَحِيصُ ۝ وَكَذَلِكَ أَهَيَّأْنَا هَٰذَا الْقَوْمَ ۝
بَعَثْنَا إِلَيْكَ رَسُولًا ۝

42. इस ने तो हमें अपने पूज्यों से कुपथ

إِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْبَةِ لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا ۝

1 अर्थात् परलोक में नरक की यातना।

2 सत्य को स्वीकार न करने पर।

3 अर्थात् मक्का के मुशरिक।

4 अर्थात् लूत जाति की बस्ती पर जिस का नाम "सदूम" था जिस पर पत्थरों की वर्षा हुई, फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं की।

कर दिया होता यदि हम उन पर
अडिग न रहते। और वे शीघ्र ही
जान लेंगे जिस समय यातना देखेंगे
कि कौन अधिक कुपथ है।

عَلَيْهَا وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ الْعَذَابِ
مَنْ أَصْلُ سَيِّئٍ ۝

43. क्या आप ने उसे देखा जिस ने अपना
पूज्य अपनी अभिलाषा को बना लिया
है, तो क्या आप उस के संरक्षक¹
हो सकते हैं?

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۚ
كَفَىٰ لَهُ ذَلِكُمْ ۖ وَكَفَىٰ لَهُ

44. क्या आप समझते हैं कि उन में से
अधिकतर सुनते और समझते हैं? वे
पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी
अधिक कुपथ है,

أَمْ قَصَبْنَا أَنَّهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ
إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْإِنْعَامِ بَلْ هُمْ أَصْلُ سَيِّئٍ ۝

45. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के
पालनहार ने कैसे छाया को फैला
दिया और यदि वह चाहता तो उसे
स्थिर² बना देता फिर हम ने सूर्य
को उस पर प्रमाण³ बना दिया।

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ
سَاكِنًا ۖ أَتَمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ ذَلِيلًا ۝

46. फिर हम उस (छाया को) समेट लेते
हैं अपनी ओर धीरे-धीरे।

لَنُفَصِّلَنَّ الْهَبَّ مُصَافِرًا ۝

47. और वही है जिस ने रात्रि को तुम्हारे
लिये वस्त्र⁴ बनाया, तथा निद्रा को
शान्ति तथा दिन को जागने का समय।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهَا وَالنُّجُومَ مُسَيَّاتًا
وَجَعَلَ النَّهَارَ لَعَمَلِكُمْ ۚ

48. तथा वही है जिस ने भेजा वायुओं
को शुभ सूचना बनाकर अपनी दया
(वर्षा) से पूर्व, तथा हम ने आकाश

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا لِّبَنَاتِ
رَحْمَتِهِ وَأَرْسَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَطُورُوا

1 अर्थात् उसे सुपथ दर्शा सकते हैं ?

2 अर्थात् सदा छाया ही रहती।

3 अर्थात् छाया सूर्य के साथ फैलती तथा मिमटती है। और यह अब्राह के सामर्थ्य
तथा उस के एकमात्र पूज्य होने का प्रमाण है।

4 अर्थात् रात्रि का अंधेरा वस्त्र के समान सब को छुपा लेता है।

से स्वच्छ जल बरमाया।

49. ताकि जीवित कर दें उस के द्वारा निर्जीव नगर को तथा उसे पिलायें उन में से जिन्हें पैदा किया है बहुत से पशुओं तथा मानव को।

لِيُحْيِيَ بِهِ بَنَاتَ قَوْمٍ تَمِيتَ وَمَلَأْنَا عَشَامًا
وَأَنَّا لَنَبْغِثُ لَكَ خَبِيرًا ۝

50. तथा हम ने विभिन्न प्रकार से इसे वर्णन कर दिया है, ताकि वे शिक्षाग्रहण करें। परन्तु अधिकतर लोगों ने अस्वीकार करते हुये कुफ्र ग्रहण कर लिया।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي لُغَتِكَ لَعْنَةَ الْكَافِرِينَ
إِلَّا تَعْمُرُوا ۝

51. और यदि हम चाहते तो भेज देते प्रत्येक बस्ती में एक सचन करने ¹ वाला।

وَلَوْ شِئْنَا لَنَخْلُفَنَّ فِي كُلِّ تَ镇َةٍ لَّيْؤُكُمُ

52. अतः आप काफिरों की घात न मानें और इस (कुरआन के) द्वारा उन से भारी जिहाद (संघर्ष) ² करें।

بَلَا تُظِلُّهُ الْعُسُفُفُ ۖ وَتَاجِدُهُ فِي
يَهَادٍ أَكْبَرٍ ۝

53. वही है जिस ने मिला दिया दो सागरों को यह मीठा रुचिकार है, और वह नमकीन खारा, और उस ने बना दिया दोनों के बीच एक पर्दा ³ एवं रोक।

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا
مِلْحٌ أَمْوَءٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا مَّزْجُورًا ۝

54. तथा वही है जिस ने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उस के वंश तथा समुराल के संबन्ध बना दिये, आप का पालनहार अनि सामर्थ्यवान है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا جَعَلَهُ نَسَبًا
وَصِفْرًا ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذِيْزٌ ۝

55. और वे लोग इबादत (बंदना) करते हैं अल्लाह के सिवा उन की जो न उन

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَكُم بِهِمْ ذِكْرًا

- 1 अर्थात् रसूल। इस में यह संकेत है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूरे मनुष्य विश्व के लिये एक अन्तिम रसूल हैं।
- 2 अर्थात् कुरआन के प्रचार-प्रसार के लिये भरपूर प्रयास करें।
- 3 ताकि एक का पानी और स्वाद दूसरे में न मिले।

को लाभ पहुँचा सकने और न हानि पहुँचा सकने है, और काफिर अपने पालनहार का विरोधी बन गया है।

56. और हम ने आप को बस शुभसूचना देने सावधान करने वाला बनाकर भेजा है।

57. आप कह दें: मैं इस¹ पर तुम से कोई बदला नहीं मांगता, परन्तु यह कि जो चाहे अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले।

58. तथा आप भरोसा कीजिये उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को।

59. जिस ने उत्पन्न कर दिया आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में, फिर (सिंहासन) पर स्थिर हो गया अति दयावान् उसकी महिमा किमी ज्ञानी से पूछो।

60. और जब उन से कहा जाता है कि रहमान (अति दयावान्) को सज्दा करो तो कहने है कि रहमान क्या है? क्या हम सज्दा करने लगे जिसे आप आदेश दें? और इस (आमंत्रण) ने उन को और अधिक भड़का दिया।

61. शुभ है वह जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये तथा उस में सूर्य और

يَضْرِبُهُمْ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَى رَبِّهِ ظَهِيرًا

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ شَاءَ
أَنْ يَخُودَ إِلَى رَبِّهِ سَبِيلًا

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْثَاتٍ مِّنْ أَلْفِ نَفْثَاتٍ
وَفُتِحَ يَوْمَئِذٍ الْكَافِرُ

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ وَمَا يَسْتَوِي
بَيْنَهُ أَثَاةٌ أَمْ أَسْتَوِي عَلَى الْعَرْشِ فَأَنْزَلْنَاهُ
بِهِ جَبْرًا

وَذَائِقِينَ آثَامِ الْعُسْرِ وَالْفَقْرِ وَبَارِئِينَ
مِّنَ الْعِبَادِ الَّذِينَ كَانُوا يُرَوِّدُونَ

تَبَارَكَ الَّذِي فِي يَمِينِهِ كِتَابُ الْقَدَرِ

1 अर्थात् कूर्आन पहुँचाने पर।

प्रकाशित चांद को बनाया।

وَجَعَلَ مِنْهَا يَمِينًا وَقَبَلَ أَمْسُقًا ۖ وَجَعَلْتُمْ مِنْهَا قَعَسًا ۖ

62. वही है जिस ने रात्रि तथा दिन को एक दूसरे के पीछे आते जाते बनाया उस के लिये जो शिक्षा ग्रहण करना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ رَجُلًا يَمْشِي ۚ آتَاكَ
 أَنْ تَبْتَذِرَ أَمْرًا وَارِدًا عُلُوقُ ۝

63. और अति दयावान् के भक्त वह हैं जो धरती पर नम्रता से चलते¹⁾ हैं और अशिक्षित (असूखड़) लोग उन से बात करते हैं तो सत्ताम करके अलग²⁾ हो जाते हैं।

وَجِهَادُ الرُّحَى أَبْدَيْنَ مَشُورٍ عَلَى الدُّنَى هَوَا
وَدَاخِلُهُمْ أَجْمَعُونَ قَالُوا سَلَامًا

64. और जो रात्रि व्यतीत करने है अपने पालनहार के लिये सज्दा करते हुये तथा खड़े ⁽³⁾ हो कर।

وَالَّذِينَ يُبْتَغُونَ مِنْ رَبِّهِمْ أَجْرًا

65. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! फेर दे हम से नरक की यातना को वास्तव में उस की यातना चिपक जाने वाली है।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا حَذَابَ
جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٥٠﴾

66. वास्तव में वह बुरा आवाम और स्थान है।

لَهَا سِتُّ مِائَتِ مَسْكَنَةٍ وَمَقْلَابٌ ۝

67. तथा जो व्यय (खर्च) करने समय अव्यय नहीं करते और न कृपण (कंजूसी) करते हैं और वह इस के बीच संतुलित रहता है।

وَالَّذِينَ لَا يُؤْتُوا الْمُسْلِمِينَ فَوَاقِلَهُمْ يُقَاتِلُوا
رِجَالًا يَنْفِرُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ

68. और जो नहीं पुकारते हैं अल्लाह के
साथ किसी दमरे * पज्य को और

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ

1 अर्थात् घमंड से अकड कर नहीं चलता।

2 अर्थात् उन से डलझते नहीं।

३ अर्थात् अल्लाह की इबादत करते हयें।

4 अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

न बंध करते हैं उस प्राण को जिसे अल्लाह ने वर्जित किया है परन्तु उचित कारण से, और न व्यभिचार करते हैं और जो ऐसा करेगा वह पाप का सामना करेगा।

وَلَا يَنْقُتُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ
وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۝

69. दुगनी की जायेगी उस के लिये यातना प्रलय के दिन, तथा सदा उस में अपमानित¹ हो कर रहेगा।

يُضَعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَيَخَذُّ فِيهِ
مُجْتَنَبًا ۝

70. उस के सिवा जिस ने क्षमा याचना कर ली, और इमान लाया तथा कर्म किया अच्छा कर्म, तो वही है बदल देगा अल्लाह जिन के पापों को पुण्य से। तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ
يَبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَحِيمًا ۝

71 और जिस ने क्षमा याचना कर ली और सदाचार किये तो वास्तव में वही अल्लाह की ओर झुक जाता है।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ
مُتَابًا ۝

72. तथा जो मिथ्या साक्ष्य नहीं देते, और जब व्यर्थ के पास से गुजरते हैं तो सज्जन बन कर गुजर जाते हैं।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّفَرَةَ وَأَمَتُوا بِالْقَوْلِ
عَرَاكًا ۝

73. और जब उन्हें शिक्षा दी जाये उनके पालनहार की आयतों द्वारा उन पर नहीं गिरते अन्धे तथा बहरे हो² करा।

وَالَّذِينَ إِذَا فُلُّوا فِي الْبَارِئِ مِنْهُمْ لَمْ يَجِدُوا عِلْمًا
صَحًّا وَعَمِيًّا ۝

प्रश्न किया कि कौन सा पाप सब से बड़ा है? फरमाया यह कि तुम अल्लाह का साझी बनाओ जब कि उस ने तुम को पैदा किया है। मैं ने कहा फिर कौन सा? फरमाया अपनी संतान को इस भय से मार दो कि वह तुम्हारे साथ खायेगी, मैं ने कहा फिर कौन सा? फरमाया अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करना। यह आयत इसी पर उतरी। (देखिये सहीह बुखारी, 4761)

1 इब्ने अब्बास ने कहा जब यह आयत उतरी तो मक्का वासियों ने कहा हम ने अल्लाह का साझी बनाया है और अवैध जान भी मारी है तथा व्यभिचार भी किया है तो अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह बुखारी, 4765)

2 अर्थात् आयतों में सांच विचार करते हैं।

74. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों तथा संतानों से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें आज्ञाकारियों का अग्रणी बना दे

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَنْزَلِكُمْ
وَدْرَجَةً أَزْوَاجًا آبِيْنًا وَأَعْمَلْنَا الْفَعْلَةَ (مَائًا)

75. यही लोग उच्च भवन अपने धैर्य के बदले में पायेंगे, और स्वागत किये जायेंगे उस में आशीर्वाद तथा सलाम के साथ।

أُولَئِكَ يَجْرُونَ الْعَرْشَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا
رُوحَنَا وَسَلَامًا

76. वे उस में सदावासी होंगे, वह अच्छा निवास तथा स्थान है।

خَالِدِينَ فِيهَا حَسْبَتْ لَهُمْ أَنْشَارُهَا

77. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि तुम्हाग उसे पुकारना न⁽¹⁾ हो तो मेरा पालनहार तुम्हारी क्या परवाह करेगा? तुम ने तो झुठला दिया है, तो शीघ्र ही (उसका दण्ड) चिपक जाने वाला होगा।

قُلْ مَا يَعْبُودُ الْكَاذِبِينَ لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ
كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ بِرُسَائِهِمْ

1 अर्थात् उस से प्रार्थना तथा उस की इबादत न करो।

सूरह शुअरा 26

سورة الشعراء

सूरह शुअरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 227 आयतें हैं

- इस में मक्का के मुर्ति पूजकों के आरोप का खण्डन किया गया है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शायर (कवि) कहते थे। और कवि और नबी के बीच अन्तर बताया गया है।
- इस में धर्म प्रचार के लिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चिन्ता और विरोधियों के आप के साथ उपहास की चर्चा है।
- इस में मूसा अलैहिस्सलाम तथा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एकेश्वरवाद के उपदेश को प्रस्तुत किया गया है जो उन्होंने अपनी जाति को दिया था।
- इस में कई नवियों के धर्म प्रचार और उन के विरोधियों के दुश्परिणाम को बताया गया है।
- अनेक युग में नवियों के आने और उन के उपदेश में समानता का भी वर्णन है।
- कुर्आन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है।

अल्साह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, सीन, मीम।
2. यह प्रकाशमय पुस्तक की आयतें हैं।
3. संभवत आप अपना प्राण¹ खो देने वाले हैं कि वे ईमान लाने वाले नहीं हैं।

طه

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

لَعَلَّكَ بَآئِعَةٌ لَّنَفْسِكَ إِلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ٥

1 अर्थात् उन के ईमान न लाने के शोक में

4. यदि हम चाहें तो उतार दें उन पर आकाश से ऐसी निशानी कि उन की गर्दनें उस के आगे झुकी कि झुकी रह जायें।¹
5. और नहीं आती है उन के पालनहार अति दयावान् की ओर से कोई नई शिक्षा परन्तु वे उस से मुख फेरने वाले बन जाते हैं।
6. तो उन्होंने ने झुठला दिया, अब उनके पास शीघ्र ही उस की सूचनायें आ जायेंगी जिस का उपहास वे कर रहे थे।
7. और क्या उन्होंने ने धरती की ओर नहीं देखा कि हम ने उस में उगाई हैं बहुत सी प्रत्येक प्रकार की अच्छी वनस्पतियाँ?
8. निश्चय ही इस में बड़ी निशानी (लक्षण)² है। फिर उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
9. तथा वास्तव में आप का पालनहार ही प्रभुत्वशाली अति दयावान् है।
10. (उन्हें उस समय की कथा सुनाओ) जब पुकारा आप के पालनहार ने मूसा को, कि जाओ अत्याचारी जाति³ के पास।

إِنْ كُنَّا نَزَّلُ حَلِيقَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً
فَلَقَدْ أَتَيْنَاهُمْ لَهَا فَخْرِيْنَ ۝

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرِ مِنَ الرَّحْمَنِ مُعَذِّبٍ إِلَّا
كَانُوا عَنْهُ مُتْعِبِيْنَ ۝

فَقَدْ كَذَّبُوا فَلْيَأْتِهِمْ تِلْكَ آيَاتُ الْكَوْثَرِ
يَسْتَهْزِئُوْنَ ۝

وَلَمْ يَرَوْا فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَبْتَّاهُمْ مِنْ ثَمَرِ
ذُرُوعِهِمْ ۝

إِنْ فِي ذَلِكَ آيَةٌ لِّمَن كَانَ الْكُفْرُ عَنْهُ مُتَمِيزِ ۝

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

وَرَدَّ مُوسَىٰ رَبَّهُ يَأْتِي الْفُؤَادَ الْمَلِكِ ۝

- 1 परन्तु ऐसा नहीं किया, क्यों कि दवाब का इमान स्वीकार्य तथा मान्य नहीं होता।
- 2 अर्थात् अल्लाह के सामर्थ्य की।
- 3 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) दस वर्ष मदन में रह कर भिक्षा वापिस आ रहे थे।

11. फिरऔन की जाति के पास, क्या वे डरते नहीं?
12. उस ने कहा मेरे पालनहार वास्तव में मुझे भय है कि वह मुझे झुठला देगा।
13. और संकुचित हो रहा है मेरा सीना, और नहीं चल रही है मेरी जुवान, अतः वही भेज दे हारून की ओर (भी)।
14. और उन का मुझ पर एक अपराध भी है। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार डालेंगे।
15. अल्लाह ने कहा: कदापि ऐसा नहीं होगा। तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ मुनने¹ वाले हैं।
16. तो तुम दोनों जाओ, और कहो कि हम विश्व के पालनहार के भेजे हुये (रसूल) हैं।
17. कि तू हमारे साथ बनी इसाईल को जाने दे।
18. (फिरऔन ने) कहा: क्या हम ने तेरा पालन नहीं किया है अपने यहाँ बाल्यवस्था में, और तू रहा है हम में अपनी आयु के कई वर्षों?
19. और तू कर गया वह कार्य² जो किया, और तू कृतघ्नों में से है।

قَوْمَ فِرْعَوْنَ الْأَشْقَى

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِي

وَيَصِفُّ صَدْرِي وَأَلْطَفْتُ بَنِي قَارُونَ إِلَيَّ هَرُونَ

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِي

قَالَ كَلَّا، فَاذْهَبْ بِآيَاتِنَا إِنَّكَ مُسَمَّنٌ مُبِينٌ

فَارْتَبَا فِرْعَوْنُ فَقَوْلَا رَبِّ ارْسُولُكَ الْعَبِيدِ

إِنْ أَرْسِلْ مَتَابِينِي إِنْ شَاءَ رَبِّي

قَالَ اللَّهُ تَرْكُوكَ بَيْنَا وَبَيْنَ وَابْنِ قَارُونَ مِنْ غَيْرِكَ وَيَرْكُوكَ

وَقَعَلْتَ قَوْلَكَ الَّذِي صَدَقْتَ وَأَمْتٌ مِنَ الْكَافِرِينَ

1 अर्थात् तुम दोनों की महायत्ना करते रहेंगे।

2 यह उस हत्या काण्ड की ओर संकेत है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) से नबी होने से पहले हो गया था। (देखिये मूरह कसस)

20. (मूसा ने) कहा: मैं ने ऐसा उस समय कर दिया, जब कि मैं अनजान था।

قَالَ تَعْلَمُ إِذْ وَاتَّامَمَ الْعَمَلُ ۚ

21. फिर मैं तुम से भाग गया जब तुम से भय हुआ। फिर प्रदान कर दिया मुझे मेरे पालनहार ने तत्त्वदर्शिता और मुझे धना दिया रसूलों में से।

فَعَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمِجْنَتَكُمْ فَوَهَّبَ لِي رَبِّي حَمًّا
وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

22. और यह कोई उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि तू ने दाम बना लिया है इस्राइल के पुत्रों को।

وَذَلِكَ بِمَا نَصَّبَ اللَّهُ عَلَىٰ أَنْعَمَاتِ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ

23. फिरऔन ने कहा विश्व का पालनहार क्या है?

قَالَ يُرْسَوْنَ وَمَارَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

24. (मूसा ने) कहा आकाशों तथा धरती और उसका पालनहार जो कुछ दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।

قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

25. उस ने उन में कहा जो उस के आम पास थे: क्या तुम सुन नहीं रहे हो?

قَالَ لَيْسَ حَوْلَهُ أَلْسِنَةٌ سَمْعُونَ ۝

26. (मूसा ने) कहा: तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे पूर्वजों का पालनहार है।

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝

27 (फिरऔन ने) कहा वास्तव में तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है पागल है।

قَالَ رَبِّ نَسُوْنَا الَّذِي أَرْسَلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونًا ۝

28. (मूसा ने) कहा वह पूर्व तथा पश्चिम, तथा दोनों के मध्य जो कुछ है सब का पालनहार है।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝

29. (फिरऔन ने) कहा। यदि तू ने कोई पूज्य बना लिया मेरे अनिरिक्त, तो तुझे बदियों में कर दूंगा।

قَالَ لَيْسَ الْمُتَعَذِّاتِ إِلَّا غَيْرِي لِأَجَلَتِكَ مِنَ السَّجَّادِينَ ۝

30. (मूसा ने) कहा: क्या यद्यपि मैं ला दूँ
तेरे पास एक खुली चीज?

31. उसने कहा: तू उसे ला दे यदि मन्चा है।

32. फिर उस ने अपनी लाठी को फेंक
दिया, तो अकस्मात् वह एक प्रत्यक्ष
अजगर बन गयी।

33. तथा अपना हाथ निकाला तो
अकस्मात् वह उज्ज्वल था देखने
वालों के लिये।

34. उस ने अपने प्रमुखों में कहा जो उस
के पास थे वास्तव में यह तो बड़ा
दक्ष जादूगर है।

35. वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती
से निकाल¹ दे अपने जादू के बल
से तो अब तुम क्या आदेश देते हो?

36. सब ने कहा अवसर (समय) दो मूसा
और उसके भाई (के विषय) को, और
भेज दो नगरों में एकत्र करने वालों को।

37. वह तुम्हारे पास प्रत्येक बड़े दक्ष
जादूगर को लाये।

38. तो एकत्र कर लिये गये जादूगर एक
निश्चित दिन के समय के लिये।

39. तथा लोगों से कहा गया कि क्या तुम
एकत्र होने वाले हो² हो?

40. ताकि हम पीछे चले जादूगरों के यदि
वही प्रभुत्वशाली (विजयी) हो जाये।

قَالَ أَوْ لَوْ أَنَّكَ تَهْتَدِ ۖ

قَالَ مَاتَ بِإِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۚ

قَالَیْ عَصَا ۖ فَاِذَا هِیْ تَهْتَٰی ۚ

وَرَءَیْهَا وَاِذَا هِیْ سِیَآءٌ مُّظْهِرِیْنَ ۚ

قَالَ لَیْسَ لِیْ حَوْلَیْ هٰذَا اِلَّا جُرٌّ ۚ

یٰۤاٰیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْ اٰیٰتِ الْاَحْزٰۤاۚ
تَاْمُرُوْنَ ۚ

قَالُوْا اَرْسِلْهُ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِی الْمَدَیْنِیْمَیْنِ ۚ

یٰۤاٰتُوْكَ مِنْ سَحَابٍ مّٰلِیٍّ ۚ

فَجُمِعَ الشّعْرَةُ بِیَوْمَیْنِ یَوْمٍ مّٰلُومٍ ۚ

فَقَالَ لِلَّذِیْنَ هَلْ اَسْتَرْجِعُوْهُنَّ ۚ

لَعَلَّنَا نَسِیْمُ الشّعْرَةِ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰیِبِیْنَ ۚ

1 अर्थात् यह उग्रवाद कर के हमारे देश पर अधिकार कर ले।

2 अर्थात् लोगों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस प्रतियोगिता में अवश्य उपस्थित हों।

41. और जब जादूगर आये, तो फिरऔन से कहा: क्या हमें कुछ पुरस्कार मिलेगा यदि हम ही प्रभुत्वशाली होंगे?

فَلْتَأْتِجَهُ الشَّعْرَةُ قَالُوا لِمَ يَأْتِيَهُمْ إِن لَّهَا آخِرٌ
إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۝

42. उसने कहा हौं, और तुम उस समय (मेरे) समीपवर्तियों में हो जाओगे।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذْ أَهْلُ الشَّقَرَةِ بَيْنَ

43. मूसा ने उन से कहा: फेंको जो कुछ तुम फेंकने वाले हो।

قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمَ مَا لَكُمْ مَلَكُونَ ۝

44. तो उन्होंने ने फेंक दी अपनी रस्मियाँ तथा अपनी लाठियाँ, तथा कहा: फिरऔन के प्रभुत्व की शपथ! हम ही अवश्य प्रभुत्वशाली (विजयी) होंगे।

لَمَّا الْقَاطِبَةُ اللَّهُمَّ وَجَّهَهُمْ وَقَالُوا بَعْضُهُمْ فِرْعَوْنُ
إِنْ لَّكَ نَحْسٌ الْعَالَمِينَ ۝

45. अब मूसा ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वह बना रहे थे।

وَلَقَىٰ مُوسَىٰ خَصَّهُ وَلَئِنْ تَلْقَوْهُمَا لَكُنَّ

46. तो गिर गये सभी जादूगर! सज्दा करते हुये।

قَالُوا الشَّعْرَةُ سَهْدٌ

47. और सब ने कह दिया हम विश्व के पालनहार पर इमान लाये।

قَالُوا الْمَلَكُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

48. मूसा तथा हारून के पालनहार पर।

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

49. (फिरऔन ने) कहा: तुम उस का विश्वास कर बैठे इस से पहले कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है तो तुम्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा मैं अवश्य तुम्हारे हाथों तथा पैरों को विपरीत दिशा¹ स काट दूँगा

قَالَ اسْمُكَ قَبْلَ أَنْ تَكُونَ أَنَّهُ يُبَيِّنُكَ أَيْدِي
عَمَلِكُمُ الْبَحْرَ لَتَسَوَّيَنَّ لَكُمْ يَدَيْكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ جُلَادٍ وَلَا تَحْصِيكُمْ
أَجْمَعِينَ ۝

1 क्यों कि उन्हें विश्वास हो गया कि मूसा (अनैहम्मनाम) जादूगर नहीं बल्कि वह सत्य के उपदेशक है।

2 अर्थात् दायीं हाथ और बायीं पैर या बायीं हाथ और दायीं पैर।

तथा तुम सभी का फौसी दे दूंगा।

50. सब ने कहा: कोई चिन्ता नहीं, हम तो अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

قَالُوا الْأَصِيرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾

51. हम आशा रखते हैं कि क्षमा कर देगा हमारे लिये हमारा पालन-हार हमारे पापों को क्यों कि हम सब से पहले ईमान लाने वाले हैं।

وَأَنَّا ظَنَمُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا حَسْبُ الْكَافِرِينَ ﴿٥١﴾

52. और हम ने मूसा की ओर बह्वी की कि रातों रात निकल जा मेरे भक्तों को ले कर, तुम सब का पीछा किया जायेगा।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَن أَسْرِ بِعِبَادِي هَٰؤُلَاءِ لَا يَمَسُّهُمُ ۚ ﴿٥٢﴾

53. तो फिरऔन ने भेज दिया नगरों में (सेना) एकत्र करने ¹ वालों को।

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ غَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾

54. कि वह बहुत थोड़े लोग हैं।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرَازِمَةٌ يُسَبِّحُونَ ﴿٥٤﴾

55. और (इस पर भी) वह हमें अति क्रोधित कर रहे हैं।

وَالَهُمْ لَعْنَةُ الْغَافِلِينَ ﴿٥٥﴾

56. और वास्तव में हम एक गिरोह हैं सावधान रहने वाले।

وَأَنَّا لَمُهَيِّجُونَ ذُرِّيَّتَهُ ۚ ﴿٥٦﴾

57. अन्ततः हम ने निकाल दिया उन को बागों तथा स्रोतों से।

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَنَّاتٍ وَوُجُوهِ ۚ ﴿٥٧﴾

58. तथा कोषों और उत्तम निवास स्थानों से।

وَالنَّوَارِثَ مَقَامًا كَرِيمًا ﴿٥٨﴾

59. इसी प्रकार हुआ, और हम ने उन का उत्तराधिकारी बना दिया इस्राईल की संतान को।

كَذَٰلِكَ وَأَوْفَيْنَاهُم بِمَا يَدَّٰعُوا رَبَّاهُمْ ۚ ﴿٥٩﴾

1 जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के आदेशानुसार अपने साथियों को ले कर निकल गये तो फिरऔन ने उन का पीछा करने के लिये नगरों में हरकारे भेजे।

60. तो उन्होंने ने उनका पीछा किया घात होते ही।

فَاتَّبَعُوهُمْ مُتَّبِعِينَ ﴿٦٠﴾

61 और जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा: हम तो निश्चय ही पकड़ लिये¹ गये।

فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعَيْنِ قَالَ مُوسَىٰ لِمُوسَىٰ إِنَّكُمْ لَأَمْتَارُونَ ﴿٦١﴾

62. (मूसा ने) कहा: कदापि नहीं, निश्चय मेरे साथ मेरा पालनहार है।

قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾

63. तो हम ने मूसा को बह्नी की, कि मार अपनी लाठी से सागर को, अकस्मात् सागर फट गया, तथा प्रत्येक भाग भारी पर्वत के समान² हो गया।

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَعْرِضْ بِصَاحِبِ الْبَحْرِ ۖ فَانْفَقَ مَكَانَ كُلِّ يَوْمٍ كَالظُّلُمِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

64. तथा हमने समीप कर दिया उसी स्थान के दूसरे गिरोह को।

وَأَنزَلْنَا لَهُمُ الْآخِثِينَ ﴿٦٤﴾

65. और मुक्ति प्रदान कर दी मूसा और उसके सब साथियों को।

وَلَقَبَّأَ مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾

66. फिर हमने डुवों दिया दूसरों को।

لَعَنَّا غَرَقًا الْآخِثِينَ ﴿٦٦﴾

67 वास्तव में इस में बड़ी शिक्षा है, और उन में से अधिकतर लोग इमान वाले नहीं थे।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ لِذَهُمُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾

68. तथा वास्तव में आप का पालनहार निश्चय अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَرَبُّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

69. तथा आप उन्हें सुना दें इब्राहीम का समाचार (भी)।

وَأَنذِرْ عَلَيْهِمْ سَاءَ الْبَعْثِ ﴿٦٩﴾

70. जब उस ने कहा: अपने बाप तथा

لَمَّا قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَصْبِرُونَ ﴿٧٠﴾

1 क्यों कि अब सामने सागर और पीछे फिरऔन की सेना थी।

2 अर्थात् बीच से मार्ग बन गया और दोनों ओर पानी पर्वत के समान खड़ा हो गया।

अपनी जानि से कि तुम क्या पूज रहे हो?

71. उन्होंने ने कहा: हम मूर्तियों की पूजा कर रहे हैं और उन्हीं की सेवा में लगे रहते हैं।

72. उसने कहा: क्या वे तुम्हारी सुनती है जब पुकारते हो?

73. या तुम्हें लाभ पहुँचाती या हानि पहुँचाती है?

74. उन्होंने ने कहा: बल्कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी प्रकार करते हुये पाया है।

75. उस ने कहा: क्या तुम ने कभी (आँख खोल कर) उसे देखा जिसे तुम पूज रहे हो।

76. तुम तथा तुम्हारे पहले पूर्वज?

77. क्यों कि यह सब मेरे शत्रु है पूरे विश्व के पालनहार के सिवा।

78. जिस ने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे मार्ग दर्शा रहा है।

79. और जो मुझे खिलाना और पिलाना है।

80. और जब रोगी होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है।

81. तथा वही मुझे मारेगा फिर¹ मुझे जीवित करेगा।

82. तथा मैं आशा रखता हूँ कि क्षमा

قَالُوا قَبِذْ أَصْنَامَنَا وَطَلْ لَهَا عَیْنٌ ۝

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَ لَكَ لَا تَدْعُهُنَّ ۝

أَوْ يَنْفَعُونَكَ أَوْ يَضُرُّونَ ۝

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذِبًا يَفْعَلُونَ ۝

قَالَ الْفَرِيدُ إِنَّمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۝

أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ۝

وَالَّذِي مَدَدُوا إِلَى الْأَرْبَابِ الْعَظِيمِينَ ۝

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يُعِيدُنِي ۝

وَالَّذِي مَوَّطَعُنِي فَإِنَّ ظِلِّي وَسِيقُنِي ۝

وَقَدْ أَمَرْتُكُمْ فَلَوْ يَشَاءُونَ ۝

وَالَّذِي يُؤْتِنِي بُرُءُنِي فَهُوَ يُجِيبُنِي ۝

وَالَّذِي أَطْعَمَهُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدَّيْرِ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भागने के लिये

कर देगा मेरे लिये मेरे पाप प्रतिकार
(प्रलय) के दिन।

83. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर दे मुझे
तत्त्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर
सदाचारियों में।

رَبِّ قَبْلِي حُكْمًا وَأَخْفِئْ بِلَاحِي

84. और मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर
आगामी लोगों में।

وَجَعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ

85. और बना दे मुझे को सुख के स्वर्ग
का उत्तराधिकारी।

وَجْعَلْ لِي مِنْ دَرَجَةِ النَّعِيمِ

86. तथा मेरे बाप को क्षमा कर दे ॥
वास्तव में वह कुपथों में है।

وَأَعِزَّنِي لَهُ إِنْ كَانَ مِنَ الْقَاصِينَ

87. तथा मुझे निरादर न कर जिस दिन
सब जीवित किये जायेंगे।

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُخْرَجُونَ

88. जिस दिन लाभ नहीं देगा कोई धन
और न संतान।

يَوْمَ لَا يَقْعَمُ مَالٌ وَلَا نَبْلٌ

89. परन्तु जो अल्लाह के पास स्वच्छ
दिल ले कर आयेगा।

إِلَّا مَنْ آتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ

90. और समीप कर दी जायेगी स्वर्ग
आजाकारियों के लिये।

وَأُنْزِلَتْ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ

91. तथा खोल दी जायेगी नरक कुपथों
के लिये।

وَنُزِّلَتْ الْجَحِيمُ لِلْغَائِبِينَ

92. तथा कहा जायेगा कहाँ है वह जिन्हें
तुम पूज रहे थे?

فَقِيلَ لَهُمْ إِنَّمَا تَتَّبِعُونَ

1 (देखिये मूरह तौबा आयत 114)

2 हदीस में वर्णित है कि प्रलय के दिन इबराहीम अलैहिस्सलाम अपने बाप से मिलेंगे और कहेंगे हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे वचन दिया था कि मुझे पुनः जीवित होने के दिन अपमानित नहीं करेगा। तो अल्लाह कहेगा मैं ने स्वर्ग को काफिरों के लिये अवैध कर दिया है। (महीह बुखारी 4769)

93. अल्लाह के सिवा, क्या वह तुम्हारी सहायता करेंगे अथवा स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं?

مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ سَعَوْهُمْ وَمَنْ يَنْصُرُهُمْ

94. फिर उस में औंधे झोंक दिये जायेंगे वह और सभी कुपथ।

قُلْ كَيْدُ أَهْلِهَا هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

95. और इब्लीस की सेना सभी।

وَجُنُودِ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۝

96. और वह उस में आपस में झगड़ते हुये कहेंगे:

قَالُوا وَهَذَا بَشَرٌ أَتَىٰ مِنَّا بَشِيرًا ۝

97. अल्लाह की शपथ! वास्तव में हम खुले कुपथ में थे।

تَاللَّهِ إِنَّا كُنَّا مِنَّا صَبِينَ ۝

98. जब हम तुम्हें बराबर समझ रहे थे विश्व के पालनहार के।

وَلَقَدْ كُنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

99. और हमें कुपथ नहीं किया परन्तु अपराधियों ने।

وَمَا أَظُنُّكُمْ إِلَّا الْبَاطِلُونَ ۝

100. तो हमारा कोई अभिस्तावक (सिफारशी) नहीं रह गया।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ۝

101. तथा न कोई प्रेमी मित्र।

وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ۝

102. तो यदि हमें पुनः संसार में जाना होना¹ तो हम इंसान वालों में हो जायें।

فَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ كَفَرُوا أَفْئِدَةً مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

103. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है। और उन में से अधिकतर इंसान लाने वाले नहीं हैं।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝

104. और वास्तव में आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली² दयावान् है।

وَلَقَدْ رَكِبْتُ الْغَوَاةَ الْعِزَّةَ الْمُزْمِنُ ۝

1 इस आयत में संकेत है कि संसार में एक ही जीवन कर्म के लिये मिलता है और दूसरा जीवन प्रलोक में कर्मों के फल के लिये मिलेगा।

2 परन्तु लोग स्वयं अन्याचार कर के नरक के भागी बन रहे हैं।

105. नूह की जाति ने भी रसूलों को झुठलाया।
كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ
106. जब उन से उन के भाई नूह ने कहा क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो?
وَقَالَ لَهُمْ خُؤُمُهُمْ نُوحٌ لَّا تَتَّقُونَ
107. वास्तव में मैं तुम्हारे लिये एक ¹⁰ रसूल हूँ
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ
108. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो।
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا أَمْرِي
109. मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَتَيْتُمْ إِلَّا وِلْيَ الْعُنْيَيْنِ
110. अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرِي
111. उन्होंने ने कहा क्या हम तुझे मान लें जब कि तेरा अनुसरण पतित (नीच) लोग ¹¹ कर रहे हैं।
قَالُوا الْوَيْلُ مِنَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ الرَّازِلُونَ
112. (नूह ने) कहा मुझे क्या ज्ञान कि वे क्या कर्म करते रहे हैं?
قَالَ وَمَا عَلِمْتُ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ
113. उन का हिस्साब तो बस मेरे पालनहार के ऊपर है यदि तुम समझो।
إِنْ يَصَابِعُكُمْ إِلَّا وِلْيَ لَوْ تَشْعُرُونَ
114. और मैं धुतकारने वाला ¹² नहीं हूँ इमान वालों को।
وَأَنَا لَطِيفٌ بِدُؤَى الْمُؤْمِنِينَ

1 अल्लाह का संदेश बिना कमी और अधिक्ता के तुम्हें पहुँचा रहा है

2 अर्थात् धनी नहीं निर्धन लोग कर रहे हैं।

3 अर्थात् मैं हीन वर्ग के लोगों को जो इमान लाये हैं अपने से दूर नहीं कर सकता जैसा कि तुम चाहते हो।

115. मैं तो बस खुला सावधान करने वाला हूँ।
إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝
116. उन्होंने ने कहा यदि रुका नहीं, हे नूह! तो तू अवश्य पथराव कर के मारे हुये में होगा।
قَالُوا لَيْسَ لَكَ تِلْكَ بِأَيُّهُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ۝
117. उस ने कहा मेरे पालनहार! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया।
قَالَ رَبِّ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي الْكَافِرُونَ ۝
118. अतः तू निर्णय कर दे मेरे और उनके बीच और मुक्त कर दे मूझ को तथा जो मेरे साथ है इमान वालों में मे।
فَالْمُؤْمِنِينَ وَبَيْنَهُمْ قُلُوبٌ مُّحَبِّبَةٌ وَمَنْ يُمْسِكْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝
119. तो हम ने उसे मुक्त कर दिया तथा जो उसके साथ भरी नाव में थे।
فَأَمْنَيْنَهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْمُنَافِئِ الشُّعُوبِ ۝
120. फिर हम ने डुबो दिया उस के पश्चात् शेष लोगों को।
كُلَّمَا حَرَصْتَ بِعَمَلٍ يُبَاقِينَ ۝
121. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है, तथा उन में से अधिकतर इमान लाने वाले नहीं।
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝
122. और निश्चय आप का पालनहार ही अनि प्रभुत्वशाली दयावान् है।
وَرَبِّكَ ذَا بَلَدٍ لَّهُمْ أَغْيَازُ الرَّبِّ ۝
123. झुठला दिया आद (जाति) ने (भी) रसूलों को
كَذَّبَتْ قَوْمُ الْتَّوَسُّوَاتِ ۝
124. जब कहा उन से उनके भाई हूद¹¹ ने क्या तुम डरते नहीं हो?
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودُ الْإِنشِقَاقُونَ ۝
125. वस्तुतः मैं तुम्हारे लिये एक न्यायिक (अमानतदार) रसूल हूँ।
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝
126. अतः अल्लाह से डरो और मेरा
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝

1 आद जाति के नबी हूद (अलैहिससलाम) को उन का भाई कहा गया है क्योंकि वह भी उन्हीं के समुदाय में से था।

अनुपालन करो।

127. और मैं तुम से कोई पारिश्रमिक
(बदला) नहीं माँगता, मेरा बदला तो
बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

128. क्यों तुम बना लेते हो हर ऊँचे स्थान
पर एक यादगार भवन व्यर्थ में।

129. तथा बनाते हो बड़े-बड़े भवन जैसे
कि तुम सदा रहोगे।

130. और जब किमी को पकड़ने हो तो
पकड़ने हो महा अन्याचारी बन कर।

131. तो अम्नाह से डरो और मेरी आज्ञा
का पालन करो।

132. तथा उस से भय रखो जिस ने
तुम्हारी सहायता की है उस से जो
तुम जानते हो।

133. उस ने सहायता की है तुम्हारी
चौपायों तथा संतान से।

134. तथा बागों (उद्यानों) तथा जल
स्रोतों से।

135. मैं तुम पर डरना हूँ भीषण दिन की
यातना से।

136. उन्होंने ने कहा: नसीहत करो या न
करो, हम पर सब समान है।

137. यह वान तो बस प्राचीन लोगों की
नीति^[1] है।

138. और हम उन में से नहीं हैं जिन को

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَتَيْتُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾

أَتَبْنُونَ بِحُلِّ رِيعٍ إِيَّاهُ تُعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

وَتَقْدِرُونَ مَصَارِعَ لَكُمْ تُعَجِّلُونَ ﴿١٢٩﴾

وَأَذِ الْأَعْلَىٰ تَطْلُعُ بَعَارِيهِ ﴿١٣٠﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

وَالْعَوَالِدَ الَّذِي أَمَرَ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٣١﴾

أَمَلَكُمْ بِأَنْعَامِهِمْ وَبَنِينَ

وَجَنِّتٍ وَغُلُوبٍ ﴿١٣٢﴾

إِنَّ آعَافَ عَلَيْكُمْ مُدَابُّ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٣﴾

قَالُوا سَوَاءٌ أُنْصِتَ أَوْ عُلِّتَ أَمْرًا تَكُنْ مِنَ
الْوَعْدِينَ ﴿١٣٤﴾

إِنَّ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٥﴾

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ﴿١٣٦﴾

1 अर्थात् प्राचीन युग से होनी चली आ रही है।

यातना दी जायेगी।

139. अन्ततः उन्होंने ने हमें झुठला दिया तो हम ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और लोगो में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

فَكَذَّبُوهُ فَأَعْلَقْنَاهُمْ فِي ذَٰلِكَ آيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝

140. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَلَا رَيْبَ لَكَ لَهْمُ الْعَمَلِ ۖ تَرْجِعُهُمْ

141. झुठला दिया समुद्र ने भी ' रसूलों को।

كَيْ يَتَّخِذَ السُّوءُ الْمُتَّبِعِينَ ۝

142. जब कहा, उन से उनके भाई सालेह ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَتُؤْمِنُونَ ۝

143. वास्तव में मैं तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝

144. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَآلِيعُوا أَمْرًا

145. तथा मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई परिश्रमिक, मेरा परिश्रमिक तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنِّي أَخَافُ الْآخِلَ ۖ إِنَّ الْعَالِينَ ۝

146. क्या तुम छोड़ दिये जाओगे उस में जो यहाँ है निश्चिन्त रह कर?

أَتَذْكُرُونَ فِي بُيُوتِهِمْ ۖ إِنِّي

147. आगों तथा स्रोतों में।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

148. तथा खेतों और खजूरों में जिन के गुच्छे रस भरे हैं।

وَالنَّخْلُ وَالسَّرَّارُ مَلْمَأَةٌ فَضِيحَةٌ ۝

149. तथा तुम पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो गर्व करते हुये।

وَتَقْصُرُونَ مِنَ الْجِبَالِ لِيُؤْتَا فِيهِم مِّنَ

- 1 यहाँ यह बात याद रखने की है कि एक रसूल का इन्कार सभी रसूलों का इन्कार है क्योंकि सब का उपदेश एक ही था।

150. अतः अब्राह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا رِضْوَانَهُ
151. और पालन न करो उल्लघनकारियों के आदेश का।
وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُشْرِكِينَ
152. जो उपद्रव करने हैं धरती में और सुधार नहीं करते।
الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ
153. उन्होंने ने कहा वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ
154. तू तो बस हमारे समान एक मानव है। तो कोई चमत्कार ला दे, यदि तू सच्चा है।
مَا أَنْتَ إِلَّا نَسْفَةٌ مِمَّا فُتِنَ بِهَا قَوْمٌ لَمْ تَكُن مِنَ الصّٰدِقِينَ
155. कहा यह ऊँटनी है¹ इस के लिये पानी पीने का एक दिन है और तुम्हारे लिये पानी लेने का निश्चित दिन है।
قَالَ هَذِهِ آيَةٌ لِّهَا يُؤْتَى وَلَمْ يُتْرَكْ يَوْمَ تَسْأَلُونَ
156. तथा उसे हाथ न लगाना बुराई से, अन्यथा तुम्हें पकड़ लेगी एक भीषण दिन की यातना।
وَلَا تَسْتَوِي أَعْيُنُهُمْ فِيمَا أُخِذَ كِفْلُهُمْ يَوْمَ يُنْفَخُ
157. तो उन्होंने ने बध कर दिया उसे, अन्ततः पछनाने वाले हो गये।
الْعِظَامِ وَهِيَ تَأْكُلُ مِنْ عَيْنَيْهِ
158. और पकड़ लिया उन्हें यातना ने। वस्तुतः इस में बड़ी निशानी है, और नहीं थे उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले।
فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ كَانُوا يَكْفُرُونَ
159. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ
160. झुठला दिया लून की जाति ने (भी) रसूलों को।
كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ

1 अर्थात् यह ऊँटनी चमत्कार है जो उन की माँग पर पत्थर से निकली थी।

161. जब कहा उन मे उन के भाई लून
ने क्या तुम डरते नही हो?

إِذْ قَالَ لَهُمُ ابْنُ مَرْيَمَ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

162. वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये एक
अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُم مِّنْ أَمِينٌ

163. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा
अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

164. और मैं तुम से प्रश्न नही करता
इस पर किसी पारिश्रमिक (बदले)
का मेरा बदला तो बस सर्वलोक के
पालनहार पर है।

وَأَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِن تَرْجَاتٍ
عَلِيمِينَ

165. क्या तुम जाते¹ हो पुरुषों के पास
संसार वासियों में से?

أَتَأْتُونَ الذَّكَرَ إِن مِّن الْعَالَمِينَ

166. तथा छोड़ देने हो जिसे पैदा किया
है तुम्हारे पालनहार ने अर्थात् अपनी
पत्नियों को बल्कि तुम एक जाति
हो सीमा का उल्लंघन करने वाली।

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لَّكُمْ
قَوْمٌ عَدُونَ

167. उन्होंने ने कहा: यदि तू नही रुका, हे
लून! तो अवश्य तेरा बहिष्कार कर
दिया जायेगा।

قَالُوا لَئِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ الْبَاطِلَ كَرِهْنَا لَكُمْ

168. उस ने कहा वास्तव में मैं तुम्हारे
कर्तून से बहुत अप्रसन्न हूँ।

قَالَ إِنِّي لَعَلَّكُمْ مِنَ الْعَالَمِينَ

169. मेरे पालनहार! मुझे बचा ले तथा मेरे
परिवार को उस से जो बह कर रहे हैं।

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَلْعَلُونَ

170. तो हम ने उसे बचा लिया तथा उस
के सभी परिवार को।

فَجَبَّاهُ وَآهْلَهُ أَجْمَعِينَ

1 इस कुकर्म का आरंभ संसार में लून (अलैहिस्सलाम) की जाति से हुआ। और अब यह कुकर्म पूरे विश्व में विशेष रूप से यूरोपीय सभ्य देशों में व्यापक है और समलैंगिक विवाह को यूरोप के बहुत से देशों में वैध मान लिया गया है जिस के कारण कभी भी उन पर अल्लाह की यातना आ सकती है।

- 171 परन्तु एक बुढ़िया¹ को जो पीछे
रह जाने वालों में थी। إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ
- 172 फिर हम ने विनाश कर दिया दूसरों
का। فَنَدَمْنَا الْأَمِيرِينَ
173. और वर्षा की उन पर एक घोर²
वर्षा। तो बुरी हो गई डराये हुये
लोगों की वर्षा। وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا مُّثَوِّدِينَ
174. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी
(शिक्षा) है। और उन में अधिकतर
ईमान लाने वाले नहीं थे। إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ
175. और निश्चय आप का पालनहार ही
अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है। وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ
- 176 झुठला दिया ऐदका³ वालों ने
रसूलों को। كَذَّبَ أَصْحَابُ الْمُنَافِقِ الَّذِينَ يُبَدِّلُونَ
177. जब कहा, उन में शुऐब ने: क्या
तुम डरते नहीं हो? إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ
178. मैं तुम्हारे लिये एक विश्वासनीय
रसूल हूँ। إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ
179. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा
का पालन करो। فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا
180. और मैं नहीं माँगता तुम से इस पर
कोई पारिश्रमिक मेरा पारिश्रमिक
तो वस समस्त विश्व के पालनहार
पर है। وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ كُنْتُمْ الْعَاقِلِينَ

1 इस से अभिप्रेत लून (अलैहिस्सलाम) की काफिर पत्नी है।

2 अर्थात् पत्थरों की वर्षा। (देखिये मूरह हूद आयत 82-83)

3 ऐदका का अर्थ झाड़ी है। यह मद्यन का क्षेत्र है जिस में शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया था।

181. तुम नाप तौल पूरा करो, और न बनो कम देने वालों में
 وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝
182. और तौलो सीधे तराजू में।
 وَإِنِّي بِالْمُسْتَظْلِمِينَ ۝
183. और मत कम दो लोगों को उन की चीजें और मत फिरो धरती में उपद्रव फैलाते।
 وَلَا تَحْسَبُوا النَّاسَ شَيْئًا وَلَهُمْ آسَنُ مِنَ الْأَرْضِ مُغْشِينَ ۝
184. और डरो उस से जिस ने पैदा किया है तुम्हें तथा अगले लोगों को।
 وَالْعَالَمِينَ ۝
185. उन्हो ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।
 قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝
186. और तू तो बस एक पुरुष ॥ है हमारे समान। और हम तो तुझे झूठों में समझने हैं।
 وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَحْنُ إِلَّا كَاذِبِينَ ۝
187. तो हम पर गिरा दे कोई खण्ड आकाश का यदि तू सच्चा है।
 فَأَسْقِطْ عَلَيْهَا سَفَاهًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝
188. उस ने कहा: मेरा पालनहार भली प्रकार जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।
 قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

1 यहाँ यह बात विचारणीय है कि सभी विगत जातियों ने अपने रसूलों को उन के मानव होने के कारण नकार दिया। और जिस ने स्वीकार भी किया तो उस ने कुछ युग व्यतीत होने के पश्चान अति कर के अपने रसूलों को प्रभु अथवा प्रभु का अंश बना कर उन्हीं को पूज्य बना लिया। तथा ऐकेश्वरवाद को कड़ा आधार पहुँचा कर मिश्रणवाद का द्वार खोल लिया और कुपथ हो गये वर्तमान युग में भी इसी का प्रचलन है और इस का आधार अपने पूर्वजों की रीतियों को बनाया जाता है। इस्लाम इसी कुपथ का निवारण कर के ऐकेश्वरवाद की स्थापना के लिये आया है और वास्तव में यही सन्धर्म है।

हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मुझे वैसे न बड़ा चढ़ाना जैसे ईसाइयों ने मर्यम के पुत्र (इसा) को बड़ा चढ़ा दिया। वास्तव में मैं उस का दास हूँ। अतः मुझे अब्बाह का दास और उस का रसूल कहो। (देखिये- सहीह बुखारी, 3445)

189. तो उन्होंने ने उसे झुठला दिया।
अन्ततः पकड़ लिया उन्हें छाया के¹
दिन की यातना ने। वस्तुतः वह एक
भीषण दिन की यातना थी।

فَلَمَّا بُوِّدَ لَاحِدَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلُمَاتِ كَانَ
عَذَابُ يَوْمِهِمْ عَذَابًا

190. निश्चय इस में एक बड़ी निशानी
(शिक्षा) है। और नहीं थे उन में
अधिकतर ईमान लाने वाले।

إِنِّي ذَلِيلٌ لَدَيْكَ وَمَا كَانَ الْمُشْرِكُونَ مُؤْمِنِينَ

191. और वास्तव में आप का पालनहार
ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَلَا رَيْبَ لَكَ مِنَ الْعَرْشِ الرَّحِيمِ

192. तथा निःसंदेह यह (क़र्आन) पूरे विश्व
के पालनहार का उतारा हुआ है।

وَلَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا نَجْمُ الْعَالَمِينَ

193. इसे ले कर रूहुल अमीन² उनगा।

تَمْلِكُ بِهِ الرُّسُلُ الْأَمِينَ

194. आप के दिल पर ताक़ि आप हो
जायें सावधान करने वालों में।

عَلَى قَلْبِكَ يَتْلُونَ مِنَ الْمُنِيرِينَ

195. खुली अर्बी भाषा में।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ

196. तथा इस की चर्चा³ अगले रसूलों
की पुस्तकों में (भी) है।

وَلَا يَلْفِيقُ إِلَّا الْأَوَّلِينَ

197. क्या और उन के लिये यह निशानी
नहीं है कि इस्राईलियों के विद्वानों⁴

أَوَّلَمَّا بَيْنَ لَهُمْ آيَةً أَنْ يَقُولُوا بَيْنِيَ الْمَوَدَّةَ

1 अर्थात् उनकी यातना के दिन उन पर बादल छा गया। फिर आग बरसने लगी और धरती कंपित हो गई। फिर एक कड़ी ध्वनी ने उन की जाने ले ली। (इब्ने कसीर)

2 रूहुल अमीन से अभिप्राय आदरणीय फरिश्ता जिवरील (अलैहिस्सलाम) हैं। जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह की ओर से बह्नी लेकर उतरते थे जिस के कारण आप रसूलों की और उन की जानियों की दशा से अवगत हुये। अतः यह आप के सत्य रसूल होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

3 अर्थात् सभी आकाशीय ग्रन्थों में अन्तिम नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन तथा आप पर पुस्तक क़र्आन के अवतरित होने की भविष्यवाणी की गई है। और सब नबियों ने इस की शुभ सूचना दी है।

4 बनी इस्राईल के विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि

उन्हें लाभ पहुँचाया जाता रहा।

208. और हम ने किसी बस्ती का विनाश नहीं किया परन्तु उस के लिये सावधान करने वाले थे।

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۝

209. शिक्षा देने के लिये, और हम अत्याचारी नहीं हैं।

وَلَقَدْ عَلَّمْنَا الْاِنْسَانَ مَا كَثِيرٌ ۝

210. तथा नहीं उतरे हैं (इस कुआँन) को ले कर शैतान।

وَمَا تَزَالُ تَزِيدُ الشَّيْطَانَ ۝

211. और न योग्य है उन के लिये और न वह इस की शक्ति रखते हैं।

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝

212. वास्तव में वह तो (इस के) मुनने से भी दूर¹ कर दिये गये हैं।

إِنَّمَا عَنِ الشُّعْرِ الْمُعْزَلِ ۝

213. अतः आप न पुकारें अब्राह के साथ किसी अन्य पूज्य को अन्यथा आप दण्डितों में हो जायेंगे।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا الْاٰخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُضْلِينَ ۝

214. और आप सावधान कर दें अपने समीपवर्ती² सम्बन्धियों को।

وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ اٰقِبَتِهِمْ ۝

1 अर्थात् इस के अवतरित होने के समय शैतान आकाश की ओर जाते हैं तो उल्का उन्हें भस्म कर देते हैं।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो आप सफा पर्वत पर चढ़े और कुरैश के परिवारों को पुकारा। और जब सब एकत्र हो गये और जो स्वयं नहीं आ सका तो उस ने किसी प्रतिनिधि को भेज दिया। और अबू लहब तथा कुरैश आ गये तो आप ने फरमाया यदि मैं तुम से कहूँ कि उस वादी में एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने वाली है तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे? सब ने कहा हाँ। हम ने आप को सदा ही सच्चा पाया है। आप ने कहा मैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से सावधान कर रहा हूँ। इस पर अबू लहब ने कहा तेरा पूरे दिन नाश हो। क्या हमें इसी के लिये एकत्र किया है? और इसी पर सूरह लहब उतरी। (सहीह बुखारी 4770)

215. और झुका दे अपना बाहु¹ उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।

وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

216. और यदि वह आप की अवज्ञा करे तो आप कह दें कि मैं निर्दोष हूँ उस से जो तुम कर रहे हो।

وَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَكْفُمُونَ ۝

217. तथा आप भरोसा करें अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् पर।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝

218. जो देखता है आप को जिस समय (नमाज में) खड़े होते हैं।

الَّذِي يَرَاكَ جِثًا تَقُومُ ۝

219. और आप के फिरने को सज्दा करने⁽²⁾ वालों में।

وَلَقَدْ كُنَّا مِنَ الْمُعِدِّينَ ۝

220. निःसंदेह वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

221. क्या मैं तुम सब को बताऊँ कि किस पर शैतान उतरते हैं?

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ مِمَّنْ تَقُولُ الشَّيَاطِينُ ۝

222. वे उतरते हैं प्रत्येक झूठे पापी³ पर।

تَقُولُ عَلَى كُلِّ وَادٍ مِّنْهُمْ ۝

223. वह पहुँचा देते हैं सुनी सुनाई बातों को और उन में अधिकतर झूठे हैं।

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ فَيَسْمَعُونَ فَيَكُونُونَ ۝

224. और कवियों का अनुसरण वह के हुये लोग करते हैं।

وَالشُّعْرَاءُ يُتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۝

225. क्या आप नहीं देखते कि वह प्रत्येक

الَّذِينَ تَرَىٰ فَتَحَمِلُهُمُ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ۝

1 अर्थात् उस के साथ विनम्रता का व्यवहार करें।

2 अर्थात् प्रत्येक समय अकेले हों या लोगों के बीच हों।

3 हदीस में है कि फरिश्ते वादल में उतरते हैं और आकाश के निर्णय की बात करते हैं जिसे शैतान चोरी से सुन लेते हैं। और ज्योतिषियों को पहुँचा देते हैं फिर वह उस में सौ झूठ मिलाते हैं। (महीह बुखारी 3210)

बादी में फिरते^[1] हैं।

226. और ऐसी बात कहने है जो करते नहीं।

227 परन्तु वह (कवि) जो^[2] ईमान लाये तथा सदाचार किये और अब्राह का बहुत स्मरण किया, तथा बदला लिया इस के पश्चात कि उन के ऊपर अन्याचार किया गया। तथा शीघ्र ही जान लेंगे जिन्हों ने अत्याचार किया है कि वह किस दुष्परिणाम की ओर फिरते हैं।

وَأَنْتُمْ تَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ رَبِّهِمْ مَا ظَلَمُوا شَيْئًا ﴿٢٢٧﴾
الَّذِينَ عَلِمُوا أَنِّي مُنْقَلَبٌ مُبْقَرُونَ ﴿٢٢٨﴾

1 अर्थात् कल्पना की उड़ान में रहते हैं।

2 इन से अभिप्रेत हस्मान बिन साबित आदि कवि हैं जो कुरैश के कवियों की भर्त्सना किया करते थे। (देखिये: सहीह बुखारी 4124)

सूरह नम्ल 27

سورة النمل

सूरह नम्ल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 93 आयत है।

- इस सूरह में बताया गया है कि कूर्आन को अल्लाह की किताब न मानने और शिर्क में न रुकने का सब से बड़ा कारण सत्य को नकारना है जो मायामोह में मग्न रहते हैं उन पर कूर्आन की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं होता और वे नबियों के इतिहास से कोई शिक्षा नहीं लेते।
- इस में मूसा (अलैहिस्सलाम) को फिरऔन तथा उस की जाति की ओर भेजने और उन के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया उस का दुष्परिणाम बताया गया है।
- दावूद तथा सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के विशाल राज्य की चर्चा कर के बताया गया है कि वह कैसे अल्लाह के आभारी भक्त बने रहे जिस के कारण (सच्चा) की रानी बिल्कीस इस्लाम लायी।
- इस में लूत तथा सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति के उपद्रव का दुष्परिणाम बताया गया है तथा एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- यह घोषणा भी की गई है कि कूर्आन ने मार्ग दर्शन की राह खोल दी है और भविष्य में भी इस के सत्य होने के लक्षण उजागर होते रहेंगे।

अल्लाह के नाम से जो अन्यल्ल
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता सीन, मीम। यह कूर्आन तथा प्रत्यक्ष पुस्तक की आयतें हैं।
2. मार्ग दर्शन तथा शुभसूचना है उन ईमान लाने वालों के लिये।
3. जो नमाज की स्थापना करते तथा जकात देते हैं और वही हैं जो अन्तिम दिन (परलोक) पर विश्वास रखते हैं।

هَٰذَا نَزَّلْنَاهُ فِي الْغُرَىٰ ۚ وَكَتَّابُ الْيُسُفَىٰ

عَذَابُ الْيُسُفَىٰ ۚ وَكَتَّابُ الْيُسُفَىٰ

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ
بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿١﴾

4. वास्तव में जो विश्वास नहीं करते परलोक पर हम ने शोभनीय बना दिया है उन के कर्मों को, इस लिये वह बहकें जा रहे हैं।
5. यही है जिन के लिये बुरी यातना है तथा परलोक में वही सर्वाधिक क्षति ग्रस्त रहने वाले हैं।
6. और (हे नबी!) वास्तव में आप को दिया जा रहा है कुर्आन एक तत्वज्ञ सर्वज्ञ की ओर से।
7. (याद करो) जब कहा, "मूसा ने अपने परिजनो मैं ने आग देखी है, मैं तुम्हारे पास कोई सूचना लाऊंगा या लाऊंगा आग का कोई अंगार, ताकि तुम तापो
8. फिर जब आया वहाँ, तो पुकारा गया- शुभ है वह जो अग्नि में है और जो उस के आस-पास है, और पवित्र है अब्राह सर्वलोक का पालनहार।
9. हे मूसा यह मैं हूँ अब्राह अनि प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ।
10. और फेंक दे अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा की रेंग रही है जैसे वह कोई सर्प हो तो पीठ फेर कर भागा और पीछे फिर कर देखा भी नहीं। (हम ने कहा): हे मूसा भय न कर, वास्तव में नहीं भय करते मेरे पास रसूल।
11. उस के सिवा जिस ने अत्याचार

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ رَبُّنَا لَهُمْ
أَعْمَالُهُمْ فَهُمْ يَعْمَقُونَ ٥

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ سُوءٌ لَّا يَحْسُرُونَ ٦

وَأَنَّكَ لَتَلَقَّىٰ بُرْهَانَ مِنْ عِنْدِ خَلْقِكَ عِنْدِهِ

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَائِغَةً فِيهَا
مَقْرُورٌ يُؤْتِيهِمْ مِنْهَا شَرِبَاتٍ فَتَتَحَنَّنُ عَلَيْهِمْ ٧

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ مَنْ
حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٨

يُؤْتِيهِمْ مِنْهُ لَبَنٌ أَلْبَنٌ لَّهُمُ الْغَيْرُ مِنَ الْغَيْرِ ٩

وَالَّذِي عَصَا إِبْرَاهِيمَ أَن يَزُجَّهُ يَزَاجًا ١٠
مُذِبًّا وَكَانَ يُعَقِّبُ يُونُسَ أَن يَخْفَىٰ لِيَلْجَأَ
لِذُنَى الْمَرْسُوتِ ١١

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ تَدَلَّىٰ حَسْبًا تَعَدَّ سُوءٌ فُؤَادٍ

- 1 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मद्घन से आ रहे थे। रात्री के समय वह मार्ग भूल गया और शीत से बचाव के लिये आग की अवश्यकता थी

عَفْوًا رَحِيمًا

किया हो, फिर जिस ने बदल लिया अपना कर्म भलाई से बुराई के पश्चात्, तो निश्चय मैं अति क्षमी दयावान् हूँ।

12. और डाल दे अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के, नौ निशानियों में से है, फिर और तधा उस की जाति की ओर (ले जाने के लिये) वास्तव में वे उल्लघन कारियों में हैं।

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجَ بَيْضًا مِّنْ غَيْرِ
سَوَهِ سَيِّئَةٍ يَتَّبِعُهَا أَتَىٰ رَأَىٰ يَرْعَوْنَ وَقَوْمُهُمْ
كَانُوا قَوْمًا مُّسِيئِينَ ۝

13. फिर जब आयी उन के पास हमारी निशानियाँ आँख खोलने वाली, तो कह दिया कि यह नो खुला जादू है।

فَلَمَّا سَاءَ لَهُمْ أَيْتًا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهَا مِنْ عِزِّ
رَبِّهِمْ ۝

14. तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें, अत्याचार तथा अभिमान के कारण, जब कि उन के दिलों ने उन का विश्वास कर लिया, तो देखो कि कैसा रहा उपद्रवियों का परिणाम?

وَحَمْدُ رَبِّهَا وَاسْتِغْنَاهَا أَنفُسُهُمْ ظُلُمًا وَعُتُورًا
فَأَنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَرِيشَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝

15. और हम ने प्रदान किया दावूद तथा सुलैमान को ज्ञान¹, और दोनों ने कहा प्रशंसा है उस अल्लाह के लिये जिस ने हमें प्रधानता दी अपने बहुत से ईमान वाले भक्तों पर।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ مِنْ عِلْمِنَا
الَّذِي نَحْنُ عَلَيْنَا بِمَا يَفْعَلُونَ ۝

16. और उत्तराधिकारी हुआ सुलैमान दावूद का तथा उस ने कहा हे लोगो! हमें सिखाई गई है पक्षियों की बोली, तथा हमें प्रदान की गई है सब चीज से कुछ। वास्तव में

وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عِلْمِنَا
مُنْطَوَّقٌ أَلَكُمُ الْكَلِمَاتُ وَأَوَّيْنَاهُنَّ كُلَّ شَيْءٍ لِّزَيْنٍ هَدَّ هَدَىٰ
الْقَصَصُ لِيُذَكِّرَ ۝

1 अर्थात् विशेष ज्ञान जो नबूवन का ज्ञान है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किया और इसी प्रकार अन्तिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस क़ुरआन द्वारा प्रदान किया है।

यह प्रत्यक्ष अनुग्रह है।

17. तथा एकत्र कर दी गयी सुलैमान के लिये उस की सेनायें जिनमें तथा मानवों और पक्षी की, और वह व्यवस्थित रखे जाते थे।

18. यहाँ तक कि वे (एक बार) जब पहुँचे च्यूटियों की घाटी पर, तो एक च्यूटी ने कहा हे च्यूटियो! प्रवेश कर जाओ अपने घरों में ऐसा न हो कि तुम्हें कुचल दे सुलैमान तथा उस की सेनायें, और उन्हें ज्ञान न हो।

19. तो वह (सुलैमान) मुस्करा कर हँस पड़ा उस की बात पर, और कहा हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो पुरस्कार तू ने मुझ पर तथा मेरे माता पिता पर किया है तथा यह कि मैं सदाचार करता रहूँ जिस से तू प्रमन्न रहें और मुझे प्रवेश दे अपनी दया से अपने सदाचारी भक्तों में।

20. और उस ने निरीक्षण किया पक्षियों का तो कहा क्या बात है कि मैं नहीं देख रहा हूँ हुदहुद को, या वह अनुपस्थितों में है।

21. मैं उसे कड़ी यातना दूँगा या उसे बध कर दूँगा या मेरे पास कोई खुला प्रमाण लाये।

22. तो कुछ अधिक समय नहीं बीता कि उस ने (आकर) कहा मैं ने ऐसी बात

وَحِثُّ سُلَيْمَانَ جُودًا مِنَ الْجِبِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ
فَهُمْ يُؤْتُونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا تَوَاصَلُوا وَادِ السَّمِیْ قَالَ مُلْكُهُ بِأَيُّهَا
الْقُلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ لَا يَغْطِيَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ
وَجُودًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

فَسَبَّحَ بِحَمْدِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْفِنِي
لَئِنْ أَشْكُرَ بِعْمَلِكَ لَسَوْفَ أَكُنَّ مِنَ الْغَافِلِينَ
وَالَّذِي بَيْنَ يَدَيْ أَعْمَلُ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِفَنِي
بِرَحْمَتِكَ لَعَلَّيْ جَاءَكَ الشَّكِيُّ ۝

وَتَقَعَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ هَذَا
كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ۝

لَأَعَذِّبَنَّكَ عَذَابًا شَدِيدًا أَوَّلًا أَوْ آخِرًا أَمْ لِي آيَاتِي
يُنْظَرُونَ ۝

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ مَحْطُ بِهِ

का ज्ञान प्राप्त किया है जो आप के ज्ञान में नहीं आयी है, और मैं लाया हूँ आप के पास "सबा"¹ से एक विश्वासनीय सूचना।

وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ﴿٢٣﴾

23. मैं ने एक स्त्री को पाया जो उन पर राज्य कर रही है, और उसे प्रदान किया गया है कुछ न कुछ प्रत्येक वस्तु में तथा उस के पास एक बड़ा भव्य सिंहासन है।

إِلَى وَجَدْتُ أَمْرًا فَمِنْهُمْ وَادَّيْتُ مِنْ كُلِّ مَكْنًى وَأَمَّا عَرْشُ عِظِيمٍ ﴿٢٤﴾

24. मैं ने उसे तथा उस की जानि को पाया कि सज्दा करते हैं सूर्य को अल्लाह के सिवा और शोभनीय बना दिया है उन के लिये शैतान ने उन के कर्मों को और उन्हें रोक दिया है सुपथ से, अतः वह सुपथ पर नहीं आते।

وَجَدْتُ قَوْمًا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَرَبِّكَ اللَّهُمَّ الشَّيْطَانُ أَغْوَاكُمْ فَصَدَّ عَنْ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٥﴾

25. (शैतान ने शोभनीय बना दिया है उन के लिये) कि उस अल्लाह को सज्दा न करें जो निकालता है गुप्त वस्तु को² आकाशों तथा धरती में, तथा जानता वह सब कुछ जिसे तुम छुपाते हो तथा जिसे व्यक्त करते हो।

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الْكَافِرُ يَجْعَلُ الْحَبْلَ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٦﴾

26. अल्लाह जिस के अनिरक्ति कोई बंदनीय नहीं, जो महा सिंहासन का स्वामी है।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٧﴾

27. (मुलैमान ने) कहा हम देखेंगे कि तू सन्य वादी है अथवा मिथ्यावादियों में से है।

قَالَ سَتَرْتُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٨﴾

28. जाओ यह मेरा पत्र लेकर, और उसे

إِنْ هَبَّ يَنْفَيْهِ هَذَا فَاللَّهُ الْيَهُودَ كَذَّبُوا عَنْهُمْ

1 सबा यमन का एक नगर है।

2 अर्थात् वर्षा तथा पौधों को।

डाल दो उन की ओर, फिर वापिस आ जाओ उन के पास से, फिर देखो कि वह क्या उत्तर देते हैं।

فَانظُرْنَا إِلَىٰ رَجْعِهِمْ ۝

29. उस ने कहा हे प्रमुखो! मेरी ओर एक महत्व पूर्ण पत्र डाला गया है।

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَآءِ إِنَّ إِلَيْنَا لَأَمْرٌ كَبِيرٌ ۝

30. वह सुलैमान की ओर से है और वह अल्लाह अत्यंत कृपाशील दयावान् के नाम से (आरंभ) है।

إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسُوءِ الظَّنِّ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

31. कि तुम मुझ पर अभिमान न करो तथा आ जाओ मेरे पास आज्ञाकारी हो कर।

أَلَا تَعْلَمُونَ أَنَّ إِلَيْنَا مَسِيرٌ ۝

32. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मुझे परामर्श दो मेरे विषय में, मैं कोई निर्णय करने वाली नहीं हूँ जब तक तुम उपस्थित न रहो।

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَآءِ أَفَتَكُنَّ فِي أَمْرِي مَائِمَةً قَاطِعَةً أَمْ أَهْلِي سَاهِدُونَ ۝

33. सब ने उत्तर दिया कि हम शक्तिशाली तथा बड़े योद्धा हैं, आप स्वयं देख लें कि आप का क्या आदेश देना है।

قَالُوا لَعَنُوكُمُ أُولَآئِكَ أَفْكَاةٌ وَلَوْلَا بَابُ سُلَيْمَانَ لَكُنَّا بِأَمْرِهِمْ ۝

34. उस ने कहा राजा जब प्रवेश करते हैं किसी बस्ती में तो उसे उजाड़ देते हैं और उस के आदरणीय वारिसों को अपमानित बना देते हैं और वे ऐसा ही करेंगे।

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا آيَرَةً لِّهَا وَمَا كَذِبٌ يُفْعَلُونَ ۝

35. और मैं भेजने वाली हूँ उन की ओर एक उपहार फिर देखती हूँ कि क्या लेकर आते हैं दून?

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَرْحَةً بِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝

36. तो जब वह (दून) आया सुलैमान के पास, तो कहा: क्या तुम मेरी सहायता धन से करते हो? मुझे अल्लाह ने जो दिया है उस से उत्तम है।

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتَسْقُونَ بِمَالٍ فَمَا لَكُمْ لِي بِهَدِيَّتِكُمْ أَفَكُنَّ كَأْفَاكُنَّ ۝

जो तुम्हें दिया है, बल्कि तुम्ही अपने उपहार से प्रसन्न हो रहे हो।

37. वापिस हो जाओ उन की ओर, हम लायेंगे उनके पास ऐसी सेनायें जिन का वह सामना नहीं कर सकेंगे, और हम अवश्य उन्हें उस (वस्ती) से निकाल देंगे अपमानित कर के और वह तुच्छ (हीन) हो कर रहेंगे।

38. सुलैमान ने कहा: हे प्रमुखो! तुम में से कौन लायेगा¹ उस का सिंहासन इस से पहले कि वह आ जायें आज्ञाकारी हो कर।

39. कहा एक अतिकाय ने जिनो में से मैं ला दूंगा आप के पास उसे इस से पूर्व कि आप खड़े हो अपने स्थान से, और इस पर मुझे शक्ति है मैं विश्वासनीय हूँ।

40. कहा उस ने जिस के पास पुस्तक का ज्ञान था: मैं ला दूंगा उसे आप के पास इस से पहले कि आप की पलक झपके, और जब देखा उसे अपने पास रखा हुआ, तो कहा: यह मेरे पालनहार का अनुग्रह है, ताकि मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्नता। और जो कृतज्ञ होता है वह अपने लाभ के लिये होता है तथा जो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा पालनहार निस्पृह महान् है।

وَجَعَلْنَا لِكُلِّ شَيْءٍ قِيَمًا
وَلَنُخْرِجَنَّ عَنْهَا آدِلَةً وَفَرَصَينَ ۝

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوْا اأَلَمْرَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوْا اأَلَمْرَ
يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوْا اأَلَمْرَ ۝

قَالَ عَلِيٌّ بْنُ أَبِي نَجْرٍ أَلَيْسَ بِهِ قَبْلُ أَنْ تَقُومَ
مِنْ مَقَامِكَ قَدَائِي عَلَيْهِ لَقَوِيْ أَمِيْنٌ ۝

قَالَ أَلَيْسَ عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنْ كِتَابِ أَلَيْسَ
بِهِ قَبْلُ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَآهُ
مُسْتَقْبِرًا وَعِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ
لِيَبْلُوَنِيْ أَشْكُرَ أَمْ أَكْفُرُ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا
يُشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ
كَرِيْمٌ ۝

- 1 जब सुलैमान ने उपहार वापिस कर दिया और धमकी दी तो रानी ने स्वयं सुलैमान (अल्लैहिस्सलाम) की सेवा में उपस्थित होना उचित समझा। और अपने सेवकों के साथ फलस्तीन के लिये प्रस्थान किया, उस समय उन्होंने ने राज्यमदस्यों से यह बान कही।

41. कहा परिवर्तन कर दो उस के लिये उसके सिंहासन में, हम देखेंगे कि वह उसे पहचान जाती है या उन में से हो जाती है जो पहचानने न हों।

42. तो जब वह आई तो कहा गया क्या ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने कहा वह तो मानो वही है। और हम तो जान गये थे इस से पहले ही और आज्ञाकारी हो गये थे।

43. और रोक रखा था उसे (इंमान से) उन (पूज्यों ने) जिस की वह इबादत (बंदना) कर रही थी अल्लाह के सिवा। निश्चय वह क़ाफ़िरो की जाति में से थी।

44. उस से कहा गया कि भवन में प्रवेश करा तो जब उसे देखा तो उसे कोई जलाशय (हौद) समझी और खोल दी¹ अपनी दोनों पिंडलियाँ (मुलैमान ने) कहा यह शीशे से निर्मित भवन है। उस ने कहा मेरे पालनहार! मैं ने अत्याचार किया अपने प्राण² पर और (अब) मैं इस्लाम लाई मुलैमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये।

45. और हम ने भेजा समूद की ओर उनके भाई सालेह को कि तुम सब इबादत (बंदना) करो अल्लाह की, तो अकस्मान् वे दो गिरोह होकर लड़ने लगे।

46. उस ने कहा हे मेरी जाति! क्यों तुम

قَالَ يٰٓاَيُّهَا عَمَلُوهُنَّ نَظَرْنَا بِمَا كُنْتُمْ
فِي الْاٰيَاتِ لَا يَتَذَكَّرُ

مِمَّا جَاءَتْ قَبْلَ اِهْكَاءِ عَرْشِكَ قَالَتْ
كَانَتْ هُوَ وَاَوْرَثَتْ الْجَاهِلِيَّةَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّ
مُتَّبِعِيْنَ

وَصَدَقَ قَوْلُهَا كَانَتْ لَعْنَةُ مَنْ دُونِهَا
كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ

قِيلَ لَهَا اَدْخِلِي الصُّرَّةَ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَبِطَتْ
لُحَّةً وَكَلَّمَتْ عَنْهَا قَالَتْ اِنَّهُ صُرَّةٌ
لِّمَعْرُودِيْنَ قَوْلًا نَّزَّلَتْ بِهِ رَبِّي فَلَمَّكَتْ لَفِيْهِ
وَاَسْلَمْتُ مَعَ سَيِّدِيْ يٰٓكُوْرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا اِلٰى ثُوْدَ اَحَدِهِمْ صٰلِحًا
اَعْبُدْ وَاَللّٰهُ يٰٓاَدَا هُمْ قَوْمِيْ فَيُفْضِلُوْنَ

قَالَ يٰٓكُوْرَبِّهِمْ اَسْتَعِظُوْنَ بِالنَّيْتَةِ قَبْلَ

1 पानी से बचाव के लिये कपड़े पाईचे ऊपर कर लिये।

2 अर्थात् अन्य की पूजा उपासना कर के।

शीघ्र चाहते हो बुराई¹ को भलाई से पहले? क्यों तुम क्षमा नहीं माँगते अल्लाह से, ताकि तुम पर दया की जाये?

الْحَسَنَةُ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٧﴾

47. उन्होंने ने कहा: हम ने अपशकुन लिया है तुम से तथा उन से जो तेरे साथ हैं। (सालेह ने) कहा- तुम्हारा अपशकुन अल्लाह के पास² है, बल्कि तुम लोगों की परीक्षा हो रही है।

قَالُوا ظَنُّنَا بُرْءًا وَبِئْسَ مَعْنًى قَالِ ظَنُّكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَيْنَ أَلَمٍ أَوْ مُرْتَمَعٍ ۚ

48. और उस नगर में नौ व्यक्तियों का एक गिरोह था जो उपद्रव करने थे धरती में और सुधार नहीं करने थे।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يَصْلَحُونَ ۚ

49. उन्होंने ने कहा: आपस में शपथ लो अल्लाह की कि हम अवश्य रात्री में छापा मार देंगे सालेह तथा उसके परिवार पर, फिर कहेंगे उस (सालेह) के उत्तराधिकारी से, हम उपस्थित नहीं थे उस के परिवार के विनाश के समय, और निःसंदेह हम सत्यवादी (सच्चे) हैं।

قَالُوا نَوَاسِئُومُ يَدْعُونَ لِسَمِيَّتِهِ وَأَهْلِهِ ثُمَّ لَمَّا قُتِلَ يُونُسُ مَا يَشِيرُ بِهِ إِلَّا مَهْيُتٌ أَهْلِهِ وَنَا الصَّابِقُونَ ۚ

50. और उन्होंने ने एक षडयंत्र रचा, और हम ने भी एक उपाय किया, और वे समझ नहीं रहे थे।

وَمَكَرُوا مَكْرًا وَكُنَّا مَكْرًا سَوِيًّا وَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۚ

51. तो देखो कैसा रहा उन के षडयंत्र का परिणाम? हम ने विनाश कर दिया उन का तथा उन की पूरी जाति का।

وَنَظَرُ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مُكْرِهِمْ إِنَّهُمْ يَخِفُّونَهُمْ وَكُوفِهِمْ أَجْمَعِينَ ۚ

52. तो यह उन के घर है उजाड़ पड़े हुये

فَبَدَّتْ بَنُوهُمْ خَاوِيَةً يَدْعُونَ إِلَىٰ ذِيكَ

1 अर्थात् ईमान लाने के बजाये इन्कार क्यों कर रहे हो?

2 अर्थात् तुम पर जो अकाल पड़ा है वह अल्लाह की आर से है जिसे तुम्हारे कुकर्मों के कारण अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है। और यह अशुभ मेरे कारण नहीं बल्कि तुम्हारे कुकर्म के कारण है। (फन्हूल कदीर)

उन के अत्याचार के कारण, निश्चय
इस में एक बड़ी निशानी है उन
लोगों के लिये जो ज्ञान रखते हैं।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَعْلَمُونَ

53. तथा हम ने बचा लिया उन्हें जो ईमान
लाये, और (अब्राह से) डर रहे थे।

وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ

54. तथा लून को (भेजा), जब उस
ने अपनी जाति में कहा क्या तुम
कुकर्म कर रहे हो जब कि तुम¹
आखें रखते हो?

وَلَوْ طَرَفْتَ لَ يَقُولُونَ آتَانُونَكَ الْفَاحِشَةَ
وَأَنْتُمْ تَبْهَرُونَ

55. क्या तुम पुरुषों के पाम जाने हो
काम वामना की पूर्ति के लिये? तुम
लोग बड़े ना समझे हो।

أَهَآئِكُمْ لِمَ تَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ
النِّسَاءِ ذَلِكُمْ قَوْمٌ تُجَاهِلُونَ

56. तो उस की जाति का उत्तर वम
यह था कि उन्होंने ने कहा लून के
परिजनों को निकाल दो अपने नगर
से वास्तव में यह लोग बड़े पवित्र
बन रहे हैं।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ
لَوْ طَرَفْتَ لَقَدْ رَأَيْنَا نَاسٌ يُتَفَهَرُونَ

57. तो हम ने बचा लिया उसे तथा उस
के परिवार को, उस की पत्नी के
सिवा, जिसे हम ने नियत कर दिया
पीछे रह जाने वालों में।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ فَذَرَتْهُمْ مِنَ
الْغَيْبِ

58. और हम ने उन पर बहुत अधिक
वर्षा कर दी। तो बुरी हो गई
सावधान किये हुये लोगों की वर्षा।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ثَقِيلًا مَطَرًا ثَقِيلًا

59. आप कह दें सब प्रशंसा अब्राह के
लिये है, और सलाम है उस के उन
भक्तों पर जिन को उस ने चुन

فَإِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ وَسَمِعَ عَلَى عِبَادِهِ يُؤْمِنُونَ
أَصْطَفَىٰ لَهُ اللَّهُ خَيْرًا لِّمَا يُشْرِكُونَ

1 (देखिये मूरह आराफ, 84 और मूरह हूद 82, 83)। इस्लाम में स्त्री से भी
अस्वभाविक सभोग वर्जित है। (सुनन नसाई, हदीस नं॰ - 8985 और सुनन
इब्ने माजा, हदीस नं॰ 1924)।

लिया क्या अल्लाह उत्तम है या जिसे वह साझी बनाते हैं?

60. या वह है जिस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की और उनारा है तुम्हारे लिये आकाश में जल, फिर हम ने उगा दिया उस के द्वारा भव्य बाग तुम्हारे बस में न था कि उगा देते उस के वृक्ष, तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि यही लोग (सत्य से) कतरा रहे हैं।

61. या वह है जिस ने धरती को रहने योग्य बनाया तथा उस के बीच नहरें बनायी, और उस के लिये पर्वत बनाये, और बना दी दो सागरों के बीच एक रोका तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।

62. या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनना है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करने हो।

63. या वह है जो तुम्हें राह दिखाता है सूखे तथा सागर के अँधेरो में, तथा भेजता है वायुओं को शुभ सूचना देने के लिये अपनी दया (करुणा) से पहले, क्या कोई और पूज्य है अल्लाह के साथ? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

64. या वह है जो आरंभ करता है

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنبِتُوا شَجَرَهَا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّادِقِينَ ۝

أَمَّنْ حَمَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْكَافِرِينَ لَا يَخْلُقُونَ

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُ لَكُم مَخْرَجًا مِنَ الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الظَّالِمِينَ ۝

أَمَّنْ يُهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيَّحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝

أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ

उत्पत्ति को फिर उसे दुहरायेगा
तथा जो तुम्हें जीविका देता है
आकाश तथा धरती से, क्या कोई
पुज्य है अल्लाह के साथ? आप कह
दें कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम
सच्चे^[1] हो

65. आप कह दें कि नहीं जानता है जो
आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को
अल्लाह के सिवा, और वे नहीं जानते
कि कब फिर जीवित किये जायेंगे।

66. बल्कि समाप्त हो गया है उन का
ज्ञान आखिरत (परलोक) के विषय
में, बल्कि वे द्विधा में है, बल्कि वे
उस से अंधे हैं।

67. और कहा काफिरों ने: क्या जब
हम हो जायेंगे मिट्टी तथा हमारे
पूर्वज तो क्या हम अवश्य निकाले
जायेंगे।

68. हमें इस का वचन दिया जा चुका है
तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले,
यह तो वस अगलों की बनायी हुई
कथायें हैं।

69. (हे नबी!) आप कह दें कि
चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि
कैसा हुआ अपराधियों का परिणाम।

يُرْزَقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ مَرَّةً مَعًا مَلَكُوتًا
قُلْ مَا تَأْتِيهِمْ تِلْكَ الْآيَاتُ كُنُوزًا لِلْمُنْظَرِينَ ۝

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ
إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

بَلْ أَذْرَكَ عَلَىٰ هُمُومِ الْآخِرَةِ - بَلْ هُمْ فِي
شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ فِي غَرْبٍ كَعَمُونَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا كُنُوزٌ أُنْزِلَ
وَأَنبَاءُ يَوْمٍ أُنْذِرْتُمْ لَهُ خُشُوعًا ۝

لَقَدْ وَعَدْنَا هَٰذَا لَنُفَعَنَّهُ وَبِأَنَّا مِنَ قَبْلِ
إِنْ هَٰذَا إِلَّا كَسَاحِطٍ يُرْوَىٰ ۝

قُلْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

1 आयत नं- 60 से यहाँ तक का सारांश यह है कि जब अल्लाह ने ही पूरे विश्व की उत्पत्ति की है और सब की व्यवस्था वही कर रहा है, और उस का कोई साक्षी नहीं तो फिर यह मिथ्या पूज्य अल्लाह के साथ कहाँ से आ गये? यह तो ज्ञान और समझ में आने की बात नहीं और न इस का कोई प्रमाण है

2 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी समाधियाँ से जीवित निकाले जायेंगे।

70. और आप शोक न करें उन पर और न किसी सकीर्णता में रहें उस से जो चालें वह चल रहे हैं।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ

71. तथा वह कहने हैं कब यह धमकी पूरी होगी यदि तुम सच्चे हो?

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

72. आप कह दें सभव है कि तुम्हारे समीप हो उस में से कुछ जिसे तुम शीघ्र चाहते हो।

قُلْ عَلَىٰ أَنْ يَكُونَ رَدٌّ لَكُمْ تَعَصَىٰ آلِيَّ سَتَجِدُنَ

73. तथा निःसंदेह आप का पालनहार बड़ा दयालु है लोगों¹ पर, परन्तु उन में से अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ

74. और वास्तव में आप का पालनहार जानता है जो छुपाने है उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْتَنُونَ

75. और कोई छुपी चीज नहीं है आकाश तथा धरती में परन्तु वह खुली पुस्तक में² है।

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ

76. निःसंदेह यह कुरआन वर्णन कर रहा है इस्राईल के संतान की समक्ष उन अधिकतर वानों को जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَفْضُلُ عَلَىٰ بَيْتِي يَسْرَهُ نِيلَ الْأَنْدَالُوسِ هُوَ فِيهِ يَحْتَمِلُونَ

77 और वास्तव में वह मार्ग दर्शन तथा दया है ईमान वालों के लिये।

وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ ذُرِّيَّةَ الْمُؤْمِنِينَ

78. निःसंदेह आप का पालनहार³ निर्णय कर देगा उन के बीच अपने आदेश

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ

1 अर्थात् लोगों को अपने अनुग्रह से अवसर देता रहता है।

2 इस से तात्पर्य (लौहे महफूज) सुरक्षित पुस्तक है जिस में सब कुछ अंकित है।

3 अर्थात् प्रलय के दिनों और सत्य तथा असत्य को अलग कर के उस का बदला देगा।

से, तथा वही प्रबल सब कुछ जानने वाला है।

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

79 अतः आप भरोसा करें अल्लाह पर वस्तुतः आप खुले मत्स्य पर हैं।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝

80 वास्तव में आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों को। और न सुना सकेंगे वहरों को अपनी पुकार, जब वह भागे जा रहे हों पीठ फेर⁽¹⁾ कर।

إِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَى وَلَا تُسْمِعُ الْقَسَمَ الْإِنْعَادَ إِذْ وَكَلُوا مُذِيرِينَ ۝

81. तथा आप अंधे को मार्ग दर्शन नहीं दे सकते उन के कुपथ से, आप तो बस उसी को सुना सकते हैं जो ईमान रखता हो हमारी आयतों पर फिर वह आज्ञाकारी हों।

وَمَا آتَاكَ بِهِدًى لَعَنَى اللَّهُ عَنْ صَلَاتِهِمْ
رَبِّ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ يَتَّبِعُنَا فَهُم
مُسْمِعُونَ ۝

82. और जब आ जायेगा बात पूरी होने का समय उन के ऊपर⁽²⁾, तो हम निकालेंगे उन के लिये एक पशु धरती से जो बात करेगा उन⁽³⁾ से कि लोग हमारी आयतों पर

وَرَادَّ أَوْفَى الْقَوْلِ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً
مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَالْوَا
يِلِقَ إِلَّا يُوقِنُونَ ۝

1 अर्थात् जिन की अतरान्मा मर चुकी हो, और जिन की दुराग्रह ने सत्य और असत्य का अन्तर समझने की क्षमता खो दी हो।

2 अर्थात् प्रलय होने का समय।

3 यह पशु वही है जो प्रलय के समीप होने का एक लक्षण है जैसा कि हदीस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि प्रलय उस समय तक नहीं होगी जब तक तुम दस लक्षण न देख लो, उन में से एक पशु का निकलना है (देखिये सहीह मुस्लिम हदीस नं: 2901)

आप का दूसरा कथन यह है कि सर्व प्रथम जो लक्षण होगा वह सूर्य का पश्चिम से निकलना होगा तथा पूर्वान्ध से पहले पशु का निकलना इन में से जो भी पहले होगा शीघ्र ही दूसरा उस के पश्चात् होगा। (देखिये सहीह मुस्लिम हदीस नं: 2941)

और यह पशु मानव भाषा में बात करेगा जो अल्लाह के सामर्थ्य का एक चिन्ह होगा।

विश्वास नहीं करते थे।

83. तथा जिस दिन हम घेर लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह उन का जो झुठलाते रहे हमारी आयतों को, फिर वह सब (एकत्र किये जाने के लिये) रोक दिये जायेंगे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا يَمُوتُونَ
يَكْذِبُ بَابُ يَأْتِيَنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ عَذَابٌ

84. यहाँ तक कि जब सब आ जायेंगे तो अल्लाह उन से कहेगा: क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया जब कि तुम ने उन का पूरा ज्ञान नहीं किया, अन्यथा तुम और क्या कर रहे थे?

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ
تَحِيطُوا بِهَا جَمِئًا ۖ أَتَذْكُرُونَ ۝

85. और सिद्ध हो जायेगा यातना का वचन उन के ऊपर उन के अत्याचार के कारण। तब वह बात नहीं कर सकेंगे।

وَوَقَّعَ الْقَوْلَ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ
لَا يَنْصَحُونَ ۝

86. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने रात बनाई नाकि वह शान्त रहें उस में तथा दिन को दिखाने वाला।¹ वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ (लक्षण) हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهَا
وَالنَّهَارَ مَطْعَمًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ۝

87. और जिस दिन फँका जायेगा² सूर (नरसिंघा) में, तो घबरा जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु वह जिसे अल्लाह चाहे, तथा सब उस (अल्लाह) के समक्ष आ जायेंगे बिबश हो कर।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي السُّورِ نَفْثٌ مِّنْ فِي
السَّمَوَاتِ وَمِنْ فِي الْأَرْضِ ۚ إِلَّا مَن شَاءَ
اللَّهُ ۚ وَلِكُلِّ تَوَكُّدٍ دَجِيزٌ ۝

88. और तुम देखने हो पर्वतों को तो उन्हें समझते हो स्थिर (अचल) है, जब

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسِبُهَا جَمْدًا ۖ وَهِيَ كَالْعِزْمَرِ

1 जिस के प्रकाश में वह देखें और अपनी जीविका के लिये प्रयास करें।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

कि वह (उस दिन) उड़ेंगे बादल के समान यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज को निश्चय वह भली भाँति सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

89. जो भलाई¹ लायेगा, तो उस के लिये उस में उत्तम (प्रतिफल) है और वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय रहने वाले होंगे।

90. और जो बुराई लायेगा, तो वही झोक दिये जायेंगे औंधे मुँह नरक में (तथा कहा जायेगा): तुम्हें वही बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे हो।

91. मुझे तो बस यही आदेश दिया गया है कि इस नगर (मक्का) के पालनहार की इबादत (बंदना) करूँ जिस ने उसे आदरणीय बनाया है, तथा उसी के अधिकार में है प्रत्येक चीज, और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में से रहूँ।

92. तथा कुर्आन पढ़ता रहूँ, तो जिस ने सुपथ अपनाया तो वह अपने ही लाभ के लिये सुपथ अपनायेगा। और जो कुपथ हो जाये तो आप कह दें कि वास्तव में मैं तो बस सावधान करने वालों में से हूँ।

93. तथा आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है वह शीघ्र तुम्हें दिखा देगा अपनी निशानियाँ जिन्हें

السَّحَابِ تُصْغِرُ اللَّهُ إِلَهِىَ أَتَعْلَمَ كُلَّ شَيْءٍ
رَبُّهُ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨٩﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَجَاءَ بِخَيْرٍ قِيمَتِهَا وَهَمُّ مَنْ قَرَأَ
يُؤْتِيهِمُ الْبُخْرَى ﴿٩٠﴾

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَلَبَتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ مِنْ
جُحُودٍ إِلَّا مَا كَسَبَتْ فَعَمَلُونَ ﴿٩١﴾

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذَا الْبَلَدِ وَاللَّهُ يَبْدَأُ
حَرَمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٢﴾

وَأَنْ أَتْلُو الْقُرْآنَ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَكُونُ لِنَفْسِهِ
وَمَنْ ضَلَّ فَلَا يَلْمِزُ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿٩٣﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَاصْبِرُوا إِنَّهَا
وَمَا رَأَيْتُكُمْ بِهَا عَابِدِينَ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

1 अर्थात् एक अल्लाह के प्रति आस्था तथा तदानुसार कर्म ले कर प्रलय के दिन आयेगा।

तुम पहचान¹ लोगे और तुम्हारा
पालनहार उस से अचेत नहीं है जो
कुछ तुम कर रहे हो।

1 (दिखिये सूरह हा मीम सज्दा आयत 53)

सूरह कसस - 28

سورة القصص

सूरह कसस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 88 आयतें हैं।

इस सूरह का नाम इस की आयत नं० 25 में आये हुये शब्द ((कसस)) से लिया गया है जिस का अर्थ वाक्य क्रम का वर्णन करना है इस सूरह में मूसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म, उन का अपने शत्रु के भवन में पालन-पोषण, फिर उन के मद्यन जाने और दस वर्ष के पश्चात् अपने परिजनो के साथ अपने देश वापिस आने और राह में नबूबत और चमत्कार मिलने और फिरऔन तथा उस की जाति के ईमान न लाने के कारण अपनी सेना के साथ डुबो दिये जाने का पूरा विवरण है जिस से यह बताया गया है कि अल्लाह जो कुछ करना चाहता है उस के समाधन इस प्रकार बना देता है कि किसी को उस का ज्ञान भी नहीं होता। इसी प्रकार किसी को नबी बनाने के लिये आकाश और धरती में कोई एलान नहीं किया जाता। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कैसे और कब नबी हो गये।

- इस में यह बताया गया है कि अल्लाह जिस से काम लेना चाहता है उसे किसी राज्य और सेना की सहायता की आवश्यकता नहीं होती और अन्ततः वही सफल होता है।
- इस में यह संकेत भी है कि सत्य के विरोधी चमत्कार की माँग तो करते हैं किन्तु वह चमत्कार देख कर भी ईमान नहीं लाने जैसा कि मूसा (अलैहिस्सलाम) की जाति ने किया और स्वयं अपना विनाश कर लिया।
- यह पूरी सूरह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य नबी होने का प्रमाण भी है क्योंकि हजारों वर्ष पुरानी मूसा (अलैहिस्सलाम) की पूरी स्थिति का विवरण इस प्रकार वही दे सकता है जिसे अल्लाह ने बह्नी द्वारा यह सब कुछ बताया हो। अन्यथा आप स्वयं निरक्षर थे और अरब में आप के पास ऐसे साधन भी नहीं थे जिस से आप यह सब कुछ जान सकें।
- इस में मक्का के काफ़िरो को कुछ ईसाईयो के क़ुर्आन पाक सुन कर ईमान लाने पर लज्जित किया गया है कि तुम ने अपने घर की बात नहीं मानी।

- और इस के अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा देते हुये सत्य पर स्थित रहने का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طسٓ

1. ता, सीन, मीमा
2. यह इस खुली पुस्तक की आयतें हैं।
3. हम आप के समक्ष मुना रहें हैं मूसा तथा फिरऔन के कुछ समाचार सत्य के साथ उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।
4. वास्तव में फिरऔन ने उपद्रव किया धरती में और कर दिया उस के निवासियों को कई गिरोह। वह निर्बल बना रहा था एक गिरोह को उन में से, बध कर रहा था उन के पुत्रों को और जीवित रहने देता था उन की स्त्रियों को। निश्चय वह उपद्रवियों में से था।
5. तथा हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दें उन्हीं को प्रमुख और बना दें उन्हीं को¹ उत्तराधिकारी।
6. तथा उन्हें शक्ति प्रदान कर दें धरती में और दिखा दें फिरऔन तथा हामान और उन की सेनाओं को उन की ओर से वह जिस से वह डर रहे² थे।

تِلْكَ الْكِتَابُ الْمُبِينُ

تَنَالُوا عَلَيْكَ مِنْ نَدْرِ مُوسَىٰ ذُرِّيَّتَهُ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضِعُّ مِنْهُ لَمَّا آمَنَ وَنَجَّيْنَاهُ مِنْ غَرَسٍ وَإِنَّا لَهُ لَنَكِيدِينَ

وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَىٰ إِلَهِ رَبِّنَا نَمُنُّ عَلَىٰ الْأَرْضِ لَتَجْعَلَهُنَّ أُمَّةً وَنَجْعَلَهُنَّ الْيُوسُفِينَ

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَخَرَجَ الْأَوَّادُونَ وَهَامَانَ وَقَارَانَ وَقَارَانَ وَقَارَانَ وَهَامَانَ وَجَبَّوْدَهُمَا مِنْهُمْ كَانُوا يُجَادِلُونَ

- 1 अर्थात् मिस्र देश का राज्य उन्हीं को प्रदान कर दें।
- 2 अर्थात् बनी इस्राईल के हाथों अपने राज्य के पतन में।

- 7 और हम ने बह्वी¹ की मूसा की माता की ओर कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस पर भय हो तो उसे सागर में डाल दे, और भय न कर और न चिन्ता कर, निःसंदेह हम बीपस लायेंगे उसे तेरी ओर, और बना देंगे उसे रसूलों में से।
8. तो ले लिया उसे फिरऔन के कर्मचारियों ने² ताकि वह बने उन के लिये शत्रु तथा दुःख का कारण। वास्तव में फिरऔन तथा हामान और उन की सेनायें दोषी थीं।
9. और फिरऔन की पत्नी ने कहा: यह मेरी तथा आप की आँखों की ठण्डक है। इसे बध न करो, संभव है हमें लाभ पहुंचाये या उसे हम पुत्र बना लें और वह समझ नहीं रहे थे।
10. और हो गया मूसा की माँ का दिल व्याकुल समीप था कि वह उस का भेद खोल देती यदि हम आश्वासन न देते उस के दिल को, ताकि वह हो जाये विश्वास करने वालों में।
- 11 तथा (मूसा की माँ ने) कहा: उस की बहन से कि तू इस के पीछे पीछे जा तो उस ने उसे दूर ही दूर से देखा और उन्हें इस का आभास तक न हुआ।
12. और हम ने अवैध (निषेध) कर दिया

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا
خَفِيَ عَلَيْهِ وَالْقِيَرَىٰ فِي الْيَمِّ وَلَا تَحْزَنِي
ۚ إِنَّا بِأَعْيُنِنَا ذُرِّيَّتَكَ ۚ وَهَبْنَا لَهَا
الْحُسَيْنَيْنِ ۝

كَالْقِطْعَةِ مِنَ الذُّرَىٰ ۚ فَكَفَرُوا بِهِمْ وَحَزَنًا
رَّأَىٰ مِنْ قَوْمِهِ ۚ وَهَامَانَ وَجُودَهُمَا
كَاتُوا خِطْبَيْنِ ۝

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرْتُ عَيْنِي ۖ
وَلَوْ لَا كُفْتُ لَوَدَّ عَسَىٰ أَنْ يَمْلِكَا
أَوْ تَتَحَدَّ ۚ وَلَئِنْ لَمْ يَنْتَفِرُوا ۝

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَرَّغًا ۚ إِن كَادَتْ
لَتَجِدِي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَفَعْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا
إِلْتِمَاسًا مِنَ الْمُسْمِينِ ۝

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ عَنْ
جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَحَزَنًا مَّا عَلَيْهِ الْمُرَاضِعُ مِنْ قَبْلِ مَا لَتْ هَلْ

- 1 जब मूसा का जन्म हुआ तो अल्लाह ने उन के माता के मन में यह ज्ञान डाल दी।
- 2 अर्थात् उसे एक सद्क में रख कर सागर में डाल दिया जिसे फिरऔन की पत्नी ने निकाल कर उसे (मूसा को) अपना पुत्र बना लिया।

उस (मूसा) पर दाईयों को इस से ¹ पूर्वी तो उस (की बहन) ने कहा: क्या मैं तुम्हें न बताऊँ ऐसा घराना जो पालनपोषण करे इस का तुम्हारे लिये तथा वह उस के शुर्भाचिन्तक हों?

13. तो हम ने फेर दिया उसे उस की माँ की ओर ताकि ठण्डी हो उस की आँख और चिन्ता न करे, और ताकि उसे विश्वास हो जाये कि अल्वाह का वचन सच्च है, परन्तु अधिकतर लोग विश्वास नहीं रखते।

14. और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और उस का विकास पूरा हो गया तो हम ने उसे प्रबोध तथा ज्ञान दिया। और इसी प्रकार हम बदला देते हैं सदाचारियों को।

15. और उस ने प्रवेश किया नगर में उस के बान्धियों की अचेतना के समय, और उस में दो व्यक्तियों को लड़ते हुये पाया, यह उस के गिरोह से था और दूसरा उस के शत्रु में ² से। तो उसे पुकारा उस ने जो उस के गिरोह से था उस के विरुद्ध जो उस के शत्रु में से था। जिस पर मूसा ने उसे घूँसा मारा और वह मर गया मूसा ने कहा: यह शैतानी कर्म है। वास्तव में वह शत्रु है खुला कुपथ करने वाला।

16. उस ने कहा हे मेरे पालनहार! मैं ने

أَدْرَكْتُمْ عَلَىٰ أَيْمَنِ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَصِيبٌ ۖ

فَوَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أَيْمَنِ كَفَرَ بِهَا وَلَا تَعْلَمُونَ
وَلَمْ نَعْلَمْ أَنَّ وَعْدَ الْمَوْحِيِّ وَلَكِنَّ الْكَافِرَ
لَا يَتْلُونَ ۖ

وَلَقَدْ بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ شَيْبُهُ حَتَّىٰ وَفَّيْنَا
وَكُنَّا بِذُنُوبِهِمْ نَنصِفُ ۖ

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِنْ أَهْلِهَا
فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَذَا مِنْ شِيعَةِ
وَهَذَا مِنْ عَدُوٍّ فَاسْتَعَاذَ الْكَافِرُ مِنْ شِيعَتِهِ
عَلَىٰ الْكَافِرِ مِنْ عَدُوٍّ فَوَكَّرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ
قَالَ هَذَا مِنْ عَدُوِّكَ فَاتَّبَعْنَاهُ مِنْ غَيْرِ
مَعْرِفَةٍ ۖ

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرْنَا

1 अर्थात् उस की माता के पास आने से पूर्वी।

2 अर्थात् एक इसाइली तथा दूसरा किन्नी फिरऔन की जाति से था।

अपने ऊपर अत्याचार कर लिया,
तू मुझे क्षमा कर दे। फिर अल्लाह ने
उसे क्षमा कर दिया। वास्तव में वह
क्षमाशील अति दयावान् है।

17. उस ने कहा: उस के कारण जो तू
ने मुझ पर पुरस्कार किया है अब मैं
कदापि अपराधियों का सहायक नहीं
बनूंगा।

18. फिर प्रातः वह नगर में डरता हुआ
समाचार लेने गया तो सहमा वही
जिस ने उस से कल सहायता मांगी
थी उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से
कहा: वास्तव में तू ही खुना कुपथ है।

19. फिर जब पकड़ना चाहा उसे जो
उन दोनों का शत्रु था तो उस ने
कहा हे मूसा! क्या तू मुझे मार देना
चाहता है जैसे मार दिया एक व्यक्ति
को कल? तू तो चाहता है कि बड़ा
उपद्रवी बन कर रहे इस धरती में
और तू नहीं चाहता कि सुधार करने
वालों में से हो।

20. और आया एक पुरुष नगर के किनारे
से दौड़ता हुआ उस ने कहा: हे
मूसा! (राज्य के) प्रमुख परामर्श कर
रहे हैं तेरे विषय में कि तुझे बध कर
दें अतः तू निकल जा। वास्तव में मैं
तेरे शुभचिन्तकों में से हूँ।

21. तो वह निकल गया उस (नगर) से
डरा सहमा हुआ। उस ने प्रार्थना
की हे मेरे पालनहार! मुझे बचा ले
अत्याचारी जाति से।

إِنَّهُ هُوَ الْعَفُوُّ الرَّحِيمُ

قَالَ رَبِّ إِنِّي اتَّبَعْتُ عَلَى قَلْبٍ ثَمَوْنَ ظَهْرًا
إِلْمُخْرَمِينَ

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِبًا يَتَرَقَّبُ قَوْلَ الْكَافِرِ
اسْتَشْرَفَ بِالنَّاصِيَةِ يُصْغِرُهَا قَالَهُ مَوْتِي
إِنَّكَ لَعِوَى مُبِينٌ

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَنْبَاطَ بِالْكَافِرِ هُوَعْدُو
لَهُمَا قَالَ يَرُوسَى تُرِيدُ أَنْ تُفْسِدَ لِمَا
فَعَسَتْ فُتْنًا فِي الْأَرْضِ مِنْ رَبِّ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ
جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ
الْمُصْبِحِينَ

وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَمْسِي قَالَ
يَرُوسَى إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ يَتَكَلَّمُونَ
فَأَعْرِضْ عَنْ بَنِي السُّبْحِينَ

فَعَرَّ بِهَا خَائِبًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ
الْعَوْرَةِ الظَّالِمِينَ

22. और जब वह जाने लगा मद्यन की ओर, तो उस ने कहा: मुझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे दिखायेगा सीधा मार्ग।

23. और जब उतरा मद्यन के पानी पर तो पाया उस पर लोगों का एक समूह जो (अपने पशुओं को) पानी पिला रहा था तथा पाया उस के पीछे दो स्त्रियों को (अपने पशुओं को) रोकती हुई। उस ने कहा: तुम्हारी समस्या क्या है? दोनों ने कहा: हम पानी नहीं पिलानी जब तक चरवाहे चले न जायें और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।

24. तो उस ने पिला दिया दोनों के लिये। फिर चल दिया छाया की ओर और कहने लगा: हे मेरे पालनहार! तू जो भी भलाई मुझ पर उतार दे मैं उस का आकांक्षी हूँ।

25. तो आई उस के पास दोनों में से एक स्त्री चलती हुयी लज्जा के साथ, उस ने कहा: मेरे पिता¹ आप को बुला रहे हैं। ताकि आप को उस का पारिश्रमिक दे जो आप ने पानी पिलाया है हमारे लिये। फिर जब (मूसा) उस के पास पहुँचा और पूरी कथा उसे सुनाई तो उस ने कहा: भय न कर! तू मुक्त हो गया अत्याचारी² जाति से।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ يَلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَى رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سَرَّاءَ نَجْوَى ۝

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا قَالَتَا لَا تَسْقِيَنَا هُنَا بَنَاتُ نَجْدٍ وَابْنُهُمَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ۝

فَسَقَى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّى إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي مِمَّنْ آتَاكَ مِنْ خَيْرٍ فَعْبُدْنِي ۝

فَبَدَأَتْ أَحَدَهُمَا تُشْفِي عَلَى أُخْرَىٰ قَالَتَا إِنَّ إِيَّانَا يَدْعُونَكَ لِتَجْعَلَ لَنَا مَتَاعًا وَقَضَىٰ عَلَيْهِمُ الْخُصْمَ قَالَ لَا تَعْتَفِ فَقَوَّتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

1 व्याख्या कारों ने लिखा है कि वह आदरणीय शुएब (अलैहिस्सलाम) थे जो मद्यन के नबी थे। (देखिये: इब्ने कसीर)

2 अर्थात् फिरऔनियों से।

26. कहा उन दोनों में से एक ने हे पिता! आप इन को सेवक रख लें, सब से उत्तम जिसे आप सेवक बनायें वही हो सकता है जो प्रबल विश्वासनीय हो।

قَالَتْ بَعْدَ ذَلِكَ أَيْتَابُ اسْتَأْجِرْ لِي خَيْرَ مَنْ
اسْتَأْجَرْتُ الْقَوِيُّ الْيَمِينُ ۝

27. उस ने कहा: मैं चाहता हूँ कि विवाह दूँ तुम्हें अपनी इन दो पुत्रियों में से एक से इस पर कि मेरी सेवा करोगे आठ वर्ष फिर यदि तुम पूरा कर दो दस (वर्ष) तो यह तुम्हारी इच्छा है। मैं नहीं चाहता कि तुम पर वांझ डालूँ, और तुम मुझे पाओगे यदि अल्लाह ने चाहा तो सदाचारियों में से।

قَالَ لِي إِنْ يُرِيدُ أَنْ يَكُونَ بِكَ بِعْدَى ابْنَتِي هَاتِي
عَلَى أَنْ تَأْجِرِيْنِي بِخَيْرٍ فَإِنْ أَتَيْتِ سَحَرًا
فَمَنْ عِنْدَكَ قَوْلًا يُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ تَهْدِيْنِي
إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

28. ममा ने कहा: यह मेरे और आप के बीच (निश्चित) है। मैं दो में से जो भी अवधि पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई अत्याचार न हो। और अल्लाह उस पर जो हम कह रहे हैं निरीक्षक है।

قَالَ ذَلِكَ يَتَّبِعُ وَبَيْنَكَ إِتَابُ الْكَبِيرِ نَصِيتُ
فَلَا مَدْرَأَ عَلَى تَوَالِهِ عَلَى مَا تَقُولُ وَكَيْفَ ۝

29. फिर जब पूरी कर ली मूसा ने अवधि और चला अपने परिवार के साथ तो उस ने देखी तूर (पर्वत) की ओर एक अग्नि। उस ने अपने परिवार से कहा: हुको मैं ने देखी है एक अग्नि, संभव है तुम्हारे पास लाऊँ वहाँ से कोई समाचार अथवा कोई अगार अग्नि का ताकि तुम ताप लो।

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ
مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي
آنَسْتُ نَارًا تَأْكُلُ أَيْتَابَكُمْ وَهِيَ بَعِيدَةٌ أَجْدَرُ
مِنْ السَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝

30. फिर जब वह वहाँ आया तो पुकारा गया वादी के दायें किनारे से, शुभ क्षेत्र में वृक्ष से हे मूसा! निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार।

قَالَتْ أَلَيْسَ الْطُّورُ مَرْكَبًا لِّلَّذِينَ لَا يَشْعُرُونَ
بِالْمُعَذِّبَةِ الْمَرْكَبَةُ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يَكُونُوا فِي
أَنَالِ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

31. और फेंक दो अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा कि रेंग रही मानो वह कोई

وَأَنْ أُلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا

सर्प हो तो भागने लगा पीठ फेर कर और पीछे फिर कर नहीं देखा। हे मूसा! आगे आ तथा भय न कर, वास्तव में तू सुरक्षितों में से है।

جَاءَ قَوْلُ مُدْيَرٍ ذُو الْعُقُبِ يَهُوسَى أَقْبَلْ وَلَا تَخَفْ إِنَّكَ مِنَ الْآمِنِينَ ۝

32. डाल अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के। और चिमटा ले अपनी ओर अपनी भुजा, भय दूर करने के लिये तो यह दो खुली निशानियाँ हैं तेरे पालनहार की ओर से फिरऔन तथा उस के प्रमुखों के लिये, वास्तव में वह उल्लंघनकारी जानि है।

أَسْلَمْتُ يَدِي فِي حَبِيبَتِ نَحْرِهِ بِيصَادٍ مِنْ خَيْرِ سَوْءٍ وَصَفَّرَ إِلَيْكَ جَانِحًا مِنْ رُفَيْفٍ كَذَلِكَ يُبَدِّلُ مِنْ رِزْقِكَ لِي يَرْحَمُونَ وَمَلَايَئِكَةُ كَانُوا قَوَّامِينَ ۝

33. उस ने कहा मेरे पालनहार। मैं ने वध किया है उन के एक व्यक्ति को। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार देंगे।

قَالَ رَبِّي إِنِّي كُنْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَخَافَ أَنْ يُقْتَلُونَ ۝

34. और मेरा भाई हारून मुझ से अधिक सुभाषी है तू उसे भी भेज दे मेरे साथ सहायक बना कर ताकि वह मेरा समर्थन करे, मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठला देंगे।

وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْضَلُ مِنِّي رِسَالَةً مِنِّي بِذَلِكَ يُلْكَؤُونَ ۝

35. उस ने कहा हम तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे तेरे भाई द्वारा, और बनायेंगे तुम दोनों के लिये ऐसा प्रभाव कि वह तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे अपनी निशानियों द्वारा, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही ऊपर रहेंगे।

قُلْ سَنُعْظِدُكَ بِأَيْدِينَا وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا بِأَيِّتِنَا أَنْتُمَا وَمَنِ تَتَّبَعُمَا الْغَالِبُونَ ۝

36. फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियाँ लाया, तो उन्होंने ने कह दिया कि यह तो केवल घड़ा हुआ जादू है और हम ने कभी नहीं सुनी यह बात अपने पूर्वजों के युग में।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرٍ وَمَا سَوَّعْنَا بِهِ أَفْئِدَتَنَا الْأَوَّلِينَ ۝

37. तथा मूसा ने कहा मेरा पालनहार अधिक जानता है उसे जो मार्ग दर्शन लाया है उस के पास से और किस का अन्त अच्छा होना है वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

38. तथा फिरऔन ने कहा हे प्रमुखो! मैं नहीं जानता तुम्हारा कोई पूज्य अपने सिवा। तो हे हामान! इंटें पकवा कर मेरे लिये एक ऊँचा भवन बना दे। संभव है मैं झाँक कर देख लूँ मूसा के पूज्य को, और निश्चय मैं उसे समझता हूँ झूठों में से।

39. तथा घमंड किया उस ने तथा उस की सेनाओं ने धरती में अवैध, और उन्होंने ने समझा कि वह हमारी ओर वापिस नहीं लाये जायेंगे।

40. तो हम ने पकड़ लिया उसे और उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया हम ने उन्हें सागर में तो देखो कि कैसा रहा अत्याचारियों का अन्त (परिणाम)।

41. और हम ने उन्हें बना दिया ऐसा अगुवा जो बुलाने हों नरक की ओर तथा प्रलय के दिन उन की सहायता नहीं की जायेगी।

42. और हम ने पीछे लगा दिया उन के संसार में धिक्कार को और प्रलय के दिन वह बड़ी दुर्दशा में होंगे।

43. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की इस के पश्चात् कि हम ने

وَقَالَ مُوسَى رَبِّيَ أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ رَبِّهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ حَافِيَةٌ ۚ لَئِنْ كَانَ لَأُبْلِغُهُ الْغَافِقُونَ ﴿٣٧﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرِي ۚ ثُمَّ قَالَ لِيُفَاعِلْ لِي بِمَا مَلَئْتُ مِنَ الْفَالِغِ ۚ فَاخْلَعْ لِي صَرَخًا كَعَمَلِ أَكْثَرِ إِلَى إِلَهِ مُوسَى ۚ رَبِّيَ لَا أَظُنُّ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٣٨﴾

وَأَسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا جُنُودًا فِي الْأَرْضِ ۚ يَعْبُدُونَ الْحَقَّ وَكُفُّوا أَلَهُمْ إِلَٰهًا ۚ وَرَجَعُوا إِلَىٰ

فَاخْتَذَتْهُ وَجُنُودُهُ مَقْبَضًا ۚ وَنَهَمْنَا فِي الْيَوْمِ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُرَدُّ عُورًا إِلَى الثَّالِثِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

وَأَتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَٰذِهِ ۖ نَايِلًا آلِهَةً وَنَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَهُمْ مِنَ الْمَقْبُورِينَ ﴿٤٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا

विनाश कर दिया प्रथम समुदायों का, ज्ञान का साधन बना कर लोगों के लिये तथा मार्गदर्शन और दया ताकि वे शिक्षा लें।

أَهْلَكْنَا الْقُرُونِ الْأُولَىٰ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ
لِيُنذِرَ لِقَوْمِكَ وَرَحْمَةً لِّعَالَمٍ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٨﴾

44. और (हे नबी!) आप नहीं थे पश्चिमी दिशा में¹ जब हम ने पहुँचाया मूसा की ओर यह आदेश और आप नहीं थे उपस्थितों² में।

وَمَا كُنْتَ بِحَاجِبِ الْقُرَىٰ إِذْ قُضِيَ إِلَيْكَ أَمْرُ
الْمُوسَىٰ وَكُنْتَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢٩﴾

45. परन्तु (आप के समय तक) हम ने बहुत से समुदायों को पैदा किया फिर उन पर लम्बी अवधि बीत गई तथा आप उपस्थित न थे मदन के वासियों में कि सुनाते उन्हें हमारी आयतें और परन्तु हम ही रमूलों को भेजने³ वाले हैं।

وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ
ثَابِتًا فِي آلِهِمْ مِّمَّنْ يُخَوِّفُهُمْ يَوْمَ تَحُشُّونَهُمُ الْغُرُوبَ
وَلَكِنَّا لَمَّا مُرِيتَيْنِ ﴿٣٠﴾

46. तथा नहीं थे आप तूर के अंचल में जब हम ने उसे पुकारा, परन्तु आप के पालनहार की दया है, ताकि आप सतर्क करें जिन के पास नहीं आया कोई सचेत करने वाला आप से पूर्व, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

وَمَا كُنْتَ بِحَاجِبِ الْكُوفَةِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَّحِمْنَاهُ
مِّنْ رَبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مِّنْ أَمْتِهِمْ مِّنْ قَبْلِ
مَنْ يَخْلُفَهُمْ لَعَالَهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٣١﴾

47. तथा यदि यह बात न होती कि उन पर कोई आपदा आ जाती उन के कर्तूतों के कारण, तो कहते कि

وَلَوْلَا أَن تُخِيبَهُمْ مُّوسَىٰ بِمَا قَدْ كَانَتْ
آيَاتُهُمْ يَتَكْفَرُونَ لَفُتِنُوا إِلَيْنَا فَلَآ أُفٍّ لَّنَا

1 पश्चिमी दिशा से अभिप्राय तूर पर्वत का पश्चिमी भाग है जहाँ मूसा (अलैहिस्सलाम) को तौरात प्रदान की गई।

2 इन से अभिप्राय वह बनी इस्राइल है जिन से धर्मविधान प्रदान करने समय उस का पालन करने का वचन लिया गया था।

3 भावार्थ यह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हजारों वर्ष पहले के जो समाचार इस समय सुना रहे हैं जैसे आँखों से देखे हों वह अल्लाह की ओर से वही के कारण ही सुना रहे हैं जो आप के सच्चे नबी होने का प्रमाण है।

हमारे पालनहार तू ने क्यों नहीं भेजा हमारी ओर कोई रसूल कि हम पालन करने तेरी आयतों का, और हो जाते ईमान वालों में से।¹

48. फिर जब आ गया उन के पास सन्ध्या हमारे पास से तो कह दिया कि क्यों नहीं दिया गया उमे वही जो मूसा को (चमत्कार) दिया गया, तो क्या उन्होंने कुफ़ (इन्कार) नहीं किया उस का जो मूसा दिये गये इस से पूर्व? उन्होंने ने कहा दो² जादूगर है दोनों एक-दूसरे के सहायक है। और कहा: हम किसी को नहीं मानते।

49. (हे नबी!) आप कह दें तब तुम्ही ला दो कोई पुस्तक अल्लाह की ओर से जो अधिक मार्ग दर्शक हो इन दोनों³ से मैं चलूंगा उस पर यदि तुम सच्चे हो।

50. फिर भी यदि वे पूरी न करें आप की माँग, तो आप जान लें कि वे अपनी मनमानी कर रहे है, और उस से अधिक कुपथ कौन है जो मनमानी करे अपनी अल्लाह की ओर से बिना किसी मार्गदर्शन के? वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अत्याचारी लोगों को।

رَسُولًا مِّنْ بَيْنِكَ وَتَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٨﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ لَحِقٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ قَالُوا لَوِ الْوَلَدُ
أَوْفَىٰ بِمِثْلِ مَا آتَىٰ مُوسَىٰ أَوْ لَعَنَّا مِثْلَهُ وَآ
يَمَّا آتَىٰ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ قَالُوا سِحْرَانِ
تَلْهَاهُمَا سَوَاءٌ لَّوَالِدَاكَ يَكْفُرُونَ ﴿٢٩﴾

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِندِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ
مِنْهُمَا أَلَيْسَ إِنَّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٣٠﴾

وَإِنْ كَرِهْتَ حُجُبَاتُكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُمَا إِلَهُاتُكَ
أَهْوَاءُهُمْ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ
هُدًى مِّنْ إِلَهِينَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾

1 अर्थात् आप को उन की ओर रसूल बना कर इस लिये भेजा है ताकि प्रलय के दिन उन को यह कहने का अवसर न मिले कि हमारे पास कोई रसूल नहीं आया ताकि हम इमान लाते।

2 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम)। और भावार्थ यह है कि चमत्कारों की माँग, न मानने का एक बहाना है।

3 अर्थात् कुर्आन और तौरात से।

51. और (हे नबी!) हम ने निरन्तर पहुँचा दिया है उन को अपनी वान, (कुर्आन) ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
52. जिन को हम ने प्रदान की है पुस्तक¹ इस (कुर्आन) से पहले वह² इस पर ईमान लाते हैं।
53. तथा जब उन्हें सुनाया जाता है तो कहते हैं: हम इस (कुर्आन) पर ईमान लाये, वास्तव में वह सत्य है हमारे पालनहार की ओर से, हम तो इस के (उतारने के) पहले ही से मुस्लिम हैं।³
54. यही दिये जायेंगे अपना बदला दुहरा⁴ अपने धैर्य के कारण, और वह दूर करने है अच्छाई के द्वारा बुराई को। और उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।
55. और जब वह सुनते हैं व्यर्थ बात तो विमुख हो जाते हैं उस से। तथा कहते हैं: हमारे लिये हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। सलाम है तुम पर हम (उलझना) नहीं चाहते आज्ञानों से।
56. (हे नबी!) आप सुपथ नहीं दर्शा सकते जिसे चाहें,⁵ परन्तु अल्लाह

وَالْعَدَّةَ وَضَعْنَا لَهُمْ تُقُونَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ فَهُوَ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

وَلَمَّا سُتِلَ عَلَيْهِمْ قَوْلُ الْمُنَّافِقِينَ رَبَّنَا الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾

أُولَئِكَ يُؤْتُونَ جَزَاءَهُمْ مُرَّتَيْنِ فَمَا تَزِدُّ وَيَذَرُونَ بِأَعْيُنِنَا ذُرِّيَّتَهُ وَيَذَرُونَ فِيهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٤﴾

وَرَدَّاهُمْ، لَمْ يَآخِزُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَوْلَا آعَمَّا بَا وَلَكُمُ الْغَمَامُ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا تُلَاحِظُوا الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ حَبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ

1 अर्थात् तौरात तथा इजील।

2 अर्थात् उन में से जिन्होंने अपनी मूल पुस्तक में परिवर्तन नहीं किया है।

3 अर्थात् आज्ञाकारी तथा एकेश्वरवादी है।

4 अपनी पुस्तक तथा कुर्आन दोनों पर ईमान लाने के कारण। (देखिये सहीह बुखारी -97, मुस्लिम- 154)

5 हदीस में वर्णित है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के (काफिर)

सुपथ दर्शाता है जिसे चाहे, और वह भली - भौति जानता है सुपथ प्राप्त करने वालों को।

يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ٥٦

57. तथा उन्होंने ने कहा: यदि हम अनुसरण करें मार्ग दर्शन का आप के साथ, तो अपनी धरती से उचक⁽¹⁾ लिये जायेंगे। क्या हम ने निवास स्थान नहीं बनाया है उन के लिये भयरहित ((हरम))⁽²⁾ को उन के लिये, खिचे चले आ रहे हैं जिस की ओर प्रत्येक प्रकार के फल जीविका स्वरूप हमारे पास से? और परन्तु उन में से अधिकतर लोग नहीं जानते।

وَقَالُوا إِنَّمَا هِيَ إِهْدَىٰ مَعَكَ تُحَقِّقُ مِنَ الْأَرْضِ مَا أَلَمْ تُحِطْ بِهِ الْيَوْمَ ثُمَّ تَأْتِي بِنَارٍ مِنْ رَبِّكَ مِنْ لَدُنْ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٥٧

58. और हम ने विनाश कर दिया बहुत सी वस्तियों का इतराने लगी जिन की जीविका। तो यह है उन के घर जो आबाद नहीं किये गये उन के पश्चात् परन्तु बहुत थोड़े और हम ही उत्तराधिकारी रह गये।

وَكُنَّا أَهْلُهَا مِنْ قُرْبَةٍ نُبْطِرُ مُبَشِّرَاتِهَا فَنَزَعْنَا مِنْ فُجْرَتِهِمْ مَنْ يُدْعَوْنَ مِنْهُمْ لَا يُلِيْدُونَ وَلَكِنْ عَمَلُ لَوْ يَرْيُونَ ٥٨

59. और नहीं है आप का पालन- हार विनाश करने वाला वस्तियों को जब तक उन के केन्द्र में कोई रमूल नहीं भेजता जो पढ़ कर सुनाये उन के समक्ष हमारी आयते और हम वस्तियों का विनाश करने वाले नहीं परन्तु जब

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهَيْبًا الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمْنَاهَا رُسُلًا يَأْتُوا بِآيَاتِنَا وَمَا لَكَ مَهْجُوكَ الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ٥٩

चाचा अबू तालिब के निधन का समय हुआ तो आप उन के पास गये। उस समय उन के पास अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबि उमय्या उपस्थित थे आप ने कहा चाचा ((ला इलाहा इल्लाह)) कह दें ताकि मैं क्यामत के दिन अल्लाह मे आप की क्षमा के लिये सिफारिश कर सकूँ। परन्तु दोनों के कहने पर उन्होंने ने अस्वीकार कर दिया और उन का अन्न कुफ्र पर हुआ। इसी विषय में यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी हदीस नं. 4772)

- 1 अर्थात् हमारे विरोधी हम पर आक्रमण कर देंगे।
- 2 अर्थात् मक्का नगर को।

उस के निवासी अत्याचारी हों।

60. तथा जो कुछ तुम दिये गये हो वह समारिक जीवन का सामान तथा उस की शोभा है। और जो अल्लाह के पास है उत्तम तथा स्थायी है, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

وَمَا أَفْتِنْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعُ الْعِشْيَةِ
وَرَبِّهَا وَمَا عِنْدَ الْمَوْحِيهِ إِنَّ
أَفْزَقَ لَعَيْنَا لَهُ

61. तो क्या जिसे हम ने वचन दिया है एक अच्छा वचन और वह पाने वाला हो उसे, उस के जैसा हो सकता है जिसे हम ने दे रखा है समारिक जीवन का सामान फिर वह प्रलय के दिन उपस्थित किये लोगों में से होगा? *

أَفَمَنْ أَعَدُّهُ وَعْدًا حَسَنًا يَهْدِيهِ كَمَنْ هُوَ
مَتَّاعٌ بَعِيدٌ إِنَّ يَوْمَ الْفُتُورِ الْفَصْلُ
الْمُفَصِّلُ ۝

62. और जिस दिन वह² उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहाँ है मेरे साझी जिन्हें तुम समझ रहे थे?

وَيَوْمَ يَأْتِيهِمْ يَقُولُ آيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ
كَذَّبْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝

63. कहेंगे वह जिन पर सिद्ध हो चुकी है यह बात³: हे हमारे पालनहार! यही है जिन्हें हम ने बहका दिया, और हम ने इन को बहकाया जैसे हम बहकें, हम उन से अलग हो रहे हैं तेरे समक्ष, यह हमारी पूजा⁴ नहीं कर रहे थे।

قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ
الَّذِينَ كَانُوا يُشْفِقُونَ عَلَيْنَا فَمَنْ يَمْلِكُ
مَنْ كَانُوا يُعْبَدُونَ ۝

64. तथा कहा जायेगा: पुकारो अपने साझियों को। तो वे पुकारेंगे, और वह उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे तथा वह यातना देख लेंगे तो कामना करेंगे कि उन्होंने सुपथ अपनाया होता!

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ قَدْ عَوْفُهُمْ فَلَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ
كَانُوا يَهْتَدُونَ ۝

1 अर्थात् दण्ड और यातना का अधिकारी होगा।

2 अर्थात् अल्लाह प्रलय के दिन पुकारेगा।

3 अर्थात् दण्ड और यातना के अधिकारी होने की।

4 यह हमारे नहीं बल्कि अपने मन के पूजारी थे।

65. और वह (अल्लाह) उस दिन उन को पुकारेगा फिर कहेगा: तुम ने क्या उत्तर दिया रसूलों को?
66. तो नहीं सूझेगा उन्हें कोई उत्तर उस दिन और न वह एक दूसरे से प्रश्न कर सकेंगे।
67. फिर जिस ने क्षमा मांग ली¹ तथा ईमान लाया और सदाचार किया, तो आशा कर सकना है कि वह सफल होने वालों में से होगा।
68. और आप का पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे, तथा निर्वाचित करता है। नहीं है उन के लिये कोई अधिकार पवित्र है अल्लाह तथा उच्च है उन के साझी बनाने से।
69. और आप का पालनहार ही जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।
70. तथा वही अल्लाह² है कोई बन्दनीय (सत्य पूज्य) नहीं है उस के सिवा, उसी के लिये सब प्रशंसा है लोक तथा परलोक में तथा उसी के लिये शासन है और तुम उसी की ओर फरे³ जाओगे।
- 71 (हे नबी!) आप कहिये तुम बताओ कि यदि बना दे तुम पर रात्रि को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

فَعَيَّنَتْ عَلَيْهِمْ لَا أَلْفَ يَوْمَ يَهِدِيهِمْ لَا يَفْسَدُونَ ﴿٦٦﴾

وَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَسَوْفَ يُنْفِكُونَ مِنَ الْمُعَذِّبِينَ ﴿٦٧﴾

وَرَبُّكَ عَلِيُّ مَرَبِّكَ لَا تَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ لِيَوْمَ الْأَنْفُسِ أَتَى اللَّهُ عَلَى النَّاسِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَيَعْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْخَمْدُ الْأَوَّلُ وَالْآخِرَةُ وَلَهُ الْعِزَّةُ وَالْكَرَامَةُ وَالْجَبَرُوتُ ﴿٧٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ لَدُنْ غَيْرِ اللَّهِ لَا تَرْجِعُونَ ﴿٧١﴾

1 अर्थात् संसार में से।

2 अर्थात् जो उत्पत्ति करता तथा सब अधिकार और ज्ञान रखता है।

3 अर्थात् हिम्माव और प्रतिफल के लिये।

أَقْلَامُ سَمْعُونَ ۝

कौन पूज्य है अब्राह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास प्रकाश? तो क्या तुम सुनते नहीं हो?

72. आप कहिये तुम बताओ, यदि अब्राह कर दे तुम पर दिन को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो कौन पूज्य है अब्राह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास रात्रि जिस में तुम शान्ति प्राप्त करो, तो क्या तुम देखने नहीं हो?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الْإِيمَانَ إِلَى يَوْمِ الْفِتْنَةِ مِنْ إِذْ خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَنُطْقٍ مِنْكُمْ يَتْلُونَ فِيهِ آيَاتٍ لِيُحْجِزَ بَيْنَكُمْ وَمَنْ يَعْصِ أَمْرًا فَقَدْ طَغَى ۝

73. तथा अपनी दया ही से उस ने बनाये है तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिन ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उस में और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (जीविका) की, और ताकि तुम उस के कृतज्ञ बनो।

وَمِنْ نِعْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

74. और अब्राह जिस दिन उन्हें पुकारेगा तो कहेगा कहां है वे जिन को तुम मेरा साझी समझ रहे थे?

وَيَوْمَ يَسْأَلُهُمْ فِيمَا هُمْ بِشُرَكَائِهِمْ أَتَدْرِكُونَ ۝

75. और हम निकाल लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गवाह, फिर कहेंगे लाओ अपने¹ तर्क? तो उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि सत्य अब्राह ही की ओर है और उन से खो जायेंगी जो बातें वे धड़ रहे थे।

وَنَرْحَمُ الْمُؤْمِنِينَ يُرِيدُ أَنْ يَمْلَأَ مِنْهُ الْقُلُوبَ وَأَنَّهُمْ يُفَكِّرُونَ ۝

76. कारून³ था मूसा की जाति में से। फिर उस ने अत्याचार किया उन पर, और हम ने उसे प्रदान किया

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُتُوبِ إِنَّ مَعَهُ كِتَابَ

1 अर्थात् रात्रि तथा दिन के परिवर्तन को।

2 अर्थात् शिर्क के प्रमाण।

3 यहाँ से धन के गर्व तथा उस के दुष्परिणाम का एक उदाहरण दिया जा रहा है कि कारून, मूसा (अलैहिससलाम) के युग का एक धनी व्यक्ति था।

इतने कोष कि उस की कुजियाँ भारी थीं एक शक्तिशाली समुदाय पर। जब कहा उस से उस की जाति ने: मत इतरा वास्तव में अल्लाह प्रेम नहीं करता है इतराने वालों से।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا هَذِهِ السُّبُلَ الَّتِي كَفَرُوا بِهَا قَالُوا لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفَرُّوا عَنْ اللَّهِ فِرًّا لَّيْسَ لَهُ الْفِرُّ حَتَّىٰ الْمَرْجِعِ ۖ

77. तथा खोज कर उस से जो दिया है अल्लाह ने तुझे आखिरत (परलोक) का घर और मन भूल अपना संसारिक भाग और उपकार कर जैसे अब्राह ने नुज पर उपकार किया है। तथा मत खोज कर धरती में उपद्रव की, निश्चय अब्राह प्रेम नहीं करता है उपद्रवियों से।

وَابْتَغُوا فِيمَا آتَاكُمُ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنسُوا نَصِيبَكُمْ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنُوا كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ الَّتِي فِي الْأَرْضِ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَهْدِي السُّبُلَ الْمُتَعَبِدِينَ ۖ

78. उस ने कहा मैं तो उसे दिया गया हूँ बस अपने ज्ञान के कारण। क्या उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि अब्राह ने विनाश किया है उस से पहले बहुत से समुदायों को जो उस से अधिक धन तथा समूह में, और प्रश्न नहीं किया जाता।¹ अपने पापों के सम्बंध में अपराधियों से।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ حِلٍّ مُّيمِنًا ۖ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمْ الْمَتَّبِعُونَ ۖ

79. एक दिन वह निकला अपनी जाति पर अपनी शोभा में, तो कहा उन लोगों ने जो चाहते थे संसारिक जीवन: क्या ही अच्छा होता कि हमारे लिये (भी) उसी के समान (धन धान्य) होता जो दिया गया है कारून को। वास्तव में वह बड़ा शौभाग्यशाली है।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَيْسَ لَكَ بِأَمْرٍ ۖ وَأَذَىٰ لَهُمْ ۚ إِنَّهُ لَمِنَ ذُحَىٰ عَظِيمٍ ۖ

80. तथा उन्होंने ने कहा जिन को जान

وَقَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَيْسَ لَكَ بِأَمْرٍ ۚ وَأَذَىٰ لَهُمْ ۚ إِنَّهُ لَمِنَ ذُحَىٰ عَظِيمٍ ۖ

1 अर्थात् विनाश के समय।

दिया गया: तुम्हारा बुरा हो! अल्लाह का प्रतिकार उस के लिये उत्तम है जो ईमान लाये तथा सदाचार करे और यह सोच धैर्यवानों ही को मिलती है।

لِمَنِ امْسَ وَعَيْنَ صَالِحًا وَلَا يُفْقَهُ إِلَّا
الضَّالُّونَ ۝

81. अन्ततः हम ने धंसा दिया उस के तथा उस के घर सहित धरती को, तो नहीं रह गया उस का कोई समुदाय जो सहायता करे उस की अल्लाह के आगे, और न वह स्वयं अपनी सहायता कर सका।

فَنَسْنَاهُ وَبِءِ اِرْوِ الْأَرْضِ فَاجَحَنَ لَهُ مِنْ دُونِهِ
يُصْرَوْنَهُ مِنْ دُونِ الْكَوْثَرِ ۝ كَانِ مِنَ
الْمُنْتَصِرِينَ ۝

82. और जो कामना कर रहे थे उस के स्थान की कल, कहने लगे क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह अधिक कर देता है जीविका जिस के लिये चाहता हो अपने दामों में से और नाप कर देता है (जिसे चाहता है)। यदि हम पर उपकार न होता अल्लाह का तो हमें भी धंसा देता। क्या तुम देखते नहीं कि काफिर (कूतघ्न) सफल नहीं होते।

وَأَصْحَابُ الدِّينِ تَتَّبِعُو مَكَانَهُ بِالْأَنْفُسِ يُعْرَلُونَ
وَيَكُنَّ اللَّهُ يَبْسُطُ الْبِرِّ لَيْسَ يَمْنَعُ مِنْ جَبَدِهِ
وَيَقُولُ الْوَلَا أَنْ تَنْتَ اللَّهُ حَلِيمٌ خَفِيفٌ ۝
وَيَكُنَّ لَهُ لَا يُفْقَهُ الْكَوْثَرُونَ ۝

83. यह परलोक का घर (स्वर्ग) है हम उसे विशेष कर देंगे उन के लिये जो नहीं चाहते बड़ाई करना धरती में और न उपद्रव करना और अच्छा परिणाम आज्ञा-कारियों¹ के लिये है।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا
يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ۝

84. जो भलाई लायेगा उस के लिये उस से उत्तम (भलाई) है। और जो बुराई लायेगा तो नहीं बदला दिया जायेगा उन को जिन्होंने बुराईयाँ की हैं

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِمَّا وَمَنْ جَاءَ
بِالْقَبِيحَةِ فَلَا يَخْرِي الدِّينَ عِمَمُهُمُ النَّجَاسَاتِ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

1 इस में संकल है कि धरती में गर्व तथा उपद्रव का मूलाधार अल्लाह की अवैजा है।

परन्तु वही जो वे करने रहे।

85. और (हे नबी!) जिस ने आप पर कुआन उतारा है वह आप को लौटाने वाला है आप के नगर (मक्का) की¹ ओर। आप कह दें कि मेरा पालनहार भली-भाँति जानने वाला है कि कौन मार्गदर्शन लाया है, और कौन खुले कुपथ में है।

86. और आप आशा नहीं रखने दें कि अवतरित की जायेगी आप की ओर यह पुस्तक², परन्तु यह दया है आप के पालनहार की ओर से अतः आप कदापि न हों सहायक काफिरों के।

87. और वह आप को न रोकें अल्लाह की आयतों से इस के पश्चात् जब उतार दी गई आप की ओर, और बुलाने रहें अपने पालनहार की ओर। और कदापि आप न हों मुश्रिकों में से।

88. और आप न पुकारें किसी अन्य पूज्य को अल्लाह के साथ, नहीं है कोई बंदनीय (सत्य पूज्य) उस (अल्लाह) के सिवा। प्रत्येक बन्तु नाशवान है सिवाय उस के स्वरूप के। उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब फेरे³ जाओगे।

إِنَّ الْبَدِيَّ قَرَضَ عَيْنِكَ الْقَوَانَ لَرَأَوْكَ إِلَى
مَعَادٍ قُلْ لَرَقِ اعْتَمِدْ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَى
وَمَنْ هُوَ فِي سَبِيلِ مُبِينٍ ۝

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَى إِلَيْكَ الْكِتَابُ
إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا
لِلْمُكَذِبِينَ ۝

وَكَيْفَ تَصُدُّكَ عَنْ آلِهَتِ اللَّهِ بِعَدَا إِنْ أَنْزَلَتْ
إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۝

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ
شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْعِلْمُ وَذَانِهُ
يُرْجَعُونَ ۝

1 अर्थात् आप जिस शहर मक्का से निकाले गये हैं उसे विजय कर लेंगे। और यह भविष्य बाणी सन् 8 हिजरी में पूरी हुई (सहीह बुखारी: 4773)

2 अर्थात् कुआन पाक।

3 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब तथा अपने कर्मों का फल पाने के लिये

सूरह अन्कबूत 29

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ

सूरह अन्कबूत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 69 आयतें हैं।

- इस सूरह का यह नाम इस की आयत नं- (41) में आये हुये शब्द ((अन्कबूत)) से लिया गया है। जिस का अर्थ मकड़ी है। इस सूरह में जो अब्राहम के सिवा दूसरों को अपना संरक्षक बनाते हैं उन की उपमा मकड़ी से दी गई है। जिस का घर सब से अधिक निर्बल होता है। इसी प्रकार मुश्रिकों का भी कोई सहारा नहीं होगा।
- इस में उन लोगों को निर्देश दिये गये हैं जो ईमान लाने के कारण सताये जाते हैं और अनेक प्रकार की परीक्षाओं से जूझते हैं। और कई नबियों के उदाहरण दिये गये हैं जिन्होंने अपनी जातियों के अत्याचार का सामना किया। और धैर्य के साथ सत्य तथा तौहीद पर स्थित रहे और अन्ततः सफल हुये।
- इस में मुश्रिकों के लिये मोच विचार का आमंत्रण तथा विरोधियों के संदेहों का निवारण किया गया है। और तौहीद तथा परलोक की वास्तविकता की ओर ध्यान दिलाया गया है और उस के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- अन्तिम आयत में अब्राहम की राह में प्रयास करने पर उस की सहायता और उस के वचन के पूरा होने की ओर संकेत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम।
2. क्या लोगों ने समझ रखा है कि वह छोड़ दिये जायेंगे कि वह कहते हैं, हम ईमान लाये और उन की परीक्षा नहीं ली जायेगी?

الْقُرْ

أَحْسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ۚ

3. और हम ने परीक्षा ली है उन से पूर्व के लोगों की, तो अल्लाह अवश्य जानेगा¹ उन को जो सच्चे हैं, तथा अवश्य जानेगा झूठों को।
4. क्या समझ रखा है उन लोगों ने जो कुकर्म कर रहे हैं कि हम से अग्रसर² हो जायेंगे? क्या ही बुरा निर्णय कर रहे हैं!
5. जो आशा रखता हो अब्राह से मिलने³ की, तो अब्राह की ओर से निर्धारित किया हुआ समय⁴ अवश्य आने वाला है और वह सब कुछ सुनने जानने⁵ वाला है।
6. और जो प्रयास करता है तो वह प्रयास करता है अपने ही भले के लिये, निश्चय अब्राह निस्पृह है संसार बार्सियों से।
7. तथा जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, हम अवश्य दूर कर देंगे उन से उन की बुराईयाँ, तथा उन्हें प्रतिफल देंगे उन के उत्तम कर्मों का।
8. और हम ने निर्देश दिया मनुष्य को अपने माता पिता के साथ उपकार

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ﴿٣﴾

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْلَمُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٥﴾

وَمَنْ جَاهَدْ فَإِنَّا يُجَاهِدُ لِنُفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرًا خَيْرَ الَّذِي كَانُوا يَعْتَمُونَ ﴿٧﴾

وَوَضَّيْنَا لِلْإِنْسَانِ إِيمَانَهُ يَوْمَ يُؤْتَى الْقَدْرَ

- 1 अर्थात् आपदाओं द्वारा परीक्षा ले कर जैसा कि उस का नियम है उन से विवेक कर देगा। (इब्ने कसीर)
- 2 अर्थात् हमें विवश कर देंगे और हमारे नियंत्रण में नहीं आयेंगे
- 3 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 4 अर्थात् प्रलय का दिन।
- 5 अर्थात् प्रत्येक के कथन और कर्म को उस का प्रतिकार देने के लिये।

करने का¹, और यदि दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरे साथ उस चीज को जिस का तुम को ज्ञान नहीं, तो उन दोनों की बात न मानो² मेरी ओर ही तुम्हें फिर कर आना है फिर मैं तुम्हें सूचन कर दूंगा उस कर्म से जो तुम करते रहे हो।

9 और जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हम उन्हें अवश्य सम्मिलित कर देंगे सदाचारियों में।

10. और लोगों में वे (भी) है जो कहते है कि हम ईमान लाये अल्लाह पर। फिर जब सताये गये अल्लाह के चारे में तो समझ लिया लोगों की परीक्षा को अल्लाह की यातना के समान। और यदि आ जाये कोई सहायता आप के पालनहार की ओर से तो अवश्य कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ थे। तो क्या अल्लाह भली-भाँति अवगत नहीं है उस से जो समारवासियों के दिलों में है?

11. और अल्लाह अवश्य जान लेगा उन को जो ईमान लाये है, तथा अवश्य जान लेगा द्विधावादियों³ को।

12. और कहा काफिरों ने उन से जो

جَهْدَكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ
فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِنِّي مَرْجِعُكُمْ فَأُبَيِّنُ لَكُمْ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ
فِي الصَّالِحِينَ ﴿١٠﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ
فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بَلِ اللَّهُ
وَلَهُنَّ حُجَّتُ نَصْرٍ مِّن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا
مَعَكُمْ أَوْلَىٰ ۚ وَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْوَزَ مِنَّا فِي صُدُورِ
الْعَالَمِينَ ﴿١١﴾

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْكَاذِبِينَ ﴿١٢﴾

وَقَالَ الْكَاذِبُونَ كُفِّرُوا بِلَدِكُمْ أَنصُرُوا

1 हदीस में है कि जब साद विन अबी बक्रास इस्लाम लाये तो उन की माँ ने दबाव डाला और शपथ ली कि जब तक इस्लाम न छोड़ दें वह न उन से बात करेगी और न खायेगी न पियेगी, इसी पर यह आयत उतरी (सहीह मुस्लिम: 1748)

2 इस्लाम का यह नियम है जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि ((किसी के आदेश का पालन अल्लाह की अवैज्ञा मैं नहीं है।)) (मुस्नद अहमद 166, मिलसिला सहीहा अल्बानी: 179)

3 अर्थात् जो लोगों के भय के कारण दिल से ईमान नहीं लाते।

ईमान लाये हैं अनुसरण करो हमारे पथ का, और हम भार ले लेंगे तुम्हारे पापों का, जब की वह भार लेने वाले नहीं हैं उन के पापों का कुछ भी, वास्तव में वह झूठे हैं।

سَيَلْبَسْنَا وَنَحْمِلُ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ
مِنْ خَطِيئَتِهِمْ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ①

13. और वह अवश्य प्रभारी होंगे अपने बोझों के और कुछ¹ बोझों के अपने बोझों के साथ, और उन से अवश्य प्रश्न किया जायेगा प्रलय के दिन उस झूठ के बारे में जो घड़ते रहे।

وَيَحْمِلُنَ أَثْقَالَهُمْ وَأَتَاكَ أَثْقَالُهُمْ
وَلَكِنَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَمَّا كَانُوا يَكْفُرُونَ ②

14. तथा हम² ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, तो वह रहा उन में हजार वर्ष किन्तु पचास³ वर्ष, फिर उन्हें पकड़ लिया नूफान ने, तथा वे अत्याचारी थे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ
سَنَةٍ إِلَّا عَشْرِينَ مِمَّا فَاخَذَ هُمْ الظُّلُمَاتُ
وَهُمْ ظَالِمُونَ ③

15. तो हम ने बचा लिया उस को और नाव वालों को, और बना दिया उसे एक निशानी (शिक्षा) विश्व वार्मियों के लिये।

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ الْتَمِيمَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً
لِّلْعَالَمِينَ ④

16. तथा इब्राहीम को जब उस ने अपनी जाति से कहा इब्रादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा उस से डरो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَانْتَهُوا
ذِكْرًا حَرِيصًا لِّكُمُ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑤

17. तुम तो अल्लाह के सिवा बस उन की वंदना कर रहे हो जो मूर्तियाँ हैं, तथा तुम झूठ घड़ रहे हो, वास्तव में जिन

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا
وَتُغْنِيكُمُ الْفُلُكُ إِنَّ الْكَافِرِينَ تَعْبُدُونَ

1 अर्थात् दूसरों को कुपथ करने के पापों का।

2 यहाँ से कुछ नवियों की चर्चा की जा रही है जिन्होंने धैर्य से काम लिया

3 अर्थात् नूह (अलैहिस्सलाम) (950) वर्ष तक अपनी जाति में धर्म का प्रचार करते रहे।

को तुम पूज रहे हो अल्लाह के सिवा वे नहीं अधिकार रखते हैं तुम्हारे लिये जीविका देने का। अन खोज करो अल्लाह के पास जीविका की तथा इयादत (बंदना) करो उस की और कृतज्ञ बनो उस के, उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।

18. और यदि तुम झूठलाओ तो झूठलाया है बहुत से समुदायों ने तुम से पहले, और नहीं है रसूल¹ का दायित्व परन्तु खुला उपदेश पहुंचा देना।

19. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभ करता है फिर उसे दुहरायेगा², निश्चय यह अल्लाह पर अति सरल है।

20. (हे नबी!) कह दे कि चलो फिरो धरती में फिर देखो कि उस ने कैसे उत्पत्ति का आरंभ किया है, फिर अल्लाह दूसरी बार भी उत्पन्न³ करेगा, वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है

21. वह धानना देगा जिसे चाहेगा तथा दया करेगा जिस पर चाहेगा, और उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।

22. तुम उसे विवश करने वाले नहीं हो न धरती में न आकाश में, तथा नहीं है तुम्हारा उस के सिवा कोई

مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَاسْتَعِزُّوا
عِنْدَ اللَّهِ الْوَرَقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا
لَهُ زَلِمَ شَرِّعُونَ ﴿٢٠﴾

وَمَنْ يَكْفُرْ يَكْفُرْ بِمَا كَذَّبَ أَمْرًا مِنْ
قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَّمُ الرُّسُولُ إِلَّا الْبَلَاغَ
الْمُبِينُ ﴿٢١﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ
بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُعِيدُهُ الثَّانِيَةَ
الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٣﴾

يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ تَعَالَى ﴿٢٤﴾

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي
السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ دَلِيلٍ

1 अर्थात् अल्लाह का उपदेश मनवा देना रसूल का कर्तव्य नहीं है।

2 इस आयत में आखिरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है

3 अर्थात् प्रलय के दिन कर्मों का परिणाम देने के लिये।

संरक्षक और न सहायक।

وَلَا يُصِيرُ

23. तथा जिन लोगों ने इन्कार किया अब्राह की आयतों और उस से मिलने का, वही निराश हो गये हैं मेरी दया से और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَبِآيَاتِ
يَسْأَلُونَ وَيَقُولُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ

24. तो उस (इब्राहीम) की जाति का उत्तर बस यही था कि उन्हीं ने कहा इसे बध कर दो या इसे जला दो, तो अब्राह ने उसे बचा लिया अग्नि से। वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो ईमान रखते हैं।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ
أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ

25. और कहा तुम ने तो अब्राह को छोड़ कर मूर्तियों को प्रेम का साधन बना लिया है अपने बीच सामरिक जीवन में, फिर प्रलय के दिन तुम एक दूसरे का इन्कार करोगे तथा धिक्कारोगे एक-दूसरे को, और तुम्हारा आवास नरक होगा और नहीं होगा तुम्हारा कोई सहायक।

وَقَالَ إِنِّي أَخَافُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لَكُمُ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمُ بِبَعْضٍ
وَيَلْعَنُ بَعْضُكُمُ بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمُ مِنْ نَاصِرِينَ

26. तो मान लिया उस को लूट¹ ने, और इब्राहीम ने कहा मैं हिजरत कर रहा हूँ अपने पालनहार² की ओर। निश्चय वही प्रबल तथा गुणी है।

فَأَمَّنَ لَهُ لُوطٌ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَى رَبِّي
إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

27. और हम ने प्रदान किया उसे इम्हाक तथा याकूब तथा हम ने रख दी उस की सतान में नबूवत तथा पुस्तक,

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي
ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ

1 लूट (अलैहिस्सलाम) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के भतीजे थे। जो उन पर ईमान लाये।

2 अर्थात् अब्राह के आदेशानुसार शाम जा रहा हैं।

और हम ने प्रदान किया उसे उस का प्रतिफल संसार में, और निश्चय वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لِمَنِ الصَّالِحِينَ ﴿٢٨﴾

28. तथा लूत को (भेजा)। जब उस ने अपनी जाति से कहा: तुम तो वह निर्लज्जा कर रहे हो जो तुम से पहले नहीं किया है किसी ने संसार वासियों में से।

وَلُوطُ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يُكْفِّرُكُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ
الْقَابِضَةُ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

29. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो, और डकैती करने हो तथा अपनी सभाओं में निर्लज्जा के कार्य करते हो? तो नहीं था उस की जाति का उत्तर इस के अतिरिक्त कि उन्होंने ने कहा: तू ला दे हमारे पास अब्राह की यातना, यदि तू सच्चों में से है।

أَهْنَأْكُمْ لِقَائِهِمْ وَتَفْكَرُونَ الْهَيْلَةَ
وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمْ تُنْكِرُ كَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْبَلْ بِهَذَا ابْنُ الْغَوَاكِسَ
مِنَ الصِّبْيَانِ ﴿٣٠﴾

30. लूत ने कहा मेरे पालनहार। मेरी सहायता कर उपद्रवी जाति पर।

قَالَ رَبِّ نَصْرِي عَلَى الْقَوْمِ لَتَسِيدِينَ ﴿٣١﴾

31. और जब आये हमारे भेजे हुये (फरिश्ते) इब्राहीम के पास शुभ सूचना ले कर, तो उन्होंने ने कहा: हम विनाश करने वाले हैं इस बस्ती के वासियों का। बस्तुन इस के वासी अत्याचारी हैं।

وَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ يَنْصُرُونَ قَالُوا
إِنَّا مَهْلِكُونَ أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ
إِنْ هُمْ إِلَّا فُلَانٌ كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣٢﴾

32. इब्राहीम ने कहा उस में तो लूत है। उन्होंने ने कहा: हम भली भाँति जानने वाले हैं जो उस में है। हम अवश्य बचा लेंगे उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा, वह पीछे रह जाने वालों में थी।

قَالَ إِنَّ فِيكُمْ لُوْطًا فَإِذَا هُوَ مَخْلُوعٌ
فِيهَا لَنَسْجِيْنَهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ
مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٣٣﴾

33. और जब आ गये हमारे भेजे हुये लूत

وَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ لَوْطًا وَمَنْ فِي بَيْتِهِ

कें पास तो उसे बुरा लगा और वह उदासीन हो गया¹। उन के आने पर। और उन्होंने ने कहा भय न कर और न उदासीन हो, हम तुझे बचा लेने वाले हैं तथा तेरे परिवार को परन्तु तेरी पत्नी को, वह पीछे रह जाने वालों में है।

34. वास्तव में हम उतारने वाले हैं इस बस्ती के वासियों पर आकाश से यातना इस कारण कि वह उल्लंघन कर रहे हैं।

35. तथा हम ने छोड़ दी है उस में एक खुनी निशानी उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

36. तथा मद्यन की ओर उन के भाई शूऐब को (भेजा) तो उस ने कहा है मेरी जाति के लोगों। इबादन (बंदना) करो अल्लाह की, तथा आशा रखो प्रलय के दिन² की और मत फिरो धरती में उपद्रव करने हुये।

37. किन्तु उन्होंने ने उसे झुठला दिया तो पकड़ लिया उन्हें भूकम्प ने और वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

38. तथा आद और समूद का (विनाश किया) और उजागर है तुम्हारे लिये उन के घरों के कुछ अवशेष और शोभनीय बना दिया शैतान ने उन के कर्मों का और रोक दिया उन्हें सुपथ

وَصَدَّقَ بِهِمْ ذُرِّيَّتُهُ وَقَالُوا لَا تَحْزَنْ
وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجُونَكَ وَلَقَدْ كَانَ
إِمرَأَتُكَ كَانَتْ مِنْ غَيْرِكُمْ ۝

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَى أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ زُلْزَلَةً
مِّنَ السَّمَاءِ يَمَسُّ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا مَنَاحِيئَهُ بِهَيْمَةَ الْقَوْمِ
يَعْقِلُونَ ۝

وَدَلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُ شُعَيْبًا قَالَتْ يَقُومُ
الْعِبَادُ وَنَحْنُ وَارِثُو نِيَوْمِ الْأَرْضِ وَلَا تَعْتُوا
فِي الْأَرْضِ مُسْتَبِدِينَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ وَأَصْبَحُوا
فِي دَرَجَاتٍ مُّسْتَوِينَ ۝

وَعَادَ آلَ ثَمُودَ فَأَقْدَمَ عَلَيْهِمُ الْمَلَكُ مِنْ رَبِّهِمْ
وَذَرَّاهُمْ أَشْقَىٰ سَعَا لَهُمْ قَصْدُ هِمَّتِهِمْ
أَسْفَىٰ وَكَانُوا مُسْتَبِيرِينَ ۝

1 क्योंकि लूत (अलैहस्सलाम) को अपनी जाति की निर्लज्जा का ज्ञान था।

2 अर्थात् समारिक जीवन ही को सब कुछ न समझो, परलोक के अच्छे परिणाम की भी आशा रखो और सदाचार करो।

से, जब कि वह समझ बूझ रखते थे।

39. और कारून तथा फिरऔन और
हामान का और लाये उन के पास
मूसा खुली निशानियाँ, तो उन्होंने ने
अभिमान किया और वह हम से आगे
होने वाले न थे।

وَقَارِبَ وَقِيرَعُونَ وَهَامَسَ وَلَعَدَجَاءَهُمْ
مُوسَى بِالْبَيْتِ فَأَسْتَبْرَأَ فِي الْأَرْضِ وَكَانُوا
سِقَاتٍ ۝

40. तो प्रत्येक को हम ने पकड़ लिया उस के पाप के कारण, तो इन में से कुछ पर पत्थर बरमाये² और उन में से कुछ को पकड़ा³ कड़ी ध्वनि ने तथा कुछ को धंसा दिया धरती में, और कुछ को डुबो⁴ दिया। तथा नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

[illegible]

41. उन का उदाहरण जिन्होंने बना लिये
अब्राह को छोड़ कर संरक्षक, मकड़ी
जैसा है जिस ने एक घर बनाया,
और वास्तव में घरों में मक से
अधिक निर्बल घर' मकड़ी का है
यदि वह जानते।

مَثَلُ الَّذِينَ يُخَادُّونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيَاءَ
مَثَلُ الْعَصَائِفِ إِذَا خَشَتْ بَيْتًا وَرَأَتْ أَهْلَهُ
الْمَيُوتَ كَيْفَ لَعْنَتْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

42. वास्तव में अल्लाह जानता है कि वे
जिसे पुकारते हैं¹⁶ अल्लाह को छोड़

بِأَنَّهُ يَعْلَمُ مَا بَدَّخُوهُ مِنْ ذُنُوبِهِمْ

1 अर्थात् हमारी पकड़ से नहीं बच सकते थे।

2 अर्थात् लक्ष्य की जाति पर।

3 अर्थात् सत्तेह और शऐब (अलैहमस्सलाम) की जानि को।

4 जैसे करून को।

5 अर्थात् नह तथा मसा(अलैहिममसलाम) की जानियों को

6 जिस प्रकार मक्ड़ी का घर उस की रक्षा नहीं करता वैसे ही अल्लाह की यातना के समय इन जातियों के पुज्य उन की रक्षा नहीं कर सकें।

कर वह कुछ नहीं है। और वही प्रबल गुणी (प्रवीण) है।

لَيْسَ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٠﴾

43. और यह उदाहरण हम लोगों के लिये दे रहे हैं और इसे नहीं समझेंगे परन्तु ज्ञानी लोग (ही)।

وَيَذَرُكَ أَكْثَرُ النَّاسِ تَصَويُهَا إِنَّ يَوْمَئِذٍ يُعَذِّبُهَا إِلَّا الْغَائِمِينَ ﴿٢١﴾

44. उत्पत्ति की है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की सत्य के साथ। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है इमान लाने वालों के¹⁾ लिये।

خَلَقَ اللَّهُ سَمَوَاتٍ وَالْأَرْضَ وَالْحَقَّ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢﴾

45. आप उस पुस्तक को पढ़ें जो वही (प्रकाशना) की गई है आप की ओर, तथा स्थापना करें नमाज की। वास्तव में नमाज रोकती है निर्लज्जा तथा दुराचार से और अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान् है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते²⁾ हो।

أَنزَلَ مَا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقْبَرِ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْمَغْتَابِ وَالْذِّكْرُ وَلَبَّ كَرَامَةُ الْبَرِّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٢٣﴾

46. और तुम बाद-विवाद न करो अहले किताब³⁾ से परन्तु ऐसी विधि से जो सर्वोत्तम हो, उन के सिवा जिन्हों ने अत्याचार किया है उन में से। तथा तुम कहो कि हम इमान लाये उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और उतारा गया तुम्हारी ओर, तथा हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही⁴⁾ है। और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।⁵⁾

وَلَا تَجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِاتِّمَامٍ فِي أَحْسَنِ الْأَدْبَارِ مَا ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَتَوَلَّوْا مِنْهُمْ بِالْحَقِّ أَنزِلَ رُسُلًا وَنُزِّلَ الْكِتَابُ وَرَحْمَةُ الْهَيْكَةِ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٢٤﴾

1 अर्थात् इस विश्व की उत्पत्ति तथा व्यवस्था ही इस का प्रमाण है कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है।

2 अर्थात् जो भला बुरा करते हो उस का प्रतिफल तुम्हें देगा।

3 अहले किताब से अभिप्रेत यहूदी तथा ईसाई हैं।

4 अर्थात् उस का कोई साझी नहीं।

5 अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ और सभी आकाशीय पुस्तकों

47. और इसी प्रकार हम ने उतारी है आप की ओर यह पुस्तक, तो जिन को हम ने पुस्तक प्रदान की है वह इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते¹ है और इन में से (भी) कुछ² इस (क़ुरआन) पर ईमान ला रहे हैं और हमारी आयतों को काफ़िर ही नहीं मानते हैं।

48. और आप इस से पूर्व न कोई पुस्तक पढ़ सकते थे और न अपने हाथ से लिख सकते थे। यदि ऐसा होता तो झूठे लोग संदेह³ में पड़ सकते थे।

49. बल्कि यह खुली आयतें हैं जो उन के दिलों में सुरक्षित हैं जिन को ज्ञान दिया गया है। तथा हमारी आयतों (क़ुरआन) का इन्कार⁴ अत्याचारी ही करने हैं।

50. तथा (अत्याचारियों) ने कहा: क्यों नहीं उतारी गयी आप पर निशानियाँ आप के पालनहार की ओर से? आप कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास⁵ हैं और मैं तो खुला सावधान करने वाला हूँ।

وَكَذَلِكَ أَرْسَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَالْتَمِمْ فِيهِ
الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ
وَمَا يَجْعَلُ إِلَّا لِلْكَافِرِينَ ۝

وَأَنْتَ تَتْلُو مِنْ قَبْلِهِ مَنْ يَكْتُمُ وَلَا عِظَةَ
يُحْيِيكَ وَالْأَرْقَابَ لَمُطْلُونَ ۝

بَيْنَ هَؤُلَاءِ تَنْبِيْهُنَّ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
وَمَا يَجْعَلُ إِلَّا لِلْكَافِرِينَ ۝

وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْإِنشَاءُ
مَعْنَاهُ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝

को क़ुरआन सहित स्वीकार करो।

1 अर्थात् अहले किताब में से जो अपनी पुस्तकों के सत्य अनुयायी हैं।

2 अर्थात् सबका वासियों में से।

3 अर्थात् यह संदेह करने कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह बातें आदि ग्रन्थों से सीख ली या लिख ली हैं। आप तो निरक्षर थे लिखना-पढ़ना जानने ही नहीं थे तो फिर आप के नबी होने और क़ुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित किये जाने में क्या संदेह हो सकता है।

4 अर्थात् जो सत्य से आज्ञान हैं।

5 अर्थात् उसे उतारना-न उतारना मेरे अधिकार में नहीं मैं तो अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ।

51. क्या उन्हें पर्याप्त नहीं कि हम ने उतारी है आप पर यह पुस्तक (कुरआन) जो पढ़ी जा रही है उन पर। वास्तव में इस में दया और शिक्षा है उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
52. आप कह दें: पर्याप्त है अब्राह मेरे तथा तुम्हारे बीच साक्षी।¹ वह जानता है जो आकाशों तथा धरती में है। और जिन लोगों ने मान लिया है असत्य को और अब्राह से कफ़ किया है वही विनाश होने वाले हैं।
53. और वे² आप से शीघ्र माँग कर रहे हैं यातना की। और यदि एक निर्धारित समय न होता तो आज्ञाती उन के पास यातना, और अवश्य आयेगी उन के पास अचानक और उन्हें ज्ञान (भी) न होगा।
54. वे शीघ्र माँग³ कर रहे हैं आप से यातना की। और निश्चय नरक घेरने वाली है काफ़िरो⁴ को।
55. जिस दिन छा जायेगी उन पर यातना उन के ऊपर से तथा उन के पैरों के नीचे से। और अब्राह कहेगा: चखो जो कुछ तुम कर रहे थे।

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمُ آيَاتُنَا عِنْدَ الْكِتَابِ يَتْلُو عَلَيْهِمْ رَبُّنَا
ذَلِكَ لِرَحْمَةٍ وَدُرِّ الْفُؤَادِ ۝

قُلْ كَفَىٰ بِهَذَا شَهِيدًا يَعْلَمُ بِلَيْلِ الْعَمَلِ
وَالْأَرْضِ وَاللَّيْلِ أَسْوَأَ الْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِهَذَا
أَوَّلَ الْفُؤَادِ ۝

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَا أَجْرٌ مُّسْتَعْتَبٌ
الْعَذَابُ وَلَئِنْ لَّمْ يَنْتَهُوا لَنُفِثَنَّ لَهُمْ وَلَمَّا يَتُوبُوا ۝

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنْ جَهَنَّمُ لَبِيطَةٌ
بِالْكُفْرِ ۝

يَوْمَ يَعْشَاهُمْ الْعَذَابُ مِنْ قُودِهِمْ وَمِنْ عَمَلِهِمْ
أُجِيلُهُمْ وَيَقُولُ دُعُوا آلَكُمْ تَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् मेरे नबी होने पर।

2 अर्थात् मक्का के काफ़िरो।

3 अर्थात् संसार ही में उपहास स्वरूप यातना की माँग कर रहे हैं।

4 अर्थात् परलोक में।

56. हे मेरे भक्तों जो ईमान लाये हो। वास्तव में मेरी धरती विशाल है, अतः तुम मेरी ही इबादत (बंदना)¹ करो।

57. प्रत्येक प्राणी मौन का स्वाद चखने वाला है फिर तुम हमारी ही ओर फेरे² जाओगे।

58. तथा जो ईमान लाये, और सदा चार किये तो हम अवश्य उन्हें स्थान देंगे स्वर्ग के उच्च भवनों में, प्रवाहित होंगी जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में, तो क्या ही उत्तम है कर्म करने वालों का प्रतिफल।

59. जिन लोगों ने सहन किया तथा वह अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।

60. कितने ही जीव हैं जो नहीं लादे फिरने³ अपनी जीविका, अल्लाह ही उन्हें जीविका प्रदान करता है तथा तुम को, और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

61 और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की और (किस ने) वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَدِينَةِ آمِنًا أَخِي وَإِسِيعَةُ ابْنِ مَرْيَمَ
فَلْيَعْبُدُوا اللَّهَ

كُلُّ لَحْمٍ ذَلِيلٌ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ
لِبَاقَاتِ عَمَلِهِمْ تَجَارِقَ مِنَ الْجَنَّةِ الْأَنْهَارِ
فِيهِ يَجْرِي سُرُورٌ

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

وَكَيْفَ تَتَذَكَّرُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَلَّا تَكْفُرُوا
بِآيَاتِهِ وَالْحَقُّ يَوْمَئِذٍ بَصِيرٌ

وَلَيْسَ سَأَلُهُمْ فَنَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَخَلَقَ
النَّاسَ وَالْقَمَرَ لِيَقُولَنَّ اللَّهُ قَالُ يُؤْمِنُونَ

1 अर्थात् किसी धरती में अल्लाह की इबादत न कर सको तो वहाँ से निकल जाओ जैसा कि आरंभिक युग में मक्का के काफ़िरो ने अल्लाह की इबादत से रोक दिया तो मुसलमान हज्जा और फिर मदीना चले गये।

2 अर्थात् अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

3 हदीस में है कि यदि तुम अल्लाह पर पूरा पूरा भरोसा करो तो तुम्हें पक्षी के समान जीविका देगा जो सवेरे भूखा जाने है और शाम को अघा कर आने है। (निर्मिजी 2344, यह हदीस हमन सहीह है।)

फिर वह कहीं बहके जा रहे हैं।

62. अब्राह ही फैलाना है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से और नाप कर देता है उस के लिये वास्तव में अब्राह प्रत्येक वस्तु का अनि ज्ञानी है।

63. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उनारा है आकाश से जल, फिर उस के द्वारा जीवन किया है धरती को उस के मरण के पश्चात् तो वह अवश्य कहेंगे कि अब्राह ने। आप कह दें कि सब प्रशंसा अब्राह के लिये है। किन्तु उन में से अधिकतर लोग समझते नहीं।¹

64. और नहीं है यह संसारिक² जीवन किन्तु मनोरंजन और खेल और परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होना यदि वह जानते।

65. और जब वह नाव पर सवार होते हैं, तो अब्राह के लिये धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं। फिर जब वह बचा लाता है उन्हें धल तक, तो फिर शिर्क करने लगते हैं।

اللَّهُ يَسْطُرُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَعْلَمُ إِلَهَ إِنَّ اللَّهَ يَكُنْ شَىْءٌ عَلَيْهِمْ

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاءَ وَآرَافَافَهُ
الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهِمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ كُلُّ أَفْئِدَةٍ
بَيْنَ يَدَيْهِ فَهُمْ لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا

وَمَا هِيَ إِلَّا هَوَىٰ ذَاتِ الْإِنْفَةِ وَتَجِبُ قُرْآنَ الْمَدَارِ
الْجَزْءِ نَهَىٰ عَمَّا لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِ دَعَا إِلَهُهُمُ الْخَالِصِينَ لَهُ
الَّذِينَ دَفَعْنَا عَنْهُمْ إِيَّاهُ فَسَبَّحُوا لَهُمْ
نُشْرُكُونَ

1 अर्थात् जब उन्हें यह स्वीकार है कि रचयिता अब्राह है और जीवन के साधन की व्यवस्था भी वही करना है तो फिर इबादत (पूजा) भी उसी की करनी चाहिये और उस की वंदना तथा उस के शुभगुणों में किसी को उस का साझी नहीं बनाना चाहिये यह तो मूर्खता की बात है कि रचयिता तथा जीवन के साधनों की व्यवस्था तो अल्लाह करे और उस की वंदना में अन्य को साझी बनाया जाये।

2 अर्थात् जिस संसारिक जीवन का संबंध अब्राह से न हो तो उस का मुख साम्यिक है वास्तविक तथा स्थायी जीवन तो परलोक का है अतः उस के लिये प्रयास करना चाहिये।

66. ताकि वह कुफ़ करे उस क साथ जो हम ने उन्हें प्रदान किया है, और ताकि आनन्द लेते रहें, तो शीघ्र ही इन्हें ज्ञान हो जायेगा।
67. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने बना दिया है हरम (मक्का) को शान्ति स्थल, जब कि उचक लिये जाते हैं लोग उन के आस- पास से? तो क्या वह असत्य ही को मानते हैं और अब्राह के पुरस्कार को नहीं मानते?
68. तथा कौन अधिक अत्याचारी होगा उस से जो अब्राह पर झूठ घड़े या झूठ कहे सच्च को जब उस के पास आ जाये तो क्या नहीं होगा नरक में आवास काफ़िरों का?
69. तथा जिन्हों ने हमारी राह में प्रयास किया तो हम अवश्य दिखा¹ देंगे उन को अपनी राह। और निश्चय अब्राह सदाचारियों के साथ है।

لَنَكْفُرَنَّهُمْ وَإِنَّمَا كُنَّا فِيهِمْ مُّسْتَوْفِينَ
يَقْتُلُونَ

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مَّسْكُوعًا لِّبَنِي
إِسْرَءِيلَ وَأَنَّا جَعَلْنَا مُبَارَكًا عَلَيْهِمْ
مِّنْ خِزْيِهِمْ شَأْنًا وَمِنَ الَّذِينَ هُمْ يَكْفُرُونَ ٥

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ قَاتَىٰ عَلَىٰ إِلَٰهِ رَبِّكَ
بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّهِ
فَأُولَٰئِكَ يَكْفُرُونَ ٦

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا
وَأَنَّا لَمَعَ الْبَاقِينَ ٧

1 अर्थात् अपनी राह पर चलने की अधिक क्षमता प्रदान करेंगे।

सूरह रूम - 30

سورة الروم

सूरह रूम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 60 आयते हैं।

- इस सूरह में रूमियों के बारे में एक भविष्यवाणी की गई है इसी लिये इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में आखिरत का विश्वास दिलाया गया है जो ममार की वास्तविकता पर विचार करने से पैदा होता है तथा इस से कि अल्लाह का प्रत्येक वचन पूरा होता है।
- इस में रूमियों की विजय की भविष्यवाणी की गई है और इस से विश्व के स्वामी तथा आखिरत की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की निशानियों में मोच विचार का आमंत्रण दिया गया है जो आकाशों तथा धरती में फैली हुई है और परलोक का विश्वास दिलाती है।
- तौहीद के सत्य तथा शिर्क के असत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं और यह बताया गया है कि तौहीद स्वाभाविक धर्म है। अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा पाप से बचने के निर्देश दिये गये हैं और इस पर उत्तम परिणाम की शुभ सूचना दी गई है।
- अन्त में फिर बात प्रलय तथा परलोक की ओर फिर गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ लाम मीम।

الْم

2. पराजित हो गये रूमी।

غِيَبَتِ السَّيُوفُ

3. समीप की धरती में, और वह अपने
पराजित होने के पश्चात् जल्द ही
विजयी हो जायेंगे।

فِي الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَذَابِهِمْ
سَيُعَذِّبُونَ

4. कुछ वर्षों में, अल्लाह ही का अधिकार

فِي بَضْعِ سِنِينَ ذَٰلِكُمُ الْأَمْرُ مَنْ قُلَّ وَمَنْ

है पहले (भी) और बाद में (भी)। और उस दिन प्रशन्न होंगे ईमान वाले।

نَعْدُو وَيَوْمَ يُنْفَخُ الثُّمُورُ الْمُؤْمِنُونَ ۝

5. अल्लाह की सहायता से, तथा वही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।

يَنْصُرُ اللَّهُ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

6. यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन¹ के, और परन्तु अधिकतर लोग जान नहीं रखते।

وَعَدَ اللَّهُ لَا تُخِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

7. वह तो जानते हैं बस ऊपरी समारिक जीवन को। तथा² वह परलोक से अचेत हैं।

يَعْلَمُونَ مَا هِيَ مِنَ الْغَيْبِ الذُّلَّةِ أَوْفَى غَيْرِ الْآخِرَةِ فَهُمْ غٰفِلُونَ ۝

8. क्या और उन्होंने ने अपने में सोच विचार नहीं किया कि नहीं उत्पन्न किया है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन³ दोनों के बीच है परन्तु सत्यानुसार

وَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي الْقَاسِمِ رَاحَتِ اللَّهِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ آيَاتٍ لِّعَنِ النَّاسِ وَرَبِّ كَثِيرٍ مِنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكِبَرُونَ ۝

1 इन आयतों के अन्दर दो भविष्य वाणियों की गड़ है। जो कुर्बान शरीफ तथा स्वयं नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य होने का ऐतिहासिक प्रमाण है। यह वह युग था जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मक्का के कुरैश के बीच युद्ध आरंभ हो गया था। रूम के राजा कैसर को उस समय ईरान के राजा (किस्रा) ने पराजित कर दिया था। जिस से मक्कावासी प्रसन्न थे क्योंकि वह अग्नि के पुजारी थे। और रूमी इमाद आकाशीय धर्म के अनुयायी थे। और कह रहे थे कि हम मिश्रणवादी भी इसी प्रकार मुसलमानों को पराजित कर देंगे जिस प्रकार रूमियों को इरानियों ने पराजय किया। इसी पर यह दो भविष्य वाणी की गई कि रूमी कुछ वरों में फिर विजयी हो जायेंगे और यह भविष्य वाणी इस के साथ पूरी होगी कि मुसलमान भी उसी समय विजयी हो कर प्रसन्न हो रहे होंगे। और ऐसा ही हुआ कि 9 वर्ष के भीतर रूमियों ने इरानियों को पराजित कर दिया।

2 अर्थात् सुख-सुविधा और आनन्द को। और वह इस से अचेत है कि एक और जीवन भी है जिस में कर्मों के परिणाम सामने आयेंगे। बल्कि यही देखा जाता है कि कभी एक जाति उन्नति कर लेने के पश्चान् असफल हो जाती है।

3 विश्व की व्यवस्था बता रही है कि यह अकारण नहीं बल्कि इस का कुछ अभिप्राय है

और एक निश्चित अवधि के लिये
और बहुत से लोग अपने पालनहार
से मिलन का इन्कार करने वाले हैं।

9. क्या वह चले फिरे नहीं धरती में,
फिर देखते कि कैसा रहा उन का
परिणाम जो इन से पहले थे? वह
इन से अधिक थे शक्ति में। उन्होंने
ने जोता-बोया धरती को और उसे
आबाद किया, उस से अधिक जितना
इन्होंने ने आबाद किया, और आये
उन के पास उन के रसूल खुली
निशानियाँ (प्रमाण) ले कर। तो नहीं
था अल्लाह कि उन पर अत्याचार
करना और परन्तु वह स्वयं अपने
ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

10. फिर हो गया उन का बुरा अन्त जिन्होंने
ने बुराई की इस लिये कि उन्होंने
झूठ कहा अल्लाह की आयतों को, और
वह उन का उपहास कर रहे थे।

11. अल्लाह ही उत्पत्ति का आरम्भकरता है
फिर उसे दुहरायेगा तथा उसी की
ओर तुम फेरे¹ जाओगे।

12. और जब स्थापित होगी प्रलय, तो
निराश² हो जायेंगे अपराधी।

13. और नहीं होगा उन के साझियों में
उन का अभिस्तावक (सिफारशी)
और वह अपने साझियों का इन्कार

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَنَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ
كُفْرًا وَنَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرًا
عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ كَمَا كَانُوا
يَظْلِمُونَ

لَمْ يَكُنْ عَاقِبَةُ الَّذِينَ آمَنُوا وَالشُّرَاقِ
أَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

وَيَوْمَ يَقُومُ لَتَّ عَذِيبِشِ الْمَعْرِمُونَ

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ
وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَاذِبِينَ

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपने संसारिक अच्छे बुरे कर्मों का प्रतिकार पाने के लिये।

2 अर्थात् अपनी मुक्ति से और चकित हो कर रह जायेंगे।

करने वाले¹ होंगे।

14. और जिस दिन स्थापित होगी प्रलय, तो उस दिन सब अलग अलग हो जायेंगे।
15. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये वही स्वर्ग में प्रसन्न किये जायेंगे।
16. और जिन्होंने कफ़ किया और झुठलाया हमारी आयतों को और परलोक के मिलन को, तो वही यातना में उपस्थित किये हुये होंगे।
17. अतः तुम अल्लाह की पवित्रता का वर्णन सध्या तथा सवेरे किया करो।
18. तथा उसी की प्रशंसा है आकाशों तथा धरती में नीमरे पहर तथा जब दोपहर हो।
19. वह निकालता है² जीवित से निर्जीव को तथा निकालना है निर्जीव से जीव को, और जीवन कर देता है धरती को उस के मरण (सूखने) के पश्चात् और इसी प्रकार तुम (भी) निकाले जाओगे।
20. और उस की (शक्ति) के लक्षणों में से यह (भी) है कि तुम्हें उत्पन्न किया मिट्टी से फिर अब तुम मनुष्य हो (कि धरती में) फैलते जा रहे हो।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُنْفَخُونَ ۝

فَأَمَّا الْكَاذِبِينَ أَصْحَابُ الْأَصْطِصَابِ قَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ۝

وَأَمَّا الْيَمِينِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِغَايِ الْأُخْرَىٰ فَلَا يَكُنْ فِي الْعَذَابِ مُخْتَلِفُونَ ۝

فَسُبِّحْ لِلَّهِ جَمِيعُ سُحُورٍ وَجَمِيعُ نُصُحُورٍ ۝

وَلَهُ لَحْمٌ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَجَمِيعُ نُفُحُورٍ ۝

يُخْرِجُهُ لَيْلٍ مِنْ نَسْتٍ وَيُخْرِجُهُ نَسْتٍ مِنْ لَيْلٍ وَهُنَّ الْأَرْضُ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يَخْلُقَ مِنْ تَرَابٍ نَسْتًا ثُمَّ يَخْلُقُ مِنْهَا إِنْسَانًا ۝

1 क्यों कि यह देख लेंगे कि उन्हें सिफारिश करने का कोई अधिकार नहीं होगा (देखिये सूरह अन्आम आयत 23)

2 यहाँ से यह बताया जा रहा है कि प्रलय होकर परलोक में सब को पुनः जीवित किया जाना संभव है और उस का प्रमाण दिया जा रहा है। इसी के साथ यह भी बताया जा रहा है कि इस विश्व का स्वामी और व्यवस्थापक अल्लाह ही है अतः पूज्य भी केवल वही है।

21. तथा उस की निशानियों (लक्षणों) में से यह (भी) है कि उत्पन्न किया तुम्हारे लिये तुम्हीं में से जोड़े ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उन के पास तथा उत्पन्न कर दिया तुम्हारे बीच प्रेम तथा दया, वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोच विचार करते हैं।
22. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती को पैदा करना तथा तुम्हारी बोलियों और रंगों का विभिन्न होना। निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं जानियों¹ के लिये।
23. तथा उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात्री में तथा दिन में, और तुम्हारा खोज करना उस के अनुग्रह (जीविका) का। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सुनते हैं।
24. और उस की निशानियों में से (यह भी) है कि वह दिखाता है तुम्हें बिजली को भय तथा आशा बना कर और उतारता है आकाश से जल, फिर जीवित करता है उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्,

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْتَمِدُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَخِلْقَ الْبَشَرِ وَالْوَلَدِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ مَقَامُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَآلِتُكُمْ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْتَمِدُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ يُرْسِلُ الْبَرْقَ غَوَاةً وَظُفُرًا مِزْرًا مِنْ سَآمَاءٍ مُّتَبَعًا يَخْرُجُ بِهِ الْبَرْقُ بِعَدَمٍ مُّؤْتَمَرٍ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

1. कुर्आन ने यह कह कर कि भाषाओं और वर्ग-वर्ण का भेद अल्लाह की रचना की निशानियाँ हैं उस भेद भाव को सदा के लिये समाप्त कर दिया जो पक्षताप आपसी बैर और गर्व का आधार बनते हैं। और संसार की शान्ति का भेद करने का कारण होते हैं। (देखिये: सूरह हुजुरान, आयत 13)
यदि आज भी इस्लाम की इस शिक्षा को अपना लिया जाये तो संसार शान्ति का गहवारा बन सकता है।

वस्तुतः इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोचते हैं।

25. और उस की निशानियों में से है कि स्थापित है आकाश तथा धरती उस के आदेश से। फिर जब तुम्हें पुकारेगा एक बार धरती से तो सहसा तुम निकल पड़ोगे।
26. और उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है, सब उसी के आधीन है।
27. तथा वही है जो आरंभ करना है उत्पत्ति को, फिर वह उसे दुहरायेगा। और वह अति सरल है उस पर। और उसी का सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धरती में, और वही प्रभुत्व शाली तत्त्वज्ञ है।
28. उस ने एक उदाहरण दिया है स्वयं तुम्हारा: क्या तुम्हारे¹⁾ दासों में से तुम्हारा कोई साझी है उस में जो जीविका प्रदान की है हम ने तुम को, तो तुम उस में उस के बराबर हो, उन से डरते हो जैसे अपनों से डरते हो? इसी प्रकार हम वर्णन करने हैं आयतों का उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं।
29. बल्कि चले हैं अन्याचारी अपनी मनमानी पर बिना समझे, तो कौन राह दिखाये उसे जिस को अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और नहीं है उन

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرٍ ثُمَّ يُرَادُّنَاكُمْ دَعْوَةً مِّنْ رَّدْفٍ إِذَا تَأْتَوْنَ تُفْرَجُونَ ﴿٢٥﴾

وَلَهُ مَن فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلِّ لَٰهٍ قَائِمٌ ﴿٢٦﴾

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْحَيَاةَ كُلَّ نَبِيٍّ وَيُعِيدُهَا وَهُوَ الْغَنِيُّ عَلَيْهِ رَدُّهُ أَسْخَلُ لَأَعْلَىٰ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

صَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ نَّفْسِكُمْ هَلْ تَكْمُرُونَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ تَمْرُكًا فِي مَآ رَرْتُمْكُمْ وَأَنْتُمْ فِيهِ سُوءٌ مُّتَعَاذُكُمْ كَيْفَ تَكْمُرُونَ أَنْفُسَكُمْ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

بَلِ اتَّبَعَ الْكَافِرِينَ مَا كَانُوا عَلَىٰ أَهْوَاءِهِمْ يَعْبَهُمُ الْمُؤْمِنُونَ يَهْدِي مَنْ أَصْلَ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ مُّصْرِيقٍ ﴿٢٩﴾

- 1 परलोक और एकेश्वरवाद के तर्कों का वर्णन करने के पश्चात् इस आयत में शुद्ध एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं कि जब तुम स्वयं अपने दासों को अपनी जीविका में साझी नहीं बना सकते तो जिस अल्लाह ने सब को बनाया है उस की बंदना उपासना में दूसरों को कैसे साझी बनाते हो?

का कोई सहायक।

30. तो (हे नबी!) आप सीधा रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अब्राह ने मनुष्यों को जिस¹ पर। बदलना नहीं है अब्राह के धर्म को, यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिकतर लोग नहीं² जानते।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ
الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ
اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

31. ध्यान कर के अब्राह की ओर, और डरो उस से तथा स्थापना करो नमाज की और न हो जाओ मुश्रिकों में से।

مُتَّبِعِينَ آيَةٍ وَالْعِزَّةَ وَالْأَيْمَانَ الْقِسْمَ الصَّلَاةِ
وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

32. उन में से जिन्होंने ने अलग बना लिया अपना धर्म और हो गये कड़ गिरोह, प्रत्येक गिरोह उसी में³ जो उस के पास है सग्न है।

مِنَ الَّذِينَ قَتَلُوا رِجْلَهُمْ وَكَانُوا أَوْشِيَاءَ كُلِّ
جُورٍ يَمَالِدُهُمْ فَبُخْؤُونَ ۝

33. और जब पहुंचता है मनुष्यों को कोई दुख तो वह पुकारते हैं अपने पालनहार को ध्यान लगा कर उस की ओर। फिर जब वह चखाता है उन को अपनी ओर से कोई दया, तो सहसा एक गिरोह उन में से अपने पालनहार के

وَإِذَا سَأَلَ النَّاسُ ضَرْدًا دَعَوْا لَهُمْ مُسِيَّبِينَ وَأَيُّهُمْ
يَكْفُرُ إِذَا قَامَهُمْ فَهُمْ رَحْمَةٌ إِذَا قَامَهُمْ فَهُمْ يَكْفُرُونَ
يُسْمِعُونَ ۝

- 1 एक हदीस में कुछ इस प्रकार आया है कि प्रत्येक शिशु प्राकृति (नेचर अर्थात् इस्लाम) पर जन्म लेता है। परन्तु उस के माँ बाप उसे यहूदी या इसाई या मजूसी बना देने हैं। (देखिये: सहीह मुस्लिम 2656) और यदि उस के माता पिता हिन्दु अथवा बुद्ध या और कुछ हैं तो वे अपने शिशु को अपने धर्म के रंग में रंग देते हैं।

आयत का भावार्थ यह है कि स्वभाविक धर्म इस्लाम और तौहीद को न बदलो बल्कि सहीह पालन पोषण द्वारा अपने शिशु को इसी स्वभाविक धर्म इस्लाम की शिक्षा दो।

- 2 इसी लिये वह इस्लाम और तौहीद को नहीं पहचानते।

- 3 वह समझता है कि मैं ही सत्य पर हूँ और उन्हें तथ्य की कोई चिन्ता नहीं।

साथ शिर्क करने लगता है।

34. ताकि वह उस के कृतघ्न हो जाये जो हम ने प्रदान किया है उन का तो तुम आनन्द ले लो, तुम को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।

35. क्या हम ने उतारा है उन पर कोई प्रमाण जो वर्णन करता है उस का जिसे वह अन्नाह का साझी बना¹ रहे है।

36. और जब हम चखाने है लोगों को कुछ दया तो वह उस पर इतराने लगते है। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुख उन के कर्तूतों के कारण तो वह सहसा निराश हो जाते है।

37. क्या उन्होंने ने नही देखा कि अन्नाह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहता है और नाप कर देता है। निश्चय इस में बहुत सी निशानियाँ है उन लोगों के लिये जो ईमान लाते है।

38. तो दो समीपवर्तियों को उस का अधिकार तथा निर्धनों और यात्रियों को यह उत्तम है उन लोगों के लिये जो चाहते हैं अन्नाह की प्रसन्नता, और वही सफल होने वाले है।

39. और जो तुम व्याज देने हो ताकि अधिक हो जाये लोगों के धनो² में

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمُوتَ فَتَكُونُ

أَمْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهَؤُلَاءِ كَاذِبِينَ
يُنْفِرُونَ

لَمَّا آدٰقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرَجَا وَرَأٰنَ تَعٰبَهُمْ
سَيِّئَةً يَبِغَادُونَ اٰيِدِيَهُمْ اِذَا هُمْ يَنْطُتُونَ

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْطِطُ الرِّيحَ بِمَنْ يَّشَآءُ
وَيَقْدِرُ اَن يَّاتِيَهُمْ لَآيَةً فَتَقُومُوا يُرْمَوْنَ

فَاَتٰ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَتٰمٰى وَارِثَ
السَّيِّئِ ذٰلِكَ خَبْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيدُوْنَ وَجْهَ اَمْنٍ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

وَمَا يَتَّبِعُوْنَ رَبَّ لِيَرْزُقُوْا اٰلِ اَمْوَالِ النَّاسِ

1 यह प्रश्न नकारात्मक है अर्थात् उन के पास इस का कोई प्रमाण नहीं है।

2 इस आयत में सामाजिक अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया गया है कि जब सब कुछ अन्नाह ही का दिया हुआ है तो नुम्हें अन्नाह की प्रसन्नता के लिये सब का अधिकार देना चाहिये। हदीस में है कि जो व्याज खाता खिलाता है और उसे लिखता तथा उस पर गवाही देता है उस पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

मिलकर तो वह अधिक नहीं होता
अब्राह के यहाँ तथा तुम जो जकात
देते हो चाहते हुये अब्राह की प्रसन्नता
तो वही लोग सफल होने वाले हैं।

40. अब्राह ही है जिस ने उत्पन्न किया है
तुम को, फिर तुम्हें जीविका प्रदान
की फिर तुम्हें मारेगा, फिर¹¹ जीवित
करेगा, तो क्या तुम्हारे साझियों में से
कोई है जो इस में से कुछ कर सके?
वह पवित्र है और उच्च है उन के
साझी बनाने से।

41. फैल गया उपद्रव जल तथा¹² धूल में
लोगों के करतूतों के कारण, ताकि
वह चखाये उन को उन का कुछ
कर्म, संभवतः वह रुक जाये।

42. आप कह दें चलो-फिरो धरती में
फिर देखो कि कैसा रहा उन का
अन्त जो इन से पहले थे। उन में
अधिकतर मुश्रिक थे।

43. अतः आप सीधा रखें अपना मुख
सत्धर्म की दिशा में इस से पहले कि
आ जाये वह दिन जिसे फिरना नहीं
है अल्लाह की ओर से, उस दिन

ने धिक्कार किया है।

1 इस में फिर एकेश्वरवाद का वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया है।

2 आयत में बताया गया है कि इस विश्व में जो उपद्रव तथा अत्याचार हो रहा
है यह सब शिर्क के कारण हो रहा है, जब लोगों ने एकेश्वरवाद को छोड़ कर
शिर्क अपना लिया तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। क्योंकि न एक अल्लाह
का भय रह गया और न उस के नियमों का पालन।

فَلَا تَرَوْا بَوَاعِدَ اللَّهِ وَمَا يَنْبِئُكُمْ مِنْ ذِكْرِهِ
تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُصْلِحُونَ ﴿٤٠﴾

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يَرْجِعْكُمْ
إِلَيْهِ وَإِنَّكُمْ مِنْ شِرْكَائِكُمْ مَنْ يَفْعَلُ
مِنْ دِينِكُمْ مِنْ شَيْءٍ لَنْ يُجِيبَهُمْ رَبُّكُمْ
وَلَنْ يَكُونَ لَكُمْ فِيهِمْ حَافِظُونَ ﴿٤١﴾

كَلْبَ السَّادِ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ يَأْتِيَتْ بِهِ
الْمَائِسُ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لِنَفْسِهِمْ
فَرُجِعُونَ ﴿٤٢﴾

كُلٌّ سَيُرَدُّ فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ كَانَ الْاُخْرُفَةُ مُشْرِكِينَ ﴿٤٣﴾

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَدِيمِ الَّذِي أَنزَلَ
بِهِ الْوَحْيَ وَأَنْتَ عَلَى الْبَصِيرَةِ ﴿٤٤﴾

लोग अलग अलग हो¹ जायेंगे।

44. जिस ने कफ़ किया तो उसी पर उस का कफ़ है और जिस ने सदाचार किया तो वे अपने ही लिये (सफलता का मार्ग) बना रहे हैं।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا نُغْنِي عَنْهُمْ صَالِحُهُمْ ۚ

45. ताकि अब्ब्राह बदला दे उन को जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये अपने अनुग्रह से। निश्चय वह प्रेम नहीं करता काफ़िरों से।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝

46. और उस की निशानियों में से है कि भेजता है वायु को शुभभूचना देने के लिये और ताकि चखाये तुम्हें अपनी दया (वर्षा) में से, और ताकि नाव चले उस के आदेश से, और ताकि तुम खोजो उस जीविका और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ تُمِيزُ بَيْنَ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بَيْنَ الَّذِينَ يَأْتِيهِمُ الْغُثَّ وَالْكَثْفُ ۚ

47. और हम ने भेजा आप से पहले रसूलों को उन की जड़तियों की ओर। तो वह लाये उन के पास खुली निशानियाँ, अन्ततः हम ने बदला ले लिया उन से जिन्होंने अपराध किया। और अनिवार्य था हम पर ईमान वालों की सहायता² करना।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَنكَرُوا مِنَ الَّذِينَ آجَرُوا ۚ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْهِمْ نَكَارُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

48. अल्लाह ही है जो वायुओं को भेजता है फिर वह उसे फैलाता है आकाश में जैसे चाहता है, और उसे घंघोर बना देता है। तो तुम देखते हो बूदों

إِنَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُبَثِّرُ بِهَا السَّحَابَ ۖ فَيُبْسِطُهُ فِي سَمَاءٍ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَتَجْعَلُهُ كُسْفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ جَنْبِهِ قَوَادٍ

1 अर्थात् ईमान वाले और काफ़िर।

2 आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के अनुयायियों को सहायता दी जा रही है।

को निकलने उस के बीच से, फिर जब उसे पहुँचाना है जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से तो सहसा वह प्रफुल्ल हो जाने है।

49. यद्यपि वह थे इस से पहले कि उन पर उतारी जाये, अनि निराशा।

50. तो देखो अब्राह की दया के लक्षणों को, वह कैसे जीवित करना है धरती को उस के मरण के पश्चात्, निश्चय वही जीवित करने वाला है मृदों को तथा वह सब कुछ कर सकता है।

51. और यदि हम भेज दें उग्र वायु फिर वह देख लें उस (खेती) को पीली तो इस के पश्चात् कुफ़ करने लगते हैं।

52. तो (हे नबी) आप नहीं सुना सकेंगे मृदों¹ को और नहीं सुना सकेंगे बहरों को पुकार जब वह भाग रहे हों पीठ फेर कर।

53. तथा नहीं है आप मार्ग दर्शाने वाले अंधों को उन के कृपध से, आप सुना सकेंगे उन्हीं को जो ईमान लाते हैं हमारी आयतों पर फिर वही मुस्लिम है।

54. अब्राह ही है जिस ने उत्पन्न किया तुम्हें निर्बल दशा से फिर प्रदान किया निर्बलता के पश्चात् बल फिर कर दिया बल के पश्चात् निर्बल तथा बूढ़ा², वह उत्पन्न करता है

أَصَابَ بِهِ مَنْ يَسْتَأْذِنُ عِوَاذَهُ إِذَا هُمْ يَسْتَسِرُّونَ ۝

وَرَبَّكَ النَّوَّاسُ قَبْلَ أَنْ يَنْزِلَ عَلَيْهِ مِنْ قِبَلِهِ الْمُنِيرُ ۝

فَأَنْظُرْ إِلَى شِرْعَتَيْهِ مَتَى كَفَّتْ فِي الْأَرْضِ بَعْدَ مَوْتِنَا إِنَّ ذِيكَ لَكُنْزِي الْمَوْقُوتِ وَمَنْ تَلَّ كُلُّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَلَمَّا رَأَيْنَا أَطْبَاقَهُمْ لَمُضٍ مَعَهُمْ قَالُوا وَمَنْ يَنْجِيهِمْ مِنَ الْعَذَابِ ۝

وَأَنَّكَ لَا تَسْمَعُ السَّمْعَ وَلَا تَنبِئُ بِالسَّاعَةِ إِذْ أُولَئِكَ يَفْعَلُونَ ۝

وَمَا أَنتَ بِهَادٍ الْعُمِّيَّ عَنْ صَلَاتِهِمْ إِنَّ تُسِغِرُ إِلَّا مَنْ يُلْهِىَ عَنْهَا وَإِنَّا فَهْمٌ مُخْتَلِفُونَ ۝

إِنَّهُ الْبَدِىُّ خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْهَةً يَخْتَضُّ بِمَا يُشَاءُ وَهُوَ عَزِيزٌ مُقْدِيرٌ ۝

1 अर्थात् जिन की अन्तरान्मा मर चुकी हो और सन्य सुनने के लिये तय्यार न हों।

2 अर्थात् एक व्यक्ति जन्म से मरण तक अल्लाह के सामर्थ्य के आधीन रहता है फिर उस की वंदना में उस के आधीन होने और उस के पुनः पैदा

जो चाहता है और वही सर्वज्ञ सब सामर्थ्य रखने वाला है।

55. और जिस दिन व्याप्त होगी प्रलय तो शपथ लेंगे अपराधी कि वह नहीं रहे क्षणभर¹ के सिवा। और इसी प्रकार वह बहकते रहे।

56. तथा कहेंगे जो ज्ञान दिये गये तथा ईमान, कि तुम रहे हो अस्त्राह के लेख में प्रलय के दिन तक, तो अब यह प्रलय का दिन है। और परन्तु तुम विश्वास नहीं रखते थे।

57. तो उस दिन नहीं काम देगा अत्याचारियों को उन का तर्क और न उन में क्षमायाचना कराई जायेगी।

58. और हम ने वर्णन कर दिया है लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण का, और यदि आप ला दें उन के पाम कोई निशानी तब भी अवश्य कह देंगे जो काफिर हो गये कि तुम तो केवल झूठ बनाते हो।

59. इसी प्रकार मूहर लगा देता है अस्त्राह उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते

60. तो आप सहन करें वास्तव में अस्त्राह का वचन सत्य है, और

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقِيمُ السَّجُودَ وَالْبُتُ
حَيْرَانَةً كَذِبَتْ كَانُوا يُؤْتُونَ

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ
إِلْمَعْنَا فِي كِتَابٍ أَنْزَلَ يَوْمَ الْبَحْثِ هَذَا
يَوْمَ الْبَحْثِ وَلَكِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

فَيَوْمَذِي لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَنُّوا أَنَّ
وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ

وَلَقَدْ فَتَرْنَا لِلْإِنْسَانِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ
مَثَلٍ وَلَكِنْ جَاهِلْتُمْ بَيِّنَاتٍ لِيَقُولُوا الْبَيِّنَاتُ كُفْرًا
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ

كَذَلِكَ يَضْمَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ
لَا يَعْلَمُونَ

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْحَبَنَّكَ

कर देने के सामर्थ्य को अस्वीकार क्यों करता है?

1 अर्थात् संसार में

कदापि वह आप¹ को हलका न
समझें जो विश्वास नहीं रखते।

الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

- 1 अन्तिम आयत में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य तथा साहस रखने का आदेश दिया गया है। और अब्राह ने जो विजय देने तथा सहायता करने का वचन दिया है उस के पूरा होने और निराश न होने के लिये कहा जा रहा है।

सूरह लुकमान - 31

سورة لقمان

सूरह लुकमान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 34 आयत है।

- इस सूरह में लुकमान को ज्ञान देने की बात है इस लिये इस का नाम सूरह लुकमान है।
- इस में धर्म के विषय में विचार करने तथा अध विश्वास से बचने तथा उन निशानियों से शिक्षा लेने के निर्देश दिये गये हैं जिन से जीवन सुधरता है।
- अल्लाह तथा धर्म के बारे में बिना ज्ञान के बात करने पर सावधान किया गया है और कर्म सुधारने पर उत्तम परिणाम की शुभसूचना दी गई है।
- लुकमान की उत्तम बातों का वर्णन किया गया है जो कुर्आन पाक की शिक्षाओं के अनुसार है।
- उन निशानियों को बताया गया है जिन से तौहीद तथा आखिरत की राह खुलती है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के सामने उपस्थित होने के दिन से डराया गया है और बताया गया है कि वह सब कुछ जानता है ताकि उस की आखिरत के बारे में सूचना का विश्वास हो जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अलिफ लाम मीम।
- 2 यह आयतें हैं ज्ञानपूर्ण पुस्तक की।
- 3 मार्ग दर्शन तथा दया है सदाचारियों के लिये
- 4 जो नमाज की स्थापना करते हैं तथा जकात देते हैं और परलोक पर (पूरा) विश्वास रखते हैं।

الْقُرْ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُتَّقِينَ

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ

بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

5. वही लोग
अपने पालनहार के शुपथों पर हैं
तथा वही लोग सफल होने वाले हैं।
6. तथा लोगों में वह (भी) है जो
खरीदता है खेल की ' बात ताकि
कुपथ करे अल्लाह की राह (इस्लाम)
से बिना किसी ज्ञान के और उसे
उपहास बनाये। यही है जिन के लिये
अपमानकारी यातना है।
7. और जब पढ़ी जाये उस के समक्ष
हमारी आयतें तो वह मुख फेर लेता
है घमंड करते हुये। जैसे उस के
दोनों कान बहरे हों, तो आप उसे
शुभसूचना सुना दें दुखदायी यातना की।
8. वस्तुतः जो ईमान लाये तथा सदाचार
किये तो उन्हीं के लिये सुख के बाग हैं।
9. वह सदावासी होंगे उन में, अल्लाह
का सत्य वचन है, और वही
प्रभुत्वशाली सर्व ज्ञानी है।
10. उस ने उत्पन्न किया है आकाशों
को बिना किसी स्तम्भ के जिन्हें तुम
देख रहे हो, और बना दिये धरती
में पर्वत ताकि डोल न जाये तुम्हें
लेकर और फैला दिये उन में हर
प्रकार के जीव, तथा हम ने उतारा
आकाश से जल, फिर हम ने उगाये
उस में प्रत्येक प्रकार के सुन्दर जोड़े।

أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن كَتَبَ مِن لَّهْمَا عَصِيَّةً لِّبِيعْلِ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾

فَدَاثِلَ عَلَيْهِ آيَاتٍ وَلِي مُّسْتَكْبِرٌ كَانَ لَّهُ
فَمَنَعَهُ كَانَ فِي الْأُذُنِ وَهُوَ كَافِرٌ
بِعَذَابِ الْيَوْمِ ﴿٧﴾

إِنَّ الْكَافِرِينَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
الْمُحْرَقُونَ ﴿٨﴾

خَالِدِينَ فِيهَا وَعَذَابٌ مُّهِينٌ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بَغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَإِنِّي فِي
الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَكُنُوفُهَا مِن تَحْتِ
ذَٰلِكُمْ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسُكَّنَا فِيهَا مِن
كُلِّ نَفَةٍ نُّنْبِتُ ﴿١٠﴾

- 1 इस में अभिप्राय गाना बजाना तथा मंगीत और प्रत्येक वह साधन है जो
सदाचार से अचेत कर दें इस में किस्से, कहानियाँ, काम सबधी साहित्य सब
सम्मिलित हैं।

11. यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्होंने ने जो उस के अनिर्दिष्ट है बल्कि अत्याचारी खुले कुपथ में है।

هَذَا خَلْقُ النَّاسِ وَمَا فَعَلَ خَلْقَ الْبَرِّ مِنَ
دُونِهِ بَلِ الْغَفُورُ عَلَى ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

12. और हमने लुकमान को प्रबोध प्रदान किया कि कृतज्ञ बनो अल्लाह के, तथा जो (अल्लाह का) आभारी हो वह आभारी है अपने ही (लाभ) के लिये। और जो आभारी न हो तो अल्लाह निस्वार्थ सराहनीय है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ لَمَّا شَكَرْ لَهُ وَوَعَدْنَا مَنْ يَشْكُرْ
وَأَلَّا يَشْكُرَ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْهُ فَبُذِلَ
خَبِيرٌ ۝

13. तथा (याद करो) जब लुकमान ने कहा अपने पुत्र से जब वह समझा रहा था उसे हे मेरे पुत्र! साझी मत बना अल्लाह का, वास्तव में शिर्क (मिश्रण बाद) बड़ा घोर अत्याचार¹ है।

وَلَقَدْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يُعَلِّمُهُ يَحْيَىٰ لَاتُكُفِّرُنَّ
بِالشِّرْكِ لَكُمُ الْعَذَابُ عَظِيمٌ ۝

14. और हम ने आदेश दिया है मनुष्यों को अपने माता पिता के संबन्ध में, अपने गर्भ में रखा उसे उस की माता ने दुख पर दुख झेल कर, और उस का दूध छुड़ाया दो वर्ष में कि तुम कृतज्ञ रहो मेरे और अपनी माता पिता के और मेरी ही ओर (तुम्हें) फिर आना है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ يُحْسِنُ إِلَيْهِمَا وَهُمَا عَلَى
وَثْقٍ وَأَفْضَلُ فِي عَمَلٍ آتٍ أَشْكُرَ لَكُمْ وَلَوْلَا
إِلَّا الْمَجِيدُ ۝

15. और यदि वह दोनों दवाब डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरा उसे जिस का तुम को कोई ज्ञान नहीं, तो न² मानो उन दोनों की

فَلَنْ حُجَّتُكَ عَلَىٰ أَنْ تَشْرِكَ بِي مَا يَمُنُّ بِكَ بِهِ
يَعْلَمُ فَلَا تُؤْخِذُهُمْ أَوْصَايُكَ فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفٌ
وَأَتِيَهُ سَبْعِينَ مِائَةً رَجَعُوا إِلَى اللَّهِ فَرَجَحْنَاهُمْ

1 हदीस में है कि घोर पापों में से अल्लाह के साथ शिर्क करना, माँ-बाप के साथ बुरा व्यवहार जान मारना तथा झूठी शपथ लेना है। (सहीह बुखारी: हदीस नं॰ 6675)

2 हदीस में है कि पाप में किसी की बात नहीं माननी है पुण्य में माननी है। (सहीह बुखारी: 7257)

घात और उन के साथ रहो मसार¹।
मैं सुचारु रूप से, तथा राह चलो
उस की जो ध्यान मग्न हो मेरी
ओर, फिर मेरी ही ओर तुम्हें फिर
कर आना है तो मैं तुम्हें सूचित कर
दूंगा उस से जो तुम कर रहे थे।

16. हे मेरे पुत्र! यदि हो (कांड कर्म) राई
के दाने के बराबर, फिर वह यदि हो
किसी पत्थर के भीतर या आकाशों
में या धरती में, तो उसे भी उपस्थित
करेगा² अल्लाह। वास्तव में वह सब
महीन बातों से सूचित है।

17. हे मेरे पुत्र! स्थापना कर नमाज की
और आदेश दे भलाई का तथा रोक
बुराई से और सहन कर उस (दुख)
पर जो तुझे पहुंचे, वास्तव में यह
बड़े साहस की बात है।

18. और मत बल दे अपने माथे पर³
लोगों के लिये तथा मत चल धरती
में अकड़ कर निम्नदेह अल्लाह प्रेम
नहीं करता⁴ किसी अहंकारी गर्व
करने वाले से।

19. और संतुलन रख अपनी चाल⁵ में
तथा धीमी रख अपनी आवाज,

فَاتَّبِعْهُمَا لَعَلَّكُمْ تَعْتَدُونَ ﴿٣١﴾

يُنْفَخُ عَنْهَا إِنَّا تَحَوَّلَ حَبَّةً مِنْ حَبِّ دَرَّةٍ
فَتَكُنْ فِي صَفْوَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ
يَأْتِيهَا إِلَهُ رَبِّكَ إِنَّهُ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٣٢﴾

بِحَقِّ أَقْبَرِ الصَّلَاةِ وَأَمْرٍ بِالْمَعْرُوفِ وَانْتِهَاءٍ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَى مَا نَصَبْنَا لَكَ إِنَّ ذَلِكَ
مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٣٣﴾

وَلَا تَصْغُرْ عَلَيْهِ وَلِلَّهِ الْبَلَاءُ وَلَا تُلْقِ فِي الْأَرْضِ
مِرْحَاتٍ إِنَّ اللَّهَ كَانَ حَبِيبٌ كُلُّ غَافِلٍ قَلِيلٌ ﴿٣٤﴾

وَاتَّبِعْنِي مِن مَّنِّي وَأَعْصِ مِنْ قَوْلِكَ

1 अर्थात् माता पिता यदि मिश्रणवादी और काफिर हों तब भी उन की संसार में सहायता करो।

2 प्रलय के दिन उस का प्रतिफल देने के लिये।

3 अर्थात् गर्व से।

4 सहीह हदीस में कहा गया है कि वह स्वर्ग में नहीं जायेगा जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी अहंकार हो। (मुस्नद अहमद: 1/412)

5 (देखिये सूरह फुर्कान आयत नं: 63)

वास्तव में सब से बुरी आवाज गधे की आवाज है।

رَبِّكَ أَكْثَرُ لُصُوتٍ لَّصُوتِ الْعِجْرِ

20. क्या तुम ने नहीं देखा कि अब्राह ने बश में कर दिया¹ है तुम्हारे लिये जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, तथा पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा² और कुछ लोग विवाद करते है अब्राह के विषय³ में बिना किसी ज्ञान तथा बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी दिव्य (रोशन) पुस्तक के।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ تِلْكَ لَشُغْلٍ مِنَ الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ مَكَانَ بَعْضِهِ طَائِفَةٌ وَمِنْ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُبِينٍ

- 21 और जब कहा जाता है उन से कि पालन करो उस (कुरआन) का जिसे उतारा है अब्राह ने, तो कहने है: बल्कि हम तो उसी का पालन करेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यद्यपि शैतान उन्हें बूला रहा हो नरक की यातना की⁴ और?

وَأَذِيقُوا لَهُمْ شِرْكُهُمْ أَمَا سَاءَ لِمَنْ يَتَّبِعُهُمُ الشَّيْطَانُ يَذَّكَّرُ إِلَى عَذَابِ النَّارِ

22. और समर्पित कर देगा स्वयं को अब्राह के तथा वह एकेश्वर वादी हो तो उस ने पकड़ लिया सुदृढ़ कड़ा तथा अब्राह ही की ओर कर्मों का परिणाम है।

وَمَنْ يُشْرِكْ بِهِ فَإِنَّهُ لَمُذْرَبٌ مُنْجَبٍ

23. तथा जो काफिर हो गया तो आप को उदासीन न करे उस का कुफ्र। हमारी ओर ही उन्हें लौटना है फिर हम सचित्र कर देंगे उन को उन के कर्मों से। निःसंदेह अब्राह अति ज्ञानी

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزَنُهُ كُفْرُهُ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ

1 अर्थात् तुम्हारी सेवा में लगा रखा है।

2 अर्थात् उस के अस्तित्व और उस के अकेले पूज्य होने के विषय में।

3 अर्थात् क्या वह सत्य और असत्य में अन्तर किये बिना असत्य ही का पालन करेगा और न समझ स काम लेंगे, न धर्म पुस्तक को मानेंगे?

है दिलों के भेदों का।

24. हम उन्हें लाभ पहुंचायेगे बहुत¹,
थोड़ा फिर हम विवश कर देंगे उन्हें
घोर यानना की आर।

25. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि
किस ने उत्पन्न किया है आकाशों
तथा धरती को तो अवश्य कहेंगे
कि अल्लाह ने आप कह दें कि सब
प्रशंसा अल्लाह के लिये² है, बल्कि
उन में अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।

26. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों
तथा धरती में है, वास्तव में अल्लाह
निस्पृह सराहनीय है।

27. और यदि जो भी धरती में वृक्ष है
सब लेखनियाँ बन जायें तथा उस के
पश्चात् सागर स्याही हो जायें सात
सागरों तक, तो भी समाप्त नहीं होंगे
अल्लाह (कि प्रशंसा) के शब्द, वास्तव
में अल्लाह प्रभाव शाली गुणी है।

28. और तुम्हें उत्पन्न करना और पुनः
जीवित करना केवल एक प्राण के
समान³ है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ
सुनने जानने वाला है।

29. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह
मिला⁴ देता है रात्री को दिन में और

نَمِّتْهُمْ يَبِئْسَ لَكُم مَّضْطَرُّهُمُ إِلَىٰ عَذَابِ جَلِيلٍ ۝

وَلَيْسَ سَأَلْتَهُم مِّنْ حَقِّ السَّمَوَاتِ وَالدُّرَىٰ
لَيَقُولَنَّ اللَّهُ فِیْ لَحْدٍ يُحْمَلُهُ رَبُّ الْأَرْضِ
لَا يَعْنُونَ ۝

يَلْوِي فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرٍ أَكَلَهُمُ الْبَحْرُ
مِمَّا هُوَ مِن بَعْدِ سَبْعَةِ أَبْحُرٍ لَّا نَبِذَتْ
كَلِمَتُ اللَّهِ لَكُمُ اللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

مَّا خَلَقَكُمْ وَلَا يَعْلَمُ الْأَنفُسَ وَجَدَ ۝
إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَوْمَ الْقِيَامِ الْيَوْمِ إِلَى الْيَوْمِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ

1 अर्थात् संसारिक जीवन का लाभ।

2 कि उन्होंने ने सत्य को स्वीकार कर लिया।

3 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य से सब को एक प्राणी के पैदा
करने तथा जीवित करने के समान पुनः जीवित कर देगा।

4 कुर्आन ने एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने तथा मिश्रणवाद का खण्डन करने के

मिला देता है दिन को¹ रात्री में, तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को, प्रत्येक चल रहा है एक निर्धारित समय तक, और अल्लाह उस में जो तुम कर रहे हो भली भौती अवगत है।

30. यह सब इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा असत्य है, तथा अल्लाह ही सब से ऊँचा, सब से बड़ा है।

31. क्या तुम ने नहीं देखा कि नाव चलती है सागर में अल्लाह के अनुग्रह के साथ, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ है प्रत्येक सहनशील कृतज्ञ के लिये।

32. और जब छा जाती है उन पर लहर छत्रों के समान, तो पुकारने लगते हैं अल्लाह को उस के लिये शुद्ध कर के धर्म को, और जब उन्हें सुरक्षित पहुँचा देता है धूल तक तो उन में से कुछ संतुलित रहने वाले होते हैं। और हमारी निशानियों को प्रत्येक वचनभंगी अति कृतघ्न ही नकारते हैं।

33. हे लोगों! डरो अपने पालनहार से तथा भय करो उस दिन का जिस

فِي الْيَمِّ وَاسْخَرْنَا شَمْسًا وَاقْمَرَكُنَّ نَجْمًا فِي سَاعَةٍ مُّسَوًّى ۚ وَلَٰنَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

ذَٰلِكَ يَٰٓأَنَّهُ هُوَ أَهْوَأُ ۚ وَلَٰنَ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ ۚ وَلَٰنَ اللَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْكَبِيرُ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلَّكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْصُبُ ۚ يُؤَيِّنُكُمُ اللَّهُ فِي ذَٰلِكَ لَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا الْمُجَنَّبُونَ ۚ

وَمِنْ دُونِهَا تُسَبَّحُ بِحَمْدِ رَبِّكَ نَحْوَ مِائَةِ مِائَةٍ ۚ وَلَٰنَ اللَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْكَبِيرُ ۝

يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ ۖ وَأَخْشَوْا يَوْمَآلَ تَجْرُونَ

लिये फिर इस का वर्णन किया है कि जब विश्व का रचायता तथा बिधाना अल्लाह ही है तो पूज्य भी वही है, फिर भी यह विश्वव्यापी कुपथ है कि लोग अल्लाह के सिवा अन्य कि पूजा करते तथा सूर्य और चाँद को सज्दा करते हैं निर्धारित समय से अभिप्राय प्रलय है।

1. तो कभी दिन बड़ा होता है तो कभी रात्री

दिन नहीं काम आयेगा कोई पिता अपनी सनान के और न कोई पुत्र काम आने वाला होगा अपने पिता के कुछ¹ भी। निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें कदापि धोखे में न रखे समारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से प्रवंचक (शैतान)।

وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْتٌ لَهُمْ حَارِغٌ
وَأَيُّ شَيْءٍ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرُّكُمُ الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا وَلَا تَغُرُّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ

34. निःसंदेह अल्लाह ही के पास है प्रलय² का ज्ञान, और वही उतारता है वर्षा, और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है, और नहीं जानता कोई प्राणी कि वह क्या कमायेगा कल और नहीं

إِنَّ اللَّهَ يَهْدِي لِمَنْ يَشَاءُ سَبِيلًا وَيُخَوِّضُ الْغَيْثَ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مِمَّا
تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ
تُؤْتَى إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ

- 1 अर्थात् परलोक की याचना समारिक दण्ड के सामान नहीं होगी कि कोई किसी की सहायता से दण्ड मुक्त हो जाये।
- 2 अबू हुरैरह (रजियल्लाहु अन्हु) फरमाने है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन लोगों के बीच बैठे हुये थे कि एक व्यक्ति आया और प्रश्न किया कि अल्लाह के रसूल! इमान क्या है? आप ने कहा इमान यह है कि तुम अल्लाह पर तथा उस के फरिश्तों उस के सब रसूलों और उस से मिलने और फिर दीवारा जीवित किये जाने पर इमान लाओ।
उस ने कहा इस्लाम क्या है? आप ने कहा इस्लाम यह है कि केवल अल्लाह की इबादत करो और किमी बन्धु को उस का साझी न बनाओ तथा नमाज की स्थापना करो और जकात दो, तथा रमजान के रोजे रखा।
उस ने कहा इत्मान क्या है? आप ने कहा इत्मान यह है कि अल्लाह की इबादत ऐसे करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो। यदि यह न हो सके तो यह ख्याल रखो कि वह तुम्हें देख रहा है।
उस ने कहा प्रलय कब होगी? आप ने कहा मैं प्रश्नकर्ता से अधिक नहीं जानता। परन्तु मैं तुम्हें उस की कुछ निशानियाँ बताऊंगा जब स्त्री अपने स्वामिनी का जन्म देगी और जब नंगे नि बस्त्र लोग मुखिया हो जायेंगे। पाँच बातों में जिन को अल्लाह ही जानता है। और आप ने यही आयत पढ़ी। फिर वह व्यक्ति चला गया। आप ने कहा उसे बुलाओ तो वह नहीं मिला। आप ने फरमाया वह जिब्रील थे, तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आये थे। (सहीह बुखारी 4777)

जानना कोई प्राणी कि किस धरती
में मरेगा, वास्तव में अल्लाह ही सब
कुछ जानने वाला सब से सूचित है।



सूरह सज्दा - 32

سُورَةُ السَّجْدَةِ

सूरह सज्दा के सक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 30 आयत है।

- इस सूरह की आयत नं० 15 में इमान वालों का यह गुण बताया गया है कि उन्हें अल्लाह की आयतों द्वारा शिक्षा दी जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में तौहीद तथा आखिरत की बातों को ऐसे वर्णन किया गया है कि संदेह दूर हो कर दिल को विश्वास हो जाये। और बताया गया है कि यह पुस्तक (क़र्आन) लोगों को सावधान करने के लिये उतारी गई है तौहीद के साथ ही मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा भी की गई है।
- इस में आखिरत का विषय तथा इमान वालों की कुछ विशेषतायें तथा उन का शुभ परिणाम बताया गया है और झुठलाने वालों का दुष्परिणाम भी दिखाया गया है।
- यह बताया गया है कि नबी का आना कोई अनोखी बात नहीं है। इस से पहले भी मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा दूसरे नबी आते रहे। और बिनाशित जातियों के परिणाम पर विचार करने का कहा गया है।
- अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का जवाब देने हुये उन्हें सावधान किया गया है हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस सूरह को जुमुआ के दिन फज्र की नमाज में पढ़ते थे। (सहीह बुखारी 891)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ लाम मीम।

الْقُرْ

2. इस पुस्तक का उतारना जिस में कोई संदेह नहीं परे संसार के पालनहार की ओर से है।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَأَنبَشِرَ بِهِ مَن رَّبِّ الْعَالَمِينَ

3. क्या वे कहते हैं कि इसे इस ने घड़

أَن يَقُولُوا أَفَأَنبَشِرُ بِهِ هُوَ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ

लिया है? बल्कि यह सत्य है आप के पालनहार कि ओर से ताकि आप सावधान करें उन लोगों को जिन¹ के पास नहीं आया है कोई सावधान करने वाला आप स पहले। सभव है वह सीधी राह पर आ जायें।

4. अल्लाह वही है जिस ने पैदा किया आकाशों तथा धरती को और जो दोनों के मध्य है छः दिनों में। फिर स्थित हो गया अर्श पर। नहीं है उस के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक और न कोई अभिस्तावक (सिफारशी) तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?
5. वह उपाय करता है प्रत्येक कार्य की आकाश से धरती तक, फिर प्रत्येक कार्य ऊपर उस के पास जाता है एक दिन में जिस का माप एक हजार वर्ष है तुम्हारी गणना से।
6. वही है ज्ञानी छुपे तथा खुले का अति प्रभुत्वशाली दयावान्।
7. जिस ने सुन्दर बनाई प्रत्येक चीज जो उत्पन्न की, और आरंभ की मनुष्य की उत्पत्ति मिट्टी से।
8. फिर बनाया उस का वंश एक तुच्छजल के निचोड़ (वीर्य) से।
9. फिर बराबर किया उस को और फूंक दिया उस में अपनी आत्मा (प्राण) तथा बनाये तुम्हारे लिये कान और आँख तथा दिला तुम कम

لِيُنذِرَ قَوْمًا مِّنْ أَتَمَّ مِمَّنْ نَّبَذَتْ مِمَّنْ قَبْلَ
لَعْنُهُمْ يَهْدُونَ

أَلَمْ يَكُنِ الْيَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُمْ مِّنْ
دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ لَّا سُبْحَانَكَ قَوْلًا كَرُومًا

يُنْزِلُ الْأَمْزَالَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ
فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّنْ تَعْدُونِ

وَلَيْسَ عَلَيْهِ الْقَيْظُ وَالسَّيْحَةُ ذَا الْعَرِيِّ وَالْمَرْجُومِ

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ
الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ نَّهْمٍ

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِن رُّوحِيهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ

1 इस से अभिप्राय मक्का वासी हैं।

ही कृतज्ञ होते हों।

10. तथा उन्होंने ने कहा: क्या जब हम खो जायेंगे धरती में तो क्या हम नई उत्पत्ति में होंगे? बल्कि वह अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।
11. आप कह दें कि तुम्हारा प्राण निकाल लेगा मौत का फारिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर अपने पालनहार की ओर फेर दिये जाओगे।¹
12. और यदि आप देखते जब अपराधी अपने सिर झुकाये होंगे अपने पालनहार के समक्ष (वह कह रहे होंगे): हे हमारे पालनहार! हम ने देख लिया और सुन लिया, अतः हमें फेर दे (संसार में) हम सदाचार करेंगे। हमें पुरा विश्वास हो गया।
13. और यदि हम चाहते तो प्रदान कर देते प्रत्येक प्राणी को उस का मार्गदर्शना परन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि मैं अवश्य भरूंगा नरक को जिन्नों तथा मानव से।
14. तो चखो अपने भूल जाने के कारण अपने इस दिन के मिलने को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया² है। चखो सदा की यातना उस के बदले जो तुम कर रहे थे।

وَقَالُوا آمَادَ صُنِّعَتْ فِي الْأَرْضِ مَرَّةً لَّيْسَ خَلْقُ جَبَدِيَّةٍ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَعِبْرُونَ ۝

فَنُفِثَ فَوْقَهُمْ ذِكْرُ الْمَوْتِ أَيُّهَا الْمَوْتُ ذِكْرُكَ إِلَى رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝

وَلَوْ تَرَىٰ فِي السَّجُودِ لَكَ سُوءَ مُصَاحَبَةٍ زُجَّاجٌ رَّبَّنَا إِنِّي أُنْصِرُ وَيَصْحَبُ فَرَجٌ مِّنَّا نَحْمِلُ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ۝

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِّنْ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ الْجَبَرِيِّينَ ۝

فَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

- 1 अर्थात् नई उत्पत्ति पर आश्चर्य करने से पहले इस पर विचार करो कि मरण तो आत्मा के शरीर से विलग हो जाने का नाम है जो दूसरे स्थान पर चली जाती है और परलोक में उसे नया जन्म दे दिया जायेगा फिर उसे अपने कर्म के अनुसार स्वर्ग अथवा नरक में पहुँचा दिया जायेगा।
- 2 अर्थात् आज तुम पर मेरी कोई दया नहीं होगी।

15. हमारी आयतों पर बस वही ईमान लाते हैं जिन को जब समझाया जाये उन से तो गिर जाते हैं सज्दा करते हुये और पवित्रता का गान करने हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ और अभिमान नहीं करते।¹

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا حُذُوا
سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

16. अलग रहते हैं उन के पार्श्व (पहलु) बिस्तरों से, वह प्रार्थना करते रहते हैं अपने पालनहार से भय तथा आशा रखते हुये, तथा उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है दान करते रहते हैं।

فَتَقَاتِلَ فِي مَوَاقِدِ الْوَحْيِ وَالْحَدِيدِ ۚ
هُمْ فِيهَا سَابِقُونَ ۝

17. तो नहीं जानता कोई प्राणी उसे जो छुपा रखा है हम ने उन के लिये आँखों की ठंडक² उस के प्रतिफल में जो वह कर रहे थे।

فَلَا يَكْفُرُ نَفْسٌ شَيْئًا مِّن قَوْلِ الْكَافِرِ
يَوْمَ يَكْفُرُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَانَتْ تَكْفُرُ ۝

18. फिर क्या जो ईमान वाला हो उस के समान है जो अवज्ञाकारी हो? वह सब समान नहीं हो सकेंगे।

أَلَمْ يَكُنْ كَانَ مَوْمِنًا كَمَنَّ الْكَافِرُ ۚ

19. जो ईमान लाये तथा सदाचार किये तो उन्हीं के लिये स्थायी स्वर्ग है, अतिथि सत्कार के लिये उस के बदले जो वह करते रहे।

أَتَى الَّذِينَ آمَنُوا وَالْمَلَائِكَةُ عَلَيْهِمُ
سَلَامٌ ۝

20. और जो अवज्ञा कर गये, उन का आवास नरक है। जब जब वह निकलना चाहेंगे उस में से तो फेर दिये जायेंगे उस में, तथा कहा

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ وَلَئِن
كَانُوا يَرْجُوا مِنَّا مَغْفِرَةً وَأَن نَّهْبَهُمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ فَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ
شَيْئًا وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۝

1 यहाँ सज्दा तिलावत करना चाहिये।

2 हदीस में है कि अब्राह ने कहा है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज तैयार की है जिन्हें न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के दिल में उन का विचार आया। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी: 4780)

जायेगा उन से कि चखो उस अग्नि की यातना जिसे तुम झुठला रहे थे।

21. और हम अवश्य चखायेंगे उन को संसारिक यातना, बड़ी यातना से पूर्व ताकि वह फिर¹ आये।

22. और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा, फिर विमुख हो जाये उन से? वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

23. तथा हम ने मूसा को प्रदान की (तौरात) तो आप न हों किसी संदेह में उस² से मिलने में। तथा बनाया हम ने उसे (तौरात को) मार्गदर्शन इस्राईल की संतान के लिये।

24. तथा हम ने उन में से अग्रणी बनाये जो मार्गदर्शन देते रहे हमारे आदेश द्वारा जब उन्होंने ने सहन किया तथा हमारी आयतों पर विश्वास³ करते रहे।

25. वस्तुतः आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस में वह विभेद करते रहे।

26. तो क्या मार्गदर्शन नहीं कराया उन्हें

وَلَنُفَقِّهُهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الرَّاقِدِ دُونَ
الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ
أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ مِنْ
مُزَيَّاتٍ مِّنْ قَوْمِهِ وَجَعَلْنَاهُ قَدْ
إِبْرَاهِيمَ سِرًّا وَنِيلَ ﴿٢٣﴾

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِبْرَاهِيمَ يَتُوبُ وَإِسْمَاعِيلَ
صَابِرِينَ وَكَانَا مِنَ الْإِبْرَاهِيمِيَّةِ يُؤْتُونَ ﴿٢٤﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فَإِذَا كَانُوا مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ يُحْتَفِلُونَ ﴿٢٥﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَضَلَّآ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ

1 अर्थात् ईमान लायें और अपने कुकर्म से क्षमा याचना कर लें।

2 इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मेराज की रात्रि में मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिलने की ओर संकेत है। जिस में मूसा (अलैहिस्सलाम) ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह से पचास नमाजों को पाँच कराने का प्रामर्श दिया (सहीह बुखारी: 3207, मुस्लिम: 164)

3 अर्थ यह है कि आप भी धैर्य तथा पूरे विश्वास के साथ लोगों को सुपथ दर्शाये।

कि हम ने ध्वस्त कर दिया इस से पूर्व बहुत से युग के लोगों को जो चल फिर रहे थे अपने घरों में वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ (शिक्षायें) हैं, तो क्या वह सुनते नहीं हैं?

الْقَارِبُ يُشْعِرُونَ فِي مَنَاجِبِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ٥

27. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम बहा ले जाते हैं जल को सूखी भूमि की ओर फिर उपजाते हैं उस के द्वारा खेतियाँ, खाते हैं जिस में से उन के चौपाये तथा वह स्वयं। तो क्या वह गौर नहीं करते?

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْغُرُورِ
فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا نَأْكُلُ مِنْهُ الْحَبَّاءُ
وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ٥

28. तथा कहते हैं कि कब होगा वह निर्णय यदि तुम सच्चे हो?

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِن كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ٥

29. आप कह दें निर्णय कें दिन लाभ नहीं देगा काफ़िरों को उन का ईमान लाना¹ और न उन्हें अवसर दिया जायेगा।

قُلْ يَوْمَ الْقِيَامِ لَا يَنْفَعُ كُفْرًا كَمَرُؤٍ لَّيْسَ لَهُ
وَلَا لَهُمْ يُبْظَرُونَ ٥

30. अतः आप विमुख हो जायें उन से तथा प्रतीक्षा करें, यह भी प्रतीक्षा करने वाले हैं।

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرِ إِلَهُهُمْ مُتَجَرِّدُونَ ٥

1 इन आयतों में मक्का के काफ़िरों को सावधान किया गया है कि इतिहास से शिक्षा ग्रहण करो, जिस जाति ने भी अल्लाह के रसूलों का विरोध किया उस को संसार से निरस्त कर दिया गया। तुम निर्णय की भांग करते हो तो जब निर्णय का दिन आ जायेगा तो तुम्हारे सभाले नहीं सभलेगी और उस समय का ईमान कोई लाभ नहीं देगा।

सूरह अहजाब - 33

سورة الأحزاب

सूरह अहजाब के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है इस में 73 आयतें हैं।

- इस सूरह में अहजाब (जल्था या सेनाओं) की चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में काफिरों और मुनाफिकों के धोखे में न आने तथा केवल अब्राह पर भरोसा करने पर बल दिया गया है। फिर जाहलिय्यन के मुंह बोले पुत्र की परम्परा का सुधार करने के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों का पद बताया गया है।
- अहजाब के युद्ध में अब्राह की सहायता तथा मुनाफिकों की दुर्गत बताई गई है।
- इस में मुंह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ जैनब (रजियल्लाहु अन्हा) के विवाह का वर्णन किया गया है।
- ईमान वालों को, अब्राह को याद करने का निर्देश देने हुये उस पर दया तथा बड़े प्रतिफल की शुभ सूचना दी गई है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान-मर्यादा को उजागर किया गया है।
- तलाक और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों के विषय में कुछ विशेष आदेश दिये गये हैं।
- पर्दे का आदेश दिया गया है, तथा प्रलय की चर्चा की गई है।
- अन्त में मुसलमानों का दायित्व याद दिलाते हुये मुनाफिकों को चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

काफ़िरों तथा मुनाफ़िकों की आज्ञापालन न करो। वास्तव में अब्राहम हिक़मत वाला सब कुछ जानने¹ वाला है।

وَأَسْمِعْ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ فِيهَا حَكِيمًا ۝

2. तथा पालन करो उस का जो वही (प्रकाशना) की जा रही है आप की आर आप के पालनहार की ओर से। निश्चय अल्लाह जो तुम कर रहे हो उस से सूचित है।

وَأَتَيْنَاهُ مَا يُؤْتَىٰ لَكَ مِنْ رَبِّكَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٥١﴾

3. और आप भरोसा करें अस्त्राह पर, तथा अस्त्राह पर्याप्त है रक्षा करने वाला।

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا

4. और नहीं रखे हैं अश्राह ने किसी के दो दिल उस के भीतर और नहीं बनाया है तुम्हारी पत्नियों को जिन से तुम जिहार ^५ करते हो उन में से तुम्हारी मातायें तथा नहीं बनाया है तुम्हारे मुँह बोले पुत्रों को तुम्हारा पुत्र यह तुम्हारी मौखिक बातें हैं। और अश्राह सच्च कहता है तथा वही सुपथ दिखाता है।

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِنْ قَلِيلَيْنِ فِي جُودَةٍ وَلَا جَعَلَ
أَرْوَاحَكُمْ فِي أَنْظُمِهِمْ وَمَنْ أَمَّهُمْ لَمْ يَكُنْ جَعَلَ
لَدَيْهِمْ كَذِبًا أَوْ كَذَلِكَ قَوْلُكُمْ يَأْتُواهُمْ بِاللَّيْلِ
يَقُولُ لَحْمًا وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ﴿٥﴾

5 उन्हें पुकारो उन के बापों से
संवन्धित कर के, यह अधिक न्याय

أَذْنُوهُمْ لِأَبِ يَهُوهَ قَسَطًا عِنْدَ الْمَلِكِ قَاتِلِ تَمْر

1. अन्तः उम्मी की आज्ञा तथा प्रकाशना कक्ष अनुसरण और पालन करो।

2. इस आयन का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार एक व्यक्ति के दो दिल नहीं होने वैसे ही उस की पत्नी जिहार कर लेने से उस की माता तथा उस का मुँह बोला पुत्र उस का पुत्र नहीं हो जाता।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने नबी होने से पहले अपने मुक्त किये हुये दास जैद बिन हारिमा को अपना पुत्र बनाया था और उन को हारिमा पुत्र मुहम्मद कहा जाता था जिस पर यह आयत उतरती (सहीह बुखारी: 4782) जिहार का विवरण मरह मुजादला में आ रहा है।

की बात है अल्लाह के समीप। और यदि तुम नहीं जानते उन के बापों को तो वह तुम्हारे धर्म बन्धु तथा मित्र हैं। और तुम्हारे ऊपर कोई दोष नहीं है उस में जो तुम से चूक हुई है, परन्तु (उस में है) जिस का निश्चय तुम्हारे दिल करें। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

6. नबी ¹ अधिक समीप (प्रिय) है इमान वालों से उन के प्राणों से, और आप की पत्नियों ² उन की मातायें हैं। और समीपवर्ती मंचन्धी एक दूसरे से अधिक समीप ³ है, अल्लाह के लेख में इमान वालों और मुहाजिरों में। परन्तु यह कि करते रहो अपने मित्रों के साथ भलाई और यह पुस्तक में लिखा हुआ है।
7. तथा (याद करो) जब हम ने नबियों से उन का वचन ⁴ लिया तथा आप से और नूह तथा इब्राहीम और मूसा तथा मरयम के पुत्र इसा से, और हम ने लिया उन से दृढ़ वचन।

تَعْلَمُوا الْآيَاتَ طَعْرِفُوا أَوْلِيَّاءَكُمْ فِي دِينِكُمْ وَفِي مَالِكُمْ
وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُم بِهِ وَلَكِنْ
بِالْعَمْدِ تَكُونُونَ ذُنُوبًا ۝

كَلْبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ نَفْسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ
أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولَئِكَ أَوْلَىٰ بِمَالِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ يَتَّخِذُونَ
فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ
تَقْعَبُوا إِلَىٰ أُولَئِكَ مَعْرِفَةً كَانُوا فِي كِتَابِ
مَكْتُورًا ۝

وَلَا تَحْذَرُوا الْيَهُودَ مِمَّا نَهَوْهُمُ مِنْكُمْ وَدِينُكُمْ
لِأُولَئِكَ الْكِتَابِ وَمَنْ يَتَّبِعْ أَهْلَ الْكِتَابِ
فَمَا يَكُنْ مِنْكُمْ فِي شَيْءٍ ۝

- 1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा मैं मुसलमानों का अधिक समीपवर्ती हूँ। यह आयत पढ़ो तो जो माल छोड़ जाये वह उस के वारिस का है और जो कर्ज तथा निर्बल सनान छोड़ जाये तो मैं उस का रक्षक हूँ। (सहीह बुखारी 4781)
- 2 अर्थात् उन का सम्मान भाताओं के बराबर है और आप के पश्चात् उन से विवाह निषेधित है।
- 3 अर्थात् धर्म विधानानुसार उत्तराधिकार समीपवर्ती सर्वाधियों का है इस्लाम के आरंभिक युग में हिज्रत तथा इमान के आधार पर एक दूसरे के उत्तराधिकारी होते थे जिसे मीरस की आयत द्वारा निरस्त कर दिया गया।
- 4 अर्थात् अपना उपदेश पहुँचाने का।

8. ताकि वह प्रश्न¹ करे सच्चों से उन के सच्च के संबंध में तथा तय्यार की है काफ़िरो के लिये दुखदायी यातना।
9. हे ईमान वालो! याद करो अल्लाह के पुरस्कार को अपने ऊपर जब आ गई तुम्हारे पास जत्थे, तो भेजी हम ने उन पर आँधी और ऐसी सेनायें जिन को तुम ने नहीं देखा, और अल्लाह जो तुम कर रहे थे उसे देख रहा था।
10. जब वह तुम्हारे पास आ गये तुम्हारे ऊपर से तथा तुम्हारे नीचे से और जब पत्थरा गई आँखें, तथा आने लगे दिल मुँह² को तथा तुम विचारने लगे अल्लाह के संबंध में विभिन्न विचार।
11. यही परीक्षा ली गई ईमान वालों की और वह झड़ोड़ दिये गये पूर्ण रूप से।
12. और जब कहने लगे मुशरिक और जिन के दिलों में कछु रोग था कि अल्लाह तथा उस के रसूल ने नहीं वचन दिया हमें परन्तु धोखे का।
13. और जब कहा उन के एक गिरोह ने हे यमरिब³ वालो! कोई स्थान नहीं

يَقْتُلُ الضَّيِّقِينَ عَنْ صَدَقَتِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَكَانَ الْكَافِرُ يَأْكُلُونَ يَبْصِيرًا

إِذْ جَاءَهُمْ مِنَ فَوْقِهِمْ دُجَانٌ فَأَنزَلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَنَّانَ الَّذِي يَأْتِي السُّبْحَ أَصَابِيرًا وَيُنَظِّقُونَ بِاللَّغَةِ الْغَوْرِيَّةِ

هَٰذَا لِكَيْ تَحْكُمَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَتُذَكِّرَ الْأَنْبِيَاءَ

وَإِذْ يَقُولُ الْمُبِغْضُونَ وَالْكُفَّارُ يَا قَوْمِ لِمَ تَقُولُونَ مَا قَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ

1 अर्थात् प्रलय के दिन (देखिय सूरह आराफ आयत 6)

2 इन आयतों में अहज़ाब के युद्ध की चर्चा की गई है। जिम का दुमरा नाम (खन्दक का युद्ध) भी है। क्यों कि इस में खन्दक (खाड़) खोद कर मदीना की रक्षा की गई। सन् 5 हिजरी में मक्का के काफ़िरो ने अपने पूरे सहयोगी कबीलों के साथ एक भारी सेना लेकर मदीना को घेर लिया और नीचे बादी और ऊपर पर्वतों से आक्रमण कर दिया। उस समय अल्लाह ने ईमान वालों की रक्षा आँधी तथा फरिश्तों की सेना भेज कर की। और शत्रु पराजित हो कर भागे और फिर कभी मदीना पर आक्रमण करने का साहस न कर सकी।

3 यह मदीने का प्राचीन नाम है।

है तुम्हारे लिये, अतः लौट¹ चलो।
तथा अनुमति माँगने लगा उन में
से एक गिरोह नबी से, कहने लगा:
हमारे घर खाली है, जब कि वह
खाली न धी। वह तो बस निश्चय कर
रहे थे भाग जाने का।

14. और यदि प्रवेश कर जाती उन पर
मदीने के चारों ओर से (सेनायें) फिर
उन से माँग की जाती उपद्रव² की
तो अवश्य उपद्रव कर देना। और उस
में तनिक भी देर नहीं करते।

15. जब कि उन्होंने ने वचन दिया था
अब्राह को इस से पूर्व कि पीछा नहीं
दिखायेंगे और अब्राह के वचन का
प्रश्न अवश्य किया जायेगा।

16. आप कह दें कदापि लाभ नहीं
पहुँचायेगा तुम्हें भागना यदि तुम
भाग जाओ मरण से या मारे जाने से।
और तब तुम धोड़ा ही³ लाभ प्राप्त
कर सकोगे।

17. आप पूछिये कि वह कौन है जो तुम्हें
बचा सके अब्राह से यदि वह तुम्हारे
साथ बुराई चाहे अथवा तुम्हारे साथ
भलाई चाहे? और वह अपने लिये
नहीं पायेंगे अब्राह के सिवा कोई
संरक्षक और न कोई सहायक।

18. जानता है अब्राह जो रोकने वाले है तुम

لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فِئْتَمُ النَّبِيِّ
يَقُولُونَ إِنَّ لَنَا لَعُونَ غُورَةً وَمَا هِيَ بِغُورَةٍ
إِنْ يُرِيدُوا إِلَّا الْفُورَةَ

وَلَوْ دَخَلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ آفَاطِهِمْ شَيْءٌ لَوُفَّخَتْ
لَأَتَوْهَا وَمَا تَلَظَّتْ بِهَا إِلَّا ذُتِيرَاتُ

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْتُوا
الْآيَاتَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِمْ مَسْئُولًا

قُلْ مَنْ يَنْفَعُكُمْ الْبَرُّ إِنْ قَدْ لَكُمْ مِنَ الْعَوْتِ
أَوْ لَقْتُمْ وَلَدًا أَلَمْ تَعْلَمُوا إِلَّا ظِلِيلًا

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِيكُمْ مِنْ اللَّهِ إِنْ أَرَادَكُمْ
سُوءًا أَوْ أَرَادَكُمْ نِعْمَةً وَلَا يَقْدِرَنَّ لَهُمْ مِنْ
شَيْءٍ اللَّهُ وَلَئِنْ لَمْ تَنْصُرُوا

وَلَا يَنْصُرُ اللَّهُ الْمُتَوَكِّلِينَ سُبْحَانَ الْقَائِلِينَ لِحُكْمِهِمْ

1 अर्थात् रणक्षेत्र से अपने घरों को।

2 अर्थात् इस्लाम से फिर जाने तथा शिर्क करने की।

3 अर्थात् अपनी सीमित आयु तक जो परलोक की अपेक्षा बहुत धोड़ी है।

में से तथा कहने वाले हैं अपने भाईयों से कि हमारे पास चले आओ, तथा नहीं आते हैं युद्ध में परन्तु कभी कभी।

19. वह बड़े कंजूस है तुम पर। फिर जब आजाये भय का¹ समय, तो आप उन्हें देखेंगे कि आप की ओर तक रहे हैं फिर रही है उन की आँखें, उस के समान जो मरणामन्त्र दशा में हो, और जब दूर हो जाये भय तो वह मिलेंगे तुम से तेज जुवानों² से बड़े लोभी हों कर धन को वह ईमान नहीं लाये हैं। अतः व्यर्थ कर दिये अल्लाह ने उन के सभी कर्म, तथा यह अल्लाह पर अति मरल है।

20. वह समझते हैं कि जन्थे नहीं³ गये और यदि आ जाये सेनायें तो वह चाहेंगे कि वह गाँव में हों, गाँव वालों के बीच तथा पूछते रहें तुम्हारे समाचार, और यदि तम में होते भी तो वह युद्ध में कम ही भाग लेंगे।

21. तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में उत्तम⁴ आदर्श है, उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) की तथा याद करे अल्लाह को अत्यधिक।

22. और जब ईमान वालों ने सेनायें देखीं तो कहा: यही है जिस का वचन दिया

هَلُمُّوا إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا كَثِيرًا

أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَ الْعُوفُ رَأَيْتَهُمْ يَقْرُءُونَ عَلَيْكَ نَدْوً وَأَعْيُنُهُمْ كَالْحِجَابِ يُغْشَى عَيْنُوهُمْ الْمَوْتُ وَبِالْذُّهَبِ الْخَوَافُ سَتَقُولُوا يَا لَيْسَ بِنَدْوٍ إِلَّا شَجَةٌ تُغْشَى عَلَى الْخَوَافِ أَوَلَيْتُمْ كُذِّبْتُمْ فَتَقْبَضُ عَلَيْهِمْ الْأَمْوَالُ الَّتِي كَانَتْ دُونَ عَلَى مَنَاسِبٍ

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا أَنْ يُلَاقُوا فِي الْأَحْزَابِ يَمْشُونَ عَنْ الْمَسِيرَةِ وَالْمَوَالِ الَّتِي كَانَتْ دُونَ الْأَحْزَابِ

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا

وَلَقَدْ رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ فَأَوَّاهُوا مَا

1 अर्थात् युद्ध का समय।

2 अर्थात् मर्म भेदी बातें करेंगे, और विजय में प्राप्त धन के लोभ में बातें बनायेंगे।

3 अर्थात् ये मुनाफिक इनने कायर हैं कि अब भी उन्हें सेनाओं का भय है।

4 अर्थात् आप के सहन साहस तथा वीरता में।

था हमें अल्लाह और उम के रसूल ने। और सच्च कहा अल्लाह तथा उम के रसूल ने और इस ने नहीं अधिक किया परन्तु (उन के) ईमान तथा स्वीकार को।

23. ईमान वालों में कुछ वह भी है जिन्होंने सच्च कर दिखाया अल्लाह से किये हुये अपने वचन को। तो उन में कुछ ने अपना वचन¹ पूरा कर दिया, और उन में से कुछ प्रतीक्षा कर रहे हैं। और उन्होंने तनिक भी परिवर्तन नहीं किया।

24. ताकि अल्लाह प्रतिफल प्रदान करे सच्चों को उन के सच्च का। तथा यातना दे मुनाफिकों को अथवा उन को क्षमा कर दे। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील और दयावान् है।

25. तथा फेर दिया अल्लाह ने काफिरों को (मदीना से) उन के क्रोध के साथ। वह नहीं प्राप्त कर सके कोई भलाई। और पर्याप्त हो गया अल्लाह ईमान वालों के लिये युद्ध से। और अल्लाह अति शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली है।

26. और उतार दिया अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने सहायता की उन (सेनाओं) की उन के दुर्गों से। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय।²

وَعَدَ اللَّهُ رَسُولَهُ وَصَدَّقَ اللَّهُ رَسُولَهُ
وَمَذَّاهُمْ إِلَى آيَاتِنَا وَلَسْنَا

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ
فَلَهُمْ فِيهِمْ مِنْ فَضْلِ غَنَّةٍ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ
وَمَا يُلَوِّذُ بِالْبَلَاءِ

لِيُخَبِّرَ اللَّهُ الْمُطِيعِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ
الْمُنَافِقِينَ إِنَّهُ كَانَ يُؤْتِيهِمْ اللَّهُ
كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِفِتْنَتِهِمْ لِمَدِينَةِ غَزَا
وَلَقَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ وَكَانَ اللَّهُ
كَيُومَ الْغَزَا

وَأَنْزَلَ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
صَيِّفَاتِهِمْ وَقَدْ كَفَىٰ قُلُوبَهُمْ رِغَابًا
فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْبِرُونَ فَرِيقًا

1 अर्थात् युद्ध में शहीद कर दिये गये।

2 इस आयत में बनी कुरैजा के युद्ध की ओर संकेत है। इस यहूदी कबीले की नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ संधि थी। फिर भी उन्होंने संधि भंग कर के खन्दक के युद्ध में कुरैशो मक्का का साथ दिया। अतः युद्ध समाप्त होने

उन के एक गिरोह को तुम बंध कर रहे थे तथा बंदी बना रहे थे एक दूसरे गिरोह को।

27. और तुम्हारे अधिकार में दे दी उन की भूमी तथा उन के घरों और धनों को, और ऐसी धरती को जिस पर तुम ने पग नहीं रखे थे। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَأَوْفَتْكُمْ أَرْضَهُمْ وَمَنْ أَمْوَالَهُمْ وَلِبَاسَهُمْ
تَطَوُّعًا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا

28. हे नबी! आप अपनी पत्नियों से कह दें कि यदि तुम चाहती हो संसारिक जीवन तथा उस की शोभा तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दू तथा विदा कर दू अच्छाई के साथ।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنْتُمْ يُرِيدْنَ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيُخْفَيْنَ أَمْوَالَهُنَّ لِمَتِّعُنَّ
وَأَسْرِحُنَّ مِمَّا رَزَقْنَاهُنَّ

29. और यदि तुम चाहती हो अल्लाह और उस के रसूल तथा आखिरत के घर को तो अल्लाह ने तय्यार कर रखा है तुम में से सदाचारियों के लिये भारी प्रतिफल।

فَإِنَّ كُنْتُمْ تُرِيدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالْآخِرَةَ
إِنَّ اللَّهَ أَكْبَرُ مِنْ شَيْءٍ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

ही आप ने उन से युद्ध की घोषणा कर दी। और उनकी घेरा बंदी कर ली गई पच्चीस दिन के बाद उन्होंने सबद बिन मुआज को अपना मध्यस्थ मान लिया और उन के निर्णय के अनुसार उन के लडाकुओं को बंध कर दिया गया। और बच्चों बूढ़ों तथा स्त्रियों को बंदी बना लिया गया। इस प्रकार मदीना में इस आतंकवादी कबीले का सदैव के लिये समाप्त कर दिया गया।

- 1 इस आयत में अल्लाह ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ये आदेश दिया है कि आप की पत्नियाँ जो आप से अपने स्वर्च अधिक करने की माँग कर रही हैं तो आप उन्हें अपने साथ रहने या न रहने का अधिकार दे दें। और जब आप ने उन्हें अधिकार दिया तो सब ने आप के साथ रहने का निर्णय किया। इस को इस्लामी विधान में (तख्यीर) कहा जाता है। अर्थात् पत्नि को तलाक लेने का अधिकार दे देना।

हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी पत्नी आईशा से पहले कहा कि मैं तुम्हें एक बात बता रहा हूँ। तुम अपने माता पिता से परामर्श किये बिना जल्दी न करना फिर आप ने यह आयत

30. हे नबी की पत्नियों! जो तुम में से खुला दुराचार करेगी उस के लिये दुगुनी कर दी जायेगी यातना और यह अब्राहम पर अति सरल है।

يَسَاءَ الْعَمِيُّ مَنْ يَأْتِ مِثْلَ مَا جَاءَهُ
مُيَسَّرَةً لِّصَفَتِ لَهَا الْعَذَابُ مُتَعَيْنٍ
وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

31. तथा जो मानेंगे तुम में से अब्राहम तथा उस के रसूल की वान और सदाचार करेंगी हम उन्हें प्रदान करेंगे उन का प्रतिफल दोहरा। और हम ने तय्यार की है उन के लिये उत्तम जीविका ।

وَمَنْ يُعْنَتْ مِثْلَ مَا وَرَسُولُهُ وَتَعْمَلْ
صَالِحًا نُؤْتِيهَا أَجْرَهَا مَوْثِقِينَ وَاعْتَدْنَا لَهَا
دَرَجَاتٍ كَثِيرًا ۝

32. हे नबी की पत्नियों! तुम नही हो अन्य स्त्रियों के समान। यदि तुम अब्राहम से डरती हो तो कोमल भाव से वान न करो, कि लोभ करने लगे वह जिस के दिल में रोग हो और सभ्य बात धोलो।

يَسَاءَ الْعَمِيُّ لَكُنَّ كَأَخَوَاتٍ مِنَ الْمَرْءِ
الْفَاحِشَاتِ فَلَا تُخَفْنَ بِالْقَوْلِ قَيْطَةً الذُّنَى
فِي قُلُوبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ كَوْلَ الْمَعْرُوفَاتِ ۝

33. और रहो अपने घरों में, और मौन्दर्य का प्रदर्शन न करो प्रथम अज्ञान युग के प्रदर्शन के समान। तथा नमाज की स्थापना करो और जकान दो तथा आज्ञा पालन करो अब्राहम और उस के रसूल की। अब्राहम चाहता है कि मत्नता को दूर कर दे तुम से, हे नबी के घर वालियों! तथा तुम्हें पवित्र कर दे अति पवित्र।

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ
الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ
وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ
عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيرًا ۝

34. तथा याद रखो उसे जो पढ़ी जाती

وَذُكِّرَتْ مَا يُنْتَلَىٰ فِي سُبُوحِكُنَّ مِنْ آيَاتِ

सुनाई। तो आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) ने कहा मैं इस के बारे में भी अपने माता-पिता से परामर्श करूंगी। मैं अब्राहम तथा उस के रसूल और आखिरत के घर को चाहती हूँ। और फिर आप की दूसरी पत्नियों ने भी ऐसा ही किया (देखिये सहीह बुखारी: 4786)

1. स्वर्ग में।

विषय में। और जो अवैज्ञा करेगा
अब्राह एव उस के रसूल की तो वह
खुले कुपध में^[1] पड़ गया।

- 37 तथा (हे नबी!) आप वह समय याद
करें जब आप उस से कह रहे थे
उपकार किया अब्राह ने जिस पर
तथा आप ने उपकार किया जिस
पर रोक ले अपनी पत्नी को तथा
अब्राह से डर, और आप छुपा रहे
थे अपने मन में जिसे अब्राह उजागर
करने वाला^[2] था, तथा डर रहे थे
तुम लोगों से, जब कि अब्राह अधिक
योग्य था कि उस से डरते, तो जब
जैद ने पूरी कर ली उस (स्त्री) से
अपनी अवश्यता तो हम ने विवाह
दिया उस को आप से, ताकि इमान
वालों पर कोई दोष न रहे अपने मुंह
बोले पुत्रों की पत्नियों के विषय³ में

وَلَا تَقُولُ لِبَنِي إِسْرَءِيلَ عَنِّي وَعَنكُمْ إِنِّي أَنصَرْتُكُمْ آلَ مُوسَىٰ عَلَىٰ فِرْعَوْنَ وَأَنَا نَصَرْتُكُمْ وَأَنَا فَاتٍ بِكُمْ مِنَ الْبَحْرِ وَلَئِنْ أَنصَرْتُمْ مَعِيَ لَأَنصُرَنَّ مَعَكُمْ وَلَئِنْ أَنصَرْتُمْ مَعِيَ لَأَنصُرَنَّ مَعَكُمْ وَلَئِنْ أَنصَرْتُمْ مَعِيَ لَأَنصُرَنَّ مَعَكُمْ وَلَئِنْ أَنصَرْتُمْ مَعِيَ لَأَنصُرَنَّ مَعَكُمْ

- हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी किन्तु जो इन्कार करे। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा हे अब्राह के रसूल? आप ने कहा जिस ने मेरी बात मानी वह स्वर्ग में जायेगा और जिस ने नहीं मानी तो उस ने इन्कार किया। (महीह बुखारी: 2780)
- हदीस में है कि यह आयत जैनब बिनत जहश तथा (उस के पति) जैद बिन हारिमा के बारे में उतरी। (महीह बुखारी हदीस नं० 4787)
जैद बिन हारिमा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दास थे आप ने उन्हें मुक्त कर के अपना पुत्र बना लिया। और जैनब से विवाह दिया। परन्तु दोनों में निभाव न हो सका। और जैद ने अपनी पत्नी को तलाक दे दी। और जब मुंह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ दिया गया तो इसे पूर्णतः खण्डित करने के लिये आप को जैनब से आकाशीय आदेश द्वारा विवाह दिया गया। इस आयत में उसी की ओर संकेत है। (इब्ने कसीर)
- अर्थात् उन से विवाह करने में जब वह उन्हें तलाक दे दें। क्योंकि जाहिली समय में मुंह बोले पुत्र की पत्नी से विवाह वैसे ही निषेध था जैसे सगे पुत्र की पत्नी से। अब्राह ने इस नियम को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

जब वह पूरी कर लें उन से अपनी आवश्यकता तथा अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

38. नहीं है नबी पर कोई तंगी उस में जिस का आदेश दिया है अल्लाह ने उन के लिये।¹ अल्लाह का यही नियम रहा है उन नबीयों में जो हुये हैं आप से पहले। तथा अल्लाह का निश्चित किया आदेश पूरा होना ही है।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ فَعْدًا مُقَيَّدًا

39. जो पहुँचाने है अल्लाह के आदेश तथा उस से डरते हैं, वह नहीं डरने है किसी से उस के सिवा। और पर्याप्त है अल्लाह हिमाय लेने के लिये।

بِأَمْرِ مَنْ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِهِمْ وَعَسْتَوْفُوا وَلَا يَجْتَمِعُونَ أَخْبَارًا إِلَّا إِلَهُهُ وَلَقَدْ يَلْقَى السُّعُوفُ

40. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं है। किन्तु वह² अल्लाह के रसूल और सब नबीयों में अन्तिम³ है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ قَوْمٍ لَهُ بَرَكَةٌ وَلَكِنْ رَسُولُ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَظِيمًا

का विवाह अपने मुँह वाले पुत्र की पत्नी से करगया। ताकि मुसलमानों को इस से शिक्षा मिले कि ऐसा करने में कोई दोष नहीं है।

- 1 अर्थात् अपने मुँह वाले पुत्र की पत्नी से उस के तलाक देने के पश्चात् विवाह करने में।
- 2 अर्थात् आप जैद के पिता नहीं हैं। उस के वास्त्वक पिता हारिसा है।
- 3 अर्थात् अब आप के पश्चात् प्रलय तक कोई नबी नहीं आयेगा। आप ही संसार के अन्तिम रसूल हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरी मिमाल तथा नबीयों का उदाहरण ऐसा है जैसे किसी ने एक सुन्दर भवन बनाया और एक ईंट की जगह छोड़ दी। तो उसे देख कर लोग आश्चर्य करने लगे कि इस में एक ईंट की जगह के सिवा कोई कमी नहीं थी। तो मैं वह ईंट हूँ। मैं ने उस ईंट की जगह भर दी। और भवन पूरा हो गया और मेरे द्वारा नबीयों की कड़ी का अन्त कर दिया गया। (सहीह बुखारी, हदीस नं० 3535, सहीह मुस्लिम 2286)

41. हे ईमान वालों! याद करने रहो अल्लाह को अत्यधिका^[1]
42. तथा पवित्रता बयान करते रहो उस की प्रातः तथा संध्या।
43. वही है जो दया कर रहा है तुम पर तथा प्रार्थना कर रहे है (तुम्हारे लिये) उस के फरिश्ते। ताकि वह निकाल दे तुम को अंधेरों से प्रकाश² की ओर। तथा ईमान वालों पर अत्यंत दयावान् है।
44. उन का स्वागत जिस दिन उस से मिलेंगे सलाम से होगा। और उस ने तय्यार कर रखा है उन के लिये सम्मानित प्रतिफल।
45. हे नबी! हम ने भेजा है आप को साक्षी³ तथा शुभमूचक⁴ और सचेत कर्ता⁵ बना कर।
46. तथा बुलाने वाला बना कर अल्लाह की ओर उस की अनुमति से, तथा प्रकाशित प्रदीप बना कर।⁶

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ذَكِّرُوا اللَّهَ لَكُمْ ذِكْرًا

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيَمْنَحَكُمْ مِنَ الطَّلُوعِ إِلَى الْمَغْرِبِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا

يَوْمَ تَأْتِيهِمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامًا أَعْلَنًا لَهُمْ أَجْرُهُمْ رَبَّنَا

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا

وَذَاكِرًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَبِإِذْنِهِ سُبُّرًا

1 अपने मुखों, कर्माँ तथा दिलों से नमाजों के पश्चात् तथा अन्य समय में। हदीस में है कि जो अल्लाह को याद करता हो और जो याद न करता हो दोनों में वही अन्तर है जो जीवित तथा मरे हुये में है। (सहीह बुखारी, हदीस नं० 6407 मुस्लिम: 779)

2 अर्थात् अज्ञानता तथा कुपथ से, इस्लाम के प्रकाश की ओर।

3 अर्थात् लोगों को अल्लाह का उपदेश पहुँचाने का साक्षी। (देखिये सूरह बकरा आयत 143 तथा सूरह निमा आयत 41)

4 अल्लाह की दया तथा स्वर्ग का, आज्ञाकारियों के लिये।

5 अल्लाह की यातना तथा नरक से, अवैज्ञाकारियों के लिये।

6 इस आयत में यह संकेत है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दिव्य प्रदीप

47. तथा आप शुभसूचना मना दें ईमान वालों को कि उन के लिये अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है।

48. तथा न बात माने काफिरों और मुनाफिकों की तथा न चिन्ता करें उन के दुख पहुँचाने की और भरोसा करें अल्लाह पर। तथा पर्याप्त है अल्लाह काम बनाने के लिये।

49. हे ईमान वाले! जब तुम विवाह करो ईमान वालियों से फिर तलाक दो उन्हें इस से पूर्व कि हाथ लगाओ उन को तो नहीं है तुम्हारे लिये उन पर कोई इद्दत¹ जिस की तुम गणना करो। तो तुम उन्हें कुछ लाभ पहुँचाओ, और उन्हें विदा करो भलाइ के साथ।

50. हे नबी! हम ने हलाल (वैध) कर दिया है आप के लिये आप की पत्नियों को जिन्हें चुका दिया हो आप ने उन का महर (विवाह उपहार), तथा जो आप के स्वामित्व में हों उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने आप² को तथा आप के चाचा की पुत्रियों और आप की फूफी की पुत्रियों तथा आप के मामा की पुत्रियों

وَيَسِّرِ الْمُؤْمِنِينَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اللَّهُ فَضْلًا كَثِيرًا

وَلَا يَطِيعُ الْكُفْرَ وَالشُّكُوكَ وَدَعَاؤُهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكُنْ يَاسِرًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَزَوَّجْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَزَوَّجُوا فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا لَمُتَزَوِّجَاتٍ وَمِنْ زَوْجُوهُنَّ سَرَّاحًا يَجِبُ لَكُمْ

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي أَتَيْتَ الْأُحْوَارَ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِنْهُنَّ مَا آتَاكَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمَّتِكَ وَبَنَاتِ أَخِيكَ وَبَنَاتِ إِخْوَتِكَ الَّتِي هُنَّ جُنُودُكَ وَأَمْرَأَتُ الْمُؤْمِنِينَ إِنْ وَفَّقْتَ نَفْسَهُنَّ يَدَيْهِ إِنْ أَرَادَ النَّسِيءُ أَنْ يَسْتَلِجَ حَقَّهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ مَلَكَ مَا فَرَّقْتَ عَلَيْهِمْ قَدْ أَرَّوْجَهُمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لَكُمْ

के समान पूरे मानव विश्व को सत्य के प्रकाश में जो एकेश्वरवाद तथा एक अल्लाह की इबादत (बंदना) है प्रकाशन करने के लिये आये हैं। और यही आप की विशेषता है कि आप किसी जाति या देश अथवा वर्ण-वर्ग के लिये नहीं आये हैं। और अब प्रलय तक सत्य का प्रकाश आप ही के अनुसरण में प्राप्त हो सकता है।

1 अर्थात् तलाक के पश्चात् की निर्धारित अवधि जिस के भीतर दूसरे से विवाह करने की अनुमति नहीं है।

2 अर्थात् वह दासियाँ जो युद्ध में आप के हाथ आई हों।

तथा मौसी की पुत्रियों को, जिन्होंने हिजरत की है आप के साथ, तथा किसी भी ईमान वाली नारी को यदि वह स्वयं को दान कर दे नबी के लिये, यदि नबी चाहें कि उस से विवाह कर लें। यह विशेष है आप के लिये अन्य ईमान वालों को छोड़ कर हमें ज्ञान है उस का जो हम ने अनिवार्य किया है उन पर उन की पत्नियों तथा उन के स्वामित्व में आयी दासियों के संबंध¹ में। ताकि तुम पर कोई संकीर्णता (तंगी) न हो। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

51. (आप को अधिकार है कि) जिसे आप चाहें अलग रखें अपनी पत्नियों में से, और अपने साथ रखें जिसे चाहें। और जिसे आप चाहे बुला लें उन में से जिसे अलग किया है। आप पर कोई दोष नहीं है। इस प्रकार अधिक आशा है कि उन की आंखें शीतल हों, और वह उदासीन न हों तथा प्रसन्न रहें उस से जो आप उन सब को दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों² में है और अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील³ है।

52. (हे नबी!) नहीं हलाल (वैध) है आप के लिये पत्नियाँ इस के पश्चात्, और

يَكُونَنَّ عَلَيْكَ حَرَمٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

مَرْبُوبٍ مِّنْ نَّسَائِهِمْ وَلَهُنَّ إِلَيْكَ مَتَاعٌ
وَمِمَّا تَتَوَلَّوْنَ مِنْ عَزَائِكُمْ عَلَيْكَ ذَلِكَ
أَدْنَىٰ أَن تَقْرَأُ آيَاتَهُنَّ وَلَا تَصْرُخَ وَيَرْضَيْنَ بِمَا
الْيَتَمَتُّنَ لَهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدِ وَلَا أَنْ تَبْدُلَ

1 अर्थात् यह कि चार पत्नियों से अधिक न रखो तथा महर (विवाह उपहार) और विवाह के समय दो साक्षी बनाना और दासियों के लिये चार का प्रतिबन्ध न होना एवं सब का भरण पोषण और सब के साथ अच्छा व्यवहार करना इत्यदि

2 अर्थात् किसी एक पत्नी में रुची।

3 इसीलिये तुरंत यातना नहीं देता।

न यह कि आप बदले उन को दूसरी पत्नियों * से यद्यपि आप को भाये उन का सौन्दर्य। परन्तु जो दामी आप के स्वामित्व में आ जाये। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है।

53. हे ईमान वाले! मत प्रवेश करो नबी के घरों में परन्तु यह कि अनुमति दी जाये तुम को भोज के लिये। परन्तु भोजन पकने की प्रतीक्षा न करते रहो। किन्तु जब तुम बुलाये जाओ तो प्रवेश करो, फिर जब भोजन कर लो तो निकल जाओ। लीन न रहो बातों में। वास्तव में इस से नबी को दुख होता है, अतः वह तुम से लजाने है। और अल्लाह नहीं लजाता है सत्य ² से तथा जब तुम नबी की पत्नियों से कुछ माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो, यह अधिक पवित्रता का कारण है तुम्हारे दिलों तथा उन के दिलों के लिये और तुम्हारे लिये उचित नहीं है कि नबी को दुख दो, न यह कि विवाह करो उन की पत्नियों से आप के पश्चात् कभी भी। वास्तव में यह अल्लाह के समीप महा (पाप) है।

54. यदि तुम कुछ दोलो अथवा उसे मन

يَوْمَ مِنْ أَرْبَاعٍ ۖ وَلَوْ أَعْيَبَكَ حُسْنُهُنَّ ۖ إِنْ أَمَّا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۖ وَكَانَ نَفَقَةُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَاقِبَةً ۖ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ فِي طَعَامٍ غَيْرِ نِظَرٍ عَنْ إِسَاءَةٍ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا ۖ وَأَذْكُرُوا الْقُرْآنَ ۖ وَلَا تَسْتَلِيمُوا بِحَدِيثِ بْنِ ذِكْرِ ۖ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَنِي مِنْكُمْ ۖ وَاللَّهُ لَا يَسْتَنِي مِنَ الْحَقِّ ۖ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ فَدَاءٍ جَانِبِ ذَٰلِكُمْ ۖ أَطْهَرُ بِقُلُوبِكُمْ وَتَلَوِيهِنَّ ۖ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ ۖ وَلَآ أَنْ تُكَلِّمُوا رِجَالَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَنَا ۖ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۖ

إِنَّ تَبَدُّلَ الشَّيْءِ وَتَغْيِيرَهُ ۖ وَإِنْ أَلَّفَهُ كَانَ عَيْنًا

- 1 अर्थात् उन में से किसी को छोड़ कर उस के स्थान पर किसी दूसरी स्त्री से विवाह करें।
- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ सभ्य व्यवहार करने की शिक्षा दी जा रही है। हुआ यह कि जब आप ने जैनस से विवाह किया तो भोजन अनवाया और कुछ लोगों को आमंत्रित किया। कुछ लोग भोजन कर के वही बाने करने लगे जिस से आप को दुख पहुँचा। इसी पर यह आयत उतरी फिर पर्दे का आदेश दे दिया गया। (सहीह बुखारी नं: 4792)

में रखो तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अत्यंत ज्ञानी है।

شَيْءٍ عِلْمًا ۝

55. कोई दोष नहीं है उन (स्त्रियों) पर अपने पिताओं न अपने पुत्रों एवं भाइयों और न भतीजों तथा न अपनी (मेल जोल की) स्त्रियों और न अपने स्वामित्व (दासी तथा दास) के सामने होने में, यदि वह अल्लाह से डरती रहें। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَسْوَءِ تَحْوِيلِهِنَّ وَلَا أَسْوَءِ وَلَا مَا سَأَلْتِ كَيْتَا لَهِنَّ وَالْقَوِيَّ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

56. अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद¹ भेजते हैं तबी परा हे ईमान वालो! उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ امْكُتِبْ عَلَيْهِ وَسَلِّمْ وَارْتَسِلُوا عَلَيْهِ ۝

57. जो लोग दुख देते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल को तो अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है लोक तथा परलोक में। और तय्यार की है उन के लिये अपमानकारी यातना।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ۝

58. और जो दुख देते हैं ईमान वालों तथा ईमान वालियों को बिना किसी दोष के जो उन्होंने ने किया हो, तो उन्होंने ने

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغْيًا ظَاهِرًا كَتَبْنَا عَلَيْهِمُ الثُّمُولَ ۝

- 1 अल्लाह के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि फरिश्तों के समक्ष आप की प्रशंसा करता है। तथा आप पर अपनी दया भेजता है।

और फरिश्तों के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि वह आप के लिये अल्लाह से दया की प्रार्थना करते हैं। हदीस में आता है कि आप से प्रश्न किया गया कि हम सलाम तो जानते हैं पर आप पर दरूद कैसे भेजें? तो आप ने फरमाया- यह कहो ((अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद कमा सल्लैता अला आलि इब्राहीम, इब्रका हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्मा वारिक अला मुहम्मद व अना आलि मुहम्मद कमा वारकना अला आलि इब्राहीम इब्रका हमीदुम मजीद)) (सहीह बुखारी: 4797)

दूसरी हदीस में है कि जो मुसलमान पर एक बार दरूद भेजेगा अल्लाह उस पर दस बार दया भेजता है। (सहीह मुस्लिम: 408)

लाद लिया आरोप तथा खुने पाप को।

59. हे नबी! कह दो अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों एवं ईमान वालों की स्त्रियों से कि डाल लिया करें अपने ऊपर अपनी चादरें। यह अधिक समीप है कि वह पहचान ली जायें। फिर उन्हें दुःख न दिया जाये। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

60. यदि न रुके मनाफिक¹ तथा जिन के दिलों में रोग है और मदीना में अफवाह फैलाने वाले तो हम आप को भड़का देंगे उन पर। फिर वह आप के साथ नहीं रह सकेंगे उस में परन्तु कुछ ही दिन।

61. धिक्कारे हूये। वे जहाँ पाये जायें पकड़ लिये जायेंगे तथा जान से मार दिये जायेंगे।

62. यही अल्लाह का नियम रहा है उन में जो इन से पूर्व रहे। तथा आप कदापि नहीं पायेंगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।

63. प्रश्न करते हैं आप से लोग² प्रलय

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّلْأَزْوَاجِ مِمَّا رَزَقْنَاهُ
وَالْمُؤْمِنِينَ يُذَبِّحْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ حُلِيِّهِنَّ
ذَٰلِكَ أَذَىٰ أَن يَفْرُسْنَ فَلَا يُؤْذِينَ وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَّحِيمًا ۝

لَٰئِن لَّمْ يَنْتَهِ السُّعْفَوْنَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم
مَّرَضٌ ۖ ذَٰلِكَ لِيُفْرِقُوا فِي لَمَدَتِهِمْ لِنَفْسِكَ
بِهِمْ فَتُؤَلَّجُوا بِرُؤُوسِكُمْ بِهَا الْإِقْلِيلُ ۝

خَالِفِينَ أَيْمَانًا تَقُولُوا أَجْدَا وَنَسُوا نَسِيْلًا ۝

سُنَّةَ الْاٰلِوٰی لَیْسَ لَیْسَ خَلُوهِنَّ قُلُ
وَلَنْ یَّجْدَیْسَ لَیْسَ لَیْسَ لَیْسَ ۝

یَسْئَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों तथा पुत्रियों और साधारण मुस्लिम महिलाओं को यह आदेश दिया गया है कि घर से निकलने तो पर्दे के साथ निकले। जिस का लाभ यह है कि इस से एक सम्मानित तथा सभ्य महिला की असभ्य तथा कुकर्मि महिला से पहचान होगी और कोई उस से छेड़ छान्ड का साहस नहीं करेगा।

2 मुश्रिक (द्विधावादी) मुसलमानों को हताश करने के लिये कभी मुसलमानों की पराजय और कभी किसी भारी सेना के आक्रमण की अफवाह मदीना में फैला दिया करते थे। जिस के दुष्परिणाम से उन्हें सावधान किया गया है।

3 यह प्रश्न उपहास स्वरूप किया करते थे। इसलिये उस की दशा का चित्रण

कें विषय में। तो आप कह दें कि उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। संभव है कि प्रलय समीप हो।

64. अल्लाह ने धिक्कार दिया है काफ़िरो को। और तय्यार कर रखी है उन के लिये दहकती अग्नि।

65. वे सदावामी होंगे उस में। नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।

66. जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में, वे कहेंगे- हमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का।

67. तथा कहेंगे- हमारे पालनहार! हम ने कहा माना अपने प्रमुखों एवं बड़ों का तो उन्होंने हमें कुपथ कर दिया सुपथ से।

68. हमारे पालनहार! उन्हें दुगुनी यातना दे, तथा उन्हें धिक्कार दे बड़ी धिक्कार।

69. हे ईमान वाले! न हो जाओ उन के समान जिन्होंने ने मुसा को दुःख दिया तो अल्लाह ने निर्दोष कर दिया। उसे उन की बनाई बातों से। और वह था अल्लाह के समक्ष सम्मानित।

किया गया है

1 हदीस में आया है कि मुसा (अनैहिस्सलाम) बड़े लज्जशील थे। प्रत्येक समय बस्त्र धारण किये रहते थे। जिस से लोग समझने लगे कि संभवतः उन में कुछ रोग है। परन्तु अल्लाह ने एक बार उन्हें नग्न अवस्था में लोगों को दिखा दिया और संदेह दूर हो गया। (महीह बुखारी: 3404, मुस्लिम: 155)

الَّذِينَ يَدْعُونَكَ لَتَعْلَ الشَّامَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝

خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ الَّحْمُومُونَ فِيهَا وَأُكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِمْ لَا يُصِيرُونَ ۝

يَوْمَ تَلْقَوْنَهُمْ يَتُوبُونَ قَوْلًا يَلْتَبِتُونَ ۝
الْحَقُّ اللَّهُ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝

وَقَالُوا إِنَّا كُنَّا نَسْتَنْصِشُكُمْ وَمَا كُنَّا قَائِمِينَ ۝
السَّيِّئِينَ ۝

رَبِّهَا يَهْمُ ضَعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالصَّامِتِينَ ۝
يُنِيرُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَكُونُوا كَالَّذِينَ إِذْ قَالَ
مُوسَىٰ قَبْرَاءَ ۚ إِنَّهُ مُسْتَطَاقٌ لِّأُولَئِكَ كَانَ جَعَلَهُ اللَّهُ
وَجْهًا ۝

70. हे ईमान वालों! अल्लाह से डरो तथा सहीह और सीधी बात बोलो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا

71. वह सुधार देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्मों को, तथा क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और जो अनुपालन करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल का तो उस ने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।

لِيُصْلِحَ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا

72. हम ने प्रस्तुत किया अमानत¹ को आकाशों तथा धरती एवं पर्वतों पर तो उन सब ने इन्कार कर दिया उन का भार उठाने से। तथा डर गये उस से। किन्तु उस का भार ले लिया मनुष्य ने। वास्तव में वह बड़ा अत्याचारी² अज्ञान है।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَنُومًا جَهُولًا

73. (यह अमानत का भार इस लिये लिया है) ताकि अल्लाह दण्ड दे मुनाफिक पुरुष तथा मुनाफिक स्त्रियों को, और मुशरिक पुरुष तथा स्त्रियों को। तथा क्षमा कर दे अल्लाह ईमान वालों तथा ईमान वालियों को और अल्लाह अनि क्षमाशील दयावान् है।

لِيُصْطَبَّ لِلَّهِ الْمُشْفِقِينَ وَالْمُسِيئِينَ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَمْشُوتَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا

- 1 अमानत से अभिप्राय धार्मिक नियम है जिन के पालन का दायित्व तथा भार अल्लाह ने मनुष्य पर रखा है। और उस में उन का पालन करने की योग्यता रखी है जो योग्यता आकाशों तथा धरती और पर्वतों को नहीं दी है।
- 2 अर्थात् इस अमानत का भार ले कर भी अपने दायित्व को पूरा न कर के स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करता है।

सूरह सबा 34

سورة سبأ

सूरह सबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 54 आयत हैं।

- इस में सबा जाति के चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में संदेहों को दूर करते हुये अब्राह का परिचय ऐसे कराया गया है जिस से तौहीद तथा अखिरत के प्रति विश्वास हो जाता है।
- इस में दावूद तथा सुलैमान (अलैहिमस्सलाम) पर अब्राह के पुरस्कारों और उन पर उन के आभारी होने का वर्णन तथा सबा जाति की कृतघ्नता और उस के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- शिर्क का खण्डन तथा विरोधियों का जवाब देने हुये परलोक के कुछ तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं।
- सूरह के अन्त में सोच-विचार कर के निर्णय करने का सुझाव दिया गया है और इस बात पर सावधान किया गया है कि समय निकल जाने पर पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आयेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अब्राह के लिये है जिस के अधिकार में है जो आकाशों तथा धरती में है। और उसी की प्रशंसा है अखिरत (परलोक) में। और वही उपाय जानने वाला सब से सूचित है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ نَعْمُدُ لِلْآخِرَةِ وَهُوَ عَلِيمُ غُيُوبِ الْأَوَّلِينَ

2. वह जानता है जो कुछ घुसता है धरती के भीतर तथा जो¹ निकलता है उस से, तथा जो उतरता है

يَعْلَمُ مَا يَكُونُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نُخْرِجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا نُزِيلُ فِيهَا

1 जैसे वर्षा कोष और निधि आदि।

आकाश¹ से और चढ़ता है उस में²
तथा वह अति दयावान् क्षमी है।

وَهُوَ تَرْجُمُ الْعُقُورِ

3. तथा कहा काफिरों ने कि हम पर
प्रलय नहीं आयेगी। आप कह दें: क्यों
नहीं? मेरे पालनहार की शपथ। वह
तुम पर अवश्य आयेगी जो परोक्ष
का ज्ञानी है। नहीं छुपा रह सकता
उस से कण बराबर (भी) आकाशों
तथा धरती में, न उस से छोटी कांडं
चीज और न बड़ी किन्तु वह खुली
पुस्तक में (अंकित) है।³

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِيَنَا السَّاعَةُ قُلْ بَل
وَأَنِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عِلْمُ الْغَيْبِ لَا يُعْزِبُ عَنْهُ وَشَعَالٌ
كَذَّابِي لَشَمُوتٍ وَلَئِنِّي لَأَرَى الْأَرْضَ وَالْأَصْفُورِينَ
ذَلِكُمْ وَرَآكَ الْكَلْبُ لَا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ

4. तार्कि⁴ वह बदला दे उन को जो
इंसान लाये तथा सुकर्म किये। उन्हीं के
लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

لِيُخْرِىَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ

5. तथा जिन्होंने प्रयत्न किये हमारी आयतों
में विवश⁵ करने का तो यही है जिन
के लिये यातना है अति घोर दुखदायी।

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيِنَا مُعِزِّينَ أُولَٰئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ

6. तथा (साक्षात्) देख⁶ लेंगे जिन
को उस का ज्ञान दिया गया है जो
अवतरित किया गया है आप की ओर
आप के पालनहार की ओर से। वही
सत्य है, तथा सुपथ दर्शाता है, अति
प्रभुत्वशाली प्रशंसित का सुपथ।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِينَ أُوتُوا إِلَيْكَ
مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَهُوَ يُعْطِي رُبِّي عَرُوطِ
الْعَرِيِّ الْحَمِيدِ

1 जैसे वर्षा ओला, फरिश्ते और आकाशीय पुष्पकें आदि।

2 जैसे फरिश्ते तथा कर्म।

3 अर्थात् लौहे महफूज (सुरक्षित पुस्तक) में।

4 यह प्रलय के होने का कारण है।

5 अर्थात् हमारी आयतों से रोकते हैं और समझते हैं कि हम उन को पकड़ने से
विवश होंगे।

6 अर्थात् प्रलय के दिन कि कूर्आन ने जो सूचना दी है वह साक्षात् सत्य है

7. तथा काफ़िरो ने कहा: क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति को बनायें जो तुम्हें सूचना देता है कि जब तुम पूर्णतः चूर चूर हो जाओगे तो अवश्य तुम एक नई उत्पत्ति में होगे?
8. उस ने बना ली है अल्लाह पर एक मिथ्या बात, अथवा वह पागल हो गया है। बल्कि जो विश्वास (इमान) नहीं रखते आखिरत (परलोक) पर, वह घातना¹ तथा दूर के कुपथ में है।
9. क्या उन्होंने ने नहीं देखा उस की ओर जो उन के आगे तथा उन के पीछे आकाश और धरती है। यदि हम चाहें तो धंसा दें उन के सहित धरती को अथवा गिरा दें उन पर कोई खण्ड आकाश से। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है प्रत्येक भक्त के लिये जो ध्यानमग्न हो।
10. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को अपना कुछ अनुग्रह² हे पर्वतो! सरसि महिमा गान करो³ उस के साथ, तथा हे पक्षियो! तथा हम ने कोमल कर दिया उस के लिये लोहा को।
11. कि बनाओ भरपूर कबचे तथा अनुमति रखो उस की कड़ियों को, तथा सदाचार करो। जो कुछ तुम कर रहे हो उसे मैं देख रहा हूँ।

وَقَالَ الْكَافِرُونَ نَحْنُ الْمَوْلَاةُ عَلَى رَجُلٍ
يُتَّبِعُكُمُ إِذَا تَمَرَّدْتُمْ وَلَوْلَا إِتْرَاقُكُمْ
لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

أَلَمْ تَرَ عَلَى اللَّهِ كَيْدًا مُرِيدَةً عَلَى الْكَافِرِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالْقُلُوبِ
الْمُؤْمِنِينَ ۝

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا سَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهِيَ
السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ إِنَّهُمْ لَشَاعِفُونَ بِهِمُ الْأَرْضَ
أَوْ لَنُفِضَنَّ عَنْهُمْ كَيْدًا مِنَ السَّمَاءِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً لِّأُولِي عَقُولٍ مُّسْتَبِينَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنْ فَضْلِنَا الْيَقِينَ
مَعَهُ وَالطُّيُورَ وَأَنَّا لَهُ لَمَحِيذُونَ ۝

أَيُّ أَغْنَىٰ سِجِّينَ وَقَالُوا رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
صَرِّفْ فِي هَٰذَا نَافِلُونَ ۝

1 अर्थात् इस का दूष्परिणाम नरक की घातना है।

2 अर्थात् उन को नवी बनाया और पुस्तक का ज्ञान प्रदान किया।

3 अल्लाह के इस आदेश अनुसार पर्वत तथा पक्षी उन के लिये अल्लाह की महिमा गान के समय उन की ध्वनी को दुहराते थे।

12. तथा (हम ने वश में कर दिया) सुलैमान¹ के लिये वायु को। उस का प्रातः चलना एक महीने का तथा संध्या का चलना एक महीने का² होता था। तथा हम ने वहा दिये उस के लिये तावे के सोना। तथा कुछ जिन्न कार्यरत थे उस के समक्ष उस के पालनहार की अनुमति से। तथा उन में से जो फिरेगा हमारे आदेश से तो हम चखायेंगे³ उसे भड़कती अग्नि की यातना।

13. वह बनाते थे उस के लिये जो वह चाहता था भवन (मस्जिदें) और चित्र तथा बड़े लगन जलाशयों (नालाबों) के समान तथा भारी देगों जो हिल न सकें। हे दावूद के परिजनों! कर्म करो कृतज्ञ हो कर, और मेरे भक्तों में धौड़े ही कृतज्ञ होते है।

14. फिर जब हम ने उस (सुलैमान) पर मौत का निर्णय कर दिया तो जिन्नो को उन के मरण पर एक घुन के सिवा किसी ने सूचित नही किया जो उस की छड़ी खा रहा था।⁴ फिर जब वह गिर गया तो जिन्नो पर यह

وَالسَّالِمِينَ إِن يَتْلُو عَنْهُمْ شَهْرًا وَآخَرًا شَهْرًا
وَأَسْأَلُكَ عَنِ الْفُطُورِ مِنَ يَمِينٍ مَنْ يَمُوتُ
يَمِينًا وَآخَرًا وَبِأَمْرٍ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرٍ نَائِيَةٍ
مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِينَ

يَقُولُونَ لَهُ مَا بَشَاءُ مِنْ تَحَارِيرٍ وَتَمَائِيلٍ وَحَسَنَ
كَالْجَوَابِ وَقَدْ فُتِحَتْ لِيَعْمَلُوا لَكَ دَاوُدُ سُكُورًا
وَقَلِيلٌ مِنْ جَبَدَى السُّكُورِ

فَتَنَّا قَصَبَهُ عَلَيْهِ نَمُوتُ مَدْلُهُمْ عَلَى مَوْنَةٍ
إِلَّا دَابَّةَ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْهُ إِنَّهُ نَلْقَاهُ لَنْ يُصِيبَ
الْجِبْنَ أَنْ نَكُونَ نَارًا يَمْلِكُونَ الْعِيبَ مَا لَيْسَ مِنَ
الْعَذَابِ النَّجْهِبِ

1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम) के पुत्र तथा नबी थे।

2 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अपने राज्य के अधिकारियों के साथ मिहामन पर आसीन हो जाते। और उन के आदेश से वायु उसे इतनी तीव्र गति से उड़ा ले जाती कि आधे दिन में एक महीने की यात्रा पूरी कर लेते। इस प्रकार प्रातः संध्या मिला कर दो महीने की यात्रा पूरी हो जाती। (देखिये- इब्ने कसीर)

3 अर्थात् नरक की यातना।

4 जिस के सहारे वह खड़े थे तथा घुन के खाने पर उन का शव धरती पर गिर पड़ा।

घात खुली कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान कारी¹ यातना में नहीं पड़े रहते।

15. सबा² की जानि के लिये उन की बस्तियों में एक निशानी³ थी बाग थे दायें और बायें खाओ अपने पालनहार का दिया हुआ, और उस के कृतज्ञ रहो। स्वच्छ नगर है तथा अति क्षमी पालनहार।

لَقَدْ كَانَ لِسِ بَابِ سَكِينَةٍ أَيْ جَنَّتِي عَنْ تَعْيِينِ
وَيُحَالِةً لَمْ يَمِنْ بِرَبِّكَ وَشَكَرُوا اللَّهَ
بَلَدًا طَيِّبَةً وَرَبُّ غَفُورٌ

16. परन्तु उन्होंने मुंह फेर लिया तो भेज दी हम ने उन पर बांध तोड़ बाढा तथा बदल दिया हम ने उन के दो बागों को दो कड़वे फलों के बागों और झाऊ तथा कुछ बैरी में।

فَاَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَمْرِ وَمَدَّ أُنْهُمُ
بِمَنْتَبِهِمْ جَنَّاتٍ ذَوَاتِ أَكْمَلٍ حَمِيدٍ وَأَنْشَأَ
مِنْ دُونِ الْبَيْتِ

17. यह कुफल दिया हम ने उन के कृतघ्न होने के कारण। तथा हम कृतघ्नों ही को कुफल दिया करते हैं।

فَالَيْكَ جَزَاءُ مَا كَفَرُوا وَعَلَى الْغَائِبِينَ

18. और हम ने बना दी थी उन के बीच तथा उन की बस्तियों के बीच जिस में हम ने समपन्नता⁴ प्रदान की थी खुली बस्तियाँ तथा नियत कर दिया था उन में चलने का स्थान⁵ (कि) चलो उस में रात्रि तथा दिनों के

وَحَطَبْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرًى
ظَاهِرَةً وَخَفِيَّةً لِيَسِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ
وَأَيَّامًا مَمْدُونَةً

1 सुलैमान (अलैहस्सलाम) के युग में यह भ्रम था कि जिषों को परोक्ष का ज्ञान होता है जिसे अब्राह ने माननीय सुलैमान (अलैहस्सलाम) के निधन द्वारा तोड़ दिया कि अब्राह के सिवा किसी को परोक्ष का ज्ञान नहीं है। (इब्ने कसीर)

2 यह जानि यमन में निवास करती थी।

3 अर्थात् अब्राह के सामर्थ्य की।

4 अर्थात् सबा तथा शाम (सीरिया) के बीच है।

5 अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा की सुविधा रखी थी।

समय शान्त¹ हो कर।

19. तो उन्होंने कहा: हे हमारे पालनहार! दूरी² कर दे हमारी यात्राओं के बीच तथा उन्होंने अत्याचार किया अपने ऊपर। अतः हम ने उन्हें कहानियों³ बना दिया, और नितर वितर कर दिया। वास्तव में इस में कई निशानियों (शिक्षायें) हैं प्रत्येक अति धैर्यवान कृतज्ञ के लिये।

20. तथा सच्च कर दिया इब्लीस ने उन पर अपना अंकलन।⁴ तो उन्होंने अनुसरण किया उस का एक समुदाय को छोड़ कर ईमान वालों के।

21. और नहीं था उस का उन पर कुछ अधिकार (दबाव) किन्तु ताकि हम जान ले कि कौन ईमान रखता है आखिरत (परलोक) पर उन में से जो उस के विषय में किसी संदेह में है। तथा आप का पालनहार प्रत्येक चीज का निरीक्षक है।⁵

22. आप कह दें: उन (पूज्यों) को पुकारो * जिन को तुम समझते हो अल्लाह के सिवा। वह नहीं अधिकार रखने कण

فَكَانُوا رَبَّائِبِينَ بَيْنَ أَقْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
فَجَعَلْنَاهُمْ حَادِثَاتٍ وَسَرَفْنَاهُمْ كُلَّ مِرْقَةٍ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا لِكُلِّ أَصْبَارٍ شَكُورٍ

وَلَمَّا صَدَّقْ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا ظَنُّوا أَنَّهُمُ اتَّبَعُوا
إِلَٰهَهُمْ نِقَائِينَ مُؤْمِنِينَ ۝

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا لِيَعْلَمَ مَنْ
يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ ۚ إِنَّهُمْ مُؤْمِنُونَ ۝ وَرَبُّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ ۝

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا ذِكْرًا فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي

1 शत्रु तथा भूख प्यास से निर्भय हो कर।

2 हमारी यात्रा के बीच कोई बस्ती न हो।

3 उन की कथायें रह गई, और उन का अस्तित्व नहीं रह गया।

4 अर्थात् यह अनुमान कि वह आदम के पुत्रों को कुपथ करेगा। (देखिये सूरह आराफ आयत 16, तथा सूरह साद, आयत 82)

5 ताकि उन का प्रतिकार बदला दे।

6 इस में सकेत उन की ओर है जो फरिश्तों को पूजते तथा उन्हें अपना सिफारशी मानते थे।

बराबर भी आकाशों में न धरती में
तथा नहीं है उन का उन दोनों में
कोई भाग। और नहीं है उस अल्लाह
का उन में से कोई सहायक।

الْأَرْضِ وَمَالَهُمْ فِيهَا مِنْ يَتَرَوْنَ وَالْمَالِ
يُنْفَعُهُمْ فَلْيُفَرِّجُوا

23. तथा नहीं लाभ देगी अभिस्तावना
(सिफारिश) अल्लाह के पास परन्तु
जिस के निये अनुमति देगा।¹¹ यहाँ¹²
तक कि जब दूर कर दिया जाता
है उद्वेग उन के दिलों से तो वह
(फरिश्ते) कहते हैं कि तुम्हारे
पालनहार ने क्या कहा? वे कहते हैं
कि सत्य कहा। तथा वह अति उच्च
महान् है।

وَلَا تَسْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ يَحْيَى
إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ
قَالُوا عَمٌّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ

24. आप (मुश्रिकों) से प्रश्न करें कि
कौन जीविका प्रदान करता है तुम्हें
आकाशों¹³ तथा धरती से? आप
कह दें कि अल्लाह। तथा हम अथवा
तुम अवश्य सुपथ पर हैं अथवा खुले
कुपथ में हैं।

قُلْ مَنْ يَرْفَعُكُمْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ
وَرَبُّ الْعَالَمِينَ قُلْ مَنْ يَرْفَعُكُمْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ

25. आप कह दें: तुम से नहीं प्रश्न किया
जायेगा हमारे अपराधों के विषय में,
और न हम से प्रश्न किया जायेगा
तुम्हारे कर्मों के¹⁴ संबंध में।

قُلْ لَا تَسْأَلُونِي عَنْ آخِرَتِي وَلَا تَسْأَلُونِي عَنْ قَبْلَتِي

1 (देखिये सूरह बक्रा आयत- 255 तथा सूरह अम्बिया, आयत- 28)

2 अर्थात् जब अल्लाह आकाशों में कोई निर्णय करना है तो फरिश्ते भय से काँपने
और अपने पंखों को फड़फड़ाने लगते हैं। फिर जब उन की उद्विग्नता दूर हो
जाती है तो प्रश्न करने हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या आदेश दिया है? तो
वे कहते हैं कि उस ने सत्य कहा है। और वह अति उच्च महान् है। (संक्षिप्त
अनुवाद हदीस सहीह बुखारी नं० 4800)

3 आकाशों की वर्षा तथा धरती की उपज से।

4 क्यों कि हम तुम्हारे शिर्क से विरक्त हैं।

26. आप कह दें कि एकत्रित¹¹ कर देगा हमें हमारा पालनहार। फिर निर्णय कर देगा हमारे बीच सत्य के साध। तथा वही अनि निर्णय कारी सर्वज्ञ है।

قُلْ يَحْصِي سُبُحَاتِنَا ثُمَّ يَنْقُصُ بِالنَّاقِصِ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَلِيمُ

27. आप कह दें कि तनिक मुझे उन को दिखा दो जिन को तुम ने मिला दिया है अन्नाह के साथ साझी¹² बना कर। ऐसा कदापि नहीं। बल्कि वही अन्नाह है अत्यंत प्रभावशाली तथा गुणी।

قُلْ أَرَأَيْتَ الْمَالِ الَّذِي اتَّخَفْتُمْ بِهِ تُكَادُونَ كَلًّا
بَلْ هُوَ مَالٌ غَيْرُ الْكَافِرِ

28. तथा नहीं भेजा है हम ने आप¹³ को

وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَّا آدَمَ ابْنَ مَرْيَمَ وَنُوحًا وَذَلِكَ

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 अर्थात् पूजा-आराधना में।

3 इस आयत में अन्नाह ने जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विश्वव्यापी रमूल तथा सर्व मनुष्य जाति के पथ प्रदर्शक होने की घोषणा की है जिसे सूरह आराफ आयत नं. 158, तथा सूरह फुर्कान आयत नं. 1 में भी वर्णित किया गया है। इसी प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मुझे पाँच ऐसी चीज दी गई है जो मुझ से पूर्व किसी नबी को नहीं दी गई। और वे ये हैं:

1 एक महीने की दूरी तक शत्रुओं के दिलों में मेरी धाक द्वारा मेरी सहायता की गई है।

2- पूरी धनी मेरे लिये मस्जिद तथा पवित्र बना दी गई है।

3- युद्ध में प्राप्ति धन मेरे लिये वैध कर दिया गया है जो पहले किसी नबी के लिये वैध नहीं किया गया।

4 मुझे सिफारिश का अधिकार दिया गया है।

5- मुझ से पहले के नबी मात्र अपने समुदाय के लिये भेजा जाता था परन्तु मुझे सम्पूर्ण मानव जाति के लिये नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुखारी: 335)

आयत का भावार्थ यह है कि आप के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप के लाये धर्म विधान कुरआन का अनुपालन करना पूरे मानव विश्व पर अनिवार्य है। और यही सन्धर्म तथा मुक्ति मार्ग हैं। जिसे अधिकतर लोग नहीं जानते।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: उसे की शपथ जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं। इस उम्मत का कोई यहूदी और इसाई मुझे सुनेगा और मौत से पहले मेरे धर्म पर ईमान नहीं लायेगा तो वह नरक में जायेगा। (सहीह मुस्लिम: 153)

الَّذِينَ لَا يَحْكُمُونَ

परन्तु सब मनुष्यों के लिये शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला बनाकर। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।

29. तथा वह कहते ¹ है कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

30. आप उन से कह दें कि एक दिन वचन का निश्चित ² है। वे नहीं पीछे होंगे उस से क्षण भर और न आगे होंगे।

قُلْ لَّكُمْ مِيعَاتُ يَوْمٍ لَا تَسْتَجِيبُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْبِلُونَهُ

31. तथा काफिरों ने कहा कि हम कदापि ईमान नहीं लायेंगे इस कुरआन पर और न उस पर जो इस से पूर्व की पुस्तक है। और यदि आप देखेंगे इन अत्याचारियों को खड़े हुये अपने पालनहार के समक्ष तो वे दोषारोपण कर रहे होंगे एक दूसरे पर। जो निर्बल समझे जा रहे थे वे कहेंगे उन से जो बड़े बन रहे थे यदि तुम न होने तो हम अवश्य ईमान लाने वालों ³ में होते।

وَقَالِ الْيَهُودُ كُفَرُوا وَلَمْ يُؤْمِنُوا بِمَا فِي الْكِتَابِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَقَالُوا مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ شَيْئًا وَلَا أَتَقْوَى الْيَوْمَ أَسْتَعِظُونَ يَوْمَ يُنْفَخُ الْأَشْجَارُ فَتَبْلُغُونَ أَسْطُفَافًا يُنْفَخُ الْأَشْجَارُ فَتَبْلُغُونَ أَسْطُفَافًا

32. वह कहेंगे जो बड़े बने हुये थे उन से जो निर्बल समझे जा रहे थे क्या हम ने तुम्हें रोका सुप्रथ से जब वह तुम्हारे पास आया? बल्कि तुम ही अपराधी थे।

قَالَ الْيَهُودُ أَسْطُفَافًا يُنْفَخُ الْأَشْجَارُ فَتَبْلُغُونَ أَسْطُفَافًا قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ شَيْئًا وَلَا أَتَقْوَى الْيَوْمَ أَسْطُفَافًا

33. तथा कहेंगे जो निर्बल होंगे उन से जो बड़े (अहंकारी) होंगे बल्कि

وَقَالَ الْيَهُودُ أَسْطُفَافًا يُنْفَخُ الْأَشْجَارُ فَتَبْلُغُونَ أَسْطُفَافًا

1 अर्थात् उपहास करते हैं।

2 प्रलय का दिन।

3 तुम्हीं ने हमें सत्य से रोक दिया।

रात दिन के षड्यंत्र¹ ने, जब तुम हमें आदेश दे रहे थे कि हम कफ़ करें अल्लाह के साथ तथा बनायें उस के साक्षी, तथा अपने मन में पछतायेंगे जब यातना देखेंगे। और हम तौक डाल देंगे उन के गलों में जो काफ़िर हो गये, वह नहीं बदला दिये जायेंगे परन्तु उसी का जो वह कर रहे थे

مَنْزِلَاتٍ وَالْمَلَكُوتِ تَأْمُرُونَ أَنْ تَكْفُرُوا بِهِ
وَتَجْعَلُوا لَهُ آيَةً وَأَنْتُمْ أَنْتُمْ لَتَقَارُوا
الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَعْمَى نَبِيًّا لَتَقَاتِي الْبُيُوتَ
كُفْرًا وَأَهْلٌ يُخْرَجُونَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

34. और नहीं भेजा हम ने किसी वस्ती में कोई सचेतकर्ता (नबी) परन्तु कहा उस के सम्पन्न लोगों ने: हम जिस चीज के साथ तुम भेजे गये हो उसे नहीं मानते हैं।²

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا
إِنَّا بِمَا أَنْتُمْ تَعْمَلُونَ كَاهِلُونَ ۝

35. तथा कहा कि हम अधिक है तुम से धन और संतान में। तथा हम यातना ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।

وَقَالُوا مَن آتَاهُم مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ أَوْ صَاعِقًا
يُعَذِّبُهُنَّ ۝

36. आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है। और नाप कर देता है। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।

قُلْ إِن رَّبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَلَكِنَّ أَكْثَر النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

37 और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी नहीं है कि तुम्हें हमारे कुछ

وَمَا أَشْأَلُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ يَأْتِيَنَّكُمْ بِكُفْرٍ

1 अर्थात् तुम्हारे षड्यंत्र ने हमें रोका था।

2 नबियों के उपदेश का विरोध सब से पहले सम्पन्न वर्ग ने किया है। क्योंकि वे यह समझते हैं कि यदि सत्य सफल हो गया तो समाज पर उन का अधिकार समाप्त हो जायेगा। वे इस आधार पर भी नबियों का विरोध करने रहे कि हम ही अल्लाह के प्रिय हैं। यदि वह हम से प्रसन्न न होना तो हमें धन धान्य क्यों प्रदान करता। अतः हम परलोक की यातना में ग्रस्त नहीं होंगे। कुर्आन ने अनेक आयतों में उन के इस भ्रम का खण्डन किया है।

समीप¹ कर दे। परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार करे तो यही है जिन के लिये दोहरा प्रतिफल है। और यही ऊँचे भवनों में शान्त रहने वाले हैं।

38. तथा जो प्रयास करते हैं हमारी आयतों में विवश करने के लिये² तो वही यातना में ग्रस्त होंगे।

39. आप कह दें: मेरा पालनहार ही फैलाना है जीविका को जिस के लिये चाहना है अपने भक्तों में से। और तंग करना है उस के लिये। और जो भी तुम दान करोगे तो वह उस का पूरा बदला देगा। और वही उत्तम जीविका देने वाला है।

40. तथा जिस दिन एकत्र करेगा उन सब को, फिर कहेगा फरिश्तों से: क्या यही तुम्हारी इबादन (बंदना) कर रहे थे।

41. वह कहेंगे: तू पवित्र है! तू ही हमारा संरक्षक है न कि यही। बल्कि यह इबादत करते रहे जिन्हीं³ की। इन में अधिकतर उन्हीं पर ईमान लाने वाले हैं।

42. तो आज तुम⁴ में से कोई एक-दूसरे को लाभ अथवा हानि पहुंचाने का अधिकार नहीं रखेगा। तथा हम कह देंगे अत्याचारियों से कि तुम अग्नि की

عِنْدَنَا رُلِّيَ إِلَى الْأَرْضِ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَأُولَئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضُّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ
فِي الْعَرْشَاتِ مُنْتَوِنٌ ۝

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِرِينَ أُولَئِكَ
فِي الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ۝

قُلْ إِنِّي يَتَّبِعُهُ لِرِزْقٍ لِّمَن يَشَاءُ مِنْ
بِعِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَفْتَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ
فَهُوَ يَحْكُمُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ
أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝

قَالُوا بَلَىٰ سُبْحَانَكَ إِنَّا كُنَّا مِنْ دُونِهِمْ قَبْلَ كَانُوا
يَعْبُدُونَ إِلَهَ الْكَافِرِينَ ۝

فَالْيَوْمَ لَا تَنْفَعُكَ بَعْضُكَ لِبَعْضٍ تَفْعَلُ الْأَعْرَافَ
وَتَقُولُ لِلَّذِينَ ظَنُّوا أَنَّهُم وَفُّوا عَذَابَ النَّارِ الْيَقِينِ
كُنْتُمْ بِهَا تُكْفَرُونَ ۝

1 अर्थात् हमारा प्रिय बना दे।

2 अर्थात् हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिये।

3 अरब के कुछ मूर्ख लोग फरिश्तों को पूज्य समझने थे। अतः उन से यह प्रश्न किया जायेगा।

4 अर्थात् मिथ्या पूज्य तथा उन के पुजारी।

यातना चखो जिसे तुम झुठला रहे थे।

- 3. और जब सुनाई जाती है उन के समक्ष हमारी खुली आयते तो कहते हैं यह तो एक पुरुष है जो चाहता है कि तुम्हें रोक दे उन पुज्यों से जिन की इबादत करते रहे हैं तुम्हारे पूर्वज। तथा उन्होंने कहा कि यह तो बस एक झूठी बनायी हुयी बात है। तथा कहा कार्फिरी ने इस सत्य को कि यह तो बस एक प्रत्यक्ष (खुला) जादू है।

44. जब कि हम ने नही प्रदान की है इन (मक्का वासियों) को कोई पुस्तक जिसे वे पढ़ते हों। तथा न हम ने भेजा है इन की ओर आप से पहले कोई सचेत करने वाला।¹

45. तथा झुठलाया था इन से पूर्व के लोगों ने और नही पहुँचे यह उस के दसवें भाग को भी जो हम ने प्रदान किया था उन को। तो उन्होंने झुठला दिया मेरे रमूलों को अन्ततः मेरा इन्कार कैसा रहा?²

46. आप कह दें कि मैं वस तुम्हें एक बात की नसीहत कर रहा हूँ कि तुम आवाह के लिये दो-दो तथा अकेले-अकेले खड़े हो जाओ। फिर

وَإِذَا شَئِلَ عَلَيْهِمُ الْبُيُوتُ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَبْسُطَ كُمُوعَنَا كَمَا تَبْسُطُ آبَاؤُكُمْ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رِجَالٌ مُّتَعَمَّرُونَ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِمَ تُحْيِي الْقُلُوبَ لَهَا هُمْ لِنُحْيِي الْإِنْسَانَ مَيْتِينَ ۖ

وَمَا تَنْبِئُهُمْ مِنْ كُتُبٍ يُدْرِسُوتُهَا وَمَا تَنْبِئُهُمْ مِنْ تَحْدِثٍ

وَكَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلِهِمْ وَتَالَعُوا رِجَالَنَا فَأْتَيْنَهُمْ كَذِبًا بَوْرَانِ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۚ

ثُمَّ إِنَّمَا أَعْطٰكُمْ بَوَاحِدَةً ۖ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا هُوَ إِلهٌ وَفَرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُونَ ۚ وَلَمَّا صَاحَبَكُمْ مِنْ جِهَتَيْنِ هُوَ الْآخِرُ ۖ تَرَكُوكُمْ بَيْنَ يَدَيْنِ

1. तो इन्हें कैसे ज्ञान हो गया कि यह कुर्आन खुला जादू है? क्यों कि यह ऐतिहासिक सत्य है कि आप से पहले मक्का में काँड़ नबी नहीं आया। इसलिये कुर्आन के प्रभाव को स्वीकार करना चाहिये न कि उस पर जादू होने का आरोप लगा दिया जाये।

2. अर्थात् आद और समूद ने। अतः मेरे इन्कार के दुष्परिणाम अर्थात् उन के विनाश से इन्हें शिक्षा लेनी चाहिये जो धन चल तथा शक्ति में इन से अधिक थे।

حَدَّابِ شَرِيحِي ۞

सोचो। तुम्हारे माथी को कोई पारालपन नहीं है।¹⁾ वह तो बस सचेत करने वाले है तुम्हें आगामी कड़ी यातना से।

47. आप कह दें मैं ने तुम से कोई बदला मोंगा है तो वह तुम्हारे²⁾ ही लिये है। मेरा बदला तो बस अब्बाह पर है। और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

قُلْ مَا سَأَلَ التُّكْرَمُ مِنْ آخِرِ قَوْلِكُمْ لَكُمْ مِنْ آخِرِي
إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۞

48. आप कह दें कि मेरा पालनहार वही करता है सत्य की। वह परीक्षों का अति ज्ञानी है।

قُلْ إِنْ رَأَيْتُمْ يُصْهِبُ يَمْشِي يَمْشِي بِكُلِّ الْغَيْثِ ۞

49. आप कह दें कि सत्य आ गया। और असत्य न (कुछ का) आरंभ कर सकना है और न (उसे) पुन ला सकता है।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِي الْبَاطِلُ وَمَا يُبْذَرُ ۞

50. आप कह दें कि यदि मैं कुपथ हो गया तो मेरे कुपथ होने का (भार) मुझ पर है। और यदि मैं सुपथ पर हूँ तो उस वही के कारण जिसे मेरी ओर मेरा पालनहार उतार रहा है। वह सब कुछ सुनने वाला, समीप है।

قُلْ إِنْ صَلَّيْتُ وَإِنَّمَا أَصِلُ عَلَى نَفْسِي وَإِنْ
اهْتَدَيْتُ فِيمَا أُتِيْتُ بِهِ فَإِنَّهُ سَيُوجِبُ قَرِيبٌ ۞

51. तथा यदि आप देखेंगे जब वह घबराये हुये³⁾ होंगे तो उन के खो जाने का कोई उपाय न होगा। तथा पकड़ लिये जायेंगे समीप स्थान से।

وَلَوْ تَرَى إِذْ يَخْرُجُونَ فُلُوقًا وَأُجُودًا
مُكَانٍ قَرِيبٍ ۞

52. और कहेंगे: हम उस⁴⁾ पर इमान

وَقَالُوا الْمَكَايِبُ وَأَنْ لَكُمْ أَتَادُش مِنْ

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दशा के बारे में।

2 कि तुम संमार्ग अपनाकर आगामी प्रलय की यातना से सुरक्षित हो जाओ।

3 प्रलय की यातना देख कर।

4 अर्थात् अब्बाह तथा उस के रमूल पर।

लाये। तथा कहाँ हाथ आ सकता है
उन के (ईमान) इतने दूर स्थान¹ से।

مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝

53. जब कि उन्होंने कुफ़र कर दिया पहले
उस के साथ। और तीर मारते रहे
बिन देखे दूर² से।

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَسْخَرُونَ بِالْحَبِيبِ
مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝

54. और रोक बना दी जायेगी उन
के तथा उस के बीच जिस की वे
कामना करेंगे जैसे किया गया इन के
जैसों के साथ इस से पहले! वास्तव
में वे संदेह में पड़े थे।

وَمِمَّا بَيْنَهُمْ وَمِمَّا يُشَاهَوْنَ كَمَا قِيلَ يَنْتَظِرُهُمْ
مِنْ قَبْلِ الْإِثْمِ كَأَنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرْتَبِطِينَ ۝

1 ईमान लाने का स्थान तो संसार था। परन्तु संसार में उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया।

2 अर्थात् अपने अनुमान में असन्ध्य जाते करते रहे।

सूरह फातिर 35

سُورَةُ الْفَاتِحَةِ

सूरह फातिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह में फातिर शब्द आया है जिस का अर्थ उत्पत्तिकार है। इसी कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में अल्लाह के उत्पत्ति तथा पालन पोषण करने के शुभगुणों को उजागर करके लोगों को एकेश्वरवाद तथा परलोक और रिस्ालत पर इमान लाने को कहा गया है। इस की आरंभिक आयतों में ही पूरी सूरह का सारांश आ गया है।
- इस में तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा परलोक का संविस्तार वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया गया है। और रिस्ालत पर इमान न लाने का दुष्परिणाम बताया गया है।
- इस में बताया गया है कि अल्लाह की निशानियों की पहचान तथा धार्मिक ग्रन्थों द्वारा जो ज्ञान मिलता है वह मार्गदर्शन की राह खोल कर सफल बनाता है। और इस पहचान और ज्ञान से विमुख होने का परिणाम विनाश है।
- अन्त में मुश्रिकों को चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम में जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो उत्पन्न करने वाला है आकाशों तथा धरती का (और) बनाने वाला ¹ है सदेशवाहक फरिश्तों को दो-दो तीन-तीन चार - चार परो वाला। वह अधिक करता है उत्पत्ति में जो चाहता है, निःसंदेह अल्लाह जो

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ
السَّاعَةِ نَسْلًا أُولَىٰ أَخِيَّةٍ مَّتَىٰ رُبُّكَ وَرَبُّ
نَبِيِّكَ يَا خَلْقَ يَا بَنَاتِ اللَّهِ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

- 1 अर्थात् फरिश्तों के द्वारा नवियों तक अपनी प्रकाशना तथा सदेश पहुँचाता है।

चाहे कर सकता है।

2. जो खोल दे अल्लाह लोगों के लिये अपनी दया¹ तो उसे कोई रोकने वाला नहीं तथा जिसे रोक दे तो कोई खोलने वाला नहीं उस का उस के पश्चात् तथा वही प्रभावशाली चतुर है।

مَا يَفْتَحُ اللَّهُ يَلْتَأَسُ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا تُغْنِيكَ لَهَا
وَمَا يُغْنِيكَ فَلَا تُسِيلُ لَهُ مِنْ بَعْدِهَا
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

3. हे मनुष्यों! याद करो अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को, क्या कोई उत्पत्तिकर्ता है अल्लाह के सिवा जो तुम्हें जीविका प्रदान करता हो आकाश तथा धरती में? नहीं है कोई बंदनीय परन्तु वही। फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ
خَالِقٍ مِثْلِهِ بِرِزْقِ الْكُوفِينَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
لِلَّاهِ الْإِلَهِ الْغَوْ كَأَنِّي تُؤْفِكُونَ ②

4. और यदि वह आप को झुठलाते हैं, तो झुठलाये जा चुके हैं बहुत से रमूल आप से पहले। और अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे सब विषया।²

فَإِنْ كَذَّبْتُمْ فَلَا تَكُونُونَ مِنْ عَمَلِكُمْ
اللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ③

5. हे लोगो! निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से अति प्रवंचक (शैतान)।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْأَعْيُنُ ④

6. वास्तव में शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम उसे अपना शत्रु ही समझो। वह बुलाना है अपने गिराँह को इसी लिये ताकि वह नारकियों में हो जायें।

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا
يَكُونُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الْمَوْتِ ⑤

7. जो काफिर हो गये उन्हीं के लिये

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا

1 अर्थात् स्वास्थ्य धन, ज्ञान आदि प्रदान करे।

2 अर्थात् अन्ततः सभी विषयों का निर्णय हमें ही करना है तो यह कहाँ जायेंगे? अतः आप धैर्य से काम लें।

कड़ी यातना है। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तो उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

وَعَمَلُوا الصَّالِحَاتِ لَمْ يُغْفَرْ لَهُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَبْلُغُوا أَجَلَ كَثِيرٍ ۝

8. तथा क्या शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का कुकर्म, और वह उसे अच्छा समझता हो? तो अल्लाह की क्षमा करता है जिसे चाहे और सुपथ दिखाता है जिसे चाहे। अतः न खोयें आप अपना प्राण इन¹ पर संताप के कारण। वास्तव में अल्लाह जानता है जो कुछ वे कर रहे हैं

أَفَلَمْ يَرَوْا لَهُ سَوْءَ عَمَلٍ قَرَأَ مَا نُزِّلَ اللَّهُ يُعِيسُ مَنْ يَشَاءُ وَيُهْدِي مَنْ يَشَاءُ فَلَا تَحْزَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝

9. तथा अल्लाह वही है जो वायु को भेजता है जो बादलों को उठाती है, फिर हम होंक देते हैं उसे निर्जीव नगर की ओर। फिर जीवित कर देते हैं उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्। इसी प्रकार फिर जीना (भी)² होगा।

وَاللَّهُ الْمُبْدِي الرَّسُولَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَاغْتَمْتَهُ إِلَى بَدْوٍ نَبَاتٍ فَاغْتَمْتَهُ إِلَى الْأَرْضِ بَعْدَ مَوْتِهَا كَذَلِكَ الْخُشُوعُ ۝

10. जो सम्मान चाहता हो तो अल्लाह ही के लिये है सब सम्मान। और उसी की ओर चढ़ने है पवित्र वाक्य।³ तथा सत्कर्म ही उन को ऊपर ले जाता⁴ है, तथा जो दाव घात में

مَنْ كَانَ يُرِيدَ الْغُرَّةَ وَبَنُو الْغُرَّةِ جَبِينًا إِلَى اللَّهِ يَصْعَدُ بِالْكَلِمَةِ الْكَافِيَةِ وَالْعَمَلِ الصَّالِحِ يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

- 1 अर्थात् इन के ईमान न लाने पर संताप न करें।
- 2 अर्थात् जिस प्रकार वर्षा से सूखी धरती हरी हो जाती है इसी प्रकार प्रलय के दिन तुम्हें भी जीवित कर दिया जायेगा।
- 3 पवित्र वाक्य से अभिप्राय ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) है। जो तौहीद का शब्द है, तथा चढ़ने का अर्थ है अल्लाह के यहाँ स्वीकार होना।
- 4 आयत का भावार्थ यह है कि सम्मान अल्लाह की वदना से मिलता है अन्य की पूजा से नहीं। और तौहीद के साथ सत्कर्म का होना भी अनिवार्य है। और जब

लगे रहने हैं बुराईयों की, तो उन्हीं के लिये कड़ी यातना है और उन्हीं के षड्यंत्र नाश हो जायेंगे।

11. अल्लाह ने उत्पन्न किया तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य से, फिर बनाये तुम को जोड़े। और नहीं गर्भ धारण करती कोई नारी और न जन्म देती परन्तु उस के ज्ञान से और नहीं आयु दिया जाता कोई अधिक और न कम की जाती है उस की आयु परन्तु वह एक लेख में ¹ है। वास्तव में यह अल्लाह पर अति सरल है।

12. तथा बराबर नहीं होते दो सागर, यह मधुर प्यास बुझाने वाला है, रुचिकर है जिस का पीना। और वह (दूसरा) खारी कड़वा है तथा प्रत्येक में से तुम खाते हो ताजा मांस, तथा निकालते हो आभूषण जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो नाव को उस में पानी फाड़ती हुई, ताकि तुम खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की। और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

13. वह प्रवेश करता है रात को दिन में, तथा प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा बश में कर रखा है सूर्य तथा चन्द्रा को, प्रत्येक चलते रहेंगे एक निश्चित समय तक। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है। उसी का राज्य है। तथा जिन को तुम पुकारते हो

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَرْوَاجًا وَأَنفُسًا مِنْ نَفْسٍ وَكَانَ قَسَمٌ إِلَّا بِرَبِّهِ وَمَا يَعْزَرُ مِنْ عِزِّهِ إِلَّا رَيْبٌ مِنْ غَيْرِهِ ۚ إِنَّ كِتَابَ اللَّهِ عَلَىٰ صُورٍ مُبِينٍ ۝

وَمَا يَنْتَعَى الْبَحْرُ مِنْ هَذَا مَذْذَبٍ فَرَاتٍ سَائِلٍ شَرَابُهُ وَهَذَا مِذْذَبٌ آجَائِدٍ وَمِنْ كُلِّ تَأْكُلُونَ لَمَّا طَرَأَ أَفْسَافُهُمْ حَيْثُ تَلْبَسُونَ وَتَرَى الْفُلَّانَ فِيهِ مَوَاجِرَ يَتَشَفَّوْنَ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

يُوزِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوزِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَدَّدٍ ۚ ذَٰلِكُمْ فَطَرَكُمْ لَهُ السَّمْعُ وَالْبَصَرُ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَسْتَكُونُ مِنْ فَطِيرٍ ۝

ऐसा होगा तो उसे अल्लाह स्वीकार कर लेगा।

- 1 अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की पूरी दशा उस के भाग्य लेख में पहले ही से अंकित है।

उम के सिवा वह स्वामी नहीं है एक
तिनके के भी।

14. यदि तुम उन्हें पुकारते हो तो वह
नहीं सुनते तुम्हारी पुकार को। और
यदि सुन भी लें तो नहीं उत्तर दे
सकते तुम्हें। और प्रलय के दिन वह
नकार देंगे तुम्हारे शिर्क (साझी
बनाने) को। और आप को कोई
सूचना नहीं देगा सर्वसूचिन जैसी।¹

15. हे मनुष्यों! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह
को तथा अल्लाह ही निस्वार्थ प्रशंसित है।

16. यदि वह चाहे तो तुम्हें ध्वस्त कर दे,
और नई² उत्पत्ति ला दे।

17. और यह नहीं है अल्लाह पर कुछ कठिना

18. तथा नहीं लादेगा कोई लादने वाला
दूसरे का बोझ अपने ऊपर।³ और
यदि पुकारेगा कोई बोझल उसे लादने
के लिये तो वह नहीं लादेगा उम में
से कुछ चाहे वह उम का समीपवर्ती

لَنْ تَدْعُوهُمْ لَاسْمَعُوا دَعَاكُمْ وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ
مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ
بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّتُكَ وِجْدُكُمْ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ
وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

إِنْ يَشَاءْ يُدْهِمِكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ خَيْرٍ

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ

وَلَا تَحْزَنْ رَأَاهُ فِي ذُرِّ الْأُخْرَىٰ وَإِنْ سَأَلْتَهُ
عَنْ شَيْءٍ لَّنْ يَنْصِبَ إِلَيْكَ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَا تَعْلَمُ السُّعُودَ وَالْقُنُودَ
يَا كَلْبُوبُ رَأَاهُ الْقِسْطَ وَمَنْ شَرَىٰ

1 इस आयत में प्रलय के दिन उन के पूज्य की दशा का वर्णन किया गया है। कि यह प्रलय के दिन उन के शिर्क को अस्वीकार कर देंगे और अपने पुजारियों से विरक्त होने की घोषणा कर देंगे। जिस से विद्वान हुआ कि अल्लाह का कोई साझी नहीं और जिन को मुशरिकों ने साझी बना रखा है वह सब धोखा है।

2 भावार्थ यह है कि मनुष्य को प्रत्येक क्षण अपने अस्तित्व तथा स्थायित्व के लिये अल्लाह की आवश्यकता है। और अल्लाह ने निर्लभ होने के साथ ही उस के जीवन के संसाधन की व्यवस्था कर दी है। अतः यह न सोचो कि तुम्हारा विनाश हो गया तो उम की महिमा में कोई अन्तर आ जायेगा। वह चाहे तो तुम्हें एक क्षण में ध्वस्त कर के दूसरी उत्पत्ति ले आये क्योंकि वह एक शब्द ((कुन्)) (जिस का अनुवाद है: हो जा) से जो चाहे पैदा कर दे।

3 अर्थात् पापों का बोझ। अर्थ यह है कि प्रलय के दिन कोई किसी की सहायता नहीं करेगा।

ही क्यों न हों। आप तो बस उन्हीं को सचेत कर रहे हैं जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे। तथा जो स्थापना करते हैं नमाज की। तथा जो पवित्र हुआ तो वह पवित्र होगा। अपने ही लाभ के लिये। और अल्लाह ही की ओर (सब को) जाना है।

فَاتِمَا يَكْمُلُ لِنَفْسِهِ ذَالَ عِلْمٍ وَالتَّوْحِيدِ ۝

19. तथा समान नहीं हो सकता अंधा तथा आँख वाला।

وَمَا يَسْتَوِي لَأَعْمَى وَالْبَصِيرِ ۝

20. और न अंधकार तथा प्रकाश।

وَلَا الظُّلُمُتُ وَلَا النُّورُ ۝

21. और न छाया तथा न धूप।

وَلَا يَظُلُّ وَلَا يُنُورُ ۝

22. तथा समान नहीं हो सकने जीवित तथा निर्जीव, वास्तव में अल्लाह ही सुनाता है जिसे चाहता है। और आप नहीं सुना सकते जो कब्रों में हों।

وَمَا يَسْتَوِي الْهَيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يُشَاءُ ۚ وَمَا أَنتَ بِمُتَّبِعٍ فِي الْقُبُورِ ۝

23. आप तो बस सचेत कर्ता है।

إِنْ أَنتَ إِلَّا سَوِيِّرٌ ۝

24. वास्तव में हम ने आप को सत्य के साथ शुभसूचक तथा सचेतकर्ता बना कर भेजा है। और कोई ऐसा समुदाय नहीं जिस में कोई सचेत कर्ता न आया हो।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَلَا تُؤْمِنُ أُمَّةٌ إِلَّا خَلَا فِيهَا سَوِيِّرٌ ۝

25. और यदि ये आप को झुठलायें तो इन से पूर्व लोगों ने भी झुठलाया है, जिन के पास हमारे रसूल खुले प्रमाण तथा ग्रंथ और प्रकाशित पुस्तकें लाये।

وَلَوْ كَذَّبُوا يُذَوِّبْ فَذَرْنَاهُمْ وَمَنْ قِيلَ لَهُمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ النَّبِيِّ ۝

26. फिर मैं ने पकड़ लिया उन्हें जो काफिर हो गये तो कैसा रहा मेरा इन्कार।

ثُمَّ أَخَذْتُ الْبَاقِينَ فَكُفُّوا فَمَا كَانَ يُكَلِّفُهُ

27. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने

الزُّبُرَ ۚ وَاللَّهُ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً

1 अर्थात् जो कुफ्र के कारण अपनी ज्ञान शक्ति खो चुके हों।

उतारा आकाश से जल, फिर हम ने निकाल दिये उस के द्वारा बहुत से फल विभिन्न रंगों के। तथा पर्वतों के विभिन्न भाग है श्वेत तथा लाल विभिन्न रंगों के तथा गहरे काले।

فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ شَرَابًا مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا وَمِنْ اَلْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ وَحُمْرٌ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ۝

28. तथा मनुष्य एवं जीवों तथा पशुओं में भी विभिन्न रंगों के है इसी प्रकार। वास्तव में डरते है अल्लाह से उस के भक्तों में से वही जो ज्ञानी हो। निस्संदेह अल्लाह अति प्रभुत्वशाली क्षमी है।

وَمِنَ النَّاسِ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهُ كَذَلِكَ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ اِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ عَلِيمٌ ۝

29. वास्तव में जो पढ़ते है अल्लाह की पुस्तक (क़ुर्आन), तथा उन्होंने स्थापना की नमाज की, एवं दान किया उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है खले तथा छुपे तो वही आशा रखते है ऐसे व्यापार की जो कदापि हानिकर नहीं होगा।

رَبِّ الدِّينِ يَشْلُوكَ كَتَبَ اللّٰهُ وَاَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوْا زَكَاةً فَهُمْ رَٰسِدُونَ ۝

30. ताकि अल्लाह प्रदान करे उन्हें भरपूर उन का प्रतिफल। तथा उन्हें अधिक दे अपने अनुग्रह से। वास्तव में वह अति क्षमी आदर करने वाला है।

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُورَهُمْ وَيُرِيدَ اللّٰهُ مِنْ نَّصِيهِۦٓ اِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝

31. तथा जो हम ने प्रकाशना की है आप की ओर यह पुस्तक। वही सर्वथा सच्च है, और सच्च बनाती है अपने पूर्व की पुस्तकों को। वास्तव में अल्लाह अपने भक्तों से सूचित

وَالَّذِي اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ يَصَادِقُ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝

- 1 अर्थात् अल्लाह के इन सामर्थ्यों तथा रचनान्मक गुणों को जान सकते है जिन को क़ुर्आन तथा हदीसों का ज्ञान हो। और उन्हें जितना ही अल्लाह का आन्मिक ज्ञान होता है उतना ही वह अल्लाह से डरते हैं। मानो जो अल्लाह से नहीं डरते वह ज्ञानशून्य होत हैं। (इब्ने कसीर)

भली भाँति देखने वाला है।¹

32. फिर हम ने उत्तरधिकारी बनाया इस पुस्तक का उन को जिन्हें हम ने चुन लिया अपने भक्तों में² सो तो उन में कुछ अत्याचारी है अपने ही लिये तथा उन में से कुछ मध्यवर्ती है और कुछ अग्रसर है भलाईयों में अल्लाह की अनुमति से, तथा यही महान् अनुग्रह है।
33. सदावास के स्वर्ग है, वे प्रवेश करेंगे उन में और पहनाये जायेंगे उन में सोने के कंगन तथा मोती। और उन के वस्त्र उस में रेशम के होंगे।
34. तथा वे कहेंगे सब प्रशम्मा उस अल्लाह के लिये है जिस ने दूर कर दिया हम से शोक। वास्तव में हमारा पालनहार अति क्षमी गुणग्राही है।
35. जिस ने हमें उतार दिया स्थायी घर में अपने अनुग्रह से। नही छूयेगी उस में हमें कोई आपदा और न छूयेगी उस में कोई धकान।
36. तथा जो काफिर है उन्हीं के लिये नरक की अग्नि है। न तो उन की मौत ही आयेगी कि वह मर जायें, और न हलकी की जायेगी उन से उस की कुछ यातना। इसी प्रकार हम बदला देते हैं प्रत्येक नाशुक्रें को।

فَمَنْ أَوْفَّقْنَا الْكَافِرَ الَّذِينَ صَاطَعُوا مِنْ بَيْنِ أَيْدِينَا
فَمَنْ أَوْفَّقْنَا الْكَافِرَ الَّذِينَ صَاطَعُوا مِنْ بَيْنِ أَيْدِينَا
سَائِرِينَ بِأَحْسَنِ مَا فِي الْكِتَابِ ۚ

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُجَلِّوْنَ فِيهَا مِنْ
أَسَدٍ مِّنْ دُونِ ذَٰلِكَ وَلَهُ فِيهَا جَوْوَارِحٌ مُّخْتَلِفُونَ

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ
إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝

إِنَّا نُوَدِّعُ الْأَعْدَاءَ وَأَرَادْنَا الْقَامَةَ مِنْ فَطْمِهِ
لَا تَسْتَأْذِنُ فِيهَا نَفْسٌ وَلَا تَسْتَأْذِنُ فِيهَا نَفْسٌ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ
فِيمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِنَا
كَذَٰلِكَ نُخَيِّرُ كُلَّ نَفْسٍ لِّمَا كَسَبَتْ ۝

- 1 कि कौन उस के अनुग्रह के योग्य है। इसी कारण उस ने नबियों को सब पर प्रधानता दी है। तथा नबियों को भी एक-दूसरे पर प्रधानता दी है। (देखिये: इब्ने कसीर)
- 2 इस आयत में कुरआन के अनुयायियों की तीन श्रेणियाँ बताई गई हैं। और तीनों ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगी: अग्रगामी बिना हिसाब के। मध्यवर्ती सरल हिसाब के पश्चात् तथा अत्याचारी दण्ड भुगनने के पश्चात् शिफाअन द्वारा। (फतहुल कदीर)

37. और वह उस में चिल्लायेगे: हे हमारे पालनहार! हमें निकाल दे, हम सदाचार करेंगे उस के अतिरिक्त जो कर रहे थे क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी जिस में शिक्षा ग्रहण कर ले जो शिक्षा ग्रहण करे। तथा आया तुम्हारे पास सचेतकर्ता (नबी)? अतः तुम चखो। अन्याचारियों का कोई सहायक नहीं है।

38. वास्तव में अल्लाह ही ज्ञानी है आकाशों तथा धरती के भेद का। वास्तव में वही भली-भौति जानने वाला है सीनों की बातों का।

39. वही है जिस ने तुम्हें एक दूसरे के पश्चान् बसाया है धरती में तो जो कुफ्र करेगा तो उस के लिये है उस का कुफ्र, और नहीं बढ़ायेगा काफिरों के लिये उन का कुफ्र उन के पालनहार के यहाँ परन्तु क्रोध ही, और नहीं बढ़ायेगा काफिरों के लिये उन का कुफ्र परन्तु क्षति ही।

40. (हे नबी!) उन से कहो: क्या तुम ने देखा है अपने भाइयों को जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के अतिरिक्त? मुझे भी दिखाओ कि उन्होंने कितना भाग बनाया है धरती में से? या उन का आकाशों में कुछ साझा है? या हम ने प्रदान की है उन्हें कोई पुस्तक तो यह उस के खुले प्रमाणों पर है? बल्कि (वात यह है कि) अत्याचारी एक दूसरे को केवल धोखे

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ سَوَّاهُ قَوْمًا يَكُونُ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

يَنَّ اللَّهُ غَيْرُ غَيبٍ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمُ السُّرُوءَاتِ الْغُضُوءَاتِ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ ۖ مَنْ كَفَرَ فَعَنَيْهِ ۖ كُفْرًا وَلَا يَرْيَا الْكَافِرِينَ ۚ كُفْرًا هُوَ جَدُّ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرًا إِلَّا إِخْسَارًا ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرَأَيْتُمْ مَا كُفَرُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ ۚ أَمْ لِيُنصَبُوا سَائِبًا ۚ أَمْ لَهُمْ حِجَابٌ وَمَنْ يَلِ إِنْ يُعِيدُوا الْفُلُوكَ يَفْعَلُوا ۚ بَعْضًا لَا عُرْفًا ۝

1. यहाँ से अन्तिम सूरह तक शिर्क (मिश्रणवाद) का खण्डन किया जा रहा है।

का बचन दे रहे हैं।

41. अल्लाह ही रोकता¹ है आकाशों तथा धरती को खिसक जाने से। और यदि खिसक जायें वे दोनों तो नहीं रोक सकेगा उन को कोई उस (अल्लाह) के पश्चात्। वास्तव में वह अत्यंत सहनशील क्षमाशील है।

إِنَّ اللَّهَ يُصِيبُ الْمَوْتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَ
وَلَكِنْ رَأَيْنَا أَنْ مَسَكَهَا مِنْ أَعْدِيَّتِنِ
بَعْدَ إِثْنِهِ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا

42. और उन क़ाफ़िरो ने शपथ ली थी अल्लाह की पक्की शपथ! कि यदि आ गया उन के पास कोई सचेतकर्ता (नबी) तो वह अवश्य हो जायेंगे सर्वाधिक संमार्ग पर समुदायों में से किसी एक से। फिर जब आ गये उन के पास एक रसूल² तो उन की दूरी ही अधिक हुई।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ
نَبِيٌّ لَيَكُونَنَّ مِنْ أَعْدَى الْأَوَّلِينَ فَلَمَّا
جَاءَهُمْ نَبِيٌّ مِمَّنْ لَبَّاهُمْ الْأَوَّلِينَ

43. अभिमान के कारण धरती में तथा बुरे षडयंत्र के कारण। और नहीं घेरता है बुरा षडयंत्र परन्तु अपने करने वाले ही को। तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं पूर्व के लोगों की नीति की? ³ तो नहीं पायेंगे आप अल्लाह के नियम में कोई अन्तर।⁴

لَا يَسْتَكْبِرُ فِي الْأَرْضِ وَمَنْزِلَتُهُ
وَلَا يَخِيفُ أَسْكَرُ النَّبِيِّ إِلَّا بِأَمْرِ اللَّهِ فَمَنْ
يَنْظُرُونَ إِلَّا سَعَتِ الْأَعْيُنُ عَنْ شَيْءٍ
لِئْسَتِ اللَّهُ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَنْ يُجِدَ يَسْتِ اللَّهُ
تَعَالَى

44. और क्या वह नहीं चले-फिरे धरती में, तो देख लेते कि कैसा रहा उन का दुष्परिणाम जो इन से पूर्व रहे जब कि वह इन से कड़े थे बल में?

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَنَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ
مِنْهُمْ ثَوْرًا وَلَمَّا كَانَ اللَّهُ يُفْعِلُ فَعْلَهُ مِنْ

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रान में नमाज के लिये जागने तो आकाश की ओर देखने और यह पूरी आयत पढ़ने थे। (सहीह बुखारी: 7452)

2 मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

3 अर्थात् यातना की।

4 अर्थात् प्रत्येक युग और स्थान के लिये अल्लाह का नियम एक ही रहा है

तथा अब्राह ऐसा नहीं, वास्तव में वह सर्वज्ञ अर्थात् सामर्थ्यवान है।

45. और यदि पकड़ने लगता अब्राह लोगों को उन के कर्मों के कारण, तो नहीं छोड़ता धरती के ऊपर कोई जीवा किन्तु अवसर दे रहा है उन्हें एक निश्चित अवधि तक, फिर जब आजायेगा उन का निश्चित समय तो निश्चय अब्राह अपने भक्तों को देख रहा¹ है।

ثُمَّ فِي السَّمَوَاتِ لَا يَمْلِكُ لَكُمْ شَيْئًا قَدِيرًا ۝

وَلَوْ يَرَىٰ أَحَدُ عِلْمِ السَّمَوَاتِ بِمَا تَكْسِبُ أَمْمَاتُكُمْ
عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَلْهَمَهُمْ
يُؤْخِرُكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ إِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْذِنُ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ مِنْ دَعْوَاهُمْ ۝

1 अर्थात् उस दिन उन के कर्मों का बदला चुका देगा।

सूरह यासीन 36

سورۃ یاسین

सूरह यासीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 83 आयतें हैं।

- सूरह के प्रथम दो शब्दों से इस को यह नाम दिया गया है
- इस में रसूल के सत्य होने पर कुर्आन की गवाही से यह बताया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अचेत लोगों को जगाने के लिये भेजा गया है। और इस में उस का एक उदाहरण दिया गया है
- तौहीद की निशानियाँ बना कर विरोधियों का खण्डन किया गया है। और इस प्रकार सावधान किया गया है जिस में लगना है कि प्रलय आ गई है।
- रिसालत तौहीद तथा दूसरे जीवन के संबंध में विरोधियों की अपत्तियों का जवाब दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशिल तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. या सीन।
2. शपथ है सुदृढ़ कुर्आन की।
3. वस्तुतः आप रसूलों में से हैं।
4. सुपथ पर हैं।
5. (यह कुर्आन) प्रभुत्वशाली अति दयावान् का अवतरित किया हुआ है।
6. ताकि आप सावधान करें उस जाति⁽¹⁾ को, नहीं सावधान किये गये हैं जिन के पूर्वज। इसलिये वह अचेत हैं।

يٰسٓ

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ

إِنَّكَ لَمِنَ الرَّسُولِينَ

عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ

لِيُنذِرَ قَوْمًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۖ وَهُمْ فَهُمْ عَابِدُونَ

1 मक्का वासियों को जिन के पास इस्माइल (अलैहिस्सलाम) के पश्चान् कोई नबी नहीं आया।

- 7 सिद्ध हो चुका है वचन¹ उन में से अधिकतर लोगों पर। अतः वह ईमान नहीं लायेंगे।
8. तथा हम ने डाल दिये हैं तौक उन के गलों में जो हद्दियों तक² है। इस्मालिये वह सिर ऊपर किये हुये हैं।
9. तथा हम ने बना दी है उन के आगे एक आड़ और उन के पीछे एक आड़। फिर ढाँक दिया है उन को, तो³ वह देख नहीं रहे हैं।
10. तथा समान है उन पर कि आप उन्हें सावधान करें अथवा सावधान न करें वह ईमान नहीं लायेंगे।
- 11 आप तो बस उसे सचेत कर सकेंगे जो माने इस शिक्षा (क़ुरआन) को, तथा डरे अत्यंत कृपाशील से बिन देखें। तो आप शुभसूचना सुना दें उसे क्षमा की तथा सम्मानित प्रतिफल की।
12. निश्चय हम ही जीवित करेंगे मुर्दा को, तथा लिख रहे हैं जो कर्म उन्होंने किया है और उन के पद चिन्हों⁴ को, तथा प्रत्येक वस्तु को हम ने गिन रखा है खुली पुस्तक में।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْيُنِهِمْ غُرَابًا مَّنْعًا إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ۝

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَلذُّرُ فَهُمْ لَا يَخِفُونَ وَلَا يُؤْمِنُونَ ۝

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ لِذِكْرِ وَعْثِ الرَّحْمَنِ بِالنَّيِّبِ تَمَثُّرُهُ يَسْفِرُ ۖ وَأَخْبَرُ قَرِيبٍ ۝

رَأَيْنَاهُمْ سُنْبِي لَمَوَاتٍ وَتَلَكَّبُ مَقَادِمُ ۖ وَإِنَّا لَهُمْ وَكُلِّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ۝

- 1 अर्थात् अल्लाह का यह वचन कि ((मैं जिनों तथा मनुष्यों से नरक को भर दूंगा।)) (देखिये मूरह सज्दा, आयत 13)
- 2 इस से अभिप्राय उन का क़ुर्र पर दुराग्रह तथा ईमान न लाना है
- 3 अर्थात् मृत्यु की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं और न उस में लाभान्वित हो रहे हैं।
- 4 अर्थात् पुण्य अथवा पाप करने के लिये आने जाने जो उन के पदचिन्ह धरती पर बने हैं उन्हें भी लिख रखा है। इसी में उन के अच्छे बुरे वह कर्म भी आते हैं जो उन्होंने किये हैं और जिन का अनुसरण उन के पश्चान् किया जा रहा है।

13. तथा आप उन को¹ एक उदाहरण दीजिये नगर वासियों का जब आये उस में कई रसूल।

وَأُخْرِثَ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ نُوحٍ إِذْ جَاءَهُمْ نُسُورٌ

14. जब हम ने भेजा उन की ओर दो को। तो उन्होंने ने झुठला दिया उन दोनों को फिर हम ने समर्थन दिया तीसरे के द्वारा। तो तीनों ने कहा: हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।

وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَتْنِينَ فَنَادَوْهُمَا خَرَوْنَا عَلَىٰ لِقَائِكُمْ زُحْرًا ۖ وَإِنَّا لَنَكْمُلُنَّ مَسْعَاهُمْ

15. उन्होंने कहा: तुम सब तो मनुष्य ही हो हमारे² समान। और नहीं अवतरित किया है अत्यंत कृपाशील ने कुछ भी। तुम सब तो बस झूठ बोल रहे हो।

قَالُوا مَا أَتَيْنَا لَكَ إِلَّا نَسْأَلُكَ إِنَّا نَشْكُوكَ ۖ وَالْمُتَكَبِّرُونَ

16. उन रसूलों ने कहा: हमारा पालनहार जानता है कि वास्तव में हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गये हैं।

قَالُوا رَبَّنَا يَعْلَمُ إِنَّ إِلَٰهَكُمْ لَرَسُولٌ ۖ

17. तथा हमारा दायित्व नहीं है खुना उपदेश पहुँचा देने के सिवा।

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْمَسْعَةُ النَّهْيُونَ

18. उन्होंने कहा: हम तुम्हें अशुभ समझ रहे हैं यदि तुम रुके नहीं तो हम तुम्हें अवश्य पथगव कर के मार डालेंगे। और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से पहुँचेगी दुःखदायी यातना।

قَالُوا إِنَّكَ تَكْتُمُ إِلَٰهَكَ لَمَّا تَكْتُمُهُمْ ۖ لَكُمُ الْعَذَابُ ۖ وَلَيْسَتَكُمْ مِنَّا عَذَابٌ ۖ لَّيْسَ

19. उन्होंने कहा: तुम्हारा अशुभ तुम्हारे

قَالُوا كَذَّبْتُمْ عَنْكُمْ فَكُفُّوا عَنَّا ۖ وَتَوَلَّوْا

1 अर्थात् अपने आमंत्रण के विरोधियों को।

2 प्राचीन युग से मुशरिकों तथा कुपथों ने अल्लाह के रसूलों को इसी कारण नहीं माना कि एक मनुष्य पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? यह तो खाना पीना तथा बाजारों में चलना फिरना है। (देखिये: सूरह फुर्कान आयत 7-20 सूरह अम्बिया, आयत 3-7, 8 सूरह मूमिनून आयत 24-33-34 सूरह इब्राहीम आयत 10-11, सूरह इस्रा, आयत 94-95, और सूरह तगावुन आयत 6)

साथ है। क्या यदि तुम्हें शिक्षा दी जाये (तो अशुभ समझते हो)? बल्कि तुम उल्लंघन करी जाति हो।

بَنَ آسَافَ قَوْمَ مُوسَىٰ ۖ

20. तथा आया नगर के अन्तिम किनारे से एक पुरुष दौड़ता हुआ। उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगों! अनुसरण करो रसूलों का।

وَمَاءٍ مِنْ أَفْصَىٰ الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ ۚ قَالَ يُغَايِرُكُمْ رَسُولُ اللَّهِ ۚ

21. अनुसरण करो उन का जो तुम से नहीं माँगते कोई पारिश्रमिक (बदला) तथा वह सुपथ पर है।

اَتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۚ

22. तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उस की इबादत (बंदना) न करूँ जिम ने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फरे जाओगे।¹

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَالَّذِي تُرْجَعُونَ ۚ

23. क्या मैं बना लूँ उस को छोड़ कर बहुत से पूज्य? यदि अत्यन्त कृपाशील मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहें तो नहीं लाभ पहुँचायेगी मुझे उन की अनुशंसा (सिफारिश) कुछ, और न वह मुझे बचा सकेंगे।

وَأَقْبَدُ مِنَ دُعَاءِ الْهَادِينَ ۚ إِنَّ يُرِيدُنَ الرَّاغِبِينَ ۚ لَا تَنْفَعُ عِشْقُ شَيْءٍ عَلَيْهِمْ شَيْئًا وَلَا يَنْفَعُهُمْ شَيْئًا ۚ

24. वास्तव में तब तो मैं खुले कुपथ में हूँ।

إِنِّي إِذًا لِّمِنَ ضَالِّينَ ۚ

25. निश्चय मैं ईमान लाया तुम्हारे पालनहार पर, अतः मेरी भुनो।

إِنِّي اسْتَعِيرَ رَبِّي أَفْعُولَ ۚ

26. (उस से) कहा गया: तुम प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में। उस ने कहा काश मेरी जाति जानती।

قِيلَ دُخِلِ الْجَنَّةَ ۚ قَالَ يَلِيْسَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۚ

1 अर्थात् मैं तो उसी की बंदना करता हूँ और करना रहूँगा। और उसी की बंदना करनी भी चाहिये। क्योंकि वही बंदना किये जाने के योग्य है। उस के अतिरिक्त कोई बंदना के योग्य हो ही नहीं सकता।

27. जिस कारण क्षमा¹ कर दिया मुझे
को मेरे पालनहार ने और मुझे
सम्मिलित कर दिया सम्मानितों में।

يَا عِزِّي لَيْلِي وَصَلَوْتُ مِنَ الْمُكْرِمِينَ ﴿٢٧﴾

28. तथा हम ने नहीं उतारी उस की
जाति पर उस के पश्चात् कोई सेना²
आकाश से। और न हमें उतारने की
आवश्यकता थी

وَمَا تَرَلْنَا عَلَى لُؤْيِيٍّ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ
السَّمَاءِ وَمَا تَنْبُرُ فِيهِ

29. वह तो बस एक कड़ी ध्वनि थी फिर
सहसा सब के सब बुझ गया।³

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودٌ ﴿٢٩﴾

30. हाये संताप है⁴ भक्तों पर! नहीं
आया उन के पास रसूल परन्तु वे
उस का उपहास करते रहे।

يَحْتَرِأَ عَلَى لُؤْيِيٍّ وَمَا يَنْفَعُهُمْ زَيْلُ
إِلَافٍ أَنْوَافٍ يَمْهَرُونَ ﴿٣٠﴾

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से
पहले विनाश कर दिया बहुत से
समुदायों का। वे उन की ओर दौवारा
फिर कर नहीं आयेंगे।

الَّذِينَ كَذَّبُوا عَنْهُمْ أَنْفُسَهُمْ مِنَ الْغُرُوبِ أَتَدْرُ
إِلَيْهِمْ أَنْ يَمُنُّوا ﴿٣١﴾

32. तथा सब के सब हमारे समक्ष
उपस्थित किये⁵ जायेंगे।

وَإِنْ كُلُّ لُؤْيِيٍّ لَدَيْنا مُخَضَّرُونَ ﴿٣٢﴾

33. तथा उन⁶ के लिये एक निशानी
है निर्जीव (मूखी) धरती। जिसे हम

وَأَيُّكُمْ أَهْلُ الْأَرْضِ الْمَيْتَةِ ۚ لَا حَيَّةٌ بَهَا وَلَا تَحْيَا ﴿٣٣﴾

1 अर्थात् एकेश्वरवाद तथा अल्लाह की आज्ञा के पालन पर धैर्य के कारण।

2 अर्थात् यानना देने के लिये सेनायें नहीं उतारते ।

3 अर्थात् एक चीख ने उन को बूझी हुई राख के समान कर दिया। इस से ज्ञात होता है कि मनुष्य कितना निर्बल है।

4 अर्थात् प्रलय के दिन रसूलों का उपहास भक्तों के लिये संताप का कारण होगा।

5 प्रलय के दिन हिस्साब तथा प्रतिकार के लिये।

6 यहाँ से एकेश्वरवाद तथा आखिरत (परलाक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मक्का के काफिरों के बीच विवाद का कारण था।

ने जीवित कर दिया, और हम ने निकाले उस से अन्न, तो तुम उसी में से खाते हो।

وَمِمَّا حَقَّقْنَاهُ يُكَلِّفُونَ ۝

34. तथा पैदा कर दिये उस में बाग खजूरों तथा अँगूरों के, और फाड़ दिये उस में जल स्रोत।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرًا
فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝

35. ताकि वह खाये उस के फल। और नहीं बनाया है उसे उन के हाथों ने। तो क्या वह कृतज्ञ नहीं होते?

لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝

36. पवित्र है वह जिस ने पैदा किये प्रत्येक जोड़े उस के जिसे उगाती है धरती तथा स्वयं उन कि अपनी जाति के। और उस के जिसे तुम नहीं जानते हो।

شَيْءٍ الَّذِي يَخْلُقُ الْأَزْوَاجَ كُلَّهُمَا مِمَّا تَحْتِ الْأَرْضِ
وَمِنْ نَفْسِهِمْ وَمَا لَا يَعْلَمُونَ ۝

37. तथा एक निशानी (चिन्ह) है उन के लिये रात्रि। खींच लेने है हम जिस से दिन को तो सहसा वह अँधेरो में हो जाते हैं।

وَأَيُّ لَهِمُ اللَّيْلِ ۚ سَنَدْرُمُهُ الْهَارِ كَذَا إِذَا حُمِرَ
مُطْلَبُونَ ۝

38. तथा सूर्य चला जा रहा है अपने निर्धारित स्थान कि ओर। यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ का निर्धारित किया हुआ है।

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ ۚ أَدْنَىٰ تَقْدِيرِ الْعَزِيزِ
الْعَلِيمِ ۝

39. तथा चन्द्रमा के हम ने निर्धारित कर दिये है रातव्य स्थान। यहाँ तक की फिर वह हो जाता है पुगनी खजूर की सूखी शाखा के समान।

وَالْقَمَرَ تَدْنِيهِ مَنَابِتَ حَتَّىٰ كَادَ أَنْ يَبْرُجَ ۝

40. न तो सूर्य के लिये ही उचित है कि चन्द्रमा को पा जाये। और न रात अग्रगामी हो सकती है दिन से। सब एक मण्डल में तैर रहे हैं।

لَا الشَّمْسُ يَنْفَعِي لَهَا أَنْ تَدْنِيَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ
الْيَوْمِ لِلْيَوْمِ ۚ إِنَّ قَدِيرٌ يَسْتَوُونَ ۝

41. तथा उन के लिये एक निशानी (लक्षण) (यह भी) है कि हम ने सवार किया उन की संतान को भरी हुई नाव में।

وَالْيَوْمَ نَأْتِيهِم مِّنَ الْغَمِّ الْبَاقِي ۖ

42. तथा हम ने पैदा किया उन के लिये उस के समान वह चिज जिस पर वह सवार होते हैं।

وَخَلَقْنَا لَهُم مِّنْ نَّحْسِهِ مِثْلَهُ ۚ

43. और यदि हम चाहें तो उन्हें जलमग्न कर दें। तो न कोई सहायक होगा उन का, और न वह निकाले (बचाये) जायेंगे।

وَنَسْأَلُكَ لَهُم فَذَلِكُمْ لَهُمْ وَلَهُمْ يَنْقُضُونَ

44. परन्तु हमारी दया से तथा लाभ देने के लिये एक समय तक।

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۚ

45. और ¹ जब उन से कहा जाता है कि डरो उस (यातना) से जो तुम्हारे आगे तथा तुम्हारे पीछे है तार्कि तुम पर दया की जाये।

وَقَدْ قِيلَ لَهُمُ الْغَوَاةَ يَنَازِلُكُمْ وَاصْبِرُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۚ

46. तथा नहीं आती उन के पास कोई निशानी उन के पालनहार की निशानियों में से परन्तु वह उस से मंह फेर लेते हैं।

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۚ

47. तथा जब उन से कहा जाता है कि दान करो उस में से जो प्रदान किया है अज़ाह ने तुम को, तो कहते हैं जो काफिर हो गये उन से जो इमान लाये हैं क्या हम उसे

وَقَدْ قِيلَ لَهُمْ أَتَعْبُدُونَ مَا تَدْعُوا اللَّهَ قَالُوا تَبٰ ۖ كَذَّبُوا الذِّكْرَ أَفَلَا تَنظُرُونَ ۚ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطَعْتُم بَلْ لَأَنَّكُمْ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۚ

1 आयत नं. 33 से यहाँ तक एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाणों, जिन्हें सभी लोग देखते तथा सुनते हैं, और जो सभी इस विश्व की व्यवस्था तथा जीवन के ससाधनों से सर्वाधिकृत हैं, उन का वर्णन करने के पश्चात् अब मिश्रणवादियों तथा काफिरों कि दशा और उन के अचरण का वर्णन किया जा रहा है।

खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहे
तो खिला सकना है? तुम तो खुले
कुपथ में हो।

48. और वे कहते हैं कि कब यह
(प्रलय) का वचन पूरा होगा यदि तुम
सत्यवादी हो?

49. वह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु
एक कड़ी ध्वनि¹ की जो उन्हें
पकड़ लेगी और वह झगड़ रहे
होंगे।

50. तो न वह कोई बमिष्यत कर सकेंगे,
और न अपने परिजनों में वापिस आ
सकेंगे।

51. तथा फूँका² जायेगा सूर (नरमिघा)
में तो वह सहसा समाधियों से
अपने पालनहार की ओर भागते हुये
चलने लगेंगे।

52. वह कहेंगे हाय हमारा विनाश! किम
ने हमें जगा दिया हमारी विश्रामगृह
से? यह वह है जिस का वचन दिया
था अत्यंत कृपाशील ने, तथा सच्च
कहा था रसूलों ने।

53. नहीं होगी वह परन्तु एक कड़ी ध्वनि।
फिर सहसा वह सब के सब हमारे
समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे।

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدَانِ الَّتِي كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ
يَخِيفُونَهَا ﴿٤٩﴾

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا آلًا عَلَيْهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

وَأَنفَعُ فِي الصُّورِ لَذَلِكَ أَنَّهُمْ فِي رَيْبٍ مِّنْ أَفْعَادِ إِثْرَالٍ لَّنَا
يَلْبِثُونَ ﴿٥١﴾

قَالُوا يَوْنُسَ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَوْمٍ مُّشْرِكِينَ ﴿٥٢﴾
مَا وَعَدَ لَرَحْمٰنٍ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٣﴾

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدِينَ
فِيهَا ﴿٥٤﴾

1 इस से अभिप्राय प्रथम सूर है जिस में फूँकते ही अल्लाह के सिवा सब विलय हो जायेंगे।

2 इस से अभिप्राय दूसरी बार सूर फूँकना है जिस से सभी जीवित हो कर अपनी समाधियों से निकल पड़ेंगे।

54. तो आज नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी प्राणी पर कुछ। और तुम्हें उसी का प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा जो तुम कर रहे थे।

وَالْيَوْمَ لَا تَصْلَحُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُعْرَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

55. वास्तव में स्वर्गीय आज अपने आनन्द में लगे हुये है।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ كَثِيرٍ ﴿٥٥﴾

56. वे तथा उन की पत्नियाँ साथों में है, मसन्दों पर तर्किये लगाये हुये।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلٍّ عَلَى الْأَرَابِثِ مُتَّكِئُونَ ﴿٥٦﴾

57. उन के लिये उस में प्रत्येक प्रकार के फल है तथा उन के लिये वह है जिस की वह माँग करें।

لَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ﴿٥٧﴾

58. (उन को) सलाम कहा गया है अति दयावान् पालनहार की ओर से।

سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾

59. तथा तुम अलग हो जाओ आज, हे अपराधीयो।

وَأَمَّا الزُّلَّةَ الْيَوْمَ إِنَّهُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٥٩﴾

60. हे आदम की संतान! क्या मैं ने तुम से बल दे कर नहीं¹ कहा था कि इबादत (बंदना) न करना शैतान की? वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

أَلَمْ نَعْهَدْ إِلَيْكُمْ بَيْنَ آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ﴿٦٠﴾ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ عَلَيْهِ قَبِيلٌ ﴿٦١﴾

61. तथा इबादत (बंदना) करना मेरी ही, यही सीधी डगर है।

وَأَنْ عِبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

62. तथा वह कुपय कर चुका है तुम में से बहुत से समुदायों को, तो क्या तुम समझते नहीं हो।

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

63. यही नरक है जिस का वचन तुम्हें

هَذَا جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

1 अर्थात् ईमान वालों से।

2 भाष्य के लिये देखिये सूरह आराफ आयत: 172।

दिया जा रहा था।

64. आज प्रवेश कर जाओ उस में उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

اصْبِرْهَا الْيَوْمَ رَبِّكَ لَمْ يَكْمُرْ فَتًى ۝

65. आज हम मुहर (मुद्रा) लगा देंगे उन के मुखों पर। और हम से बात करेंगे उन के हाथ, तथा साक्ष्य (गवाही) देंगे उन के पैर उन के कर्मों की जो वे कर रहे थे।¹

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَنَنصِفُ أَرْجُلَهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

66. और यदि हम चाहते तो उन की आँखें अँधी कर देते। फिर वे दोड़ने संमार्ग की ओर, परन्तु कहीं से देखते।

وَلَوْ شَاءَ لَطَمْنَا عَلَىٰ آفُسِهِمْ فَبُهِتُوا فَانطَبَقُوا ۝

67. और यदि हम चाहते तो विकृत कर देते उन को उन के स्थान पर, तो न वह आगे जा सकते थे न पीछे फिर सकते थे।

وَلَوْ شَاءَ لَسَخَطْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَعُوا مُضِيًّا وَكَيْفَ رَاجِعُونَ ۝

68. तथा जिसे हम अधिक आयु देने है, तो उसे उत्पत्ति में प्रथम दशा² की ओर फेर देते है। तो क्या वह समझते नहीं है।

وَمَنْ لَّعِينَةُ السَّاعَةِ ۝ لَخَلِيقٌ أَقْلًا يَعْقِلُونَ ۝

69. और हम ने नहीं सिखाया नबी को काव्य³ और न यह उन के लिये योग्य है। यह तो मात्र एक शिक्षा तथा खुला कुर्बान है।

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشُّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ يُذَكِّرُ ۝

70. ताकि वह सचेत करें उसे जो जीवित

لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيُحْيِيَ الْقَوْلَ عَلَىٰ الْكَاذِبِينَ ۝

1 यह उस समय होगा जब मिश्रणवादी शपथ लेंगे कि वह मिश्रण (शिरक) नहीं करने थे। देखिये मूरह अन्आम, आयत: 23।

2 अर्थात् वह शिशु की तरह निर्बल तथा निर्बोध हो जाता है।

3 मक्का के मुर्निपूजक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के संबंध में कई प्रकार की बातें कहते थे जिन में यह बात भी थी कि आप कवि हैं। अब्बाह ने इस आयत में इसी का खण्डन किया है।

हो¹ तथा सिद्ध हो जाये यातना की बात काफ़िरो पर।

71. क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हम ने पैदा किये है उन के लिये उस में से जिसे बनाया है हमारे हाथों ने चौपाये तो वह उन के स्वामी है?

72. तथा हम ने वश में कर दिया उन्हें उन के तो उन में से कुछ उन की सवारी है तथा उन में से कुछ को वे खाते है।

73. तथा उन के लिये उन में बहुत से लाभ तथा पेय है। तो क्या (फिर भी) वह कृतज्ञ नहीं होते?

74. और उन्होंने बना लिया अब्राह के सिवा बहुत से पूज्य कि संभवतः वे उन की सहायता करेंगे।

75. वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे। तथा वे उन की सेना है, (यातना) में² उपस्थित।

76. अतः आप को उदासीन न करे उन की बात। वस्तुतः हम जानते है जो वह मन में रखते है तथा जो बोलते है।

77. और क्या नहीं देखा मनुष्य ने कि पैदा किया हम ने उसे वीर्य से? फिर भी वह खुला झगडालू है।

78. और उस ने वर्णन किया हमारे लिये एक उदाहरण, और अपनी उत्पत्ति

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِن مَّاءٍ مَّاءً نَّافِلًا
لَهُمْ لُحُلُوفٌ عَلَيْهِمْ
وَاللَّهُ يَكْفُلُهَا أُولَئِكَ قَدِ افْتَرَيْنَا لَهُمْ

وَاللَّهُ يَكْفُلُهَا أُولَئِكَ قَدِ افْتَرَيْنَا لَهُمْ

وَاللَّهُ يَكْفُلُهَا أُولَئِكَ قَدِ افْتَرَيْنَا لَهُمْ

وَاللَّهُ يَكْفُلُهَا أُولَئِكَ قَدِ افْتَرَيْنَا لَهُمْ

لَا يَخْلُقُهَا إِلَّا اللَّهُ وَلَهُ كَلِمَةُ الْوَعْدِ

فَلَا يَخْلُقُهَا إِلَّا اللَّهُ وَلَهُ كَلِمَةُ الْوَعْدِ

أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ
مُّبِينٌ

وَقَرِيبٌ لِمَا مَنَّلَهُ لَمَّا خَلَقَهُ تَلَّ مِنْ عَمَّا عِطَّمَ

1 जीवित होने का अर्थ अन्तरात्मा का जीविन होना और मनुष्य को समझने के योग्य होना है।

2 अर्थात् वह अपने पूज्यों सहित नरक में झोंक दिये जायेंगे।

को भूल गया। उस ने कहा कौन जीवित करेगा इन अस्थियों को जब कि वह जीर्ण हो चुकी होगी?

فَلْيُزَيِّنُوا

79. आप कह दें वही जिस ने पैदा किया है प्रथम बार और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली भाँति जानने वाला है।

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَ أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ

80. जिस ने बना दी तुम्हारे लिये हरे वृक्ष से अग्नि, तो तुम उस से आग¹ सुलगाते हो।

يُنذِرُ بِعَلَلٍ لِّلْمُتَّقِينَ الَّذِينَ إِذَا أَقْبَضُوا
بَيْنَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

81. तथा क्या जिस ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है वह सामर्थ्य नहीं रखता इस पर कि पैदा करे उस के समान? क्यों नहीं? और वह रचयिता अति ज्ञाता है।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِعَظِيمٍ
عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ

82. उस का आदेश जब वह किसी चीज को अस्तित्व प्रदान करना चाहे तो बस यह कह देना है हो जा। तत्क्षण वह हो जाती है।

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ

83. तो पवित्र है वह जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है, और तुम सब उसी की ओर फेरे² जाओगे।

فَسُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۚ
لَهُ الْوَدَادُ ۚ عَلَيْهِ تَسْلُطُ كُلِّ شَيْءٍ ذَلِيلٌ
يُزَيِّنُونَ

1 भावार्थ यह है कि जो अल्लाह जल से हरे वृक्ष पैदा करता है फिर उसे सुखा देता है जिस से तुम आग सुलगाते हो तो क्या वह इसी प्रकार तुम्हारे मरने गलने के पश्चात् फिर तुम्हें जीवित नहीं कर सकता?

2 प्रलय के दिन अपने कर्मों का प्रतिकार प्राप्त करने के लिये।

सूरह साफात - 37

سورة السافات

सूरह साफात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 182 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((वस् साफात)) से हुआ है जिस का अर्थ है पंक्तिबद्ध फरिश्तों की शपथ! इस लिये इस का नाम सूरह साफात है
- इस में आयत 1 से 10 तक अब्राह के अकेले पूज्य होने पर फरिश्तों की गवाही प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि शैतान, फरिश्तों की उच्च सभा तक जाने से रोक दिये गये है। फिर दूसरे जीवन की दशा का वर्णन करके उन के दुष्परिणाम को बताया गया है जो अब्राह के सिवा दूसरों को पूजते है तथा अब्राह के पूजार्थियों का उत्तम परिणाम बताया गया है।
- आयत 75 से 148 तक अनेक नबियों की चर्चा है जिन्होंने तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रचार करने हुये अनेक प्रकार के दुःख सहे तथा अब्राह ने उन्हें उन के प्रयासों का उत्तम प्रतिफल प्रदान किया
- आयत 149 से 166 तक फरिश्तों के बारे में मुश्रिकों के गलत विचारों का खण्डन करते हुये फरिश्तों ही द्वारा यह बताया गया है कि वास्तव में वह क्या है?
- फिर सूरह की अन्तिम आयतों में अब्राह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा अब्राह की सेना अर्थात् रसूल के अनुयायियों को अब्राह की सहायता तथा विजय की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है पंक्तिबद्ध(फरिश्तों) की।
2. फिर झिड़कियाँ देने वालों की।
3. फिर स्मरण करके पढ़ने वालों¹ की।

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا

فَالرَّازِجَاتِ ثُجْرًا

فَاللَّائِيَاتِ ذِكْرًا

1 यह तीनों गुण फरिश्तों के है जो आकाशों में अब्राह की इबादत के लिये

4. निश्चय तुम्हारा पूज्य एक ही है।
5. आकाशां तथा धरती का पालनहार,
तथा जो कुछ उन के मध्य है, और
सूर्योदय होने के स्थानों का रब।
6. हम ने अलंकृत किया है संसार (समीप)
के आकाश को तारों की शोभा से।
7. तथा रक्षा करने के लिये प्रत्येक
उद्धत शैतान से।
8. वह नहीं सुन सकते (जा कर) उच्च
सभा तक फरिश्तों की बान, तथा
मारे जाते हैं प्रत्येक दिशा से।
9. रांदने के लिये, तथा उन के लिये
स्थायी यातना है।
10. परन्तु जो ले उड़े कुछ तो पीछा
करती है उस का दहकनी ज्वाला।¹
11. तो आप इन (काफिरों) से प्रश्न करें
कि क्या उन को पैदा करना अधिक
कठिन है या जिन² को हम ने पैदा
किया है? हम ने उन को³ पैदा
किया है लेसदार मिट्टी से।
12. बल्कि आप ने आश्चर्य किया (उन

رَبِّ الْعَرْشِ الْأَعْلَى

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ
الْمَشْرِقِ

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ كَوْنِيَّةٍ

وَجَعَلْنَا مِنْ كُلِّ غُطَّاءٍ فِجْرًا

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْأَرْضِ لَيْسَ لَهُمْ فِيهَا
سَمَاعٌ

دُخْرًا وَظُهُورًا لَا يَصْلُونَ

إِلَّا مَن حَمَلَ الْخُلُقُوعَ وَآتَبَعَهُ مِنْهَا نَارًا

فَاسْأَلُوهُمْ أَهْمَ أَسَدٌ خَلَقَ الْأَرْضَ خَلَقْنَا إِنَّ خَلْقَهُمْ
مِنْ طِينٍ لَّازِبٍ

بِئْسَ الْفِتْنَةُ وَهُمْ لَا يَخْتَفُونَ

पवित्रवद्ध रहने तथा बादलों को हॉकने और अल्लाह के स्मरण जैसे कूआन तथा
नमाज पढ़ने और उस की पवित्रता का गान करने इत्यादि में लगे रहने हैं।

- 1 फिर यदि उस से बचा रह जाये तो आकाश की बान अपने नीचे के शैतानों
तक पहुँचाता है और वह उसे काहिनों तथा ज्योतिषियों को बताने हैं। फिर वह
उस से सौ झूठ मिला कर लोगों को बताने हैं। (महीह बुखारी: 6213 सहीह
मुस्लिम: 2228)

- 2 अर्थात् फरिश्तों तथा आकाशों को?
- 3 उन के पिता आदम (अलैहिसलाम) को।

के अम्बीकार पर) तथा वह उपहास करते हैं।

13. और जब शिक्षा दी जाये तो शिक्षा ग्रहण नहीं करते।

وَلَا إِذْ يُؤْتَوْنَ كِتَابًا يُغْنِي عَنْهُمْ كِتَابُ اللَّهِ وَلَا يَذَّكَّرُونَ

14. और जब देखते हैं कोई निशानी तो उपहास करने लगते हैं।

وَهُمْ لَا يَذَّكَّرُونَ

15. तथा कहते हैं कि यह तो मात्र खुला जादू है।

وَقَالُوا إِنَّا نَسُوا حَظًّا فَمَا بُدِيَ

16. (कहते हैं कि) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और हार्दियाँ हो जायेंगे, तो हम निश्चय पुनः जीवित किये जायेंगे?

مَرَدًا نُسِيَاتُ وَكَأَنَّا بُدِئْنَا بِمَا نُبْذَرُونَ

17. और क्या हमारे पहले पूर्वज भी (जीवित किये जायेंगे)?

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمُ الْأَوَّلُونَ

18. आप कह दें कि हाँ तथा तुम अपमानित (भी) होगे।

قُلْ لَعَنُوا كُفْرًا وَذُرُوفًا

19. वह तो बस एक झिड़की होगी, फिर सहसा वह देख रहे होंगे।

وَأَنَّهُمْ يَنْظُرُونَ

20. तथा कहेंगे: हाय हमारा विनाश! यह तो बदले (प्रलय) का दिन है।

وَقَالُوا بَوَّيْنَا هَذَا يَوْمَ الدِّينِ

21. यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठला रहे थे।

هَذَا يَوْمُ الْقَضَاءِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ

22. (आदेश होगा कि) घेर लाओ सब अत्याचारियों को तथा उन के साथियों को और जिस की वे इबादत (बंदना) कर रहे थे।

خُذُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَرْوَاهُمْ بِهِمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ

23. अब्राह के सिवा। फिर दिखा दो उन को नरक की राह।

مِنْ دُونِ الْإِبْرَاهِيمَ هَذَا يَوْمُ الدِّينِ

24. और उन्हें रोक¹ लो। उन से प्रश्न किया जाये।

وَيَقُولُ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَتَسْتَأْذِنُونَ ۚ

25. क्या हो गया है तुम्हें कि एक-दूसरे की सहायता नहीं करते?

مَا لَكُمْ أَنتُم بَنَاتُ صَوْرَتٍ ۚ

26. बल्कि वह उस दिन मिर झुकाये खड़े होंगे।

بَيْنَ هُمْ يَوْمَ تُنْزَلُونَ ۚ

27. और एक-दूसरे के सम्मुख हो कर परस्पर प्रश्न करेंगे:²

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۚ

28. कहेंगे कि तुम हमारे पास आया करते थे दाये³ में।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا نَمُرُّ بِالْوَنَاءِ عَلَىٰ الْغَابِغِينَ ۚ

29. वह⁴ कहेंगे: बल्कि तुम स्वयं ईमान वाले न थे।

قَالُوا بَلَىٰ ۖ إِنَّا كُنَّا مُؤْمِنِينَ ۚ

30. तथा नहीं था हमारा तुम पर कोई अधिकार⁵ बल्कि तुम स्वयं अवैज्ञाकारी थे।

وَمَا كُنَّا لَكُمْ عَلَيْهِ مِنْ سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا ضَالِّينَ ۚ

31. तो मिट्ट हो गया हम पर हमारे पालनहार का कथन कि हम (यातना) चखने वाले हैं।

فَخَسَفْنَا قَوْلَ رَبِّنَا ۖ إِنَّكَ لَتَابْعُونَ ۚ

32. तो हम ने तुम्हें कुपथ कर दिया। हम तो स्वयं कुपथ थे।

فَأَطِيعُوا أَمْرًا كَاظِمِينَ ۚ

33. फिर वह सभी उस दिन यातना में साझी होंगे।

وَالْهَمُّ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۚ

1 तरक में झांकने से पहले।

2 अर्थात् एक-दूसरे को धिक्कारेंगे।

3 इस से अभिप्राय यह है कि धर्म तथा सत्य के नाम से आने थे अर्थात् यह विश्वास दिलाते थे कि यही मिश्रणवाद मूल तथा सन्धर्म है।

4 इस से अभिप्राय उन के प्रमुख लोग हैं।

5 देखिये सूरह इव्राहीम आयत 22।

34. हम इसी प्रकार किया करने हैं
अपराधियों के साथ।

إِنَّا كَذِبَتْ نَفْعُهَا بِالْمُؤْمِنِينَ ۝

35. यह वह है कि जब कहा जाना था उन
से कि काई पूज्य (वंदनीय) नहीं अल्लाह
के अतिरिक्त तो वह अभिमान करने थे।

إِنَّكُمْ كَالنُّورِ إِذْ قِيلَ لَهُمُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سَتَلْبَسُونَ ۝

36. तथा कह रहे थे: क्या हम त्याग देने
वाले हैं अपने पूज्यों को एक उन्मत्त
कवि के कारण?

وَيَقُولُونَ إِنَّا لِلتَّائِبِينَ إِلَهَتَانِ شَاعِرٌ غَثُوبٌ ۝

37. बल्कि वह (नबी) सच्च लाये हैं तथा
पुष्टि की है सब रसूलों की।

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلُونَ ۝

38. निश्चय तुम दुःखदायी यातना चखने
वाले हो।

إِنَّا كُنَّا لَهُمُ الْعَذَابَ الْكَرِيمَ ۝

39. तथा तुम उस का प्रतिकार (बदला)
दिये जाओगे जो तुम कर रहे थे।

وَيَا حَمْرُونَ إِلَّا أَنْ كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

40. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝

41. यही है जिन के लिये विदित जीविका है।

أُولَئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَقْنُونٌ ۝

42. प्रत्येक प्रकार के फल तथा वही
आदरणीय होंगे।

فَوَاكِهُ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ۝

43. सुख के स्वर्गों में।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝

44. आसनों पर एक दूसरे के सम्मुख
असीन होंगे।

عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِينَ ۝

45. फिराये जायेंगे उन पर प्याले प्रवाहित
पेय के।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَيْمُونَةٍ ۝

46. श्वेत आस्वाद पीने वालों के लिये।

بَيْضَاءَ لَدُنَّا الْيُسْرَى ۝

47. नहीं होगी उस में शारिरिक पीडा
और न वह उस से बहकेंगे।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُرْهَقُونَ ۝

48. तथा उन के पास आँखें झुकाये (सति)
बड़ी आँखों वाली (नारियाँ) होगी।

وَعَسَىٰ أَفْوَرُ الْظُرُوفِ عَيْنٌ ﴿٤٨﴾

49. वह छुपाये हुये अन्डों के मानिन्द होगी।¹¹

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مُّكْتَمٌ ﴿٤٩﴾

50. वह एक - दूसरे से सम्मुख हो कर
प्रश्न करेंगे।

فَأَقْصَىٰ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٥٠﴾

51. तो कहेंगा एक कहने वाला उन में से:
मेरा एक साथी था।

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾

52. जो कहना था कि क्या तुम (पलक
का) विश्वास करने वालों में से हो?

يَقُولُ أَأُنْثَىٰ تَبْ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ مُضْطَرِيضٌ ﴿٥٢﴾

53. क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी
और अस्थियाँ हो जायेंगे तो क्या हमें
(कर्मों का) प्रतिफल दिया जायेगा।

أَوَلَمْ نَكُنْ لَّكُمْ آيَاتٍ أَنْذَارًا ۖ وَجُفَاءً مَّا عَزَا لِمَنِ يُنْفَكُ ﴿٥٣﴾

54. वह कहेगा: क्या तुम झाँक कर देखने
वाले हो?

قَالَ هَلْ نَسْتَعْتِفُّ عَنْهُ ۚ ﴿٥٤﴾

55. फिर झाँकते ही उसे देख लेगा नरक
के बीच।

فَأَنصَلَ أَفْوَاهًا فِي سَوَاءٍ مُّجْتَمِعٍ ﴿٥٥﴾

56. उस से कहेगा: अन्नाह की शपथ! तुम
तो मेरा विनाश कर देने के समीप थे।

قَالَ تَاللَّهِ إِن كُنتَ لَتَرُدُنِي ﴿٥٦﴾

57 और यदि मेरे पालनहार का अनुग्रह
न होता तो मैं (नरक के) उपस्थितों
में होता

وَلَوْلَا رَحْمَةُ رَبِّي لَكُنتَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٥٧﴾

58. फिर वह कहेगा: क्या (यह सहीह
नहीं है कि) हम मरने वाले नहीं हैं?

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿٥٨﴾

59. सिवाये अपनी प्रथम मौत के और न
हम को यातना दी जायेगी।

إِلَّا مَوْتَنَا الْأَوَّلَ ۖ وَنَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् जिस प्रकार पक्षी के पंखों के नीचे छुपे हुये अन्डे सुरक्षित होते हैं वैसे ही वह नारियाँ सुरक्षित, सुन्दर रंग और रूप की होंगी।

60. वास्तव में यही बड़ी सफलता है।
61. इसी (जैसी सफलता) के लिये चाहिये कि कर्म करें कर्म करने वाले।
62. क्या यह आतिथ्य उत्तम है अथवा धोहड़ का वृक्ष?
63. हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।
64. वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़ (तह) से निकलता है।
65. उस के गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।
66. तो वह (नरकवासी) खाने वाले हैं उस से, फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।
67. फिर उन के लिये उस के ऊपर से खीलता गरम पानी है।
68. फिर उन्हें प्रन्यागत होना है नरक की ओर।
69. वास्तव में उन्होंने पाया अपने पूर्वजों को कुपथ।
70. फिर वह उन्ही के पदचिन्हों पर¹ दौड़े चले जा रहे हैं।
71. और कुपथ हो चुके हैं इन से पूर्व अगले लोगों में से अधिकतर।
72. तथा हम भेज चुके हैं उन में सचेत

- إِنَّ هَذَا لَهُ الْغَوْصُ الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾
- يَوْمَئِذٍ هَذَا الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦١﴾
- أَوَلَيْكَ خَيْرٌ مِّنْ لَّأَمْرٍ شَجَرَةُ الزُّقُومِ ﴿٦٢﴾
- إِنَّا جَعَلْنَاهَا رِيشَةً لِلظَّالِمِينَ ﴿٦٣﴾
- إِنَّا شَجَرَةُ غَرَّارٍ أَصْلُهَا فِي الْجَهَنَّمَ ﴿٦٤﴾
- طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رِيشُ الشَّيْطَانِ ﴿٦٥﴾
- فَإِنَّهُمْ لَا يَخْلَوْنَ مِنْهَا وَلَا يَبُورُونَ وَمِنَ الْبَاطِلِ ﴿٦٦﴾
- ثُمَّ نَزَّلْنَاهُ عَلَيْهِمْ أَشْوَابًا مِّنْ حَبِيرٍ ﴿٦٧﴾
- ثُمَّ إِنَّهُمْ مَرْغُومُونَ إِلَى الْجَهَنَّمَ ﴿٦٨﴾
- إِنَّهُمْ الْغَوَّاءُ الْهَارُونَ ضَالِّينَ ﴿٦٩﴾
- فَهُمْ عَلَىٰ أَسْرِهِمْ يُعْرَعُونَ ﴿٧٠﴾
- وَقَدْ صَلَّٰلٌ مِّنْ قَبْلِهِمُ الْكَرَّالُونَ ﴿٧١﴾
- وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّسِيرِينَ ﴿٧٢﴾

1 इस में नरक में जाने का जो सब से बड़ा कारण बनाया गया है वह है नबी को न मानना और अपने पूर्वजों के पथ पर ही चलते रहना।

(सावधान) करने वाले।

73. तो देखो कि कैसा रहा सावधान किये हुये लोगों का परिणाम?^[1]

مَا نَظَرْنَا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَكَبِّرِينَ ۝

74. हमारे शुद्ध भक्तों के सिवा।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝

75. तथा हमें पुकारा नूह ने। तो हम क्या ही अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْحًا فَلْيَعْمُرْ مَجْمَعِيْنَ ۝

76. और हम ने बचा लिया उस को और उस के परिजनों को घोर आपदा में।

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝

77. तथा कर दिया हम ने उस की संतति को शेष² रह जाने वालों में।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ۝

78. तथा शेष रखा हम ने उस की सराहना तथा प्रशंसा को पिछलों में।

وَرَزَقْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝

79. सलाम (सुरक्षा)³ है नूह के लिये समस्त विश्ववासियों में।

سَلَامٌ عَلٰٓى نُوْحٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝

80. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करने हैं सदाचारियों को।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝

81. वास्तव में वह हमारे इमान वाले भक्तों में से था।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

82. फिर हम ने जलमग्न कर दिया दूसरों को

لَا تَخْرُقْنَا الْاٰخِرِيْنَ ۝

83. और उस के अनुयायियों में निश्चय इब्राहीम है।

وَاِنَّ مِنْ شُعْبَتِهٖ اِبْرٰهِيْمَ ۝

84. जब लाया वह अपने पालनहार के पास स्वच्छ दिल।

اِذْ جَاءَ رَبَّهٖ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝

1 अतः उन के दुष्परिणाम से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

2 उस की जाति के जलमग्न हो जाने के पश्चात्।

3 अर्थात् उस की बुरी चर्चा से।

85. जब कहा उस ने अपने पिता तथा अपनी जाती से तुम किस की इबादत (बंदना) कर रहे हो?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾

86. क्या अपने बनाये पूज्यों को अल्लाह के सिवा चाहते हो?

أَفَعَالِيَ اللَّهِ دُونَهُ تَعْبُدُونَ ﴿٨٦﴾

87. तो तुम्हारा क्या विचार है विश्व के पालनहार के विषय में?

فَمَا ظَنُّكُمْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

88. फिर उस ने देखा तारों की¹ ओर।

فَنظَرَ نَظْرًا فِي الْفُجُورِ ﴿٨٨﴾

89. तथा उन से कहा: मैं रोगी हूँ।

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾

90. तो उसे छोड़ कर चले गये।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾

91. फिर वह जा पहुँचा उन के उपास्यों (पूज्यों) की ओर। कहा कि (वह प्रमाद) क्यों नहीं खाते?

فَرَعَىٰ فِي الْهَيْمَةِ فَقَالَ أَلَشَأْ أَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾

92. तुम्हें क्या हुआ है कि बोलते नहीं?

مَا لَكُمْ لَا تَنْكَلُونَ ﴿٩٢﴾

93. फिर पिल पड़ा उन पर भारते हुये दायें हाथ से

فَرَمَزَ عَلَيْهِمْ صَرَبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾

94. तो वह आये उस की ओर दौड़ते हुये।

فَأَقْبَصَ إِلَيْهِ يَرْفُؤُنَ ﴿٩٤﴾

95. इब्राहीम ने कहा: क्या तुम इबादत (बंदना) करते हो उस की जिसे पत्थरों से तराशते हो?

قَالَ اتَّبِعُونِ مَا شِئْتُمْ ﴿٩٥﴾

96. जब कि अल्लाह ने पैदा किया है तुम को तथा जो तुम करते हो।

وَسَلَّمَ خَلْقَكُمْ وَنَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

97. उन्होंने कहा: इस के लिये एक (अग्निशाला का) निर्माण करो। और उसे झोंक दो दहकती अग्नि में।

قَالُوا سَوَاءٌ لَّنَا قَالُوا فِي الْجَعْبِ ﴿٩٧﴾

98. तो उन्होंने उस के साथ षड्यंत्र रचा

فَارَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ﴿٩٨﴾

1 यह सोचते हुये कि इन के उत्सव में न जाने के लिये क्या बहाना करूँ।

तो हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।

99. तथा उस ने कहा 'मैं जाने वाला हूँ
अपने पालनहार की' ओर। वह
मुझे सुपथ दर्शायेगा।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِيُنِي ۝

100. हे मेरे पालनहार। प्रदान कर मुझे
एक सदाचारी (पूनीत) पुत्र।

رَبِّ قَبْلِي مِنَ الضَّالِّينَ ۝

101. तो हम ने शुभ सूचना दी उसे एक
सहनशील पुत्र की।

فَبَشِّرْهُ بِغُلَامٍ حَسْبٍ ۝

102. फिर जब वह पहुँचा उस के साथ
चलने-फिरने की आयु को, तो
इब्राहीम ने कहा 'हे मेरे पिछ पुत्र।
मैं देख रहा हूँ स्वपन में कि मैं तुझे
बध कर रहा हूँ। अब तू बता कि
तेरा क्या विचार है? उस ने कहा 'हे
पिता। पालन करें जिस का अंदेश
आप को दिया जा रहा है। आप
पायेंगे मुझे सहनशीलों में से यदि
अब्राह की इच्छा हुई।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ لَشَعَىٰ قَالَ يَبْنَؤُا إِنِّي أَنزَىٰ فِي
الْمَسَارِ إِلَىٰ أَذْبَحَتْ فَظَرَوَا أَنَّهُ تَرَىٰ قَالِ يَا بَيْتَ
الْفَعْلِ مَا تَوْسُرُ سَجْدَتِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ
الضَّالِّينَ ۝

103. अन्ततः जब दोनों ने स्वयं को अर्पित
कर दिया और उस (पिता) ने उसे
गिरा दिया माधे के बल।

فَمَّا أَنشَأُوا ذَا ذَا لِلْعَيْنِ ۝

104. तब हम ने उसे आवाज दी कि हे
इब्राहीम।

وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝

105. तू ने सच्च कर दिया अपना स्वप्न।
इसी प्रकार हम प्रति फल प्रदान
करते हैं सदाचारियों को।

فَدَا صَدَقَتْ رُؤْيَا إِنَّا كُنَّا لَنُحْصِي
النُّعْمَيْنِ ۝

106. वास्तव में यह खुली परीक्षा थी।

رَبَّنَا هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْبَاقِي ۝

107. और हम ने उस के मुक्ति प्रतिदान

وَقَدْ أَنبَأْنَا بِرُؤْيَا عِطِيمٍ ۝

1 अर्थात् ऐसे स्थान की ओर जहाँ अपने पालनहार की इवादन कर सकूँ

के रूप में प्रदान कर दी एक महान्¹
बलि।

108. तथा हम ने शेष रखी उस की शुभ
वर्चा पिछलों में।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ

109. सलाम है इब्राहीम पर।

سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

110. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान
करते हैं सदाचारियों को।

كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

111. निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले
भक्तों में से था।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

112. तथा हम ने उसे शुभसूचना दी
इस्हाक नबी की, जो सदा-चारियों
में² होगा।

وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ

113. तथा हम ने बरकत
(विभूति) अवतरित की उस पर
तथा इस्हाक पर। और उन दोनों
की सन्तति में से कोई सदाचारी
है और कोई अपने लिये खुना
अत्याचारी।

وَبَرَكْنَا عَلَيْهِمَا وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ وَوَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا الْحُسَيْنُ
وَعَلَىٰ الْحُسَيْنِ سَلَامٌ

114. तथा हम ने उपकार किया मूसा
और हारून पर।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ

115. तथा मुक्त किया दोनों को और उन

وَجَنَيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ

1 यह महान् बलि एक मेंढा था। जिसे जिब्रील (अलैहिस्सलाम) द्वारा स्वर्ग से भेजा गया। जो आप के प्रिय पुत्र इस्माइल (अलैहिस्सलाम) के स्थान पर बलि दिया गया। फिर इस विधि को प्रलय तक के लिये अब्राहम के समिप्य का एक साधन तथा इदुल अज्हा (बकरईद) का प्रियवर कर्म बना दिया गया। जिसे संसार के सभी मुसलमान इदुल अज्हा में करते हैं।

2 इस आयत से विद्वित होता है कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस बलि के पश्चान् दूसरे पुत्र आदरणीय इस्हाक की शुभ सूचना दी गई। इस से ज्ञान हुआ कि बलि इस्माइल (अलैहिस्सलाम) की दी गई थी। और दोनों की आयु में लग भग चौदह वर्ष का अन्तर है।

कि जाति को घोर व्यग्रता से।

116. तथा हम ने सहायता की उन की
तो वही प्रभावशाली हो गये।

وَقَضَيْنَاهُمْ فَكَأَنَّهُمْ الْعُقَيْبِينَ ۝

117. तथा हम ने प्रदान की दोनों को
प्रकाशमय पुस्तक (तौरात)।

وَاتَيْنَهُمَا الْكِتَابَ الْمُنِيرِينَ ۝

118. और हम ने दर्शाई दोनों को सीधी
डगर।

وَهَدَيْنَاهُمَا الْقُرْطَابَ الْمُسْتَقِيمَ ۝

119. तथा शेष रखी दोनों की शुभ चर्चा
पिछलों में।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْأُمُورِ نَصِيبًا ۝

120. सलाम है मूसा तथा हारून पर।

سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

121. हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान
करने हैं सदाचारियों को।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

122. वस्तुतः वह दोनों हमारे ईमान वाले
भक्तों में थे।

إِنَّمَا هُمَا مِن عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

123. तथा निश्चय इल्यास नबियों में से
था।

فَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

124. जब कहा उस ने अपनी जाति से
क्या तुम डरते नहीं हो?

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ۝

125. क्या तुम बअल (नामक मूर्ति) को
पुकारते हो? तथा त्याग रहे हो
सर्वोत्तम उत्पत्ति कर्ता को?

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۝

126. अब्राह ही तुम्हारा पालनहार है,
तथा तुम्हारे प्रथम पूर्वजों का
पालनहार है।

إِنَّ اللَّهَ رَبُّكَ رَبُّ آبَائِكَ الْأَوَّلِينَ ۝

127. अन्ततः उन्होंने झुठला दिया उस
को तो निश्चय वही (नरक में)
उपस्थित होंगे।

لَكَذِبُوهُ فَاِنَّهُمْ لَكَاخِبُونَ ۝

128. किन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।
 129. तथा शेष रखी हम ने उसकी शुभ चर्चा पिछलों में।
 130. सलाम है इल्यासीन¹ पर।
 131. वास्तव में हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करने हैं सदाचारियों को।
 132. वस्तुतः वह हमारे इमान वाले भक्तों में से था।
 133. तथा निश्चय लूत नबियों में से था।
 134. जब हम ने मुक्त किया उस को तथा उस के सब परिजनों को।
 135. एक बुढ़िया² के सिवा, जो पीछे रह जाने वालों में थी।
 136. फिर हम ने अन्यो को तहस नहस कर दिया।
 137. तथा तुम³ गुजरने हो उन (की निर्जन वास्तियों) पर प्रातः के समय।
 138. तथा रात्रि में। तो क्या तुम समझते नहीं हो?
 139. तथा निश्चय यूनस नबियों में से था।

- إِلَّا رِبًّا ذَا لُحْمٍ مُّخْلِصِينَ ﴿١٢٨﴾
 وَتَرْكُنَا عَلَيْهِ فِي الْأَحْيَافِ ﴿١٢٩﴾
 سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٣٠﴾
 إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾
 إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾
 وَلَئِكَ لَوْكَالِبُ الرُّسُلِ ﴿١٣٣﴾
 دُخِّنَا لَهُ رُفْقًا مِنْ أَسْفَلَ ﴿١٣٤﴾
 إِلَّا تَجِدُ فِي الْعِصْرِ ﴿١٣٥﴾
 كَذَّةً وَكَرِيهَاً الْعَظِيمِ ﴿١٣٦﴾
 وَلَئِكَ تَتَرَوْنَ عَلَيْهِمْ مُّضْعِفِينَ ﴿١٣٧﴾
 وَبِأَنبَاءٍ قَلِيلٍ تَعْمَلُونَ ﴿١٣٨﴾
 فَلَنْ يُوَفَّىٰ لَكُمْ مُّزِيدِينَ ﴿١٣٩﴾

1 इन्यासीन: इल्यास ही का एक उच्चारण है। उन्हें अन्य धर्म ग्रन्थों में इलया भी कहा गया है।

2 यह लूत (अलैहिस्सलाम) की काफिर पत्नी थी।

3 मक्का वासियों को संबोधित किया गया है।

140. जब वह भाग⁽¹⁾ गया भरी नाव की ओर।

رَدَّ اَتْبَعُ اِلَى الْفُلِّ الشَّعْبِ ۝

141. फिर नाम निकाला गया तो वह हो गया फेंके हुआओं में से।

فَاَهْوَىٰ كَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝

142. तो निगल लिया उसे मछली ने, और वह निन्दित था।

فَالْتَمَتَهُ الْمَوْتُ وَهُوَ مُلَيَّمٌ ۝

143. तो यदि न होता अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करने वालों में।

فَلَوْلَا اِنَّهٗ كَانَ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝

144. तो वह रह जाता उस के उदर में उस दिन तक जब सब पुनः जीवित किये² जायेंगे,

لَا يَسْكُنُ فِي بَطْنِهٖ اِلَّا يَوْمَ يُنْعَمُونَ ۝

145. तो हम ने फेंक दिया उसे खुले मैदान में और वह रोगी³ था।

فَتَبَدَّلَهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۝

146. और उगा दिया उस⁴ पर लताओं का एक वृक्ष।

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ اَبْقِيَانٍ ۝

147. तथा हम ने उसे रसूल बना कर भेजा एक लाख बालक अधिक की ओर।

وَأَرْسَلْنَاهُ اِلَىٰ مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ تَرِيْدُونَ ۝

148. तो वह ईमान लाये। फिर हम ने उन्हें सुख - सुविधा प्रदान की एक समय⁵ तक।

فَأَمْنُوا بِرَحْمَتِنَا اِلَىٰ حِينٍ ۝

1 अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर से नगर बार्मियों को यातना के आने की सूचना देकर निकल गये। और नाव पर सवार हो गये। नाव सागर की लहरों में घिर गई। इसलिये बोझ कम करने के लिये नाम निकाला गया। तो यूनस (अलैहिस्सलाम) का नाम निकला और उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया।

2 अर्थात् प्रलय के दिन तक। (देखिये सूरह अम्बिया, आयत 87)

3 अर्थात् निर्बल नवजात शिशु के समान।

4 रक्षा के लिये।

5 देखिये: सूरह यूनस।

149. तो (हे नबी!) आप उन से प्रश्न करें कि क्या आप के पालनहार के लिये तो पुत्रियाँ हों और उन के लिये पुत्र?
150. अथवा क्या हम ने पैदा किया है फरिश्तों को नारियाँ। और वह उस समय उपस्थित¹ थे?
151. सावधान! वास्तव में वह अपने मन से बना कर यह बात कह रहे हैं।
152. कि अब्राह ने संतान बनाई है। और निश्चय वह मिथ्या भाषी है।
153. क्या अब्राह ने प्रार्थामिकता दी है पुत्रियों को पुत्रों पर?
154. तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय दे रहे हो?
155. तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
156. अथवा तुम्हारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण है?
157. तो अपनी पुस्तक लाओ यदि तुम सत्यवादी हो?
158. और उन्होंने बना दिया अब्राह तथा जिन्नों के मध्य वंश-सम्बन्ध। जब कि जिन्न स्वयं जानते हैं कि वह अब्राह के समक्ष निश्चय उपस्थित किये² जायेंगे।

فَسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ إِنثَاءٌ وَلَهُم بَنُونَ ﴿١٤٩﴾

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾

أَلَا إِنَّهُمْ مِنْ دُونِهِ لَفِتْنُونَ ﴿١٥١﴾

وَلَدَ اللَّهُ لَهُ تَهَمٌ لَكِبُونَ ﴿١٥٢﴾

أَضْحَقُ الْبَاطِلُ عَلَى تَبِينٍ ﴿١٥٣﴾

مَا لَكُمْ سَيِّفٌ تَخْتَلُونَ ﴿١٥٤﴾

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُبِينٌ ﴿١٥٦﴾

فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نِجَالًا وَلَقَدْ جِئْتُمُ
الْجَنَّةَ إِنَّهُمْ يَخْصَمُونَ ﴿١٥٨﴾

1 इस में मक्का के मिश्रणवादियों का खण्डन किया जा रहा है जो फरिश्तों को देवियाँ तथा अब्राह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि वह स्वयं पुत्रियों के जन्म को अप्रिय मानते थे।

2 अर्थात् याचना के लिये तो यदि वे उस के संबंधी होते तो उन्हें याचना क्यों देता?

159. अल्लाह पवित्र है उन गुणों से जिस का वह वर्णन कर रहे है।
 160. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्ता¹।
 161. तो निश्चय तुम तथा तुम्हारे पूज्या।
 162. तुम सब किसी एक को भी कृपय नहीं कर सकते।
 163. उस के सिवा जो नरक में झोंका जाने वाला है।
 164. और नहीं है हम (फरिश्तों) में से कोई परन्तु उस का एक निर्यामिन स्थान है।
 165. तथा हम ही (आजापालन के लिये) पक्तीबद्ध है।
 166. और हम ही तसबीह (पवित्रता गान) करने वाले है।
 167. तथा वह (मुशरिक) तो कहा करते थे कि:
 168. यदि हमारे पाम कोई स्मृति (पुस्तक) होती जो पहले लोगों में आई...
 169. तो हम अवश्य अल्लाह के शुद्ध भक्तों में से हो जाते।
 170. (फिर जब आ गयी) तो उन्होंने कूर्आन के साथ कुफ़र कर दिया अतः शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।
 171. और पहले ही हमारा वचन हो चुका
- سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ
 الْإِغْبَادَ لِلَّهِ الْمُخْلِصِينَ
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا مَالَهُمْ
 مَا أَتَوْا عَلَىٰ يَمِينٍ
 إِلَّا مِمَّنْ هُوَ صَالٍ الْيَمِينِ
 وَمَا يَكُنُ إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّقْلُومٌ
 وَإِنَّا لَمَعْنُ الْقَبْلَ لَوْنٌ
 وَإِنَّا لَمَعْنُ السَّيْحُونَ
 فَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ
 لَوَ أَن جَدَّ نَادٍ لَّرَأْسِ الْأَوَّلِينَ
 لَمَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ
 فَلَقَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ
 وَلَقَدْ سَبَقَتْ إِلَيْنَا الْعِبَادَةُ الْمُرْسَلِينَ

1 वह अल्लाह को ऐसे दुर्गुणों से युक्त नहीं करते।

है अपने भेजे हुये भक्तों के लिये।

172. कि निश्चय उन्हीं की सहायता की जायेगी।

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ۝

173. तथा बाम्नाब में हमारी सेना ही प्रभावशाली (विजयी) होने वाली है।

وَأَرْجَى جُنْدَنَا اللَّهُمَّ الْعَالَمِينَ ۝

174. तो आप मुंह फेर लें उन से कुछ समय तक

فَوَلِّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ جَاءَ ۝

175. तथा उन्हें देखते रहें। वह भी शीघ्र ही देख लेंगे।

وَأَبْصُرْهُمْ تَوَلَّىٰ يَجُودُونَ ۝

176. तो क्या वह हमारी यातना की शीघ्र मांग कर रहे हैं।

أَفَمَعَدَ إِلَيْنَا يَتَسَوَّلُونَ ۝

177. तो जब वह उतर आयेंगी उन के मैदानों में तो बुरा हो जायेगा सावधान किये हुआ का सबेरा।

فَإِذَا أُنْزِلَ يَسَاحَتُهُمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنَادِرِينَ ۝

178. और आप मुंह फेर लें उन से कुछ समय तक

فَوَلِّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ جَاءَ ۝

179. तथा देखते रहें, अन्ततः वह (भी) देख लेंगे।

وَأَبْصُرْهُمْ تَوَلَّىٰ يَجُودُونَ ۝

180. पवित्र है आप का पालनहार गौरव का स्वामी उस बात से जो वह बना रहे है।

سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝

181. तथा सलाम है रसूलों पर।

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۝

182. तथा सभी प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

सूरह साद - 38

سورة ص

सूरह साद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 88 आयत है।

- इस में पहले अच्छर (साद) आया है जिस के कारण इस का नाम ((सूरह साद)) है
- इस की आरंभिक आयतों में कुरआन के शिक्षाप्रद पुस्तक होने की चर्चा करते हुये यह चेतावनी दी गई है कि जो इसे नहीं मानेंगे वह अपने आप को बुरे परिणाम तक पहुंचावेंगे।
- आयत 12 से 16 तक उन जानियों का बुरा अन्न बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झूठलाया। फिर आयत 17 से 24 तक नबीयों के, अब्राह की ओर ध्यानमग्न होने की चर्चा की गई है। फिर अब्राह की आज्ञा का पालन करने और न करने दोनों का परलोक में अलग-अलग परिणाम बताया गया है।
- आयत 65 से 85 तक में बताया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सावधान करने के लिये आये हैं। और आप के विरोध करने का वही फल होगा जो इब्लीस के अभिमान का हुआ।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुरआन के सत्य होने तथा कुरआन की बनाई हुयी बातों के अवश्य पूरी होने की ओर संकेत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. साद शपथ है शिक्षा प्रद कुरआन की।
2. बल्कि जो काफिर हो गये वह एक गर्व तथा विरोध में ग्रस्त है।
3. हम ने विनाश किया है इन से पूर्व बहुत से समुदायों का। तो वह पुकारने लगे। और नहीं होता वह बचने का समय।

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ۝

كُلُّ أُمَّلِكُمْ مِنْ قَبْلِهِ مِثْقَلُ ذَرَّةٍ مِّنْ دُخَانٍ فَإِنَّهُمْ قُلُوبٌ مَّرِيدَةٌ ۝

4. तथा उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास उन्हीं में से एक सचेत करने¹ वाला! और कह दिया काफिरों ने कि यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।
5. क्या उस ने बना दिया है सब पूज्यों को एक पूज्य? यह तो बड़े आश्चर्य का विषय है।
6. तथा चल दिये उन के प्रमुख (यह) कहते हुये कि चलो दृढ़ रहो अपने पूज्यों पर। इस बात का कुछ और ही लक्ष्य² है।
7. हम ने नहीं सुनी यह बात प्राचीन धर्मों में, यह तो बस मन- घड़त बात है।
8. क्या उसी पर उनारी गड़ है यह शिक्षा (कुर्आन) हमारे बीच में से? बल्कि वह संदेह में है मेरी शिक्षा से बल्कि उन्होंने अभी यातना नहीं चखी है।
9. अथवा उन के पास है आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष।³
10. अथवा उन्हीं का है राज्य आकाशों तथा धरती का। और जो कुछ उन दोनों के मध्य है? तो उन्हें

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا سِحْرٌ كَذِبٌ ۝

اتَّخَذَ إِلَٰهَهُمْ آلَآؤُهُمْ أَثَرًا ۝ هَذَا تَقْوَىٰ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۝

وَالطَّلَقَ الْمَلَائِكَةُ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۝ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرَآءُ ۝

مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْإِسْلَامِ الْأَوَّلِ ۝ هَذَا إِلَّا خُلُقًا ۝

۝ إِنَّمَا عَلَيْهِ الْإِيمَانُ بِمَا أَنزَلَ فِي شَكٍّ مِنْ يَدَيْهِ ۝ إِنَّمَا يَدُؤُهُمْ أَثَرًا ۝

أَمْ عِنْدَهُ خُزُونٌ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝

أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝ فَلْيُرَوْا فِي الْأَسْبَابِ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्थात् एकेश्वरवाद की यह बात सत्य नहीं है और ऐसी बात अपने किसी स्वार्थ के लिये की जा रही है।

3 कि वह जिसे चाहे नबी बनाये।

चाहिये कि चढ़ जायें (आकाशों में)
रस्मियाँ तान¹ कर।

11. यह एक तुच्छ सेना है यहाँ पराजित
सेनाओं² में से।

12. झुठलाया इन से पहले नूह तथा
आद और शक्तिवान फिरऔन की
जाति ने।

13. तथा समूद और लूत की जाति एवं
बन के वासियों³ ने। यही सेनाये हैं।

14. इन सभी ने झुठलाया रसूलों को, तो
मेरी यातना सिद्ध हो गई।

15. और यह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं
परन्तु एक कर्कश ध्वनि की जिस के
लिये कुछ भी देर नहीं होगी।

16. तथा उन्होंने कहा कि हे हमारे
पालनहार! शीघ्र प्रदान कर दे हमारे
लिये हमारी (यातना का) भाग
हिस्सा के दिन से पहले।⁴

17. आप सहन करें उस पर जो वे कह
रहे हैं तथा याद करें हमारे भक्त
दावूद को जो अत्यंत शक्तिशाली था
निश्चय वह ध्यान मग्न था।

جُنْدًا مَّاهُنًا لِّكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَذُرِّيَّوْنُ دَاوُدَ ۖ

وَشُؤْدُدُ قَوْمِ لُوطٍ وَاصْطَبَّ لِنُوحٍ وَأُولَٰئِكَ
الْأَحْزَابُ ۝

إِنَّ كُلَّ الْآلِ كَذَّبَ بِرُسُلٍ فَتَحَىٰ عِقَابُ ۝

وَمَا يَنْظُرُونَ إِلَّا الصَّيْحَةَ وَالْجَذَّةَ ۚ مَا لَهَا
مِنْ قَوَائٍ ۝

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِتْلًا قَبْلَ يَوْمِ
الْحِسَابِ ۝

إِصْبِرْ عَلٰٓى مَا يَقُولُونَ ۖ وَادْكُرْ عِبْرَةَ دَاوُدَ
ذَٰلِ الْأَيْبِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝

1 और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना के अवतरण को रोक दें।

2 अर्थात् इन मक्का वासियों के पराजित होने में देर नहीं होगी।

3 इस से अभिप्राय शुऐब (अलैहिस्सलाम) की जाति है। (देखिये सूरह शुअरा आयत: 176)

4 अर्थात् वह उपहास स्वरूप कहते हैं कि प्रलय से पहले ही संसार में हमें यातना मिल जाये। अर्थ यह है कि हमें कोई यातना नहीं दी जायेगी।

18. हम ने वशवर्ती कर दिया था पर्वतों को जो उसके साथ पवित्रता गान करते थे संध्या तथा प्रातः।
19. तथा पक्षियों को एकात्रित किये हुये, प्रत्येक उस के आधीन ध्यान भगन रहने थे।
20. और हम ने दृढ़ किया उस के राज्य को और हम ने प्रदान की उसे नबूवत तथा निर्णय शक्ति।
21. तथा क्या आया आप के पास दो पक्षों का समाचार जब वह दीवार फाद कर मेहराब (बंदना स्थल) में आ गये।
22. जब उन्होंने प्रवेश किया दावूद पर तो वह घबरा गया उन से। उन्होंने कहा: डरिये नहीं। हम दो पक्ष है अत्याचार किया है हम में से एक ने दूसरे पर। तो आप निर्णय कर दे हमारे बीच सत्य (न्याय) के साथ। तथा अन्याय न करें तथा हमें दर्शा दें सीधी राह।
23. यह मेरा भाई है उस के पास निवावे भेड़ है और मेरे एक भेड़ है। तो यह कहता है कि वह (भी) मुझे दे दो। और यह प्रभावशाली हो गया मुझ पर बात करने में।
24. दावूद ने कहा: उस ने तुम पर अवश्य अन्याचार किया तुम्हारी भेड़ को (मिलाने की) माँग कर के अपनी भेड़ों में तथा बहुत से साझी एक दूसरे पर अत्याचार करते हैं उन के सिवा जो

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَلِيِّ
وَالْأَشْرَاقِ ۝

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَّهِ آتَابٌ ۝

وَعَدَدْنَا نِاسَكُمْ وَلِهَئِمَّا زَيْلُكُمْ وَأَفْضَلُ الْيُحَاثِبِ ۝

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝

إِذْ دَخَلُوا عَلَيَّ دَاوُدَ فُتِيرًا مِّنْهُمْ قَالُوا لَا نَعْلَمُ
حَقِّمِينَ بَنِي نَعْمَتٍ أَعْلَىٰ نَعْمٍ قَالُوا كَيْفَ نَعْلَمُ سَيِّئًا
يَا مَعْزِبُ لَا تَشْطَطْ بِهُنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الْبِقَاعِ ۝

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْمَةً لِّىَ نَجِئُهُ
فَأَجِدُهُ فَقَالَ أَلَيْسَ بَيْنَهُمَا وَغَرَفِي لِي لِحَاطِبٍ ۝

قَالَ لَقَدْ خَلَقَكَ بِنُورٍ فَجِئِكَ إِلَىٰ بَعَائِجِهِ قَالُوا
كَيْفَ نَمِيزُ الْخُلُقَاءَ لِكَيْ نَتَّقِيَهُمْ عَلَىٰ نَعْمٍ إِلَّا
الْكَاذِبِينَ أَسْمُوا وَتَحْمِلُوا الصُّعِيبَ وَقَلِيلٌ مَّا تَهْتَفُونَ

ईमान लाये तथा सदाचार किया और बहुत थोड़े हैं ऐसे लोग। और दावूद ने भाप लिया की हम ने उस की परीक्षा ली है तो सहसा उस ने क्षमायाचना कर ली और गिर गया सज्दे में तथा ध्यान मग्न हो गया।

وَقُلْ دَاوُدُ إِنَّمَا فُتِنْتُ فَاسْتَغْفِرُنِي خَشَعَتِ رَأْسًا
وَأَنَابَ ۝

25. तो हम ने क्षमा कर दिया उस के लिये वही तथा उस के लिये हमारे पास निश्चय सामिप्य है तथा अच्छा स्थान।

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَ الرَّحْمَٰنِ
مَآبٍ ۝

26. हे दावूद! हम ने तुझे राज्य दिया है धरती में अतः निर्णय कर लोगों के बीच सत्य (न्याय) के साथ तथा अनुमरण न कर आकाशा का। अन्यथा वह कुपथ कर देगी तुझे अल्लाह की राह से। निःसंदेह जो कुपथ हो जायेगे अल्लाह की राह से तो उन्हीं के लिये घोर यातना है, इस कारण कि वह भूल गये हिसाब का दिन।

يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَخَلُوفًا
مِّنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ
عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّكَ إِن تَتَّبِعْ إِلَّا مَحِيلًا ۝
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ يَوْمَ الْحِسَابِ ۝

27. तथा नहीं पैदा किया है हम ने आकाश और धरती को तथा जो कुछ उन के बीच है व्यर्थ। यह तो उन का विचार है जो काफिर हो गये। तो विनाश है उन के लिये जो काफिर हो गये अग्नि में।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَن بَيْنَهُمَا بَاطِلًا
ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
مِّنَ النَّارِ ۝

28. क्या हम कर देंगे उन्हें जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के समान जो उपद्रवी है धरती में? या कर देंगे आज्ञाकारियों को उल्लंघनकारियों के समान? 1

أَمْ جَعَلُوا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ
فِي الْأَرْضِ أَمْ جَعَلُوا تِلْكَ الْأَعْيُنَ كَالْبَشِيرِ ۚ

1 अल्लाह की राह से अभिप्राय उस का धर्म विधान है।

2 यह प्रश्न नकारात्मक है और अर्थ यह कि दोनों का परिणाम समान नहीं होगा।

29. यह (क़ुर्आन) एक शुभ पुस्तक है।
जिसे हम ने अवतरित किया है आप
की ओर, ताकि लोग विचार करें
उस की आयतों पर! और ताकि
शिक्षा ग्रहण करें मतिमान।

كَيْتَبًا أَنْزَلْنَاهُ مِنْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ
وَلِيَتَذَكَّرُوا بِالْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

30. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को
सुलैमान (नामक पुत्र)। वह अति
ध्यान मग्न था।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِيمَانًا بِمَعْرِزِنَا وَآبَ

31. जब प्रस्तुत किये गये उस के समक्ष
संध्या के समय मधे हुये वेग गामी
घोड़े।

رُحُوضٍ مَعِينٍ بِالْعَيْنِ لَصُحُفٍ يُحْيَا

32. तो कहा: मैं ने प्रार्थमिकता दी इन घोड़ों
के प्रेम को अपने पालनहार के स्मरण
पर। यहाँ तक कि वह आँझल हो गये।

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْلِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

33. उन्हें वापिस लाओ मेरे पास। फिर
हाथ फेरने लगे उन की पिंडलियों
तथा गर्दनो पर।

رُدُّوهُمْ عَلَيَّ طَافِقٍ سَعَىٰ بِالشُّوْقِ وَالرَّغَاوِ

34. और हम ने परीक्षा¹ ली सुलैमान कि
तथा डाल दिया उस के सिंहासन पर
एक धड़ा फिर वह ध्यान मग्न हो गया।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ ذَاكَ عَلَيَّ نُجُومِهِ جَعَلْنَاهُ
آيَةً ﴿٣٤﴾

35. उस ने प्रार्थना की हे मेरे पालनहार!
मुझ को क्षमा कर दे। तथा मुझे
प्रदान कर ऐसा राज्य जो उचित

قَالَ رَبِّ اعْزِلْ عَنْهُ الْيَتِيمَ الَّذِي أَنشَأَ رِجْوَ
مِنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَكِيلُ ﴿٣٥﴾

1 हदीस में भाष्यकारों ने लिखा है कि सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने एक बार कहा कि मैं आज रान अपनी सभी पत्नियों जिन की मख्या 70 अथवा 90 थी, से संभोग करूँगा। जिन से योद्धा घुड़ सवार पैदा होंगे जो अब्राह की राह में जिहाद करेंगे तथा उन्होंने यह नहीं कहा यदि अब्राह ने चाहा। जिस का परिणाम यह हुआ कि केवल एक ही पत्नी गर्भवती हुई और उस ने भी अधूरे शिशु को जन्म दिया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा वह ((यदि अब्राह ने चाहा)) कह देते तो सब योद्धा पैदा होते। (सहीह बुखारी, हदीस 6639 सहीह मुस्लिम हदीस 1656)

न हो किसी के लिये मेरे पश्चान्ना
वास्तव में तू ही अनि प्रदाना है।

36. तो हम ने वश में कर दिया उस के
लिये वायु को जो चल रही थी धीमी
गति से उस के आदेश से वह जहाँ
चाहता।

37. तथा शैतानों को प्रत्येक प्रकार के
निर्माता, तथा गोता खोर को।

38. तथा दूसरों को बंधे हुये धेंड़ियों में।

39. यह हमारा प्रदान है। तो उपकार करो
अथवा रोक लो, कोई हिमाय नहीं।

40. और वास्तव में उस के लिये हमारे
पास सामिप्य तथा उत्तम स्थान है।

41. तथा याद करो हमारे भक्त अय्यूब
को। जब उस ने पुकारा अपने
पालनहार को कि शैतान ने मुझ को
पहुँचाया¹ है दुख, तथा यातना।

42. अपना पाँव (धरती पर) मार। यह है
शीतल स्नान तथा पीने का जल।

43. और हम ने प्रदान किया उसे उस
का परिवार तथा उनके साथ और
उन के समान। अपनी दया से, और
मतिमानों की शिक्षा के लिये।

44. तथा ले अपने हाथ में तीलियों की
एक झाड़, तथा उस से मार और

مَسْرُومًا لِّلرَّيْحِ يَمْشِي بِأَمْرِ رَبِّهِ وَخَلَقْنَا صَنَابِقَ

وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَخَوَّاصٍ

وَالْأَعْرَاسِ مُقَرَّرِينَ لِّىَ أَلْصَقَهُ

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ جَدَلٍ

وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَخُسَىٰ يَٰأَيُّهَا

وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ دَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَشِيَ
الشَّيْطَانُ بِخُصْمٍ وَمَدَّ يَدَيْ

أَرْكَسَ بِرِجْلَيْهِ هَذَا فَمَنْعَلٌ بَآيِدٍ وَشَرَابٌ

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا
وَذِكْرًا لِّأُولِي الْأَلْبَابِ

وَحَدَّ يَمِينَهُ وُضَعَا قُتُوبُ يَهُ وَلَاحِظْتَ إِلَيْنَا

1 अर्थात् मेरे दुख तथा यातना के कारण मुझे शैतान उकसा रहा है तथा वह मुझे तेरी दया से निराश करना चाहता है।

अपनी शपथ भग न करा वास्तव¹
में हम ने उसे पाया धौर्य वाना
निश्चय वह बड़ा ध्यान मगन था।

وَجَدْنَاهُ مُخْلِياً بِعَهْدِ رَبِّهِ لَأَبِ

45. तथा याद करो, हमारे भक्त इब्राहीम
तथा इस्हाक एवं याकूब को, जो कर्म
शक्ति तथा ज्ञानचक्षु² वाले थे।

وَأَبْرَاهِيمَ إِسْمَاعِيلَ وَنُوحًا وَإِسْحَاقَ وَيَاكُوبَ أُولَئِكَ

46. हम ने उन्हें विशेष कर लिया बड़ी
विशेषता परलोक (आखिरत) की
याद के साथ।

إِنَّا اخْتَصَيْنَاهُمْ بِالْبَصِيرَةِ

47. वास्तव में वह हमारे यहाँ उत्तम
निर्वाचितों में से थे।

وَأَنَّمَا يُعِدُّنَا لِلَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ

48. तथा आप चर्चा करें इस्माईल तथा
यसअ एवं जुलक़िफल की। और यह
सभी निर्वाचितों में से थे।

وَأَذْكُرُوا اسْمِي فِي الصَّلَاةِ وَالْإِسْمَاءِ

49. यह (कुरआन) एक शिक्षा है तथा
निश्चय आज्ञाकारियों के लिये उत्तम
स्थान है।

هَذَا وَكَذَلِكَ يُبَيِّنُ لَكُمْ آيَاتِهِ

50. स्थायी स्वर्ग खुले हुये है उन के लिये
(उन के) द्वारा।

جَنَّاتٍ مِّنْ دُونِهَا يَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

51. वे तकिये लगाये होंगे उन में। मांगेंगे
उन में बहुत से फल तथा पेय पदार्थ।

مِنْ ثَمَرَاتٍ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ

52. तथा उन के पास आँखें सीमित रखने
वाली समायु पत्नियाँ होगी।

وَمِنْ دُونِهَا نَجْزِي السَّاعِيْنَ

53. यह है जिम का वचन दिया जा रहा
था तुम्हें हिसाब के दिन।

هَذَا مَا وَعَدُونَا لَكُمْ لَكُمْ

1 अद्युब (अलैहस्सलाम) की पत्नी से कुछ चूक हो गई जिस पर उन्होंने उसे सौ कांडे मारने की शपथ ली थी।

2 अर्थात् आज्ञा पालन में शक्तिवान तथा धर्म का बोध रखने थे।

54. यह है हमारी जीविका जिस का कोई अन्त नहीं है।
55. यह है। और अवैज्ञाकारियों के लिये निश्चय बुरा स्थान है।
56. नरक है, जिस में वे जायेंगे, क्या ही बुरा आवास है।
57. यह है। तो तुम चखो खीलता पानी तथा पीप।
58. तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनाये।
59. यह¹ एक और जत्था है जो घुसा आ रहा है तुम्हारे साथ। कोई स्वागत् नहीं है उन का। वास्तव में वह नरक में प्रवेश करने वाले हैं।
60. वह उत्तर देंगे बल्कि तुम। तुम्हारा कोई स्वागत् नहीं। तुम्हीं आगे लाये हो इस (यातना) को हमारे। तो यह बुरा निवास है।
61. (फिर) वह कहेंगे हमारे पालनहार। जो हमारे आगे लाया है इसे, उस को दुगनी यातना दे नरक में।
62. तथा (नारकी) कहेंगे हमें क्या हुआ है कि हम कुछ लोगों को नहीं देख रहे हैं जिन की गणना हम बुरे लोगों में कर² रहे थे?

إِنْ هَذَا إِلَّا رِقْمًا مَّا لَكُمْ مِنْ تَعَذُّبٍ

هَذَا قَوْلٌ لِلظَّالِمِينَ لَعَنَ مَا بِهِ

جَعَلُوا يَصْلَوْنَ أَيْلَسَ الْهَادِي

هَذَا قَلِيلٌ وَقُوَّةٌ حَبِيرٌ وَعَتَا

وَأَعْرَضَ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجُ

هَذَا قَوْلٌ مُتَعَدِّجٌ مَعْلُومٌ لِمَرْحَبَاتِهِمْ
إِنَّهُمْ صَالُوا الْكَاذِبِ

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لِمَرْحَبَاتِكُمْ قَدْ مَنَّوْا
لَنَا بِمَشْرِقِنَا نَحْنُ الْكَافِرُونَ

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدْ مَنَّاهُ بِرُزْقٍ عَدَابًا وَجَعَلْنَا
بِهِ الشَّكْرَ

وَقَدْ أَوَّاهَا لَنَا لَتَرَى بِجَارِ لَكُنَّا بَعْدَ هُمْ مِنَ
الْمَشْكُورِينَ

1 यह बात काफिरों के प्रमुख जो पहने से नरक में होंगे अपने उन अनुयायियों से कहेंगे जो संसार में उन के अनुयायी बने रहे उस समय जब उन के अनुयायियों का गिरोह नरक में आने लगेगा।

2 इस से उन का संकेत उन निर्धन निर्बल मुसलमानों की ओर होगा जिन्हे वह

63. क्या हम ने उन्हें उपहास बना रखा था अथवा चूक रही है उन से हमारी आँखें?

أَلَمْ نَكُنْ لَهُمْ بَصِيرَاتٍ أَنْزَلْنَاهُمْ مِنَ الْأَمْصَارِ ۝

64. निश्चय सत्य है नारकियों का आपस में झगड़ना।

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَافُكُمْ أَهْلُ النَّارِ ۝

65. हे नबी! आप कह दें मैं तो मात्र सचेत करने वाला¹ हूँ तथा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है अकेले प्रभावशाली अल्लाह के सिवा।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُبَشِّرٌ وَمُنْذِرٌ يُورِثُ اللَّهُ الْوَحْدَ الْعَقْلِيَّةَ ۝

66. वह आकाशों तथा धरती का और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सब का पालनहार अति प्रभाव शाली क्षमी है।

رَبُّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝

67. आप कह दें कि यह² बहुत बड़ी सूचना है।

قُلْ هُوَ نَزْوٌ عَظِيمٌ ۝

68. और तुम हो कि उस से मुँह फेर रहे हो।

أَتُوعِدُهُمْ مُعْرِضُونَ ۝

69. मुझे कोई ज्ञान नहीं है उच्च सभा वाले (फरिश्ते) जब वाद-विवाद कर रहे थे।

مَا كَانَ لِي مِنْ بِلَإٍ بِالسَّمِ الْأَعْلَى إِذْ يَقُولُُونَ ۝

70. मेरी ओर तो मात्र इस लिये बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ।

إِنْ يَأْمُرْنِي إِلَّا أَنَا أَنُذِرُ مُبَشِّرِينَ ۝

71. जब कि कहा आप के पालनहार ने फरिश्तों से मैं पैदा करने वाला हूँ एक मनुष्य मिट्टी से।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ طِينٍ ۝

संसार में उपद्रवी कह रहे थे।

1 कुर्आन ने इसे बहुत सी आयतों में दुहराया है कि नबीयों का कर्तव्य मात्र सत्य को पहुँचाना है किसी को बल पूर्वक सत्य को मनवाना नहीं है।

2 परलांक की यातना तथा तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की जो बातें तुम्हें बना रहा हूँ।

72. तो जब मैं उसे बराबर कर दूँ तथा फूँक दूँ उस में अपनी ओर से रूह (प्राण) तो गिर जाओ उस के लिये सज्दा करते हुये।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ أَمْرِي نَقَعُوا لَهُ يَحْيٰوِيْنَ ۝

73. तो सज्दा किया सभी फरिश्तों ने एक साथ।

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ اٰمِعُوْنَ ۝

74. इब्नीस के सिवा, उस ने अभिमान किया और हो गया काफिरों में से।

اِلَّا اِبْنٰىسَ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِيْنَ ۝

75. अल्लाह ने कहा: हे इब्नीस! किस चिज ने तुझे रोक दिया सज्दा करने से उस के लिये जिस को मैं ने पैदा किया अपने हाथ से? क्या तू अभिमान कर गया अथवा वास्तव में तू ऊँचे लोगों में से है?

قَالَ اِبْنٰىسُ مَا مَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتَ بِيْـدَيَّ اَسْتَكَوْرْتُ اَمْ كُنْتُ مِنَ الْعٰلِيْنَ ۝

76. उस ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ नू ने मुझे पैदा किया है अग्नि से तथा उसे पैदा किया है मिट्टी में।

قَالَ اَنْ خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَـهُ مِنْ طِيْنٍ ۝

77. अल्लाह ने कहा: नू निकल जा यहाँ से, तू वास्तव में धिक्कृत है।

قَالَ لَا حَرِيْرَ بَيْنَنَا وَفَا لَكَ نَهِيْرٌ ۝

78. तथा तुझ पर मेरी दया से दूरी है प्रलय के दिन तक।

وَاِنَّ عَلَيَّكَ لَعْنَتِيْ اِلٰى يَوْمٍ لَّيْسَ ۝

79. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मुझे अवसर दे उस दिन तक जब लोग पुनः जीवित किये जायेंगे।

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْهُ اِلٰى يَوْمٍ يُبْعَثُوْنَ ۝

80. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝

81. निर्धारित समय के दिन तक।

اِلٰى يَوْمِ الْوَعْدِ الْمَعْنُوْمِ ۝

82. उस ने कहा: तो तेरे प्रनाप की

قَالَ فَيَعْرِضُكَ لِاٰخُوْبَتِهِمْ اٰجَمِيْعِيْنَ ۝

शपथ। मैं आवश्यक कुपथ कर के
रहूँगा सब को।

83. तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा उन में से।

إِلَّا مَنَادًا مِنْهُمْ الْمُطَّهِينَ ۝

84. अब्राह ने कहा: तो यह सत्य है और
मैं सत्य ही कहा करता हूँ

قَالَ كَالْعَمَى وَالْعَمَى أَقُولُ ۝

85. कि मैं अवश्य भर दूँगा नरक को
तुझ से तथा जो तेरा अनुसरण करेंगे
उन सब से

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَتَّبِعُكَ مِنْهُمْ
أَجْمَعِينَ ۝

86. (हे नबी!) कह दें कि मैं नहीं माँग
करता हूँ तुम से इस पर किमी
पारिश्रमिक की, तथा मैं नहीं हूँ
अपनी ओर से कुछ बनाने वाला।

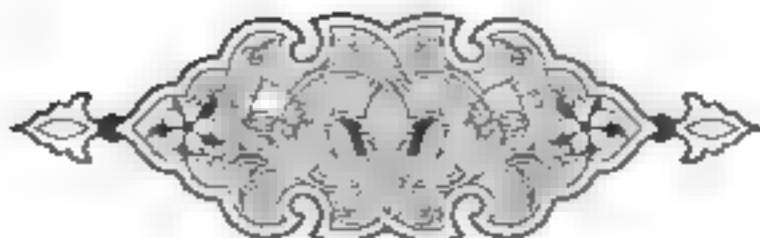
قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ
الْمُتَكَلِّمِينَ ۝

87. नहीं है यह (कुरआन) परन्तु एक
शिक्षा सर्वलोक वासियों के लिये।

إِنْ هُوَ إِلَّا وَكُنْ لِّلْعَالَمِينَ ۝

88. तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा
उस के समाचार (तथ्य) का एक
समय के पश्चात्।

وَلَنَعْلَمَنَّ بَأْسَهُ بَعْدَ عَمَلٍ ۝



सूरह जुमर - 39

سُورَةُ الزُّمَرِ

सूरह जुमर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 75 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 71 तथा 73 में (जुमर) शब्द आया है जिस का अर्थ है समूह तथा गिरोह। और इसी से सूरह का नाम लिया गया है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुआन की मूल शिक्षा को प्रमाणों (दलीलों) के साथ प्रस्तुत किया गया है कि आज पालन (बंदना) मात्र अल्लाह ही के लिये है। फिर आगे आयत 20 तक दोनों गिरोह: जो धर्म का पालन करते और केवल अल्लाह की बंदना (इबादत) करते हैं तथा जो दूसरों की पूजा करते हैं उन के मध्य अन्तर बताया गया है। फिर आयत 35 तक कुआन को मानने वालों की विशेषताएँ और उन का प्रतिफल बताया गया है और विरोधियों को बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 36 से 52 तक ऐसे समझाया गया है कि (तौहीद) उभर कर सामने आ जाये। और ईमान लाने की भावना पैदा हो जाये। फिर आयत 63 तक अल्लाह को मानने की प्रेरणा दी गई है।
- अन्तिम आयतों में यह बताया गया है कि एक अल्लाह की बंदना ही सच्ची है। फिर प्रलय की कुछ दशाओं की झलक दिखा कर (नेकों) सदाचारियों और बुरों के अलग अलग स्थानों की ओर जाने, और उन के अन्तिम परिणाम को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. इस पुस्तक का अवतरित होना अल्लाह अति प्रभावशाली तत्त्वज्ञ की ओर से है।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝

2. हम ने आप की ओर यह पुस्तक सत्य के साथ अवतरित की है। अतः इबादत (बंदना) करो अल्लाह की शुद्ध

وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَعْلَانًا
مُخْلِصًا لِلدِّينِ ۝

करते हुये उस के लिये धर्म को।

3. सुन लो! शब्द धर्म अब्राह ही के लिये (योग्य) है। तथा जिन्होंने बना रखा है अब्राह के सिवा सरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की वंदना इस लिये करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अब्राह' से। वास्तव में अब्राह ही निर्णय करेगा उन के बीच जिस में वे विभेद कर रहे हैं। वास्तव में अब्राह उसे सुपथ नहीं दर्शाता जो बड़ा मिथ्यावादी कृतघ्न हो।

4. यदि अब्राह चाहता कि अपने लिये संतान बनाये तो चुन लेता उस में से जिसे पैदा करता है जिसे चाहता। वह पवित्र है। वही अब्राह अकेला सब पर प्रभावशाली है।

5. उस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को सत्य के आधार पर। वह लपेट देता है रात्रि को दिन पर तथा दिन को रात्रि पर तथा वशवर्ती किया है सूर्य और चन्द्रमा को। प्रत्येक चल रहा है अपनी निर्धारित अवधि के लिये सावधान। वही अत्यंत प्रभावशाली क्षमी है।

6. उस ने तुम को पैदा किया एक प्राण

الْأَكْثَرُ النَّفْسُ عَلَى الْفَرْقِ وَالْبَيْتِ الْفَرْقِ وَالدِّينِ
أَقْلَبُ مَا نَعْبُدُ هُمْ إِلَّا لِيُقَرَّبُوا إِلَى اللَّهِ وَلَقَدْ
رَبُّكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ لِيُخْلِقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ
إِنْ أَنْتُمْ لَأَعْبُدُونِ مَنْ هُوَ كَرِيمٌ كَلِيمٌ

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَخْلُقَ لَمْ يَخْلُقْ إِلَّا مَا يَشَاءُ
وَلَقَدْ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ لِيُخْلِقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ

حَقَّقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْعَمَقِ يَكُونُ كَيْلَ عَلَى
النَّاسِ وَيَكُونُ النَّهَارُ عَلَى الْيَمِّ وَتَحْتَ النَّفْسِ
وَالْقَمَرُ عَلَى عَجْرٍ يَكُونُ عَلَى سَنَةٍ
الْأَمْوَالِ الْعِزِّ وَالْعَمَارِ ①

حَقَّقَ مَنْ لَيْسَ وَاحِدًا لَمْ يَجْعَلْ مِنْهُ زَوْجًا

1. मक्का के काफिर यह मानते थे कि अब्राह ही वास्तविक पूज्य है। परन्तु वह यह समझते थे कि उस का दरबार बहुत ऊँचा है इसलिये वह इन पूज्यों को माध्यम बनाते थे ताकि इन के द्वारा उन की प्रार्थनाये अब्राह तक पहुँच जाये। यही बात साधारणतः मशरिक कहते आये हैं। इन तीन आयतों में उन के इसी कुविचार का खण्डन किया गया है। फिर उन में कुछ ऐसे थे जो समझते थे कि अब्राह के संतान हैं। कुछ, फरिश्तों को अब्राह की पुत्रियाँ कहने और कुछ नाबियों (इसा) को अब्राह का पुत्र कहते थे। यहाँ इसी का खण्डन किया गया है।

से फिर बनाया उसी से उम का जोड़ा। तथा अवतारित किये तुम्हारे लिये पशुओं में से आठ जोड़े। वह पैदा करता है तुम को तुम्हारी माताओं के गर्भाशयों में एक रूप में, एक रूप के पश्चात् तीन अंधेरों में, यही अल्लाह है तुम्हारा पालनहार, उसी का राज्य है। कोई (सच्चा) बंदनीय नहीं उम के सिवा। तो तुम कहाँ फिराये जा रहे हो?

7. यदि तुम कृतघ्न बनो तो अल्लाह निस्पृह है तुम से। और वह प्रसन्न नहीं होता अपने भक्तों की कृतघ्नता से और यदि कृतज्ञता करो तो वह प्रसन्न हो जायेगा तुम से। और नहीं बोझ उठायेगा कोई उठाने वाला दूसरों का बोझ। फिर तुम्हारे पालनहार ही की ओर तुम्हारा फिरना है तो वह तुम्हें सूचित कर देगा तुम्हारे कर्मों से। वास्तव में वह भली-भाँति जानने वाला है दिलों के भेदों को।

8. तथा जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुख तो पुकारता है अपने पालनहार को ध्यानमग्न हो कर उस की ओर। फिर जब हम उसे प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से तो भूल जाता है जिस के लिये वह पुकार रहा था इस से पूर्वी तथा बना लेता है अल्लाह का साझी ताकि कुपथ करे उस की डगर से। आप कह दें कि आनन्द ले लो अपने कुफ्र का थोड़ा

وَأَرْسَلْنَاكَ مِنَ الْأَنْعَامِ نَمِيسَةً أَرْسَلْنَاكَ مِنْهَا ثَمَنًا بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ
وَأَرْسَلْنَاكَ مِنَ الْأَنْعَامِ نَمِيسَةً أَرْسَلْنَاكَ مِنْهَا ثَمَنًا بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ
وَأَرْسَلْنَاكَ مِنَ الْأَنْعَامِ نَمِيسَةً أَرْسَلْنَاكَ مِنْهَا ثَمَنًا بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ غَفِيرٌ
إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ غَفِيرٌ
إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ غَفِيرٌ

وَمَا كُنْتُمْ بِأَعْيُنِنَا
وَمَا كُنْتُمْ بِأَعْيُنِنَا
وَمَا كُنْتُمْ بِأَعْيُنِنَا

सा। वास्तव में तू नारकियों में से है।

9. तो क्या जो आज्ञाकारी रहा हो रात्रि के क्षणों में मजदा करने हुये, तथा खड़ा रह कर, (और) डर रहा हो परलोक से, तथा आशा रखना हो अब्राह की दया की, आप कहें कि क्या समान हो जायेंगे जो ज्ञान रखते हैं तथा जो ज्ञान नहीं रखते? वास्तव में शिक्षा ग्रहण करते हैं मर्निमान लोग ही।

10. आप कह दें उन भक्तों में जो ईमान लाये तथा डरे अपने पालनहार से कि उन्हीं के लिये जिन्होंने सदाचार किये इस संसार में बड़ी भलाई है। तथा अब्राह की धरती विस्तृत है और धैर्यवान ही अपना पूरा प्रतिफल अर्गाणत दिये जायेंगे।

11. आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि इबादत (वन्दना) करूँ अब्राह की शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को।

12. तथा मुझे आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ।

13. आप कह दें: मैं डरता हूँ यदि मैं अवैज्ञा करूँ अपने पालनहार की, एक बड़े दिन की यातना से।

14. आप कह दें अब्राह ही की इबादत (वन्दना) मैं कर रहा हूँ शुद्ध कर के उस के लिये अपने धर्म को।

15. अतः तुम इबादत (वन्दना) करो जिस की चाहो उस के सिवा। आप कह दें: वास्तव में क्षतिग्रस्त वही है जिन्होंने

أَمَّنْ هُوَ قَائِمٌ أَسَدًا قِيلَ سَلِجْدًا أَوْ قَائِمًا يَعْتَدِرُ
الْأَجْرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةً قِيلَ هَلْ يَسْتَوِي
الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُولُو الْأَلْبَابِ

قُلْ يَبْنَؤُا الدِّينَ أَصْلُوا أَعْوَارَ يَكْفُرُ الْكَافِرِينَ
أَخَسُوا لِي هِنْدًا مَدْيَا حَسَةً وَأَرْضُ فُلُو
وَأَسْعَةً إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ

قُلْ لِي بُرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ

وَأُذِنْتُ لِمَنْ أَلَمْتُ أَتَى السَّبِيلِ

قُلْ إِنِّي أَخَافُ مِنْ عَصِيَّتِي رَبِّي مَخَافَةَ يَوْمٍ يَفْطِنُ

قُلْ اللَّهُ أَعْبُدْ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ

فَمَعْدُ وَأَمَّا أَيْدِيهِمْ دُونَ قُلْ إِنَّ الْخَيْرَ فِي
الَّذِينَ حَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

क्षतिग्रस्त कर लिया स्वयं का तथा
अपने परिवार को प्रलय के दिन।
सावधान! यही खूली क्षति है।

16. उन्हीं के लिये छत्र होंगे अग्नि के,
उन के ऊपर से तथा उन के नीचे से
छत्र होंगे। यही है डरा रहा है अम्नाह
जिम से अपने भक्तों को। हे मेरे
भक्तों! मुझी से डरो।

17 जो बचे रहे तागूत (असुर)¹¹ की पूजा से तथा ध्यान मग्न हो गये अन्नाह की ओर तो उन्हीं के लिये शुभसूचना है। अतः आप शुभ सूचना सुना दें मेरे भक्तों को।

18. जो ध्यान से सुनते हैं इस बात को फिर अनुसरण करते हैं इस सर्वोत्तम बात का तो वही है जिन्हें सुपथ दर्शन दिया है अत्राह ने, तथा वही मर्तिमान है।

19. तो क्या जिस पर यातना की बात सिद्ध हो गई क्या आप निकाल सकेंगे उसे जो नरक में है?

20. किन्तु जो अपने पालनहार से दूरे
उन्हीं के लिये उच्च भवन हैं। जिन
के ऊपर निर्मित भवन हैं। प्रवाहित हैं
जिन में नहरें, यह अब्राह का वचन
है। और अब्राह वचन भंग नहीं करता।

21. क्या तुम ने नहीं देखा¹² कि अब्राहम ने

الْأَذْيَاتُ لَهُوَ الْخُضْرَانُ الْيَبِينُ ①

أَنَّهُمْ تَرَىٰ قُلُوبَهُمْ كُلًّا مِّنَ النَّارِ وَمِنْ مَحْطَمَةٍ هَلْ
ذَلِكَ صُورَةُ الْإِنسَانِ عِبَادَةَ يَسُودُونَ لِقُلُوبِهِمْ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا أَتْلُوا الْقُرْآنَ وَالْغُفَىٰ وَالْغُفَىٰ رِجَالٌ مِّنَ الْأَعْيُنِ وَمَن يَشَافِئُ عَيْنَهُ يُفِثْ فِثْلَ خَبِيرٍ ۝۱۰۰

الدَّيْنِ يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ يَفْتَعُونَ أَحَدَ أَوْلِيكَ
الَّذِينَ عَدِمْ لَهُ وَالَّذِينَ هُمْ أَوْلُوا الْأَنْبِيَاءِ

فَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ أَدَّبْتُمُوهُ
مِنْ الْبَاقِ

[illegible]

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُ أَتَىٰ مِنْ الْمَمَاءِ مَاءً فَطَلَعَهُ سَاعِيقٌ

उतारा आकाश से जल? फिर प्रवाहित कर दिये उस के स्रोत धरती में। फिर निकालता है उस से खेतियाँ विभिन्न रंगों की। फिर मुख जानी है, तो तुम देखते हो उन्हें पीली, फिर उसे चूर चूर कर देता है। निश्चय इस में बड़ी शिक्षा है मर्तिमानों के लिये।

فَبِذَلِكَ يُنذِرُكَ رَبُّكَ أَنْ لَا تُؤْمِنَ إِلَّا بِاللَّهِ وَأَنْتَ بِنُذُرِهِ كَاتِلٌ ﴿٥٠﴾

22. तो क्या खोले दिया हो अल्लाह ने जिस का सीना इस्लाम के लिये तो वह एक प्रकाश पर हो अपने पालनहार की ओर से। तो बिनाश है जिन के दिल कड़े हो गये अल्लाह के स्मरण में वही खूने क़ुपथ में है।

فَلَمَّا شَرَعَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَصَوَّى نُورَهُ
لَهُ فَوَيْسَ الْكَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ تَنْزِيهِ اللَّهِ
أُولَئِكَ فِي صَلَاتِهِمْ

23. अल्लाह ही है जिस ने सर्वोत्तम हदीस (क़ुरआन) को अवतरित किया है।
ऐसी पुस्तक जिस की आयनें मिलती
जुलती बार-बार दुहराई जाने वाली
है। जिसे (सुन कर) खड़े हो जाते
हैं उन के रूंगटे जो डरने हैं अपने
पालनहार से फिर कोमल हो जाते
हैं उन के अंग तथा दिल अल्लाह के
स्मरण कि ओर। यही है अल्लाह का
मार्गदर्शन जिस के द्वारा वह संमार्ग
पर लगा देता जिसे चाहता है। और
जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का
कोई पथ दर्शक नहीं है।

بَلَدَهُ نَزَلَ إِلَى أَحْسَنِ الْمَدِينَةِ كَمَا أَنْشَأَ بَنَاتِي
تَشْفِيهِمْ مِنْهُ جُلُودُ الْبَيْتِ يَحْتَمُونَ رَبُّهُمْ ثُمَّ
نَزَلَ مِنْ جُلُودِهِمْ وَقُلُوا لَهُمْ إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ ذَلِكَ
هُدًى لِلَّذِينَ هَدَىٰ بِهِ مِنْ نَافِلَاتِهِمْ وَنَزَلَ مِنْ
بَلَدِهِ نَزْلًا مِنْ هُدًى

24. तो क्या जो अपनी रक्षा करेगा अपने मुख¹ से बुरी यातना से प्रलय के

أَفَمَنْ يَتَّبِعْ يُوجِبُهُ سُوءُ عَذَابٍ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

भी यही दशा होती है। वह शिशु जन्म लेता है फिर युवक और बूढ़ा हो जाता है और अन्ततः संसार से चला जाता है।

1 इस लियेकि उस के हाथ पीछे बंध होंगे। वह अच्छा है या जो स्वर्ग के सुख में

दिन? तथा कहा जायेगा अत्याचारियों से चखो जो तुम कर रहे थे।

وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾

25. झुठला दिया उन्होंने जो इन से पूर्व थे। तो आ गई यातना उन के पास जहाँ से उन्हें अनुमान (भी) न था।

كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَاتَّسَفَرُوا سُدَّابٍ
مِّن حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

26. तो चखा दिया अल्लाह ने उन को अपमान समारिक जीवन में और आखिरत (परलोक) की यातना निश्चय अत्यधिक बड़ी है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।

فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْيُسْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ
الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

27. और हम ने मनुष्य के लिये इस कुरआन में प्रत्येक उदाहरण दिये हैं ताकि वह शिक्षा ग्रहण करे।

وَلَعَذَابُ الْعَالَمِينَ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ
كُلِّ مَثَلٍ لِّعَلَّهِمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٨﴾

28. अर्बी भाषा में कुरआन जिस में कोई टेढ़ापन नहीं है ताकि वह अल्लाह से डरे।

قُرْآنًا عَرَبِيًّا خَرِيذِيٍّ يَوْمَ يُخْرَجُ لِعَلَّهِمْ يَتَفَقَّهُونَ ﴿٢٩﴾

29. अल्लाह ने एक उदाहरण दिया है एक व्यक्ति का जिस में ब्रह्म से परस्पर विरोधी साझी है। तथा एक व्यक्ति पूरा एक व्यक्ति का (दास) है। तो क्या दशा में दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, चल्कि उन में से अधिकतर नहीं जानते।

خَرَّبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّرَجُلَيْنِ وَمَثَلًا لِّمَثَلَيْنِ
وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ قُلُوبًا يَتَّبِعِينَ مَثَلًا لِّلْمُتَّبِعِينَ
مِنَ الْغُرُفَةِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

30. (हे नबी!) निश्चय आप को मरना है तथा उन्हें भी मरना है।

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٣١﴾

होगा वह अच्छा है?

1 इस आयत में मिश्रणवादी और एकेश्वरवादी की दशा का वर्णन किया गया है कि मिश्रणवादी अनेक पूज्या को प्रसन्न करने में व्याकुल रहना है तथा एकेश्वरवादी शान्त हो कर केवल एक अल्लाह की इबादत करता है और एक ही को प्रसन्न करता है।

31. फिर तुम सभी¹ प्रलय के दिन अल्लाह के समक्ष झगड़ोगे।
32. तो उस से बड़ा अन्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बोले तथा सच्च को झूठलाये जब उस के पास आ गया? तो क्या नरक में नहीं है ऐसे काफिरों का स्थान?
33. तथा जो सत्य लाये² और जिस ने उसे सच्च माना तो वही (यातना से) सुरक्षित रहने वाले है।
34. उन्हीं के लिये है जो वह चाहेंगे उन के पालनहार के यहाँ। और यही सदाचारियों का प्रतिफल है।
35. ताकि अल्लाह क्षमा कर दे जो कुकर्म उन्होंने किये है। तथा उन्हें प्रदान करे उन का प्रतिफल उन के उत्तम कर्मों के बदले जो वे कर रहे थे।
36. क्या अल्लाह पर्याप्त नहीं है अपने भक्त के लिये? तथा वह डराने है आप को उन से जो उस के सिवा है। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो नहीं है उसे कोई सुपथ दर्शाने वाला।
37. और जिसे अल्लाह सुपथ दर्शा दे तो नहीं है उसे कोई कुपथ करने वाला। क्या नहीं है अल्लाह प्रभुत्वशाली

فَعَرَّكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَذْرَئِكَ تَحْتَسِبُونَ

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ
بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى
لِّلْكَافِرِينَ

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُتَّقُونَ

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ جَزَاءُ
الْمُحْسِنِينَ

يَتْلُو اللَّهُ عَلَيْهِمْ آسَاتُهَا الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ
دُونِهِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ

وَمَنْ يُهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ أَلَيْسَ اللَّهُ
بَعِزِّ ذِي الْقَبَارِ

1 और वहाँ तुम्हारे झगड़े का निर्णय और सब का अन्त सामने आ जायेगा। इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मौत को सिद्ध किया गया है। जिस प्रकार (मूरह आले इमरान, आयत: 144, में आप की मौत का प्रमाण बताया गया है।

2 इस से अभिप्राय अन्तिम नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है।

बदला लेने वाला?

38. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कहिये कि तुम बनाओ जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुंचाना चाहे तो क्या यह उस की हानि को दूर कर सकता है? अथवा मेरे साथ दया करना चाहे, तो क्या वह रोक सकता है उस की दया को? आप कह दें कि मुझे पर्याप्त है अल्लाह। और उसी पर भरोसा करते हैं भरोसा करने वाले।

39. आप कह दें कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम काम करो अपने स्थान पर मैं भी काम कर रहा हूँ। तो शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

40. कि किस के पास आती है ऐसी यानना जो उसे अपमानित कर दे। तथा उतरती है किस के ऊपर स्थायी यानना?

41. वास्तव में हम ने ही अवतरित की है आप पर यह पुस्तक लोगों के लिये मत्त्य के साथ। तो जिस ने मार्गदर्शन प्राप्त कर लिया तो उस के अपने (लाभ के) लिये है। तथा जो कुपथ हो गया तो वह कुपथ होता है अपने ऊपर। तथा आप उन पर संरक्षक नहीं है।

42. अल्लाह ही खींचता है प्राणों को उन के मरण के समय, तथा जिस के

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلْ اَكُمْرَةً يُعَذِّبُ مَنۢ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ اِلٰى اللّٰهِ يَصُوْرُ هَلۡ هُنَّ
كٰتِبٰتٌ مِّنۡ اَوْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَوْمَ لَا
مَنۡعَكَ رَحْمَتُهٗ قُلْ عَسٰى اِلٰهُ
عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝

قُلْ اَعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنَّ عَامِلًا
كَثُوْرًا يَّمْلِكُوْنَ ۝

مَنْ يَّاتِيْهِ عَذَابٌ مُّخْتَلِفٌ وَّهُوَ عَلَيْهِ جَدًّا
ثَبِيْثٌ ۝

اِنَّا اَنْزَلْنٰ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِتَاٰتِيْهِ ۙ لَّعَلَّ
فَتَنۡدِيْ وَّلَتۡفۡسِدَ ۙ وَمَنْ هَلۡ يَّوۡسَعُ
عِلۡمُهَا ۙ وَاَنۡتَ عَلَيْهِمْ رٰكِبٌ ۝

اِنَّهٗ يَتَوَكَّلُ لِاَنۡفُسٍ حِيْنَ مَوۡتِهَا ۙ وَالَّذِيۡ لَمْ

मरण का समय नहीं आया उस की निद्रा में। फिर रोक लेता है जिस पर निर्णय कर दिया हो मरण का। तथा भेज देता है अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन के लिये जो मनन-चिन्तन^[1] करते हों।

43. क्या उन्होंने बना लिये हैं अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्त्तावक (सिफारशी)? आप कह दें: क्या (यह सिफारिश करेंगे) यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज का और न ही समझ रखते हों?
44. आप कह दें कि अनुशंसा (सिफारिश) तो सब अल्लाह के अधिकार में है। उसी के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। फिर उसी की ओर तुम फिराये जाओगे।
45. तथा जब वर्णन किया जाता है अकेले अल्लाह का तो संकीर्ण होने लगते हैं उन के दिल जो ईमान नहीं रखते आखिरत² पर। तथा जब वर्णन किया जाता है उन का जो उस के सिवा है तो वह सहसा प्रसन्न हो जाते हैं।

تُسَبِّحُهَا سُبْحَانَكَ لَيْتَ قُصِيَ عَلَيْهَا
الْمَوْتُ وَرُسُلُ الْأَعْرَابِ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْتَبِرُونَ ﴿٤٣﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ - قُلْ أَتَوَاتُوا لَيْسَ لَكُمْ شَيْئًا وَلَا يَتَّبِعُونَ ﴿٤٤﴾

قُلْ إِنَّكَ الشَّافِعَةُ لِجَمِيعٍ - لَهُ مُدَّتُ السَّعَاتِ
وَلَا يَرْضَىٰ لِعَمَلِهِمْ تَرْجُومُونَ ﴿٤٥﴾

وَرَدَّ ذِكْرَ اللَّهِ وَرَحْمَتَهُ سَوَّاتٌ لِّقُلُوبِ الْهَادِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَرَدَّ ذِكْرَ الْهَادِينَ مِنْ
دُونِهِ رَدًّا لَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٦﴾

- 1 इस आयन में बनाया जा रहा है कि मरण तथा जीवन अल्लाह के नियंत्रण में है। निद्रा में प्राणों को खींचने का अर्थ है उन की संवेदन शक्ति को समाप्त कर देना। अतः कोई इस निद्रा की दशा पर विचार करे तो यह समझ सकता है कि अल्लाह मुर्दा को भी जीवित कर सकता है।
- 2 इस में मुशरिकों की दशा का वर्णन किया जा रहा है कि वह अल्लाह की महिमा और प्रेम को स्वीकार तो करते हैं फिर भी जब अकेले अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन किया जाता है तो प्रसन्न नहीं होते जब तक दूसरे पीरों-फकीरों तथा देवताओं के चमत्कार की चर्चा न की जाये।

46. (हे नबी!) आप कहें: हे अल्लाह आकाशों तथा धरती के पैदा करने वाले, परोक्ष तथा प्रत्यक्ष के ज्ञानी! तु ही निर्णय करेगा अपने भक्तों के बीच जिस बात में वह झगड़ रहे थे।

47. और यदि उन का जिन्होंने अत्याचार किया है जो कुछ धरती में है सब हो जाये तथा उस के समान उस के साथ और आ जाये तो वह उसे दण्ड में दे देंगे¹। घोर यानना के बदले प्रलय के दिना तथा खुल जायेगी उन के लिये आत्राह की ओर से वह बात जिसे वह समझ नहीं रहे थे।

48. तथा खुल जायेगी उन के लिये उन के करतूतों की बुराईयाँ। और उन्हें घेर लेगा जिस का वह उपहास कर रहे थे।

49. और जब पहुँचना है मनुष्य को कोई दुख तो हमें पुकारता है। फिर जब हम प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से तो कहना है यह तो मुझे प्रदान किया गया है ज्ञान के कारण। बल्कि यह एक परीक्षा है। किन्तु लोगों में से अधिकतर (इसे) नहीं जानते।

50. यही बात उन लोगों ने भी कही थी जो इन से पूर्व थे। तो नहीं काम आया उन के जो कुछ वह कमा रहे थे।

51. फिर आ पड़े उन पर उन के सब कुकर्म और जो अत्याचार किये

قُلِ الْمَلَكُةُ دَرَجَاتٍ لِّسَمَوَاتٍ وَٱلْأَرْضِ ۚ عَلَيْهِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَادَةِ ۖ أَمَّا تُخَلِّمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِى مَا كَانُوا فِتْنَةً يَخْتَصِمُونَ ۝

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا فِى ٱلْأَرْضِ مِن جَمِيعٍ مَا فِى ٱلْأَرْضِ مَعَهُ لَٱفْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ ٱلْعَذَابِ ۚ يَوْمَ ٱلْقِيَمَةِ ۚ وَبَدَّ لَهُمْ مِنَ ٱللَّهِ مَآلَهُمْ ۖ يَكُونُوا يَخْتَصِمُونَ ۝

وَبَدَّ لَهُمْ سَيِّئَاتِ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

وَإِذْ نَسَى ٱلْإِنسَانُ ذُرِّيَّتَهُ ۖ إِنَّا تُخَذِّلُهَا نَسْوَ ۖ إِنَّا كَرِهْنَا لَكَ فِى ٱلْأَرْضِ مَآلَهُ ۖ وَكُنَّا ٱلْكَرْهُمُ ۖ لَا يَعْلَمُونَ ۝

قَدْ قَالُوا ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَا أَخْلَىٰ عَنْهُمْ فَٱكَاثَرُوا يُكْسِبُونَ ۝

فَٱصْبَحُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ وَٱلَّذِينَ ظَلَمُوا

1 परन्तु वह सब स्वीकार्य नहीं होगा। (देखिये सूरह बकरा, आयत 48 तथा सूरह आले इमरान, आयत: 91)

हैं इन में से आ पड़ेंगे उन पर
(भी) उन के कुकर्मों तथा वह (हमें)
विवश करने वाले नहीं है।

مِنْ قَوْلِهِمْ سَيُؤْتِيهِمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَتَأْتِيهِمْ
بِمُقَدَّرَاتِهِ ۝

52. क्या उन्हें ज्ञान नहीं कि अल्लाह
फैलाता है जीविका जिस के लिये
चाहता है तथा नाप कर देना है
(जिस के लिये चाहता है)? निश्चय
इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों
के लिये जो इमान रखते हैं।

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ رِزْقَهُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ رِزْقَهُ لِمَنْ يَشَاءُ لَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

53. आप कह दें मेरे उन भक्तों से
जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये
हैं कि तुम निराश न हो अल्लाह की
दया से। वास्तव में अल्लाह क्षमा कर
देता है सब पापों को। निश्चय वह
अति क्षमी दयावान् है।

لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ ذُنُوبَهُمْ إِلَّا تَتَوَكَّلُوا عَلَى اللَّهِ
لَا تَقْصُطُوا مِنَ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ
جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

54. तथा झुक पड़ो अपने पालनहार की
ओर और आज्ञाकारी हो जाओ उस
के इस से पूर्व कि तुम पर यातना
आ जाये, फिर तुम्हारी सहायता न
की जाये।

وَأَنِيبُوا إِلَى رَبِّكُمْ وَأَسْلُمُوهُ إِنَّ رَبَّكُمْ
يُنَاسِتُ الْغَافِلِينَ ۝

55. तथा पालन करो उस सर्वोत्तम
(कुर्आन) का जो अवतरित किया गया
है तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की
ओर से इस से पूर्व कि आ पड़े तुम
पर यातना और तुम्हें ज्ञान न हो।

وَالْيَعْلَمُ أَحْسَنَ مَا أُرْسِلَ بِهِ إِلَيْكُمْ رَبُّكُمْ
قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَعَثَهُ وَأَنْتُمْ
لَا تَشْعُرُونَ ۝

56. (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ لِمَنْ شَرُّ مَنْ قَرَّبْتُ فِي

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ मृशार्क आये जिन्होंने बहुत
जाने मारी और बहुत व्यभिचार किये थे। और कहा वास्तव में आप जो कुछ
कह रहे हैं वह बहुत अच्छा है। तो आप वनाये कि हम ने जो कुकर्म किये हैं
उन के लिये कोई कफ़ारा (प्रायश्चित्त) है? उसी पर फुर्कान की आयत 68
और यह आयत उनरी। (महीह बुखारी: 4810)

हाय संताप! इस बात पर कि मैं ने आलस्य किया अब्राह के पक्ष में, तथा मैं उपहास करने वालों में रह गया।

حَسِبَ الظَّالِمُونَ لَوْلَا أَنِّي نَجَّيْتُكَ مِنَ الْغَمِّ أَنِّي أَنَا الْغَافِلُونَ ۝

57. अथवा कहे कि यदि अब्राह मुझे सुपथ दिखाना तो मैं डरने वालों में से हो जाता।

أَوْ تَقُولَ لَوْلَا أَنِّي نَجَّيْتُكَ مِنَ الْغَمِّ أَنِّي أَنَا الْغَافِلُونَ ۝

58. अथवा कहे जब देख ले यातना को, कि यदि मुझे (समार में) फिर कर जाने का अवसर हो जाये तो मैं अवश्य सदाचारियों में से हो जाऊँगा।

أَوْ تَقُولَ لَوْلَا أَنِّي نَجَّيْتُكَ مِنَ الْغَمِّ أَنِّي أَنَا الْغَافِلُونَ ۝

59. हाँ, आई तुम्हारे पाम मेरी निशानियाँ तो तुम ने उन्हें झूठला दिया और अभिमान किया तथा तुम थे ही काफ़िरो में से।

بَلْ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَيْفَ تَتَوَبَّعُهُمْ وَأَنْتَ تَكْفُرُ ۝

60. और प्रलय के दिन आप उन्हें देखेंगे जिन्होंने अब्राह पर झूठ बोले कि उन के मुख काले होंगे। तो क्या नरक में नहीं है अभिमानियों का स्थान?

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ مِّنْ نُورٍ أَسْوَدَ أَلْوَنٍ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۝

61 तथा बचा लेगा अब्राह जो आजाकारी रहे उन को उन की सफलता के साथ। नहीं लगेगा उन को कोई दुख और न वह उदासीन होंगे।

وَنَجَّيْنَاكَ اللَّهُ لَدُنَّكَ نَجَّيْنَاكَ اللَّهُ لَدُنَّكَ نَجَّيْنَاكَ اللَّهُ لَدُنَّكَ نَجَّيْنَاكَ اللَّهُ لَدُنَّكَ ۝

62. अब्राह ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला तथा वही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝

63. उसी के अधिकार में है आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ¹ तथा जिन्होंने

لَهُ مَقَادِيرُ النَّفْسِ وَالْأَرْضِ ۚ الَّذِينَ كَفَرُوا

1 अर्थात् सब का विधाता तथा स्वामी वही है। वही सब की व्यवस्था करता है और सब उसी के आधीन तथा अधिकार में है।

नकार दिया अब्राह की आयतों को वही क्षति में है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ عِنْدَهُ خَائِفِينَ ۝

64. आप कह दें तो क्या अब्राह से अन्य की तुम मुझे इबादत (बंदना) करने का आदेश देते हो, हे अज्ञानों?

قُلْ أَفَعَبَدُونَ مُشْرِكِينَ أَتَعْبُدُونَ ٱلْجَاهِلِينَ ۝

65. तथा वही की गड़ है आप की ओर तथा उन (नबीयों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म तथा आप हो जायेंगे¹ क्षति ग्रस्तों में से।

وَلَقَدْ آتَيْنَا لَيْلَىٰ وَآلَى الْيَوْمِ مِن قَبْلِكَ ۚ لَئِن أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

66. बल्कि आप अब्राह ही की इबादत (बंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

بِإِذْنِهِ فَاعْبُدْهُ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝

67. तथा उन्होंने अब्राह का सम्मान नहीं किया जैसे उस का सम्मान करना चाहिये था और धरती पूरी उस की एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन। तथा आकाश लपेटे हुये होंगे उस के हाथ²

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۚ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا بِيَمِينِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَالسَّمَاءُ مَطْوِيَّةٌ بِأَيْمَانِهِ سِتْرًا ۚ وَنَعْمَلْ عَمَلًا يُشْرِكُونَ ۝

1. इस आयत का भावार्थ यह है कि यदि मान लिया जाये कि आप के जीवन का अन्त शिर्क पर हुआ, और क्षमा याचना नहीं की तो आप के भी कर्म नष्ट हो जायेंगे। हालाँकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और सभी नबी शिर्क से پاک थे। इसलिये कि उन का संदेश ही एकेश्वरवाद और शिर्क का खंडन है। फिर भी इस में संबोधित नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया। और यह साधारण नियम बनाया गया कि शिर्क के साथ अब्राह के हों कोई कर्म स्वीकार्य नहीं। तथा ऐसे सभी कर्म निष्फल होंगे जो एकेश्वरवाद की आस्था पर आधारित न हों चाहे वह नबी हो या उस का अनुयायी हो।

2. हदीस में आना है कि एक यहूदी विद्वान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा हम अब्राह के विषय में (अपनी धर्म पुस्तकों में) यह पाते हैं कि प्रलय के दिन आकाशों को एक उँगली तथा भूमि को एक उँगली पर और पेड़ों को एक उँगली, जल तथा तरी को एक उँगली पर और समस्त उत्पात्ति को एक उँगली पर रख लेगा, तथा कहेगा: ((मैं ही राजा हूँ)) यह सुन

में। वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

68. तथा सूर (नरसिंघा) फूँका¹ जायेगा तो निश्चेत हो कर गिर जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु जिसे अल्लाह चाहे, फिर उसे पुनः फूँका जायेगा तो सहसा सब खड़े देख रहे होंगे।

وَيُنْفِخُ فِي السُّورِ فَتَقْطَعُ مِنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ يُرْجَوْنَ فِي آخِرِ قِيَامِهِ يَوْمَ يُنْظَرُونَ ﴿٦٨﴾

69. तथा जगमगाने लगेंगी धरती अपने पालनहार की ज्योती में। और परस्मृत किये जायेंगे कर्म लेख तथा लाया जायेगा नवियों और साक्षियों को। तथा निर्णय किया जायेगा उन के बीच सत्य (न्याय) के साथ, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَالشَّرْقِ الْأَرْضِ بِمُورِجَةٍ دُورِجَةِ الْكِتَابِ وَبِالنَّبِيِّ وَالشَّهَادَةِ وَتَقْضَىٰ بَيْنَهُمْ بِحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

70. तथा पूरा-पूरा दिया जायेगा प्रत्येक जीव को उस का कर्मफल तथा वह भली-भाँति जानने वाला है उस को जो वह कर रहे हैं।

وَرَفِيتُ كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

71. तथा हाँके जायेंगे जो काफिर हो गये नरक की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वह उस के पास

وَيَسْمَعُ الْآدَمِيَّ كَفَرًا إِلَىٰ جَهَنَّمَ رُمْسًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ قُتِبَتِ تَوْبَتُهُمْ وَقَالَ لَهُمْ خُذُوا

कर आप हँस पड़े। और इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुखारी हदीस 4812, 6519, 7382, 7413)

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा दूसरी फूँक के पश्चात् सब से पहले मैं सिर उठाऊँगा। तो मूसा अर्श पकड़े हुये खड़े होंगे। मुझे ज्ञान नहीं कि वह ऐसे ही रह गये थे या फूँकने के पश्चात् मुझ से पहले उठ चुके होंगे। (सहीह बुखारी: 4813)

दूसरी हदीस में है कि दोनों फूँकों के बीच चालीस की अवधि होगी। और मनुष्य की दुमची की हड्डी के सिवा सब सह जायेगा। और उसी से उस को फिर बनाया जायेगा (सहीह बुखारी: 4814)

आयेंगे तो खोल दिये जायेंगे उस के द्वार तथा उन से कहेंगे उस के रक्षक (फरिश्ते): क्या नहीं आये तुम्हारे पास रसूल तुम में से जो तुम्हें सुनाते तुम्हारे पालनहार की आयतें तथा सचन करते तुम्हें इस दिन का सामना करने से? वह कहेंगे: क्यों नहीं। परन्तु सिद्ध हो गया यातना का शब्द काफ़िरो पर।

72. कहा जायेगा कि प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी हो कर उस में तो बुरा है घर्माडियों का निवास स्थान।

73. तथा भेज दिये जायेंगे जो लोंग डरने रहे अपने पालनहार से स्वर्ग की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वे आ जायेंगे उस के पास तथा खोल दिये जायेंगे उस के द्वार और कहेंगे उन से उस के रक्षक: सलाम है तुम पर तुम प्रसन्न रहो। तुम प्रवेश कर जाओ उस में सदावासी हो कर।

74. तथा वह कहेंगे: सब प्रशंसा अब्राह के लिये है जिस ने सच्च कर दिया हम से अपना वचना। तथा हमें उत्तराधिकारी बना दिया इस धरती का हम रहें स्वर्ग में जहाँ चाहें। क्या ही अच्छा है कार्य कर्ताओं¹ का प्रतिफल।

75. तथा आप देखेंगे फरिश्तों को घेर हुये अर्श (सिंहासन) के चतुर्दिक वह पवित्रतागान कर रहे होंगे अपन

الَّذِينَ يَكُونُونَ رُسُلًا مِنْكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا قُلُوا بِئْسَ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

قِيلَ ادْخُلُوا الْبُيُوتَ جَمْعًا خَدِيدِينَ فِيهَا قَبَسٌ مَلْأَى نَارًا لَمَسَتْ أَلْسِنَهُمْ ۝

وَيُسَبِّحُ الَّذِينَ آمَنُوا رَبَّهُمْ إِلَى أَصْحَابِ رُءُوسِهِمْ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ ذَلِكَ وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَدِيدِينَ ۝

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ إِنَّهُ كَانَ خَفِيًّا ۝

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ خَافِقِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝

1 अर्थात् एकेश्वरवादी सदाचारियों का।

पालनहार की प्रशंसा के साथ।
तथा निर्णय कर दिया जायेगा लोगों
के बीच सत्य के साथ। तथा कह
दिया जायेगा कि सब प्रशंसा अल्लाह
सर्वलोक के पालनहार के लिये है।¹

وَقِيلَ لِمَنْدُوقِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

- 1 अर्थात् जब इंसान वाले स्वर्ग में और भुशरिक नरक में चले जायेंगे तो उस समय का चित्र यह होगा कि अल्लाह के अर्श को फरिश्ते हर ओर से घेरे हुये उस की पवित्रता तथा प्रशंसा का गान कर रहे होंगे।

सूरह मुमिन - 40

سورة المؤمن

सूरह मुमिन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 85 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 28 में एक मुमिन व्यक्ति की कथा का वर्णन किया गया है जिस ने फिरऔन के दरबार में मूसा (अलैहिस्सलाम) का खून कर साथ दिया था। इसलिये इस का नाम सूरह मुमिन रखा गया है।
- इस सूरह का दूसरा नाम (सूरह गाफिर) भी है। क्योंकि इस की आयत नं० 3 में (गाफिरुज्जम्ब) अर्थात् (पाप क्षमा करने वाला) का शब्द आया है।
- इस की आरंभिक आयतों में उस अल्लाह के गुण बताये गये हैं जिस ने कुआन उतारा है। फिर आयत 4 से 6 तक उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है जो अल्लाह की आयतों में विवाद खड़ा करते हैं।
- आयत 7 से 9 तक ईमान वालों को यह शुभसूचना सुनाई गई है कि फरिश्ते उन की क्षमा के लिये दुआ करते हैं। इस के पश्चात् काफिरों और मुश्रिकों को सावधान किया गया है। और उन्हें शिक्षा दी गई है।
- आयत 23 से 46 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के विरुद्ध फिरऔन के विवाद और एक मुमिन के मूसा (अलैहिस्सलाम) का भरपूर साथ देने तथा फिरऔन के परिणाम को विस्तार के साथ बताया गया है। फिर उन को सावधान किया गया जो अंधे हो कर बड़े बनने वालों के पीछे चलते हैं और ईमान वालों को साहम दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के धर्म में विवाद करने वालों को सावधान करते हुये कुफ्र तथा शिर्क के बुरे परिणाम से सचेत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, भीम।

لَهُ

2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह की
ओर से है जो सब चीजों और गुणों

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

को जानने वाला है।

3. पाप क्षमा करने, तौबा स्वीकार करने, क्षमायाचना का स्वीकारी, कड़ी यातना देने वाला समाई वाला जिस के सिवा कोई (सच्चा) बंदनीय नहीं उम्मी की ओर (सब को) जाना है।
4. नहीं झगड़ने है अल्लाह की आयतों में उन के सिवा जो काफिर हो गये। अतः धोखे में न डाल दे आप को उन की यातायात देशों में।
5. झुठलाया इन से पूर्व नूह की जाति ने तथा बहून से समुदायों ने उन के पश्चान् तथा विचार किया प्रत्येक समुदाय ने अपने रमूल को बंदी बना लेने का। तथा विवाद किया असत्य के सहारे, तार्क असत्य बना दे सत्य को। तो हम ने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी रही हमारी यातना?
6. और इसी प्रकार सिद्ध हो गई आप के पालनहार की बात उन पर जो काफिर हो गये कि वही नारकी है।
7. वह (फरिश्ते) जो अपने ऊपर उठाये हुये हैं अर्श (सिंहासन) को तथा जो उस के आस पास है वह पवित्रतागान करते रहने हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ तथा उस पर इमान रखते हैं और क्षमा याचना करते रहते हैं उन के लिये जो इमान लाये हैं।¹ हे

عَافٍ الدَّنْبِ وَكَافٍ الثَّوْبِ ثِيَابٍ يُؤْتِي
الظُّلُوبَ لَدَلَةً إِلَّا مَنَ الْيَتِيمَ الْمُتَصَرِّعَ

مَا يَجِدُونَ فِي آيَاتِنَا إِلَّا الْيَتِيمَ الْكَفْرَ وَالْأَنَالَ
يَقْرُونَ تَقْلِبُهُمْ فِي الْيَتِيمِ الْكَفْرِ

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْرَابُ مِنْ
بَعْدِهِمْ وَكَفَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ
إِذَا أَخَذُوا وَجَدُوا لَوَالِيًا يَلْمِزُ وَيُصْوَئِرُ
الْحَقُّ نَاصِحًا لَّهْمْ فَلْيَفْ كُنْ عَقَابَ

وَلَدَانِ كَحَتَّ كَحَتَّ رَبِّكَ عَلَ الْيَتِيمِ الْكَفْرَ
كَلِمَةً أَصْحَابُ النَّارِ

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَتَسْتَعِينُونَ لِلَّذِينَ
آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا
فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ
عَذَابَ النَّارِ

- 1 यहाँ फरिश्तों के दो गिरोह का वर्णन किया गया है। एक वह जो अर्श को उठाये हुया है। और दूसरा वह जो अर्श के चारों ओर घूम कर अल्लाह की प्रशंसा का गान और इमान वालों के लिये क्षमायाचना कर रहा है।

हमारे पालनहार! तू ने घेर रखा है
प्रत्येक वस्तु को (अपनी) दया तथा ज्ञान
से अतः क्षमा कर दे उन को जो क्षमा
मांगें तथा चले तेरे मार्ग पर तथा
बचा ले उन्हें नरक की यातना से।

8. हे हमारे पालनहार! तथा प्रवेश कर
दे उन्हें उन स्थाई स्वर्गों में जिन का
तू ने उन को वचन दिया है। तथा
जो सदाचारी है उन के पूर्वजों तथा
पत्नियों और उन की संतानों में से।
निश्चय तू सब चीजों और गुणों को
जानने वाला है।

9. तथा उन्हें सुरक्षित रख दुष्कर्मों से,
तथा तू ने जिसे बचा दिया दुष्कर्मों से
उस दिन, तो दया कर दी उस पर।
और यही बड़ी सफलता है।

10. जिन लोगों ने कुफ्र किया है उन्हें
(प्रलय के दिन) पुकारा जायेगा कि
अब्राह का क्रोध तुम पर उस से
अधिक था जितना तुम्हें (आज) अपने
ऊपर क्रोध आ रहा है जब तुम
(संसार में) ईमान की ओर बुलाये¹
जा रहे थे

11. वे कहेंगे हे हमारे पालनहार! तू ने
हमें दो बार मारा,² तथा जीवित

رَبَّنَا وَأَدْخِلْنَاهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ
وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ
وُذُرِّيَّتِهِمْ لَكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ يَلِكِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ
لَقَدْ رَجَعْنَاهُ فَوَيْلٌ لِلْعَظِيمِ

إِنَّ السَّيِّئِينَ لَكَفَرُوا بِكَ وَوَعَدَ اللَّهُ
الْكُفْرَ مِنْ مَقْصِلِكَ أَنْصَلِكُمْ إِذْ نَادَعَوْا إِلَى
الْإِيمَانِ فَكُفَرْتُمْ ۚ

قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا أَلَمْ نَكُنْ مِنَ الْمُسْلِمِينَ
وَأَحْيَيْتَنَا الْمُسْلِمِينَ

1 आयत का अर्थ यह है कि जब कafir लोग प्रलय के दिन यातना देखेंगे तो अपने ऊपर क्रोधित होंगे। उस समय उन से पुकार कर यह कहा जायेगा कि जब संसार में तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था फिर भी तुम कुफ्र करते थे तो अब्राह का इस से अधिक क्रोध होता था जितना आज तुम्हें अपने ऊपर हो रहा है।

2 देखिये सूरह बकरा आयत 28।

(भी) दो बार किया। अतः हम ने मान लिया अपने पापों को। तो क्या (यातना से) निकलने की कोई राह (उपाय) है?

12. (यह यातना) इस कारण है कि जब तुम्हें (संसार में) बुलाया गया अकेले अब्राह की ओर तो तुम ने कुफ्र कर दिया। और यदि शिकं किया जाता उस के साथ तो तुम मान लेते थे। तो आदेश देने का अधिकार अब्राह को है जो सर्वोच्च सर्वमहान् है।

13. वही दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ तथा उतारता है तम्हारे लिये आकाश से जीविका। और शिक्षा ग्रहण नहीं करता परन्तु वही जो (उस की ओर) ध्यान करता है।

14. तो तुम पुकारो अब्राह को शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को यद्यपि बुरा लगे काफ़िरो को।

15. वह उच्च श्रेणियों वाला अर्श का स्वामी है। वह उतारता है अपने आदेश से रूह¹ (बह्नी) को जिस पर चाहता है अपने भक्तों में से। ताकि वह सचेत करे मिलने के दिन से।

16. जिस दिन सब लोग (जीवित हो कर) निकल पड़ेंगे। नहीं छुपी होगी अब्राह पर उन की कोई चीज। किस का राज्य है आज? ² अकेले

فَاَعْرَضْنَا بِدُنُوْنَا قَعْلًا اِلَى خُرُوجِهِمْ
سَبِيْنًا ۝

ذٰلِكَ بِاَنَّهُ اِذْ دَعٰى اللّٰهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَلٰكِنْ
يُتْرَكُ بِهٖ تَوَسُّوْا۟ وَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝

هُوَ الَّذِي يُرِيْكُم اٰيٰتِهٖ وَيُخْرِجُ الْحَبَّ مِنَ
الشَّجَرِۙ بِرِزْقٍۭ وَّاسَعٍۭ ذٰلِكُمْ لِمَنْ يُعِيْبُ ۝

فَادْعُوْا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهٗ الدِّيْنَ وَذِكْرُ
الْكٰفِرُوْنَ ۝

رَبِّعِلٰۤى لِّدَرْجٰتٍ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي لِقَوْلِهِمْ
اٰمِرًا عَلٰۤى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنۢزِلَ يَوْمَ
الْقٰلَةِ ۝

يَوْمَ هُمْ بَايَرُوْنَ ؕ لَا يَخَفُۦٓ اِلَّا اللّٰهُ مِنْهُمْ
يُنۢۢي لِمَنْ يَّشَآءُ يَوْمَ يَكُوْنُ الْوَحِيْدُ الْمُتَعَالٰى ۝

1 यहाँ बह्नी को रूह कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार रूह (आन्मा) मनुष्य के जीवन का कारण होती है वैसे ही प्रकाशना भी अन्तरात्मा को जीवित करती है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन। (सहीह बुखारी: 4812)

प्रभुत्वशाली अल्लाह का।

17. आज प्रतिकार दिया जायेगा प्रत्येक प्राणी को उस के करतूत का। कोई अत्याचार नहीं है आज। वास्तव में अल्लाह अतिशीघ्र हिमाय लेने वाला है।

18. तथा आप सावधान कर दें उन को आगामी समीप दिन से जब दिल मुंह को आ रहे होंगे। लोग शोक से भरे होंगे नहीं होगा अत्याचारियों का कोई मित्र न कोई सिफारशी जिस की बात मानी जाये।

19. वह जानता है आँखों की चोरी तथा जो (भेद) सीने छुपाते हैं।

20. अल्लाह ही निर्णय करेगा सत्य के साथ। तथा जिन को वह पुकारने है अल्लाह के अनिरिक्त वह कोई निर्णय नहीं कर सकते। निश्चय अल्लाह ही भली-भाँति सुनने-देखने वाला है।

21. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पूर्व थे। वह इन से अधिक थे बल में तथा अधिक चिन्ह छोड़ गये धरती में। तो पकड़ लिया अल्लाह ने उन को उन के पापों के कारण और नहीं था उन के लिये अल्लाह से कोई बचाने वाला।

22. यह इस कारण हुआ कि उन के पास लाते थे हमारे रसूल खुली निशानियाँ, तो उन्होंने कुफ्र किया। अन्ततः पकड़ लिया उन्हें अल्लाह ने। वस्तुतः वह अति

الْيَوْمَ نَخْرُجُ كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْمَصَائِرِ إِذْ هُمْ يُقَالُونَ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُفْسِدُوا ظَعْمًا ۝

يَعْلَمُ غَايَةَ السَّرَائِرِ وَمَا تَعْلَمُ السُّدُورُ ۝

وَاللَّهُ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحَقِّ الْقَوْلِ إِذْ تَخْرُجُ مِنْ ذَوْبِهِ لَا يَفْضُلُونَ بَيْنَهُ إِنْ اللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَنَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمُ سَادِدِينَ قُوَّةً وَنَارًا فِي الْأَرْضِ وَآخِذِينَ بِاللَّهِ يَدْعُوهُمْ وَمَا كَانُوا لَهُمْ فِي الْحَيَاةِ ۝

دِيكَرَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ فِي بَيْنِهِمْ رُسُلًا هُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَلَّمُوا فَوَاحِدَهُمْ اللَّهُ رَبَّهُ قَوْلًا شَوِيدًا الْوَاقِعِ ۝

शक्तिशाली घोर यातना देने वाला है।

23. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों और हर प्रकार के प्रामाण के साथ।

24. फिरऔन और (उस के मंत्री) हामान तथा कारून के पास। तो उन्होंने ने कहा: यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।

25. तो जब वह उन के पास सत्य लाया हमारी ओर से तो सब ने कहा: बध कर दो उन के पुत्रों को जो ईमान लाये हैं उस के साथ, तथा जीवित रहने दो उन की म्त्रियों को। और काफिरों का षड्यंत्र निष्फल (व्यर्थ) ही हुआ ¹।

26. और कहा फिरऔन ने (अपने प्रमुखों से): मुझे छोड़ो, मैं बध कर दूँ मूसा को। और उसे चाहिये कि पुकारे अपने पालनहार को। वास्तव में मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारे धर्म को ² अथवा पैदा कर देगा इस धरती (मिस्र) में उपद्रव।

27. तथा मूसा ने कहा मैं ने शरण ली है अपने पालनहार तथा तुम्हारे पालनहार की प्रत्येक अहंकारी से जो ईमान नहीं रखता हिसाब के दिन पर।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝

فَعَقَّ جَانُودُهُم بِرَأْسِهِ مِنْ عَشْبٍ نَّاقٍ لَّوِ افْتَرَوْا بُدَاءَ الْيَهُودِ أَمْوَالَهُمْ وَاسْتَعْجِلُوا بِسَاءِ فِعْلِهِمْ وَكَذَّبُوا الْكُفْرَ إِلَىٰ ضَلِيلٍ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝

وَقَالَ مُوسَى إِنِّي خَشِيتُ رَبِّي وَرَبَّكُمْ مِنْ كُلِّ مَشْكُوكٍ لَا يَأْتِيَنَّكُمْ يَوْمَ الْحِسَابِ ۝

1 अर्थात् फिरऔन और उस की जानि का। जब मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन की जानि बनी इस्राइल को कोड़ हानि नहीं हुई। इस से उन की शक्ति बढ़ती ही गई यहाँ तक कि वह पवित्र स्थान के स्वामी बन गये।

2 अर्थात् शिर्क तथा देवी देवता की पूजा से रोक कर एक अल्लाह की इबादत में लगा देगा। जो उपद्रव तथा अशान्ति का कारण बन जायेगा और देश हमारे हाथ से निकल जायेगा।

28. तथा कहा एक इमान वाले व्यक्ति ने फिरऔन के घराने के, जो छुपा रहा था अपना इमान क्या तुम बध कर दोगे एक व्यक्ति को कि वह कह रहा है मेरा पालनहार अल्लाह है? जब कि वह तुम्हारे पास लाया है खुली निशानियाँ तुम्हारे पालनहार की ओर से? और यदि वह झूठा हो तो उसी के ऊपर है उन का झूठा और यदि सच्चा हो तो आ पड़ेगा वह कुछ जिसकी तुम्हें धमकी दे रहा है। वास्तव में अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता उसे जो उल्लंघनकारी बहुत झूठा हो।

29. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारा राज्य है आज, तुम प्रभावशाली हो धरती में, तो कौन हमारी रक्षा करेगा अल्लाह की यातना से यदि वह हम पर आ जाये? फिरऔन ने कहा मैं तुम सब को वही समझा रहा हूँ जिसे मैं उचित समझता हूँ और तुम्हें सीधी ही राह दिखा रहा हूँ।

30. तथा उस ने कहा जो इमान लाया हे मेरी जाति। मैं तुम पर डरता हूँ (अगले) समुदायों के दिन जैसे (दिन¹) में।

31. नूह की जाति की जैसी दशा से, तथा आद और समूद की एवं जो उन के पश्चात् हुये तथा अल्लाह नहीं चाहता कोई अत्याचार भक्तों के लिये।

وَقَالَ لَعَلَّ مُؤْمِنِينَ إِيَّايَ يَدْعُونَ يَكْفُرُ
إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَهُ لِمَقَوْلِ رَبِّي لَأَتِيَنَّ
وَقَدْ جَاءَ كُفْرًا لِمَقَوْلِ رَبِّي لَأَتِيَنَّ
كَافِرًا فَاصْلَحْ لَهُ كَلْبَهُ لَهُ وَلَئِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ
بَعْضُ الْوَيْدِ يَكْفُرْ لِرَبِّ الْإِلَهِ لَا يَتَّقِي
مَنْ هُوَ مُشْرِكٌ كَذَّابٌ ۝

يَعْمُرُ لَكُمْ الْمَلَأَ لِيَوْمَ ظَهَرِيَّ فِي الْأَرْضِ
فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنِ جَاءَنَا فَقَالَ
يُؤْعَوْنَ مَا يُرِيدُ الْإِمَامُ أَرَى وَمَا أَهْبَ بِكُمْ
إِلَّا سَيْلٌ أَوْ رَمَادٌ ۝

وَقَالَ الْوَيْدِ مَنْ يَدْعُونَ لِيَوْمَ
عَلَيْكُمْ مِثْلُ يَوْمِ الْأَحْرَابِ ۝

مِثْلَ دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَشُعُوبَ الْأَمِّيَّةِ
مِنْ بَعْدِهِمْ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظِلْمًا لِلْعَالَمِينَ ۝

1 अर्थात् उन की यातना के दिन जैसे दिन में

32. तथा है मेरी जानि! मैं डर रहा हूँ
तुम पर एक-दूसरे को पुकारने के
दिन¹ से।

وَيَقَوْمٍ إِلَىٰ آخَاتٍ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
التَّسَاوُفِ

33. जिस दिन तुम पीछे फिर कर
भागोगे, नहीं होगा तुम्हें अल्लाह से
कोई बचाने वाला। तथा जिसे अल्लाह
कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ
प्रदर्शक नहीं।

يَوْمَ تَوْتُونَ مَذْجُومٍ مَّا لَكُم مِّنَ اللَّهِ مِن حَافِظٍ
وَمَن يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ

34. तथा आये यूसुफ तुम्हारे पास इस
से पूर्व खुले प्रमाणों के साथ, तो
तुम बराबर संदेह में रहे उस से जो
तुम्हारे पास लाये। यहाँ तक कि जब
वह मर गये तो तुम ने कहा कि
कदापि नहीं भेजेगा अल्लाह उन के
पश्चात् कोई रसूल।² इसी प्रकार
अल्लाह कुपथ कर देता है। उसे जो
उस्रधनकारी डाँवाडोल हो।

وَلَقَدْ جَاءَ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ مِمَّا
رُلُّوا فِي شَكٍّ مِّمَّا جَاءَ كُرِيمٌ حَتَّىٰ إِذْ هَبْتَ شَيْئًا
لَّئِنَّكَ لَمِنَ الْيَاسِرِينَ

35. जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में
बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उन के
पास आया हो। तो यह बड़े क्रोध की
बात है अल्लाह के समीप तथा उन के
समीप जो इमान लाये हैं। इसी प्रकार
अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक
अहंकारी अत्याचारी के दिल पर।

إِنَّمَا يَرْجِئُ الْفَاسِقِينَ إِلَىٰ آيَاتِ اللَّهِ وَمُؤْمِنِيهِمْ أَن تَكُونَ
لَهُمْ مَقَامًا عَذَابُهُمْ وَوَعْدُ الْغَائِبِينَ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّكَ
فِي عَيْنِ اللَّهِ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّتَبِعَةٌ

36. तथा कहा फिरऔन ने कि हे हामान!
मेरे लिये बना दो एक उच्च भवन,
सम्भवतः मैं उन मार्गों तक पहुँच सकूँ

وَقَالَ دِرْعَاقُ بْنُ جَاهِشٍ إِنَّ فِي صَدْرِ الْعِلِّ بْنِ أَبِي
الْمَعْتَدِ

1 अर्थात् प्रलय के दिन से जब भय के कारण एक-दूसरे को पुकारेंगे।

2 अर्थात् तुम्हारा आचरण ही प्रत्येक नबी का विरोध रहा है। इसीलिये तुम समझते थे कि अब कोई रसूल नहीं आयेगा।

37. आकाश के मार्गों तक ताकि मैं देखू मसा के पुज्य (उपास्य) को। और निश्चय मैं उसे झूठा समझ रहा हूँ। और इसी प्रकार शोभनीय बना दिया गया फिरऔन के लिये उस का दुष्कर्म तथा रोक दिया गया संमार्ग में। और फिरऔन का षड्यंत्र विनाश ही में रहा।

38. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे मेरी जाति! मेरी बात मानो, मैं तुम्हें सीधी राह बता रहा हूँ।

39. हे मेरी जाति! यह संसारिक जीवन कुछ साम्यिक लाभ है। तथा वास्तव में प्रलोक ही स्थायी निवास है।

40. जिस ने दुष्कर्म किया तो उस को उसी के समान प्रतिकार दिया जायेगा। तथा जो सुकर्म करेगा नर अथवा नारी में से और वह ईमान वाला (एकेश्वरवादी) हो तो वही प्रवेश करेगा स्वर्ग में। जीविका दिये जायेंगे उस में अगणित।

41. तथा हे मेरी जाति! क्या बात है कि मैं बुला रहा हूँ तुम्हें मुक्ति की ओर तथा तुम बुला रहे हो मुझे नरक की ओर।

42. तुम मुझे बुला रहे हो ताकि मैं कुफ्र करूँ अल्लाह के साथ और साझी बनाऊँ उस का उसे जिस का मुझे कोई ज्ञान नहीं है। तथा मैं बुला रहा हूँ तुम्हें प्रभावशाली अति क्षमी की ओर।

43. निश्चित है कि तुम जिस की ओर

أَسْبَابِ السَّمَوَاتِ فَأَطْلِعَ إِلَى اللَّهِ مُؤْمِنًا وَإِنِّي
لَأَكْظُمُهُ كَذِبًا أَتَىكَ الْفِتْنَةُ يَكْفُرُونَ سَوْءَ عَذَابِهِ
وَصَدَّ عَنِ الْبَيْتِ وَمَا كُنَّا بِمَنْحُولٍ إِلَّا إِن
تَبَايَعْنَا

وَقَالَ الْيَهُودِيُّ آمَنَّا بِقَوْلِ الْيَهُودِ أَهْلُكُمْ سَبِيلُ
الرَّشَادِ

يَقُولُونَ إِنَّمَا هَذَا الصِّبْغَةُ الدُّنْيَا مَتَاءٌ ذِاقُوا
الْآثَرَ إِنَّمَا فِي دَارِ الْقَرَارِ

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُخْرِئُهَا إِلَّا يُلَاقِهَا وَمَنْ
عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْتَنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْمَوْنَ فِيهَا
بِمَاءٍ حَسْبَاءٍ

وَيَقُولُ مَنَّا أَوْ لَوْ كُنَّا إِلَى الْجَنَّةِ وَتَدْعُونَنِي
إِلَى الْإِيمَانِ

تَدْعُونَنِي بِالْكَفَرِ يَا ظُلَمَاءُ أَشْهَدُكُمْ بِهِ مَا لَيْسَ
لِي بِهِ حَقٌّ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْغَيْرِ مِنَ الْعَقْرِ

لَا حَرَمَ أَلَمَّا تَدْعُونَنِي إِلَى الْبَيْتِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي

मुझे बुला¹ रहे हो वह पुकारने योग्य नहीं है न लोक में न परलोक में तथा हमें जाना है अल्लाह ही की ओर, तथा वास्तव में अनिक्रमी ही नारकी है।

الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَنْ مَّكَانًا إِلَى اللَّهِ
وَأَنَّ الشُّرَكَائِينَ هُمْ أَعْيُنُ النَّارِ

44. तो तुम याद करोगे जो मैं कह रहा हूँ, तथा मैं समर्पित करता हूँ अपना मामला अल्लाह को। वास्तव में अल्लाह देख रहा है भक्तों को।

فَتَذَكَّرُونَ مَا قَوْلُكُمْ وَأَنْتُمْ أَصْرَقُونَ
إِنَّ اللَّهَ بِصِغِيرِ الْبَضَائِ

45. तो अल्लाह ने उसे सुरक्षित कर दिया उन के षडयंत्र की बुराईयों में। और घेर लिया फिरऔनियों को घुरी यातना में।

لِقَوْمِ اللَّهِ سَيِّئَاتٍ مَا مَكُرْتُمْ وَهَآئِ
بِأَلٍ فَرَعُونَ سُوءَ الْعَذَابِ

46. वे² प्रस्तुत किये जाते हैं अग्नि पर प्रातः तथा संध्या। तथा जिस दिन प्रलय स्थापित होगी (यह आदेश होगा) कि डाल दो फिरऔनियों को कड़ी यातना में।

النَّارِ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ
تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ
أَشَدَّ الْعَذَابِ

47. तथा जब वह झगड़ेंगे अग्नि में, तो कहेंगे निबल उन से जो बड़े बन कर रहे हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम दूर करोगे हम से अग्नि का कुछ भाग?

وَالَّذِينَ يَتَّبِعُوكُمْ فِي النَّارِ يُعْزَلُ عَنْهُمْ
يَوْمَئِذٍ الشُّكْرُ وَآرَاءُ آلِ الْكَافِرِينَ
فَقُلْ أَنْتُمْ تُسْأَلُونَ عَنْ نَسَبِكُمْ مِنَ النَّارِ

48. वे कहेंगे जो बड़े बन कर रहे हम सब इसी में हैं। अल्लाह निर्णय कर

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا وَآرَاءُ كُلِّ بَغِيٍّ إِنَّ اللَّهَ

1 क्योंकि लोक तथा परलोक में कोई सहायता नहीं कर सकते (देखिये सूरह फातिर आयत 140 तथा सूरह अत्काफ, आयत 5)

2 हदीस में है कि जब तुम में से कोई मरता है तो (कब्र में) उस पर प्रातः संध्या उस का स्थान प्रस्तुत किया जाता है, (अर्थात् स्वर्गी है तो स्वर्ग और नारकी है तो नरक)। और कहा जाता है कि यही प्रलय के दिन तेरा स्थान होगा। (सहीह बुखारी: 1379, मुस्लिम: 2866)

चुका है भक्तों (बंदों) के बीच।

قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝

49. तथा कहेंगे जो अग्नि में हैं नरक के रक्षकों से: अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हम से हल्की कर दे किसी दिन कुछ यातना।

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝

50. वह कहेंगे: क्या नहीं आये तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण ले कर? वे कहेंगे क्यों नहीं। वह कहेंगे तो तुम ही प्रार्थना करो। और काफिरों की प्रार्थना व्यर्थ ही होगी।

قُلْ أَوَلَمْ تَكُنْ تَأْتِيكُم رُّسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَلَوْلَا إِنَّا قَالُوا إِنَّا نَدْعُوهُ وَمَا نَدْعُوهُ لَكَبِيرٌ ۚ إِنَّكَ إِنَّا صَدَقْنَا ۚ

51. निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लाये संसारिक जीवन में तथा जिस दिन¹ साक्षी खड़े होंगे।

إِنَّا لَنُصَدِّقُنَّكَ وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي حَيَاتِهِمُ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُونَ لِأَشْهَادٍ ۚ

52. जिस दिन तही लाभ पहुँचायेगी अत्याचारियों को उन की क्षमा याचना। तथा उन्हीं के लिये धिक्कार और उन्हीं के लिये बुरा घर है।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الْعُلَمَاءُ لَهُمْ مَعْرِفَتُهُمْ وَلَهُمُ الْعَذَابُ وَلَهُمْ مُّوَدَّةُ اللَّهِ ۚ

53. तथा हम ने प्रदान किया मूसा को मार्ग दर्शन और हम ने उत्तराधिकारी बनाया इस्राईल की संतान को पुस्तक (तौरात) का।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَى وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ ۚ

54. जो मार्ग दर्शन तथा शिक्षा थी समझ वालों के लिये

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۝

55. तो (हे नबी!) आप धैर्य रखो। वास्तव में अल्लाह का वचन² सत्य है। तथा

فَصَبِّرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ

1 अर्थात् प्रलय के दिन जब अभ्यया और फरिश्ते गवाही देंगे।

2 नबीयों की सहायता करने का।

क्षमा माँगें अपने पाप¹ की। तथा पवित्रता का वर्णन करते रहें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सध्या और प्रातः।

لَا تَتَّبِعُوا مَنَاسِكَ وَتَتَّبِعُوا بِحُكْمٍ رَبِّكُمْ بِمَا لَمْ يَحْكَمْ بِهَا الْأَعْيُنُ
وَلَا تَتَّبِعُوا

56. वास्तव में जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी प्रमाण के जो आया² हो उन के पास, तो उन के दिनों में बड़ाई के सिवा कुछ नहीं है, जिस तक वह पहुँचने वाले नहीं हैं। अतः आप अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

رَبِّ الْأَيِّمِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ
سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ مِنْ رَبِّهِمْ فِي حُكْمٍ فَهُوَ الْعَزِيزُ
الْمُعِزُّ مَا هُمْ بِرَبِّ الْعِزَّةِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ
إِنَّهُ هُوَ شَهِيدُ الْمُعِزِّ ۝

57. निश्चय आकाशों तथा धरती को पैदा करना अधिक बड़ा है मनुष्य को पैदा करने से परन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।³

لَخَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْكَبِيرُ مِنْ خَلْقِ
الْإِنْسَانِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَالنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

58. तथा समान नहीं होता अंधा तथा आँख वाला। और न जो ईमान लाये और मत्कर्म किये हैं और दुकर्म। तुम (बहुत) कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَى وَالْبَصِيرُ
وَالْكَذِبُ أَمْثَلُ الْعَمَى وَعَمِلُوا الشَّيْئَاتِ
وَلَا يُلَاقُوا فِي مِلَّةٍ مُتَّةٍ كُفْرًا ۝

59. निश्चय प्रलय आनी ही है। जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

رَبُّ السَّاعَةِ لَا يَتَّبِعُهَا أَزْوَاجُهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرُ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

60. तथा कहा है तुम्हारे पालनहार ने कि

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۝

1 अर्थात् भूल चूक की, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया मैं दिन में 70 बार क्षमा माँगता हूँ और 70 बार से अधिक तौबा करता हूँ (सहीह बुखारी: 6307)

जब कि अल्लाह ने आप को निर्दोष (मामूम) बनाया है।

2 अर्थात् बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो अल्लाह की ओर से आया हो। उन के सब प्रमाण वे हैं जो उन्होंने अपने पूर्वजों से सीखे हैं। जिन की कोई वास्तविकता नहीं है।

3 और मनुष्य के पुनः जीवित किये जाने का इन्कार करते हैं।

मुझी से प्रार्थना¹ करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा। वास्तव में जो अभिमान (अहंकार) करेंगे मेरी इबादन (बंदना प्रार्थना) से तो वह प्रवेश करेंगे नरक में अपमानित हो कर।

إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي
سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ ذَٰلِكَ لَهُمْ

61. अब्राह ही ने तुम्हारे लिये रात्रि बनाई ताकि तुम विश्राम करो उस में, तथा दिन को प्रकाशमान बनाया² वस्तुतः अब्राह बड़ा उपकारी है लोगों के लिये। किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।

أَلَمْ أَهَيِّئْ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهَا
وَالنَّهَارَ مُبْهِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى
نَافٍ وَلَكِنَّ أَكْثَر النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

62. यही अब्राह तुम्हारा पालनहार है प्रत्येक वस्तु का रचयिता, उत्पत्तिकार। नहीं है कोई (सच्चा) बंदनीय उस के सिवा, फिर तुम कहाँ बहके जाते हो?

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَإِلَّا تَتُوبَ لَكُمْ ۝

63. इसी प्रकार बहका दिये जाते हैं वह जो अब्राह की आयतों को नकारते हैं।

كَذَٰلِكَ يُؤْفِكُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
يَجْعَلُونَ ۝

64. अब्राह ही है जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को निवास स्थान तथा आकाश को छत, और तुम्हारा रूप बनाया तो सुन्दर रूप बनाया। तथा तुम्हें जीविका प्रदान की स्वच्छ चीजों में। वही अब्राह तुम्हारा पालनहार है, तो शुभ है अब्राह सर्वलोक का पालनहार

أَلَمْ أَهَيِّئْ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ
بِنَاءً وَتُورَكُم فَاخْشَنَ صُورَكُمْ
وَوَرَّرَ قُصُوفَكُمْ مِنْ أَلْظَمَاتٍ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ
رَبُّكُمْ فَتَبَرَّكُوا لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

65. वह जीवित है कोई (सच्चा) बंदनीय नहीं है उस के सिवा। अतः विशेष रूप

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ

1 हदीस में है कि प्रार्थना ही बंदना है। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यही आयत पढ़ी। (निर्मिजी: 2969) इस हदीस की सनद हमन है।

2 ताकि तुम जीविका प्राप्त करने के लिये दौड़ धूप करो।

से उस की इबादत करते हुये उमी को पुकारो। सब प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार अल्लाह के लिये है।

لَهُ الدِّينُ الْحَقُّ وَرَبُّ الْعَالَمِينَ ٥

66. आप कह दें निश्चय मुझे रोक दिया गया है कि इबादत करूँ उन की जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा जब आ गये मेरे पास खुले प्रमाण। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सर्वलोक के पालनहार का आज्ञाकारी रहूँ।

قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُصِرْتُ أَنْ آتْسِلَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ٥

67. वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर वीर्य से, फिर बंधे रक्त से, फिर तुम्हें निकालता है (गर्भाशयो से) शिशु बना कर। फिर बड़ा करता है ताकि तुम अपनी पूरी शक्ति को पहुँचो। फिर बूढ़े हो जाओ तथा तुम में कुछ इस से पहले ही मर जाते हैं और यह इसलिये होता है ताकि तुम अपनी निश्चित आयु को पहुँच जाओ, तथा ताकि तुम समझो।¹

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ يُظَنُّكُمْ مِنْ عَلَقٍ ثُمَّ يُعْزِزْكُمْ عِلْقًا ثُمَّ يُنْفِخُكُمْ أَشْدَادًا ثُمَّ تُمَكِّنْهُمْ نَسْلًا يَوْمًا وَيَمُتْكُمْ مِنْ يَوْمٍ قَبْلُ وَيَتَلَقَّوْا أَهْلًا مُشْتَرِكًا ٥

68. वही है जो तुम्हें जीवन देता तथा मारता है फिर जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो कहता है: ((हो जा)) तो वह हो जाता है।

هُوَ الَّذِي يُمْرِي وَيُيَسِّتُ وَيُدَافِعُ أَمْرًا يَنْتَظِرُ يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ٥

69. क्या आप ने नहीं देखा कि जो झगड़ने² है अल्लाह की आयतों में, वह कहाँ बहकाये जा रहे है?

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَخَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَلْ يَصْعَقُونَ ٥

1 अर्थात् तुम यह समझो कि जो अल्लाह तुम्हें अमिन्त्व में लाता है तथा गर्भ से ले कर आयु पूरी होने तक तुम्हारा पालन-पोषण करना है तुम स्वयं अपने जीवन और मरण के विषय में कोई अधिकार नहीं रखते तो फिर तुम्हें वंदना भी उसी एक की करनी चाहिये। यही समझ बूझ का निर्णय है।

2 अर्थात् अल्लाह की आयतों का विरोध करते हैं।

70. जिन्हों ने झुठला दिया पुस्तक को और उसे जिस के साथ हम ने भेजा अपने रसूलों को तो शीघ्र ही वह जान लेंगे।

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَمِمَّا أُرْسِلُوا بِهِ
رُسُلُنَا فَصُوفْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

71. जब तौक होंगे उन के गलों में तथा वेड़ियाँ, वह खींचे जायेंगे।

إِلَى الْأَعْلَىٰ فِي أَغْصَانِهِمْ فَتُلْقَوْنَ
يُتَخَبَّرُونَ ﴿٧١﴾

72. खौलते पानी में फिर अग्नि में झोंक दिये जायेंगे।

فِي الْحَمِيمِ فَتُشْفَى النَّارُ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾

73. फिर कहा जायेगा उन से: कहाँ है वह जिन्हें तुम माझी बना रहे थे।

كَمْ قَبِيلٍ لَهُمْ آيَنَ مَا كُنْتُمْ تُشِيرُونَ ﴿٧٣﴾

74. अब्राह के सिवा? वह कहेंगे कि वह खो गये हम से, बल्कि हम नहीं पुकारते थे इस से पूर्व किसी चीज को, इसी प्रकार अब्राह कुपथ कर देता है काफिरो को।

مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمَّا كُنْ
تُمْ تَدْعُونَا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾

75. यह यातना इसलिये है कि तुम धरती में अवैध द्तराते थे, तथा इस कारण कि तुम अकड़ते थे।

ذَلِكَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ فِي الْأَرْضِ يَمْشُونَ
الْحَقَّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٧٥﴾

76. प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी हो कर उस में। तो वृथा स्थान है अभिमानियों का।

أَدْخُلُوا أَبْوََابَ جَهَنَّمَ خَافِئِينَ بِمَا فِيهَا فَمِنْ
مَشْأَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾

77. तो आप धैर्य रखें निश्चय अब्राह का वचन सत्य है। फिर यदि आप को दिखा दें उस (यातना) में से जिस का उन्हें वचन दे रहे हैं, या आप का निधन कर दें तो वह हमारी ओर ही फेरे जायेंगे।¹

فَأَصْبِرْ لِحُكْمِ اللَّهِ وَحَاقَّكَ مَا تَدْعُكَ بِغَضَبِ
الَّذِي نَادَىٰ هُمْ أَتَوْاكَ بِكَ فَأَلْهَمْتَ جَهَنَّمَ ﴿٧٧﴾

78. तथा (हे नबी!) हम भेज चुके हैं बहुत से रसूलों को आप से पूर्व जिन

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ كَثِيرٌ

1 अर्थात् प्रलय के दिन। फिर वह अपनी यातना देख लेंगे।

में से कुछ का वर्णन हम आप से कर चुके हैं तथा कुछ का वर्णन आप से नहीं किया है तथा किसी रसूल के (वश^१) में यह नहीं था कि वह कोई आयत (चमत्कार) ला दे परन्तु अब्बाह की अनुमति से। फिर जब आ जायेगा अब्बाह का आदेश तो निर्णय कर दिया जायेगा सत्य के साथ और क्षति में पड़ जायेंगे वहाँ झूठे लोग।

79. अब्बाह ही है जिस ने बनाये तुम्हारे लिये चौपाये ताकि सवारी करो कुछ पर और कुछ को खाओ।

80. तथा तुम्हारे लिये उन में बहुत लाभ है और ताकि तुम उन पर पहुँचो उस आवश्यकता को जो तुम्हारे^२ दिलों में है तथा उन पर और नावों पर तुम्हें सवार किया जाता है।

81. तथा वह दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ। तो तुम अब्बाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे?

82. तो क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो उन से पूर्व थे? वह उन से अधिक कड़े थे शक्ति में और धरती में अधिक चिन्ह^३ छोड़ गये। तो नहीं आया उन के काम जो वे कर रहे थे।

قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِمَّنْ مِنْ لَدُنْكَ نَصَصْنَا عَلَيْكَ
وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ فَنُفِضْ يَأْتِنِي وَخَيْرُ مَا لَكَ
الْمُجْتَرِبُونَ ۝

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا
مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً
فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلِ تُعْمَلُونَ ۝

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَكَأَنِّي أَنْتَبَهُ الْمُرُوءُونَ ۝

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ قَبْلُهَا كَيْفَ كَانَ
حَاجِجَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرَ
مِنْهُمْ وَأَشَدَّ ثَوْرًا وَشَرًّا إِلَى الْأَرْضِ
فَمَا آغْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

1 मक्का के क़ाफिर लोग नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह माँग कर रहे थे कि आप अपने सत्य रसूल होने के प्रमाण में कोई चमत्कार दिखायें जिस के अनैक उत्तर आगामी आयतों में दिये जा रहे हैं।

2 अर्थात् दूर की यात्रा करो।

3 अर्थात् निर्माण तथा भवन इत्यादि।

83. जब आये उन के पास हमारे रसूल
निशानियाँ लेकर तो वे इतराने लगे
उस ज्ञान पर¹ जो उन के पास था।
और घेर लिया उन को उस ने जिस
का वे उपहास कर रहे थे।
84. तो जब उन्होंने देखा हमारी यातना
को तो कहने लगे: हम ईमान लाये
अकेले अब्राह पर तथा नकार दिया
उसे जिसे उस का साझी बना रहे थे।
85. तो ऐसा नहीं हुआ कि उन्हें लाभ
पहुँचाता उन का ईमान जब उन्होंने
देख लिया हमारी यातना को। यही
अब्राह का नियम है जो उसके भक्तों
में चला आ रहा है। और क्षति में पड़
गये यही काफिर।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولُنَا رَبَّنَا بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْوَحْيِ وَإِنَّا لَمُنْكَرُونَ ۝

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا إِنَّا لِلّٰهِ وَأَنَّا لَهُ وَجَدْنَا
وَلَقَدْ تَابَنَا رَبُّنَا إِلٰهَ مُشْرِكِينَ ۝

فَلَمْ يَكُنْ لَّيْسَ لَهُمْ رِيءَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا
سُئِلَتِ الْيَهُودُ أَيُّ قَوْمٍ ظَلَمْتَ فِيْ أَجْدَادِ
وَحَمِرْنَا لَكِ الْكَافِرُونَ ۝

1 अर्थात् सत्यविरोधी ज्ञान।

सूरह हा मीम सज्दा - 41

سورة حم السجدة

सूरह हा मीम सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 54 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम (हा. मीम सज्दा) है। क्योंकि इस का आरंभ अक्षर (हा. मीम) से हुआ है। और आयत 37 में केवल अल्लाह ही को सज्दा करने का आदेश दिया गया है। और इस सूरह की तीसरी आयत में (फुस्मिलत) का शब्द आया है। इसलिये इस का दूसरा नाम (फुस्मिलत) भी है।
- इस के आरंभ में कुर्आन के पहचानने पर बल देते हुये सोच विचार की दावत, तथा बह्वी और रिमालत को झुठलाने पर यातना की चेतावनी दी गई है। फिर अल्लाह के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 36 तक उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है जो अपने धर्म पर स्थित हैं। और उन्हें विरोधियों को क्षमा कर देने के निर्देश दिये गये हैं। फिर आयत 40 तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने तथा मुर्दों को जीवित करने का सामर्थ्य रखने की निशानियाँ प्रस्तुत की गयी हैं।
- आयत 41 से 46 तक कुर्आन के साथ उस के विरोधियों के व्यवहार तथा उस के दुष्परिणाम को बताया गया है। फिर 51 तक शिर्क करने और प्रलय के इन्कार पर पकड़ की गयी है।
- अन्त में कुर्आन के विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये यह भविष्यवाणी की गई है कि जल्द ही कुर्आन के सच्च होने की निशानियाँ विश्व में सामने आ जायेंगी।

भाष्यकारों ने लिखा है कि जब मक्का में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी तो कु़रैश के प्रमुखों ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक व्यक्ति उनका पुत्र रबीआ को भेजा। उस ने आकर आप से कहा कि यदि आप इसे नये आमंत्रण से धन चाहते हैं तो हम आप के लिये धन एकत्र कर देंगे। और यदि प्रमुख और बड़ा बनना चाहते हैं तो हम तुम्हें अपना प्रमुख बना लेंगे। और यदि किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हों तो हम उस की भी व्यवस्था कर देंगे। और यदि आप पर भूत प्रेत का प्रभाव हो तो हम उस का उपचार करा देंगे। उत्वा की यह बातें सुन कर आप (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) ने यही मूरह उसे सुनायी जिस से प्रभावित हो कर वापिस आया। और कहा कि जो बात वह पेश करता है वह जादू ज्योतिष और काव्य-कविता नहीं है। यह बातें मून कर कुरैश के प्रमुखों ने कहा कि तू भी उस के जादू के प्रभाव में आ गया। उस ने कहा मैं ने अपना विचार बतला दिया अब तुम्हारे मन में जो भी आये वह करो। (सीरते इब्ने हिशाम- 1। 313, 314)

अल्साह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।

حَسْبُ

2. अवतरित है अत्यन्त कृपाशील
दयावान् की ओर से।

تَنْزِيلٍ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

3. (यह ऐसी) पुस्तक है सर्वस्तर वर्णित
की गई है जिस की आयते। कुर्बान
अर्वी (भाषा में) है उन के लिये जो
ज्ञान रखते हों।¹

كِتَابٌ قُرْآنٌ أَنْزَلْنَاهُ عَلَى نَبِيِّكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

4. वह शुभसूचना देने तथा सचेत करने
वाला है। फिर भी मुँह फेर लिया है
उन में से अधिकतर ने, और सुन
नहीं रहे हैं।

بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ الْأَكْثَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ

5. तथा उन्होंने कहा² हमारे दिल
आवरण (पर्दे) में हैं उस से आप
हमें जिस की ओर बुला रहे हैं। तथा
हमारे कानों में बोज़ है तथा हमारे
और आप के बीच एक आड़ है।
तो आप अपना काम करें और हम

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي غُطَائٍ مِنْ رَبِّكَ وَأَنْتَ أَبْصَرُ
أَذَانًا وَقُلُوبُنَا مِنْ بَيْنِ يَدَيْكَ وَتَنْبِيءُكَ يَجْمَلُ فَأَعْلَنَ
بَيْنَا وَبَيْنَكُمْ

1 अर्वी भाषा तथा शैली का।

2 अर्थात् मक्का के मुशरिकों ने कहा कि यह एकेश्वरवाद की बात हमें समझ में
नहीं आती इसलिए आप हमें हमारे धर्म पर ही रहने दें।

अपना काम कर रहे हैं।

6. आप कह दें कि मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा। मेरी ओर बह्वी की जा रही है कि तुम्हारा बंदनीय (पूज्य) केवल एक ही है। अतः सीधे ही जाओ उसी की ओर तथा क्षमा माँगो उस से। और विनाश है मुश्रिकों के लिये।
7. जो जकात नहीं देने तथा आखिरत को (भी) नहीं मानते।
8. निमदेह जो ईमान लाये तथा मदाचार किये उन्हीं के लिये अनन्त प्रतिफल है।
9. आप कहें कि क्या तुम उसे नकारते हो जिस ने पैदा किया धरती को दो दिन में और बनाते हो उस के साझी? वही है सर्वलोक का पालनहार।
10. तथा बनाये उस (धरती) में पर्वत उस के ऊपर तथा बरकत रख दी उस में और अंकन किया उस में उस के वासियों के आहारों का चार¹ दिनों में समान रूप² से प्रश्न करने वालों के लिये
11. फिर आकर्षित हुआ आकाश की ओर तथा वह धुँवाँ था। तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आ जाओ प्रसन्न होकर अथवा दबाव से। तो दोनों ने कहा हम प्रसन्न होकर आ गये।
12. तथा बना दिया उन को सात आकाश

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ
وَاحِدٌ فَاسْتَوِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا
وَرَبِّيَ عَلَّمُ الْقُرْآنَ ۝

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
فَعَصُونَ ۝

لَئِنْ الْكَافِرِينَ أَنتُواوَعَمِلُوا الشُّرُوءَ لَهُمْ أَجْرٌ
عَزِيزٌ ۝

قُلْ أَهْلَكُمُ لَتَكْفُرْنَ يَا أَيُّهَا خَلْقُ الْأَرْضِ
يَوْمَئِذٍ تَجْعَلُونَ لَهُ آدَاؤَ ذَلِكَ رَبُّ
الْعَالَمِينَ ۝

وَجَعَلَ فِيهَا أَدْنَىٰ مِنْ قَوَّةٍ وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ
فِيهَا أَقْوَامًا لَّيُّ الرِّجَّةِ آيَاتٍ وَمَسَاوٍ
لِّلشَّائِبِينَ ۝

لَهُ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ
لَهَا قَدْ لَازِئْتُ أَنْتِي طَوْعًا أَوْ كَرْهًا
قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعَتَيْنِ ۝

فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأُثْقِلَ فِي

- 1 अर्थात् धरती को पैदा करने और फैलाने के कुल चार दिन हुये।
- 2 अर्थात् धरती के सभी जीवों के आहार के ससाधन की व्यवस्था कर दी। और यह बात बना दी ताकि कोई प्रश्न करे तो उसे इस का ज्ञान करा दिया जाये।

दो दिन में। तथा बहरी कर दिया
प्रत्येक आकाश में उस का आदेश।
तथा हम ने सुसज्जित किया सभीप
(संसार) के आकाश को दीपों (तारों)
से तथा सुरक्षा के¹ लिये। यह अति
प्रभावशाली सर्वज्ञ की योजना है।

13. फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप
कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर
दिया कड़ी यातना से जो आद तथा
समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।

14. जब आये उन के पास उन के रसूल
उन के आगे तथा उन के पीछे² से
कि न इबादत (बंदना) करो अल्लाह
के सिवा की। तो उन्होंने कहा यदि
हमारा पालनहार चाहता तो किसी
फरिश्ते को उतार देता।³ अतः तुम
जिस बात के साथ भेजे गये हो हम
उसे नहीं मानते।

15. रहे आद तो उन्होंने अभिमान किया
धरती में अवैधा तथा कहा कि कौन
हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने
नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने उन को
पैदा किया है उन से अधिक है बल में,
तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।

16. अन्ततः हम ने भेज दी उन पर
प्रचण्ड वायु कुछ अशुभ दिनों में।

سَمَاءَ أَرْهَأَ وَرَمَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَارِيمَ يُخَفِّفُهَا
ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

فَإِنْ عَرَضُوا فَقُلْ أَنَذَرْتُكُمْ صِيعَةً مِثْلَ صِيعَةِ
عَادٍ وَثَمُودَ

وَجَاءَ تِلْكَ الرُّسُلُ مِنْ رَبِّي أَيْدِيَهُمْ وَمِنْ
خَلْقِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ
مَلَائِكَةً فَاإِنَّمَا يُلْقِيهِمْ كُفْرًا

فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ قُوَّةً مِنَّا أُولَئِكَ هِيَ الْآيَةُ
خَلْقُهُمْ هَوَاشِدُ مِنْهُمْ قُوَّةٌ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يَجْحَدُونَ

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا مَرْصُورًا فِي أَيَّامٍ
بَعْضُهَا أَرْبَعٌ مِائَتَ سَنَةٍ مُدَّةً

1 अर्थात् शैतानों से रक्षा के लिये। (देखिये सूरह माफकान, आयत 7 से 10 तक)

2 अर्थात् प्रत्येक प्रकार से समझाने रहे।

3 वे मनुष्य को रसूल मानने के लिये तय्यार नहीं थे। (जिस प्रकार कुछ लोग जो रसूल को मानते हैं पर वे उन्हें मनुष्य मानने को तय्यार नहीं हैं)। (देखिये सूरह अन्आम आयत 9-10, सूरह मुमिनून, आयत 24)

ताकि चखाये उन्हें अपमानकारी यातना संसारिक जीवन में। और आखिरत (परलोक) की यातना अधिक अपमानकारी है। तथा उन्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी।

17. और रही समूद तो हम ने उन्हें मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्ग दर्शन से प्रिय समझा अन्ततः पकड़ लिया उन को अपमानकारी यातना की कड़क ने उस के कारण जो वह कर रहे थे।
18. तथा हम ने बचा लिया उन को जो ईमान लाये तथा (अवैज्ञा से) डरते रहे।
19. और जिस दिन अन्नाह के शत्रु नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे तो वह रोक लिये जायेंगे।
20. यहाँ तक की जब आजायेंगे उस (नरक) के पास तो साक्ष्य देंगे उन पर उन के कान तथा उन की आँखें और उन की खालें उस कर्म का जो वह किया करते थे।
21. और वे कहेंगे अपनी खालों से क्यों साक्ष्य दिया तुम ने हमारे विरुद्ध? वह उत्तर देगी कि हमें बोलने की शक्ति प्रदान की है उस ने जिस ने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति दी है। तथा उसी ने तुम्हें पैदा किया प्रथम धार और उमी की ओर तुम सब फेंरे जा रहे हो।

لَمَّا يَفْقَهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ فِي أَعْيُنِ النَّاسِ
وَلَعَذَابُ الْعَذَابِ آخِرُ وَهُمْ يُصْعَقُونَ

وَأَمَّا لُؤْلُؤُ فَهَذَا بَنَاهُمْ فَاسْتَحْيُوا الْقَوْمَ عَلَى الْهَدْيِ
فَإَعْدَدْ لَهُمْ صِيقَةً عَذَابِ الْجَهَنَّمَ بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ

وَجَحِيَّتِ الْيَمِينِ اسْتَوْرَقُوا مَا يَتَّقُونَ

وَيَوْمَ يُنْفَخُ أَمْرُ اللَّهِ إِلَى السَّاءِ فَهُمْ
يُؤْزَقُونَ

حَتَّى إِذَا مَا جَاءَهُمْ شَهِدَتْ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ
وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

وَقَالُوا الْجُلُودُ دُونَهُمْ شَهِدَتْ بِنَا مَا كَانُوا
تُكَلِّمُ اللَّهُ الَّذِينَ أَنْطَقَ كُلُّ شَيْءٍ وَهُمْ
خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَرَ لِيَوْمَ تُرْجَعُونَ

22. तथा तुम (पाप करते समय ¹) छुपते नहीं थे कि कही साक्ष्य न दे तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँख एवं तुम्हारी खालें। परन्तु तुम समझते रहे कि अल्लाह नहीं जानता उस में से अधिकतर बातों को जो तुम करते हो।

23. इसी कुबिचार ने जो तुम ने किया अपने पालनहार के विषय में तुम्हें नाश कर दिया। और तुम विनाशों में हो गये।

24. तो यदि वे धैर्य रखें तब भी नरक ही उन का आवास है। और यदि वे क्षमा माँगे तब भी वे क्षमा नहीं किये जायेंगे।

25. और हम ने बना दिये उन के लिये ऐसे साथी जो शोभनीय बना रहे थे उन के लिये उन के अगले तथा पिछले दुकर्मों को। तथा सिद्ध हो गया उन पर अल्लाह (की यातना) का वचन उन समुदायों में जो गुजर गये इन से पूर्व जितों तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षतिग्रस्त थे।

26. तथा काफिरों ने कहा ² कि इस कुरआन को न सुनो। और कोलाहल (शोर) करो उस (के सुनाने) के समया। सम्भवतः तुम प्रभुत्वशाली हो जाओ।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَعِزُّونَ أَنْ يُشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا طُلُوعُكُمْ وَلَكِنْ كُنْتُمْ أَنْ لَّيْلَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ۝

وَذِكْرُكُمْ فَتُكِّنُوا إِلَيْهِ فْتَغْنِي عَنْكُمْ أَرْسَلَكُمْ فَاصْبَحْتُمْ مِنَ الْعَجِرِينَ ۝

فَإِنْ يَصْبرُوا فَالْآلَاءُ مَتَوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعْجِلُوا فَالْآلَاءُ مِنَ الْمُنْقَضِينَ ۝

وَقَفَّضْنَا لَهُمْ قُرُونًا فَزَيَّلُوا لَهُمْ ثَابِتِينَ آيَاتِهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَسْمِهِمْ فَذُكِّلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْيَمِينِ وَالْإِثْمِ لَهُمْ وَأَنْتُمْ غَائِبُونَ ۝

وَقَالَ الْكَافِرُونَ كُفُّوا أَلْسِنَتَكُمْ يَا هَذَا الْقُرْآنُ وَالْغَوَامِيزُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَبُونَ ۝

1 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि खाना कौन्दा के पास एक घर में दो कुरैशी तथा एक सकफी अथवा दो सकफी और एक कुरैशी थे। तो एक ने दूसरे से कहा कि तुम समझने हो कि अल्लाह हमारी बातें सुन रहा है? किसी ने कहा यदि कुछ सुनता है तो सब कुछ सुनता है। उसी पर यह आयत उतरती। (महीह बुखारी: 4816, 4817, 7521)

2 मक्का के काफिरों ने जब देखा कि लोग कुरआन सुन कर प्रभावित हो रहे हैं तो उन्होंने यह याजना बनायी।

27. तो हम अवश्य चखायेंगे उन को जो काफिर हो गये कड़ी यातना और अवश्य उन को कुफल देंगे उस दुष्कर्म का जो वे करते रहे।

28. यह अब्राह के शत्रुओं का प्रतिकार नरक है। उन के लिये उस में स्थायी घर होंगे उस के बदले जो हमारी आयतों को नकार रहे हैं।

29. तथा वह कहेंगे जो काफिर हो गये कि हे हमारे पालनहार! हमें दिखा दे उन को जिन्होंने हमें कृपथ किया है जिन्हीं तथा मनुष्यों में से। ताकि हम रोद दें उन दोनों को अपने पैरों से। ताकि वह दोनों अधिक नीचे हो जायें।

30. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अब्राह है फिर इसी पर स्थित रह¹ गये तो उन पर फरिश्ते उतरते हैं² कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।

31. हम तुम्हारे सहायक हैं संसारिक जीवन में तथा परलोक में, और तुम्हारे लिये उस (स्वर्ग) में वह चीज है जो तुम्हारा मन चाहे तथा उस में तुम्हारे लिये वह है जिस की तुम माँग करोगे।

32. अतिथि सत्कार स्वरूप अति क्षमी दयावान् की ओर से।

فَلْيَسُوْا يَنْفَنَ الْاَبْوَابَ لِّمَنْ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا
وَلْيَعْرِيْنَهُمْ اَسْوَابُ الْاَبْوَابِ كَانُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ

ذٰلِكَ جَزَاءُ اَعْدَاءِ التَّوَابِعَةِ اَلَمْ نَجْعَلْهَا
دَارًا لِّخُلْدٍ جَزَاءُ يَمَنَّا كَانُوْا يَسْتَبِيْهِنَا
بِمَعْصَدُوْنَ ۝

وَقَالَ الْاَبْوَابُ لِمَنْ كَفَرُوْا رَبَّنَا اَرِنَا الَّذِيْنَ اَصْلَحْنَا
مِنَ الْاَبْوَابِ وَالَّذِيْنَ نَجَعْنَاهُمْ نَحْنًا قَدْ اَمِنَّا
بِنُكْرًا مِّنَ الْاَسْتَبِيْهِ ۝

اِنَّ الْاَبْوَابَ قَالُوْا رَبَّنَا اِنَّنَا نَسْتَقْسِمُ بِمَا نَنْتَقِلُ
عَلَيْهِمْ اَلْمَلٰٓئِكَةُ اَلَا نَحْنُ فَوْ وَاَلَا نَحْمَدُكَ وَاَنْتَ اَشَدُّ
بِالْحُسْنٰوَاتِ لِمَنْ تُوَعَّدُوْنَ ۝

لَعَنُوكُمْ لَكُمُ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ
وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتٰٓئِيْنَ الْفُسْكَهٖ وَاَكْمَرُهَا مَا تَدْعُوْنَ ۝

رُّلَا مِّنْ عَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ۝

1 अर्थात् प्रत्येक दशा में आज्ञा पालन तथा एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे।

2 उन के मरण के समय।

33. और किस की बात उस से अच्छी होगी जो अल्लाह की ओर बुलाये तथा सदाचार करे। और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।

34. और समान नहीं होने पुण्य तथा पाप आप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हों। तो सहसा आप के तथा जिस के बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया।¹

35. और यह गुण उन्हीं को प्राप्त होता है जो सहन करें, तथा उन्हीं को होता है जो बड़े भाग्यशाली हों।

36. और यदि आप को शैतान की ओर से कोई संशय हो तो अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

37. तथा उस की निशानियों में से है रात्रि तथा दिवस तथा सूर्य तथा चन्द्रमा, तुम सज्दा न करो सूर्य तथा चन्द्रमा को। और सज्दा करो उस अल्लाह को जिस ने पैदा किया है उन को, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत (बंदना) करते हो।²

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَةُ وَالنَّيِّبَةُ إِذْ دَعَا إِلَى اللَّهِ أَحْسَنُ يَوْمَ الْقِيَامِ يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأُولَٰئِكَ فِي جَهَنَّمَ ﴿٣٤﴾

وَمَا يَنْفَعُهُمْ إِذَا يَدْعُوا إِلَيْهِمْ صَبْرًا وَلَا يَقْنَبُ إِلَّا ذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

وَأَمَّا يَنْزَغَنَّ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَمِعْ يَا ذَاكِرَ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ رَآءِئِهِمْ ۚ ﴿٣٧﴾

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तथा आप के माध्यम से सर्वसाधारण मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया है कि बुराई का बदला अच्छाई से तथा अपकार का बदला उपकार से दें जिस का प्रभाव यह होगा कि अपना शत्रु भी हार्दिक मित्र बन जायेगा।

2 अर्थात् सच्चा बंदनीय (पूज्य) अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। यह सूर्य चन्द्रमा और अन्य आकाशीय ग्रह अल्लाह के बनाये हुये हैं। और उसी के आधीन हैं। इसलिये इन को सज्दा करना व्यर्थ है। और जो ऐसा करता है वह अल्लाह के साथ उस की बनाई हुई चीज को उस का माझी बनाना है जो शिर्क और

38. तथा यदि वह अभिमान करे तो जो (फरिश्ते) आप के पालनहार के पास हैं वह उस की पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं रात्रि तथा दिवस में, और वह थकते नहीं हैं।

فَإِنْ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ
بِالْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ وَهُمْ لَا تَشْعُبُونَ ﴿٣٨﴾

39. तथा उस की निशानियों में से है कि आप देखते हैं धरती को महमी हुई। फिर जैसे ही हम ने उस पर जल बरसाया तो वह लहलहाने लगी तथा उभर गई। निश्चय जिस ने जीवित किया है उसे अवश्य वही जीवित करने वाला है मुर्दा को। वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَرَىٰ الْأَرْضَ خَاسِيَةً وَأَنْزَلْنَا
عَلَيْهَا الْمَاءَ فَاهْتَرَتْ وَرَبَّتْ إِنَّ إِلَىٰ أَعْيُنِنَا
السُّبُوتُ ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا عَلَىٰ ثَمَرِهِ ذُبُورًا ﴿٣٩﴾

40. जो टूट निकालते हैं हमारी आयतों में वह हम पर छुपे नहीं रहते। तो क्या जो फेंक दिया जायेगा अग्नि में उत्तम है अथवा जो निर्भय हो कर आयेगा प्रलय के दिन? करो जो चाहो, वास्तव में वह जो तुम करते हो उसे देख रहा है।¹¹

إِنَّ الَّذِينَ يُجْعِدُونَ فِي الْفِتَنِ لَا يُغْنُونَ عَنْهُمْ
أَكْمَنُ يُنْفِقُونَ فِي كَيْدٍ خَيْرٌ أَمْ يَكْفُرُونَ ۚ إِنَّهُمْ
يَعْلَمُونَ أَعْمَلُوا مَا يَسْتَحْسِنُونَ ۚ إِنَّهُمْ يَكْمُلُونَ
يُصِيبُونَ ﴿٤٠﴾

41. निश्चय जिन्होंने कफ़ कर दिया इस शिक्षा (कुरआन) के साथ जब आ गई उन के पास। और सच्च यह है कि यह एक अति सम्मानित पुस्तक है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَكَبَاءُ مُرْسِلِينَ
وَلَئِنَّ لَكُم مِّنْ عِندِ رَبِّكُم مَّوْءِدَةٌ ﴿٤١﴾

अक्षम्य पाप तथा अन्याय है। सज्दा करना इबादत है। जो अल्लाह ही के लिये विशेष है। इसीलिये कहा है कि यदि अल्लाह ही की इबादत करते हो तो सज्दा भी उसी के लिये करो। उस के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसे सज्दा करना उचित हो क्योंकि सब अल्लाह के बनाये हुये हैं सूर्य हो या कोई मनुष्य। सज्दा आदर के लिये हो या इबादत (बंदना) के लिये, अल्लाह के सिवा किसी को भी सज्दा करना अवैध तथा शिर्क है जिस का परिणाम सदैव के लिये नर्क है। आयत 38 पूरी कर के सज्दा करो।

1 अर्थात् तुम्हारे मनमानी करने का कुफल तुम्हें अवश्य देगा।

42. नहीं आ सकता झूठ इस के आगे
से और न इस के पीछे से। उतरा है
तत्त्वज्ञ प्रशंसित (अब्राह) की ओर से।

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ
تَنْزِيلٌ مِنْ حَيْكَةِ حَكِيمٍ ۝

43. आप से वही कहा जा रहा है जो आप
से पूर्व रसूलों से कहा गया।¹ वास्तव
में आप का पालनहार क्षमा करने
(तथा) दुःखदायी यातना देने वाला है।

مَا يَقُولُ لَكَ الْإِلَٰهَ أَقْدِيرُ لِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ
رَبُّكَ لَدُنْكَ مَغْفُورٌ وَذُو عَقَابٍ ۝

44. और यदि हम इसे बनाते अर्ची (के
अतिरिक्त किसी) अन्य भाषा में तो
वह अवश्य कहते कि क्यों नहीं खोल
दी गई उस की आयतें? यह क्या
कि (पुस्तक) गैर अर्ची और (नबी)
अर्ची? आप कह दें कि वह उन के
लिये जो इमान लाये मार्गदर्शन तथा
आरोग्यकर है। और जो इमान न
लायें उन के कानों में बोज़ है और
वह उन पर अंधापन है। और वही
पुकारे जा रहे है दूर स्थान से।²

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا فَجَعَلْنَاهُ لَوْلَا فَضَّلْتُ
آيَاتِهِمْ أَفَعَجِبِينَ وَنَحْنُ قُلُومٌ لَدَيْنَ أَمْرٍ
هَدًى وَبَشَافَةٍ لَدَيْنَ لَدَيْنَ لَدَيْنَ لَدَيْنَ
وَلَوْ لَدَيْنَ لَدَيْنَ لَدَيْنَ لَدَيْنَ لَدَيْنَ
يُوعِي ۝

45. तथा हम प्रदान कर चुके है मूसा को
पुस्तक (तौरात) तो उस में भी विभेद
किया गया और यदि एक बात पहले
ही से निर्धारित न होती³ आप के
पालनहार की ओर से, तो निर्णय कर
दिया जाता उन के बीच। निम्नदिह वह
उस के विषय में सदिह में डाँवाडोल है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاحْتَفِ بِهِ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُتًى
بَيْنَهُمْ وَلَهُمْ لَئِي شَأْنٌ وَمَنْ مَرْيَبٍ ۝

1 अर्थात् उनको जादूगर झूठा तथा कवि इत्यादि कहा गया। (देखिये सूरह जारियात आयत 52-53)

2 अर्थात् क़ुआन से प्रभावित होने के लिये इमान आवश्यक है इस के बिना इस का कोई प्रभाव नहीं होता।

3 अर्थात् प्रलय के दिन निर्णय करने की। तो समार ही में निर्णय कर दिया जाता और उन्हें कोई अवसर नहीं दिया जाता। (देखिये सूरह फातिर आयत 45)

46. जो सदाचार करेगा तो वह अपने ही लाभ के लिये करेगा। और जो दुराचार करेगा तो उस का दुष्परिणाम उसी पर होगा। और आप का पालनहार तनिक भी अन्याचार करने वाला नहीं है भक्तों पर।¹¹

47. उसी की ओर फेरा जाता है प्रलय का ज्ञान। तथा नहीं निकलते कोई फल अपने गाभों से और नहीं गर्भ धारण करती कोई मादा, और न जन्म देती है परन्तु उस के ज्ञान में। और जिस दिन वह पुकारेगा उन को कि कहाँ है मेरे साझी? तो वह कहेंगे कि हम ने तुझे बता दिया था कि हम में से कोई उस का गवाह नहीं है।

48. और खो जायेंगे¹² उन से वे जिन्हें पुकारते थे इस से पूर्वा तथा वह विश्वास कर लेंगे कि नहीं है उन के लिये कोई शरण का स्थान।

49. नहीं धकता मनुष्य भलाई (मुख) की प्रार्थना से और यदि उसे पहुँच जाये बुराई (दुख) तो (हताश) निराश¹³ हो जाता है।

50. और यदि हम उसे¹⁴ चखा दें अपनी

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَهَا
وَمَا يَنْبَغِي ظُلْمًا لِلْعَالَمِينَ ﴿١١﴾

الْيَوْمَ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْتِزُّ مِنْ
ثَمَرَاتٍ مِّنَ النَّبَاتِ وَالْهَيَاثِ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ
وَلَا تَضُرُّهُ أَرْحَامٌ ۚ وَتُؤْمَرُ بِمَا يُؤْمَرُ
وَيُنْهَىٰ بِمَا يُنْهَىٰ ۚ وَتُجْزَىٰ ۚ

وَقُلْ عَنَّا مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَقُلْ
مَالَهُمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ

لَا يَسْتَعِزُّ الْإِنْسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ ۚ وَإِنَّ فَتْنَةً
لِّمَنُوسٍ مُّقْطُوعَةٍ ۚ

وَلَكِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِنَّا مِن بَعْدِ صَرَاءَ مَسْتَهْزِئَةٍ

1 अर्थात् किसी को बिना पाप के पानना नहीं देता।

2 अर्थात् सब गैब की जाने अल्लाह ही जानता है। इसलिये इस की चिन्ता न करो कि प्रलय कब आयेगी। अपने परिणाम की चिन्ता करो।

3 यह साधारण लोगों की दशा है। अन्यथा मुसलमान निराश नहीं होता।

4 आयत का भावार्थ यह है कि काफिर की यह दशा होती है। उसे अल्लाह के यहाँ जाने का विश्वास नहीं होता। फिर यदि प्रलय का होना मान लें तो भी इसी

दया दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कह देता है कि मैं तो इस के योग्य ही था। और मैं नहीं समझता कि प्रलय होनी है। और यदि मैं पुनः अपने पालनहार की ओर गया तो निश्चय ही मेरे लिये उस के पास भलाई होगी। तो हम अवश्य अवगत कर देंगे काफ़िरो को उन के कर्मों से तथा उन्हें अवश्य घोर यातना चखायेंगे।

51. तथा जब हम उपकार करते हैं मनुष्य पर तो वह विमुख हो जाता है तथा अकड़ जाता है। और जब उसे दुःख पहुँचे तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करने लगता है।

52. आप कह दें भला तुम यह तो बताओ कि यदि यह (कुर्आन) आवाह की ओर से हो फिर तुम कुफ़ कर जाओ उस के साथ तो कौन उस से अधिक कुपय होगा जो उस के विरोध में दूर तक चला जाये?

53. हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर। यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सचच है।¹ और क्या

لَيَقُولَنَّ هَذَا إِلَى دَوْمَ أَكْفَرُ السَّامَةِ قَائِمَةً
وَلَيْنَ رُجِعْتُ إِلَى رَبِّي لَأَكْفُرَنَّ
فَلْيَمِشَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَكِبَ لَهُمُ
مِنْ عَذَابٍ عَظِيمٍ ٥١

وَإِذَا نَعَّمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ ائْتَرَضَ وَمَا يَحْمِلُهُ
فَلَمَّا مَسَّهُ الْمُرُّ ضَدَّ وَدَعَا غَيْرُيُضِ ٥٢

قُلْ أَرَأَيْتُمْ كَذَّبَ مِنْ جُنُودِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرُوا
بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقِ بَيْتِهِ ٥٣

سَيَبْلُغُهُمُ الْيَقِينُ الْآذَانُ وَنَا أَنْفُسُهُمْ حَتَّى
يَسْمَعُوا لَهْمُ أَلَمِ الْحَقِّ أَوْ لَمْ يَلْبِ بِرَبِّكَ أَلَمُ
عَلَى كُلِّ نَفْسٍ سَعِيرَةٍ ٥٤

कविचार में मग्न रहता है कि यदि अल्लाह ने मुझे संसार में सुख सुविधा दी है तो वहाँ भी अवश्य देगा। और यह नहीं समझता कि यहाँ उसे जो कुछ दिया गया है वह परीक्षा के लिये दिया गया है। और प्रलय के दिन कर्मों के आधार पर प्रतिकार दिया जायेगा।

1 कुर्आन, और निशानियों से अभिप्राय वह विजय है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के पश्चात् मुसलमानों का प्राप्त होगी। जिन से उन्हें

यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी (गवाह) है?

54. सावधान! वही संदेह में है अपने पालनहार से मिलने के विषय से। सावधान! वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है।

أَلَا أُنَبِّئُكُمْ فِي مَرَّةٍ قَلِيلٍ إِنَّ رَبَّكُمْ
الرَّاهِبُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَابِضٌ

विश्वास हो जायेगा कि कुर्आन ही सत्य है। इस आयत का एक दूसरा भावार्थ यह भी लिया गया है कि अल्लाह इस विश्व में तथा स्वयं तुम्हारे भीतर ऐसी निशानियाँ दिखायेगा। और यह निशानियाँ निरन्तर वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा सामने आ रही हैं। और प्रलय तक आती रहेंगी जिन से कुर्आन पाक का सत्य होना सिद्ध होता रहेगा।

सूरह शूरा - 42

سُورَةُ الشُّورَى

सूरह शूरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 53 आयतें हैं

- इस की आयत 38 में ईमान वालों को आपस में प्रामर्श करने का नियम बताया गया है। इसलिये इस का नाम ((सूरह शूरा)) है
- इस की आरंभिक आयतों में उन बातों को बताया गया है जिन से वही को समझने में सहायता मिलती है। फिर आयत 20 तक बताया गया है कि यह वही धर्म है जिस की वही सभी नबीयों की ओर की गई थी। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह निर्देश दिया गया है कि इस पर स्थित रह कर इस धर्म की ओर आमंत्रण दें। और जो लोग विवाद में उलझे हुये हैं उन के पास सत्य का कोई प्रमाण नहीं है।
- आयत 21 से 35 तक उन की पकड़ की गई है जो मनमानी धर्म बना कर उस पर चलते हैं। और मत्धर्म पर इमान लाने तथा सदाचार करने पर शुभसूचना दी गई है और विरोधियों के कुछ सदिहों को दूर किया गया है।
- आयत 36 से 40 तक मत्धर्म के अनुयायियों के वह गुण बताये गये हैं जो संघर्ष की घड़ी में उन्हें सफल बनायेंगे। फिर विरोधियों को सावधान करते हुये अपने पालनहार की पुकार को स्वीकार कर लेने का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में सूरह के आरंभिक विषय अर्थात् वही को और अधिक उजागर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. ऐन, सीन, काफ़ ।

حَوْرٰ

عَسَقِ

3. इसी प्रकार (अल्लाह) ने प्रकाशना¹ भेजी है आप, तथा उन (रसूलों) की ओर जो आप से पूर्व हुये हैं। अल्लाह सब से प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

4. उमी का है जो आकाशों तथा धरती में है और वह बड़ा उच्च महान् है।

5. समीप है कि आकाश फट² पड़े अपने ऊपर से, जब कि फरिश्ते पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ तथा क्षमायाचना करते हैं उन के लिये जो धरती में हैं। सुनो! वास्तव में अल्लाह ही अत्यंत क्षमा करने तथा दया करने वाला है।

6. तथा जिन लोगों ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा संरक्षक, अल्लाह ही उन पर निरीक्षक (निगरां) है और आप उन के उत्तर दायी³ नहीं हैं।

7. तथा इसी प्रकार हम ने वही (प्रकाशना) की है आप की ओर अर्थात् कूर्आन की। ताकि आप सावधान कर दें मक्का⁴ वालियों को, और जो उस

كَذَلِكَ يُوحِي الْأَمْرَ إِلَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
إِنَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَهُوَ نَعِيمٌ عَلِيمٌ

تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَمْقَطَرْنَ مِنْ قِوَمِهِمْ وَأَسْبُحَهُ
يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ اللَّهِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ
الْأَرْضِ وَالَّذِينَ فِيهَا أَلَّهُ هُوَ أَقْوَمُ الرَّحِيمُ

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَمِيطٌ عَلَيْهِمْ
وَمَا لَمْ عَلَيْهِمْ يَوْمَئِذٍ

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا يَتْلُو
أُمُّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ
فِي قُلُوبِهِمْ لِيُحْذَرُوا فِي الشَّعِيرِ

1 आरंभ में यह बताया जा रहा है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कोइ नई बात नहीं कर रहे हैं और न यह वही (प्रकाशना) का विषय ही इस संसार के इतिहास में प्रथम बार सामने आया है। इस से पूर्व भी पहले अम्बिया पर प्रकाशना आ चुकी है और वह एकेश्वरवाद का संदेश सुनाने रहे हैं।

2 अल्लाह की सहिमा तथा प्रताप के भय से।

3 आप का दायित्व मात्र सावधान कर देना है।

4 आयत में मक्का को उम्मल कुरा कहा गया है जो मक्का का एक नाम है जिस का शाब्दिक अर्थ (वासियों की माँ) है। बताया जाना है कि मक्का अरब की मूल

के आम पास हैं। तथा सावधान कर दें एकत्र होने के दिन ¹⁾ से जिस दिन के होने में कोई संशय नहीं। एक पक्ष स्वर्ग में तथा एक पक्ष नरक में होगा।

8. और यदि अल्लाह चाहता तो सभी को एक समुदाय^[2] बना देता। परन्तु वह प्रवेश कराना है जिसे चाहे अपनी दया में। तथा अन्याचारियों का कोई संरक्षक तथा सहायक न होगा।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُدْعِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ قَلِيلٍ ذُرِّيُّوهُمْ ۝

9. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा संरक्षक? तो अल्लाह ही संरक्षक है और जीवित करेगा मूर्तों को। और वही जो चाहे कर सकता है।^[3]

أَمْ اخْتَلَفُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قُلْ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْوَاقِعُ وَمَوْجِبُ السَّعَةِ وَمَنْ يَحْكَمْ عَلَيْكُمْ فِى الدِّينِ فَأُولَٰئِكَ الْمَرْءُ الْمُبِينُ ۝

10. और जिस बात में भी तुम ने विभेद किया है उस का निर्णय अल्लाह ही को करना है।^[4] वही अल्लाह मेरा पालनहार है उसी पर मैं ने भरोसा किया है तथा उसी की ओर ध्यान मग्न होता हूँ।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

बस्ती है और उस के आम-पास से अभिप्राय पूरा भूमण्डल है। आधुनिक भूगोल शास्त्र के अनुसार मक्का पूरे भूमण्डल का कन्द्र है। इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं कि क़ुरआन इसी तथ्य की ओर संकेत कर रहा हो। मारांश यह है कि इस आयत में इस्लाम के विश्वव्यापी धर्म होने की ओर संकेत किया गया है।

- 1 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है जिस दिन कर्मों के प्रतिकार स्वरूप एक पक्ष स्वर्ग में और एक पक्ष नरक में जायेगा।
- 2 अर्थात् एक ही सन्धर्म पर कर देता। किन्तु उस ने प्रत्येक को अपनी इच्छा से सत्य या असत्य को अपनाने की स्वाधीनता दे रखी है। और दोनों का परिणाम बता दिया है।
- 3 अतः उसी को संरक्षक बनाओ और उसी की आज्ञा का पालन करो।
- 4 अतः उस का निर्णय अल्लाह की पुस्तक क़ुरआन से तथा उस के रसूल की सुन्नत से लो

11. वह आकाशों तथा धरती का रचयिता है। उस ने बनाये हैं तुम्हारी जाति में से तुम्हारे जोड़े तथा पशुओं के जोड़े। वह फैला रहा है तुम को इस प्रकार। उस की कोई प्रतिमा¹ नहीं। और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

قَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا يَذُرُ الْحَبَّ وَالْحُبوبَ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

12. उसी के² अधिकार में है आकाशों तथा धरती की कृजियाँ। वह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहे तथा नाप कर देता है। वास्तव में वही प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

13. उस ने नियत³ किया है तुम्हारे लिये वही धर्म जिस का आदेश दिया था नूह को, और जिसे वही किया है आप की ओर, तथा जिस का आदेश दिया था इब्राहीम तथा मूसा और ईसा को। कि इस धर्म की स्थापना करो और इस में भेद भाव न करो। यही बात अत्रिय लगी है मुश्रिकों

ثُمَّ لَكُمْ مِنْ الْيَوْمِ مَا وَدَّعَى بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَيُحْيَى أَن يَأْتِيَنَّكَ الْيَوْمَ الْمَوْبِئَاتُ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ اللَّهِ إِنَّكَ لَكِن تَحْكُمُ لَشَرِّ الْأَشْرَافِ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ

1. अर्थात् उस के अस्तित्व तथा गुण और कर्म में कोई उस के समान नहीं है। भावार्थ यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु में उस का गुण कर्म मानना या उसे उस का अंश मानना असत्य तथा अधर्म है।

2. आयत नं० 9 से 12 तक जिन तथ्यों की चर्चा है उन में एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और सत्य से विमुख होने वालों को चेतावनी दी गई है।

3. इस आयत में पाँच नवियों का नाम ले कर बनाया गया है कि सब को एक ही धर्म दे कर भेजा गया है। जिस का अर्थ यह है कि इस मानव संसार में अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक जा भी नबी आये सभी की मूल शिक्षा एक रही है। कि एक अल्लाह को मानो और उसी एक की बंदना करो। तथा वैध अवैध के विषय में अल्लाह ही के आदेशों का पालन करो। और अपने सभी धार्मिक तथा सामाजिक और राजनैतिक विवादों का निर्णय उसी के धर्मविधान के आधार पर करो (देखिये सूरह निमा, आयत 163-164)

को जिस की ओर आप बुला रहे हैं। अल्लाह ही चुनता है इस के लिये जिसे चाहे, और सीधी राह उसी को दिखाता है जो उसी की ओर ध्यान मग्न हो।

14. और उन्होंने¹ इस के पश्चात् ही विभेद किया जब उन के पास ज्ञान आ गया आपस के विरोध के कारण तथा यदि एक वान पहले से निश्चित² न होती आप के पालनहार की ओर से तो अवश्य निर्णय कर दिया गया होता उन के बीच। और जो पुस्तक के उत्तराधिकारी बनाये³ गये उन के पश्चात् उस की ओर से संदेह में उलझे हुये हैं।

15. तो आप लोगों को इसी (धर्म) की ओर बुलाने रहें तथा जैसे आप को आदेश दिया गया है उस पर स्थित रहें। और उन की इच्छाओं पर न चलें। तथा कह दें कि मैं इमाम लाया उन सभी पुस्तकों पर जो अल्लाह ने उतारी⁴ हैं। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है। हमारे लिये हमारे कर्म हैं तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। हमारे और

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ
بَيِّنَاتٍ بَيْنَهُمْ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ سُبْحَتٍ مِنْ رَبِّكَ إِلَى
أَحَدٍ مُسْتَسْتَضِئٍ بَيْنَهُمْ وَالْأَيُّمِ لَوِثُوا
الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَقَدْ شَرِبْتُمْ مِنْهُ مُرْسِئًا

فَلِذَلِكَ دُؤٌّ وَأَسْتَوْفَتْكُمْ أُمُورٌ وَلَا تَتَّبِعُوا
أَهْوَاءَهُمْ وَقُلْ أَصَلْتُ بِمَا أَسْرَأَ اللَّهُ مِنْ
كِتَابٍ وَأُمُورٌ رَاصِدٌ بَيْنَكُمْ أَنَّهُ رُشْدًا
وَرَبُّكُمْ لَكَ أَعْيَالٌ وَلَكُمْ أَعْيَالٌ لَكُمْ لَأَعْمَةٌ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَنَّهُ جَمْعٌ بَيْنَنَا وَآلِيهِ
الْمَصِيرُ ۝

1 अर्थात् मुशूरिकों ने।

2 अर्थात् प्रलय के दिन निर्णय करने की।

3 अर्थात् यहूदी तथा ईसाइ भी सत्य में विभेद तथा संदेह कर रहे हैं।

4 अर्थात् सभी आकाशीय पुस्तकों पर जो नबियों पर उतारी गई हैं।

तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हमें एकत्र करेगा तथा उसी की ओर सब को जाना है।¹

16. तथा जो लोग झगड़ते हैं अल्लाह (के धर्म के बारे) में जब कि उसे² मान लिया गया है। उन का विवाद (कुतर्क) असत्य है अल्लाह के समीप, तथा उन्हीं पर क्रोध है और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।

17. अल्लाह ही ने उतारी है सब पुस्तकें सत्य के साथ तथा तराजू³ को। और आप को क्या पता शायद प्रलय का समय समीप हो।

18. शीघ्र माँग कर रहे हैं उस (प्रलय) की जो ईमान नहीं रखते उस पर। और जो ईमान लाये हैं वह उस से डर रहे हैं तथा विश्वास रखते हैं कि वह सच्च है। सुनो! निश्चय जो विवाद कर रहे हैं प्रलय के विषय में वह कुपथ में बहुत दूर चले गये हैं।

19. अल्लाह बड़ा दयालु है अपने भक्तों पर। वह जीविका प्रदान करता है जिसे चाहे। तथा वह बड़ा प्रबल प्रभावशाली है।

20. जो आखिरत (परलोक) की खेती⁴

وَالَّذِينَ يَحْتَجِرُونَ فِي الْأَقْصَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتَجِيبَ لَهُ
خُتْبَتُهُمْ دَاخِلَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ عَذَابٌ
وَكَامٌ عَذَابٌ شَدِيدٌ

اللَّهُ الْوَحِيدُ أَتَىٰ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْيُزَانَ
وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ الشَّاعَةَ قَرِيبٌ

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا وَالَّذِينَ
آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ
الَّذِي إِلَٰهَهُمْ يُسْأَلُونَ فِي الْأَمْرِ لَئِنْ
صَبَرَ لَيَجِيْبَ

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ لَرُدُّ لَهُ فِي

1 अर्थात् प्रलय के दिन। फिर वह हमारे बीच निर्णय कर देगा।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), और इस्लाम धर्म को।

3 तराजू से अभिप्रायः न्याय का आदेश है। जो कुर्आन द्वारा दिया गया है (देखिये-सूरह हदीद, आयतः 25)

4 अर्थात् जो अपने संसारिक सत्कर्म का प्रतिफल परलोक में चाहता है तो उसे

चाहता हो तो हम उस के लिये उस की खेती बढ़ा देते हैं। और जो संसार की खेती चाहता हो तो हम उसे उस में से कुछ दे देते हैं। और उस के लिये परलोक में कोई भाग नहीं।

حَرْثُهُ وَمَنْ كَانَ يَرْيِدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَأَنَّا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نُصِيبٍ ①

21. क्या इन (मुशरिकों) के कुछ ऐसे साझी है जिन्होंने उन के लिये कोई ऐसा धार्मिक नियम बना दिया है जिस की अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है? और यदि निर्णय की बान निश्चिन न होती तो (अभी) इन के बीच निर्णय कर दिया जाता। तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये ही दुखदायी यातना है।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْعَصَلِ لَفُتِنَ بِهِمْ وَلَقَدْ نَفَخْنَا بِالْهَبْطِ لِقَوْمٍ كَاذِبِينَ ②

22. तुम अत्याचारियों को डरते हुये देखोगे उन दुःकर्मी के कारण जो उन्होंने किये हैं। और वह उन पर आ कर रहेगा। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये वे स्वर्ग के वागों में होंगे। वह जिस की इच्छा करेंगे उन के पालनहार के यहाँ मिलेगा। यही बड़ी दया है।

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُمْ لَا يَفْقَهُوهُمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْحٍ أَلَيْسَتْ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ③

23. यही वह (दया) है जिस की शुभसूचना देना है अल्लाह अपने भक्तों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये। आप कह दे कि मैं नहीं माँगता हूँ इस पर तुम से कोई बदला उस

ذَلِكَ الَّذِي يُبَيِّرُ عَنْ عِبَادَةِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ قُلْ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ عَلَيْهِمْ أَجْرًا إِلَّا أَلَمَوْا فِي الْقُرُونِ وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَةً يُرَدِّدْهَا حَسَنَةً رِزْقَ اللَّهِ عَفْوَ وَشُكْرًا ④

उस का प्रतिफल परलोक में दस गुना से सात सौ गुना तक मिलेगा। और जो संसारिक फल का अभिलाषी हो तो जो उस के भाग्य में हो उसे उतना ही मिलेगा और परलोक में कुछ नहीं मिलेगा। (इब्ने कमीर)

- 1 इस से अभिप्राय उन के वह प्रमुख हैं जो वैध अवैध का नियम बनाते थे। इस में यह संकेत है कि धार्मिक जीवन विधान बनाने का अधिकार केवल अल्लाह को है उस के सिवा दूसरों के बनाये हुये धार्मिक जीवन विधान को मानना और उस का पालन करना शिर्क है।

प्रेम के सिवा जो सर्वान्धियों¹ में (होता) है, तथा जो व्यक्ति कोई पुण्य करेगा हम उस के पुण्य को अधिक कर देंगे वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला गुणग्राही है।

24. क्या वह कहते हैं कि उस ने अब्राह पर झूठ घड़ लिया है? तो यदि अब्राह चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे ² और अब्राह मिटा देता है झूठ को और सच्च को अपने आदेशों द्वारा सच्च कर दिखाना है। वह मीनों (दिलों) के भेदों का जानने वाला है।

25. वही है जो स्वीकार करता है अपने भक्तों की तौबा तथा क्षमा करता है दोनों³ को और जानता है जो कुछ तुम करते हो।

26. और उन की प्रार्थना स्वीकार करना है जो इमान लाये और सदाचार किये तथा उन्हें अधिक प्रदान करता है अपनी दया से। और काफिरों ही के लिये कड़ी यातना है।

أَمْ يَتُوبُونَ فَمَنْ عَلَى اللَّهِ كَيْفَ يُقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْقُولُونَ
يَعْتَمِدُونَ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَتِيمَةُ اللَّهِ أَبْطَلُ وَيَعْنِي عَمَلُ
وَيُكَلِّمُهُ إِنَّهُ يَلْمِزُ بَيِّنَاتِ الضُّلُوفِ

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْقُولُونَ
التَّوْبَاتِ وَيَعْمُرُونَ تَفْعُلُونَ

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَرْبِّدُ لَهُمْ
مِنْ فَضْلِهِ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ

1 भावार्थ यह है कि हे मक्का वासियो! यदि तुम सन्धर्म पर इमान नहीं लाते हो तो मुझे इस का प्रचार तो करना दो। मूझ पर अन्याचार न करो। तम सभी मेरे संबन्धी हो इसलिये मेरे साथ प्रेम का व्यवहार करो। (सहीह बुखारी: 4818)

2 अर्थ यह है कि हे नबी! इन्होंने आप को अपने जैसा समझ लिया है जो अपने स्वार्थ के झूठ का सहारा लेते हैं। किन्तु अब्राह ने आप के दिल पर मुहर नहीं लगाई है जैसे इन के दिलों पर लगा रखी है।

3 तौबा का अर्थ है अपने पाप पर लज्जित होना फिर उसे न करने का संकल्प लेना। हदीस में है कि जब वंदा अपना पाप स्वीकार कर लेता है। और फिर तौबा करता है तो अब्राह उसे क्षमा कर देता है। (सहीह बुखारी: 4141 सहीह मुस्लिम: 2770)

- 7 और यदि फैला देता अल्लाह जीविका अपने भक्तों के लिये तो वह विद्रोह¹ कर देते धरती में। परन्तु वह उतारता है एक अनुमान से जैसे वह चाहता है। वास्तव में वह अपने भक्तों से भली भाँति साँचत है। (तथा) उन्हें देख रहा है।
28. तथा वही है जो वर्षा करता है इस के पश्चात की लोग निराश हो जायें। तथा फैला² देता है अपनी दया। और वही संरक्षक सहायनीय है।
29. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती की उत्पत्ति, तथा जो फैलाये है उन दोनों में जीव। और वह उन्हें एकत्र करने पर जब चाहे³। सामर्थ्य रखने वाला है।
30. और जो भी दुख तुम को पहुँचता है वह तुम्हारे अपने कर्नून से पहुँचता है। तथा वह क्षमा कर देता है तुम्हारे बहुत से पापों को।⁴
31. और तुम विवश करने वाले नहीं हो धरती में, और न तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न सहायक है।
32. तथा उस के (सामर्थ्य) की निशानियों

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ يَدَهُ لَيَمْسَهُنَّ الْأَرْضُ
وَلَكِنْ يَتَوَكَّلُ يَوْمَئِذٍ عَلَى عِزِّهِ مُصِيبُكُمْ

وَهُوَ الْكَافِيُ يُنْزِلُ نَعِيمَتٍ مِنْ تَحْتِهَا مَا تَشْتَهُوا
وَيُنْزِلُ غَمَّتَهُ وَهُوَ الْوَاقِعُ الْحَمِيدُ

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتْرٍ مَذْمُومٍ وَهُوَ عَلَى جَمْعِهِمْ إِذْ يَأْتِيهِمْ قَدْ يَرَوْهُ

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَمَا كُنْتُمْ آيُنِيكُمْ
وَيَعْلَمُ أَعْيُنَ كَثِيرٍ

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا تَكُونُونَ
دُونِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ وَلَئِنْ شِئْتُمْ

وَمِنْ آيَاتِهِ اسْتِوَاءُ بِنِي الْعَوْرَةِ الْأَعْمَى

- 1 अर्थात् यदि अल्लाह सभी को सम्पन्न बना देता तो धरती में अवज्ञा और अत्याचार होने लगता और कोई किमी के आधीन न रहता।
- 2 इस आयत में वर्षा को अल्लाह की दया कहा गया है। क्योंकि इस से धरती में उपज होती है जो अल्लाह के अधिकार में है। इसे नक्षत्रों का प्रभाव मानना शिर्क है।
- 3 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 4 देखिये सूरह फातिर, आयत: 45।

में में है चलती हुई नाव सागरों में
पर्वतों के समान।

33. यदि वह चाहे तो रोक दे वायु
को और वह खड़ी रह जाये उम
के ऊपर। निश्चय इस में बड़ी
निशानियाँ हैं प्रत्येक बड़े धैर्यवान्¹
कृतज्ञ के लिये।

34. अथवा विनाश² कर दे उन (नावों)
का उन के कर्तूतों के बदले। और वह
क्षमा करता है बहुत कुछ।

35. तथा वह जानता है उन को जो
झगड़ते हैं हमारी आयतों में। उन्हीं के
लिये कोई भागने का स्थान नहीं है।

36. तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह
संसारिक जीवन का संसाधन है तथा
जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम
और स्थायी³ है उन के लिये जो
अल्लाह पर ईमान लाये तथा अपने
पालनहार ही पर भरोसा रखने हैं।

37. तथा जो बचते हैं बड़े पापों तथा
निर्लज्जा के कर्मों से। और जब क्रोध
आ जाये तो क्षमा कर देते हैं।

38. तथा जिन्होंने अपने पालनहार के
आदेश को मान लिया तथा स्थापना
की नमाज की और उन के प्रत्येक
कार्य आपस के विचार-विमर्श से होते

إِنْ يَشَاءِ السَّيِّئِينَ الزَّيْحَ يَقْطَعَنَّ رَوَاقِدَهُ عَلَى طَهْرٍ
إِنْ فِي دَرَجَاتٍ لَا يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ شُكْرًا

أَوْ يُؤْخَذُ مِنْهُمْ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ

وَيَعْلَمُ الْغُيُوبُ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا ظَهَرَ مِنْ
نَجْمٍ

هَذَا آتَيْنَاهُ مِنْ نَحْنُ قَمَاتُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَمِنْ عَمَلٍ مَكْرُومٍ وَأَنْتُمْ لِلْيَدِينَ أَمْوَالُكُمْ
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

وَالْيَدِينَ يَحْتَفِظُونَ كَثِيرَ الْإِثْمِ وَالْعَوِيلِ
وَلَا تَأْسَ عَصِيئُوا هُمْ يَعْمُرُونَ

وَالْيَدِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَمْرُهُمْ شُورَى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُعْتَمِرُونَ

1 अर्थात् जो अल्लाह की आज्ञापालन पर स्थित रहे।

2 उन के सबारों को उन के पापों के कारण डुबो दे।

3 अर्थ यह है कि ससारिक साम्यिक सुख को परलोक के स्थाई जीवन तथा सुख
पर प्रार्थामिकता न दो।

हैं।¹ और जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।

39. और यदि उन पर अत्याचार किया जाये तो वह बराबरी का बदला लेते हैं।

40. और बुराई का प्रतिकार (बदला) बुराई है उसी जैसी।² फिर जो क्षमा कर दे तथा सुधार कर ले तो उस का प्रतिफल अल्लाह के ऊपर है। वास्तव में वह प्रेम नहीं करता है अत्याचारियों से।

41. तथा जो बदला लें अपने ऊपर अत्याचार होने के पश्चात् तो उन पर कोई दोष नहीं है।

42. दोष केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं। और नाहक जमीन में उपद्रव करते हैं। उन्हीं के लिये दर्दनाक यातना है।

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ فَهُمْ يَاسْتَوِيُونَ ۖ

وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّهُ يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۚ

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا عَدُوًّا لِّأُولَئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مَنَعٌ ۚ يَتَخَفَتُهُ الْغَافِلُونَ ۚ

إِنَّ الشَّيْءَ لَكُنْزٌ عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأُولَئِكَ يَتَخَفَتُونَ ۚ إِنَّهُمْ يَخْشَوْنَ يُوسُفَ عَقْبًا ۚ وَتَبْتَغُونَ يَدِ الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

1 इस आयत में इमामान वालों का एक उत्तम गुण बताया गया है कि वह अपने प्रत्येक सहन्वपूर्ण कार्य परस्पर प्रामर्श से करते हैं। सूरह आले इमरान आयत 159 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया है कि आप मुसलमानों से परामर्श करें। तो आप सभी सहन्वपूर्ण कार्यों में उन से परामर्श करते थे। यही नीति तत्पश्चात् आदरणीय खलीफा उमर (रजियल्लाहु अन्हु) ने भी अपनाई। जब आप घायल हो गये और जीवन की आशा न रही तो आप ने छः व्यक्तियों को नियुक्त कर दिया कि वह आपस के परामर्श से शासन के लिये किसी एक को निर्वाचित कर लें। और उन्होंने आदरणीय उममान (रजियल्लाहु अन्हु) को शासक निर्वाचित कर लिया। इस्लाम पहला धर्म है जिस ने परामर्शिक व्यवस्था की नींव डाली। किन्तु यह परामर्श केवल देश का शासन चलाने के विषयों तक सीमित है। फिर भी जिन विषयों में कुर्आन तथा हदीस की शिक्षाएँ मौजूद हों उन में किसी परामर्श की आवश्यकता नहीं है।

2 इस आयत में बुराई का बदला लेने की अनुमति दी गई है। बुराई का बदला यद्यपि बुराई नहीं, बल्कि न्याय है। फिर भी बुराई के समरूप होने के कारण उसे बुराई ही कहा गया है।

43. और जो सहन करे तथा क्षमा कर दे तो यह निश्चय बड़े साहस¹ का कार्य है।

وَلَكِنْ صَبْرٌ وَعَفْوٌ ذَلِكَ لِمَنْ عَمِرَ الْأُمُورُ

44. तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो उस का कोई रक्षक नहीं है उस के पश्चात्। तथा आप देखेंगे अत्याचारियों को जब वह देखेंगे यातना को वह कह रहे होंगे क्या वापसी की कोई राह है? ²

وَمَنْ يُضِلِلْ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ قَائِلٍ مَنْ يَعْبُدُ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا دَنَا الْقَذَابُ يَمْوَلُونَ فَلِلَّهِ الْفَتْحُ مِنْ نَحْبِهِ

45. तथा आप उन्हें देखेंगे कि वह प्रस्तुत किये जा रहे हैं नरक पर मिर झकाये अपमान के कारण। वे देख रहे होंगे कर्निखियों से। तथा कहेंगे जो इमान लाये कि वास्तव में घाटे में वही है जिन्होंने घाटे में डाल दिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। मुनो! अत्याचारी ही म्थाई यातना में होंगे।

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا يُظْهِرُونَ مِنْ حَرِّ هَيْفٍ وَقَالَ الْيَهُودُ إِنَّا تُبْرِئُ الْيَهُودَ وَالنَّاصِرِينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْفِتْنَةُ أَفَرَأَوْا النَّارَ الَّتِي أُفْتِنُوا بِهَا قُلُوبُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّهَا آتِيَةٌ بِالْمُؤْمِنِينَ فِي عَذَابٍ مُتَسْتَضِئِينَ

46. तथा नहीं होंगे उन के कोई सहायक जो अल्लाह के मुकाबले में उन की सहायता करें। और जिसे कुपथ कर दे अल्लाह तो उस के लिये कोई भारी नहीं

وَمَا كَانَ لَكُمْ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ يَضِلِلْ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَافِلٍ

47. मान लो अपने पालनहार की बात इस से पूर्व कि आ जाये वह दिन जिसे टलना नहीं है अल्लाह की ओर से। नहीं होगा तुम्हारे लिये कोई शरण का स्थान उस दिन और न

إِسْتِجَارًا يُرِيدُ الْيَكْفُرُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمَهُمُ الْقَوْلُ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بِالْكَافِرِينَ لَمَّاعٌ

- 1 इस आयत में क्षमा करने की प्रेरणा दी गई है कि यदि कोई अत्याचार कर दे तो उसे सहन करना और क्षमा कर देना और सामर्थ्य रखते हुये उस से बदला न लेना ही बड़ी सुशीलता तथा साहस की बात है जिस की बड़ी प्रधानता है।
- 2 नाकि ससार में जा कर इमान लायें और सदाचार करें तथा परलोक की यातना से बच जायें।

छिप कर अन जान बन जाने का।

48. फिर भी यदि वह विमुख हों तो (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा है आप को उन पर रक्षक बना कर। आप का दायित्व केवल सदिश पहुंचा देना है। और वास्तव में जब हम चखा देने है मनुष्य को अपनी दया तो वह इतरसने लगता है उस पर। और यदि पहुंचता है उन को कोई दुख उन के कर्तूत के कारण तो मनुष्य बड़ा कृतघ्न बन जाता है।

49. अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहे पुत्रियां प्रदान करना है तथा जिसे चाहे पुत्र प्रदान करना है।

50. अथवा उन्हें पुत्र और ¹¹ पुत्रियां मिला कर देता है। और जिसे चाहे बौद्ध बना देता है। वास्तव में वह सब कुछ जानने वाला (तथा) सामर्थ्य रखने वाला है।

51. और नहीं संभव है किसी मनुष्य के लिये कि बात करे अल्लाह उस से परन्तु वही ¹² द्वारा, अथवा पर्दे के

وَإِنْ أَعْرَضُوا عَنْ آلِهَتِكَ عَبْدَهُمْ جَعَلْنَا إِلَهَكَ
(الْإِسْلَامُ وَالْإِسْلَامُ) إِذَا دَنَا الْإِنْسَانَ وَمَا رَحِمَهُ فَمَوْ
بَعْدَ ذَلِكَ تَصِلُهُمْ سَبْعَةٌ بِمَا نَدَّ مَتَّ أَيْدِيَهُمْ
فَإِنَّ الْإِنْسَانَ لَكُفُورٌ ۝

بَلَوْتُكَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ رِيحٌ
يَسُوفُ يَكُونُ رِيحًا ذَرْبًا يَسُوفُ يَسُوفُ يَسُوفُ يَسُوفُ

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرًا وَثِيًّا وَإِنْ أَرَادَ أَنْ يُبْعَثَ مِنْ بَيْنِ أَعْيُنِهِمْ
إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝

وَمَا كَانَ لِمَنْ يَكْفُرُ أَنْ يَكْلِمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ وَرَاءَ حِجَابٍ
وَحَبِّبَ أَوْ رُسُلٍ أَوْ رُسُلٍ أَوْ رُسُلٍ أَوْ رُسُلٍ أَوْ رُسُلٍ أَوْ رُسُلٍ

1 इस आयत में संकेत है कि पुत्र पुत्री मांगने के लिये किसी पीर फकीर के मजार पर जाना उन को अल्लाह की शक्ति में साझी बनाना है। जो शिर्क है। और शिर्क ऐसा पाप है जिस के लिये बिना तौबा के कोई क्षमा नहीं।

2 वही का अर्थ संकेत करना या गुप्त रूप में बात करना है। अर्थात् अल्लाह अपने अपने रसूलों को अपना आदेश और निर्देश इस प्रकार देता है जिसे कोई दूसरा व्यक्ति सुन नहीं सकता। जिस के तीन रूप होते हैं

प्रथम- रसूल के दिल में सीधे अपना ज्ञान भर दे।

दूसरा- पर्दे के पीछे से आन करो। किन्तु वह दिखाई न दे।

तीसरा- फरिश्ते द्वारा अपनी बात रसूल तक गुप्त रूप से पहुंचा दे

इन में पहले और तीसरे रूप में नबी (मल्लल्लाहु अलैहि व मल्लम) के पास

पीछे से अथवा भेज दे कोई रसूल
(फरिश्ता) जो वही करे उस की
अनुमति से जो कुछ वह चाहता
हो। वास्तव में वह सब से ऊँचा
(तथा) सभी गुण जानने वाला है।

إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

52. और इसी प्रकार हम ने वही
(प्रकाशना) की है आप की ओर अपने
आदेश की रूह (कुर्आन)। आप नहीं
जानते थे कि पुस्तक क्या है तथा
और इमान¹ क्या है। परन्तु हम ने
इसे बना दिया एक ज्योति। हम मार्ग
दिखाते हैं इस के द्वारा जिसे चाहने है
अपने भक्तों में से। और वस्तुतः आप
सीधी राह² दिखा रहे हैं।

وَلَقَدْ يَكُونُ لَكُمْ إِلَهُاتٌ مُّوَحَّاتٌ آمَنَّا بِمَا نَزَّلَتْ بَدِيعُ
مَا الْكِتَابُ وَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا تَهْتَدُونَ ۝
مَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ هَادٍ تِلْكَ آيَاتُ الْكَذِبِ الَّتِي نَقُولُ
تُسْمِعُكُمْ ۝

53. अब्राह की राह जिस के अधिकार में
है जो कुछ आकाशों में तथा जो कुछ
धरती में है। सावधान! अब्राह ही की
ओर फिरते हैं सभी कार्य।

يَرْوُدُهُ اللَّهُ إِلَىٰ أَلْبَابِ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
إِلَّا إِلَهُ الْإِسْلَامِ يُصِيرُ الْأُمُورَ ۝

वही उतरती थी (महीह धुखारी: 2)

- 1 मक्का वासियों को यह आश्चर्य था कि मनुष्य अब्राह का नबी कैसे हो सकता है। इस पर कुर्आन बना रहा है कि आप नबी होने से पहले न तो किसी आकाशीय पुस्तक से अवगत थे और न कभी इमान की बात ही आप के विचार में आई। और यह दोनों बातें ऐसी थीं जिन का मक्कावासी भी इन्कार नहीं कर सकते थे। और यही आप का अज्ञान होना आप के सत्य नबी होने का प्रमाण है जिसे कुर्आन की अनेक आयतों में वर्णित किया गया है।
- 2 सीधी राह से अभिप्राय सन्धर्म इस्लाम है।

सूरह जुलूफ - 43

سورة الزخرف

सूरह जुलूफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 89 आयतें हैं।

- इस की आयत 35 में ((जुलूफ)) शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। जिस का अर्थ है सोना शोभा।
- इस की आरंभिक आयतें कूर्आन के लाभ और उस की बड़ाई को उजागर करती हैं। फिर उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से अब्राह के अकेले पूज्य होने का विश्वास होता है। फिर आयत 15 से 25 तक फरिश्तों को अब्राह का साझी बनाने को अनुचित बताया गया है। फिर आयत 26 से 33 तक इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मुर्तियों से विरक्त होने के एलान को प्रस्तुत किया गया है। और बताया गया है कि मक्कावासी जो उन्ही के वंश से हैं वे शिर्क तथा मुर्तियों की पूजा के पक्षपाती हो गये हैं। और अब्राह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस लिये विरोधी बन गये हैं कि आप एक अब्राह के पूज्य होने का आमंत्रण दे रहे हैं।
- आयत 34 से 45 तक तनिक संसारिक लाभ के लिये परलोक तथा बह्नी और रिसालत के इन्कार कर देने के परिणाम को बताया गया है और फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) की कुछ दशाओं का वर्णन किया गया है जिस से यह बात सामने आती है कि वह भी तौहीद का प्रचार करते थे और उन के विरोधियों ने अपना परिणाम देख लिया।
- अन्तिम आयतों में विरोधियों के लिये चेतावनी तथा सदाचारियों के लिये शुभसूचना के साथ अपराधियों को उन के दुष्परिणाम से सावधान, और कुछ संदेहों को दूर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

2. शपथ है प्रत्यक्ष (खुली) पुस्तक की।
3. इसे हम ने बनाया है अर्था कुर्आन ताकि वह इसे समझ सकें।
4. तथा वह मूल पुस्तक¹ में है हमारे पास, बड़ा उच्च तथा ज्ञान से परिपूर्ण है।
5. तो क्या हम फेर दें इस शिक्षा को तुम से इसलिये कि तुम उल्लंघनकारी लोग हो?
6. तथा हम ने भेजे है बहुत से नबी (गुजरी हुयी) जानियों में।
7. और नहीं आता रहा उन के पास कोई नबी परन्तु वह उस के साथ उपहास करते रहे।
8. तो हम ने विनाश कर दिया इन में²¹ अधिक शक्तिवानों का तथा गुजर चुका है अगलों का उदाहरण।
9. और यदि आप प्रश्न करें उन से कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो अवश्य कहेंगे उन्हें पैदा किया है बड़े प्रभावशाली सब कुछ जानने वाले ने।

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

وَإِنَّ فِي أُولَ الْكِتَابِ لَذِكْرًا لِّمَن كَانَ يَحْكُمُ ۝

أَنصُرِبُ عَنْكُمُ آيَةَ الرِّسَالَةِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ ۝
مُتَوَفِينَ ۝

وَلَمْ أَرْسَلْ مِنْ نَبِيِّي إِلَّا قَالِينَ ۝

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيِّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

فَأَمَّا لَكُنَّا فَتَبَدَّلْنَاهُمْ أَفْئِدَةً لِّمَن ۝
الْأَوَّلِينَ ۝

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ قَالُوا لَنَقُولُنَّ ۝
خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

- 1 मूल पुस्तक से अधिप्राय लौहे महफूज (सुरक्षित पुस्तक) है जिस से सभी आकाशीय पुस्तकें अलग कर के अवतरित की गइ है। सूरह बाकिआ में इसी को ((किताबे मकनून)) कहा गया है। सूरह बुरूज में इसे ((लौहे महफूज)) कहा गया है। सूरह शुअरा में कहा गया कि यह अगले लोगों की पुस्तक में है। सूरह ओला में कहा गया है कि यह विषय पहली पुस्तकों में भी अंकित है। सारांश यह है कि कुर्आन के इन्कार करने का कोई कारण नहीं। तथा कुर्आन का इन्कार सभी पहली पुस्तकों का इन्कार करने के बराबर है।
- 2 अर्थात मक्कावासियों से।

10. जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को पालना और बनाये उस में तुम्हारे लिये मार्ग ताकि तुम मार्ग पा सको।¹

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا
سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

11. तथा जिस ने उतारा आकाश से जल एक विशेष मात्रा में फिर जीवित कर दिया उस के द्वारा मुर्दा भूमी को इसी प्रकार तुम (धरती से) निकाले जाओगे।

وَالَّذِي سَرَبَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً يَنْصُرُنَا
بِهِ بَنَاتُ النَّبِيِّاتِ عَلَيْكَ تُخْرَجُونَ

12. तथा जिस ने पैदा किये सब प्रकार के जोड़े तथा बनाई तुम्हारे लिये नवकाये तथा पशु जिन पर तुम सवार होते हो।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمُ مِنَ الْفَلَاحِ
وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْضَوْنَ

13. ताकि तुम सवार हो उन के ऊपर, फिर याद करो अपने पालनहार के प्रदान को जब सवार हो जाओ उस पर और यह² कहो पवित्र है वह जिस ने बश में कर दिया हमारे लिये इस को। अन्यथा हम इसे बश में नहीं कर सकते थे।

يَتَنَبَّأُ عَلَى ظُهُورِهِ أَنزَلَ تُورَ الْإِنجِيلَ رَبُّكُمْ
مُسْتَوِيٌّ عَلَيْهِمْ وَتَتْلُوهُ مِنْهُنَّ الَّذِينَ سَخَّرْنَا
هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْبِلِينَ

14. तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

وَأَنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ

15. और बना लिया उन्होंने³ उस के भक्तों में से कुछ को उस का अंश। वास्तव में मनुष्य खुला कृतघ्न है।

وَجَعَلُوا آلَهُ مِنْ بَيْنِهِمْ جُرُءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ
مُنِيفٌ

1 एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये।

2 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऊंट पर सवार होते तो तीन बार अल्लाहु अकबर कहते फिर यही आयत ((मुनकल्लिबन)) तक पढ़ता और कुछ और प्रार्थना के शब्द कहते थे जो दुआओं की पुस्तकों में मिलेंगे। (सहीह मुस्लिम हदीस नं० 1342)

3 जैसे मक्का के मुशरिक लोग फारिश्तों का अल्लाह की पुत्रियाँ मानते थे, और ईसाईयों ने ईसा (अलैहस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र माना और किसी ने आत्मा को प्रमात्मा तथा अवतारों को प्रभु बना दिया और फिर उन्हें पूजने लगे।

16. क्या अब्बाह ने उम में से जो पैदा करता है, पुत्रियाँ बना ली है तथा तुम्हें विशेष कर दिया है पुत्रों के साथ?
17. जब कि उन में से किसी को शुभसूचना दी जाये उम (के जन्म लेने) की जिस का उम ने उदाहरण दिया है अत्यंत कृपाशील के लिये तो उम का मुख काला ' हो जाता है। और शोक से भर जाता है।
18. क्या (अब्राह के लिये) वह है जिस का पालन पोषण अभ्रण में किया जाता है। तथा वह विवाद में खुल कर बात नहीं कर सकती?
19. और उन्होंने बना दिया फरिश्तों को जो अत्यंत कृपाशील के भक्त है पुत्रियाँ क्या वह उपस्थित थे उन की उत्पत्ति के समय? लिख ली जायेगी उन की गवाही और उन से पूछ होगी।
20. तथा उन्होंने कहा कि यदि अत्यंत कृपाशील चाहना तो हम उन की इबादत नहीं करते। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वह केवल तीर तुम्हें चला रहे हैं।

أَمْ أَفْتَدِمُنَا بِمِثْلٍ نَدَبٍ وَأَضْمَكُوا بِالْبَيِّنِ ۝

وَأَذِ ابْتِشْرَاحَهُمْ بِأَعْرَابٍ لِّمَزْحَمٍ مِّثْلَ لَعْلٍ
وَجِهَهُ مُسَوِّدًا وَهُوَ كَاطِمٌ ۝

أَوْ مِمَّنْ يُسْتَوَىٰ لِحَبِيبَةٍ وَهُوَ لِيَؤْصَاوِرَ
عُورَ مَيْمَنِهِ ۝

وَجَعَلُوا لِمَلَكَةِ الَّذِينَ هُمْ جِبَدُ الرَّحْمَنِ
إِنَّا أَنَا مَا نَسْجِدُ وَأَخْلَقَهُمْ مَّا كُنْتُ بِشَاهِدٍ لَهُمْ
وَيَسْأَلُونَ ۝

وَقَالُوا الْوَيْلَ لِمَنْ يَدْعُوهُ مَدْعُونُهُمْ مَا لَهُمْ بِهِ ذِكْرٌ
مِّنْ عِلْمٍ رَبِّنَا هُمُ الْغَائِبُونَ ۝

1. इस्लाम से पूर्व यही दशा थी। कि यदि किसी के हों बच्ची जन्म लेती तो लज्जा के मारे उस का मुख काला हो जाता। और कुछ अरब के कबीले उसे जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। किन्तु इस्लाम ने उस को सम्मान दिया। तथा उस की रक्षा की। और उस के पालनपोषण का पुण्य कर्म धांपित किया। हदीस में है कि जो पुत्रियों के कारण दुख झेले और उन के साथ उपकार करे तो उस के लिये वे नरक से पर्दा बनगी। (सहीह बुखारी: 5995 सहीह मुस्लिम: 2629) आज भी कुछ पापी लोग गर्भ में बच्ची का पना लगते ही गर्भपात करा देते हैं। जिसको इस्लाम बहुत बड़ा अत्याचार समझना है।

21. क्या हम ने उन्हें प्रदान की है कोई पुस्तक इस से पहले, जिसे वह दृढ़ता से पकड़े हुये है? ¹
22. बल्कि यह कहते है कि हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे है।
23. तथा (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी बन्ती में कोई सावधान करने वाला परन्तु कहा उस के सुखी लोगों ने: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम निश्चय उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे है। ²
24. नबी ने कहा: क्या (तुम उन्हीं का अनुगमन करोगे) यद्यपि मैं लाया हूँ तुम्हारे पास उस से अधिक सीधा मार्ग जिस पर तुम ने पाया है अपने पूर्वजों को? तो उन्होंने कहा: हम जिस (धर्म) के साथ तुम भेजे गये हो उसे मानने वाले नहीं है।
25. अन्ततः हम ने बदला चुका लिया उन से। तो देखो कि कैसा रहा झुठलाने वालों का दुष्परिणाम।
26. तथा याद करो जब कहा इबराहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति से: निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢١﴾

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثِرِهِم مُّقْتَدُونَ ﴿٢٢﴾

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَوْمِهِ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا قَالَ مَثَرُ قَوْمِي ۖ إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثِرِهِم مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾

قُلْ أَوَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ بَآئِنٌ ۖ وَمَا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِمْ آبَاءًا تُكْفِرُونَ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَاذِبُونَ ﴿٢٤﴾

فَأَنصَبْنَا لَهُمْ قَالِظًا ۚ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿٢٥﴾

وَلَدَّ قَالِ إِبْرَاهِيمَ إِيمَانًا بِرَبِّهِ وَقَوْمِهِ إِيمَانًا بِرَبِّهِمْ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَاذِبُونَ ﴿٢٦﴾

- 1 अर्थात् कुरआन से पहले की किसी ईश- पुस्तक में अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना की शिक्षा दी ही नहीं गई है कि वह कोई पुस्तक ला सके।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि प्रत्येक युग के काफिर अपने पूर्वजों के अनुसरण के कारण अपने शिर्क और अंधविश्वास पर स्थित रहे।

27. उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है, वही मुझे राह दिखायेगा।

إِلَّا الَّذِي ظَنَرْتُ وَأَنَّهُ سَيَبْهَتُ ۝

28. तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को¹ अपनी संतान में ताकि वह (शिरक से) बचने रहे।

وَجَعَلَهَا آيَةً يَّأْتِي فِي عَمِيهِ لَعَنَهُمُ الرَّحْمَنُ ۝

29. बल्कि मैं ने इन को तथा इन के बाप दादा को जीवन का सामान दिया। यहाँ तक कि आ गया उन के पास सत्य (क़र्आन) और एक खुला रसूल।²

بَلْ مَسَّحَتْ أَفْئَادَهُمُ الْإِبَادَةُ هُمْ عَلَىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَوَلَّوْا لَهَا بَيْنَ ۝

30. तथा जब आ गया उन के पास सत्य तो उन्होंने कह दिया कि यह जादू है तथा हम इसे मानने वाले नहीं हैं।

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا بَعْضُ الَّذِي ۝

31. तथा उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारा³ गया यह क़र्आन दो बस्तियों में से किसी बड़े व्यक्ति पर?

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْكُرْبَتَيْنِ عَظِيمٍ ۝

32. क्या वही बाँटते⁴ है आप के पालनहार की दया? हम ने बाँटा है उन के बीच उन की जीविका को संसारिक जीवन में। तथा हम ने उच्च किया है उन में से एक

أَلَمْ يَجْعَلْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَحْمَةً رَّبِّكَ تَحْنُ قَسَمًا بِيَوْمِهِ ۝
فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَدْعُونَ لَدُنَّآ دَرَجَاتٍ مِّنْهُم مَّنْ ۝
يَعْلَمُونَ دَرَجَاتٍ مِّنْهُم مَّنْ ۝
وَرَحْمَةً رَّبِّكَ خَيْرٌ مِّنْ يَّجْعَلُونَ ۝

1 आयत 26 से 28 तक का भावार्थ यह है कि यदि तुम्हें अपने पूर्वजों ही का अनुगमन करना है तो अपने पूर्वज इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का अनुगमन करो जो शिरक से विरक्त तथा एकेश्वरवादी थे। और अपनी संतान में एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा छोड़ गये ताकि लोग शिरक से बचने रहें।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

3 मक्का के क़ाफ़िरो ने कहा कि यदि अल्लाह को रसूल ही भेजना था तो मक्का और ताइफ के नगरों में से किसी प्रधान व्यक्ति पर क़र्आन उतार देना। अब्दुल्लाह का अनाथ-निर्धन पुत्र मुहम्मद तो कदापि इस के योग्य नहीं है।

4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जैसे संसारिक धन धान्य में लोगों की विभिन्न श्रेणियाँ बनाई है उसी प्रकार नबूवन और रिसालत, जो उस की दया है उन को भी जिस के लिये चाहा प्रदान किया है।

को दूसरे पर कई श्रेणियों। ताकि एक दूसरे से सेवा कार्य ले, तथा आप के पालनहार की दया¹ उस से उत्तम है जिसे वह इकट्ठा कर रहे है।

33. और यदि यह बात न होती कि सभी लोग एक ही नीति पर हो जाते तो हम अवश्य बना देते उन के लिये जो कुफ्र करते है अत्यंत कृपाशील के साथ उन के घरों की छतें चाँदी की तथा मीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते है।

34. तथा उन के घरों के द्वार, और तख्त जिन पर वह तकिये लगाये² रहते है।

35. तथा बना देने शोभा। नही है यह सब कुछ परन्तु संसारिक जीवन के सामान। तथा आखिरत³ (परलोक) आप के पालनहार के यहाँ केवल आज्ञाकारियों के लिये है।

36. और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अब्राह) के स्मरण से अर्धा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते है जो उस का साथी हो जाता है।

37. और वह (शैतान) उन को रोकने है सीधी राह से। तथा वह समझने है कि वे सीधी राह पर है।

38. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो यह कामना करेगा कि मेरे

وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيُوقِعَهُمْ سَفْهَاتٍ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

وَلِيُوقِعَهُمْ أَجْدَابًا وَسُرُورًا عَلَيْهَا يُسْكِنُونَ ﴿٣٤﴾

وَنُزُفًا فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ لَمْ يَمَسُّوا الْعَهْدَ وَاللَّذِينَ هُمْ وَالْأَمْرَةَ جُنْدًا لِّكَ يَلْمِزُوكَ ﴿٣٥﴾

وَمَنْ يُضِلَّ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ يَقْنِصْ لَهُ شَيْطَانٌ فَهُوَ فِي سِتْرٍ ﴿٣٦﴾

وَاللَّهُ لِيَصُدَّنَّهُمْ عَنِ سُبُلِهِ وَيَهْدِيَهُمْ لِنَفْسِهِمْ يُهَدُونَ ﴿٣٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بَعْدَ

1 अर्थात परलोक में स्वर्ग सदाचारी भक्तों को मिलेगी।

2 अर्थात सब मायामोह में पड़ जाते।

3 भावार्थ यह है कि संसारिक धन धान्य का अब्राह के ही कोई महत्त्व नहीं है।

तथा तेरे (शैतान के) बीच पश्चिम
तथा पूर्व की दूरी होती। तू बुरा साथी है।

الشَّرِيقِ قَيْسَ الْقَرْيَةِ ۝

39. (उन से कहा जायेगा): और तुम्हें
कदापि कोई लाभ नहीं होगा आज,
जब कि तुम ने अत्याचार कर लिया
है। वास्तव में तुम सब यातना में
साझी रहोगे।

وَلَنْ تَنْفَعَكَ الْيَوْمَ دُفَعَتُهُمْ أَكْثَرُ الْعَذَابِ
تَشْرُكُونَ ۝

40. तो (हे नबी!) क्या आप सुना लेंगे
बहरों को या सीधी राह दिखा देंगे
अंधों को तथा जो खुले कुपथ¹ में
हों?

أَفَأَنْتَ تُسَمِّى الْقَاهِمَ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

41. फिर यदि हम आप को (संसार में) ले
जायें तो भी हम उन से बदला लेने
वाले हैं।

وَأَمَّا لَدَّاهُنَّ مِنْكَ فَنَأْتِيَهُمْ مُنْتَضِبُونَ ۝

42. अथवा आप को दिखा दें जिस
(यातना) का हम ने उन को वचन
दिया है तो निश्चय हम उन पर
सामर्थ्य रखने वाले हैं।

أَوْ يَرْبِكَ الْوَدَىٰ وَوَعْدُهُمْ فَإِنَّا إِلَهُهُمْ مُنْتَفِعُونَ ۝

43. तो (हे नबी!) आप दृढ़ता से पकड़े
रहें उसे जो हम आप की ओर बह्नी
कर रहे हैं। वास्तव में आप सीधी राह
पर हैं।

فَأَسْمِكْ بِالْأَيْدِي أَوْحَىٰ إِلَيْكَ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ۝

44. निश्चय यह (कुरआन) आप के लिये
तथा आप की जानि के लिये एक
शिक्षा² है। और जल्द ही तुम से
प्रश्न³ किया जायेगा।

وَرَبُّهُ لَذِكُّكَ لَكَ يَبْقَوِيكَ وَتُسْوَفُ تُسْأَلُونَ ۝

1 अर्थ यह है कि जो सच्च को न सुने तथा दिल का अंधा हो तो आप के सीधी राह दिखाने का उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

2 इस का पालन करने के संबन्ध में।

3 पहले नबियों से पूछने का अर्थ उन की पुस्तकों तथा शिक्षाओं में यह बात

45. तथा हे नबी! आप पूछ लें उन से जिन्हें हम ने भेजा है आप से पहले अपने रसूलों में से कि क्या हम ने बनाये हैं अत्यन्त कृपाशील के अतिरिक्त बदनीय जिन की बदना की जाये?

وَسْئَلُ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا
أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ الْهَفَا يُعْتَدُونَ ﴿٤٥﴾

46. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उस ने कहा वास्तव में, मैं सर्वलोक के पालनहार का रसूल हूँ।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَآلِهِ
فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

47. और जब वह उन के पास लाया हमारी निशानियाँ तो सहसा वह उन की हँसी उड़ाने लगे।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذْ هُمْ عَنْهَا يُصْغَوْنَ ﴿٤٧﴾

48. तथा हम उन को एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे। और हम ने पकड़ लिया उन्हें यातना में तार्किक वह (ठट्ठा) से रुक जायें।

وَاللَّهُ يُخَوِّضُ الْإِنسَانَ الْأَلْفَىٰ الْأَخْيَرُ
وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعُنَادِ إِنَّ لَكُم بِهِمْ عِزًّا ﴿٤٨﴾

49. और उन्होंने कहा हे जादूगर। प्रार्थना कर हमारे लिये अपने पालनहार से उस वचन के आधार पर जो तुझ से किया है। वास्तव में हम सीधी राह पर आ जायेंगे।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الشَّارِبُ لَكَ رَبٌّ مِمَّا نَحْنُ بِمُتَّبِعِي
عِبَادِكُمُ الْإِنْسَانِ الْمُتَّبِعُونَ ﴿٤٩﴾

50. तो जैसे ही हम ने दूर किया उन से यातना को, तो वह सहसा वचन तोड़ने लगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ غُصَّتَهُمُ إِذْ هُمْ يُكَلِّفُونَ ﴿٥٠﴾

51. तथा पुकारा फिरऔन ने अपनी जाति में। उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्या नहीं है मेरे लिये मिस्र का राज्य तथा यह नहरें जो वह

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ
مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَعُودُ
مُجْرِبُونَ ﴿٥١﴾

देखनी है।

रही है मेरे नीचे से? तो क्या तुम देख नहीं रहे हो।

52. मैं अच्छा हूँ या वह जो अपमानित (हीन) है और खुल कर बोल भी नहीं सकता?

أَمْ أَمَاتُ الَّذِينَ مَعَ آلِ يُونُسَ إِذْ دَخَلُوا فِيهَا مِنْ دُونِهَا
يُونُسَ ۝

53. क्यों नहीं उतारे गये उस पर सोने के कंगन अथवा आये फरिशने उस के साथ पंक्ति बांधे हुये?¹

فَلَوْلَا لَنُفِيَ عَلَيْهِ أَسْوَدَاتُ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ
الْمَلَائِكَةُ مُقَرَّرِينَ ۝

54. तो उस ने झाँसा दे दिया अपनी जाति को और सब ने उस की बात मान ली। वास्तव में वह थे ही अवज्ञाकारी लोग।

فَاسْتَعَفَّ قَوْمَهُ مَلَأَ غَوْرَهُ إِتْمَعُوا كَانُوا قَوْمًا
يُتَقَبَّلُونَ ۝

55. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित कर दिया तो हम ने उन से बदला ले लिया और सब को डुबो दिया।

فَلَمَّا سَفَوْنا الْقَوْمَ وَغَرَّغْنَهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

56. और धना दिया हम ने उन को गया गुजरा और एक उदाहरण पश्चान के लोगों के लिये।

فَهَمَّزْنَهُمْ سَنًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ۝

57. तथा जब दिया गया मर्यम के पुत्र का² उदाहरण तो सहसा आप की जाति उस से प्रसन्न हो कर शोर मचाने लगी।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ
يَجِدُونَ ۝

58. तथा मुशरिकों ने कहा कि हमारे

وَقَالُوا الْإِنْسَانُ خَيْرٌ مِمَّا وَصَّيْنَاكَ بِهِ الْإِنْسَانُ

1 अर्थात् यदि मूसा (अनैहिस्सलाम) अल्लाह का रमूल होना तो उस के पास राज्य और हाथों में सोने के कंगन तथा उस की रक्षा के लिये फरिशनों को उस के साथ रहना चाहिये था। जैसे मेरे पास राज्य, हाथों में सोने के कंगन तथा सुरक्षा के लिये सेना है

2 आयत नं० 45 में कहा गया है कि पहले नबियों की शिक्षा पढ़ कर देखो कि क्या किसी ने यह आदेश दिया है कि अल्लाह अन्याय कुपाशील के सिवा दूसरों की इबादत की जाये? इस पर मुशरिकों ने कहा कि ईसा (अलैहिस्सलाम) की इबादत क्यों की जाती है? क्या हमारे पूज्य उन से कम है?

देवता अच्छे है या बुरे? उन्होंने नहीं दिया यह (उदाहरण) आप को परन्तु कुतर्क (झगड़ने) के लिये वल्कि वह है ही बड़े झगड़ालू लोग।

مَنْ لَمْ يَمُزَّ قَوْمًا فَهُمْ مِنْهُمْ لَعَنُونَ ﴿٤٣﴾

59. नहीं है वह¹ (इसा) परन्तु एक भक्त (दास) जिस पर हम ने उपकार किया तथा उसे इम्राइल की संतान के लिये एक आदर्श बनाया।

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿٤٤﴾

60. और यदि हम चाहते तो बना देते तुम्हारे बदले फरिश्ते धरती में, जो एक-दूसरे का स्थान लेते।

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ فِرْعَوْنَ أَوْ لَهْمُوتًا يَخَفُونَ ﴿٤٥﴾

61. तथा वास्तव में वह (इसा) एक बड़ा लक्षण² है प्रलय का। अतः कदापि संदेह न करो प्रलय के विषय में। और मेरी ही बात मानो। यही सीधी राह है।

وَأَنَّهُ لَافِكْرًا فَكَتَرُوا بِنَاءَ آلِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٤٦﴾ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤٧﴾

62. तथा तुम्हें कदापि न रोक दे शैतान। निश्चय वह तुम्हारा ख़ुला शत्रु है।

وَلَا يَصُدُّكُمْ عَنْهُ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٤٨﴾

63. और जब आ गया इसा खुली निशानियों ले कर तो कहा मैं लाया हूँ तुम्हारे पास ज्ञान। और ताकि उजागर कर दूँ तुम्हारे लिये कुछ वह बातें जिन में तुम विभेद कर रहे हो। अतः अल्लाह से डरो और मेरा ही कहा मानो।

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ بِالنَّبِيِّتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ ﴿٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

1 इस आयत में बताया जा रहा है कि यह मुशरिक इसा (अलैहिस्सलाम) के उदाहरण पर बड़ा शोर मचा रहे हैं। और उसे कुतर्क स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं जब कि वह पूज्य नहीं अल्लाह के दास हैं। जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया और इम्राइल की संतान के लिये एक आदर्श बना दिया।

2 हदीस शरीफ में है आया है कि प्रलय की बड़ी दस निशानियों में से इसा (अलैहिस्सलाम) का आकाश से उतरना भी एक निशानी है। (सहीह मुस्लिम: 2901)

64. वास्तव में अल्लाह ही मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। अतः उसी की बंदना (इबादत) करो यही सीधी राह है।

65. फिर विभेद कर लिया गिरोहों¹ ने आपस में। तो विनाश है उन के लिये जिन्होंने अत्याचार किया दुःखदायी दिन की यातना से।

66. क्या वह बस इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रलय उन पर सहसा आ पड़े और उन्हें (उस का) संवेदन (भी) न हो।

67. सभी मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु हो जायेंगे आज्ञाकारियों के सिवा।

68. हे मेरे भक्तों! कोई भय नहीं है तुम पर आज। और न तुम उदामीन होगे।

69. जो ईमान लाये हमारी आयतों पर तथा आज्ञाकारी बन के रहे।

70. प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ। तुम्हें प्रसन्न रखा जायेगा।

71. फिरायी जायेंगी उन पर सोने की धालें तथा प्याले। और उस में वह सब कुछ होगा जिसे उन का मन चाहेगा और जिसे उन की आँखें देख कर आनन्द लेंगी। और तुम सब उस में सदैव रहोगे।

إِنَّ إِلَهَهُمُ الرَّبُّ فَإِذَا فُتِنُوا فَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ كَانُوا كَذِبِينَ ۝

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝

مَنْ يَنْتَظِرْ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ يَأْتِيَهُم بَغْتَةً ذَهِيرًا لَا يَشْعُرُونَ ۝

الْأَعْمَالُ يَوْمَئِذٍ كَالْعِهْنِ يَنْقَضُ عَنْ أَهْلِ الْاَلَمَنِ ۝

وَيَوْمَ لَا حِجَابَ عَنِكُمُ الْيَوْمَ لَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ۝

الَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَكَانُوا صَابِرِينَ ۝

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۝

يُطَافُ عَلَيْهِمْ هَيْسَابٌ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۚ وَفِيهَا مَا تَشْتَهَى الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۚ وَأَنْتُمْ فِيهَا غَيْرُونَ ۝

1 इस्राईली समुदायों में कुछ ने इसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र, किसी ने प्रभु तथा किसी ने उसे तीन का तीसरा (तीन खूदाओं में से एक) कहा। केवल एक ही समुदाय ने उन्हें अल्लाह का भक्त तथा नबी माना।

72. और यह स्वर्ग है जिस के तुम उत्तराधिकारी बनाये गये हो अपने कर्मों के बदले जो तुम कर रहे थे।
73. तुम्हारे लिये इस में बहुत से मेवे हैं जिन में से तुम खाने रहोगे।
74. निःसंदेह अपराधी नरक की यातना में सदाबामी होंगे।
75. उन से (यातना) हल्की नहीं की जायेगी तथा वे उस में निराश होंगे।
76. और हम ने अत्याचार नहीं किया उन पर, परन्तु वही अत्याचारी थे।
77. तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक! 'हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार वह कहेगा: तुम्हें इसी दशा में रहना है।
78. (अब्राह्म कहेंगा): हम तुम्हारे पास सत्य² लाये किन्तु तुम में से अधिकतर को सत्य अप्रिय था।
79. क्या उन्होंने किसी बात का निर्णय कर लिया है? ³ तो हम भी निर्णय कर देंगे।⁴
80. क्या वह समझने हैं की हम नहीं सुनते हैं उन की गुप्त बातों तथा प्रामर्श को? क्यों नहीं, बल्कि हमारे फरिश्ते उन के पास ही

وَالَّذِينَ فِي الْجَنَّةِ الْخَالِدِينَ أَوْ يُسَوَّوْنَ فِيهَا مَنَاصِبًا ثُمَّ يَعْمَلُونَ ۝

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۝ وَفِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۝

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي عَذَابٍ مُّهِينٍ ۝

لَا يَخَفُ عَنْهُمْ وُهُمْ مِنْهُمْ مُّشْرِكُونَ ۝

وَمَا عَلَّمْنَاهُمْ دِينَ ۝ وَلَكِنْ كَانُوا هُمْ الظَّالِمِينَ ۝

وَنَادَىٰ ذِي السُّيُوفِ يَبْقُوضُ عَلَيْهِمَا رَبُّكَ قَالَ ۝ تِلْكَ مَكِيدَتُهُمْ ۝

لَقَدْ جِئْتُمُوهُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنْ لَّمْ تَكُونُوا تَارِقِينَ ۝

أَمْ أَمْرًا مِّنْ أَمْرٍ فَإِنَّا مُبْعِدُونَ ۝

أَمْ يَحْسِبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۝ بَلَىٰ ۝ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

1 मालिक: नरक के अधिकारी फरिश्ते का नाम है।

2 अर्थात् नबियों द्वारा।

3 अर्थात् सत्य के इन्कार का।

4 अर्थात् उन्हें यातना देने का।

लिख रहे हैं।

81. (हे नबी!) आप उन से कह दें कि यदि अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) की कोई संतान होती तो सब से पहले मैं उस का पुजारी होता।
82. पवित्र है आकाशों तथा धरती का पालनहार मिहामन का स्वामी उन धातों से जो वह कहने है।
83. तो आप उन्हें छोड़ दें, वह वाद-बिवाद तथा खेल-कूद करते रहें, यहाँ तक की अपने उस दिन से मिल जायें जिस से उन्हें डराया जा रहा है।
84. वही है जो आकाश में वंदनीय और धरती में वंदनीय है। और वही हिक्मत और ज्ञान वाला है।
85. शुभ है वह जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा जो कुछ दोनों के मध्य है। तथा उसी के पास प्रलय का ज्ञान है। और उसी की ओर तुम सब प्रत्यागत किये जाओगे।
86. तथा नहीं अधिकार रखते हैं जिन्हें वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त सिफारिश का। हाँ (सिफारिश के योग्य वे हैं) जो सत्य¹ की गवाही

قُلْ إِنْ كَانَ ذَرْعُنِي وَالْأَقْلَامُ الصَّيِّرِينَ ۝

مُبْسَرَاتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَتَّبِعُنَّ عَمِّي أَيْمُونًا ۝

لَذَرْهُمْ يَقُولُوا وَبُغْيَؤُهُمْ إِلَىٰ يَوْمِ تَنْبَأُ يَوْمَهُمُ الَّذِي ۝

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهُ فِي الْأَرْضِ إِلَهُ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

وَتَبَرَّكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَيْكُمْ تُرْجَعُونَ ۝

وَلَا يَشْعُرُ الَّذِينَ يَذْعُرُونَ مِنْ دُونِ الْكَفَالَةِ إِلَّا مِنْ شَهَادَاتِ الْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

1 सत्य से अभिप्राय धर्म सूत्र ((ला इलाहा इल्लाह)) है। अर्थात् जो इसे जान बूझ कर स्वीकार करते हैं तो शफाअत उन्हीं के लिये होगी उन काफिरों के लिये नहीं जो मुर्नियों को पुकारते हैं। अथवा इस से अभिप्राय यह है कि सिफारिश का अधिकार उन को मिलगा जिन्होंने सत्य को स्वीकार किया है। जैसे अम्बिया धर्मात्मा तथा फरिश्तों को, न कि झूठे उपास्यों को जिन को मुशार्क अपना सिफारिशी समझते हैं।

दें और (उसे) जानते भी हों।

87. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है उन को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ फिरे जा रहे हैं? ¹

88. तथा रसूल की यह बात कि, हे मेरे पालनहार! यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

89. तो आप उन से विमुख हो जायें, तथा कह दें कि सलाम ² है। शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ قَالُوا اللَّهُ مَا كُنَّا يُؤْتُونَ^١

فَقِيلَ لَهُ رَبِّدَارْ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ^٢

فَأَصْفَعْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بَشِّرُوا^٣

1 अर्थात् अल्लाह की उपासना में।

2 अर्थात् उन से न उलझो।

सूरह दुखान - 44

سورة الدخان

सूरह दुखान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 59 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 में आकाश से दुखान (धुँवें) के निकलने की चर्चा है इसलिये इस का नाम सूरह दुखान है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुरआन का महत्व बताया गया है। फिर आयत 7-8 में कुरआन उतारने वाले का परिचय कराया गया है।
- आयत 9 से 33 तक फिरऔन की जाति के विनाश और बनी इस्राईल की सफलता को एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि रसूल के विरोधियों का दुष्परिणाम कैसा हुआ। और उन के अनुयायी किस प्रकार सफल हुये।
- आयत 34 से 57 तक दुमरे जीवन के इन्कार तथा उस का विश्वास कर के जीवन व्यतीत करने का अलग अलग फल बताया गया है जो प्रलय के दिन सामने आयेगा।
- अन्तिम आयतों में उन को सावधान किया गया है जो कुरआन का आदर नहीं करते। अर्थात् इस सूरह के आरंभिक विषय ही में इस का अन्त भी किया गया है।
- हदीस में है कि जब मक्कावासियों ने नदी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने अन्नाह से दुआ की कि यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के अकाल के समान इन पर भी सात वर्ष का अकाल भेज दे। और फिर उन पर ऐसा अकाल आया कि प्रत्येक चीज का नाश कर दिया गया। और वह मुर्दार खाने पर बाध्य हो गये। और यह दशा हो गयी कि जब वह आकाश की ओर देखते तो भूक के कारण धूँवें जैसा दिखाई देता था। (देखिये: सहीह बुखारी: 4823, 4824)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 हा, मीम।
- 2 शपथ है इस खुली पुस्तक की।
- 3 हम ने ही उतारा है इस ' को एक
शुभ रात्री में वास्तव में हम सावधान
करने वाले है।
- 4 उमी (रात्रि) में निर्णय किया जाता है
प्रत्येक सुदृढ़ कर्म का।
- 5 यह (आदेश) हमारे पास से है। हम
ही भेजने वाले हैं रसूलों को।
- 6 आप के पालनहार की दया से,
वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने
वाला है।
- 7 जो आकाशों तथा धरती का पालनहार
है तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है,
यदि तुम विश्वास करने वाले हो।
- 8 नहीं है कोई बंदनीय परन्तु वही जो
जीवन देता तथा मारता है। तुम्हारा
पालनहार तथा तुम्हारे गुजरे हुये
पूर्वजों का पालनहार।
- 9 बलिक वह (मुश्रिक) सदेह में खेल
रहे है।

حَرَّ

وَالْكِتَابِ الْمُنِينِ

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُنِيرٍ ۝
مُشِيرِينَ ۝

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَاجٍ ۝

أَمْرًا مِنْ رَبِّكَ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝

رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنُوزَ
لَهُ ۝

لَدَى الْآخِرِينَ ۝
الْآخِرِينَ ۝

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ۝

- 1 शुभ रात्री से अभिप्राय (लैलतुल कद्र) है यह रमजान के महीने के अन्तिम दशक
की एक विषम रात्री होती है। यहाँ आगे बताया जा रहा है कि इसी रात्री में पूरे
वर्ष होने वाले विषय का निर्णय किया जाता है। इस शुभ रात की विशेषता तथा
प्रधानता के लिये सूरह कद्र देखिये। इसी शुभ रात्रि में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम) पर क़र्आन उतरने का आरम्भ हुआ। फिर 23 वर्षों तक आवश्यकतानुसार
विभिन्न समय में उतरता रहा। (देखिये: सूरह बकरा आयत नं० 185)

10. तो आप प्रतीक्षा करें उस दिन जब आकाश खुला धुवाँ¹ लायेगा।
 11. जो छा जायेगा सब लोगों पर। यही दुःखदायी यातना है।
 12. (वे कहेंगे): हमारे पालनहार हम से यातना दूर कर दे। निश्चय हम ईमान लाने वाले हैं।
 13. और उन के लिये शिक्षा का समय कहाँ रह गया? जब कि उन के पास आ गये एक रसूल (मन्थ को) उजागर करने वाले।
 14. फिर भी वह आप से मुँह फेर गये तथा कह दिया कि एक मिखाया हुआ पागल है।
 15. हम दूर कर देने वाले हैं कुछ यातना, वास्तव में तुम फिर अपनी प्रथम स्थिति पर आ जाने वाले हो।
 16. जिस दिन हम अत्यंत कड़ी पकड़² में ले लेंगे। तो हम

فَارْقُبَيْتُ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝

يُخَشِي النَّاسُ هَذَا هَذَا الْيَوْمِ ۝

رَبَّنَا أَلِثْنَا بِالْعَذَابِ إِنَّنَا لَمُؤْمِنُونَ ۝

أَلَىٰ لَهْرٍ النَّفْثَىٰ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

مُزَكَّوْنَ عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّوْا لَهَاؤُونَ ۝

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ أَلَيْسَ لَنَا بِمُعْجِزِينَ ۝

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَشَةَ أَكْثَرًا إِنَّنَا لَمُتَمَرِّضُونَ ۝

1 इस प्रत्यक्ष धुँवे तथा दुःखदायी यातना की व्याख्या सहीह हदीस में यह आयी है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने यह शाप दिया कि हे अल्लाह! उन पर सात वर्ष का आकाल भेज दे। और जब आकाल आया तो भूक के कारण उन्हें धुँवाँ जैसा दिखायी देने लगा। तब उन्होंने आप से कहा कि आप अल्लाह से प्रार्थना कर दें वह हम से आकाल दूर कर देगा तो हम ईमान ले आयेँगे। और जब आकाल दूर हुआ तो फिर अपनी स्थिति पर आ गये। फिर अल्लाह ने बद्र के युद्ध के दिन उन से बदला लिया। (सहीह बुखारी: 4821, तथा सहीह मुस्लिम: 2798)

2 यह कड़ी पकड़ का दिन बद्र के युद्ध का दिन है। जिस में उन के बड़े बड़े सत्तर प्रमुख मारे गये तथा इतनी ही सख्या में बंदी बनाये गये। और उन की दूसरी पकड़ कयामन के दिन होगी जो इस से भी बड़ी और गंभीर होगी।

निश्चय बदला लेने वाले हैं।

17. तथा हम ने परीक्षा ली इन से पूर्व
फिरऔन की जानि की। तथा उन के
पास एक आदरणीय रसूल आया।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ
رَسُولٌ كَرِيمٌ ۝

18. कि मुझे सौंप दो अल्लाह के भक्तों
को। निश्चय मैं तुम्हारे लिये एक
अमानतदार रसूल हूँ।

أَنْ أَذْهَبَ إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ الْكَرِهُونَ ۝

19. तथा अल्लाह के विपरीत घमंड न
करो। मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण
प्रस्तुत करता हूँ।

وَأَنْ لَا تَسْتَكْبِرُوا عَلَى اللَّهِ إِنَّكُمْ بِأَعْيُنِنَا ۝

20. तथा मैं ने शरण ली है अपने पालनहार
की तथा तुम्हारे पालनहार की इस से
कि तुम मुझ पर पथराव कर दो।

وَإِلَىٰ مُنَادٍ يَدْعُوكَ تَخَذِلُكَ أَرْجُلُكَ ۝

21. और यदि तुम मेरा विश्वास न करो
तो मुझ से परे हो जाओ।

وَأَنْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

22. अन्ततः मूसा ने पुकारा अपने
पालनहार को, कि वास्तव में यह
लोग अपराधी हैं।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنْ هَبْ لِي قَوْمًا مِّنْهُ ۝

23. (हम ने आदेश दिया) कि निकल
जा रातों रात मेरे भक्तों को लेकर।
निश्चय तुम्हारा पीछा किया जायेगा।

فَأَسْرِ بِمَا وَدَىٰ لَيْلًا إِنَّكَ تُتَّبَعُونَ ۝

24. तथा छोड़ दे सागर को उस की दशा
पर खुला। वास्तव में यह डूब जाने
वाली सेना है।

وَأَنزَلْنَا الْهَارُونَ وَأَوَّلًا أَلْجُودُودَ مَعْقُودٍ ۝

25. वह छोड़ गये बहुत से बाग तथा
जल स्रोत

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَلَّتْ وَعْيُونِ ۝

26. तथा खेनियाँ और सुखदायी स्थान।

وَزُلُفَةٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝

27. तथा सुख के साधन जिन में वह

وَتَعَصِي كَانُوا بِهَا فَكِهِينَ ۝

आनन्द ले रहे थे।

28. इसी प्रकार हुआ। और हम ने उन का उत्तराधिकारी बना दिया दूसरे¹ लोगों को।

29. तो नहीं रोया उन पर आकाश और न धरती, और न उन्हें अवसर (समय) दिया गया।

30. तथा हम ने बचा लिया इस्राईल की संतान को अपमानकारी यातना से।

31. फिर औन से। वास्तव में वह चढ़ा हुआ उध्वघनकारियों में से था।

32. तथा हम ने प्रधानता दी उन को जानते हुये संसारवासियों पर।

33. तथा हम ने उन्हें प्रदान की ऐसी निशानियाँ जिन में खुली परीक्षा थी।

34. वास्तव में यह² कहते हैं कि

35. हमें तो बस प्रथम बार मरना है तथा हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।

36. फिर यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) ला दो।

37. यह अच्छे हैं अथवा तुब्बअ की जाति³, तथा जो उन से पूर्व रहे हैं।

كذلك وَأَفْضَلُ مَا قَوْمُ السَّوْغِ ۝

فَمَا كُنْتَ عَلَيْهِمُ السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا كَانُوا مُنْقَرِفِينَ ۝

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي إِسْرَآءِيلَ مِنْ آفَآءٍ الْيَهُودِ ۝

مِنْ دَاوُدَ وَآلِهِ كُلِّ عَالِيٍّ مِنَ الْبَشَرِ ۝

وَلَقَدْ سَخَّرَ لَهُمْ مَلِكًا عَلَى السَّيِّئِينَ ۝

وَأَنبَتْنَا مِنْ أَلَيْهِ زَاوِيَةً يَبُوءُ الْيَهُودَ ۝

إِنْ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝

إِنْ هِيَ إِلَّا أَمْوَاتُنَا الْأُولَىٰ وَمِمَّا عِنْدَ بَشَرَيْنِ ۝

فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

أَفَمَنْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ الْمِصْرَ ۝ وَالدِّينُ مِنْ قَبْلِهِ

1 अर्थात् बनी इस्राइल (याकूब अलैहिस्सलाम की संतान) को।

2 अर्थात् मक्का के मुशरिक कहते हैं कि संसारिक जीवन ही अन्तिम जीवन है इस के पश्चान् परलोक का जीवन नहीं है।

3 तुब्बअ की जाति से अभिप्राय यमन की जाति सबा है। जिस के विनाश का वर्णन सूरह सबा में किया गया है। तुब्बअ हिम्यर जाति के शासकों की उपाधि थी जिसे उन की अवैज्ञा के कारण ध्वस्त कर दिया गया। (देखिये: सूरह सबा की

हम ने उन का विनाश कर दिया।
निश्चय वह अपराधी थे।

38. तथा हम ने आकाशों और धरती को
एवं जो कुछ उन दोनों के बीच है
खेल नहीं बनाया है।

39. हम ने नहीं पैदा किया है उन दोनों
को परन्तु सत्य के आधार पर। किन्तु
अधिकतर लोग इसे नहीं जानते हैं।

40. निःसंदेह निर्णय¹ का दिन उन सब
का निश्चित समय है।

41. जिस दिन कोई साथी किसी साथी के
कुछ काम नहीं आयेगा और न उन
की सहायता की जायेगी।

42. परन्तु जिस पर अज़ाह की दया
हो जाये तो वास्तव में वह बड़ा
प्रभावशाली दयावान है।

43. निःसंदेह जकूम (थोहड़) का वृक्ष।

44. पापियों का भोजन है।

45. पिघले हुये ताँवे जैसा, जो खौलेगा
पेटों में।

46. गर्म पानी के खौलने के समान।

47. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो तथा
धक्का देते नरक के बीच तक पहुँचा दो।

48. फिर बहाओ उस के सिर के ऊपर

أَهْلَكْنَاهُمْ أَهْلَهُمْ كَانُوا مُعْرِضِينَ ﴿٣٨﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاحِبٍ ﴿٣٩﴾

سَخَّخْنَاهُمْ إِلَّا بِالنَّحْلِ وَلَكِنَّ الثَّرَمَةَ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ بَيْنَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤١﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ فَمَلٍ لَّبِثٌ وَلَا
هُوَ يُنْقِصُ ﴿٤٢﴾

إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٣﴾

إِنَّ شَجَرَتَ لَرْقُومٍ ﴿٤٤﴾

طَعَامٌ لِّالْبَشَرِ ﴿٤٥﴾

كَاسٍ سَمٍّ يَنْزِلُ فِي الْبُطُونِ ﴿٤٦﴾

كَقُلِّبِ الْحَمِيمِ ﴿٤٧﴾

خَذُوهُ فَاعْتَبُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْحَدِيدِ ﴿٤٨﴾

ثُمَّ صُفِّوا نَوَافٍ زُلْفَىٰ مِنْ حَذَائِبِ الْحَدِيدِ ﴿٤٩﴾

आयत 15, से 19, तक।)

1 अर्थात् आकाशों तथा धरती की रचना लोगों की परीक्षा के लिये की गई है।
और परीक्षा फल के लिये प्रलय का समय निर्धारित कर दिया गया है।

अत्यंत गर्म जल की यातना।¹

49. (तथा कहा जायेगा कि) चख, क्योंकि तू बड़ा आदरणीय सम्मानित था।

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْمُرِيدُ ﴿٤٩﴾

50. यही वह चीज है जिस में तुम संदेह कर रहे थे

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

51. निःसंदेह आज्ञाकारी शान्ति के स्थान में होंगे।

إِنَّ الْكَافِرِينَ فِي عَذَابٍ مُّقَامٍ ﴿٥١﴾

52. बागों तथा जल स्रोतों में।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾

53. वस्त्र धारण किये हुये महीन तथा कोमल रेशम के एक-दूसरे के सामने (आसीन) होंगे।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرِيِّ مُتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾

54. इसी प्रकार होगा। तथा हम विवाह देंगे उन को हूरों से।²

كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ مُّصَوِّمٍ ﴿٥٤﴾

55. वह माँग करेंगे उस में प्रत्येक प्रकार के मेवों की निश्चिन्त हो कर।

يَدَّعُونَ فِيهَا كُلَّ الثَّمَرِ ﴿٥٥﴾

56. वह उस स्वर्ग में मौत³ नहीं चखेंगे प्रथम (संसारिक) मौत के सिवा। तथा (अल्लाह) बचा देगा उन्हें नरक की यातना से।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَعَدَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٥٦﴾

57. आप के पालनहार की दया से, वही

كُلًّا لَّا يَنْزِلُ إِلَيْكَ وَبِكَ هُوَ الْمُؤْتِى الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾

1 हदीस में है कि इस से जो कुछ उस के भीतर होगा पिघल कर दोनों पाँव के बीच से निकल जायेगा, फिर उसे अपनी पहली दशा पर कर दिया जायेगा (निर्मिजी: 2582 इस हदीस की सनद हमन है।)

2 हूर अर्थात् गोरी और बड़े बड़े नैनो वाली स्त्रियों।

3 हदीस में है कि जब स्वर्गी स्वर्ग में और नारकी नरक में चले जायेंगे तो मौत को स्वर्ग और नरक के बीच ला कर वध कर दिया जायेगा। और एलान कर दिया जायेगा कि अब मौत नहीं होगी। जिस से स्वर्गी प्रसन्न पर प्रसन्न हो जायेंगे और नारकियों को शोक पर शोक हो जायेगा। (सहीह बुखारी: 6548 सहीह मुस्लिम: 2850)

बड़ी सफलता है।

58. तो हम ने सरल कर दिया इस
(कुरआन) को आप की भाषा में ताकि
वह शिक्षा ग्रहण करें।
59. अतः आप प्रतीक्षा करें¹ वह भी
प्रतीक्षा कर रहे हैं।

قَالُوا يَتَزَيَّرُهُ بِلسَانِكَ أَلَمْ يَكُنْ لَكَ آيَاتُكَ تُتْلَىٰ

فَازْتَوَيْدِ الْغُلَامَ نَزِيلًا ۖ

1 अर्थात परिणाम की।

सूरह जासियह - 45

سُورَةُ الْجَاثِيَةِ

सूरह जासियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 37 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 28 में प्रलय के दिन प्रत्येक समुदाय के जासियह अर्थात् घुटनों के बल गिरे हुये होने की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम सूरह जासियह है।
- इस की आरंभिक आयतों में तौहीद की निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है। जिस की ओर कुर्बान बुला रहा है।
- इस की आयत 7 से 15 तक में अब्राह की आयतें न सुनने पर परलोक में बुरे परिणाम से मावधान किया गया है। और इंसान वालों को निर्देश दिया गया है कि वे विरोधियों को क्षमा कर दें।
- आयत 16 से 20 तक में बनी इस्राईल को चेतावनी दी गई है कि उन्होंने धर्म का परस्कार पा कर उस में विभेद कर लिया। और अब जो धर्म विधान उतारा जा रहा है उस का पालन करें।
- आयत 21 से 35 में परलोक के प्रतिफल के बारे में कुछ संदेहों का निवारण किया गया है।
- इस की अंतिम आयतों में अब्राह की प्रशंसा का वर्णन किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।

حَسَّ

2. इस पुस्तक¹ का उतरना अब्राह,
सब चीजों और गुणों को जानने वाले
की ओर से है।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

1 इस सूरह में भी तौहीद तथा परलोक के संबन्ध में मुश्रिकों के संदेह को दूर किया गया तथा उन की दुराग्रह की निन्दा की गई है।

3. वास्तव में आकाशों तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं ईमान लाने वालों के लिये।
4. तथा तुम्हारी उत्पत्ति में तथा जो फैला¹ दिये हैं उस ने जीव, बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हों।
5. तथा रात और दिन के आने-जाने में, तथा अब्राह ने आकाश से जो जीविका उतारी है, फिर जीवन किया है उस के द्वारा धरती को उस के मरने के पश्चात् तथा हवाओं के फेरने में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो समझ-बूझ रखते हों।
6. यह अब्राह की आयतें हैं जो वास्तव में हम तुम्हें सुना रहे हैं। फिर कौन सी बात रह गई है अब्राह तथा उस के आयतों के पश्चात् जिस पर वह ईमान लायेंगे?
7. विनाश है प्रत्येक झूठे पापी के लिये।
8. जो अब्राह की उन आयतों को जो उस के सामने पड़ी जायें सुने, फिर भी वह अकड़ता हुआ (कुफ्र पर) अड़ा रहे जैसे कि उन को सुना ही

إِنَّا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّمُؤْمِنِينَ ۝

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمِنْ دُونِهِ آيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

وَنُخْلِفُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَمَا أَنزَلْنَا مِنَ
السَّمَاءِ مِنْ مِّدْيٍ فَاصْبِرْ لِّلْأَرْضِ بَعْدَ زَرْعِهَا
وَلِخُرُوجِ بَرِيٍّ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْمَعُوا مِنَّا وَعَلَيْكُمْ بِالحَقِّ فِيمَا نَقُولُ
حَدِيثًا بَعْدَ الذِّكْرِ وَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا آيَاتٌ ۝

لِيَمْلَأَ اللَّهُ وَجْهَهُمْ خِلَافَ مَا يُمْنُونَ ۝
وَسَمْعًا قَبِيرًا ۝

- 1 तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रकरण में कुरआन ने प्रत्येक स्थान पर आकाश तथा धरती में अब्राह के सामर्थ्य की फैली हुई निशानियों को प्रस्तुत किया है। और यह बताया है कि जैसे उस ने वर्षा द्वारा मनुष्य के आर्थिक जीवन की व्यवस्था की है वैसे ही रसूनों तथा पुस्तकों द्वारा उस के आन्तिक जीवन की भी व्यवस्था कर दी है जिस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये। यह विश्व की व्यवस्था स्वयं ऐसी खुली पुस्तक है जिस के पश्चात् ईमान लाने के लिये किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

न हो। तो आप उसे दुखदायी यातना की सूचना पहुँचा दें।

- 9 और जब उसे ज्ञान हो हमारी किसी आयत का तो उसे उपहाम बना लें। यही है जिन के लिये अपमानकारी यातना है।
10. तथा उन के आगे नरक है। और नही काम आयेगा उन के जो कुछ उन्होंने कमाया है और न जिसे उन्होंने अन्नाह के सिवा संरक्षक बनाया है। और उन्ही के लिये कड़ी यातना है।
11. यह (क़र्आन) मार्गदर्शन है। तथा जिन्होंने कुफ़ किया अपने पालनहार की आयतों के साथ तो उन्ही के लिये यातना है दुखदायी यातना।
12. अन्नाह ही ने बश में किया है तुम्हारे लिये सागर को ताकि नाव चले उस में उस के आदेश से। और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (दया) की। और ताकि तुम उस के कृतज्ञ (आभारी) बनो।
13. तथा उस ने तुम्हारी सेवा में लगा रखा है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है सब को अपनी ओर से। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन के लिये जो सोच विचार करें।
14. (हे नबी!) आप उन से कह दें जो ईमान लाये हैं कि क्षमा कर¹¹ दें उन को जो आशा नहीं रखते हैं अन्नाह के

وَأَذِّنْ لِلْعَذَابِ ۖ
وَأَذِّنْ لِلْعَذَابِ ۖ

مِنْ قَوْلِهِمْ هُمْ يَسْتَعْجِلُونَ
وَلَا يَأْتِيهِمْ نَصْرٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ

هَذَا هُدًى وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ
مِنْ رَبِّهِمْ ۖ

أَلَمْ يَكُنْ لَهُ الْبَاسُ بِمَا يَفْعَلُونَ
وَلَيْسَ لَهُمْ نَصْرٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالْأَرْضَ وَالْبَحْرَ ۚ وَنَسَى
لَكُمْ فِي ذَلِكَ لَآئِمَاتٍ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ

قُلْ لِلَّهِ الْمُلْكُ ۖ أَسْمَاءُ الْغَيْبِ لَا يُعْجِلُ الْيَوْمَ أَحَدٌ شَيْئًا
يَجْعَلُ قَوْلَهُمْ كَأَنَّهُمْ كَائِمُونَ

1 अर्थात् उन की आंर से जो दुख पहुँचना है।

दिनों¹ की, ताकि वह बदला दे एक समुदाय को उन की कमाई का।

15. जिस ने सदाचार किया तो अपने भले के लिये किया। तथा जिस ने दुराचार किया तो अपने ऊपर किया। फिर तुम (प्रतिफल के लिये) अपने पालनहार की ओर ही फेरे² जाओगे।

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَلِنَفْسِهِ
لَا يَكُونُ ثَوْرًا لَّغَيْرِهِ ۝

16. तथा हम ने प्रदान की इसाईन की संतान को पुस्तक, तथा राज्य और नववृत्त (दुतत्व), और जीविका दी उन को स्वच्छ चीजों से तथा प्रधानता दी उन्हें (उन के युग के) संसारवासियों पर।

وَلَقَدْ مَنَّا بَيْنَ يَدَيْ رِسَالَتِهِ الْكِتَابَ وَالْحَمْدَ وَالْهُدَى
وَرَفَعْنَاهُمْ فِي الْغَيْبِ وَقَضَيْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

17. तथा दिये हम ने उन को खुले आदेश तो उन्होंने विभेद नहीं किया परन्तु अपने पास ज्ञान³ आ जाने के पश्चात् आपस के द्वेष के कारण। निःसंदेह आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस बात में वह विभेद कर रहे हैं।

وَأَنبَأْنَاهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ أَنَّهُمْ لَآتَيْنَهُم بِآيَاتِنَا
مُتَجَانِّمًا هُمْ إِلَيْهَا لَبِئْسَ لِقَاءُ رَبِّكَ
يَقْضَىٰ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ۝

18. फिर (हे नबी!) हम ने कर दिया आप को एक खुले धर्म विधान पर, तो आप अनुसरण करें इस का, तथा न चले उन की आकांक्षाओं पर जो ज्ञान नहीं रखते।

لَمْ جَعَلْنَاهُ عَلَىٰ شَرِّ رِيعَةٍ مِّنَ الْأُمَرَاءِ فَاسْتَمِيعًا
وَلَا تَتَّبِعُهُ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

19. वास्तव में वह आप के काम न आयेंगे अल्लाह के सामने कुछ। यह

إِنَّهُمْ لَنُفَعْنَكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ وَإِنَّ لِلَّهِ

1 अल्लाह के दिनों से अभिप्राय वे दिन हैं जिन में अल्लाह ने अपराधियों को यादनाये दी हैं। (देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत 5)

2 अर्थात् प्रलय के दिन। जिस अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है उसी के पास जाना भी है।

3 अर्थात् वैध तथा अवैध और सत्योसत्य का ज्ञान आ जाने के पश्चात्।

अत्याचारी एक दूसरे के मित्र हैं। और
अब्राह्म आजाकारियों का साथी है।

20. यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं सब
मनुष्यों के लिये तथा मार्ग दर्शन एवं
दया है उन के लिये जो विश्वास करें।

21. क्या समझ रखा है जिन्होंने दुष्कर्म
किया है कि हम कर देंगे उन को
उन के समान जो इमान लाये तथा
सदाचार किये हैं कि उन का जीवन
तथा मरण समान¹ हो जाये? वह
बुरा निर्णय कर रहे हैं।

22. तथा पैदा किया है अब्राह्म ने आकाशों
एवं धरती को न्याय के साथ और
ताकि बदला दिया जाये प्रत्येक प्राणी
को उस के कर्म का तथा उन पर
अत्याचार नहीं किया जायेगा।

23. क्या आप ने उसे देखा जिम ने बना
लिया अपना पूज्य अपनी इच्छा को।
तथा कुपथ कर दिया अब्राह्म ने उसे
जानते हुये, और मुहर लगा दी उस
के कान तथा दिल पर और बना
दिया उस की आँख पर आवरण
(पर्दा)? फिर कौन है जो सीधी राह
दिखायेगा उसे अब्राह्म के पश्चान्? तो
क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

24. तथा उन्होंने कहा कि हमारा यही
समारिक जीवन है। हम यही मरते
और जीने हैं और हमारा विनाश युग
(काल) ही करना है। उन्हें इस का
कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अनुमान की

بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِآبَائِهِمْ دَانَهُ وَيْلٌ لِلْمُفْسِقِينَ ۝

هَذَا بَصْلُكُمْ يَتْلُو وَفِي ذُنُوبِهِمْ يَلْعَنُونَ ۝

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ جَاءُوا السِّيَابَ أَنَّ لَكَ تَأْتِيَهُمُ
كَالْمُذِيبِ أَهْلًا وَمَوْلَا الطَّيِّبِينَ سَوَاءٌ غِيَاظُهُمْ
وَمِمَّا أَنْتُمْ تَسَاءَلُونَ ۝

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِأَرْبَعَةِ يَوْمٍ
كُلٌّ يَوْمٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عَمَلِهِ
وَجَعَلَ مَوْلَاهُ سَمِيعًا وَبَصِيرًا ۝

وَقَالُوا مَا فِي الْأَرْبَابِ الدُّنْيَا تَمُوتُ وَحَيًّا
وَمَا يُعْطِيهِمْ إِلَّا الدُّهُورُ وَمَا لَهُمْ بِهِدْيِهِمْ
وَعِلْمُهُمْ هُمُ الْغَالِبُونَ ۝

1 अर्थात् दोनों के परिणाम में अवश्य अन्तर होगा।

बात¹ कर रहे हैं।

25. और जब पढ़ कर सुनाई जाती है उन्हें हमारी खुशी आयते तो उन का तर्क केवल यह होता है कि ला दो हमारे पूर्वजों को यदि तुम सच्चे हो।

26. आप कह दें अल्लाह ही तुम्हें जीवन देता तथा मारता है, फिर एकत्र करेगा तुम्हें प्रलय के दिन जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग (इस तथ्य को) नहीं² जानते।

27. तथा अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य और जिस दिन स्थापना होगी प्रलय की तो उस दिन क्षति में पड़ जायेंगे झूठे।

28. तथा देखेंगे आप प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ। प्रत्येक समुदाय पुकारा जायेगा अपने कर्म पत्र की ओर। आज बदला दिया जायेगा तुम लोगों को तुम्हारे कर्मों का।

29. यह हमारा कर्म-पत्र है जो बोल रहा है तुम पर महीह बात। वास्तव में हम लिखवा रहे थे जो कुछ तुम कर रहे थे।

30. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार

وَأَوَّلُ عَلَمٍ عَلَيْهِمُ الْيُسْأَلُونَ مَا كَانَ حُجَّتُهُمْ
الْآنَ قَالُوا أَتُؤْتِيهِمْ يَوْمَئِذٍ كُفْتًا
صَادِقِينَ ۝

ثُمَّ اللَّهُ يُخَيِّطُكُمْ ثُمَّ يُرِيكُمْ نَجْمَكُمْ إِلَى
يَوْمِ الْوَعْدِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَلَهُ تِلْكَ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ
يَوْمَ يَخْرُجُ السَّجُودُونَ ۝

وَنَرَى كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَى إِلَى كِتَابِهَا
الْيَوْمَ تُجْرَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

هَذَا كِتَابُنَا يُطِيقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنَّا نُنَا
كُتُبُكُمْ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

وَمَنْ الْيَقِينُ اسْمُوا بِحَبْلِ الْوَعْدِ فَإِذَا جَاءَ

1 हदीस में है कि अल्लाह फरमाता है कि मनुष्य मुझे बुरा कहता है। वह युग को बुरा कहता है जब कि युग में हूँ। रात और दिन मेरे हाथ में हैं। (सहीह बुखारी: 6181) हदीस का अर्थ यह है कि युग को बुरा कहना अल्लाह को बुरा कहना है। क्योंकि युग में जो होना है उसे अल्लाह ही करता है।

2 आयत का अर्थ यह है कि जीवन और मौत देना अल्लाह के हाथ में है। वही जीवन देता है तथा मारता है। और उस ने ससार में मरने के बाद प्रलय के दिन फिर जीवित करने का समय रखा है। ताकि उन के कर्मों का प्रतिफल प्रदान करे।

किये उन्हें प्रवेश देगा उन का पालनहार अपनी दया में यही प्रत्यक्ष (खुली) सफलता है।

31. परन्तु जिन्होंने कुफ्र किया (उन से कहा जायेगा): क्या मेरी आयतें तुम्हें पढ़ कर नहीं सुनाई जा रही थी? तो तुम ने घमंड किया, तथा तुम अपराधी बन कर रहे।

32. तथा जब कहा जाता था कि निश्चय अब्राह का वचन सचच है तथा प्रलय होने में तनिक भी संदेह नहीं तो तुम कहने थे कि प्रलय क्या है? हम तो केवल एक अनुमान रखने है तथा हम विश्वास करने वाले नहीं है।

33. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के दुकर्मों की बुराइयाँ और घेर लेगा उन को जिस का वह उपहास कर रहे थे।

34. और कहा जायेगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे। जैसे तुम ने इस दिन से मिलने को भुला दिया। और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है।

35. यह (यातना) इस कारण है कि तुम ने बना लिया था अब्राह की आयतों को उपहास तथा धोखे में रखा तुम्हें

رَبَّكُمْ فِي رَحْمَةٍ دَلِيلٌ هُوَ الْقُرْآنُ الْمُبِينُ ﴿٣١﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ أَفْلَهُمْ ثُلُثٌ أَيْ قُلُوبُهُمْ عَلَىٰ كُفْرِهِمْ فَاسْتَغْنَوْا عَنْ قَوْلِنَا فَخَرِمُوا ﴿٣٢﴾

وَرَدَّ قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالْشَّكَّةُ لَأَرِيْبٌ بِهِمَا فَلَهُمْ مَا لَدَيْهِمَا الشَّكَّةُ إِن يُظَلُّ إِلَّا ظُلْمًا وَمَا عَنْهُمْ بِمُتَّقِينَ ﴿٣٣﴾

وَرَدَّ لَهُمْ نَصِيبُ مَا عَمِلُوا وَعَاقِبَةُ لَهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَفِرُّوْنَ ﴿٣٤﴾

وَنَبِّئِ الْيَوْمَ الْمُسَكِّرُ كَمَا تَسْتَفِرُّوْنَ يَوْمَ كُنْتُمْ هَذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ﴿٣٥﴾

فَبَلَّغْهُمْ بِأَقْوَامٍ أَفْعَدْنَا لَأُولَئِكَ اللَّهُمُّ رُؤُوسُهُمْ فِي النَّارِ الْيَوْمَ لَا يُجِيبُونَ مِنْهَا

1. जैसे हदीस में आता है कि अब्राह अपने कुछ बंदों से कहेगा- क्या मैं ने तुम्हें पत्नी नहीं दी थी? क्या मैं ने तुम्हें सम्मान नहीं दिया था? क्या मैं ने घोड़े तथा बैल इत्यादि तरे आधीन नहीं किये थे? तू सरदारी भी करता तथा चुंगी भी लेता रहा। वह कहेगा- हाँ ये सहीह है, हे मेरे पालनहार। फिर अब्राह उस से प्रश्न करेगा- क्या तुम्हें मुझ से मिलन का विश्वास था? वह कहेगा- "नहीं" अब्राह फरमायेगा- (तो आज मैं तुझे नरक में डाल कर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भुला रहा। (सहीह मुस्लिम 2968)

समार्थिक जीवन नै। तो आज वे नहीं निकाले जायेंगे (यातना से)। और न उन्हें क्षमा माँगने का अवसर दिया जायेगा।^[1]

وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥﴾

36. तो अल्लाह के लिये सब प्रशंसा है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार एवं सर्वलोक का पालनहार है।

لَيْلًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥﴾

37. और उसी की महिमा² है आकाशों तथा धरती में और वही प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

وَلَهُ الْكِبَرُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦﴾

1 अर्थात् अल्लाह की निशानियों तथा आदेशों का उपहास तथा दुनिया के धोखे में लिप्त रहना। यह दो अपराध ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक की यातना का पात्र बना दिया। अब उस से निकलने की संभावना नहीं। तथा न इस बात की आशा है कि किसी प्रकार तुम्हें तौबा तथा क्षमा याचना का अवसर प्रदान कर दिया जाये। और तुम क्षमा माँग कर अल्लाह को मना लो।

2 अर्थात् महिमा और बड़ाई अल्लाह के लिये विशेष है। जैसा कि एक हदीस कूदूसी में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि महिमा मेरी चादर है तथा बड़ाई मेरा तहबंद है। और जो भी इन दोनों में से किसी एक को मुझ से खींचेगा तो मैं उसे नरक में फेंक दूँगा। (सहीह मुस्लिम: 2620)

सूरह अहकाफ - 46

سورة الاحقاف

सूरह अहकाफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 35 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 21 में आद जाति की बस्ती ((अहकाफ)) की चर्चा की गई है जो यमन के समीप एक रेतीला क्षेत्र है। इसी कारण इस का नाम सूरह अहकाफ है।
- इस की आयत 21 से 28 तक में कर्आन के अल्लाह की बाणी होने का दावा प्रस्तुत करते हुये शिर्क के अनुचित होने को उजागर किया गया है और नबूवत से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है। इसी के साथ ईमान वालों को दिलामा तथा शुभसूचना दी गई है। और काफिरों के बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- इस में ((आद)) जाति के परिणाम से शिक्षा प्राप्त करने को कहा गया है।
- आयत 29 से 32 तक जिबों के कुरआन पाक सुनने, तथा उस पर ईमान लाने का वर्णन है।
- इस में मरने के पश्चात् जीवन से संबंधित संदेह को दूर किया गया है। और नरक की यातना से सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने का निर्देश दिया गया है। क्योंकि आप से पूर्व जो नबी आये थे उन को भी विभिन्न प्रकार से सताया गया था परन्तु उन्होंने धैर्य धारण किया।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1 हा, मीम।

2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह
प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी की ओर से है।

3. हम ने नहीं उत्पन्न किया है आकाशों

حَرِّ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا

तथा धरती को और जो कुछ उन के बीच है परन्तु सत्य के साथ एक निश्चिन्त अवधि तक के लिये। तथा जो काफिर है उन्हें जिस बात से सावधान किया जाना है वे उस से मुंह मोड़े हुये हैं।

4. आप कहें कि भला देखो कि जिसे तुम पुकारते हो अह्लाह के सिवा, तनिक मुझे दिखा दो कि उन्होंने क्या उत्पन्न किया है धरती में से? अथवा उन का कोई साझा है आकाशों में? मेरे पास कोई पुस्तक¹ प्रस्तुत करो इस से पूर्व की, अथवा बचा हुआ कुछ² ज्ञान यदि तुम सच्चे हो।
5. तथा उस से अधिक वहका हुआ कौन हो सकता है जो अह्लाह के सिवा उसे पुकारता हो जो उस की प्रार्थना स्वीकार न कर सके प्रलय तक। और वह उस की प्रार्थना से निश्चिन्त (अनजान) हो।
6. तथा जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उन के शत्रु हो जायेंगे और उन की इब्रादत का इन्कार कर³ देंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَاعْمَلُوا الصَّالِحَاتِ لعلَّكُمْ تُؤْتَوْنَ أَجْرًا كَثِيرًا
مِنْهُ مُغْفُورُونَ ﴿١٦﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ
مَادًّا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي
السَّمَوَاتِ يَتَوَلَّوْنَ يَكْتُمُونَ فَمَنْ هَذَا أَوْ أَشْرَءُ
مِنْ عِلْمِهِمْ لَمَّا نُسْأَلُنَ عَنْ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ﴿١٧﴾

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ
فِي السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شِرْكٌ عَنْ
دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٨﴾

وَيَوْمَ يُنْفَخُ أَصْحَابُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ
يُسْأَلُونَ عَنْ أَعْمَالِهِمْ وَأُولَئِكَ
سُوءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

- 1 अर्थात् यदि नुम्हें मेरी शिक्षा का सत्य होना स्वीकार नहीं तो किसी धर्म की आकाशीय पुस्तक ही से सिद्ध कर के दिखा दो कि सत्य की शिक्षा कुछ और है और यह भी न हो सके तो किसी ज्ञान पर आधारित कथन और रिवायत ही से सिद्ध कर दो कि यह शिक्षा पूर्व के नबीयों ने नहीं दी है। अर्थ यह है कि जब आकाशों और धरती की रचना अह्लाह ही ने की है तो उस के साथ दूसरों को पूज्य क्यों बनाते हो?
- 2 अर्थात् इस से पहले वाली आकाशीय पुस्तकों का।
- 3 इस विषय की चर्चा कृआन की अनक आयतों में आई है। जैसे सूरह यूनस आयत-

7. और जब पढ़ कर मुनाई गई उन को हमारी खुली आयतें तो कर्फियों ने उस सत्य को जो उन के पास आ चुका है, कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
8. क्या वह कहते हैं कि आप ने इसे ¹ स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है तो तुम मुझे अब्राह की पकड़ में बचाने का कोई अधिकार नहीं रखते।² वही अधिक ज्ञानी है उन वानों का जो तुम बना रहे हो। वही पर्याप्त है गवाह के लिये मेरे तथा तुम्हारे बीच। और वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।
9. आप कह दें कि मैं कोई नया रसूल नहीं हूँ और न मैं जानता कि मेरे साथ क्या होगा ³ और न तुम्हारे साथ। मैं तो केवल अनुसरण कर रहा हूँ उस का जो मेरी ओर वही (प्रकाशना) की जा रही है। मैं तो केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।
10. आप कह दें तुम बनाओ यदि यह (कुर्आन) अब्राह की ओर से हो और तुम उसे न मानो जब कि गवाही दे चुका है एक गवाह, इम्राईल की

وَرَدُّ الشُّكْلِ عَلَيْهِمْ آيَاتٌ يَمُرُّونَ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا الْبَشَرُ لَشَأْنُهُمْ قَدْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۝

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَيْنَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ وَاللَّهُ عَلَىٰ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ وَيَتَّبِعْكُمْ وَهُوَ لَقَمُورٌ الرَّحِيمُ ۝

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَاعٍ إِلَى الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفَعَّلُ بِي وَلَا تَكُنْ مِنْ الْإِلَهِمُ الْأَمَايُوتِ ۝ وَإِنَّمَا أَرَأَيْتُمْ إِن كُنْتُمْ تُحِبُّونَ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ جُنْدِ اللَّهِ قَوْمٌ تَوَلَّوْهُ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ وَثْقِهِ قَامَسَ وَاسْتَلْزَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَا يُهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

290, सूरह मर्यम आयत 81, 82, सूरह अन्कबूत आयत 25 आदि।

- 1 अर्थात् कुर्आन को।
- 2 अर्थात् अब्राह की यातना से मेरी कांड़ रक्षा नहीं कर सकता। (देखिये सूरह अहकाफ, आयत: 44, 47)
- 3 अर्थात् संसार में। अन्यथा यह निश्चित है कि परलांक में ईमान वाले के लिये स्वर्ग तथा कफिर के लिये नरक है। किन्तु किसी निश्चित व्यक्ति के परिणाम का ज्ञान किसी को नहीं।

सतान में से इसी जैसी बात¹ पर,
फिर वह ईमान लाया तथा तुम
घमंड कर गये? तो वास्तव में अल्लाह
सुपथ नहीं दिखाता अन्याचारी जानि
को।²

11. और काफ़िरो ने कहा, उन से जो
ईमान लाये यदि यह (धर्म) उत्तम होता
तो वह पहले नहीं आते हम से उस की
ओर। और जब नहीं पाया मार्ग दर्शन
उन्हो ने इस (क़र्आन) में तो अब यही
कहेगे कि यह तो पुराना झूठ है।
12. जब कि इस से पूर्व मूसा की पुस्तक
मार्गदर्शक तथा दया बन कर आ
चुकी। और यह पुस्तक (क़र्आन)
सच्चा³ बताने वाली है अर्बी भाषा
में।⁴ ताकि वह सावधान कर दे
अन्याचारियों को और शुभसूचना हो
सदाचारियों के लिये।
13. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा
पालनहार अल्लाह है। फिर उस पर

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ حَقًّا
سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَمْلِكُوا بِهِ سَبَقُوا
إِلَهُنَّ قَوْمِهِمْ

وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَى مَا أَوْحَيْنَا وَهَذَا الْكِتَابُ
تُحْفٍ لِلْعَالَمِينَ وَإِذْ لَمْ يَمْلِكُوا بِهِ سَبَقُوا
إِلَهُنَّ قَوْمِهِمْ

إِنَّ الْكَافِرِينَ قَالُوا رَبَّنَا اللَّهُ ثُمَّ انْتَفَرُوا فَكَلِمَاتٍ

- 1 जैसे इस्राइली विद्वान अब्दुल्लाह पृत्र सनाम ने इसी क़र्आन जैसी बात के तौरात में होने की गवाही दी कि तौरात में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने का वर्णन है। और वे आप पर इमान भी लाये। (सहीह बुखारी: 3813 सहीह मुस्लिम 2484)
- 2 अर्थात अन्याचारियों को उन के अन्याचार के कारण ही कुपथ में रहने देना है जबरदस्ती किसी को सीधी राह पर नहीं चलाना।
- 3 अपने पूर्व की आकाशीय पुस्तकों को।
- 4 अर्थात इस की कोई मूल शिक्षा ऐसी नहीं जो मूसा की पुस्तक में न हो। किन्तु यह अर्बी भाषा में है। इसलिये कि इस से प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे। फिर सारे लोग इसीलिये क़र्आन का अनुवाद प्राचीन काल ही से दूसरी भाषाओं में किया जा रहा है। ताकि जो अर्बी नहीं समझते वह भी उस में शिक्षा ग्रहण करे।

स्थित रह गये तो कोई भय नहीं होगा
उन पर, और न वह' उदासीन होंगे।

عَنِهْمُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

14. यही स्वर्गीय है जो सदावासी होगा
उस में उन कर्मों के प्रतिफल (बदले)
में जो वे करते रहे।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝

15. और हम ने निर्देश दिया है मनुष्य को
अपने माता पिता के साथ उपकार
करने का। उसे गर्भ में रखा है
उस की माँ ने दुख झेल कर। तथा
जन्म दिया उस को दुख झेल कर।
तथा उस के गर्भ में रखने तथा
दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने
रही।¹ यहाँ तक कि जब वह अपनी
पूरी शक्ति को पहुँचा तथा चालीस
वर्ष का हुआ तो कहने लगा 'हे मेरे
पालनहार! मुझे क्षमता दे कि कृतज्ञ
रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो तूने
प्रदान किया है मुझ को तथा मेरे
माता-पिता को। तथा ऐसा सत्कर्म
करूँ जिस से तू प्रसन्न हो जाये। तथा

وَوَضَعْنَا الْإِنْسَانَ يَوْمَ الدِّيمْرِ حُسْنًا ۚ إِنَّهُ
كُرْهًا وَوَضَعْتَهُ كُرْهًا وَجَعَلْنَاهُ نَفَرًا
حَتَّىٰ إِذَا نَفَخَ الْفُؤَادَ وَكَفَّرَ الْأَرْحَامَ سَنَةً قَالَ رَبِّ
أَوْرِثْنِي أَنِّي أَشْكُو بَدْعًا تَرَىٰ أَنَّهَا تَأْخُذُ بِنَفْسٍ
وَالِدَائِي وَأَنَا أَصْغَرُ صَالِحًا تُرْضَهُ وَأُخْلِقُ فِي
وُجْهِكَ لِي أَتُبْتَ إِلَيْكَ فِرَاقِي مِنَ السَّيِّئِينَ ۝

- 1 (देखिये सूरह हा मीम सजदा, आयत 31)

हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा: हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। मुझे इस्लाम के बारे में ऐसी बात बताये कि फिर किसी से कुछ पूछना न पड़े। आप ने फरमाया: कहो कि मैं अल्लाह पर इमान लाया फिर उसी पर स्थित हो जाओ। (सहीह मुस्लिम: 38)

- 2 इस आयत तथा कुरआन की अन्य आयतों में भी माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने पर विशेष बल दिया गया है। तथा उन के लिये प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है। देखिये सूरह बनी इस्राइल आयत 170। हदीसों में भी इस विषय पर अति बल दिया गया है। आदरणीय अबू हुरैरा (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने आप से पूछा कि मेरे सद्व्यवहार का अधिक योग्य कौन है? आप ने फरमाया: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। तथा चौथी बार आप ने कहा: तेरे पिता। (सहीह बुखारी: 5971 तथा सहीह मुस्लिम: 2548)

सुधार दे मेरे लिये मेरी सतान को, मैं ध्यानमग्न हो गया तेरी ओर। तथा मैं निश्चय मुस्लिमों में से हूँ।

16. वही है स्वीकार कर लेंगे हम जिन से उन के सर्वोत्तम कर्मों को, तथा क्षमा कर देंगे उन के दुष्कर्मों को। (वह) स्वर्ग वासियों में है उस सत्य वचन के अनुसार जो उन से किया जाता था।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ تَتَخَلَّى عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا يَخْلَوُا وَيَتَمَنَّوْنَ
عَنْ سَيِّئِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعْدَ الْوَعْدِ الْوَقْعِ
كَأَنَّهُمْ يُؤَدَّبُونَ

17. तथा जिस ने कहा अपने माता-पिता से: धिक् है तुम दोनों पर। क्या मुझे डरा रहे हो कि मैं (धरती से) निकाला जाऊँगा जब कि बहुत से युग बीत गये।¹ इस से पूर्व? और वह दोनों दुहाई दे रहे थे अब्राह की तेरा विनाश हो। तू ईमान ला। निश्चय अब्राह का वचन सच्च है। तो वह कह रहा था कि यह अगलों की कहानियाँ हैं।²

وَالَّذِي قَالَ لِوَلَدَيْهِ إِذَا كَانَ مِنَ الْمُغْرَةِ
وَتَذَخَّلُوا الْقُرُوبَ مِنْ قِبَلِي وَأَنَا مَتَّخِفٌ لِّلَّهِ
وَلِيَّكَ الْإِسْمَ رَبِّ وَهَذَا الْوَحْيُ ۖ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ

18. यही वह लोग है जिन पर अब्राह की यातना का वचन सिद्ध हो गया उन समुदायों में जो गुजर चुके इन से पूर्व जिन्हें तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षति में थे।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خُسِيَ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمِّهِمْ أَذْهَبَتْ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْإِنْسِ وَالْإِنْسِ أَنَّهُمْ كَانُوا
خَاطِئِينَ

19. तथा प्रत्येक के लिये श्रेणियाँ हैं उन के

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِّنْهَا عَمَلُهُ وَالْوِجْدَانُ أَهْلُهَا

- 1 अर्थात् मौत के पश्चात् प्रलय के दिन पुनः जीवित कर के समाधि से निकाला जाऊँगा। इस आयत में बुरी सतान का व्यवहार बनाया गया है।
- 2 और कोई फिर जीवित हो कर नहीं आया।
- 3 इस आयत में मुसलमान माना पिता का विवाद एक काफिर पुत्र के साथ हो रहा है जिस का वर्णन उदाहरण के लिये इस आयत में किया गया है और इस प्रकार का वाद-विवाद किसी भी मुसलमान तथा काफिर में हो सकता है। जैसा कि आज अनेक पश्चिम आदि देशों में हो रहा है।

कर्मानुसार। और उन्हें भरपूर बदला दिया जायेगा उन के कर्मों का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَهُمْ لَا يظلمُونَ ﴿١٠﴾

20. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये अग्नि के। (उन से कहा जायेगा): तुम ले चुके अपना आनन्द अपने संसारिक जीवन में और लाभान्वित हो चुके उन से। तो आज तुम को अपमान की यातना दी जायेगी उस के बदले जो तुम घमंड करते रहे धरती में अनर्चित तथा उस के बदले जो उल्लंघन करते रहे।

وَيَوْمَ نَعْرِضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَوَّلَتْهُمْ جَنَّتُهُمْ فِي حَيَاتِهِمْ الْأَنْيَاءَ وَأَنشَقَّتْهُمْ فِيهَا فُجُورُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنْهَا لَعْنًا يُنْفَخُ عَنْهُمْ كُلُّهُمْ لَعْنًا ﴿١١﴾
لَنَسْتَكْرِزُهُمْ فِي الْأَرْضِ بِمَعْيِرِ الْحَقِّ وَبِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

21. तथा याद करो आद के भाई (हूद¹) को। जब उस ने अपनी जाति को सावधान किया, अहकाफ² में जब कि गुजर चुके सावधान करने वाले (रसूल) उस के पहले और उस के पश्चात्, कि इबादत (बंदना) न करो अस्माह के अतिरिक्त की। मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन की यातना से।

وَذُكِّرْنَا لِلْأُولَىٰ أَوَّلًا أَنذَرْنَاهُمْ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَّتْ الْمَدْيُنُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَهُوَ فَخْلُهُ إِلَّا نَعْبُدُ إِلَّا اللَّهَ رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدًا ﴿١٣﴾
عَذَابًا يَوْمَ يَعِطُوهٖ ﴿١٤﴾

22. तो उन्होंने कहा कि क्या तुम हमें फेरने आये हो हमारे पूज्यों से? तो ला दो हमारे पास जिस की हमें धमकी दे रहे हो यदि तुम सच्चे हो।

قَالُوا أَجِئْنَا بِبَأْسٍ كَرِيمٍ كَذَّبَ عَنْ الْقَوْمِ الرَّسُولُ أَلَا يَعْلَمُونَ ﴿١٥﴾
بِمَا تَعْبُدُونَ أَن كُنْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦﴾

1 इस में मक्का के प्रमुखों को जिन्हें अपने धन तथा बल पर बड़ा गर्व था अरब क्षेत्र की एक प्राचीन जाति की कथा सुनाने को कहा जा रहा है जो बड़ी सम्पन्न तथा शक्तिशाली थी।

2 अहकाफ: अर्थात् ऊँचा रेत का टीला है। यह जाति उसी क्षेत्र में निवास करती थी जिसे ((रुबअल खाली)) (अर्थात् अरब टापू का चौथाई भाग जो केवल मरुस्थल है) कहा जाता है। यह क्षेत्र ओमान से यमन तक फैला हुआ था। जहाँ आज कोई आबादी नहीं है। इसी जाति को प्रथम आद भी कहा गया है।

23. हूद ने कहा उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तुम्हें वही उपदेश पहुँचा रहा हूँ जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ। परन्तु मैं देख रहा हूँ तुम को कि तुम अज्ञानता की बातें कर रहे हो।

قَالَ إِنَّمَا أَنُفِخُ بِعِندِ الْمَلِكِ وَآتُيَنَّكُمْ مَا تَدْرُسُونَ ۝
بِهِ وَلَكِنَّ أَفْئِسْتُ بِكُمْ قَوْمًا سَاهُونَ ۝

24. फिर जब उन्होंने देखा एक बादल आने हुये अपनी वादियों की ओर तो कहा यह एक बादल है हम पर बरसने वाला। बल्कि यह वही है जिस की तुम ने जल्दी मचाई है। यह आँधी है जिस में दुखदायी यातना है ॥

فَلَمَّا رَأَوْهُ غَارُوا مِنْهُ وَدَبَّرَ بَعْضُهُمْ قَوْلَ هَذَا
عَارِضٌ مُّطِيرٌ إِنَّا نَحْنُ مُّسْتَعِजُونَ بِهِ ۝
فِيهَا عَذَابٌ لَّيِّنٌ ۝

25. वह विनाश कर देगी प्रत्येक वस्तु को अपने पालनहार के आदेश से, तो वे हो गये ऐसे कि नही दिखाई देता था कुछ उन के घरों के अतिरिक्त। इसी प्रकार हम बदला दिया करते है अपराधि लोगों को।

تَدْرُسُ كُلُّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا
بَلَىٰ ۚ أَلَا مَتَكَبَّرُ لَدَيْكَ تَحْمِلُوا الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِينَ ۝

26. तथा हम ने उन को वह शक्ति दी थी जो इन¹ को नही दी है। हम ने बनाये थे उन के कान तथा आँखें और दिल, तो नही काम आये उन के कान और उन की आँखें तथा न उन

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ بَيْنَ إِنْ مَكَّنَّاكُمْ بِهِمْ
وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَآبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا
أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْعَلُونَ

1 हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बादल या आँधी देखते तो व्याकुल हो जाते। आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) ने कहा अल्लाह के रसूल! लोग बादल देख कर वर्षा की आशा में प्रसन्न होते है और आप क्यों व्याकुल हो जाते है? आप ने कहा आइशा! मुझे भय रहता है कि इस में कोई यातना न हो? एक जाति को आँधी से यातना दी गई। और एक जाति ने यातना देखी तो कहा यह बादल हम पर वर्षा करेगा। (सहीह बुखारी: 4829 तथा सहीह मुस्लिम: 899)

2 अर्थात् मक्का के क़ाफ़िरों को।

कें दिल कुछ भी। क्योंकि वे इन्कार करते थे अल्लाह की आयतों का तथा घेर लिया उन को उस ने जिस का वह उपहास कर रहे थे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ وَنَعْلَمُ مَا تُكْتُمُونَ

27. तथा हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे आस पास की बस्तियों को। तथा हम ने उन्हें अनेक प्रकार से आयतें सुना दी ताकि वह वापिस आ जायें।

وَلَقَدْ آفَكْنَا مَا خَوَّنَكُمْ مِّن نَّعْرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَرْجِعُونَ

28. तो क्यों नहीं सहायता की उन की उन्होंने जिन को बनाया था अल्लाह के अनिरिक्त (अल्लाह के) समिप्य के लिये पूज्य (उपास्य)? बल्कि वह खो गये उन से और यह¹ उन का झूठ था, तथा जिसे स्वयं वे घड़ रहे थे।

فَلَوْلَا نَصْرُهُ لَكُم مِّنَ اللَّهِ فَإِن تَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْأَلُ اللَّهُ الْيَوْمَ الْعَاقِبَةَ يُؤْتِيهَا مَن يَشَاءُ وَلَا يَسْأَلُ أَحَدٌ مِّنْهُمُ الْآخِرَ وَلَا يُؤْتِيهَا مَن يَشَاءُ إِلَّا مَن يُشِيطُ بِإِذْنِهِ لَا يَسْمَعُ وَلَا يَعْقِلُ إِلَّا الَّذِينَ هَدَىٰ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ قُلُوبُهَا لَا يَفْقَهُوْنَ شَيْئًا

29. तथा याद करें जब हम ने फेर दिया आप की ओर जिन्नो के एक² गिरोह को ताकि वह कुर्आन सुनो। तो जब वह

وَدَعَوْا إِلَى اللَّهِ لِيَأْتِيَهُمُ الْكُتُبُ وَاللَّهُ يَسْتَجِيبُ دَعْوَتَهُمْ وَيَقُولُ يَوْمَئِذٍ ذُقُوا الَّذِي كُنْتُمْ تُكْفِرُونَ بِهِ ۚ وَلَكُمُ الْعَذَابُ بِمَا كُنْتُمْ كُفَرًا ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

1 अर्थात् अल्लाह के अनिरिक्त को पूज्य बनाना।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने कुछ अनुयायियों (सहाबा) के साथ उकाज के बाजार की ओर जा रहे थे। इन दिनों शैतानों को आकाश की सूचनायें मिलनी बंद हो गई थी। तथा उन पर आकाश से अगारे फेंके जा रहे थे तो वे इस खोज में पूर्व तथा पश्चिम की दिशाओं में निकले कि इस का क्या कारण है? कुछ शैतान तिहामा (हिजाज) की ओर भी आये और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक पहुँच गया। उस समय आप ((नल्ला)) में फज्र की नमाज पढ़ा रहे थे जब जिन्नो ने कुर्आन सुना तो उस की ओर कान लगा दिये। फिर कहा कि यही वह चीज है जिस के कारण हम को आकाश की सूचना मिलनी बंद हो गई है। और अपनी जाति से जा कर यह बान कही। तथा अल्लाह ने यह आयत अपने नबी पर उतारी। (सहीह बुखारी: 4921)

इन आयतों में संकन है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जैसे मनुष्यों के नबी थे वैसे ही जिन्नो के भी नबी थे। और सभी नबी मनुष्यों में आये। (देखिये-सूरह नहल आयत 43 सूरह फुर्कान आयत 20)

उपस्थित हुये आप के पास तो उन्होंने कहा कि चुप रहो। और जब पढ़ लिया गया तो वे फिर गये अपनी जाति की ओर सावधान करने वाले हो कर।

30. उन्होंने कहा: हे हमारी जाति! हम ने सुनी है एक पुस्तक जो उतारी गई है मसा के पश्चात्। वह अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करती है। और सत्य तथा सीधी राह दिखाती है।

قَالُوا يَوْمَئِذٍ أَتَيْنَا بِكُم بَكْرَةً مِّنْ قَبْلِ
مُوسَىٰ مَصَدِّقًا لِّبَيِّنَاتٍ بِّنَدِيهِ يُهْدِي إِلَى الْبَرِّ
وَمِنْ ظَهْرِنَا مَسِيحٌ

31. हे हमारी जाति! मान लो अब्राह की ओर बुलाने वाले की बात को। तथा ईमान लाओ उस पर, वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को तथा बचा देगा तुम्हें दुःखदायी यातना से।

يَوْمَئِذٍ أَتَيْنَا بِكُم بَكْرَةً مِّنْ قَبْلِ
مُوسَىٰ مَصَدِّقًا لِّبَيِّنَاتٍ بِّنَدِيهِ يُهْدِي إِلَى الْبَرِّ
وَمِنْ ظَهْرِنَا مَسِيحٌ

32. तथा जो मानेगा नहीं अब्राह की ओर बुलाने वाले की बात तो नहीं है वह बिबश करने वाला धरती में। और नहीं है उस के लिये अब्राह के अनिरिक्त कोई सहायक। यही लोग खुले कुपथ में हैं।

وَمَنْ لَا يُصِيبْ دَالِلَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعِيبٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهٌ أُولَئِكَ فِي صَلَاتٍ مُّبِينَةٍ

33. और क्या उन लोगों ने नहीं समझा कि अब्राह, जिस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, और नहीं थका उन को बनाने से, वह सामर्थ्यवान है कि जीवित कर दे मुर्दों को? क्यों नहीं? वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

أَوَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَلَمْ يَتَّخِذْ مِن دُونِهِ إِلَهًا يَفْتَعِلْ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
بَلَاءً إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

34. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये नरक के, (और उन से कहा जायेगा): क्या यह सच्च नहीं है? वे कहेंगे: क्यों नहीं? हमारे

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَىٰ لُحَاهِهِمْ هَذَا
بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ

पालनहार की शपथ। वह कहगा तब चखो यातना उस कुफ्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

35. तो (हे नबी।) आप सहन करें जैसे साहसी रसूलों ने सहन किया। तथा जल्दी न करें उन (की यातना) के लिये। जिस दिन वह देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है तो समझेंगे कि जैसे वह नहीं रहे है परन्तु दिन के कुछ¹ क्षण। वान पहुँचा दी गई है, तो अब उन्हीं का विनाश हाँगा जो अवैज्ञाकारी है।

فَأَصْبِرْ كَمَا صَبَرْنَا لَوْلَا الْعَزِيزِينَ الرُّسُلِ
وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَكَ كَانَتْ يَوْمَ مَعْرُوفٍ
مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبِسُوا إِلَّا السَّاعَةَ مِنْ تَحَابٍ
بَدْعًا تَهْتِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الْفَاسِقُونَ

- 1 अर्थात् प्रलय की भीषणता के आगे संसारिक सुख क्षणभर प्रतीत होगा। हदीस में है कि नारकियों में से प्रलय के दिन संसार के सब से सुखी व्यक्ति को ला कर नरक में एक बार डाल कर कहा जायेगा: क्या कभी तुम ने सुख देखा है? वह कहेगा: मेरे पालनहार। (कभी) नहीं (देखा)। (सहीह मुस्लिम शरीफ: 2807)

सूरह मुहम्मद - 47

سُورَةُ مُحَمَّدٍ

सूरह मुहम्मद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है इस में 38 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 27 में नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम आया है जिस के कारण इस का नाम सूरह मुहम्मद है। इस का एक दूसरा नाम ((किताब)) भी है जो इस की आयत 20 से लिया गया है।
- इस में बताया गया है कि काफिरों तथा ईमान वालों की कार्य प्रणाली विभिन्न है इसलिये उन के साथ अल्लाह का व्यवहार भी अलग-अलग होगा। वह काफिरों के कर्म अमफल कर देगा। और ईमान वालों की दशा सुधार देगा।
- इस में आयत 4 से 15 तक ईमान वालों को युद्ध के संबन्ध में निर्देश दिये गये हैं। और परलोक के उत्तम फल की शुभसूचना दी गयी है।
- आयत 16 से 32 तक मुनाफिकों की दशा बतायी गयी है जो जिहाद के डर से काफिरों से मिल कर षड्यंत्र रचते थे।
- इस की आयत 33 से 38 तक साधारण मुसलमानों को जिहाद करने तथा अल्लाह की राह में दान करने की प्रेरणा दी गयी है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशिल तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जिन लोगों ने कुफ्र (अविश्वास) किया तथा अल्लाह की राह से रोका, (अल्लाह ने) व्यर्थ (निष्फल) कर दिया उन के कर्मों को।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْطَوْا مِنِّي بَلَدًا مِّنَ اللَّهِ أَصْلًا
أَعْمَالُهُمْ ①

2. तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उम (कुरआन) पर ईमान लाये जो उतारा गया है मुहम्मद पर, और वह सच्च है उन के पालनहार

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ
عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ كَرَّمَ اللَّهُ
سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ②

की ओर से, तो दूर कर दिया उन से उन के पापों को तथा सुधार दिया उन की दशा को।

3. यह इस कारण कि जिन्होंने कुफ्र किया और चले असत्य पर तथा जो ईमान लाये वह चले सत्य पर अपने पालनहार की ओर से (आये हुये) इसी प्रकार बता देता है आब्राहम लोगों को उन की सहीह दशाओं।¹

4. तो जब (युद्ध में) भिड़ जाओ काफिरों से तो गर्दन उड़ाओ, यहाँ तक की जब कचल दो उन को तो उन्हें दूढ़ता से बाँधो। फिर उस के बाद या तो उपकार कर के छोड़ दो या अर्धदण्ड ले कर। यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार रख दो।² यह आदेश है। और यदि अब्राहम चाहता तो स्वयं उन से बदला ले लेता। किन्तु (यह आदेश इस लिये दिया) ताकि तुम्हारी एक दूसरे द्वारा परीक्षा ले। और जो मार दिये गये अब्राहम की राह में तो वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा उन के कर्मों को।

5. वह उन्हें मार्गदर्शन देगा तथा सुधार देगा उन की दशा।
6. और प्रवेश करायेगा उन्हें स्वर्ग में

ذَٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّخَذُوا النَّبَالَ طَلًّا وَإِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّخَذُوا الْحَقَّ مِثْقَالًا كَدَالِكَ يُضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ

فَإِذَا الْيَوْمُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا اقْتَرَبَ إِلَيْهِمْ هَٰذَا أَصْحَابُهُمْ قَالُوا تِلْكَ الْوُثَاقُ إِنَّمَا مَنَاقِبُهُمْ فِيهَا فَنُذِئُوا عَنْهَا عَلَى أَنْفُسِهِمُ الْحَرِيبَ يُورِثُهَا ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَنَسَخْنَاهُمْ وَلَعَسَ أَنْ يَنْبَلُوا بِبَعْضِ الْيَحْيَىٰ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ قُلُوبُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

يَتَذَكَّرُ فِيهِمْ وَيُضْرَبُ بِهَا لَهُمْ

وَيَدْخُلُهُمُ الْجَنَّةُ عَنْهَا لَهُمْ

- 1 यह सूरह बद्र के युद्ध से पहले उतरी। जिस में मक्का के काफिरों के आक्रमण से अपने धर्म और प्राण तथा मान मर्यादा की रक्षा के लिये युद्ध करने की प्रेरणा तथा साहस और आवश्यक निर्देश दिये गये हैं।
- 2 इस्लाम से पहले युद्ध के बंदियों को दास बना लिया जाता था किन्तु इस्लाम उन्हें उपकार कर के या अर्ध दण्ड ले कर मुक्त करने का आदेश देता है। इस आयत में यह संकेत है कि इस्लाम जिहाद की अनुमति दूसरों के आक्रमण से रक्षा के लिये देता है।

जिम्ह की पहचान दे चुका है उन को।

7. हे ईमान वालो! यदि तुम सहायता करोगे अल्लाह (के धर्म) की तो वह सहायता करेगा तुम्हारी। तथा दृढ़ (स्थिर) कर देगा तुम्हारे पैरों को।
8. और जो काफिर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को
9. यह इसलिये कि उन्होंने बुरा माना उसे जो अल्लाह ने उतारा और उस ने उन के कर्म व्यर्थ कर¹ दिये।
10. तो क्या वह चले- फिरे नहीं धरती में कि देखते उन लोगों का परिणाम जो इन से पहले गुजरे? विनाश कर दिया अल्लाह ने उन का तथा काफिरों के लिये इसी के समान (यातनायें) है।
11. यह इसलिये कि अल्लाह संरक्षक (सहायक) है उन का जो ईमान लाये और काफिरों का कोई संरक्षक (सहायक)² नहीं।
12. निःसंदेह अल्लाह प्रवेश देगा उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें बहती होंगी। तथा जो काफिर हो गये वह आनन्द लेते तथा खाते है जैसे³ पशु

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَصُرُوا اللَّهَ يَصْرَحْكُمْ
وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَسْأَلُهُمْ وَأَصْلَ أَعْمَالِهِمْ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ فَاحْبَطَ
أَعْمَالَهُمْ ۝

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا إِلَيْكَ كَيْفَ
خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَرَّاهُ عَلَيْهِمْ
وَلَا يَكْبِرُونَ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَإِنَّ الْكَافِرِينَ
لِلْأَمْرِ لَهْمٌ ۝

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَعْمَلُوا الصَّالِحَاتِ
جَنَّاتٍ جُثَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يَتَمَنَّوْنَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ
مَشْجُورَةٌ ۝

1 इस में इस ओर संकेत है कि बिना ईमान के अल्लाह के हों कोई सत्कर्म मान्य नहीं है

2 उहुद के युद्ध में जब काफिरों ने कहा कि हमारे पास उज्जा (देवी) है और तुम्हारे पास उज्जा नहीं। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा। उन का उत्तर इसी आयत से दो। (सहीह बुखारी: 4043)

3 अर्थात् परलोक से निश्चिन्त संसारिक जीवन ही को सब कुछ समझते हैं।

खाने हैं। और अग्नि उन का आवास (स्थान) है।

13. तथा बहुत सी बस्तियों को जो अधिक शक्तिशाली थी आप की बस्ती से, जिस ने आप को निकाल दिया, हम ने ध्वस्त कर दिया, तो कोई सहायक न हुआ उन का।

14. तो क्या जो अपने पालनहार के खले प्रमाण पर हो वह उस के समान हो सकता है शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का दुष्कर्म तथा चलता हो अपनी मनमानी पर?

15. उस स्वर्ग की विशेषता जिस का बचन दिया गया है आज्ञाकरियों को, उस में नहरें हैं निर्मल जल की, तथा नहरें हैं दूध की, नही बदलेगा जिस का स्वाद, तथा नहरें हैं मदिरा की पीने वालों के स्वाद के लिये, तथा नहरें हैं मधु की स्वच्छा तथा उन्हीं के लिये उन में प्रत्येक प्रकार के फल हैं तथा उन के पालनहार की ओर से क्षमा। (क्या यह) उस के समान होंगे जो सदावासी होंगे नरक में तथा पिलाये जायेंगे खौलता जल जो खण्ड-खण्ड कर देगा उन की आँतों को?

16. तथा उन में से कुछ वह हैं जो कान धरते हैं आप की ओर यहाँ तक कि जब निकलते हैं आप के पास से तो कहते हैं उन से जिन को ज्ञान दिया गया है कि अभी क्या¹ कहा है? यही

وَكَايُنَ مِنْ قَرْيَةٍ لَمَّا تَقُوهُ مِنْ قَرْيَةٍ
أَخْرَجْنَاكَ عَنْهَا بِقِلَّةٍ وَأَنْتَ تَنْهَوْنَهُمْ

أَفَلَمْ يَكُنْ عَلَى سَيْمَةٍ مِنْ رَبِّهِمْ كَسْرُ نُجُجٍ لَهُمْ
عَذَابٌ وَاسْتَعْوَأَ هَؤُلَاءِ هُمْ

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي دُورَ السُّعُوتِ فِيهَا أَنْهَارٌ
مَاءٌ غَيْرٌ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ
مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ
غَلِيظٍ وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَعْفُورَةٌ مِنْ
رَبِّهِمْ تَسْمَعُ أَوَّلَ دَرَجَتِهِمْ سَاءَ يُسْمَعُ مَاءٌ جَدِيمًا
فَلَقَطَهُمْ أَهْلُهَا هُمْ

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْمَعُ إِلَيْكَ حَتَّى إِذَا خَرَجُوا مِنْ
عِندِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَذَاقٌ
أَيْعَا¹ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ
وَسَمِعُوا هَؤُلَاءِ هُمْ

1 यह कुछ मुनाफिकों की दशा का वर्णन है जिन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व

वह है कि मुहर लगा दी है अल्लाह ने उन के दिलों पर और वही चल रहे हैं अपनी मनोकामनाओं पर।

- 17 और जो सीधी राह पर है अल्लाह ने अधिक कर दिया है उन को मार्ग दर्शन में और प्रदान किया है उन को उन का सदाचार।

- 18 तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रलय ही की, कि आ जाये उन के पास सहसा? तो आ चुके हैं उस के लक्षण।¹ फिर कहाँ होगा उन के शिक्षा लेने का समय, जब वह (क्यामत) आ जायेगी उन के पास?

- 19 तो (हे नबी!) आप विश्वास रखिये कि नहीं है कोई बदनीय अल्लाह के सिवा तथा क्षमा² माँगिये अपने पाप के लिये तथा इमान वाले पुरुषों और स्त्रियों के लिये। और अल्लाह जानता है तुम्हारे फिरने तथा रहने के स्थान को।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادْهُمْ هُدًى وَالَّذِينَ تَقَوَّوْا

فَهُمْ يَمْشُونَ عَلَى الْمَسْجِدِ إِلَىٰ ذِي الْحَرَّةِ أَلَمْ يَأْتِهِمُ بَشِيرَةٌ
بِقَدْحِ أَشْرَاطِهِمْ قَالُوا لَهُمْ أَفَاجَاءَ تَعْلَمُ
ذِكْرُهُمْ ۝

فَاعْلَمُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرُوا ذُنُوبَهُمْ
وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالَّذِينَ يُقَالُونَ لَتَأْتِيَنَّكُمْ
وَمُؤْمِنُونَ ۝

सल्लम) की बातें समझ में नहीं आती थीं क्योंकि वे आप की बातें दिल लगा कर नहीं सुनते थे। तथा आप की बातों का इस प्रकार उपहास करते थे।

- 1 आयत में कहा गया है कि प्रलय के लक्षण आ चुके हैं। और उन में सब से बड़ा लक्षण आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आगमन है जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि आप ने फरमाया: ((मेरा आगमन तथा प्रलय इन दो ऊंगलियों के समान है।)) (सहीह बुखारी: 4936) अर्थात् बहुत समीप है। जिस का अर्थ यह है कि जिस प्रकार दो ऊंगलियों के बीच कोई तीसरी ऊंगली नहीं इसी प्रकार मेरे और प्रलय के बीच कोई नबी नहीं। मेरे आगमन के पश्चात अब प्रलय ही आयेगी।
- 2 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: मैं दिन में सत्तर बार से अधिक अल्लाह से क्षमा माँगता तथा तौबा करता हूँ। (बुखारी: 6307) और फरमाया कि लोगो! अल्लाह से क्षमा माँगो। मैं दिन में सौ बार क्षमा माँगता हूँ। (सहीह मुस्लिम: 2702)

20. तथा जो इमान लाये उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारी जाती कोई सूरह (जिस में युद्ध का आदेश हो)? तो जब एक दृढ़ सूरह उतार दी गई तथा उस में वर्णन कर दिया गया युद्ध का तो आप ने उन्हें देख लिया जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है कि वह आप की ओर उस के समान देख रहे हैं जो मौत के समय अचेत पड़ा हुआ हो। तो उन के लिये उत्तम है।

21. आज्ञा पालन तथा उचित वान बोलना। तो जब (युद्ध का) आदेश निर्धारित हो गया तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो उन के लिये उत्तम है।

22. फिर यदि तुम विमुख¹ हो गये तो दूर नहीं कि तुम उपद्रव करोगे धरती में तथा तोड़ोगे अपने रिश्तों (संबंधों) को।

23. यही है जिन को अपनी दया से दूर कर दिया है अल्लाह ने, और उन्हें बहरा, तथा उन की आँखें अंधी कर दी है।²

24. तो क्या लोग सोच-विचार नहीं करते या उन के दिलों पर ताले लगे हुये हैं?

25. वास्तव में जो फिर गये पीछे इस के

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نَزَّلَتْ سُورَةٌ فَأَنَّا
نَزَّلَتْ سُورَةٌ تُنصِّتُكَ وَتَذَكِّرُكَ الْيَوْمَ الْقِيَامِ
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يُخْشَوْنَ إِلَيْكَ مَخْوَ
الْمُتَعَبِينَ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَئِكَ لَهُمْ

حَاجَةٌ أَكْبَرُ وَقَدْ فَمَّرْتَهُمْ وَأَنذَرْتَهُمْ الْأَمْرَ فَلَوْ هَدَوْهُمْ
لَكُنَّا لَهُمْ مَكْرُومًا

فَهُمْ حَسِبَتْهُمُ الْأُمُّونَ أَنَّهُمْ لَنَسْفَقُ فِي الْأَرْضِ
وَنَقُولُ هُمُ الْأَعْمَى

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا فَاصْطَبِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ
إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ بَصِيرٌ

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ أَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَاتُ مَا هُمْ
عَلَىٰ

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ

1 अर्थात् अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करने से। इस आयत में संकेत है कि धरती में उपद्रव तथा रक्तपात का कारण अल्लाह तथा उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा से विमुख होने का परिणाम है। हदीस में है कि जो रिश्ते (संबंध) का जांडंगा तो अल्लाह उस को (अपनी दया से) जोड़ेगा और जो तोड़ेगा तो उसे (अपनी दया से) दूर कर देगा (सहीह बखारी: 4820)

2 अतः वे न तो मृत्यु को देख सकते हैं और न ही सुन सकते हैं।

पश्चात् कि उजागर हो गया उन के लिये मार्ग दर्शन तो शैतान ने सुन्दर बना दिया (पापों को) उन के लिये, तथा उन को बड़ी आशा दिलाई है।

الْهَدَى الشَّيْطَانُ مَوَلًى لَهُمْ وَأَتَى لَهُمْ ۝

26. यह इस कारण हुआ कि उन्होंने कहा उन से जिन्होंने धुरा माना उस (कुर्आन) को जिसे उतारा अल्लाह ने कि हम तुम्हारी बात मानेंगे कुछ कार्य में तथा अल्लाह जानता है उन की गुप्त बातों को।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا الْيَهُودُ نَزَّلُوا الْكُرْآنَ فَفَسَدَكُمْ فِي بَعْضِ الْأُمُورِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ ۝

27 तो कैसी दुर्गत होगी उन की जब प्राण निकाल रहे होंगे फरिश्ते मारते हुये उन के मुखों तथा उन की पीठों पर।

فَلَيَكُنَّ إِذْ تَوْفَعُهُمْ أَسْبَاطُ يَوْمٍ يَوْمَ تَنْفَخُ الْأَنفُسُ وَأُولَئِكَ لَهُمْ ۝

28. यह इसलिये कि वे चले उस राह पर जिस ने अप्रसन्न कर दिया अल्लाह को, तथा धुरा माना उस की प्रसन्नता को तो उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को।¹

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا نَسَحَ اللَّهُ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَاصْبِرْ أَعْمَالَهُمْ ۝

29. क्या समझ रखा है उन्होंने जिन के दिलों में रोग है कि नहीं खोलेंगा अल्लाह उन के द्वेषों को?²

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ لَنْ يُخْرِجَهُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۝

30. और (हे नबी!) यदि हम चाहें तो दिखा दें आप को उन्हें, तो पहचान लेंगे आप उन को उन के मुख से। और आप अवश्य पहचान लेंगे उन को³ (उन की) बात के ढंग से। तथा

وَلَوْ كُنَّا إِلَّا رِجَالًا مَعْرُوفَةً بِهِمْ لَسَمِعْنَا مِنْهُمْ كَلِمَةً ۝

1 आयत में उन के दुष्परिणाम की ओर संकेत है जो इस्लाम के साथ उस के विरोधी नियमों और विधानों को मानने हैं। और युद्ध के समय काफिरों का साथ देने हैं।

2 अर्थात् जो द्वेष और वैर इस्लाम और मुसलामनों में रखने हैं उसे अल्लाह उजागर अवश्य कर के रहेगा।

3 अर्थात् उन के बात करने की रीति से।

अल्लाह जानता है उन के कर्मों को।

31. और हम अवश्य परीक्षा लेंगे तुम्हारी, ताकि जाँच लें तुम में से मुजाहिदों तथा धैर्यवानों को तथा जाँच लें तुम्हारी दशाओं को।

32. जिन लोगों ने कुफ़ किया और रोका अल्लाह की राह (धर्म) से तथा विरोध किया रसूल का इस के पश्चात् कि उजागर हो गया उनके लिये मार्गदर्शन, वह कदापि हानि नहीं पहुँचा सकेंगे अल्लाह को कुछ। तथा वह व्यर्थ कर देगा उन के कर्मों को।

33. हे लोगों जो ईमान लाये हो! आज्ञा मानो अल्लाह की, तथा आज्ञा मानो रसूल की तथा व्यर्थ न करो अपने कर्मों को।

34. जिन लोगों ने कुफ़ किया तथा रोका अल्लाह की राह से, फिर वे मर गये कुफ़ की स्थिति में तो कदापि क्षमा नहीं करेगा अल्लाह उन को।

35. अतः तुम निर्बल न बनो और न (शत्रु को) संधि की ओर¹ पुकारो।

وَلَقَدْ لَبِئْتُمْ فِي هَٰذَا وَمَن يُؤْمِرْ بِهِمْ يَسْبِغْ بِهِمْ إِنَّ لَٰكُمُ الْيَوْمَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَٰعَابٌ وَهُوَ يُخَبِّرُكُمْ بِالْأَحْكَامِ ۖ

إِنَّ الْكَافِرِينَ لَكُفْرًا وَاصْدَٰؤُهُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَسَآءُوا الرُّسُلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۚ لَٰكِنْ يُصِرُّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ لِيَسْخَطَ أَعْمَالُهُمْ ۖ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرُّسُلَ وَلَا تَبْطُلُوا أَعْمَالَكُمْ ۚ

إِنَّ الْكَافِرِينَ لَكُفْرًا وَاصْدَٰؤُهُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ سَآءُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ

فَلَا يَهْمُكُمْ أَرْبَابٌ أَوْ أَوْلَادٌ إِلَى السَّلَٰمَةِ ۚ وَأَتَمُّ الْوَعْدِ ۚ

1 इस आयत में कहा गया है कि जिस प्रकार कर्त्तव्य को मानना अनिवार्य है उसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत (हदीसों) का पालन करना भी अनिवार्य है। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी उस के सिवा जिस ने इन्कार किया। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा हे अल्लाह के रसूल? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया जिस ने मेरी आज्ञाकारी की तो वह स्वर्ग में जायेगा। और जिस ने मेरी आज्ञाकारी नहीं की तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बखारी: 7280)

2 आयत का अर्थ यह नहीं कि इस्लाम संधि का विरोधी है इस का अर्थ यह है कि ऐसी दशा में शत्रु से संधि न करो कि वह तुम्हें निर्बल समझने लगे। बल्कि

तथा तुम्हीं उच्च रहने वाले हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा तुम्हारे कर्मों को।

وَاللَّهُ مَعَكُمۡ وَلَن تَغۡرِبَ أَعۡمَالُڪُمۡ ۝

36. यह संसारिक जीवन तो एक खेल कूद है और यदि तुम ईमान लाओ तथा अल्लाह से डरते रहो तो वह प्रदान करेगा तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल और नहीं मांग करेगा तुम से तुम्हारे धनों की।

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَمَلْعَبٌ وَلَڪُمۡ مِّنۡ ثَوَابِنَا ۚ وَتَسۡتَفۡئِدُونَ مِّنۡ حۡرُورِنَا ۖ وَلَا يَسۡئَلُڪُمۡ مَّا ڪُمۡ ۝

37 और यदि वह तुम से मांगे और तुम्हारा पूरा धन मांगे तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और वह खोल " देगा तुम्हारे द्वेषों को।

وَن يَسۡئَلُڪُمۡ مَّا يَمۡتَلِكُ ۖ تَحۡبِطُونَ ۖ وَخِیرَ ۖ أَصۡعَابُ ۝

38. सुनो! तुम लोग हो जिन को बलनाया जा रहा है ताकि दान करो अल्लाह की राह में तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं। और जो कंजूसी करता^१ है तो वह अपने आप ही से कंजूसी करता है। और अल्लाह धनी है तथा तुम निर्धन हो। और यदि तुम मुँह फेंरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ला देगा, फिर वे नहीं होंगे तुम्हारे जैसे।^२

هَآلَڪُمۡ مَّا لَآءِ ۖ تَدۡعُونَ بِتَقۡوَانَا ۖ فَيُحۡبِلُ ۖ اللَّهُ ۖ لِمَنۡ ڪُمۡ مِّنۡ يَّحۡبِلُ ۖ وَمَنۡ يَّحۡبِلُ ۖ فَٱلسَّيۡحِلُ ۖ عَنۡ نَّفۡسِہِ ۖ وَاللَّهُ نَعۡیُّ ۖ وَأَنۡتُمۡ أَفۡفَرَاۗءُ ۖ فَاِنۡ تَقۡوُلُوۡا یَسۡتَبۡدِلُ قَوۡمًا غَیۡرَڪُمۡ ۖ لَّۤا یَکُونُوا ۖ أَنۡتُمۡ ۖ ۝

अपनी शक्ति का लोहा मनवाने के पश्चात् संधि करो। ताकि वह तुम्हें निर्बल समझ कर जैसे चाहे संधि के लिये बाध्य न कर लें।

1 अर्थात् तुम्हारा पूरा धन मांगे तो यह स्वभाविक है कि तुम कंजूसी कर के दोषी बन जाओगे। इसलिये इस्लाम ने केवल जकात अनिवार्य की है। जो कुल धन का ढाई प्रतिशत है।

2 अर्थात् कंजूसी कर के अपने ही को हानि पहुँचाना है।

3 तो कंजूस नहीं होंगे। (देखिये: सूरह माइदा, आयत 54)

सूरह फत्ह - 48

سورة الفتح

सूरह फत्ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है इस में 29 आयते हैं।

- फत्ह का अर्थ: विजय है। और इस की प्रथम आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विजय की शुभसूचना दी गई है। इसलिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में विजय की शुभसूचना देते हुये आप तथा आप के साथियों के लिये उन पुरस्कारों की चर्चा की गई है जो इस विजय के द्वारा प्राप्त हुये साथ ही मुनाफिकों तथा मुश्रिकों को चेतावनी दी गई कि उन के बुरे दिन आ गये हैं।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हाथ पर बैअत (वचन) को अल्लाह के हाथ पर वचन कह कर आप के पद को बताया गया है। तथा इस में मुनाफिकों को जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ नहीं निकले और अपने धन-परिवार की चिन्ता में रह गये चेतावनी दी गई है। और जो विवश थे उन्हें निर्दोष करार दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को जो रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान देने को तय्यार हो गये अल्लाह की प्रसन्नता की शुभसूचना दी गई है और बताया गया है कि उन का भविष्य उज्ज्वल होगा तथा उन की सहायता होगी।
- इस में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मस्जिदे हराम में प्रवेश का जो सपना देखा है वह सच्चा है। और वह पूरा होगा। आप को ऐसे साथी मिल गये हैं जिन का चित्र तौरात और इंजील में देखा जा सकता है।
- यह सूरह जी कादा के महीने, सन् 6 हिजरी में हुदैबिया से वापसी के समय हुदैबिया तथा मदीना के बीच उतरी। (सहीह बुखारी: 4833)। और दो वर्ष बाद मक्का विजय हो गया। और अल्लाह ने आप के स्वप्न को सच्च कर दिया।

हुदैबिया की संधि:

मदीना हिज्रत के पश्चात् मक्का के मुश्रिकों ने मस्जिदे हराम (कॉबा) पर अधिकार कर लिया। और मुसलमानों को हज्ज तथा उमरा करने से रोक दिया।

अब तक मुसलमानों और काफिरों के बीच तीन युद्ध हो चुके थे कि सन् 6 हिजरी में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह सपना देखा कि आप मस्जिदे हराम में प्रवेश कर गये हैं। इसलिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमरे का एलान कर दिया। और अपने चौदह सौ साथियों के साथ 1 जीकादा सन् 6 हिजरी को मक्का की ओर चल दिये। मदीना से 6 मील जा कर जूल हुलैफा में एहराम बांधा। और कुर्यानी के पशु साथ लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से 22 कि॰मी॰ दूर हुदैबिया तक पहुँच गये तो उसमान (रजियल्लाहु अन्हु) को मक्का भेजा कि हम उमरा के लिये आये हैं। मक्का वासियों ने उन का आदर किया किन्तु इस के लिये तय्यार नहीं हुये कि नबी अपने साथियों के साथ मक्का में प्रवेश करें। इस विवाद के कारण उसमान (रजियल्लाहु अन्हु) की वापसी में कुछ देर हो गई। जिस से ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि अब बलपूर्वक ही मक्का में प्रवेश करना पड़ेगा। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों से जिहाद के लिये बैअत (बचन) ली। इस एतिहासिक बचन को ((बैअत रिजवान)) के नाम से याद किया जाता है जब मक्का वासियों को इस की सूचना मिली तो वह संधि के लिये तय्यार हो गये। और संधि के लिये कुछ प्रतिनिधि भेजे। और निम्नलिखित बातों पर संधि हुई:

- 1- मुसलमान आगामी वर्ष आ कर उमरा करेंगे।
- 2- वह अपने साथ केवल तलवार लायेंगे जो नियाम में होगी।
- 3- वह केवल तीन दिन मक्का में रहेंगे।
- 4- मुसलमान और उन के बीच दस वर्ष युद्ध विराम रहेगा।
- 5- मक्का का कोई व्यक्ति मदीना जाये तो उसे वापिस करना होगा। किन्तु यदि कोई मुसलमान काफिर बन कर मक्का आये तो वे उसे वापिस नहीं करेंगे।
- 6- हरम के आस पास के कच्चीले जिस पक्ष के साथ चाहें हो जायें। और उन पर वही दायित्व होगा जो उन के पक्ष पर होगा।

7 यदि इन कबीलों में किसी ने दूसरे पक्ष के किसी कबीले के साथ अत्याचार किया तो इसे संधि भंग माना जायेगा। यह संधि मुसलमानों ने बहुत दब कर की थी। मगर इस से उन्हें दो बड़े लाभ प्राप्त हुये-

क- मस्जिदे हराम में प्रवेश की राह खुल गई।

ख- इस्लाम और मुसलमानों पर आक्रमण की स्थिति समाप्त हो गई। जिस से इस्लाम के प्रचार-प्रसार की बाधा दूर हो गई। और इस्लाम तेजी से फैलने लगा। और जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का वासियों के संधि भंग कर देने के कारण सन् 10 हिजरी में मक्का विजय किया तो उस समय आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों की संख्या दस हजार थी। और मक्का की विजय के साथ ही पूरे मक्का वासी तथा आस-पास के कबीले मुसलमान हो गये। इस प्रकार धीरे धीरे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग ही में सारे अरब, मुसलमान हो गये। इसीलिये कुर्आन ने हुदैबिया कि संधि को फत्हे मुबीन (खुली विजय) कहा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! हम ने विजय¹ प्रदान कर दी आप को खुली विजय।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا

2. ताकि क्षमा कर दे² अल्लाह आप के लिये आप के अगले तथा पिछले दोषों को तथा पूरा करे अपना पुरस्कार आप के ऊपर और दिखाये आप को सीधी राह।

لِيُغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ
وَمُتَّعَهُ بِمَا فِيكَ وَبِمَا آتَاكَ مِنَّا

1 हदीस में है कि इस से आभग्राय हुदैबिया की संधि है। (बुखारी: 4834)

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात्री में इतनी नमाज पढ़ा करते थे कि आप के पाँव सूज जाते थे। तो आप से कहा गया कि आप ऐसा क्यों करते हैं? अल्लाह ने तो आप के बिगन तथा भविष्य के पाप क्षमा कर दिये हैं? तो आप ने फरमाया। तो क्या मैं कृतज्ञ भक्त न बनूँ। (सहीह बुखारी: 4837)

3. तथा अल्लाह आप की सहायता करे
भरपूर सहायता।

4. वही है जिस ने उतारी शान्ति ईमान
वालों के दिलों में ताकि अधिक हो जाये
उन का ईमान अपने ईमान के साथ।
तथा अल्लाह ही की है आकाशों तथा
धरती की सेनाये, तथा अल्लाह सब कुछ
और सब गुणों को जानने वाला है।

5. ताकि वह प्रवेश कराये ईमान वाले
पुरुषों तथा स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में वह
रही है जिन में नहरे और वे सदैव रहेंगे
उन में और ताकि दूर कर दे उन से
उन की बुराइयों को और अल्लाह के
यहाँ यही बहुत बड़ी सफलता है।

6. तथा यादना दे मुनाफिक पुरुषों तथा
स्त्रियों और मुशरक पुरुषों तथा
स्त्रियों को जो बुरा विचार रखने वाले
हैं अल्लाह के संबन्ध में। उन्हीं पर
बुरी आपदा आ पड़ी। तथा अल्लाह
का प्रकोप हुआ उन पर, और उस
ने धिक्कार दिया उन को। तथा तय्यार
कर दी उन के लिये नरक, और वह
बुरा जाने का स्थान है।

7. तथा अल्लाह ही की है आकाशों तथा
धरती की सेनाये और अल्लाह प्रबल
तथा सब गुणों को जानने वाला है।⁽¹⁾

8. (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को
गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने
एवं सावधान करने वाला बना कर।

وَيَسْعُرُكَ اللَّهُ نَصْرًا خَيْرًا ۝

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ سَكِينَتَهُ عَلَى قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ
يُورِثُ الْإِيمَانَ أَتَمًّا لِّمَا لَهُمْ وَيُلْغِي عَنْهُمْ
أَسْمَوتَ وَلَا تُحِيزُ وَكَانَ اللَّهُ جَدِيمًا عَزِيمًا ۝

لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ جَدِيدِينَ فِيهَا دَرَاهِقُهُمْ وَيَمْلَأُ
وَكَانَ ذَلِكَ جِندًا لِلَّذِينَ أُعْطُوا ۝

وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ
وَالْمُشْرِكَاتِ الْكَافِرِينَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا عَلَيْهِمْ
كَافِرًا أَلَا إِنَّهُمْ فِي عَذَابٍ مُّهِينٍ ۝

وَاللَّهُ جَبَّارٌ عَلِيمٌ ۝ وَكَانَ اللَّهُ خَبِيرًا
حَكِيمًا ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

1 इसलिये वह जिस को चाहे, और जब चाहे हिलाक और नष्ट कर सकता है

9. ताकि तुम इंसान लाओ अल्लाह एवं उस के रमूल पर। और सहायता करो आप की, तथा आदर करो आप का, और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रातः तथा संध्या।

10. (हे नबी!) जो बैअत कर रहे हैं आप से वह वास्तव में बैअत^१ कर रहे हैं अल्लाह से। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जिस ने वचन तोड़ा तो वह अपने ऊपर ही वचन तोड़ेगा। तथा जिस ने पूरा किया जो वचन अल्लाह से किया है तो वह उसे बड़ा प्रतिफल (बदला) प्रदान करेगा।

11. (हे नबी!) वह^२ शीघ्र ही आप से कहेंगे, जो पीछे छोड़ दिये गये बददुओ में से कि हम लगे रह गये अपने धनों तथा परिवार में। अतः आप क्षमा की प्रार्थना कर दें हमारे लिये। वह अपने मुखों से ऐसी बात कहेंगे जो उन के दिलों में नहीं है। आप उन से कहिये कि कौन है जो अधिकार रखता हो तुम्हारे लिये अल्लाह के सामने किसी चीज का यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا
وَلَسِيَّخُوهُ بِالرُّؤْيَا أَهْمِيلًا ۝

لَئِنْ أَدْرَأْتُمْ يَدَايَ عَنْكُمُ الشَّاكِرِينَ إِنَّ يَدَ اللَّهِ
فَوْقَ أَيْدِيهِمْ فَمَنْ كَذَبَ فَإِنَّهُ يُكَذِّبُ عَنْ نَفْسِهِ
وَمَنْ آوَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَمَآ يَكُنْ لَهُ فِئَةٌ
وَأَخْرَاجُهُمْ ۝

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا
أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْنَا يَقُولُونَ
يَا سَيِّدِنَا مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ شَيْءٌ قُلْ مَنْ يَمْلِكُ
لَكُمْ مِنْ عَذَابِنَا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ آذَانَكُمْ
لَقَدْ بَلَغَ الْبُلْغَانَ اللَّهُ يَأْتِي الْمُؤْمِنِينَ حَيْثُ

1. बैअत का अर्थ है हाथ पर हाथ मार कर वचन देना। यह बैअत नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के लिये हुदायिया में अपने चौदह सौ साथियों से एक वृक्ष के नीचे ली थी। जो इस्लामी इतिहास में «बैअत रिजवान» के नाम से प्रसिद्ध है। वह बैअत जो पीर अपने मुरीदों से लेते हैं तो उस का इस्लाम से कोई संबंध नहीं है।

2. आयत 11 12 में मदीना के आस पास के मुनाफिकों की दशा बताया गया है जो नबी के साथ उमरा के लिये मक्का नहीं गये। उन्होंने इस डर से कि मुसलमान सब के सब मार दिये जायेंगे, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ नहीं दिया।

पहुँचाना चाहे या कोई लाभ पहुँचाना चाहे? बल्कि अब्बाह सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

12. बल्कि तुम ने सोचा था कि कदापि वापिस नहीं आयेंगे रसूल, और न ईमान वाले अपने परिजनो की ओर कभी भी। और भली लगी यह वान तुम्हारे दिलों को, और तुम ने बुरी साँच सोची। और थे ही तुम विनाश होने वाले लोग।

بَيْنَ ظَنَّتُمْ أَنْ لَنْ يَمْلِكَبَ الرَّسُولَ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَّا
أَعْلِيَهُمْ أَبَدًا وَنَحْنُ ذُلٌّ فِي قُلُوبِكُمْ وَهَتَمْتُمْ ظَنُّ
النَّوَى وَكُنتُمْ قَوْمًا مُؤْثَرًا

13. और जो ईमान नहीं लाये अब्बाह तथा उस के रसूल पर, तो हम ने तय्यार कर रखी है काफिरों के लिये दहकती अग्नि।

وَمَنْ لَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِنَا وَرَسُولِنَا كَرَاهًا نَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا

14. अब्बाह के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह क्षमा कर दे जिसे चाहे और यातना दे जिसे चाहे। और अब्बाह अनि क्षमाशील दयावान् है।

وَلَهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا

15. वह लोग जो पीछे छोड़ दिये गये कहेंगे, जब तुम चलो गनीमतों की ओर तार्किक उन्हें प्राप्त करो कि हमें (भी) अपने साथ 'चलने दो। वह चाहते हैं कि बदल दें अब्बाह के

سَيَقُولُ الْمَعْثُورُونَ إِذَا نُظِّلْنَا إِلَى مَعْلَمٍ
بِمَا أَحْدَوْهُمَا ذُرُوءًا لَنَجْعَلَنَّكَ يَرْبَدُونَ أَنْ
يُؤَيِّزُوا كَلِمَةَ اللَّهِ كُلَّ مَنْ تَتَّبَعُوا
كَذَلِكَ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلِ قَائِلِيهِمْ

- 1 हुदैबिया से वापिस आकर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खैबर पर आक्रमण किया जहाँ के यहूदियों ने साथ भग कर के अहजाब के युद्ध में मक्का के काफिरों का साथ दिया था। तो जो बददु हुदैबिया में नहीं गये वह अब खैबर के युद्ध में इसलिये आप के साथ जाने के लिये तय्यार हो गये कि वहाँ गनीमत का धन मिलने की आशा थी। अतः आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह कहा गया कि उन्हें वना दें कि यह पहले ही से अब्बाह का आदेश है कि तुम हमारे साथ नहीं जा सकते। खैबर मदीने से ढेढ़ सौ कि०मी० दूर मदीने के उत्तर पूर्वी दिशा में है। यह युद्ध मुहर्रम सन् 7 हिजरी में हुआ।

आदेश को। आप कह दें कि कदापि हमारे साथ न चला इसी प्रकार कहा है अब्राह ने इस से पहले। फिर वह कहेंगे कि बल्कि तुम द्वेष (जलन) रखते हो हम से। बल्कि वह कम ही बात समझते हैं।

16. आप कह दें पीछे छोड़ दिये गये बददुओं से कि शीघ्र तुम बुलाये जाओगे एक अनि योद्धा जाँन (से युद्ध) की ओर।¹ जिन से तुम युद्ध करोगे अथवा वह इस्लाम ले आये। तो यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो प्रदान करेगा अब्राह तुम्हें उत्तम बदला तथा यदि तुम विमुख हो गये जैसे इस से पूर्व (मक्का जाने से) विमुख हो गये तो तुम्हें यातना देगा दुःखदायी यातना।

17. नहीं है अंधे पर कोई दोष² और न लंगड़े पर कोई दोष और न रोगी पर कोई दोष। तथा जो आज्ञा का पालन करेगा अब्राह एवं उस के रमून की तो वह प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरें, तथा जो मुख फेरेगा तो वह यातना देगा उसे दुःखदायी यातना।

18. अब्राह प्रसन्न हो गया ईमान वालों से जब वह आप (नबी) से बैअत कर रहे थे वृक्ष के नीचे। उस ने जान लिया

بَلْ تَعَسُّدُ وَتَسَائِلُ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ مَسَدٌ عَيْنٌ إِلَى قَوْمِ
أُوْلِي تَائِيٍّ شَرِيبٍ لِّقَاتِلُوهُمْ أَوْ فَسَحُونَ فَأَن
يُطِيعُوا يُؤْتُواكَ اللَّهُ تَجَرُّ حَسًّا لِّأَن تَتَوَكَّلُوا لَمَّا
تَوَلَّيْتُمْ مِن قَبْلِ يُعَذِّبُكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَنفُسِ حَرَجٌ وَلَا
عَلَى الْعُرْيِ حَرَجٌ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَجْعَلْهُ
جُزْءَ ثَمَرِهِ مِنْ حَيْثُ شَاءَ لَّأَنَّهُ وَاسٍ يَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ
عَدَاؤًا أَلِيمًا ۝

لَمَّا تَوَكَّلَ اللَّهُ عَن تَوَكُّسٍ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ
الشَّجَرِ وَتَوَكَّلْ مَا لَكَ فَلَؤَيْهِمْ فَاتَرَى الْكَفَّةَ

1 इस से अभिप्राय हुनैन का युद्ध है जो सन् 8 हिजरी में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। जिम् में पहले पराजय फिर विजय हुई और बहुत सा गनीमत का धन प्राप्त हुआ फिर वह भी इस्लाम ले आये।

2 अर्थात् जिहाद में भाग न लेने पर।

जो कुछ उन के दिलों में था इसलिये उतार दी शान्ति उन पर, तथा उन्हें बदले में दी समीप की विजय।¹⁾

عَلَيْكُمْ وَأَنَا لَكُمْ تَحَارِيرٌ ۝

19. तथा बहुत से गनीमत के धन (परिहार) जिन को वह प्राप्त करेंगे, और अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।

وَمَعَايِرُ كَثِيرَةٌ يَأْخُذُ بِهَا وَاللَّهُ خَبِيرٌ
حَكِيمٌ ۝

20. अल्लाह ने वचन दिया है तुम्हें बहुत से परिहार (गनीमतों) का जिसे तुम प्राप्त करोगे। तो शीघ्र प्रदान कर दी तुम्हें यह (खैबर की गनीमत)। तथा रोक दिया लोगों के हाथों को तुम से ताकि²⁾ वह एक निशानी बन जाये ईमान वालों के लिये, और तुम्हें सीधी राह चलाये।

وَعَدَ اللَّهُ مَعَآيِرَ كَثِيرَةٍ يَأْخُذُ بِهَا فَتَقْبَلُ لَهُ هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَفُونَ ۝
لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝

21. और दूसरी गनीमतें भी जिन को तुम प्राप्त नहीं कर सके हो, अल्लाह ने उन को नियन्त्रण में कर रखा है, तथा अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है।

وَأُخْرَى لَمْ تَقْبَلُوا عَنْهَا قَدْ آخَاطَ اللَّهُ بِهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

22. और यदि तुम से युद्ध करते जो काफिर³⁾ है तो अवश्य पीछा दिखा देते फिर नहीं पाते कोई संरक्षक और न कोई सहायक।

وَلَوْ قَاتَلَكُمْ النَّبِيُّنَ وَكَفَرُوا وَالْوَلِيُّ الْكَافِرُ فَاصْبِرُوا
لَا يُغْنِي عَنْكُمْ وَالْيَاثِرُ لَا يُصِيرُ ۝

23. यह अल्लाह का नियम है उन में जो चला आ रहा है पहले से। और तुम कदापि नहीं पाओगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَوْبَةً ۝

24. तथा वही है जिस ने रोक दिया उन

وَقَوَّالَهُنَّ كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ

1 इस से अभिप्राय खैबर की विजय है।

2 अर्थात् खैबर की विजय और मक्का की विजय के समय शत्रुओं के हाथों को रोक दिया ताकि यह विश्वास हो जाये कि अल्लाह ही तुम्हारा रक्षक तथा सहायक है

3 अर्थात् मक्का में प्रवेश के समय युद्ध हो जाता।

कें हाथों को तुम से तथा तुम्हारे हाथों को उन से मक्का की वादी¹ में, इस के पश्चात् कि तुम्हें विजय प्रदान कर की उन पर। तथा अब्राह देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।

وَبَطَّنَ سَكَّةَ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ أَنْ يَخْتَفِرَ عَلَيْهِمْ
وَكَانَ اللَّهُ يَتْلُو صُورًا

25. यह वे लोग है जिन्होंने कुफ्र किया और रोक दिया तुम्हें मस्जिदे हराम में तथा ध्वनि के पशु को उन के स्थान तक पहुँचने से रोक दिया। और यदि यह भय न होना कि तुम कुछ मुसलमान पुरुषों तथा कुछ मुसलमान स्त्रियों को जिन्हें तुम नहीं जानते थे रौंद दोगे जिस से तुम पर दोष आ जायेगा² (तो युद्ध से न रोका जाना) ताकि प्रवेश कराये अब्राह जिसे चाहे अपनी दया में। यदि वह (मुसलमान) अलग होते तो हम अवश्य यातना देते उन को जो काफिर हो गये उन में से दुखदायी यातना।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَالْهَدْيِ مَعْلُومًا أَنْ يَبْلُغَ مَحَلَّهُ وَلَوْ أَنَّهُمْ
مُؤْمِنُونَ وَيَسَاءَ مُرِيمَاتُ الَّذِينَ تَصْنَعُونَ هُمْ أَنْ
تَطُوعُوا هُمْ فَسُيِّرَ لَهُمْ فَتَرَوْهُمُ يَقُولُ لَوْلَا يُعَذِّبُ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ لَوْلَا تَرَوْهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا
كَفَرُوا وَإِنَّهُمْ عِنْدَ آيَاتِنَا

26. जब काफिरो ने अपने दिलों में पक्षपात की स्थान दे दिया जो वास्तव में जाहिलाना पक्षपात है तो अब्राह ने अपने रमूल पर तथा इमान वालों पर शान्ति उतार दी, तथा उन को पाबन्द रखा सदाचार की बात का,

وَجَعَلَ لِكُلِّ فِرْقٍ كُفْرًا وَبَيْنَ قُلُوبِهِمُ الْحَبِيَّةَ
حَبِيَّةً لِمَا بَيْنَهُمْ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى
رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْوَسْطَةِ
الْقُسْطِ وَكَانُوا أَحَقُّ بِهَا وَأَهْلُهَا
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا

1 जन्न नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हुदैबिया में थे तो काफिरो ने 80 सशस्त्र युवकों को भेजा कि वह आप तथा आप के साथियों के विरुद्ध काररवाही कर के सब को समाप्त कर दें। परन्तु वह सभी पकड़ लिये गये और आप ने सब को क्षमा कर दिया। तो यह आयत इसी अवसर पर उतरी। (सहीह मुस्लिम: 1808)

2 अर्थात् यदि हुदैबिया के अवसर पर संधि न होती और युद्ध हो जाता तो अनजाने में मक्का में कई मुसलमान भी मार जाने जा अपना इमान छुपाय हुये थे और हिजरत नहीं कर सके थे। फिर तुम पर दोष आ जाता कि तुम एक ओर इस्लाम का संदेश देते हो तथा दूसरी ओर स्वयं मुसलमानों को मार रहे हो।

तथा वह¹ उस के अधिक योग्य और पात्र थे। तथा अब्बाह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानने वाला है।

- 27 निश्चय अब्बाह ने अपने रसूल को सच्चा सपना दिखाया सच्च के अनुसार। तुम अवश्य प्रवेश करोगे मस्जिदे हराम में यदि अब्बाह ने चाहा निर्भय हो कर, अपने सिर मुंडाते तथा बाल कतरवाने हुये तुम को किसी प्रकार का भय नहीं होगा², वह जानता है जिस को तुम नहीं जानते। इसलिये प्रदान कर दी तुम्हें इस (मस्जिदे हराम में प्रवेश) में पहले एक समीप (जल्दी) की³ विजय।

28. वही है जिस ने भेजा अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सन्धर्म के साथ, ताकि उसे प्रभुत्व प्रदान कर दे प्रत्येक धर्म पर। तथा पर्याप्त है (इस

لَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الْوَيْلَ بِالْحَقِّ لَقَدْ خَلَقَ
الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ مَنْ شَاءَ اللَّهُ أَيْمُنَ تَوْبَتَيْنِ
وَرُؤُوسَكُمْ وَمَقْعِدَتَيْنِ لَاحِقَاتُونَ تَعْلَمُونَ مَا لَمْ
تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَبُورِ الْغَيْقِ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكُلُّ يَاسِرٍ
شَاهِدٌ ۝

- 1 सदाचार की बात से अभिप्राय (ता इलाहा इब्राहिमा मुहम्मदुर्रसूलुअब्राह) है हुदैबिया का संधिलेख जब लिखा गया और आप ने पहले ((विस्मिका हररहमान निर्हीम)) लिखवाइ तो कुरैश के प्रतिनिधियों ने कहा हम रहमान रहीम नहीं जानते। इसलिये ((विस्मिका अब्बाहुम्मा)) लिखा जाये। और जब आप ने लिखवाया कि यह संधिपत्र है जिस पर ((मुहम्मदुर्रसूलुअब्राह)) ने संधि की है तो उन्होंने कहा ((मुहम्मद पुत्र अब्दुअब्राह)) लिखा जाये। यदि हम आप को अब्बाह का रसूल ही मानने तो अब्बाह के घर से नहीं रोकते। आप ने उन की सब बातें मान लीं और मुसलमानों ने भी सब कुछ सहन कर लिया। और अब्बाह ने उन के दिलों को शान्त रखा और संधि हो गई।
- 2 अर्थात् ((उमरा)) करते हुये जिस में सिर के बाल मुंडाये या कटाये जाते हैं इसी प्रकार ((हज्ज)) में भी मुंडाये या कटाये जाते हैं।
- 3 इस से अभिप्राय खैबर की विजय है जो हुदैबिया से वापसी के पश्चात् कुछ दिनों के बाद हुई। और दूसरे वर्ष संधि के अनुसार आप ने अपने अनुयायियों के साथ उमरा किया और आप का सपना अब्बाह ने साकार कर दिया।

पर) अब्राह का गवाह होना।

29. मुहम्मद ¹ अब्राह के रसूल है, तथा जो लोग आप के साथ है वह काफिरों के लिये कड़े, और आपस में दयालु है। तुम देखोगे उन्हें रुकूअ सज्दा करते हुये वह खोज कर रहे होंगे अब्राह की दया तथा प्रसन्नता की। उन के लक्षण उन के चेहरों पर सज्दों के चिन्ह होंगे। यह उन की विशेषता तौरात में है। तथा उन के गुण इजील में उस खेती के समान बनाये गये है जिस ने निकाला अपना अंकुर, फिर उसे बल दिया, फिर वह कड़ा हो गया फिर वह (खेती) खड़ी हो गई अपने तने पर। प्रसन्न करने लगी किसानों को, ताकि काफिर उन से जलें। बचन दे रखा है अब्राह ने उन लोगों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन में से क्षमा तथा बड़े प्रतिफल का।

مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ
رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانًا لِّيَبْلُوَهُمْ فِي أُمُورِهِمْ مِنْ شَرِّ الشُّجُورِ
ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ الْكَرْبُوعُ
أَعْرَجَ مُطَهَّرًا كَذَلِكَ فَاصْلَعُوا لِيَتَنَزَّيَّ عَلَى
سُورَةٍ يُحِبُّ الرُّسُلَ أَنْ يَعْطِيَهُمْ فَكُلُّهُمْ عِنْدَهُ
الَّذِينَ آمَنُوا وَحِمِلُوا أثِمَاتِ الْكَافِرِينَ مِنْهُمْ مَعْمِرَةٌ
وَأَجْرٌ عَظِيمٌ

- 1 इस अन्तिम आयत में सहाबा (नबी के साथियों) के गुणों का वर्णन करते हुये यह सूचना दी गई है कि इस्लाम क्रमशः प्रगतिशील हो कर प्रभुत्व प्राप्त कर लेगा। तथा ऐसा ही हुआ कि इस्लाम जो आरंभ में खेती के अंकुर के समान था क्रमशः उर्ध्वत कर के एक दृढ़ प्रभुत्वशाली धर्म बन गया। और काफिर अपने द्वेष की अग्नि में जल भुन कर ही रह गये। हदीस में है कि ईमान वाले आपस के प्रेम तथा दया और करुणा में एक शरीर के समान हैं। यदि उस के एक अंग को दुख हो तो पूरा शरीर ताप और अनिद्रा में ग्रस्त हो जाता है। (सहीह बुखारी: 6011। सहीह मुस्लिम: 2596)

सूरह हुजुरात - 49

سُورَةُ الْأَحْزَابِ

सूरह हुजुरात के सक्षिप्त विषय

यह सूरह मदीनी है इस में 18 आयतें हैं।

- इस की आयत 4 में हुजुरों के बाहर से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पुकारने पर पकड़ की गई है इस लिये इस का नाम सूरह हुजुरात है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में इस बात पर बल दिया गया है कि अपनी बात प्रस्तुत करने में अल्लाह के रसूल से आगे न बढ़ो और आप के मान मर्यादा का ध्यान रखो। तथा ऐसी बात न बोलो जो इस्लामी भाई चारे के लिये हानिकारक हो और न्याय की नीति अपनाओ।
- इस की आयत 11 से 12 में उन नैतिक बुराईयों से बचने का निर्देश दिया गया है जो आपस में घृणा उत्पन्न करती तथा उपद्रव का कारण बनती हैं।
- इस की आयत 13 में वर्ग वर्ण और जातिवाद के गर्व का खण्डन करते हुये यह बताया गया है कि सभी जातियाँ और कबीले एक ही नर-नारी की संतान हैं। इसलिये वर्ण-वर्ग और जाति पर गर्व का कोई आधार नहीं। किसी की प्रधानता का कारण केवल अल्लाह की आज्ञा का पालन है।
- इस की अन्तिम आयतों में उन की पकड़ की गई है जो मुख से तो इस्लाम को मानते हैं किन्तु इमान उन के दिलों में नहीं उतरा है। और उन्हें बताया गया है कि सच्चा इमान वह है जिस में निफाक न हो तथा सच्चा इमान उस का है जो अल्लाह की राह में धन और प्राण के साथ जिहाद (संघर्ष) करता हो।

अल्लाह के नाम से जो अन्ध-अन्ध
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 हे लोगो! जो इमान लाये हो आगे न बढ़ो अल्लाह तथा उस के रसूल¹⁾ से।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْصُوا عَلَىٰ يَدَيْهِ

- 1 अर्थात् दीन धर्म तथा अन्य दूसरे मामलान के बारे में प्रमुख न बनो। अनुयायी बन कर रहो। और स्वयं किसी बात का निर्णय न करा।

और डरो अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَرَسُولُهُ وَأَنْقُو إِلَهَ أَنْ إِلَهَ سِوَاهُ عَلَيْهِ

1. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अपनी आवाज नबी की आवाज से ऊँची न करो। और न आप से ऊँची आवाज में बात करो जैसे एक दूसरे से ऊँची आवाज में बात करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायें और तुम्हें पता (भी) न हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ
النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ
لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ أَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝

3. निःसंदेह जो धीमी रखते हैं अपनी आवाज अल्लाह के रसूल के सामने, वही लोग हैं जो च लिया है अल्लाह ने जिन के दिलों को सदाचार के लिये उन्हीं के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

إِنَّ الَّذِينَ يَخُفُّونَ أَسْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ
أُولَئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ فَلَا تَقْوَى
لَهُمْ عَذَابٌ وَأَلْبَسَ لَهُمُ الْعِلْمَ ۝

4. वास्तव में जो आप को पुकारते हैं है कमरों के पीछे से उन में से

إِنَّ الَّذِينَ يَدْعُونَكَ مِنْ خَلْفِ الْحُجُرِ وَالْمُتَرَفِّعِينَ

1. हदीस में है कि यनी तमीम के कुछ सवार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये तो आदरणीय अबू बक्र (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि काकाअ बिन उमर को इन का प्रमुख बनाया जाये। और आदरणीय उमर (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा: बल्कि अकरअ बिन हाबिस को बनाया जाये। तो अबू बक्र (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा: तुम केवल मेरा विरोध करना चाहते हो। उमर (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा: यह बात नहीं है। और दोनों में विवाद हाँन लगा और उन के स्वर ऊँचे हो गये। इसी पर यह आयत उतरनी। (सहीह बुखारी: 4847)

इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान मर्यादा तथा आप का आदर-सम्मान करने की शिक्षा और आदेश दिये गये हैं। एक हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने साबित बिन कैस (रजियल्लाहु अन्हु) को नहीं पाया तो एक व्यक्ति से पता लगाने को कहा। वह उन के घर गये तो वह मिर झुकाये बैठे थे। पछने पर कहा: बुरा हो गया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास ऊँची आवाज से चालना था जिस के कारण भरे सारे कर्म व्यर्थ हो गये। आप ने यह सुन कर कहा: उसे बता दो कि वह नारकी नहीं वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुखारी शरीफ: 4846)

अधिकतर निर्वोध है।

- 5 और यदि वह सहन¹¹ करने यहाँ तक कि आप निकल कर आने उन की ओर तो यह उत्तम होता उन के लिये तथा अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला दयावान् है।

- 6 हे ईमान वाले! यदि तुम्हारे पास कोई दुराचारी¹² कोई सूचना लाये तो भली-भाँति उस का अनुसंधान (छान बीन) कर लिया करो। ऐसा न हो कि तुम हानि पहुँचा दो किसी समुदाय को आज्ञानता के कारण, फिर अपने किये पर पछताओ।

- 7 तथा जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद है। यदि वह तुम्हारी बात मानते रहे बहुत से विषय में तो तुम आपदा में पड़ जाओगे। परन्तु

لَا يَتَّبِعُونَ

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكَ فَاسِقٌ مِّن مِّنْ بَيْنِهِمْ
فَلِيُخَبِّرْكَ فَهُمْ لَعْنَةُ اللَّهِ لَمَّا خَبَّوْا وَلَئِن مَّا مَعْتَمَرْتُمْ
بِهِمْ

وَعَلِمُوا أَنَّ فِيكَ رَسُولَ اللَّهِ لَئِي يُخَبِّرَنَّكُمْ
فَإِنْ لَمْ يَخْبَرْكُمْ وَلَكِنْ لَمْ يَكُنْ فِيكُمْ فَاحْذَرُوا
وَلَا تَكُونُوا مِّنَ الْفَاسِقِينَ

- 1 हदीस में है कि अकरअ बिन हाश्म (रजियल्लाहु अन्हु) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये और कहा हे मुहम्मद! बाहर निकलिये, उसी पर यह आयत उतरी। (मुस्नद अहमद 3।588, 6 394)

- 2 इस में इस्लाम का यह नियम बनाया गया है कि बिना छान बीन के किसी की ऐसी बात न मानी जाये जिस का सम्बन्ध दीन अथवा किसी बहुत गंभीर समस्या से हो। अथवा उस के कारण कोई बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो सकती हो और जैसा कि आप जानते हैं अब यह नियम संसार के कोने कोने में फैल गया है। सारे न्यायालयों में इसी के अनुसार न्याय किया जाना है। और जो इस के विरुद्ध निर्णय करता है उस की कड़ी आलोचना की जाती है। तथा अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चान यह नियम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस पाक के लिये भी है। कि यह छान बीन किये बगैर कि वह सहीह है या नहीं उस पर अमल नहीं किया जाना चाहिये। और इस चीज को इस्लाम के विद्वानों ने पूरा कर दिया है कि अल्लाह के रसूल की वे हदीस कौन सी हैं जो सहीह हैं तथा वह कौन सी हदीस हैं जो सहीह नहीं हैं और यह विशेषता केवल इस्लाम की है। संसार का कोई धर्म यह विशेषता नहीं रखता।

अब्राह ने प्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये ईमान को तथा सुशोभित कर दिया है उसे तुम्हारे दिलों में और अप्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये कुफ्र तथा उल्लंघन और अवैज्ञा को, और यही लोग संमार्ग पर है।

وَالْعَصِيَّانَ أَزْلَمَ لِرَبِّهِمْ ۖ

8. अब्राह की दया तथा उपकार से, और अब्राह सब कुछ तथा सब गुणों को जानने वाला है।

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَهُوَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ

9. और यदि ईमान वालों के दो गिरोह लड़¹ पड़े तो संधि करा दो उन के बीच फिर दोनों में से एक दूसरे पर अत्याचार करे तो उस से लड़ो जो अत्याचार कर रहा है यहाँ तक कि फिर जाये अब्राह के आदेश की ओर। फिर यदि वह फिर² आये तो उन के बीच संधि करा दो न्याय के साथ। तथा न्याय करो वास्तव में अब्राह प्रेम करता है न्याय करने वालों से।

وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا فَإِنْ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَجَاهِلُوا إِلَيْهَا فَأْتِيَا حُكْمَ رَبِّكَ فَإِنْ لَّمْ يَأْتِ الْهَدَىٰ فَأَتِ الْقَوْمَ الْأَنصَرُونَ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَأْتِ حُكْمَهُ أَيَّ شَيْءٍ كَانَ مُنَاقِظًا ۚ

10. वास्तव में सब ईमान वाले भाई भाई हैं। अतः संधि (मेल) करा दो अपने दो भाइयों के बीच तथा अब्राह से डरो, ताकि तुम पर दया की जाये।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلَحُوا بَيْنَ أَعْمَارِهِمْ ۚ وَاللَّهُ لَعَلَّكُمْ تَرْحَمُونَ ۚ

11. हे लोगो जो ईमान लाये हो!³ हमी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا قَوْمَ عَنَىٰ ۚ

1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया मेरे पश्चान् कार्फिरो के समान हो कर एक दूसरे की गर्दन न मारना। (सहीह बुखारी: 121 सहीह मुस्लिम: 65)

2 अर्थात् किताब और मुन्नन के अनुसार अपना झगड़ा चुकाने के लिये तय्यार हो जाये।

3 आयत 11 तथा 12 में उन सामाजिक बुराईयों से रोका गया है जो भाईचारे को खंडित करती हैं। जैसे किसी मुसलमान पर व्यंग करना, उस की हैसी उड़ाना,

न उड़ाये कोई जाति किसी अन्य जाति की। हो सकता है वह उन से अच्छी हो। और न नारी अन्य नारियों की। हो सकता है कि वह उन से अच्छी हो। तथा आक्षेप न लगाओ एक दूसरे को और न किसी को बुरी उपाधि दो। बुरा नाम है अपशब्द ईमान के पश्चात्। और जो क्षमा न माँगे तो वही लोग अत्याचारी है।

12. हे लोगो जो ईमान लाये हो। बचो अधिकांश गुमानों से। वास्तव में कुछ गुमान पाप है। और किसी का भेद न लो और न एक-दूसरे की गीबत¹⁾ करो। क्या चाहेगा तुम में से कोई अपने मरे भाई का माम खाना? अतः तुम्हें इस से घृणा होगी। तथा अल्लाह से डरते रहो वास्तव में अल्लाह अति क्षमावान् दयावान् है।

لَا تُؤَاخِذُوا بَعْضَكُمْ بَعْضًا فَمَن تَابَ فَإِنَّ رَبَّهُ تَائِبٌ رَّحِيمٌ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظُّلُمِ
بَعْضُ الظُّلُمِ أَكْبَرُ لَا تُجَسِّسُوا وَكَاتِبُكُمْ
بَعْضًا لِّبَعْضٍ يَكُنَّ لَكُمْ فِتْنَةً أَعْيُنُكُمْ
فَلَا تَتَّبِعُوا فِي الْأَفْعَالِ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا أَمْوَالَكُمْ الَّتِيْ
كُنتُمْ يَتَّبِعُونَ ۚ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظُّلُمِ
بَعْضُ الظُّلُمِ أَكْبَرُ لَا تُجَسِّسُوا وَكَاتِبُكُمْ
بَعْضًا لِّبَعْضٍ يَكُنَّ لَكُمْ فِتْنَةً أَعْيُنُكُمْ
فَلَا تَتَّبِعُوا فِي الْأَفْعَالِ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا أَمْوَالَكُمْ الَّتِيْ
كُنتُمْ يَتَّبِعُونَ ۚ

उसे धुरे नाम से पुकारना उस के बारे में बुरा गुमान रखना, किसी के भेद की खोज करना आदि इसी प्रकार गीबत करना। जिस का अर्थ यह है कि किसी की अनुपस्थिति में उस की निन्दा की जाये। यह वह सामाजिक बुराईयाँ हैं जिन से कुआन तथा हदीसों में रोका गया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने हज्जतुल वदाअ के भाषण में फरमाया मुसलमानों। तुम्हारे प्राण तुम्हारे धन तथा तुम्हारी मर्यादा एक दूसरे के लिये उसी प्रकार आदर्णीय है जिस प्रकार यह महीना तथा यह दिन आदर्णीय है। (महीह बुखारी: 1741, महीह मुस्लिम: 1679) दूसरी हदीस में है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। वह न उस पर अत्याचार करे और न किसी को अत्याचार करने दे। और न उसे नीच समझे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने सीने की ओर संकेत कर के कहा अल्लाह का डर यहाँ होना है। (महीह मुस्लिम: 2564)

1. हदीस में है कि तुम्हारा अपने भाई की चर्चा ऐसी बात से करना जो उसे बुरी लगे वह गीबत कहलानी है। पूछा गया कि यदि उस में वह बुराई हो तो फिर? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया यही तो गीबत है। यदि न हो तो फिर वह आरोप है। (महीह मुस्लिम: 2589)

13. हे मनुष्यो! हम ने तुम्हें पैदा किया है एक तर नारी से। तथा बना दी है तुम्हारी जानियाँ तथा प्रजानियाँ ताकि एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो। वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَى وَجَعَلَكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

- 1 इस आयत में सभी मनुष्यों को संबोधित कर के यह बताया गया है कि सब जानियों और कबीलों के मूल माँ-बाप एक ही हैं। इसलिये बर्ग-वर्ण तथा जाति और देश पर गर्व और भेद-भाव करना उचित नहीं। जिस से आपस में घृणा पैदा होती है इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था में कोई भेद-भाव नहीं है। और न ऊँच नीच का कोई विचार है और न जात पात का, तथा न कोई छूवा छूत है नमाज में सब एक साथ खड़े होते हैं। विवाह में भी कोई बर्ग-वर्ण और जाति का भेद भाव नहीं। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कुरैशी जाति की स्त्री जैनब (रजियल्लाहु अन्हु) का विवाह अपने मुक्त किये हुये दास जैद (रजियल्लाहु अन्हु) में किया था। और जब उन्होंने उसे तलाक दे दी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जैनब से विवाह कर लिया। इसलिये कोई अपने को सय्यद कहते हुये अपनी पुत्री का विवाह किसी व्यक्ति से इसलिये न करे कि वह सय्यद नहीं है तो यह जाहिली युग का विचार समझा जायेगा जिस से इस्लाम का कोई सम्बंध नहीं है। बल्कि इस्लाम ने इस का खण्डन किया है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में अफ्रीका के एक आदमी बिलाल (रजियल्लाहु अन्हु) तथा रोम के एक आदमी सुहैब (रजियल्लाहु अन्हु) बिना रंग और देश के भेद भाव के एक साथ रहते थे। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा अल्लाह ने मुझे उपदेश भेजा है कि आपस में झुक कर रहो और कोई किसी पर गर्व न करे। और न कोई किसी पर अन्याचार करे। (सहीह मुस्लिम 2865)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा लोग अपने मरे हुये बापों पर गर्व न करें। अन्यथा वे उस कीड़े से हीन हो जायेंगे जो अपने नाक से गन्दगी ढकैलता है। अल्लाह ने जाहिलिय्यत का पक्षपात और बापों पर गर्व को दूर कर दिया। अब या तो सदाचारी इंसान वाला है या कुकर्मि अभागा सभी आदम की संतान है (मुनन अबू दाऊद 5116) इस हदीस की मनद हमन है।

यदि आज भी इस्लाम की इस व्यवस्था और विचार को मान लिया जाये तो पूरे विश्व में शान्ति तथा मानवता का राज्य हो जायेगा।

सब से सूचित है।

14. कहा कुछ बदूओ (देहातियों) ने कि हम ईमान लाये। आप कह दें कि तुम ईमान नहीं लाये। परन्तु कहो कि हम इस्लाम लाये। और ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में प्रवेश नहीं किया। तथा यदि तुम आज्ञा का पालन करने रहे अल्लाह तथा उस के रसूल की, तो नहीं कम करेगा वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों में से कुछ। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान्^{११} है।

15. वास्तव में ईमान वाले वही हैं जो ईमान लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर फिर सदिह नहीं किया और जिहाद किया अपने प्राणों तथा धनों से अल्लाह की राह में, यही सच्चे हैं।

16. आप कह दें कि क्या तुम अवगत करा रहे हो अल्लाह को अपने धर्म से? जब कि अल्लाह जानता है जो कुछ (भी) आकाशों तथा धरती में है तथा वह प्रत्येक वस्तु का अति जानी है।

17. वे उपकार जता रहे हैं आप के ऊपर कि वह इस्लाम लाये हैं। आप कह दें कि उपकार न जताओ मुझ पर अपने इस्लाम का। बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखायी है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो।

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَمْ تُؤْمِرُوا وَلَكِنْ قُولُوا
أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَتَغْلِبِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ
وَمَنْ يُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ أَلَيْسَ لَهُمْ أَجْرٌ
كَبِيرٌ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
لَمْ يَأْتُوا وَحْدَهُمْ بِشَيْءٍ مِنْ دِينِهِمْ
يَتَّبِعُونَ مَا وَدَّعَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَأَقْرَبُ مِنْ ذَلِكَ عِدَّةٌ

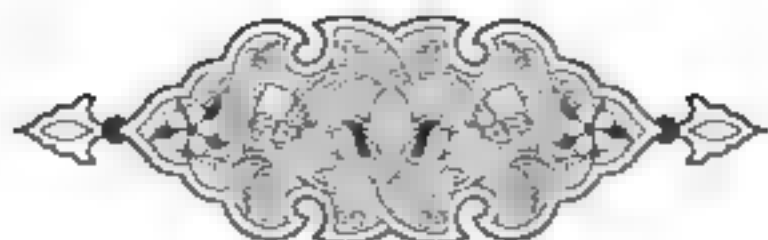
قُلْ أَعْلَمُ مِمَّا فِي سَمَوَاتٍ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَلِلَّهِ يَلْقَىٰ كُلُّ شَيْءٍ حَيْثُ

يَقُولُ عَيْنٌ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا أَمْرُ عَلَيَّ
إِسْلَامُكُمْ بَلِ اللَّهُ يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْكُمْ
فَإِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

1. आयत का भावार्थ यह है कि मुख से इस्लाम को स्वीकार कर लेने से मुसलमान तो हो जाता है किन्तु जब तक इमान दिल में न उतरे वह अल्लाह के समीप ईमान वाला नहीं होता। और इमान ही आज्ञा पालन की प्रेरणा देता है जिस का प्रतिफल मिलेगा।

18. निसदेह अल्लाह ही जानता है आकाशों तथा धरती के गैब (छपी बात) को, तथा अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम कर रहे हो।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝



सूरह काफ - 50

سُورَةُ الْكَافِ

सूरह काफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ, अक्षर (काफ) से हुआ है। जो इस का यह नाम रखने का कारण है।
- इस में कुर्आन की महिमा का वर्णन करते हुये मौत के पश्चात् जीवन से संबन्धित संदेहों को दूर किया गया है। और आकाश तथा धरती के उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से मौत के पश्चात् जीवन का विश्वास होता है।
- इस में उन जानियों के परिणाम द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने उन रसूलों को झुठलाया जो दूसरे जीवन की सूचना दे रहे थे।
- इस में कर्मों के अभिलेख तथा नरक और स्वर्ग का ऐसा चित्र दिखाया गया है जिस से लगता है कि यह सब सामने हो रहा है।
- आयत 36 और 38 में शिक्षा दी गई है, और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपने स्थान पर स्थित रह कर कुर्आन द्वारा शिक्षा देते रहने के निर्देश दिये गये हैं।

हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक जुमुआ को मिम्बर पर यह सूरह पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम: 873)

इसी प्रकार आप इसे दोनों इंद की नमाज, और फज्र की नमाज में भी पढ़ते थे। (मुस्लिम: 878, 458)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. काफा शपथ है आदरणीय कुर्आन की।
2. बल्कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ
गया उन के पास एक सवधान करने

قَالَ سَوَاءُ الْغُرَانِ لَيْسَ بِيَوْمِ

بَلْ يَحْشُرُونَ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ

هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۝

वाला उन्ही में मे। तो कहा काफ़िरो
ने यह तो बडे आश्चर्य¹ की बात है।

عَبْدًا أَوْثَقْنَا وَلَكِنَّا نَرَاكَ ذَلِيلًا رَّجَعًا لَّيْسَ ۝

3 क्या जब हम मर जायेंगे और धूल हो
जायेंगे? तो यह वापसी दूर की बात²
(असंभव) है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِندَنَا كِتَابٌ
حَدِيدٌ ۝

4 हमें ज्ञान है जो कम करती है धरती
उन का अंश, तथा हमारे पास एक
सुरक्षित पुस्तक है।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ لَا يَمُرُّونَ ۝

5 बल्कि उन्होंने झूठला दिया सत्य को
जब आ गया उन के पास। इसलिये
उलझन में पड़े हुये है।

أَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فُتُوفَهُ رَبِّهَا وَرَبِّهَا
وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ۝

6 क्या उन्होंने नहीं देखा आकाश की
और अपने ऊपर कि कैसा बनाया है
हम ने उसे और सजाया है उस को
और नहीं है उस में कोई दराड़?

وَالْأَرْضُ مَدَدُوهَا وَلَقِبَ فِيهَا قُورَيْ ۝
يُهَا مِنْ كُلِّ صُفْحَةٍ مَعِينٍ ۝

7 तथा हम ने धरती को फैलाया,
और डाल दिये उस में पर्वत। तथा
उपजायी उस में प्रत्येक प्रकार की
सुन्दर वनस्पतियों।

نُفُورُهُ وَذُرَى كُلِّ عَمَلٍ عَجِيبٍ ۝

8 आँख खोलने तथा शिक्षा देने के लिये
प्रत्येक अल्लाह की ओर ध्यानमग्न
भक्त के लिये।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَارَكًا فَأَنْشَأْنَا مِنْهُ
بُحْبُوبًا ۝

9 तथा हम ने उतारा आकाश से शुभ
जल फिर उगाये उस के द्वारा चारा
तथा अब जो काटे जायें।

1 कि हमारे जैसा एक मनुष्य समूल कैसे हो गया?

2 सुरक्षित पुस्तक से अभिप्राय ((लौह महफूज)) है। जिस में जो कुछ उन के
जीवन-मरण की दशायें है वह पहले ही से लिखी हुई है। और जब अल्लाह का
आदेश होगा तो उन्हें फिर बनाकर तय्यार कर दिया जायेगा।

10. तथा खजूर के ऊँचे वृक्ष जिन के गुच्छे गुथे हुये हैं।
11. जीविका के लिये भक्तों की, तथा हम ने जीविन कर दिया निर्जीव नगर को। इसी प्रकार (तुम्हें भी) निकलना है।
12. झुठलाया इस से पहले नूह की जाति तथा कूबे के वासियों एवं समूद ने।
13. तथा आद और फिरऔन एवं लूत के भाइयों ने।
14. तथा ऐका के वासियों ने, और तुव्वअ¹ की जाति ने। प्रत्येक ने झुठलाया² रमूलों को। अन्ततः सच्च हो गई (उन पर) हमारी धमकी
15. तो क्या हम थक गये हैं प्रथम बार पैदा कर के? बल्कि यह लोग संदेह में पड़े हुये हैं नये जीवन के बारे में।
16. जब कि हम ने ही पैदा किया है मनुष्य को और हम जानते हैं जो विचार आते हैं उस के मन में। तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस की) प्राणनाडी³ से।

وَالنَّخْلُ بِسَبَإٍ لَهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۝

وَمِرْقَاتُ الْبَعِثَةِ وَأَجْبِثَاتُهَا بَلَدَةٌ قَتِيلَةٌ كَذَلِكَ
الْمُتَعَرِّضِينَ ۝

كَذَلِكَ قَتَلْنَا نُهْرَجَ قَوْمَ نُوحٍ وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَشُعُوبًا ۝

وَمَا أَزِلْهُمْ قَتْلُونَ فَاقْتُلُوا لَوْ ۝

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمِ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَغُلِبُوا بِهِمْ ۝

أَفَعِثْنَا بِالْحَقِّ لَأَدْرِي بَلْ هُمْ قُلُوبٌ لَّيْسَ بَيْنَ
حَقِّ وَبُرْهَانٍ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ
وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝

1 देखिये सूरह दुखान आयत: 37।

2 इन भायनों में इन जातियों के विनाश की चर्चा कर के कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को न मानने के परिणाम से सावधान किया गया है।

3 अर्थात् हम उस के बारे में उस से अधिक जानते हैं।

17. जब कि¹ (उस के) दायें बायें बैठे दो फरिश्ते लिख रहे हैं।
18. वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।
19. आ पहुँची मौत की अचेतना (बे होशी) सत्य ले कर। यह वही है जिस से तू भाग रहा था।
20. और फेंक दिया गया मूर (नरसिंघा) में। यही यातना के बचन का दिन है।
21. तथा आयेगा प्रत्येक प्राणी इस दशा में कि उस के साथ एक हाँकने² वाला और एक गवाह होगा।
22. तू इसी से अचेत था, तो हम ने दूर कर दिया तेरे पर्दे को, तो तेरी आँख आज खूब देख रही है।
23. तथा कहा उस के साथी³ ने यह है जो मेरे पास तय्यार है।
24. दोनों (फरिश्तों को आदेश होगा कि) फेंक दो नरक में प्रत्येक काफिर (सत्य के) विरोधी को।
25. भलाई के रोकने वाले, अधर्मी,

رَفَعَتْهُ الْمَلَكَيْنِ مِنَ الْمَوْتِ يَمِينٌ وَشِمَالٌ ۝

مَا يَعْطُونَ مِنَ الْقَوْلِ الْعَالَمِيَّةَ يُفَتِّحُونَ ۝

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ ۝

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعْدِ ۝

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَها سَاقٍ وَشَهِيدٌ ۝

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكُفَّ عَنْكَ عَنْكَ لَوْ ۝

فَبَصُرَكَ الْيَوْمَ حَوِيدٌ ۝

وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَىٰ عَيْنَيْكَ ۝

لَقِيَائِي جَهَنَّمَ كُلٌّ كَقَدَرِ عَيْنِي ۝

مِّنَّاوَالْخَيْرِ مُغْتَبٍ مُّرْتَبٍ ۝

- 1 अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के दायें तथा बायें दो फरिश्ते नियुक्त हैं जो उस की बातों तथा कर्मों को लिखने रहते हैं। जो दायें हैं वह पुण्य को लिखता है। और जो बायें हैं वह पाप को लिखता है।
- 2 यह दो फरिश्ते होंगे एक उसे हिमात्र के लिये हाँक कर लायेगा, और दूसरा उस का कर्म पत्र प्रस्तुत करेगा।
- 3 साथी से अभिप्राय वह फरिश्ता है जो ससार में उस का कर्म लिख रहा था। वह उस का कर्म पत्र उपस्थित कर देगा।

सदेह करने वाले को।

26. जिस ने बना लिये अब्राह के साथ दूसरे पूज्य तो दोनों को फेंक दो कड़ी यातना में।

27. उस के साथी (शैतान) ने कहा: हे हमारे पालनहार! मैं ने इसे कुपथ नहीं किया, परन्तु वह स्वयं दूर के कुपथ में था।

28. अब्राह ने कहा: झगडा न करो मेरे पास। मैं ने तो पहले ही (संसार में) तुम्हागी ओर चेतावनी भेज दी थी।

29. नहीं बदली जाती बात मेरे पास¹, और न मैं तनिक भी अन्याचारी हूँ भक्तों के लिये।

30. जिस दिन हम कहेंगे नरक से कि तू भर गई? और वह कहेगी क्या कुछ और है?²

31. तथा समीप कर दी जायेगी स्वर्ग, वह सदाचारियों से कुछ दूर न होगी।

32. यह है जिस का तुम को वचन दिया जाता था प्रत्येक ध्यानमग्न रक्षक³ के लिये

33. जो डरा अत्यंत कृपाशील से विन देखे तथा ले कर आया ध्यान मग्न दिला।

34. प्रवेश कर जाओ इस में शान्ति के

إِلَّا بِي حَقٍّ مَعَهُمْ إِلَهًا غَرَفَ إِلَيْهِ فِي الْعَصَابِ
الشَّيْطَانِ

قَالَ كَرِهْتَ رَبَّنَا مَا أَطْعِمْتَهُ وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ
بَعِيدٍ

فَإِنْ لَمْ تَحْتَفِظْ أَلَدًا لِي وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكَ بِالْوَعْدِ

يَا بَدِّلْ الْقَوْلَ بَدِّلِي وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ الْعَالِينَ

يَوْمَ نَقُولُ لِلْمَعْمُورِ مِنْ أَسْفَلٍ وَنَقُولُ مَنْ مِنْ
الْمُرِيدِ

وَلَا يَلْبَسُ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ

هَذَا مَا وَعَدُونَا لِكُلِّ أَزْوَاجٍ حَفِيظٍ

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ الْعَلِيمَ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ

إُدْخِلُوهُمْ فِي سَلَامٍ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ

1 अर्थात् मेरे नियम अनुसार कर्मों का प्रतिकार दिया गया है।

2 अब्राह ने कहा है कि वह नरक को अवश्य भर देगा। (देखिये सूरह मज्दा आयत 13) और जब वह कहेगी कि क्या कुछ और है? तो अब्राह उस में अपना पैर रख देगा और वह बस बस कहने लगेगी। (बुखारी: 4848)

3 अर्थात् जो अब्राह के आदेशों का पालन करता था।

साथ। यह सदैव रहने का दिन है।

35. उन्हीं के लिये जो वे इच्छा करेंगे उस में मिलेगा। तथा हमारे पास (इस से भी) अधिक है।¹

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝

36. तथा हम विनाश कर चुके हैं इन से पूर्व बहुत से समुदायों का जो इन से अधिक थे शक्ति में। तो वह फिरते रहे नगरों में, तो क्या कहीं कोई भागने की जगह पा सके? ²

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرٍ فَاجْتَمَعُوا لَهُ لَنَخَسَنَّهُمْ بِأَفْئُتٍ مِّنْهُ يَوْمَ ذَا الْقُرْبَىٰ ۚ ۝

37. वास्तव में इस में निश्चय शिक्षा है उस के लिये जिस के दिन हो, अथवा कान धरे और वह उपस्थित ³ हो।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرًا لِّمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝

38. तथा निश्चय हम ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छः दिनों में, और हमें कोई धकान नहीं हुई।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَامِيرُ لَيْلٍ ۝

39. तो आप सहन करें उन की बातों को तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने से पहले तथा डूबने से पहले।⁴

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝

1 अधिक से अभिप्राय अल्लाह का दर्शन है। (देखिये सूरह यूनस आयत 26, की व्याख्या में सहीह मुस्लिम 181)

2 जब उन पर यत्तना आ गई।

3 अर्थात् ध्यान से सुनता हो।

4 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चाँद की ओर देखा। और कहा तुम अल्लाह को ऐसे ही देखोगे। उस के देखने में तुम्हें कोई बाधा न होगी। इसलिये यदि यह हो सके कि सूर्य निकलने तथा डूबने से पहले की नमाजों से पीछे न रहो तो यह अवश्य करो। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी: 554, सहीह मुस्लिम: 633)

यह दोनों फज्र और अस्म की नमाजें हैं। हदीस में है कि प्रत्येक नमाज के पश्चात्

40. तथा रात के कुछ भाग में उस की पवित्रता का वर्णन करें और सज्दों (नमाजों) के पश्चात् (भी)।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ النُّجُومِ ۝

41. तथा ध्यान से सुनो, जिस दिन पुकारने वाला¹ पुकारेगा समीप स्थान से।

وَأَسْمِعْ يَوْمَ رَبِّكَ أَهْلَهُ مِنَ الْمَقَامِ ۝

42. जिस दिन सब सुनेंगे कड़ी आवाज सत्य के साथ, वही निकलने का दिन होगा।

يَوْمَ يَسْمَعُونَ سُحُوفًا بِالسَّحَابِ ذِكْرًا يَوْمَ تُنْفَخُ ۝

43. वास्तव में हम ही जीवन देते तथा मारते हैं और हमारी ओर ही फिर कर आना है।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَحْيِي الْمَوْتَىٰ ۝

44. जिस दिन फट जायेगी धरती उन से, वह दौड़ने हुये (निकलेंगे) यह एकत्र करना हम पर बहुत सरल है।

يَوْمَ نَشْغُفُّ الْأَرْضَ وَبِحُكْمٍ يُسْفَرُ ۝

45. तथा हम भली-भाँति जानते हैं उसे जो कुछ वे कह रहे हैं। और आप उन्हें बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं हैं। तो आप शिक्षा दें कर्मान द्वारा उसे जो डरना हो मेरी यातना से।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِمْ بِمُعْذِرٍ ۝

فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعَذِيبِ ۝

अल्लाह की तस्वीह और हम्द तथा तक्वीर 33 33 बार करो। (सहीह बुखारी 843, सहीह मुस्लिम: 595)

1 इस से अभिप्राय प्रलय के दिन सूर में फूँकने वाला फरिश्ता है।

सूरह जारियात - 51

سُورَةُ الْجَارِيَاتِ

सूरह जारियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 60 आयतें हैं।

- जारियात का अर्थ है ऐसी वायु जो धूल उड़ाती हो। इस की आयत 1 से 6 तक में तूफानी तथा वर्षा करने वाली हवाओं और संसार की रचना तथा व्यवस्था में जो मनुष्य को सचेत कर देती है, उन के द्वारा इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि कर्मों का प्रतिफल मिलना आवश्यक है। तथा इसी प्रकार कर्मफल के इन्कार और उपहास के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 15 से 19 तक में अद्विह से डरने तथा सदाचार का जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। और उस का उत्तम फल बताया गया है।
- आयत 20 से 23 तक में उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो आकाश तथा धरती में और स्वयं मनुष्य में हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि अद्विह की यातना का नियम इस संसार में भी काफिरों पर लागू होता रहा है।
- अन्त में आयत 47 से 60 तक अद्विह की शक्ति तथा महिमा का वर्णन करते हुये उस की ओर लपकने और उस की बंदना करने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है (बादलों को) बिखेरने
वालियों की।
2. फिर (बादलों का) बोझ लादने
वालियों की।
3. फिर धीमी गति से चलने वालीयों की।

وَالَّذِينَ يَذُرُّونَ

فَالْحَامِلَاتِ وُجُوهًا

فَالْحَامِلَاتِ يَتَرَاتِينَ

4. फिर (अल्लाह का) आदेश बाँटने वाले (फरिश्तों की)!

فَالْمَقْسُوتِ أَمْرًا

5. निश्चय जिस (प्रलय) में तुम्हें डराया जा रहा है वह सच्ची है।¹

إِنَّمَا تَوْعَدُونَ لَصَادِقٌ

6. तथा कर्मों का फल अवश्य मिलने वाला है।

كَانَ الْبَئِثَ لَوْعَةً

7. शपथ है रास्तों वाले आकाश की।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحَبَالِ

8. वास्तव में तुम विभिन्न² बातों में हो।

وَكَلَّ لَيْلٍ قَوْلٍ مُتَبَعٍ

9. उस में वही फेर दिया जाता है जो (सत्य से) फिरा हुआ हो।

يُؤْتِكُ غَنَةً مِّنْ أَمْلِكَ

10. नाश कर दिये गये अनुमान लगाने वाले।

قِيلَ الْمُرْسُوءُونَ

11. जो अपनी अचेतना में भूले हुये हैं।

الَّذِينَ كُنُوا عَنْهَا مُعْمِئِينَ

12. वह प्रश्न³ करते हैं कि प्रतिकार का दिन कब है?

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمَ الدِّينِ

13. (उस दिन है) जिस दिन वह अग्नि पर तपाये जायेंगे।

يَوْمَ هُمْ مِلَّ السَّارِ يُنْفَتُونَ

14. (उन से कहा जायेगा): स्वाद चखो अपने उपद्रव का! यही वह है जिस की तुम शीघ्र मोग कर रहे थे।

ذُوقُوا بِمَنَاقِلِهِ الَّذِي كُنتُمْ بِهِ تُسْتَعْجَلُونَ

15. वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे।

إِنَّ السَّمَوَاتِ فِي جُحْدٍ وَغِيَّوِينَ

1 इन आयतों में हवाओं की शपथ ली गइ है कि हवा (वायु) तथा वर्षा की यह व्यवस्था गवाह है कि प्रलय तथा परलोक का वचन सत्य तथा न्याय का होना आवश्यक है।

2 अर्थात् कुर्आन तथा प्रलय के विषय में विभिन्न बातें कर रहे हैं

3 अर्थात् उपहाम स्वरूप प्रश्न करते हैं।

16. लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उन को उन के पालनहार ने। वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे।
17. वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे।¹⁾
18. तथा भोरों²⁾ में क्षमा माँगते थे।
19. और उन के धनों में माँगने वाले तथा न पाने वाले³⁾ का भाग था।
20. तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ है विश्वास करने वालों के लिये।
21. तथा स्वयं तुम्हारे भीतर (भी)। फिर क्या तुम देखते नहीं?
22. और आकाश में तुम्हारी जीविका⁴⁾ है, तथा जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा है
23. तो शपथ है आकाश एवं धरती के पालनहार की यह (बात) ऐसे ही सच्च है जैसे तुम बोल रहे हो।⁵⁾
24. (हे नबी!) क्या आई आप के पास

الَّذِينَ مَا أَنعَمَ رَبُّهُمْ بِهِمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ
كَافِرِينَ ﴿١٦﴾

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ يَنَاصُونَ ﴿١٧﴾

وَبِالْأَصْحَارِ هُمْ يَسْتَغِيثُونَ ﴿١٨﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا سَعَىٰ السَّائِلِ وَالْمُعْزَمِ ﴿١٩﴾

وَالَّذِي فِي الْأَرْضِ اثْبَاتٌ وَثَبَاتٌ ﴿٢٠﴾

وَالَّذِي فِي السَّمَاءِ اقْلَابٌ يُّنْفَخُونَ ﴿٢١﴾

وَالَّذِي فِي السَّمَاءِ رُجُومٌ مَّا يُؤْتَدُونَ ﴿٢٢﴾

قَوَدِتِ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ إِلَّا تَنفَخُ مِمَّا تَنْفَخُونَ ﴿٢٣﴾

هَلْ أَتَاكَ خَبْرٌ حَسْبُكَ يَرْجِعُونَ الْكُفْرَيْنِ ﴿٢٤﴾

- 1 अर्थात् अपना अधिक समय अल्लाह के स्मरण में लगाते थे। जैसे तहज्जुद की नमाज और तस्बीह आदि।
- 2 हदीस में है कि अल्लाह प्रत्येक रात में जब निहाइ रात रह जाये तो संसार के आकाश की ओर उतरता है। और कहना है है कोई जो मुझ पुकारे तो मैं उस की पुकार सुनूँ? है कोई जो माँगे तो मैं उसे दूँ? है कोई जो मुझ से क्षमा माँगे तो मैं उसे क्षमा करूँ। (बुखारी: 1145, मुस्लिम: 758)
- 3 अर्थात् जो निर्धन होते हुये भी नहीं माँगता था इसलिये उसे नहीं मिलता था।
- 4 अर्थात् आकाश की वर्षा तुम्हारी जीविका का साधन बनती है। तथा स्वर्ग और नरक आकाशों में है।
- 5 अर्थात् अपने बोलने का विश्वास है।

इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों
की सूचना?

25. जब वे आये उस के पास तो सलाम
किया। इब्राहीम ने (भी) सलाम
किया (तथा कहा): अपरिचित लोग हैं।

26. फिर चुपके से अपने परिजनों की
ओर गया। और एक मोटा (भुना
हुआ) बछड़ा लाया।

27. फिर रख दिया उन के पास, उस ने
कहा: तुम क्यों नहीं खाने हो?

28. फिर अपने दिन में उन से कुछ डरा,
उन्होंने कहा: डरो नहीं। और उसे
शुभसूचना दी एक जानी पुत्र की।

29. तो सामने आई उस की पत्नी, और
उस ने मार लिया (आश्चर्य में) अपने
मुँह पर हाथ। तथा कहा: मैं बाँझ
बुढ़िया हूँ।

30. उन्होंने कहा: इसी प्रकार तेरे पालनहार
ने कहा है। वास्तव में वह सब गुण
और सब कुछ जानने वाला है।

31. उस (इब्राहीम) ने कहा तो तुम्हारा
क्या अभियान है, हे भेजे हुये
(फरिश्ती!)?

32. उन्होंने कहा: वास्तव में हम भेजे गये
हैं एक अपराधी जाति की ओर।

33. ताकि हम बरसाये उन पर पत्थर
की कंकरी।

رَدَدُوا عَلَيْهِمْ فَأَلَّوْا سَلَامًا ۖ قَالَ سَوْفَ نُنَبِّئُكَ ۖ

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ مُجْتَعِلاً بِيَمِينِهِ ۖ

فَعَزَّزْنَا لَهُمُ قَالَ إِلَّا تَأْكُلُونَ ۖ

فَأَوَّحَسَ بَيْنَهُمْ رِيحَةً ۖ فَأَلَّوْا الْفَتَنَ ۖ وَسَمِعُوا يُغْلَبُ
عَلَيْهِمْ ۖ

فَأَقْبَسَتْ امْرَأَتُهُ فِي مَخْرَئِ فَصْلَتٍ رَّبِّهَا ۖ وَقَالَتْ
مُجُورٌ حَقِيرٌ ۖ

فَالْوَاكِلِينَ ۖ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۖ

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۖ

فَالْوَاكِلِينَ ۖ إِنَّا نُنَبِّئُكَ ۖ قَوْمُ الْمُجْرِمِينَ ۖ

لِيُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَنَّاتٍ مِّنْ طِينٍ ۖ

34. नामाकित¹ तुम्हारे पालनहार की ओर से उल्लंघनकारियों के लिये।

مُسَوِّءَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿۳۴﴾

35. फिर हम ने निकाल दिया जो भी उस (बस्ती) में ईमान वाले थे।

فَأَخْرَجْنَا مِمَّنْ كَانَ يَهْتَمُّونَ الْفَاسِقِينَ ﴿۳۵﴾

36. और हम ने उस में मुमिनों का केवल एक ही घर² पाया।

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿۳۶﴾

37. तथा छोड़ दी हम ने उस (बस्ती) में एक निशानी उन के लिये जो डरते हों दुःखदायी यातना से।

وَنَزَّلْنَا آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْكَبِيرَ ﴿۳۷﴾

38. तथा मूसा (की कथा) में, जब हम ने भेजा उसे फिरऔन की ओर प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाण के साथ।

وَلَقَدْ مَوَّاهُ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿۳۸﴾

39. तो वह विमुख हो गया अपने बल-बूने के कारण, और कह दिया की जादूगर अधवा पागल है।

فَقَوْلٍ بِأُتْلَىٰ وَقَالَ لَمِجْرًا مِّنْ سَاحِلِينَ ﴿۳۹﴾

40. अन्ततः हम ने पकड़ लिया उस को तथा उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया उन को सागर में और वह निन्दित हो कर रह गया।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُودًا فَهَرَّجْنَا بِهِ عَلَى الْيَمِّ وَهُوَ مُلَوَّنٌ ﴿۴۰﴾

41. तथा आद में (शिक्षाप्रद निशानी है)। जब हम ने भेज दी उन पर घाँस³ औंधी।

وَلَقَدْ صَادَفَتْهُمُ الرَّيحُ الْعَقِيمُ ﴿۴۱﴾

42. वह नहीं छोड़ती थी किसी वस्तु को जिस पर गुजरनी परन्तु उसे बना देती थी जीर्ण चूर चूर हड्डी के समान।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالْأُتْبَانِ ﴿۴۲﴾

1 अर्थात् प्रत्येक पत्थर पर पापी का नाम है।

2 जो आदर्णीय लून (अलैहिस्सलाम) का घर था।

3 अर्थात् अशुभा (देखिये: सूरह हाक्का आयत 7)

43. तथा समुद्र में जब उन से कहा गया कि लाभान्वित हो लो एक निश्चित समय तक।

فَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ جُنِيَ ۖ

44. तो उन्होंने अवैज्ञा की अपने पालनहार के आदेश की तो महसा पकड़ लिया उन्हें कड़क ने और वह देखते रह गये।

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الضُّلُوعَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۖ

45. तो वे न खड़े हो सके और न (हम से) बदला ले सके।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُسْتَعِينِينَ ۖ

46. तथा नूह¹ की जानि को इस से पहले (याद करो)! वास्तव में वह अवैज्ञाकारी जानि थे।

وَأَوْمَرَ نُوْهُجٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا أَقْوَمًا وَبَاقِينَ ۖ

47. तथा आकाश को हम ने बनाया है हाथों² से और हम निश्चय विस्तार करने वाले है।

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ۖ

48. तथा धरती को हम ने बिछाया है तो हम क्या³ ही अच्छे बिछाने वाले है।

وَالْأَرْضَ قَرَشْنًا فَغَشَّاهُ الْمُهَيَّيُونَ ۖ

49. तथा प्रत्येक वस्तु का हम ने उत्पन्न किया है जोड़ा ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۖ

50. तो तुम दौड़ो अज्राह की ओर, वास्तव

فَوَرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكَرِيمٌ غَدِيرٌ مُبِينٌ ۖ

1 आयत 31 से 46 तक नावियों तथा विगत जानियों के पारणाम की ओर निरंतर संकेत कर के सावधान किया गया है कि अज्राह के बदले का नियम बराबर काम कर रहा है।

2 अर्थात् अपनी शक्ति से।

3 आयत का भावार्थ यह है कि जब सब जिनों तथा मनुष्यों को अज्राह ने अपनी बंदना के लिये उत्पन्न किया है तो अज्राह के सिवा या उस के साथ किसी जिन या मनुष्य अथवा फरिश्ते और देवी देवता की बंदना अवैध और शिर्क है। जिस के लिये क्षमा नहीं है। (देखिये: सूरह निमा आयत: 48, 116)। और जो व्यक्ति शिर्क कर लेता है तो उस के लिये स्वर्ग निषेध है। (देखिये: सूरह माइदा आयत: 72)

मैं मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ

51. और मत बनाओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य। वास्तव में मैं तुम्हें इस से खुला सावधान करने वाला हूँ।

52. इसी प्रकार नहीं आया उन के पास जो इन (सच्चा वासियों) से पूर्व रहे कोई रसूल परन्तु उन्होंने ने कहा कि जादूगर या पागल है।

53. क्या वह एक दूसरे को वसिख्यत¹ कर चुके हैं इस की? बल्कि वे उध्वेधनकारी लोग हैं।

54. तो आप मुख फेर लें उन से। आप की कोई निन्दा नहीं है।

55. और आप शिक्षा देते रहें। इसलिये कि शिक्षा लाभप्रद है ईमान वालों के लिये।

56. और नहीं उत्पन्न किया है मैं ने जिन्न तथा मनुष्य को परन्तु तार्किक मेरी ही इबादत करें।

57. मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वह मुझे खिलायें।

58. अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान् है।

59. तो इन अत्याचारियों के पाप हैं इन

وَلَا تَعْجَلُوا بِالْحُكْمِ الْخَرَاءِ لَكُمْ فِيهِ نَذِيرٌ
ثُمَّ يَنْتَهِ

كَذَلِكَ مَا آتَى الْبُؤْسَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ
إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مُجُنٌّ

أَتَوَصَّوهُمْ لِيُكَفِّرُوا عَنْهُمْ أَوْ يَكُونُوا

فَتَقُولُ عَلَيْهِمْ مَا أَتَى بِسُوءٍ

وَأَنْزِلُوا إِلَيْنَا الْقُرْآنَ لَنَصْطَفِيَ لَكَ مِنْهُ

وَمَا خَلَقْتُ الْإِنْسَ وَالْجِنَّ إِلَّا لِيَعْبُدُونِي

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ
يُعْبُدُونِي

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِثْلَ ذُنُوبِ أَهْلِهِمْ

1 वसिख्यत का अर्थ है मरणसन्त्र आदेश। अर्थ यह कि क्या वे रसूलों के इन्कार का अपने मरण के समय आदेश देते आ रहे हैं कि यह भी अपने पूर्व के लोगों के समान रसूल का इन्कार कर रहे हैं।

कें साथियों के पापों के समान अतः
वह उतावले न बने।

60. अन्ततः विनाश है काफ़िरों के लिये
उन के उस दिन¹ से जिस से वह
डराये जा रहे हैं।

لَا يَسْتَعْمِلُونَ

تَوِيلَ الْيَدَيْنِ كَفَرًا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي
يُوعَدُونَ

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

सूरह तूर - 52

سُورَةُ الطُّورِ

सूरह तूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 49 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में तूर (पर्वत) की शपथ लेने के कारण इस का नाम सूरह तूर है।
- इस में प्रतिफल के दिन को न मानने पर चेतावनी है कि अब्राह की यातना उन पर अवश्य आ कर रहेंगी। और इस पर विश्वास करने के साक्ष्य प्रस्तुत किये गये हैं तथा यातना का चित्र भी।
- अब्राह की आज्ञा के पालन तथा अपने कर्तव्य को समझने हुये जीवन यापन करने पर अब्राह के पुरस्कारों से सम्मानित किये जाने का चित्रण भी किया गया है।
- विरोधियों के आगे ऐसे प्रश्न रख दिये गये हैं जिन से संदेह स्वयं दूर हो जाते हैं।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने तथा अब्राह की प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 शपथ है तूर¹ (पर्वत) की।
- 2 और लिखी हुई पुस्तक² की।
- 3 जो झिल्ली के खुले पन्नों में लिखी हुई है।

وَالطُّورِ

وَكُتُبٍ مَّنشُورٍ

فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ

1 यह उस पर्वत का नाम है जिस पर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अब्राह से वार्तालाप की थी।

2 इस से अभिप्राय कुरआन है।

4. तथा बैतुल मअमूर (आवाद¹ घर) की।

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ

5. तथा ऊँची छत (आकाश) की।

وَالشَّقِيقِ الْمُرْوُورِ

6. और भड़काये हुये सागर² की।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ

7. वस्तुतः आप के पालनहार की यातना हो कर रहेगी।

رَبِّ عَذَابٍ لِّكَ لَوَاقِعٌ

8. नहीं है उसे कोई रोकने वाला।

كَأَنَّهُ مِنْ دَافِعٍ

9. जिस दिन आकाश डगमगायेगा।

يَوْمَ تَمُوتُ السَّمَاءُ مَوْرًا

10. तथा पर्वत चलेंगे।

وَالْجِبَالُ سَوْدًا

11. तो विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये

قَوْلٍ يَوْمَئِذٍ لِّلَّذِينَ

12. जो विवाद में खेल रहे हैं।

الَّذِينَ هُمْ عَنْ عَصَبٍ

13. जिस दिन वे धक्का दिये जायेंगे नरक की अग्नि की ओर।

يَوْمَ يَدْعُوتُ إِلَى تَارِبِهِمْ دَعْوَا

14. (उन से कहा जायेगा): यही वह नरक है जिसे तुम झुठला रहे थे।

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ

15. तो क्या यह जादू है या तुम्हें सुझाई नहीं देता?

أَفَبِعَرَبٍ أَمَّا نَمُوتُ وَلَا نُحْيِي

16. इस में प्रवेश कर जाओ फिर सहन करो या सहन न करो तुम पर समान है। तुम उसी का बदला दिये जा रहे हो जो तुम कर रहे थे।

إِصْرُهَا فَاصْبِرْ وَلَا تَلْحَظْهُنَّ إِنَّهُنَّ فِي

إِصْرٍ مِّثْلُ نَعْتِكُمْ ۖ أَفَبُغِيضِكُمْ ۖ

17. निश्चय, आज्ञाकारी बागों तथा

رَبِّ الْمَشْقِيقِينَ فِي جَنَّتٍ وَنَعِيمٍ

1 यह आकाश में एक घर है जिस की फरिश्ते सदेव परिक्रमा करते रहने हैं कुछ व्याख्या कारों ने इस का अर्थ कौवा लिया है। जो उपासकों से प्रत्येक समय आवाद रहता है। क्योंकि मअमूर का अर्थः ((आवाद)) है।

2 (देखिये सूरह तकवीर आयत 6)

सुखों में होंगे।

18. प्रसन्न हो कर उस से जो प्रदान किया होगा उन को उन के पालनहार न, तथा बचा लेगा उन को उन का पालनहार नरक की यातना से।

فَيَكُونُ بِمَا لَهُمْ رَافِعًا وَوَعْدَهُمْ رَافِعًا
أَجْعِلْ

- 19 (उन से कहा जायेगा): खाओ और पीओ मनमानी उस के बदले में जो तुम कर रहे थे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَيْئًا بِمَا أَلَمْتُمْ تَكُونُوا

20. नकिये लगाये हुये होंगे तन्हों पर बराबर बिछे हुये तथा हम विवाह देंगे उन को बड़ी आँखों वाली स्त्रियों से।

مُكَيِّمِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْنُونَةٍ لَّا يَمَسُّهُمْ فِيهَا مِنْكَ ذَرِيَّةٌ وَلَا نَجَسٌ

- 21 और जो लोग ईमान लाये और अनुसरण किया उन का उन की संतान ने ईमान के साथ तो हम मिला देंगे उन की संतान को उन के साथ तथा नहीं कम करेंगे उन के कर्मों में से कुछ, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का बंधक¹ है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْمَسْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ
كُلٌّ أَتَيْنَا بِمَا لَكِبَ كَيْتُ

22. तथा हम अधिक देंगे उन को भैंवे तथा मांस जिस की वह रुचि रखेंगे।

وَأَمْسَدْنَاهُمْ مَاءَ كَلْبَةٍ وَخَيْرَ مِمَّا يَشْتَبُونَ

23. वे एक दूसरे से उस में लेते रहेंगे मदिरा के प्याले जिस में न कोई व्यर्थ बात होगी, न कोई पाप की बात।

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْتِيهِمْ

24. और फिरते रहेंगे उन की सेवा में (सुन्दर) बालक जैसे वह छुपाये हुये मोती हों।

وَيَلْبَسُونَ عَنْتَهُمْ جُفَاءً لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ
مُكْنُونٌ

25. और वह (स्वर्ग वासी) सम्मुख होंगे एक दूसरे के प्रश्न करते हुये।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ

1 अर्थात् जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

26. वह कहेंगे इस से पूर्व¹ हम अपने परिजनों में डरते थे।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۝

27. तो अल्लाह ने उपकार किया हम पर, तथा हमें सुरक्षित कर दिया तापलहरी की यातना से।

فَمَنْ أَلَّهِ عَلَيْهِمْ ذُنُوبًا وَعَلَيْنَا عَذَابُ السُّوْرِ ۝

28. इस से पूर्व² हम वंदना किया करते थे उस की। निश्चय वह अति परोपकारी दयावान् है।

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۝

29. तो आप शिक्षा देने रहें। क्योंकि आप के पालनहार के अनुग्रह से न आप काहिन (ज्योतिषी) है, और न पागल।³

فَذَكِّرْ مَا أُنْتِ بِصَبْرٍ رَّبِّكَ يُكَاهِنُ
وَلَا يَعْجُونَ ۝

30. क्या वह कहते हैं कि यह कवि है हम प्रतीक्षा कर रहे हैं उस के साथ कालचक्र की? ⁴

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ مِثْلَ قَرَارٍ ۝ نَبِّئِ
الْمُتَّبِعِينَ ۝

31. आप कह दें कि तुम प्रतीक्षा करते रहो मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

قُلْ تَرْتَضَوْنَ فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُرْتَضِينَ ۝

32. क्या उन्हें सिखानी है उन की समझ यह बातें अथवा वह उल्लघनकारी लोग हैं?

أَمْ نَأْمُرُهُمْ أَحْلَاهُمْ بِهِمْ ۝ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَائِفُونَ ۝

33. क्या वह कहते हैं कि इस (नबी) ने इस (कुरआन) को स्वयं बना लिया है? वास्तव में वह ईमान नहीं लाना चाहते।

أَمْ يَقُولُونَ نَقُولُ بِهِ لَوْلَا يُؤْمِنُونَ ۝

1 अर्थात् संसार में अल्लाह की यातना से।

2 अर्थात् संसार में।

3 जैसा कि वह आप पर यह आरोप लगा कर हनाश करना चाहते हैं।

4 अर्थात् कुरैश इस प्रतीक्षा में हैं कि संभवतः आप को मौत आ जाये तो हमें चैन मिल जाये।

34. तो वे ला दें इस (क़ुर्आन) के समान
कोई एक बात यदि वह सच्चे हैं।

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

35. क्या वह पैदा हो गये हैं बिना ¹।
किसी के पैदा किये, अथवा वह स्वयं
पैदा करने वाले हैं?

أَمْ حُلِفُوا مِنْ خَيْرٍ مِّنْ أَمْرِهِمْ أَلَمْ يَعْلَمُوا

36. या उन्होंने ही उत्पत्ति की है आकाशों
तथा धरती की? वास्तव में वह
विश्वास ही नहीं रखते।

أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بَلْ لَا يَذْكُرُونَ ﴿٣٦﴾

37. अथवा उन के पास आप के
पालनहार के कोपागार है या वही
(उस के) अधिकारी है?

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ أَمْ لَهُمُ الْغُطَّيُورُونَ ﴿٣٧﴾

38. अथवा उन के पास कोई मीढ़ी है
जिसे लगा कर सुनते ² है? तो उन
का सुनने वाला कोई खुला प्रमाण
प्रस्तुत करे।

أَمْ لَهُمْ سُلُونٌ آتِيهِمْ فِيهِ قُنْيَاتٌ تُسَمَّوْنَهُمْ
بِأَلْسِنٍ فَبِئْسَ

39. क्या अब्राह के लिये पुत्रियाँ हो तुम्हारे
लिये पुत्र हों

أَمْلَةٌ أُنْثِيَ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

40. या आप माँग कर रहे हैं उन से
किमी पारिश्रमिक ³ की तो वे उस
के बोझ से दबे जा रहे हैं?

أَمْ كُنَّا لَهُمْ نَازِلًا فَفُتِنُوا مِنْهُ فَمِنْ فِتْنَتِهِمْ

41. अथवा उन के पास परीक्ष (का ज्ञान)
है जिसे वे लिख ⁴ रहे हैं?

أَمْ عِنْدَهُمْ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

1 जुवेर बिन मुन्डम कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मग़िब की नमाज़ में सूरह तूर पढ़ रहे थे। जब इन आयतों पर पहुँचे तो मेरे दिल की दशा यह हुई कि वह उड़ जायेगा। (सहीह बुखारी: 4854)

2 अर्थात् आकाश की बातों और जब उन के पास आकाश की बातें जानने का कोई साधन नहीं तो यह लोग अब्राह, फरिश्ते और धर्म की बातें किस आधार पर करते हैं?

3 अर्थात् सत्धर्म के प्रचार पर।

4 इसीलिये इस वही (क़ुर्आन) को नहीं मानते हैं।

42. या वे चाहते हैं कोई चाल चलना?
तो जो काफिर हो गये वे उस चाल
में ग्रस्त होंगे।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ مَا كَيْدٌ لِّكَفَرٍ وَهُمْ
الْمُكِيدُونَ ﴿٤٢﴾

43. अथवा उन का कोई और उपास्य
(पज्य) है अल्लाह के सिवा? अल्लाह
पवित्र है उन के शिर्क से।

أَمْ لَهُمْ آلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَتَّبِعُونَ ۚ اللَّهُ يَكْفُرُ بِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَىٰ يَكْفُرُ عَنِ
الْمُنَافِقِينَ ﴿٤٣﴾

44. यदि वे देख लें कोई खण्ड आकाश
से गिरता हुआ तो कहेंगे कि तह पर
तह बादल है।¹

فَإِنْ كَرِهَ الْغَافِلِينَ ۖ إِنَّمَا يُفِثُ مَا نَزَّلَ ۚ وَالسَّحَابُ
مُرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

45. अतः आप छोड़ दें उन को यहाँ तक
कि मिल जायें अपने उस दिन से
जिम में² इन्हें अपनी सुध नहीं होगी।

فَذَرْهُمْ عَلَىٰ يَوْمِهِمُ الَّذِي فِيهِ
يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

46. उस दिन नहीं काम आयेंगी उन के
उन की चाल कुछ, और न उन की
सहायता की जायेगी।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

47. तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये
एक यातना है इस के अतिरिक्त³
(भी)। परन्तु उन में से अधिकतर
ज्ञान नहीं रखते हैं।

وَإِنَّ الْبَلِيَّانَ لَخَمِيضٌ مِّنْ عَذَابِ ۖ إِنَّكَ فَالِكٌ وَلَكِنَّ
الْأَوَّلَ لَاقْتَضُونَ ﴿٤٧﴾

48. और (हे नबी।) आप सहन करें अपने
पालनहार का आदेश आने तक।
वास्तव में आप हमारी रक्षा में हैं।
तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने
पालनहार की प्रशंसा के साथ जब
जागते हों।⁴

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ
مَعَ حَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

1 अर्थात् तब भी अपने कृष्ण से नहीं रुकेंगे जब तक कि उन पर यातना न आ जाये।

2 अर्थात् प्रलय के दिन से।

3 इस से संकत संसारिक यातनाओं की ओर है। (देखिये: सूरह सज्दा आयत: 21)

4 इस में संकेत है आधी रात्री के बाद की नमाज (तहज्जुद) की ओर।

49. तथा रात्री में (भी) उस की पवित्रता का वर्णन करें और तारों के डूबने के¹ पश्चात् (भी)।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَذُبُرُ النُّجُومِ

1 रात्री में तथा तारों के डूबने के समय से सकेत मग़िब तथा इशा और फज्र की नमाज़ की ओर है जिन में यह सब नमाज़े भी आती हैं।

सूरह नज्म - 53

سورة النجم

सूरह नज्म के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 62 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरम्भ नज्म (तारे) की शपथ से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह नज्म है।
- इस में बह्नी तथा रिस्मालत से सम्बन्धित तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। जिन से ईमान तथा विश्वास पैदा होता है। और ज्योतिष के आरोप का खण्डन होता है।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सम्बन्धित संदेहों को दूर किया गया है जो बह्नी के धारे में किये जाते थे। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो कुछ आकाशों में देखा उसे प्रस्तुत किया गया है।
- बह्नी (प्रकाशना) को छोड़ कर मनमानी तथा शिर्क करने और प्रतिफल के इन्कार पर पकड़ की गई है। जिन से इन विचारों का व्यर्थ होना उजागर होता है।
- सदाचारियों को क्षमा और पुरस्कार की शुभ सूचना दी गई है और इन्कारियों को सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सावधान कर्त्ता होने का वर्णन है। तथा प्रलय के दिन से सावधान करने के साथ ही अब्राह्म ही को सज्दा करने तथा उसी की वंदना करने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है तारे की, जब वह डूबने लगे।
2. नहीं कुपथ हुआ है तुम्हारा साथी और न कुमार्ग हुआ है।
3. और वह नहीं धोलने अपनी इच्छा से।

وَالنَّجْمُ إِذَا هَوَىٰ

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ

وَمَا يَنْطَلِقُ عَنْ هَوَىٰ

- | | |
|--|---|
| 4. वह तो वस वही (प्रकाशना) है। जो
(उन की ओर) की जाती है। | إِنَّ مُورِثَهُ يُوْرِي ۝ |
| 5. सिखाया है जिसे उन को शक्तिवान ने। ¹ | عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَى ۝ |
| 6. बड़े बलशाली ने, फिर वह सीधा
खड़ा हो गया। | ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَى ۝ |
| 7. तथा वह आकाश के ऊपरी किनारे
पर था। | وَمُقَابِلَ الْأُفُقِ الْأَعْلَى ۝ |
| 8. फिर समीप हुआ, और फिर लटक
गया | ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى ۝ |
| 9. फिर हो गया दो कमान के बराबर
अथवा उस से भी समीप। | كَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۝ |
| 10. फिर उस ने वही की उस (अब्राह) के
भक्त ² की ओर जो भी वही की। | فَأَدْنَىٰ إِلَىٰ عِبْدِهِ مَا أَوْسَىٰ ۝ |
| 11. नहीं झुठलाया उन के दिल ने जो
कुछ उन्होंने देखा। | مَا كَذَّبَ الْمَوَاقِرَ ۝ |
| 12. तो क्या तुम उन से झगड़ने हो उस
पर जिसे वह (आँखों से) देखते हैं? | أَفَتُفَوِّكُنَّ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۝ |
| 13. निःसंदेह उन्होंने उसे एक बार और
भी उतरते देखा। | وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۝ |

1 इस से अभिप्राय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है जो वही लाते थे।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ओर। इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जिब्रील (फरिश्ते) का उन के वास्तविक रूप में दो बार देखने का वर्णन है। आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) ने कहा: जो कहे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्राह को देखा है तो वह झूठा है। और जो कहे कि आप कल (भविष्य) की बात जानते थे तो वह झूठा है। तथा जो कहे कि आप ने धर्म की कुछ बातें छुपा ली तो वह झूठा है। किन्तु आप ने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को उन के रूप में दो बार देखा (बुखारी: 4855) इब्ने मसूऊद ने कहा कि आप ने जिब्रील को देखा जिन के छः सौ पंख थे। (बुखारी: 4856)

14. सिद्रतुल मुन्तहा¹ के पास।
عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ۝
15. जिस क पास जन्नतुल² मावा है।
عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَى ۝
16. जब सिद्रह पर छा रहा था जो कुछ
छा रहा था।³
إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَى ۝
17. न तो निगाह चुंधयाई और न सीमा
से आगे हुई।
مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ۝
18. निश्चय आप ने अपने पालनहार की
बड़ी निशानिया देखी।⁴
لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى ۝
19. तो (हे मुश्रिकों!) क्या तुम ने देख
लिया लालत तथा उज्जा को।
أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ۝
20. तथा एक तीसरे मनात को?⁵
وَمَنْوَةَ الثَّرِيدَةِ الْأُخْرَىٰ ۝
21. क्या तुम्हारे लिये पुत्र है और उस
अब्राह के लिये पुत्रियाँ?
أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۝
22. यह तो बड़ा भोडा विभाजन है।
بَلَدًا إِذَا فُتِنَتْ فُقِرَىٰ ۝
23. वास्तव में यह कुछ केवल नाम है
जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख
लिये है। नही उनारा है अब्राह ने उन
का कोई प्रमाण। वह केवल अनुमान⁶
إِنَّ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ
مَّا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْفُرَنَّ
إِلَّا لُظُنٍّ وَمَا يُهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ

1 सिद्रतुल मुन्तहा यह छठे या सातवें आकाश पर बैरी का एक वृक्ष है। जिस तक धरती की चीज पहुँचनी है तथा ऊपर की चीज उतरती है। (सहीह मुस्लिम- 173)

2 यह आठ स्वर्गों में से एक का नाम है।

3 हदीस में है कि वह सोने के पर्तंगे थे। (सहीह मुस्लिम- 173)

4 इस में मेअराज की रात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आकाशों में अब्राह की निशानियाँ देखने का वर्णन है।

5 लालत उज्जा और मनात यह तीनों मक्का के मुश्रिकों की देवियों के नाम हैं। और अर्थ यह है कि क्या इन की भी कोई वास्तविकता है?

6 मुश्रिक अपनी मूर्तियों को अब्राह की पुत्रियाँ कह कर उन की पूजा करते थे। जिस का यहाँ खण्डन किया जा रहा है।

पर चल रहे हैं। तथा अपनी मनमानी पर। जब कि आ चुका है उन के पालनहार की ओर से मार्गदर्शन।

وَمِنْ رَبِّهِمُ الْهُدَىٰ ۝

24. क्या मनुष्य को वही मिल जायेगा जिस की वह कामना करे।

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَشَاءُ ۝

25. (नहीं, यह बात नहीं है) क्यों कि अल्लाह के अधिकार में है आखिरत (प्रलोक) तथा संसार।

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۝

26. और आकाशों में बहुत से फरिश्ते हैं जिन की अनुशंसा कुछ लाभ नहीं देती, परन्तु इस के पश्चान कि अनुमति दे अल्लाह जिस के लिये चाहे तथा उस से प्रसन्न हो।¹

وَلَوْ مِنْ مَثَلٍ فِي السَّمَوَاتِ لَآتَيْنُوا سَعَادَةً مِّنْهُ ۝
إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ بِشَيْءٍ ۚ وَرِضَىٰ ۝

27. वास्तव में जो ईमान नहीं लाने परलोक पर, वे नाम देते हैं फरिश्तों को स्त्रियों के नाम।

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِمْ لَآذِرَةٌ ۖ لِيَتُورَ الْبَيْلَةَ ۝
فَتَبَيَّنَ الْآزِلَىٰ ۝

28. उन्हें इस का कोई ज्ञान। नहीं वह अनुसरण कर रहे हैं मात्र गुमान का और वस्तुतः गुमान नहीं लाभप्रद होता सत्य के सामने कुछ भी।

وَاللَّهُ بِهِ مِنْ جَاهِلِينَ يُتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۝
وَأَنَّ الظَّنَّ لَا يَصْلِحُ مِنْ لَدُنْهُمْ شَيْءٌ ۝

29. अतः आप विमुख हो जायें उस से जिस ने मुंह फेर लिया है हमारी शिक्षा से। तथा वह संसारिक जीवन ही चाहता है।

فَاغْرُضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ دُبُرَيْهِ ۚ وَاللَّهُ يَوْمَ
الْآخِرَةِ الْغَفُورُ ۝

30. यही उन के ज्ञान की पहुँच है। वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कृप्य हो

ذَلِكَ مَتْلَعُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ رَبَّنَا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا
صَلَّ عَنْ بَيْنِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا أَهْتَدَىٰ ۝

1 अरब के मुशरिक यह समझने थे कि यदि हम फरिश्तों की पूजा करेंगे तो वह अल्लाह से सिफारिश कर के हमें यातना से मुक्त करा देंगे। इसी का खण्डन यहाँ किया जा रहा है।

गया उस के मार्ग से, तथा उसे जिस ने संमार्ग अपना लिया।

31. तथा अस्त्राह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है ताकि वह बदला दे जिस ने बुराई की उस के कुकर्म का, और बदला दे जिस ने सुकर्म किया अच्छा बदला।

وَيَقُومَ فِي السَّحَابِ وَمَا يُدْرِيكَ الْبَرِّينَ أَشَاءَ وَبِمَا عَمِلُوا يُجْزَوْنَ
الْبَرِّينَ أَشَاءَ ۚ

32. उन लोगों को जो बचते हैं, महा पापों तथा निर्लज्जा¹ से, कुछ चूक के सिवा। वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है। वह भली-भाँति जानता है तुम को, जब कि उस ने पैदा किया तुम को धरती² में तथा जब तुम भूण थे अपनी माताओं के गर्भ में। अतः अपने में पवित्र न बनो। वही भली-भाँति जानता है उसे जिस ने सदाचार किया है।

الَّذِينَ يَخْتَفُونَ بَيْنَ الْأَشْفَارِ وَالْعَوْرَاتِ الْيَوْمَ لَا يُنصَرُونَ
لَهُمْ نَكَاتٌ وَأَسْمَاءُ مَعْمُورَةٌ هُمْ يَعْلَمُونَ بِمَا كُنْتُمْ
فِي الْأَرْضِ وَرَأَيْتُمْ أَصْنَافَ فِي بُقُوعٍ أَنَّهُمْ
كَذَّبُوا أَنْفُسَهُمْ هُمْ يَأْمُرُونَ بِالْبُخْلِ ۚ

33. तो क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुँह फेर लिया?

أَفَرَأَيْتَ الْيَتِيمَ يُتْرَكُ ۚ

34. और तनिक दान किया फिर रुक गया।

وَأَنصَلَ قَيْلًا وَكَلَمًا ۚ

35. क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है

أَعِندَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَى ۚ

1 निर्लज्जा से अभिप्राय निर्लज्जा पर आधारित कुकर्म है। जैसे बाल-मैथुन व्याभिचार नारियों का अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन और पर्दे का त्याग मिश्रित शिक्षा, मिश्रित सभायें, सौन्दर्य की प्रतियोगिता आदि। जिसे आधुनिक युग में सभ्यता का नाम दिया जाता है। और मुस्लिम समाज भी इस से प्रभावित हो रहा है। हदीस में है कि सात बिनाशकारी कर्मों में बचो 1 अस्त्राह का साझी बनाने से, 2- जादू करना। 3- अकारण जान मारना। 4- मदिरा पीना। 5- अनाथ का धन खाना। 6- युद्ध के दिन भागना। 7 तथा भोली भाली पवित्र स्त्री को कलंक लगाना। (सहीह बुखारी: 2766 मुस्लिम 89)

2 अर्थात् तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

कि वह (सब कुछ) देख¹ रहा है।

36. क्या उसे सूचना नहीं हुई उन बातों की जो मूसा के ग्रन्थों में है।

أَمْ لَمْ نَسْأَلْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ

37. और इब्राहीम की जिस ने (अपना वचन) पूरा कर दिया।

وَبُرْهِيمَ الَّذِي قَالَ

38. कि कोई दूसरे का भार नहीं लादेगा।

أَلَا شَرِيرٌ ذِي بُلْدٍ يُؤْتِرُ الْآخَرَىٰ

39. और यह कि मनुष्य के लिये वही है जो उस ने प्रयास किया।

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ

40. और यह कि उस का प्रयास शीघ्र देखा जायेगा।

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ

41. फिर प्रतिफल दिया जायेगा उसे पूरा प्रतिफल।

فَنُجِيرُهُ الْجَزَاءَ الْأَوَّلَىٰ

42. और यह कि आप के पालनहार की ओर ही (सब को) पहुँचना है।

وَأَنَّ إِلَٰهَ رَبِّكَ الشَّمْسَىٰ

43. तथा वही है जिस ने (संसार में) हैमाया तथा रुलाया।

وَأَنَّهُ لَمَّا أَهْبَتْ وَابَّيَ

44. तथा उसी ने मारा और जिवाया।

وَأَنَّهُ فَوَاصَاتٌ وَأَخْيَا

45. तथा उसी ने दोनों प्रकार उत्पन्न किये: नर और नारी।

وَأَنَّهُ خَلَقَ ذَكَرًا وَمُنْثَىٰ ۖ وَتَوَكَّفَىٰ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ

46. वीर्य से जब (गर्भाशय में) गिरा।

مِنْ تَطْعَمٍ إِذْ تَمْثَىٰ

47. तथा उसी के ऊपर दूसरी बार² उत्पन्न करना है।

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْآخَرَىٰ

1 इस आयत में जो परम्परागत धर्म को मोक्ष का साधन समझता है उस से कहा जा रहा है कि क्या वह जानता है कि प्रलय के दिन इतने ही से सफल हो जायेगा? जब कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वही के आधार पर जो प्रस्तुत कर रहे हैं वही सत्य है। और अब्राह की वही ही परोक्ष के ज्ञान का साधन है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन प्रतिफल प्रदान करने के लिये।

48. तथा उसी ने धनी बनाया और धन दिया।
وَالَّذِي هُوَ آغْنَىٰ وَافَقَىٰ ۝
49. और वही शेअरा¹ का स्वामी है।
وَالَّذِي هُوَ رَبُّ الشُّعْرَىٰ ۝
50. तथा उसी ने ध्वस्त किया प्रथम² आद को।
وَالَّذِي أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۝
51. तथा समूद को। किसी को शेष नहीं रखा।
وَسَمُودَ أَهْلَكَ الْأَمَلَىٰ ۝
52. तथा नूह की जाति को इस से पहले वस्तुतः वह बड़े अत्याचारी अवैज्ञाकारी थे।
وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ طٰغِيَةً ۝
53. तथा औंधी की हुई बस्ती³ को उस ने गिरा दिया।
وَالَّذِي هَبَّ لِكُلِّ شَيْءٍ هُبًّا ۝
54. फिर उस पर छा दिया जो छा⁴ दिया।
يَهَيِّئُ الْآسَ وَتِلْكَ تَنْجِيٰ ۝
55. तो (हे मनुष्य!) तू अपने पालनहार के किन किन पुरस्कारों में संदेह करता रहेगा।
هَذَا نَبِيرٌ مِنْ شُدِّ الْأَوَّلِ ۝
56. यह⁵ सचेतकर्ता है प्रथम सचेतकर्ताओं में से।
أَبْرَمَتْ الْأَرْضُ ۝
57. समीप आ लगी समीप आने वाली।
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۝
58. नहीं है अल्लाह के सिवा उसे कोई दूर करने वाला।

1 शेअरा एक तारे का नाम है। जिस की पूजा कुछ अरब के लोग किया करते थे। (इन्हें कमीर)। अर्थ यह है कि यह तारा पूज्य नहीं, वास्तविक पूज्य उस का स्वामी अल्लाह है।

2 यह हूद (अलैहिस्सलाम) की जाति थे।

3 अर्थात् सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति को।

4 अर्थात् लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति की बर्निधों को।

5 अर्थात् पत्थरों की वर्षा कर के उन की बस्ती को ढाँक दिया।

59. तो क्या तुम इस¹ कुर्आन पर
आश्चर्य करते हो?

أَفَیْسَ هَذَا عَجَبٌ لِّتَقْبَلُوهُ

60. तथा हँसते हो और रोते नहीं।

وَتَضَحَّكُونَ وَلَا تَبْكُونَ

61. तथा विमुख हो रहे हो।

وَأَنْتُمْ سِدْقُونَ

62. अतः सजदा करो अब्राह के लिये तथा
उसी की बंदना⁽²⁾ करो।

فَسَجِدُوا لِلَّهِ وَأَعِذُوا بِاللَّهِ

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी एक रसूल हैं प्रथम रसूलों के समान।

2 हदीस में है कि जब सज्दे की प्रथम सूरह: नज्म, उतरी तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जो आप के पास थे सब ने सजदा किया एक व्यक्ति के सिवा। उस ने कुछ धूल ली और उस पर सजदा किया। तो मैं ने इस के पश्चात् देखा कि वह काफिर रहते हुये मारा गया। और वह उसी दिन खलफ है। (सहीह बुखारी: 4863)

सूरह कमर - 54

سُورَةُ الْقَمَرِ

सूरह कमर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 55 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में कमर (चोंद) के दो भाग हो जाने का वर्णन है इसलिये इसे सूरह कमर कहा जाता है।
- इस में काफ़िरो को झंझोड़ा गया है कि जब प्रलय का लक्षण उजागर हो गया है, और वह ऐतिहासिक बातें भी आ गई हैं जिन में शिक्षा है तो फिर वह कैसे अपने कुफ़्र पर अड़े हुये हैं? यह काफ़िर उसी समय सचेत होंगे जब प्रलय आ जायेगी।
- उन जातियों का कुछ परिणाम बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। और संसार ही में यातना की भागी बन गई। और मक्का के काफ़िरो को प्रलय की आपदा से सावधान किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. समीप आ गई ' प्रलय, तथा दो
खण्ड हो गया चोंद।
2. और यदि वह देखने है कोई निशानी
तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं:
यह तो जादू है जो होता रहा है।

فَوَيْلٌ لِلنَّاسِ إِذَا دُكِّرُوا

إِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا وَيُعْرَضُ لَهُمْ

- 1 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मक्का वासियों ने माँग की, कि आप कोई चमत्कार दिखायें। अतः आप ने चोंद को दो भाग होने उन्हें दिखा दिया। (बुखारी: 4867)

आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसूद कहते हैं कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में चोंद दो खण्ड हो गया। एक खण्ड पर्वत के ऊपर और दूसरा उस के नीचे और आप ने कहा: तुम सभी गवाह रहो। (सहीह बुखारी: 4864)

3. और उन्होंने झुठलाया और अनुमरण किया अपनी आकांक्षाओं का। और प्रत्येक कार्य का एक निश्चित समय है।
 4. और निश्चय आ चुके हैं उन के पास कुछ ऐसे समाचार जिन में चेतवानी है।
 5. यह (कुरआन) पूर्णतः तन्वदर्शिता (ज्ञान) है फिर भी नहीं काम आई उन के चेतावनियाँ।
 6. तो आप विमुख हो जायें उन से, जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा एक अप्रिय चीज की¹ ओर।
 7. झुकी होगी उन की आंख। वह निकल रहे होंगे समाधियों से जैसे कि वह टिढ़ी दल हों बिखरे हुये।
 8. दौड़ रहे होंगे पुकारने वाले की ओर। काफिर कहेंगे यह तो बड़ा भीषण दिन है।
 9. झुठलाया इन से पहले नूह की जाति ने। तो झुठलाया उन्होंने हमारे भक्त को और कहा कि (पागल) है। और (उसे) झड़का गया।
 10. तो उस ने प्रार्थना की अपने पालनहार से कि मैं विवश हूँ, अतः मेरा बदला ले लो।
 11. तो हम ने खोल दिये आकाश के द्वार धारा प्रवाह जल के साथ।
 12. तथा फाड़ दिये धरती के स्रोत, तो मिल गया (आकाश और धरती
- 1 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا لِهَؤُلَاءِ أَهْوَاءَهُمْ وَكُلَّ امْرُءٍ نَسِيتُ ۝

وَلَقَدْ جَاءَهُنَّ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝

جَلْمَةٌ كَالْعُتَّةِ فَمَا تَنفَعُنَّ الشُّدْرُ ۝

فَقُولْ عَنْهُمْ يَوْمَ يُرْمَى الَّذِينَ لَا يُحْمَلُونَ شَيْئًا ۝

لَحْمًا أَبْصَارُهُمْ يَبْتَغُونَ مِنَ الرَّحْمَةِ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

فَنُطِمْصِينَ إِلَى الدَّاءِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمٌ مَرْمَرٌ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَلَمَّا بَوَّأْنَا جَنَدًا وَقَالُوا جُنُونٌ فَارْدُنَا جَنَ ۝

لَمَّا حَارَبَ إِلَى مَغْلُوبٍ فَأَنْتَصِرُ ۝

فَنَفَّسْنَا الْبَوَّابَ السَّمَاءِ مَاءً مُنْهَرِينَ ۝

وَفُتِّرْنَا الْأَرْضَ حَبْرًا مَّا تَلَقَّى إِلَّا آدُ عَلَى أُنْفُسٍ قُتِرَتْ ۝

का) जल उस कार्य के अनुसार जो निश्चित किया गया।

13. और सवार कर दिया हम ने उस (नूह) को तख्तों तथा कीलों वाली (नाव) पर।

وَتَمَلَّكْنَا عَلَى فَاةِ الْوُحْدِ وَوَدَّعْنَاهُ

14. जो चल रही थी हमारी रक्षा में उस का बदला लेने के लिये जिस के साथ कुफ़्र किया गया था।

نَجَّيْنَاهُ بِأُحْيِيَّا جَارِ الْوَحْدِ كَانَ كُفْرًا

15. और हम ने छोड़ दिया इसे एक शिक्षा बना कर तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ تَرَكْنَاهُ آيَةً لَهُمْ مِنْ مِّنْذُورٍ

16. फिर (देख लो!) कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

فَلَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِي

17. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ

18. झुठलाया आद ने तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।

كَذَّيْتُمْ عَادَ فَلَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِي

19. हम ने भेज दी उन पर कड़ी आंधी एक निरन्तर अशुभ दिन में।

وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنْ صَّاعِقَةٍ فَيَوْمَ تَغْرِبُ
تُسْفِرُ

20. जो उखाड़ रही थी लोगों को जैसे वह खजूर के खोखले तने हों।

تَكْذُرُ النَّاسَ كَمَا لَهُمْ أَحْجَارٌ يَّسْخَلُ مَقْعِيرُ

21. तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

فَلَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِي

22. और हम ने सरल बना दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ

23. झुठला दिया समूद¹ ने चेतावनियों को।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ

24. और कहा: क्या अपने ही में से एक मनुष्य का हम अनुमरण करें? वास्तव में तब तो हम निश्चय बड़े कुपथ तथा पागलपन में हैं।

فَقَالُوا أَإِتْرَاتُكَ وَالْجِبَّةُ الَّتِي إِذَا يَدُ الْيَمِينِ سَلَطَ
وَسُفْرٌ

25. क्या उतारी गई है शिक्षा उसी पर हमारे बीच में से? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूठा अहंकारी है।

أَلَيْسَ الذِّكْرُ عَلَيْهِنَّ إِذْ هُنَّ حُلَاهُنَّ عَلَى كَذِّابٍ أُوْتِرَ

26. उन्हें कल ही ज्ञान हो जायेगा कि कौन बड़ा झूठा अहंकारी है?

سَيَعْلَمُونَ عَذَابِ الْكَذِّابِ الْاَشْرُ

27. वास्तव में हम भेजने वाले हैं ऊंटनी उन की परीक्षा के लिये। अतः (हे सालेह!) तुम उन के (परिणाम की) प्रतीक्षा करो तथा धैर्य रखो।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ قَوِيَّةً لَّهُمْ فَاذْبُرْ لَهُمْ
وَأَصْطَبِرْ

28. और उन्हें सूचित कर दो कि जल विभाजित होगा उन के बीच, और प्रत्येक अपनी बारी के दिन² उपस्थित होगा।

وَيَنْبَغِي أَنْ نَمَاءَ قَوْمًا بِأَيُّهُمْ كَيْفَ يَشْرِبُ
مُتَعَفِّرٌ

29. तो उन्होंने पुकारा अपने साथी को। तो उस ने आक्रमण किया और उसे बध कर दिया।

فَتَادَّ رَأْسَهُمْ فَتَنَالَى فَعَقَرَهُ

30. फिर कैसी रही मेरी धानना तथा मेरी चेतावनियाँ?

تَكَلَّفْتُ كَأَن عَذَابِي وَنُذُرِي

31. हम ने भेज दी उन पर कर्कश ध्वनी,

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَابِدَةً فَكَانُوا

1 यह सालेह (अलैहिस्सलाम) की जानि थी। उन्होंने उन से चमत्कार की माँग की तो अल्लाह ने पर्वत से एक ऊंटनी निकाल दी। फिर भी वह इमान नहीं लाये क्योंकि उन के विचार से अल्लाह का रसूल कोई मनुष्य नहीं फरिश्ता होना चाहिये था। जैसा की मक्का के मुश्रिकों का विचार था।

2 अर्थात् एक दिन जल स्रोत का पानी ऊंटनी पियेगी और एक दिन तुम सब।

तो वे हो गये बाड़ा बनाने वाले की
रौंदी हुई बाढ़ के समान (चूर चूर)।

كَوْشِيْرًا مِّنْ مَّطِيْرٍ ۝

32. और हम ने सरल कर दिया है कुरआन
को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई
शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَمْرَأُ الْقُرْآنَ لِإِثْرِهِمْ مِنْ مِّنْ ذِكْرٍ ۝

33. झूठला दिया लून की जाति ने
चेतावनियों को।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنَّبِيِّ ۝

34. तो हम ने भेज दिये उन पर, पत्थर
लून के परिजनों के सिवा, हम ने
उन्हें बचा लिया रात्री के पिछले पहर।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ
نَّجَّيْنَاهُمْ بِحَقِّ رِسَالَتِهِ ۝

35. अपने विपेश अनुग्रह से। इसी प्रकार हम
बदला देते हैं उस को जो कृतज्ञ हो।

فَمَنْ مِّنْ عِبَادِنَا كَذَّبَ الْكُفْرَ مِنْ شُكْرِ ۝

36. और निस्सदेह (लून) ने सावधान किया
उन को हमारी पकड़ से। परन्तु उन्होंने
संदेह किया चेतावनियों के विषय में।

وَلَقَدْ آتَيْنَاهُمْ بَطْنًا فَتَنَّا زَايِلًا ۝

37. और बहलाना चाहा उस (लून) को
उस के अतिधियों¹ से तो हम ने
अधी कर दी उन की आंखें। कि चखो
मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियों
(का परिणाम)।

وَلَقَدْ رَاوَوْا عَنْ عَصِيْفٍ قُلْتُمْ أَهَؤُلَاءِ جِبَلٌ فَر_ ۝
عَادَيْنَ وَنَذَرْنَا ۝

38. और उन पर आ पहुँची प्रातः भोर ही
में स्थायी यातना।

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ بِرَأْسِهِ عَذَابٌ مُّشْتَرِكٌ ۝

39. तो चखो मेरी यातना तथा मेरी
चेतावनियों।

فَلَقَدْ رَاوَوْا عَادَيْنَ وَنَذَرْنَا ۝

40. और हम ने सरल कर दिया है कुरआन
को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई
शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَمْرَأُ الْقُرْآنَ لِإِثْرِهِمْ مِنْ مِّنْ ذِكْرٍ ۝

1 अर्थात् उन्होंने अपने दुराचार के लिये परिश्रमों को जो सुन्दर युवकों के रूप में
आये थे उन को लून (अलैहिसमलाम) से अपने सुपुर्द करने की माँग की

41. तथा फिरऔनियों के पास भी चेतावनियाँ आईं।
42. उन्होंने झुठलाया हमारी प्रत्येक निशानियों को तो हम ने पकड़ लिया उन को अति प्रभावी आधिपति के पकड़ने के समान।
43. (हे मक्का वासियों!) क्या तुम्हारे काफिर उत्तम है उन से अथवा तुम्हारी मुक्ति लिखी हुई है आकाशीय पुस्तकों में?
44. अथवा वह कहते हैं कि हम विजेता समूह हैं
45. शीघ्र ही पराजित कर दिया जायेगा यह समूह, और वह पीठ दिखा¹ देंगे।
46. बल्कि प्रलय उन के बचन का समय है तथा प्रलय अधिक कड़ी और तीखी है।
47. वस्तुतः यह पापी कुपथ तथा अग्नि में हैं।
48. जिस दिन वे घसीटे जायेंगे यातना में अपने मुखों के बल (उन से कहा जायेगा कि) चखो नरक की यातना का स्वाद।
49. निश्चय हम ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से।
50. और हमारा आदेश बस एक ही बार

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ التَّنْذِرُ

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذْبًا وَخَالُوا بِحُسْنِ الْحِسَابِ
عَذَابٌ مُّقْتَدِرٌ

أَلَمْ نَكُ خَلْقُكُمْ مِنْ أَوْلَاهِمُكُم مَّرْكُومًا ۖ
الَّذِينَ

أَمْ يَتْلُونَ عَنْ جِبْتٍ مَقْشُورٍ

سَيَهْرَمُ الْجَمْعُ وَيَرْثُونَ الذُّرَى

يَوْمَ السَّاعَةِ مَوْجُومٌ وَأَسَاعَةُ أَوْحَى وَأَمْرٌ

بِالنَّجْمِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ

يَوْمَ يُنْفَخُونَ فِي النَّارِ مِنْ أَوْجُهِهِمْ ذُرِّيَّتُهُمْ
مَكْرُومٌ

إِنْ كُلُّ شَيْءٍ خَلْقُهُ بِقَدَرٍ

وَمَا أَسْرَأُ إِلَهًُا وَاحِدًا ۖ كَلِمَةٍ يَابِسَةٍ

- 1 इस में मक्का के काफिरों की पराजय की भविष्यवाणी है जो बद्र के युद्ध में पूरी हुई हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बद्र के दिन एक खेमे में अल्लाह से प्रार्थना कर रहे थे फिर यही आयत पढ़ते हुये निकले। (सहीह बुखारी: 4875)

होता है आँख झपकने के समान।¹⁾

51. और हम धक्का कर चुके हैं तुम्हारे
जैसे बहुत से समुदायों को।

52. जो कुछ उन्होंने किया है कर्मपत्र में है।²⁾

53. और प्रत्येक तुच्छ तथा बड़ी बात
अंकित है।

54. वस्तुतः सदाचारी लोग स्वर्गों तथा
नहरों में होंगे।

55. सत्य के स्थान में अति सामर्थ्यवान
स्वामी के पास

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَطْيَافًا عَمِلُوا مِن مِّثْلِكَ ۝

وَكُلُّ شَيْءٍ عَمِلُوا فِي الزُّبُرِ ۝

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَقَرٌّ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۝

فِي مَقْعَدٍ وَحَدِيقٍ حَمِيمٍ ۝

1 अर्थात् प्रलय होने में देर नहीं होगी। अब्राह का आदेश होने ही तत्क्षण प्रलय आ जायेगी।

2 जिसे उन फरिश्तों ने जो दायें तथा बायें रहने हैं लिख रखा है

सूरह रहमान - 55

سورۃ الرحمن

सूरह रहमान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ अल्लाह के शुभ नाम ((रहमान)) से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह रहमान है।
- इस की आरंभिक आयतों में रहमान (अत्यंत कृपाशील) की सब से बड़ी दया का वर्णन हुआ है कि उस ने मनुष्य को कुर्आन का ज्ञान प्रदान किया और उसे बात करने की शक्ति दी जो उस का विशेष गुण है।
- फिर आयत 12 तक धरती तथा आकाश की विचित्र चीजों का वर्णन कर के यह प्रश्न किया गया है कि तुम अपने पालनहार के किन किन उपकारों तथा गुणों को नकारोगे?
- इस की आयत 13 से 30 तक जिनों तथा मनुष्यों की उत्पत्ति दो पूर्व तथा पश्चिमों की दूरी, दो सागरों का संगम तथा इस प्रकार की अन्य विचित्र निशानियों और अल्लाह की दया की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- आयत 31 से 45 तक मनुष्यों तथा जिनों को उन के पापों पर कड़ी चेतावनी दी गई है कि वह दिन आ ही रहा है जब तुम्हारे किये का दुखदायी दण्ड तुम्हें मिलेगा।
- अन्त में उन का शुभ परिणाम बताया गया है जो अल्लाह से डरते रहें। और फिर स्वर्ग के सुखों की एक झलक दिखायी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अत्यंत कृपाशील ने।
2. शिक्षा दी कुर्आन की।
3. उसी ने उत्पन्न किया मनुष्य को।
4. दिखाया उसे साफ साफ बोलना।

الرَّحْمَنُ

مَكْرُومًا

خَلَقَ الْإِنْسَانَ

مَلِكًا مُبِينًا

5. सूर्य तथा चन्द्रमा एक (निर्यामन) हिमाब से है।
 6. तथा तारे और वृक्ष दोनों (उसे) सज्दा करते है।
 7. और आकाश को ऊँचा किया और रख दी तराजू^[1]।
 8. ताकि तुम उग्रघन न करो तराजू (न्याय) में।
 9. तथा सीधी रखो तराजू न्याय के साथ और कम न तौलो।
 10. धरती को उस ने (रहने योग्य) बनाया पूरी उत्पत्ति के लिये।
 11. जिस में मेवे तथा गुच्छे वाले खजूर हैं।
 12. और भूसे वाले अब तथा सुर्गाधन (पुष्प) फूल हैं।
 13. तो (हे मनुष्य तथा जिन!) तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
 14. उस ने उत्पन्न किया मनुष्य को खनखनाते ठीकरी जैसे सूखे गारे से।
 15. तथा उत्पन्न किया जिनों को अग्नि की ज्वाला से।
 16. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

الْشَّمْسُ وَالْقَمَرُ مُنْقَابًا ۝

وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدُونَ ۝

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝

الَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝

وَاتَّقُوا يَوْمَ تُؤْتَىٰ السَّيْئَةُ وَلَا تُغْنِيُ عَنْكُمْ الْمِيزَانُ ۝

وَالْأَرْضُ وَضَعَهَا لِلْأَنْثَرِ ۝

فِيهَا ذَرَاهُةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝

بِمَا تَنفَعُونَ الْآلَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْعَصْفَارِ ۝

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ نَارٍ مِنْ تَارٍ ۝

فَبِمَا تَنفَعُونَ الْآلَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

1 (देखिये मूरह हदीद, आयत 25) अर्थ यह है कि धरती में न्याय का नियम बनाया और उस के पालन का आदेश दिया।

17. वह दोनों सूर्योदय¹ के स्थानों तथा दोनों सूर्यास्त के स्थानों का स्वामी है।

رَبُّ الشَّرْقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾

18. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا فَتَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾

19. उम ने दो सागर बहा दिये जिन का संगम होता है।

مَرَجَ الْكَلْبَيْنِ يَلْقَا فِيهِ ﴿١٩﴾

20. उन दोनों के बीच एक आड़ है। वह एक-दूसरे से मिल नहीं सकते।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبُورُ ﴿٢٠﴾

21. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا فَتَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾

22. निकलता है उन दोनों से मोती तथा मूँगा।

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

23. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا فَتَعْلَمُونَ ﴿٢٣﴾

24. तथा उसी के अधिकार में है जहाज खड़े किये हुये सागर में पर्वतों जैसे।

وَالَهُ الْجَوَارِ الْمُنَفَّاتُ فِي الْبَحْرِ كَالْإِجَارِ ﴿٢٤﴾

25. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا فَتَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

26. प्रत्येक जो धरती पर है नाशवान है।

كُلٌّ مِّنْ عِندِهَا قَاتِلٌ ﴿٢٦﴾

27. तथा शेष रह जायेगा आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का मुख (अस्तित्व)

وَيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾

1 गर्मी तथा जाड़े में सूर्योदय तथा सूर्यास्त के स्थानों का। इस से अभिप्राय पूर्व तथा पश्चिम की दिशा नहीं है।

28. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَ رَبُّكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٢٨﴾

29. उसी से मांगते हैं जो आकाशों तथा धरती में है। प्रत्येक दिन वह एक नये कार्य में है।¹

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

30. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَ رَبُّكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٣٠﴾

31. और शीघ्र ही हम पूर्णतः आकर्षित हो जायेंगे तुम्हारी ओर, हे (धरती के) दोनों बौद्ध² (जिन्नो और मनुष्यों)।³

سَنَنْفِرُ الْكَرَّةَ إِلَيْكَ يَا بَدِيعَ السَّمَوَاتِ ﴿٣١﴾

32. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَ رَبُّكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٣٢﴾

33. हे जिन्न तथा मनुष्य के समूह! यदि निकल सकते हो आकाशों तथा धरती के किनारों से तो निकल भागो! और तुम निकल नहीं सकोगे बिना बड़ी शक्ति⁴ के।

يَعْتَصِرُ الْجِبَينَ وَالْإِنسَ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُتُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا تَعْدُونَ إِلَّا بَطْلَانًا ﴿٣٣﴾

34. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَ رَبُّكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٣٤﴾

35. तुम दोनों पर अग्नि की ज्वाला तथा धूँवाँ छोड़ा जायेगा। तो तुम अपनी सहायता नहीं कर सकोगे।

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوْابِطٌ مِّنْ نَّارٍ وَهَامِسٌ فَلَا تُنْفِرُونَ ﴿٣٥﴾

1 अर्थात् वह अपनी उत्पत्ति की आवश्यकतायें पूरी करता प्रार्थनायें सुनता सहायता करता रोगी को निरोग करना अपनी दया प्रदान करना, तथा अपमान सम्मान और विजय प्राजय देना और अर्गणित कार्य करता है

2 इस वाक्य का अर्थ मुहावरे में धमकी देना और सावधान करना है

3 इस में प्रलय के दिन की ओर संकेत है जब सब मनुष्यों और जिन्नो के कर्मों का हिस्सा लिया जायेगा।

4 अर्थ यह है कि अल्लाह की पकड़ से बच निकलना तुम्हारे बस में नहीं है

36. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के
किन किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا تُكَذِّبُونَ ﴿٣٦﴾

37. जब आकाश (प्रलय के दिन) फट
जायेगा तो लाल हो जायेगा लाल
चमड़े के समान।

وَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

38. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन
- किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا تُكَذِّبُونَ ﴿٣٨﴾

39. तो उस दिन नहीं प्रश्न किया
जायेगा अपने पाप का किसी मनुष्य
से न जिन्न से।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌ ﴿٣٩﴾

40. तो तुम अपने पालनहार के किन -
किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٠﴾

41. पहचान लिये जायेंगे अपराधी अपने
मुखों से तो पकड़ा जायेगा उन के
माथे के बालों और पैरों को।

يَعْرِفُ الْغَائِرُونَ بِمَنَاسِكِهِمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَصِ
وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾

42. तो तुम अपने पालनहार के किन -
किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

43. यही वह तरक है जिसे झूठ कह रहे
थे अपराधी।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُذِّبَ بِهَا الْمُكَذِّبُونَ ﴿٤٣﴾

44. वह फिरते रहेंगे उस के बीच तथा
खौलते पानी के बीच।

يَطْلُفُونَ بَيْنَ أَوْيَاتٍ حَمِيمٍ ﴿٤٤﴾

45. तो तुम दोनों अपने पालनहार
के किन किन उपकारों को
झुठलाओगे?

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٥﴾

46. और उस के लिये जो डरा अपने
पालनहार के समक्ष खड़े होने से दो
बारा है।

وَلَسَ حَاقٌّ مَقْعَرَتُهُ جَحِيمٍ ﴿٤٦﴾

47. तो तुम अपने पालनहार के

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٧﴾

किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

48. दो बाग हरी-भरी शाखाओं वाले।

دَوَاهٍ أَعْوَابٍ ۝

49. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَهَيِّئُ الْآرَاءَ رَبُّكُمَا لَكُمَا ۝

50. उन दोनों में दो जल स्रोत बहने होंगे।

فِي مَآعِينٍ فَهَرُونَ ۝

51. तो तुम दोनों अपने पालनहार
के किन-किन पुरस्कारों को
झुठलाओगे?

يَهَيِّئُ الْآرَاءَ رَبُّكُمَا لَكُمَا ۝

52. उन में प्रत्येक फल के दो प्रकार होंगे।

بَيْنَهُمَا مِنْ كُلِّ ثَمَرٍ نَوْءٌ ۝

53. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों का झुठलाओगे?

يَهَيِّئُ الْآرَاءَ رَبُّكُمَا لَكُمَا ۝

54. वह ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाये
हुये होंगे जिन के अस्तर दबीज
रेशम के होंगे। और दोनों बागों (की
शाखायें) फलों से झुकी हुई होंगी।

مُتَكِيٍّ عَلَىٰ رُءُوسٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ وَجَنَاتُ
الْأَعْنَابِ ۝

55. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَهَيِّئُ الْآرَاءَ رَبُّكُمَا لَكُمَا ۝

56. उन में लजीली आंखों वाली स्त्रियाँ
होंगी जिन को हाथ नहीं लगाया
होगा किमी मनुष्य ने इस से पूर्व और
न किसी जिन ने।

فِي مِثْقَلِ ذَرَّةٍ مِنْ عِلْمٍ وَمَا تُغْنِي عَنْهُمْ
كِبَرُهُمْ ۝

57. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَهَيِّئُ الْآرَاءَ رَبُّكُمَا لَكُمَا ۝

58. जैसे वह हीरे और मूंगे हों।

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالزُّمَرُ ۝

59. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَهَيِّئُ الْآرَاءَ رَبُّكُمَا لَكُمَا ۝

60. उपकार का बदला उपकार ही है।

هَلْ جَزَاءُ الْإِنْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝

61. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? يٰٓأَيُّ الْاٰلِهٰ رَبِّكُمْ تَكْفُرُوْنَ
62. तथा उन दोनों के सिवा¹ दो वाग होंगे। وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتِيْ
63. तो तुम अपने पालनहार के किन किन उपकारों को झुठलाओगे? يٰٓأَيُّ الْاٰلِهٰ رَبِّكُمْ تَكْفُرُوْنَ
64. दोनों हरे-भरे होंगे। مُدْمَعَتَيْنِ
65. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? يٰٓأَيُّ الْاٰلِهٰ رَبِّكُمْ تَكْفُرُوْنَ
66. उन दोनों में दो जल स्रोत होंगे उबलते हुये بَيْنَهُمَا عَيْنٌ يَّطْعَمُهُنَّ
67. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? يٰٓأَيُّ الْاٰلِهٰ رَبِّكُمْ تَكْفُرُوْنَ
68. उन में फल तथा खजूर और अनार होंगे بَيْنَهُمَا نَارٌ وَفَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرِيّٰنٌ
69. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? يٰٓأَيُّ الْاٰلِهٰ رَبِّكُمْ تَكْفُرُوْنَ
70. उन में सुचरिता मुन्दरियाँ होंगी। يَتَوْنُ حَيْرَتٌ مِّثْلُهَا
71. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? يٰٓأَيُّ الْاٰلِهٰ رَبِّكُمْ تَكْفُرُوْنَ
72. गोरियाँ सुरक्षित होंगी खेमों में। حُورٌ مُّقْصَّرَاتٌ فِي الْاِيّٰرِ
73. तो तुम अपने पालनहार के किन किन उपकारों को झुठलाओगे? يٰٓأَيُّ الْاٰلِهٰ رَبِّكُمْ تَكْفُرُوْنَ

1 हदीस में है कि दो स्वर्ग चाँदी की हैं जिन के वर्तन तथा सब कुछ चाँदी के हैं और दो स्वर्ग सोने की, जिन के वर्तन तथा सब कुछ सोने का है। और स्वर्ग बार्सियों तथा अल्लाह के दर्शन के बीच अल्लाह के मुख पर महमा के पर्दे के सिवा कुछ नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 4878)

74. नही हाथ लगाया होगा¹ उन्हें किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन ने।

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ رِشٌّ قَبْلَهُمْ وَلَا بَاطِلٌ ۝

75. तो तुम अपने पालनहार के किन किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

76. वे तकिये लगाये हुये होंगे हरे गलीचों तथा सुन्दर विस्तारों पर।

يُسَبِّحِينَ عَلَى رُفُوفٍ خُصْبٍ وَتُحْفَرِي حِصَانٍ ۝

77. तो तुम अपने पालनहार के किन किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

78. शुभ है आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का नाम।

تَعْلَمُكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

1 हदीस में है कि यदि स्वर्ग की कोई सुन्दरी समार वामियों की ओर झाँक दे तो दोनों के बीच उजाला हो जाये और सुगंध से भर जाये। (सहीह बूखारी शरीफ: 2796)

सूरह वाकिआ - 56

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ

सूरह वाकिआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 96 आयत है।

- वाकिआ प्रलय का एक नाम है। जो इस सूरह की प्रथम आयत में आया है जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में प्रलय का भ्यावः चित्रण है जिस में लोगों को तीन भागों में कर दिया जायेगा। फिर प्रत्येक के परिणाम को बताया गया है। और उन तथ्यों का वर्णन किया गया है जिन से प्रतिफल के प्रति विश्वास होता है।
- सूरह के अन्त में कुर्आन से विमुख होने पर झंझोड़ा गया है कि कुर्आन जो प्रलय तथा प्रतिफल की बातें बता रहा है वह सर्वथा अग्राह का संदेश है उस में शैतान का कोई हस्तक्षेप नहीं है।
- अन्त में मौत के समय की विवशता का वर्णन करने हुये अन्तिम परिणाम से सावधान किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब होने वाली हो जायेगी।
2. उस का होना कोई झूठ नहीं है।
3. नीचा-ऊँचा करने^[1] वाली।
4. जब धरती तेजी से डोलने लगेगी।
5. और चूर-चूर कर दिये जायेंगे पर्वत।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝

لَيْسَ لِبُوعَثِبِهَا كَاوِبَةٌ ۝

خَاوِصَةٌ زَاوِبَةٌ ۝

وَدَارُكِبٍ لِّلْأَرْضِ نَجَاةٌ ۝

وَقَبَسَتِ الْبُحْبُورُ نَجَاةٌ ۝

- 1 इस से अभिप्राय प्रलय है। जो मृत्यु के विरोधियों को नीचा कर के नरक तक पहुँचायेगी। तथा आज्ञाकारियों को स्वर्ग के ऊँचे स्थान तक पहुँचायेगी। आरंभिक आयतों में प्रलय के होने की चर्चा, फिर उस दिन लोगों के तीन भागों में विभाजित होने का वर्णन किया गया है।

6. फिर हो जायेंगे बिखरी हुई धूल।
7. तथा तुम हो जाओगे तीन समूह।
8. तो दायें वाले तो क्या है दायें वाले।¹
9. और बायें वाले, तो क्या है बायें वाले।
10. और आग्रगामी तो आग्रगामी ही है।
11. वही समीप किये² हुये है।
12. वह सुखों के स्वर्गों में होंगे।
13. बहुत से अगले लोगों में से।
14. तथा कुछ पिछले लोगों में से होंगे।
15. स्वर्ण से बुने हुये तख्तों पर।
16. तकिये लगाये उन पर एक-दूसरे के सम्मुख (आसीन) होंगे।
17. फिरते होंगे उन की सेवा के लिये बालक जो सदा (बालक) रहेंगे।
18. प्याले तथा मुराहियाँ लेकर तथा मदिरा के छलकते प्याले।
19. न तो मिर चकरायेगा उन से न वह निर्बोध होगी।
20. तथा जो फल वह चाहेंगे।
21. तथा पक्षी का जो मांस वे चाहेंगे।
22. और गोरियाँ बड़े नैनो वाली।
23. छुपा कर रखी हुई मोतियों के समान।

- فَكَانَتْ هَبَاءً مُتَفِلَّةً ۝
وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۝
فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝
وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝
وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ۝
أُولَئِكَ الْمُقَدَّمُونَ ۝
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝
ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَاقِلِينَ ۝
وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّبَعُوا ۝
عَلَىٰ لَكُمْ مُوَدَّعَةٌ ۝
فَمُتَحَكِّمِينَ عَلَيْهَا مُتَقَدِّمِينَ ۝
يَقُوفُونَ عَلَيْهِمْ لَدُنَّا ۝
بِأَنْوَافٍ وَتَارِيخٍ مُّوَدَّعِينَ ۝
لَا يُصَدِّقُونَ عَنْهَا وَلَا يُرْفُونَ ۝
وَمِنْ أَمْرَةٍ مِّمَّا يَتَخَفَتُونَ ۝
وَلَهُمْ عَلَيْهِمْ مَا يَشْتَهُونَ ۝
وَهُوَ عَيْنٌ ۝
كَامُثَالِ الْمُنَّانِ الْمَكْتُومِ ۝

1 दायें वालों से अभिप्राय वह है जिन का कर्मपत्र दायें हाथ में दिया जायेगा। तथा बायें वाले वह दुराचारी होंगे जिन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा।

2 अर्थात् अल्लाह के प्रियवर और उस के समीप होंगे।

24. उम के बदले जो वह (समार में)
करते रहे। جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ
25. नहीं सुनैंगे उन में व्यर्थ बात और न
पाप की बात। لَا نَسْمَعُونَ بِهِمْ أَهْوَاءَ لَا نَبِيٍّ
26. केवल सलाम ही सलाम की ध्वनी
होगी। إِلَّا بِدَعَائِنَا
27. और दायें वाले, (क्या ही भाग्य
शाली) हैं दायें वाले। وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ
28. बिन काँटे की धैरी में होंगे। فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ
29. तथा तह पर तह केलों में। وَظِلِّ مَمْدُودٍ
30. फैली हुई छाया¹ में। وَهِيَ مَمْدُودَةٌ
31. और प्रवाहित जल में। وَأَمَّا شَكُوبٌ
32. तथा बहुत से फलों में। وَالْجَنَّةُ كُنُوزٌ
33. जो न समाप्त होंगे, न रोके
जायेंगे। لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ
34. और ऊँचे बिस्तर पर। فِي لُحُوفٍ مُّطَوَّعَةٍ
35. हम ने बनाया है (उन की) पत्नियों
को एक विशेष रूप से। إِنَّمَا أَشْأَهُنَّ إِنشَاءً
36. हम ने बनाया है उन्हें कुमारियाँ। فَجَعَلْنَهُنَّ أَكْرَامًا
37. प्रेमिकायें समायु। عُرُبًا أَكْرَامًا
38. दाहिने वालों के लिये। لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ
39. बहुत से अगलों में से होंगे। ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَفْئِدِ
40. तथा बहुत से पिछलों में से। وَثَلَاثَةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ

1 हदीस में है कि स्वर्ग में एक वृक्ष है जिस की छाया में सवार सौ वर्ष चलेगा फिर भी वह समाप्त नहीं होगी। (महीह बुखारी: 4881)

41. और वायें वाले, क्या है वायें वाले!
42. वह गर्म वायु तथा खौलने जल में (होगे)।
43. तथा काले धूबें की छाया में।
44. जो न शीतल होगा और न सुखदा।
45. वास्तव में वह इस से पहले (ससार में) सम्पन्न (सुखी) थे।
46. तथा दुराग्रह करते थे महा पापों पर।
47. तथा कहा करते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे तथा हो जायेंगे धूल और अस्थियाँ तो क्या हम अवश्य पुनः जीवित होंगे?
48. और क्या हमारे पूर्वज (भी)?
49. आप कह दें कि निःसंदेह सब अगले तथा पिछले।
50. अवश्य एकात्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय।
51. फिर तुम हे कुपथी! झुठलाने वालों!!
52. अवश्य खाने वाले हो जककूम (धोहड़) के वृक्ष से।⁽¹⁾
53. तथा भरने वाले हो उस से (अपने) उदर।
54. तथा पीने वाले हो उस पर से खौलता जल।

وَأَصْحَابُ السَّمَاءِ فِيهَا أَصْحَابُ السَّمَاءِ
فِي مَقُومٍ وَنَحِيمٍ

فَذَلِيلٌ مِّنْ يَّخْمُومٍ

لَّا يَأْبِرُهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ

وَكَانُوا يُضِلُّونَ عَلَىٰ أَصْحَابِ الْعَرْشِ

وَكَانُوا يَقُولُونَ أَيُّكُمْ شَأْنٌ وَلَكِنَّ نَزْرًا وَقَعْنَا
مِنْهُ لَنُصْعِقُنَّهُمْ

أَوَلَا يَذَّكَّرُ الَّذِينَ

فَلْيَكُنْ لِلْآقِلِينَ وَالْإِذِينَ

لَنُجْعِلَنَّ عَنْ يَّالَىٰ بَيْتَاتٍ يُعْمَرُ مَطْلُومٍ

لَعَنَّا لَعْنًا أَلِيمًا إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ

لَّا يَكْفُرُونَ مِنْ شَيْءٍ مِّنْ رَّغْمٍ

فَمَا يُؤْنَسُ مِنْهَا الْبَطُولُ

فَتَشْرَبُونَ عَلَيْهِمْ مِّنْ لَّيْمٍ

55. फिर पीने वाले हो प्यासे¹, ऊँट के समान।

فَسَيَكُونُ شَرِبَ الْهَيْمِ ۝

56. यही उन का अतिथि सत्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन।

هَذَا نُؤْتِيهِمْ تَوَمُّ الْيَدِ ۝

57. हम ने ही उत्पन्न किया है तुम को फिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते?

فَنُحْلِقُنْكُمْ فَلَوْلَا تَصَوُّتُ ۝

58. क्या तुम ने यह विचार किया की जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो।

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُثْمِنُونَ ۝

59. क्या तुम उसे शिशु बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।

وَأَنْتُمْ تَحْكُمُونَ أَمْ عَنْ الْغَيْبِ ۝

60. हम ने निर्धारित किया है तुम्हारे बीच मरण को तथा हम विवश होने वाले नहीं हैं।

عَنْ قَدَرٍ أَيْبُنْكُمْ لَمَوْتٍ وَمَا عَنْ بَسْوَغٍ ۝

61. कि बदल दें तुम्हारे रूप, और तुम्हें बना दें उस रूप में जिसे तुम नहीं जानते,

عَلَى أَنْ يُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُشْأَكُمْ فِي مَا لَا تَعْقِلُونَ ۝

62. तथा तुम ने तो जान लिया है प्रथम उत्पत्ति को फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते?

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَعْقِلُونَ ۝

63. फिर क्या तुम ने विचार किया कि उस में जो तुम बोते हो?

أَفَرَأَيْتُمْ تَأْتُونَ ۝

64. क्या तुम उसे उगाने हो या हम उसे उगाने वाले हैं?

وَأَنْتُمْ تَزْعُمُونَ أَمْ عَنْ الْوَيْحِ ۝

65. यदि हम चाहें तो उसे भुस बना दें फिर तुम बानें बनाते रह जाओ।

لَوْ شَاءَ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلَمْتُمْ أَفْئِدَةً ۝

1 आयत में प्यासे ऊँटों के लिये ((हीम)) शब्द प्रयुक्त हुआ है यह ऊँट में एक विशेष रोग होता है जिस से उस की प्यास नहीं जाती।

66. वस्तुन^१ हम दर्ण्डत कर दिये गये।

إِنَّا لَمَعْرَمُونَ

67. बल्कि हम (जीविका से) वांचत कर दिये गये।

بَلْ هُمْ مَعْرُومُونَ ۝

68. फिर तुम ने विचार किया उस पानी में जो तुम पीते हो।

أَلَمْ يَكُنْ أَلْأَنْهَارُ الْعَيْنُ تَشْرَبُونَ ۝

69. क्या तुम ने उसे बरसाया है उसे बादल से अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं।

وَأَن تَكُنْ أَرْضُ لَكُمْ مَوَاسِقٌ لِّمَنْ أَمْحَحَ النَّعْمَ لَوْ ۝

70. यदि हम चाहें तो उसे खारी कर दें फिर तुम आभारी (कृतज्ञ) क्यों नहीं होते।

لَوْ شَاءَ جَعَلْنَاهُ أَجَارًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝

71. क्या तुम ने उस अग्नि को देखा जिसे तुम सुलगाते हो।

أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ إِلَٰهَ الَّذِي تَدْعُونَ ۝

72. क्या तुम ने उत्पन्न किया है उस के वृक्ष को या हम उत्पन्न करने वाले हैं।

أَمْ أَنشَأْنَاهُمْ شَجَرًا الَّذِي تُشْفُونَ ۝

73. हम ने ही बनाया उस को शिक्षाप्रद तथा यात्रियों के लाभदायक।

مَنْ جَعَلْنَا تَدْرِيكًا وَمَسَاجِدَ لِلْمُتَوَكِّلِينَ ۝

74. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

75. मैं शपथ लेता हूँ सिनारों के स्थानों की।

فَلَا أُقْسِمُ بِوَقْدِ الْأَجُودِ ۝

76. और यह निश्चय एक बड़ी शपथ है यदि तुम समझो।

وَأَنَّهُ أَكْبَرُ لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۝

77. वास्तव में यह आदरणीय^१ कुर्आन है।

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ۝

78. सुरक्षित^२ पुस्तक में है।

فِي كِتَابٍ مُّكْتَبٍ ۝

1 तारों की शपथ का अर्थ यह है कि जिस प्रकार आकाश के तारों की एक दृढ़ व्यवस्था है उसी प्रकार यह कुर्आन भी अति ऊँचा तथा सुदृढ़ है।

2 इस से अभिप्राय ((लौहे महफूज)) है।

79. इसे पवित्र लोग ही छूते हैं।¹
80. अबतरित किया गया है सर्वलोक के पालनहार की ओर से।
81. फिर क्या तुम इस वाणी (कुरआन) की अपेक्षा करते हो?
82. तथा बनाते हो अपना भाग कि इसे तुम झुठलाते हो?
83. फिर क्यों नहीं जब प्राण गले को पहुँचने हैं।
84. और तुम उस समय देखने रहते हो।
85. तथा हम अधिक समीप होते हैं उस के तुम से परन्तु तुम नहीं देख सकते।
86. तो यदि तुम किसी के आधीन नहीं हो।
87. तो उस (प्राण) को फेंर क्यों नहीं लाते यदि तुम सच्चे हो?
88. फिर यदि वह (प्राणी) समीपवर्तियों में है।
89. तो उस के लिये मुख तथा उत्तम जीविका तथा मुख भरी स्वर्ग है।
90. और यदि वह दायें वालों में से है।
91. तो सलाम है तेरे लिये दायें वालों में होने के कारण।²
92. और यदि वह है झुठलाने वाले कुपथो में से।

- لَا يَسْمَعُ إِلَّا السَّمْعُ الطَّيِّبُ ۝
- تَمْرُؤًا مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝
- أَفَهَذَا الْحَدِيثُ اأَنْتُمْ تَذْهَبُونَ ۝
- وَتَجْعَلُونَ رُزُقَكُمْ اأَنْتُمْ تَخْتَارُونَ ۝
- فَلَوْلَا اِذَا تَلَقَّبَ السَّمْعُ ۝
- وَأَنْتُمْ بَيْنَهُمْ تَنْظُرُونَ ۝
- وَكُنْ أَقْرَبَ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۝
- فَلَوْلَا اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝
- تَرْجِعُوهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝
- فَاَمَّا اِنْ كَانَ مِنَ الْبَشَرِ ۝
- فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَرَجَّتْ نَجْمٌ ۝
- وَاَمَّا اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝
- فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ اَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝
- وَاَمَّا اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكْفُرِينَ فَسَاءَ لَكَ مِنَ الْعَذَابِ ۝

1 पवित्र लोगों से अभिप्राय फरिश्ते हैं। (देखिये: सूरह अवस, आयत 15 16)

2 अर्थात् उस का स्वागत सलाम से होगा।

93. तो अतिथि सत्कार है खोलने पानी से।
 94. तथा नरक में प्रवेश।
 95. वास्तव में यही निश्चय सत्य है।
 96. अन् (हे नबी!) आप पवित्रता का
 वर्णन करें अपने महा पालनहार के
 नाम की।

قُلْ لِّمَنْ حَيْثُ
 وَتَصْلِيَّةٌ جَمِيعٌ
 إِنَّ هَذَا الْمَوْحَى الْقَيُّومُ
 فَسَيَحْمِلُ بِأَسْمَائِكَ الْقَضِيَّةُ



सूरह हदीद - 57

سُورَةُ الْحَدِيدِ

सूरह हदीद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है इस में 29 आयत है।

- इस सूरह की आयत 25 में हदीद शब्द आया है जिस का अर्थ: ((लोहा)) है इस लिये इस का नाम सूरह हदीद पड़ा है।
- इस में अल्लाह की पवित्रता तथा उस के गुणों का वर्णन किया गया है। और शुद्ध मन से ईमान लाने तथा उस की माँगों को पूरा करने का निर्देश दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है कि प्रलय के दिन के लिये ज्योति होगी। जिस से मुनाफिक बर्चित रहेंगे और उन की यातना की दशा को दिखाया गया है।
- आयत 16 से 24 तक में बताया गया है कि ईमान क्या चाहता है? और संसार का अपेक्षा परलोक को लक्ष्य बनाने की प्रेरणा दी गई है।
- आयत 25 से 27 तक न्याय की स्थापना के लिये बल प्रयोग को आवश्यक करार देते हुये जिहाद की प्रेरणा दी गई है। और रहबानिय्यन (मन्यास) का खण्डन किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारी ईमान वालों को प्रकाश तथा बड़ी दया प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अल्लाह की पवित्रता का गान करता है जो भी आकाशों तथा धरती में है और वह प्रबल गुणी है।

سُبْحَانَكَ يَا اللَّهُمَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُعِزُّ الْغَيْبِ

2. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जीवन देता है तथा मारता है और वह जो चाहे कर सकता है।

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

3. वही प्रथम तथा वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है। और वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

4. उसी ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को छः दिनों में फिर स्थित हो गया अर्श (सिंहासन) पर। वह जानता है जो प्रवेश करता है धरती में तथा जो निकलता है उस से। और जो उतरता है आकाश से तथा चढ़ता है उस में। और वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम रहो, और अब्राह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

5. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य और उसी की ओर फेंके जाने हैं सब मामले (निर्णय के लिये)।

6. वह प्रवेश करता है रात्रि को दिन में और प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वह सीनों के भेदों से पूर्णतः अवगत है।

7. तुम सभी ईमान लाओ अब्राह तथा उस के रसूल पर। और व्यय करो उस में से जिस में उस ने अधिकार दिया है तुम को। तो जो नोग ईमान लायेंगे तुम में से तथा दान करेंगे तो उन्हीं के लिये बड़ा प्रतिफल है।

8. और तुम्हें क्या हो गया है कि ईमान

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُعَلِّمُ مَا يَشَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يُعْرَضُ عَلَيْهَا يُعْرَضُ مِنْهَا وَمَا يَخْفَى مِنْ الصَّامَاتِ وَمَا يُفْرَضُ مِنْهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ②

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ③

يُولِيهِ الْمَلِكُ فِي الْقَهْدِ وَيُؤَيِّدُ الْقَهَارِ ④
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عَاطِلٌ ⑤

إِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَنُوحٌ وَنُوحٌ وَنُوحٌ وَنُوحٌ
وَأَنْتُمْ لَكُمْ أَعْرَافٌ ⑥

وَمَا تَكْفُرُ إِلَّا تَكْفُورًا ⑦

1 अर्थात् अपने सामर्थ्य तथा ज्ञान द्वारा। आयत का भावार्थ यह है कि अब्राह सदा से है। और सदा रहेगा। प्रत्येक चीज का अस्तित्व उस के अस्तित्व के पश्चात् है वही नित्य है, विश्व की प्रत्येक वस्तु उस के होने को बता रही है फिर भी वह ऐसा गुप्त है कि दिखाइ नहीं देता।

नहीं लाने अल्लाह पर जब कि रसूल¹⁾ तुम्हें पुकार रहा है तार्कि तुम ईमान लाओ अपने पालनहार पर, जब कि अल्लाह ले चुका है तुम से वचन,²⁾ यदि तुम ईमान वाले हो।

9. वही है जो उतार रहा है अपने भक्त पर खुली आयनें तार्कि वह तुम्हें निकाले अधेरीं से प्रकाश की ओर। तथा वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अवश्य करुणामय दयावान् है।

10. और क्या कारण है कि तुम व्यय नहीं करते अल्लाह की राह में, जब अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का उत्तराधिकार। नहीं बराबर हो सकते तुम में से वे जिन्होंने दान किया (मक्का) की विजय से पहले तथा धर्मयुद्ध किया। वही लोग पद में अधिक ऊँचे हैं उन से जिन्होंने दान किया उस के पश्चात्³⁾ तथा धर्मयुद्ध किया। तथा प्रत्येक को अल्लाह ने वचन दिया है भनाइ का, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से पूर्णतः सूचित है।

يَرْبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝

وَمَا تَكْفُرُ إِلَّا شَيْعُوا إِلَىٰ جِهَنَّمَ وَاللَّهُ يَوْمَئِذٍ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
لِلْمُؤْمِنِينَ وَالْإِيمَانُ لَا يَسْتَوِي ۚ مَن كَانَ أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلِ الْوَلَدِ فَكَفَّرَ وَرَبَّهٖ
وَمِنَ الْبَيْتِ الْفَقْرَ وَمِنَ الْبَيْتِ الْفَقْرَ وَمِنَ الْبَيْتِ الْفَقْرَ وَمِنَ الْبَيْتِ الْفَقْرَ
اللَّهُ الْخُسْفَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 (देखिये सूरह आराफ आयत 172)। इन्ने कसीर ने इस से अभिप्राय वह वचन लिया है जिस का वर्णन (सूरह माइदा आयत 7) में है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा सहाबा से लिया गया कि वह आप की बातें सुनते तथा सुख दुःख में अनुपालन करेंगे। और प्रिय और अप्रिय में सच्च बोलेंगे। तथा किसी की निन्दा से नहीं डरेंगे। (बुखारी 7199, मुस्लिम 1709)

3 ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में धन दान करना है।

11. कौन है जो ऋण¹ दे अन्नाह को अच्छा ऋण? जिसे वह दुगुना कर दे उस के लिये और उसी के लिये अच्छा प्रतिदान है।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝

12. जिस दिन तुम देखोगे इमान वालों तथा इमान वालियों को, कि दौड़ रहा² होगा उन का प्रकाश उन के आगे तथा उन के दायें। तुम्हें शुभसूचना है ऐसे स्वर्गों की बहती है जिन में नहरें जिन में तुम सदावासी होगे, वही बड़ी सफलता है।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يُسْرِكُمْ تِيقُنَّ يَوْمَ جُمُعَتِ تَخْرُجُ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ جُلُودٌ فِيهَا دِيكَ هُوَ أَنْعَمُ الْعِظْمُ ۝

13. जिस दिन कहेंगे मुनाफिक पुरुष तथा मुनाफिक स्त्रियों उन से जो इमान लाये कि हमारी प्रतीक्षा करो हम प्राप्त कर लें तुम्हारे प्रकाश में से कुछ। उन से कहा जायेगा: तुम अपने पीछे वापिस जाओ और प्रकाश की खोज करो।³ फिर बना दी जायेगी उन के बीच एक दीवार जिस में एक द्वार होगा। उस के भीतर दया होगी तथा उस के बाहर यातना होगी।

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا نَظَرُونَ خُتِبَ لَكُمْ مِنْ تَوْرِكُمْ قِيلَ رُجِعُوا ذُرَّكُمْ لَا تُحْسِنُوا زُورًا فُضِيبَ بَيْنَهُمْ يَسْأَلُهُ بَابُ بَابِهِ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَكَذَلِكَ هُوَ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝

14. वह उन को पुकारेंगे: क्या हम (संसार में) तुम्हारे साथ नहीं थे? (वह कहेंगे): परन्तु तुम ने उपद्रव में डाल लिया अपने आप को, और

يَا أَدُوِّكُمْ لَكُمْ لَكُمْ مَعَكُمْ ذُرَّكُمْ لَكُمْ لَكُمْ مَعَكُمْ لَكُمْ لَكُمْ مَعَكُمْ لَكُمْ لَكُمْ مَعَكُمْ لَكُمْ لَكُمْ مَعَكُمْ لَكُمْ لَكُمْ مَعَكُمْ لَكُمْ لَكُمْ مَعَكُمْ ۝

1. हदीस में है कि कोई उहूद (पर्वत) बराबर भी सोना दान करे तो मेरे सहाबा के चौथाई अथवा आधा किलो के बराबर भी नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 3673 सहीह मुस्लिम: 2541)

2. यह प्रलय के दिन होगा जब वह अपने इमान के प्रकाश में स्वर्ग तक पहुँचेंगे

3. अर्थात् संसार में जा कर इमान तथा सदाचार के प्रकाश की खोज करो किन्तु यह असंभव होगा।

प्रतीक्षा में¹ रहे तथा मदेह किया और धोखे में रखा तुम्हें तुम्हारी मिथ्या कामनाओं ने। यहाँ तक की आ पहुँचा अब्राह का आदेश। और धोखे ही में रखा तुम्हें बड़े बचक (शैतान) ने।

15. तो आज तुम से कोई अर्थ दण्ड नहीं लिया जायेगा और न काफ़िरो से। तुम्हारा आवास नरक है, वही तुम्हारे योग्य है, और वह बुरा निवास है।

فَالْيَوْمَ لَا مَوَاحِدَ وَنُكَرِفْ بِهِ ذُرِّيَّةَ الْيَتِيمِ كَقَرْدَا
مَأْوَاهُمْ نَارُ نَارِي مَوَاسِكَ وَبِئْسَ الْمَعِيرَةُ

16. क्या समय नहीं आया ईमान वालों के लिये कि झुक जाये उन के दिल अब्राह के स्मरण (याद) के लिये, तथा जो उतरा है सत्य, और न हो जायें उन के समान जिन को प्रदान की गई पुस्तकें इस से पूर्व, फिर लम्बी अवधि व्यतीत हो गई उन पर तो कठोर हो गये उन के दिल।² तथा उन में अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

أَلَمْ يَأْتِ الْيَتِيمَ أَهْوَانٌ فَحَسَمَ قُلُوبَهُمْ بِوَكْرٍ
اللَّهُ وَمَا تَرَى مِنَ الْحَقِّ وَكَانُوا كَالْغَائِبِينَ أَوْ نُوا
الْكِتَابِ مِنْ قَبْلِ قَطْرٍ عَلَيْهِمُ الرَّمَدُ فَحَسَمَتْ
قُلُوبَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ يَسْتَفْتُونَ

17. जान लो कि अब्राह ही जीवन करना है धरती को उस के मरण के पश्चात, हम ने उजागर कर दी है तुम्हारे लिये निशानियाँ ताकि तुम समझो।

إِذْ عَلَّمَ اللَّهُ عَلَى الْأَرْضِ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا
لَهُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

18. वस्तुतः दान करने वाले पुरुष तथा दान करने वाली स्त्रियाँ तथा जिन्होंने कृण दिया है अब्राह को अच्छा कृण,³ उसे बढ़ाया जायेगा उन

إِنَّ الْبَصَائِقِينَ وَالْمَصْدَقَاتِ وَأَوْصُوا اللَّهَ تَوَاضًا
حَسَنًا يُضَفُّ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَثِيرٌ

1 कि मुसलमानों पर कोई आपदा आये।

2 (देखिये सूरह माइदा आयत 13)

3 हदीस में है कि जो पवित्र कमाई से एक खजूर के बराबर भी दान करता है

के लिये, और उन्हीं के लिये अच्छा प्रतिदान है।

19. तथा जो इमान लाये अल्लाह और उस के रसूलों¹ पर वही सिद्दीक तथा शहीद² है अपने पालनहार के समीप। उन्हीं के लिये उन का प्रतिफल तथा उन की दिव्य ज्योति है। और जो काफिर हो गये और झुठलाया हमारी आयतों को तो वही नारकीय है।

20. जान लो कि संसारिक जीवन एक खेल तथा मनोरंजन और शोभा³ एवं आपस में गर्व तथा एक-दूसरे से बढ़ जाने का प्रयास है धनी तथा संतान में। उस वर्षा के समान भा गई किसानों को जिस की उपज, फिर वह पक गई तो तुम उसे देखने लगे पीली, फिर वह हो जाती है चुर चुर। और परलोक में कड़ी यातना है, तथा अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता है। और संसारिक जीवन तो बस धोखे का संसाधन है।

21. एक-दूसरे से आगे बढ़ो अपने

तो अल्लाह उसे पोसता है जैसे कोई घोड़ा के बच्चे को पोसता है यहाँ तक कि पर्वत के समान हो जाता है। (महीह बुखारी: 1014)

- 1 अर्थात् बिना अन्तर और भेद-भाव किये सभी रसूलों पर इमान लाये।
- 2 सिद्दीक का अर्थ है बड़ा सच्चा। और शहीद का अर्थ गवाह है (देखिये सूरह बकरा आयत 143, और सूरह हज्ज, आयत 78)।
शहीद का अर्थ अल्लाह की राह में मारा गया व्यक्ति भी है।
- 3 इस में संसारिक जीवन की शोभा की उपमा वर्षा की उपज की शोभा से दी गई है। जो कुछ ही दिन रहती है फिर चुर चुर हो जाती है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الَّذِينَ يُفَوِّتُونَ وَالشَّهَادَةَ يُعْتَدِرُونَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ
وَنُورُهُمْ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا

مُخَلَّدُونَ ۚ إِنَّ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَهْوَ وَغُرُورٍ ۚ وَتَنَافَرُوا
بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرُوا فِي الْأَسْوَاقِ وَالْأَوَّلُ أَكْبَرُ ۚ وَبَيْنَ
الْغُلَبِ الْفُكْرَانِ ۚ ثُمَّ يَكُونُ مَعَهُ مَصْفَرٌّ ثُمَّ
يَكُونُ حُمْلًا وَفِي الْأَعْرَافِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَطُفْرَةٌ مِّنَ
الْعِلَّةِ وَرِطْرٌ ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعٌ
الْعُرُورُ ۝

سَابِقُونَ إِلَىٰ مَعِيرٍ ۚ وَمِن رَّبِّكُمْ جَهَنَّمُ مَرْجُوءًا مُّغْرَضٍ

पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर जिम का विस्तार आकाश तथा धरती के विस्तार के¹ समान है। जो तैयार की गई है उन के लिये जो ईमान लायें अल्लाह और उस के रसूलों पर। यह अल्लाह का अनुग्रह है वह प्रदान करता है उसे जिम को चाहता है और अल्लाह बड़ा उदार (दयाशील) है।

22. नही पहुँचनी कोई आपदा धरती में और न तुम्हारे प्राणों में परन्तु वह एक पुस्तक में लिखी है इस से पूर्व कि हम उसे उत्पन्न करें।² और यह अल्लाह के लिये अति सरल है।

23. ताकि तुम शोक न करो उस पर जो तुम से खो जाये। और न इतराओ उस पर जो तुम्हें प्रदान किया है। और अल्लाह प्रेम नहीं करता किसी इतराने गर्व करने वाले से।

24. जो कंजूसी करते हैं और आदेश देते हैं लोगों को कंजूसी करने का। तथा जो विमुख होगा तो निश्चय अल्लाह निस्पृह मराहनीय है।

25. निश्चय हम ने भेजा है अपने रसूलों को खुले प्रमाणों के साथ, तथा उतारी है उन के साथ पुस्तक, तथा तुला

السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَهْدَتْ يُلُوكَ مِنْ أَمْرٍ بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَبْرَأَ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ

لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَى مَا فَتَنَكُمْ وَلَا تَحْزَنُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ
لَا يُحِبُّ كُلَّ خَالٍ لِّخَوْرٍ

الَّذِينَ يُخْلِفُونَ وَيَاْمُرُونَ النَّاسَ بِالْخُلْفِ
وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَيْنُ الْعَوِيْدُ

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُصْرًا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ
الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ يَتَّقُونَ النَّاسَ يَتَّقُونَ

1 (देखिये मूरह आले इमरान आयत 133)

2 अर्थात् इस विश्व और मनुष्य के अस्तित्व से पूर्व ही अल्लाह ने अपने ज्ञान अनुसार ((लौहे महफूज)) (सुरक्षित पुस्तक) में लिख रखा है। हदीस में है कि अल्लाह ने पूरी उत्पत्ति का भाग्य आकाशों तथा धरती की रचना से पचास हजार वर्ष पहले लिख दिया। जब कि उस का अर्श पानी पर था। (महीह मुस्लिम 2653)

(न्याय का नियम), तार्किक लोग स्थित रहें न्याय पर। तथा हम ने उनारा लोहा जिस में बड़ा बल¹ है तथा लोगों के लिये बहुत से लाभ और तार्किक अल्लाह जान ले कि कौन उस की सहायता करता है तथा उस के रसूलों की बिना देखे। वस्तुतः अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।

26. हम ने (रसूल बना कर) भेजा नूह को तथा इब्रगहीम को और रख दी उन की संतति में नबूवत (दुतत्व) तथा पुस्तक। तो उन में से कुछ ने मार्गदर्शन अपनाया और उन में से बहुत से अवैज्ञाकारी है।

27. फिर हम ने निरन्तर उन के पश्चात् अपने रसूल भेजे और उन के पश्चात् भेजा मरयम के पुत्र ईसा को तथा प्रदान की उसे इंजील, और कर दिया उस का अनुसरण करने वालों के दिलों में करुणा तथा दया, और संसार² त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हम ने नहीं अनिवार्य किया उसे उन के ऊपर। परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता के लिये (उन्होंने

وَأَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَآلِهَهُم
لِلنَّاسِ وَلِيُعَلِّمُوا اللَّهَ مَنْ يُتَخَوَّفُ مِنْهُ
وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَآلِهَهُم
لِلنَّاسِ وَلِيَكْتُبَ فِيهِمْ مَّثَاجِدَ دِينِهِمْ
فِيُفَوِّنَ

لَقَدْ قَرَّبْنَا خُلُقًا نَزَّلْنَا ذُوقُوا ذَاقُوا
مَرِيرًا وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
اتَّبَعُوا وَرَأَيْنَاهُ تَرْجُومًا وَرَبَّانِيَّةً لِّمَنَّا
مَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ إِلَّا الْإِيقَانَ بَرُصْرًا
رَّغَوْهَا حَقٌّ بِمَا رَبَّانِيَّتِهَا قَاتِلْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ
أَكْرَهًا وَكَرِهًا وَمَنْهُمْ فِتْيُونَ

1 उस से अस्त्र शस्त्र बनाये जाते हैं।

2 संसार त्याग अर्थात् सन्यास के विषय में यह बताया गया है कि अल्लाह ने उन्हें इस का आदेश नहीं दिया। उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता के लिये स्वयं इसे अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया। फिर भी इस निभा नहीं सका। इस में यह संकेत है कि योग तथा सन्यास का धर्म में कभी कोई आदेश नहीं दिया गया है। इस्लाम में भी शरीअत के स्थान पर तरीकत बना कर नई बातें बनाई गईं और सन्धर्म का रूप बदल दिया गया। हदीस में है कि कोई हमारे धर्म में नई बात निकाले जो उस में नहीं है तो वह मान्य नहीं। (सहीह बुखारी: 2697, सहीह मुस्लिम: 1718)

ऐसा किया) तो उन्होंने नहीं किया उस का पूर्ण पालन। फिर (भी) हम ने प्रदान किया उन को जो इमान लाये उन में से उन का बदला। और उन में से अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

28. हे लोगों जो इमान लाये हो! अब्राह से डरो और इमान लाओ उस के रसूल पर वह तुम्हें प्रदान करेगा दोहरा¹। प्रतिफल अपनी दया से, तथा प्रदान करेगा तुम्हें ऐसा प्रकाश जिस के साथ तुम चलोगे, तथा क्षमा कर देगा तुम्हें, और अब्राह अनि क्षमी दयावान् है।

29. ताकि ज्ञान हो जाये (इन बातों से) अहले² किताब को कि वह कुछ शक्ति नहीं रखने अब्राह के अनुग्रह पर। और यह कि अनुग्रह अब्राह ही के हाथ में है। वह प्रदान करता है जिसे चाहे और अब्राह बड़े अनुग्रह वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَارْمُوا زُجُجَكُمْ
يُؤْتِكُمْ كَفْلًا مِّن رَّحْمَتِهِ وَيَعْمَلْ لَّكُمْ نُورًا
تَمْشُونَ بِهِ وَيُفْرِغْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

إِنَّمَا يَعْلَمُ أَهْلُ الْكِتَابِ الْإِسْلَامُ مَنْ عَلَى نَفْسٍ
مِّن نَّفْسِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن
يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

1 हदीस में है कि तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन को दोहरा प्रतिफल मिलेगा इन में एक अहले किताब से से वह व्यक्ति है जो अपने नबी पर इमान लाया था फिर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी इमान लाया। (सहीह बुखारी: 97, 2544, सहीह मुस्लिम: 154)

2 अहले किताब से आभियाय: यहूदी तथा ईसाई हैं।

सूरह मुजादला - 58

سورة المجادلة

सूरह मुजादला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है इस में 22 आयत हैं।

- मुजादला का अर्थ है झगडा और तकरार। इस के आरंभ में एक नारी की तकरार का वर्णन है। इसलिये इस का नाम सूरह मुजादला है।
- इस में जिहार के विषय में धार्मिक नियमों को बताया गया है। साथ ही इन नियमों का इन्कार करने पर कड़े दण्ड की चेतावनी दी गई है।
- आयत 7 से 11 तक मुनाफिकों के षड्यंत्र और उपद्रव की चर्चा करते हुये ईमान वालों के सामाजिक नियमों के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 12 और 13 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ काना फूसी के सम्बन्ध में एक विशेष आदेश दिया गया है।
- अन्त में द्विधावादियों (मुनाफिकों) की पकड़ करने हुये सच्चे ईमान वालों के लक्षण बताये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) अब्बाह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड रही थी अपने पति के विषय में तथा गुहार रही थी अब्बाह को। और अब्बाह सुन रहा था तुम दोनों की बार्नालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने देखने वाला है।

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ هَذِهِ كُلًّا
إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بُصِيرٌ

2. जो जिहार¹ करते है तुम में से

الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنكُم مَّن سَاءَ مَا يَكُونُ لَكُمْ عَنِ الْمَوْتِ

- 1 जिहार का अर्थ है पति का अपनी पत्नी से यह कहना कि तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ के समान है। इस्लाम से पूर्व अरब समाज में यह कुरीति थी कि पति अपनी पत्नी से यह कह देता तो पत्नी को तलाक हो जाती थी। और सदा के लिये पति से बिलग हो जाती थी। और इस का नाम ((जिहार)) था। इस्लाम में

अपनी पत्नियों से तो वे उन की माँ नहीं हैं। उन की माँ तो वे हैं जिन्होंने उन को जन्म दिया है। और वह बोलते हैं अघ्नय तथा झूठी बात। और वास्तव में अल्लाह माफ करने वाला क्षमाशील है।

3. और जो जिहार कर लेते हैं अपनी पत्नियों से, फिर वापिस लेना चाहते हों अपनी बात तो (उस का दण्ड) एक दाम मुक्त करना है, इस से पूर्व कि एक-दुमरे को हाथ लगायें।¹ इसी की तुम्हें शिक्षा दी जा रही है। और अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।

4. फिर जो (दाम) न पाये तो दो महीने निरन्तर रोजा (ब्रत) रखना है इस से पूर्व कि एक-दुमरे को हाथ लगायें। फिर जो सकत न रखे तो साठ निर्धनों को भोजन कगना है। यह आदेश इस लिये है ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और यह अल्लाह की सीमायें हैं तथा काफ़िरो के लिये दुःखदायी घानना है।

5. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह

إِنَّ أَهْلَهُمْ إِلَّا آلَؤُدُّهُمْ وَنَهَمُ لَيَقُولُنَّ مَنكُورًا
مِّنَ الْقَوْلِ وَنَدَّأُوذِي اللَّهَ لَعَنُوا عَفْوُهُ

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِن بَنَاتِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ
إِلَىٰ مَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّن قَبْلِ أَن يَتَّخِذُوا لَكَ
وَعَقْدُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ

فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ
أَن يَتَّخِذَا مِن لَّدُنكَ حُكْمًا أَلَمْ يَشَأْنِ يَسْكُنَا
ذَلِكَ يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَن لَّكَ حُدُودُ اللَّهِ
وَلِللَّهِ مِنَ حُدُوبِ الْيَوْمِ

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنُوا كَمَا لَعَنُوا

एक स्त्री जिस का नाम ((खौला)) (रजियल्लाहु अन्हा) है उस से उस के पति औस पुत्र सामित (रजियल्लाहु अन्हु) ने जिहार कर लिया। खौला (रजियल्लाहु अन्हा) नवी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आई। और आप से इस विषय में झगड़ने लगी। उस पर यह आयतें उतरनी (सहीह अबुदाऊद- 2214)। आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) ने कहा मैं उस की बात नहीं सुन सकी। और अल्लाह ने सुन ली। (इब्ने माजा- 156 यह हदीस सहीह है।)

- 1 हाथ लगाने का अर्थ संभोग करना है। अर्थात् संभोग से पहले प्रार्थना चुका दे।

तथा उस के रसूल का, वे अपमानित कर दिये जायेंगे जैसे अपमानित कर दिये गये जो इन से पूर्व हुये। और हम ने उतार दी है खुली आयतें और काफिरों के लिये अपमान कारी यातना है।

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَرْسَلْنَا أَنْبِيَاءَ بِحُجَّتِهِمْ
وَلَا تُكْفِرِينَ مَذَآبَ مُجْتَمِعِينَ

6. जिस दिन जीवित करेगा उन सब को अन्नाह तो उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से। गिन रखा है उसे अन्नाह ने और वह भूल गये है उसे। और अन्नाह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا
أَخَصُّهُ اللَّهُ وَتَسْأَلُ اللَّهَ كُلُّ شَيْءٍ حُجَّتًا

7. क्या आप ने नहीं देखा कि अन्नाह जानता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है? नहीं होती किसी चीज की काना फूसी परन्तु वह उन का चौथा हांता है। और न पांच की परन्तु वह उन का छठा हांता है। और न इस से कम की और न इस से अधिक की परन्तु वह उन के साथ होता है वे जहाँ भी हों। फिर वह उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से प्रलय के दिन। वास्तव में अन्नाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
مَا يَكُونُ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عَلَّمُوا الْأَشْهُارَ بِعِلْمِهِمْ وَرَاصَةً
إِلَافَاتٍ وَمِنْ ذَلِكَ وَلَا تَعْلَمُونَ
مَعَهُمْ آيَاتُ الْكُرْآنِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ
رَبُّنَا اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَلِيمٌ

8. क्या आप ने नहीं देखा उन्हें जो रोके गये है काना फूसी² से? फिर (भी) वही करते है जिस से रोके गये हैं। तथा काना फूसी करते है पाप और अत्याचार, तथा रसूल की अवैज्ञा

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

1 अर्थात् जानता और सुनता है।

2 इन से अभिप्राय मुनाफिक हैं। क्योंकि उन की काना फूसी बुराई के लिये होती थी। (देखिये: सूरह निमा आयत: 114)

की। और जब वे आप के पास आते हैं तो आप को ऐसे (शब्द से) सलाम करते हैं जिस से आप पर सलाम नहीं भेजा अल्लाह ने। तथा कहते हैं अपने मनों में क्यों अल्लाह हमें यातना नहीं देता उस पर जो हम कहते हैं पर्याप्त है उन को नरक जिस में वह प्रवेश करेंगे, तो बुरा है उन का ठिकाना।

حَسْبُكُمْ جَهَنَّمُ يَصُوتُهَا كَيْفَ الْيَبْرِ ۝

9. हे लोगो जो ईमान लाये हो! जब तुम काना फूमी करो तो काना फूमी न करो पाप तथा अन्याचार एवं रसूल की अवैज्ञा की। और काना फूमी करो पुण्य तथा सदाचार की। और डरते रहो अल्लाह से जिस की ओर ही तुम एकत्र किये जाओगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا مَا يَتَّبِعُونَ
بِالْأَنفُسِ وَالْعَدَاوَاتِ وَمَقْصِدَاتِ الزُّنُحِ وَلَا تَتَّبِعُوا
يَا الْبُغُورَ وَالْمُتَّقِينَ وَأَقْبُوا إِلَهُ الَّذِينَ يُبْغِضُونَ ۝

10. वास्तव में काना फूमी शैतानी काम है ताकि वह उदासीन हों¹ जो ईमान लाये। जब कि नहीं है वह हानिकर उन को कुछ, परन्तु अल्लाह की अनुमति से। और अल्लाह ही पर

إِنَّمَا الْغَلْبُ مِنَ الْمُظْلِمِينَ يَتَّبِعُونَ الْيَهُودَ
وَلَيْسَ بِغَلَبَةٍ شَيْءٌ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

1 मुनाफिक और यहूदी जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में आते तो (अस्मामु अलैकुम) (अनुवाद: आप पर सलाम और शान्ति हो) की जगह (अस्मामु अलैकुम) (अनुवाद: आप पर मौन आये।) कहने लगे और अपने मन में यह सोचते थे कि यदि आप अल्लाह के सत्य रसूल होने तो हमारे इस दुराचार के कारण हम पर यातना आ जाती। और जब कोई यातना नहीं आइ तो आप अल्लाह के रसूल नहीं हो सकते। हदीस में है कि यहूदी तुम को सलाम करें तो वह ((अस्मामु अलैका)) कहते हैं, तो तुम ((व अलैका)) कहो। अर्थात् और तुम पर भी। (सहीह बुखारी: 6257 सहीह मुस्लिम: 2164)

2 हदीस में है कि जब तुम तीन एक साथ रहो तो दो आपस में काना फूमी न करें। क्योंकि इस से तीसरे को दुख होता है। (सहीह बुखारी: 6290 सहीह मुस्लिम: 2184)

चाहिये कि भरोसा करें ईमान वाले।

11. हे ईमान वाले! जब तुम से कहा जाये कि विस्तार कर दो अपनी सभावों में तो विस्तार^१ कर दो, विस्तार कर देगा अल्लाह तुम्हारे लिये तथा जब कहा जाये कि सुकड़ जाओ तो सुकड़ जाओ ऊँचा^२ कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये है तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियों। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली भाँति अवगत है।

12. हे ईमान वाले! जब तुम अकेले बात करो रसूल से तो बात करने से पहले कुछ दान करो।^३ यह तुम्हारे लिये उत्तम तथा अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम (दान के लिये कुछ) न पाओ तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

13. क्या तुम (इस आदेश से) डर गये कि एकान्त में बात करने से पहले कुछ दान कर दो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया तो स्थापना करो नमाज की तथा जकात दो और आज्ञा पालन करो अल्लाह तथा उस के रसूल की। और अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَسْتَأْذِنُوا
الْمَجْلِسَ فَانصَبُوا بِقُصَّةِ اللَّهِ لَكُمْ وَرَدَّ يَسْتَأْذِنُوا
أَمْشَرُوا وَأَمَّا أَشْرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا
مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَرَحِمَهُ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جِئْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا
بَيْنَ يَدَيْ جُزْءَ صَدَقَةٍ ذَلِكُمْ جُزْءُكُمْ وَأَطِيعُوا
قَوْلَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

هَ أَشْفَعْتُمْ أَنْ تَقُولُوا بَيْنَ يَدَيْ جُزْءَ صَدَقَةٍ
صَدَقَتٌ لِمَنْ تَعْمَلُوا وَتَأْتِي اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاتَّبِعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ

1. भावार्थ यह है कि कोई आये तो उसे भी खिमक कर और आपस में सुकड़ कर जगह दो।
2. हदीस में है कि जो अल्लाह के लिये झुकता और अच्छा व्यवहार चयन करता है तो अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है। (सहीह मुस्लिम: 2588)
3. प्रत्येक मुसलमान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से एकान्त में बात करना चाहता था। जिस से आप का परशानी हानी थी। इसलिये यह आदेश दिया गया।

14. क्या आप ने उन्हें देखा¹ जिन्होंने मित्र बना लिया उस समुदाय को जिस पर क्रोधित हो गया अब्राह न वह तुम्हारे है और न उन को और वह शपथ लेने है झूठी बात पर जान बूझ कर।

15. तय्यार की है अब्राह ने उन के लिये कड़ी यातना वास्तव में वह बुरा है जो वे कर रहे हैं।

16. उन्होंने बना लिया अपनी शपथों को एक ढाल फिर रोक दिया (लोगों को) अब्राह की राह से, तो उन्हीं के लिये अपमान कारी यातना है।

17. कदापि नहीं काम आयेंगे उन के धन और न उन की संतान अब्राह के समक्ष कुछ वही नारकी है वह उस में सदावासी होंगे।

18. जिस दिन खड़ा करेगा उन को अब्राह तो वह शपथ लेंगे अब्राह के समक्ष जैसे वह शपथ ले रहे है तुम्हारे समक्ष। और वह समझ रहे हैं कि वह कुछ (तर्क)² पर है। सुन लो। वास्तव में वही झूठे हैं।

19. छा³ गया है उन पर शैतान और भुला दी है उन को अब्राह की याद। यही शैतान की सेना है। सुन लो। शैतान की सेना ही क्षतिग्रस्त होने वाली है।

الَّذِينَ تَرَى الَّذِينَ تَوْلَوْا قَوْمًا عَصَى اللَّهُ عَلَيْهِمْ تَامًا
يَتَكَفَّرُونَ وَلَا يَمْنَعُهُمْ وَيَقْتُلُونَ عَلَى الْكَيْبِ وَهُمْ
يَسْتَكْبِرُونَ ۝

أَعْلَى اللَّهُ إِلَهُكُمْ وَأَنْتُمْ عَلَيْهِ شَائِبُونَ ۝ إِنَّكُمْ سَعَى مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝

إِن تَصَدَّقُوا إِنَّمَا تَعْبُدُونَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ سِيمَاءُ اللَّهِ
فَلَا تَعْلَمُونَ عِلْمًا شَهِيدًا ۝

لَنْ تَنفَعَكُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ
شَيْئًا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۝ مَنْ مَعَهُمْ يَسْجُدُونَ ۝

يَوْمَ يَنْفَعُهُمْ إِلَهُ جَبِيَّتُهُمْ يَقْرَأُونَ لَهُ كِتَابًا
يَكْفُرُونَ لَكُمْ فَتَسْمَعُونَ أَلْفَهُمْ عَلَى عُرُ
الْأَنْفُسِهِمْ الْكَذِبُونَ ۝

إِسْتَعَاذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَسْخَمَهُمْ وَكَرَاهُوا
أُولَئِكَ حِزْبُ الشَّقِيئِ ۝ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّقِيئِ
هُمُ الْخَالِدُونَ ۝

1 इस से संकेत मुनाफिकों की ओर है जिन्होंने यहूदियों को अपना मित्र बना रखा था।

2 अर्थात् उन्हें अपनी शपथ का कुछ लाभ मिल जायेगा जैसे संसार में मिलता रहा।

3 अर्थात् उन को अपने नियंत्रण में ले रखा है।

20. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल का, वही अपमानितों में से है।
21. लिख रखा है अल्लाह ने कि अवश्य मैं प्रभावशाली (विजयी) रहूँगा¹ तथा मेरे रसूल। वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।
22. आप नहीं पायेंगे उन को जो ईमान रखते हों अल्लाह तथा अन्त दिवस (प्रलय) पर कि वह मैत्री करने हों उन से जिन्होंने विरोध किया अल्लाह और उस के रसूल का, चाहे वह उन के पिता हों अथवा उन के पुत्र अथवा उन के भाइ अथवा उन के परिजन² हों। वही है लिख दिया है (अल्लाह ने) जिन के दिलों में ईमान और समर्थन दिया है जिन को अपनी ओर से रूह (आत्मा) द्वारा। तथा प्रवेश देगा उन को ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे जिन में। प्रसन्न हो गया अल्लाह उन से तथा वह प्रसन्न हो गये उस से। वह अल्लाह का समूह है। सुन लो अल्लाह का समूह ही सफल होने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ فِي
الْأَذَلِّينَ ۝

كُتِبَ اللَّهُ لِلْإِيمَانِ أَنْ يُدْعَىٰ إِلَى اللَّهِ فَيُؤْتَىٰ عَرِضًا ۝

لَا يُجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ إِلَّا نَسُوا الْأَيَّامَ الَّتِي
كَانُوا يَحْلِفُونَ بِهَا أَن لَّهُمْ عِندَ اللَّهِ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَمَا لَهُمْ آلَاءٌ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ وَالَّذِينَ
يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ لَا يُلَاحِظُونَ
شَيْئًا مِّنْ عَرِضٍ يُنَافَرُ بِهِ ۝ إِنَّ اللَّهَ
يَخْتَارُ لِمَن يَرْضَاهُ ۝ وَلِلَّهِ الْآخِرَةُ
وَالْأُولَىٰ ۝ وَلِلَّهِ الْأَشْدُّ ۝ وَلِلَّهِ
الْقُدْرَةُ ۝

1 (देखिये मूरह मुमिन आयत S1- S2)

2 इस आयत में इस बात का वर्णन किया गया है कि ईमान और काफिर जो इस्लाम और मुसलमानों के जानी दुश्मन हों उन से सच्ची मैत्री करना एकत्र नहीं हो सकते। अतः जो इस्लाम और इस्लाम के विरोधियों से एक साथ सच्चे सम्बंध रखते हों तो उन का ईमान सत्य नहीं है।

सूरह हथ - 59

سورة الحثر

सूरह हथ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदीनी है इस में 24 आयत है।

- इस सूरह की दूसरी आयत में हथ का शब्द आया है जिस का अर्थ एकत्र होना है। और इसी से यह नाम लिया गया है।
- इस में अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों को मदीना के यहूदी कबीले के अपमानकारी परिणाम से चेतावनी दी गयी है।
- आरंभ में बताया गया है कि आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज अल्लाह की पवित्रता का गान करती है। फिर यहूदी कबीले बनी नजीर के अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करने का परिणाम बताया गया है। और ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 11 से 17 तक में उन मुनाफिकों की पकड़ की गई है जो यहूदियों से मिल कर इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे।
- अन्त में प्रभावी शिक्षा तथा अल्लाह से डरने की बातों का वर्णन किया गया है। तथा आज्ञा पालन और अवैज्ञा का अन्तर बताया गया है।
- इब्ने अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा कि यह सूरह बनी नजीर के बारे में उतरी इसे सूरह बनी नजीर कहा। (सहीह बुखारी: 4883)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अल्लाह की पवित्रता का गान किया है उस ने जो भी आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

سُبْحَانَكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

2. वही है जिस ने अहले किताब में से काफिरों को उन के घरों से पहले ही आक्रमण में निकाल दिया। तुम ने नहीं समझा था कि वे निकल जायेंगे और

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَهُمْ لَا
يَكُونُونَ فِيكُمْ خُصْمًا لَكُمْ قَاتِلْهُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّكُمْ
بِعَهْدِهِ رَبِّكُمْ

उन्होंने समझा था कि रक्षक होंगे उन के दुर्गा¹ अब्राह से। तो आ गया उन के पास अब्राह (का निर्णय)। ऐसा उन्होंने सोचा भी न था। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय। वह उजाड़ रहे थे अपने घरों को अपने हाथों से तथा ईमान वालों के हाथों² से। तो शिक्षा लो, हे आँख वालो!

حَيْثُ لَمْ يَتَّخِذُوا قَدْفًا فِي مَوْبِعِ الرُّعْبِ
يُخْشَوْنَ مَوْبِعَ يَدَيْهِمْ وَالْخَشْيَةَ الْمُؤْمِنِينَ
فَلَا تَعْتَبِرُوا يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

3. और यदि अब्राह ने न लिख दिया होता उन (के भाग्य में) देश निकाला, तो उन्हें यातना दे देता संसार (ही) में। तथा उन के लिये आखिरत (परलोक) में नरक की यातना है।

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْإِيمَانَ لَفُتِحُوا
لِلدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ

4. यह इस्लामिये कि उन्होंने विरोध किया अब्राह तथा उस के रमूल का, और जो विरोध करेगा अब्राह का तो निश्चय अब्राह कड़ी यातना देने वाला है।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاكَرُوا اللَّهَ وَمَوْلَاهُ وَمَنْ يُشَاكِرْ اللَّهَ
فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब मदीना पहुँचे तो वहाँ यहूदियों के तीन कबीले आबाद थे बनी नजीर बनी कुरैजा तथा बनी कैनुकाअ। आप ने उन सभी से संधि कर ली। परन्तु वह इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहे और एक समय जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बनी नजीर के पास गये तो उन्होंने ऊपर से एक पन्धर फेंक कर आप को मार डालने की योजना बनाई जिस से बही द्वारा अब्राह ने आप को सूचित कर दिया। उन के इस संधि भंग तथा षड्यंत्र के कारण आप ने उन पर आक्रमण किया। वह कुछ दिन अपने दुर्गों में बंद रहे। अन्ततः उन्होंने प्राण क्षमा के रूप में देश निकाल को स्वीकार किया और यह मदीना से यहूद का प्रथम देश निकाला था। वहाँ से वह खैबर पहुँचे और अदरणीय उमर (रजियल्लाहु अन्हु) के युग में उन्हें फिर देश निकाला दिया गया। और वह वहाँ से शाम चले गये जो हश्म का मैदान होगा।

- 2 जब वे अपने घरों से जाने लगे तो घरों को तोड़-तोड़ कर जो कुछ साध ले जा सकते थे ले गया और शेष सामान मुसलमानों ने निकाला।

5 (हे मुसलमानो!) तुम ने नहीं काटा¹ कोई खजूर का वृक्ष और न छोड़ा उसे खड़ा अपने तने पर, तो यह सब अल्लाह के आदेश से हुआ और ताकि वह अपमानित करे पथभ्रष्टों को।

6. और जो धन दिला दिया अल्लाह ने अपने रसूल को उन से, तो नही दौड़ाये तुम ने उस के लिये घोड़े और न ऊँटा परन्तु अल्लाह प्रभुत्व प्रदान कर देता है अपने रसूल को जिस पर चाहता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

7. अल्लाह ने जो धन दिलाया है अपने रसूल को इस वस्ती वालों² में, वह अल्लाह तथा रसूल, तथा (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। ताकि वह फिरता न रहे³ जाये

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِمَّةٍ أَنْ تُحَدِّثُوا غُلَامًا عَلَىٰ أَصْلَابِهَا
فِيمَا ذُنَّ اللَّهُ وَلِيُخْرِجَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَمَا آتَاكَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أُجْعَلْ عَيْنِي
مِنْ حَيْثُ كَلَّاكَ أَبٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

مَا آتَاكَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّائِلِينَ
وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ كُلٌّ لِذَلِكَ بَيْنَ الْأَقْبِيَاءِ
وَمَنْ ذَرَاةَ النَّاسِ أَلَسُوا بِرَسُولٍ يُعْزِزُهُمْ وَأَمَّا كَلِمَاتُ
فَأَتَتْهُمْ وَأَلْفَوْا اللَّهَ تَعَالَىٰ ۚ اللَّهُ شَهِيدٌ لِقَائِهِ ۝

1 बनी नजीर के घिराव के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशानुसार उन के खजूरों के कुछ वृक्ष जला दिये और काट दिये गये और कुछ छोड़ दिये गये। ताकि शत्रु की आड़ को समाप्त किया जाय, इस आयत में उमी का वर्णन किया गया है। (सहीह बुखारी: 4884)

2 अर्थात् यहूदी कबीला बनी नजीर से जो धन बिना युद्ध के प्राप्त हुआ उस का नियम बताया गया है कि वह पूरा धन इस्लामी बैतुल माल का होगा उसे मुजाहिदों में विभाजित नहीं किया जायेगा। हदीस में है कि यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये विशेष जिस से आप अपनी पत्नियों को खर्च देने थे। फिर जो बच जाता तो उसे अल्लाह की राह में शस्त्र और सवारी में लगा देने थे। (बुखारी: 4885)

इस को फँस का माल कहते हैं जो गनीमत के माल से अलग है।

3 इस में इस्लाम की अर्थ व्यवस्था के मूल नियम का वर्णन किया गया है पूँजी पति व्यवस्था में धन का प्रवाह सदा धनवानों की ओर होता है। और निर्धन दरिद्रता की चक्की में पिसता रहता है। कम्युनिज्म में धन का प्रवाह सदा शक्ति

तुम्हारे धनवानों के बीच और जो प्रदान कर दें रसूल, तुम उसे ले लो और रोक दें तुम को जिस से तो तुम रुक जाओ तथा अब्राह से डरते रहो निश्चय अब्राह कड़ी यातना देने वाला है।

8. उन निर्धन मुहाजिरो के लिये है जो निकाल दिये गये अपने घरों तथा धनों से। वह चाहते हैं अब्राह का अनुग्रह तथा प्रसन्नता, और सहायता करने हैं अब्राह तथा उस के रसूल की यही सच्चे हैं।

9. तथा उन लोगों¹ के लिये (भी) जिन्होंने आवास बना लिया इस घर (मदीना) को तथा उन (मुहाजिरो के आने) से पहले ईमान लाये, वह प्रेम करते हैं उन से जो हिजरत कर के आ गये उन के यहाँ। और वे नहीं पाते अपने दिलों में कोई आवश्यकता उस की जो उन्हें दिया जाये। और प्रधामिकता देते हैं (दूसरों को) अपने ऊपर चाहे स्वयं भूखे² हों। और जो

بِالْفَقَرِ الْهَاجِرِينَ الَّذِينَ الْخُرُوجَ مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيُخْبِرُونَ اللَّهَ وَلِيُؤْتِيَهُمْ أَهْلَهُمْ هُمُ الْعَبِيدُونَ ۝

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُخْبِرُونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُوقِ شَعْرَةً فَنَفْسًا فَآوَىٰ إِلَيْهَا مِنَ الْعَالَمِينَ ۝

वर्ग की ओर होना है। जब कि इस्लाम में धन का प्रवाह निर्धन वर्ग की ओर होता है।

- 1 इस से अभिप्राय मदीना के निवासी: अनुसार हैं। जो मुहाजिरीन के मदीना में आने से पहले ईमान लाये थे। इस का यह अर्थ नहीं है कि वह मुहाजिरीन से पहले ईमान लाये थे।
2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास एक अर्निथ आया और कहा हे अब्राह के रसूल! मैं भूखा हूँ। आप ने अपनी पत्नियों के पास भेजा तो वहाँ कुछ नहीं था। एक अन्मारी उसे घर ले गये। घर पहुँचे तो पत्नि ने कहा घर में केवल बच्चों का खाना है। उन्होंने परस्पर प्रामर्श किया कि बच्चों को बहला कर सुला दिया जाये। तथा पत्नि से कहा कि जब अर्निथ खाने लगे तो

बचा लिये गये अपने मन की तरी
से तो वही सफल होने वाले हैं।

10. और जो आये उन के पश्चात् वे कहते हैं हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाये। और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उन के लिये जो ईमान लाये। हे हमारे पालनहार! तू अति करुणामय दयावान् है।

11. क्या आप ने उन्हें ' नहीं देखा जो मुनाफिक (अवसरवादी) हो गये, और कहते हैं अपने अहले किताब भाइयों से कि यदि तुम्हें देश निकाला दिया गया तो हम अवश्य निकल जायेंगे तुम्हारे साथ। और नहीं मानेंगे तुम्हारे बारे में किसी की (बात) कभी। और यदि तुम से युद्ध हुआ तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे। तथा अब्राह गवाह है कि वह झूठे हैं।

12. यदि वे निकाले गये तो यह उन के

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
وَمَا تُخْرِجُنَا الَّذِينَ يَقُولُونَ يَا الْأَعْزَمُونَ لَا تَخْشَى فِي
قُلُوبِنَا جَلَالَكَ الَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَؤُوفٌ
رَحِيمٌ

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قَالُوا يَقُولُونَ لَإِذَا جَاءَهُمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَيَنْخِلُنَّهُمْ
لَيَخْرُجُنَّ مَعَهُمْ وَلَا يُخِصِّمُهُمْ وَيَقُولُ هَذَا هَؤُلَاءِ
أُولَئِكَ نَحْنُ الْكَافِرُونَ

لَيْسَ أَخِيْرًا لَخَرَجُوا مَعَهُمْ وَلَيْسَ قَوْلُهُمْ

तुम दीप बुझा देना। उस ने ऐसा ही किया। सब भूखे सो गये और अतिथि को खिला दिया। जब वह अनसारी भोर में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास पहुँचे तो आप ने कहा अमूल पुरुष (अबू तल्हा) और अमूल स्त्री (उम्मे सुनैम) से अब्राह प्रसन्न हो गया। और उस ने यह आयत उतारी है। (सहीह बुखारी: 4889)

- 1 इस से अभिप्राय अब्राह त्रिन उवेय्य मुनाफिक और उस के साथी है जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यहूद को उन के वचन भंग तथा षड्यंत्र के कारण दस दिन के भीतर निकल जाने की चेतावनी दी, तो उस ने उन से कहा कि तुम अड जाओ। मर बीस हजार शस्त्र युवक तुम्हारे साथ मिल कर युद्ध करेंगे। और यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे परन्तु यह सब मैखिक बातें थी।

साथ नहीं निकालेंगे। और यदि उन से युद्ध हो तो वे उन की सहायता नहीं करेंगे। और यदि उन की सहायता की (भी) तो अवश्य पीठ दिखा देंगे, फिर (कहीं से) कोई सहायता नहीं पायेंगे।

لَا يَنْصُرُوهُمْ وَلَهُنَّ مَتَرُوهُمْ يُكْرَهُ ۖ
فَلَا يَنْصُرُوهُمْ ۝

13. निश्चय अधिक भय है तुम्हारा उन के दिलों में अन्नाह (के भय) में। यह इसलिये कि वे समझ-बूझ नहीं रखते।

لَا تَحْزَنْهُمْ رَفْصَةٌ وَلَا نَصْرٌ مِنْ يَمِينٍ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

14. वह नहीं युद्ध करेंगे तुम से एकत्र हो कर परन्तु यह कि दुर्ग बंद वास्तियों में हों, अथवा किमी दीवार की आड़ में। उन का युद्ध आपस में बहुत कड़ा है। आप उन्हें एकत्र समझते हैं जब कि उन के दिलों में अलग अलग है। यह इसलिये कि वह निर्बोध होते हैं।

لَا يُفَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا قَوْمٌ مَقْتَدُونَ
أَوْ مِنْ وَرَاءِ بَدْرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ
تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

15. उन के समान जो उन से कुछ ही पूर्व चख चुके¹ है अपने किये का स्वादा और इन के लिये दुःखदायी यातना है।

كَمَثَلِ الْيَمِينِ مِنْ قَبْلِهمْ قَوْمٌ بَادَأُوا
وَبِأَلْأَمْرِهمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

16. (उन का उदाहरण) शैतान जैसा है कि वह कहता है मनुष्य से कि कुफ्र कर, फिर जब वह काफिर हो गया तो कह दिया कि मैं तुझ से विरक्त (अलग) हूँ। मैं तो डरता हूँ अन्नाह सर्वलोक के पालनहार से।

كَذَٰلِكَ الشَّيْطَانُ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ ائْمُرْ أَهْلَكَ
فَعَزَّزَ قَالَ إِلَىٰ تَبَرَأَ إِلَيْكَ إِلَىٰ أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ۝

17. तो हो गया उन दोनों का दुष्परिणाम यह कि वे दोनों नरक में सदावासी रहेंगे। और यही है अत्याचारियों का कुफल।

كَذَٰلِكَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۖ
وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝

1 इस में सकेत बद्र में मक्का के काफिरों तथा कैनुकाअ कबीले की पराजय की ओर है।

18. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अब्राह से डरो और देखना चाहिये प्रत्येक को कि उस ने क्या भेजा है कल के लिये तथा डरते रहो अब्राह से, निश्चय अब्राह सूचन है उस से जो तुम करते हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ يَدًا وَأَتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

19. और न हो जाओ उन के समान जो भूल गये अब्राह को तो भुला दिया (अब्राह ने) उन्हें अपने आप से, यही अवैज्ञकारी है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْعَصِيُّونَ ۝

20. नही बराबर हो सकने नारकी तथा स्वर्गी। स्वर्गी ही वास्तव में सफल होने वाले हैं।

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

21. यदि हम अवतरित करते इस कुर्आन को किसी पर्वत पर तो आप उसे देखते कि झुका जा रहा है तथा कण-कण होता जा रहा है अब्राह के भय¹ से। और इन उदाहरणों का वर्णन हम लोगों के लिये कर रहे हैं ताकि वह सोच-विचार करें। वह खुले तथा छुपे का जानने वाला है। वही अत्यंत कृपाशील दयावान् है।

لَوْ أَنزَلْنَاهُ عَلَىٰ طَرَفِ الْبُرْجِ عَلَىٰ سَبِيلِ لَّزَائِمَةٍ لَّخَرَسُوا مَخْشِينَ مِمَّا تَقُولُ الْأَنْفَالُ نَحْمُهَا بِمَا يَشَاءُ لَعَلَّهُمْ يَرْفَعُونَ ۝

22. वह अब्राह ही है जिस के अतिरिक्त कोई (सत्य) पूज्य नहीं है।

هُوَ اللَّهُ كَيْفَىٰ لِلْإِنسَانِ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝

23. वह अब्राह ही है जिस के अतिरिक्त नहीं है² कोई सच्चा बंदनीया। वह

هُوَ اللَّهُ الْبَدِيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ

1 इस में कुर्आन का प्रभाव बनाया गया है कि यदि अब्राह पर्वत को ज्ञान और समझ-बुझ दे कर उस पर उतारता तो उस के भय से दब जाता और फट पड़ता। किन्तु मनुष्य की यह दशा है कि कुर्आन सुन कर उस का दिल नहीं पसीजता (देखिये सूरह वकरा, आयत: 74)

2 इन आयतों में अब्राह के शुभनामों और गुणों का वर्णन कर के बनाया गया है

सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र,
सर्वथा शान्ति प्रदान करने वाला,
रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली
बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला,
बड़ाई वाला है। पवित्र है अब्राह उस
से जिसे वे (उस का) साझी बनाने हैं।

24. वही अब्राह है पैदा करने वाला,
बनाने वाला, रूप देने वाला। उसी
के लिये शुभनाम है, उस की
पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी)
आकाशों तथा धरती में है, और वह
प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

الْقُدُّوسُ الشَّدِيدُ الْمُؤْمِنُ الْمُتَعَزِّزُ الْعَزِيزُ
الْمُجْتَبَرُ الْمُتَكَبِّرُ الْمُتَعَزِّزُ الْمُتَعَزِّزُ

هُوَ اللَّهُ الْخَافِضُ الْبَارِئُ الْغَافِرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَنْ فِي الْغُيُوبِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

कि वह अब्राह कैसा है जिस ने यह कुर्बान उतारा है। इस आयत में अब्राह के
ग्यारह शुभनामों का वर्णन है। हदीस में है कि अब्राह के निम्नान्वे नाम है जो उन्हें
मिनेगा तो वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुखारी: 7392 सहीह मुस्लिम: 2677)

सूरह मुस्तहिना - 60

سُورَةُ الْمُسْتَحْسِنَةِ

सूरह मुस्तहिना के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है इस में 13 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 से यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 7 तक में इस्लाम के विरोधियों से मैत्री रखने पर कड़ी चेतावनी दी गई है। और अपने स्वार्थ के लिये उन्हें भेद की बातें पहुंचाने से रोका गया है। तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उन के साथियों के क़ाफिर जाति से विरक्त होने के एलान को आदर्श के लिये प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 8 और 9 में बताया गया है कि जो क़ाफिर युद्ध नहीं करते तो उन के साथ न्याय तथा अच्छा व्यवहार करो।
- आयत 10 से 12 तक मक्का से हिज़्रत कर के आई हुई तथा उन नारियों के बारे में जो मुसलमानों के विवाह में थी और उन के हिज़्रत कर जाने पर मक्का ही में रह गई थी निर्देश दिये गये गये हैं।
- अन्त में उन्हीं बातों पर बल दिया गया है जिन से सूरह का आरंभ हुआ है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे लोगो जो ईमान लाये हो! मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ। तुम संदेश भेजते हो उन की ओर मैत्री¹ का, जब कि उन्हीं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ
تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِالْحَبْلِ وَأَقْدَمُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ
الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الْمُسْلِمِينَ وَأَيُّكُمْ يَفْعَلُ

- 1 मक्का वासियों ने जब हदैय्या की संधि का उल्लंघन किया तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का पर आक्रमण करने के लिये गुप्त रूप से मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उसी बीच आप की इस याजना से सूचित करने के लिये हातिब बिन अबी वलतआ ने एक पत्र एक नारी के माध्यम से मक्का वासियों को भेज दिया। जिस की सूचना नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को

ने कुफ्र किया है उस का जो तुम्हारे पास सन्य आया है। वह देश निकाला देते हैं रसूल को तथा तुम को इस कारण कि तुम ईमान लाये हो अल्लाह अपने पालनहार पर? यदि तुम निकले हो जिहाद के लिये मेरी राह में और मेरी प्रसन्नता की खोज के लिये तो गुप्त रूप से उन को मैत्री का संदेश भेजते हो? जब कि मैं भली भाँति जानता हूँ उसे जो तुम छुपाते हो और जो खुल कर करते हो? तथा जो करेगा ऐसा, तो निश्चय वह कुपथ हो गया सीधी राह में।

2. और यदि बश में पा जायें तुम को तो तुम्हारे शत्रु बन जायें तथा तुम्हें अपने हाथों और जुवानों से दुःख पहुँचायें और चाहने लगेंगे कि तुम (फिर) काफिर हो जाओ।

3. तुम्हें लाभ नहीं देंगे तुम्हारे सम्बन्धी और न तुम्हारी संतान प्रलय के दिन। वह (अल्लाह) अलगाव कर देगा

إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَخَالٍ
يُرِيدُونَ لِيُفْلِتُوا بِالْمُؤَدَّةِ وَأَنَا عَلِيمٌ بِمَا كُفِّرْتُمْ وَمَا
عَلَيْكُمْ مِنْ نِقْمَتِهِ إِن كُنْتُمْ قَدْ ضَلُّ سَوَاءَ
الْبَلِيلِ ۝

وَلَنْ يَنْفَعَكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَتَتَنَسَّلُونَ بَيْنَهُمْ
وَلَيْسَ لَهُمْ بِالشُّوْرَةِ وَرَدٌ لَوْ كُنْتُمْ زُنُ ۝

لَنْ نَنْفَعَكُمْ أَرْحَامَكُمْ وَلَا أُولَادَهُمْ أَوْ آبَاءَهُمْ
يُقْبَلُ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَمَا يَفْعَلُونَ بِبَيْتِهِ ۝

वही द्वाग दे दी गई आप ने आदरणीय अली मिक्दाद तथा जुन्नैर से कहा कि जाओ रौजा खाख (एक स्थान का नाम) में एक स्त्री मिलेगी जो मक्का जा रही होगी। उस के पास एक पत्र है वह ले आओ। यह लोग वह पत्र लाये। तब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा हे हातव! यह क्या है? उन्होंने कहा यह काम मैं ने कुफ्र तथा अपने धर्म से फिर जाने के कारण नहीं किया है। बल्कि इस का कारण यह है कि अन्य मुहाजिरीन के मक्का में सम्बन्धी है जो उन के परिवार तथा धन की रक्षा करते हैं। पर मेरा वहाँ कोई सम्बन्धी नहीं है। इसलिये मैं ने चाहा कि उन्हें सूचित कर दूँ ताकि वे मेरे आभारी रहें। और मेरे समीपवर्तियों की रक्षा करें। आप ने उन की सच्चाई के कारण उन्हें कुछ नहीं कहा। फिर भी अल्लाह ने चेतवनी के रूप में यह आयतें उतारी ताकि भविष्य में कोई मुसलमान काफिरों से ऐसा मैत्री सम्बन्ध न रखे। (सहीह बुखारी: 4890)

तुम्हारे बीच। और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

4. तुम्हारे लिये इब्राहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है। जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहा निश्चय हम विरक्त है तुम से तथा उन से जिन की तुम इयादत (वन्दना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त। हम ने तुम से कुफ़ किया। खुल चका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध मदा के लिये। जब तक तुम इमान न लाओ अकेले अल्लाह पर, परन्तु इब्राहीम का (यह) कथन अपने पिता से कि मैं अवश्य तेरे लिये क्षमा की प्रार्थना¹ करूंगा। और मैं नहीं अधिकार रखता हूँ अल्लाह के समक्ष कुछ। हे हमारे पालनहार! हम ने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर ध्यान किया है और तेरी ही ओर फिर आना है।

5. हे हमारे पालनहार! हमें न बना परीक्षा² (का साधन) काफ़िरों के लिये और हमें क्षमा कर दे, हे हमारे पालनहार! वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली गुणी है।

6. निःसन्देह तुम्हारे लिये उन में एक

فَذَكَرْنَا لَكُمْ نُسْرَةَ عَسَىٰ فِئَةِ إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ
 إِذْ جَاءُوا بِقَوْمِهِمْ إِذَا بُرَزُوا لَكُمْ وَهُمْ مِمَّا تُعَذِّبُونَ
 مِمَّنْ قُلُوبُ الْكَافِرِينَ أَتَرَ لَكُمْ رِيبًا إِنَّكُمْ أَعْيُنُ عَدُوٍّ
 وَالْبَعْضُ مِنَ الْبَاقِ حَقٌّ مُّؤْمِنُونَ وَلَهُ وَحْدَهُ لَا قَوْلَ
 إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ لَا تَسْغُرُ لَكَ وَمَا تِلْكَ بَاطِلٌ
 الْكُفْرِ مِنْ شَيْءٍ رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا
 وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝

رَبَّنَا لَا تُخِزْنَا فِي دَلِيلٍ مِنَ الْكَافِرِينَ وَاعْلَمُوا أَنَّا
 رِيبًا أَنْتَ الْغَنِيُّ الْكَافِرُ ۝

فَذَكَرْنَا لَكُمْ نُسْرَةَ عَسَىٰ فِئَةٍ لِّمَنْ كَانَ

- 1 इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जो प्रार्थनाये अपने पिता के लिये की उन के लिये देखिये: सूरह इब्राहीम आयत: 41, तथा सूरह शुअरा, आयत: 86। फिर जब आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को यह जान हो गया कि उन का पिता अल्लाह का शत्रु है तो आप उस से विरक्त हो गये। (देखिये: सूरह नौबा आयत: 114)

- 2 इस आयत में मक्का की विजय और अधिकश मुशरिकों के इमान लाने की भविष्यवाणी है जो कुछ ही सप्ताह के पश्चात् पूरी हुई और पूरा मक्का इमान ले आया।

अच्छा आदर्श है उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (प्रलय) की। और जो विमुख हो तो निश्चय अल्लाह निस्पृह प्रशमन है।

يَتُوبُ اللَّهُ وَأَنِّيَوْمَ الْآخِرِ وَمَنْ تَوَلَّى فَإِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

7. कुछ दूर नहीं कि अल्लाह बना दे तुम्हारे बीच तथा उन के बीच जिन से तुम बैर रखते हो प्रेम।¹ और अल्लाह बड़ा सामर्थ्यवान है, और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

عَمَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ سَاءَ بَيْنُكُمْ
وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

8. अल्लाह तुम को नहीं रोकता उन से जिन्होंने तुम से युद्ध न किया हो धर्म के विषय में, और न बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे देश से, इस से कि तुम उन से अच्छा व्यवहार करो और न्याय करो उन से। वास्तव में अल्लाह प्रेम करना है न्याय² कारियों से।

لَا يَنْهَى اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ
وَلَمْ يَكُنْ يَؤْتِكُمْ إِنْ يَأْتِيَكُمُ أَنْ تَبَرُّهُمْ وَتُقْسِطُوا
إِلَيْهِمْ إِنَّ لِلَّهِ لَحُبَّ الْغَافِلِينَ ۝

9. तुम्हें अल्लाह वस उन से रोकता है जिन्होंने युद्ध किया हो तुम से धर्म के विषय में तथा बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे घरों से, और सहायता की हो तुम्हारा बहिष्कार कराने में कि तुम मैत्री रखो उन से। और जो मैत्री करेंगे उन से तो वही अत्याचारी है।

إِنَّمَا يَنْهَى اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ
وَأَمْرُهُمْ فِي بَيْنِ يَدَيْهِمْ وَمَنْ يَرْجُ الْكَافِرَ
لَوْ كُنْهُمْ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ۝

1 अर्थात् उन को मुसलमान कर के तुम्हारा दीनी भाई बना दे और फिर ऐसा ही हुआ कि मक्का की विजय के बाद लोग तेजी के साथ मुसलमान होना आरंभ हो गये। और जो पुरानी दुश्मनी थी वह प्रेम में बदल गई।

2 इस आयत में सभी मनुष्यों के साथ अच्छे व्यवहार तथा न्याय करने की मूल शिक्षा दी गई है। उन के सिवा जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध करते हों और मुसलमानों से बैर रखते हों।

10. हे ईमान वाले! जब तुम्हारे पास मुसलमान स्त्रियाँ हिजरत कर के आयें तो उन की परीक्षा ले लिया करो। अल्लाह अधिक जानता है उन के ईमान को फिर यदि तुम्हें यह जान हो जाये कि वह ईमान वालीयाँ हैं तो उन्हें वापिस न करो।¹ काफिरों की ओर। न वे औरतों हलाल (वैध) हैं उन के लिये और न वे काफिर हलाल (वैध) हैं उन औरतों के लिये।² और चुका दो उन काफिरों को जो उन्होंने खर्च किया हो। तथा तुम पर कोई दोष नहीं है कि विवाह कर लो उन से जब दे दो उन को उन का महर (स्त्री उपहार)। तथा न रखो काफिर स्त्रियों को अपने विवाह में, तथा माँग लो जो तुम ने खर्च किया हो। और चाहिये कि वह काफिर माँग लें जो उन्होंने खर्च किया हो। यह अल्लाह का आदेश है, वह निर्णय कर रहा है तुम्हारे बीच, तथा अल्लाह सब जानने वाला गुणी है।

11. और यदि तुम्हारे हाथ से निकल जाये तुम्हारी कोई पत्नी काफिरों की ओर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ
فَأَمْتَحِنُوهُنَّ لَعَلَّكُمْ تَرِيضُنَّ لَهُنَّ قُلُوبَ
عِلْمُهُنَّ فَمَنْ مَوَدَّتْ فَلَا تَجْعَلُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ
لَأَمِّنَ جِلَّ لِلَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا لَئِنْ
أَنْفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ يَنْفَقُوا
وَلَا تُؤْمِنُوا بِالْكَافِرِينَ وَلَا تَتَزَوَّجُوا
بِهِمْ وَلَا يَتَزَوَّجُوا بِكُمُ الْمُؤْمِنُونَ
مَا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ أَنْ تَنْفَقُوا
وَبِكُمْ حَزَنٌ لِمَا أَنْفَقْتُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٥

وَلَنْ تَكُونُوا مِنْ أَرْوَاحِكُمْ إِلَى الْكَلْبِ

- 1 इस आयत में यह आदेश दिया जा रहा है कि जो स्त्री इमान ला कर मदीना हिजरत कर के आ जाये उसे काफिरों को वापिस न करो। यदि वह काफिर की पत्नी रही है तो उस के पती को जो स्त्री उपहार (महर) उस ने दिया हो उसे दे दो। और उन से विवाह कर लो। और अपने विवाह का महर भी उस स्त्री को दो, ऐसे ही जो काफिर स्त्री किसी मुसलमान के विवाह में हो अब उस का विवाह उस के साथ अवैध है। इसलिये वह मक्का जा कर किसी काफिर से विवाह करे तो उस के पती से जो स्त्री उपहार तुम ने उसे दिया है माँग लो
- 2 अर्थात् अब मुसलमान स्त्री का विवाह काफिर के साथ, तथा काफिर स्त्री का मुसलमान के साथ अवैध (हराम) कर दिया गया है।

हैं आखिरत¹ (परलोक) में उसी प्रकार
जैसे काफिर समाधियों में पड़े हुये
लोगों (के जीवित होने) से निराश हैं

1 आखिरत से निराश होने का अर्थ उस का इन्कार है जैसे उन्हें मरने के पश्चात् जीवन का इन्कार है।

सूरह सफ़फ़ - 61

سُورَةُ الصَّفِّ

सूरह सफ़फ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है इस में 14 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 4 में ((सफ़फ़)) शब्द आया है जिस का अर्थ पंक्ति है। उसी से यह नाम लिया गया है। और प्रथम आयत में आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ के अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता का गुण गान करने) की चर्चा की गई है। फिर मुसलमानों पर जो अपनी बात के अनुसार कर्म नहीं करते और वचन भंग करते हैं उन की निन्दा है। तथा उन की सराहना है जो मिल कर अल्लाह की राह में संघर्ष करते और अपना वचन पूरा करते हैं।
- आयत 5 और 6 में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि यहूदियों की नीति पर न चले जिन्होंने न भूमा (अलैहिससलाम) को दुःख दिया। और कुरीति अपनाई जिस से उन के दिल टूटें हो गये। फिर उन्होंने अपने सभी रसूलों का इन्कार किया जो खुली निशानियाँ लाये।
- इस में इस्लाम के विरोधियों को सावधान करने हुये बताया गया है कि अल्लाह अपना प्रकाश पूरा करेगा और उस का धर्म सभी धर्मों पर प्रभुत्वशाली होगा। काफ़िरों और मुश्रिकों को कितना ही बुरा क्यों न लगे।
- मुसलमानों को ईमान की माँग पूरी करने तथा जिहाद करने का आदेश देते हुये परलोक में उस के प्रतिफल तथा संसार में सहायता और विजय की शुभ सूचना दी गई है।
- ईसा (अलैहिससलाम) के साधियों का उदाहरण दे कर अल्लाह के धर्म की सहायता करने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्त्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अल्लाह की पवित्रता का गान करती है जो वस्तु आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

سُبْحَانَكَ يَا السَّمُوتُ وَيَا الْأَرْضُ
وَيَا الْعَرْشَ الْعَظِيمَ

2. हे ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं।
3. अत्यंत अप्रिय है अब्राह को तुम्हारी वह बात कहना जिसे तुम (स्वयं) करते नहीं।
4. निःसंदेह अब्राह प्रेम करना है उन से जो युद्ध करते हैं उस की राह में पक्त्वन्द हो कर जैसे कि वह सीसा पिलायी दीवार हों।
5. तथा याद करो जब कहा मूसा ने अपनी जाति से हे मेरे समुदाय! तुम क्यों दुःख देते हो मुझ को जब कि तुम जानते हो कि मैं अब्राह का रसूल हूँ तुम्हारी ओर? फिर जब वह टेढ़े हो रह गये तो टेढ़े कर दिये अब्राह ने उन के दिन और अब्राह समार्ग नहीं दिखाता उल्लघनकारियों को।
6. तथा याद करो जब कहा, मर्यम के पुत्र ईसा ने: हे इस्राईल की संतान! मैं तुम्हारी अरि रसूल हूँ, और पुष्टि करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से पूर्व आयी है। तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ एक रसूल की जो आयेगा मेरे पश्चात् जिस का नाम अहमद है। फिर जब वह आ गये उन के पास खुले प्रमाणों को ले कर तो उन्होंने कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
7. और उस से अधिक अन्याचारी कौन होगा जो झूठ घड़े अब्राह पर जब कि वह बुलाया जा रहा हो इस्लाम

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ۚ

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ۚ

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًا
كَانَ لَهُمْ بَيْتَانِ مَرْسُوحٌ ۚ

وَرَدَّ قَالَ مُوسَى يَقَوْمِي يَقَوْمِي تَوَدُّونِي وَقَدْ
تَصَلَّيْتُمْ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا دَخَلْتُمْ
الْبَيْتَ قُلْتُمْ هَذَا لِلَّهِ لَا لِلنَّبِيِّ ۚ

فَلَمَّا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ
اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ
وَمُبَشِّرًا بِمَرْسُومِي يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ
فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ الْوَاهِدَةِ جَعَلُوهُمْ رِجْسًا ۚ

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ فُتِنَ عَلَى اللَّهِ الْغَيْبُ وَهُوَ يُدْعَى
إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۚ

की ओर। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारी जाति को।

8. वह चाहते हैं कि बुझा दे अल्लाह के प्रकाश को अपने मुखों में। तथा अल्लाह पूरा करने वाला है अपने प्रकाश को, यद्यपि बुरा लगे काफिरों को।
9. वही है जिस ने भेजा है अपने रसूल को समार्ग तथा मन्धर्म के साथ ताकि प्रभावित कर दे उसे प्रत्येक धर्म पर चाहे बुरा लगे मुश्रिकों को।
10. हे ईमान वाले! क्या मैं बता दूँ तुम्हें ऐसा व्यापार जो बचा ले तुम को दुखदायी यातना से?
11. तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से यही तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।
12. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और प्रवेश देगा तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरें तथा स्वच्छ घरों में स्थायी स्वर्गों में। यही बड़ी सफलता है।
13. और एक अन्य (प्रदान) जिस से तुम प्रेम करने हो। वह अल्लाह की सहायता तथा शीघ्र विजय है। तथा शुभसूचना सुना दो ईमान वालों को।
14. हे ईमान वाले! तुम बन जाओ अल्लाह (के धर्म) के सहायक जैसे मरयम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था कि कौन मेरा सहायक है

يُرِيدُونَ لِيُظْلَمُوا بِالنُّورِ الَّذِي هُوَ مِنَ اللَّهِ مُبِينٌ لِلنُّورِ
وَلَا يُرِيدُ الْكَافِرِينَ ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَنُورٍ كَبِيرٍ
عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَا يُرِيدُ الْمُشْرِكُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى مَعْرَظٍ يُجَنِّبُكُمْ
عَنِ عَذَابِ آلِ فِرْعَوْنَ ۝

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝

يُعْطِيكَ لَكُمْ دُولَكُمْ وَيُدْخِلُكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ
ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

وَأُخْرَى يُحِبُّونَهَا تَصَدَّقُونَ بِاللَّهِ وَخَلُوعًا يُرِيدُونَ
وَفِيهِمُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَصْدَاقَ اللَّهِ وَلَمْ يَكُنْ لِي صِدْقٌ
إِنَّ مَرْيَمَ إِتَمَّهَا وَمَنْ أَتَصَدَّقُ إِلَى اللَّهِ قَالَ
الْمُؤْمِنُونَ هُوَ أَصْدَقُ اللَّهِ فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ

अब्राह (के धर्म के प्रचार में)। ता
हवारियों ने कहा: हम हैं अब्राह के
(धर्म के) सहायक। तो ईमान लाया
ईसाईलियों का एक समूह और
कुफ़ किया दूसरे समूह ने। तो हम
ने समर्थन दिया उन को जो ईमान
लाये उन के शत्रु के विरुद्ध, तो वही
विजयी रहे

إِسْرَآءِیلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ
آمَنُوا عَلَى عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ



सूरह जुमुआ - 62

سُورَةُ الْجُمُعَةِ

सूरह जुमुआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 11 आयते हैं।

- इस की आयत 9 में जुमुआ का महत्व बताया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह जुमुआ है।
- इस की आरंभिक आयत में अब्राह की तस्वीह (पवित्रता) और उस के गुणों का वर्णन है।
- इस में अब्राह के अनुग्रह को बताया गया है कि उस ने उम्मियों (अर्बों) में एक रसूल भेजा है और यहूदियों के कुकर्म और निर्मूल दावों पर पकड़ की गई है।
- मुसलमानों को जुमुआ की नमाज का पालन करने पर बल दिया गया है।
- हदीस में है कि उत्तम दिन जिस में सूर्य निकलता है जुमुआ का दिन है उसी में आदम (अलैहिस्सलाम) पैदा किये गये। उसी दिन स्वर्ग में रखे गये और उसी दिन स्वर्ग से निकाले गये। तथा प्रलय भी इसी दिन आयेगी। (सहीह मुस्लिम: 854) एक दूसरी हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: लोग जुमुआ छोड़ने में रुक जायें अन्यथा अब्राह उन के दिलों पर मुहर लगा देगा। (सहीह मुस्लिम: 856)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ की नमाज में यह सूरह और सूरह मुनाफिकून पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिम: 877)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अब्राह की पवित्रता का वर्णन करती है वह सब चीजें जो आकाशों तथा धरती में हैं। जो अधिपति, अनि पवित्र, प्रभावशाली गुणी (दक्ष) है।

يَسْبُغُهُ اللَّهُ بِآبِ السَّمُوتِ وَآبِ الْأَرْضِ الْحَيِّ
الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

2. वही है जिम ने निरक्षरों¹ में एक रसूल भेजा उन्ही में से। जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतें और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक (कुरआन) तथा तन्वदर्शिता (सुन्नत²) की। यद्यपि वह इस से पूर्व खुले कुपथ में थे।
3. तथा दूसरों के लिये भी उन में से जो अभी उन से नहीं³ मिले हैं। वह अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।
4. यह⁴ अल्लाह का अनुग्रह है जिसे वह प्रदान करता है उस के लिये जिस के लिये वह चाहता है। और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।
5. उन की दशा जिन पर तौरात का भार रखा गया फिर तदानुसार कर्म

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِسَابَ ۚ وَهُوَ الَّذِي كَانَ ثَوَابُ الْإِيمَانِ أَكْبَرَ ثَوَابِ الْإِيمَانِ ۚ

وَالَّذِينَ مِنْهُمْ لَا يُلَاحِظُونَ دِينَهُ ۚ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

وَالَّذِينَ قَسَتْ أَيْمَانُهُمْ يَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَالَّذِينَ قَسَتْ أَيْمَانُهُمْ سَأَلَنَاهُمْ أَتَزْكِيهِمْ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

مَثَلُ الَّذِينَ ابْتْعَيْنَا فَتْنَاهُمْ وَلَمْ يُخْلِقْنَا لَهُمْ لَقَدْ عَلِمْتُمْ لِيَوْمِئَذٍ ۝

- 1 अनभिज्ञों से अभिप्राय अरब है। अर्थात् जो अहले किनाब नहीं है। भावार्थ यह है कि पहले रसूल इस्राइल की संतति में आते रहे। और अब अन्तिम रसूल इसमाइल की संतति में आया है। जो अल्लाह की पुस्तक कुरआन पढ़ कर सुनाते हैं यह केवल अरबों के नहीं पुरे मनुष्य जाति के नहीं है।
- 2 सुन्नत जिस के लिये हिकमत शब्द आया है उस से अभिप्राय साधारण परिभाषा में नहीं (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस अर्थात् आप का कथन और कर्म इत्यादि है।
- 3 अर्थात् आप अरब के सिवा प्रलय तक के लिये पूरे मानव संसार के लिये भी रसूल बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया गया कि वह कौन है तो आप ने अपना हाथ सल्मान फारसी के ऊपर रख दिया। और कहा यदि इमान मुरघ्या (आकाश के कुछ तारों का नाम) के पास भी हो तो कुछ लोग उस को वहाँ से भी प्राप्त कर लेंगे। (सहीह बुखारी: 4897)
- 4 अर्थात् आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अरबों तथा पूरे मानव संसार के लिये रसूल बनाना।

नहीं किया उस गधे के समान है जिस के ऊपर पुस्तकें¹ लदी हुई हों। बुरा है उस जाति का उदाहरण जिन्होंने झुठला दिया अल्लाह की आयतों को! और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारियों को।

6. आप कह दें कि हे यहूदियों! यदि तुम समझते हो कि तुम्हीं अल्लाह के मित्र हो अन्य लोगों के अतिरिक्त, तो कामना करो मरण की यदि तुम सच्चे² हो।

7. तथा वह अपने किये हुये कर्तूतों के कारण कदापि उस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह भली-भाँति अवगत है अत्याचारियों से।

8. आप कह दें कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह अवश्य तुम से मिल कर रहेगी। फिर तुम अवश्य फेर दिये जाओगे परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्येक (खुले) के ज्ञानी की ओर। फिर वह तुम को सूचित कर देगा उस से जो तुम करते रहे।³

9. हे ईमान वालों! जब अजान दी जाये नमाज के लिये जुमुआ के दिन तो

الْحَصَادِ عَجِيلٌ سَعَادًا يَسَّرَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ وَآيَاتِهِ لَا تَعْدُو الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ٥

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادَوْا زُرْنَا وَلَكُمْ لَوْلِيَاءُ يَوْمَ
مِنْ دُونِ لَنَا إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ لَنَا
صِدْقَيْنِ ٦

وَلَا يَمْنُونَهُ إِلَّا آيَاتُنَا فَأَمَّتْ آيَاتُهُمْ
وَأَنَّهُ جَبِينٌ بِالْغُلِيِّينَ

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقٍ
لَكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِزِّ الْقَيْئَمِ وَأَنَّكُمْ تَسْمَعُونَ
بِهِ ٧

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ بِالصَّلَاةِ فَاصْبِرُوا مِنْ تَوْبِهِ

1 अर्थात् जैस गधे का अपने ऊपर लदी हुई पुस्तकों का ज्ञान नहीं होता कि उन में क्या लिखा है वैसे ही यह यहूदी तौरात के आदेशानुसार कर्म न कर के गधे के समान हो गये हैं।

2 यहूदियों का दावा था कि वही अल्लाह के प्रियवर हैं। (देखिये मूरह बकरा आयत: 111 तथा मूरह माइदा आयत: 18) इसलिये कहा जा रहा है कि स्वर्ग में पहुँचने के लिये मौत की कामना करो।

3 अर्थात् तुम्हारे दुष्कर्मा के परिणाम से।

दौड़¹ जाओ अल्लाह की याद की ओर
तथा त्याग दो क्रय विक्रय।² यह
उत्तम है तुम्हारे लिये यदि तुम जानो।

اجْمَعُوا قَسَمَؤَالِي دُرَالِه وَدُرَالِيبَع
ذِكْرُ حَيْزِ الْوَرَانِ لَسْتُمْ تَعْتَمِدُونَ

10. फिर जब नमाज हो जाये तो फैल
जाओ धरती में। तथा खोज करो
अल्लाह के अनुग्रह की तथा वर्णन
करते रहो अल्लाह का अत्यधिक ताकि
तुम सफल हो जाओ।

وَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا
مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

11. और जब वह देख लेते हैं कोई
व्यापार अथवा खेल तो उस की ओर
दौड़ पड़ते हैं।³ तथा आप को छोड़
देते हैं खडे। आप कह दें कि जो कुछ
अल्लाह के पास है वह उत्तम है खेल
तथा व्यापार से। और अल्लाह सर्वोत्तम
जीविका प्रदान करने वाला है।

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا مُنْصَرَفِينَ إِلَىٰ ذَٰلِكَ
فَأُولَٰئِكَ مَأْجِدًا لِلَّهِ حَيْزُ الْوَرَانِ لَسْتُمْ
تَعْتَمِدُونَ

- 1 अर्थ यह है कि जुमुआ की अजान हो जाये तो अपने सारे कारोबार बंद कर के
जुमुआ का खुत्बा सुनने, और जुमुआ की नमाज पढ़ने के लिये चल पड़ो।
2 इस से आभ्रप्राय संसारिक कारोबार है।
3 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ का खुत्बा (भाषण)
दे रहे थे कि एक कारवां गम्ला लेकर आ गया। और सब लोग उस की ओर
दौड़ पड़े वारह व्यक्ति ही आप के साथ रह गया। उसी पर अल्लाह ने यह आयत
उतारी (सहीह बुखारी: 4899)

सूरह मुनाफिकून - 63

سُورَةُ الْمُنَافِقِينَ

सूरह मुनाफिकून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है इस में 11 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है।
- इस में मुनाफिकों के उस दुर्यवहार का वर्णन है जो उन्होंने इस्लाम के विरोध में अपना रखा था जिस के कारण वह अक्षम्य अपराध के दोषी बन गये।
- आयत 9 से 11 तक में इमान वालों को संबोधित कर के अल्लाह का स्मरण (याद) करने तथा उस की राह में दान करने पर बल दिया गया है। जिस से निफाक (द्विधा) के रोग का पता भी लगता है। और उसे दूर करने का उपाय भी सामने आ जाता है।
- हदीस में है कि मुनाफिक के लक्षण तीन हैं: जब वह दान करे तो झूठ बोले। और जब वादा करे तो मुकर जाये। और जब उस के पास अमानत रखी जाये तो उस में छयानत (विश्वासघात) करे। (सहीह बुखारी: 33, सहीह मुस्लिम: 59)
- दूसरी हदीस में एक चौथा लक्षण यह बताया गया है कि जब वह झगड़ा करे तो गाली दे। (सहीह बुखारी: 34, तथा सहीह मुस्लिम: 58)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आने है आप के पास मुनाफिक तो कहते है कि हम साक्ष्य (गवाही) देते है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल है। तथा अल्लाह जानता है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल है। और अल्लाह गवाही देता है कि

وَأَشَٰهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ
وَأَنَّ اللَّهَ تَعَالَىٰ أَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ
كَذِبُونَ ۝

मुनाफिक निश्चय झूठे¹ हैं।

2. उन्होंने बना रखा है अपनी शपथों को एक ढाल और रुक गये अब्राह की राह से। वास्तव में वह बड़ा दुष्कर्म कर रहे हैं।
3. यह सब कुछ इस कारण है कि वे ईमान लाये फिर कुफ्र कर गये तो मुहर लगा दी अब्राह ने उन के दिलों पर, अतः वह समझते नहीं।
4. और यदि आप उन्हें देखें तो आप को भा जायें उन के शरीर। और यदि वह धान करें तो आप मृनने लगे उन की खात, जैसे कि वह लकड़ियाँ हों दीवार के सहारे लगाई² हुई। वह प्रत्येक कड़ी ध्वनी को अपने विरुद्ध³ समझते हैं। वही शत्रु है, आप उन से सावधान रहें। अब्राह उन को नाश करे वह किधर फिर जा रहे हैं।

إِنَّمَا لَهُمْ آيَاتُهُمْ نَجْوَىٰ مُنَافِقِيٍّ فَصَادُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
إِنَّهُمْ سَاءُ مَا كَانُوا يَعْلَمُونَ

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطَغَىٰ عَنْ قُلُوبِهِمْ نَجْوَىٰ
لِلْمُنَافِقِينَ

وَلَا أَرَأَيْتُمْ أَنَّهُمْ تَجْمَعُونَ ابْتِغَاءَ مَوَدَّةٍ فَإِنْ تَقُولُوا
لَهُمْ جَهَنَّمَ كَأَنَّهُمْ هَشْبٌ مِّنَ الشَّجَرِ فَقَدْ أُفْتِرَ فِي كُلِّ صِغَرَةٍ
مِّنْهُمْ شَرٌّ عَظِيمٌ وَمَا كُنْتُمْ بِأَعْيُنِنَا قَدْ كَانَتْهُمْ آيَاتٌ لِّئَلَّا يُؤْمِنُوا

- 1 आदरणीय जैद पुत्र अर्कम (राजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक युद्ध में मैं ने (मुनाफिकों के प्रमुख) अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को कहते हुये सुना कि उन पर खर्च न करो जो अब्राह के रसूल के पास हैं। यहाँ तक कि वह बिखर जायें आप के आस-पास से। और यदि हम मदीना वापिस गये तो हम सम्मानित उस से अपमानित (इस से अभिप्राय वह मुसलमानों को ले रहे थे) को अवश्य निकाल दैंगे। मैं ने अपने चाचा को यह बात बता दी। और उन्होंने नची (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बना दी। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को बुलाया। उस ने और उस के साथियों ने शपथ ले ली कि उन्होंने यह बात नहीं कही है। इस कारण आप ने मुझे (अर्थात् जैद पुत्र अर्कम) झूठा समझ लिया। जिस पर मुझे बड़ा शोक हुआ। और मैं घर में रहने लगा। फिर अब्राह ने यह सूरह उतारी तो आप ने मुझे बुला कर सुनायी। और कहा कि हे जैद। अब्राह ने तुम्हें सच्चा सिद्ध कर दिया है। (सहीह बुखारी: 4900)
- 2 जो देखने में सुन्दर परन्तु निर्बोध होती है।
- 3 अर्थात् प्रत्येक समय उन्हें धड़का लगा रहना है कि उन के अपराध खुल न जायें।

5. जब उन से कहा जाता है कि आओ, ताकि क्षमा की प्रार्थना करें तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल, तो मोड़ लने हैं अपने सिर। तथा आप उन्हें देखते हैं कि वह रुक जाते हैं अभिमान (घमंड) करते हुये।

وَلَا يَمِيزُ لَهُمْ تَعَالَى بَيْنَ الْمُتَعِمِّقِينَ وَالْمُؤْمِنِينَ
وَهُمْ يَنْتَوُونَ عَنْ رُسُلِهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْسِدُونَ ۝

6. हे नबी! उन के समीप समान है कि आप क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अथवा क्षमा की प्रार्थना न करें उन के लिये। कदापि नहीं क्षमा करेगा अल्लाह उन को। वास्तव में अल्लाह स्पष्ट नहीं दिखाना है अवैज्ञाकारियों को।

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ
يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

7. यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि मन खर्च करो उन पर जो अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं ताकि वह बिखर जायें। जब कि अल्लाह ही के अधिकार में है आकाशों तथा धरती के सभी कोष (खजाने)। परन्तु मुनाफिक समझते नहीं हैं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَالِ مَنْ جَاءَ مِنْكُمْ رَسُولٌ
بِأَمْرِ اللَّهِ حَتَّى يَنْفَضُوا وَيَلْبِسُوا عُرَى السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
وَالَّذِينَ السَّيِّئِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

8. वे कहते हैं कि यदि हम वापिस पहुंच गये मदीना तक तो निकाल देगा सम्मानित उस से अपमानित को। जब कि अल्लाह ही के लिये सम्मान है एवं उस के रसूल तथा ईमान वालों के लिये परन्तु मुनाफिक जानते नहीं।

يَقُولُونَ لَوْ كُنَّا رُحَمَاءَ إِلَى الْمَدِينَةِ لَخُيِّرَ مِنَ الْأَعْرَى
مِنْهَا الْأَذَلُّ وَلَئِنَّ الْغِزَّةَ وَالْحَنُوكَةَ وَالْمُؤْمِنِينَ
وَالَّذِينَ السَّيِّئِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

9. हे ईमान वाले! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) में। और जो ऐसा करेंगे वही क्षति ग्रस्त हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ
عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الضَّالُّونَ ۝

1. सम्मानित मुनाफिकों के मुख्या अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य ने स्वयं को, तथा अपमानित रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कहा था।

10. तथा दान करो उस में से जो प्रदान किया है हम ने तुम को, इस से पूर्व कि आ जाये तुम में से किसी के मरण का¹ समय, तो कहे कि मेरे पालनहार। क्यों नहीं अवसर दे दिया मुझ को कुछ समय का। तार्कि मैं दान करता तथा सदाचारियों में हो जाता।
11. और कदापि अवसर नहीं देता अल्लाह किसी प्राणी को जब आ जाये उस का निर्धारित समय। और अल्लाह भली भाँति सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقْتُ وَأَكُن مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١٠﴾

وَلَكِنْ يُؤَخِّرُ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِتَعْمَلِينَ ﴿١١﴾

1 हदीस में है कि मनुष्य का वास्तविक धन वही है जिस को वह इस संसार में दान कर जाये। और जिसे वह छोड़ जाये तो वह उस का नहीं बल्कि उस के वारिस का धन है। (सहीह बुखारी: 6442)

सूरह तगावुन - 64

سُورَةُ التَّوْبَةِ

सूरह तगावुन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदर्नी है इस में 18 आयत हैं।

- इस का नाम इस की आयत 9 में ((तगावुन)) शब्द से लिया गया है। इस में अल्लाह का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व की रचना सत्य के साथ हुई है। तथा नबूवन और परमनोक के इन्कार के परिणाम से सावधान किया गया है। और इमान लाने का आदेश दे कर हानि के दिन से सतर्क किया गया है। और इमान तथा इन्कार दोनों का अन्त बताया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में समझाया गया है कि संसारिक जीवन के भय से अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन से मूंह न फेरना अन्यथा इस का अन्त विनाश कारी होगा।
- इस की आयत 14 से 18 तक में इमान वालों को अपनी पत्नियों और संतान की ओर से सावधान रहने का निर्देश दिया गया है कि वह उन्हें कुपथ न कर दें। और धन तथा संतान के मोह में परमनोक से अचेत न हो जायें। और जितना हो सके अल्लाह से डरते रहें। और अल्लाह की राह में दान करते रहें।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता वर्णन करती है प्रत्येक चीज जो आकाशों में है तथा जो धरती में है। उसी का राज्य है, और उसी के लिये प्रशंसा है। तथा वह जो चाहे कर सकता है।

يَسْجُدُ لَهُ سَائِرُ السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ
الْمُلْكُ وَلَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١

2. वही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, तो तुम में से कुछ काफिर हैं, और तुम में से कोई इमान वाला है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करने हो

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَرْجِعْكُمْ إِلَى اللَّهِ ۚ إِنَّكُمْ
لِأَعْمَالَكُمْ لَبِيسٌ ٢

उसे देख रहा है।¹

3. उस ने उत्पन्न किया आकाशों तथा धरती को सत्य के साथ, तथा रूप बनाया तुम्हारा तो सुन्दर बनाया तुम्हारा रूप, और उसी की ओर फिर कर जाना है।²

4. वह जानता है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है और जानता है जो तुम मन में रखते हो और जो बोलते हो। तथा अल्लाह भली-भाँति अवगत है दिलों के भेदों से।

5. क्या नहीं आई तुम्हारे पास उन की सूचना जिन्होंने कुफ़ किया इस से पूर्व? तो उन्होंने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।³

6. यह इस लिये कि आते रहे उन के पास उन के रसूल खुन्नी निशानियाँ ले कर। तो उन्होंने कहा: क्या कोई मनुष्य हमें मार्ग दर्शन⁴ देगा? अतः उन्होंने कुफ़ किया। तथा मुँह फेर लिया और अल्लाह (भी उन से) निश्चिन्त हो गया तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَنْتُمْ
صُورَكُمْ فَمِنْ أَتَيْهِ الْمَصِيرُ ۝

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُكْرِمُونَ وَمَا تُكْفِرُونَ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الْصُّدُورِ ۝

لَمْ يَأْتِكُمْ نَبُوءُ الْكَافِرِينَ قُرْآنٌ مِنْ قَبْلُ مَا أَتَوْا
وَبِالْآيَاتِ أَكْرِمَهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

ذَلِكَ يَأْتِيهِ كَانَتْ تُؤْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
فَقَالُوا بَشَرٌ مِثْلُنا فَكُفَرُوا وَتَوَلَّوْا وَكُفَرُوا
اللَّهُ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَمِيدٌ ۝

1 देखने का अर्थ कर्मों के अनुसार बदला देना है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल पाने के लिये।

3 अर्थात् परलोक में नरक की यातना है।

4 अर्थात् रसूल मनुष्य कैसे हो सकता है। यह कितनी विचित्र बात है कि पत्थर की मूर्तियों को तो पूज्य बना लिया जाये इसी प्रकार मनुष्य को अल्लाह का अवतार और पुत्र बना लिया जाये, पर यदि रसूल सत्य सं कर आये तो उसे न माना जाये। इस का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य कुपथ करे तो यह मान्य है, और यदि वह सीधी राह दिखाये तो मान्य नहीं।

7. समझ रखा है काफ़िरो ने कि वह कदापि फिर जीवित नहीं किये जायेंगे। आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ। तुम अवश्य जीवित किये जाओगे। फिर तुम्हें बताया जायेगा कि तुम ने (संसार में) क्या किया है। तथा यह अब्राहम पर अति सरल है।

8. अतः तुम इमान लाओ अब्राहम तथा उस के रसूल¹ पर। तथा उस नूर (ज्योति²) पर जिसे हम ने उतारा है। तथा अब्राहम उस से जो तुम करते हो भली-भौति सूचित है।

9. जिस दिन वह तुम को एकत्र करेगा एकत्र किये जाने वाले दिन। तो वह क्षति (हानि) के खून जाने³ का दिन होगा। और जो इमान लाया अब्राहम पर तथा सदाचार करता है तो वह क्षमा कर देगा उस के दोषों को, और प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्ग में बहती होंगी जिन में नहरें वह सदावासी होंगे उन में। यही बड़ी सफलता है।

10. और जिन लोगों ने कुफ़ किया और झुठलाया हमारी आयतों (निशानियों) को तो वही नारकी है जो सदावासी होंगे उस (नरक) में। तथा वह बुरा ठिकाना है।

رَعِمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُخْبِتُوا قُلْ
بَلْ وَرَبِّي لَجِبْتُ لَكُمْ تَوْبَةً مِمَّا
عَمِلْتُمْ وَدَيْتُ عَلَى اللَّهِ نَيْسِرًا

فَأَمْسُوا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الَّذِي أُنْزِلَتْ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ لِلْجَنَّةِ ذَلِكَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ وَمَنْ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يَكْفُرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيَدْخُلْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ حُلِيِّينَ
فِيهَا أَنْهَارُ عَذْرَاءٍ تَعْمَلُونَ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
خَالِدِينَ فِيهَا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُصْذَرُونَ

1 इस से अभिप्राय अन्तिम रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है।

2 ज्योति से अभिप्राय अन्तिम इंस वानी कुआन है।

3 अर्थात् काफ़िरो के लिये जिन्होंने अब्राहम की आज्ञा का पालन नहीं किया।

11. जो आपदा आती है वह अल्लाह ही की अनुमति से आती है। तथा जो अल्लाह पर ईमान^[1] लाये तो वह मार्ग दर्शन देता^[2] है उस के दिल को। तथा अल्लाह प्रत्येक चीज को जानता है।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ
بِاللَّهِ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۝

12. तथा आज्ञा का पालन करो अल्लाह की तथा आज्ञा का पालन करो उस के रसूल की। फिर यदि तुम विमुख हुये तो हमारे रसूल का दायित्व केवल खुले रूप से (उपदेश) पहुँचा देना है।

وَأطيعوا اللَّهَ وَأطيعوا الرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا عَلَى الرَّسُولِ مِنْ شَيْءٍ ۝

13. अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई वंदनीय (सच्चा पूज्य) नहीं है। अतः अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये ईमान वालों को।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

14. हे लोगो जो ईमान लाये हो! वास्तव में तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा संतान तुम्हारी शत्रु^[3] हैं। अतः उन से सावधान रहो। और यदि तुम क्षमा से काम लो तथा सुधार करो और क्षमा कर दो तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ
عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ إِنَّكُمْ تَصِفُونَ
وَتَقْتُمُونَ ۝

15. तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान तो तुम्हारे लिये एक परीक्षा है।

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ جَعَلَهُ

1 अर्थ यह है कि जो व्यक्ति आपदा को यह समझ कर सहन करता है कि अल्लाह ने यही उस के भाग्य में लिखा है।

2 हदीस में है कि ईमान वाले की दशा विभिन्न होती है। और उस की दशा उत्तम ही होती है। जब उसे सुख मिले तो कृतज्ञ होता है। और दुख हो तो सहन करता है और यह उस के लिये उत्तम है। (मुस्लिम: 2999)

3 अर्थात् जो तुम्हें सदाचार एवं अल्लाह के आज्ञापालन से रोकते हों फिर भी उन का सुधार करने और क्षमा करने का निर्देश दिया गया है।

तथा अब्राह के पास बड़ा प्रतिफल¹¹
(बदला) है।

أَحْرَعُ عَلَيْهِ

16. तो अब्राह से डरते रहो जितना
तुम से हो सके तथा सुनो और
आज्ञा पालन करो और दान करो। यह
उत्तम है तुम्हारे लिये। और जो बचा
लिया गया अपने मन की कंजूसी से
तो वही सफल होने वाले हैं।

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا
رَأْسَ الْوَحْيِ وَالْإِنشَاءِ وَمَنْ يُؤْتِ شَيْئًا فَمِنْهُ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

17. यदि तुम अब्राह को उत्तम ऋण²¹
दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ा कर
देगा, और क्षमा कर देगा तुम्हें। और
अब्राह बड़ा गुणग्राही सहनशील है।

إِنْ تَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يَضْعِفَهُ لَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ اللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

18. वह परोक्ष और हाजिर का ज्ञान
रखने वाला है। वह अति प्रभावी तथा
गुणी है।

عَلِيمٌ لَّغَيْبٍ وَ الشَّهَادَةِ الْمُبِينُ ۝

1 भावार्थ यह है कि धन और संतान के मोह में अब्राह की अवैज्ञान न करो।

2 ऋण से अभिप्राय अब्राह की राह में दान करना है।

सूरह तलाक - 65

سورة الطلاق

सूरह तलाक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है इस में 12 आयत हैं।

- इस सूरह में तलाक के नियम और आदेश बताये गये हैं और मुसलमानों को चेतावनी दी गई है कि अल्लाह के आदेशों से मुंह न फेरे। और अवैज्ञाकारी जानियों के परिणाम को याद रखें। दूसरे शब्दों में इस्लाम के परिवारिक नियमों का पालन करें।
- 'इद्दत' उस निश्चित अवधि का नाम है जिस के भीतर स्त्री के लिये तलाक या पति की मौत के पश्चात् दूसरे से विवाह करना अवैध और वर्जित होता है। तलाक के मूल नियम सूरह बकरा तथा सूरह अहजाब में वर्णित हुये हैं। इस आयत में तलाक देने का समय बताया गया है कि तलाक ऐसे समय में दी जाये जब इद्दत का आरंभ हो सके। अर्थात् मासिक धर्म की स्थिति में तलाक न दी जाये। और मासिक धर्म से पवित्र होने पर संभोग न किया गया हो तब तलाक दी जाये। 'इद्दत के समय' से अभिप्राय यहाँ यही है। फिर यदि 'तलाक रजई' दी हो तो निर्धारित अवधि पूरी होने तक वह अपने पति के घर ही में रहेगी। परन्तु यदि व्यभिचार कर जाये तो उसे घर से निकाला जा सकता है। नई बात उत्पन्न करने का अर्थ यह है कि अवधि के भीतर पति अपनी पत्नी को वापिस कर ले जिसे 'रजअत' करना कहा जाता है। और यह बात 'रजई तलाक' में ही होती है अर्थात् जब एक या दो तलाक ही दी हों। इस में यह संकेत भी है कि यदि पति तीन तलाक दे चुका हो जिस के पश्चात् पति को रजअत का अधिकार नहीं होता तो पत्नी को भी उस के घर में रहने का अधिकार नहीं रह जाता। और न पति पर इस अवधि में उस के खाने-कपड़े का भार होता है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! जब तुम लोग तलाक दो
अपनी पत्नियों को तो उन्हें तलाक

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ مِنْ إِعْدَتِهِنَّ

दो उन की 'इद्दत' के लिये, और गणना करो 'इद्दत' की। तथा डरो अपने पालनहार, अल्लाह से। और न निकालो उन को उन के घरों से और न वह स्वयं निकले परन्तु यह कि वह कोई खुली बुराई कर जायें। तथा यह अल्लाह की सीमायें हैं। और जो उल्लंघन करेगा अल्लाह की सीमाओं का तो उस ने अन्याचार कर लिया अपने ऊपर। तुम नहीं जानते संभवतः अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात्।

2. फिर जब पहुँचने लगें अपने निर्धारित अवधि को तो उन्हें रोक लो नियमानुसार अथवा अलग कर दो नियमानुसार।⁽¹⁾ और गवाह (माक्षी) बनालो⁽²⁾ अपने में से दो न्यायकारियों को। तथा सीधी गवाही दो अल्लाह के।⁽³⁾ लियो। इस की शिक्षा दी जा रही है उसे जो ईमान रखता हो अल्लाह तथा अन्त-दिवस (प्रलय) पर। और जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय।
- 3 और उस को जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो। तथा जो अल्लाह पर निर्भर रहेगा तो वही उसे पर्याप्त है। निश्चय अल्लाह अपना कार्य पूरा कर

وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَأَتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمُ لَا تَخْرُجُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ وَلَا تَخْرُجُوا إِلَّا أَنْ تَأْتِيَكُمْ بِهَا بَشْرَةٌ تَقِينُ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ تَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهُ يُخَوِّضُ بَعْدَ ذَلِكَ أُمُورًا ۝

وَإِذَا بَلَغَ الْأِمْرَأَةُ أَهْلَ عَمَلٍ فَمِمَّا مَلَكَتْ يَمِينُهَا فَرَائِدُهَا وَلَا تُحْسِنُوا وَفَاءً يُؤْمِنُ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكَ يُوَفَّى الصَّادِقِينَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُسْتَقِيمُونَ ۝

وَيُؤْتِيهِمْ مِنْ فَتْحِ رَبِّكَ مِنْ سَبِيلٍ لَمْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

1 अर्थात् तलाक तथा रज्जत पर।

2 यदि एक या दो तलाक दी हो। (देखिये सूरह बकरा आयत: 229)

3 अर्थात् निष्पक्ष हो कर।

कें रहेगा।¹ अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है।

4. तथा जो निराश² हो जाती है मासिक धर्म से तुम्हारी स्त्रियों में से यदि तुम्हें संदेह हो तो उन की निर्धारित अवधि तीन मास है। तथा उन की जिन्हें मासिक धर्म न आता हो। और गर्भवती स्त्रियों की निर्धारित अवधि यह है कि प्रसव हो जाये। तथा जो अल्लाह से डरेगा वह उस के लिये उस का कार्य सफल कर देगा।

5. यह अल्लाह का आदेश है जिसे उतारा है तुम्हारी ओर 'अन' जो अल्लाह से डरेगा³ वह क्षमा कर देगा उस से उस के दोषों को तथा प्रदान करेगा उसे बड़ा प्रतिफल।

6. और उन को (निर्धारित अवधि में)

وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ مِنَ الْعَجَيزِ مِنْ فَتَاهُ يَرْجُونَ
فَوَيْدُ الْمَرْءِ أَنَّ يُبْتِغَىٰ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْلَا
الْأَحْزَالُ أَجْزَلُونَ لَئِنْ لَمْ يَنْصَرِفْ مِنْكُمْ فَرْجُ اللَّهِ
يَجْعَلْ لَهُ مِنْ بَرِّئِينَ ۝

ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ يُكْرَهُ وَمَنْ يَنْصَرِفْ مِنْكُمْ
فَإِنَّ اللَّهَ يَكْفُرُ عَنْهُ
بِمَا لَهُ مِنْ عَمَلٍ ۝

أَسْكُوتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ دُونِ الْكَلَامِ

- 1 अर्थात् जो दुःख तथा सुख भाग्य में अल्लाह ने लिखा है वह अपने समय में अवश्य पूरा होगा।

- 2 निश्चित अवधि से अभिप्राय वह अवधि है जिस के भीतर कोई स्त्री तलाक पाने के पश्चात् दूसरा विवाह नहीं कर सकती। और यह अवधि उस स्त्री के लिये जिसे दीर्घायु अथवा अल्पायु होने के कारण मासिक धर्म न आये तीन मास तथा गर्भवती के लिये प्रसव है। और मासिक धर्म आने की स्थिति में तीन मासिक धर्म पूरा होना है।

हदीस में है कि मुबैआ अमर्लाय्या (रजियल्लाहु अन्हा) के पति मारे गये तो वह गर्भवती थी। फिर चालीस दिन बाद उस ने शिशु जन्म दिया और जब उस की मंगती हुई तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे विवाह दिया। (सहीह बुखारी: 4909)

पति की मौत पर चार महीना दस दिन की अवधि उस के लिये है जो गर्भवती न हो (देखिये सूरह बकरा आयत: 226)

- 3 अर्थात् उस के आदेश का पालन करेगा।

रखो जहाँ तुम रहने हो अपनी शक्ति अनुसार। और उन्हें हानि न पहुँचाओ उन्हें तंग करने के लिये। और यदि वह गर्भवती हों तो उन पर खर्च करो यहाँ तक की प्रभव हो जाये। फिर यदि दूध पिलाये तुम्हारे (शिशु) लिये तो उन्हें उन का परिश्रामिक दो। और विचार विमर्श कर लो आपस में उचित रूप'। से। और यदि तुम दोनों में तनाव हो जाये तो दूध पिलायेगी उस को कोई दूसरी स्त्री।

7. चाहिये की सम्पन्न (सुखी) खर्च दे अपनी कमाई के अनुसार, और तंग हो जिम पर उस की जीविका तो चाहिये कि खर्च दे उस में से जो दिया है उस को अल्लाह ने। अल्लाह भार नहीं रखता किसी प्राणी पर परन्तु उतना ही जो उसे दिया है। शीघ्र ही कर देगा अल्लाह तंगी के पश्चात् सुविधा।
8. कितनी बस्तियों¹ थी जिन के वासियों ने अवैज्ञा की अपने पालनहार और उस के रसूलों के आदेश की, तो हम ने हिमाब ले लिया उन का कडा हिमाब, और उन्हें यातना दी बुरी यातना।
9. तो उस ने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम और उन का कार्य परिणाम विनाश ही रहा।
10. तय्यार कर रखी है अल्लाह ने उन

وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ وَإِنْ كُنَّ أُولَاهِ عَنكِ فَلْيُضَرَّوْا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَارْزُقُوهُنَّ لِكَبْوَرِهِنَّ وَأَنْ يَسْرُوا كَيْفَ تَرْضَوْنَ
تَعَايَرْتُمْ عَلَيْهِنَّ طَمَعًا لِّتُضَيِّقُوهُنَّ لِكَبْوَرِهِنَّ

لِيُؤْتِيَنَّكُمْ دُورَةً مِّنْ نَّعْمَةٍ مِّنْ قِبَلِكُمْ وَلِيُذَكِّرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَتَنَالُونَ
فَلْيُضَرَّوْا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَارْزُقُوهُنَّ لِكَبْوَرِهِنَّ وَأَنْ يَسْرُوا كَيْفَ تَرْضَوْنَ

وَكُلَّ إِنْسَانٍ مِّنْ فِرْيَةٍ مَّا عَمَّا لَزِمَتِهَا وَلَوْلَا رَحْمَةُ اللَّهِ لَفَسَدَتْ
وَمَا تَشَاءُونَ أَتَعْمَلُونَ

فَدَاقَتْ وَبَالَ أَنْفَرِهَا وَكَانَ حَاقِقَةً أَمْرَهَا حَقْرًا

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي

1 अर्थात् परिश्रामिक के विषय में।

2 यहाँ से अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान किया जा रहा है।

कें लिये भीषण यातना। अन अल्लाह से डरो, हे समझ वालो, जो ईमान लाये हो! निःसंदेह अल्लाह ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक शिक्षा।

11. (अर्थात्) एक रसूल¹ जो पढ़ कर सुनाते है तुम को अल्लाह की खुली आयते ताकि वह निकाले उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये अन्धकारों से प्रकाश की ओर। और जो ईमान लाये तथा सदाचार करेगा वह उसे प्रवेश देगा ऐसे स्वर्गों में प्रवाहित है जिन में नहरे, वह सदावामी होंगे उन में। अल्लाह ने उस के लिये उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।

12. अल्लाह वह है जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश तथा धरती में से उन्ही के समान। वह उतारता है आदेश उन के बीच, ताकि तुम विश्वास करो कि अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है। और यह को अल्लाह ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की पतिधि में।

الْكِتَابِ وَالَّذِينَ آمَنُوا قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا

رُسُلًا يَلِكُم مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُبَشِّرَاتٍ لِّتُحْيُوا
الْمَوْتَىٰ وَتُعْزِزُوا لِكُلِّ فِتْنَةٍ مِّنَ الْفِتَنِ
يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُونَ بِرُسُلِهِ جَنَّاتُ جَنَّةِ جَنَّةٍ
فِيهَا الْأَنْهَارُ جَارِيَةٌ فِيهَا الْيَتِيمَاتُ وَالْحَسَنَاتُ
لَهُ رِزْقًا

أَلَمْ يَكُنْ أَلَمْ يَكُنْ خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَفِي الْأَرْضِ مِمَّنْ
يَعْلَمُونَ الْأَرْضَ يَنْظُرُونَ إِلَى اللَّهِ فِي كُلِّ نَفْسٍ
فَقَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ يَدُ الْأَمْرِ كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को। अधकारों से अभिप्राय कुफ्र तथा प्रकाश से अभिप्राय ईमान है।

सूरह तहरीम - 66

سورة التحريم

सूरह तहरीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदीनी है इस में 12 आयत है।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है। जिस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक चूक पर सावधान किया गया है। जो आप से आप की अपनी पत्नियों से प्रेम के कारण हुई। और आप की पत्नियों की भी पकड़ की गई है। और उन्हें अपना सुधार करने की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- इस की आयत 6 से 8 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों का सुधार करने से निश्चित न होने और अपना दायित्व निभाने का निर्देश दिया गया है कि उन्हें प्रलोक के दण्ड से बचाने के लिये भरपूर प्रयास करें।
- आयत 9 में काफिरों तथा मुनाफिकों से जिहाद करने का आदेश दिया गया है। जो सदा आप के तथा मुसलमान स्त्रियों के बारे में कोई न कोई उपद्रव मचाते थे।
- आयत 10 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दो पत्नियों को चेतावनी दी गई है। और अन्त में दो सदाचारी स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 हे नबी। क्यों हराम (अवैध) करते है उसे जो हलाल (वैध) किया है अल्लाह ने आप के लिये? आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता¹ चाहते है? तथा अल्लाह

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ بِمَا عَصَيْتَ مَا أَعْطَى اللَّهُ لَكَ نِسَاءً
مَرْضَاتٍ أَرْوَاهُ وَأَلَهُ عَفْوَ زَوْجَتَيْنِ

- 1 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अन्न की नमाज के पश्चात् अपनी सब पत्नियों के यहाँ कुछ दूर के लिये जाया करते थे। एक बार कई दिन अपनी पत्नी जैनब (रजियल्लाहु अन्हा) के यहाँ अधिक देर तक रह गये। कारण यह था कि वह आप को मधु पिलाती थी। आप की पत्नी आईशा तथा

अति क्षमी दयावान् है।

2. नियम बना दिया है अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी शपथों से निकलने¹ का तथा अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा, और वही सर्व ज्ञानी गुणी है।

قَدْ قَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَجَارَةً يَوْمَكُمْ وَأَنْتُمْ تَسْلُونَ
مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ مُخْتَصِمٌ

3. और जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक² बात कही, तो उस ने उसे बना दिया और अल्लाह ने उसे खोल दिया नबी पर तो नबी ने कुछ से सूचित किया और कुछ को छोड़ दिया। फिर जब सूचित किया आप ने पत्नी को उस से तो उस ने कहा किस ने सूचित किया आप को इस बात से? आप ने कहा मुझे सूचित किया है सब जानने और सब से सूचित रहने वाले ने।

وَرَأَى النَّبِيُّ رُءُوسَ امْرَأَاتِهِ حُدُودًا فَلَمَّا
بَيَّنَّتْ لَهُ وَأَخْبَرَتْهُ اللَّهُ صَدَّقَ عَزَبَ بَعْضُهُ
وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا بَيَّنَّاهُ قَالَ أَلَيْسَ
أَلَيْسَ هَذَا قَالَ بَيَّنَّاهُ الْعِلْمُ يُخَيَّرُ

4. यदि तुम³ दोनों (हे नबी की पत्नियों!) क्षमा माँग लो अल्लाह से (तो तुम्हारे लिये उत्तम है), क्योंकि तुम दोनों के दिल कुछ झुक गये है। और यदि तुम दोनों एक-दूसरे की

إِنْ تَوْنِيَا إِلَى التَّوْبَةِ فَقَدْ صَعَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِنْ
تَطَهَّرَ عَنْهُ فَإِنَّ إِلَهَهُ هُوَ مَوْلَاهُ وَجَنَّتِ
وَصَبَّحَ الْيَوْمَ بَيْنَ وَأَسْلَمَتْهُ بَعْدَ ذَلِكَ فَهَيَّرَ

हफ्सा (राजियल्लाहु अन्हुमा) ने योजना बनाई कि जब आप आये तो जिस के पास जाये वह यह कहे कि आप के मुँह से मगाफीर (एक दुर्गाधिन फूल) की गन्ध आ रही है। और उन्होंने यही किया। जिस पर आप ने शपथ ले ली कि अब मधु नहीं पीऊंगा। उसी पर यह आयत उतरी। (बुखारी: 4912) इस में यह संकेत भी है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भी किसी हलाल को हARAM करने अथवा हARAM को हलाल करने का कोई अधिकार नहीं था।

- 1 अर्थात् प्रयाश्चित दे कर उस को करने का जिस के न करने की शपथ ली हो। शपथ के प्रयाश्चित (कफफारा) के लिये देखिये: माइदा आयत 81
2 अर्थात् मधु न पीने की बात।
3 दोनों से अभिप्राय आदरणीय आइशा तथा आदरणीय हफ्सा है।

सहायता करोगी आप के विरुद्ध तो निःसंदेह अल्लाह आप का सहायक है तथा जिवरील और सदाचारी इमान वाले और फरिशते (भी) इन के अनिरिक्त सहायक हैं।

5. कुछ दूर नहीं कि आप का पालनहार यदि आप तलाक दे दें तुम सभी को तो बदले में दे आप को पत्नियाँ तुम से उत्तम इस्लाम वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, आज्ञा पालन करने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, ब्रत रखने वालियाँ, विधवायें तथा कुमारियाँ।

6. हे लोगो जो इमान लाये हों। बचाओ। अपने आप को तथा अपने परिजनो को उस अग्नि से जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिस पर फरिशते नियुक्त हैं कड़े दिल, कड़े स्वभाव वाले। वह अबैजा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते हैं जिस का आदेश उन्हें दिया जाये।

7. हे काफिरो! बहाना न बनाओ आज, तुम्हें उमी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।

8. हे ईमान वाले! अल्लाह के आगे

عَسَىٰ رَبُّهُمۡ أَن يُبَدِّلَ أَزۡوَاجَٰكَ خَيْرًا مِّمَّا قُتِلَ ۖ تُسَبِّحُ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَدِيمًا
عَدِيدًا يُسَبِّحُ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَانۡكَارًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمۡرَآءَ
الَّذِينَ هُمَا عَلَيۡهَا مَلَكُوتُهُ يَخَافُ
رَبَّهُمَا وَلَا يَفۡسُقُونَ إِلَٰهَ مَا أَمَرَهُمۡ
وَيَفۡعَلُونَ مَا يُؤۡمَرُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعۡبُدُوا إِلَٰهَآ
يَوْمَآ ۚ إِنَّكُمْ تَعۡمَلُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوَلَّوۡا إِلَىٰ دِينِ آبَائِكُمۡ

- 1 अर्धान तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने परिजनो को इस्लाम की शिक्षा दो ताकि वह इस्लामी जीवन व्यतीत करें और नरक का ईंधन बनने से बच जायें। हदीस में है कि जब बच्चा सात वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज पढ़ने का आदेश दो। और जब दस वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज के लिये (यदि जरूरत पड़े तो) मारो (निर्मिजी 407)

पत्थर से अभिप्राय वह मुर्तियाँ हैं जिन्हें देवता और पूज्य बनाया गया था

सच्ची¹ तौबा करो। सभव है कि तुम्हारा पालनहार दूर कर दे तुम्हारी बुराईयाँ तुम से तथा प्रवेश करा दे तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरें जिस दिन वह अपमानित नहीं करेगा नदी को और न उन को जो ईमान लाये हैं उन के साथ। उन का प्रकाश² दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगे हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को। वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।

9. हे नदी! आप जिहाद करे काफिरों और मुनाफिकों से और उन पर कड़ाई करो।³ उन का स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है।

10. अब्राह ने उदाहरण दिया है उन के लिये जो काफिर हो गये नूह की पत्नी तथा लूत की पत्नी का। जो दोनों बिवाह में थी दो भक्तों के हमारे सदाचारी भक्तों में से। फिर दोनों ने विश्वासघात⁴ किया उन में।

عَسَىٰ رَبُّكَ أَنْ يَغْفِرَ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ
حَلُمْتُ صَبْرِي مِنْ نَجْوَاهِ الْأَعْمَىٰ يَوْمَ لَا يَخْرُجُ مِنْهُ
الْبَاقِي وَالْبَاقِي مَسْمُومَةٌ تَوَدُّهُ لَوْ تَفْقَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَيَأْتِيهِمْ يَغْفِرُونَ رَبَّنَا آتِنَا نُورًا وَاجْعَلْ لَنَا
إِنَّاكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ
حُلُمَهُمْ وَمَا لَهُمْ فِيكُمْ ذَرْبٌ ۝

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِبَعْضِ الْقَوْمِ وَالْمَرْأَتِ لَوْ
وَأَمْرَاتِ لُوطٍ كَانَتْ حَتَّىٰ حَبْلَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا
صَالِحَيْنِ فَفَاسَقَا ثُمَّ تَوَلَّيْتُمَا عَنْهُمَا مِنَ الْوَدْعِ
سُبْحَانَ قَدِيرٍ ۝

1 सच्ची तौबा का अर्थ यह है कि पाप को त्याग दे। और उस पर लज्जित हो तथा भविष्य में पाप न करने का संकल्प ले। और यदि किसी का कुछ निया है तो उसे भरे और अत्याचार किया है तो क्षमा मांग ले।

2 देखिये सूरह हदीद, आयत: 12)।

3 अर्थात् जो काफिर इस्लाम के प्रचार से रोकने है और जो मुनाफिक उपद्रव फैलाते हैं उन में कड़ा संघर्ष करें।

4 विश्वासघात का अर्थ यह है कि आदरणीय नूह (अलैहिस्सलाम) की पत्नी ने ईमान तथा धर्म में उन का साथ नहीं दिया। आयत का भावार्थ यह है कि अब्राह के यहाँ कर्म काम आयेगा। सम्बन्ध नहीं काम नहीं आयेंगे।

तो दोनों उन के, अल्लाह के यहाँ कुछ काम नहीं आये। तथा (दोनों स्त्रियों से) कहा गया कि प्रवेश कर जाओ नरक में प्रवेश करने वालों के साथ।

11. तथा उदाहरण¹ दिया है अल्लाह ने उन के लिये जो इम्रान लाये फिरऔन की पत्नी का। जब उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! बना दे मेरे लिये अपने पास एक घर स्वर्ग में, तथा मुझे मुक्त कर दे फिरऔन तथा उस के कर्म से, और मुझे मुक्त कर दे अत्याचारी जाति से।

12. तथा मरयम, इमरान की पुत्री का जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हम ने उस में अपनी ओर से रूह (आत्मा)। तथा उस (मरयम) ने सच्च माना अपने पालनहार की बातों और उस की पुस्तकों को। और वह इबादन करने वाली में से थी।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِّي ذِكْرًا نَّصَالِي الْجَنَّةِ وَتَحْيَىٰ مِّنْ يَّرْتَعُونَ وَعِثِّ مِّنَ الْغُورِ الطَّيِّبِينَ ۝

وَمَرْيَمَ إِذْ نَبَّأَتْ بِحَبْلِهَا الْإِسْمَ لَمْ تَجِدْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَوَكَّلْنَا بِهَا رِجَالًا وَكُتِبَ عَلَيْهَا إِلَهُاتٌ مِّنَ الْأَلْفَيْنِ ۝

1. हदीस में है कि पुरुषों में से बहुत पूर्ण हुये। पर स्त्रियों में इमरान की पुत्री मरयम और फिरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुई। और आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) की प्रधानता नारियों पर वही है जो मरीद (एक प्रकार का खाना) की सब खानों पर है। (सहीह बुखारी: 3411, सहीह मुस्लिम: 2431)

सूरह मुल्क - 67

سُورَةُ الْمَلِكِ

सूरह मुल्क के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 30 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में अल्लाह के मुल्क (राज्य) की चर्चा की गई है जिस से यह नाम लिया गया है।
- इस में मरण तथा जीवन का उद्देश्य बताते हुये आकाश तथा धरती की व्यवस्था पर विचार करने का आमंत्रण दिया गया है जिस से विश्व विधाता का ज्ञान होता है। और यह बात भी उजागर होती है कि मनुष्य का यह जीवन परीक्षा का जीवन है। और इस कुर्आन की बताई हुई बातों के इन्कार का दुष्परिणाम बताया गया है।
- आयत 13 14 में उन का शुभपरिणाम बताया गया है जो अपने पालनहार से डरते रहते हैं। जो प्रत्येक खुली और छुपी बात को जानता है और उस से कोई बात छुपी नहीं रह सकती।
- अन्त में मनुष्य को मोच-विचार का आमंत्रण देते हुये उसे अचेतना से चौंकाने का सामान किया गया है। यदि मनुष्य आँखें खोल कर इस विश्व को देखे तो कुर्आन का सच्चा उजागर हो जायेगा। और वह अपने जीवन के लक्ष्य को समझ जायेगा। हदीस में है कि कुर्आन में तीस आयतों की एक सूरह है जिस ने एक व्यक्ति के लिये सिफारिश की यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया गया। (मुनन अबू दाऊद: 1400, हाकिम 11565)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शुभ है वह अल्लाह जिस के हाथ में राज्य है। तथा वह जो कुछ चाहे कर सकता है।
2. जिस ने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ

ले कि तुम में किस का कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली अति क्षमावान् है।¹

أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ أَعَزُّ ثَمَرًا

3. जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश ऊपर तले। तो क्या तुम देखते हो अत्यंत कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असमर्था? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दराड़ा?

الَّذِي عَلَّمَ سَبْعَ مَوْبِدَّاتٍ مَا تَرَى فِي خَلْقِ
الرَّحْمَنِ مِنْ تَفْوُتٍ مَا رَجِعَ لِيَصْرِفَ قَلَّ تَرَى
مِنْ قُطُوفٍ

4. फिर बार बार देखो, वापिस आयेगी तुम्हारी ओर निगाह धक-हार कर।

لَنَرَجِعَ لِيَصْرِفَ تَرْتَرِي يَتَقَبَّلُ إِلَيْكَ الْبَصَرُ
حَاسِبًا وَأَوْحِيًّا

5. और हम ने सजाया है संसार के आकाशों को प्रदीपों (गहों) से। तथा बनाया है उन्हें (तारों को) मार भगाने का साधन शैतानों² को और तय्यार की है हम ने उन के लिये दहकती अग्नि की यातना।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ دُيُكًا بِمَصَابِيحٍ
وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابًا نَعِيمًا

6. और जिन्होंने कुफ्र किया अपने पालनहार के साथ तो उनके लिये नरक की यातना है। और वह बुरा स्थान है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابُ حَقِيمٍ
وَبَشِّرْ لِيَصِيرَ

7. जब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।

إِذَا انْفُذُوا فِيهَا مِمُّو لَهَا سَهِيمًا وَهِيَ تَنْفُورُ

8. प्रतीत होगा की फट पड़ेगी रोप (क्रोध) से, जब-जब फेंका जायेगा उस में कोई समूह तो प्रश्न करेंगे उन से उस के प्रहरी: क्या नहीं आया तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला (रमूल)?

نَكَادُ تَمَيَّرُ مِنَ الْعِيطِ كُلُّ الْقَوْمِ فِيهَا فَوِيرٌ
سَالِمٌ غَرَسَتْهَا الْأَنْبِيَاءُ لِيَكْلُمُنَّ رُبِيرٌ

1 इस में आज्ञा पालन की प्रेरणा तथा अवैज्ञा पर चेतावनी है

2 जो चोरी से आकाश की बातें सुनते हैं। (दिखिये सूरह साफ़फात आयत 7, 10)

9. वह कहेंगे: हाँ हमारे पास आया सावधान करने वाला। पर हम ने झुठला दिया, और कहा कि नही उतारा है अल्लाह ने कुछ। तुम ही बड़े कुपथ में हो।
10. तथा वह कहेंगे: यदि हम ने सुना और समझा होता तो नरक के वासियों में न होते।
11. ऐमे वह स्वीकार कर लेंगे अपने पापों को। तो दूरी¹ है नरक वासियों के लिये।
12. निःसंदेह जो डरने हों अपने पालनहार से बिन देखे उन्ही के लिये क्षमा है तथा बड़ा प्रतिफल है।²
13. तुम चुपके बोलो अपनी वान अधवा ऊँचे स्वर में। वास्तव में वह भली भाँति जानता है सीनों के भेदों को।
14. क्या वह नही जानेगा जिस ने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक³ सर्व सूचित है?
15. वही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती, तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका। और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।

قَالُوا بَلْ قَدِ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَعُلْنَا مَا كُنَّا
اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يُزَكَّرُ أَتَنُفَعُ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ
الْعُذُوبِ ۝

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ الْعُذُوبِ ۝

رَبِّ الْعَالَمِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمُ الْغَيْبَ لَهُمْ مَعْرِفَةٌ
وَأَجْرٌ كَرِيمٌ ۝

وَأَمَّا زُكْرُكَ فَهُمْ يَكْفُرُونَ وَإِنَّ يَوْمَهُمُ الَّذِي
الْعُذُوبِ ۝

لَرَأَيْتُمْ مَنِ خَلَقَ لَهُمُ الْبُيُوتَ الْهَيْئَةَ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا
فِي مَسَاجِدِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهَا وَآذِنُوا الشُّعْرَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह की दया से।

2 हदीस में है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज तय्यार की है जिसे न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी दिल ने सोचा (सहीह बुखारी: 3244, सहीह मुस्लिम: 2824)

3 बारीक बातों को जानने वाला।

16. क्या तुम निर्भय हो गये हो उस से जो आकाश में है कि वह धँसा दे धरती में फिर वह अचानक काँपने लगे।
17. अथवा निर्भय हो गये उस से जो आकाश में है कि वह भेज दे तुम पर पथरीली वायु तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कैसा रहा मेरा सावधान करना?
18. झुठला चुके है इन¹ से पूर्व के लोग तो कैसी रही मेरी पकड़?
19. क्या उन्होंने नहीं देखा पक्षियों की ओर अपने ऊपर पंख फैलाने तथा सिकोड़ने। उन को अत्यंत कृपाशील ही धामना है निःसंदेह वह प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।
20. कौन है वह तुम्हारी सेना जो तुम्हारी सहायता कर सकेगी अल्लाह के मुकाबले में? काफिर तो बस धोखे ही में हैं।
21. या कौन है जो तुम्हें जीविका प्रदान कर सके यदि रोक ले वह अपनी जीविका? बल्कि वह घुस गये है अवैज्ञा तथा घृणा में।²
22. तो क्या जो चल रहा हो औंधा हो कर अपने मुँह के चल वह अधिक मार्गदर्शन पर है या जो सीधा हो कर चल रहा हो सीधी राह पर?³

وَأَمْسُرْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخِفَّ بِكُمْ
الْأَرْضُ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ۝

أَمْ أَمْسُرْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَافِظًا فَمَا تَتْلَوْنَ كَيْفَ تُبَايِرُ ۝

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَبُذِّفَتْ
كَتَبُهُمْ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْفُتُورِ فَهُمْ يَصْطَلِبُونَ
مَا يُبْسَلُونَ إِلَّا لَأَعْلَنَّ لَهُمْ مِنْ شَيْءٍ لَمْ يَصِيرُوا ۝

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ يَنْصَرُّ لَكُمْ مِنْ
دُونِ الْمَوَدَّةِ الْكَافِرُونَ إِلَّا لِيُعْزِلَهُنَّ

مَنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَسْكَنْ
بِرِزْقِهِ بَلْ لَظُنُونٌ ۝

فَمَنْ يَمْنُنِ بِكُمْ عَلَىٰ خَلْقٍ عَدُوٍّ
أَمَّنْ يَنْبَغِي سُبْحًا أَنْ يَنْهَضَ لَكُمْ تَوَاتِيرُ ۝

1 अर्थात् मक्का वासियों से पहले आदम, समूद आदि जातियों ने। तो लून (अलैहिस्सलाम) की जाति पर पत्थरों की वर्षा हुई।

2 अर्थात् सत्य से घृणा में।

3 इस में काफिर तथा इमानधारी का उदाहरण है। और दोनों के जीवन-लक्ष्य को बताया गया है कि काफिर सदा मायामोह में रहने है।

23. हे नबी! आप कह दें कि वही है जिस ने पैदा किया है तुम्हें और बनाये है तुम्हारे कान तथा आँख और दिल। बहुत ही कम आभारी (कृतज्ञ) होते हो।
24. आप कह दें उसी ने फैलाया है तुम्हें धरती में और उसी की ओर एकत्रित¹ किये जाओगे।
25. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो?
26. आप कह दें: उस का ज्ञान बस अल्लाह ही को है। और मैं केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।
27. फिर जब वह देखेंगे उसे समीप, तो धिगड़ जायेंगे उन के चेहरे जो काफिर हो गये। तथा कहा जायेगा: यह वही है जिस की तुम माँग कर रहे थे।
28. आप कह दें: देखो यदि अल्लाह नाश कर दे मुझ को तथा मेरे साथियों को अथवा दया करे हम पर, तो (बताओ कि) कौन है जो शरण देगा काफिरों को दुःखदायी² यातना से?
29. आप कह दें: वह अत्यंत कृपाशील है हम उस पर ईमान लाये तथा उसी पर भरोसा किया, तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन खुले कुपथ में है।

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن لَّدُنْهُ
وَالْأَبْصَارُ وَالْأَفْئِدَةُ قَلِيلًا لَّا تَشْكُرُونَ ۝

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ۝

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ بِعَصَا اللَّهِ وَإِنَّمَا الْإِنسَانُ
نَجْوَىٰ ۝

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدْعُونَ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَفْضَلُ إِلَٰهٍ مِّن مَّعْبُودَاتِ
الْأَوَّلِينَ إِن يَخِيفُوا فُتُورَ الْعَذَابِ ۝

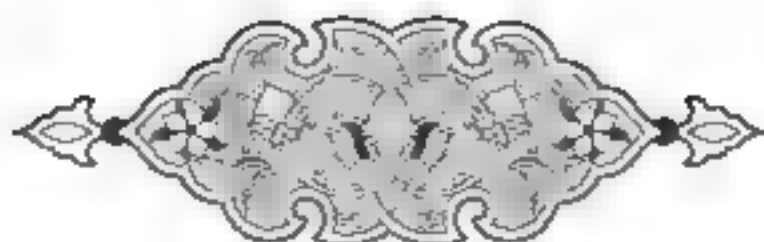
قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ الْمَتَابُ وَوَعْدُهُ
مُتَعَمَّرُونَ مِّن مَّوَدِّيٍّ صَلَّىٰ قَبْلِي ۝

1 प्रलय के दिन अपने कर्मों के लेख जोखा तथा प्रतिकार के लिये

2 अर्थात् तुम हमारा बुरा तो चाहते हो परन्तु अपनी चिन्ता नहीं करते।

30. आप कह दें भला देखो यदि तुम्हारा
पानी गहराई में चला जाये, तो कौन है
जो तुम्हें ला कर देगा बहता हुआ जल?

قُلْ لَهُ يَتَمَنَّانِ أَصْحَابُ مَادِّ الْوَعْدِ
يَأْتِيَانِي مَاءً مَّعِينًا



सूरह कलम - 68

سورة الكلم

सूरह कलम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में कलम शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। और इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में बताया गया है कि आप का चरित्र क्या है। और जो आप के विरोधी आप को पागल कहते हैं वह कितने पतित (गिरे हुये) हैं।
- इस में शिक्षा के लिये एक बाग के स्वामियों का उदाहरण दिया गया है। जिन्होंने अब्राह के कृतज्ञ न होने के कारण अपने बाग के फल खो दिये। फिर आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। और विरोधियों के इस विचार का खण्डन किया गया है कि आज्ञाकारी और अपराधी बराबर हो जायेंगे।
- इस में बताया गया है कि आज जो अब्राह को सज्दा करने से इन्कार करते हैं वह परलोक में भी उसे सज्दा नहीं कर सकेंगे।
- आयत 48 से 50 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को काफिरों के विरोध पर सहन करने के निर्देश दिये गये हैं।
- अन्त में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अब्राह की बात बता रहे हैं, जो सब मनुष्यों के लिये सर्वथा शिक्षा है, आप पागल नहीं हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. नूना और शपथ है लेखनी (कलम) की तथा उस¹ की जिसे वह लिखते हैं।

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ

- 1 अर्थात् कुर्आन की। जिसे उतरने के साथ ही नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लेखकों से लिखवाने थे। जैसे ही कोई सूरह या आयत उतरती लेखक कलम तथा चमड़ों और झिल्लियों के साथ उपस्थित हो जाते थे, ताकि पूरे संसार के मनुष्यों

2. नहीं है आप अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल।
3. तथा निश्चय प्रतिफल (वदला) है आप के लिये अनन्त।
4. तथा निश्चय ही आप बड़े मुशील हैं।
5. तो शीघ्र आप देख लेंगे, तथा वह (काफिर भी) देख लेंगे।
6. कि पागल कौन है।
7. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस की राह से। और वही अधिक जानता है उन्हें जो सीधी राह पर है।
8. तो आप बात न माने झुठलाने वालों की।
9. वह चाहते हैं कि आप ढीले हो जायें तो वह भी ढीले हो¹ जायें।
10. और बात न मानें² आप किसी अधिक

مَا أَنْتَ بِمَعْنَىٰ رَبِّكَ بِمَنْحُورٍ ۚ

وَرَبُّكَ لَآخِرُ أَعْيُنٍ مُّسَوِّوَةٍ ۚ

وَأَنْتَ لَعَلَّ خُلَىٰ عَصِيٍّ ۚ

لَتُخْبِرُنَّ وَتُخْبِرُونَ ۚ

بِمَنْحُورٍ لَّمَّعُونَ ۚ

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالسَّاهِبِينَ ۚ

فَلَا تُطِيعِ السَّاهِبِينَ ۚ

وَلَا تُلَاقُوا تَذَمُّنَ فَيَذَمُّوْنَ ۚ

وَلَا تُبَدِّعْ كُلَّ حَلَابٍ مَّهْيَبٍ ۚ

को कुर्आन अपने वास्तविक रूप में पहुँच सके। और सदा के लिये सुरक्षित हो जाये। क्योंकि अब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात् कोई नबी और कोई पुस्तक नहीं आयेगी। और प्रलय तक के लिये अब पूरे संसार के नबी आप ही हैं। और उन के मार्ग दर्शन के लिये कुर्आन ही एकमात्र धर्म पुस्तक है। इसीलिये इसे सुरक्षित कर दिया गया है। और यह विशेषता किसी भी आकाशीय ग्रन्थ को प्राप्त नहीं है। इसलिये अब मोक्ष के लिये अन्तिम नबी तथा अन्तिम धर्म ग्रन्थ कुर्आन पर इमान लाना अनिवार्य है।

- 1 जब काफिर इस्लाम के प्रभाव को रोकने में असफल हो गये तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धमकी और लालच देने के पश्चात् कुछ लो और कुछ दो की नीति पर आ गये। इसलिये कहा गया कि आप उन की बातों में न आयें। और परिणाम की प्रतीक्षा करें।
- 2 इन आयतों में किसी विशेष काफिर की दशा का वर्णन नहीं बल्कि काफिरों के

शपथ लेने वाले हीन व्यक्ति की।

11. जो व्यंग करने वाला, चुगलियाँ खाना फिरना है।

هَكَارَةً أَوْ يَمِينٍ

12. भलाई से रोकने वाला, अत्याचारी, बड़ा पापी है।

مَكَارَةً يُعْزِرُ مَعْتَبِرٍ

13. घमंडी है और इस के पश्चात् कुवंश (वर्णन सकर) है।

عَنْ يَدِ ذَلِكَ زَيْجٍ

14. इस लिये कि वह धन तथा पुत्रों वाला है।

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ

15. जब पढी जाती है उस पर हमारी आयतें तो कहना है यह पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

إِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِ آيَاتُ الْكِتَابِ

16. शीघ्र ही हम दाग लगा देंगे उस के मुँह^(१) पर।

سَنَسِفُهُ عَلَى الْحُزُونِ

17. निःसंदेह हम ने उन को परीक्षा में डाला^(२) है जिस प्रकार बाग वालों को परीक्षा में डाला था। जब उन्होंने शपथ ली कि अवश्य तोड़ लेंगे उस के फल भोर होते ही।

إِنْ يَكُونُ مِنْكُمْ مَّنْ يَذُنُ لَكُمْ أَيْمَانَهُمْ إِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الْكِتَابِ

18. और इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने

وَلَا يَسْتَنْوِي

प्रमुखों के नैतिक पतन तथा कुवचारों और दुराचारों को बनाया गया है जो लोगों को इस्लाम के विरोध उकसा रहे थे। तो फिर क्या इन की बात मानी जा सकती है।

1. अर्थात् नाक पर जिसे वह घमंड से ऊँची रखना चाहता है। और दाग लगाने का अर्थ अपमानित करना है।

2. अर्थात् मक्का वालों को। इसलिये यदि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लायेंगे तो उन पर सफलता की राह खुलेंगी। अन्यथा संसार और परलोक दोनों की यातना के भागी होंगे।

चाहा) नहीं कहा।

19. तो फिर गया उस (बाग) पर एक कुचक्र आप के पालनहार की ओर से, और वह सोये हुये थे।

فَقَطَّافٌ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِنْ رَبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۝

20. तो वह हो गया जैसे उजाड़ खेती हो।

فَأَصْبَحَتْ كَالْعُنْفُلِ ۝

21. अब वे एक-दूसरे को पुकारने लगे भोर होते ही।

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ۝

22. कि तड़के चलो अपनी खेती पर यदि फल तोड़ने है।

أَبِئْزَادًا وَعَلَىٰ عُرَّةٍ ۖ إِنَّ نَسْفَوْا صِرْمِينَ ۝

23. फिर वह चन दिये आपस में चुपके-चुपके बातें करते हुये।

وَنُطَلِّقُوهُ وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ۝

24. कि कदापि न आने पाये उस (बाग) के भीतर आज तुम्हारे पाम कोई निर्धन।¹

إِنْ لَا يَدُ خَلَّتْ ۖ أَبْهَرْتُمْ مَعِينًا وَتَسْكِينًا ۝

25. और प्रातः ही पहुंच गये कि वह फल तोड़ सकेंगे।

وَعَدَا عَلَىٰ حَزْدٍ قَدِيرِينَ ۝

26. फिर जब उसे देखा तो कहा: निश्चय हम राह भूल गये।

فَكَفَرُوا بِهَا وَأَنَّىٰ لَنَا لَصَافُونَ ۝

27. बल्कि हम वंचित हो² गये।

بَيْنَ نَحْنُ مَغْرُومُونَ ۝

28. तो उन में से बिचले भाई ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम (अल्लाह की) पवित्रता का वर्णन क्यों नहीं करते?

قَالَ وَسَطَّهَرْنَا ۖ قُلْ لَكُمْ تَوَكُّلٌ ۝

29. वह कहने लगे पवित्र है हमारा

فَالْوَسْبَحُ رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ صَلِيمٌ ۝

1 ताकि उन्हें कुछ दान न करना पड़े।

2 पहले तो साचा कि राह भूल गये हैं किन्तु फिर देखा कि बाग तो उन्हीं का है तो कहा कि यह तो ऐसा उजाड़ हो गया है कि अब कुछ तोड़ने के लिये रह ही नहीं गया है। वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

पालनहार। वास्तव में हम ही
अत्याचारी थे।

30. फिर सम्मुख हो गया एक दूसरे की
निन्दा करते हुए।

31. कहने लगे हाय अपसोस! हम ही
विद्रोही थे।

32. संभव है हमारा पालनहार हमें बदले
में प्रदान करे इस से उत्तम (वाग)।
हम अपने पालनहार ही की ओर रुचि
रखते हैं।

33. ऐसे ही यातना होनी है और आखिरत
(परलोक) की यातना इस से भी बड़ी
है। काश वह जानते।

34. निस्सदेह सदाचारियों के लिये उन के
पालनहार के पाम सुखों वाले स्वर्ग है।

35. क्या हम आज्ञाकारियों ' को पापियों
के समान कर देंगे?

36. तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा
निर्णय कर रहे हो?

37. क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिस
में तुम पढ़ते हो?

38. कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे?

39. या तुम ने हम से शपथ ले रखी है जो
प्रलय तक चली जायेगी कि तुम्हें वही
मिलेगा जिस का तुम निर्णय करोगे?

فَأْتَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَلَوْنَ ۝

قَالُوا يَوَيْلًا إِنَّ كُنَّا ضَالِّينَ ۝

عَسَى رَبَّنَا أَنْ يُفِيدَنَا خَيْرَ مِمَّا نَحْنُ فِيهِ رَبَّنَا
رَجُوزٌ ۝

كُذِّبَ الْعَذَابُ وَأَعْدِيَ الْآخِرَةُ أَكْبَرُ
لَوْ كُنَّا نَفْقَهُونَ ۝

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ

تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۝

مَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ۝

إِنْ لَكُمْ عَقْلٌ لِمَا تَعْرِضُونَ ۝

أَمْ لَكُمْ آيَاتٌ عَلَيَّ بِالْعَمَىٰ إِلَى يَوْمِ الْوَعْدِ
إِنْ لَكُمْ لَبِ تَعْلَمُونَ ۝

1 मक्का के प्रमुख कहने थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हमें यही संसारिक
सुख-सुविधा प्राप्त होगी। जिस का खण्डन इस आयत में किया जा रहा है।
अभिप्राय यह है कि अन्नाह के हाँ देर है पर अंधेर नहीं है।

40. आप उन से पूछिये कि उन में कौन इस की जमानत लेता है?

سَلِّمْهُمْ أَنَّهُمْ يَدْرِكُونَكَ ۝

41. क्या उन के कुछ साझी है? फिर तो वह अपने साझियों को लायें ॥ यदि वह सच्चे हैं।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ تَلِيَتْهُمْ أَشْرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ۝

42. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और वह बुलाये जायेंगे सज्दा करने के लिये तो (सज्दा) नहीं कर सकेंगे।²

يَوْمَ تَكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۝

43. उन की आँखें झुकी होंगी, और उन पर अपमान छाया होगा। वह (संसार में) सज्दा करने के लिये बुलाये जाते रहे और वह स्वस्थ थे।

حَاشَعَهُمْ أَبْصَارُهُمْ تَرَفُّعَهُمْ وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝
يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَاجِدُونَ ۝

44. अतः आप छोड़ दें मुझे तथा उसे जो झुठला रहा है इस बात (कुरआन) को, हम उन्हें धीरे-धीरे खींच लायेंगे³ इस प्रकार कि उन्हें ज्ञान भी नहीं होगा।

فَذَرْهُمْ وَمَنْ يَلْبِذْ بِهِمْ اِهْدِهَا غَيِّبْنَا عَنْ سَمْعِهِمْ فَمِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝

45. तथा हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।⁴ वस्तुतः हमारा उपाय सुदृढ़ है।

وَأَمَّا إِلَهُ الْمَلَائِكَةِ كَيْدُ بَنِي مِثْلِينَ ۝

46. तो क्या आप माँग कर रहे हैं किसी परिश्रामिक⁵ की, तो वह बोझ से

أَمْ تَتْلُوهُمْ أُجْرًا فَمَهْرَمِينَ ۝

1 तार्किक वह उन्हें अच्छा स्थान दिला दें।

2 हदीस में है कि प्रलय के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा तो प्रत्येक मोमिन पुरुष तथा स्त्री सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ वह शेष रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिये (संसार में) सज्दे किया करते थे। वह सज्दा करना चाहेंगे परन्तु उन की रीढ़ की हड्डी तख्त के समान बन जायेगी जिस के कारण उन के लिये सज्दा करना असंभव हो जायेगा। (बुखारी: 4919)

3 अर्थात् उन के बुरे परिणाम की ओर।

4 अर्थात् संसारिक सुख सुविधा में मग्न रखेंगे। फिर अन्ततः वह यातना में ग्रस्त हो जायेंगे।

5 अर्थात् धर्म के प्रचार पर।

दबे जा रहे हैं?

47. या उन के पास गैब का ज्ञान है जिसे वह लिख⁽¹⁾ रहे हैं?

أَمْ عِنْدَهُمْ خَيْرٌ مِّنْ مَّا يُخْفُونَ ۖ

48. तो आप धैर्य रखें अपने पालनहार के निर्णय तक और न हो जायें मछली वाले के समान² जब उस ने पुकारा और वह शोक पूर्ण था।

فَأَصْبَرَ فَمِنْ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ نُوحٍ
إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ۖ

49. और यदि न पा लेती उसे उस के पालनहार की दया तो वह फेंक दिया जाता बंजर में, और वह बुरी दशा में होता।

لَوْلَا أَن نَّارَكَ يَغْفِرُ مِن ذُنُوبِهِ لَأَنفَرْنَا
وَهُوَ يَكْفُرٌ ۖ

50. फिर चुन लिया उसे उस के पालनहार ने और बना दिया उसे सदाचारियों में से।

فَاصْبِرْ لَهُ رَبُّهُ لِيَجْزِيَكَ مِنَ الصَّابِرِينَ ۖ

51. और ऐसा लगता है कि जो काफिर हो गये वह अवश्य फिसला देंगे आप को अपनी आँखों से (घर कर) जब वह सुनते हों कुर्आन को। तथा कहते हैं कि वह अवश्य पागल है।

وَمَنْ يَكْذِبْ بِالْغَيْبِ لَنَجْزِيَنَّهُ أَلْفَ مَرَّةٍ أَوْ أَكْثَرَ بِمَا أَصَارَ لَنَا
مِثْلَ الْبَاطِلِ الَّذِي يَقُولُونَ إِنَّهُ تَلْبِسُونَ ۖ

52. जब कि यह (कुर्आन) तो बस एक³ शिक्षा है पूरे संसार वासियों के लिये।

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۖ

1 या लौहे मद्फूज (सुरक्षित पुस्तक) उन के अधिकार में है इस लिये आप का आज्ञा पालन नहीं करने और उसी से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं?

2 इस से अभिप्राय यूनस (अलैहिस्सलाम) है जिन को मछली ने निगल लिया था (देखिये मूरह साफ्फात आयत्त 139)

3 इस में यह बताया गया है कि कुर्आन केवल अरबों के लिये नहीं संसार के सभी देशों और जानियों की शिक्षा के लिये उनरा है।

सूरह हाक्का - 69

سورة الحاقة

सूरह हाक्का के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 52 आयत है।

- इस का प्रथम शब्द ((अल हाक्का)) है जिस से यह नाम लिया गया है। और इस का अर्थ है वह घड़ी जिस का आना सच्च है। इस में प्रलय के अवश्य आने की सूचना दी गई है।
- आयत 4 से 12 तक उन जातियों की यातना द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने प्रलय का इन्कार किया तथा रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 13 से 18 तक प्रलय का भयाव दृश्य दिखाया गया है।
- आयत 19 से 37 तक सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है। फिर काफिरों को संवाधित कर के उन पर कुर्आन तथा रसूल की सच्चाई को उजागर किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आज़ाह की तस्वीह (पवित्रतागान) बयान करते रहने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जिस का होना सच्च है।
2. वह क्या है जिस का होना सच्च है?
3. तथा आप क्या जाने कि क्या है जिस का होना सच्च है?
4. झुठलाया समूद तथा आद (जाति) ने अचानक आ पडने वाली (प्रलय) को।
5. फिर समूद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये अत कड़ी ध्वनी से।
6. तथा आद, तो वह ध्वस्त कर दिये

لَحَاقَةُ ۝

مَا لَحَاقَةُ ۝

وَمَا أَذْرَبَتْ مَا لَحَاقَةُ ۝

كَذَّبَتْ شَمُودُ وَعَادُ بِالْمُحَارِقَةِ ۝

وَمَا شَمُودُ قَامِيَكُمْ يَا طَغِيَّةَ ۝

وَأَمَّا عَادُ فَهُمُ الْكَافِرُونَ فَصَرَفْنَا عَنْ يَمِينِهِ ۝

गये एक तेज शीतल आँधी में।

7. लगाये रखा उसे उन पर सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर तो आप देखते कि वह जाति उस में ऐसे पछाड़ी हुई है जैसे खजूर के खोकले तने¹।
8. तो क्या आप देखते हैं कि उन में से कोई शेष रह गया है?
9. और किया यही पाप फिरऔन ने और जो उस के पूर्व थे, तथा जिन की बस्तियाँ औधी कर दी गई।
10. उन्होंने नहीं माना अपने पालनहार के रसूल को। अन्ततः उस ने पकड़ लिया उन्हें, कड़ी पकड़।
11. हम ने, जब सीमा पार कर गया जल, तो तुम्हें सवार कर दिया नाव² में।
12. ताकि हम बना दें उसे तुम्हारे लिये एक शिक्षा प्रद यादगार। और ताकि सुरक्षित रख लें इसे सुनने वाले कान।
13. फिर जब फूँक दी जायेगी सूर नरसिंघा) में एक फूँक।
14. और उठाया जायेगा धरनी तथा पर्वतों को तो दोनों चूर-चूर कर दिये जायेंगे³ एक ही बार में।
15. तो उसी दिन होनी हो जायेगी।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمِيزَةً آتٍ وَ
خُسُوفًا فَتَرَى الْقَوَمَ فِيهَا صَعْرَى كَانَهُمْ
أَعْيَارٌ تُقَالُ خَاوِيَةً ۝

فَمَنْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ۝

وَمَاءٌ مَرْعُورٌ وَمَنْ فِيهِ وَالْمُؤَنِّيكَ
بِأَنفَالِكَةٍ ۝

فَقَضَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَاَحَدَهُمْ تَعَدَا
رَابِعَةً ۝

إِنَّا كَانَتْ أَلَمًا لِّلْعَالَمِينَ ۝

لِنَبْنِيَنَّ لَهُمْ تَرْذِيلًا وَنُفِيقًا ۝
وَاجِبَةً ۝

فَإِذَا يُنْفَخُ الْفُورَةُ وَاجِدَةٌ ۝

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ تَدَاكُلًا
وَاجِدَةٌ ۝

يَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝

1. उन के भारी और लम्बे होने की उपमा खजूर के तने से दी गई है।
2. इस में नूह (अलैहिमसलाम) के तूफान की ओर संकेत है। और सभी मनुष्य उन की संतान हैं इसलिये यह दया सब पर हुई है।
3. देखिये सूरह ताहा आयत 20 आयत 103, 108।

16. तथा फट जायेगा आकाश, तो वह
उस दिन क्षीण निर्वल हो जायेगा।

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝

17. और फरिश्ते उस के किनारों पर
होंगे तथा उठाये होंगे आप के
पालनहार के अर्श (मिहामन) को
अपने ऊपर उस दिन आठ फरिश्ते।

وَالْمَلَائِكَةُ أَرْجَاءُ وَيَعْبُدُونَ عَرْشَ رَبِّكَ
فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمِينَةٌ ۝

18. उस दिन तुम (अल्लाह के पास)
उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह
जायेगा तुम में से कोई।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ
خَافِيَةٌ ۝

19. फिर जिसे दिया जायेगा उस का
कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगा यह
लो मेरा कर्मपत्र पढो।

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَذَا
أَمْرٌ وَأَكْبَرُ ۝

20. मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला
हूँ अपने हिसाब से।

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلَاقٍ حَسْبِيَ ۝

21. तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।

فَهُنَالَىٰ يَسِرَّةً وَأُنِيسَةً ۝

22. उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।

فِي جَسَّةٍ هَالِكَةٍ ۝

23. जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।

فَطُرُوقُهُمْ دَانِيَةٌ ۝

24. (उन से कहा जायेगा): खाओ तथा पियो
आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने
किया है विगत दिनों (संसार) में।

كُلُوا وَاشْرَبُوا وَسَبِّحُوا بِمَا آتَاكُمُ الرَّحْمَنُ
الْأَنَامُ ۝

25. और जिसे दिया जायेगा उस का
कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह
कहेगा: हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दिया
ही न जाता।

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ
يَلَيْتَنِي لَمْ أُؤْتِكُنِي ۝

26. तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा
हिसाब?।

وَلَمْ أَذِرْ مَا حَسْبِيَ ۝

27. काश मेरी मौत ही निर्णायक¹ होती।

يَلْمِظَهَا كَاتِبٌ لِّقَاتِبَةٍ ۝

28. नहीं काम आया मेरा धन।

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِي ۝

29. मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्वा²

هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِي ۝

30. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और
उस के गले में तौक डाल दो।

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝

31. फिर नरक में उसे झोंक दो।

ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝

32. फिर उसे एक जजीर, जिस की
लम्बाई सत्तर गज है में जकड़ दो।

ثُمَّ إِلَىٰ بَيْتِلَةٍ ذُرِّعَتْ شَجَرُونَ وَرَاحًا
فَاسْلُكُوهُ ۝

33. वह ईमान नहीं रखना था
महिमाशाली अब्राह पर।

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الْمُبِينِ ۝

34. और न प्रेरणा देता था दरिद्र को
भोजन कराने की।

وَلَا يَعْطِ عَلَىٰ طَعَامِ الْيَتَامَىٰ ۝

35. अतः नहीं है उस का आज यहाँ कोई
मित्र

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ مِنْهُمْ خَلِيلٌ ۝

36. और न कोई भोजन, पीप के सिवा।

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَدِيرٍ ۝

37. जिसे पापी ही खायेंगे।

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْغَاطِرُونَ ۝

38. तो मैं शपथ लेता हूँ उस की जो तुम
देखते हो।

فَلَا تُبْصِرُونَ ۝

39. तथा जो तुम नहीं देखते हो।

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝

40. निःसंदेह यह (कुर्आन) अदरणीय रसूल
का कथन³ है।

رَبِّهِ لَقَوْلٌ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

1 अर्थात् उस के पश्चात् मैं फिर जीवन न किया जाता।

2 इस का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परलोक के इन्कार पर जितने तर्क दिया करता था आज सब निष्फल हो गये।

3 यहाँ अदरणीय रसूल से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है तथा सूरह तकवीर आयत 19 में फरिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) जो वही

41. और वह किसी कवि का कथन नहीं है।
तुम लोग कम ही विश्वास करते हो।
42. और न यह किसी ज्योतिषी का कथन
है, तुम कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
43. सर्वलोक के पालनहार का उनारा
हुआ है।
44. और यदि इस (नबी) ने हम पर कोई
बात बनाई⁽¹⁾ होती।
45. तो अवश्य हम पकड़ लेते उस का
सीधा हाथ।
46. फिर अवश्य काट देते उस के गले
की रग।
47. फिर तुम से कोई (मुझे) उस से
रोकने वाला न होता।
48. निःसंदेह यह एक शिक्षा है सदाचारियों
के लिये।
49. तथा वास्तव में हम जानते हैं कि तुम
में कुछ झुठलाने वाले हैं।
50. और निश्चय यह पछतावे का कारण
होगा काफिरों⁽²⁾ के लिये।

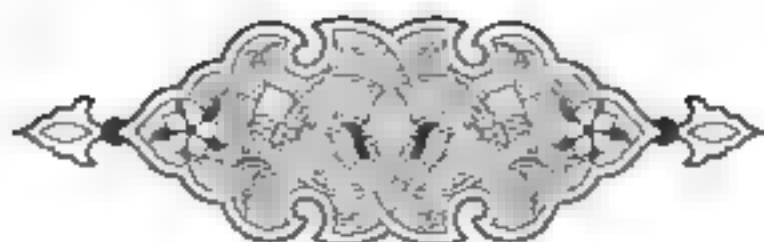
- وَمَا هُوَ بِقَوْلٍ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۝
وَلَا بِقَوْلٍ كَاثِرٍ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝
تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْمَعْمُورِينَ ۝
وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقْوَامِ ۝
لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝
لَمَّا كَفَّتْ لَمَتُّهُ لُؤْيَيْنِ ۝
فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِرِينَ ۝
وَلَا تَنْزِيلٌ لَكَ مِنَ الْفُتُونِ ۝
وَأَنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ۝
وَلَا تَنْزِيلٌ لَكَ مِنَ الْغُرُورِ ۝

जानते थे वह अभिप्राय हैं। यहाँ कुर्आन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन इस अर्थ में कहा गया है कि लोग उसे आप से सुन रहे थे। और इसी प्रकार आप जिवरील (अलैहिस्सलाम) से सुन रहे थे। अन्यथा वास्तव में कुर्आन अल्लाह ही का कथन है जैसा कि आगामी आयत: 43 में आ रहा है।

- 1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी ओर से बढ़ी (प्रकाशना) में कुछ अधिक या कम करने का अधिकार नहीं है। यदि वह ऐसा करे तो उन्हें कड़ी यातना दी जायेगी।
- 2 अर्थात् जो कुर्आन को नहीं मानते वह अन्ततः पछतायेंगे।

- 51 वस्तुनः यह विश्वासनीय सत्य है।
- 52 अतः आप पवित्रता का वर्णन करें अपने
महिमावान् पालनहार के नाम की।

وَأَنَّهُ لَعَلَّ الْيَقِينِ ۝
مَسِيحَةً بِأَسْمَائِكَ الْعَظِيمَةِ



सूरह मआरिज - 70

سورة الماعارج

सूरह मआरिज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 44 आयत है।

- इस की आयत 3 में ((जिल मआरिज)) का शब्द आया है उसी से यह नाम लिया गया है जिस का अर्थ है: ऊँचाईयों वाला।
- इस में क्यामत (प्रलय) की यातना की जल्दी मचाने वालों को सूचित किया गया है कि वह यातना अपने समय पर अवश्य आ कर रहेगी फिर प्रलय की दशा को बताया गया है कि वह कितनी भीषण घड़ी होगी।
- आयत 19 से 25 तक मनुष्य की साधारण कमजोरी का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि इसे इयादत (नमाज) के द्वारा ही दूर किया जा सकता है जिस से वह गुण पैदा होते हैं जिन से मनुष्य स्वर्ग के योग्य होता है।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उपहास करने वालों और कुर्आन सुनाने से आप को रोकने के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पिल पड़ने वालों को कड़ी चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. प्रश्न किया एक प्रश्न करने ' वाले ने उस यातना के बारे में जो आने वाली है।
2. काफिरों पर नहीं है जिसे कोई दूर करने वाला।
3. अल्लाह ऊँचाईयों वाले की ओर से।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ

لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ

مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ

1. कहा जाता है कि नजर पुत्र हारिस अथवा अबू जत्ल ने यह माँग की थी कि ((हे अल्लाह यदि यह सत्य है तेरी ओर से तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे)) (देखिये सूरह अन्फाल आयत 32)

4. चढ़ने है फरिश्ते तथा रूह¹ जिस की ओर, एक दिन में जिस का माप पचास हजार वर्ष है।
5. अतः (हे नबी!) आप सहन² करें अच्छे प्रकार से।
6. वह समझते है उस को दूर।
7. और हम देख रहे है उसे समीप।
8. जिस दिन हो जायेगा आकाश पिघली हुई धातु के समान।
9. तथा हो जायेंगे पर्वत रंग रंग धुने हुये ऊन के समान।³
10. और नहीं पूछेगा कोई मित्र किसी मित्र को
11. (जब कि) वह उन्हें दिखाये जायेगे। कामना करेगा पापी कि दण्ड के रूप में दे दे उस दिन की यातना के अपने पुत्रों को।
12. तथा अपनी पत्नी और अपने भाई को।
13. तथा अपने समीपवर्ती परिवार को जो उसे शरण देता था।
14. और जो धरती में है सभी⁴ को फिर

تَعْرِجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ رَائِيٌّ يَوْمَئِذٍ كَانَ
يُقَدَّرُ لَهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيدًا

وَهُمْ يَدْرَأُونَهُ يَوْمَئِذٍ

وَنُورُهُ قُورَيْنًا

يَوْمَئِذٍ تَكُونُ لِسَاءً ذَاتُ لَبِثٍ

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ

وَلَا يَسْأَلُ عَمِيرٌ فَتًى

يَتَقَرُّوهُمْ يَوْمَئِذٍ الْمَخْتُومُ لَوْ يَتَذَكَّرُ مِنْ
عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ يَتَجَبَّرُونَ

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ

وَتَصِلُ إِلَى آلِ بْنِ تَوَيْلٍ

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْفَخُونَ

1 रूह से अभिप्राय फरिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है।

2 अर्थात् संसार में सत्य को स्वीकार करने में।

3 देखिये: सूरह कारिआ।

4 हदीस में है कि जिस नारकी को सब से सरल यातना दी जायेगी उस से अल्लाह कहेगा क्या धरती का सब कुछ तुम्हें मिल जाये तो उसे इस के दण्ड में दे दोगा? वह कहेगा हाँ। अल्लाह कहेगा तुम आदम की पीठ में थे, तो मैं ने तुम से इस से सरल की माँग की थी कि मेरा किस्मी को साझी न बनाना तो तुम ने इन्कार

- वह उसे यातना से बचा दे।
 15. कदापि (ऐसा) नहीं (होगा)।
 16. वह अग्नि की ज्वाला होगी।
 17. खाल उधेड़ने वाली।
 18. वह पुकारेगी उसे जिस ने पीछा
 दिखाया¹ तथा मुंह फेरा।
 19. तथा (धन) एकत्र किया फिर मौत
 कर रखा।
 20. वास्तव में मनुष्य अत्यंत कच्चे दिल
 का पैदा किया गया है।
 21. जब उसे पहुँचता है दुःख तो उद्विग्न
 हो जाता है।
 22. और जब उसे धन मिलता है तो
 कजूसी करने लगता है।
 23. परन्तु जो नमाजी है।
 24. जो अपनी नमाज का सदा पालन²
 करते हैं।
 25. और जिन के धनो में निश्चित भाग
 है याचक (माँगने वाला), तथा
 वंचित³ का।
 26. तथा जो सत्य मानते हैं प्रतिकार
 (प्रलय) के दिन को।

كَلَّا إِنَّهَا لَأُفْلِقُ ۝

سَرَّحَهُ لِنَشْوَىٰ ۝

تَدْعُو مِنْ أَدْبُرٍ مُّوَلِّو ۝

وَجَعَلَ قَاوِي ۝

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلُقٌ هَلَّو ۝

وَأَنسَبَهُ التُّرُجُرُومَ ۝

وَأَمَّا لَهُ الْعَذِيرُ مَوَام ۝

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّغْلُومٌ ۝

لِلسَّائِلِ وَالْمَغْرُومِ ۝

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بَيِّنَاتِنَا ۝

किया और शिर्क किया। (सहीह बुखारी: 6557 सहीह मुस्लिम 2805)

1 अर्थात् सत्य से।

2 अर्थात् बड़ी पाबंदी से नमाज पढ़ते हों।

3 अर्थात् जो न माँगने के कारण वंचित रह जाता है।

27. तथा जो अपने पालनहार की यातना से डरते हैं।
28. वास्तव में आप के पालनहार की यातना निर्भय रहने योग्य नहीं है।
29. तथा जो अपने गुप्तागों की रक्षा करने वाले हैं।
30. सिवाये अपनी पत्नियों और अपने स्वामित्व में आई दासियों¹ के तो वही निन्दित नहीं है।
31. और जो चाहे इस के अतिरिक्त तो वही सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं।
32. और जो अपनी अमानतों तथा अपने वचन का पालन करते हैं।
33. और जो अपने साक्ष्यों (गवाहियों) पर स्थित रहने वाले हैं।
34. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करते हैं।
35. वही स्वर्गों में सम्मानित होंगे।
36. तो क्या हो गया है उन काफिरों को कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं।
37. दायें तथा बायें से समूहों में हो² कर।

- وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ عَذَابٍ رَّئِيهِمْ خَشِيعُونَ ﴿٢٧﴾
- إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَا تُوعَى ﴿٢٨﴾
- وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ غُلَامِهِمْ وَبُحْرَانِهِمْ خَافُونَ ﴿٢٩﴾
- إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾
- فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَوُتِّرَ لَمْ يَحْذَرِ ﴿٣١﴾
- وَالَّذِينَ هُمْ بِأَمْنَانِهِمْ وَعَقْدِهِمْ رَهْمُونَ ﴿٣٢﴾
- وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾
- وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿٣٤﴾
- أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَّمُونَ ﴿٣٥﴾
- فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُتِلُوا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٦﴾
- عَنِ الشِّمَالِ غَيْرِ الْمَشْرِقِ ﴿٣٧﴾

1 इस्लाम में उसी दासी से संभोग उचित है जिसे सेना पति ने गनीमत (परिहार) के दूसरे धनों के समान किसी मुजाहिद के स्वामित्व में दे दिया हो। इस से पूर्व किसी बंदी स्त्री से संभोग पाप तथा व्याभिचार है। और उस से संभोग भी उस समय वैध है जब उसे एक बार मासिक धर्म आ जाये। अथवा गर्भवती हो तो प्रसव के पश्चात ही संभोग किया जा सकता है। इसी प्रकार जिस के स्वामित्व में आई हो उस के सिवा और कोई उस से संभोग नहीं कर सकता।

2 अर्थात् जब आप कुर्आन सुनाते हैं तो उस का उपहास करने के समूहों में हो

38. क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति लोभ (लालच) रखता है कि उसे प्रवेश दे दिया जायेगा सुख के स्वर्गों में?

أَنظُمَهُ كُلُّ شَيْءٍ مِنْهُمْ أَنْ يَدْخَلَ حَيْثُ يُعْبَدُونَ

39. कदापि ऐसा न होगा, हम ने उन की उत्पत्ति उस चीज से की है जिसे वे¹ जानते हैं।

كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ يَعْلَمُونَ

40. तो मैं शपथ लेता हूँ पूर्वो (सूर्योदय के स्थानों) तथा पश्चिमों (सूर्यास्त के स्थानों) की, वास्तव में हम अवश्य सामर्थ्यवान हैं।

فَلَا تُسَمِّرُ بَرِّيَ الْمَشْرِقِيِّ وَالْمَغْرِبِيِّ الْقَبْرُونَ

41. इस बात पर कि बदल दें उन से उत्तम (उत्पत्ति) को तथा हम विवश नहीं हैं।

قُلْ إِن شِئَاءَ عِزِّي وَغَنَمِي وَمَتَاعِي بِهِمْ مُتَّبِعُونَ

42. अतः आप उन्हें झगड़ने तथा खेलते छोड़ दें यहाँ तक कि वह मिल जायें अपने उस दिन से जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है।

فَذَاهِبْهُمْ يَوْمَهُمْ وَيَلْمِؤْهُمْ حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يَوعَدُونَ

43. जिस दिन वह निकलेंगे कबरों (और समाधियों) से दौड़ने हुये जैसे वह अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ रहे हों²।

يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَعْدَاتِ وَإِذَا كَانَهُمْ إِلَى نُصُوبِ بُرُجَيْنِ

44. झुकी होंगी उन की आँखें छाया होगा उन पर अपमान, यही वह दिन है जिस का वचन उन्हें दिया जा³ रहा था।

خَالِشَةً أَبْصَارَهُمْ تَرْفَعُهُمْ إِلَيْكَ الْيَوْمَ وَالْيَوْمِ كَانُوا يُوعَدُونَ

कर आ जाते हैं। और इन का शवा यह है कि स्वर्ग में जायेंगे।

1 अर्थात् हीन जल (वीर्य) से। फिर भी घमंड करते हैं। तथा अज़ाह और उम के रसूल को नहीं मानते।

2 या उन के धानों की ओर। क्योंकि संसार में वे सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ने धो।

3 अर्थात् रसूलों तथा धर्मशास्त्रों के माध्यम से।

सूरह नूह - 71

سورة نوح

सूरह नूह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में नूह (अलैहिस्सलाम) के उपदेश का पूरा वर्णन है जिस से इस का नाम सूरह नूह है। और इस में उन की कथा का वर्णन ऐसे किया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोधी चौक जायें।
- इस में अल्लाह से नूह (अलैहिस्सलाम) की गुहार को प्रस्तुत किया गया है। और आयत 25 में उस यातना की चर्चा है जो उन की जाति पर आई थी।
- अन्त में नूह (अलैहिस्सलाम) की उस प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने इस यातना के समय की थी जो उन की जाति पर आई।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशिलि तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निःसंदेह हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, कि सावधान कर अपनी जाति को इस से पूर्व कि आये उन के पाम दुःखदायी यातना।

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِن
لَّدُنْ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

2. उस ने कहा हे मेरी जाति! वास्तव में मैं खुला सावधान करने वाला हूँ तुम्हें।

قَالَ يَاقَوْمِ إِنِّي كُنْتُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ

3. कि इबादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा डरो उस से और बात मानो मेरी।

أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

4. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को, तथा अवसर देगा तुम्हें निर्धारित समय¹ तक। वास्तव में जब अल्लाह का निर्धारित समय आ

يَغْفِرُ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَرَبُّكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ
مُّسَمًّى إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ لَوْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

- 1 अर्थात् तुम्हारी निश्चित आयु तक।

जायेगा तो उस में देर न होगी। काश
तुम जानते।

- 5 नूह ने कहा मेरे पालनहार! मैं ने
बुलाया अपनी जाति को (तेरी ओर)
रात और दिन।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝

- 6 तो मेरे बुलावे ने उन के भागने ही
को अधिक किया।

فَلَمَّا بَزَدَهُمْ دَعَاؤِي إِلَّا بِمِرَارٍ ۝

- 7 और मैं ने जब जब उन्हें बुलाया तो
उन्होंने दे ली अपनी ऊँगालियाँ अपने
कानों में तथा ओढ़ लिये अपने
कपड़े ' तथा अड़े रह गये और
बड़ा घमंड किया।

وَلِيَّ كُلِّ أَسْبَاطٍ أَهْلٌ يَتَّبِعُونَ أَهْلَهُمْ جُمُوعًا أَصَابِعًا
فِي ذُلِّهِمْ وَأَسْتَفْشَوْا بَيْنَهُمْ وَأَصْرُوا
وَأَسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝

- 8 फिर मैं ने उन्हें उच्च स्वर से बुलाया।

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ۝

- 9 फिर मैं ने उन से खुल कर कहा और
उन से धीरे-धीरे (भी) कहा।

ثُمَّ إِنِّي أَطَلْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝

- 10 मैं ने कहा क्षमा माँगो अपने
पालनहार से वास्तव में वह बड़ा
क्षमाशील है।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبِّي إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا ۝

- 11 वह वर्षा करेगा आकाश से तुम पर
धाराप्रवाह वर्षा।

يُرْسِلُ سَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِثْرَارًا ۝

- 12 तथा अधिक देगा तुम्हें पुत्र तथा धन
और बना देगा तुम्हारे लिये बाग
तथा नहरें।

وَيُضَاعِفْ لَكُمْ بِأَمْوَالِكُمْ وَيُزَيِّدْ وَيَجْعَلَ
لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلَ لَكُمْ أَنْهَارًا ۝

- 13 क्या हो गया है तुम्हें कि नहीं डरते
हो अल्लाह की महिमा से?

مَا لَكُمْ لَا تَخَافُونَ اللَّهَ وَقَارًا ۝

- 14 जब कि उस ने पैदा किया है तुम्हें

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝

- 1 ताकि मेरी बात न सुन सके।

24. और कुपथ (गुमराह) कर दिया है
उन्होंने बहुतों को, और अधिक कर
दे तू (भी) अत्याचारियों के कुपथ¹
(कुमार्ग) को।
25. वह अपने पापों के कारण इवो²
दिये गये फिर पहुँचा दिये गये नरक
में। और नहीं पाया उन्होंने अपने लिये
आज्ञाह के मुक़ाबिले में कोई सहायक।
26. तथा कहा नूह ने: मेरे पालनहार! न
छोड़ धरती पर काफ़िरों का कोई
घराना।
27. (क्यों कि) यदि तू उन्हें छोड़ेगा तो
वह कुपथ करेंगे तेरे भक्तों को, और
नहीं जन्म देंगे परन्तु दुष्कर्मी बड़े
काफ़िर को
28. मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझ को
तथा मेरे माता-पिता को और उसे
जो प्रवेश करे मेरे घर में इमान ला
कर तथा इमान वालों और इमान
वालियों को। तथा काफ़िरों के विनाश
ही को अधिक कर।

وَقَدْ أَصَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ
إِلَّا ضَلَالًا ۝

مِمَّا خَطَبْتَهُمْ يُشْرِكُوا بِنِعْمَةِ رَبِّهِمْ ۚ فَانقُصْهُمْ
سَعْدًا ۖ وَاللَّهُ مُنْقِصُ الْفَوْسَادِ ۝

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي مَعَ الْكَافِرِينَ
وَيَذَرُونِي ۝

إِنَّكَ إِن شَاءَ رَحْمَتُكَ لَآتِيهِمْ ۖ وَلَا يَكُونُوا
إِلَّا قَائِمِينَ كَفَّارًا ۝

رَبِّ الْغُفْرَانِ ۚ وَلِلَّهِ الدِّينُ وَلِلَّهِ الْخَلْقُ وَلِلَّهِ
الْأَيُّمُ ۚ وَالْمُسْلِمُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَالْمُسْلِمَاتُ ۚ وَالْمُسْلِمُونَ وَالْمُسْلِمَاتُ ۚ

बना लो जिस से तुम्हें इबादत की प्रेरणा मिलेगी। फिर कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात् समझाया कि यही पूज्य है। और उन की पूजा अरब तक फैल गई।

1 नूह (अलैहिस्सलाम) ने 950 वर्ष तक उन्हें समझाया। (देखिये सूरह अन्कबूत आयत 14) और जब नहीं माने तो यह निवेदन किया।

2 इस का संकेत नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफान की ओर है। (देखिये सूरह हूद आयत 40, 44)

सूरह जिब्र - 72

سُورَةُ الْجَبْرِ

सूरह जिब्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयत हैं।

- इस में जिब्रों की बातें बताई गई हैं। इसलिये इस का यह नाम है। जिन्होंने कुरआन सुना और उस के सच होने की गवाही दी। फिर मक्का के मुशरिकों को सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुख से नबूवत के बारे में बातें उजागर की गई हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न मानने पर नरक की यातना से सूचित किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो: मेरी ओर वही (प्रकाशना) की गई है कि ध्यान से सुना जिब्रों के एक समूह ने। फिर कहा कि हम ने सुना है एक विचित्र कुरआन।
2. जो दिखाता है सीधी राह, तो हम ईमान लाये उस पर। और हम कदापि साझी नहीं बनायेंगे अपने पालनहार के साथ किसी को।
3. तथा निस्सदिह महान् है हमारे पालनहार की महिमा, नहीं बनाई है उस ने कोई संगीनी (पत्नी) और न कोई संतान।

قُلْ أَتَىٰ آلَ اللَّهِ اسْمُهُمْ ثَلَاثِينَ قَالُوا بَلَىٰ
وَهُمْ أَتْرَابًا ۚ

يَهْدِي إِلَى الْبُرْهَانِ قَامَتْ لَهُ ثَلَاثُونَ بَرِيَّةً
أَسْدَانًا ۚ

وَأَنَّهُ تَعَلَّىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً
وَلَا وَلَدًا ۚ

1. सूरह अह्काफ आयत 29 में इस का वर्णन किया गया है। इस सूरह में यह बताया गया है कि जब जिब्रों ने कुरआन सुना तो आप ने न जिब्रों को देखा और न आप को उस का ज्ञान हुआ। बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वही (प्रकाशना) द्वारा इस से सूचित किया गया।

4. तथा निश्चय हम अज्ञान में कह रहे थे अल्लाह के संबंध में झूठी बातें।
5. और यह कि हम ने समझा कि मनुष्य तथा जिन्न नहीं बोल सकते अल्लाह पर कोई झूठ बात।
6. और वास्तविकता यह है कि मनुष्य में से कुछ लोग शरण मांगते थे जिन्नों में से कुछ लोगों की तो उन्होंने ने अधिक कर दिया उन के गर्व को।
7. और यह कि मनुष्यों ने भी वही समझा जो तुम ने अनुमान लगाया कि कभी अल्लाह फिर जीवित नहीं करेगा किसी को।
8. तथा हम ने स्पर्श किया आकाश को तो पाया कि भर दिया गया है प्रहरियों तथा उल्काबों से।
9. और यह कि हम बैठते थे उस (आकाश) में सुन गुन लेने के स्थानों में, और जो अब सुनने का प्रयास करेगा वह पायेगा अपने लिये एक उल्का घात में लगा हुआ।
10. और यह कि हम नहीं समझ पाते कि क्या किमी बुराई का इरादा किया गया धरती वालों के साथ या इरादा किया है उन के साथ उन के पालनहार ने सीधी राह पर लाने का?
11. और हम में से कुछ सदाचारी है और हम में से कुछ इस के विपरीत है। हम विभिन्न प्रकारों में विभाजित हैं।

وَأَنَّهُ كَانَ يَفْقَهُ سَوِيحُنَا عَلَىٰ الْغُوثِ حَقًّا ۝

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نَقُولَ الْإِنسَ وَالْجِنِّ عَلَىٰ الْغُوثِ مَا يَ ۝

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنسِ يَقُولُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَرَادُهُمْ ذَمًّا ۝

وَالَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا غُثًّا كَثِيفًا ۝

وَأَنَّا لَكُنَّا نَعْبُدُ مِنْهَا مَقَامِدَ الْغَنَىٰ ۝
يُسْمِعُونَ الْإِنسَ يَهْدِيهِمْ سَبِيلَ الْمَوْتِ ۝

وَأَنَّا لَنَادَيْنَا رَبَّنَا فَاسْتَجَبَ لَنَا بِرِجَالٍ مِّنَ الْإِنسِ ۝
أَمْ أَرَادَ بِهِنَّ رَبُّنَا الْهُتُوتَ ۝

وَأَنَّا مِمَّا الْفَاسِقِينَ ۝ وَمِنَّا ذُو الْقُرْبَىٰ ۝
طَرَفًا ۝ وَمِنَّا ذُو الْقُرْبَىٰ ۝

12. तथा हमें विश्वास हो गया है कि हम कदापि विवश नहीं कर सकते अल्लाह को धरती में और न विवश कर सकते हैं उसे भाग कर।

وَأَنَّا عَلَّمْنَا أَن لَّنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنِ
نُعْجِزَهُ فِي السَّمَاءِ

13. तथा जब हम ने सुनी मार्ग दर्शन की बात तो उस पर इमान ला आये, अब जो भी इमान लायेगा अपने पालनहार पर तो नहीं भय होगा उसे अधिकार हनन का और न किसी अत्याचार का।

وَأَنَّا لَنَسْمَعَنَّ أَصْوَابَهُمْ وَنَحْمِلُهُمْ
يَوْمَئِذٍ بِرَبِّهِ فَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ كِبَارُهَا
وَلَا شَفَاعَةُ

14. और यह कि हम में से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और कुछ अत्याचारी हैं। तो जो आज्ञाकारी हो गये तो उन्होंने खोज ली सीधी राह।

وَأَنَّا مِمَّا السَّائِغِينَ مِنَّا الْفَاسِقُونَ فَسَلِمُوا
فَأُولَئِكَ نَهْزِوْنَ الشَّعَا

15. तथा जो अत्याचारी हैं तो वह नरक का ईंधन हो गये।

وَأَنَّا الْفَاسِقُونَ فَكَانُوا يَحْمِلُونَ حَبْلًا

16. और यह कि यदि वह स्थित रहते सीधी राह (अर्थात् इस्लाम) पर तो हम सींचते उन्हें भग्न जल में।

وَأَن لَّيْسَ لَهُمْ شِرْكٌ بِاللَّهِ لَئِن لَّمْ يَظْهَرْ لَهُمْ
آيَاتُنَا بِمَا يَكْفُرُونَ

17. ताकि उन की परीक्षा ले इस में, और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से, तो उसे उस का पालनहार भस्त् करेगा कड़ी यातना में।

لَنَقْبِضَنَّ مِنْهُم مَّن مِّنْ يَّغْفِرُ لَهُمْ عَنْ ذُنُوبِهِمْ
يَسْلُبُكَ اللَّهُ الْبَاطِلَ

18. और यह कि मस्जिदें¹ अल्लाह के लिये हैं। अन् मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ
أَحَدًا

19. और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का

وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا

1 मस्जिद का अर्थ सज्द करने का स्थान है। भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की इबादन तथा उस के सिवा किसी से प्रार्थना तथा विनय करना अवैध है।

भक्त¹ उसे पुकारता हुआ तो समीप
था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते।

يَكُونُونَ عَلَيْهِ يَدًا ۝

20. आप कह दें कि मैं तो केवल अपने
पालनहार को पुकारता हूँ। और माझी
नहीं बनाता उस का किसी अन्य को।

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝

21. आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं
रखता तुम्हारे लिये किसी हानि का न
सीधी राह पर लगा देने का।

قُلْ إِنِّي لَا أَمْنُكُمْ لَكُمْ فَرَّارٌ وَلَا رَسَدًا ۝

22. आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं
बचा सकेगा अल्लाह से कोई² और
न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई
शरणगार (बचने का स्थान)।

قُلْ إِن لَّنْ يُجِيبَنَّ مِنَ الْمَلَأِ أَحَدٌ وَلَكِنْ أَجِدُ
مِنْ دُونِهِ مُلْتَحِدًا ۝

23. परन्तु पहुँचा सकता हूँ अल्लाह का
आदेश तथा उस का उपदेश। और
जो अवैजा करेगा अल्लाह तथा उस के
रसूल की तो वास्तव में उसी के लिये
नरक की अग्नि है जिस में वह नित्य
सदावासी होगा।

إِلَّا هَلَعًا مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَنْ يَفْعَسْ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا
بِهَا أَبَدًا ۝

24. यहाँ तक कि जब देख लेंगे जिस का
उन्हें वचन दिया जाता है तो उन्हें
विश्वास हो जायेगा कि किस के
सहायक निर्बल और किस की संख्या
कम है।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَسْمَعُونَ مِمَّنْ
أُخْفِيَ نَجْمًا وَاقِلًا عَصَا ۝

25. आप कह दें कि मैं नहीं जानता कि
समीप है जिस का वचन तुम्हें दिया
जा रहा है अथवा बनायेगा मेरा

قُلْ إِن أَدْرِيقَ أَقْرَبُ مَا تُوعَدُونَ
أَمْ يَحْسُدُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝

1 अल्लाह के भक्त से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा
भावार्थ यह है कि जिन्न तथा मनुष्य मिल कर कुर्आन तथा इस्नाम की राह से
रोकना चाहते हैं।

2 अर्थात् यदि मैं उस की अवैजा करूँ और वह मुझे यातना देना चाहें।

पालनहार उस के लिये कोई अवधि?

26. वह गैब (परोक्ष) का ज्ञानी है अतः वह अवगत नहीं कराता है अपने परोक्ष पर किसी को।

27. सिवाये रसूल के जिसे उस ने प्रिय बना लिया है फिर वह लगा देता है उस वही के आगे तथा उस के पीछे रक्षक।¹

28. ताकि वह देख ले कि उन्होंने पहुँचा दिये हैं अपने पालनहार के उपदेश।² और उस ने घेर रखा है जो कुछ उन के पास है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखा है।

غَيْرِ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا ۝

إِلَّا مَنِ امْتَضَىٰ مِنْ رَّسُولٍ فَإِنَّهُ يُمَكِّنْ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَحْمَةً ۝

لِيَعْلَمَ أَنَّ قَدْ آتَيْنَا رُسُلَنَا بُرْهَانَ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَخْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

- 1 अर्थात् गैब (परोक्ष) का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। किन्तु यदि धर्म के विषय में कुछ परोक्ष की बातों की वही अपने किसी रसूल की ओर करता है तो फरिश्तों द्वारा उस की रक्षा की व्यवस्था भी करता है ताकि उस में कुछ मिलाया न जा सके। रसूल को जितना गैब का ज्ञान दिया जाता है वह इस आयत से उजागर हो जाता है। फिर भी कुछ लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पूरे गैब का ज्ञानी मानते हैं। और आप को सुहारते और सब जगह उपस्थित कहते हैं और तौहीद को आघात पहुँचा कर शिर्क करते हैं।

- 2 अर्थात् वह रसूलों की दशा को जानता है। उस ने प्रत्येक चीज का गिन रखा है ताकि रसूलों के उपदेश पहुँचाने में कोई कमी और अधिकता न हो। इसलिये लोगों को रसूलों की बातें मान लेनी चाहियें।

सूरह मुज्जम्मिल - 73

سورة المزمّل

सूरह मुज्जम्मिल के सक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को 'अल मुज्जम्मिल' (चादर ओढ़ने वाला) कह कर संबोधित किया गया है जो इस सूरह का यह नाम रखे जाने का कारण है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रात्री में नमाज पढ़ने का निर्देश दिया गया है। और इस का लाभ बताया गया है। और विरोधियों की बातों को सहन करने और उन के परिणाम को बताया गया है।
- मक्का के काफिरों को सावधान किया गया है कि जैसे फिरऔन की ओर हम ने रसूल भेजा वैसे ही तुम्हारी ओर रसूल भेजा है। तो उस का जो दुष्परिणाम हुआ उस से शिक्षा लो अन्यथा कुफ़र के परलोक की यातना से कैसे बच सकोगे?
- और इस सूरह के अन्त में, रात्री में नमाज का जो आदेश दिया गया था, उसे सरल कर दिया गया। इसी प्रकार लस में फर्ज (अनिवार्य) नमाजों के पालन तथा जकात देने के आदेश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 हे चादर ओढ़ने वाले!
2. खड़े रहो (नमाज में) रात्री के समय
परन्तु कुछ ' समय।

يَا أَيُّهَا الْمَزْمِلُ

ثُمَّ الْقِيلَ لَا ظِلَّ لَكَ

- 1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात में इतनी नमाज पढ़ने थे कि आप के पैर सूज जाते थे। आप से कहा गया 'ऐसा क्या करते हैं?' जब कि अल्लाह ने आप के पहले और पिछले गुनाह क्षमा कर दिये हैं। आप ने कहा 'क्या मैं उस का कृतज्ञ भक्त न बनूँ?' (बुखारी: 1130 मुस्लिम: 2819)

3. (अर्थात्) आधी रात अथवा उस से कुछ कम।
4. या उस से कुछ अधिक, और पड़ो कुर्आन रुक-रुक कर।
5. हम उतारेंगे (हे नबी!) आप पर एक भारी बात (कुर्आन)।
6. वास्तव में रात में जो इबादन होती है वह अधिक प्रभावी है (मन को) एकाग्र करने में। तथा अधिक उचित है बात (प्रार्थना) के लिये।
7. आप के लिये दिन में बहुत से कार्य हैं।
8. और स्मरण (याद) करें अपने पालनहार के नाम की, और सब से अलग हो कर उसी के हो जायें।
9. वह पूर्व तथा पश्चिम का पालनहार है। नहीं है कोई पूज्य (बंदनीय) उस के सिवा, अतः उसी को अपना करना धरता बना ले।
10. और सहन करें उन बातों को जो वे बना रहे हैं।" और अलग हो जायें उन से सुशीलता के साथ।
11. तथा छोड़ दें मुझे तथा झुठलाने वाले सुखी (सम्पन्न) लोगों को। और उन्हें अवसर दें कुछ देर।
12. वस्तुतः हमारे पास (उनके लिये) बहुत सी बेड़ियाँ तथा दहकती आग्न है।
13. और भोजन जो गले में फस जाये

نُصْفَةَ الْوَيْلِ وَمِثْلَ نَفْثَةٍ ۝

أَوْ يَدُ عَلَيْهِ وَدَرِي لِقُرْآنٍ تَرْتِيلًا ۝

إِنَّا سُلِّقَ عَلَيْكَ قَوْلًا تَنْتِيلًا ۝

إِنَّ تِلْكَ لَآيَاتُ الْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝
فَيْلًا ۝

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَمْعًا وَخَوِيلًا ۝

وَإِذْ كُنَّا نَمُورُ بِكَ وَنَعْمَلُ لَيْلَةً تَنْتِيلًا ۝

رَبِّكَ لَشَرِّ الْمُنْعَرِفِينَ ۝
فَيْلًا ۝

وَأَصْبَحَ عَلَى مَا يَقُولُونَ ۝
فَيْلًا ۝

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ ۝
فَيْلًا ۝

إِنَّ لَدُنَّا أَعْجَالَ وَخَيْلًا ۝

وَمَا ذَا غَضِبِ رَبِّي إِلَّا يَسِيرًا ۝

1 अर्थात् आप के तथा सत्धर्म के विरुद्ध।

और दुःखदायी यातना है।

14. जिस दिन काँपेगी धरती और पर्वत, तथा हो जायेंगे पर्वत धुरधुरी रेत के ढेर।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَيْسَاتٍ مَثَلًا

15. हम ने भेजा है तुम्हारी ओर एक रसूल¹ तुम पर गवाह (साक्षी) बना कर जैसे भेजा फिरऔन की ओर एक रसूल (मूसा) को।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ قَسًا الرَّسُولُ فِي مَوْجُودٍ رَسُولًا

16. तो अवैज्ञा की फिरऔन ने उस रसूल की और हम ने पकड़ लिया उस को कड़ी पकड़।

فَقَصَى فِرْعَوْنُ لِرَسُولٍ وَاتَّخَذَهُ أُخِيًّا

17. तो कैसे बचोगे यदि क़ुफ़ किया तुम ने उस दिन से जो बना देगा बच्चों को (शोक के कारण) बूढ़ा?

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمَ يَجْعَلُ الْيَوْلَانِ شِجَابًا

18. आकाश फट जायेगा उस दिन। उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।

سَمَاءٌ مُّقْطِرَةٌ كَانَتْ وَعْدُهُ مَعْمُولًا

19. वास्तव में यह (आयतें) एक शिक्षा हैं। तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर राह बना ले।²

إِنْ هَذِهِ تَذَكُّرَةٌ - قَسَمَ شَاءَ الْمُحَدِّثُ إِلَى رَبِّهِ سَبِيلًا

20. निःसन्देह आप का पालनहार जानता है कि आप खड़े होते हैं (नहज्जूद की नमाज के लिये) दो तिहाई रात्री के लग-भग, तथा आधी रात और तिहाई रात तथा एक समूह उन लोगों का जो आप के साथ है और

إِنْ رَبِّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَى مِنْ ثُلَاثِي اللَّيْلِ وَبُضْعَهُ وَثُلَاثَهُ وَطَائِفَةٌ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصَوْهُ فَتَاتَ عَلَيْكُمْ فَاذْكُرُوا مَا تَتْلُونَ مِنَ الْقُرْآنِ عَلَيْهِمْ أَنْ سَيَكُونُ

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को गवाह होने के अर्थ के लिये। (देखिये सूरह बकरा आयत: 143, तथा सूरह हज्ज आयत: 78) इस में चेतावनी है कि यदि तुम ने अवैज्ञा की तो तुम्हारी दशा भी फिरऔन जैसी होगी

2 अर्थात् इन आयतों का पालन कर के अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त कर लो

अब्राह्म ही हिमात्र रखता है रात तथा दिन का। वह जानता है कि तुम पूरी रात नमाज के लिये खड़े नहीं हो सकोगे। अतः उस ने दया कर दी तुम पर। तो पढ़ो जितना सरल हो कुरआन में से।¹ वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी होंगे और कुछ दूसरे यात्रा करेंगे धरती में खोज करते हुये अब्राह्म के अनुग्रह (जीविका) की, और कुछ दूसरे युद्ध करेंगे अब्राह्म की राह में, अतः पढ़ो जितना सरल हो उस में से तथा स्थापना करो नमाज की और जकात देने रहो, और ऋण दो अब्राह्म को अच्छा ऋण।² तथा जो भी आगे भेजांगे भलाइ में से तो उसे अब्राह्म के पास पाओगे। वही उत्तम और उस का बहुत बड़ा प्रतिफल होगा और क्षमा मांगते रहो अब्राह्म से, वास्तव में वह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَسَلُّوا قُرْآنًا وَالْغُرُوثَ يُصَيِّرُونَ فِي الْأَرْضِ
يَجْتَنِفُونَ مِنْ قُلُوبِ اللَّهِ وَالْأَعْرُوثَ
يُعَابِتُونَ فِي سُبُحِ اللَّهِ قَائِرَةً وَآ
مَنْ تَشَرَّعَ مِنْهُ وَأَقْبَمُوا قَسْوَةً وَالْزُكُوتَ
وَالْأَشْرَافَ وَاللَّهُ قَرِيبٌ حَسَنًا وَالْأَشْرَافَ
لِأَنْفُسِكُمْ مَنْ خَيْرٌ نَجْدَةٌ عِنْدَ اللَّهِ
هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا وَاسْتَعْمِرُوا اللَّهَ
إِنْ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

- 1 कुरआन पढ़ने से अभिप्राय तहज्जुद की नमाज है। और अर्थ यह है कि रात्री में जितनी नमाज हो सके पढ़ लो, हदीस में है कि भक्त अब्राह्म के मन्त्र से समीप अन्तिम रात्री में होता है। तो तुम यदि हो सके कि उस समय अब्राह्म को याद करो तो याद करो (तिर्मिजी: 3579, यह हदीस सहीह है।)
- 2 अच्छे ऋण से अभिप्राय अपने उचित साधन से अर्जित किये हुये धन को अब्राह्म की प्रसन्नता के लिये उस के मार्ग में खर्च करना है। इसी को अब्राह्म अपने ऊपर ऋण करार देता है। जिस का बदला वह सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी अधिक प्रदान करेगा।
(देखिये सूरह बकरा आयत 261)

सूरह मुद्स्सिर - 74

سورة المدثر

सूरह मुद्स्सिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 56 आयत हैं।

- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ((अल मुद्स्सिर)) कह कर संबोधित किया गया है। अर्थात् चादर ओढ़ने वाले। इस लिये इस को यह नाम दिया गया है। और आप को सावधान करने का निर्देश देते हुये अच्छे स्वभाव तथा शुभकर्म की शिक्षा दी गई है।
- आयत 11 से 31 तक कुरैश के प्रमुखों को जो इस्लाम का विरोध कर रहे थे नरक की यातना की धमकी दी गई है। तथा 32 से 48 तक परलोक के बारे में चेतावनी है।
- अन्त में कुर्आन के शिक्षा होने को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि धात दिल में उतर जाये।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे चादर ओढ़ने ' वाले।
2. खड़े हो जाओ, फिर सावधान करो।

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ

قُمْ فَأَنْذِرْ

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रथम वही के पश्चान् कुछ दिनों तक वही नहीं आई। फिर एक बार आप जा रहे थे कि आकाश से एक आवाज सुनी। ऊपर देखा तो वही फरिश्ता जो आप के पास रहता, गुफा में आया था आकाश तथा धरती के बीच एक कुर्सी पर विराजमान था। जिस से आप डर गये। और धरती पर गिर गये। फिर घर आये, और अपनी पत्नी से कहा: मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उस ने चादर ओढ़ा दी। और अल्लाह ने यह सूरह उतारी। फिर निरन्तर वही आने लगी। (सहीह बुखारी: 4925, 4926, सहीह मुस्लिम: 161) प्रथम वही से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नबी बनाया गया। और अब आप पर धर्म के प्रचार का भार रख दिया गया। इन आयतों में आप के माध्यम से मुसलमानों को पवित्र रहने के निर्देश दिये गये हैं।

3. तथा अपने पालनहार की महिमा का वर्णन करो।
4. तथा अपने कपड़ों को पवित्र रखो।
5. और मलीनता को त्याग दो।
6. तथा उपकार न करो इसलिये कि उस के द्वारा अधिक लो।
7. और अपने पालनहार ही के लिये सहन करो।
8. फिर जब फूँका जायेगा¹ नरसिंघा में
9. तो उस दिन अति भीषण दिन होगा।
10. काफिरों पर सरल न होगा।
11. आप छोड़ दें मुझे और उसे जिस को मैं ने पैदा किया अकेला।
12. फिर दे दिया उसे अत्यधिक धन।
13. और पुत्र उपस्थित रहने² वाले।
14. और दिया मैं ने उसे प्रत्येक प्रकार का संसाधन
15. फिर भी वह लोभ रखता है कि उसे और अधिक दूँ।
16. कदापि नहीं। वह हमारी आयतों का विरोधी है।
17. मैं उसे चढ़ाऊँगा कड़ी³ चढ़ाई।

وَرَبِّكَ تَكْبَرُ

فَصَبِّحْ بِكَ فُطَاهِرٌ

وَالزُّجُرُفُ فَهْوَرٌ

وَلَا تُسْأَلُ تَسْكِينُ

وَلِرَبِّكَ لَا صَبِيرٌ

فَإِذَا نُفِثَ لَكَ نُفُورٌ

فَمِنْكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ

عَلَى الْكِبَرِيِّينَ عَيْدٌ يَسِيرٌ

وَأَرْبَابٌ مِّنْ خَلْقٍ وَجِيدٍ

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا

وَبَنِينَ شُهُودًا

وَمَهْدُكُ لَهُ تَنْهِيَةٌ

لَعَنَ نَظْمَهُ أَنْ أَرِيدَ

كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِإِنسِنَا عَمِيدًا

سَأَرْفَعُهُ صَعُودًا

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 जो उस की सेवा में उपस्थित रहते हैं। कहा गया है कि इस से अभिप्राय वलीद पुत्र मृगीरा है जिस के दस पुत्र थे।

3 अर्थात् कड़ी यातना दूँगा। (इब्ने कसीर)

18. उस ने विचार किया और अनुमान लगाया।¹ رَبُّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۖ
19. वह मारा जाये! फिर उस ने कैसा अनुमान लगाया? فَتَقَرَّنَ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ
20. फिर (उस पर अल्लाह की) मार! उस ने कैसा अनुमान लगाया? ثُمَّ قِيلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ
21. फिर पुनः विचार किया। ثُمَّ تَقَرَّرَ ۖ
22. फिर माथे पर बल दिया और मुँह बिदोरा। ثُمَّ عَمَّرَ وَبَسَّرَ ۖ
23. फिर (मृत्यु से) पीछे फिरा और घमंड किया ثُمَّ أَذْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۖ
24. और बोला कि यह तो पहले से चना आ रहा एक जादू है।² فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا جَعْرٌ يُؤْشَرُ ۖ
25. यह तो बस मनुष्य³ का कथन है। إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۖ
26. मैं उसे शीघ्र ही नरक में झोंक दूंगा। سَاطِعِينَ يَنْقَرُونَ ۖ
27. और आप क्या जानें कि नरक क्या है। وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ۖ
28. न शेष रखेगी, और न छोड़ेगी। لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ۖ
29. वह खाल झुलसा देने वाली। لَوَاحٍ لِّلْبَشَرِ ۖ
30. नियुक्त है उन पर उन्नीस (रक्षक फरिश्ते)। عِوَاهًا ثَمَّةً عَشْرَ ۖ
31. और हम ने नरक के रक्षक फरिश्ते وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ الْمُنَى لَأَمْنًا ۖ

1 कुर्आन के सबन्ध में प्रश्न किया गया तो वह सोचने लगा कि कौन सी बात बनाये और उस के बारे में क्या कहे? (इन्ने कस्मीर)

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह किसी से सीख लिया है कहा जाता है कि वलीद पुत्र मुगीरा ने अबू जह्ल से कहा था कि लोगों में कुर्आन के जादू हाने का प्रचार किया जाये।

3 अर्थात् अल्लाह की वाणी नहीं है।

ही बनाये हैं। और उन की सख्या को काफिरों के लिये परीक्षा बना दिया गया है। ताकि विश्वास कर ले अहले^[1] किताब, और बड़ जायें जो ईमान लाये हैं ईमान में। और संदेह न करें जो पुस्तक दिये गये हैं और ईमान वाले। और ताकि कहें वे जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है तथा काफिर² कि क्या तात्पर्य है अब्राह का इस उदाहरण से? ऐसे ही कुपध करता है अब्राह जिसे चाहता है, और समार्ग दर्शाता है जिसे चाहता है। और नहीं जानता है आप के पालनहार की सेनाओं को उस के मिवा कोड़ और। तथा नहीं है यह (नरक की चर्चा) किन्तु मनुष्य की शिक्षा के लिये।

وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا جُنَّةً لِلدِّينِ كَفَرُوا
يَسْتَفِيقُونَ الدِّينِ أُولَئِكَ الْكِتَابُ وَزَادَ الدِّينِ
أَمْنًا وَإِيمَانًا وَلَا تَرْجَبُوا الدِّينِ أُولَئِكَ الْكِتَابُ
وَالْمُؤْمِنُونَ وَلَيَقُولَنَّ الدِّينِ فِي قُلُوبِهِمْ تَرْضَى
وَالْكُفْرُ وَمَا أَرَادَ اللَّهُ بِهِمْ امْتَلَأَ
كُدَيْتُ يُصَلُّ اللَّهُ مِنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ
يَشَاءُ وَمَا يَفْلَحُ حُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ
وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلنَّبِيِّينَ

32. ऐसी बात नहीं शपथ है चांद की।
33. तथा रात्री की जब व्यतीत होने लगे।
34. और प्रातः की जब प्रकाशित हो जाये।
35. वास्तव में (नरक) एक^[3] बहुत बड़ी चीज है
36. डराने के लिये लोगों को।

كَلَّا وَالْقَمَرِ

وَاللَّيْلِ إِذَا يَجِيءُ

وَالطُّلُوعِ إِذَا تَفَرَّقَ

إِنَّمَا الْإِنشَاءُ الْكَبِيرُ

نَجَائِزُ النَّبِيِّينَ

- 1 क्योंकि यहूदियों तथा ईसाइयों की पुस्तकों में भी नरक के अधिकारियों की यही सख्या बताई गई है।
- 2 जब कुरैश ने नरक के अधिकारियों की चर्चा सुनी तो अबू जहल ने कहा हे कुरैश के समूह! क्या तुम में से दस-दस लोग एक-एक फरिश्ते के लिये काफी नहीं हैं? और एक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था कहा कि 17 को मैं अकेला देख लूंगा। और तुम सब मिल कर दो का देख लेना। (इब्ने कसीर)
- 3 अर्थात् जैसे रात्री के पश्चात् दिन होता है उसी प्रकार कर्मों का भी परिणाम सामने आना है और दुष्कर्मों का परिणाम नरक है।

37. उस के लिये तुम में से जो चाहे¹
आगे होना अथवा पीछे रहना।

38. प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों के बदले में
बंधक है।²

39. दाहिने वालों के सिवा।

40. वह स्वर्गों में होंगे, वह प्रश्न करेंगे।

41. अपराधियों से।

42. तुम्हें क्या चीज ले गई नरक में।

43. वह कहेंगे हम नहीं थे नमाजियों में से।

44. और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को।

45. तथा कुरेद करने थे कुरेद करने वालों
के साथ,

46. और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल
के दिन (प्रलय) को।

47. यहाँ तक की हमारी मौन आ गई।

48. तो उन्हें लाभ नहीं देगी सिफारिशियों
(अभिस्तावकों) की सिफारिश।³

49. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस
शिक्षा (कुर्आन) से मुँह फेर रहे है।

50. मानो वह (जंगली) गधे है विदकाये हुये।

51. जो शिकारी से भागे है।

إِنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوِ يَتَأَخَّرَ ۚ

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۖ

إِلَّا الْغَافِلِينَ ۖ

فِي جَنَّاتٍ يَمْشَىٰ فِيهَا نَوَارٌ ۖ

عَنِ الْمَغْرُمِينَ ۖ

مَا سَلَكَ فِي سَقَرٍ ۖ

قَالُوا لَوْلَا رَبُّنَا مِنَ الْمُجْرِمِينَ ۖ

وَلَوْ تَذَكَّرْتُمْ لَتَعْلَمُوا السَّيِّئِينَ ۖ

وَكُنَّا ظُفُرًا مَعَ الْخَائِضِينَ ۖ

وَكُنَّا ثُلُثًا مِّنْ يَّوْمِ الدِّينِ ۖ

حَتَّىٰ أَصَابَ الْيَوُسُفَ ۖ

فَمَا تَسْمَعُ لَهُمْ شَفَاعَةً أَشْفَعِينَ ۖ

فَمَا لَهُمْ عَلَى التَّذْكَرَةِ مُقِرُّونَ ۖ

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَمِيرَةٌ ۖ

فَرَّتْ مِنْ قَبْرَةٍ ۖ

1 अर्थात् आज्ञा पालन द्वारा अग्रसर हो जाये अथवा अवैजा कर के पीछे रह जाये।

2 यदि सन्कर्म किया तो मुक्त हो जायेगा।

3 अर्थात् नबियों और फरिश्तों इत्यादि की। किन्तु जिस से अल्लाह प्रसन्न हो और उस के लिये सिफारिश की अनुमति दे।

52. वल्कि चाहता है प्रत्येक व्यक्ति उन में से कि उसे खुनी¹ पुस्तक दी जाये।
53. कदापि यह नहीं (हो सकता) वल्कि वह आखिरत (परलोक) से नहीं डरते हैं।
54. निश्चय यह (कुरआन) तो एक शिक्षा है।
55. अब जो चाहे शिक्षा ग्रहण करे।
56. और वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकने परन्तु यह कि अल्लाह चाह ले। वही योग्य है कि उस से डरा जाये और योग्य है कि क्षमा कर दे।

بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمۡ اَنْ يُؤْتٰٓهُ سِخْرٰٓةً
مِّنْ سَمٰوٰتٍ ۚ

كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۚ

كَلَّا بَلْ هٰٓؤُلَآءِ تَذٰكِرَةٌ ۚ

فَمَنْ شَاءَ ذَكِّرْهُ ۚ

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّا اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ فَاَعْلٰمُ
السَّغُوْرَةِ ۚ

1 अर्थात् वे चाहते हैं कि प्रत्येक के ऊपर वैसे ही पुस्तक उतारी जाये जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई है। तब वे ईमान लायेंगे। (इब्ने कमीर)

सूरह कियामा - 75

سورة القيامة

सूरह कियामा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 40 आयतें हैं

- इस की प्रथम आयत में क्वामन (प्रलय) की शपथ ली गई है जिस से इस का नाम 'सूरह कियामा' है।
- इस में प्रलय के निश्चित होने का वर्णन करते हुये सदैहों को दूर किया गया है। और उस की कुछ स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बह्नी ग्रहण करने के विषय में कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 20 से 25 तक विरोधियों को मायामोह पर चेतावनी देते हुये प्रलय के दिन सदाचारियों की सफलता तथा दुर्गचारियों की विफलता दिखाई गई है।
- आयत 26 में मौत की दशा दिखाई गई है।
- आयत 31 से 35 तक प्रलय को न मानने वालों की निन्दा की गई है।
- अन्त में फिर जीवित किये जाने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 मैं शपथ लेता हूँ क्वामन (प्रलय) के दिन¹ की।
- 2 तथा शपथ लेता हूँ निन्दा² करने वाली अन्तरात्मा की।

لَا أُفْسِدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

وَلَا أَفْسِدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

- 1 किसी चीज की शपथ लेने का अर्थ होता है उस का निश्चिन् होना। अर्थात् प्रलय का होना निश्चित है।
- 2 मनुष्य के अन्तरात्मा की यह विशेषता है कि वह बुराई करने पर उस की निन्दा करती है।

3. क्या मनुष्य समझता है कि हम एकत्र नहीं कर सकेंगे दोबारा उस की अस्थियों को?

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ نَجْمَعَهُ عَظَامَهُ ۚ

4. क्यों नहीं? हम सामर्थ्यवान हैं इस बात पर कि सीधी कर दें उस की ऊंगलियों की पोर पोर।

بَلْ عَدِيدٌ عَلَيْنَا أَنْ نَسْوِيَهُنَّ بَنَاتٍ ۚ

5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि वह कुकर्म करना रहे अपने आगे¹ भी।

بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۚ

6. वह प्रश्न करना है कि कब आना है प्रलय का दिन?

يَسْأَلُ أَتَىٰ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ

7. तो जब चूर्धया जायेगी आँखा।

فَإِذَا ابْرَءَى الْبَصَرُ ۚ

8. और गहना जायेगा चाँद।

وَحُفَّتِ الْقَمَرُ ۚ

9. और एकत्र कर दिये² जायेंगे सूर्य और चाँद।

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ

10. कहेगा मनुष्य उस दिन कि कहाँ है भागने का स्थान?

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْزِعُ ۚ

11. कदापि नहीं, कोई शरणागार नहीं।

كَلَّا لَا ذُرَّةَ ۚ

12. तेरे पालनहार की ओर ही उस दिन जा कर सकना है।

وَلِي رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۚ

13. सूचित कर दिया जायेगा मनुष्य को उस दिन उस से जो उस ने आगे भेजा तथा जो पीछे³ छोड़ा।

يُنْفَخُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۚ

14. बल्कि मनुष्य स्वयं अपने विरुद्ध एक

بَلَىٰ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ يَصِيدُ ۚ

1 अर्थात् वह प्रलय तथा हिसाब का इन्कार इमालिये है ताकि वह पूरी आयु कुकर्म करता रहे।

2 अर्थात् दोनों पश्चिम से अंधरे हो कर निकलेंगे।

3 अर्थात् संसार में जो कर्म किया और जो करना चाहिये था फिर भी नहीं किया।

खुला¹, प्रमाण है।

15. चाहे वह कितने ही बहाने बनाये।

وَلَوْ أَنفَىٰ مَعَادِيرَهُ ۖ

16. हे नबी! आप न हिलाये² अपनी जुबान, तार्कि शीघ्र याद कर लें इस कुर्आन को।

لَا تُخَوِّدْ بِهِ سَانَكَ لِتُفْجَسَ بِهِ ۖ

17. निश्चय हम पर है उसे याद कराना और उस को पढ़ाना।

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۖ

18. अतः जब हम उसे पढ़ लें तो आप उस के पीछे पड़ें।

فَإِذَا قَرَأَهُ فَأَنشِدْهُ قُرْآنًا ۖ

19. फिर हमारे ही ऊपर है उस का अर्थ बताना।

تَعْرَاقَ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۖ

20. कदापि नहीं³, बल्कि तुम प्रेम करने हो शीघ्र प्राप्त होने वाली चीज (संसार) से।

كَذَٰلِكَ يُخَيِّتُونَ لِمَا حِلٍّ ۖ

21. और छोड़ देने हो परलोक को।

وَكَذَٰلِكَ يُزَوِّنُ الْأَمْرَةَ ۖ

22. बहुत से मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे।

وَجُوهٌ يُّوَسِّمُهَا إِفْرَةٌ ۖ

23. अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे।

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۖ

24. और बहुत से मुख उदाम होंगे।

وَوُجُوهٌ يُؤَسِّمُهَا بُرْءٌ ۖ

25. वह समझ रहे होंगे कि उन के साथ कड़ा व्यवहार किया जायेगा।

تَنْظُرُ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۖ

1 अर्थात् वह अपने अपराधों को स्वयं भी जानना है क्योंकि पापी का मन स्वयं अपने पाप की गवाही देता है।

2 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरिश्ते जिब्रील से वही पूरी होने से पहले इस भय से उसे दुहराने लगते कि कुछ भूल न जाये। उसी पर यह आयत उतरती। (सहीह बुखारी: 4928 4929)
इसी विषय को मूरह ताहा तथा मूरह आला में भी दुहराया गया है।

3 यही से बात फिर काफ़रों की ओर फिर रही है।

26. कदापि नहीं¹, जब पहुँचेगी प्राण
हंसलियों (गलों) तक।

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ لَأْرَاقِي ۝

27. और कहा जायेगा कौन झाड़ फूंक
करने वाला है?

تَقِيلَنَّ مَنْ رَاقِي ۝

28. और विश्वास हो जायेगा कि यह
(संसार में) जुदाई का समय है।

وَأَمَّا أَنَّهُ لَيُّرَاقِي ۝

29. और मिल जायेगी पिंडुली- पिंडुली² में।

وَالطَّلَبُ النَّاسُ بِالصَّاقِي ۝

30. तेरे पालनहार की ओर उसी दिन
जाना है।

لِذَلِكَ يَوْمَئِذٍ يَكْسَا ۝

31. तो न उस ने मृत्यु को माना और न
नमाज पढ़ी

فَلَا مَلَأَتْ وَلَا مَلَأَتْ ۝

32. किन्तु झुठलाया और मुँह फेर लिया।

وَلَا حُكْنَ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝

33. फिर गया अपने परिजनों की ओर
अकड़ता हुआ।

فَكَذَّبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَشَّى ۝

34. शोक है तेरे लिये फिर शोक है।

أَوَّلَ لَكَ فَأَوَّلَ ۝

35. फिर शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।

فَكَذَّبَ لَكَ فَأَوَّلَ ۝

36. क्या मनुष्य समझता है कि वह छोड़
दिया जायेगा व्यर्थ? ³

يَخَسِبُ لِأَن يُتْرَكَ سُوءِي ۝

37. क्या वह नहीं था वीर्य की बूंद जो
(गर्भाशय में) बूंद-बूंद गिराई जानी है?

أَلَمْ يَكُنْ لَّطَفَةً مِّنْ مَّيْتِي يُسْمَى ۝

38. फिर वह बंधा रक्त हुआ, फिर

فَكَانَ عَظْمًا مَّحْمَقًا فَتَوَى ۝

1 अर्थात् यह विचार सहीह नहीं कि मौत के पश्चात् सड़-गल जायेंगे और दोबारा जीवन नहीं किये जायेंगे। क्योंकि आत्मा रह जाती है जो मौत के साथ ही अपने पालनहार की ओर चली जानी है।

2 अर्थात् मौत का समय आ जायेगा जो निरन्तर दुख का समय होगा। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् न उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा और न रोका जायेगा और न उस से कर्मों का हिस्सा लिया जायेगा।

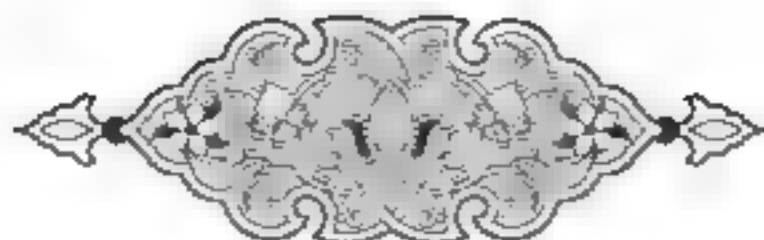
अल्लाह ने उसे पैदा किया और उसे
बराबर बनाया।

39. फिर उस का जोड़ा: नर और नारी
बनाया।

40. तो क्या वह सामर्थ्यवान नहीं कि मूर्तों
को जीवित करे दे?

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۝٣٩

أَلَيْسَ ذِيكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ
الْمَوْتَىٰ ۝٤٠



सूरह दहर - 76

سورة الدھر

सूरह दहर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 31 आयतें हैं।

- इस सूरह में यह शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह दहर) है इस का दूसरा नाम (सूरह इन्मान) भी है। दहर का अर्थ: ((युग)) है।
- इस में मनुष्य की उत्पत्ति का उद्देश्य बताया गया है। और काफ़िरों के लिये कड़ी यातना का एलान किया गया है।
- आयत 5 से 22 तक सदाचारियों के भारी प्रतिफल का वर्णन है और 23 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य नमाज तथा तस्वीह का निर्देश दिया गया है। इस के पश्चात् उन को चेतावनी दी गई है जो परलोक में अचेत हो कर मायामोह में लिप्त है।
- अन्त में कुर्आन की शिक्षा मान लेने की प्रेरणा दी गई है। ताकि लोग अल्लाह की दया में प्रवेश करें। और विरोधियों को दुःखदायी यातना की चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर युग का एक समय जब वह कोई विचर्चित¹ वस्तु न था?
2. हम ने ही पैदा किया मनुष्य को मिश्रित (मिले हुये) वीर्य² से, ताकि उस की परीक्षा लें। और बनाया उसे सुनने तथा देखने वाला।

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّكَرُورًا

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاقٍ نَّبْتَلِيهِ
فَعَلَّمَهُ سُبُوحًا وَإِشْرَافًا

1 अर्थात् उस का कोई अस्तित्व न था।

2 अर्थात् नर नारी के मिश्रित वीर्य से।

3. हम ने उसे राह दर्शा दी।¹ (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।

إِنَّا هَدَيْنَاهُ سَبِيلَيْنِ، فَاتَّبَعِ لَؤَاكُمُ الْيَقِينُ ۖ

4. निःसंदेह हम ने तय्यार की है काफ़िरो (कृतघ्नों) के लिये जंजीर तथा तौक और दहकती अग्नि।

إِنَّا أَنْعَمْنَا عَلَى الْكَافِرِينَ، فَيُلَاقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۖ

5. निश्चय सदाचारी (कृतज्ञ) पियेंगे ऐसे प्याले से जिस में कफूर मिश्रित होगा।

وَالْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۖ

6. यह एक स्रोत होगा जिस से अब्राह के भक्त पियेंगे। उसे बहा ले जायेंगे (जहाँ चाहेंगे)।²

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۖ

7. जो (संसार में) पूरी करते रहे मनौतियाँ³ और डरते रहे उस दिन से⁴ जिस की आपदा चारों ओर फैली हुयी होगी।

يَوْمَئِذٍ يَصْعَدُ الْمَلَأُونَ يَوْمًا كَانَتْ إِتْرَافًا ۖ

8. और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद, निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।

وَالْمُؤْمِنُونَ لَكُمْ مَرْغُوبَاتٌ حَيْثُ مَسَّكُنَا وَيَوْمَئِذٍ

9. (अपने मन में यह सोच कर) हम तुम्हें भोजन कराते हैं केवल अब्राह की प्रसन्नता के लिये। तुम से नहीं चाहते हैं कोई बदला और न कोई कृतज्ञता।

إِنَّمَا نَطْعُمُكُمْ لِيُحْمَدَ لِلَّهِ أَمْرُكُمْ وَمِنْكُمْ جِرَارٌ ۖ وَلَا تَسْكُرُوا ۖ

10. हम डरते हैं अपने पालनहार से, उस

إِنَّا خَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا فَخُفُّوا فَعَطِرِينَ ۖ

1 अर्थात् नबियों तथा आकाशीय पुस्तकों द्वारा, और दोनों का परिणाम बना दिया गया।

2 अर्थात् उस को जिधर चाहेंगे मोड़ ले जायेंगे। जैसे घर, बैठक आदि।

3 नजर (मनौती) का अर्थ है अब्राह के समिप्य के लिये कोई कर्म अपने ऊपर अनिवार्य कर लेना। और किसी देवी-देवता तथा पीर फकीर के लिये मनौती मानना शिर्क है। जिस को अब्राह कभी भी क्षमा नहीं करेगा। अर्थात् अब्राह के लिये जो भी मनौतीयाँ मानते रहे उसे पूरी करते रहे।

4 अर्थात् प्रलय और हिमाव के दिन से।

दिन से जो अति भीषण तथा घोर होगा।

11. तो बचा लिया अल्लाह ने उन्हें उस दिन की आपदा से और प्रदान कर दिया प्रफुल्लता तथा प्रसन्नता।

وَقَالَهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْبُورِ وَلَهُمْ نَصْرَةٌ
وَمُسْرُورٌ ۝

12. और उन्हें प्रतिफल दिया उन के धैर्य के बदले स्वर्ग तथा रेशमी वस्त्र।

وَجَزَاءُ مَا صَبَرُوا جَنَّةٌ وَحَرِيرٌ ۝

13. वह तकिये लगाये उस में तख्तों पर बैठे होंगे। न उस में धूप देखेंगे न कड़ा शीत।

تُكْوَىٰ فِيهَا عَلَى الْأُتُودِ لَا يَمُوتُونَ فِيهَا
شِمْسٌ وَلَا لَئِبٌ لَّيْلٌ ۝

14. और झुके होंगे उन पर उस (स्वर्ग) के साथ और बस में किये होंगे उस के फलों के गुच्छे पूर्णतः।

وَدَرِيَّةٌ عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ قُلُوبُهُمْ نَذِيرٌ ۝

15. तथा फिराये जायेंगे उन पर चाँदी के ध्वनि तथा प्याले जो शीशों के होंगे।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِأَيِّمٍ مِّنْ بَصُرٍ وَالْوَابُ كَانَ
قُورٌ ۝

16. चाँदी के शीशों के जो एक अनुमान से भरेंगे।¹⁾

قُورٌ يَّرَآؤُنْ بَصُرٍ قَدْ رُفِدَتْ نَقِيرٌ ۝

17. और पिलाये जायेंगे उस में ऐसे भरे प्याले जिस में सौंठ मिली होगी।

وَيَسْقُونَ فِيهَا كَأْسٌ كَانَ مِزَاجُهَا رَٰحِيْمٌ ۝

18. यह एक स्रोत है उस (स्वर्ग) में जिस का नाम सलसबील है।

عَيْنًا فِيهَا تُسْقَىٰ سَلْسَبِيلٌ ۝

19. और (सेवा के लिये) फिर रहे होंगे उन पर सदावामी बालक, जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुये मोती हैं।

وَيُطَوَّلُ عَلَيْهِمْ وَلَدٌ مِّنْ لُّكْدَانٍ إِذَا رَأَيْتَهُمْ
خَسِبَتْهُمْ أَزْوَاجُ الْمُنُورِ ۝

20. तथा जब तुम वहाँ देखोगे तो देखोगे बड़ा सुख तथा भारी राज्य।

وَدَا رَأَيْتَ تَكُونُ رَأَيْتَ نُبِيْمًا وَمِنْكَ كَيْفٌ ۝

1 अर्थात् सेवक उसे ऐसे अनुमान से भरेंगे कि न आवश्यकता से कम होंगे और न अधिक

21. उन के ऊपर रेशमी हरे महीन तथा दबीज वस्त्र होंगे। और पहनाये जायेंगे उन्हें चांदी के कंगन, और पिलायेगा उन्हें उन का पालनहार पवित्र पेय।

عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُدُّوا رُءُوسَهُمْ بِرَشْمٍ
وَحُلُّوا أَسَادِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَسَقَمَهُمْ رُبُّهُمْ شَرَابًا
طَهُورًا ۝

22. (तथा कहा जायेगा): यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया।

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۝

23. वास्तव में हम ने ही उतारा है आप पर कुर्आन थोड़ा - थोड़ा कर¹ को।

إِنَّا نُنَزِّلُ الْقُرْآنَ عَلَيْكَ لَقُرْآنًا فَرِيدًا ۝

24. अतः आप धैर्य से काम लें अपने पालनहार के आदेशानुसार और बात न मानें उन में से किसी पापी तथा कृतघ्न की।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آيَةً أَنْكَرَ لَكُمْ ۝

25. तथा स्मरण करें अपने पालनहार के नाम का प्रातः तथा संध्या (के समय)।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ ثَمْرًا وَوَصَلِّ ۝

26. तथा रात्री में सज्दा करें उस के समक्ष और उस की पवित्रता का वर्णन करें रात्री के लम्बे समय तक।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَمْرًا ۝

27. वास्तव में यह लोग मोह रखते हैं संसार से, और छाड़ रहे हैं अपने पीछे एक भारी दिन² को।

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ
وَرَاءَهُمْ يَوْمًا يُعَذِّبُ ۝

28. हम ने ही उन्हें पैदा किया है और सुदृढ़ किये हैं उन के जोड़-बंद। तथा जब हम चाहें बदला दें उन³ के जैसे (दूसरों को)।

فَمَنْ خَفَّفْنَاهُ وَثَقَّنَاهُ فَلَا رَدَّ بَيْنَنَا
بَدَلًا ۝

1 अर्थात् नबूवत की तेईस वर्ष की अवधि में, और ऐसा क्यों किया गया इस के लिये देखिये सूरह बनी इस्राइल, आयत 106।

2 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

3 अर्थात् इन का विनाश कर के इन के स्थान पर दूसरों को पैदा कर दे।

29. निश्चय यह (सूरह) एक शिक्षा है।
अतः जो चाहे अपने पालनहार की
ओर (जाने की) राह बना ले।

رَبِّ هُدًى مِّنْ ذِكْرِهِمْ تَمَنَّى أَتَأْتُوا اللَّهَ وَلَهُ
سُبُلٌ ۝

30. और तुम अल्लाह की इच्छा के बिना
कुछ भी नहीं चाह सकते।¹ वास्तव
में अल्लाह सब चीजों और गुणों को
जानने वाला है।

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

31. वह प्रवेश देता है जिसे चाहे अपनी
दया में। और अत्याचारियों के लिये
उस ने तय्यार की है दुखदायी
यातना।

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

1 अर्थात् कोई इस बात पर समर्थ नहीं कि जो चाहे कर ले। जो भलाई चाहता हो तो अल्लाह उसे भलाई की राह दिखा देता है।

सूरह मुर्सलात - 77

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

सूरह मुर्सलात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 50 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में मुर्सलात (हवाओं) की शपथ ली गई है इसलिये इस का नाम सूरह मुर्सलात है। इस में झकड़ को प्रलय के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है। फिर प्रलय का भ्यावः चित्र दिखाया गया है।
- आयत 16 से 28 तक प्रतिफल के दिन के होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हुये उस पर सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में क्यामत के झुठलाने वालों को उस दिन जिस दुर्दशा का सामना होगा उस का चित्रण किया गया है। और आयत 41 से 44 तक सदाचारियों के सुफल का चित्रण किया गया है।
- अन्त में झुठलाने वालों की अपराधिक नीति पर कड़ी चेतावनी दी गई है।
- अब्दुल्लाह बिन मसूऊद (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम मिना की वादी में थे। और सूरह मुर्सलात उतरी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसे पढ़ रहे थे और हम उसे आप से सीख रहे थे। (सहीह बुखारी: 4930, 4931)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भेजी हुई निरन्तर धीमी
वायुओं की।

وَالْمُرْسَلَاتِ رُرُقًا ۝

2. फिर झकड़ वाली हवाओं की।

فَالْعَاصِفَاتِ عَصْفًا ۝

3. और बादलों को फैलाने वालियों की! 1

وَالنَّاشِئَاتِ نَشْرًا ۝

4. फिर अन्तर करने 2) वालों की।

فَالْمُفْرِتَاتِ فُرْقًا ۝

1 अर्थात् जो हवायें अल्लाह के आदेशानुसार बादलों को फैलाती हैं।

2 अर्थात् सत्योपमन्य तथा वैध और अवैध के बीच अन्तर करने के लिये आदेश लाते हैं।

- 5 फिर पहुँचाने वालों की वही
(प्रकाशना¹⁾) को! فَأَنصَلِّبَذَٰلِكَ
- 6 क्षमा के लिये अधवा चेतावनी² के
लिये। عَذَابٍ أَوْ تَنْذِيرٍ
- 7 निश्चय जिस का वचन तुम्हें दिया
जा रहा है वह अवश्य आनी है। إِنَّمَا تُوَاعَدُونَ تَوَاقِعٌ
- 8 फिर जब तारे धूमिल हो जायेंगे। فَإِذَا الشُّجُرُ هُتِحَتْ
- 9 तथा जब आकाश खोल दिया जायेगा। وَأِذَا السَّمَاءُ فُتِحَتْ
- 10 तथा जब पर्वत चूर-चूर कर के उड़ा
दिये जायेंगे। وَأِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ
- 11 और जब रसूलों का एक समय
निर्धारित किया जायेगा।³ فَبِذَٰلِكَ الرَّسُولُ أَفْلَحَ
- 12 किस दिन के लिये इस को निलम्बित
रखा गया है? لَا يَأْتِي يَوْمَ يُخْلَقُ
- 13 निर्णय के दिन के लिये। يَوْمُ الْقَضَىٰ
- 14 आप क्या जानें कि क्या है वह निर्णय
का दिन? وَمَا لَكُمْ مَّا يَوْمُ الْقَضَىٰ
- 15 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के
लिये। وَبِئْسَ الْيَوْمُ مِثْلُ الْيَوْمِ
- 16 क्या हम ने विनाश नहीं कर दिया
(अवैज्ञा के कारण) अगली जानियों का? أَلَمْ نُهَبِّهِ لَآلِهَيْنِ
- 17 फिर पीछे लगा⁴ देओ उन के पिछ्लों को। ثُمَّ نُخَبِّعُهُمُ الْآخِرِينَ

1 अर्थात् जो वही (प्रकाशना) ग्रहण कर के उसे रसूलों तक पहुँचाने है

2 अर्थात् इमाम लाने वालों के लिये क्षमा का वचन तथा काफ़रों के लिये यातना की सूचना लाते हैं।

3 उन के तथा उन के समुदायों के बीच निर्णय करने के लिये और रसूल गवाही देंगे।

4 अर्थात् उन्हीं के समान यातना ग्रस्त कर देंगे।

18. इसी प्रकार हम करते हैं अपराधियों के साथ।
19. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
20. क्या हम ने पैदा नहीं किया है तुम्हें तुच्छ जल (वीर्य) से?
21. फिर हम ने रख दिया उसे एक सुदृढ़ स्थान (गर्भाशय) में।
22. एक निर्श्चित अवधि तक।¹
23. तो हम ने सामर्थ्य² रखा, अतः हम अच्छा सामर्थ्य रखने वाले हैं।
24. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
25. क्या हम ने नहीं बनाया धरती को समेट³ कर रखने वाली।
26. जीवित तथा मूर्त को।
27. तथा बना दिये हम ने उस में बहुत से ऊँचे पर्वत। और पिलाया हम ने तुम्हें मीठा जल।
28. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
29. (कहा जायेगा): चलो उस (नरक) की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे।

كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝

وَيَوْمَ يُنْفَخُ الْمِكْيَدُ ۝

أَلَمْ تَخْلُقْنَا مِنْ مَّاءٍ مَهينٍ ۝

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ عَمِينَ ۝

إِلَى قَدَرٍ مَعْلُومٍ ۝

فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ۝

وَيَوْمَ يُنْفَخُ الْمِكْيَدُ ۝

أَلَمْ تَحْمِلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝

أَحْيَاءَ وَامُوتًا ۝

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شُعَبٍ وَأَسْفَلَ سَافِلًا ۝

وَيَوْمَ يُنْفَخُ الْمِكْيَدُ ۝

اسْمِعُوا لِي مَا كُنْتُمْ يَكْتُمُونَ ۝

1 अर्थात् गर्भ की अवधि तक।

2 अर्थात् उसे पैदा करने पर।

3 अर्थात् जब तक लोग जीवित रहते हैं तो उस के ऊपर रहने तथा बस्ते हैं और मरण के पश्चात् उसी में चले जाने हैं।

30. चलो ऐसी छाया¹ की ओर जो तीन शाखाओं वाली है।

إِنطَلِقُوا إِلَى ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۝

31. जो न छाया देगी और न ज्वाला से बचायेगी।

لَا ظِلٌّ وَلَا يُعْرِقُ مِنَ الْعَذَابِ ۝

32. वह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियाँ भवन के समान।

إِنَّمَا تَنفِي بِشَرِّهَا الْفَصِيرَ ۝

33. जैसे वह पीले ऊँट हो।

كَأَنَّهُ يَصَلَّتْ صَلَاتُ ۝

34. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

وَيَوْمَ يَمْشِي أَلْمُتَذَكِّرِينَ ۝

35. यह वह दिन है कि वह बोल² नहीं सकेंगे

هَذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ۝

36. और न उन्हें अनुमति दी जायेगी कि वह बहाने बना सकें।

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝

37. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

وَيَوْمَ يَمْشِي أَلْمُتَذَكِّرِينَ ۝

38. यह निर्णय का दिन है, हम ने एकत्र कर लिया है तुम को तथा पूर्व के लोगों को।

هَذَا يَوْمُ الْقَضِ جَمَعَكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۝

39. तो यदि तुम्हारे पास कोई चाल³ हो तो चल लो?

إِن كَانَ مَكْرُؤٌ تَكِيدُونَ ۝

40. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

وَيَوْمَ يَمْشِي أَلْمُتَذَكِّرِينَ ۝

41. निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे।

إِنَّ السَّاعُونَ فِي ظِلٍّ وَعُيُونٍ ۝

1 छाया से अभिप्राय नरक के ध्रुव की छाया है जो तीन दिशाओं में फैला होगा।

2 अर्थात् उन के विरुद्ध ऐसे तर्क प्रस्तुत कर दिये जायेंगे कि वह अवाक रह जायेंगे।

3 अर्थात् मेरी पकड़ से बचने की।

42. तथा मन चाहै फलों में।
 43. खाओ तथा पिओ मनमानी उन कर्मों
 के बदले जो तुम करते रहे।
 44. हम इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।
 45. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के
 लिये।
 46. (हे झुठलाने वालो!) तुम खा लो तथा
 आनन्द ले लो कुछ¹ दिन। वास्तव में
 तुम अपराधी हो।
 47. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के
 लिये।
 48. जब उन में कहा जाता है कि (अब्राह
 के समक्ष) झुको तो झुकने नहीं।
 49. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के
 लिये।
 50. तो (अब) वह किस बान पर इस
 (क़ुर्आन) के पश्चात् ईमान² लायेंगे?

- وَتَوَكَّلْ عَلَى مَا تَسْتَعِينُ ۝
 كُلُوا وَشَرِبُوا هَيْهَاتَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
 زَكَاتِيتَ تَجْرِي سُرْعَتَيْنِ ۝
 وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
 كُلُوا وَتَشَابَهَوْا قِيلًا إِنَّكُمْ عَنْهُمْ مَخْرُوتُونَ ۝
 وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
 فَمَا أَقْبَلَ لَهُمْ إِنْ كُنَّا إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّهِمْ ۝
 وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
 هَآئِنِي حَبْرَتًا بَعْدَ ۝ يَوْمِئِذٍ ۝

1 अर्थात् संसारिक जीवन में।

2 अर्थात् जब अब्राह की अन्तिम पुस्तक पर ईमान नहीं लाने तो फिर कोई दूसरी पुस्तक नहीं हो सकती जिस पर वह ईमान लायें। इसलिये कि अब कोई और पुस्तक आसमान से आने वाली नहीं है।

सूरह नवा ' - 78

سورة النبا

सूरह नवा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयत हैं।

- इस सूरह का नाम ((नवा)) है जिस का अर्थ है महत्व पूर्ण सूचना। जिस से अभिप्राय प्रलय तथा फिर से जीवित किये जाने की सूचना है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में उन को चेतावनी दी गई है जो क्यामत का उपहास करते हैं कि वह समय दूर नहीं जब वह आ जायेगी और वह अन्नाह के सामने उपस्थित होंगे।
- आयत 6 से 16 तक में अन्नाह की शक्ति की निशानियाँ बताई गई हैं जो मरण के पश्चात् जीवन के होने का प्रमाण है और गवाही देती हैं

1 इस सूरह में प्रलय (क्यामत) तथा परलोक (आखिरत) के विश्वास पर बल दिया गया है। तथा इन पर विश्वास करने और न करने का परिणाम बनाया गया है। मक्का के वासी इस की हँसी उड़ाने थे। कोई कहता कि यह हो ही नहीं सकता। किसी को संदेह था। किसी का विचार था कि यदि ऐसा हुआ तो भी हमारे देवी देवता हमारी अभिस्तावना कर देंगे, जैसा कि आगामी आयतों से विदित होता है।

"भारी सूचना" का अर्थ कर्भान द्वारा दी गई प्रलय और परलोक की सूचना है। प्रलय और परलोक पर विश्वास मत्त धर्म की मूल आस्था है। यदि प्रलय और परलोक पर विश्वास न हो तो धर्म का कोई महत्व नहीं रह जाता। क्योंकि जब कर्म का कोई फल ही न हो और न कोई न्याय और प्रतिकार का दिन हो तो फिर सभी अपने स्वार्थ के लिये मनमानी करने के लिये आजाद होंगे और अन्याचार तथा अन्याय के कारण पूरा मानव संसार नरक बन जायेगा।

इन प्रश्नात्मक वाक्यों में प्रकृति द्वारा मानव जाति के प्रतिपालन जीवन रक्षा और सुख सुविधा की जिस व्यवस्था की चर्चा की गई है उस पर विचार किया जाये तो इस का उत्तर यही होगा कि यह व्यवस्थापक के बिना नहीं हो सकती। और पूरी प्रकृति एक निर्धारित नियमानुसार काम कर रही है। तो जिस के लिये यह सब हो रहा है उस का भी कोई स्वाभाविक कर्तव्य अवश्य होगा जिस की पूछ होगी। जिस के लिये न्याय और प्रतिकार का दिन होना चाहिये जिस में सब को न्याय पूर्वक प्रतिकार दिया जाये और जिस शक्ति ने यह सारी व्यवस्था की है उस दिन को निर्धारित करना भी उसी का काम है।

कि प्रतिफल का दिन अनिवार्य है।

- आयत 17 से 20 तक में बताया गया है कि प्रतिफल का दिन निश्चित समय पर होगा। उस दिन आकाश तथा धरती की व्यवस्था में भारी परिवर्तन हो जायेगा और सब मनुष्य अल्लाह के न्यायालय की ओर चल पड़ेंगे।
- आयत 21 से 36 तक में दुराचारियों के दुष्परिणाम तथा सदाचारियों के शुभपरिणाम को बताया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति का चित्र दिखाया गया है और यह बताया गया है कि सिफारिश के बल पर कोई जवाबदेही से नहीं बच सकेगा।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. वे आपस में किस विषय में प्रश्न कर रहे हैं?
2. बहुत बड़ी सूचना के विषय में।
3. जिस में मतभेद कर रहे हैं।
4. निश्चय वे जान लेंगे।
5. फिर निश्चय वे जान लेंगे।¹
6. क्या हम ने धरती को पालना नहीं बनाया?
7. और पर्वतों को मेख?
8. तथा तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया।
9. तथा तुम्हारी निद्रा को स्थिरता

عَمَرَيْتُمْ أَزْوَاجَ

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ

الَّذِي هُمْ فِيهِ مُتَّفِقُونَ ۝

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝

أَلَمْ نَجْعَلِ لِّلْأَرْضِ مَهْدًا ۝

وَالْجِبَالِ أَوْتَادَ ۝

وَخَلَقْنَاكُمْ زَوَاجًا ۝

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝

- 1 (1 S) इन आयतों में उन को धिक्कारा गया है जो प्रलय की हँसी उड़ाने हैं जैसे उन के लिये प्रलय की सूचना किसी गंभीर चिन्ता के योग्य नहीं। परन्तु वह दिन दूर नहीं जब प्रलय उन के आगे आ जायेगी और वे विश्व विधाता के सामने उत्तरदायित्व के लिये उपस्थित होंगे।

(आराम) बनाया।

10. और रात को बस्त्र बनाया।
11. और दिन को कमाने के लिये बनाया।
12. तथा हम ने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आकाश बनाये।
13. और एक दमकता दीप (सूर्य) बनाया।
14. और बादलों से मूसलाधार वर्षा की।
15. ताकि उस से अन्न और वनस्पति उपजायें।
16. और घने घने बाग।¹
17. निश्चय निर्णय (फैसले) का दिन निश्चित है।
18. जिस दिन सूर में फूँका जायेगा। फिर तुम दलों ही दलों में चले आओगे।
19. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उसमें द्वार ही द्वार हो जायेंगे।
20. और पर्वत चला दिये जायेंगे तो वे मरीचिका बन जायेंगे।²

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ رِيَاسًا ۝
 وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝
 وَبَيْنَا أَوَّلُكُمْ سَبْعَ آسَافٍ ۝
 وَجَعَلْنَا سِرَاجًا زَهَّابًا ۝
 وَأَنزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّابًا ۝
 لِّنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝
 وَجَعَلْنَا أَلْجَافًا ۝
 إِنَّ يَوْمَ الْفُصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝
 يَوْمَ يُنْفَخُ الْغُورُ فَاتُونَ الْأَوْرَاقَ ۝
 وَتُفْتَحُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ فَتَكُنُّ الْآيَاتُ ۝
 وَتُسَيَّرُ الْجِبَالُ فَتَكُنُّ سَرَابًا ۝

- 1 (6-16) इन आयतों में अल्लाह की शक्ति प्रनिपालन (रूबूबियत) और प्रजा के लक्षण दर्शाये गये हैं जो यह साक्ष्य देने हैं कि प्रतिकार (बदले) का दिन आवश्यक है क्योंकि जिस के लिये इतनी बड़ी व्यवस्था की गई हो और उसे कर्मों के अधिकार भी दिये गये हों तो उस के कर्मों का पुरस्कार या दण्ड तो मिलना ही चाहिये।
- 2 (17-20) इन आयतों में बताया जा रहा है कि निर्णय का दिन अपने निश्चित समय पर आकर रहेगा, उस दिन आकाश तथा धरती में एक बड़ी उथल पुथल होगी। इस के लिये सूर में एक फूँक मारने की देर है। फिर जिस की सूचना दी जा रही है तुम्हारे सामने आ जायेगी। तुम्हारे मानने या न मानने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। और सब अपना हिस्सा देने के लिये अल्लाह के न्यायालय

21. वास्तव में नरक घात में है।
22. जो दुराचारियों का स्थान है।
23. जिस में वे असंख्य वर्षों तक रहेंगे।
24. उस में ठंडी तथा पेय (पीने की चीज) नहीं चखेंगे।
25. केवल गर्म पानी और पीप रक्त को।
26. यह पूरा पूरा प्रतिफल है।
27. निःसंदेह वे हिमाय की आशा नहीं रखते थे।
28. तथा वे हमारी आयतों को झुठलाते थे।
29. और हम ने सब विषय लिख कर सुरक्षित कर लिये हैं।
30. तो चखो, हम तुम्हारी यातना अधिक ही करते रहेंगे।^[1]
31. वास्तव में जो डरते हैं उन्हीं के लिये सफलता है।
32. अग तथा अंगूर है।
33. और नवयुवति कुमारियाँ।
34. और छलकते प्याले।
35. उस में बकवाद और मिथ्या बातें नहीं सुनेंगे।

- إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝
 لِلظَّالِمِينَ مَا يَأْتِيهِمْ ۝
 فَيُسْجَنُونَ فِيهَا أَخْنَبًا ۝
 لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا مَرَاتًا ۝
 إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝
 جَزَاءً يَوْكُوا ۝
 يَنْظُرُونَ إِلَّا الْآيَاتِ يُجْزَوْنَ يَسَارًا ۝
 وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ۝
 وَكُلُّ شَيْءٍ أَنصَبْنَاهُ كِتَابًا ۝
 فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ الْإِلَافًا ۝
 إِنَّ الْمُتَّقِينَ مَخْرَجًا ۝
 حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝
 وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝
 وَكَأْسًا هَاقًا ۝
 لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَابًا ۝

की ओर चल पड़ेंगे।

- 1 (21-30) इन आयतों में बताया गया है कि जो हिमाय की आशा नहीं रखते और हमारी आयतों को नहीं मानते हम ने उन के एक एक करनून को गिन कर अपने यहाँ लिख रखा है और उन की खबर लेने के लिये नरक घात लगाये तैयार है जहाँ उन के कुकर्मों का भरपूर बदला दिया जायेगा।

36. यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है।
37. जो आकाश धरती तथा जो उन के बीच है का अति करुणामय पालनहार है। जिस से बात करने का वे साहस नहीं कर सकेंगे।
38. जिस दिन रूह (जिब्रिल) तथा फरिश्ते पंक्तियों में खड़े होंगे, वही बात कर सकेगा जिसे रहमान (अल्लाह) आज्ञा देगा, और सहीह बात करेगा।
39. वह दिन निःसंदेह होना ही है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने का) ठिकाना बना ले।¹
40. हम ने तुम को समीप यातना से सावधान कर दिया जिस दिन इन्सान अपना करनूत देखेगा, और काफिर (विश्वास हीन) कहेगा कि काश मैं मिट्टी हो जाता।²

جَزَاءٍ مِنْ رَبِّكَ عَطَاءٌ حَسَبًا

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ لَا يَمِيلُ لِمِنْهُمْ حُطْبَاءٌ

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَتَى لَهُ الرُّحُوسُ وَقَالَ حَقًّا

ذَلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَسَّ شَاءَ شَعَدَ لِلَّهِ رَبِّهِمَا يَوْمًا

إِنَّا أَنْذَرَكُمْ عَذَابًا كَبِيرًا لَئِنْ يَوْمَ يُنْظَرُ الْمُعْرَةُ مَا أَهَمَّتْ يَدَا يُدْعَاؤُ الْكَافِرِينَ لَئِنْ كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ

- 1 (37-39) इन आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उर्पास्थिति (हार्जरी) का चित्र दिखाया गया है। और जो इस भ्रम में पड़े है कि उन के देवी देवता आदि अभिस्तावना करेंगे उन को सावधान किया गया है कि उस दिन कोई बिना उस की आज्ञा के मुँह नहीं खोलेंगा और अल्लाह की आज्ञा से अभिस्तावना भी करेगा तो उसी के लिये जो संसार में सत्य वचन "ला इलाहा इल्लल्लाह" को मानना हो अल्लाह के दोही और सत्य के विरोधी किसी अभिस्तावना के योग्य नहीं होंगे।
- 2 (40) बात को इस चेतावनी पर समाप्त किया गया है कि जिस दिन के आने की सूचना दी जा रही है उस का आना सत्य है, उसे दूर न समझो। अब जिस का दिल चाहे इसे मान कर अपने पालनहार की ओर मार्ग बना लो। परन्तु इस चेतावनी के होते जो इन्कार करेगा उस का किया धरा सामने आयेगा तो पछता पछता कर यह कामना करेगा कि मैं संसार में पैदा ही न होता। उस समय इस संसार के बारे में उस का यह विचार हाँगा जिस के प्रेम में आज वह परलोक से अंधा बना हुआ है।

सूरह नाजिआत⁽¹⁾ - 79

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

सूरह नाजिआत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 46 आयत हैं।

- इस का आरंभ ((अन्नाजिआत)) शब्द से हुआ है। जिस का अर्थ है प्राण खींचने वाले फरिश्ते, इसी से इस का यह नाम रखा गया है।¹
- इस की आयत 1 से 14 तक में प्रतिफल के दिन पर गवाही प्रस्तुत की गई है फिर ब्यामन का चित्र दिखाने हुये उस का इन्कार करने वालों की आपत्ति की चर्चा की गई है।
- आयत 15 से 26 तक में फिरऔन के मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात न मानने के शिक्षाप्रद परिणाम को बताया गया है जो प्रतिफल के होने का ऐतिहासिक प्रमाण है।

1 इस सूरह का विषय प्रलय तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है। और इस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी न मानने के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है। और फरिश्तों के कार्यों की चर्चा कर के यह विश्वास दिलाया गया है कि प्रलय अवश्य आयेंगी और दूसरा जीवन हो कर रहेगा। यही फरिश्ते अल्लाह के आदेश से इस विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त कर देंगे। यह कार्य जिसे असंभव समझा जा रहा है अल्लाह के लिये अति सरल है एक क्षण में वह संसार को विलय कर दगा और दूसरे क्षण में, सहसा दूसरे संसार में स्वयं को जीवित पाओगे।

फिर फिरऔन की कथा का वर्णन कर के नबियों (इंसानों) को न मानने का दुष्परिणाम बताया गया है जिस से शिक्षा लेनी चाहिये।

27 से 33 तक परलोक तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है।

34 से 41 तक बताया गया है कि परलोक के स्थायी जीवन का निर्णय इस आधार पर होगा कि किस ने आज्ञा का उल्लंघन किया है। और भाया मोह को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया तथा किस ने अपने पालनहार के सामने खड़े होने का भय किया। और मनमानी करने से बचा। यह समय अवश्य आता है अब जिस के जो मन में आये करें। जो इसी संसार को सब कुछ समझते थे यह अनुभव करेंगे कि वह संसार में मात्र पल भर ही रहे उस समय समझ में आयेगा कि इस पल भर के सुख के लिये उस ने सदा के लिये अपने भविष्य का विनाश कर लिया।

- आयत 34 से 41 तक में क्यामत के दिन अवैज्ञाकारियों की दुर्दशा और आज्ञाकारियों के उत्तम परिणाम को दिखाया गया है।
- अन्त में क्यामत के नकारने वालों का जवाब दिया गया है

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|--|--|
| 1. शपथ है उन फरिश्तों की जो डूब कर (प्राण) निकालते हैं! | وَالَّذِينَ عَمِلُوا |
| 2. और जो सरलता से (प्राण) निकालते हैं। | وَالَّذِينَ كَانُوا |
| 3. और जो तैरते रहते हैं। | وَالَّذِينَ كَانُوا |
| 4. फिर जो आगे निकल जाते हैं। | فَالَّذِينَ كَانُوا |
| 5. फिर जो कार्य की व्यवस्था करते हैं। | فَالَّذِينَ كَانُوا |
| 6. जिस दिन धरती कांपेगी। | يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِمَةُ |
| 7. जिस के पीछे ही दूसरी कम्प आ जायेगी। | تَلْبِمَهَا الزَّالِيَةُ |
| 8. उस दिन बहुत से दिल धड़क रहे होंगे। | قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ |
| 9. उन की आंखें झुकी होंगी। | أَبْصَارٌ مَقْشُوحَةٌ |
| 10. वे कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे? | يَقُولُونَ رَبَّنَا لَمَّا كُنَّا فِي الْأَوَّلِ |
| 11. जब हम (भुरभुरी) (खोखली) स्थियाँ (हड्डियाँ) हो जायेंगे। | مَرَدَدًا لَّمَّا كُنَّا فِي الْآخِرَةِ |
| 12. उन्होंने ने कहा: तब तो इस वापसी में क्षति है। | قَالُوا بَلْئَظْمًا زَادْنَا عَاسَةً |

- 1 (1-5) यहाँ से बनाया गया है कि प्रलय का आरम्भ भारी भूकम्प से होगा और दूसरे ही क्षण सब जीवन हो कर धरती के ऊपर होंगे।

13. वस वह एक झिड़की होगी।
14. तब वे अकस्मात धरती के ऊपर होंगे।
15. (हे नबी) क्या तुम को मूसा का समाचार पहुँचा?¹
16. जब पवित्र बादी "तुबा" में उसे उसके पालनहार ने पुकारा।
17. फिरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है।
18. तथा उस से कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहेंगे?
19. और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाऊँ तो तुम डरोगे?
20. फिर उस को सब से बड़ा चिन्ह (चमत्कार) दिखाया।
21. तो उस ने उसे झुठला दिया और बात न मानी।
22. फिर प्रयास करने लगा।
23. फिर लोगों को एकत्र किया फिर पुकारा।
24. और कहा: मैं तुम्हारा परम पालनहार हूँ।
25. तो अल्लाह ने उसे संसार तथा परलोक की यातना में घेर लिया।
26. वास्तव में इस में उस के लिये शिक्षा है जो डरता है।

- يَا نَارُ اِذَا خُتِلَ لِقَا رَبِّكَ ذُنُوبُكَ
 فَادَّعُفْ عَنْكَ بِالسَّيْرِ
 قُلْ اَتَمَّكَ سَيِّئُتُ مُوسَى
 اِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَاوِ الْمُتَقَدِّسِ عَلَوَى
 اِذْ هَبَّ اِلَى فِرْعَوْنَ اِنَّهُ هَبَّ
 فَقُلْ هَلْ لَكَ اِلَّا اَنْ تُزَلَّ
 وَاهْدِيكَ لِرَبِّكَ فَتُخْشَى
 فَارَاهُ لَآيَةً الْكُبْرَى
 فَكَذَّبَ وَتَوَلَّى
 ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعَى
 فَخَسِرَ فَمَا دَى
 فَقَالَ اِنَّا رَآكُمُ الْاَوَّلَى
 فَاحْدَاثُ اللهِ تَكْوَالُ الْبُغْزَةِ وَالْاَوَّلَى
 يَرْبِي فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةٌ لِّمَنْ يَشَاءُ

1 (6-15) इन आयतों में प्रलय दिवस का चित्र पेश किया गया है। और काफ़िरो की अवस्था बतायी गई है कि वे उस दिन किस प्रकार अपने आप को एक खुले मैदान में पायेंगे।

27. क्या तुम को पैदा करना कठिन है
अथवा आकाश को, जिसे उस ने
बनाया।¹
28. उस की छत ऊँची की और चौरस
किया
29. और उस की रान को अंधेरी, तथा
दिन को उजाला किया।
30. और इस के बाद धरती को फैलाया।
31. और उस से पानी और चारा
निकाला।
32. और पर्वतों को गाड़ दिया।
33. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ
के लिये।
34. तो जब प्रलय आयेगी।²
35. उस दिन इन्सान अपना करतूत याद
करेगा।³
36. और देखने वाले के लिये नरक सामने
कर दी जायेगी।

أَلَمْ نُخْلُقْكُمْ حَقًّا وَرَاحَةً لَّيْلَهَا ۖ

وَقَرَّ سَكَنُهَا نَوْبَهَا ۖ

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۖ

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ۖ

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۖ

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۖ

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۖ

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّلَاقَةُ الْكُبْرَىٰ ۖ

يَوْمَ يَبْدَأُ كُفْرُ الْإِنْسَانِ مَا سَفَىٰ ۖ

وَنُزِّلَتْ لِحَاجِلٍ لِّمَنِ يُرَىٰ ۖ

1 (16-27) यहाँ से प्रलय के होने और पुनः जीवित करने के तर्क आकाश तथा धरती की रचना से दिये जा रहे हैं कि जिस शक्ति ने यह सब बनाया और तुम्हारे जीवन रक्षा की व्यवस्था की है प्रलय करना और फिर सब का जीवित करना उस के लिये अमंभव कैसे हो सकता है? तुम स्वयं विचार कर के निर्णय करो।

2 (28-34) "बड़ी आपदा" प्रलय को कहा गया है जो उस की घोर स्थिति का चित्रण है।

3 (35) यह प्रलय का तीसरा चरण होगा जब कि वह सामने होगी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने संचारिक कर्म याद आयेगे और कर्मानुसार जिस ने सत्य धर्म की शिक्षा का पालन किया होगा उस स्वर्ग का सुख मिलेगा और जिस ने सत्य धर्म और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नकारा और मनमानी धर्म और कर्म किया होगा वह नरक का स्थायी दुःख भोगेगा।

37. तो जिस ने विद्रोह किया।
 38. और सांसारिक जीवन को प्रार्थामकता दी।
 39. तो नरक ही उस का आवास होगी।
 40. परन्तु जो अपने पालनहार की महानता से डरा तथा अपने आप को मनमानी करने से रोका।
 41. तो निश्चय ही उस का आवास स्वर्ग है।
 42. वे आप से प्रश्न करते हैं कि वह समय कब आयेगा?।
 43. तुम उस की चर्चा में क्यों पड़े हो?
 44. उस के होने के समय का ज्ञान तुम्हारे पालनहार के पास है।
 45. तुम तो उसे सावधान करने के लिये हो जो उस से डरता है।¹
 46. वह जिस दिन उस का दर्शन करेंगे उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में एक संध्या या उस के सवेरे में अधिक नहीं ठहरे।

فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ

وَأَشْرَىٰ كَعِوَةِ الْدُنْيَىٰ ۖ

فَإِنَّ الْجَهَنَّمَ لَمَأْوَىٰهُ

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَىٰ النَّفْسَ الْهَوَىٰ ۖ

فَإِنَّ الْجَنَّةَ لَمَأْوَىٰهُ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَىٰهَا ۖ

فَيَوْمَئِذٍ مِنْ دُونِهَا

لَا رَيْبَ مِنْهُنَّ ۚ

إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مَنِ يَخْشَاهَا ۚ

فَالْأَنفُسُ يُؤْزِرُونَ ۚ وَلَهَا الْعَذَابُ أَلَمٌ ۚ إِنَّهَا لَكِنْ مَرْسَىٰ ۚ

- 1 (42) काफ़िरो का यह प्रश्न समय जानने के लिये नहीं, बल्कि हंसी उड़ाने के लिये था।
 2 (45) इस आयत में कहा गया है कि (हे नबी) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप का दायित्व मात्र उस दिन से सावधान करना है। धर्म बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं जो नहीं मानगा उसे स्वयं उस दिन समझ में आ जायेगा कि उस ने क्षण भर के सांसारिक जीवन के स्वर्ग के लिये अपना स्थायी सुख खो दिया। और उस समय पछतावे का कुछ लाभ नहीं होगा।

सूरह अबस⁽¹⁾ - 80

سُورَةُ عَبَسَ

सूरह अबस के सक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 42 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अबस)) शब्द से हुआ है जिस का अर्थ ((मुंह बसोरना)) है इसी से इस सूरह का नाम रखा गया है।¹
- इस की आयत 1 से 10 तक में एक विशेष घटना की ओर संकेत कर के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ध्यान दिलाया गया है कि आप अभिमानियों तथा दुराग्रहियों के पीछे न पड़ें। उस पर ध्यान दें जो सत्य की खोज करता और अपना सुधार चाहता है।
- आयत 11 से 16 तक में कुरआन की महिमा का वर्णन किया गया तथा बताया गया है कि जिस की ओर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बुला रहे हैं वह कितनी बड़ी चीज है। इस लिये जो इस का अपमान करेंगे वह स्वयं अपना ही बुरा करेंगे।
- आयत 17 से 23 तक में प्रलय के इन्कारियों को चेतावनी दी गई है। तथा फिर से जीवित किये जाने के प्रमाण अस्त्राह के पालनहार होने से प्रस्तुत किये गये हैं।

1 यह सूरह मक्की है। भाष्य कारों ने इस के उतरने का कारण यह लिखा है कि एक बार इंगदून (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का के प्रमुखों को इस्लाम के विषय में समझा रहे थे कि एक अनुयायी अब्दुल्लाह बिन उम्मे सक्तूम (रजियल्लाहु अन्हु) ने आ कर धार्मिक विषय में प्रश्न किया आप उसे बुरा मान गये और मुंह फेर लिया। इस पर आप को सावधान किया गया कि धर्म में संसारिक मान मर्यादा का कोई महत्व नहीं, आप उसी पर प्रथम ध्यान दें जो सत्य को मानता तथा उस का पालन करता है। आप का दायित्व यह भी नहीं है कि किसी को सत्य मनवा दे। फिर कुरआन ऐसी चीज नहीं है जिसे विनय और खुशामद से प्रस्तुत किया जाये। बल्कि जो उस पर विचार करेगा तो स्वयं ही इस सत्य को पा लेगा। और जान लेगा कि जिस निराकार शक्ति ने सब कुछ किया है तो पूजा भी मात्र उसी की करें और उसी के कृतज्ञ हों। फिर यदि वह अपनी कृतघ्नता पर अड़े रह गये तो एक दिन आयेंगे जब यह मान मर्यादा और उन का कोई सहायक नहीं रह जायेगा और प्रत्येक के कर्मों का फल उस के सामने आ जायेगा।

- अन्त में आयत 42 तक क्यामत का भ्यावह चित्र तथा सदाचारियों और दुराचारियों के अलग अलग परिणाम बताये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (नबी ने) त्योंरी चढ़ाई तथा मुंह फेर लिया।
2. इस कारण कि उस के पास एक अंधा आया।
3. और तुम क्या जानो शायद वह पवित्रता प्राप्त करे।
4. या नसीहत ग्रहण करे जो उस को लाभ देती।
5. परन्तु जो विमुख (निश्चन्त) है।
6. तुम उन की ओर ध्यान दे रहे हो।
7. जब कि तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्रता ग्रहण न करे।
8. तथा जो तुम्हारे पास दौड़ता आया।
9. और वह डर भी रहा है।
10. तुम उस की ओर ध्यान नहीं देते।
11. कदापि यह न करो, यह (अर्थात् कुर्आन) एक स्मृति (याद दहानी) है।

عَبَسَ وَتَوَلَّى ۝

أَن جَاءَهُ لَأَعْمَى ۝

وَمَا يَذَّكَّرُ لَهُ لَعَلَّهُ يَزَلَّ ۝

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ آيَةُ كُرَى ۝

أَن سَمِعَ الْمُتَمَنَّى ۝

فَأَن تَكُنْ لَهُ تَصَدَّى ۝

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَلَّ ۝

وَأَمَّا سَنُجَاهَكَ فَتَشَأْ ۝

وَهُوَ يَخْشَى ۝

فَأَن تَعْلَمَ تَكَلْهُ ۝

كَلَّا هِيَ تَذَكُّرَةٌ ۝

- 1 (1 10) भावार्थ यह है कि सत्य के प्रचारक का यह कर्तव्य है कि जो सत्य की खोज में हो भले ही वह दरिद्र हो उसी के सुधार पर ध्यान दे और जो अभीमान के कारण सत्य की परवाह नहीं करते उन के पीछे समय न गवाये। आप का यह दायित्व भी नहीं है कि उन्हें अपनी जान मनवा दें।

- | | |
|---|--|
| 12. अतः जो चाहे स्मरण (याद) करे। | فَمَنْ شَاءَ ذَكَّرْهُ ۝ |
| 13. माननीय शास्त्रों में है। | فِي صُحُفٍ مُّكْرَمَةٍ ۝ |
| 14. जो ऊंचे तथा पवित्र हैं। | تَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝ |
| 15. ऐसे लेखकों (फरिश्तों) के हाथों में है। | بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۝ |
| 16. जो सम्मानित और आदरणीय हैं। ⁽¹⁾ | كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝ |
| 17. इन्सान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है | قَبِيلَ الْإِنْسَانِ مَا كَفَرٌ ۝ |
| 18. उसे किस वस्तु से (अल्लाह) ने पैदा किया? | مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ |
| 19. उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उस का भाग्य बनाया। | مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝ |
| 20. फिर उस के लिये मार्ग सरल किया। | ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝ |
| 21. फिर मौत दी फिर समाधि में डाल दिया। | ثُمَّ مَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝ |
| 22. फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा। | ثُمَّ رَآهُ أَنشَرَهُ ۝ |
| 23. वस्तुतः उस ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया। ⁽²⁾ | كَلَّا لَأَنذَرْتَهُ بِالْآخِرَةِ ۝ |
| 24. इन्सान अपने भोजन की ओर ध्यान दे। | فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ رِجْلَ حَاسِمِهِ ۝ |

1 (11-16) इन में कूर्आन की महानता को बताया गया है कि यह एक स्मृति (याद दहानी) है। किसी पर धोपने के लिये नहीं आया है। बल्कि वह तो फरिश्तों के हाथों में स्वर्ग में एक पवित्र शास्त्र के अन्दर सुरक्षित है। और वही से वह (कूर्आन) इस संसार में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा जा रहा है।

2 (17-23) तक विश्वास हीनो पर धिक्कार है कि यदि वह अपने अस्तित्व पर विचार करें कि हम ने कितनी तुच्छ वीर्य की बूंद से उस की रचना की तथा अपनी दया से उसे चेतना और समझ दी परन्तु इन सब उपकारों को भूल कर कृतघ्न बना हुआ है और पूजा उपासना अन्य की करता है

41. उन पर कालिमा छाई होगी।

تَرْمِيهِمْ قَدْرًا ۝

42. वही काफिर और कुकर्मों लोंग
है।¹

أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُ الْعَصِيُّ ۝

1 (33 42) इन आयतों का भावार्थ यह है कि संसार में किसी पर कोई आपदा आती है तो उस के अपने लोग उस की सहायता और रक्षा करते हैं परन्तु प्रलय के दिन सब को अपनी अपनी पड़ी होगी और उस के कर्म ही उस की रक्षा करेंगे।

सूरह तक्वीर¹ - 81

سورة التکویر

सूरह तक्वीर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 29 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन सूर्य के लपेट दिये जाने के लिये ((कुल्बूरत)) शब्द आया है। इस लिये इस का नाम सूरह तक्वीर है। जिस का अर्थ लपेटना है।¹
- इस की आयत 1 से 6 तक प्रलय की प्रथम घटना और आयत 7 से 14 तक में दूसरी घटना का चित्रण किया गया है।
- आयत 15 से 25 तक में यह बताया गया है कि कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सूचना दे रहे हैं वह सत्य पर आधारित है।
- आयत 26 से 29 तक में इन्कार करने वालों को चेतावनी दी गई है कि कुर्आन को न मानना सत्य का इन्कार है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब सूर्य लपेट दिया जायेगा।
2. और जब तारे धुमिल हो जायेंगे।
3. जब पर्वत चलाये जायेंगे।
4. और जब दस महीने की गायिन
ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।
5. और जब वन् पशु एकत्र कर दिये
जायेंगे
6. और जब सागर भड़काये जायेंगे।²

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝

فَعَالِ الْإِبَالِ سُيِّرَتْ ۝

وَإِذَا الْبِحَارُ غُطِّتْ ۝

وَرَدَّ الْوُحُوشُ حُجُرَتْ ۝

وَأُذَا الْبِحَارُ سُيِّرَتْ ۝

- 1 यह सूरह आरंभिक सूरतों में से है। इस में प्रलय तथा दृढत्व (रिसालत) का वर्णन है।
- 2 (1 6) इन में प्रलय के प्रथम चरण में विश्व में जो उथल धुल होगी उस को

- | | |
|---|------------------------------------|
| 7 और जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे। | وَرَدَ النُّفُوسَ رُوحًا ۝ |
| 8. और जब जीवित गाड़ी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगा: | وَلَا الْمَوَدَّةَ بَيِّنًا ۝ |
| 9. कि वह किस अपराध के कारण बध की गई | يَا أَيُّ ذُنُوبِكُمُنَّ ۝ |
| 10. तथा जब कर्म पत्र फैला दिये जायेंगे। | وَرَدَ الصُّحُفَ فُتْرًا ۝ |
| 11 और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी। | وَرَدَ السَّمَاءَ كُشَاطًا ۝ |
| 12. और जब नरक धहकाई जायेगी। | وَرَدَ النَّجِيمَ سَمَرًا ۝ |
| 13. और जब स्वर्ग समीप लाई जायेगी। | وَرَدَ بِمَنَّةٍ أَرْيَفَةً ۝ |
| 14. तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है। ¹¹ | وَصَفَتْ لِكُلِّ شَيْءٍ خَصْرَةً ۝ |
| 15. मैं शपथ लेता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते हैं। | فَلَا أَلْسَمُ بِأَعْيُنٍ ۝ |
| 16. जो चलने चलते छुप जाते हैं। | الْمَوَارِثِ الْكَلْبِ ۝ |
| 17 और रात की (शपथ), जब समाप्त होने लगती है। | وَاللَّيْلِ إِذَا عَمَصَ ۝ |

दिखाया गया है कि आकाश, धरती और पर्वत सागर तथा जीव जन्तुओं की क्या दशा होगी। और माया मोह में पड़ा इन्सान इसी संसार में अपने प्रियवर धन से कैसा बे परवाह हो जायेगा। बन् पशु भी भय के मारे एकत्र हो जायेंगे सागरों के जल प्लावन से धरती जल धल हो जायेगी।

- 1 (7 14) इन आयतों में प्रलय के दूसरे चरण की दशा को दर्शाया गया है कि इन्सानों की आस्था और कर्मों के अनुसार श्रेणियाँ बनेंगी। नृशंसितों (मजलूमों) के साथ न्याय किया जायेगा। कर्म पत्र खोल दिये जायेंगे। नरक घड़काई जायेगी। स्वर्ग सामने कर दी जायेगी। और उस समय सभी का वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। इस्लाम के उदय के समय अरब में कुछ लोग पुत्रियों को जन्म लेने ही जीवित गाड़ दिया करने थे। इस्लाम ने नारियाँ को जीवन प्रदान किया। और उन्हें जीवित गाड़ देने को घोर अपराध घोषित किया। आयत नं० 8 में उन्हीं नृशंस अपराधियों का धिक्कारा गया है।

18. तथा भोर की जब उजाला होने लगता है। وَالشُّعُرَادُ تَنْفَرُ ۝
19. यह (कूर्आन) एक मान्यवर स्वर्ग दूत का लाया हुआ कथन है। رَبِّهِ لَقَوْلٌ رَسُوْبٌ كَرِيْمٌ ۝
20. जो शक्ति शाली है। अर्श (मिहासन) के मालिक के पास उच्च पद वाला है। وَیْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِی الْعَرْشِ مَكِيْنٌ ۝
21. जिस की बात मानी जाती है और बड़ा अमानतदार है। ۱॥ مُعَذِّبٌ كَرَامٍ ۝
22. और तुम्हारा साथी उन्मत्त नहीं है। وَنَا صَاحِبُكُمْ رَحِيْمٌ ۝
23. उस ने उस को आकाश में खुले रूप से देखा है। وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأَفْقِ السَّمِيْمِ ۝
24. वह परोक्ष (गैब) की खान धनाने में प्रलोभी नहीं है। २॥ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَبِيْنٌ ۝
25. यह धिक्कारी शैतान का कथन नहीं है। وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝
26. फिर तुम कहीं जा रहे हो? فَآيِسَ لَكُمْ هَبْوَبٌ ۝
27. यह संभार वामियों के लिये एक स्मृति (शास्त्र) है। اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّمُعْذِیْنٍ ۝
28. तुम में से उस के लिये जो सुधरना चाहता हो। لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ اَنْ يُّسْتَوْبِرَ ۝

1 (15-21) तारों की व्यवस्था गति तथा अंधेरे के पश्चात नियमित रूप से उजाला की शपथ इस बात की गवाही है कि कूर्आन ज्योतिष की बकवास नहीं। बल्कि यह इश्रा वाणी है जिस को एक शक्तिशाली तथा सम्मान वाला फरिश्ता ले कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। और अमानतदारी से इसे पहुँचाया।

2 (22-24) इन में यह चेतावनी दी गई है कि महा इश्रादूत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सुना रहे हैं और जो फरिश्ता बह्दी (प्रकाशना) लाता है उन्होंने उसे देखा है। वह परोक्ष की खानें प्रस्तुत कर रहे हैं कोई ज्योतिष की खान नहीं जो धिक्कारे शैतान ज्योतिषियों को दिया करते हैं।

29. तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे | وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾
 बिना कुछ नहीं कर सकते।¹

1 (27-29) इन साक्ष्यों के पश्चान सावधान किया गया है कि कुर्आन मात्र याद दहानी है। इस विश्व में इस के सत्य होने के सभी लक्षण सब के सामने हैं। इन का अध्ययन कर के स्वयं सत्य की राह अपना लो अन्यथा अपना ही बिगाड़ोगे।

सूरह इन्फितार¹ - 82

سورة الانفطار

सूरह इन्फितार के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 19 आयतें हैं

- "इन्फितार" का अर्थ ((फटना)) है। इस में प्रलय के दिन आकाश के फट जाने की सूचना दी गई है। इसी कारण इस का यह नाम है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में प्रलय का दृश्य प्रस्तुत किया गया है कि जब प्रलय आयेगी तो मनुष्य का सब किया धरा सामने आ जायेगा।
- फिर आयत 6 से 8 तक में मनुष्य को यह बताया गया है कि जिस अल्लाह ने उसे पैदा किया है क्या उसे मनमानी करने के लिये छोड़ देगा?
- आयत 9 से 12 तक में बताया गया है कि मनुष्य का प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है।
- आयत 13 से 19 तक में सदाचारियों और दुराचारियों के परिणाम बताने हुये सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन किमी के बस में कुछ न होगा उस दिन सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में होगा।

अल्लाह के नाम से जो अन्त्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. तथा जब तारे झड़ जायेंगे।
3. और जब सागर उबल पड़ेंगे।
4. और जब समाधियाँ (कबरें) खोल दी जायेगी।
5. तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो उस ने किया है और नहीं किया है।¹

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ

وَإِذَا النُّجُومُ انشَطَرَتْ

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا نَسَتْ وَأَعْتَتْ

1 (1 5) इन में प्रलय के दिन आकाश गहों तथा धरती और समाधियों पर जो

6. हे इन्मान! तुझे किस वस्तु ने तेरे उदार पालनहार से वहका दिया।
7. जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे सतुलित बनाया।
8. जिस रूप में चाहा बना दिया।¹
9. वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते।
10. जय कि तुम पर निरीक्षक (पामवान) हैं।
11. जो माननीय लेखक है।
12. वे जो कुछ तुम करने हो जानते हैं।⁽²⁾
13. निःसंदेह सदाचारी सुखों में होंगे।
14. और दुराचारी नरक में।
15. प्रतिकार (बदले) के दिन उस में झोक दिये जायेंगे।
16. और वे उस से बच रहने वाले नहीं।³

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّبَكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝

الَّذِي خَلَقَكَ ثُمَّ مَرَّتْ فَتَاتَكَ ۝

بِأَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝

كَلَّا لَبِئْسَ لِلْكَافِرِينَ بِالْبَاطِلِ ۝

وَلَقَدْ عَلَيْكَ مَحِيطِينَ ۝

كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝

يَعْلَمُونَ مَا تَعْمَلُونَ ۝

إِنَّ لِلَّذَارِينَ فِيهِمْ ۝

وَأَنَّ لِلْفَاسِقِينَ فِيهِمْ ۝

يَوْمَ الْوَعْدِ ۝

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝

दशा गुजरेंगी उस का विवर्ण किया गया है। तथा चेतावनी दी गई है कि सब के कर्तुत उस के सामने आ जायेंगे।

- 1 (6-8) भावार्थ यह है कि इन्मान की पैदाइश में अल्लाह की शक्ति, दक्षता तथा दया के जो लक्षण हैं, उन के दर्पण में यह बनाया गया है कि प्रलय को असंभव न समझो। यह सब व्यवस्था इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारा अस्तित्व व्यर्थ नहीं है कि मनमानी करो। (देखिये: तर्जमानन कुरआन मौलाना अबुल कलाम आजाद) इस का अर्थ यह भी हो सकता है कि जब तुम्हारा अस्तित्व और रूप रेखा कुछ भी तुम्हारे वस नहीं, तो फिर जिस शक्ति ने सब किया उसी की शक्ति में प्रलय तथा प्रतिकार के होने को क्यों नहीं मानते?
- 2 (9-12) इन आयतों में इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि सभी कर्मों और कथनों का ज्ञान कैसे हो सकता है।
- 3 (13-16) इन आयतों में सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बनाया गया है कि एक स्वर्ग के सुखों में रहेगा। और दूसरा नरक के दण्ड का भागी बनेगा।

17. और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?
18. फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?
19. जिस दिन किसी का किसी के लिये कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सब अधिकार अब्राह का होगा।¹¹

وَمَا أَذْرِبُ مَا يَوْمَ الدِّينِ

كُلُّ مَا أَذْرِبُ مَا يَوْمَ الدِّينِ

يَوْمَ لَا تُنْفِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا وَلَا مَرْ
يَوْمَ يَمُوتُ

1 (17-19) इन आयतों में दो वाक्यों में प्रलय की चर्चा दोहरा कर उस की भयानकता का दर्शाते हुये बताया गया है कि निर्णय वे लागू होगा। कोई किसी की सहायता नहीं कर सकेगा मनुष्य आस्था और सत्कर्म ही सहायक होंगे जिस का मार्ग कुर्आन दिखा रहा है। कुर्आन की सभी आयतों में प्रतिकार का दिन प्रलय के दिन को ही बताया गया है जिस दिन प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मानुसार प्रतिकार मिलेगा।

सूरह मुतफिफीन¹ - 83

سورة المطففين

सूरह मुतफिफीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 36 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में ((मुतफिफीन)) शब्द आया है। जिस का अर्थ है: नापने तौलने में कमी करने वाले, इसी से इस का नाम रखा गया है।¹
- आयत 1 से 6 तक में व्यवसायिक विषय में विश्वासघात को विनाशकारी कर्म बताया गया है।
- आयत 7 से 28 तक में बताया गया है कि कुकर्मियों के कर्म एक विशेष पंजी जिस का नाम ((सिज्जीन)) है, में लिखे हुये हैं और सदाचारियों के ((इल्लियीन)) में, जिन के अनुसार उन का निर्णय किया जायेगा और दोनों का परिणाम बनाया गया है।
- आयत 29 में अन्त तक इमान वालों को दिलासा दी गई है कि विरोधियों के व्यंग से दुखी न हों आज वह तुम पर हंस रहे हैं कल तुम उन पर हंसोगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 विनाश है डंडी मारने वालों का।
- 2 जो लोगों से नाप कर ले तो पूरा लेते हैं।
- 3 और जब उन को नाप या तोल कर देते हैं तो कम देते हैं।
- 4 क्या वे नहीं सोचते कि फिर जीवित किये जायेंगे?

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ

الَّذِينَ إِذَا تَوَالَوْا عَلَى النَّاسِ يَتَوَلَّوْنَ

وَإِذَا تَوَلَّوْهُمْ فَأُذِنُوا لَهُمْ بِمَا يَشَاءُونَ

أَلَّا يَغْلِبُوا أُولَئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ

- 1 नाप तौल में कमी बहुत बड़ी समाजिक खराबी है। और यह रोग विगत समुदायों में भी विशेष रूप से पाया जाना था। सूरह मुतफिफीन में इस घुराई की कड़ी निंदा की गई है। और प्रलय दिवस में उन को कठोर यातना की सूचना दी गई है।

5. एक भीषण दिन के लिये।
6. जिस दिन सभी विश्व के पालनहार के सामने खड़े होंगे।⁽¹⁾
7. कदापि ऐसा न करो, निश्चय बुरों का कर्म पत्र "मिज्जीन" में है।
8. और तुम क्या जानो कि "मिज्जीन" क्या है?
9. वह लिखित महान् पुस्तक है।
10. उस दिन झुठलाने वालों के लिये विनाश है।
11. जो प्रतिकार (वदले) के दिन को झुठलाते हैं।
12. तथा उसे वही झुठलाता है जो महा अत्याचारी और पापी है।
13. जब उन के सामने हमारी आयतों का अध्ययन किया जाता है तो कहते हैं: पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
14. सुनो! उन के दिलों पर कुकर्मों के कारण लोहमल लग गया है।
15. निश्चय वे उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।
16. फिर वे नरक में जायेंगे।

- لَيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
 يَوْمَ تَقُومُ السُّورَةُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
 كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْغُثَّاءِ لَفِي ضَلَالٍ ۝
 وَمَا تَدْرِي مَا يَصْحَفُ ۝
 كِتَابٌ مُزِينٌ ۝
 وَيْلٌ لِّوَمَنٍ لَّمْ يَتَذَكَّرْ ۝
 أَلَيْسَ لِكُلِّ نَفْسٍ بِرُؤُوسٍ ۝
 وَمَا يَذَّكَّرُ بِهِ إِلَّا لَهُ مُعْتَبِرٌ ۝
 إِذْ تَتْلُو عَلَيْهِ سُورَةٌ قَالَ لَمْ يَأْتِ
 الْأَوَّلِينَ ۝
 كَلَّا لَئِنْ سَأَلْتُمْ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مَا تَكُونُونَ ۝
 كَلَّا إِنَّهُم عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّسَّخَوُونَ ۝
 ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُو الْجَحِيمِ ۝

1 (16) इस सूरह की प्रथम छः आयतों में इसी व्यवसायिक विश्वास घात पर पकड़ की गई है कि न्याय तो यह है कि अपने लिये अन्याय नहीं चाहते तो दूसरों के साथ न्याय करो। और इस रोग का निवारण अल्नाह के भय तथा परलोक पर विश्वास ही से हो सकता है। क्योंकि इस स्थिति में निक्षेप (अमानतदारी) एक नीति ही नहीं बल्कि धार्मिक कर्तव्य होगा और इस पर स्थित रहना लाभ तथा हानि पर निर्भर नहीं रहेगा।

17. फिर कहा जायेगा कि यही है जिसे
तुम मिथ्या मानते थे।⁽¹⁾

ثُمَّ نَقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾

18. सचच यह है कि सदाचारियों के कर्म
पत्र "इल्लियीन" में है।

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَعِندَ رَبِّهِ ﴿١٨﴾

19. और तुम क्या जानो कि "इल्लियीन"
क्या है?

وَمَا أَدْرَاكَ عَالِيمُونَ ﴿١٩﴾

20. एक अंकित पुस्तक है।

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾

21. जिस के पास समीपवर्ती (फरिश्ते)
उपस्थित रहते हैं।

يَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ ﴿٢١﴾

22. निश्चय सदाचारी आनंद में होंगे।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

23. मिहासनों के ऊपर बैठ कर सब कुछ
देख रहे होंगे।

عَلَى الْأَعْيُنِ يَنْظُرُونَ ﴿٢٣﴾

24. तुम उन के मुखों से आनंद के चिह्न
अनुभव करोगे।

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِِهِمْ نَضْرَةَ النُّعِيمِ ﴿٢٤﴾

25. उन्हें मुहर लगी शुद्ध मदिरा पिलायी
जायेगी।

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْمُومٍ ﴿٢٥﴾

26. यह मुहर कस्तूरी की होगी। तो इस
की अभिलाषा करने वालों को इस की
अभिलाषा करनी चाहिये।

حُمْلُهُ سِكِّينٍ ذَاتِ ذَيْبٍ فَلْيَتَّخِذِ
الْمُسْتَسِرُّونَ ﴿٢٦﴾

27. उस में तस्नीम मिली होगी।

وَمَزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾

1 (7 17) इन आयतों में कुकर्मियों के दुर्गारिणाम का विवरण दिया गया है। तथा यह बताया गया है कि उन के कुकर्म पहले ही से अपराध पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं। तथा वे परलोक में कड़ी यातना का सामना करेंगे। और नरक में झोका दिये जायेंगे।

"सिज्जीन" से अभिप्राय एक जगह है जहाँ पर काफ़िरो, अन्याचारियों और मुश्रिकों के कुकर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। दिलों का लोहमल पापों की कालिमा को कहा गया है। पाप अतरात्मा को अन्धकार बना देने हैं तो सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो देने हैं।

28. वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीप वर्ती पियेंगे।^[1]

حَبِيبٌ يُشْرَبُ بِهَا الْمُعْرِضُونَ ﴿٢٨﴾

29. पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।

إِنَّ الَّذِينَ آخَرُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٩﴾

30. और जब उन के पास से गुजरते तो आँखें मिचकाते थे।

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَرُونَ ﴿٣٠﴾

31. और जब अपने परिवार में वापिस जाते तो आनंद लेते हुये वापिस होते थे।

وَإِذَا نُفِخَ فِي الْأُفُفِ انْقَلَبُوا فَاكِفِينَ ﴿٣١﴾

32. और जब उन्हें (मुमिनो को) देखते तो कहते थे यही भटके हुये लोग है।

وَإِذَا رَأَوْهُمْ تَالَّوْا إِنَّهُمْ لَصَائِرُونَ ﴿٣٢﴾

33. जब कि वे उन के निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये थे।

وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ﴿٣٣﴾

34. तो जो ईमान लाये आज काफिरों पर हंस रहे है।

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾

35. सिंहासनों के ऊपर से उन्हें देख रहे है।

عَلَى الْأَرْسَالِ يُنْظَرُونَ ﴿٣٥﴾

36. क्या काफिरों (विश्वास हीनो) को उन का बदला दे दिया गया? ²

هَلْ ثَوَابٌ لِّلْكَافِرِ لَئِنْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

1 (18-28) इन आयतों में बताया गया है कि सदाचारियों के कर्म ऊँचे पत्रों में अंकित किये जा रहे है जो फरिश्तों के पास सुरक्षित है और वे स्वर्ग में सुख के साथ रहेंगे। "इल्लियीन" से अभिप्रायः जन्नत में एक जगह है। जहाँ पर नेक लोगों के कर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। वहाँ पर समीपवर्ति फरिश्ते उपस्थित रहते हैं।

2 (29-36) इन आयतों में बताया गया है कि परलोक में कर्मों का फल दिया जायेगा तो संसारिक परिस्थितियाँ बदल जायेंगी। संसार में तो सब के लिये अल्लाह की दया है परन्तु न्याय के दिन जो अपने सुख सुविधा पर गर्व करते थे और जिन निर्धन मुसलमानों को देख कर आँखें मारते थे वहाँ पर वही उन के दुष्परिणाम को देख कर प्रसन्न होंगे। अंतिम आयत में विश्वास हीनो के दुष्परिणाम को उन का कर्म कहा गया है। जिस में यह संकेत है कि सुफल और कुफल स्वयं इन्सान के अपने कर्मों का स्वभाविक प्रभाव होगा।

सूरह इन्शिकाक^[1] - 84

سورة الانشقاق

सूरह इन्शिकाक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 25 आयतें हैं।

- इन्शिकाक का अर्थ: फटना है। इस में आकाश के फटने की सूचना दी गई है, इस कारण इस का यह नाम है।¹
- आयत 1 से 5 तक में उस उथल पुथल का संक्षेप में वर्णन है जो प्रलय आते ही इस धरती और आकाश में होगी।
- आयत 6 से 15 तक में मनुष्य के अब्राह के न्यायालय में पहुँचने, कर्मपत्र दिये जाने और अपने परिणाम को पहुँचने का वर्णन है।
- आयत 16 से 20 तक विश्व की निशानियों से प्रमाणित किया गया है कि मनुष्य को मौत के पश्चात् विभिन्न स्थितियों से गुजरना होगा।
- अन्तिम आयतों में उन्हें धमकी दी गई है जो कुर्आन सुनकर अब्राह के आगे नहीं झुकते बल्कि उसे झुठलाने हैं। और उन्हें अनन्त प्रतिफल की शुभसूचना दी गई है जो इमान ला कर सदाचार करते हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. और अपने पालनहार की सुनेगा और
यही उसे करना भी चाहिये।
3. तथा जब धरती फैला दी जायेगी।
4. और जो उसके भीतर है फैक देगी
तथा खाली हो जायेगी।

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۖ
وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۖ
وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۖ
وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۖ

1 इस सूरह का शीर्षक भी प्रलय (क्यामत) तथा परलोक (आखिरत) है

5. और अपने पालनहार की सुनगी और यही उसे करना भी चाहिये।¹
6. हे इन्सान! वस्तुतः तू अपने पालनहार से मिलने के लिये परिश्रम कर रहा है, और तू उस से अवश्य मिलेगा।
7. फिर जिस किसी को उस का कर्म पत्र दाहिने हाथ में दिया जायेगा।
8. तो उस का सरल हिमाब लिया जायेगा।
9. तथा वह अपनों में प्रसन्न होकर वापस जायेगा।
10. और जिन को उन का कर्म पत्र बाये हाथ में दिया जायेगा।
11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा।
12. तथा नरक में जायेगा।
13. वह अपनों में प्रसन्न रहना था।
14. उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।
15. क्यों नहीं? निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।²

- وَأَدَّتْ مِنْهَا وَحْشًا ۝
يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِرٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَذًّا ۝
فَمُلَاقِيهِ ۝
فَأَمَّا مَنْ أَوْفَىٰ عَيْتَهُ يَمِينِهِ ۝
فَسَوْفَ يُحَاسِبُ حَسَابًا يُّبَيِّرًا ۝
وَيَتَقَلَّبُ إِلَىٰ أُمِّهِ سُرُورًا ۝
وَأَمَّا مَنْ أَوْفَىٰ كَيْتَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝
فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ۝
وَيُضِلُّ سَبِيلًا ۝
إِنَّهُ كَانَ فِي أُمِّهِ سُرُورًا ۝
رَبَّهُ هُنَّ أَنْ لَّنْ يَحْضُرَ ۝
بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝

1 (1-5) इन आयतों में प्रलय के समय आकाश एवं धरती में जो हलचल होगी उस का चित्रण करते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व के विधाना के आज्ञानुसार यह आकाश और धरती कार्यरत है और प्रलय के समय भी उसी की आज्ञा का पालन करेंगे।

धरती को फैलाने का अर्थ यह है कि पर्वत आदि खण्ड खण्ड हो कर समस्त भूमि चौरस कर दी जायेगी।

2 (6-15) इन आयतों में इन्सान को सावधान किया गया है कि तूझे भी अपने पालनहार से मिलना है। और धीरे धीरे उसी की ओर जा रहा है वहाँ अपने

16. मैं साध्य लालिमा की शपथ लेता हूँ।
17. तथा रान की और जिसे वह ऐकत्र करे।
18. तथा चाँद की जब पूरा हो जाये।
19. फिर तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा पर सवार होंगे।
20. फिर क्यों वे विश्वास नहीं करते।
21. और जब उन के पास कुर्आन पढ़ा जाता है तो मज्दा नहीं करते।¹
22. बल्कि काफिर तो उसे झुठलाते हैं।
23. और अल्लाह उन के विचारों को भलि भौंति जानता है।
24. अतः उन्हें दुख दायी यातना की शुभ सूचना सुना दो।
25. परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के लिये समाप्त न होने वाला बदला है।²

فَلَا أَقْسِرُ بِالْقَمَرِ ۝

وَالْيَلِيلِ وَمَا وَتَرِ ۝

وَالْمَصِيرِ ۝

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَلَىٰ طَبَقٍ ۝

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَإِذْ قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْمَعُونَ ۝

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَكْذِبُونَ ۝

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُؤْمِنُونَ ۝

فَتَنبِئْهُمْ بِعَذَابِ الْيَوْمِ ۝

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

कर्मनुसार जिसे दायें हाथ में कर्म पत्र मिलेगा वह अपनों से प्रसन्न होकर मिलेगा। और जिस को बायें हाथ में कर्म पत्र दिया जायेगा तो वह बिनाश को पुकारेगा। यह वही होगा जिस ने माया मोह में कुर्आन को नकार दिया था और सोचा कि इस संसारिक जीवन के पश्चात् कोई जीवन नहीं आयेगा।

- 1 (16-21) इन आयतों में विश्व के कुछ लक्षणों को साध्य स्वरूप प्रस्तुत कर के सावधान किया गया है कि जिस प्रकार यह विश्व तीन स्थितियों से गुजरता है इसी प्रकार तुम्हें भी तीन स्थितियों से गुजरना है: संसारिक जीवन, फिर मरण फिर परलोक का स्थायी जीवन जिस का सुख दुःख संसारिक कर्मों के आधार पर होगा।
- 2 (22-25) इन आयतों में उन के लिये चेतावनी है जो इन स्वभाविक साध्यों के होते हुये कुर्आन को न मानने पर अड़े हुये हैं। और उन के लिये शुभ सूचना है जो इसे मान कर विश्वास (ईमान) तथा सुकर्म की राह पर अग्रसर हैं।

सूरह बुरूज⁽¹⁾ - 85

سُورَةُ الْبُرُوجِ

सूरह बुरूज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 22 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयतों में बुजों (राशि चक्र) वाले आकाश की शपथ ली गई है। जिस से इस का यह नाम रखा गया है।¹¹
- आयत 1 से 3 तक प्रतिफल के दिन के होने का दावा किया गया है।
- आयत 4 से 11 तक उन को धमकी दी गई है जो मुसलमानों पर केवल इस लिये अन्याचार करते हैं कि वह एक अल्लाह पर ईमान लाये हैं। और जो इस अन्याचार के होते ईमान पर स्थित रहें उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। फिर आयत 16 तक अन्याचारियों को सूचित किया गया है कि अल्लाह की पकड़ कड़ी है। साथ ही अल्लाह के उन गुणों का वर्णन किया गया है जिन से भय पैदा होता है और क्षमा माँगने की प्रेरणा मिलती है।
- आयत 17 से 20 तक अन्याचारियों की शिक्षाप्रद यातना की ओर संकेत है और यह चेतावनी है कि विरोधी अल्लाह के घेरे में हैं।
- अन्त में कुर्आन को एक ऊँची पुस्तक बताया है जिस का स्रोत पवित्र तथा सुरक्षित है और जिस की कोई धान असत्य नहीं हो सकती।

1 यह सूरह मक्का के उस युग में उतरी जब मुसलमानों को घोर यातनायें दे कर इस्लाम से फेरने का प्रयास जोरों पर था। ऐसी परिस्थितियों में एक ओर तो मुसलमानों को दिलसा दिया जा रहा है और दूसरी ओर क़ाफ़ियों को सावधान किया जा रहा है। और इस के लिये "अम्हाले उख़दूद" (खाइयों वालों) की कथा का वर्णन किया जा रहा है।

दक्षिणी अरब में नजरान, जहाँ इसाई रहते थे, को बड़ा महत्व प्राप्त था। यह एक व्यवसायिक केन्द्र था। तथा सामाजिक कारणों से "जू नवास" यमन के यहूदी सम्राट ने उस पर आक्रमण कर दिया। और आग से भरे गड्डों में नर नारियों तथा बच्चों को फिक्का दिया जिस के बदले 525 इ॰ में हब्शा के इसाईयों ने यमन पर आक्रमण कर के "जू नवास" तथा उस के हिम्परी राज्य का अन्त कर दिया। इस की पुष्टि "गुराब" के शिला लेख से होती है जो वर्तमान में अवशेषों को मिला है। (तर्जुमानुल कुर्आन)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है बुर्जों वाले आकाश की।
2. शपथ है उस दिन की जिस का वचन दिया गया।
3. शपथ है साक्षी की और जिस पर साक्ष्य देगा।
4. खाईयों वालों का नाश हो गया।¹
5. जिन में भड़कते हुये ईंधन की अग्नि थी।
6. जब कि वे उन पर बैठे हुये थे।
7. और वे ईमान वालों के साथ जो कर रहे थे उसे देख रहे थे।
8. और उन का दोष केवल यही था कि वे प्रभावी प्रशंसा किये अल्लाह के प्रति विश्वास किये हुये थे।
9. जो आकाशों तथा धरती के राज्य का

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ

وَسَاطِعِهِمْ وَشُجُورِهِمْ

وَيْلٌ لِّأَصْحَابِ الْأَحْدَادِ

الَّذِينَ ذَاتَ لُؤْلُؤٍ

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ

وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَن يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَظِيمِ
الْمُتَّبِعِينَ

أَشِدَّاءُ لِّهَ الْهَيْبَةِ السَّعِيرِ وَلَا يَرْضَىٰ لِقَائِهِمْ

1 (1-4) इन में तीन चीजों की शपथ ली गई है-

(1) बुर्जों वाले आकाश की,

(2) प्रलय की जिस का वचन दिया गया है

(3) प्रलय के भयावह दृश्य की और उस पूरी उत्पत्ति की जो उसे देखेगी।

प्रथम शपथ इस बात की गवाही दे रही है कि जो शक्ति इस आकाश के ग्रहों पर राज कर रही है उस की पकड़ में यह तुच्छ इन्सान बच कर कहाँ जा सकता है?

दूसरी शपथ इस बात पर है कि संसार में इन्सान जो अन्याचार करना चाहे कर ले, परन्तु वह दिन अवश्य आना है जिस से उसे सावधान किया जा रहा है जिस में सब के साथ न्याय किया जायेगा, और अन्याचारियों की पकड़ की जायेगी। तीसरी शपथ इस पर है कि जैसे इन अन्यचारियों ने विवश आत्मिकों के जलने का दृश्य देखा, इसी प्रकार प्रलय के दिन पूरी मानवजाति देखेगी कि उन की क्या दुर्गत है।

स्वामी है। और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।

كُلُّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

10. जिन्हों ने ईमान लाने वाले नर नारियों को परीक्षा में डाला फिर क्षमा याचना न की उन के लिये नरक का दण्ड तथा भड़कती आग की यातना है।

إِنَّ الْكَاذِبِينَ قَعَمُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ لَكُنَّ لَهُنَّ يَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَاتُ ۝

11. वास्तव में जो ईमान लाये और सदाचारी बने, उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन के तले नहरें बह रही हैं और यही बड़ी सफलता है।¹¹

إِنَّ الْكَاذِبِينَ صُورُوا عَلَى الصُّرُوفِ ۝

12. निश्चय तेरे पालनहार की पकड़ बहुत कड़ी है।

رَبُّ يَبْطُلُ زِينَتَهُ لَأُتْبِتُهُ ۝

13. वही पहले पैदा करता है और फिर दूसरी बार पैदा करेगा।

إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ ۝

14. और वह अनि क्षमा तथा प्रेम करने वाला है।

وَهُوَ تَعَزَّوُتٌ ۝

15. वह सिंहासन का महान स्वामी है।

دُوالْعَرْشِ ۝

16. वह जो चाहे करना है।¹²

فَعَالٌ لِّمَتٍ يُرِيدُ ۝

1 (5 11) इन आयतों में जो आत्मिक सनाये गये उन के लिये सहायता का बचन तथा यदि वे अपने विश्वास (ईमान) पर स्थित रहे तो उन के लिये स्वर्ग की शुभ सूचना और अत्यचारियों के लिये नरक की धमकी है जिन्हों ने उन को सनाया और फिर अल्लाह से क्षमा याचना आदि कर के मन्थ को नहीं माना।

2 (12 16) इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह की पकड़ के साथ ही जो क्षमा याचना कर के उस पर ईमान लाये, उस के लिये क्षमा और दया का द्वार खुला हुआ है।

कुर्आन ने इस कुबिचार का खण्डन किया है कि अल्लाह पापों को क्षमा नहीं कर सकता। क्योंकि इस से संसार पापों में भर जायेगा और कोई स्वार्थी पाप कर के क्षमा याचना कर लेगा फिर पाप करेगा। यह कुबिचार उस समय सही हो सकता है जब अल्लाह को एक इन्सान मान लिया जाये, जो यह न जानता हो कि जो व्यक्ति क्षमा माँग रहा है उस के मन में क्या है? अल्लाह तो मर्मज्ञ

- | | |
|--|---|
| 17. हे नबी! क्या तुम को सेनाओं की सूचना मिली? | هَلْ أَتَتْكَ خَبْرٌ مِّنْ مَّوَدٍّ |
| 18. फिरऔन तथा समूद की ^[1] | يُرْعَوْنَ وَكَوْنُهُ |
| 19. बल्कि काफिर (विश्वासहीन) झुठलाने में लगे हुये हैं। | بَلِ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ أَتَدْرِي |
| 20. और अल्लाह उन को हर ओर से घेरे हुये है। ^[2] | وَلَهُ مِنْ ذُرِّيَّتِهِمْ لُحْيٌ |
| 21. बल्कि वह गौरव वाला कुर्आन है। | بَلِ الْقَوْلِ جَدِيدٌ |
| 22. जो लेख पत्र (लौहे महफूज) में सुरक्षित है। ^[3] | فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ |

है वह जानता है कि किम के मन में क्या है? फिर "तौबा" इस का नाम नहीं कि मुख से इस शब्द को बोल दिया जाये। तौबा (पश्चानुताप) मन से पाप न करने के प्रयत्न का नाम है और इसे अल्लाह तआला जानता है कि किम के मन में क्या है?

- (17-18) इन में अतीत की कुछ अत्यचारी जानियों की ओर संकेत है जिन का सविस्तार वर्णन कुर्आन की अनेक सूरतों में आया है। जिन्होंने आस्तिकों पर अत्यचार किये जैसे मक्का के कुरैश मुसलमानों पर कर रहे थे। जब कि उन को पता था कि पिछली जानियों के साथ क्या हुआ। परन्तु वे अपने परिणाम से निश्चिंत थे।
- (19-20) इन दो आयतों में उन के दुर्भाग्य को बताया जा रहा है जो अपने प्रभुत्व के गर्व में कुर्आन को नहीं मानते। जब कि उसे माने बिना कोई उपाय नहीं और वह अल्लाह के अधिकार के भीतर ही है।
- (21-22) इन आयतों में बताया गया है कि यह कुर्आन कबिता और ज्योतिष नहीं है जैसा कि वह सोचते हैं यह श्रेष्ठ और उच्चतम अल्लाह का कथन है जिस का उद्गम "लौहे महफूज" में सुरक्षित है।

सूरह तारिक⁽¹⁾ - 86

سُورَةُ الطَّارِقِ

सूरह तारिक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 17 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में ((तारिक)) शब्द आया है जिस का अर्थ ((तारा)) है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।⁽¹⁾
- इस की आयत 1 से 4 तक में आकाश तथा तारों की इस बात पर गवाही प्रस्तुत की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक दिन उस को हिसाब के लिये लाया जायेगा।
- आयत 5 से 8 तक मनुष्य की उत्पत्ति को उस के द्वारा पैदा किये जाने का प्रमाण बनाया गया है। और आयत 9 से 10 तक में यह वर्णन है कि उस दिन सब भेद परखे जायेंगे और मनुष्य विवश और असहाय होगा।
- आयत 11 से 14 तक में इस बात पर आकाश तथा धरती की गवाही प्रस्तुत की गई है कि कुर्आन जो प्रतिफल के दिन की सूचना दे रहा है वह अकट्य है।
- अन्त में काफिरों को चेतावनी देते हुये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिनामा दी गई है कि उन की चालें एक दिन उन्हीं के लिये उलटी पड़ेंगी। उन्हें कुछ अवसर दे दो। उन का परिणाम सामने आने में देर नहीं।

अल्लाह के नाम से जो अन्धन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है आकाश तथा रात के
"प्रकाश प्रदान करने वाले" की!

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ

1. इस सूरह में दो विषयों का वर्णन किया गया है:
एक यह कि इन्सान को मौत के पश्चान अल्लाह के सामने उपस्थित होना है।
दूसरा यह कि कुर्आन एक निर्णायक वचन है। जिसे विश्वास हीनों (काफिरों) की कोई चाल और उपाय विफल नहीं कर सकती।

2. और तुम क्या जानो कि वह "रात में प्रकाश प्रदान करने वाला" क्या है?
3. वह ज्योतिमय सितारा है।
4. प्रत्येक प्राणी पर एक रक्षक है।¹¹
5. इन्सान यह तो विचार करे कि वह किस चीज से पैदा किया गया?
6. उछलने पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।
7. जो पीठ तथा सीने के पंजरों के मध्य से निकलता है।
8. निश्चय वह उसे लौटाने की शक्ति रखता है।¹²
9. जिस दिन मन के भेद परखे जायेंगे।
10. तो उसे न कोई बल होगा और न उस का कोई सहायक।¹³
11. शपथ है आकाश की जो बरसता है।
12. तथा फटने वाली धरती की।
13. वास्तव में यह (कूर्भान) दो टुक निर्णय (फैसला) करने वाला है।

وَمَا أَدْرِىكَ مَا التَّارِيقُ ۝

الْمَجْمُوعُ بِمَا قَبْلُ ۝

رَبُّ كُلِّ نَفْسٍ لَّدُنَّ عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۝

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝

إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝

يَوْمَ تُنْفَخُ السُّرَابِرُ ۝

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝

وَأَسْمَاءُ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الْمُدْعِ ۝

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝

- 1 (1-4) इन में आकाश के तारों को इस बात की गवाही में लाया गया है कि विश्व की कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो एक रक्षा के बिना अपने स्थान पर स्थित रह सकती है, और वह रक्षक स्वयं अल्लाह है।
- 2 (5-8) इन आयतों में इन्सान का ध्यान उस के अस्तित्व की ओर आकर्षित किया गया है कि वह विचार तो करे कि कैसे पैदा किया गया है वीर्य से? फिर उस की निरन्तर रक्षा कर रहा है। फिर वही उसे मृत्यु के पश्चात् पुनः पैदा करने की शक्ति भी रखता है।
- 3 (9-10) इन आयतों में यह बताया गया है कि फिर से पैदाइश इस लिये होगी ताकि इन्सान के सभी भेदों की जाच की जाये जिन पर ससार में पर्दा पड़ा रह गया था और सब का बदला न्याय के साथ दिया जाये।

14. हँसी की बात नहीं।¹

وَمَا هِيَ إِلَّا هَزْلٌ

15. वह चाल वाजी करते हैं।

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝

16. मैं भी चाल वाजी कर रहा हूँ।

وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝

17 अतः काफ़िरो को कुछ थोड़ा अवसर दे दो।²

لَسَوْفَ يَكْفُرُ بَيْنَ أَيْمَانِهِمْ ذُرِّيَةً ۝

1 (11-14) इन आयतों में बताया गया है कि आकाश से वर्षा का हाना तथा धरती से पेड़ पौधों का उपजना कोई खेल नहीं एक गंभीर कर्म है। इसी प्रकार कुरआन में जो तथ्य बताये गये हैं वह भी हँसी उपहास नहीं है पक्की और अडिग बातें हैं काफ़िर (विश्वास हीन) इस भ्रम में न रहें कि उन की चालें इस कुरआन की आमंत्रण को विफल कर देंगी। अल्लाह भी एक उपाय में लगा है जिस के आगे इन की चालें धरी रह जायेंगी।

2 (15-17) इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सान्त्वना तथा अधर्मियों को यह धमकी दे कर दान पूरी कर दी गई है कि आप तनिक सहन करें और विश्वासहीन को मनमानी कर लेने दें, कुछ ही देर होगी कि इन्हें अपने दुष्परिणाम का ज्ञान हो जायगा।
और इक्कीस वर्ष ही बीते थे कि पूरे मक्का और अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा।

सूरह आला¹ - 87

سورة الأعراس

सूरह आला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 19 आयत है।

- इस में अल्लाह के गुण ((आला)) अर्थात् सर्वोच्च होने का वर्णन हुआ है इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।¹
- इस में आयत 1 से 5 तक अल्लाह के पवित्रता के गान का आदेश देते हुये उस के गुणों का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य अल्लाह को पहचाने,
- आयत 6 से 8 तक बह्वी को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की स्मरण शक्ति में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है।
- आयत 9 से 15 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शिक्षा देने का आदेश देकर बताया गया है कि किस प्रकार के लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे और कौन नहीं करेंगे और दोनों का परिणाम क्या होगा।
- अन्त में बताया गया है कि परलोक की अपेक्षा संसार को प्रधानता देना गलत है जिस के कारण मनुष्य मार्गदर्शन से वंचित हो जाता है। फिर कहा गया है कि यही बात जो इस सूरह में बताई गई है पहले के ग्रन्थों में भी बताई गई है।

1 इस सूरह में तीन महत्वपूर्ण विषयों की ओर संकेत किया गया है:

- 1- तौहीद (ऐकेश्वरवाद)
- 2- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये कुछ निर्देश।
- 3- परलोक (आखिरत)।

1- प्रथम आयत में तौहीद की शिक्षा को एक ही आयत में सीमित कर दिया गया है कि अल्लाह के नाम की पवित्रता का स्मरण करो जिस का अर्थ यह है कि उसे किसी ऐसे नाम से याद न किया जाये जिस में किसी प्रकार का दोष अथवा किसी रचना से उसकी समानता का संशय हो। इसलिये कि संसार में जितनी भी गलत आस्थाएँ हैं सब की जड़ अल्लाह से संबन्धित कोई न कोई अशुद्ध और गलत विचार है जिस ने उस के लिये अवैध नाम का रूप धारण कर लिया है। आस्था का सुधार सर्व प्रथम है और अल्लाह को मात्र उन्हीं शुभनामों से याद किया जाये जो उस के लिये उचित हैं। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना अबुल कलाम आजाद)

- सहीह हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दोनों ईद और जुमुआ में यह सूरह और सूरह गाशिया पढ़ने थे। (सहीह मुस्लिम 878)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो।
2. जिस ने पैदा किया और ठीक ठीक बनाया।
3. और जिस ने अनुमान लगाकर निर्धारित किया, फिर सीधी राह दिखाई।
4. और जिस ने चारा उपजाया।¹
5. फिर उसे (सुखा कर) कूड़ा बना दिया।²
6. (हे नबी!) हम तुम्हें ऐसा पढ़ायेंगे कि भूलोगे नहीं
7. परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। निश्चय ही वह सभी खुली तथा छिपी बातों को जानता है,
8. और हम तुम्हें सरल मार्ग का

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ

وَالَّذِي نَدَّرَ فَهَدَىٰ

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْأُخْرَىٰ

فَجَعَلَهُ خُثَاثًا

سُفْرًا لَّكَ فَلَا تَلْوِي

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجُحْرَ وَمَا عَنَىٰ

وَنُنَبِّئُكَ بِتِيسْرٍ

- 1 (2-4) इन आयतों में जिस पालनहार ने अपने नाम की पवित्रता का वर्णन करने का आदेश दिया है उस का परिचय दिया गया है कि वह पालनहार है जिस ने सभी को पैदा किया, फिर उन को संनूलित किया, और उन के लिये एक विशेष प्रकार का अनुमान बनाया जिस की सीमा से नहीं निकल सकते, और उन के लिये उस कार्य को पूरा करने की राह दिखाई जिस के लिये उन्हें पैदा किया है
- 2 (4-5) इन आयतों में बताया गया है कि प्रत्येक कार्य अनुक्रम से धीरे धीरे होते हैं धरती के पौधे धीरे धीरे गुजान और हरे भरे होते हैं। ऐसे ही मानवी योग्यतायें भी धीरे धीरे पूरी होती हैं।

साहम दोगे।¹

9. तो आप धर्म की शिक्षा देते रहें। अगर शिक्षा लाभदायक हो।

مَذْكُورِينَ تَعْتَصِبُ الَّذِينَ

10. डरने वाला ही शिक्षा ग्रहण करेगा।

سَيِّئًا مَنِ اسْتَعْتَبَ

11. और दुर्भाग्य उस से दूर रहेगा।

وَتَعْتَصِبُ الَّذِينَ يَرْجُونَ

12. जो भीषण अग्नि में जायेगा।

الْأُثَى يَقُولُ السَّارِ كَلْبَرَىٰ

13. फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा।²

لَمْ يَلْمُزْهُمْ مِنْهُمْ لَعْنَىٰ

14. वह सफल हो गया जिस ने अपना शुद्धिकरण किया।

قَدْ قُلِمَتْ مِنْ رِجْلَيْهِ

15. तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज पढ़ी।³

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ

16. बल्कि तुम लोग तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो।

مَنْ يُؤْتِزِزْ مِنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

17. जबकि आखिरत (परलोक) का जीवन ही उत्तम और स्थाई है।

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ لَأَنَّ

18. यही बात प्रथम ग्रन्थों में है।

إِنَّ هَذِهِ أَوَّلُ الْفُتُوحِ

1 (6-8) इन में नबी मल्लल्लाह अलैहि व सल्लम को यह निर्देश दिया गया है कि इस की चिन्ता न करें की कुरआन मुझे कैसे याद होगा। इसे याद कराना हमारा काम है, और इसका सुरक्षित रहना हमारी दया से होगा, और यह उसकी दया और रक्षा है कि इस मानव संसार में किसी धार्मिक ग्रन्थ के संबंध में यह दावा नहीं किया जा सकता कि वह सुरक्षित है। यह गर्व केवल कुरआन को ही प्राप्त है।

2 (9-13) इन में बताया गया है कि आप को मात्र इसका प्रचार प्रसार करना है और इस की सरल राह यह है कि जो सुन और मानने को तैयार हो उसे शिक्षा दी जाये। किसी के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं है। जो हत भागे है वही नहीं सुनेगा और नरक की यातना के रूप में अपना दुष्परिणाम देखेगा।

3 (14-15) इन आयतों में कहा गया है कि, सफलता मात्र उन के लिये है जो आस्था स्वभाव तथा कर्म की पवित्रता को अपनायें, और नमाज अदा करते रहें।

19. (अर्थात्) इब्राहीम तथा मूसा के ग्रन्थों में¹

صُفِّىٰ اِبْرٰهٖمَ وَاٰمُوْسٰى

1 (16-19) इन आयतों का भावार्थ यह है कि वास्तव में रोग यह है कि काफ़िरों को सांसारिक स्वार्थ के कारण नबी की बातें अच्छी नहीं लगती। जब कि परलोक ही स्थायी है। और यही सभी आदि ग्रन्थों की शिक्षा है।

सूरह गाशियह ' - 88

سورة الغاشية

सूरह गाशियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 26 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((अल गाशियह)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ ऐसी आपदा है जो सब पर छा जाये।¹
- इस की आयत 2 से 7 तक में उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय को नहीं मानते और 8 से 16 तक उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं।
- आयत 17 से 20 तक विश्व की उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो अल्लाह के सामर्थ्य का प्रमाण हैं। और जिन पर विचार करने से कुर्आन की बातों को समर्थन मिलता है कि अल्लाह प्रलय लाने तथा स्वर्ग और नरक का संसार बनाने की शक्ति रखता है और प्रतिफल का होना अनिवार्य है।
- आयत 21 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्बोधित किया गया है कि आप का काम मात्र शिक्षा देना है किसी को बलपूर्वक सत्य मनवाना नहीं है। अतः जो आप की शिक्षा सुनने को तय्यार नहीं है उन्हें अल्लाह के हवाले करो। क्योंकि आखिर उन्हें अल्लाह ही की ओर जाना है, उस दिन वह उन से हिस्साब ले लेगा।

अल्लाह के नाम से जो अन्त्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तेरे पास पूरी सृष्टि पर छा जाने वाली (क्यामत) का समाचार आया?
2. उस दिन कितने मुँह सहमे होंगे!

هَلْ أَتَاكَ خَبْرٌ لِّغَاشِيَةٍ

وَعَوْمَةٌ يُوسَبُّ غَاشِيَةً

- 1 यह सूरह मक्की है तथा आरंभक युग की है। इस में ऐकश्वरवाद (नौहीद) तथा परलोक (आखिरत) के विषय को दोहराया गया है, परन्तु इस की वर्णन शैली कुछ भिन्न है।

- | | |
|---|--|
| 3. परिश्रम करते धके जा रहे होंगे। | عَابِلَةً نَّاصِبَةً ۝ |
| 4. पर वे धहकती आग में जायेंगे। | تَصْلَى نَارًا حَامِيَةً ۝ |
| 5. उन्हें खोलने सोते का जल पिलाया जायेगा। | تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ يَبُورَةٍ ۝ |
| 6. उनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी। | لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرْبٍ ۝ |
| 7. जो न मोटा करेगी, और न भूख दूर करेगी। ¹ | لَا يَشْبَعُونَ وَلَا يَقْنَطُ مِنْ خُبْرَةٍ ۝ |
| 8. कितने मुख उस दिन निर्मल होंगे। | وَمِنْ وَجْهِ نَّاصِبَةٍ ۝ |
| 9. अपने प्रयास से प्रसन्न होंगे। | لِغْيَمَارٍ مِيَةٍ ۝ |
| 10. ऊँचे स्वर्ग में होंगे। | لِيُجَنَّبَهُ عَابِلَةٌ ۝ |
| 11. उस में कोई बकवास नहीं सुनेगी। | لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَمِيَّةٌ ۝ |
| 12. उस में बहता जल स्रोत होगा। | فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ |
| 13. और उस में ऊँचे ऊँचे सिंहासन होंगे। | بِوُجْهِ سُرُرٍ مُتْرَفَةٌ ۝ |
| 14. उस में बहुत सारे प्याले रखे होंगे। | وَالْوَابُ مُنْصَوِّعَةٌ ۝ |
| 15. पक्तियों में गलीचे लगे होंगे। | وَتَسَامِيْعٌ مَقْصُوفَةٌ ۝ |

1 (1-7) इन आयतों में प्रथम समारिक स्वार्थ में मग्न इन्सानों को एक प्रश्न द्वारा सावधान किया गया है कि उसे उस समय की सूचना है जब एक आपदा समस्त विश्व पर छा जायेगा? फिर इसी के साथ यह विवरण भी दिया गया है कि उस समय इन्सानों के दो भेद हो जायेंगे और दोनों के प्रतिफल भी भिन्न होंगे एक नरक में तथा दूसरा स्वर्ग में जायेगा।

तीसरी आयत में (नासिबह) का शब्द आया है जिस का अर्थ है धक कर चूर हो जाना अर्थात् काफ़िरों को क्यामत के दिन इतनी कड़ी यातना दी जायेगी कि उन की दशा बहुत खराब हो जायेगी। और वे धके धके से दिखाई देंगे।

इस का दूसरा अर्थ यह भी है कि उन्होंने संसार में बहुत से कर्म किये होंगे परन्तु वह सत्य धर्म के अनुसार नहीं होंगे इस लिये वे पूजा अर्चना और कड़ी तपस्या करके भी नरक में जायेंगे इर्मलिये कि सत्य आस्था के बिना कोई कर्म मान्य नहीं होगा।

16. और मछमली कालीनें बिछी होगी।¹

فَتَنَادَىٰ مَتَّىٰ ۖ

17. क्या वह ऊंटों को नहीं देखने कि कैसे पैदा किये गये हैं?

أَمْ لَا يَنْظُرُونَ إِلَىٰ الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۖ

18. और आकाश को, कि किस प्रकार ऊंचा किया गया?

وَرَىٰ السَّمَاءَ كَيْفَ رُفِعَتْ ۖ

19. और पर्वतों को कि कैसे गाड़े गये?

وَرَىٰ بِجِبَالٍ كَيْفَ نُصِبَتْ ۖ

20. तथा धरती को कि कैसे पसारी गई? ²

وَرَىٰ الْأَرْضَ كَيْفَ سُطِحَتْ ۖ

21. अतः आप शिक्षा (नसीहत) दें, कि आप शिक्षा देने वाले हैं।

فَذَكِّرْ ۚ نَسَا أَنتَ مَذْكُرٌ ۖ

22. आप उन पर अधिकारी नहीं हैं।

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّرٍ ۖ

23. परन्तु जो मुँह फेरेंगे और नहीं मानेंगे।

إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكُفِرَ ۖ

24. तो अल्लाह उसे भारी यातना देगा।

فَعَذَابُ اللَّهِ لَْعَذَابٍ أَلِيمٌ ۖ

25. उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है।

إِنَّا لَنَبْتَغِيهِمْ إِنبَاءَهُمْ ۖ

26. फिर हमें ही उन का हिमाव लेना है। ³

لَنُورِدَنَّ عَلَيْهِمْ جِسْرَهُمْ ۖ

1 (8-16) इन आयतों में जो इस संसार में मृत्यु आस्था के साथ कुर्आन आदेशानुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं परन्तु मेरे उन के मरने के मुख का दृश्य दिखाया गया है।

2 (17-20) इन आयतों में फिर विषय बदल कर एक और प्रश्न किया जा रहा है कि जो कुर्आन की शिक्षा तथा प्रलोक की सूचना को नहीं मानते अपने सामने उन चीजों को नहीं देखते जो रात दिन उन के सामने आती रहती हैं ऊंटों तथा पर्वतों और आकाश एवं धरती पर विचार क्यों नहीं करने कि क्या यह सब अपने आप पैदा हो गये हैं या इन का कोई रचयिता है? यह तो असंभव है कि रचना हो और रचयिता न हो। यदि मानते हैं कि किसी शक्ति ने इन को बनाया है जिस का कोई साक्ष्य नहीं तो उस के अकेले पूज्य होने और उस के फिर से पैदा करने की शक्ति और सामर्थ्य का क्यों इन्कार करते हैं? (तर्जुमानुल कुर्आन)

3 (21-26) इन आयतों का भावार्थ यह है कि कुर्आन किसी को बलपूर्वक मनवाने के लिये नहीं है और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कर्तव्य है कि किसी को बलपूर्वक मनवाये। आप जिस से डरा रहे हैं यह मानें या न मानें वह खुली बात है। फिर भी जो नहीं सुनते उनको अल्लाह ही समझेगा। यह और इस जैसी कुर्आन की अनेक आयतें इस आरोप का खण्डन करती हैं कि इस्लाम ने अपने मनवाने के लिये अस्त्र शस्त्र का प्रयोग किया।

सूरह फज्र - 89

سورة الفجر

सूरह फज्र के सक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 30 आयत है।

- इस का आरंभ ((वल फज्र)) से होने के कारण इस को यह नाम दिया गया है।
- आयत 1 से 5 तक दिन-रात की प्राकृतिक स्थितियों को प्रतिफल के दिन के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। और आयत 6 से 14 तक कुछ बड़ी जानियों के शिक्षाप्रद परिणाम को इस के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस विश्व का शामक सब के कर्मों को देख रहा है और एक दिन वह हिसाब अवश्य लेगा।
- आयत 15 से 20 तक में मनुष्य के साथ दुर्यवहारों तथा निर्बलों के अधिकार हनन पर कड़ी चेतावनी दी गई और बताया गया है कि ऐसा करने का कारण परलोक का अविश्वास है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय का चित्र प्रस्तुत करने हुये विरोधियों तथा ईमान वालों का परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 शपथ है भोर की।
2. तथा दस रात्रियों की।
- 3 और जोड़े तथा अकेले की।
4. और रात्री की जब जाने लगे।
5. क्या उस में किसी मतिमान
(समझदार) के लिये कोई शपथ है?'

وَالْفَجْرِ
وَلِلَّيْلِ عَشْرِ
وَلِلشَّفْعِ وَالْوَتْرِ
وَالْجُحْرِ
هَلْ فِي دِينِكُمْ سُورَةٌ مِّنْ حَمِيزٍ

- 1 (1-5) इन आयतों में प्रथम परलोक के सुफल विषयक चार सप्ताहिक लक्षणों को साक्ष्य (गवाह) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिस का अर्थ यह है कि कर्मों

6. क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने "आद" के साथ क्या किया?
7. स्तम्भों वाले "इरम" के साथ?
8. जिन के समान देशों में लोग नहीं पैदा किये गये।
9. तथा "समूद" के साथ जिन्होंने घाटियों में चट्टानों को काट रखा था।
10. और मेखों वाले फिरऔन के साथ।
11. जिन्होंने नगरों में उपद्रव कर रखा था।
12. और नगरों में बड़ा उपद्रव फैला रखा था।
13. फिर तेरे पालनहार ने उन पर दण्ड का कोड़ा बरसा दिया।
14. वास्तव में तेरा पालनहार घान में है।
15. परन्तु जब इन्सान की उम का पालनहार परीक्षा लेता है और उसे

الْمَرْكَفَ قَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ

إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ

الَّذِينَ لَمْ يَخْلُقْنَا فِي أَسْلَافٍ

وَأَشْوَدَ الَّذِينَ جَاءُوا الصَّخْرِيَّاتِ

وَمِرْعُونَ دُونَ الْأَوْتَارِ

الَّذِينَ طَعَوْا لِبِلَافٍ

فَأَثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ

فَإِنَّا الْإِنْسَانَ إِذَا ذَكَّرَهُ بِآيَاتِنَا

का फल मिलना सत्य है। रात तथा दिन का यह अनुक्रम जिस व्यवस्था के साथ चल रहा है उस से सिद्ध होता है कि अलाह ही इसे चला रहा है "दस रात्रियों" से अभिप्राय "जुल हिज्जा" मास की प्रारम्भिक दस रातें हैं। महीह हदीसों में इन की बड़ी प्रधानता बताई गई है।

- 1 (6-14) इन आयतों में उन जातियों की चर्चा की गई है जिन्होंने माया मोह में पड़ कर परलाक और प्रतिफल का इन्कार किया और अपने नैतिक पतन के कारण धरती में उग्रवाद किया। "आद, इरम" से अभिप्रेत वह पुरानी जाति है जिसे कुर्आन तथा अरब में "आदे कुला" (प्रथम आद) कहा गया है यह वह प्राचीन जाति है जिस के पास आद (अलैहिस्सलाम) को भजा गया और इन को "आदे इरम" इसलिये कहा गया कि यह सामी वंशक्रम की उस शाखा से संबंधित थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली आती थी। आयत नं- 11 में इस का संकेत है कि उग्रवाद का उद्गम भौतिकवाद एवं सत्य विश्वास का इन्कार है जिसे वर्तमान युग में भी प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है।

सम्मान और धन देना है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया।

وَنَعْمَ ۚ يَقُولُ رَبِّيَ الرَّحْمَنُ ۝

16. परन्तु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देना है तो कहना है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया।

وَأَمَّا إِذَا مَا اتَّسَعَتْ فَذَرَعْلَيْهِ بِرِزْقِهِ ۚ
فَيَقُولُ رَبِّيَ أَهْسَنُ ۝

17. ऐसा नहीं, बल्कि तुम अनाथ का आदर नहीं करते।

كَلَّا بَلْ لَا تَكْفُرُونَ لِيَتِيمَتِهِ ۝

18. तथा गरीब को खाना खिलाने के लिये एक दूसरे को नहीं उभारते।

وَلَا تَعْصُونَ عَلَى الْغَنَى الشَّيْئِينَ ۝

19. और मीरास (मृतक सम्पत्ति) के धन को समेट समेट कर खा जाते हो।

وَمَا كُنُوا لِلْغَنَىٰ مُغْلَبِينَ ۝

20. और धन से बड़ा मोह रखते हो।¹⁾

وَيُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝

21. सावधान! जब धरती खण्ड खण्ड कर दी जायेगी।

كَلَّا إِنَّ دُكَّيْنِ الْأَرْضِ وَكُنَّ دُكَّانَ ۝

22. और तेरा पालनहार स्वयं पदार्पण करेगा, और फरिश्ते पंक्तियों में होंगे।

وَجَاءَ رَكُوتٌ وَالْمَلَكُ صَافًّا ۝

23. और उस दिन नरक लाई जायेगी, उस दिन इन्सान सावधान हो जायेगा, किन्तु सावधानी लाभ-दायक न होगी।

وَجَاءَ يَوْمَئِذٍ بِمَنْحَرٍ مَّعْمُورَةٍ يُوَسِّدُ بِتَدَاكُرِ
لِإِنْسَانٍ ۖ وَأَنَّىٰ لَهُ الْوَكُوفُ ۝

24. वह कामना करेगा कि काश! अपने

يَقُولُ يَسْتَيْمِرُ فَنَدْمًا مَّسِينًا ۝

1 (15-20) इन आयतों में समाज की साधारण नैतिक स्थिति की परीक्षा (जायजा) ली गई और भौतिकवादी विचार की आलोचना की गई है जो मात्र सांसारिक धन और मान मर्यादा को सम्मान तथा अपमान का पैमाना समझता है और यह भूल गया है कि न धनी होना कोई पुरस्कार है और न निर्धन होना कोई दण्ड है। अल्हाह दोनों स्थितियों में मानव जाति (इन्सान) की परीक्षा ले रहा है फिर यह बात किसी के बस में हो तो दूसरे का धन भी हड़प कर जाये, क्या ऐसा करना कुकर्म नहीं जिस का हिम्माव लिया जाये?

सदा के जीवन के लिये कर्म किये हों।

25. उस दिन (अल्लाह) के दण्ड के समान
कोई दण्ड नहीं देगा।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابُهُ أَحَدًا ۝

26. और न उसके जैसी जकड़ कोई
जकड़ेगा।¹

وَلَا يُؤْخَذُ وَثَاقًا أَحَدًا ۝

27. हे शान्त आत्मा।

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝

28. अपने पालनहार की ओर चल, तू उस
से प्रसन्न, और वह तुझ से प्रसन्न।

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاحِيَةً مُّوْبِقَةً ۝

29. तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा।

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝

30. और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।²

وَادْخُلِي جَنَّاتٍ ۝

1 (21-26) इन आयतों में बताया गया है कि धन पूजने और उस से परलोक न बनाने का दुष्परिणाम नरक की घोर यातना के रूप में सामने आयेगा तब भौतिक वादी कुर्कर्मियों की समझ में आयेगा कि कुरआन को न मान कर बड़ी भूल हुई और हाथ मलेंगे।

2 (27-30) इन आयतों में उन के सुख और सफलता का वर्णन किया गया है जो कुरआन की शिक्षा का अनुपालन करने हुये आत्मा की शांति के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सूरह बलद¹ - 90

سورة البعد

सूरह बलद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 20 आयतें हैं।¹

- इस की प्रथम आयत में ((अल-बलद)) (अर्थात् नगर) की शपथ ली गई है। जिस से अभिप्राय मक्का है। और इसी से इस सूरह का यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 4 तक में जो गवाहियाँ प्रस्तुत की गई हैं उन से अभिप्राय यह है कि यह संसार मुख विनास के लिये नहीं बनाया गया है बल्कि इस के बनाने का एक विशेष उद्देश्य है। इसी लिये मनुष्य को दुख की स्थिति में पैदा किया गया है।
- आयत 5 से 7 तक में यह चेतावनी दी गई है कि मनुष्य यह न समझे कि उस के ऊपर उस के कर्मों की निगरानी के लिये कोई शक्ति नहीं है।
- आयत 8 से 17 तक में बताया गया है कि मनुष्य के आचरण और कर्म की ऊँचाई तथा नीचाई की राह भी खोल दी गई है। और इस ऊँचाई पर चढ़ कर जो दुर्गम है, वह आचरण और कर्म की ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है।
- आयत 18 से 20 तक में बताया गया है कि मनुष्य ईमान के साथ आचरण की ऊँचाई द्वारा भाग्यशाली बन जाता है और कुफ्र के कारण नरक की खाई में जा गिरता है जिस से निकलने का फिर कोई उपाय नहीं होगा।

1 इस सूरह का विषय मानव जाति (इन्सान) को यह समझाना है कि अल्लाह ने सौभाग्य तथा दुर्भाग्य की दोनों राहें खोल दी हैं। और उन्हें देखने और उन पर चलने के साधन भी सुलभ कर दिये हैं। अब इन्सान के अपने प्रयास पर निर्भर है कि वह कौन सा मार्ग अपनाना है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|---|--|
| 1. मैं इस नगर (मक्का) की शपथ लेता हूँ। | لَا أُقْسِمُ بِهَذَا النَّبِيِّ |
| 2. तथा तुम इस नगर में प्रवेश करने वाले हो। | وَأَنْتَ جَلِيلٌ |
| 3. तथा सौगन्ध है पिता एवं उस की संतान की। | وَوَيْلٌ لِلَّذِينَ |
| 4. हम ने इन्सान को कष्ट में धिरा हुआ पैदा किया है। | لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ |
| 5. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का बश नहीं चलेगा?। | أَيَسْبُحُ أَنْ يَسْجُدَ لَهُ |
| 6. वह कहता है कि मैं ने बहुत धन खर्च कर दिया। | يَقُولُ أَفْلَسْتُ |
| 7. क्या वह समझता है कि उसे किसी ने देखा नहीं?। ^{1,2} | أَيَسْبُحُ أَنْ يُرَى |

1 (1-5) इन आयतों में सर्व प्रथम मक्का नगर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो घटनायें घट रही थी, और आप तथा आप के अनुयाईयों को सनाया जा रहा था, उस को माझी के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि इन्सान की पैदाइश (रचना) संसार का स्वाद लेने के लिये नहीं हुई है। संसार परिश्रम तथा पीड़ायें झेलने का स्थान है। कांइ इन्सान इस स्थान से गुजरे बिना नहीं रह सकता। "पिता" से अभिप्राय आदम अलैहिस्सलाम और "संतान" से अभिप्राय समस्त मानव जाति (इन्सान) है।

फिर इन्सान के इस भ्रम को दूर किया है कि उस के ऊपर कोई शक्ति नहीं है जो उस के कर्मों को देख रही है और समय आने पर उस की पकड़ करेगी।

2 (6-7) इन में यह बनाया गया है कि संसार में बड़ाई तथा प्रधानता के गलत पैमाने बना लिये गये हैं और जो दिखाव के लिये धन व्यय (खर्च) करता है उस की प्रशंसा की जाती है जब कि उस के ऊपर एक शक्ति है जो यह देख रही है कि उस ने किन राहों में और किम लिये धन खर्च किया है।

8. क्या हम ने उसे दो आँखें नहीं दीं।
9. और एक जवान तथा दो होंट नहीं दिये?
10. और उसे दोनों मार्ग दिखा दिये?
11. तो वह घाटी में घुसा ही नहीं।
12. और तुम क्या जानो कि घाटी क्या है?
13. किसी दास को मुक्त करना।
14. अथवा भूक के दिन (अकाल) में खाना खिलाना।
15. किसी अनाथ संवन्धी को।
16. अथवा मिट्टी में पड़े निर्धन को।¹
17. फिर वह उन लोगों में होता है जो ईमान लाये और जिन्होंने धैर्य (सहन शीलता) एवं उपकार के उपदेश दिये।
18. यही लोग सौभाग्यशाली (दायें हाथ वाले) हैं।
19. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को

أَلَمْ نَعْمَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۝

وَسِنَانًا وَفُتَاتَيْنِ ۝

وَهَدَيْنَاهُ الشَّرَافَيْنِ ۝

فَلَا الْغَمَّ لِعَقَبِهِ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝

فَكَرْبَةُ ۝

أَوْ إِطْعَمَتِ يَوْمَ ذِي نَسَبَةٍ ۝

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝

أَوْ يَسْكِنُهُ فِي مَقْرَبَةٍ ۝

فَأُولَٰئِكَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝

وَأُولَٰئِكَ مِنَ الْمَرْحُومِينَ ۝

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَرْحُومُونَ ۝

- 1 (8 16) इन आयतों में फरमाया गया है कि इन्मान को ज्ञान और चिन्तन के साधन और योग्यतायें दे कर हम ने उस के सामने भलाई तथा बुराई के दोनों मार्ग खोल दिये हैं एक नैतिक पनन की ओर ले जाना है और उस में मन को अति स्वाद मिलता है। दूसरा नैतिक ऊँचाइयों की राह जिस में कठिनाइयाँ हैं और उसी को घाटी कहा गया है। जिस में प्रवेश करने वालों के कर्त्तव्य में है कि दासों को मुक्त करें निर्धनों को भोजन करायें इत्यादी वही लोग स्वर्ग वासी हैं। और वे जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वे नर्क वासी हैं। आयत नं० 17 का अर्थ यह है कि सत्य विश्वास (इमान) के बिना कोई शुभकर्म मान्य नहीं है। इस में सुखी समाज की विशेषता भी बनाई गई है कि दूसरों को सहन शीलता तथा दया का उपदेश दिया जाये और अल्लाह पर सत्य विश्वास रखा जाये।

नही माना यही लोग दुर्भाग्य (बायें हाथ वाले) हैं।

20. ऐसे लोग हर ओर से आग में घिरे होंगे।

عَلَيْهِمْ نَارُ مُؤَصَّدَةٌ ۖ



सूरह शम्स¹ - 91

سورة الشمس

सूरह शम्स के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 15 आयतें हैं।

- इस सूरह की प्रथम आयत में "शम्स" (सूर्य) की शपथ ली गई है, इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।¹⁾
- इस की आयत 1 से 10 तक सूर्य चांद और रात दिन तथा धरती और आकाश की उन बड़ी निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस विश्व के पैदा करने वाले की पूर्ण शक्ति तथा गुणों का ज्ञान कराती हैं और फिर मनुष्य की आत्मा की गवाही को अच्छे तथा बुरे कर्मफल के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में इस की ऐतिहासिक गवाही प्रस्तुत की गई है और आद तथा समूद जाति की कथा संक्षेप में बना कर उन के कुकर्मों के शिक्षाप्रद परिणाम लोगों की शिक्षा के लिये प्रस्तुत किये गये हैं ताकि वह कुआन तथा इस्लाम के नबी का विरोध न करें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 सूर्य तथा उस की धूप की शपथ है।
- 2 और चांद की शपथ जब उस के पीछे निकले।
- 3 और दिन की शपथ जब उसे (अर्थात् सूर्य को) प्रकट कर दे।
- 4 और रात्री की सौगन्ध जब उसे (सूर्य

وَاللَّيْلِ وَنُجْمِهِ

وَالْقَمَرِ إِذَا تَجَمَّعَا

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى

وَالْبُيُوتِ إِذَا يُنْشَبُّ

- 1 इस सूरह का विषय पुन और पाप का अन्तर समझाना है तथा उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी देना जो इस अन्तर को समझने से इन्कार करते हैं, तथा बुराई की राह पर चलने का दुराग्रह करते हैं।

को) छुपा ले।

5. और आकाश की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे बनाया।

وَالسَّمَاءَ وَمَا بَيْنَهَا ۝

6. तथा धरती की सौगन्ध और जिस ने उसे फैलाया।⁽¹⁾

وَالْأَرْضَ وَمَا طَعْنَاهَا ۝

7. और जीव की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे ठीक ठीक सुधारा।

وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۝

8. फिर उसे दुराचार तथा सदाचार का विवेक दिया है।⁽²⁾

فَالْهَبْهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۝

9. वह सफल हो गया जिस ने अपने जीव का सुद्धिकरण किया।

فَإِذَا فُجِّرَتْ مِنْ رَكْعَاهَا ۝

10. तथा वह क्षति में पड़ गया जिस ने उसे (पाप में) धंसा दिया।⁽³⁾

وَفَإِذَا خَابَتْ مِنْ دَعْوَاهَا ۝

11. "समूद" जाति ने अपने दुराचार के कारण (ईश दूत) को झुठलाया।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۝

12. जब उन में से एक हन्भागा तैयार हुआ।

إِذْ أُنْفِثَتْ شِقَاقَهَا ۝

1 (1-6) इन आयतों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार सूर्य के विपरीत चोंद तथा दिन के विपरीत रात है इसी प्रकार पुन और पाप तथा इस संसार का प्रति एक दूसरा संसार परलोक भी है। और इन्हीं स्वभाविक लक्ष्यों से परलोक का विश्वास होता है।

2 (7-8) इन आयतों में कहा गया है कि अल्लाह ने इन्सान को शारीरिक और मामिक शक्तियाँ दे कर बस नहीं किया, बल्कि उस ने पाप और पुन का स्वभाविक ज्ञान दे कर नवियों को भी भेजा। और वही (प्रकाशना) द्वारा पाप और पुन के सभी रूप समझा दिये। जिस की अन्तिम कड़ी कुर्आन, और अन्तिम नबी: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

3 (9-10) इन दोनों आयतों में यह बताया जा रहा है कि अब भविष्य की सफलता और विमफलता इस बात पर निर्भर है कि कौन अपनी स्वभाविक योग्यता का प्रयोग किस के लिये कितना करता है। और इस प्रकाशना कुर्आन के आदेशों को कितना मानता और पालन करता है।

13. (ईश दूत सालेह ने) उन से कहा कि अल्लाह की ऊंटनी और उस के पीने की बारी की रक्षा करो।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ مَا قَالُوا وَتَسْفِيحًا

14. किन्तु उन्होंने नहीं माना, और उसे बध कर दिया जिस के कारण उन के पालनहार ने यातना भेज दी और उन को चौरस कर दिया।

فَلَمَّا بَرَأ فَتَعَزَّوْا فَقَدِمْنَا عَلَيْهِمْ رَحْمَةً مِنْهُمْ فَتَوَسَّوْا

15. और वह इस के परिणाम से नहीं डरता।^[1]

وَلَا يَخَافُ عُقْبَهُمْ

1 (11 15) इन आयतों में समुद्र जाति का ऐतिहासिक उदाहरण दे कर दूनत्व (रिसालत) का महत्व समझाया गया है कि नबी इर्मांलये भेजा जाता है ताकि भलाई और बुराई का जो स्वभाविक ज्ञान अल्लाह ने इन्सान के स्वभाव में रख दिया है उसे उभारने में उस की सहायता करे। ऐसे ही एक नबी जिन का नाम सालेह था समुद्र जाति की ओर भेजे गये। परन्तु उन्होंने उन को नहीं माना, तो वे ध्वस्त कर दिये गये।

उस समय मक्का के मूर्ति पूजकों की स्थिति समुद्र जाति से मिलती जुलती थी। इसलिये उन को "सालेह" नबी की कथा सुना कर सचेत किया जा रहा है कि सावधान कहीं तुम लोग भी समुद्र की तरह यातना में न घिर जाओ। वह तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस प्रार्थना के कारण बच गये कि हे अल्लाह! इन्हें नष्ट न कर। क्योंकि इन्हीं में से ऐसे लोग उठेंगे जो तेरे धर्म का प्रचार करेंगे। इस लिये कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारे संसारों के लिये रियाज बना कर भेजा था।

सूरह लैल¹ - 92

سورة الليل

सूरह लैल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 21 आयत है।

- इस की प्रथम आयत में "लैल" अर्थात रात की शपथ ली गई है, जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।¹
- आयत 1 से 4 तक में कुछ गवाहियाँ प्रस्तुत कर के इस बात का तर्क दिया गया है कि जब मनुष्य के प्रयासों तथा कर्मों में अन्तर है तो उन के प्रतिफल में भी अन्तर का होना आवश्यक है।
- आयत 5 से 11 तक में सत्कर्मों और दुष्कर्मों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कर के बताया है कि सत्कर्म पुन् की राह पर ले जाते हैं और दुष्कर्म पाप की राह पर ले जाते हैं।
- आयत 12 से 14 तक में बताया गया है कि अब्राह का काम सीधी राह दिखा देना है और उस ने तुम्हें उसे दिखा दिया। संसार तथा परलोक का वही मानिक है। उस ने बताया है कि परलोक में क्या होना है।
- अन्त में दुराचारियों के बुरे अन्त तथा सदाचारियों के अच्छे अन्त को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. रात्री की शपथ जब छा जाये।
2. तथा दिन की शपथ जब उजाला हो जाये।

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ

- 1 इस सूरह का मूल विषय यह है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। वह किसी पर अन्याय नहीं करना। इमालिये सचेत कर दिया गया है कि बुरे काम का परिणाम बुरा होता है। और अच्छे काम का परिणाम अच्छा अब यह बात तुम पर छोड़ी जा रही है कि तुम कोनसा मार्ग ग्रहण करते हो।

- | | |
|--|---------------------------------------|
| 3. और उस की शपथ जिस ने नर और मादा पैदा किये। | وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝ |
| 4. वास्तव में तुम्हारे प्रयास अलग अलग हैं। ¹ | إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَىٰ ۝ |
| 5. फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया, | فَأَتَّامَنَ أَغْلَىٰ وَتَقَىٰ ۝ |
| 6. और भली बात की पुष्टि करता रहा, | وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝ |
| 7. तो हम उस के लिये सरलता पैदा कर देंगे। | فَسَيَسِّرُهُ لِيُيسِّرَ ۝ |
| 8. परन्तु जिस ने कंजूसी की, और ध्यान नहीं दिया, | وَأَتَّامَنَ سَعِيرَ وَتَقَىٰ ۝ |
| 9. और भली बात को झुठला दिया। | وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۝ |
| 10. तो हम उस के लिये कठिनाई को प्राप्त करना सरल कर देंगे। ² | فَسَيَسِّرُهُ لِيُيسِّرَ ۝ |

- (1-4) इन आयतों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार रात दिन तथा नर मादा (स्त्री-पुरुष) भिन्न हैं और उन के लक्षण और प्रभाव भी भिन्न हैं इसी प्रकार मानव जाति (इन्सान) के विश्वास कर्म भी दो भिन्न प्रकार के हैं। और दोनों के प्रभाव और परिणाम भी विभिन्न हैं।
- (5-10) इन आयतों में दोनों भिन्न कर्मों के प्रभाव का वर्णन है कि कोई अपना धन भलाइ में लगाना है तथा अल्लाह से डरना है और भलाइ को मानना है सत्य आस्था स्वभाव और सत्कर्म का पालन करता है। जिस का प्रभाव यह होता है कि अल्लाह उस के लिये सत्कर्मों का मार्ग सरल कर देता है। और उस में पाप करने तथा स्वार्थ के लिये अवैध धन अर्जन की भावना नहीं रह जाती। ऐसे व्यक्ति के लिये दोनों लोक में सुख है। दूसरा वह होता है जो धन का लोभी तथा अल्लाह से निश्चिन्त होता है और भलाइ को नहीं मानता। जिस का प्रभाव यह होता है कि उस का स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उसे बुराई का मार्ग सरल लगने लगता है। तथा अपने स्वार्थ और मनोकामना की पूर्ति के लिये प्रयास करता है। फिर इस ज्ञान को इस वाक्य पर समाप्त कर दिया गया है कि धन के लिये वह जान देता है परन्तु वह उसे अपने साथ लेकर नहीं जायेगा। फिर वह उस के किस काम आयेगा?

- 11 और जब वह गढ़े में गिरेगा तो
उसका धन उसके काम नहीं
आयेगा। وَمَا نُفَعِي عَنْهُ مَالَهُ وَشَرُّوهُ ۝
12. हमारा कर्तव्य इतना ही है कि हम
सीधा मार्ग दिखा दें। إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَى ۝
13. जब कि आलोक परलोक हमारे ही
हाथ में है وَإِنَّا لَنَالِدَارَ وَالْأُولَى ۝
14. मैं ने तुम को भड़कती आग से
सावधान कर दिया है। ۝ وَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّى ۝
- 15 जिस में केवल बड़ा हन्भाग ही जायेगा। لَا تَصُدُّهَا إِلَّا لَاشْتَرَىٰ ۝
16. जिस ने झुठला दिया, तथा (सत्य से)
मुँह फेर लिया। ۝ أَلَمْ يَكُنْ لَّكَ دَبٌّ وَقَوْلِي ۝
17. परन्तु संयमी (सदाचारी) उस से बचा
लिया जायेगा। وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝
18. जो अपना धन दान करता है ताकि
पवित्र हो जाये। ۝ أَلَمْ يَكُنْ لَّكَ مَالٌ يَّسَّرُ لَكَ ۝
- 19 उस पर किसी का कोई उपकार नहीं
जिसे उतारा जा रहा है। ۝ وَمَا يَصْدُرُ مِنْهُ مِنْ نَفْعٍ تَجْرَىٰ ۝
20. वह तो केवल अपने परम पालनहार
की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये है। ۝ إِلَّا تَتَجَافَىٰ جُنُوبَ رَبِّكَ لِأَعْلَىٰ ۝

1 (11-14) इन आयतों में सावन जानि (इन्सान) को सावधान किया गया है कि अल्लाह का दया और न्याय के कारण मात्र यह दायित्व था कि सत्य मार्ग दिखा दे और कुर्आन द्वारा उस ने अपना यह दायित्व पूरा कर दिया। किसी को सत्य मार्ग पर लगा देना उस का दायित्व नहीं है। अब इस सीधी राह को अपनाओगे तो तुम्हारा ही भला होगा। अन्यथा याद रखा कि संसार और परलोक दानों ही अल्लाह के अधिकार में है। न यहाँ कोई तुम्हें बचा सकता है, और न वहाँ कोई तुम्हारा सहायक होगा।

21. निःसंदेह वह प्रसन्न हो जायेगा।¹¹

وَلَوْ تَرَىٰ

1 (15-21) इन आयतों में यह वर्णन किया गया है कि कौन से कुकर्मों नरक में पड़ेंगे और कौन सुकर्मों उस से सुरक्षित रखे जायेंगे। और उन्हें क्या फल मिलेगा।
 आयत नं-10 के बारे में यह बात याद रखने की है कि अल्लाह ने सभी वस्तुओं और कर्मों का अपने नियमानुसार स्वभाविक प्रभाव रखा है। और कुर्आन इसी लिये सभी कर्मों के स्वभाविक प्रभाव और फल को अल्लाह से जोड़ता है। और यूँ कहता है कि अल्लाह ने उस के लिये बुराई की राह सरल कर दी कभी कहता है कि उन के दिलों पर मुहर लगा दी जिस का अर्थ यह होता है कि यह अल्लाह के बनाये हुये नियमों के विरोध का स्वभाविक फल है (देखिये: उम्मुल किताब मौलाना आजाद)

सूरह जुहा' - 93

سورة الضحى

सूरह जुहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 11 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में "जुहा" (दिन के उजाले) की शपथ ग्रहण करने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।
- आयत 1 से 2 तक में दिन और रात की गवाही प्रस्तुत कर के इस की ओर संकेत किया गया है कि इस संसार में अल्लाह ने जैसे उजाला और अंधेरा दोनों बनाये हैं इसी प्रकार परीक्षा के लिये दुख और सुख भी बनाये हैं।
- आयत 3 में बताया गया है कि मन्वी की राह में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस दुख का सामना कर रहे हैं उस से यह नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह ने आप से खिन्न हो कर आप को छोड़ दिया है।
- आयत 4,5 में आप को सफलताओं की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 6 से 8 तक में उन दुखों की चर्चा की गई है जिन से आप नबी होने से पहले जूझ रहे थे तो अल्लाह के उपकारों से आप की राहें खुलीं।

1 यह सूरह आरंभिक युग की है। भाग्य कारी ने लिखा है कि कुछ दिन के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना (बढ़ी) का उतरना रुक गया जिस पर आप अति दुःखित और चिन्तित हो गये कि कहीं मुझ से कोई दोष तो नहीं हो गया? इस पर आप को सन्तुष्टि देने के लिये यह सूरह अवनीर्ण हुई। इस में सर्व प्रथम प्रकाशित दिन तथा रात की शपथ ले कर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिलाया गया है कि आप के पालनहार ने न तो आप को छोड़ा है और न ही आप से अपसन्न हुआ है। इसी के साथ आप को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि आगामी समय आप के लिये प्रथम समय से उत्तम होगा। यह भविष्य वाणी उस समय की गई जब इस के दूर दूर तक कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। सम्पूर्ण मक्का आप का विरोधी हो गया था। और अल्लाह के सिवा आप का कोई सहायक नहीं था। परन्तु मात्र इक्कीस वर्षों में पूरा मक्का इस्लाम का अनुयायी बन गया। और फिर पूरे अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत पूरी हुई जो कुर्आन के अल्लाह का वचन होने का पमाण बन गई।

- आयत 9 से 11 तक में यह बताया गया है कि इन उपकारों के कारण आप का व्यवहार निर्बलों तथा अनाथों की सहायता एवं अल्लाह के उपकारों का स्वीकार तथा प्रदर्शन होना चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|---|---|
| 1. शपथ है दिन चढ़े की। | وَالضُّحَىٰ |
| 2. और शपथ है रात्री की जब उस का
सन्नाटा छा जाये। | وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ |
| 3. (हे नबी) तेरे पालनहार ने तुझे न तो
छोड़ा और न ही विमुख हुआ। | مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ |
| 4. और निश्चय ही आगामी युग तेरे
लिये प्रथम युग से उत्तम है। | وَلَا يَخْرُجُ خَيْرٌ لَّكَ مِنْ دُونِ |
| 5. और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा
कि तू प्रसन्न हो जायेगा। | وَلَسَوْفَ يُنْفِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ |
| 6. क्या उस ने तुम्हें अनाथ पा कर
शरण नहीं दी? | أَلَمْ يَجْعَلْ لَّيَتِيمًا فَادَىٰ |
| 7. और तुझे पथ भूला हुआ पाया तो
सीधा मार्ग नहीं दिखाया? | وَوَهَدَكَ صُلَاً فَادَىٰ |
| 8. और निर्धन पाया तो धनी नहीं कर
दिया? | وَوَجَدَكَ غَالِبًا ذَا غَىٰ |
| 9. तो तुम अनाथ पर क्रोध न करना ॥ | فَإِنَّا أَنِيتِم مِّنْ لَّا تَغْنَىٰ |

- (1 9) इन आयतों में अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाया है कि: तुम्हें यह चिन्ता कैसा हो गई कि हम अप्रसन्न हो गये? हम ने तो तुम्हारे जन्म के दिन से निरन्तर तुम पर उपकार किये हैं। तुम अनाथ थे तो तुम्हारे पालन और रक्षा की व्यवस्था की। राह से अज्ञान थे तो राह दिखाई निर्धन थे तो धनी बना दिया। यह बातें बता रही हैं कि तुम आरम्भ ही से हमारे प्रियवर हो और तुम पर हमारा उपकार निरन्तर है।

10. और माँगने वाले को न झिड़कना।
 11. और अपने पालनहार के उपकार का
 वर्णन करना।¹

وَأَن تَسْأَلَ فَلَا تَقْرَ ۝
 وَأَن يَخُصُّكَ رَبُّكَ نِعْمَتًا ۝

1 (10 11) इन अन्तिम आयतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया है कि हम ने तुम पर जो उपकार किये हैं उन के बदले में तुम अल्लाह की उत्पत्ति के साथ दया और उपकार करो यही हमारे उपकारों की कृतज्ञता होगी।

सूरह शर्ह¹ - 94

سورة الشرح

सूरह शर्ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 8 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में इन शब्दों के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है: साहम, संतोष तथा सत्य को अपनाना है।
- इस की प्रथम आयत 1 से 3 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अब्राह के इसी उपकार तथा आप से बोझ उतार देने का वर्णन है ।
- आयत 4 में आप की शखन और चर्चा ऊँची करने की शुभसूचना दी गई है
- आयत 5 से 6 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को संतोष दिलाया गया है कि वर्तमान कठिन स्थितियों के पश्चान् अच्छी स्थितियाँ आने ही को हैं।
- आयत 7 से 8 तक में यह निर्देश दिया गया है कि जब आप अपने संसारिक कार्य पूरे कर लें तो अपने पालनहार की वंदना (उपासना) में प्रयास करें और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जायें।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) क्या हम ने तुम्हारे लिये
तुम्हारा वक्ष (सीना) नहीं खोल दिया?

لَوْ شَاءَ رَبُّكَ

2. और तुम्हारा बोझ नहीं उतार दिया?

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ

1. इस सूरह का विषय सूरह जुहा ही के समान है। परन्तु इस में सत्य का उपदेश देने के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जिन स्थितियों का सामना करना पड़ा कि जिस समाज में आप का बड़ा आदर मान था वही समाज अब आप का विरोधी बन गया। कांड़ आप की बात सुनने को तैयार न था। यह आप के लिये बड़ी घोर स्थिति थी। अतः आप को सात्वना दी गई कि आप हताश न हों बहुत शीघ्र ही यह अवस्था बदल जायेगी।

- | | |
|---------------------------------------|--------------------------------|
| 3. जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी। | لَيْدَى نَقَصَ ظَهْرَهُ |
| 4. और तुम्हारी चर्चा को ऊँचा कर दिया। | وَرَفَعْتَ لَكَ ذِكْرَكَ |
| 5. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है। | فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا |
| 6. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है। | وَمَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا |

1 (1-4) इन का भावार्थ यह है कि हम ने आप पर तीन ऐसे उपकार किये हैं जिन के होने आप को निराश होने की आवश्यकता नहीं। एक यह कि आप के बक्ष को खाल दिया, अर्थात् आप में स्थितियों का सामना करने का साहस पैदा कर दिया। दूसरा यह कि नवी होने में पहले जो आप के दिल में अपनी जानि की मूर्त पूजा और सामाजिक अन्याय को देख कर चिन्ता और शोक का बोझ था जिस के कारण आप दुखिन रहा करते थे। इस्लाम का सत्य मार्ग दिखा कर उस बोझ को उतार दिया। क्योंकि यही चिन्ता आप की कमर तोड़ रही थी और तीसरा विशेष उपकार यह कि आप का नाम ऊँचा कर दिया। जिस से अधिक तो क्या आप के बराबर भी किसी का नाम इस संसार में नहीं लिया जा रहा है। यह भविष्यवाणी क़ुर्आन शरीफ ने उस समय की जब एक व्यक्ति का विरोध उस की पूरी जानि और समाज तथा उस का परिवार तक कर रहा था। और यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह इतना बड़ा विश्व विख्यात व्यक्ति हो सकता है। परन्तु समस्त मानव संसार क़ुर्आन की इस भविष्यवाणी के सत्य होने का साक्ष्य है। और इस संसार का कोई क्षण ऐसा नहीं गुजरना जब इस संसार के किसी देश और क्षेत्र में अजानों में "अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह" की आवाज न गूँज रही हो। इस के सिवा भी पूरे विश्व में जितना आप का नाम लिया जा रहा है और जितना क़ुर्आन का अध्ययन किया जा रहा है वह किसी व्यक्ति और किसी धर्म पुस्तक को प्राप्त नहीं और यही अन्तिम नवी और क़ुर्आन के सत्य होने का साक्ष्य है, जिस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिये।

2 (5-6) इन आयतों में विश्व का पालनहार अपने भक्त (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिला रहा है कि उलझनों का यह समय देर तक नहीं रहेगा इसी के साथ सरलता तथा सुविधा का समय भी बरग आ रहा है। अर्थात् आप का आगामी युग व्यतीत युग से उत्तम होगा जैसा कि "सूरह जुहा" में कहा गया है।

7 अतः जब अवसर मिले तो आराधना में प्रयास करो

وَإِذَا قَرَعْتَ الْعَصَا

8. और अपने पालनहार की ओर ध्यान मग्न हो जाओ।¹¹

وَرَبِّيَ فَارْعَبْ

1 (7-8) इन अन्तिम आयतों में आप को निर्देश दिया गया है कि जब अवसर मिले तो अल्लाह की उपासना में लग जाओ और उसी में ध्यान मग्न हो जाओ यही सफलता का मार्ग है।

सूरह तीन¹ - 95

سورة التين

सूरह तीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 8 आयत है।

- इस की प्रथम आयत में "तीन" शब्द, जिस का अर्थ: इज्जीर है के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।¹¹
- इस की आयत 1 से 3 तक उन स्थानों को गवाही में प्रस्तुत किया गया है जिन से बड़े बड़े नबी उठे और मार्गदर्शन का प्रकाश फैला।

1 "तीन" का अर्थ है: इज्जीर इसी शब्द से इस सूरह का नाम लिया गया है। फलस्तीन तथा शाम जो प्राचीन युग से नबियों के केंद्र चले आ रहे थे जैतून तथा इज्जीर की उपज का क्षेत्र था। और मक्के के लोग इन देशों में व्यापार के लिये जाया करते थे इसलिये वे उनकी महत्त्व से भली भाँती परिचित थे "नूर" पर्वत सीना के मरुस्थल में है। यहीं पर मूसा (अलैहिस्सलाम) को धर्म विधान प्रदान किया गया था।

"शान्ति नगर" से अभिप्राय: मक्का नगर है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ के कारण इस का नाम शान्ति का नगर रखा गया है। जिस में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव विश्व के पथ प्रदर्शक बना कर भेजे गये।

इस की भूमिका यह है कि सर्व प्रथम उत्साह शील नबियों के केंद्रों को शपथ अर्थात् साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत कर के यह बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को अति उत्तम रूप रखा में सर्वोच्च स्वभाव एवं योग्यताओं के साथ पैदा किया है। परन्तु इस उच्चता को स्थिर रखने तथा इन उत्तम योग्यताओं को उभारने के लिये उस का यह नियम बनाया है कि जो इन्सान (विश्वाम) तथा सत्कर्म की राह अपनायेंगे जो कर्आन की राह है और इस राह की कठिनाइयों से संघर्ष करने का साहस करेंगे तो उन्हें परलाक में अपन प्रयासों का भरपूर पुरस्कार मिलेगा। और जो मसारिक स्वार्थ और सुख के लिये इस राह की कठिनाइयों का सामना करने का साहस नहीं करेंगे अल्लाह उन्हें उसी राह पर छोड़ देगा। और अन्ततः उस गढ़ में जा गिरेंगे जो इस के राहियों का भाग्य है।

भावार्थ यह है कि जब इन्सानों के दो भेद हैं तो न्यायोचित यही है कि उन के कर्मों के फल भी दो हों। फिर अल्लाह जो न्यायधीशों का न्यायधीश है वह न्याय क्यों नहीं करेगा?। (तर्जुमानुल कुआन)

- आयत 4 से 6 तक में बताया गया है कि अल्लाह ने इन्मान को उत्तम रूप पर पैदा किया है ताकि वह ऊँचा स्थान प्राप्त करे। किन्तु वह नीचा बन गया और बहुत नीची खाई में जा पड़ा। फिर जिस ने ईमान और सदाचार कर के ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया तो वह सफल हो गया। और उस के लिये अनन्त प्रतिफल है।
- आयत 7 से 8 तक में कहा गया है कि अल्लाह सब से बड़ा न्यायधीश है तो उस के यहाँ यह कैसे हो सकता है कि अच्छे-बुरे सब परिणाम में बराबर हो जायें? या दोनों का कोई परिणाम और प्रतिफल ही न हो? यह बात न्यायोचित नहीं है।

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. इजीर तथा जैतून की शपथ।
2. एव "तूरे सीनीन" की शपथ।
3. और इस शान्ति के नगर की शपथ।
4. हम ने इन्मान को मनोहर रूप में पैदा किया है।
5. फिर उसे सब से नीचे गिरा दिया।
6. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये उन के लिये ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा।
7. फिर तुम (मानव जाति) प्रतिफल (बदले) के दिन को क्यों झुठलाने हो?
8. क्या अल्लाह सब अधिकारियों से बड़ कर अधिकारी नहीं?

وَاللَّيْلِ وَالْأُفُقِ

وَالْأُفُقِ

وَهَذَا الْمَدِينِ

فَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ

فَمَا يَكْفُرُ بِهِ بَعْدَ مَا بَيَّنَّنَا

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ حَكِيمِينَ

सूरह अलक^[1] - 96

سورة العلق

सूरह अलक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 19 आयतें हैं।

- इस की आयत 2 में इन्सान के अलक अर्थात बंधे हुये रक्त से पैदा किये जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।¹
- इस की आयत 1 से 5 तक में कर्आन पढ़ने का निर्देश दिया गया है। तथा बताया गया है कि अब्राह ने मनुष्य को कैसे पैदा किया और ज्ञान प्रदान किया है?
- इस की आयत 6 से 8 तक इन्मान को चेतावनी दी गयी है कि वह अब्राह के इन उपकारों का आदर न कर के कैसे उल्लंघन करता है? जब कि उसे फिर अब्राह ही के पास पहुंचना है?
- आयत 9 से 14 तक उस की निन्दा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विरोध करता था और आप की राह में बाधाये उत्पन्न करता था।
- आयत 15 से 18 तक विरोधियों को बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और इमान वालों को निर्देश दिया गया है कि उस की बात न मानो और अब्राह की वंदना में लगे रहो। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पहले सच्चा सपना देखते थे फिर जिव्रील आये और आप को यह (पांच) आयतें पढ़ाई (सहीह बुखारी: 4955)

अबू जह्ल ने कहा कि यदि मुहम्मद को काबा के पास नमाज पढ़ते देखा तो उस की गर्दन रौंद दूंगा। जब आप को इस की सूचना मिली तो कहा यदि

- 1 यह सूरह मक्की है। और इस की प्रथम पांच आयतें पहली बह्नी (प्रकाशना) है जैसा कि बुखारी (हदीस नं- 4953) और मुस्लिम (हदीस नं- 160) में आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) से उल्लिखित है। इस का दूसरा भाग उस समय उतरा जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आप के मूर्ति पूजक चचा अबू जह्ल ने "काबा" के पास नमाज से रोक दिया। सूरह के अन्त में आप को निर्भय हो कर नमाज अदा करने और धर्मक्यों पर ध्यान न देने के लिये कहा गया है।

वह ऐसा करना तो फरिश्ते उसे पकड़ लेंगे (सहीह बुखारी: 4958)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अपने उस पालनहार के नाम से पढ़
जिस ने पैदा किया
2. जिस ने मनुष्य को रक्त के लोथड़े में
पैदा किया।
3. पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया
वाला है।
4. जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया।
5. इन्सान को उस का ज्ञान दिया जिस
को वह नहीं जानता था।"

قُرْأَنُ شُورَتِكَ الْبَدِئِ خَلَقَ

خَلَقَ لِنَاسٍ مِنْ عَيْنٍ

إِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ

الْبَدِئِ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ

- 1 (1-5) इन आयतों में प्रथम बड़ी (प्रकाशना) का वर्णन है।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से कुछ दूर "जबले नूर" (ज्योति पर्वत) की एक गुफा में जिस का नाम "हिरा" है जाकर एकान्त में अल्लाह को याद किया करते थे। और वही कई दिन तक रह जाते थे। एक दिन आप इसी गुफा में थे कि: अकस्मात आप पर प्रथम बड़ी (प्रकाशना) लेकर फरिश्ता उतरा। और आप से कहा "पढ़ो"। आप ने कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। इस पर फरिश्ते ने आप को अपने सीने से लगाकर दबाया। इसी प्रकार तीन बार किया और आप को पाँच आयतें सुनाई। यह प्रथम प्रकाशना थी। अब आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह से मुहम्मद रसूलुल्लाह हो कर डरते काँपते घर आये। इस समय आप की आयु 40 वर्ष थी। घर आकर कहा कि मुझे चादर उड़ा दो जब कुछ शान्त हुये तो अपनी पत्नी खदीजा (रजियल्लाहु अन्हा) को पूरी बात सुनाई उन्होंने ने आप को सान्त्वना दी और अपने चचा के पुत्र "वरका बिन नौफल" के पास ले गई जो इसाइ विद्वान थे उन्होंने ने आप की बात सुन कर कहा: यह वही फरिश्ता है जो मुसा (अनैहिस्सलाम) पर उतारा गया था। काश मैं तुम्हारी नुबुव्वत (नूब्व) के समय शक्ति शाली युवक होता और उस समय तक जीवित रहता जब तुम्हारी जाति तुम्हें मक्के से निकाल देगी। आप ने कहा क्या लोग मुझे निकाल देंगे? वरका ने कहा, कभी ऐसा नहीं हुआ कि जो आप

- | | |
|---|---|
| 6. वास्तव में इन्सान सरकशी करना है। | كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَاغٍ ۖ |
| 7. इमलिये कि वह स्वयं को निश्चिन्त (धनवान) समझता है। | لَنْ يَأْتِيَنَّكَ السَّعْيُ ۖ |
| 8. निःसंदेह फिर तेरे पालनहार की ओर पलट कर जाना है। ^[1] | رَبَّنَا إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجُوعُ ۖ |
| 9. क्या तुम ने उस को देखा जो रोकता है। | أَرَأَيْتَ الْبَيْتَ الَّذِي يَدْعُو ۖ |
| 10. एक भक्त को जब वह नमाज अदा करे | عِبَادًا ضَلَّ ۖ |
| 11. भला देखो तो, यदि वह सीधे मार्ग पर हो। | أَرَأَيْتَ إِن كَانَ عَلَىٰ هُدًى ۖ |
| 12. या अल्लाह से डरने का आदेश देता हो। | أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۖ |
| 13. और देखो तो, यदि उस ने झुठलाया तथा मुँह फेरा हो। ² | أَرَأَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ |
| 14. क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे | أَلْوَيْتَنَ يَرَىٰ ۖ |

लाये है उस से शत्रुता न की गई हो। यदि मैं ने आप का वह समय पाया तो आप की भग्न पर सहायता करूँगा।

परन्तु कुछ ही समय गुजरा था कि बरका का देहान्त हो गया। और वह समय आया जब आप को 13 वर्ष बाद मक्का से निकाल दिया गया। और आप मदीना की ओर हिज्रत (प्रस्थान) कर गये। (देखिये डूबने कसीर)

आयत नं- 1 से 5 तक निर्देश दिया गया है कि अपने पालनहार के नाम से उस के आदेश- कुर्आन का अध्ययन करो जिस ने इन्सान को रक्त के लोथड़े से बनाया। तो जिस ने अपनी शक्ति और दक्षता से जीता जागता इन्सान बना दिया वह उसे पुनः जीवन कर देने की भी शक्ति रखता है फिर ज्ञान अर्थात् कुर्आन प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

- 1 (6-8) इन आयतों में उन को धिक्कारा है जो धन के अभिमान में अल्लाह की अवज्ञा करते हैं और इस बात से निश्चिन्त हैं कि एक दिन उन्हें अपने कर्मों का जवाब देने के लिये अल्लाह के पास जाना भी है।
- 2 (9-13) इन आयतों में उन पर धिक्कार है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध पर तुल गये। और इस्लाम और मुसलमानों की राह में रुकावट न डालते और नमाज से रोकते हैं।

देख रहा है।

15. निश्चय यदि वह नहीं रुकना तो हम
उसे माथे के बल घसीटेंगे।

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ تَسْفَعْنَا بِالنَّاصِيَةِ ۝

16. झूठे और पापी माथे के बल।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِلَةٍ ۝

17. तो वह अपनी सभा को बुला ले।

فَلْيَرْفَعْ يَدَيْهِ ۝

18. हम भी नरक के फरिश्तों को
बुलायेंगे।¹

سَتَدْعُ الْمَرْبُوعِينَ ۝

19. (हे भक्त) कदापि उस की वान न
सुनो तथा सज्दा करो और मेरे समीप
हो जाओ।²

كَلَّا لَا تَتَّبِعْهُ وَرْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝

1 (14-18) इन आयतों में सत्य के विरोधी को दुष्परिणाम की चेतावनी है।

2 (19) इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के माध्यम से साधारण मुसलमानों को निर्देश दिया गया है कि सहन शीलता के साथ किसी धमकी पर ध्यान देने हुये नमाज अदा करते रहो ताकि इस के द्वारा तुम अल्लाह के समीप हो जाओ।

सूरह कद्र 97 - 1

سورة القدر

सूरह कद्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 5 आयतें हैं।¹

- इस में कुरआन के कद्र की रात में उतारे जाने की चर्चा की गई है इस लिये इस का यह नाम रखा गया है। कद्र का अर्थ है आदर और सम्मान।

- इस में सब से पहले बताया गया है कि कुरआन कितनी महान रात्रि में अवतरित किया गया है। फिर इस शुभ रात की प्रधानता का वर्णन किया गया है और उसे भोर तक सर्वथा शान्ति की रात कहा गया है।

इस से अभिप्राय यह बताना है कि जो ग्रन्थ इतनी शुभ रात में उतरा उस का पालन तथा आदर न करना बड़े दुर्भाग्य की बात है।

हदीस में है कि इस रात की खोज रमजान के महीने की दस अन्तिम रातों की विषम (ताक) रात में करो। (सहीह बुखारी: 2017 तथा सहीह मुस्लिम: 1169)

दूसरी हदीस में है कि जो कद्र की रात में इमाम के साथ पुनः प्राप्त करने के लिये नमाज पढ़ेगा उस के पहले के पाप क्षमा कर दिये जायेंगे (सहीह बुखारी: 37, तथा सहीह मुस्लिम: 759)

1 इस सूरह को अधिकांश भाष्यकारों ने मक्की लिखा है। और कुछ ने मदीनी बताया है। परन्तु इस का प्रसंग मक्की होने के समर्थन में है।

इसी "लैलतुल कद्र" (सम्मानित रात्री) को सूरह दुखान में "लैलतुन मुबारकह" (शुभ रात्री) कहा गया है। यह शुभ रात्रि रमजान मुबारक ही की एक रात है। इसी कारण सूरह "बकर" में कहा गया है कि रमजान मुबारक के महीने में कुरआन शरीफ उतारा गया। अर्थात् इसी रात्रि में सम्पूर्ण कुरआन उन फरिश्तों को दे दिया गया जो बह्दी (प्रकाशना) लाने के लिये नियुक्त थे। फिर 23 वर्ष में आवश्यकता के अनुसार कुरआन उतारा जाता रहा। यदि इस का अर्थ यह लिया जाये कि इस के उतारने का आरम्भ रमजान मुबारक से हुआ तो यह भी सहीह है। दोनों में अर्थ यही निकलता है कि कुरआन रमजान मुबारक में उतरा। और इसी शुभ रात्री में सूरह अलक की प्रथम पाँच आयतें उतारी गईं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निःसंदेह हम ने उस (क़ुर्आन) को
"लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) में
उतारा,
2. और तुम क्या जानो कि वह "लैलतुल
क़द्र" (सम्मानित रात्रि) क्या है?
3. लैलतुल क़द्र (सम्मानित रात्रि) हजार
मास से उत्तम है।¹
4. उस में (हर काम को पूर्ण करने के
लिये) फरिश्ते तथा रूह (जिबरील)
अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते
हैं।²
5. वह शान्ति की रात्री है, जो भोर होने
तक रहती है।³

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ

تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ
كُلِّ أَمْرٍ

سَلَامٌ شَمِئَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ

1. हजार मास से उत्तम होने का अर्थ यह है कि इस शुभ रात्रि में इबादत की बहुत बड़ी प्रधानता है। अबु हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत (उदाघृत) है कि जो व्यक्ति इस रात में इमान (सत्य विश्वास) के साथ तथा पुण्य की नीति से इबादत करे तो उस के सभी पहले के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं (देखिये सहीह बुखारी, हदीस नं० 35 तथा सहीह मुस्लिम, हदीस नं० 760)
2. "रूह" से अभिप्राय जिबरील अलैहिस्सलाम हैं। उन की प्रधानता के कारण सभी फरिश्तों से उन की अलग चर्चा की गई है। और यह भी बनाया गया है कि वे स्वयं नहीं बल्कि अपने पालनहार की आज्ञा से ही उतरते हैं।
3. इस का अर्थ यह है कि संध्या से भोर तक यह रात्रि सर्वथा शुभ तथा शान्तिमय होती है। सहीह हदीसों से स्पष्ट होता है कि यह शुभ रात्रि रमजान की अन्तिम दस रातों में से कोई एक रात है। इसलिये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन दस रातों को अल्लाह की उपासना में बिताते थे।

सूरह बय्यिनह⁽¹⁾ - 98

سُورَةُ الْبَيِّنَاتِ

सूरह बय्यिनह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदीनी है इस में 8 आयते हैं¹

- इस की प्रथम आयत में बय्यिनह अर्थात: प्रकाशित प्रमाण की चर्चा हुई है जिस से इस का यह नाम रखा गया है।
- इस की आयत 1 से 3 तक में यह बताया गया है कि लोगों को क़ुफ़्र से निकालने के लिये यह आवश्यक था कि एक ग्रन्थ के साथ एक रसूल भेजा जाये ताकि वह धर्म को सहीह रूप में प्रस्तुत करे।
- आयत 4-5 में बताया गया है कि अहले किताब (अर्थात यहूदी और ईसाई) के पास प्रकाशित शिक्षा आ चुकी थी किन्तु वे विभेद में पड़ गये। और उन्होंने धर्म की वास्तविक शिक्षा भुला दी।
- आयत 6 से 8 तक रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इन्कार की दुखद यातना को और रसूल पर ईमान ला कर अल्लाह से डरते हुये जीवन बिताने की सफलता को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अन्त्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अहले किताब के काफिर, और मुशिरक लोग ईमान लाने वाले नहीं थे जब तक कि उन के पास खुला प्रमाण न आ जाये।
2. अर्थात अल्लाह का एक रसूल जो पवित्र ग्रन्थ पढ़ कर सुनाये।

لَا يَكْفِيكَ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَىٰ قُرْآنًا مِنْ أَمْرِ الْكِتَابِ
وَالشُّرَكَاةُ سَوَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ أَلْمِذَةُ

رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُتَفَرِّقَةً

- 1 इस सूरह को साधारण भाष्यकारों ने मदीनी लिखा है। परन्तु कुछ सहाबा (रजियल्लाहु अन्हुम) ने इसे मक्की कहा है। इस को इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह सूरह मक्के के अन्तिम काल तथा मदीने के प्रथम काल के बीच अवतीर्ण हुई।

3. जिस में उचित आदेश है।¹

مِمَّا كُتِبَ عَلَيْكُمُ

4. और जिन लोगों को ग्रन्थ दिये गये उन्होंने इस खुले प्रमाण के आ जाने के पश्चात ही मतभेद किया।²

وَمَا تَقْرَأُ الْيَتِيمَ أَتَوْا الْكِتَابَ الْأَوَّلَ
بَعَثُوا سَادَةً مِّنْهُمُ الْبَيِّنَةَ

5. और उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे धर्म को शुद्ध कर रखें और सब को तज कर केवल अल्लाह की उपासना करें, नमाज अदा करें और जकात दें। और यही शाश्वत धर्म है।³

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَهًا مُّخْلِصِينَ لَهُ
الْبَيْتَ الْأَقْصَىٰ وَنُقِضُوا الْقِسْمَةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ
وَذَلِكُمْ قَوْلُ الْقَائِمِينَ

6. निःसंदेह जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हो गये, तथा मूर्शरक (मिश्रणवादी) तो वे सदा नरक की आग में रहेंगे। और वही सब से दुष्टतम जन है।

إِنَّ الْكَافِرِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالشُّرَكَاءِ
فِي دَارِهِمْ حَوْلِيَيْنَ وَمِنْ أُولَئِكَ هُمُ الشَّرُّ يَوْمَئِذٍ

1 (1-3) इस सूरह में सर्वप्रथम यह बताया गया है कि इस पुस्तक के साथ एक रसूल (ईश दूत) भेजना क्यों आवश्यक था। इस कारण यह है कि मानव संसार के आदि शास्त्र धारी (यहूद तथा इसाई) हो या मिश्रणवादी अधर्म की ऐसी स्थिता में फसे हुये थे कि एक नबी के बिना उन का इस स्थिति से निकलना संभव न था। इसलिये इस चीज की आवश्यकता आइ कि एक रसूल भेजा जाये जो स्वयं अपनी रिमालन (दूनन्व) का ज्वलन्त प्रमाण हो। और सब के सामने अल्लाह की किताब को उस के सहीह रूप में प्रस्तुत करे जो असन्त्य के मिश्रण से पवित्र हो जिस से आदि धर्म शास्त्रों को लिप्त कर दिया गया है।

2 इस के बाद आदि धर्म शास्त्रों के अनुयाइयों के कुटमार्ग का विवरण दिया गया है कि इस का कारण यह नहीं था कि अल्लाह ने उन को मार्गदर्शन नहीं दिया। बल्कि वे अपने धर्म ग्रन्थों में मन माना परिवर्तन कर के स्वयं कुटमार्ग का कारण बन गये।

3 इन में यह बताया गया है कि अल्लाह की ओर से जो भी नबी आये सब की शिक्षा यही थी कि सब रीतियों को त्याग कर मात्र एक अल्लाह की उपासना की जाये। इस में किसी देवी देवता की पूजा अर्चना का मिश्रण न किया जाये। नमाज की स्थापना की जाये, जकात दी जाये। यही सदा से सारे नबियों की शिक्षा थी।

7. जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार करते रहे तो वही सब से सर्वश्रेष्ठ जन है।
8. उन का प्रतिफल उन के पालनहार की ओर से सदा रहने वाले वाग है। जिन के नीचे नहरे बहनी होंगी। वे उन में सदा निवास करेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, और वे अल्लाह से प्रसन्न हुये। यह उस के लिये है जो अपने पालनहार से डरे।⁽¹⁾

رَبِّ الْيَقِينِ الْمُسَوِّغِينَ الصَّالِحِينَ أُولَئِكَ هُمُ احْسَنُ نَجْوَاهُ

خَرَأَوْهُ وَعَبْدًا رَزَقَهُ خَدَّتْ صَدْرُ نَجْوَاهُ مِنْ نَجْوَاهُ
الْمُفْرَجِينَ فِيهَا الْبَدْرُ مِنَ الْمَعْنَاهُ وَفَوْقَ غَلَّةٍ
دَلِيلُ لَحْنٍ حَتَّى رَزَقَهُ

- 1 (6-8) इन आयतों में साफ साफ कह दिया गया है कि जो अहले किताब और मुनियों के पुजारी इस रसूल का मानने से इन्कार करेंगे तो वे बहुत बुरे हैं। और उन का स्थान नरक है। उसी में वे सदा रहेंगे। और जो संसार में अल्लाह से डरते हुये जीवन निर्वाह करेंगे तथा विश्वास के साथ सदाचार करेंगे तो वे सदा के स्वर्ग में रहेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गये।

सूरह जिलजाल¹ - 99

سورة الزلزال

सूरह जिलजाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदीनी है, इस में 8 आयत हैं।

- इस में प्रलय के दिन के भूकम्प की चर्चा हुई है जो ((जिलजाल)) का अर्थ है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।¹
- इस की आयत 1 से 3 तक में धरती की उस दशा की चर्चा है जो प्रलय के दिन होगी और जिसे देख कर मनुष्य चकित रह जायेगा।
- आयत 4 से 5 तक में यह बताया गया है कि उस दिन धरती बोलेगी और अपनी कथा सुनायेगी कि मनुष्य उस के ऊपर रह कर क्या करता रहा है जो उस की ओर से मनुष्य के कर्मों पर गवाही होगी।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि उस दिन लोग विभिन्न गिरोहों में हो कर अपने कर्मों को देखने के लिये निकल पड़ेंगे और प्रत्येक की छोटी बड़ी अच्छाई और बुराई उस के सामने आ जायेगी।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 जब धरती को पूरी तरह झड़ोड़ दिया जायेगा।
- 2 तथा भूमी अपने बोझ बाहर निकाल देगी।
- 3 और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया?

وَأَرْوُلِي لَأَرْضٍ رِّتْرَهَا

وَأُخْرِجَبِ الْأَرْضُ ثَقْلَهَا

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا

- 1 यह सूरह मक्की है। क्योंकि इस में वर्णित विषय इसी का समर्थन करता है परन्तु कुछ विद्वानों का विचार है कि यह मदीने में अवतीर्ण हुई। इस सूरह के अन्दर संसार के पश्चात् दूसरे जीवन तथा उस में कर्मों का पूरा हिस्साव लिये जाने का वर्णन है।

- | | |
|--|--|
| 4. उस दिन वह अपनी सभी मुचनायें वर्णन कर देगी। | يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝ |
| 5. क्योंकि तेरे पालनहार ने उसे यही आदेश दिया है। | بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝ |
| 6. उस दिन लोग तिनर बितर होकर आयेंगे ताकि वह अपने कर्मों को देख लें। ¹ | يَوْمَئِذٍ يُفَصِّلُ الشَّاسَ حَتَّىٰ تَبْزُزَ ۝
أَقْبَالَهَا ۝ |
| 7. तो जिस ने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा। | فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝ |
| 8. और जिस ने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा। ² | وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝ |

-
- 1 (1-6) इन आयतों में बताया गया है कि जब प्रलय (न्यासन) का भूकम्प आयेगा तो धरती के भीतर जो कुछ भी है सब उगल कर बाहर फेंक देगी यह सब कुछ ऐसे होगा कि जीवित होने के पश्चात् सभी को आश्चर्य होगा कि यह क्या हो रहा है? उस दिन यह निर्जीव धरती प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की गवाही देगी कि किस ने क्या क्या कर्म किये हैं। यद्यपि अल्लाह सब के कर्मों को जानता है फिर भी उस का निर्णय गवाहियों से प्रमाणित कर के होगा।
- 2 (7-8) इन आयतों का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अकेला आयेंगा, परिवार और साथी सब बिखर जायेंगे। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इस संसार में जो किसी भी युग में मरे थे सभी दलों में चले आ रहे होंगे, और सब को अपने किये हुये कर्म दिखाये जायेंगे। और कर्मानुसार पुण्य और पाप का बदला दिया जायेगा। और किसी का पुण्य और पाप छिपा नहीं रहेगा।

सूरह आदियात 1 - 100

سورة العاديات

सूरह आदियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 11 आयते हैं

- इस सूरह में ((आदियात)) अर्थात दौड़ने वाले घोड़ों की शपथ ली गई है। इसे लिये इस का नाम "सूरह आदियात" रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में घोड़ों को इस बात की गवाही के लिये प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य अपने पालनहार की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना गलत प्रयोग करता है।
- आयत 6 से 8 तक में मनुष्य की धन के मांह में अज्ञाह का उपकार न मानने पर निन्दा की गई है।
- अन्तिम दो आयतों में उसे सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन उसे कब्रों से निकल कर अज्ञाह के पास उपस्थित होना है। उस दिन उस के दिल की दशा खुल कर सामने आ जायेगी कि उस में संसार में जो भी कर्म किये हैं वह किस भावना और विचार से किये हैं जिसे उस ने अपने दिल में छुपा रखा था।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. उन घोड़ों की शपथ जो दौड़ कर
हॉफ जाते हैं।
2. फिर पत्थरों पर टाप मार कर
चिगारियाँ निकालने वालों की शपथ।
3. फिर प्रातः काल में धावा बोलने वालों
की शपथ।
4. जो धूल उड़ाते हैं।

وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا

فَالْمُورِيَاتِ قَدْحًا

فَالْمُغِيرَاتِ صُبْحًا

فَأَثَرٍ بِهِ ضَبْحًا

1 इस सूरह में वर्णित विषय बता रहे हैं कि यह आरंभिक मक्की सूरतों में से है।

- | | |
|---|--|
| 5. फिर सेना के बीच घुस जाने हैं। | وَسَقُصَّ بِهِ جَعَانٌ |
| 6. वास्तव में इन्सान अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न (नाशुकरा) है। | رَبِّ لَإِنْسَانٍ بِرَبِّهِ كَفُورٌ |
| 7. निश्चय रूप से वह इस पर स्वयं साक्षी (गवाह) है। ⁽¹⁾ | وَرَبُّهُ عَلَى دَيْثِهِ لَشَهِيدٌ |
| 8. वह धन का बड़ा प्रेमी है। ⁽²⁾ | وَرَبُّهُ يُحِبُّ الْغَيْرَ شَبِيهٌ |
| 9. क्या वह उस समय को नहीं जानता जब क्यूँ में जो कुछ है निकाल लिया जायेगा? | أَفَلَا يَعْلَمُ ذَا نُفُورٍ مَا لِي لُغُورٌ |
| 10. और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे। ⁽³⁾ | وَحُفِلَ مَا لِي الضُّوْرُ |
| 11. निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप सूचित होगा। ⁽⁴⁾ | إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ خَبِيرٌ |

- (1-7) इन आरंभिक आयतों में मानव जाति (इन्सान) की कृतघ्नता का वर्णन किया गया है। जिस की भूमिका के रूप में एक पशु की कृतघ्नता को शपथ स्वरूप उदाहरण के लिये प्रस्तुत किया गया है। जिसे इन्सान पालता है, और वह अपने स्वामी का इतना भक्त होता है कि उसे अपने ऊपर सवार कर के नीचे ऊँचे मार्गों पर रात दिन की परवाह किये बिना दौड़ता और अपनी जान जोखिम में डाल देता है। परन्तु इन्सान जिसे अल्लाह ने पैदा किया समझ बूझ दी और उस के जीवन यापन के सभी साधन बनाये वह उस का उपकार नहीं मानता और जान बूझ कर उस की अवज्ञा करता है, उसे इस पशु से शिक्षा लेनी चाहिये।
- इस आयत में उस की कृतघ्नता का कारण बताया गया है कि जिस इन्सान को सर्वाधिक प्रेम अल्लाह से होना चाहिये वही अत्यधिक प्रेम धन से करता है।
- (9-10) इन आयतों में सावधान किया गया है कि संसारिक जीवन के पश्चात् एक दूसरा जीवन भी है तथा उस में अल्लाह के सामने अपने कर्मों का उत्तर देना है जो प्रत्येक के कर्मों का ही नहीं उन के सीनों के भेदों को भी प्रकाश ला कर दिखा देगा कि किस ने अपने धन तथा बल का कुप्रयोग कर कृतघ्नता की है, और किस ने कृतघ्नता की है। और प्रत्येक को उस का प्रतिकार भी देगा। अतः इन्सान को धन के मोह में अन्धा तथा अल्लाह का कृतघ्न नहीं होना चाहिये और उस के सन्धर्म का पालन करना चाहिये।
- (11) अर्थात् वह सूचित होगा कि कौन क्या है और किस प्रतिकार का भारी है।

सूरह कारिअह¹:- 101

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ

सूरह कारिअह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क्यामन को ((कारिअह)) कहा गया है। अर्थात् खड़ खड़ाने वाली आपदा! और इसी से इस का यह नाम रखा गया है।
- आयत 1 से 5 तक प्रलय के समय की स्थिति से सूचित किया गया है।
- आयत 6 7 में जिन के कर्म न्याय के तराजू में भारी होंगे उन का अच्छा परिणाम बताया गया है।¹¹
- आयत 8 से 11 तक में उन का दुष्परिणाम बताया गया है जिन के कर्म न्याय के तराजू में हल्के होंगे! और नरक की वास्तविकता बताई गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. वह खड़खड़ा देने वाली।
2. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?
3. और तुम क्या जानो कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?¹²

لَعَابِقَةٌ²

مَا لَعَابِقَةٌ³

وَمَا أَدْرِيتَ مَا لَعَابِقَةٌ⁴

- 1 यह सूरह भी मक्की है और इस का विषय भी प्रलय (क्यामन) तथा परलोक (आखिरत) है। इस में प्रश्न के रूप में सर्वप्रथम सावधान कर के दो वाक्यों में प्रलय का चित्रण कर दिया गया है कि उस दिन सभी घबरा कर इस प्रकार इधर उधर फिरेंगे जैसे पलंग प्रकाश पर बिखरे होते हैं और पर्वतों की यह दशा होगी कि अपने स्थान से उखड़ कर धूनी हुई ऊन के समान हो जायेंगे। फिर बताया गया है कि परलोक में हिमाव इस आधार पर होगा कि किस के सदाचार का भार दुराचार से अधिक है और किस के सदाचार का भार उस के दुराचार से हल्का है। प्रथम श्रेणी के लोगों को सुख मिलेगा। और दूसरी श्रेणी के लोगों का आग से भरी गहरी खाई में फेंक दिया जायेगा।
- 2 (1 3) "कारिअह" प्रलय ही का एक नाम है जो उस के समय की घोर दशा का

- | | |
|---|--|
| 4. जिस दिन लोग बिखरे पतिगों के समान (व्याकुल) होंगे। | يَوْمَ يَكُونُ لِلنَّاسِ عَشْرٌ مِّمَّا كَانُوا يَوْمَئِذٍ |
| 5. और पर्वत धुनी हुई ऊन के समान उड़ेंगे। ¹ | وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمُقَشَّقِ |
| 6. तो जिस के पलड़े भारी हुये | فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ |
| 7. तो वह मन चाहे सुख में होगा। | فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضٍ |
| 8. तथा जिस के पलड़े हल्के हुये | وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ |
| 9. तो उस का स्थान "हाविया" है। | فَأَمَّا هَارٍ |
| 10. और तुम क्या जानो कि वह (हाविया) क्या है? | وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ |
| 11. वह दहकती आग है। ² | نَارٌ عَرِيَّةٌ |

चित्रण करता है। इस का शाब्दिक अर्थ द्वार खटखटाना है। जब कोई अतिथि अकस्मात रात में आता है तो उसे दरवाजा खटखटाने की आवश्यकता होती है जिस से एक तो यह ज्ञान हुआ कि प्रलय अकस्मात होगी। और दूसरा यह ज्ञान हुआ कि वह कड़ी ध्वनी और भारी उथल पुथल के साथ आयेगी इसे प्रश्नवाचक वाक्यों में दोहराना सावधान करने और उस की गंभीरता को प्रस्तुत करने के लिये है।

- (4-5) इन दोनों आयतों में उस स्थिति को दर्शाया गया है जो उस समय लोगों और पर्वतों की होगी।
- (6-11) इन आयतों में यह बताया गया है कि प्रलय क्यों होगी? इसलिये कि इस संसार में जिस ने भले बुरे कर्म किये हैं उन का प्रतिकार कर्मों के आधार पर दिया जाये जिस का परिणाम यह होगा कि जिस ने सत्य विश्वास के साथ सत्कर्म किया होगा वह सुख का भागी होगा। और जिस ने निर्मल परम्परागत रीतियों को मान कर कर्म किया होगा वह नरक में डाँक दिया जायेगा।

सूरह तकासुर^[1] - 102

سُورَةُ التَّكْوِيْنِ

सूरह तकासुर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 8 आयत हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((तकासुर)) अर्थात: अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा को जीवन के मूल उद्देश्य से अचेत रहने का कारण बताया गया है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।¹
- इस की आयत 1 से 5 तक में सावधान किया गया है कि जिस धन को तुम सब कुछ समझते हो और उसे अर्जित करने में अपने भविष्य से अचेत हो तुम्हें आँख बंद करते ही पता लग जायेगा कि मौत के उस पार क्या है।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि नरक को तुम मानो या न मानो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे और तुम्हें उस का विश्वास हो जायेगा किन्तु वह समय कर्म का नहीं बल्कि हिस्सा देने का दिन होगा। और तुम्हें अल्लाह के प्रत्येक प्रदान का जवाब देना होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. तुम्हें अधिक (धन) के लोभ ने मग्न कर दिया।
2. यहाँ तक कि तुम कद्दिस्तान जा पहुँचो।²

أَنهَكَمُ اسْكَانُكُمْ

حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ

- 1 इस सूरह का प्रसंग भी इस के मक्की होने का संकेत करता है।
- 2 (1 2) इन दोनों आयतों में उन को सावधान किया गया है जो संसारिक धन ही को सब कुछ समझते हैं और उसे अधिकाधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है कि मौत के पार क्या होगा इसे सोचने ही नहीं। कुछ तो धन की देवी बना कर उसे पूजते हैं।

- | | |
|---|--|
| 3. निश्चय तुम्हें ज्ञान हो जायेगा। | كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ |
| 4. फिर निश्चय ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा। | ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ |
| 5. वास्तव में यदि तुम को विश्वास होता (तो ऐसा न करते।) ¹ | كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ جُلَّةَ الْفُقَهَى ۝ |
| 6. तुम नरक को अवश्य देखोगे। | لَتَرَوُنَّ جَحِيمَهُ ۝ |
| 7. फिर उसे विश्वास की आँख से देखोगे। | ثُمَّ تَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ |
| 8. फिर उस दिन तुम से सुख सम्पदा के विषय में अवश्य पूछ गछ होगी। ² | ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنْهُمْ ۝ |

1 (3-5) इन आयतों में सावधान किया गया है कि मौत के पार क्या है? उन्हें आँख बन्द करने ही इस का ज्ञान हो जायेगा। यदि आज तुम्हें इस का विश्वास होता तो अपने भविष्य की ओर से निश्चिन्त न होने। और तुम पर धन प्राप्ति की धुन इतनी सवार न होनी।

2 (6-8) इन आयतों में सूचित किया गया है कि तुम नरक के होने का विश्वास करो या न करो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उस को अपनी आँखों से देख लोगे। उस समय तुम्हें इस का पूरा विश्वास हो जायेगा। परन्तु वह दिन कर्म का नहीं हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें प्रत्येक अनुकम्पा (नेमत) के बारे में अल्लाह के सामने जवाब देही करनी होगी। (अहमदुल बयान)

सूरह अस्स - 103

سورة العصر

सूरह अस्स के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 3 आयते हैं।

- इस का आरंभ ((अस्स)) अर्थात् (युग) की शपथ से होता है, इस लिये इस का नाम सूरह अस्स रखा गया है।¹
- इस सूरह में मात्र तीन ही आयतें हैं फिर भी इस के अर्थ में पूरे मानव जाति के उत्थान और पतन का एतिहास आ गया है। और मार्गदर्शन का मीनार बन कर व्यक्ति तथा जातियों और धार्मिक समुदायों को सीधी राह से सूचित कर रही है। ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लें, और गलत राह पर पड़ कर विनाश के गढ़े में गिरने से बच जायें।
- युग की गवाही इस के लिये प्रस्तुत की गई है कि यदि मनुष्य के कर्म ईमान में खाली हों तो वह विनाश से नहीं बच सकता।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 निचड़ते दिन की शपथ।
- 2 निःसंदेह इन्सान क्षति में है।²

وَالْعَصْرِ

رَبِّ الْإِنْسَانِ لَكِنِّ خَسِرَ

- 1 यद्यपी यह एक छोटी सी सूरह है परन्तु इस में ज्ञान का एक समुद्र समाया हुआ है इस सूरह का विषय इस बात पर सावधान करना है कि समस्त मानव जाति (इन्सान) विनाश की ओर जा रही है इस से केवल वही लोग बच सकते हैं जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये।
- 2 (1-2) "अस्स" का अर्थ निचोड़ना है। युग तथा संध्या के समय के भाग के लिये भी इस का प्रयोग होता है। और यहाँ इस का अर्थ युग और दिन निचड़ने का समय दोनों लिया जा सकता है। इस युग की गवाही इस बात पर पेश की गई है कि इन्सान जब तक ईमान (सत्य विश्वास) के गुणों को नहीं अपनाता विनाश से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिये कि इन्सान के पास सब से मूल्यवान् पूँजी समय है जो तेजी से गुजरता है। इसलिये यदि वह परलोक का सामान न करे तो अवश्य क्षति में पड़ जायेगा।

3. अतिरिक्त उन के जो इमान लाये।
तथा सदाचार किये, एवं एक दूसरे
को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का
उपदेश देते रहे।¹

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

1 इस का अर्थ यह है कि परलोक की क्षति से बचने के लिये मात्र इमान ही पर
बस नहीं इस के लिये सदाचार भी आवश्यक है और उस में से विशेष रूप से
सत्य और सहनशीलता और दूसरों को इन की शिक्षा देते रहना भी आवश्यक
है (तर्जुमानुल कुरआन, मौलाना आजाद)

सूरह हुमजह⁽¹⁾ - 104

سُورَةُ الْحَمَزِ

सूरह हुमजह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 9 आयतें हैं।

- इस का नाम ((सूरह हुमजह)) है क्योंकि इस की प्रथम आयत में यह शब्द आया है जिस का अर्थ है व्यंग करना, ताना मारना, गीबत करना आदि।⁽¹⁾
- इस की आयत 1 से 3 तक में धन के पूजारियों के आचरण का चित्र दिखाया गया है और उन्हें सचेत किया गया है कि यह आचरण अवश्य विनाश का कारण है।
- आयत 4 से 9 तक में धन के पूजारियों का परलोक में दुष्परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. विनाश हो उस व्यक्ति का जो
कचोके लगाता रहता है और चौटे
करता रहता है।

وَيَنْ لِّلْكَافِرِ هُزُونٌ

2. जिस ने धन एकत्र किया और उसे
गिन गिन कर रखा।

يَا أَيُّهَا الَّذِي جَمَعَ مَالَهُ عَدَدًا

3. क्या वह समझता है कि उस का धन
उसे संसार में सदा रखेगा?⁽²⁾

يَسْتَبِينَ مَالَهُ أَهْلًا

- 1 यह सूरह भी मक्की युग की आरंभक सूरतों में से है। इस का विषय धन के पूजारियों को सावधान करना है कि जिन की यह दशा होगी वह अवश्य अपने कुकर्म का दण्ड पायेंगे।

- 2 (1 3) इन आयतों में धन के पूजारियों के अपने धन के घमंड में दूसरों का अपमान करने और उन की कृपणता (कंजूसी) का चित्रण किया गया है, उन्हें चेतावनी दी गई है कि यह आचरण विनाशकारी है, धन किसी को संसार में सदा जीवित नहीं रखेगा एक समय आयगा कि उसे सब कुछ छोड़ कर खाली हाथ जाना पड़ेगा।

- | | |
|--|--|
| <p>4. कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही "हुतमा" में फेंका जायेगा।</p> <p>5. और तुम क्या जानो कि "हुतमा" क्या है?</p> <p>6. वह अन्नाह की भड़काई हुई अग्नि है।</p> <p>7. जो दिलों तक जा पहुँचेगी।</p> <p>8. वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे।</p> <p>9. लंबे लंबे स्तम्भों में।¹</p> | <p>كَلَّا لَيَنبَغِي فِي لَحْمَةٍ ۝</p> <p>وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَحْمَةٌ ۝</p> <p>تَارَاهُ الْيَوْمَ قَدًى ۝</p> <p>الَّتِي تَطْلُبُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝</p> <p>إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّصَدَّدَةٌ ۝</p> <p>فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝</p> |
|--|--|

1 (4-9) इन आयतों के अन्दर परलोक में धन के पुजारियों के दुष्परिणाम से अवगत कराया गया है कि उन को अपमान के साथ नरक में फेंक दिया जायेगा। जो उन्हें खण्ड कर देगी और दिलों तक जो कुबिचारों का केन्द्र है पहुँच जायेगी, और उस में इन अपराधियों को फेंक कर ऊपर से बन्द कर दिया जायेगा।

सूरह फील¹ - 106

سُورَةُ الْفِيلِ

सूरह फील के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 5 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((फील)) शब्द आया है जिस का अर्थ हाथी है इसी लिये इस का यह नाम है।¹⁾
- इस पूरी सूरह में एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है।
- आयत 1 में कहा गया है कि अब्रहा जिस की सेना काँबा को ढहाने आई थी उस का अब्राह ने कैसा सत्यानाश कर दिया? उस पर विचार करो

1 यह सूरह भी मक्की है। इस में अल्लाह की शक्ति और अपने घर "काँबा" को "अब्रहा" से सुरक्षित रखने और उसे उस की सेना सहित नाश कर देने की ओर संकेत किया गया है जिस की संक्षिप्त कथा यह है कि यमन के राजा "अब्रहा" ने अपनी राजधानी "मन्आ" में एक कलीसा (गिरजा घर) बनाया। और लोगों को काँबा के हज्ज से रोकने की घोषणा कर दी। और 570 या 571 ई॰ में 60 हजार सेना के साथ जिस में 13 या 9 हाथी थे काँबा पर आक्रमण करने के इरादे से चल पड़ा। और जब मक्का से तीन काम रह गया तो "मुहम्मर" नामी स्थान पर पड़ाव किया, और उस की सेना ने कुछ ऊँट पकड़ लिये जिन में दो सौ ऊँट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मूर्त्तलिब के थे जो काँबा के पुरोहित और नगर के मुख्या थे। वह अब्रहा के पास गये जिन से वह बड़ा प्रभावित हुआ और उन्होंने अपने ऊँट माँगे। अब्रहा ने कहा तुम ऊँट माँगते हो और काँबा के बारे में जो तुम्हारा धर्म स्थल है कुछ नहीं कहते? अब्दुल मूर्त्तलिब ने कहा मैं अपने ऊँटों का मालिक हूँ रहा यह घर तो उस का स्वामी उस की रक्षा स्वयं करेगा। अब्रहा ने उन को ऊँट वापस कर दिये। और उन्होंने नागरिकों से आ कर कहा कि अपने परिवार को लेकर (पर्वत) पर चले जायें फिर उन्होंने कुरैश के कुछ प्रमुखों के साथ काँबा के द्वार का बड़ा पकड़ कर दुआ (प्रार्थना) की और कहा हे अब्राह! अपने घर और इस के सेवकों की रक्षा कर। दूसरे दिन अब्रहा ने मक्का में प्रवेश का प्रयास किया परन्तु उस का अपना हाथी बैठ गया और आँकुस पड़ने पर भी नहीं हिला। और दूसरी दशा में फेंका जाना तो दौड़ने लगता था। इतने में पक्षियों का एक झुंड चौचौ और पंजों में कंकरियाँ लिये हुये आया और इस सेना पर कंकरियों की वर्षा कर दी जिन से उन का शरीर गलने लगा और अब्रहा सहित उस की सेना का विनाश कर दिया गया।

- आयत 2 में बताया गया है कि कैसे उम की चाल असफल हो गई
- आयत 3 4 में अल्लाह के अपने घर की रक्षा करने और आयत 5 में आक्रमणकारियों के बुरे अन्त की चर्चा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तुम नहीं जानते कि तेरे
पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या
किया?
2. क्या उस ने उन की चाल को विफल
नहीं कर दिया?
3. और उन पर परीक्षों के दल भेजे?
4. जो उन पर पकी कंकरी के पत्थर
फेंक रहे थे।
5. तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाने
का भूसा।^[1]

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ

أَلَمْ يَجْعَلْ يَدَهُ مِزَانًا نُفُوسًا

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارٍ مَّيْمِينَ

فَصَبَّحَهُمْ كَهَيِّئَةِ الْبُخَارِ

- 1 (1-5) इस सूरह का लक्ष्य यह बताना है कि काँबा को आक्रमण से बचाने के लिये तुम्हारे देवी देवता कुछ काम न आये। कुरैश के प्रमुखों ने अल्लाह ही से दुआ की थी और उन पर इस का इतना प्रभाव पड़ा था कि कई वर्षों तक साधारण नागरिकों तक ने भी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं की थी। यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ पहले की थी और वहाँ बहुत सारे लोग अभी जीवित थे जिन्होंने यह चित्र अपने नन्नों से देखा था। अतः उन से यह कहा जा रहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो आमंत्रण दे रहे हैं वह यही तो है कि अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा न की जाये, और इस को दवाने का परिणाम वही हो सकता है जो हाथी वालों का हुआ (इब्न कसीर)

सूरह कुरैश - 106

سُورَةُ قُرَيْشٍ

सूरह कुरैश के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 4 आयतें हैं।

- इस में मक्का के कबीले ((कुरैश)) की चर्चा के कारण इस का यह नाम रखा गया है।¹
- इस की आयत 1 से 3 तक में मक्का के वासी कुरैश के अपनी व्यापारिक यात्रा में प्रेम रखने के कारण जो यात्रा वह निर्भय और शान्त रह कर किया करते थे क्योंकि कांबा के निवासी थे उन से कहा जा रहा है कि वह केवल इस घर के स्वामी अल्लाह ही की वंदना (उपासना) करें।
- आयत 4 में इस का कारण बताया गया है कि यह जीविका और शान्ति जो तुम्हें प्राप्त है वह अल्लाह ही का प्रदान है। इस लिये तुम्हें उस का आभारी होना चाहिये और मात्र उसी की इबादत (वन्दना) करनी चाहिये।

1 इस सूरह के अर्थ का समझने के लिये यह जानना जरूरी है कि कुरैश जालि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पूर्वज कुमइ पुत्र किलाब के युग में "हिजाज" में फैली हुई थी। उन्होंने सब को मक्का में एकत्र किया और अपनी मुनिनी से एक राज्य की स्थापना की। और हाजियों की सेवा की ऐसी व्यवस्था की कि पूरी अरब जातियों और क्षेत्रों में उन का अच्छा प्रभाव पड़ा। कुमइ के बाद उन के चार पुत्रों में राज्य पद विभाजित हो गये। परन्तु उन में अब्द मनाफ का नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ। और उन के चार पुत्रों में से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता हाशिम ने सब से पहले यह सोचा कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लिया जाये, जिस के कारण कुरैश का संबन्ध अनेक देशों और सभ्यताओं से हो गया। मक्का अरब द्वीप का व्यापारिक केंद्र बन गया। और अक्हरा की पराजय ने कुरैश की मान मर्यादा और अधिक कर दी। इसलिये सूरह के चार वाक्यों में कुरैश से मात्र इतना ही कहा गया है कि जब तुम इस घर (कांबा) को मूर्तियों का नहीं अल्लाह का घर मानते हो कि वह अल्लाह ही है जिस ने इस घर के कारण शांति प्रदान की और तुम्हारे व्यापार को यह उन्नती दी, तथा तुम्हें भुखमरी से बचाया तो तुम्हें भी मात्र उसी की पूजा उपासना करनी चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. कुरैश के स्वभाव बनाने के कारण।
2. उन के जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का स्वभाव बनाने के कारण।^[1]
3. उन्हें चाहिये कि इस घर (काँवा) के प्रभु की पूजा करें।^[2]
4. जिस ने उन्हें भूख में खिलाया तथा डर में निडर कर दिया।

إِلَهِ الْبَلَدِ الْأَمِينِ

لِلْهِيمِ وَخَلَّةٍ مِّنْهُ وَنَقِيبَةٍ

طَلَعَتْ دُونَ رَبِّهِ مِنَ الْبَنَاتِ

وَالْبَنَىٰ أَطْعَمَهُمْ مِنْ حَمَلِ وَالصَّامَةِ مِنَ الْخَوَافِ

- 1 (1 2) गर्मी और जाड़े की यात्रा में अभिप्राय गर्मी के समय कुरैश की व्यापारिक यात्रा है जो शाम और फलस्तीन की ओर होती थी। और जाड़े के समय वे दक्षिण अरब की यात्रा करते थे जो गर्म क्षेत्र है।
- 2 इस घर से अभिप्राय काँवा है। अर्थ यह है कि यह सुविधा उन्हें इसी घर के कारण प्राप्त हुई। और वह स्वयं यह मानते हैं कि 360 मूर्तियाँ उन की रब नहीं हैं जिन की पूजा कर रहे हैं। उन का रब (पालनहार) वही है जिस ने उन को अब्रहा के आक्रमण से बचाया। और उस युग में जब अरब की प्रत्येक दिशा में अशान्ति का राज्य था मात्र इसी घर के कारण इस नगर में शान्ति है। और तुम इसी घर के निवासी होने के कारण निश्चिन्न हो कर व्यापारिक यात्रायें कर रहे हो और सुख सुविधा के साथ रहने लगे। क्योंकि काबे के प्रबन्धक और सेवक होने के कारण ही लोग कुरैश का आदर करते थे। तो उन्हें स्मरण कराया जा रहा है कि फिर तुम्हारा कर्तव्य है कि केवल उसी की उपासना करो।

सूरह माऊन^[1] - 107

سُورَةُ الْمُاعُونِ

सूरह माऊन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 7 आयतें हैं।

- इस सूरह की अन्तिम आयत में ((माऊन)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है लोगों को देने की साधारण आवश्यकता की चीजें।^[1]
- आयत 1 में उस के आचरण पर विचार करने के लिये कहा गया है जो प्रलय के दिन के प्रतिफल को नहीं मानता।
- आयत 2, 3 में यह बताया गया है कि ऐसा ही व्यक्ति समाज के अनाथों तथा निर्धनों की कोई सहायता नहीं करता। और उन के साथ बुरा व्यवहार करता है।
- आयत 4 से 6 तक में उन की निन्दा की गई है जो नमाज पढ़ने में आलसी होते हैं। और दिखावे के लिये नमाज पढ़ते हैं।
- और आयत 7 में उन की कंजूसी पर पकड़ की गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) क्या तुम ने उसे देखा
जो प्रतिकार (बदले) के दिन को
झुठलाता है?
2. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को
धक्का देता है।
3. और गरीब के लिये भोजन देने पर
नहीं उभारता।^[2]

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ

فَإِذَا دُعِيَ إِلَى الْيَتِيمِ

وَأُتِيَ غُلٌّ فَاهْتَكِرَ

- 1 इस सूरह का विषय यह बताना है कि परलोक पर इमान न रखना किस प्रकार का आचरण और स्वभाव पैदा करता है।
- 2 (2 3) इन आयतों में उन क़ाफ़िरो (अधर्मियों) की दशा बताई गई है जो

4. विनाश है उन नमाजियों के लिये¹
5. जो अपनी नमाज से अचेत हैं।
6. और जो दिखावे (आडंबर) के लिये करते हैं।
7. तथा माऊन (प्रयोग में आने वाली मामूली चीज) भी माँगने से नहीं देते।²

قَوْلِهِمْ لِلْمُصْتَبِينَ

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ

الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤُونَ

وَيَسْتَعِينُوا الْمَاعُونَ

परलोक का इन्कार करते हैं।

- 1 इन आयतों में उन मुनाफिकों (द्वय वादियों) की दशा का वर्णन किया गया है जो ऊपर से मुमनमान हैं परन्तु उन के दिलों में परलोक और प्रतिकार का विश्वास नहीं है।

इन दोनों प्रकारों के आचरण और स्वभाव को बयान करने से अभिप्राय यह बताना है कि इन्सान में सदाचार की भावना परलोक पर विश्वास के बिना उत्पन्न नहीं हो सकती। और इस्लाम परलोक का सहीह विश्वास दे कर इन्सानों में अनाथों और गरीबों की सहायता की भावना पैदा करता है और उसे उदार तथा परोपकारी बनाता है।

- 2 आयत नं० 7 में मामूली चीज के लिये (माऊन) शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है साधारण माँगने के मामानः जैसे पानी आग नमक डाल आदि और आयत का अभिप्राय यह है कि आखिरत का इन्कार किसी व्यक्ति को इतना तंग दिल बना देता है कि वह साधारण उपकार के लिये भी तैयार नहीं होता।

सूरह कौसर^[1] - 108

سُورَةُ الْكَوْثَرِ

सूरह कौसर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 3 आयत हैं।

- इस की प्रथम आयत में "कौसर" शब्द आया है जिस का अर्थ है: बहुत सी भलाईयाँ। और जन्नत के अन्दर एक नहर का नाम भी है। इस लिये इस का नाम "सूरह कौसर" है।¹
- इस की आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत सी भलाईयाँ प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।
- और आयत 2 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस प्रदान पर नमाज पढ़ते रहने तथा कुर्वानी करने का आदेश दिया गया है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि जो आप के शत्रु हैं वह आप का कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे बल्कि वह स्वयं बहुत बड़ी भलाई से बाँचते रह जायेंगे।
- हदीस में है कि आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) ने कहा कि कौसर एक नहर है जो तुम्हारे नबी का प्रदान की गई है। जिस के दोनों किनारे मोनी के और वर्तन आकाश के तारों की संख्या के समान हैं। (सहीह बुखारी: 4965)

- 1 यह सूरह मक्का में उस समय उतरी जब मक्का बासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इसलिये अपनी जाति से अलग कर दिया कि आप ने उन की मूर्तिपूजा की परम्परा का खण्डन किया। और नबी होने से पहले आप की जो जाति में मान मर्यादा थी वह नहीं रह गई।

आप अपने धोड़े से साधियों के साथ निस्महाय हो कर रह गये थे। इसी बीच आप के एक पुत्र का निधन हो गया था जिस पर मूर्ति पूजकों ने खूँशियाँ मनाई और कहा कि मुहम्मद के कोई पुत्र नहीं। वह निर्मूल हो गया और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेना नहीं रह जायेगा। ऐसे हृदय विदारक क्षणों में आप को यह शुभ सूचना दी गई कि आप निराश न हों आप के शत्रु ही निर्मूल होंगे। यह शुभ सूचना और भविष्य वाणी कुरआन ने उस समय दी जब कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा हो जाना संभव है। परन्तु कुछ ही वर्षों बाद ऐसा परिवर्तन हुआ कि मक्का के अनेकेश्वर बादियों का कोई महायक नहीं रह गया और उन्हें विवश हो कर हाथियार डाल देने पड़े। और फिर आप के शत्रुओं का कोई नाम लेना नहीं रह गया। इस के विपरीत आज भी करोड़ों मुसलमान आप से संबंध पर गर्व करते हैं, और आप पर दरूद भेजते हैं।

- और इब्ने अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा कि कौसर वह भलाईयाँ हैं जो अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को प्रदान की हैं। (सहीह बुखारी: 4966)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) हम ने तुम को कौसर प्रदान किया है।¹
2. तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज पढ़ो तथा बलि दो।²
3. निःसंदेह तुम्हारा शत्रु ही वे नाम निशान है।³

إِنَّا أَنْعَمْنَا عَلَى الْكَوْثَرِ

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَثَرُ

1 कौसर का अर्थ है अमीम तथा अपार शुभ।

और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि कौसर एक हौज (जलाशय) है जो मुझे परलोक में प्रदान किया जायेगा। जब प्रत्येक व्यक्ति प्यास प्यास कर रहा होगा और आप की उम्मत आप के पास आयेगी, आप पहले ही से वहाँ उपस्थित होंगे और आप उन्हें उस से पिलायेंगे जिस का जन दूध से उजला और मधु से अधिक मधुर होगा। उस की भूमी कस्तूरी होगी उस की सीमा और बर्तनों का सर्वस्तर वर्णन हदीसों में आया है।

2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से सभी मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब शुभ तुम्हारे पालनहार ही ने प्रदान किये हैं तो तुम भी मात्र उसी की पूजा करा और बली भी उसी के लिये दो मूर्ति पूजकों की भोंति देवी देवताओं की पूजा अर्चना न करो और न उन के लिये बलि दो। वह तुम्हे कोई शुभ लाभ और हानि देने का सामर्थ्य नहीं रखते।

3 आयत नं० 3 में "अवतर" का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है जड़ से अलग कर देना जिस के बाद कोई पेड़ सूख जाना है। और इस शब्द का प्रयोग उस के लिये भी किया जाता है जो अपनी जाति से अलग हो जाये या जिस का कोई पुत्र जीवित न रह जाये और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेना न हो। इस आयत में जो भविष्य वाणी की गई है वह सत्य सिद्ध हो कर पूरे मानव ससार को इस्लाम और कुरआन पर विचार करने के लिये बाध्य कर रही है। (इब्ने कसीर)

सूरह काफिरून¹ - 109

سُورَةُ الْكَافِرُونَ

सूरह काफिरून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((काफिरून)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को निर्देश दिया गया है कि काफिरों से कह दे कि बंदना (उपासना) के विषय में मुझ में और तुम में क्या अन्तर है?
- आयत 4 से 5 तक में यह ऐलान है कि दीन (धर्म) के विषय में कोई समझौता और उदारता असंभव है।
- आयत 6 में काफिरों के धर्म से अप्रसन्न (विमुख) होने का ऐलान है।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तवाफ की दो रक्'अत में यह सूरह और सूरह इस्लाम पढ़ी थी। (सहीह मुस्लिम- 1218)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) कह दो हे काफिरों।

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝

2. मैं उन (मूर्तियों) को नहीं पूजता जिन्हें

لَا أُعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝

- 1 यह सूरह भी मक्की है। इस सूरह की भूमिका यह है कि मक्का में यद्यपि इस्लाम का कड़ा विरोध हो रहा था फिर भी अभी मूर्ति पूजक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निराश नहीं हुये थे। और उन के प्रमुख किसी न किसी प्रकार आप को संधि के लिये तैयार कर रहे थे। और आप के पास समय समय से अनेक प्रस्ताव लेकर आया करते थे। अन्त में यह प्रस्ताव लेकर आये कि: एक वर्ष आप हमारे पूजितों (नान उज्जा आदि) की पूजा करें, और एक वर्ष हम आप के पूज्य की पूजा करें और इसी पर संधि हो जाये। उसी समय यह सूरह अवनीर्ण हुई और सदा के लिये बना दिया गया कि दीन में कोई समझौता नहीं हो सकता है इसीलिये हदीस में इसे शिर्क से रक्षा की सूरह कहा गया है।

तुम पूजते हो।

3. और न तुम उसे पूजते हो जिसे मैं पूजता हूँ।

وَلَا تَسْجُدُونَ مَا سَجَدُ

4. और न मैं उसे पूजुंगा जिसे तुम पूजते हो।

وَلَا أَن سَاجِدًا مَّا سَجَدُ

5. और न तुम उसे पूजोगे जिसे मैं पूजता हूँ।

وَلَا أَنْتُمْ عِبَادُونَ مَّا عَبَدُ

6. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म, तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।¹

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ

1 (1-6) पूरी सूरह का भावार्थ यह है कि इस्लाम में वही ईमान (विश्वास) मान्य है जो पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ हो, अर्थात् अल्लाह के अस्तित्व तथा गुणों और उस के अधिकारों में किसी को साझी न बनाया जाय। कुरआन की शिक्षानुसार जो अल्लाह को नहीं मानता, और जो मानता है परन्तु उस के साथ देवी देवताओं का भी मानता है तो दोनों में कांड़ अन्तर नहीं। उस के विशेष गुणों को किसी अन्य में मानना उस का न मानने के ही बराबर है और दोनों ही काफिर हैं। (देखिय: उम्मुल किताब, मौलाना आजाद)

सूरह नस्र⁽¹⁾ - 110

سورة النصر

सूरह नस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((नस्र)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ सहायता है, इस का यह नाम रखा गया है।¹
- इस की आयत 1 में अब्राह की सहायता आने तथा मक्का की विजय की चर्चा है।
- आयत 2 में लोगों के समूहों में इस्लाम लाने की चर्चा है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अब्राह का यह प्रदान प्राप्त होने पर उस की और अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।
- हदीस में है कि इस सूरह के उतरने के पश्चात् आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी नमाज (के रुकूअ और मज्द) में अधिकतर ((मुहानका रब्बना व बिहम्दिका अब्राहुम्मर्गफिर ली)) पढ़ा करते थे। (सहीह बुखारी: 4967, 4968)

अल्लाह के नाम से जो अन्याय
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) जब अल्लाह की सहायता
एवं विजय आ जाये।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ

- 1 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि यह कुर्आन की अन्तिम सूरह है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरी इस सूरह में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भविष्य वाणी के रूप में बताया गया है कि जब इस्लाम की पूर्ण विजय हो जाये और लोग समूहों के साथ इस्लाम में प्रवेश करने लगे तो आप अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) और तस्बीह (पवित्रता का वर्णन) करने में लग जायें और उस से क्षमा माँगते रहें।

2. और तुम लोगों को अल्लाह के धर्म में दल के दल प्रवेश करते देख लो।¹
3. तो अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करो। और उस से क्षमा माँगो, निःसंदेह वह बड़ा क्षमी है।²

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِهِمْ أَفْوَاجًا ۚ

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْ لَهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝

- 1 (1 2) इस में विजय का अर्थ वह निर्णायक विजय है जिस के बाद कोई शक्ति इस्लाम का सामना करने के योग्य नहीं रह जायेगी। और यह स्थिति मन् 8 (हिजरी) की है जब मक्का विजय हो गया। अरब के कोने कोने में प्रतिनिधि मंडल रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हो कर इस्लाम लाने लगे। और मन् 10 (हिजरी) में जब आप (हज्जतुल वदाअ) (अर्थात् अन्तिम हज्ज) के लिये गये तो उस समय पूरा अरब इस्लाम के आधीन आ चुका था और देश में कोई मुश्रिक (मूर्ति पूजक) नहीं रह गया था।
- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहा गया है कि इतना बड़ा काम आप ने अल्लाह की दया से पूरा किया है इस के लिये उस की प्रशंसा और पवित्रता का वर्णन तथा उस की कृतज्ञता व्यक्त करें। इस में सभी के लिये यह शिक्षा है कि कोई पुण्य कार्य अल्लाह की दया के बिना नहीं होता इसलिये उस पर घमंड नहीं करना चाहिये।

सूरह तच्चत¹ - 111

سورة تات

सूरह तच्चत के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है इस में 5 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में (तच्चत) शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह तच्चत) है जिस का अर्थ तबाह होना है।¹
- आयत 1 से 3 तक में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के शत्रु अबू लहब के बुरे परिणाम से सूचित किया गया है।
- आयत 4 और 5 में उस की पत्नी के शिक्षाप्रद परिणाम का दृश्य दिखाया गया है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बैर रखने में अपने पति के साथ थी।
- हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया कि आप अपने समीप के परिजनो को डरायें तो आप ने सफा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा। और जब सब आ गये, तो कहा यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर सवेरे या संध्या को धावा बोल देगी तो तुम मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप को झूठ बोलते नहीं देखा। आप ने कहा: मैं तुम्हें अपने सामने की दुखदायी

1 यह सूरह आरंभिक मक्की सूरतों में से है। इब्ने अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह आदेश दिया गया कि आप समीप वर्ती संबंधियों को अल्लाह से डरायें तो आप सफा "पहाड़ी" पर गये और पुकारा "हाय भोर की आपदा।" यह सुन कर कुरैश के सभी परिवार जन एकत्र हो गये। तब आप ने कहा यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने को नैयार है तो तुम मेरी बात मानोगे? सब ने कहा हाँ। हम ने कभी आप से झूठ नहीं आजमाया आप ने फरमाया मैं तुम्हें आग (नर्क) की बड़ी यातना से सावधान करता हूँ इस पर किसी के कुछ बोलने से पहले आप के चचा "अबू लहब" ने कहा तुम्हारा सत्यानास हो। क्या हमें इसी लिये एकत्र किया है?

और एक रिवायत यह भी है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मारने के लिये पत्थर उठाया, इसी पर यह सूरह उतारी गई। (दखिये सहीह बुखारी: 4971 और सहीह मुस्लिम: 208)

यातना से डरा रहा हूँ। इस पर अबु जहल ने कहा: तुम्हारा नाश हो। क्या इसी लिये हम को एकत्र किया है? इसी पर यह सूरह अवतरित हुई (सहीह बुखारी: 4971)

अल्ताह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

يَسِّرُ لِلرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अबु लहब के दोनों हाथ नाश हो गये,
और वह स्वयं भी नाश हो गया! ¹
2. उस का धन तथा जो उस ने कमाया
उस के काम नहीं आया।
3. वह शीघ्र लावा फेंकती आग में
जायेगा। ²
4. तथा उस की पत्नी भी जो ईंधन

تَبَّتْ يَدَايَا لَهَبٍ وَتَبَّ

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ

سَيَفْضَلُ نَارَ ذَاتِ لَهَبٍ

وَأَمْرَأَتُهُ حَمَلَةٌ لَّعُوبٍ

- 1 अबु लहब का अर्थ ज्वाला मुखी है। वह अति सुंदर और गंरा था। उस का नाम वास्तव में "अब्दुल उज्जा" था अर्थात् उज्जा का भक्त और दास। "उज्जा" उन की एक देवी का नाम था। परन्तु वह अबु लहब के नाम से जाना जाता था। इसलिये कर्त्तान ने उस का यही नाम प्रयोग किया है और इस में उस के तर्क की ज्वाला में पड़ने का संकेत भी है।
- 2 (1-2) यह आयतों उस की इस्लाम को दवाने की योजना के विफल हो जाने की भविष्यवाणी है। और संसार ने देखा कि अभी इन आयतों के उतरे कुछ वर्ष ही हुये थे कि "अबु लहब" की लड़ाई में मक्के के बड़े बड़े वीर प्रमुख मारे गये। और "अबु लहब" को इस खबर से इतना दुःख हुआ कि इस के सातवें दिन मर गया। और मरा भी ऐसे कि उसे मलगिनानत पुसतुले (प्लेग जैसा कोई रोग) की बीमारी लग गई। और छूत के भय से उसे अलग फेंक दिया गया। कोई उस के पास नहीं जाता था। मृत्यु के बाद भी तीन दिन तक उस का शव पड़ा रहा और जब उस में गंध होने लगी तो उसे दूर से लकड़ी से एक गढ़े में डाल दिया गया। और ऊपर से मिट्टी और पत्थर डाल दिये गये। और कूर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई और जैसा कि आयत नं० 2 में कहा गया उस का धन और उस की कमाई उस के कुछ काम नहीं आई। उस की कमाई से उद्देश्य अधिकतर भाष्यकारों ने "उस की सतान" लिया है। जैसा कि सहीह हदीसों में आया है कि तुम्हारी सतान तुम्हारी उत्तम कमाई है।

लिये फिरती है।

5. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी।^[1]

فِي حَبِيبٍ مَّا حَبْلُ تَنْ تَسْبُحُ

- 1 (1 S) अबु लहब की पत्नी का नाम "अरबा" था। और उस की उपाधि (कुनियत) "उम्मे जमील" थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शत्रुता में किसी प्रकार कम न थी।

लकड़ी लादने का अर्थ भाप्य कारों ने अनेक किया है। परन्तु इस का अर्थ उस को अपमानित करना है। या पापों का ढोझ नाद रखने के अर्थ में है।

वह साने का हार पहनती थी और "लात" तथा "उज्जा" की शपथ ले कर यह दोनों उन की देवियों के नाम हैं- कहा करती थी कि मुहम्मद के विरोध में यह मूल्यवान हार भी बेच कर खर्च कर दूंगी। अतः यह कहा गया है कि आज तो वह एक धन्यवान व्यक्ति की पत्नी है। उस के गले में बहुमूल्य हार पड़ा हुआ है परन्तु आखिरत में वह ईंधन ढोने वाली लोड़ी की तरह होगी। गले में आभूषण के बदले बटी हुई मूँज की रस्सी पड़ी होगी। जैसी रस्सी ईंधन ढोने वाली लोड़ियों के गले में पड़ी होती है। और इस्लाम का यह चमत्कार ही तो है कि जिस "अबु लहब" और उस की पत्नी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शत्रुता की उन्हीं की औलाद "उत्बा", "मुअत्तब", तथा "रुहर" ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

सूरह इक्लास^[1] - 112

سورة الإخلاص

सूरह इक्लास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 4 आयतें हैं।

- इक्लास का अर्थ है अल्लाह की शुद्ध इबादत (बंदना) करना। इसी का दूसरा नाम तौहीद (अद्वैत) है, इस सूरह में तौहीद का वर्णन है, इसी लिये इस का यह नाम है।^[1]

1 यह सूरह मक्की सूरतों में से है।

यद्यपि इस के उतरने में संबंधित रिवायत में लगता है कि यह सूरह मदीने में उस समय उतरी जब मदीने के यहूदियों ने आप से प्रश्न किया कि बताइये कि वह पालनहार कैसा है जिस ने आप का भेजा है? या यह कि "नजरान" के ईसाइयों ने इसी प्रकार का प्रश्न किया कि वह कैसा है, और किस धातु का बना हुआ है? तो यह सूरह उतरी। परन्तु सब से पहले यह प्रश्न स्वयं मक्कावासियों ने ही किया था। इसलिये इसे मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में गणना किया जाता है।

इस का नाम "सूरह इक्लास" है। इक्लास का अर्थ है अल्लाह पर ऐसे इमान लाना कि उस के अस्तित्व और गुणों में किसी की साझदारी की कोई आभा (झलक) न पाई जाये और इसी को तौहीद खालिस (निर्मल ऐकेश्वरवाद) कहते हैं।

जहाँ तक अल्लाह को मानने की बात है तो संसार ने सदा उस को माना है परन्तु वास्तव में इस मानने में ऐसा मिश्रण भी किया है कि मानना और न मानना दोनों बराबर हो कर रह गये हैं। तौहीद को उजागर करने के लिये अल्लाह ने बराबर नबी भेजे परन्तु इन्मान बार बार इस नथ्य को खोता रहा। आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के लिये प्रस्थान किया और अपने परिवार को एक बंजर वादी में बसाया कि वह मात्र एक अल्लाह की पूजा करेंगे। परन्तु उन्हीं के वंशज ने उन के बनाये तौहीद के केन्द्र अल्लाह के घर काँवा को एक देव स्थल में बदल दिया। तथा अपने बनाये हुये देवताओं का अधिकार माने बिना अल्लाह के अधिकार को स्वीकार करने के लिये तैयार न थे। यह स्थिति मात्र ~~कहना~~ वासियों की न थी, ईसाइ और यहूदी भी यद्यपि तौहीद के दावेदार थे फिर भी उन के यहाँ तीन पूज्यों पिता पुत्र और पवित्रात्मा के योग में तौहीद बनी थी। यहूदियों के यहाँ भी अल्लाह का पुत्र उजैर अवश्य था। कही पूज्य एक तो था परन्तु बहुत से देवी देवता भी उस के साथ पूज्य थे। (देखिये उम्मुल किताब)

- इस की आयत 1,2 में अब्राहम के सकारात्मक गुणों को और आयत 3,4 में नकारात्मक गुणों को बताया गया है ताकि धर्मों और जातियों में जिस राह से शिर्क आया है उसे रोका जा सके। हदीस में है कि अब्राहम ने कहा कि मनुष्य ने मुझे झुठला दिया। और यह उस के लिये योग्य नहीं था। ओर मुझे गाली दी, और यह उस के लिये योग्य नहीं था। उस का मुझे झुठलाना उस का यह कहना है कि अब्राहम ने जैसे मुझे प्रथम बार पैदा किया है दोबारा नहीं पैदा कर सकेगा। जब कि प्रथम बार पैदा करना मेरे लिये दोबारा पैदा करने से सरल नहीं था। और उस का मुझे गाली देना यह है कि उस ने कहा कि अब्राहम के संतान है। जब कि मैं अकेला निर्पेक्ष हूँ। न मेरी कोई संतान है और न मैं किसी की संतान हूँ और न कोई मेरा समकक्ष है। (सहीह बुखारी- 4974)
- सहीह हदीस में है कि यह सूरह तिहाई कुर्आन के बराबर है। (सहीह बुखारी: 5015, सहीह मुस्लिम: 811)
- एक दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा कि, हे अब्राहम के रसूल! मैं इस सूरह से प्रेम करता हूँ। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: तुम्हें इस का प्रेम स्वर्ग में प्रवेश करा देगा। (सहीह बुखारी: 774)

अब्राहम के नाम से जो अन्यन्न
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1 (हे ईश दून!) कह दो: अब्राहम
अकेला है।¹

قُلْ مَوْلَايَ اَحَدٌ

1 आयत नं० 1 में "अहद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है: उस के अस्तित्व एवं गुणों में कोई साझी नहीं है। यहाँ "अहद" शब्द का प्रयोग यह बताने के लिये किया गया है कि वह अकेला है। वह वृक्ष के समान एक नहीं है जिस के अनेक शाखायें होती हैं।

आयत नं० 2 में "समद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है: अब्रण होना अर्थात् जिस में कोई छिद्र न हो जिस में कुछ निकले, या वह किसी से निकले। और आयत नं० 3 इसी अर्थ की व्याख्या करती है कि न उस की कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

- | | |
|--|-----------------------------------|
| 2. अल्लाह निर्रछद्र है। | اَللّٰهُ تَعَالٰی |
| 3. न उस की कोई संतान है, और न वह किसी की संतान है। | لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ |
| 4. और न उस के बराबर कोई है। ¹ | وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا اَحَدٌ |

1 इस आयत में यह बताया गया है कि उस की प्रतिमा तथा उस के बराबर और समतुल्य कोई नहीं है। उस के कर्म, गुण, और अधिकार में कोई किसी रूप में बराबर नहीं। न उस की कोई जाति है न परिवार। इन आयतों में क़ुरआन उन विषयों को जो जातियों के तौहीद से फिसलने का कारण बने उसे अनेक रूप में वर्णन करना है। और देवियाँ और देवनाओं के विवाहों और उन के पुत्र और पौत्रों का जो विवरण देव मालावों में मिलता है क़ुरआन ने उसी का खण्डन किया है।

सूरह फलक¹ - 113

سورة الفلق

सूरह फलक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 5 आयत है।

- इस की प्रथम आयत में ((फलक)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ भोर है इस का यह नाम रखा गया है।¹¹

1 सूरह "फलक" और सूरह "नास" को मिला कर "मुअव्वजतैन" कहा जाता है जब यह दोनों सूरतें उतरी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आज की रात्री में मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैं ने कभी नहीं देखी। (मुस्लिम: 814)

इसी प्रकार इब्ने अबिस जहनी (रजियल्लाहु अन्हु) से आप ने फरमाया कि मैं तुम्हें उत्तम यंत्र न बनाऊँ जिस के द्वारा शरण (पनाह) माँगी जाती है? और आप ने यह दोनों सूरतें बनायी और कहा कि यह "मुअव्वजतैन" अर्थात् शरण माँगने के लिये दो सूरतें हैं। (देखिये: सहीह नमद 5020)

जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जादू किया गया जिस का प्रभाव यह हुआ कि आप घुलने जा रहे थे, किसी काम को माचने कि कर लिया है और किया नहीं होता था किसी वस्तु को देखा है जब कि देखा नहीं होता था। परन्तु जादू का यह प्रभाव आप के व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित था।

एक दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी पत्नी "आइशा" (रजियल्लाहु अन्हा) के पास थे कि सो गये और जागे तो उन को बताया की दो व्यक्ति (फरिश्ते) मेरे पास आये, एक मिराहने की ओर था, और दूसरा पैताने की ओर। एक ने पूछा इन्हें क्या हुआ है? दूसरे ने उत्तर दिया इन पर जादू हुआ है उस ने पूछा किम ने किया है? उत्तर दिया "लज्दीद बिन आमम" ने पूछा किम वस्तु में किया है? उत्तर दिया कंधी बाल और नर खजूर के खाशे में। पूछा वह कहाँ है? उत्तर दिया बनी जुरैक के कुवें की तह में पत्थर के नीचे है। इस के बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अली अम्मार और जुवैर (रजियल्लाहु अन्हुम) को भेजा फिर आप भी वहाँ आ गये, पानी निकाला गया, फिर जादू जिस में कंधी के दाँतों और बालों के साथ एक तान में ग्यारह गाँठ लगी हुई थी। और माँम का एक पुतला था जिस में सुईयाँ चुभाई हुई थी। आदर्णीय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आ कर बताया कि आप "मुअव्वजतैन" पढ़ो और जैसे जैसे आप पढ़ने जा रहे थे उसी के साथ एक एक गाँठ खुलनी और पुतले से एक एक सुई निकलनी जा रही थी, और अन्त के साथ ही आप जादू में इस प्रकार निकल गये जैसे कोड बंधा हुआ खुल जाता है। (देखिये: सहीह

- इस की आयत 1 में यह शिक्षा दी गई है कि शरण उस से माँगो जिस के पालनहार होने की निशानी तुम रात दिन देख रहे हो।
- आयत 2 से 5 तक में यह बताया गया है कि किन चीजों की बुराई से शरण माँगनी चाहिये।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि इस रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें अवतरित हुई हैं जिन के समान आयतें कभी नहीं देखी गईं। वह यह सूरह, और इस के पश्चान् की सूरह है। (सहीह मुस्लिम: 814)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो कि मैं भोर के पालनहार की शरण लेता हूँ।
2. हर उस की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया।
3. तथा रात्री की बुराई से जब उस का अंधेरा छा जाये।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

مِنْ شَيْءٍ خَلَقَ

وَمِنْ شَيْءٍ غَاصَّ فِي ذَوْنِهِ وَرَبُّ

बुखारी: 5766 तथा सहीह मुस्लिम: 2189)

फिर आप ने "लवीद" का बूला कर पूछा, और उस ने अपना दोष स्वीकार कर लिया। फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को क्षमा कर दिया और फरमाया कि: अल्लाह ने मुझे स्वस्थ कर दिया है।

हदीसों से यह सिद्ध होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर रात्री में सोते समय इन दोनों सूरतों को पढ़ कर अपने दोनों हाथों पर फूँकते फिर अपने दोनों हाथों को अपने पूरे शरीर पर फेरते थे।

मानो अल्लाह तआला ने इन अल्लिम दो सूरतों द्वारा जादू और अन्य बुराईयों से बचाव का एक साधन भी दे दिया जो सदा मुसलमानों की जादू तंत्र आदि से रक्षा करता रहेगा।

- 1 (1 3) इन में संबोधित तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया है परन्तु आप के माध्यम से पूरे मुसलमानों के लिये संबोधन है। शरण माँगने के लिये तीन बातें जरूरी हैं: (1) शरण माँगना। (2) जो शरण माँगता हो (3)

4. तथा गांठ लगा कर उन में फूंकने
वालियों की बुराई से।
5. तथा द्वेष करने वाले की बुराई से जब
वह द्वेष करो^[1]

وَمِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ

जिस के भय से शरण मांगी जाती हो। और अपने को उस से बचाने के लिये दुमरे की सुरक्षा और शरण में जाना चाहना हो। फिर शरण वही माँगता है जो यह सोचता है कि वह स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता और अपनी रक्षा के लिये वह ऐसे व्यक्ति या अस्तित्व की शरण लेता है जिस के बारे में उस का यह विश्वास होता है कि वह उस की रक्षा कर सकता है। अब स्वभाविक नियमानुसार इस संसार में सुरक्षा किसी वस्तु या व्यक्ति से प्राप्त की जाती है जैसे धूप से बचने के लिये पेड़ या भवन आदि की। परन्तु एक खतरा वह भी होता है जिस से रक्षा के लिये किसी अनदेखी शक्ति से शरण मांगी जाती है जो इस विश्व पर राज करती है और वह उस की रक्षा अवश्य कर सकती है। यही दुमरे प्रकार की शरण है जो इन दोनों मूर्तों में अभिप्रेत है और कुरआन में जहाँ भी अल्लाह की शरण लेने की चर्चा है उस का अर्थ यही विशेष प्रकार की शरण है और यह तौहीद पर विश्वास का अंग है। ऐसे ही शरण के लिये विश्वास हीन देवी देवताओं इत्यादि को पुकारना शिर्क और घोर पाप है।

- 1 (4-5) इन दोनों आयतों में जादू और डाह की बुराई से अल्लाह की शरण में आने की शिक्षा दी गई है। और डाह ऐसा रोग है जो किसी व्यक्ति को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिये तैयार कर देता है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी जादू डाह के कारण ही किया गया था। यहाँ जानव्य है कि इस्लाम ने जादू को अधर्म कहा है जिस से इन्सान के परलोक का विनाश हो जाता है।

सूरह नास⁽¹⁾ - 114

سُورَةُ النَّاسِ

सूरह नास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 6 आयत है।

- इस में पाँच बार ((नास)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है जिस का अर्थ इन्सान है।⁽²⁾
- इस की आयत 1 से 3 तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं
- आयत 4 में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होने से सावधान किया गया है।
- आयत 5 में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत 6 में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिब तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हर रात जब विस्तर पर जाने तो सूरह इख्नास और यह और इस के पहलू की सूरह (अर्थात्: फलक) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूंकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। मिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुजारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुखारी: 6319, 5748)

अल्लाह के नाम से जो अन्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानो के पालनहार की शरण में आता हूँ।
- 2 जो सारे इन्सानो का स्वामी है।
- 3 जो सारे इन्सानो का पूज्य है।⁽³⁾

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ

مَلِكِ النَّاسِ

رَبِّ النَّاسِ

1 यह सूरह मक्का में अवतरित हुई।

2 (1 3) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण

4. भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (राक्षस) की बुराई से।
5. जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।
6. जो जिनों में से है, और मनुष्यों में से भी।¹

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

الَّذِي يُوسْوِسُ رِيقَ صَدُورِ النَّاسِ

مِنْ لِحَّةِ النَّاسِ

लेने की शिक्षा दी गई है। एक उम्र का सब मानव जाति पालनहार और स्वामी होना। दूसरे उम्र का सभी इन्सानों का अधिपति और शासक होना। तीसरे उम्र का इन्सानों का सत्य पूज्य होना।

भावार्थ यह है कि उम्र अल्लाह की शरण मांगना है जो इन्सानों का पालनहार शासक और पूज्य होने के कारण उन पर पूरा नियंत्रण और अधिकार रखता है जो वास्तव में उस बुराई से इन्सानों को बचा सकता है जिस से स्वयं बचने और दूसरों को बचाने में सक्षम है उम्र के सिवा कोई है भी नहीं जो शरण दे सकता हो।

- 1 (4-6) आयत नं- 4 में "बस्वास" शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है दिलों में ऐसी बुरी बातें डाल देना कि जिस के दिल में डाली जा रही हों उसे उस का जान भी न हो।

और इसी प्रकार आयत नं- 4 में "खन्नास" का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है सुकड़ जाना छुप जाना पीछे हट जाना, धीरे धीरे किसी को बुराई के लिये तैयार करना आदि।

अर्थात् दिलों में भ्रम डालने वाला और सत्य के विरुद्ध मन में बुरी भावनायें उत्पन्न करने वाला। चाहे वह जिनों में से हो अथवा मनुष्यों में से हो। इन सब की बुराइयों से हम अल्लाह की शरण लेते हैं जो हमारा स्वामी और सच्चा पूज्य है।

فهرست سورتوں

सूरतों की सूची

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं०	السورة
1	फातिहा	1	الفاتحة
2	बकरह	5	البقرة
3	आले इमरान	92	آل عمران
4	निसा	142	النساء
5	माइदा	197	المائدة
6	अनआम	238	الأنعام
7	आराफ	285	الأعراف
8	अनफाल	335	الأنفال
9	तौबा	399	التوبة
10	यूनस	40	يونس
	हुद	45	هود
12	युसुफ	442	يوسف
13	रअद	467	الرعد
14	इब्राहीम	480	إبراهيم
15	हिज	492	الحجر
16	नहल	505	النحل
17	बनी इस्राइल	513	بنی اسرائیل
18	कहफ	557	الكهف
19	मरयम	580	مريم
20	ता हा	596	طه
21	अम्बिया	67	الأنبياء
22	हज	637	الحج
23	मुमिनून	656	المؤمنون
24	नूर	672	النور
25	फुर्कान	692	الفرقان
26	शुअरा	706	الشعراء
27	नमल	730	الزل

क्रमशः	सुरह का नाम	पृष्ठ नं०	السورة
28	कसम	747	التقصص
29	अन्कवून	766	العنكبوت
30	रूम	78	الروم
31	नुकमान	794	النهار
32	मज्दा	803	السجدة
33	अहजाब	809	الأحزاب
34	सबा	829	سبا
35	फातिर	843	فاطر
36	यामीन	854	يس
37	साफफात	866	الصافات
38	माद	883	ص
39	जुपर	899	الزمر
40	मुमिन	922	المؤمن
41	हा भीम मज्दा	929	حم السجدة
42	शूरा	942	الشورى
43	जुसुफ	956	الرعد
44	दुखान	97	الدخان
45	जार्मियह	979	الحاقة
46	अहकाफ	987	الأحزاب
47	मुहम्मद	998	محمد
48	फन्ह	1007	الفتح
49	हुजुरात	1018	الحجرات
50	काफ	1026	ق
51	जार्थान	1031	الذاريات
52	तूर	1041	الطور
53	नज्म	1048	الجم
54	कमर	1056	المر
55	रहमान	1063	الرحمن
56	बारिकआ	1071	الرحمة

क्रमशः	सुरह का नाम	पृष्ठ नं०	السورة
57	हदीद	1079	الحديد
58	मुजादला	1088	المجادلة
59	हश	1095	الحشر
60	मुम्तहिना	1103	الممتحنة
61	सफ	1110	الصافات
62	जुम्आ	1114	الجمعة
63	मुनाफिकून	1118	المنافقون
64	तगावुन	1122	التغابن
65	तलाक	1127	الطلاق
66	तहरीम	1132	التحریم
67	मुन्क	1137	المنك
68	कनम	1143	القلم
69	हाक्का	1150	الحاقة
70	मअरिज	1156	الماعज
71	नूह	1161	نوح
72	जिन्न	1165	الجن
73	मुज्जम्मिल	1170	المرسل
74	मुद्सिर	1174	المدثر
75	कियामा	1180	القيامة
76	दहर	1185	الدھر
77	मुमन्नान	1190	المرسلات
78	नबा	1195	النبا
79	नाजिआन	1200	النازعات
80	अवम	1205	عبس
81	तक्वीर	1210	التكوير
82	इन्फतार	1214	الانفطار
83	मुतफिफीन	1217	المتفمير
84	इन्शकाक	1221	الانشقاق
85	बुरूज	1224	البروج

क्रमशः	सुरह का नाम	पृष्ठ नं०	السورة
86	तारिक	1228	الطارق
87	आँला	1231	الأعلى
88	गाशयह	1235	الغاشية
89	फज्र	1238	الفجر
90	बलद	1242	البد
91	शम्स	1246	الشمس
92	नैन	1249	النैन
93	नुहा	1253	الضحى
94	शह	1256	الشرح
95	नील	1259	النين
96	अलक	1261	العلق
97	कद	1265	القدر
98	बाध्यनह	1267	البيّة
99	जिलजाल	1270	الزلزال
100	अदियान	1272	المديّات
101	कारिअह	1274	القارعة
102	नकासूर	1276	التكاثر
103	अस	1278	العصر
104	हुमजह	1280	الهمزة
105	फीन	1282	الفل
106	कुरैश	1284	قريش
107	माऊन	1286	الماعون
108	कौसर	1288	الكوثر
109	कारिऊन	1290	الकारون
110	नस	1292	النصر
111	तन्न	1294	تنبت
112	इल्लास	1297	الإخلاص
113	फलक	1300	العلق
114	नाम	1303	الناس

إِنَّ بَرَاءَ الشُّرُوكِ الْإِسْلَامِيَّةَ وَالْأَوْقَافَ وَالِدَعْوَةَ وَالْإِشَادَ
 فِي الْمَمْلَكَةِ الْعَرَبِيَّةِ السُّعُودِيَّةِ
 الْمَشْرُوقَةَ عَلَى مَجْمَعِ الْمَلِكِ فَهْدٍ
 لِعِطَاعَةِ الْمُصَنِّفِ الشَّرِيفِ فِي الْإِدِينَةِ الْمُسَوَّرَةِ
 إِذْ يُسْرُّهَا أَنْ يُصَدِّقَ الْمَجْمَعُ هَذِهِ الطَّبْعَةَ مِنَ الْقُرْآنِ الْعَكِيمِ
 وَرَحْمَةً مَعَانِيهِ وَتَفْسِيرِهِ إِلَى الْمَلَقَةِ الْهِنْدِيَّةِ
 لَسَأَلَ اللَّهُ أَنْ يَنْقُضَ بِهَا النَّاسَ
 وَأَنْ يَجْزِيَ
 خَلَامَ الْجَمْعِ الشَّرِيفِ الْمَلِكِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ السُّعُودِ
 أَحْسَنَ الْجَزَاءِ عَلَى جُهِودِهِ الْعَظِيمَةِ فِي تَشْرِيحِ كِتَابِ اللَّهِ الْعَكِيمِ
 وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ

इस्लामी उमूर, औकाफ तथा दावत और इर्शाद
 मंत्रालय, सऊदी अरब, जो किंग फहद कुर्आन
 परिन्टिंग कम्पलेक्स, मदीना मुनव्वरा, पर निरिक्षक
 है, को कुर्आन पाक और उस के अर्थों का हिन्दी
 अनुवाद और व्याख्या को छापते हुऐ अति प्रसन्नता
 हो रही है। वह अल्लाह तआला से दुआ करता है कि
 इस से लोगों को लाभ पहुँचे। और हरमैन शरीफैन के
 सेवक किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज़ आल सऊद
 को कुर्आन पाक के प्रचार करने में उन के महान्
 प्रयासों पर बहुत ही अच्छा प्रत्युपकार दे।



حقوق الطبع محفوظة
 مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف

ص.ب. ٦٦٢ - المدينة المنورة

www.qurancomplex.gov.sa
contact@qurancomplex.gov.sa



छपाई के अधिकार किंग फहद कुआन परिन्टिंग
कम्प्लेक्स, मदीना मुनव्वरा, के लिये सुरक्षित है।
पोस्ट बॉक्स नं- 6262

www.qurancomplex.gov.sa
contact@qurancomplex.gov.sa

③ مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف ، ١٤٣٣ هـ
فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر .

مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف
ترجمة معاني القرآن الكريم إلى اللغة الهندية . / مجمع الملك
فهد لطباعة المصحف الشريف . - المدينة المنورة ، ١٤٣٣ هـ

١٣٢٠ ص ١ ١٤ × ٢١ سم

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٠٩٥-٣٩-٣

١- القرآن - ترجمة أ. العتوان

ديوي ٢٢١.٤ ١٤٣٣/٤٣١

رقم الإيداع : ١٤٣٣/٤٣١

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٠٩٥-٣٩-٣



9 786038 095393